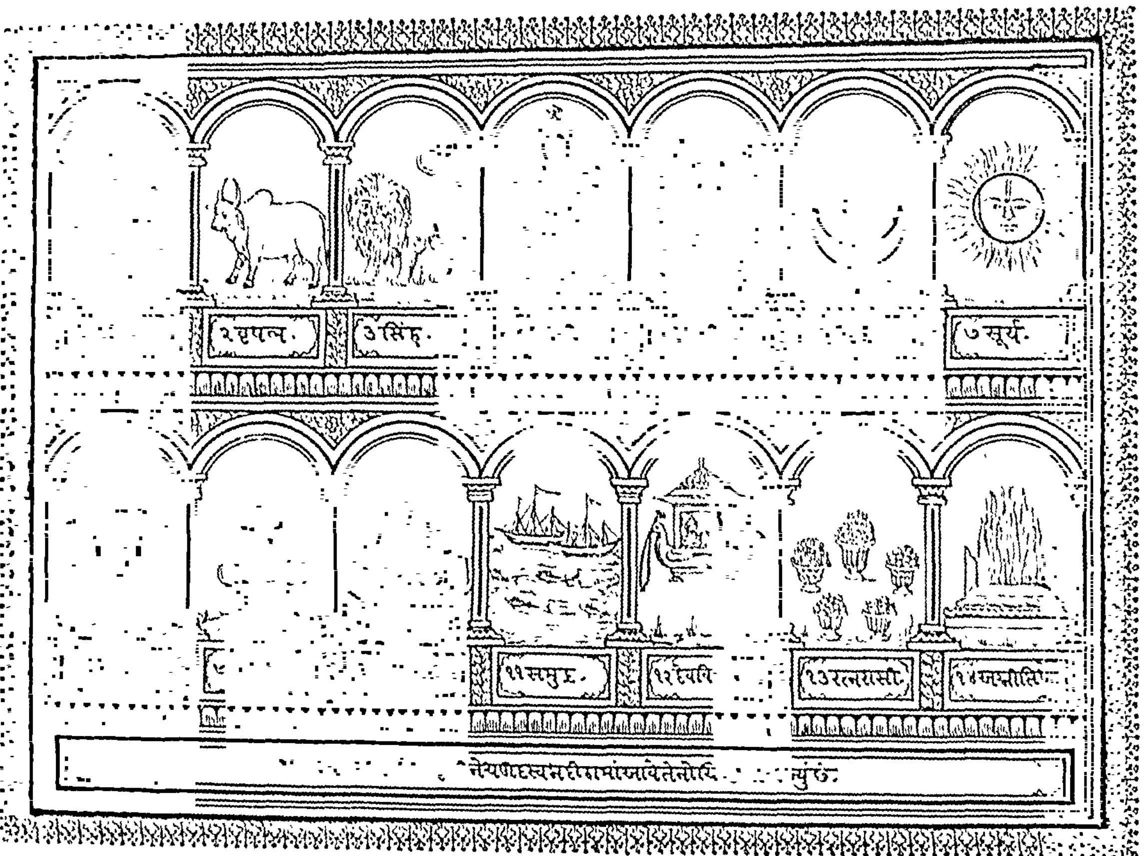


२वृषभ.
३सिंह.
७सूर्य.
११समुद्र.
१३रत्नराशी.

प्रस्तावना:

ज्ञाननी वृद्धि ज्ञानीओपर आधार राखेछे अने ज्ञानीओनी वृद्धि ज्ञानउपर आधार राखे छे. ज्ञान अने ज्ञानीओनो परस्पर कारण कार्यभाव संबंध छे. हरेक गाममां, शेहेरमां, प्रांतमां अथवा देशमां एक ज्ञानी रहेतो होय, तेना उपदेशथी बीजा केटलाएकने ज्ञान थायछे. अने जेटलाने ज्ञान थाय छे, तेओ बधा ज्ञानीओ कहेवाय छे, जेवारे ज्ञानीथी ज्ञाननो प्रसार थायछे, तेवारे ज्ञानी ज्ञाननुं कारण छे; अने ज्ञान ज्ञानीनो कार्य छे. अने जेवारे ज्ञानना प्रसारथी ज्ञानीओनी वृद्धि थायछे, तेवारे ज्ञान ज्ञानीओनुं कारण छे, अने ज्ञानी ज्ञाननो कार्य छे. यद्यपि ज्ञान अने ज्ञानीनो गुणगुणी भाव संबंध होवाथी परस्पर कार्यकारणभावमां शंका उत्पन्न थाय, केमके ज्ञान अने ज्ञानी अभेदे छे, तेथी कार्य कारणता संभवे नही; तथापि कर्मसहित जीवने ज्ञानरूप गुण उत्पत्तिवान छे, तेथी कार्यता संभवे छे; अने ज्ञानीने कारणता संभवे छे, अने ज्ञानथी ज्ञानीपणुं थाय छे, तेथी ज्ञानी कार्य छे, अने ज्ञान कारण छे, एमज विद्या अने विद्वानो तथा धर्म अने धर्मी वगेरेना पण परस्पर कार्यकारणभाव संबंध जाणी लेवा.

हरेक वस्तु सिद्ध थवामां तेना साधनोनी अपेक्षा छे. जेवारे ज्ञानरूप वस्तु सिद्ध करवी होय तेवारे तेना साधनो व्याकरण, कोश, काव्य, ज्योतिष, न्याय, धर्म, अने अन्य दर्शनविषयक नाना प्रकारना शास्त्रो, तेमज जे तेते शास्त्रोनुं अध्ययन करवानो विधि, तथा श्रवण मननादिकनी आवश्यकता छे.

प्राचीन कालमां विद्वानोनी स्मरणशक्ति अति उत्कृष्ट होवाथी, तेओ हरेक विषय
नी प्रक्रिया शृंखलाबद्ध कंठाग्र राखता हता; अर्थात् मोटा सूत्रो प्रमुख द्वादशांगीगण
मुख पाठ करी राखता हता. ते समयने विषे जोपण देवनागरीआदिक लीपीओ
विद्यमान हती, तो पण ग्रंथो लखी राखवानी घणी जरूर पडती नही; केमके ते
लमानज तेवुं हतु. पछी जेमजेम मनुष्योनी स्मरण शक्ति ओछी थती गइ, तेम
ज्ञाननी न्यूनता थवा लागी, तेथी कोइ एक समये केटलाएक विद्वानो एकठा थइने
थो लखवा अथवा लखाववानो प्रारंभ कर्यो. ते चाल चालु थया पछी तेसम
श्रेष्ठ पुरुषोए लहीआओ पासेथी अनेक ग्रंथो लखावीने तेना मोटा मोटा ज्ञान
राओ कराव्या छे; ते अद्यापि दीठामां आवे छे.

प्रथम जेवारे ग्रंथो लखवानी रीत चालु थइ, तेवारे कागद बनाववानी क
सिद्ध थइ नहोती, तेथी तालपत्र प्रमुख उपर अक्षरो कोतरीने ग्रंथो लखी राख

ता, तेवा ताडपत्र उपर लखेला ग्रंथो जोइने आश्चर्य उत्पन्न थया विना रहेतो नथी केमके ताडपत्र उपर ग्रंथ लखतां मोटी मेहनत पडे छे. पछी केटलाएक काले कागदनी कला प्रसिद्ध थइ त्यारथी श्याहीवडे कागद उपर ग्रंथो लखवा लाग्या.

यद्यपि कागद प्रमुख वस्तुओ अनादिसिद्ध छे, तथापि कोइ काले कोइ क्षेत्रमां विछेद थती जणाय छे. ते सूक्ष्म विषय पडतो मूकीने अमे इहां बाह्य विषयज ग्रहण करी लख्युं छे. ग्रंथो लखतां लहीआने मोटी महेनत पडे छे. एक ग्रंथ घणा काले लखाइने तैयार थाय तेवारे जो घणा ग्रंथो लखाववा होय तो घणोज प्रयास पडे. जेवारे जे वारे कोइ राजा प्रमुखने ज्ञानना भंडारो कराववानी इच्छा थती, तेवारे शेकडो लहीआ बेसाडीने केटलाएक वर्षो सुधी लखवानुं काम चालु राखता, तेवारे ते भंडाराओ पूरा थता हता. ते वचमां कोइ विघ्न आवीने पडे तो ते काम अधुरुं रही जाय. मनुष्य [illegible] जे तेमां कोइ मोटा कामनो आरंभ कर्यो तो ते पूर्ण थयाथी महान पुरुषना प्रारब्धनुं फल जाणवुं. तेम छतां तेवां कामो माथे उपाडीने अनेक ग्रंथो लखि शास्त्रोना भंडारना रूपमां ज्ञाननुं कायमपणुं देखाय छे. जो पण वर्त्तमान समयमां ज्ञाननी न्यूनता दीसवामां आवे छे, तो पण गत समयमां श्रेष्ठ पुरुषोए ज्ञाननी रक्षाना साधनो कर्यां राख्यां छे, तेथी ज्ञाननो नाश न थतां कोइएक काले वृद्धि थवानो पण संभव छे. पण [illegible] कोइक वस्तुनी न्यूनता तेना साधनोनी न्यूनताने लीधे थाय छे. जे वखते [illegible] मुख्य साधननी [illegible] हती, ते वखते ज्ञाननी अति वृद्धि थइ हती. अने जेवारे ते साधननी न्यूनता थवा लागी तेवारे ज्ञान पण घटवा लाग्युं, पछी ताडपत्र उपर लखवानी [illegible] पडी तेवारे ग्रंथो घणा लखायाथी फरी ज्ञाननी वृद्धि थइ. पण तेम करतां लखनाराने मेहनत घणी थवा लागी तेथी ताडपत्र उपर लखवानी [illegible] थोडी थयाथी कांइक न्यूनता थइ; तेवा समयमां कागलो नीकल्या पछी फरी ग्रंथो पण लखाइने तेओना भंडार थया, तेथी वली ज्ञाननी वृद्धि थइ. ते पण कालांतरे लखवानी मेहनतने लीधे ते व्यापार ढीलो थवा लाग्यो, ते आ समय जाणवो.

एवा कारणथी वर्त्तमान कालाश्रित युक्तिपूर्वक ज्ञानरक्षा अथवा वृद्धिना जे जे साधनो होय, तेओनुं ग्रहण करीने तेना उपयोगवडे ए शुभ कृत्य कर्यामां कांइ पण हरकत नहीं. आ समयमां ज्ञानवृद्धिनुं सर्वोत्कृष्ट साधन मुद्रायंत्रकला छे. ए कलानो मूल पायो [illegible] युरोप देशमां अन्य धर्मीओना हाथथी पड्यो छे, तो पण ते सर्व लोकोने अति उपयोगी होवाथी तेनो तिरस्कार न करतां, सर्व ज्ञाननी वृद्धिनी इच्छा करनारा मनुष्योए अंगिकार कर्यो जोये. केमके सर्वोपयोगी वस्तुनो उत्पत्ति करनार कोइ पण होय, तो पण तेने [illegible] ग्रहण करी लेवी ए नीति छे.

माटे पुस्तक मुद्रित करवानी अति उत्कृष्ट अने सद्धुधी सहेली रीतने न ग्रहण कर ने लीधे ज्ञाननी न्यूनता रूप महा हानी करी लेवी नही. पण जेम बने तेम ज्ञान वृद्धिनां साधनोने उपयोगमां आणीने ते उद्योगनो आरंभ करवो, तेमां कांईदोष न पण महोटो पुण्यानुबंधी पुण्य छे. केमके सूक्ष्म दृष्टियें विचार करीए तो एथी ज्ञान विनयं थाय छे; कारण के महोटा श्रमेथी परोपकार बुद्धिथी पूर्वाचार्योये जे ग्रंथो रेला छे; तेने अपमान आपी कोईने उपयोगमां पण न आवे, एवी रीतें छाना राखी. कवा करतां ते ग्रंथो प्रसिद्ध करी तेनो लाभ हरेक प्राणीने आपवो ए करतां बीजुं धारे रुडुं काम कोई पण जणातुं नथी. मारा विचार प्रमाणे तो जे ते प्रकारे ग्रंथो छपा नें प्रसिद्ध करवा जोयें. जेथी अनेक भव्य जीवो ज्ञानने पामे. अने ज्ञाननी वृद्धि था केमके एक वखत छपाइ गयेलो ग्रंथ हमेश कायम रहे छे; तेनो घणा काल सुधी विछे थतो नथी. कारणके जे ग्रंथनी घणी प्रतो प्रसिद्ध थईहोय, ते वधी घणा काल सु नाश थाय नही. तेम छतां जे अल्प बुद्धिवाला, अविचारिओ, ए कृत्यनो धिक्कार क छे तेओ मूर्ख, ज्ञानना द्वेषी, अने अज्ञानी जाणवा; एवा मनुष्योनी कांई पण परवा करतां में आ मोटुं पुस्तक छापवानो आरंभ करीने तेनो पहेलो भाग समाप्त कर्यो छे, अ ने बाकीना त्रण भाग पण ज्ञानीनी कृपाथी कोई विघ्न न पडतां समाप्त थाओ. तथास्तु

सूचना.

हरेक ग्रंथनी रचना करतां अथवा शोधन करतां दृष्टिदोष अने बुद्धि दोष रहे एव नियम छे. एविषे कोइ पण गर्व करी शके नही. माटे हुं सर्व सज्जनोने विनंत करुं छुं के आ जे पहेलो भाग छपाइ तैयार थयो छे, तेमां कांइ भूलचूक रही होय तो क्षमा करवी. ए पुस्तक उतावलेथी छापीने प्रसिद्ध करवाना उद्योगने लीधे फुरसद नही मल्याथी आ पहेलो भाग फरीथी वंचायो नही, माटे एनुं शुद्धिपत्र कर्युं नथी पण आ पुस्तकना बधा भाग समाप्त थया पछी शुद्धिपत्र करीश.

आनंदघनजीनी चोवीसीना आठमां श्री चंद्रप्रभजिनना स्तवननी पहेली गाथामां (सेवे सुरनरइंद) ए पद भूलथी लखायो नथी तेमज बीजा ग्रंथोमां कोइ ठेकाणे कानो कोईठेकाणे मात्रा कोइ ठेकाणे अक्षर कोइ ठेकाणे शून्य कोइ ठेकाणे ह्रस्व दीर्घनी चूको थइहसे अथवा आगल पाछल अक्षरो थइ गयाहसे ते कोइ महारी नजर चूकथी कोइ करेकशन करनारनी चूकथी कोइ उतावले वांचवाथी कोइ बुद्धि दोषथी चूको थइ गयली छे तेमज हुं अल्प बुद्धि छता ग्रंथ शोधन करता कोइ ठेकाणे आगलनी लखेली प्रतो

ता, तेवा तालपत्र उपर लखेला ग्रंथो जोइने आश्चर्य उत्पन्न थया विना रहेतो नथी केमके तालपत्र उपर ग्रंथ लखतां मोटी मेहनत पडे छे. पछी केटलाएक काले का गदनी कला प्रसिद्ध थइ त्यारथी इयाइवने कागद उपर ग्रंथो लखवा लाग्या.

यद्यपि कागद प्रमुख वस्तुओ अनादिसिद्ध छे, तथापि कोइ काले कोइ क्षेत्रमां विछेद थती जणाय छे, ते सूक्ष्म विषय पडतो मूकीने अमे इहां बाह्य विषयज ग्रहण करी ल ख्युं छे. ग्रंथो लखतां लहीआने मोटी महेनत पडे छे. एक ग्रंथ घणा काले लखाइने तैयार थाय तेवारे जो घणा ग्रंथो लखाववा होय तो घणोज प्रयास पडे. जेवारे जेवारे कोइ राजा प्रमुखने ज्ञानना भंडारो कराववानी इछा थती, तेवारे शेकडो लहीआ बेशाडीने केटलाएक वर्षो सुधी लखवानुं काम चालु राखता, तेवारे ते भंडाराओ पूरा थता हता. ते वचमां कोइ विघ्न आवीने पडे तो ते काम अधुरुं रही जाय. मनुष्यायु अल्प छे तेमां कोइ मोटा कामनो आरंभ कर्यो तो ते पूर्ण थयाथी महान पुण्यरूप प्रारब्धनुं फल जाणवुं. तेम छतां तेवां कामो माथे उपाडीने अनेक ग्रंथो लखि राख्याथी आजना कालमां ज्ञाननुं कायमपणु देखाय छे. जो पण वर्त्तमान समयमां ज्ञाननी न्यूनता दीठामां आवे छे, तो पण गत समयमां श्रेष्ठ पुरुषोए ज्ञाननी रक्षाना साधनो करी राख्या छे, तेथी ज्ञाननो नाश न थतां कोइएक काले वृद्धि थवानो पण संभव छे. पण कालांतरे हरेक वस्तुनी न्यूनता तेनां साधनोनी न्यूनताने लीधे थाय छे, जे वखते स्मरणशक्तिरूप मुख्य साधननी प्रौढता हती, ते वखते ज्ञाननी अति वृद्धि थइ हती. अने जेवारे ते साधननी न्यूनता थवा लागी तेवारे ज्ञान पण घटवा लाग्युं, एटले तालपत्र उपर लखवानी चाल पडी तेवारे ग्रंथो घणा लखायाथी फरी ज्ञाननी वृद्धि थइ. पण तेम करतां लखनाराने महेनत घणी थवा लागी तेथी तालपत्र उपर लखवानी चाल ओछी थयाथी कांइक न्यूनता थइ; तेवा समयमां कागलो नीकल्याथी फरी ग्रंथो घणा लखाइने तेओना भंडारा थया, तेथी वली ज्ञाननी वृद्धि थइ. ते पण कालांतरे लखवानी महेनतने लीधे ते व्यापार ढंढो थवा लाग्यो, ते आ समय जाणवो.

एवा वखतमां वर्त्तमान कालाश्रित युक्तिपूर्वक ज्ञानरक्षा अथवा वृद्धिनां जे जे साधनो होय, तेओनुं ग्रहण करीने तेना उपयोगवडे ए शुभ कृत्य करवामां कांइ पण प्रमाद करवो नही. चालता समयमां ज्ञानवृद्धिनुं सर्वोत्कृष्ट साधन मुद्रायंत्रकला छे; ए कलानो मूल पायो जोपण युरोप देशमां अन्य धर्मीओना हाथथी पड्यो छे, तो पण ते सर्व लोकोने अति उपयोगी होवाथी तेनो तिरस्कार न करतां, सर्व ज्ञाननी वृद्धिनी इछा करनारा मनुष्योये अंगिकार करवो जोये. हरेक सर्वोपयोगी वस्तुनी उत्पत्ति गमे त्यां थई होय, तोपण तेने निर्पक्षपातथी ग्रहण करी लेवी ए नीति छे.

माटे पुस्तक मुद्रित करवानी अति उत्कृष्ट अने सहुथी सहेली रीतने न ग्रहण करवाने लीधे ज्ञाननी न्यूनता रूप महा हानी करी लेवी नही. पण जेम बने तेम ज्ञाननी वृद्धिनां साधनोने उपयोगमां आणीने ते उद्योगनो आरंभ करवो, तेमां कांईदोष नथी पण महोटो पुण्यानुबंधी पुण्य छे. केमके सूक्ष्म दृष्टियें विचार करीए तो एथी ज्ञाननो विनय थाय छे; कारण के महोटा श्रमेथी परोपकार बुद्धिथी पूर्वाचार्योंये जे ग्रंथो करेला छे; तेने अपमान आपी कोईने उपयोगमां पण न आवे, एवी रीतें छाना राखी मूकवा करतां ते ग्रंथो प्रसिद्ध करी तेनो लाभ हरेक प्राणीने आपवो ए करतां बीजुं वधारे रुडुं काम कोई पण जणातुं नथी. मारा विचार प्रमाणे तो जे ते प्रकारे ग्रंथो छपावीने प्रसिद्ध करवा जोयें. जेथी अनेक भव्य जीवो ज्ञानने पामे. अने ज्ञाननी वृद्धि थाय केमके एक वखत छपाइ गयेलो ग्रंथ हमेश कायम रहे छे; तेनो घणा काल सुधी विछेद थतो नथी. कारणके जे ग्रंथनी घणी प्रतो प्रसिद्ध थईहोय, ते बधी घणा काल सुधी नाश थाय नही. तेम छतां जे अल्प बुद्धिवाला, अविचारिओ, ए कृत्यनो धिक्कार करे छे तेओ मूर्ख, ज्ञानना द्वेषी, अने अज्ञानी जाणवा. एवा मनुष्योनी कांइ पण परवान करतां में आ मोटुं पुस्तक छापवानो आरंभ करीने तेनो पहेलो भाग समाप्त कर्यो छे, अने बाकीना त्रण भाग पण ज्ञानीनी कृपाथी कोई विघ्न न पडतां समाप्त थाओ. तथास्तुः

सूचना.

हरेक ग्रंथनी रचना करतां अथवा शोधन करतां दृष्टिदोष अने बुद्धि दोष रहे एवो नियम छे. एविषे कोइ पण गर्व करी शके नही. माटे हुं सर्व सज्जनोने विनंती करुं छुं के आ जे पहेलो भाग छपाइ तैयार थयो छे, तेमां कांइ भूलचूक रही होय तो क्षमा करवी. ए पुस्तक उतावलेथी छापीने प्रसिद्ध करवाना उद्योगने लीधे फुरसद नही मल्याथी आ पहेलो भाग फरीथी वंचायो नही, माटे एनुं शुद्धिपत्र कर्युं नथी पण आ पुस्तकना बधा भाग समाप्त थया पछी शुद्धिपत्र करीश.

आनंदघनजीनी चोवीसीना आठमां श्री चंद्रप्रभजिनना स्तवननी पहेली गाथामां (सेवे सुरनरइंद) ए पद भूलथी नखायो नथी तेमज बीजा ग्रंथोमां कोइ ठेकाणे कानो कोईठेकाणे मात्रा कोइ ठेकाणे अक्षर कोइ ठेकाणे शून्य कोइ ठेकाणे [illegible] दीर्घनी चूकों थइहसे अथवा आगल पाछल अक्षरो थइ गयाहसे ते कोइ महाशि [illegible] नजर चूकथी कांइ करेक्शन करनारनी चूकथी कोइ उतावले वांचवाथी कोइ बुद्धि दोष [illegible]थी चूको थइ गयली छे तेमज हुं अल्प बुद्धि छता ग्रंथ शोधन करता कोइ ठेकाणे [illegible] गलनी लखेली प्रतो

ने अनुसारें लखत दोष थकी आग्रंथमां पण तेमजदोष रहीगयो हसे अथवा अनांनो गथी अज्ञानथी भ्रांतिथी ओगो अधिको अयुक्त लखाणो हसे ते बहु श्रुत गीतार्थ वांचना रायें महारो अपराध क्षमा करी उपकार बुद्धियें अशुद्धटाली सुधारीने वांचवुं केमके हुंअल्पबुधिवंत छता कोइ गुरु गम्यतुं साह्य पण नहतु तेथी पूर्वोक्त प्रकारें जे कांइ अशु द्ध दोष महाराथी थयो होय तेहतुं मिछाडुक्कडं.

आपुस्तकमां जे जे ग्रंथो नाख्याछे तेघणु करीने सुविहित गीतार्थ पूर्वाचार्योना करे लाछे तेथी हुं एवी आशाराखुंछुं जे संविज्ञपक्षी शुद्ध धर्मनारागी मार्गानुसारी सज्जनो आ सर्वोत्कृष्ट ग्रंथोने वांचवा जणवानो अन्यास करवाने चुकशे नही.

जेम धूलनी आकाश गमन करवानी शक्ति नथी तथापि पवन तेने खेंची उंचो लेइ जायछे तेम महारामां आ पुस्तकमां दाखल करेला सर्वोत्कृष्ट ग्रंथो छापी प्रसिद्ध करवा नी शक्ति नछता ए ग्रंथोनी महत्वतायेंज मने छापी प्रसिद्ध करवानो उद्योग करवाने प्रव र्त्तीव्योछे. आ पुस्तक प्रसिद्ध करवाविषे जे जे श्रेष्ट पुरुषोए पोतानी उदारता युक्त आ श्रय आप्यो छे तेओना नामनी टीप छेलानागमां उपकारपूर्वक प्रसिद्ध करवामांआवशे.

आ ग्रंथो छापी प्रसिद्ध करवावास्ते शेठ केशवजी नायक तथा मुनि महिमा सागरजियें आपेली मदतविषे



प्रत्येक पुरुषनी परीक्षा तेना अंतःकरणना परिणामोथी तथा तज्जन्य क्रियाथी थायछे. मूर्ख पुरुषना अंतःकरणना परिणामो अने तज्जन्य कृत्यो एवा होयछे के जेथी पाप कर्मज बंधाय छे, अने बुद्धिमान पुरुषना अंतःकरणना परिणामो तथा तज्जन्य कृत्यो एवां होयछे, के जेथी पुण्य कर्मज बंधाय छे. जेमके, जे पुरुष शुनकार्यनेविषे विघ्न करवानी इछा तथा उद्योग करेछे, ते मूर्ख जाणवो; अने जे पुरुष शुनकार्यनेविषे निर्विघ्नता तथा उत्तेजन आपे छे, ते बुद्धिमान जाणवो. एवो सर्व शास्त्रोनो सिद्धांत छे, ते आ [illegible] पुस्तक छपाववाना आरंनने पूर्वे श्रेष्ट पुरुषोनी सहायता मेलववाना समये प्रत्यक्ष प्रमाण वडे में जाणी लीधो छे.

जेवारे में आ पुस्तक छपाववानी सहायता लेवानो आरंन कर्यो, तेवारे केटलाएक पुरु षोएतो पोतानुं आचरण उक्त मूर्ख पुरुषनी पठे कर्युं, अने केटलाएक पुरुषोनुं आचरण उक्त बुद्धिमान पुरुषनी पठे थयुं छे. तेथी मूर्ख अने बुद्धिमान पुरुषनी परिक्षा सारी रीते अनुनव सहित करी लीधी. तेओमांना मूर्ख पुरुषोनुं नाम माराथी प्रसिद्ध करा

तुं नथी, केमके तेथी तेओने मातुं लागे, अने वली उष्टस्वभाववानुं वधारे विघ्न करवानो उद्योग करे. तेथी आ मारा श्रेष्ठ काममां कदाच हरकत पडे, एवा भयथी एविषे मौन्य धारण करीने जेओ पुण्यवान प्रभाविक पुरुषोए आ महाउत्कृष्ट ज्ञानवृद्धिरूप कार्यने उत्तेजन आप्युं छे. तेओमांना मुख्य आगेवान तो आपणा श्रावक भाईयोनी मंडली मां अंजन शिलाका जेवा महोटा कार्यो करी देशोदेशने विषे प्रख्याति पामेला शेठ केशवजी नायक छे. यद्यपि आ ज्ञानवृद्धिरूपकार्यमां द्रव्य खरचवुं तेनां आगल पर मार्ये विचरता अंजनशिलाकारूप कार्य यत्किंचित्त मात्र छे. तथापि लोकोपचारे एम ल खवामां कांई दूषण नथी. तथा जे संविज्ञपक्षी शुद्धश्रद्धावंत मार्गानुसारी, गीतार्थना रागी हता, जेमणे आ पुस्तकमां दाखल करेला ग्रंथो वांचवा भणवानो महोटो उद्यम करे लो हतो, अने गीतार्थोना करेला अपूर्व अपूर्व ग्रंथोनो शोध करवानीज रटना जेमना मनमां अहर्निश लागी रही हती; एहवा बणारशी विनयसागरजीना शिष्य मुनी महि मासागरजी अने सुमतिसागरजी ए उत्तम पुरुषो छे के जेओए आ सर्वोत्कृष्ट ज्ञानवृ द्धिरूप कार्यमां द्रव्यनी मोटी मदत करी छे. एओनुं नामस्मरण तो विद्वान पुरुषो घणे ठेकाणे करी राखशे, पण साक्षात् मुखाकृतिदर्शनस्मरण क्वचित दीठामां आ वशे. ते घणा कालसुधी कायम रहे एवा हेतुथी ए बन्ने श्रेष्ट पुरुषोनां मुखनी प्रतिमां दरेक पुस्तकना छेला भागमां दाखल करीस. केमके एमनी महोटी साह्यता मली तेवारेज आ ज्ञानवृद्धिरूप कामनो आरंभ महाराथी थयो माटे एहवा पुण्यवान पुरुषनुं दर्शन कस्वा थी पण पुण्यनो संभव छे. एवा शास्त्रना वाक्य प्रमाणे एमनी मुखाकृति सर्वोपयोगी होवाथी वधा मान्य करशे एवी हुं आशाराखुं छुं. एज कारणने लीधे शेठ केशवजी नायकना मुखनी आकृतिवालुं मुंबईना वाहेरकोटमांना भात बजारनी पासे मुखस्म रणस्थंभ कर्युं छे. पण ते चिरकाल स्थायी कहेवाय नही. अने पुस्तकांतरगत मुखस्मरण चिरकाल स्थायी छे. ते आ पुस्तकमां मोटा उपकारसाथें गुंथन करिस. आवा उत्तम कामोने उत्तेजन आपनारा उत्तम पुरुषोनी स्तुति करवी एम श्री विनयविजयजी उ पाध्याये शांतसुधारस ग्रंथमां चउदमी प्रमोद भावना भाववाने अधिकारे कह्युं छे.

एवाज पुण्यप्रभाविक पुरुषोनी पंक्तिने विषे सुशोभित भट्टारक श्री विवेकसागरसूरि तथा श्री सूरतना मुनि हुकुमचंदजी महाराज एओए आ ज्ञानवर्द्धक कृत्यमां मोटी उदारता करी घणो उत्कृष्ट आश्रय अपाव्योछे तेथी मोटो उपकार मानीने नामस्मर ण गुंथन करुं छुं. तेमज मुनी मूलचंदजी महाराज श्री अमदावादवालायें पण आ सर्वोत्कृष्ट कामने मदत करवामां कसुर राखी नथी तथा मुनि नीतिविजयजीनो पण तेवीज रीतें आ काममां उद्देश छे.

श्री मुंबइना श्रावक मंडळमाना शेठ भेलाभाइ पदमशी, शेठ वर्द्धमान पुनशी, शेठ भोजराज देशल, शेठ परबत लधा, शा० जादवजी परबत, शा भोजराज नरपाल, शा मुलजी देवजी, एओए आ पुस्तकने पोतानी उदारतासहित मोटो आश्रय आपेआथी पुण्य प्रभावना दर्शनार्थ नामस्मरण गुंथन करुं छुं.

श्री अहमदाबादवाला शेठ दलपतभाई भगुभाई, शेठ मयाभाइ प्रेमाभाई एओनी ज्ञानवृद्धिविषे उत्सुकता जोइने आ पुस्तकनी साथे नामस्मरण गुंथन करुं छुं.

श्री भरुचवाला शेठ अनुपचंद मलुकचंद, तथा साणंदवाला शेठ शाकलचंद हुकमचंद एओए पण पोतानी पुण्य प्रभावना सूचक उदारतायुक्त ज्ञानवृद्धिनेविषे उत्कंठा बतावी छे, ते जोइने मोटा उपकारसाथेंनामस्मरण गुंथन करुं छुं.

बीजा पण जेओए स्वशक्त्यनुसार उदारतायुक्त आपुस्तकने आश्रय आप्यो छे, ते ओनुं नामस्मरणार्थ लिस्ट पुस्तकना अंतनेविषे गुंथन करवामां आवशे.

विज्ञापना.



सर्व जैनधर्माचार्य, उपाध्याय, साधु, अने समस्त श्रावकश्राविका मलि चतुर्विध संघ एओने अनुक्रमे यथायोग्यरीतें अति नम्रतापूर्वक हुं दासानुदास अने चरणकिंकर विनंति करुंछुं के जेम पंगु मेरुपर्वतनी शिखरपर गमन करवानी इच्छा करे, अथवा अतारु पुरुष नौकादिकनी सहायता विना समुद्रनो पार लेवा चाहे, जेम कंगाल पुरुष पृथ्वीनुं राज्य संपादान करवानी अभिलाषा धरे, तेम में मारी अल्पमति छतां आ महा दुस्तर कृत्यनो आरंभ कर्योछे, ते आप सर्व जिनधर्मस्तंभना अनुग्रहथी संपूर्ण थाय तो हुं कृतकृत्य थाउं मारी बुद्धिनी एवी शक्ति नथी के हुं स्वतंत्र पूर्वाचार्य रचित ग्रंथोनुं यथार्थ शोधन करी शकुं. तो पण स्वमति अनुसार जेटलुं बन्युं तेटलुं लक्ष राखीने शुद्धतानो उद्योग कर्योछे. तेम छतां आ प्रथमावृत्ति होवाथी अने अति त्वराथी छापवानुं काम चलाव्याथी केटलाएक दृष्टिदोष अने बुद्धिदोष रहीगया हशे, तेनुं अवलोकन करीने सर्व श्रेष्ट पुरुषो क्षमापूर्वक सुधारीने वांचशे, एवी मारी पूर्ण आशा छे. केमके, जेम बालक पोताना जननी तथा जनकनी आगल जो पण बोबडुं तोतडुं बोले, तोपण तेओ क्षमा करी सुधारी लेईने आनंदयुक्त मुखमुद्रा वडे अधिक प्रेमदर्शावे छे. तेमज मारा आ कृत्यमां कोइ प्रकारनी न्यूनता जोईने पूर्वोक्त उत्तम पुरुषो मारीउपर क्षमा करीने पुत्रवत् प्रेम दर्शाववो एवी मारी विज्ञापना छे.

श्री

प्रकरणरत्नाकर नामना पुस्तकना प्रथम भागमांहेला प्रकरणोनी स्थूल विषयानुक्रमणिका प्रारंभः

॥ प्रथम श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत श्रीमंधरस्वामीनी वीनतिरूप साडात्रणसो गाथाना स्तवन मांहेला स्थूल विषयोनी अनुक्रमणिका.

पहेलाढालमां शुद्धमार्ग ओलखवारूप श्रीमंधरस्वामीनी वीनतिकरी. तेमां सूत्रथी विरुद्धाचारेंचालनारा, विरुद्धपरूपणाकरनारा, अने पंचमकाले संघयण प्रमुखनादोषकाढनारा, तथा जेरीतें घणालोक चालता होय तेरीतें चालनारा अने लोचादिक कष्टकरवेज जैनमार्ग छे एवुं बोलनारा तथा द्रव्यलिंगनेज प्रमाणकरनारा अने साधुनो वेषथापी असाधुने नमस्कारकरनारा इत्यादिकोने सिद्धांतानुसारें यथाविधियें प्रवर्त्तवाने उपदेशकर्योछे १

बीजाढालमां पोते निर्गुणीछतां गुर्वादिकथी तरवानो आसरो राखनारा तथा जे आचार्यना संघाडामां रह्याछे अने गच्छथी बाहेर निकल्यानथी ते साधु कहियें एम बोलनारा, तथा भगवति सूत्रमां कहेला बकुस कुशीलना उदाहरण आपी पोतानुं चारित्र सिद्धकरनारा, तथा जे पापकर्याहोय ते पडिकमणुं करता त्रुटीयें एम बोलनारा, इत्यादिकोने शीखामणआपीछे १

त्रीजाढालमां नियतवासविहार करनारा, तथासाधुनेचैत्यपूजा करवी एवुं बोलनारा, अने आर्यानो आण्यो आहार करनारा, तथा विगयनो प्रतिबंधकरनाराओने सिद्धांतोनी साखे प्रतिबोध कर्योछे.. .. ..

चोथाढालमां जेपोतानी साखेज व्रतपालवानुं कहेछे, अने लोकभेलाकरी धर्मोपदेश आपवानी मनाइ करेछे, तथा श्रावकने गूढार्थ न समजाववा तथा नवा ग्रंथ पण न जोडवा एम कहेनारा, अथवा पूर्वाचार्यें ग्रंथ कीधा एटलाज बसछे, इत्यादिक वचनोना बोलनारा खल लोकोने निरुत्तर कर्याछे

पांचमांढालमां जे गुरुनो तथा गच्छनो प्रतिबंध छांडी उन्मार्गपरूपेछे, तेने सिद्धांतनीसाखे गुरुकुलवासमां वसवुं एम उपदेश्युंछे .. ..

छठाढालमां गीतार्थ वर्णव्याछे. जो प्रथम ज्ञान होय तो पछे दयापाली सकाय छे, नहींकां अगीतार्थ द्रव्यक्षेत्रकालादिक उत्सर्गअपवाद, कल्प अकल्प सचित्त अचित्त, मिश्र योग्य अयोग्य, तथा भद्रक अभद्रकक्षेत्र देश तथ

अनुक्रमणिका

॥ श्रीमद्देवचंद्रजीकृत आगमसारनी अनुक्रमणिका ॥

॥ श्रीमद्देवचंद्रजीकृत नयचक्रसार तेनी अनुक्रमणिका ॥

॥ चोथोग्रंथ आनंदघनजीकृत चोवीसी तेना बालबोधनी अनुक्रमणिका ॥



॥ पांचमो ग्रंथ द्रव्यगुणपर्यायनोरासतेनी अनुक्रमणिका ॥

॥ आठमो ग्रंथ अध्यात्मसार तेनी संक्षेपथी अनुक्रमणिका. ॥

नवमो ग्रंथ तत्वानु बोधनी अनुक्रमणिका

दशमो ग्रंथ समाधिशतक तेनी अनुक्रमणिका.

अग्यारमों ग्रंथ समताशतक तेनी अनुक्रमणिका.

बारमो ग्रंथ दिग्पट चोराशी बोल तेनी अनुक्रमणिका.

तेरमोग्रंथ श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ जिनस्तोत्र कोइ महापंडित रचित

चौदमो ग्रंथ श्रीपार्श्वनाथाष्टक मलुकचंद्र रचित.

श्री पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः

अथ

श्रीमद्यशोविजयजी उपाध्यायकृत साडात्रणसोगाथानुं स्तवन अर्थसहित प्रारंभः

प्रथम अर्थ कर्तानुं मंगलाचरण.

पार्श्वनाथपदद्वंद्वं, नत्वा सीमंधरप्रभुम्

स्तवस्य वार्त्तिकं कुर्वे, स्वपरानुग्रहाय वै. १

हवे अर्थकर्तानी सूचना.

एस्तवन माहेली गाथाओना अर्थ अन्वयकरी कहीशुं पण पाधरो नही कहेवाय माटे पद आगल पाछल जोडीने पोतानी बुद्धीयें विचारी जोशो तो खरोअर्थबेशसे

ढालपेहेली:—एछडिकिहांराखी; ए·देशी

श्रीसीमंधरसाहिबआगें ॥ विनतडीएककीजें ॥

मारगशुद्धमयाकरीमुझने ॥ मोहनमूरतिदीजेंरे ॥

जिनजी, वीनतडीअवधारो ॥ १ ॥ एआंकणी

अर्थ ॥ श्रीके० चोत्रीशअतिशय अने प्रातिहार्यादिक बाह्यलक्ष्मी तथाकेवलज्ञानादिक अभ्यंतरलक्ष्मी तेणेकरीयुक्त एहवासीमंधरनामेसाहिब तेआगलएकज.शुद्ध मार्ग ओलखवारूप अद्वितीयवीनतिकरीयें तेमाहराउपर मयाके० कृपाकरीने शुद्ध मार्गजे रत्नत्रयरूपमोक्षमार्ग अथवाअनेकदर्शनी वितत्थसंवादी; तथा विपरीतस्थापएकरनारा स्वदर्शनीने; साचूंमानवुं ते अशुद्धमार्गकहीयें तेसर्वओवेखीने स्याद्वादसे लीयें जैनमार्ग ओलखवोते शुद्धमार्गकहीयें तेशुद्धमार्गसेवी अनेकभव्यजीव स्वसंपदाभोगीथया एहवो शुद्धमार्गते हे मोहनमूरतिके० वल्लभमूरति मुझनेदीजेके० मुझनेद्यो आपो एवीनती करीयेंछैयें माटे हे रागद्वेषनाजीतणहार जिनजी तेअमारीवीनतीअवधारोके० केवलज्ञानेकरीजाणो ॥ १ ॥

चालेसूत्रविरुद्धआचारें ॥ भापेसूत्रविरुद्ध ॥ एककहेंअमे
मारगराखूं ॥ तेकेममानूंशुद्धरे ॥जिन० ॥वी० ॥२॥

अर्थ ॥ केटलाएकप्राणीसूत्रथी विरुद्धआचारेंचालेछे, तथा भापेके० परुपणाकरेछे तेपणसूत्रविरुद्ध; वलीलोकनेकहेछेजे अमेमार्गराखीयेंछेयें जोअमेछैयेंतोमार्गचालेछे एहवुंबोलेछे माटेदेशहु तेवातने अमेंशुद्धकेमकरीमानियें इहांसूत्रतेशुं तेलिखेछे ११ अंग १२ उपांग १० पयन्ना ६ छेद ४ मूलसूत्र १ नंदी १ अनुयोगद्वार एवं ४५ आगमजाणवा यतः 'एकारसतहबारस ॥ अंगुवंगाणिदसपयन्नाणी ॥ छछेयाचउमूला ॥ नंदीअणुओगपणयाला ॥ १ ॥ तथा तेनीभाष्य चूर्णि निर्युक्ति वृत्ति अने मूलसूत्र सहीत पंचांगीनें सम्मतजे पूर्वाचार्यप्रणीत धर्मरत्नादिप्रकरण तथा जेनंदीसूत्रमां कह्या अने हरीभद्रसूरि उमास्वातिवाचक प्रमुखकृतग्रंथादिक तेसर्वेसूत्रमांहे जाणवां केमके पूर्वधरपदधातेकालें सूत्रविसरवाहता तेमांहे जेटलासांभल्या तेसूत्र लिख्या अनेजे अर्थजाण्या तेहना प्रकरणप्रमुखबांध्या तेपणसूत्रानुजायी माटेसूत्र कहींयें तोतेथीविरुद्धकरेछे तथाबोलेछे तेवुंबोलतानें शुद्धकेममानुं ॥ २ ॥

आलंबनकूडांदेखाडी ॥ मुगधलोकनेपाडे ॥ आणाभंग
तिलकनेकाले ॥ थापेआपनिलाडेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एवेविपरीतचालतां कोईककहेछे जे आंमकांचालोछो तेहने पाछोजवाब आपतां कूडांके० खोटाआलंबनदेखाडे जे आपंचमकालें संघयणधृतिप्रमुखपूर्वे पुरुषजेहवांकिहांछे एमकहिने मुगधके० मुग्धलोकने पाडेके० अज्ञानमार्गपाडेछे एहवापुरुष ते आणाके० जिनाज्ञा तेहनोजेभंग तद्रूपजेकालुंतिलक तेपोतानेकपालें धरेछे एटलेजिनाज्ञालोपेछे निवारेकोइकचोक्खुं जे आज्ञाभंगनुंदूषणदीधूंतेखरुं पण सर्वदा विधिनोंखपकरीयेंछेयें नही ॥ ३ ॥ ० ० ० ० ० ० ०

विधिनोनांकलियुगमांहोवे ॥ तिरथनोउछेद ॥ जिमचाले
तिमचलवेंजइयें ॥ एहधरेमतिभेदरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अनेविधिजोवांनो कलियुगके० अन्यतिर्थीएहनेकलियुगकहेछे अनेजैन एहनेदुषमकालकहेछे तेकलियुगमांतीर्थनोउछेदथाय केमके तमेअविधिनीनांकहोछो अने विधिसेवोपावनही तेथीतीर्थविछेदजाय माटेजेमचाले तेमचलाव्याजैयें एटले

आजीचापाचिपीकरीयेंनही नरमगरमचलावियें एरीते कोइकपोतानी मतिनाजेदएम जधरीरह्यांछे ॥ ४ ॥

इमजांपितेमारगलोपे ॥ सूत्रक्रियासविपीसी ॥ आचरणासू
धीआचारिचें ॥ जोइयोगनीवीसीरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एह्वावचनबोलीने जेविधिमार्गनेलोंपेछे तेप्राणीयेंसूत्रक्रियासर्वे पीसीके० दलीनाखी तेमाटे आचरणाके० क्रियातेशुद्धआदरीयें तेश्रीहरीभद्रसूरियें योगनीवी सवीसीकरेलीछे तेमाहेली सत्तरमीवीसीमांहेकह्युंछे यतः ॥ तिहसुत्तेआइ ॥ विणा लंवणंजस्सएमेव ॥ सुत्तकिरियाइनासो ॥ एसोअसमंजसत्तविहाणो ॥ १ ॥ एगाथा जोइने ॥ ५ ॥

पंचमेंआरेजिमविपमारे ॥ अवधिदोपतिमलागे ॥ इमउपदेश
पदादिकदेखी ॥ विधिरसिउजनजागेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ पांचमांआरामांहेजेमविपमारेछे तेमपांचमांआरामांहे अविधिदोपपण लागेछेएटलेएज्ञावजे पांचमांआरामांपांचविपकह्याछे तेपणजीवने असत्यप्रवृत्तिनाहेतुछे यतः ॥ १ दुस्सम २ हुंमा सप्पिणि ॥ ३ दाहिणपास्समि ४ नासगहजोउ ५ तहकणपरकीजीवा ॥ पंचविहपंचमेअरए ॥ १ ॥ एगाथासुयणासीत्तरीनीछे एजिम पांचविपकह्यां ते मारेछे तिमपांचमेंआरे जेअविधि दोपलागे तेपणमारेजछे अथवा चोथेआरे जिमविपखाधुंमारे तेम पांचमेआरेपण विपखाधुंमारे तिमअविधिदोपप ण जेम चोथाआरामांहेलागे तेमपांचमेंआरेपणलागे यतः "मारेइविसखुत्तं ॥ ज हाचउथारएतहादुसमं ॥ तहअविहिदोपकणीउः ॥ धम्मोविचदुग्गाइहेऊ ॥ १ ॥ इतिहितोपदेशमालायां एमउपदेशपदादिकग्रंथमांहेपाठदेखीने विधिनोरसियो जन के० लोकहोयते जागेके० विधिकरवानेसावधानथाय ॥ ६ ॥

कोइकहेजिमबहुजनचाले ॥ तिमचलियेंसीचर्चा ॥ मारगमहा
जनचालेंभाख्यो ॥ तेहमांलहीयेंअर्चारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीकेटलाकतोएमकहेछे के जेमबहुजनके० घणालोकचाले तेरीतेचा लीयें केमके जेघणाकरताहसे तेरुडुजकरताहसे तोजाजीचर्चासीकरोछो अमेंपोतानी मतियेंकरत्ताछइये तोनलेचर्चाकरो कारणके मार्गतोतेहनेजकहीयें के जेमार्गे महा

जनके० महोटालोकना समुदायचालेते तेहनीचाल तेनेमार्गकहीयें इम जाण्योके० ग्रंथमांहेंकह्योछे यतः ॥ महाजनोयेनगतः सपंथाइति तोतेमहाजननीचालेंचालतां थका लहीयेके० पामीयें अर्चाके० पुजा इति ॥ ७ ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

एपणबोलमृषामनधरीयें ॥ बहुजनमतआदरतां ॥ छेहनआवे

बहुलअनारय ॥ मिथ्यामतमांफिरतांरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवेउत्तरआपेछे के एबोलजेकह्यो तेपणमृषाके० जूठो चित्तमांहेंधारीयें तेहनोहेतुकहेछे एटले बहुजनमतआदरतांके० घणालोकनोमतआदरतां तो बहुल अनारयके० घणाजनतोअनार्यछे तेहनो छेहके० पारपामीयेंनही मिथ्यामतमांहेफि रतांरे० अनार्यछे तेसर्वेमिथ्यामतिछे माटे तेमांहेजमतांपारनपामीयें इतिभाव॥८॥

थोडाआर्यअनारयजनथी ॥ जैनआर्यमांथोडा ॥ तेमांपणपरि

णतजनथोडा ॥ श्रमणअलपबहुमोडारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ थोडाआर्यअनारयजनथीके० अनार्यलोकथी आर्यलोकथोडाछे केम के यद्यपिहजारदेशमांहें आर्यदेशतोसाडीपचवीसजछे तेवलीआर्यदेशमांपण जैनना मधरावे एहवालोकथोडाछे वलीजैननामधरावे तेमांहेपण परिणतके० जैनवासना दें करीवासीतछे एहवाश्रद्धावंत स्याद्वादसैलीनाजाणथोडा वलीतेपरिणतजनमांहे पण श्रमणके० मुनीराज तेअलपके० घणाथोडा अने बहुमोडाके० मात्र मस्तक मुंडनकराव्युं पणगुणविनाना एहवालोक बहुजाणवा ॥ ९ ॥ ❁ ❁ ❁

भद्रबाहुगुरुवदनवचनए ॥ आवश्यकमांलहियें ॥ आणाशु

धमहाजनजाणी ॥ तेहनीसंगेरहियेंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ भद्रबाहुस्वामीनामुखनां एवक्षमाणवचनछे ते आवश्यकसूत्रमांहेंकह्युंछे निर्दोषी लहियेंके० पामीयें जे आज्ञाशुद्धतेहिज महाजन एटलें जिनाज्ञापालेतेहि जमहाजनजाणीनें तेना महाजननीसाथें वरतीयें गाथा ॥ "एगोपसाहुएगो; पसाहु णीसावओसहीवा; आणाजुत्तोसंघो, सेसोपुणअट्ठिसंघाओ " ॥ १ ॥ इतिआवश्यक वचनात् ॥ १० ॥ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁ ❁

अज्ञानीनविहोवेमहाजन ॥ जोपणचलवेटोलुं ॥ धर्मदासग

णिवचनविचारी ॥ मननवकीजेभोलुंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ पणजेअज्ञानीनोसमुदायहोय अनेजो ते टोलुंके० गछनेचलावे तोहेपण तेहने महाजन न कहीयें एहवुं धर्मदाशगणीनो वचनविचारीने मनने जोडूंनकरीयें एटले अज्ञाने धर्माधर्म नकरीयें यतः "जजयईअगीयछो" इतिवचनात् ॥ ११ ॥

अज्ञानीनिजछंदेचाले ॥ तसनिश्रायेंविहारी ॥ अग्यानीजो
गछनेचलवे ॥ तेतोअनंतसंसारीरे ॥ जिन १ ॥ वी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेअज्ञानीपुरुष ते निजछंदेके० पोताना अभिप्रायेंचाले तथा ते अज्ञानीनीनिश्रायें जे विहारीके० विचरे तेपण अज्ञानीजहोय तो एहवो अज्ञानी अगीतार्थ थको जे गछनेचलावे तेतोअनंतसंसारी जाणवो यतःजंजयइअग्गियछो॥जंच अग्गियछनिस्सियोजयई;वट्टावेइयगछं,अणंतसंसारओहोई॥इत्युपदेशमालायां॥१२॥

खंभखंभपंभित्तजेहोवे ॥ तेनविकहीयेंनाणी ॥ निश्चितसमय
लहेतेनाणी ॥ समतिनिसहिनाणीरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जे खंभखंभपंमितके० ग्रंथग्रंथमांहेथी थोमीथोमी वातसीखीने पंमितपणो जेहनेहोय तेपुरुषनेज्ञानीनकहियें यतः "जोसुत्तमहमुनयं ॥ समहीजंतेगुरुकम्मविहीणो; नोजन्नईसोनाणी; अछमयछाणमूढमणो" ॥ १ ॥ इतिआवश्यकमाहाभाष्ये माटे निश्चितसमयके० निश्चेंसिद्धांतनीवातने लहेके० जाणे ते नाणीके० ग्यानीकहीयें एटले गुरुक्रमागत निश्चयव्यवहारसहीत स्याद्वादसैलीयें ज्ञानथयुंहोय ते सिद्धांतनिश्चित ज्ञानकहियें एवात समतिनीके० समतितर्कशास्त्रनी सहिनाणीके० नीशानीछे गाथा ॥ "जोनिछयसमयन्नूं ॥ सववहारसमयमासज्ज ॥ गुरुपारतंत लछव; नयनिउणोगाहणाकुसलो" इति ॥ १३ ॥

जिमजिमबहुश्रुतबहुजनसंमत ॥ बहुशिष्येंपरवरिउ ॥ तिमतिम
जिनशासननोवयरी ॥ जोनविनिश्चयदरीउरे ॥ जिन० वी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जिमजिम बहुश्रुतके० घणोभण्यो अने बहुजनसमतके० घणालोकने मानवायोग्यथयो वलीबहुशिष्येंपरवर्योके० घणाचेलाचांटिकर्यां तिमतिम जिनशासननोवयरीके० सिद्धांतनोशत्रुजाणवो जो निश्चयज्ञाननो दरिउके० समुद्रनहोयतो. अनेजे निश्चेंज्ञानीहोय तेहनेतोसर्वलेखेछे यउक्तं ॥ जहजहबहुस्सुअसमउ ॥ सीसगुण

संगविहांय ॥ अविणीछिर्ठअसमए ॥ तहतहसिद्धंतपमिणीतं ॥ इत्युपदेशमालायां तदा पंचवस्तुकेपिच ॥ १४ ॥

कोइकहेलोचादिककष्टे ॥ मारगभिक्षावृत्ति ॥ तेमिथ्यानवि मारगछेवे ॥ जनमननीअनुवृत्तिरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ केटलाएकजनोएमजकहेछे जे लोचादिककष्टछेके० लोचकरावबा उघाडे पगे चालवा इत्यादि कष्टकरवेकरीने मारगके० मुनीमारगजाणवो ... ते मार्गछे एहवुंजेकहेछे तेमिथ्याके० खो... मार्गनहोय केमके आत्मार्थविना जनमननीअनुवृत्तिके० लोकनाम ... मार्गनहोय इतिभाव गाथा ॥ कष्टकरेइत्तिबं ॥ धम्मंधारेइ ... ॥ ... " ॥ १ ॥ १५ ॥

जोकष्टेमुनिमारगपावे ॥ बलदथाएतोसारो ॥ भारवहेजेता ... ॥ ... ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १६ ॥

अर्थ ... विना कष्टकरतां मुनीनोमारग पामे तो तीर्थंच बलद ... पण ... तेवोज सारोके० ... बलदक ... निरवाह्नकरे वली तावडेके० तडकेजम ... समतोके० सहनकरेछे ॥ १६ ॥

... ॥ बकुलचरणीजनसिक्षा ॥ पूरवनवत्र ... ॥ पंचवस्तुनीशिक्षारे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १७ ॥

अर्थ ... वर्तमानकालेपण अछुन अनेअनागतकालेपणअछुन तेपा ... पामे बकुलचरणीके० वीर्यनेहणे एहवी जि ... तेबकुलचरणीशिक्षाकहीयें ... तेपापानुबंधीपापें बलद ... तेमांकह्युंछे गाथा ॥ "धारि ... ॥ ... आणाणिणीयजाण ॥ सापमि ... " ॥ १ ॥ ... निम्कंधकनिघायं ॥ ... पणिगामा ॥ ... " ॥ २ ॥ इतिकादशमुहणी ॥ वामीयाविंदुरा

गह्णंमि ॥ मायाएकेइपाणी ॥ तेसीएयारिसंचह्नोई ॥ ३ ॥ चेइकणघरवासं ॥ तस्सफलंचेवमह्नापरतंता ॥ नगिह्निनयपव्वइ्या ॥ संसारपवट्टगाजणिया ॥४॥ ॥ १७॥

कोइकहेअमोंलिंगेतरसुं ॥ जैनलिंगछेवारु ॥ तेमिथ्यानविगु
णविणुंतरियें ॥ भुजविणनतरेतारुरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ ह्वे कोईकहेछेजे द्रव्यलिंगतेह्निजप्रमाणछे एटले लिंगजेउंगोमुह्पति तेथी तरीसंसार पारपामीसुं केमकेजैननोलिंगते वारुके० सुंदरछेतेनेगुरुउत्तरकहेछे केतेमिथ्याके० खोटुछे कारणके गुणविना एकलोमात्रलिंगधारणकरेथी तरायनह्नी तेह्नोदृष्टांत जेम तारुपुरुषते भुजाविनानदिप्रमुखतरीशकेनह्नी ॥ यदुक्तं ॥ वंदनावश्यके ॥ शिष्यवचनं ॥ "सुविह्नियडविह्नीयंवा; नाह्नंजाणामियंखुछउमछो; लिंगंतुपूययामि ॥ तिगरणसुधेनावेण" ॥ १ ॥ प्रत्युत्तर ॥ "माह्नफइतेलिंगपमाण ॥ वंदाह्नि निन्ह्एतुमेसंवे ॥ एअवंदमाणस्स ॥ लिंगमविअप्पमाणंते ॥ इत्यादि ॥ १८ ॥

कुटलिंगजिमप्रगटविमंवक ॥ जाणीनमतदोष ॥ निधंवसजा
णीनेनमतां ॥ तिमजकह्योतसपोषरे ॥ जिन ० वी० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ जेम विमंवकजे नाटकीआ प्रमुख तेह्नो जे कुटलिंगके० खोटोवेश तेप्रगट पणेंजाणीनें एटलेकोइकनाटकीयो साधुनोवेषलाव्यो तेखोटोवेशछे एमजाणताथकां जोतेह्नेनमीयेंतोदोषलागे तथालोकह्नासीप्रमुखपणकरे तेमाटे निद्धंधस जेप्रवचनोपघातक निरपेक्षक केवललिंगधारी पासह्नादिकजाणीने तेह्नेनमीयें तो तिमजके० ते पूर्वोक्तनाटकीयासाधुनीपरे तसपोषके० तेदोषनोपोषकह्योछे यदुक्तं ॥ "जह्वेलंवुगलिंग ॥ जाणंतस्सनमउह्वइदोसो ॥ निद्धंधसमित्तिनाउणं ॥ वंदमाणेधुवो दोसो ॥ १ ॥ इति वंदनावश्यके ॥ एरीतेआचार्यें लिंगअप्रमाणकह्युं ॥ १९ ॥

शिष्यकहेजिमजिनप्रतिमाने ॥ जिनवरथापीनमियें ॥ साधुवेस
थापीअतिसुंदर ॥ तिमअसाधुनेनमियेंरे ॥ जिन० वी० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ तेवारें शिष्यवोल्युं जे जिमजिनेश्वरनीप्रतिमामांह्ने ज्ञानादिकगुणनथी अनेतेह्नेतीर्थंकरनीबुद्धीयें नमस्कारकरतां मह्नोटोलाभथायछे मह्नोटीनिर्जराथायछे यथाआवश्यके शिष्यवचनं:- ॥ तित्थयरगुणापडिमा ॥ सुनथिनिस्संसयंवियाणंतो ॥ तित्थयरुत्तिनमंतो ॥ सोपावइनिज्जरंवीउलं ॥ १ ॥ इति ॥ तेमअतिसुंदर एह्वो सा

धुवेसयापी थसाधुनेपणनमियें एटले गुणविनानीजिमजिनप्रतिमाछे तेहनेनमता निर्ज्जरायाय तेमपासछादिकमांजोसाधुनोगुणनथी तोपणसाधुनोवेपतोछे माटेजोपो तानुंमनशुद्धछे तो तेहवानेनमतांज्ञानथाय कारणके ज्ञानअध्यवसायेट तेतो पोता नाअध्यवसायआश्रीछे उक्तंच ॥ लिंगंजिणपन्नत्तं ॥ एवनमंतस्सनिज्जराविउला; जं इविगुणविप्पहिणं, वंदइअज्झप्पसोहिए ॥ १ ॥ इतिशिष्यवचनं ॥ २० ॥

भद्रबाहुगुरुबोलेप्रतिमा ॥ गुणवंतिनहीदुष्ट ॥ लिंगमांहेवे
षानादीसे ॥ तेतोमानिअदुष्टरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ हवेआचार्य उत्तरआपेछे जे श्रीभद्रबाहुगुरु आवश्यकमां एमकहेछे के प्रतिमा गुणवंतिनथी तेमदुष्टपणनथी मांटे तेहने गुणवंतिमानियें एटले अदुष्टप णानो आरोपकरियेंतोथाय अनेलिंगमांहेतो गुणतथादोष एवेवानादेखायछे तेतुंहे अदुष्टके० गुणवंत शिष्यमान इतिगाथार्थ । हवेएनुभावार्थकहेछे जे जिनप्रतिमामां हेगुणनथी तेमदोषपणनथी माटेपोताना अध्यवसायनीशुद्धीयें नमतांज्ञानथाय इ हांकोइकहेसेजे परिणामेज्ञानथायछे तेवारें प्रतिमानुंसुंकामछे तेहनेकहीयें जे शुद्ध परिणामनोहेतुछे प्रतिमाजछे तेवारेतेकहेशे जे साधुनोवेषतेपण शुद्धपरिणामनोहे तुछे तेहनेकहेवुंजे साधुवेषपुरुषपणुं ते प्रतिमाने बराबरनथाय केमके प्रतिमा ह जारोगमेजोइयें पणसर्वएकाकारछे सावद्यक्रिया नथीकरती तेमनिरवद्यक्रियापण न थीकरती अनेसाधुलिंग तो कोइकस्थानकें सावद्यकर्मकरतोदेखीयें तथाकोइकस्था नकें निरवद्य शुद्ध चारित्रपाळतोदेखीयें माटेबराबरनथाय अनेजिनप्रतिमामांहे जि नगुणनो आरोपकरीने परिणामकरतां निर्ज्जराथाय पण पासछादिकने वंदनाकरतां कोनागुणसंभारीस तेवारेतेबोल्यो जे बीजा रुडासाधुना गुण आरोपकरीने परणाम करिशुं तेहनेकहेवेजे निरगुणीनेविषे गुणनोआरोपथायनहीं अने जो गुणनुं आरोप करीये तो विपर्यासथाय अनेजेविपर्यास तेतोकर्मबंधनुंहेतुछे तेमाटेजिहांगुण त था दोषनहोय तिहांआरोपथाय पणअन्ययाआरोपनथाय यदुक्तं वंदनावश्यके ॥ संतातिथ्थयरगुणा ॥ तिथ्थयरेतेसिमंतुअज्झप्पं ॥ नयसावज्जाकिरिया ॥ इयरेसुधु वासमणुमन्ना ॥ १ ॥ चो० ॥ "जहलावञ्जाकिरिया ॥ नत्थिपडिमासुएवमियरा हि ॥ नयलावेनहीकलं ॥ अदहोइअहेउयहोइ ॥ २ ॥ आचा०कामंउभयाभावो ॥ तहविफलंअत्थिमणविसुद्धीए ॥ तिगुणमणविसुद्धीए ॥ कारणंहुंतिपडिमाउ ॥ ३ ॥ "जहवीरतरनिमाइगुणा ॥ मुणीगुणसंकप्पकारणंलिंगं ॥ उभयमविथ्थिलिंगे । नयप

मिमात्तृनयंअिं ॥ ४ ॥ नियमाजिणेसुअगुणा ॥ पमिमासुळस्सजेमणेकुणइ ॥ अगुणोउवियाणंतो ॥ कंनमउमणेगुणेकाउ ॥ ५ ॥ इत्यादिवलीएहनोविचार वृहत्‌वृत्तियीविचारजो ॥ २१ ॥

कोइकहेजिनआगेमांगी ॥ मुक्तिसारगअमेलेसुं ॥ निरगुणनेप
णसाहेबतारे ॥ तसभक्तिगहगहिसुंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ हवेकोइकएमकहेने जे जिनेश्वरआगळें मुक्तिमार्गेअमेमांगीलेसुं केमके निरगुणनेपण साहेबतारशे तयातेहनीभक्तिमां गहगहिसुंके० हरपपामिसुं इतिगाथार्थ भावार्थतोएमछे जे केटलाकएमकहेने जे आभवमांतोशक्तिनथी पणजन्मांतरेबोधवीजनी सामग्रीपामिसुं तिवारेकरिसुं एहवोप्रभुपासेमांगीलइयेंछैयें इतिभावः ॥२२॥

पामीबोधनपालेमूरख ॥ मांगेबोधविचाले ॥ लहियेंतेहकहो
कुणमूलें ॥ बोल्युंउपदेशमालेंरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ तेहनेउत्तरकहेने जे आभवमां बोधके० बोधवीजनी सामग्रीपामीने पणजे मूरखके० अज्ञानी संयमअनुष्ठानतोपालतोनथी अने विचालेंके० विचमां बोधमांगेजे आगलेपामिसुं तो तेहके० तेबोधवीज कहो कुणमूलेके० सेमूले लहियेंके० पामीयेंएटले एभावजे कोइकवस्तुलेवाजइयें तेवस्तुजोपाशेइव्यहोयतोजस्ने अने इव्यनहोयतोस्यामूलेजस्ने, तेमआभवमांहेजो संयमादिकपाल्याहोयतो आवतेभवेंपणबोधवीजनीसामग्रीमिले पणनपाल्याहोयतो सेमूलेपामे अर्थात् बोध सामग्रीनजपामे एमउपदेशमालामध्येकह्युंछे यतः ॥ "लद्धिल्लियंचबोहिं ॥ अकरितोणागयंचपत्थितो ॥ अन्नंदाईबोहिं ॥ लप्भिहिकयरेणमुल्लेण ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां आवश्यकनिर्युक्तौ तथा चतुर्विंशतिस्तवाध्ययनेपिच ॥ २३ ॥

आणापालेसाहेबतूसे ॥ सकलआपदाकापे ॥ आणाकारी
जेजनमागे ॥ तसजसलीलाआपेरे ॥ जिन० ॥ वी० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेआज्ञापालतायका साहेबके० परमेश्वरतूष्टमानथाय अनेसमस्त आपदानेकापे माटेआज्ञाकारीजे जनके० लोक तेमागे एटलेआभवमांहे प्रभुआज्ञापाले नेतेप्राणीजेमागे तसके० तेप्राणीने जशनीलीलाआपे एटलेप्रभुआज्ञायी जशलीलापामें ॥२४ ॥ एप्रथमढालमांहे एमकह्युंजे अमेनिर्गुणीयका प्रभुपासेथीमांगीलेसुं एवुंबोलनारनेसीखामणदियी ॥ २४ ॥

(ढालबीजोआदरजीवक्षमागुणआदर एदेशी).

कोइकहेअमेगुरुथीतरसुं ॥ जिमनावाथीलोहारे ॥ तेमि
थ्यानलहेसहवासें ॥ काचपाचनीसोहारे ॥ १ ॥ श्रीसी
मंधरसाहेवसुणजो ॥ भरतखेत्रनीवातोरे ॥ लहुंदेवक
वलरतिइणेयुगें ॥ हुंतोतुजगुणरातोरे ॥ श्रीसी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेबीजाढालमां जे एमकहेछेके अमेनिर्गुणीथकाज गुरुथीतरीसुं तेम नेसीखामण देवासंबंधीआव्योबीजोढालतेकहेछे कोइकतोएमकहेछे जे अमारामां तोगुणनथी पण अमारागुरुगुणवंतछे तोतेथीजसंसारसमुद्रतरी पारपामिसुं जेम ना वाके०जिहाजतरेछे तेमांहे लोहाके० लोखंमनाखीजाजभ्याहोय तेपणतरेछे एट ष्टांते तरिसुं. यतः“संझंजंपेइजणो ॥ उत्तमसगेणउत्तमोहोइ ॥ लोहोकहविलग्गो ॥ संजोगेसायरंतरई ॥१ ॥ इतिपाठात् तेहनेउत्तर जेएरीतनाबोलनारा तेपण मिथ्या के० खोटुंकहेछे केमकेसारागुरुने सहवासेके० मात्रजेलावसवाथीज नलहेके० नपा मे, जेम काच ते पाचके०पानानीसोनापामेनही उक्तंच ॥ मणिलुंठतिपादाग्रे ॥ काचःशिरसिधार्यते ॥ परीक्षककरेप्राप्ते ॥ काचःकाचोमणिर्मणिः ॥ १ ॥ तयाउवनिर्यु क्तावपि ॥ सुचिरंपिअच्छमाणो ॥वेरुलिउंकायमणीयउं ॥ मीसोनउवेइकायनावं ॥ पाहणगुणेणनियएणं ॥ १ ॥ माटेहेश्रीसीमंधरसाहेबआभरतखेत्रनी वातोके० च रित्र तेसुणजोके० सांभलजो हेदेव हेआत्मगुणरमणि इणेयुगेंके० आविषमका ल पंचमआरो हुंमावसर्प्पिणीनेंविषे केवलके० निकेवल जेहुं रतिलहुंके० सातापा मुंछुं ते तुजगुणरातोके० तमारागुणनेविषे तत्परथको एटलेतुमारागुणनोरंगछे एट लीजसाताछेबाकीमतभेदकदाग्रहदेखी तोकांइपणशातानोकारणनथी इतिभाव ॥ २॥

कोइकहेजेगछथीनटल्या ॥ तेनिरगुणपणसाधोरे ॥ नातिमांहे
निरगुणपणगणीयें ॥ जशनहींनातिबाधोरे ॥ श्रीसी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेकेटलाएकएमकहेछेके जे गछथीबाहिरनिकल्यानथी अनेआचार्य नासंघाडामांहे रह्याछे तेजोनिर्गुणछे सोपणते गछमांरह्यामाटे साधोके० साधुक हियें तेहनोदृष्टांतकहेछे जेम न्यातिनासर्वलोक उत्तमहोय अनेतेमांहेकोइकनिर्गु णहोय पणतेहनेजिहांलगें न्यातिबाहरकरीनहोय तिहांलगेतेन्यातिमांहेजगणाय

ते जशके० जेगुणरहितपुरुषनो नातिबाधोके० नात्तीनोवाधक नहीके० नथी एटले तेपुरुषनोजिमनातिमांहेबाधकनथी तेमसाधुपणगछमांहेछे माटेरुमोजाणवो ॥ ३ ॥

गुणअवगुणइमसरिपाकरतो ॥ तेजिनशासनवैरीरे ॥ निर गुणजोनिजछंदेचाले ॥ तेगछथाएस्वैरीरे ॥ श्रीसी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे पूर्वोक्तकहेनारने सीखामणआपेछे के जोएरीते गुण अने अवगुण नेसरिपाकरे तेजिनशासननोवैरीजाणवो तेहनोहेतुदेखाडेछे के तेगछमांहेरह्योजेनि र्गुणपुरुष तेजो० निजके० पोतानेछंदेचाले तो गछथायस्वैरीके० तेसर्वगछस्वछाचा रीथाय केमके एकनेहीणोदेखीने बीजापणहीणाचारीथाय ॥ इतिभावः ॥ ४ ॥

निरगुणनोगुरुपक्षकरेजे ॥ तसगछत्यजवोदाख्योरे ॥ तेजि नवरमारगनोघातक ॥ गछाचारेंभाख्योरे ॥ श्रीसी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली जेनिर्गुणहोय तेनोपक्षपातजेगुरुकरे तो तेगुरुनोगछबीजासाधुयें त्यजवोके० छांमवो एमदाख्योके० कह्योछे एटलेतेगछमांरहेवुंनहीअनेतेगुरुजिनेश्व रनामार्गनोघातकरनारजाणवो एरीतेगछाचारपयन्नामध्येकह्योछे यतःजहनछीगु णाणपरको ॥ गणीकुसीलोकुसीलपरकधरो ॥ सोयअगछोगछो ॥ संजमकांमीहि मुत्तवो ॥ १ ॥ जहनछीतारणावारणाय ॥ चोयणायसगछंमि ॥ सोयअगछोगछो ॥ संयमकामीहिमुत्तवो ॥ २ ॥ इतिगछाचारे ॥ ५ ॥ ० ० ० ० ०

विषमकालमांनिरगुणगछें ॥ कारणथीजोवसीयेंरे ॥ द्रव्य थकीव्यवहारेंचलीयें ॥ भावेंनविउल्लसीयेंरे ॥ श्रीसी०॥ ६॥

अर्थ ॥ यद्यपि विषमकालमां एटले पांचमा आरामां पोतानी मनोबल श क्तिनेअनावें निरगुणगछे एटले गुणरहित गछनेविषे जो कोइकारणे वसवुंपडे तो द्रव्यथकी एटले बाह्यथी तो ते गछने व्यवहारें चलियेंके० प्रवृत्तियें पण भावथकी उल्लासपामियेंनही एटले अंतरथी हरषीयेंनही पण जो शुद्धाचारीनी संगतमिले तो निरगुण गछने तुरत छोमी आपियें यतः गीयंछोगुणवुत्तो ॥ निग्गुणगछंमिसं वसित्ताय ॥ नोनिग्गुणाणपरकं ॥ कुआसोगुणहरसरिछो ॥ इत्युपदेशपदे ॥ ६ ॥

जिमकुवृष्टियीनगरलोकने॥घहेलादेखीराजारे ॥ मंत्रिसहि तघहेलाहोइवेग ॥ पणमनमांहेंताजारे ॥ श्रीसी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेम घहेलापणानीकरनारी कुवृष्टिथयी ते कुवृष्टीनुं पाणी ते नगरना सर्वलोकपानकरीने घहेला थया मात्र एक राजा अने प्रधान ए बेजणे पाणी पी धुंनही माटे माह्यारह्या पछे ते बेहुने विष सदृशाचारी घहेला लोकोए मारवानो उपाय कर्यो तेवारें राजा पोताना जीववाना उपायने माटे प्रधान सहित पोते घहेलाथयी वेग पण मनमांतो ताजाके० माह्याठे एमजाणेने जे सारीवृष्टीया य तो सहु माह्याथइयें एम एदृष्टांतें इहांपणजाणवुं जे नीरगुणगछमांवले तथा ते हनीपेठेंचाले तोपणमनमां तो एमजाणेजे सुविहित मलेतो तेहने संगेरहुं अनेह्य ह्याचारीथाउं इतिनाव ॥ ७ ॥

इमउपदेशपदेएनाष्युं ॥ तिहांमारगअनुसारिरे ॥ जाणीने नावेंआदरीयें ॥ कल्पनाष्यनिरधारिरे ॥ श्रीसी० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ एरीते श्रीहरीनइसूरिकृत उपदेशपदनामाग्रंथमां नाष्युंछे गीयछोगु णयुत्तो इत्यादि पूर्वोक्त गाथाजाणवी तथा एमकह्युंजे द्रव्यथकी व्यवहारेचालीयें पण नावथी उल्लासपामीयेंनही तोपण तिहांके० तेगछमां जो कदाचित् सर्व क्रि याव्यवहारमां सावधाननहोय पण जो मार्गानुसारी शुद्धपरुपकहोय अने गुणप क्षपातिहोय तेवा मार्गानुसारी जाणीने तेहने नावथी पण अंगीकारकरीयें एहवुं वृहत्कल्पनाष्यमां कह्युंछे यतःसिढिलोअणायारकय ॥ चोयणपमिचोयणाइगुणही णो ॥ गुणपरककरोगछो ॥ सीलेयव्वोविनावेण ॥ १ ॥ इति ॥ ८ ॥

ज्ञानादिकगुणवंतपरस्पर ॥ उपगारेंआदरवोरे ॥ पंचवस्तु मांगछसुगुणने ॥ अवरकह्योछेत्यजवोरे श्री॥सी० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ वली परस्परके० माहोमांहे ज्ञानादिकगुणवंतके० ज्ञानदर्शन चारित्रगुण वंतहोय वली उपगारेके० उपकारीहोय एटले माहोमांहे कोइनो ज्ञानउपकार को इनो दर्शनउपकार इत्यादिक उपकारवंतहोय तो आदरवो एम श्रीहरिनइसूरिकृत पंचवस्तुग्रंथमां कह्युंछे यतः सुगुणमिहुवयारं ॥ अन्नुन्नगुणादिनावसंबंधं ॥ उत्तम ठवत्तवुत्तो ॥ वासोअणगछवासोत्ति ॥ १ ॥ तेमाटे सुगुण जे गुणवंतहोय तेणे पू र्वोक्त ज्ञानादिकना उपकारीगछविना अवरके० बीजोजेगछ ते त्यजवोकह्योछे ॥९॥

जेनिरगुणगुणरत्नाकरने ॥ आपसरिपादाखेरे ॥ समकित साररहिततेजाणो ॥ धर्मदासगणीनाखेरे श्रीसी० ॥ १० ॥

अर्थ॥ वली जे पोते निर्गुणछतां बीजा जे गुणना रत्नाकरके० समुद्रहोय तेहने आपके० पोतासरीशा दाखेके० कहे एटले एमकहेजे अमारामां तथा एहमां शो फेरछे एम गुणी अवगुणीने सरिखाकरे तो ते प्राणी सारके० प्रधान एहवो जे समकित तेथी रहितजाणवो एरीतें उपदेशमालामध्ये धर्मदाशगणियें कह्युंछे यतः गुणहीणोगुणरयणा ॥ यरेसुजोकुणईतुल्लमप्पाणं ॥ सुत्तवस्सीणोयंहीलई ॥ सम्मत्तं कोमलंतस्स ॥ १ ॥ १० ॥

कोइकहेजेबकुसकुशीला ॥ मूलोत्तरपडिसेवीरे ॥ भगवई
अंगेभाख्यातेथी ॥ अंतवातनविलेवीरे ॥ श्रीसी० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ एरीतें ग्रंथकारना केवाप्रमाणे सर्वथागुणवंतहोय तोजआदरवो एमछे तुं तेउपर शिष्यप्रश्नकरेछे के कोईक एमकहेछे जे बकुसकुशीलाके० बकुसचारित्रीया तथा कुशीलचारित्रीया ए मूलउत्तरगुणना प्रतिसेवीकह्याछे पडिसेवीके० प्रतिकूलपणेसेववुं दोषलगाडवो एटले ए भावजे १ पुलाक २ बकुस ३ कुशील ४ निग्रंथ ५ स्नातक ए पांच निग्रंथ कह्याछे तेमां बकुसचारित्रीया ते उत्तर गुणना एटलेमात्र दशविध पच्चखाणनाज प्रतिसेवीहोय तथा कुशीलचारित्रीया ते मूल गुणना तथा उत्तरगुणना प्रतिसेवि होय यद्यपि मूलुत्तरपडिसेवी इहां सामान्ये कह्या तो पण अर्थपूर्वोक्तरीतेकरवो केमके पंचनिग्रंथीप्रकरण तथा भगवतीसूत्रमां एरीते छे तेरीते अमेपण अर्थ लिख्योछे यदुक्तं पंचनिग्रंथीप्रकरणे ॥ यतः मूलुत्तरगुणविसया ॥ पडिसेवासेवएकुशीलोय ॥ उत्तरगुणेसुबउसो ॥ सेसापडिसेवणारहिया ॥ १ ॥ वलीभगवतीअंगे भाख्याके० कह्याछे तथाचतत्पाठः बउसेणंपुच्छा गोयमा पडिसेवए होज्जा यदि पडिसेवएहोज्जा किंमूलगुणपडिसेवएहोज्जा उत्तर० ॥ गोयमानो मूलगुण पडिसेवएहोज्जा उत्तरगुण पडिसेवएहोज्जा इत्यादि तथा पडिसेवणाकुशीलेजहापुलाए एटलेपुलाकनेमूलगुण पडिसेवएहोज्जा उत्तरगुणपडिसेवएहोज्जा एमकह्युंछे माटे कुशील पण मूलोत्तरगुणना पडिसेवीथया इतिभगवतिसूत्रेसतक (२५) मेंउद्देसे ६ छे कह्युंछे तेथी एम छेतुं जे मूलगुणना प्रतिसेवीथाय तिहांलगे चारित्रीयाकह्यां तेथी अमने दोषलागतांछतां पण अमारुंचारित्रकांईजातुंनथी माटे वातनो अंतलेवोनही फाबुंअमने बोलावी अंतलुंलिख्योछे इतिशिष्यवचनं ॥ ११ ॥

तेमिथ्यानिःकारणसेवा ॥ चरणवातीनीभाखीरे ॥ मुनीनेते
छनेसंभवमात्रे ॥ सत्तमठाणुंसाखीरे ॥ श्रीसी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेगुरुकहेछे के एम नगवति सूत्रनी साखआपीने जेमतेम प्रतिकुल सेवावालाने जे चारित्र गरावेछे ते मिथ्याके० खोटुंकहेछे केमके निःकारणसेवाके० कारणविनाजे प्रतिकुलपणेसेवा अपवादरूप तेहनेमुख्य करीने जे प्रतिसेवाकरे ते प्रतिसेवातो चरणघातीनीजाणीके० चारित्रनेघातकरनारीकहीछे यतः संवरणंमि असुध्दं ॥ दोएहविगिएहंतदिंतगाएहियं ॥ आउरदिठंतेणं तंचेवहियंअसंवरणे ॥ १ ॥ इतिवृहत्कल्पनाष्ये तेप्रतिसेवामुनीने तेहनेके० तेमुनीने संनवमात्रेके० लागवारूप संनव पण उपयोगपूर्वक प्रतिसेवाकरेनही कदाचित उपयोगपूर्वककरेतो तेअपवादें करे पण उत्सर्गेनहीकरे एपणसंनवजकहीयें तिहांसत्तमगणु साखीके० गणानामा प्रकरणमांसातमेगणेकहुंछे ते गणाप्रकरण माराहायमां प्रातथयुंनथी पणमारागु रुनेवचनेजाणुंकु के गणाप्रकरणछे अन्यथा इहांकोइक गणांगसूत्रकहेछे पणतेगणां गमध्ये एपाठजमतोनथी ते माटेगुरुवचनसत्य इतिज्ञेयं ॥ १२ ॥ ⊛ ⊛

पमिसेवावचनेतेजाणो ॥ अतिचारबहुलाईरे ॥ नाववहु लतायेंतेटाले ॥ पंचवस्तुमुनिध्याईरे ॥ श्रीसी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे तिहां पंचवस्तुनी साखलखियेंछेयें गाथा ॥ तेउपडिसेवणाए ॥ अणु लोमाहोतिविअमणाए॥अपडिसेवणाविअमणाए ॥ इत्थंचउरोनवंनंगा ॥ १ ॥ व्याख्या तेतुद्दोषाः प्रतिसेवनया आसेवनारूपया अनुलोमा नवंत्यनुकूलानवंतिविकटनयालो चनयाच प्रतिसेवनायां आलोचनायांच पद६येचत्वारोनंगानवंति तद्यथा प्रतिसेवन या अनुलोमाविकटनयाच १ तथा प्रतिसेवनया नविकटनया २ तथा नप्रतिसेवनया विकटनया ३ तथा नप्रतिसेवनयानविकटनयेति ४ गाथार्थ तेचेवतत्थनवरं ॥ पाय छित्तंतिआहसमयंणू ॥ जम्हासइसुहजोगो ॥ कम्मरकयकारणंनणीउ ॥ २ ॥ व्याख्या तेएवनवरंकेवलं समुदानिकाअतिचाराश्रित्यमाना: संतः तत्रकायिकादीर्यपथिकायां प्रायश्चित्तमित्येवमाहुःसमयज्ञाः मिद्धांतविधः किमितिअस्मात् सदासर्वकालमेवसुन योगः कुशलव्यापारः कर्मक्षयकारणंनणीतस्तीर्थंकर गणधरैरितिगाथार्थः ॥ ततःकि मित्याहगाथा॥ सुहजोगोयअपंजं॥चरणाराहणनिमित्तमणुअंपि॥ मालोजकिंचिखलि यं ॥ पेहेइतउंबउत्तावी॥ ३॥व्याख्या सुनयोगाश्चायंसामुदानिकातिचारचिंतनरूपःकथ मित्याह यस्मात्चरणाराधननिमित्तमखिलितचारित्रपालनार्थं मएवपिसुक्ष्मपिमानू किंचित्स्खलितंप्रेक्ष्यतेपर्यालोचनव्यतिततःउपयुक्तोपिनिद्राग्रहणकाले॥इतिगाथा र्थाठकाणे एजअर्थनी सूचक गाथा ज्ञानविमलसूरियें टवामांलखीछे तेकहेछे गा

या ॥ सव्वाविंयपडिसेवा ॥ उक्कडभावेणहोइसासहिला ॥ अइयारबाहुलत्तं ॥ पडिसेवा विंयपयसेढी॥१॥ एगाथापणरुडीने एठेकाणे एहवीगाथाजोइयें पणएगाथा पंचवस्तु ग्रंथमां जडीनही माटेश्चमेलखीनही तथामूलगुण उत्तरगुणना प्रतिकूलपणेसेवीहो य ते पडिसेवा वचनेके० प्रतिसेवा शब्देंकरी जाणोके० जाणवी एटलेमूलगुणमां तथा उत्तरगुणमां अतिचार घणालागे ते अतिचार भावनी तीव्रतायें करीनें टाले एम पंचवस्तुग्रंथमां मुनीध्यायीके० मुनीराजे अतिचारनी बहुलताध्यायी भावीने ॥१३॥

सहसादोषलगेतेबूटे ॥ संयतनेततकालेंरे ॥ पच्छितेंआ
कुट्टियेंकीधुं ॥ प्रथमअंगनीभालेंरे ॥ श्रीसी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ सहसाके० सहसात्कारें अनाभोगथकी जे दोषलागे ते छुटे एटलेतद्भव वेदवायोग्य कर्मबांध्युंहोय ते छुटे संयतनेमुनिराजने तत्कालेंके० तेजभवमांछुटे इ तिभाव श्रीआचारांगे पंचमाध्ययने चतुर्थोद्देशके गाथा॥एगयागुणसमित्त ॥ सरीयतो कायसंफासमणुचिन्नं ॥ एगतयापाणाउद्दायंति ॥ इहलोगवेदणवेज्जावडीअ ॥ अस्या र्थलेशः कदाचित् गुणसमीतके० गुणसहित अप्रमतमुनी चालताथकां कायसंफास के० कायस्पर्शथयाथी कोइजीवहणाणो ॥ तेवारे इहलोके वेदनानोजे वेद्यके० अनु भव तेहने आवडिअंके० पाम्युं एटले आभवें भोगववायोग्य कर्मबंधाय तथा आकु ट्टियेंके० विनाप्रयोजने कारणविना पापकर्म कर्युं तेकर्म पच्छितेके० दशप्रकारनुं प्रा यश्चित्तने तेमांहरकोय प्रायश्चित आवे एमप्रथमअंगनी भालीके० आचारांगनी भला मणने पांचमांअध्ययननाचोथाउद्देसामां जंआउट्टीकयंकम्मं ॥ तंपरिन्नायविवेगमेति इति एतस्यैकदेशः जंआउट्टिइत्यादियत्तुपुनःकर्माकुट्याकृतमागमोक्तकारणमंतरेणो पेत्यप्राण्युपमर्दनेनविहितंतत् परिज्ञायज्ञपरिज्ञयाविवेकमेतिविविच्यतेअनेनेतिविवेकः प्रायश्चित्तदशविधंतस्यान्यतरं भेदमुपैतितद्विवेकं वाअभावाख्यमुपैतितितत्करोतिये नकर्मणोअभावोभवतिति तेकारणमाटे पापजाणीने सेववुंतेहनोमहादोषछेइतिभावः

पायछित्तादिकभावनरावे ॥ दोषकरीनिःसूकोरे ॥ निंद
धससेढीथीहेठो ॥ तेमारगथीचूकोरे ॥ श्रीसी० ॥ १५ ॥

अर्थ॥ माटे ते अतिचारसेवीने पण पायच्छित्तादिकके० विशुद्धथाय तेवुंगुर्वादिक पासेंथीप्रायश्चित्तप्रमुख लेवानो अभिप्राय राखेज नही तो तेप्राणीदोषकरीने पणनिः सूकोके० निर्दयीजाणवो यतः जोजयइ उत्तरगुणे ॥ मूलगुणेविअचिरेणसोजयइ ॥ जअ

जह्कुणइपमायं पीज्जीजाइत्तह्तह्कसाएर्हि ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां तथातेप्राणी निर्ध्वंधसके०गतधर्माछे एटलेप्रवचनरूप धर्मनी हाणीथाय तेह्नी अपेक्षाराखेनहीते जीव सेढीथीहेठोके० गुणश्रेणीथकी अधोवर्त्ति अथवा संयमश्रेणीथकी हेठोजाणवो वली तेप्राणी साधुनामार्गथी चूक्योएमजाणवो यतःअइयारंजोनिसेवि ॥ तापा यच्छित्तंनगिएहइए ॥ अणुक्कुव्वंयतज्ञावो ॥ नियम्मोसोगणीज्जासु ॥ १ ॥ इतिश्रीहरिज्ञद्र सूरीकृतसंबोधप्रकरणे ॥ १५ ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

कोईकहेजेपातिककीधां ॥ पमिकमतांछूटीजेंरे ॥ तेमिथ्याफ
लपमिकमणानुं ॥ अपुणकरणथीलीजेंरे ॥ श्रीसी० ॥१६॥

अर्थ ॥ वलीकेटलाक एमकहेछेकेजे पाप कर्याहोय तेसर्वपापथी पडिकमतांके० पडिकमणुकरतांछुटीयें यतःआणाएउंकयंपावं ॥ पडिकमणाउविसुज्जइ ॥ इति वचनात् ॥ पडिकमणंपापहरणंइतिलोकोक्ति एमकहेछेते मिथ्याके०खोटुंकहेछे केमके फलपडिकमणानुंके० पडिकमणानुंजेफलतेतो अपुणकरणथी लीजेके० फरीअण करवाथी पामीयें एटलेपापनेपडिकमीने फरीपापनहीकरे तोजपडिकमणानुंफलपामे इतिज्ञावयतःपुणपावस्सअकरणे ॥ पडिकमणंहोइज्ञावसारंच ॥ पुणपावाणंकरणं ॥ नहुवदइंपडिक्कमई ॥ १ ॥ इतिवचनात् ॥ १६ ॥ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

मिथ्यादुकडदेईपातिक ॥ तेज्ञावेजेसेवेरे ॥ आवश्य
कसाखेतेपरगट ॥ मायामोसनेसेवेरे ॥ श्रीसी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ माटेजे मिथ्यादुक्कडके०मिच्छामीडुक्कडंदेइने वलीतेहिजपापज्ञावेंकरीनेसेवे छे तेप्राणी प्रत्यक्षपणें आवश्यकनीसाखे मायामृषानेसेवेछे स्यामाटेजेगुरुआदिकने राजीकरवानेअर्थे मिच्छामिडुक्कडंदिएछे पणपरमार्थे शुन्यछे यतः जंडुक्कडंतिमिच्छा॥तं चेवनिसेवईपुणोपावं॥पच्चरकमुसावाई॥मायानियडीपसंगोय ॥१॥ इत्यावश्यके॥१७॥

मूलपदेंपमिकमणुंज्ञाख्युं ॥ पापतणुंअणकरवुंरे ॥ सक्ति
ज्ञावतणेअज्यासें ॥ तेजसअर्थेवरवुंरे ॥ श्रीसी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ मूलपदेंके० उत्सर्गमार्गें अथवा प्रथमथी पडिकमणु ज्ञाख्युंके० कह्युंछे के मकह्युंछे तेकहेछे के जे पापतणुंअणकरवुंके० पापनुजेनकरवुं तेनु नामपडिकमणु कहीयें यतः जइयपडिक्कमियव्वं ॥ अवस्सकाउणपावयंकम्मं ॥ तंचेवनकायव्वं ॥ तो

होइपएपडिक्कंतो ॥ १ ॥ इतिआवश्यके पएके० उत्सर्गपदें अथवा पएके० प्रथमथी पडिकम्याइति तेमाटे शक्तिके० शक्तिमाफकनावेकरीने अन्यासकरे एटलेशक्तिनावथी अन्यासकरे तेपण जशके० जेहनेअर्थे पापअणकरवाने अर्थे वरवुंके० आदरवुं ए टले शक्तिअन्यासकरे तेपणपठेपापनकरे इतिनाव अथवा परमार्थे जशतेमोक्ष तेने अर्थे वरवुंके० आदरवुं अनेकर्तानुंनामपणजशविजयठे तेपण सुचव्युं ॥ १७ ॥

ढालत्रीजो, तुंगीयागिरिशिखरसोहेएदेशी

देवतुजसिद्धांतमीठो ॥ एकमनेधरिएं ॥ दुष्टआलं
बननिहाली ॥ कहोकेमतरिएं ॥ देवतुज० ॥ १ ॥

॥ अर्थ ॥हवे त्रीजोढालकहेठे एने बीजाढालसाथेंएसंबंधठे जे बीजाढालमां एम कह्युंकेपापनकरवुं तेपडिकमणु माटे त्रीजाढालमांकहेठे के पाप सीरीतें नथाय जो ही णआलंबननहोय तोपापनथायतेकहेठेजे हेदेव हेपरमानंदविलासी तुजसिद्धांतके० ताहारोजे आगम स्याद्वादसैलीरूप ते मुजने अत्यंत मीठो लागेठे इतिनाव ते एक मनेधरिएंके० एकाग्रचित्तेंकरी धरीराखीयें अने दुष्टजे हिणआलंबन ते नेहालीके० जोइने एटले कोइकें कोइकारणे कांइविपरीत अंगीकार कर्युंहोय ते पोतेधारीराखे तो ते धारीने हेसज्ञानपुरुषो तमेकहो जे केमके० केवीरीतें संसारसमुद्रतरीयें ॥ १ ॥

दुष्टआलंबनधरेजे ॥ नग्नपरिणामि ॥ तेहआव
श्यकेंनांख्या ॥ त्यजेमुनीनामि ॥ देवतुज० ॥ २ ॥

॥ अर्थ ॥ माटे दुष्टके० दूषणसहित जे अपवादेंसाधनहोय ते जेकोइचित्तमांधरे तेतो नग्नपरिणामिके० संयमक्रियाथी नागाछेपरिणाम जेहना एहवा जे लिंगीहोय तेहने आवश्यकनेविषे नांख्याके०कह्याठे सुंकह्याठे के मुनीनामिके मुनीनामनाधणी एटले जे मुनीश्वरहोय ते तेवालिंगीने त्यजे के० छांडे ॥ २ ॥

नियतवासविहारचेईय ॥ नक्तिनोधंधो ॥ मूढआ
लालनयापे ॥ विगयपडिबंधो ॥ देव० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे दुष्टआलंबन देखाडवामाटे द्वारबांधेठे ते एकनियतवासविहारके० नित्यवासेंविचरवुं एटलेनित्यवासकल्पइतिनाव एकस्थानकेंरहेवुं एमकेइकयापेठे बी जो चेइयनक्तिनोधंधो एटले चैत्यजेदेहेरुं तथा जिनप्रतिमा तेहनोधंधो जे कार्य

जइकुणइपमायं पीञ्जीअइत्तहतहकसाएहिं ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां तयातेप्राणी निर्द्धंधसके० गतधर्माछे एटलेप्रवचनरूप धर्मनी हाणीथाय तेहनी अपेक्षाराखेनहीते जीव सेढीथीहेगेके० गुणश्रेणीथकी अधोवर्त्ति अथवा संयमश्रेणीथकी हेगेजाणवो वली तेप्राणी साधुनामार्गथी चूक्योएमजाणवो यतःअइयारंजोनिसेवि ॥ तापायछित्तंनगिएहए ॥ अणुकुत्तयत्तजावो ॥ निधम्मोसोगणीज्ञासु ॥ १ ॥ इतिश्रीहरिनद्र सूरीकृतसंबोधप्रकरणे ॥ १५ ॥ ❂ ❂ ❂ ❂ ❂ ❂ ❂ ❂

कोईकहेजेपातिककीधां ॥ पडिकमतांछूटीजेंरे ॥ तेमिथ्याफ
लपडिकमणानुं ॥ अपुणकरणथीलीजेरे ॥ श्रीसी० ॥१६॥

अर्थ ॥ वलीकेटलाक एमकहेछेकेजे पाप कस्याहोय तेसर्वपापथी पडिकमतांके० पडिकमणुकरतांछुटीयें यतःआणाणउकयंपावं ॥ पडिकमणाऊविसुज्झइ ॥ इति वचनात् ॥ पडिकमणंपापहरणंइतिलोकोक्ति एमकहेछेते मिथ्याके० खोटुंकहेछे केमके फलपडिकमणानुंके० पडिकमणानुंजेफलतेतो अपुणकरणथी लीजेके० फरीअण करवाथी पामीयें एटलेपापनेपडिकमीने फरीपापनहीकरे तोजपडिकमणानुंफलपामे इतिनावयतःपुणपावस्सअकरणे ॥ पडिकमणंहोइनावसारंच ॥ पुणपावाणंकरणं ॥ नहुवदवंपडिक्कमई ॥ १ ॥ इतिवचनात् ॥ १६ ॥ ❂ ❂ ❂ ❂ ❂

मिथ्यादुकडदेईपातिक ॥ तेनावेजेसेवेरे ॥ आवश्य
कसांखेतेपरगट ॥ मायामोसनेसेवेरे ॥ श्रीसी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ माटेजे मिथ्याडुक्कडके० मिह्वामीडुक्कडंदेइने वलीतेहिजपापनावेंकरीनेसेवे छे तेप्राणी प्रत्यक्षपणें आवश्यकनीसाखे मायामृषानेसेवेछे त्यामाटेजेगुरुआदिकने राजीकरवानेअर्थें मिह्वामिडुक्कडंदिएछे पणपरमार्थें सुन्यछे यतः जंडुक्कडंतिमिह्वा॥तं चेवनिसेवईपुणोपावं॥पच्चरकमुसावाई॥मायानियडीपसंगोय ॥१॥ इत्यावश्यके॥१७॥

मूलपदेंपडिक्कमणुंनाख्युं ॥ पापतणुंअणकरवुंरे ॥ सक्ति
नावतणेअन्यासें ॥ तेजसअर्थेवरवुंरे ॥ श्रीसी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ मूलपदेंके० उत्सर्गमार्गें अथवा प्रथमथी पडिकमणु नाख्युंके० कह्युंछे के मकह्युंने तेकहेछे के जे पापतणुंअणकरवुंके० पापनुजेनकरवुं तेनु नामपडिकमणु कह्युंयें यतः जइयपडिक्कमियवं ॥ अवस्सकाउणपावयंकम्मं ॥ तंचेवनकायवं ॥ तो

होइपएपडिक्कंतो ॥ १ ॥ इतिआवश्यके पएके० उत्सर्गपदें अथवा पएके० प्रथमथी पडिकम्याइति तेमाटे शक्तिके० शक्तिमाफकजावेकरीने अभ्यासकरे एटलेशक्तिजावथी अभ्यासकरे तेपण जशके० जेह्नेअर्थें पापअणकरवाने अर्थे वरवुंके० आदरवुं ए टले शक्तिअभ्यासकरे तेपणपठेपापनकरे इतिजाव अथवा परमार्थे जशतेमोक्ष तेने अर्थे वरवुंके० आदरवुं अनेकर्तातुंनामपणजशविजयछे तेपण सुचव्युं ॥ १८ ॥

ढालत्रीजी, तुंगीयागिरिशिखरसोहेएदेशी

देवतुजसिद्धांतमीठो ॥ एकमनेधरिएं ॥ दुष्टआलं
बननिहाली ॥ कहोकेमतरिएं ॥ देवतुज० ॥ १ ॥

॥ अर्थ ॥हवे त्रीजोढालकहेछे एने बीजाढालसार्थेएसंबंधछे जे बीजाढालमां एम कह्युंकेपापनकरवुं तेपडिकमणु माटे त्रीजाढालमांकहेछे के पाप सीरीतें नथाय जो ही णाआलंबननहोय तोपापनथायतेकहेछेजे हेदेव हेपरमानंदविलासी तुजसिद्धांतके० ताहारोजे आगम स्याद्वादसैलीरूप ते मुजने अत्यंत मीठो लागेछे इतिजाव ते एक मनेधरिएंके० एकाग्रचित्तेंकरी धरीराखीयें अने दुष्टजे हिणाआलंबन ते नेहालीके० जोइने एटले कोइकें कोइकारणे कांइविपरीत अंगीकार कर्युंहोय ते पोतेधारीराखे तो ते धारीने हेसद्ज्ञानपुरषो तमेकहो जे केमके० केवीरीतें संसारसमुद्रतरीयें ॥ १ ॥

दुष्टआलंबनधरेजे ॥ जग्नपरिणामि ॥ तेह्आव
श्यकेंनांप्या ॥ त्यजेमुनीनामि ॥ देवतुज० ॥ २ ॥

॥ अर्थ ॥ माटे दुष्टके० दूषणसहित जे अपवादेंसाधनहोय ते जेकोइचित्तमांधरे तेतो जग्नपरिणामिके० संयमक्रियाथी जागाछेपरिणाम जेह्ना एह्वा जे लिंगीहोय तेह्ने आवश्यकनेविषे नांप्याके०कह्याछे गुरुकह्याछे के मुनीनामिके मुनीनामधरणी एटले जे मुनीवरहोय ते तेवालिंगीने त्यजे के० छांडे ॥ २ ॥

नियतवासविहारचेइय ॥ जक्तिनोधंधो ॥ मूढअ
ज्ञालानयापे ॥ विगयपडिबंधो ॥ देव० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे दुष्टआलंबन देखाडवामाटे द्वारबांधेछे ते एकनियतवासविहारके० नित्यवासेविचरवुं एटलेनित्यवासकल्पइतिजाव एकस्थानकेंरहेवुं एमकेअक्रयापेजे बी जो चेइयजक्तिनोधंधो एटले चैत्यजेदेहेरुं तथा जिनप्रतिमा तेह्नोधंधो जे कार्य

नवित्ताणं एवंमन्नमाणेसवन्हाश्रोमग्गं पवत्तंतितन्हाकिल अम्हे अरहंताणं नगवंताणं गंधमल्लयं दीवसमज्जणोवल्लेवणे विचित्तवत्थवल्लीधूवाइ एहिंपूयासक्कारेहिं अणुदीय अमज्जावणं पकुवाणा तित्थूत्थपणंकरेमो तंचणोणं तहत्ति गोयम्मासमणुजाणेज्जा सेनयवंकेणंअठेणं एवंवुच्चईजहाणं नंचणोणं तहत्तिसमणुजाणिज्जा गोयमातिय वाणुसारेणंअसंयमबाहुल्लेणंचमूलकंमासयं थूलंकंमासवाश्रोय अज्जवसायं पडुच्चा थूलोयरसूहासूह कम्मपयडिबंधोसवसावज्जविरयाणांचवयनंगो वएनंगेणंच श्रा णाईकम्मो आणाईकम्मेणंतु उमग्गागामित्तं उमग्गागामितेणंच समग्गपज्जोयणं उम ग्गपवत्तणं समग्गविप्पलोयणेणंच जईणंमहतिश्रासायणा तउअणंत संसारोहिंम णंएएणं अठेणंगोयम्माणोणंतं तहत्तिसमणुजाणिज्जा ॥ इत्यादिकमहानिशीथेतृती याध्ययने अथवा महानिशीथेपंचमाध्ययनेपणपाठछे यथा सेनयवंजेणंकेई साहु वा साहूणीवा निग्गंथे अणगारे दवउयंकुज्जासेणंकिमालाविज्जा गोयम्मा जेणं केईसाहूवासाहूणीवा निग्गंथे अणगारे दवत्थयंकुज्जासेणं अजएवा देवनोएइवादेव ग्गेईवाजावणं उमग्गपयईएवाउरुज्जयसीलेईवाकुसीईवाश्रालवेज्जा॥इत्यादि ॥ ८ ॥

पुष्टकारणविनामुनिनवि ॥ द्रव्यअधिकारी ॥ चैत्य
पूजायेंनपामे ॥ फलअनधिकारी ॥ देव० ॥ ए ॥

अर्थ॥माटे कोइशासननोउद्योतप्रमुख मोहोटापुष्टकारणविना मुनीश्वरते द्रव्यअ धिकारीके०द्रव्यस्तवनाअधिकारी नविके०नहोय जेकारणमाटे चैत्यपूजाकरतासर्वेफ लनपामे केमके अनधिकारीके० जेहनोजेहनेअधिकारनही अनेते करेतो तेहनो फ ल नपामे अन्यथा अधिकारीतोफलपामे यतः अकसिणपवत्तगाणं ॥ विरयाविरया णएसखलुजुत्तो संसारपयणुकरणो ॥ दवत्थएकूवदिठंतो ॥ १ ॥ इतिवचनात् ॥ ते माटेमुनीनेनकरवी कसीणसंयमविउपुप्फाइयंनइछंति॥इतिवचनात् ॥ अनेवयरस्वामी तो कारणे प्रवर्त्त्या माटेतेने तोफलवंतजले ॥ ए ॥

मार्गअन्नियपुत्तअज्ञा ॥ लानथीलागा ॥ कहे
निजलानेंअतृता ॥ गोचरीनागा ॥ देव०॥१०॥

अर्थ ॥ कोइकप्राणी निजलानेंअतृताके० पोतानेलाने अतृतयका तथा अज्ञा लानथीनागाके० थायोंने लाने लमनेगृहने वली गोचरीनागाके० गोचरीनाआल सुने तेहने कोइकप्रेरणाकरेजे थायांनोआएयो अहारकिमकरोठो तिवारें इमकहेजे

मार्गेअन्नियपुत्तके० अणिकापुत्रनेमार्गे एटले एभावजे अणिकापुत्रेंसाधवीनोआण्यो आहारलीधोने तेमार्गे अमेपणजइयेंछैयें जोदोषहोयतो तेअरणीकापुत्रकेमलीये माटे आर्यानो आण्योआहारनिर्दोषछे परवचनंआवश्यके ॥ यतः अज्झियलाभेगिद्धा ॥ सएणलाभेणजेअसंतुठाः ॥ भिरकायरियाभग्गा ॥ अन्नियपुत्तंचवइस्संति ॥ १ ॥१०॥

नजाणेगतशिष्यअवमे ॥ थिविरबलहीणो ॥ सुगुण
परिचितसंयतिकृत ॥ पिंडविधिलीणो ॥ देव० ॥ ११॥

अर्थ ॥ हवेजेंएमकहेछे तेहनेउपकोदेतांगहुनेकपदेशदीएछे के जे अरणीका पुत्रनो दृष्टांत आपेछेते नजाणेके० नथीजाणता जें तेअरणीकापुत्र आर्यानोआण्यो आहारलेता पण कहेवाहता जें गत शिष्यके०शिष्यनोसमुदायपाछोनहतो वली अवमे के०डुकालहतो एटले एभावजें डुकाल जाणी शिष्यनेविहार कराव्यो हतो वली पोता नीपण थिविरके० वृद्धावस्थाहति तथा बलहीणोके० शक्तिहीणहता गोचरीयेंफर वाने असमर्थहता तथाआर्याजेंपुष्पचेलानामेसाधवी तेपण भलागुणनीपरिचयवान हती तेसंयतिके० साधवी तेणेकृतके० कयो एटले आण्यो एवोजें पिंडके०आहार तेवली विधिके० विधिसहित लीणोके० लीधोछे तेकारणतोकोइगणतानथी अने केवल आर्यालाभ गवेषेछे यतः ॥ अन्नियपुत्तायरिउ ॥ भत्तंपाणंचपुप्फचूलाए ॥ उवणियंभुजंतो तेणेवभवेणअंतयडो ॥ १ ॥ गयसीसगणउमे निरकायरियाअपच्चले थेरं नगणंतिलहाविलद्धा अज्झियलाभंगवेसंतो ॥ २ ॥ तो सहाविके० सखाइशि ष्यादिकछतांपण सवमुरख एमकहेछे इतिभाव ॥ ११ ॥

विगयलेवीनित्यसूजे ॥ लष्टपुष्टभणे ॥ अन्यथा
किमदोषएहनो ॥ उदायननगणे ॥ देव० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे केइक एमकहेछे जे विगयवावरवी निरंतरकल्पे एमपोते लष्टपुष्टय का भणेके० कहेछे एटले निरंतरविगय वावरतांदोषनथी एवुंबोलनार ने कोइक रुडासाधु उपको आपे के भाइ विगयतो साधुने निरंतरलेवीकल्पेनही यतः विगई विगईभीयो ॥ विगईगयंजोउभुंजईसाहु ॥ विगतीविगतीसहावा ॥ विगतीवीगतीव लानेई ॥ ॥ इतिवचनात् एमकहे तेहनेपाछो आवीरीतेउत्तरआपे जे अन्यथाके० जोविगयवावरतां दोषहोयतो तेउदायनराजऋषीयें केमगण्योनही एटलेएभाव जे

विगयन्नेनांदोसन्नोयतो उदायनऋषियें केमवावरीहती यतः नत्तंवापाणंवा छुतूणंला
वन्नवियमविसुद्धं।नोअ्रव रूपडिंवन्नं॥उदायनरिसिववईसंति॥१॥इत्यावश्यके॥१२॥

उदायनराजऋषितनुनवि ॥ सीतखुदसहे ॥ तेह
व्रजमांविगयसेवे ॥ सूंतेनलहे ॥ देव० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ वळी [illegible] जे उदायनराजऋषीना तनुके० शरीरनेविषे शीतके० टाढ अने खुदके० खुधुं तेनविके०नयी सहेवातु एटले राजवीथकां दिक्षालीधीने [illegible] तेमाटे सहननथीयातुं इतिनाव माटेउदायनऋषियें व्रजमांके० [illegible] विगयवापरीने एहवूं विगयवापरवानुंकारणते मुद्ध नलहेके० सुंनथी [illegible] विगयवापरी एटले ते ओतुंलेइने पोते वापरनार व्रजमाल [illegible] यतः [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]॥ [illegible] आवश्यकवृहत्वृत्तियें वंदनावश्यकेछे॥१३॥

[illegible] ॥ जनअसंयतने ॥ तेह
[illegible] ॥ धरेतेहमने ॥ देव० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ [illegible] मनुष्यलोकनो आलंबनेनखोले वाल वृध सूत्र अर्थ इ [illegible] आलंबनकरे जेमहुंबालकछुं अथवावृद्धछुं तेमज सूत्रनणुं [illegible] अथवाआदेशनानुंने रमणाडुनिंदादिकछे तथाहुं [illegible] इत्यादिकनिआरदकनिने पनेआलंबनग्योले यतः सुत्तछवालवुद्धे असहुंद [illegible] ॥ [illegible] ॥ संयम्माणाविसीयंति ॥ १ ॥ इत्यावश्यकेए [illegible] तेहवाअसयतापंचालवानीइछाकरनारजननेआलंबनथ [illegible] नियनवागादिकदेखेते मनेके० मनमांहे धरेके० धारी [illegible] इतिनावः यतः आलंबणाणलोगो ॥ जग्यो [illegible] ॥ [illegible] ॥ १ ॥ इत्यादि ॥॥१४॥

[illegible] आलंबनगहेमुनी ॥ मंदसंवेगी ॥ संयता
[illegible] ॥ तीव्रसंवेगी ॥ देव० ॥ १५ ॥

अर्थ [illegible] तेशिथिलविहारीना आल [illegible] मुगातमां पण [illegible] प्रतिबंधनथोनहीथा

सत्याश्रया तेमाटे एमकरतांपण प्रभुयेंधर्मदीगो एमजणायछे ॥ गाथा ॥ जेजह जाजइया बहुसुआचरणमंदसंघाणं ॥ इत्यावश्यके तथा तीव्रसंवेगीके० आकरावैराग्यवंततेलो संयतालंबनके० संयतमुनीराज तेहुनो आलंबनकरें जे अमुक मुनीराजें भिक्षुकप्रतिमावही तथाअमुकमुनीराजेंउपसर्गपरिसहसहनकर्या तोहुंपणतेवा सहनकरुं अथवातपकरुं एवीरीतेंकरतां सुजसगुणके०भलाजसनोगुणवधारे॥ गाथा जेजहजयाजइया ॥ बहुसुआचरणकरणमावन्ना ॥ जंतेसमायरंती ॥ आलंबण तीव्रसढाणं ॥ १ ॥ इत्यावश्यके एढालमांवर्णुवंदनकनिर्युक्तिनोअधिकारछे एत्रीजाढालमांएमकह्युंजे हीणाआलंबनलेइने पोतेहीणाचारीथाय पछेजेपोतेंहीणाचारी होय तेशुद्धाचारीना छिद्रकाढे तेवातचोथाढालमांकहेछे ॥ १५ ॥

ढालचोथीप्रभुपार्श्वनुं मुखडुंजोतांभवभवनापातिकखोतां एदेशी

सुणजोसीमंधरस्वामी ॥ वलीएककहुंसिरनामी॥
मारगकरतानेप्रेरे ॥ दूर्जनजेदूपणहेरे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे हेश्रीमंधरसाहेबतुमे सुणजोके० अवधारजो वलीके० पूर्वेकही ते थीवीजिवात एककहुंछुं सिरनामीके० मस्तकवडेतुमने नमस्कारकरीने जेशुद्धमार्गना करताके० पालता एवाने प्रेरेके० उदीरे एवाजे दुर्जनके० खलपुरुषछिद्रान्वेषीछे ते दूपणहेरेके० पारका अछता दूपणजूए ॥ १ ॥

कहेनिजसांखेंव्रतपालो ॥ पणधर्मदेशनाटालो ॥
जनमेल्यानुंसुंकाम ॥ बहुबोल्युंनिंदाठाम ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे तेएमकहेछे जेपोतानीसाखेंव्रतपालो अनेधर्मकरो पण लोकनेभेलाकरीने धर्मदेशना आपवानुंसुंकामछे माटे एवातनेटालो एमउपदेशकरी लोकनेभेलाकरवानुंसुंकामछे केमकेवणुंबोलतां कोइअवसरें निंदानुंस्थानकपणथाय ॥ २ ॥

एमकहेतांमारगगोपे ॥ खोटुंदूपणआरोपे ॥
जेनिर्भयमारगबोले ॥ तेकह्योछीपनेतोले॥३॥

अर्थ ॥ एवीरीतना बोलनाराते मार्गगोपेके० शुद्धमार्गने ढांकेछे खोटुंदूपणके० खोटादूपणनोआरोपकरेछे केमके जेप्राणी निर्भयके० कोइनोभयनराखे अनेशुद्धमा

गेनापे ते दीपनेतोले शास्त्रमां कह्योछे उक्तंच ॥ जोसम्मंजिणमग्गं ॥ पयासएनि प्पएणिरासेसो ॥ सोनवाणजणाणं ॥ दीवसमोनवसमुद्दंमि ॥ १ ॥ इति ॥ ३ ॥

अज्ञानीगारवरसिया ॥ जेजनछेकुमतेंग्रसीया ॥
तेहनोकुणटालणहार ॥ वणधर्मदेशनासार ॥४॥

अर्थ ॥ जे अज्ञानिके० मिथ्याज्ञानीहोय अथवा गारवरसियाके० ऋद्धिगारव रस गारव सातागारव मांहेमग्नथयाहोय वली जेप्राणी कुमतिग्रसियाके० कदाग्रहेंकुग्र हायें ग्रसायीरह्यांछे एटलेअन्यदर्शनना ग्रहणकरनाराछे इत्यादिकनी कुमतिते सार के० प्रधानएहवीजे धर्मदेशना तेदीधाविनातेओनी कुमतीने वीजो कुणटालणहार छे अने सारधर्मदेशनाविना कुमार्गेसुमार्गेनी शीखवरपडे ॥ ४ ॥

गीतारथजयणावंत ॥ नवभीरुजेहमहंत ॥ तस
वयणेलोकेंतरीयें ॥ जेमप्रवहणथीनरदरीयें ॥५॥

अर्थ ॥ हवे ते देशनाकेवापुरुषआपे तेकहेछे जे गीतार्थहोय गाथा ॥ गीयंनण इसुत्तं ॥ अछोतस्सेवहोइवरकाणं ॥ उभएणयसंजुत्तो ॥ सोगीयछोमुणेयव्वो ॥ १ ॥ त थाजयणावंत एटले छकायनारक्षकहोय वली भवभीरुके० संसारनीवीकराखनारहो य केरखेखोटुंबोलीयेंतो संसारवधे अने महंतके० महोटाहोय एटलेगुणेगिरुआहो य तेवाउत्तमपुरुषोनावचनथकी लोकमांथीतरीयें जेमनरसमुद्रमां प्रवहणके० जहा जथी पारपामीयें तेमगीतार्थनी देशनायें संसारसमुद्रथीतरीयें ॥ ५ ॥

वीजांतेबोलीबोले ॥ सुंकीजेनिर्गुणटोले ॥ ना
पाकुशीलनोलेखो ॥ जनमहानसीथेंदेखो ॥६॥

अर्थ ॥ हवे जे गीतार्थविनाम्हाहीम्हाहीवातोकरेछे तेने सीखामण आपेछेके गीता र्थविना जेवीजा तेतोबोलीनेके० देशनाप्रमुखआपीने श्रोतानेसंसारसमुद्रमां बोळे के० बुम्हाडेछे माटेएवा निर्गुणटोलानेसुंकरीयें गीतार्थविनाघणुंटोळुंमळ्युंहोय पणते शाकामनु केमके जेअगीतार्थछे तेवणुबोले उन्मार्गेपरुपेतोतेहने नापा कुशीलने ले खेजाणवा ते जनके० हेजन हेलोकएमलोकीकनापाएकवचनमाटेएमकहेछुंजे हेलो को एवातमहानिशीथसूत्रमां देखोके० उक्तं यथा कुसीलोसन्नपासछे ॥ सछंदेसबले तहादिट्ठी ॥ एवइमेपंच ॥ गोयमाननिरिकए ॥ १ ॥ पंचेएसुमहापावे ॥ जोनवजीज्ज

गोयमा ॥ सन्नावाइकुसीलेहिं ॥नमीलिसोकुमईजहा ॥ इतिमहानिशीथे ॥ एमां एम कह्युंजे पासत्थादिकपांचनेजेनवरजे तेमां संलापकुसीलादिकदोषआवे अनेतेदोषथीजु मतिनीपरेंसंसारभमे तथा ॥ तहाजिप्नाकुसीलें लेणं अणेगहा तित्त कडुअ कसाय महुराइं लवणाइं रसाइं असायंते अदिठासुयाइं इयपरलोगोभयविरुद्धाइं सदोसाइं मयारजयाकआरणाइं अवगंप्रुकाणं संतानिउग्गाइं वाभणंते अलमयन्नधम्मदेस णाचभणाणय जिप्ना कुसीलेणो एलेनयवं किन्नासाए दिन्नासाए कुसीलत्तंभवइ गोयमा भवइलेनयवं जइएवं ताधम्मदेसणंनकायव्वं गोयमा सावज्जाणंच आणं वयणाणंजो नजाणइ विसेसं वुत्तुपितस्सनखमांकि मंगपुणदेशणंकाउ इतिमहानिशीथे ॥ ६ ॥

जनमेजननीनहींईहा ॥ मुनीभापेमारगनीरीहा ॥
जोवहुजनसुणवाआवे ॥ तोलाभधर्मनोपावे॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जनमेजनके० लोकचेलाकरवानी नहीईहाके० इछातोनथी पणधर्मनी प्राप्तिजाणीने लोकआवीवेसेछे तेनेमुनीश्वर जैनमार्गभापे पण निरीहके० निरीह थकाकहे पणकोडीमात्रनीआशानराखे अनेयशतया माननी इछानराखे एरीतेंधर्म देशनादेता कदाचित् घणालोक सांभलवाआवे तोधर्मनोलाभघणोथाय घणालोक धर्मपामे संसारतरे ॥ ७ ॥ ◎ ◎ ◎ ◎ ◎ ◎ ◎ ◎ ◎

तेहनेजोमारगनभापे ॥ तोअंतरायफलचाखे ॥
मुनिशक्तिछतीनविगोपे ॥ वारेतेहनेश्रुतकोपे ॥८॥

अर्थ॥तथाजेलोकधर्मसांभलवाआव्या तेहनेधर्ममारग नभापेके० नसंभलावे तो ते मुनीयें ज्ञाननोअंतरायकर्यो तथा विघ्न कर्यो तेहनाफल चाखेके० भोगवे एटले ज्ञानावरणीकर्मबांधे गाथा ॥ अन्नाणीवखाणंकरेइ ॥ जोतस्सहोइपावफलं ॥ नाणीविजोनभासइ ॥ सोलहएनाणविग्घखु ॥ १ ॥ इतिहितोपदेशमालायां तेमाटे मुनीमां जोदेशनाआपवानी छतिशक्तिहोय तोगोपवेनही अथवा देशनाआपतोथ को थाकेनही तथा धर्मदेशनादेताथकाने जे वारेछे नाकहेछे तेप्राणीने श्रुतकोपेके० भवांतरेज्ञानावरणीबांध्युंहोय ते उदयथाय अज्ञानपणुआवे एटले श्रुतकोप्युं ॥८॥

नविनिंदामारगकहेतां ॥ समपरिणामेंगहगहतां ॥
मुनीअद्दचरितमनरंगे ॥ जोईलीजेंवीजेअंगे ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ एटलेशुद्धमार्गकहेतांनिदानथी केमके देशनातेज्ञाननोहेतुने समप
मेंके० रागद्वेषरहितपणे एटलेकोइकपरराग द्वेषनकरे अनेकोइनु नामलेइ तेनाअ
णवाद नबोले एरीते गहगहतांके० हरषपामीनापं णमआइकुमारनुंचरित्र बीजु
गश्रीसुयगडांगसूत्रना बीजाश्रुतस्कंदे छठाअध्ययने जोइलेजो ॥यथा ॥ इमंवयंतु
पाउकुव्वंपावाईणो गरिहामिसव्वमेवपावाईणो ॥ पुढोपुढोकिट्टयंता ॥ सयंसयंदि
करेतिपाउं ॥ १ ॥ तेअन्नमन्नस्सगरहमाणा ॥ अक्खतिउसमणामाहणाय ॥ सतोय
अच्छीअसतो ॥ अनछीगरहामोदिट्ठीनगरहामो ॥ किंचिरुविचनाकचि ॥ रूवेणमणि
धारयामोसदिट्ठिमग्गंतुकरेमिपाउं इत्यादिकअधिकार मननेरंगकरीनेजोजो ॥ ए ॥

कोइनापेंनवीसमजावो ॥ श्रावकनेगूढाजावो ॥
तेजुठकह्याछलद्दठा ॥ श्रावकसूत्रेंगहियठा ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वलीकोइकएमकहेने जे श्रावकने गूढाजावोके० गुह्यअर्थगुंसमजावो
तो एनहीसमजावो जोतसंसमजावशोतो मर्वनेपूठनाफिरशे सामाआपणात्रिइज्जो
श एवीरीने जकहेने तेजुठुकहेने केमके श्रावकनेतो श्रीभगवतिसूत्रमध्येलद्धठा ग
हियठा पुछीयठा अनिगयठा विणिच्छियठा इत्यादिकपाठकह्योने माटेजोश्रावकनेगू
ढअर्थनसमजाव्याहोय तोएपाठकेमकह्योने इतिजाव ॥ १० ॥

कहेकोइनवीमिजोमी ॥ श्रुतमांनहीकांइखामी ॥ तेमि
थ्यातुवतनजावा ॥ श्रुतजलधिप्रवेशनावा ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वलीकेटलाक अनसंजस एमबोलेने के नवीसीजोडीके० नवाग्रंथ अथ
वा स्तवन सज्झाय जोडवानुं सुंकामने केमके श्रुतके० सिद्धांतमांतोकाइखोडनथी
एटले सिद्धांतमांने तेकरतांतमे अधिकशुंकहेसो एवुकहेने तेपण मिथ्याके० खोटुक
हेने कारणके सिद्धांतमांथी उद्धरीनेजेग्रंथकर्याने तेनावने ते श्रुतजलधिके० श्रुतरू
पसमुद्रमां प्रवेशकरवाने नावाशरिखाने एटलेसमुद्रमां जोनावाहोय तोजप्रवेशथाय ते
मज सिद्धांतरूपसमुद्रमांपण जो एग्रंथप्रकरणरूपीनावडाहोय तोजप्रवेशथाय ११

पूरवसूरीयेंकीधी ॥ तेणेजोनविकरवीसिद्धी ॥
तासर्वेकीधोधर्म ॥ नवीकरवोजोयोमर्म॥१२॥

अर्थ ॥ एवुंसांनली वली प्रतिवादीबोल्याके तो पूर्वाचार्येंजे जोडीकीधीने तेहज
नणो तेणेके० तेमाटे जोनवीकरवीसिद्धिके० नवीजोडीनकरवी एमवात सद्दयवी

एटलेनवाप्रकरणप्रमुखजोडवानही एमसिद्धथयुं एवुंबोलनारने उत्तरकहेछेके तो पू र्वेसर्वेउत्तमजीवोथया तेणेसर्वेधर्मेकर्योछे तेमाटे तमेवलीधर्म सुंकरवाकरोछो तमने पणनकरवो केमके पूर्वाचार्येजोडीकरीछे माटेआपणनेनकरवी तोपूर्वेधर्मपणघणाजी वेंकर्योछे माटेआपणनेनकरवो ए मर्मके० एनाव ॥ १२ ॥

पूरवबुधनेबहुमाने ॥ निजशक्तिमारगग्याने ॥ गुरु
कुलवासीनेजोमी ॥ युगतिएहमांनहीखोमी ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ माटे जोग्रंथनोजोडनार आवोथयोनेनवाग्रंथजोडे तोतेमांकांइदोपनथी पूरवबुधनेबहुमानेके० पूर्वपंडितगीतार्थथया तेहनुबहुमानकरेजेपूर्वाचार्यआगलेंहुंते शाहीसावमांबुं पणतेनुंवचनखंडेनहीतथापोतानी शक्तिप्रमाणेयोजनाकरे पण अ धिकयोजनानकरे जोअधिकयोजनाकरे तोकोइकवेकाणेखोटुंआवीजाय माटे शक्तिप्र माणेजोडे वलीमार्गग्यानेके० जैनमार्गनुंज्ञानचोखुंनिर्मलहोयतोजोडे वली गुरुकुल वासीहोय तेसंप्रदायशुद्धजाणे तेवारेंयथार्थजोडाय एवापुरुपेंजोडवुं युक्त घटमा नछे एहमांकांइखोडीके० हाणीनथी ॥ १३ ॥

एमश्रुतनोनहीउछेद ॥ एतोएकदेशनोभेद ॥
एअर्थसुणिउल्लासें ॥ नविवरतेश्रुतअभ्यासें ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एरीते नवीजोडीकरतां श्रुतज्ञाननो उछेदनथीथातो पणश्रुतवृद्धिथायछे एतोएकदेशेंभेदछे एटले ग्रंथनामेभेदछे पण आत्यंतिकभेदनथी वली एग्रंथनोजे अर्थके० भावते उल्लासेंके० हरपे सांभलीने भव्यप्राणीते श्रुतज्ञानभणवाना अभ्या समांवर्ते केमके तेहनामनमांहे एमउपजेके आग्रंथमां आटलीवातकहीछे तोसि द्धांतमांतोवणासूक्ष्मभावकह्याहशे तेसाखंवधारेभणवानो अभ्यासकरे माटेनवीजो डीकरवी ते सिद्धांतनीवृद्धिकरेछे पण उछेदकरतीनथी इतिभावः ॥ १४ ॥

इहांदूपणएककहाय ॥ जेखलजनेपीमाथाय ॥ तोपण
एनवीगमीजें ॥ जोसज्जननेसुखदीजें ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ इहांएकदूपणकहेवायछे तेआवीरीतेके पंडितलोकजेग्रंथकरेछे तेथीपंडित नोयशवादबोलायछे तेजेखललोकहोयतेथीखमातुंनथी माटे ते खललोकोने पीडा थायछे तोपणएनवीजोडीकरवी ते नवीजोडीजेके० नमूकीयें जोसज्जनपुरुपने सुखथा यीयें तोनवाग्रंथजोडताजजइयें पणथाकियेंनहीइत्यादिभावः ॥ १५ ॥

तेपुण्येंहोसेतोप ॥ तेहनेपणइमनहीदोप ॥ उज
मतांहीयमेहीसी ॥ जोइलीजेंपेहेलीवीसी ॥१६॥

अर्थ ॥ ते नवाग्रंयजोडतां पुण्यथाशे तेपुण्येकरीने सज्जनलोकोने संतोपउपज
शे इहां सज्जनपदवाहीरयीलीजीयें तथा तेहनेपणके० तेखललोकोनेपण एमदोप
नथी एटलेतेनेपणपीडानयाय केवीरीतेनथायके जो उजमतांके० उद्यमकरीने हीय
देहीनीके० हीयामांहरपपामीने एअर्थ प्रयमवीसीमां हरिभद्रसूरियेंकहुंछे तेजोइ
लेजो यतः इकोगुणहोइदोसो ॥ जंजायइखलजणस्सपिडत्ति ॥ तहविपयट्टोइत्थं ॥ दिठु
सुयनाणयइनोगं ॥ १ ॥ तत्तोचियजंकुसलं ॥ तत्तोतिसिंपिहोइनडुपीडा ॥ सुन्हाल
पारविति ॥ सत्तेनिदोसियानणिया ॥ २ ॥ १६ ॥

कहेकोइकजूदीरीतें ॥ मुनिनिद्रावांजेचीतें ॥ तेजू
ठंगुनमतिइदे ॥ मुनिअंतरायथीवीहे ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वलीकोइकनो जूदीजरीतेंकहेछे जें देशनादेवानीनाकहीयेछेयें तेहनोअ्रा
शय एछेजें मुनीश्वरनादेतां अमारीनीदाननांगोछे कारणकेतमे एवोमार्गपरूपोजेथकी
अमनें गृहस्थारंभयायनही ते जीनीके० वीकनेमाटे देशनादेवानी नाकहीयेंछे यें तेजुठुं
के० एमबोलनारनुंवचन खोटुंकहेछे केमके जेपयार्येदेशनाआपनारमुनिछे तेगुनमति
ने हैहेके० वांछेछे एटले मनगमेत्त गुन अध्यवसायरावनाराछे तो ते एहवा मुनि
राज ने अंतरायदीयीहिवे के जोकोइने अंतरायपाडीसुं तोपोतानेअंतरायकर्मबंधासे
तो इत्यादिविचारनी निद्राहेमनांजे इतिभावः ॥ १७ ॥

जेजनछेअनिपरणामी ॥ वलीनेहनहीपरणामी ॥
तेहनेनिंगमजावे ॥ गुरुकल्पवचनमनभावे ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ जे ने तेह अनिपरणामीछे एटले एकनिश्चेमार्गज आदरवोछे तेपोतें
... जे तेहतवजाणनाकेइमारगतजे ॥ होयअतिपरणतिप
... वली केटलाकलोकने नहीपरणामीके० केवल व्यवहारनेज आ
... परनिश्चेमार्गजाणनाजनथी तेपण पोतेजआतवन
... परिणतमती ॥ सुद्धनयअनिहिगंनीत्तेतवत्ती ॥
... अनिपरणनिने निश्चयवादी अने अपरणनिते व्यव
... तो शुनिकार्गएमजाण्युंछे जे इहगियाम्बिविधास्त

यथा अपरिणामा अतिपरिणामाः परिणामाश्चेति तत्राऽविपुलमतयोऽगीतार्था अपरि
णतजिनमतरहस्या अपरिणामाः अतिपरिणामा अतिव्याप्तापवाददृष्टयोऽतिपरिणा
माःसम्यक्परिणतजिनवचनास्तुमध्यस्थवृत्तयःपरिणामाः तत्रयेअपरिणामास्तेनया
नांयः स्वस्वआत्मीयआत्मीयविषयो ज्ञानमेवश्रेयः क्रियावाश्रेय इत्यादिक स्तमश्रद्धा
नाः येत्वतिपरिणामाः तेपियदेवैकेननये क्रियादिकं वस्तुप्रोक्तं तदेतन्मात्रं प्रमाणत
या गृह्णंत इत्यादिकलिख्युंछे इहांतो पूर्वोक्तअर्थपणलागेछे तथा महाजाप्योक्तअर्थ
पणलागेछे वलीविशेषें बहुश्रुतकहेतेखरु इतिजावः एहवाअतिपरिणामी तथा नही
परिणामी जे लोकछे तेहने नितेके० न्यायमार्ग स्याद्वादमार्गदेखाडी गुरुसमजावेछे
अथवा नितेके०निरंतरदेशनायेंकरीसमजावेछे तेकोणसमजावेछे गुरुके०गुरुसमजा
वेछे एमवृद्धकल्पनाप्यमांवचनछे ते मनमांजावीनेंकहेछे यतः अइपरिणइअपरिणई॥
इएहंविमग्गंजणोपणासंति ॥ तम्हादेसणमाइरकई॥सुद्दगुरूमग्गरकट्ठा ॥ १ ॥ १८ ॥

खलवयणगणेकुणसूरा ॥ जेकाढेपयमांपूरा ॥ तुज
सेवामांजोरहीयें ॥ तोप्रभुजशलीलालहीयें ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे खललोकनावचनजेसुरवीरनी देशनाप्रमुखनेविषेछे तेहनेकुणग
णेके० कोणखात्रमांआणे एटलेसुरवीरतेनेगणतीमांआणताजनथीजे खलपुरुषछे
ते पयके० दूधमांथीपण पूराकाढेछे माटेजेदेशनातेगुणकारीछे तेहनेअहितकारी
कहेछे तो हे प्रभुजी तेहनावचन लेखामांगणीयेंनही अने तुजसेवामांरहीयेंके० त
मारीआज्ञापालीयें एटलेतमारीआज्ञाएवीरीतेंछे जे देशनाआपतां लाभजथायछे
माटेदेशनाआपवी एतमारीसेवाछे तेसेवामांजोरहियें तो जशलीलापामीयें प्रभुपद
संबोधनकरी आगलसंबंधकरयोछे अथवा प्रभुतानोयशतेहनीलीलापामीयें इतिजावः
॥ १९ ॥ एचोथाढालनेविषेखललोकें गुणवंतनेदूषणदीधा तेहनासमाधानकस्या ह
वे पांचमांढालमां खललोकनिर्गुणीथतां पोताना आत्माने गुणीकरीमानेछे तेनेदोष
दीयेछे तेसंबंधेपांचमोढालकहेछे ॥ १९ ॥ ⊙ ⊙ ⊙ ⊙ ⊙ ⊙ ⊙

ढालपांचमो रागरामग्री मंत्रीकहेएकराजसनामां एदेशी

विषमकालनेजोरेकेई ॥ उठ्याजम्मलधारीरे ॥ गुरुगछछोमी
मारगलोपी ॥ कहेअमेंउग्रविहारीरे ॥ १ ॥ श्रीजिनतुंआलं
वनजगने ॥ तुजविणकवणआधारोरे ॥ जगतलोकनेकुम
तिजलधिथी ॥ बाहियहिनेतारोरे ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ विषमकालनेजोरेंके० पांचमोआरो हुंमाअवसर्पिणीनेजोरें केटलाएक लव्याके० प्रगटथया जडके० मूर्ख वली मलधारीके० बाह्यशरीरेपणमेला अनेअंत रंगपापमेलेकरी मलीनथयेला माटेमेलनाधरनाराकह्या एटलेएनावजे एहाजप्राएं ढुंढीआ लुंकाआश्रीछे पछेंवीजाजीवोनेपणशीखामणदाखलछेहवेते ढुंढीआओने मायेगुरुनथी माटे एमकह्युंजेलव्याजडमलधारी उक्तंचवंगचूलिकायां श्रुतहीलनाध्ययने विक्रमकालाउपन्नरसय ॥ पणहत्तरीवासेंसुगएसुकोहंडी ॥ अपरिगाहिवंतरी पहावाउनारहेवासे ॥ १ ॥ सूयहीलणाजिणपडिमानत्तिनि ॥ सेहकारयासछंदा चारादुमेहा ॥ मलिणाङगाइगमिणिवहवे ॥ निस्कायरासमुप्पजिहात्तित्तिः एटले गुरुने तथागच्छनेछांडी मारगलोपीके०उन्मार्गपरूपीने तथा तेमने कोइपुछे तेनेएमउ त्तरआपे जे अमे उग्रविहारना करनारछुं तथा अमेअद्भुतमार्गपाम्याछेयें माटे श्री जिनके० बाह्यअभ्यंतरलक्ष्मीयुक्त एहवाहेजिनराजतुंज जगत्रने आलंबनके० आधारछे पण हे प्रभुतमाराविना बीजोकोणआधारछे तमेतमाराभक्तिनाकरनारा जे भक्तलोकछे तेहने कुमतिरूप जलधिके० समुद्र तेथकी वाहियहीने तारोके० पारकतारो एटले नवनवाकदाग्रहउपजतावारो ॥ २ ॥ ◎ ◎ ◎ ◎

गीतारथविणभूलान्नमतां ॥ कष्टकरेअभिमानेरे ॥ प्रायें
गंठीलगेंनवीआव्या ॥ तेखूताअज्ञानेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेते मूर्खलोक गीतार्थविनाभूलाजनमेछे अहंकारेंकरीजेपोतानोएकम तपकड्यो तेहनाअभिमानेकरी कष्टकरता लोचनिद्रा उघाडेमाथुं उघाडापग इत्या दिककष्टकरता फरेछे पणप्रायें एमजाणीयेंछेयेंजे तेलोक गंठीलगेंपणआव्यानथी ए टलेगंठीभेदपणनथीकर्यो तोसमकेतनीवाततोवेगलीछे तेप्राणीअज्ञानने विषेजखूता छे केमके गुरुआणाविनाछेमाटेइतिभावः ॥ ३ ॥ ◎ ◎ ◎ ◎ ◎

तेहकहेगुरुगच्छगीतारथ ॥ प्रतिबंधेसुंकीजेंरे ॥ दर्शन
ज्ञानचरितआदरियें ॥ आपेंआपतरीजेंरे ॥ श्री० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीते पोतानुंएकाकीपणुं थापवामाटे एमकहेछे जे गुरुनोप्रतिबंध गी तार्थनोप्रतिबंध तथागच्छनोप्रतिबंध तेप्रतिबंधेसुंकरियें केमके प्रतिबंधतेतो दुःखनोहे तुछे माटेप्रतिबंधकोइसायेनकरवो मात्र दर्शन ज्ञान चारित्र ए रत्नत्रयी आदरीयें बीजोकोइकोइने तारणहारनथी आपेआपतरीजेके० पोतेपोतानीमेलेतरीयें यतः अप्पानईवेयरणी ॥ अप्पामेकूडसामलि इतिवचनात् ॥ ४ ॥ ◎ ◎ ◎

नवीजाणेतेप्रथमअंगमां ॥ आदिगुरुकुलवासोरे ॥ कह्यो
नतेविणचरणविचारो ॥ पंचाशकनयखासोरे ॥ श्री० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेएनेउत्तरआपेछे के ते एमनथी जाणताजे प्रथमअंगमां श्रीआचारां गसूत्रनी आदिके० धुरें गुरुकुलवासोके० गुरुकुलवासकह्योछे यतः सूयंमेआउसंतेणं ॥ नगवयाएवमरकायं एमएसूत्रमांहेकह्युंजे सूर्यके० सांजल्युं मेके० मेंएमसुधर्मास्वामी जंबूप्रतेंकहेछे के मे सांजल्युंछे साक्षात् पणकरणघाटेनही आउसंतेणं के० आमृशता नगवानवीरना चरणउल्लसतायकां सांजल्युं एवचनेकरीने सुधर्मास्वामीयें एमवताव्युं जे गुरुकुलवासेंवसवुं इतिनाव नके० नही तेविणके० तेगुरुकुलवासविना चरणके० चारित्र एम विचारोके० चिंतनकरो एटलेएनावजे गुरुकुलवासविनाचारित्रनहोय एमपंचाशकमांहे श्रीहरिनद्रसूरियें खासोके० उत्तम नयके० न्यायकह्योछे यतः दंसणनाणचरित्तं ॥ गुरुकुलवासंमिसंगयंनणियं ॥ अगुरुकुलवासियाणं ॥ डुप्पडिलंनंखुत्तिएवमवि ॥ १ ॥ तथा सिद्धांतमांपणपिंमविशुद्धे चारित्रनी शुद्धीकेवायछे तेपिंमविशुद्धीतो जो गुरुकुलवासहोयतोथाय तेमाटे गुरुवासविना चारित्रनहीं यतः पिंमंअसोहयंतो ॥ अचरित्तीइछसंसउनही ॥ चारित्तंमिअसंते ॥ सवादिरकानिरछिया ॥ ११ ॥ इति ॥ ५ ॥

नित्येंगुरुकुलवासेंवसवुं ॥ उत्तराध्ययनेनाख्युंरे ॥ तेहनेअप
मानेवलीतेहमां ॥ पापश्रमणपणुंदाख्युंरे ॥ श्री जिन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वली निरंतरगुरुकुलवासें वसवुं एम श्रीउत्तराध्ययनसूत्रनाइग्यारमांअध्ययनेकह्युंछे यतःवसेगुरुकुलेनिच्चं ॥ जोगवउवंहाणवं ॥ पियंकरेपियंवाई ॥ सेसिरकंलहुमरीहई॥१॥इति वली तेहनेके०तेगुरुनेअपमानेके०अवज्ञाकरेतोतेहनेवलीतेहमांके० तेउत्तराध्ययनना सत्तरमांपापश्रमणियअध्ययनमध्येज पापश्रमणपणुंदेखाड्युंछे एटलेगुरुआदिकनी निंदाकरतोहोयतो तेहनेपापश्रमणकहीयें यतः आयरियउवझाया णं॥सम्मंनपडितप्पई॥अप्पडिपूयएथंधे॥ पावश्रमणित्तिवुच्चई॥१॥ तेमाटेगुरुकुलेरहेवुं

दसवैकालिकगुरुशुश्रूषा ॥ तसनिंदाफलदाख्यारे ॥ आवंतिमां
उहसमसदगुरु ॥ मुनीकुलमछसमनाख्यारे ॥ श्रीजिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीदशवैकालिकसूत्रनेविषे नवमाध्ययने गुरुनी शुश्रूषाके०सेवाकरवी तेसेवाना फल घणाकह्यांछे काव्य आयरियग्गिमिवाहियग्गी ॥ सुस्सूसमाणोपडि

जागरेज्जा ॥ आलोइयंगीयमेवनच्चा ॥ जोवंदमाराहयइसपुज्जो १ इत्यादिक आलो त्रीजोउद्देशोजाणवो वली तसनिंदाके० तेगुरुनी निंदाना फलपण तेदसवैकालिक मांहेज नवमाध्ययनना पेहेलाउद्देशामां कह्याछे काव्यं आसीविसोआविपरंसुरु हो॥किंजीवनासाउपरंतुकुज्जा ॥ आयरियपायापुणअप्पसन्ना॥अबोहिआसायणनत्थि मोरको ॥ १ ॥ इत्यादिकसंपूर्ण प्रथमउद्देशोइहांजाणवो वली आवंतिमांके० आचा रांगमां पांचमांअध्ययनना पांचमाउद्देशामध्ये सदगुरुनेद्रहसमानकह्योछे तथा मुनी नांकुलके० समूह तेमद्रहसमानकह्याछे तथाचतत्सूत्रं सेबेमि तंजहा अविहरए डीपुन्नेचिठंति समंसिनोमे उवसंतरएसारक्कमाणे सेचिठंति इत्यादिक एनी वृत्तिनो विचेयीएकदेशलखीयेंछैयें इहपुनः प्रथमभंगपतितेनोनयस्तन्नाविनाधिकार स्तथानू तस्यैवार्यंन्द्रहदृष्टांतः सचन्द्रहोनिर्मलजलस्यप्रतिपूर्णोजलजंः सर्वर्तुजरुपशोभितःस मे चूनागे विद्यमानोदकनिर्गमप्रवेशो नित्यमेवतिष्ठति नकदाचिह्योपमुपयातिसुखोत्ता रावतारः समन्वितउपशांतमपगतरजःकालुष्यापादकं यस्यस तथानानाविधांस्तुयाद सान् गणांनसहवायादोगणैरात्मानमारक्षयन्प्रतिपालयन्सारक्षन् तिष्ठत्येषांक्रियाप्र कृतंवयथावासो न्द्रहस्तथाचार्योपीति दर्शयतिसेचिठइ इत्यादिसआचार्यः प्रथमभंग पतितःपंचविधाचारसमन्वितो अष्टविधाचार्यसंपडुपेतःषट्त्रिंशद्गुणगणाधारो न्द्रहक ल्पोनिर्मलज्ञानप्रतिपूर्णः समेभूभागइतिसंलक्तादिदोषरहिते सुखविहारक्षेत्रेसमोवा ज्ञानदर्शनचारित्राख्योमोक्षमार्गे उपशमवतांतत्रतिष्ठतिसमध्यास्तेकिंभूत उपशांतमो हनीयइतिकिंकुर्वन् जीवनिकायान् रक्षन् स्वतः परतश्चसडुपदेशदानतोनरकादिपाता द्धतिस्रोतोमध्यग इत्यनेन प्रथमभंगपतितं स्थविराचार्यमाहतस्यहिश्रुतार्थदानग्रहण सद्भावात्स्रोतोमध्यगतत्वं सचकिंभूतःस्यादित्याहइत्यादिक ॥७॥

गुरुदृष्टिअनुसारेंरहेता ॥ लहेप्रवादप्रवादेंरे ॥ एपणअर्थ
तिहांमनधरियें ॥ बहुगुणसुगुरुप्रसादेंरे ॥ श्रीजिन०॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीगुरुदृष्टिके० गुरुनासुखआगल रहेतां तथा अनुसारेंके० गुरुनेअनु जायीरहेतां लहेप्रवादप्रवादेंके० प्रकृष्टजेवाद तेनेप्रवादकहियें तेप्रवादेंकरीने प्रवाद जाणे एटलेप्रवादतेआचार्यपरंपरानोउपदेश तद्रूपप्रवादेंकरीने सर्वज्ञउपदेशरूपप्रवा दनेजाणे अथवा प्रवादजे सर्वज्ञवाक्य तेणेकरीने अथवा प्रवादजे अन्यतीर्थिकना वाक्य तेप्रतेपरिक्षाकरीनेजाणे एरीतगुरुपासेरहेतांज्ञान अंगीकारकरे इत्यादिक एअर्थ पणतिहांके० तेआचारांगना पाचमांअध्ययनना छठाउद्देशामां कह्युंछे तेमनमां धरि

यें तत्त्सूत्रंआणाणाए एगे सोवठाणे अणाणाए एगे ॥ निरुवठाणे एयं ॥ तेमाहो
उएयंकुसलस्सदंसणं ॥ तद्दिठिए तमोत्तीए तप्पूरकारें तस्सन्निवेसणे अनिभू
य अदक्कं अणनिभूए पहू निरालंवणयाए जे महंअवहिमणे पवायेणपवायंजाणे
ज्जा सहसंमुइयाए परवागरणेणं अन्नेसिं वाअंतिएसोच्चा निद्देसं नातिवत्तेज्जा मेहा
वी सुपमीलेहिय सव्वतोसव्वआएसममेव समनिजाणीज्जाइत्यादिक एहनोअर्थटीका
मांतोबहुछे पणआंइ शब्दार्थमात्रलिखीयें छेयें अणाणाएके० प्रभुआज्ञारहित एगेके०
केटलाक सोवठाणेंके० धर्ममांसदाउद्यमवंतथया तथा केटलाक अणाणाएके० अ
नाज्ञायेंनिरुवठाणेके०सदअनुष्ठाननाउद्यमरहीत एयंके०एबेकुमार्गने सद्मार्गनाउ
द्यमनुंआलसजाणवुं हवेफरिगुरुशिष्यनेकहेछे तुजने ए बे मांहेजो एवंकुसलस्सदं
सणंके० एतीर्थंकरनोदर्शनअभिप्रायछे तद्दिठिएके० विनितशिष्यें तेआचार्यनीद्दष्टी
येंवर्त्तवुं तमोत्तिएके० तेआचार्यनीमुक्तियेंवर्त्तवुं तप्पुरकारेके० तेआचार्यनी आज्ञा
आगलकरीनेवर्त्ते तस्सन्निके० तेओनीसंज्ञाजाणे चित्तनोअभिप्रायजाणे तन्निवेसणे
के० सदागुरुकुलवासेंवसे एहवोशिष्यकेवलगुणनेपामे तेकहेछे अनिभूयके० परिस
हउपसर्गनेजीतीने अदक्कंके० घातिकर्मनेउछेदे हेशिष्यवली अणनिभूएके० परिस
होपसर्गनेअणजित्योथको पहुके० समर्थहोय निरालंवणयाएके० मातापितासज्ज
नादिकना आलंबनरहितपणे विचरवानेकोणसमर्थहोय तेकहेछे जेके० जेकोइपु
रुष महंके० मोहराअभिप्रायथकी अवहिमणेके० मनवाहेरनथीनिकल्युंजेहनुं एटले
सर्वज्ञउपदेशेंवर्त्तेछे इतिभावः तेसर्वज्ञउपदेशकेमजाणीयेंतेउपरेंकहेछे पवाएणंपवायं
जाणेज्जा एअर्थलहेप्रवादप्रवादेंएमकह्युंतिहांकह्योछे तेजाणवुं हवेपूर्वोक्तजेप्रवादते
त्रण्यप्रकारेजाणे तेकहेछे सहसंमुइयाएके० पोतानीमतिअवध्यादिकमते अथवा प
रवागरणेणंके० सिद्धांतकरीने वाके० अथवा अनेसिंके० अन्यआचार्यादिकतेहने
वाअंतिएसोच्चाके०समीपेंसांभलीने यथार्थजाणीने निद्देसंनातिवत्तेज्जाके०तीर्थंकरना
उपदेशनेउलंगेनही केमकेजे मेहावीके० पंडित सुपडिलेहियके० भलेप्रकारेंजोईने
सव्वतोसव्वआएके० सर्वप्रकारें द्रव्यक्षेत्रेंकालभावें सर्वपणे स्वदर्शन परदर्शनप्रतें सम
मेवके० सम्यक्रीतें समनिजाणीज्जाके०जाणीनेनिराकरणकरे इत्यादिकवहुअधिका
रछे तेमाटे वहुगुणसुगुरुप्रसादेके०गुरुआदिकनापसायथी घणागुणथाय॥ पुज्जाजस्स
पसियंति ॥ संबुद्धापुव्वसंथया ॥ पसन्नालाभइस्संति॥विउलंअट्ठियंसुयं ॥ १ ॥ इत्युत्त
राध्ययनेप्रथमाध्ययने इहांसूत्रथालावोविपमहतोमाटेअर्थकह्योछे ॥ ८ ॥

विनयवधेगुरुपासेंवसतां ॥ जेजिनशासनमूलोरे ॥ दर्शन
निर्मलउचितप्रवृत्ति ॥ सुजरागेंअनुकूलोरे ॥ श्रीजिन०॥ए॥

अर्थ ॥ वली गुरुपासेवसतां विनयवधे अने जेविनयते जिनशासननुं मूल ठे य तः एवंधम्मस्स विनउमूलंपरमोसेमोक्खोइति दसवैकालिक नवमाध्ययनना बीजा उद्देशकेंकह्यो तथा विनयफलंशुश्रूषा गुरुशुश्रूषाफलंश्रुतज्ञानं ॥ ज्ञानस्यफलंविरति विरतिफलंचाश्रवनिरोधः ॥ १ ॥ आश्रवनिरोधात्तचसंततिक्षयः ॥ संततिक्षयान्मोक्षः॥ तस्मात्कल्याणानां सर्वेषांनाजनंविनयः॥१ इतिप्रशमरतौ वली गुरुकुलवासेंदर्शनश्रद्धानिर्मलथाय उक्तंच सव्वगुणमूलनूउं ॥ नणीउंआयारपढमसुत्तेजं॥ गुरुकुलवासोवस्सं ॥ वसिक्कउत्तम्नचरणथी ॥ १ ॥ इतिधर्मरत्नवचनात् तथा उचित के० योग्यप्रवृत्तिथाय तेपणसुजरागेंके० नलारागसहितप्रवृत्तिकरे तेपण अनुकूल के० सन्मुखनावपणेकरे पणवेठनीपेठेनकरे ॥ ए ॥

वैयावच्चेंपातिकत्रूटे ॥ खंतादिकगुणसक्तीरे ॥ हितोपदेशें
सुविदितसंगे ॥ ब्रह्मचर्यनीगुप्तिरे ॥ श्रीजिन० ॥ १० ॥

अर्थ॥गुरुनोवैयावच्चकरतांथकां पातिकके०पापकर्मत्रूटे यतः वैयावच्चेणंनंते जीवे किंजणइवेयावच्चेणंतित्थयरनाम गोयं कम्मंनिबंधइ इतिउत्तराध्ययन उंगणत्रीसमाध्ययनेकह्यो वलीगुरुआदिकपासेरहेतां खंतादिकके० क्षमाप्रमुखगुणनीशक्तिवधे तथा गुरुपासेंरहेतोथको हितोपदेशसांजले तेणेकरी तथासुविहितनासंगेकरीने ब्रह्मचर्यनीगुप्तिके० नववाडोजलीरीतेंपाले तेगुप्तिपणवाधे ॥ १० ॥

मनवाधेमृदुबुद्धीकेरा ॥ मारगजेदनहोवेरे ॥ बहुगुणजाणे
एअधिकारें ॥ धर्मरयणजेजोवेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ११ ॥

अर्थ तथा मृदुबुद्धीकेराके० जे ऋजुमतिनाधणीहोयतेहना मनवाधेके० चित्त मांहे उल्लासवधे कारणके० जेनोलालोकहोयतेगुरुसाथेदेखीने हरषपामे अने गुरु पीजूदादेखीने नडकीजाय तथा मारगनोजेदनथाय अनेजे एकाकीमार्गपरुपे तेघणो अपवादपरुपे अनेगीतार्थघणोउत्सरंगपरुपे एवीरीते जूदीजूदी परुपणा सांजलीने लोकपणनिन्नमार्गसमजे तेथीधर्ममार्गनोजेदथाय अनेगुरुसाथे जेलारहेतायकांनथाय इत्यादिक गुरुकुलवासमांहेबहुके० घणागुणजाणे एअधिकारेंके० एगुरुकुलवासना

अधिकारनेविषेधर्मरत्नग्रंथजेप्राणीजुए तेजाणे एटले एग्रंथमांगुरुकुलवासेंरहेतां घणागुणनेतेविस्तारेंकह्युंछे इतिभावः ॥ ११ ॥

नाणतणोसंभागीहोवे ॥ थिरमनदर्शनचरित्तेंरे ॥ नत्यजे गुरुकहियेंएवुधन्नाप्युं॥आवश्यकनिर्युक्तेंरे॥श्रीजिन०॥१२॥

अर्थ ॥ वली तेजीव गुरुपासेथीज्ञाननणेमाटे नाणके० ज्ञाननोसंविभागीथाय तेमज दर्शननेविषे तथाचरित्तेके० चारित्रनेविषेपण तेहनोमनथिररहे तेप्राणीगुरु के० गुरुआदिकने कहियेंके० कोइकाले नत्यजेके० नछांडे एरीते बुधभाष्युंके० पं डितलोकेंकह्यो एटले भद्रबाहुस्वामी चउदपूर्वधर तेणेआवश्यकनिर्युक्तिनेविषे एमक ह्योछे यतः नाणस्सहोइभागी ॥ थिरयरउंदंसणोचरित्तेय ॥ धन्नाआवकहाएगुरु ॥ कुलवासंनमुंचंति ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

भौतप्रतेंजेमवाणेहणता ॥ पगअणफरसीसवरारे ॥ गुरुगंभि आहारतणोखप ॥ करतातेममुनिनिवरारे ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ तथा भौतके० बौधप्रतेंजेम वाणेकरीनेहणता पिछुंलेवानेमाटे पणपग अणफरसीने एटले पगफरसतांपापलागे तेमाटेसवराके० सबरानामेराजानीपेरेंजे गुरुकुलवासछांडीने आहारनोखपकरतां एटले शुद्धमानआहारखोलताजेमुनी तेहने निवराजाणवा एटले नकामाजाणवा इतिगाथार्थ भावार्थतोकथाथीजाणीयें तद्यथा कोइकसन्निवेशनेविषे सबरनामेराजा तेबौधनोभक्तिवंतहतो तेनायरेंबौधनोगुरुआ व्यो तेणेपोतानामाथाऊपर अति अद्भुत शोभावंत मोरनापीछनुंछत्रधारणकर्युंहतुं रा जायेंघणोआदरसत्कारआपी आसनेबेसाड्यो पछेतेनुंछत्र मोरनाचंदेकरीझगझगाट करतुं राजानीराणीयेंदीठुं पछेकुतूहलपामतीथकी राणीयेंतेछत्रमांग्युं केमके तेदेशमां मोरनहता तेथीअचरजनेमाटे तेछत्रबौधनागुरुयेंआप्युंनही अने तणीनेपोतानेठेका णेजतोरह्यो पछेराणीयेंभोजनकीधुनही तेवारेराजायेंपुछयुंके शावास्तेभोजनकरतीन थी राणीबोलीके एछत्रआवेतोभोजनकरुं पछेराजायें तेछत्रगुरुपासेथीमांग्युं गुरुयें आप्युंनही फरीवारंवारमांग्युं पणगुरुआपेनही पछेस्नेहरागअतिउधरछे माटेराणीना स्नेहें राजायेंपोताना सुभटोनेहुकमकर्यो जे बलात्कारेंपण एपीछनुंछत्र लेइआवो ते वारें सुभटोबोल्याजे एपोतेजीवतांतोछत्रआपशेनही माटेतमारोहुकमहोयतो कोइक प्रहारकरी बलात्कारेंलावियें तेवारेंराजाबोल्योजे गुरुनीआशातनानयाय माटे गु

रुनापादस्पर्शकरसोनही पणदूरउनारहिवाणनाखीने चेष्टारहितकरीवस्त्रलेइआवो प णपादस्पर्शकरसोतो गुरुनीअवज्ञाथासे तेनुमोहोटुंपापलागसे एदृष्टांते जेमशवर राजागुरुनोनासकरतां तथा पादस्पर्शकरतांवारतोहतो एहवोजविवेकगुरुकुलवासत जीने जेछकआहारगवेषेछे तेहनेपणजाणवो यतः सुद्धंगईसुजुत्तो ॥ गुरुकुलवागा इणोहविन्नेउ ॥ सवरसमरक्खपिछ ॥ ज्ञचायपायाठिवणतुल्लो॥१॥ इतिधर्मरत्न ॥१३॥

गुरुकुलवासेंज्ञानादिकगुण ॥ वाचंयमनेवाधेरे ॥ तोआहार
तणोपणदूपण ॥ खपकरतांनविवाधेरे ॥ श्रीजिन० ॥ १४॥

अर्थ ॥ वली गुरुकुलवासेंवसतांथकां ज्ञानदर्शनचारित्रना गुणते दिनदिनप्रतेंवधे वाचना पृछनादिकेकरी वाचंयमनेके० मुनिराजने वाधे हवेपाठलावेपदनोअर्थअन्व यकरीकहीयेंछेयें तेज्ञानादिकगुणनी वृद्धीथायतो आहारनोखपकरतांपण दूपणन वाधे इत्यन्वयः एटले ध्यानध्याननी लेहेरमांवेवाथकां कोइकव्यानुयोगमां अ त्यंतमग्नपणे एयामां गोचरीयेंनिकल्याथकां कोइकस्थानकें सूक्ष्मदोषदेखीने चिंत वनकरे जेध्याननीलेहेर हजीचित्तमां अंतरवासनायेंछे अनेघणाघेरफरवाजइसतो तेले हेरफरीआवशेनही एहवुंविचारी कांइकदूपणसहित आहारलीये तोपणतेहनेबाधन करे एटलेकर्मबंधननोहेतुनथाय यतः अहागडाइभुंजंता ॥ अन्नमन्नेणकमुणो ॥ उव लित्तेवियाणिज्जा॥अणुवलित्तेतिवापुणो ॥१॥इत्यादिकसुयगडांगसूत्रेअध्ययन २१मां मध्ये कह्योंछे तथा गुरुकुलवासवसतो मुणीणोवट्टंतीनाणपमुहेहिं ॥ जइएसणा इबोलग्ग ॥ तवमविमन्निजएसुगुणं ॥ १ ॥ इतिभावः तथाअपवादें गाढग्लानादि कनाकार्ये अणगरते गच्छमांरह्या गुरुआणावर्त्तिने असछनावेंवर्त्ततानेआतुरदृष्टांते आधाकर्मादिक आहारतेपण निर्दोषजाणवो तथाचागमः संथरणंमिअसुद्धं ॥ उ न्हविगिन्हतदितयाणहियं ॥ आकरदिठंतेणं ॥ तंचेवहीयंअसंथरणे ॥ १ ॥ तथया॥ जाजपमाणग्गनवे ॥ विराहणासुत्तविहिमगस्सः साहोइनिज्जरफला ॥ अजत्थवि सोहिजुत्तस्सत्ति ॥ २॥ उत्तराध्ययने एरीतेंदूपणसहितआहारतेपणबाधनकरे॥१४॥

धर्मरतनउपदेशपदादिक ॥ जाणीगुरुआदरवोरे ॥ गछक
ह्योतेहनोपरिवारो ॥ तेपणनितअनुंसरवोरे ॥ श्रीजिन०॥ १५॥

अर्थ ॥ तथाधर्मरत्न अनेउपदेशपद प्रमुखग्रंथजोइने एग्रंथोमांगुरुकुलवासना अधिकारपणे माटेतेमांथीजाणीने गुरुआदरवो वलीगछते कोनेकहीयेंतेकहेछे

तेह्नोपरिवारोके० एहवासुविहितसाधुनो परिवारतेहनेगच्छकहीयें यतः गुरुपरिवारोगच्छो इत्यादिकपंचवस्तुवचनात् माटेतेगच्छपण निरंतरअंगीकारकरवो अनुसरवो इति यतः गुरुगुणजुत्तोगच्छो ॥ संविग्गासाहुसमवाउ ॥ मुक्खमग्गछिणांसोय ॥ अणुसरियव्वोपयत्तेण ॥ इत्यादि ॥ १५ ॥

सारणवारणप्रमुखलहीने ॥ मुक्तिमारगआराधेरे ॥ सुन्नवीरय
तिहांसुविहितकिरिया ॥ देखादेखेंवाधेरे ॥ श्रीजिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ वलीसारणके० विसखुंहोयते संभारीआपे अनेवारणके० पापकरणीकरतानेवारे तथाप्रमुखशब्देंकरीचोयणा प्रतिचोयणापणलेवी तेपणजेगच्छमांरहे तेहनेथाय पछेतेसारणादिक लहीनेके० पामीने मुक्तिमारगआराधेके० मोक्षमार्गसाधे यतः गुरुपरिवारोगच्छो ॥ तत्थवसंताणनिज्जराविउला ॥ विणयाउतहासारण॥ माइहिं नदोसपडिपत्ति ॥१॥ इतिपंचवस्तुके तथाश्रीधर्मरत्नप्रकरणनीवृत्तिमध्येकह्युंछेके सुन्नवीरयके० नलोवीर्योल्लासवांधे वलीसुविहितकिरियाके० आत्मार्थिगीतार्थेनी क्रियाव्यवहार तेदेखादेखीयें वधे एटले साधुउनासमूहने क्रियातपजपादिक करतां देखीने पोतानेपण करवानुंमनथाय तेह्थीवधारोथाय ॥ १६ ॥

जलधीतणोसंखोभअसहता ॥ जेमनीकलतामीनोरे ॥ गच्छसार
रणादिकअणसहता ॥ तिममुनीदुखियादीनोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ जेमजलधीके० समुद्रनो संखोभके०कल्लोलप्रमुखनीजे क्षोभना तेहने असहताके० जेवारेंसहीसकेनही तेवारें जेम मीनके० मच्छहोयतेसमुद्रमांथीबाहारनीकले तोदुःखीथाय तेमगच्छमांरहेताथका गुरुआदिकजेसारणादिककरे तेसहनकरवीपडे अनेजेवारें नसहवाय तेवारेंगच्छथीबाहारनिकले तोतेसमुद्रमांथीनिकलेला मच्छनीपरेदुःखीथाय दीनथाय केमके गत्यंतरेदुर्गतियेंजाय माटेदुःखीदीनजथाच इतिभावः यतः जहजलनिहिकल्लोल॥ खोभमसहंतायबाहिरंपत्ता ॥ मीणाअमुणियमृणीणो ॥ सारणपमुहाइअसहंता ॥ १ ॥ इतिआचारांगपंचमाध्ययनेचतुर्थोद्देशकवृत्तौ यथा ॥ जहसायरंमिमीणा ॥ संखोहंसायरस्सअसहंता ॥ णितितउसुहकामी ॥ णिगायमित्ताविणस्संति ॥ १ ॥ एवंगच्छसमुद्दे ॥ सारणवीइहिचोइयासंता॥ णितितउसुहका॥मीणावजहाविणस्संति ॥१॥इत्यादिकउघनिर्युक्तिवचनात् ॥१७॥

काकनर्मदातटजेममूकी ॥ मृगतृष्णाजलेंजातारे ॥ दुखपा
म्यातेमगच्छतजीने ॥ आपमतिमुनीयातारे ॥ श्रीजिन० ॥ १८ ॥

अर्थे ॥ वलीदृष्टांतकेहेछे जेमनर्मदानदीना किनाराऊपररहेनारा काकपद गडा ते तटके० नदीनोकांठोमूकीने तेनदीनाकांठाथीदूरपाणीजेवीजाकडदेखाय पाणीहोयनही तेभ्रांतरूपपाणी तेनेमृगतृष्णाजलकहीयें तेजलनीभ्रांतियेंदोडताए कागडा तेजेमदुःखपामे तेवीरीतें सुविहितना समुदायनोगछतजीने जे आपमति स्वेछाचारीमुनी थवाजाय तेकागडानीपेठेदुःखपामे ॥ १८ ॥

पालविनाजेमपाणीनरहे ॥ जीवविनाजेमकायारे ॥ गीता रथविणतेमसुनीनरहे ॥ जूठकष्टनीमायारे ॥ श्रीजिन० ॥ १९॥

अर्थ ॥ माटे जेम सरोवरादिकनुंपाणी ते पाल बांध्याविना रहेनही तथा जेम जीवविना काया नरहे तेम जेमुनिराजछे तेगीतार्थविना रहेनही गीयछस्सविहारो॥ बीओगीयछमीसिओभणीओ॥इत्यादिवचनात् माटेजे गीतार्थविना जेटला कष्टकरे ते सर्व अज्ञानमां जछे अने जेअज्ञान तेमिथ्यात्वछे ते मायाके० कपटविना होयनही ॥१९॥

अंधपरनेंजेमनिर्मललोचन ॥ मारगमांलेइजायरे ॥ तेमगीता रथप्रसगमुनिने ॥ दृढआलंबनथायरे ॥ श्रीजिन० ॥ २० ॥

अर्थ । वलीदृष्टांत कहेछे जेम आंधलाने निर्मलआंखनो धणी ते कांटा प्रमु खेरहित एवा समममार्गे लेइजइने स्थानकें पोहोंचाडे तेम गीतार्थ जेछे ते जो धर्मार्थि पुरंमुनि होयतो तेने पण दृढके० जबरदस्तआधारभूतथायछे ॥ २० ॥

समनारीनीतार्यनाणी ॥ आगममांहेंजदियेंरे॥ आतम अरथी गुननिगछन ॥ कहोनेविणकेमरहियेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ २१ ॥

अर्थ - वली समनारीके० स्याद्वादवचनना नारीहोय अथवा समनारीके० ग [illegible] समजनारा आगमके० सिद्धांतमांहे तेमना आगे तथा गीतार्थ होय नाणीके० [illegible] एवा गीतार्थ जदियेंके० पामीयेंतोये वली आतम [illegible] सावधान एजमानतथा तथा गुनमनिके० नलीम [illegible] तेम कुमति कदाग्रहहोयनही वली सज्ञानके० ज्ञानसगुणवन्त [illegible] एवा गीतार्थविना इहां सर्वपदनेंबांधने बोलावीयें [illegible] ॥ २१ ॥ ने एहवा गुरुगीतार्थ पुरुषविनाकहो

लोचनआलंबनजिनशासन ॥ गीतारथछेमेढीरे ॥ तेविणमु
नीचढतीसंयमनी ॥ आरोहेकेमसेढीरे ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वली गीतार्थ तेग्यानरूप लोचनना आपनारा माटेगीतार्थने जिनशासननेविषे लोचन कहियें तथा दुर्गतिनेविषे पडताप्राणीने आधारथाय माटेगीतार्थने जिनशासननेविषे आलंबनकहीयें वली गीतार्थते मेढीवरावरछे एटले जे खेतरखलाना विचमां स्तंजरोपीनेअन्नउपरें फेरवेछे तेने मेढीकहीयें उपलक्षणथी स्तंजभूत कहीयें जेहने आधारें घरमालप्रमुख रहेछे तथा यानकहीये जेहने आधारे महाअटवीनो विहामणोमार्ग होय तोपणपारपामीयें यतः मेढीआलंवणंखनं॥ दिठिजाणंसुउत्तमं ॥ गीयछंगुरुगुणाइणं ॥ सम्मंजाणसुगोयमा ॥ १ ॥ माटेते गीतार्थविना मुनिराजते संयमनी सेढीके० श्रेणी केम आरोहे एटलेकेमचढे अने उत्तरोत्तर शुजाध्यवसायें केमवधे एसंयमश्रेणीनो अधिकारते संयमश्रेणीनुंस्तवन अमारागुरुश्रीउत्तमविजयजीकृतछे तेथी विस्तारेंजाणवुं तथापंचसंग्रहथीजाणवुं ॥१२॥

गीतारथनेंमारगपूछी ॥ गंमीजेंउन्मादोरे ॥ पालेकिरिया
तेतुजन्नक्ति ॥ पामेजगजशवादोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ तेगीतार्थनें मार्ग पूछीने उन्माद जेस्वेछाचारीनुं मदोन्मत्तपणुं तेछांमवुं एरीतेतमारीआणासहितचाले तेजतमारीनक्तिजाणवी तेतमारीनक्तिकरीने जे क्रिया पाले एटले एनावके तमारीएआज्ञाछे जेज्ञानसहित क्रियापाले तेप्राणीजगतनेविषे जशवादपामे ॥ १३ ॥

ढालछठ्ठीरासुडानीदेशीअथवाहितसिक्षाछत्रीशीनीएदेशी

प्रथमज्ञाननेपछेअहिंसा ॥ दसवैकालिकसांखिरे ॥ ज्ञानवंतते
कारणजजियें ॥ तुजआणामनराखिरे ॥ साहेबसुणयोरे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवे आगला ढालमां ज्ञानसहितक्रियाकरता संयमश्रेणीआरोहे एमकह्युं तेमांज्ञानपूर्वकक्रियाकरे तोलेखेछे माटे आढालमांज्ञानवर्णवेछे जेप्रथमज्ञान होयतो पछे अहिंसाके० दयापलीशकेछे एमश्रीदशवैकालिकसूत्रमां कह्युंछे यतः पढमंनाणंतउदया एवंचिठ्ठइसव्वसंजए तेकारणेज्ञानवंतने नजीयेंके० सेवीयें पणहेपरमेश्वर तमारीआज्ञा ते मनराखिके० चित्तमांराखीने एटलेएनावजे ज्ञानवंतने नजीयें पण साध्यमां एमराखीयेंजे ज्ञानक्रियाज्यांमोक्षः नाणक्रियाहिमुक्कोइतिजाष्यवच

विहारकरतां आवीविधियें करवुं अथवा मगधादिकदेशें आवीविधियेंकरवुं इत्यादिक नजाणे वलीअध्वविशेषके० दूरदेसेंअटवीप्रमुखें आवीरीते विहारकरवुं इत्यादिक वा तो अगीतार्थ नजाणे हवेकालद्वारकहेछे जे सुभिक्षमां कल्पनजाणे जे सुभिक्षमां आरीतेविचरवुं वलीदुर्भिक्षमां पणकल्पके० योग्यनजाणे जेदुर्भिक्षमांआवीवस्तु होय तोज लीजीयें इत्यादिक वातो कालना विचारनीते अशेषके० समस्तप्रकारेंअगी तार्थनजाणेइतिभावः यतः जहछियंखित्तंनजाणई ॥अद्धाणेजणवएयजंभणीयं॥ का लंपियनविजाणइ ॥ सुभिक्खदुभिक्खजंकप्पं ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ४ ॥

भावहिठगिलाणनजाणे ॥ गाढअगाढहकल्परे ॥ खमतो
अखमतोजननलहे ॥ वस्तुअवस्तुअनल्परे ॥ सा०॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेभावद्वारकहेछे जे भावके० भावना विचारनेविषे हिठ्ठके० निरोगीने तथा गिलाणके० रोगाक्रांतने नजाणे एटले निरोगीने आदेवुं तथा रोगीने आव स्तुदेवी तेवातो अगीतार्थनजाणे अने गाढकल्पके० आकरेकारणेंआरीतें करवुं त था अगाढकल्पके० स्वभावसेंहेजरीतेंतो आप्रमाणे वर्त्तवुं एअगीतार्थनजाणे हवेपु रुषद्वार केहेछे खमतोके० आपुरुषसामर्थ्यवानशरीरें कठोरछेमाटेखमीसकशे तथा अखमतोके० आपुरुषनुं सुकुमारशरीरछे ते नहीखमीशके एहवा जनके० प्राणीने ते अगीतार्थ ओलखेनही वली वस्तुके० आचार्यादिक अवस्तुके० सामान्यसाधुने ते अगीतार्थ नओलखे जेपदस्थनेआमघटे तथा सामान्यनेआमघटे माटे अनल्पके० इत्यादिकबहुप्रकार तेनजाणे यतः भावेहिठ्ठगिलाणं ॥ नविजाणइगाढगाढकप्पंच ॥ सहुअसहुपुरिसवहु ॥ वहुमवहुचनविजाणइ ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ५ ॥

जेआकुट्टीप्रमादेंदर्पें ॥ पडिसेवावलिकल्परे ॥ नविजाणे
तेतासयथास्थित ॥ पायछित्तविकल्परे ॥ सा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रतिसेवानामेंद्वार कहेछे जे निषेधआचरण तेहने प्रतिसेवा कही यें तेहना चारप्रकारछे तेमां प्रथम आकुट्टीके० जाणीने पापसेववुं तेपण कारण विना सेववुं बीजो कंदर्पादिकने वशथका जेपापसेवे तेप्रमाद कहियें त्रीजो धावनव ल्गनादिके करीजे पापलागुं तेदर्पकहीयें चोथो आगमोक्तकारणेकरीनिषेधाचरण कर्युं तेकल्पकहीयें एचारेंभेद पडिसेवाना जाणवा ॥ यतः पडिसेवणाचउद्धा ॥ आ उट्टिपमायदप्पकप्पेसु ॥ नविजाणइअग्गिउ ॥ पछिनंचेवजंतछ ॥ १ ॥ इत्युपदेशमा

भेदलह्याविणनानापरिणति ॥ मुनीमननीगतबोधरे ॥ खिण
राताखिणतातायाता ॥ अंतेउपाईविरोधरे ॥ सा० ॥ १२॥

अर्थ ॥ गतबोधके० गयुंछे बोधज्ञान जेथकी एटले मूर्ख जेहोयते मुनीश्वरोना मननी नानापरिणतिके० विचित्रप्रकारनी परिणतीउंना जे भेदके०प्रकार ते लह्या विणके० जाण्याविना एटलेजेमूर्खमुनीउंहोयते बीजामुनीउंनी विचित्रपरिणति अ जाणतायका क्षणेकमां राताथाय एटले अंतःकरणमां क्रोधदीप्तथाय तथा क्षणेकमां ताता थाय एटले बाह्यपणे क्रोधदीप्त थाय एवा मूर्खोने एमथातांथकां अथवाराता के० रागीथाय परस्परें क्रीडाकरे तथा ताताके०तपीजाय कषायमयीथईजाय अने अंतेके० छेवट विरोधने उपाईके० उपजावे एटले तेमूर्ख माहोमांहे वढीमरे॥१२॥

पथ्थरसमपामरआदरतां ॥ मणिसमबुधजिनछंडिरे ॥ भेद
लह्याविणआगमथितिनो ॥ तेपामेंवहुखोडिरे ॥ सा० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ मणिरत्नसमान जेबुधजनके० पंडितलोक तेह्ने छांडीने पथ्थरसमके० पथ्थरसमानजे पामरके० मूर्खजन तेहनेज आदरतांके० अंगीकारकरे तेप्राणी ते मूर्खमार्गेंनाचाहता आगमनीजे उत्सर्ग अपवादादिरूप थितिके० मर्यादा तेनो भेदके० प्रकार तेप्रमाणेलह्यायका तेआदरनारापुरुष घणी खोडीपामे एटलेसंयमरूपलाभ आर्युं नहोय दुर्गतिमिनयाय इतिभावः ॥ १३ ॥

ज्ञानभक्तिभांजीअणलहेतां ॥ ज्ञानतणोउपचाररे ॥ आरा
मारगलोपे ॥ चरणकरणनोसाररे ॥ सा० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एवा जे मूर्खहोयते ज्ञाननी भक्तिनेतो भांजे एटलेखंडितकरे तथा अ णलहेतांके० अणपामताथका ज्ञानतणोके० ज्ञाननोजे उपचारके० विनय तेनेअण पामता तेमज्ञानी आणमार्गेके०आगमनेमार्गे तेनेअनुसारें मारगलोपेके०जलामार्गने लोपेछे एटले मूर्खनेआदरतां ज्ञानभक्तिने भांजता ज्ञाननो उपचार अणलहेता जे पुरुष होय तेमनेवली आगमप्रमाणे चारित्रने पाले कांतो एकलाजउत्सर्ग मार्गे चाले अथवा एकलाअपवादे। उत्सर्गमार्गवीजक्रुत मूकीज आपे पण सारके०प्रधान एवोजे चरणकरणसित्तरि तथा करणसित्तरिनोमार्गनेनेराचमांआगने अनुसारे तेमूर्ख लोपेछे ए हियमनेप्रमाणे रीते उपयोगे वर्त्तगाथानो अर्थ पंडितलोकोने सुजेतेहगे॥१४॥

उत्कर्षितेहनेद्येशिक्षा ॥ उदासीनजेसाररे ॥ पुरुषवचन
तेहनेतेबोले ॥ अंगकहेआचाररे ॥ सा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ वली उत्कर्षिके० उत्कृष्टाचारित्रियाहोय तथा उदासीनके० बेपरवाइ होय सारके० उत्तमहोय तेवा साधुजो तेहने प्रमादसंकलितादिकदेखी शिक्षाआपे तेवारेंते जे एकाकीगच्छथी निकल्या होय तेपाठो शिक्षा आपनारसाधुने पुरुष वचन के० कठोरवचनकहे जेमुझने सर्व लोकमां केम तिरस्कार कस्यो मेंशुंमाठुंकलुं छे बीजातो एरीते करेजछे तोधिक्कारपडो माराजीवितने इत्यादिकबोले एमश्रीआचारांगमध्ये कह्युंछे तथाचतत्पाठः वयसावएगेचु ॥ इयाकुप्पंतिमाणवाउ ॥ एयमाणेयनवरेमह ॥ थामोहेणमुझइ ॥ १ ॥ इति एमवचनमात्रेंज गच्छनेछांडि एकलारही अकार्य सेवे इतिभावः ॥ १५ ॥

अमसरिखाहोजोतुमेजाणो ॥ नहीतोस्यातुमबोलरे ॥
एमआपीजात्यादिकदूषण ॥ काढेतेहनिटोलरे ॥सा०॥१६॥

अर्थ ॥ पछे ते मूर्खमुनी शिक्षा आपनारने पाछा एवाजवाब आपे के जो अम सरिखा तमेहता तोजाणत एटलेएजावजे अमारे गोचरीपाणीप्रमुख लाववा पडे तेतमनेकरवुं पडतुहोय तो तमेजाणो नहीतो वेग मोटाई करो एटलुज तमारामांछे पणकांइ नजिवारनही जोअमारी पेरेंचालो तोतमेजे अमने शिक्षाआपोते खरी नहीतो तमारा बोलशा एटले तमारुं बोलवुं सर्व फोकटछे एमआपीके० एम कहीने जात्यादिकना दूषणकाढे एटलेएम कहेजे तमे हीणिजातिना उपज्याछो तमारुं कुलकेवुंछे इत्यादिक बोले तेहनिटोलके० तेपुरुषने निटोलजाणवा पण ते सज्जनउत्तमपुरुषमां नगणाय ॥ १६ ॥

पासत्थादिकदूषणकाढी ॥ हिलेज्ञानीतेहरे ॥ यथाछं
दताविणगुरुआणा ॥ नविजाणेनिजरेहरे॥सा०॥१७॥

अर्थ वली ते मूर्खप्राणी शिखामणना आपनारने उलटा पासत्थादिक दूषण काढीने हिलेके० हिलनाकरे एटलेएम कहेजे तममांशा गुणछे तमे पासत्थाउशनाछो एम कहीने ज्ञानीके० पंडितगीतार्थनी हिलनाकरे एबेपदनोएकठोअर्थछे एमविणगुरुआणाके० गुरुआज्ञा पाल्याविना यथाछंदताके० आपछंदे आचरणकरवानी एवी जे निजके० पोतानी रेहाके० रेखाछे एटले हीणाआचरणनी मर्यादापोतानी

ठे तेनी पोतानेज नजाणेके० खबरनपडे एटले ज्ञानीना अछता दूषण काढे अने पोताना छतादूषणहोय ते अवेखे इतिनावः ॥ १७ ॥

ज्ञानीथीतिमअलगारहेता ॥ हंसथकीजेमकाकरे ॥ नेदविन
यनावावननाण्या ॥ नलहेतसपरिपाकरे ॥ सा० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानीके० जे गीतार्थ गुरुआदिक तेथकीअलगा रेहेतायका के वा देखाय जेमराजहंसथकी कागडो जूदो देखाइरहे तेवोतेसाधु देखाय तथा वि नयना वावननेद शास्त्रमां कह्याछे तथाहि १ अरिहंत २ सिद्ध ३ नागेंद्रचंद्रादिक तेकुल ४ कोटिकादिक ते गण ५ चतुर्विधसंघ ६ क्रियातेअस्तिवादरूप ७ खंत्यादि कधर्म ८ मत्यादिकज्ञान ए मत्यादिकज्ञानवंत ते ज्ञानी १० आचार्य ११ स्थिविर ते सिदातासाधुनेथिरकरे १२ उपाध्याय १३ केटलाकसाधुना समुदायनाअधिप तितेगणी एतेरनोचारचारनेदेविनयकरवो १ अनासेतना तेजात्यादिक दूषणकाढी ने हीलनानकरे २ नक्तितेउचितउपचाररूप ३ बहुमानते अंतरप्रीतिप्रतिबंधरूप ४ वर्ण संजवलनाते यशवोलवा एरीतेतेरनेचारेगुणता वावननेदथाय इतिप्रवचन सारोद्धारे पांसठमेद्धारे एअधिकारजोजो उपलक्षणथी वावनकह्या तेमज ए१ नेद समवायांगे तथा पिस्तालीसनेद तथा दशनेद इत्यादिक अनेकनेद ग्रंथांतरथीजा णवा तेसर्वनेदनुं शीखवुं तथातेरीतेप्रवर्त्तवुं तेने परिपाक कहीयें तेपरिपाकने नल हेके० एकाकी साधुनपामे केमके एकाकीविहारकरनार कोनापासेथीशीखे तथा के नोविनयकरे ॥ इतिनावः ॥ १८ ॥

सर्वउद्यमंपणतसवहुफल ॥ पडेकष्टअन्नाणरे ॥ सूत्रअ
निन्नतणेअनुसारें ॥ उपदेशमालावाणिरे ॥ सा० ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ सर्वक्रियाअनुष्ठाननोउद्यम तेनोजे वहुफलके० घणुंफल स्वर्गादिक ते पडेकष्टअन्नाणरेके० अज्ञानकष्टमांपडे एटलेनिर्जरानथाय संसारपरित्तनथाय कोनेनथायतेकेहेछे जे अविवृतार्थ विशिष्टव्याख्यानरहित एहवुंजेसूत्र तेहनेअनिन्न सूत्रकहीयें तेअनिन्नसूत्रनेअनुसारें क्रियाप्रमुख अनुष्ठानकरे तेअज्ञानकष्टमांपडे इति योगः जेटीकाप्रमुखविनाविशेषप्रतिपत्तिकेम थाय अन्यथाअनुयोगनुंकथन निरर्थकथा य एउपदेशमालानीवाणीछे यडकंतत्सूत्रे अपरिछियसुयणिहसस्स ॥ केवलमनिन्नसु त्तचारिस्स ॥ सवुज्ञमेणविकयं ॥ अन्नाणतवेवहुपडइ ॥ १ ॥ अर्थ॥अपरिछियके० नथीजाण्यो सुयणिहसस्सके० श्रुतरहस्यजेणे शेषंसुगमं ॥ १ए ॥ ० ०

तेतोकजुन्नावेएकाकी ॥ चालेतेदनेजुत्तरे ॥ वाम्यकुवा
सनजेअकुवासन ॥ देशाराधकजुत्तरे ॥ सा० ॥ २०॥

अर्थ ॥ हवे ज्ञानीथी अलगा किवारे थवुं तथा शा कारणे एकाकी रेहेवुंपडे ते असेवादिकारण घणाछे यतः असिवेउमोयरिए॥ रायन्नएकनियउत्तमठेय ॥ फि डियगिलाणेअइसेस ॥ देवयाचेवआयरिए ॥ १ ॥ एमकारणोनाअर्थविस्तारेलख्याछे पणअहींलखतांग्रंथवधे माटेलखतानथी पणएक अशिवकारणलखीयेंछैयें जे साधु बारवर्षे आगलथी ज्ञानादिक अतिशयेंकरी खबरराखे जेअमुकवर्षेअशिवथासे अने कदाचित बारवर्षे अगाउ उपयोगनरह्यो होयतो इग्यारे तेनही तो दशवर्षे अगाउ एमयावत् एकवर्षेअगाउपण उपयोगराखे तेपणउपयोगनरह्योहोयतो ज्यारें अशि वजाणेतेवारे साधुथीविहारकरे तेमांकोइक ग्लानसाधु होय तेविहारकरीशकेनही तेवारे एवाकारणेएकला ज्ञानीविना पणहोय तेमांपण १ साधुनइक अनेगृहस्थ प्रांत २ तथा साधुप्रांतअनेगृहस्थनइक ३ तथासाधुनइकअनेगृहस्थपणनइक ४ त थासाधुप्रांतअनेगृहस्थपणप्रांत एमचोजंगीथाय इत्यादिकसर्वेउघनिर्युक्तिमांविस्तारछे तेजोजो हवेअक्षरार्थलिखेछे जेसाधुकजुनावेके०नइकथकां पूर्वोक्तरीते एकाकीचाले के० रह्याहोय तेहने जुत्तके० कोइकपूर्वोक्तरीते एकाकीपणोयुक्तछे पणअन्यथानही इतिनावः वलीबेप्रकारनावटचाल्याछे एकनावित बीजोअनावित तेमांअनावितते न वावट अनेनावितनावेनेद एकशुनइव्येंनावित बीजाअशुनइव्येंनावित तेवलीएकेक नावेनेद एकवाम्य बीजो अवाम्य जेवाम्यतेवासनाटालीशकीयें अने जे अवाम्यते वासनाटालीनशकीयें तेहमांकुवासनावमवायोग्यहोयतेरुडाजाणवा एवाम्यकुवासन एटलापदनोअर्थथयो अनेजेअकुवासनाके० कुवासनायेंवास्याजनथी एवानवा घट के०घडाछे तेपणरुडा एमविशेषावश्यकमांछे अथवा वाम्य अवाम्य घटनीनावना नं दिसूत्रनी वृत्तिथी जाणवी उक्तंच पयइजिहनावा ॥ कुवासन्णावालियाविनोडुहा॥ उक्षुनइणोनुकंपा ॥ तेदेलाराहगाउत्ता ॥ १ ॥ एवादेशाराधकयुक्तहोयते पूर्वोक्तका रणेएकाकीपणे गीतार्थविनारहे इतिनावः ॥ २० ॥

अज्ञानीगुरुतणेनियोगें ॥ अथवाशुनपरिणामरे ॥ कम्म
पयमीसांखसुदष्टि ॥ कहियेंएहनोगमरे ॥ सा० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ वली अज्ञानी अगीतार्थने गुरुतणेनियोगें आज्ञा परवशें थकां पण रु डमार्गेवर्त्ते छे अथवा शुनपरिणामवंतछे गुणनो रुचीवंतछे तो कम्मपयडीनीसांखे

तेने सुदृष्टीवंत कहियें एनो स्थानक सम्यक् दृष्टीगुणगणो जाणवो ॥ २१ ॥ एगा थानुं अर्थ ज्ञानविमलसूरिना करेलाटवा ऊपरथीलिख्युंछे ॥ २१ ॥

जेतोद्रव्यीगुरुनेगंमि ॥ नम्रचरणपरिणामरे सर्वउद्य
मेंपिणतसनिश्चय ॥ कांइनआवेठामरे ॥ सा० ॥ २२॥

अर्थ ॥ जेतोके० जेवली नम्रचरणपरिणामके० जेहना चारित्रना परिणाम नां गाने एहवोयको द्रव्यकदाग्रहथकी गुरुने गंमीने सर्वप्रकारें निन्हवादिकनीपरें उद्यमें के० कष्टउद्यम करेछे पण तसके० तेना कष्टप्रमुखसर्व निश्चयकरीने कोइनआवेठामके० कांइलेखे नलागे यतः आणाएतवो आणाइ ॥ संजमोतहयघणमाणाए ॥ आणार हिरुअम्मो ॥ पलालपुलुव्वपडिहाइ ॥ १ ॥ इतिसंबोधसित्तरीमध्येकह्योछे ॥ २२ ॥

आणारुचीविणचरणनिषेधे ॥ पंचाशकेंहरिभद्दरे ॥ व्यव
हारेंनोथोडुंलेखे ॥ जेहसकारेंसहरे ॥ सा० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ जेने परमेश्वरनी आज्ञानीज रुचीछे तेतोचारित्रनेयोग्यछे पण एवीआज्ञा रुचीविना चरणनिषेधेके० चारित्रनीनाकहीछे शामाटे जे आज्ञारुचीनथी तोबीजोक ष्टअनुष्ठानकांनी आज्ञापेंकरेछे यतः आणारुइस्सचरणं॥तम्भंगेजाणकिंनभग्गंति॥ आ णंचअइकंतो॥ कस्साएसाकुणइसेसं ॥१॥ इतिते जेआज्ञासहितकरेछे तेचारित्र अने आज्ञाविना पंचाशकनेविषे हरिभद्रसूरिचारित्रने निषेधेछे व्यवहारेंतोके० शुद्धसमाचा रीवंतनो व्यवहारवालेनो पोतानी शक्तिप्रमाणें थोडुंकरे तोपण लेखामांछे एटले आज्ञासहित थोडुंकरे तेलेखेछेशामाटे जेथोडुंपणअनुष्ठानते सकारेंके० सत्यकरे अ नेसहरेके० सद्दहे आगमकहियें केमके चारप्रमाण कह्यांछे तेमां आगमप्रमाणने सहुप्रमाणकर्यां छेजाण्युंछे माटे आगम सत्कारेंतोथोडो व्यवहार पण प्रमाणछे अ नेबहुरंगुं रुष्ट तेनिष्फलछे ॥ २३ ॥

शिष्यकहेजोगुरुअज्ञानी ॥ नजतांगुणनिधिजाणीरे ॥ जोसु
खनानोकिमन्यजतां ॥ तेनअवगुणजाणीरे ॥ सा० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ हवेवलीशिष्यकहेछे के जोगुरुअज्ञानीछे तोपणतेहने नजतांके० सेव ताथकागुणनिधिजाणतो जोसुखमनाछे तोकेवाप्रकारें तेहने अवगुणीजाणीनेत्य जीयें ॥ २४ ॥ एगाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिना टबामांथीलख्योछे

गुरुवोलेशुन्नवासनकहियें ॥ पन्नवणिज्जसुन्नावरे ॥ तेआ
यत्तपणेंछेआयें ॥ जशमनेन्नडकन्नावरे ॥ सा० ॥ ९५ ॥

अर्थ ॥ गुरु कहे हे शिष्य जे शुन्नवासना ते पन्नवणिज्ज स्वन्नावछे एटले जे स मजाव्योसमजे एवो जेनो स्वन्नावछे तो एवोजेहोय तेतो आयेंके० प्रथम गुरुने आयत्त पणेके० वशवर्तियें होय वली जशमनेके० जेहना मनने विषे नडकन्नावछे ते शिष्य आज्ञारुची जाणीयें ॥ १५ ॥ एगायानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटवाकपरथी लख्युंछे

सूधुंमानीसूधुंयातां ॥ चउन्नंगीआचाररे ॥ गुरुकहणेंते
हमांफलजाणी ॥ लहीयेंसुजशअपाररे ॥ सा० ॥ ९६ ॥

अर्थ ॥ एक सूधुंमाने अने सूधुंकरे वीजो सूधुंमाने अने असूधुंकरे त्रीजो अ सूधुंमाने अने असूधुंकरे चोथो असूधुंमाने अने सूधुंकरे इत्यादिक शब्दें चउन्नंगी आचारांगादिक सूत्रमां कह्युंछे तेमांअशुद्धनावेन्नांगा त्याजछे अने शुद्धनावेन्नांगा ते याह्यछे ते न्नांगामा फलहोय एम जाणीने गुरुसेवामां रहीयें तो अपारके० घणो सुजश लहीयें ॥ १५ ॥ एगाथानो अर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटवाकपरथीलख्युंछे ॥

ढालसातमोराजगीतानीदेशीअथवासुरतिमहिनानी

कोइकहेगुरुगछगीतारथसारथशुद्ध ॥ मानुपणनविदि
सेजोतांकोइविवुद्ध ॥ निपुणसहायविनाकह्योसूत्रेंएक
विहार ॥ तेहथीएकाकीरहेतांनहीदोपलगार ॥ १ ॥

अर्थ ॥ पूर्वलाढालमां गीतार्थ वर्णव्या हवे एवा गीतार्थ गुरुपाशे वसवुं तेआढा लमांकहेने कोइक आगमना रहस्यने अजाणतोथको आगमनोशरणकरी वोलेने जे गुरुके० गुरुआदिक गछके० सुविहितनोसमुदाय वली गीतार्थनो सारथके० स मुदाय संवसार्योंतुदेहिनां इतिसामान्यकांडवचनात् एवा शुद्धके० पवित्र ते गुरुगछ गीतार्थ सर्वने मानुंके० अंगीकारकरुंवु पण ते जोतांथका कोइविवुद्धके० कोइमा हापंडित नविदिसेके० देखतानथी अमारी नजरमां कोइ आवतानथी निपुणसहाय के० माह्यानीसखाइनमले तोतेविना सूत्रेंके० उत्तराध्ययनसूत्रनेविषे कह्योछे जे ए कविहारके० एकलाविहारकरीयें उक्तंचकाव्ये ॥ नवालनिज्ञानिउणंसहायं ॥ गुणा हियंवागुणउसमंवा ॥ इक्कोविपावाइविवज्जयंतो ॥ विहरिज्जकामेसुअसज्जमाणो ॥ १
एम तेसूत्रमां एकाकीविहारनी आज्ञाछे माटे एकाकीरहेतायकालगारदोषनथी ॥ १ ॥

अणदेखंताआपमांतेसविगुणनोयोग ॥ किमजाणेपरमां
व्रतगुणनोमूलवियोग ॥ छेददोपतांईनवीकह्याप्रवचनेमु
निदुःशील ॥ दोपलवेंपणथिरपरिणामीवकुसकुशील॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे तेने उत्तर आपेछे जे एमकहेछे तेप्राणी आपमांके० पोतामांसर्व गुणनो योगके० संयोगने अणदेखतोथको एटले एनावजे पोते सर्वगुणीतो थयो नथी तोपोतेदोषवंतथको केवीरीते परमांके० बीजामां व्रतगुणनोमूलवियोगके० व्रतना गुणमूलथी नथी एमशीरीतेंजाणे केमके गुरुआदिकमांतो कांइक गुण हशे ज तोदोषनोलेश देखीने गुरुने मूकाय नही गाथा ॥ इयजावियपरिमड़ा ॥ मल च्छानियगुरुनमुंचंति ॥ सव्वगुणसंपउगं ॥ अप्पाणंमिविअपिछंता ॥ १ ॥ इतिधर्मरत्न प्रकरणे तथा छेददोपतांइके० दसप्रकारना प्रायश्चित्तमां सातमो छेददोपलागे तिहां लगें प्रवचनेके० सिद्धांतनेविषे मुनीने दुःशीलके० कुशीलिया हीणानथीकह्या यतः छेयस्सजावदाणं ॥ तायंमेगंपिनोअइक्कमइ ॥ एगंअइक्कमंतो ॥ अइक्कमेपंचमूलेणं ॥१ इतिवचनात् अने थोडो दोष देखीने गुरुने नही आदरेतो सर्वनो त्यागकरवो पड शे तेकहेछे जे पांचप्रकारना निग्रंथ अने चउदप्रकारनी अभ्यंतरगंठी तथा नवप्र कारनी बाह्यगंठी तेथी मूकाणा ते निग्रंथ कहीयें यतः गंठोमिछत्ताई ॥ धणाईउअं तरोयववज्ञोय ॥ दुविहाउतउजे ॥ निग्गंछंतितेहुंतनिग्गंथा ॥ १ ॥ मिछत्तवेयतियं हा साइछक्कयंचनायव्वं ॥ कोहाईणचउक्कं॥चउदसअप्रितरागंथी॥२॥धणधन्नखित्तकुवयं॥ वत्तु दुपय कणय रूप चउचरणा ॥ नवबाहिरयागंथी एवंतेहुंतिपुणपंच ॥ ३ ॥ सुगमं नवरं चउचरणाके० चौपदइति १ पुलाग २ वकुस ३ कुशील ४ निग्रंथ ५ सनात क एनालक्षण नगवतिसूत्रना शतक २५ में उद्देशेछठेजोजो एपांच कह्या तेमां १ पुलाग २ निग्रंथ ३ सनातक एत्रणतो प्रतिसेवारहित जाणवा अने वकुस तथा कुशील ए बेहुने प्रतिसेवाछे गाथा ॥ मूलुत्तरगुणविषया ॥ पडिसेवासेवएकुशिलोय ॥ उत्तरगुणेसुवकुसो ॥ सेसापमिसेवणारहिया ॥ ४ तेमांपणनिग्रंथ तथा सनातकतो श्रेणीविछेदगइ तेमांगया तथा पुलागपणलब्धिविछेदगइ तेमाटे एत्रण जंबुस्वामी साथे विछेदगयां तेहेतुयें वकुस तथा कुशील एवेहुथी तीर्थ चालेछे यतः निग्गंथ सिणायाणं ॥ पुलागसहियाणतिएहवुछेउ ॥ समणावकुसकुशीला जातिछंतावहो हिंति ॥ ५ जेमाटेते छगसातमां गुणगणावंतहोय ते अतरमुहूर्त्त अवश्यपराव र्त्तथाय तेवारे छठेगुणगणेआवे तिहांअवश्य प्रमत्तदोपनो लवमात्र देखीने गुरुनो

त्याग केमथाय अनेते त्यागकरीशतो जगतमां आजनाकालेंनिर्दोष कोइ नहीजाने तेमाटे लवमात्र दोषलागते पण वकुस तथाकुशील एवेहु जातिनामुनी तेथिरपरि णामी एटलेतेह्ना परिणाम अतिउन्मार्गें नथीचालता अथवा थिरपरिणामीके० एवमुनी थिरपरिणामेछे एटले पंचमआरानाछेमाटे एह्जछे माटे नठमाए इतिभा वः एह्नोविस्तार धर्मरत्नग्रंथनीवृत्तियीजाणवो ॥ २ ॥

ज्ञानादिकगुणपणगुरुवादिकमांहेजोय ॥ सर्वप्रकारें
निर्गुणनविआदरवोहोय ॥ तेगच्छेगीतारथजेजाणेवि
धिसर्व ॥ ग्लानौषधदृष्टांतेमूढधरेमनगर्व ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानादिकके० ज्ञानदर्शनचारित्रमांहेलोहरकोइ उत्कृष्टगुण पणगुरु आदिकमां जोइयें पण सर्वप्रकारेंके० सर्वथानिर्गुणहोयतो न आदरीयें माटेजेगीता र्थहोय तथा जे प्राणी उत्सर्गअपवादप्रमुखनी सर्वविधि जाणता होयते गच्छेके० गच्छनेपण निर्गुण जाणीने छांडे तेउपरदृष्टांत केहेछे ग्लानौषधके०जेमरोगीनेऔषध तेजिहांलगें रोग तिहांलगें औषध तेमजिहांलगे अगीतार्थ तिहांलगें औषधसदृशगच्छ अनेज्यारेनिरोगीसदृशगीतार्थ थयो तेवारें औषधरूपगच्छनुं कामनही तेमाटे मूढके० जेमूर्खछे तेअहंकारमनमांधरीने गच्छबाहिरनिकलेछे इहांकोइबीजीरीते एदृष्टांत जोडे छे जेमग्लाननेऔषधआपे अनेअहारनआपे माटेरोगीनेछांड्योनकेवाय पणसामो रोगीनेउपकारकर्यो केहेवाय तेमजगीतार्थगच्छछांडे तेछांड्योनकहीयें पणउलटोगच्छने उपकारकर्यो एमकहीयें यतः नाणाइगुणविउत्तं ॥ जोचयइगुरुगणंचगीयत्थो ॥ अणु कंपेइतमेवय ॥ आउरनेलज्जमिवत्तीए ॥ १ ॥ इतिवचनात् एवेव्याख्याछे माटेजेगी तार्थनी दृष्टीमांवेरे तेखरो इतिभावः ॥ ३ ॥

तेकारणगीतारथनेछेएकविहार ॥ अगीतारथनेसर्व
प्रकारेंतेनहीसार ॥ पापवरजतोकामअसजतोभ्नां
प्योजेह ॥ उत्तराध्ययनेगीतारथएकाकीतेह ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेकारणके० पूर्वेकह्युंतेकारणे गीतार्थनेज एकाकी विहारनी आज्ञाछे यतः गीयत्थोयविहारो ॥ बीउगीयत्थनिस्सिउभणिउ ॥ इत्तोतइयविहारो ॥ नाणुन्नाउजिणं देहिं ॥ १ ॥ इतिआवश्यकनिर्युक्तौ अने अगीतारथके० मूर्खने सर्वथा जेएकलो वि

द्दारकरवोते सारके० प्रधान नथी रुडोनथी इतिनावः तथा पापनेवर्जतो कामनेअस जतोएटले कामक्रीडामां जे तत्परनद्दी नांप्योजेहके० जेनांप्योनेउत्तराध्ययननामेंसि द्धांतमां गीतार्थद्दोय गुणीद्दोय तेएकाकीरहे तेकाव्यपूर्वेजख्युंछे नवाजनिज्ञानिवणं सहायंइत्यादि विचारीजोजो ॥ ४ ॥

पापतणोपरिवर्जननेवलिकामअसंग ॥ अज्ञानीनेन
वीद्दुएतेनविजाणेनंग ॥ अज्ञानीशुंकरशेशुंलेशेशुन्न
पाप ॥ दशवैकालिकवयणेपंचाशकआलाप ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेएकाकी द्दोयते पापनुंवर्जन केमकरे वलीकामके० कंदर्प्पनासंगनो जे त्यागकरवो ते एकाकी मूर्खने केमद्दोय माटे एविचार अज्ञानीने नद्दोय तेअज्ञानी ने तेनानांगानी खबरनपडे के आ अवसरे शुद्धजलेवुं केआअवसरे अशुद्धआहार द्दोय तोपणलीजीयें इत्यादि नांगानी खबरनपडे वली अज्ञानीपुरुषद्दसे तेजीवअ जीवादिक जाण्याविनाशुंकरशे एटलेसंयमानुष्ठानशुंकरशे तथा शुनके० पुण्यअने पाप ते प्रते अज्ञानीशुंजाणशे ते दशवैकालिकवयणेके० दशवैकालकिसूत्रनावचन थकी यडुक्तं तत्र अन्नाणीकिंकाहि किंवानाहीछेयपावगं इत्यादिचतुर्थाध्ययने तथा पंचाशकग्रंथमांपण एवोज आलापके० आलावोछे एटलेवचनछे ॥ ५ ॥

एकविद्दारेदेखोआचारेंसंवाद ॥ बहुक्रोधादिकदूपण
वलीअज्ञानप्रमाद ॥ वलियविशेषेवारचोछेअव्यक्त
विद्दार ॥ पंखीपोतदृष्टांतेजाणोप्रवचनसार ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीएकाकीविद्दारकरे तेद्दनो आचारेंके० आचारांगनेविषे संवादके० वचनछे तेकहेछे जे तेआचारांगनापांचमांअध्ययनना प्रथम उद्देशानेविषे देखोके० जुउ एकविद्दारीनें बहुक्रोधआदिशब्देंमान प्रमुखपणलेवा यथा इममेगेसिंएगचरिया नवति बहुकोहे बहुमाणे बहुमाए बहुलोने बहुरते बहुनमे बहुसठे बहुसंकप्पे आसवसक्कीपलिउछन्ने एमांविषमपदनोअर्थलखियेंछेयें बहुरतेके० बहुपाप बहु नमेके० बहुवेषनाकरनारा नाटकियानीपेरें नोगनेअर्थे तथा बहुसठेके० अनेक प्रकारेंशठ तथा बहुसंकल्पउपजे आसवके० आश्रवजेहिंसाप्रमुख तेहनो स क्किके० सक्त एटलेसंगी अने पलिउछन्नेके० पलितएटलेकर्मेकरीअविछन्न एटले

हाक्योऽस्ति बलीबीजादोषकेहेते अज्ञानप्रमादथाय एटलेएनावजे एजआलावेप दने वक्तियवादंपवयमाणे मामेकेऽअदकु अन्नाण पमायदोसेणं इति वक्तियवा दंपवयमाणेके० अमें संयमचारित्रमां वजमालयथाठेयें एमबोलता मामेकेऽअदकु के० आश्रवमांप्रवर्त्ततांथकाजाणेमुजनेकोऽदेखतोनथी एम अन्नाणपमायदोसेणंके० अज्ञानप्रमाददोषे सहितप्रवर्त्ते तेनेवलीविशेषेंकरीने आचारांगमां अव्यक्तविहारवा र्योते अव्यक्तके० वयपणपूरीनही अनेश्रुतपणपूरोनही तेहनेअव्यक्तकहीयें आचा रांगपंचमाध्ययननेउद्देशेचोथेकह्युंछे यथा॥गामाणुगामंदुइज्जमाणस्स दुज्जातं दुपरक्क तंभवति अवियत्तस्सभिरकुणो एहनोअर्थ ॥ गामाणुगामं दुइज्जमाणस्सके० एकाकी विचरताने दुज्जातंके० दुष्टगमनछे अर्हनकमुनीनीपेरे दुपरक्कतंके० दुष्टपरआक्रांतछे थुलिभद्रनीईर्षावंतसिंहगुंफावासिमुनीने जेमकोस्यायेंआक्रम्या तेम सर्वमुनीने नहोय तेमाटेविशेषणकरेछे अवियत्तस्सभिरकुणोके०अव्यक्तभिक्षुने एटलेअव्यक्तभिक्षु बेप्र कारनाछे एकश्रुतअव्यक्त बीजोवयअव्यक्त जेआचारप्रकल्पनभण्याहोय अनेगछमांर ह्याहोय तेश्रुतअव्यक्तकहीयें तथागछथीनिकल्या ते नवमांपूर्वनी त्रीजीवस्तुनभण्याहो यतेगछनिरगतअव्यक्तकहीयें गछमां रह्याथका सोलवर्षनाथाय तिहांलगें वयअव्यक्त कहीयें अनेजे गछनिरगतते त्रीसवर्षनाथाय त्यांलगे वयअव्यक्तकहीयेंइतिइहांचोभंगी छे१ श्रुतअव्यक्त अने वयअव्यक्तहोय तेतोएकाकीविहारकरेज नही केमके संयमात्म विराधनाथाय माटे नकरे २श्रुतअव्यक्त अनेवयव्यक्त तेपणअगीतार्थ माटे संयमा त्मविराधनाथाय माटेएकाकीविहार नकल्पे ३श्रुतव्यक्त अनेवयथीअव्यक्त तेहनेपण नकल्पे बालपणाथकीकुलिंगी तथागृहस्थने पराभवनुस्थानकहोयतेमाटे ४ श्रुतव्य क्तथावयव्यक्त तेहनेपणएकमल्लप्रतिमाप्रमुखकारणें एकाकीपणेविचरवानी आज्ञा छे पणकारणविना नही इत्यादिक बहुवातछे तेआचारांगवृत्तिथीजाणवी एटलाजमाटे आस्तवननी मूलगाथामां विशेषपदमूक्युंछे माटे अव्यक्तने तोविशेषेंकरी सर्वथावार्यो तथाव्यक्तनेपणकारणविनावार्योछे तोअव्यक्तनेवार्योतेनुंशुंकहेवुं तेपंखीपोतदृष्टांतेंक रीजाणवुं जेमपंखीना पोतकके० बालक तेने पांखआवीनहोय अने उडवाजाय तो बीजा ढंकप्रमुख जनावर तेने उपद्रवकरे तेम अव्यक्तअगीतार्थ बालक होय तेहने परदर्शनी उपद्रवकरे जाणोप्रवचनमारके०एजैनागमनो मार जाणवो यतः॥काव्यं ज हादियापोचमपरकजायं ॥ सवासयापंविउमणं मणागं ॥ तमचाइयातरुणपमत्तजाइं ॥ ढंकाइअव्वत्तगमंहरेज्जा ॥ १ ॥ माटे जेमपंखीपोतानाबालकने मूंनामूकतानथी तेम मूर्खनेगीतार्थ एकलानमूके इतिभावः॥ ६ ॥

एकाकिनेस्त्रीरिपुश्वानतणोउपघात ॥निद्वानिनविशु
द्धिमहाव्रतनोपणघात ॥ एकाकिसछंदपणेनविपामे
धर्म ॥ नविपामेपृछादिकविणतेप्रवचनमर्म ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे एकाकीविहारकरे तेने स्त्रीनो तथा रिपुके० शत्रूनो अने श्वानके० कुतरानो उपघातथाय तथा निद्रा पण दोषसहित लीयेतो तेनेकोणनिषेधकरे माटे निद्वानी शुद्धी पण नरहे तथा महाव्रतनो पण अनुक्रमें घातथाय गाथा ॥ इत्थ पसुसाणसावय ॥ इहिनिरकाइदोसडझजिउ ॥ वयगाइधम्ममाइ ॥ तम्हारम्मोनए गामी ॥ १ ॥ इतिपिंडनिर्युक्तौ तथा एगाणियस्सदोसा ॥ इछिसाणेतहेवपडिणीएय निरकविसोहिमहव्वय ॥ तम्हासबिइज्जएगमणं ॥ १ ॥ इतिधर्मरत्नवृत्तौ जेएकाकी विहारकरे तेस्वछंदपणेविचरे पोतानेमते रूपज्युं ते खरुं पण गुरुआज्ञानीअपेक्षा नरहे तेमाटेजे स्वमति कल्पनावंत तेधर्म नपामे यतः इक्कस्सकउधम्मो ॥ सछंदम इगईपयारस्स ॥ इत्युपदेशमालायां तथा जे एकाकीहोयते पृछाके० वांचनापृछना दिकतेपण गुरुविनानपामे अने तेविना प्रवचनके० सिद्धांत तेनो मर्म जे रहस्यते केमपामे ॥ यतः कत्तोसुत्तछागम ॥ पडिपुछणमोयणावइक्कस्स ॥ विणउवेयावच्चं आराहणावमरणंते ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ७ ॥

सुमतिगुपतिपणनधरेएकाकीनिःशंक ॥ भावपराव
र्तेआलंबनधरेसपंक ॥ जुदाजुदाथातांथविरकल्प
नोभेद ॥ मोलाएमनलोकनाथाएधर्मउछेद ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ सुमतिके० इर्यासुमतिप्रमुखपांचसुमति तथामनादित्रणगुप्ति तेपण न धरेके०नपामीशके केमके जेएकाकीविहार करनारहोयतेनिःशंकहोय कोइनीशंकान राखे एटलेअकार्य करवानुंचित्तथायतो कोइनीशंका नधरे सुखेअकार्यकरे गाथा ॥ पिछिज्जंतएणमिक्को ॥ पइन्नपमयाजणाउनिच्चभयं ॥ काउमणोविअकज्जं ॥ नतरइ काऊणबहुमज्झे ॥ इत्युपदेशमालायां तथा चित्तनाअभिप्रायतेनावकहीयें तेनावनुंजे परावर्त्तके० पलटाववुं तेणेकरी जेवापोतानाअभिप्रायथाय तेवुंकांइक आलंबनपा मीने तत्काल तेआलंबन धरेके० अंगीकारकरे तेआलंबन केहवुंहोयतेकहेछे सपं कके० मेलुंहोय एटलेएनावजे चित्तनाअध्यवसायतो क्षणेक्षणेपलटायछे तेचित्तना

अनिप्राय कोइक अवसरें हीणाथाय अने निमित्तपणतेवुंज मले तेवारें पोतेपणतेवो जथाय यतः एगयिवसेणवहुआ ॥ सुहायअसुहायजीवपरिणामा ॥ इक्कोयसुहपरि एउ चइअआलंबणंलहुं ॥ १ ॥ आलंबनहिणुपामीने चइअके० संयमनेछांडे इत्यु पदेशमालायां वली एकजणेएकलो विहारकीधो एटले बीजाने पणएकला विच रवानुंमनथाय तेमज त्रीजो तथा चोथो इत्यादिक जूदाजूदाथातां एटलेअवस्था नरहे तथा थिवरकल्पनोनेदथाय एटले आपमतें कोइक क्रिया एकरीतेकरे कोइकबी जीरीतेंकरे एमनिन्ननिन्नथाय तेथीलोकनामन मोलाय जे अमुकसाधुकरेछेतेखरुंछे केअमुकसाधुकरेछेतेखरुंछे इत्यादिकविकल्प लोकने उपजे तेथी धर्मनो उछेदथाय कोइकपरप्रतित रेहेनही तेवारें लोकमूलगोधर्मजमूकीआपे गाथा ॥ सवजिणपमि कुठं ॥ अणवछायेरकप्पनेउय ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ८ ॥

टोलेपणजोनोलेंअंधप्रवाहनिपांत ॥ आणाविणनविसं घछेअस्थितणोसंघात ॥ तोगीतारथउद्धरेजेमहरीजल थीवेद ॥ अगीतारथनविजाणेतेसविविधिनोनेद ॥ ए ॥

अर्थ ॥ वली टोले पण जोनोलेंके० कदाचित टोलुंहोय नेजोनोलुंहोय तेमां कोइगीतार्थनहोय तो तेटोलामां वलवुंतेपण अंधप्रवाहनिपांतके० आंधलानीज श्रेणीमांपमवुंथयुं एमजाणवुं कारणके आणाविनासंघनकहीयें नहितो अस्थितणो संघातके० हाडकानो समूहजाणवो यतः एगोसाहुएगोय ॥ साहुणीसावउवसही वा ॥ आणाजुत्तोसंघो ॥ सेसोपुणअछिसंघाउ ॥ १ ॥ एमसंबोधसित्तरीमांकह्युंछे ते माटेजेगीतार्थहोय तेजसंसारसमुद्रमांथी नव्यजीवने उद्धरेके० उद्धारकरे जेम हरीजलथीवेदके० जेरीते श्रीकृष्णेंसमुद्रमांथी वेदउद्धर्या एदृष्टांते तेनी कथाकहेछे शंखनामे दैत्यउपज्यो ते ब्रह्मापासे वेदनणवावेगो एवामां ब्रह्माने बगासुंआव्युं ते बगासुं ठमहीनेपुरुंथाय त्यारेंब्रह्मानुं मुखमोकलुंदेखी शंखदैत्यें विचार्युं जे वेदनण तां किवारे पारपारपामीशुं माटे ब्रह्मान.पेटमांप्रवेशकरी वेदलेइजाउं एमविचारी पे टमांपेसीने वेद लेइगयो नेसमुद्रमां पातालमां जइपेगो पछे श्रीकृष्णप्रमुखें विचार्युं जे ब्रह्मा तो नूतमरिखा केम देखायछे एम विचार करतां श्रीकृष्णेंजाण्युं जे शंखदै त्य चारेवेद लेइगयोछे हवेहुं लेइआवुं एम विचारकरी मत्स्यावतारधरी शंखासुरना नवनमांगयो त्यांबालकनुंरूपधरी तेनीस्त्रीपासेबेगो तेस्त्रीयेंजाण्युंजे आपणे मनोहर बालक पाम्या पछेतेनेरमाडवावेगी एटलामां शंखासुरनापेटमां चारेवेद वांचोकरवा

लागाजे आपणीवाहारकरवा ठाकुरजीआव्याठे तेवात सांजली शंखासुरे जाण्युंजे अनर्थथयो पठेस्त्रीने कह्युंजे बालकमूकीयो पणस्त्रीयेंनमूक्युं तारेंबालकने मारवादो डयो तेथीस्त्रीयेंबालकनेमूकीदीधुं पठेतेबालकें तेदैत्यसाथेंयुद्धकरीमत्स्यरूपेंथइ दैत्यने मारी तेनापेटमांथी चारवेद लइ श्रीरूनपाणीमांथीविहारआव्या तेमाटे प्रथम मत्स्यावतारलीधो एअधिकार शिवमार्गनाशास्त्रने दशावतारग्रंथमध्येकह्युंठे इहांदृष्टांते लख्युंठे वलीजे अगीतार्थहोयते उत्सर्ग अपवादादिक सर्वविधिउना जेदनजाणे माटे अगीतार्थनेएकलो विहारनहोय ॥ इतिजावः ॥ ए ॥

कारणथीएकाकीपणुंपणजाष्युंतास॥ विषमकालमांतो पणरुडोनेत्नोवास ॥ पंचकल्पजाष्येंजएयुंआतमरक्षणएम ॥ शालिएरंमतणेएमजांगेलहिएखेम ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वली कोइ केहेशेजे श्रीउत्तराध्ययनमध्ये एकाकीपणानी हाकेम कही यथा इक्कोविपावाइविवज्जयंतो ॥ विहरिज्जकामेसुअसज्जमाणो ॥ इतिवचनात् ॥ तेने उत्तर जेगीतार्थहोय तासके० तेने कोइककारणथीएकाकीपणुं पण जाष्युंके० कह्युंठे यथातिहांज काव्य नयालनिज्जानिउणंसहायं ॥ गुणाहियंवागुणउसमंवा ॥ इतिवचनात् तो पणविषमकालमांके० आपांचमांआरामां हुंमाअवसर्पिणीकालमां रुडोनेत्नोवासके० जेलावसवुंतेजरुडुं पणएकाकी वसवुं रुडुंनही एमपंचकल्पजाष्नेविषेकह्युंठे आतमरक्षणएमके० जेसंयमरूपआत्मा तेनी रक्षातेएमज थाय अथवा आत्मानेशरीर अजेदठेमाटे आतमके० शरीरनी रक्षापण एमके० एमजजेलावशतायकांहोय इहां शालितयाएरंमनीचोजंगीठे १ शालिनोवृक्षअनेशालिनीवाडी २ शालिनोवृक्षअनेएरंमनीवाडी ३ एरंमनोवृक्षअनेशालिनीवाडी ४ एरंमवृक्षअने एरंमनीवाडी एचोजंगीमांथी शालितयाएरंमना त्रणजांगे वसतांतो खेमके० कल्याणठे इतिअक्षरार्थः ॥ जावार्थतोएठेजे शालि सरिखागीतार्थ एटले आचार्य अने एरंमसरिखा मूर्ख तेनीचोजंगीदेखाडेठे १ गीतार्थआचार्य अने जे गीतार्थनो परिवारते वामी पणगीतार्थनो २ गीतार्थआचार्य अने मूर्खपरिवारनीवामी ३ मूर्खआचार्यअने गीतार्थनापरिवारनीवामी एत्रणजांगालगेकोइरीते आज्ञाठे पणमूर्खआचार्य अनेमूर्खपरिवारएजांगोतो सर्वथाजनिषेधठे यतःजन्नयपंचकुशीला ॥ गणीवायगयविरपवत्तनिग्गंथा ॥ तेणएरंमसमाणं ॥ चउजंगीएनायव्वो ॥ १ ॥ इति॥ १० ॥

एकाकीपासत्थोसछंदोगतयोग ॥ गणवासीउसन्नो वहुदूपणसंयोग.॥ गछवासीअणुउगीगुरुसेवीवलि होय॥अनियतवासीआउतोवहुगुणएमजोय॥११॥

अर्थ ॥ १ एकाकी केवलधर्मवंधुरहित ते पासछो २ ज्ञानादिकपार्श्ववर्त्तिस्व छंदो ३ गुरुआज्ञाविकल एटलामाटे गतयोगकहिये ४ गणवासीके०स्थानकवासी तदेकत्रविहार नित्यवासीत्यर्थः ५ अवसन्न तेआवश्यकादिकें शिथिलमनपरिणामी तेउसन्नो एपांचपद ते वहुदूपणसंयोगीहोय तेकिवारेंकोइकने एकपद किवारें वेपद किवारें त्रणपद किवारें चारपद अथवा पांचपदना संयोगीथाय जेमएकपदस्थानक वधे तेमदोपवृद्धिपण जाणवी एवं २६ नेदथाय इत्यादिकअनेकप्रकारेंदोपवृद्धिथा य यतः एगागीपासछो ॥ सछंदो ४ गणवासीयउसन्नो ॥ डुगमाइसंयोगा ॥ जह वहुआतहगुरुहुंति ॥ १ ॥ इत्युपेदशमालायां एनाद्विकादिसंयोगकरतां २६ नेदथाय तेमांद्विकसंयोगी १० तथात्रिकसंयोगी १० चतुःसंयोगी ५ पंचसंयोगी १ एवं २६ नंगादोपवृद्धीनाजाणवा तेमज २६ गुणवृद्धिना जाणवा ते देखाडेछे १गछगत २ अ णुयोगी ३ गुरुसेवी ४ अनियतवासी ५ आयुक्त एहनापणएमज छवीसनेद गुणवृ द्धिनाथाय जेमजेमगुणवधे तेमतेमविशेप आराधकथाय अनेदोपवृद्धियें विराधकप णुंवधे तथागुणवृद्धियें आराधकपणुंवधे तेमां दोपवृद्धिना २६ नांगालिखियेंछैयें

द्विकसंयोगी १० नांगा १ एकाकी–पासत्थो २ एकाकी–सछंदो ३ एकाकी–गणवासी ४ एकाकी–उसन्नो ५ पासत्थो–सछंदो ६ पासत्थो–गणवासी ७ पासत्थो–उसन्नो ८ सछंदो–गणवासी ९ सछंदो–उसन्नो १० गणवासी–उसन्नो

त्रिकसंयोगीनांगा १० लिखेछे १ एकाकी–पासत्थो–सछंदो २एकाकी–पासत्थो–गणवासी ३ एकाकी–पासत्थो–उसन्नो ४ एकाकी–सछंदो–गणवासी ५ एकाकी–सछंदो–उसन्नो ६एकाकी–गणवासी–उसन्नो ७ पासत्थो–सछंदो–गणवासी ८पास त्थो–सछंदो–उसन्नो ९पासत्थो–गणवासी–उसन्नो १०सछंदो–गणवासी–उसन्नो

चतुसंःयोगीनांगा५ लिखेछे १ एकाकी–पासत्थो–सछंदो–गणवासी २ एका की–पासत्थो–सछंदो–उसन्नो ३ एकाकी–पासत्थो–गणवासी–उसन्नो ४ एका की–सछंदो–गणवासी–उसन्नो ५ पासत्थो–सछंदो–गणवासी–उसन्नो

तथापंचसंयोगी १ नांगोथयो एवं २६ थाय तेद्विकसंयोगीथी त्रिकसंयोगीदूपणे नारी तेथीचतुःसंयोगीदूपणेनारी चतुःसंयोगीथीपंचसंयोगीदूपणेनारी इवंदोपनेस्यनि

रेके गुणवृद्धिपणोदेखाडेछे १ गछवासीके० गछमांवसे २ अणुउंगीके० अर्थधारे ३ गुरुसेवीके० गुरुवादिकनीसेवाकरे ४ अनियतवासीके० उग्रविहारी ५ आयुक्ते आउत्तोके० उपयोगीहोय एपांचपदमां जेमजेमएकेकापदनीवृद्धिथाय तेमतेम विशेषआराधकथाय यतः १ गछगउ २ अणुउंगी ॥ ३ गुरुसेवी ४ अनियतवासी ५ आउत्तो ॥ संजोएणपयाणं ॥ संयमआराहगाभणिया ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां ॥ ११ ॥

दोपदाणीगुणवृद्धिजयणाभापेंसूरि॥ तेशुभपरिवारेंहुये
विघनटलेसविदूरि ॥ देवफलेजोअंगणेतुऊकरुणासुरवे
लि ॥ शुभपरिवारेंलहियेंतासुखजसरंगरेलि ॥ १२॥

अर्थ ॥ एम दोषनी हाणीथाय तथागुणनीवृद्धिथाय अनेजयणाके० जतनाथाय एटले [illegible] अल्पदोषेंप्रवृत्तिथाय तेएहवागुण किवारेआवे तेहनोउत्तर भापेछेसूरिके० आचार्यनारेजे कि जे शुभपरिवारेंहोयके० एवागुणतोपरिवारशुभहोय तिवारे आवे तथा[illegible]दृष्टांते तेमाटेहेदेव तुऊके० तमारीकरुणारूपजे सुरवेलीके० [illegible]रेखडी ते मारेआत्मरूपजेआंगणुं तिहांजोसफलीथाय तोतेशुभपरिवारादिवें [illegible]माटे उपदेशमालाना करतायेंकहुंछे यतः सीहगुरुसुसिस्साणं ॥ [illegible]णं ॥ [illegible]दासीवा ॥ पणत्तिनविकोवियंवयणं ॥ १ ॥ तेमाटेशुभपरिवारपामवोदुर्लभछे तेशुभपरिवारेंकरी सुखयशनी रंगरेलपामियें एटले [illegible]सानंदरूपनारंगनीरेल तेहनोप्रवाहपामीयें एसातमीढालमां कह्युंजेहेदेव [illegible] सुरवेलीजोफलेतो सुखयशपामियें तेमाटे हवे आठमीढालमां करुणा [illegible] दया तेहनुं स्वरूप कहेशे ॥ १२ ॥

ढालआठमी प्रभुचित्तधरीनेअवधारोमुऊवातएदेशी

[illegible]निवंतमांजी ॥ धर्मअहिंसासार ॥ आदरियेंतेएकलीजी ॥
[illegible]निवहुव्यवहार ॥ मनमोहनजिनजी ॥ तुजवयणेंमुऊरंग ॥ १ ॥

अर्थ [illegible]कहेछे के सिद्धांतिमसूत्रनेविषेएमकह्युंछे जे धर्मअहिंसाके० दया तेसारके० [illegible] नयिधम्मोअहिंसासमोधम्मोऽस्तिवचनात् माटेएकलीअहिंसाजआ दरिये [illegible]के० अनेक उपचारके० उपायने त्यजीयेंके० मूकीदइयें एमकहेछे [illegible]मोहनजिनजी अथवाभव्यनेमोहनाउपजाववाहार एवाजेजिनेश्वरतेनोसंबोधनकरीने कहेछे मनमोहनजिनजी तुम्हवयणेंके० तमारावचननेविषेमुजनेरंगछेरीजछे

नविजाणेतेसर्वत्यजीने ॥ एकअहिंसारंग ॥ केवल
लौकिकनीतिहोवे ॥ लोकोत्तरपंथभंग ॥ मन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेहनेउत्तरआपेछे के तेअज्ञानीनथीजाणता नथीसमजता जे सर्वपूजा प्रभावना सामिवत्सलप्रमुखकरणीत्यजीने मात्रएकअहिंसानेविषेज रंगके० रीजक रेछे तेथी केवल लौकिकके० व्यवहारनितीकरीने एटलेलौकिकव्यवहारमां एकद यादयापोकारे तेसारीलागे पण लोकोत्तरमार्गजे जिनमार्गतेहनोभंगथायछे एटले एकलीदयामांजिनशासननथी पणजिनआज्ञामांशासनप्रवर्त्तेछे एकलीदयायेंतो पडि कमणापोसहप्रमुखपणनकरीशके तोपूजाप्रभावनानीवातो वेगलीरही इतिभावः॥२॥

वनमांवसतांबालतपस्वी ॥ गुरुनिश्राविणसाध ॥ एक
अहिंसायेंतेराचे ॥ नलहेमर्मअगाध ॥ मन० ॥ ३ ॥

अर्थ॥ एकतोबालतपस्वी जे अज्ञानतपस्वीतेपणवनमांवसतो एटले घोरकष्टनोकर णहार तथा बीजो गुरुनिश्राविणके० गुरुआणाविना एवेहु एकअहिंसायेंतेराचेके० एकअहिंसामुखेकहे एटलेबाह्यजीवनीरक्षाकरवी एटलामांजरीजछे पणतेअहिंसा नो अगाधके० कंडोमर्मछे तेमूढ नजाणे एटलेस्वआत्माहणायतेहिंसा अनेस्वआ त्मानहणायतेअहिंसा एहवामर्मनीतेनेखबरनथी ॥ ३ ॥

जीवादिकजेमबालतपस्वी ॥ अणजाणंतोमूढ ॥ गुरुलघुभा
वतथाअणलहेतो ॥ गुरुवर्जितमुनिगूढ ॥ मन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेकोइकहेछेजे बालतपस्वी तथासाधुएवरावरकेमथाय तेनेकहेछे के जेमबालतपस्वी तेजीवअजीवपुन्यपापप्रमुखनुंयथार्थस्वरूप तेमूढ अणजाणंतोके० अणसमजतोथको जेमतेहोय तथाके० तेमज गुरुलघुभावअणलहेतोके० हलकाभा रे लाभखोटने अणजाणतोजे आवुंप्रायश्चित्तकर्युं तेकरतांबीजीकरणीमांयद्यपिप्रा यश्चित्तछे तोपणलाभघणोछे इत्यादिकवातोथीअणसमजुछे जेमाटेगुरुवर्जितमुनिके० गुरुयेंकरीरहितएहवाजेमुनिते गूढके० गुप्तरहस्यजेहोय तेवागुरुअनेलघुभावनेनल हेइतिभावः एरीतेंगूढशब्दगुरुलघुभावनेजोडीयें ॥ ४ ॥

भावमोचकपरिणामसरिखो ॥ तेहनोशुभउद्देश ॥ जा
णारहितपणेजाणीजे ॥ जोइपदउपदेस ॥ मन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ नावमोचकपरिणामके० बौद्धादिकनापरिणामसरिखोछे एटलेबौद्धादिक एममानेछे के जेदुःखीहोयतेनेमारीयें तोदोषनलागे कारणके तेनेमारतानथी पण उलटोदुःखथीमूकावियेंछेयें एरीतेमातुंकृतकरीने तेनेरुडुंमानेछे तेसरिखो तेहनोके० ते ढुंढकादिकअज्ञानीनो शुभउदेशके० शुद्धप्रवर्तनजाणवो एटलेयद्यपितेओनीअहिंसाइच्छयथीने पणपरिणामे हिंसाजजाणवी तिहां हेतुकहेछे जे आणारहितपणेजाणी जेएटले आज्ञारहितमाटे यतः आणाएतवोआणाए ॥ संयमोतह्यदाणमाणाए ॥ आणारहिउधम्मो ॥ पलालपुलुवपडिहाइ ॥ १ ॥ इतिवचनात् ए अर्थउपदेशपदग्रंथमांजोइने जाणीजेके० जाणीयें यतः जंअन्नाणीमूढो ॥ जंचअगीयछनिस्सिउविहरे ॥ सोसुगायकम्मसरिसो ॥ पावयबंधेविल्लिप्पंति ॥ १ ॥ ५ ॥

एकवचनफालीनेगंडे ॥ बीजालौकिकनीति ॥ सकल
वचननिजठामेजोडे ॥ एलोकोत्तरनीति ॥ मन०॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एगाथानोअन्वयकरीअर्थ करेछे जेएकलौकिकवचनफालीने बीजासर्व नीतिनावचननीमेछे इत्यन्वयः तेलौकिकवचनएजेकोइनेनहणवो तेऊपरआगमनापाठदेखाडेछेजे सव्वेपाणा सव्वेभूआ सव्वेजीवा सव्वेसत्ता नहंतव्वा इत्यादिकआगमनुंएहवुंवचनने अनेपक्षविलोकपणप्रौढमार्गेएम केहेछे जेकोइनेनमारवो तेमाटे एवचननेलौकिकवचन कहीयें तेलौकिकवचनपकडीने बीजासर्व नीतिवचनके० लौकिकथीबीजा जेलोकोत्तरवचन दानदेवपूजासामीवात्सल्यप्रमुख ते नीतिवचन कहीयें तेसर्वछांभिदिदेछे एमलेगरंगोडुंकरेछे केमके जे सकलवचननिजठामेजोडेके० समस्तसिद्धांतनावचनजेने तेने ठेकाणेजोडे तेलोकोत्तरनीतिजाणवी सकलवचनएपदवीजीवारजोडवुं एटलेसर्ववचने गुणठाणामाफक महुमहुनीहदप्रमाणे समस्तसिद्धांतनावचनजोडे जे कायवचनेमुनिराजनेजआश्रीने अनेआवचनतेगृहस्थनेआश्रीने तेअपेक्षाउजैनशासनमांरहीने तेतेनयोतानीअपेक्षाप्रमाणेजोडे एलोकोत्तरनीति तेजिनशासननीनीतिछे

जिनशासनछेएकक्रियामां ॥ अन्यक्रियासंबंध ॥ जेमल्ला
धीनेमिथियअहिंसा ॥ हेतुस्वरूपअनुबंध ॥ मन० ॥ ७॥

अर्थ ॥ तदाजिनशासनने एकक्रियामां अन्यक्रियासंबंधछे जेमाटे जेहिंसातेज अहिंसा अने जेअहिंसातेजहिंसा अनेजेनपस्या तेज जो निस्पृहपणुनथी तोअतप अने जोनिने अनेनोनीनतांनिस्पृहिपणुछे तो तेतपस्वीछे इत्यादिकजिनशासन

मां एकांतनयी स्याद्वादछे यतः अविज्ञायापिहियाहिंसा हिंसाफलभाजनंभवत्ये कः कृत्वाप्यपरोहिंसां हिंसाफलभाजनं नस्यात् ॥ १ ॥ इतिअहिंसाष्टकवचनात् ॥ ते वलीहिंसातथाअहिंसा अनेकभेदें आगलीगाथामांदेखाडेछे जेमभाषीजेके० जिन शासनमांकहीयेछेयें त्रिविधअहिंसाके० त्रणप्रकारनीअहिंसा तेदेखाडेछे १ हेतुअ हिंसा २ स्वरूपअहिंसा ३ अनुबंधअहिंसा एविवरीदेखाडेछे ॥ ७ ॥

हेतुअहिंसाजयणारूपें ॥ जंतुअघातस्वरूप ॥ फलरू
पेजेतेहपरिणमे ॥ तेअनुबंधस्वरूप ॥ मन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेमांपेलीहेतुअहिंसाते यतनाकरवी केमके जे जीवयतनाकरवीतेअहिं सानोहेतुछे माटेहेतुअहिंसाकहीयें बीजी जे जंतुअघातके० जीवनेमारवोनही प्रा णवियोगनकरवो तेहनुं नाम स्वरूपअहिंसाकहीयें त्रीजी स्वर्गापवर्गादिकफलरूपेंजे अहिंसापरिणमे तेअनुबंधअहिंसानुंस्वरूपजाणवुं ॥ ८ ॥

हेतुस्वरूपअहिंसाआपे ॥ शुभफलविणअनुबंध॥ दृढ
अज्ञानयकीतेआपे ॥ हिंसानोअनुबंध ॥ मन०॥ ए॥

अर्थ ॥ हवेत्रणेअहिंसानाफलकहेछे जेहेतुअहिंसातथास्वरूपअहिंसा एबेअहिं साते शुभफलके० पुण्यफलआपे विणअनुबंधके०अनुबंधविना एटलेहेतुतथास्वरूप अहिंसाथीपुण्यबंधाय ते देवताप्रमुखनोभवपामे पण आगलेंसंजम पुण्यपरंपरानथाले माटेपापानुबंधीपुण्यबंधाय जेम अहिंसानात्रणभेद तेम हिंसानपणत्रणभेदछे ते कहेछे १ हेतुहिंसा २ स्वरूपहिंसा ३ अनुबंधहिंसा एत्रणमांहिंसानुं अनुबंधके० फलतेपणजेहिंसानुंजआपे तेनोहेतुकहेछेके दृढअज्ञानथकीके० थाकरेअज्ञानेकरी ने एटलेएनावजेहेतुथीजोइयेंतोअहिंसा तथास्वरूपथीजोइयेंतोपणअहिंसा अने अ नुबंधेजोइयेंतो हिंसाछे तोतहिंसाथीपण संसारवधे अने अज्ञानअहिंसाथीपणसंसार वधे तेमाटेजेमां अनुबंधअहिंसाहोयते आदरवी इतिभावः ॥ ए ॥

निन्हवप्रमुखतणीजेमकिरिया ॥ जेहअहिंसारूप ॥ सुर
दुरगतिदेइतेपाडे ॥ दुत्तरभवजलकूप ॥ मन० ॥ १० ॥

अर्थ जेम जमालीप्रमुखनिन्हव सर्वजैनलिंगधरता तथाक्रियापणजैननीकरनार ता तेश्रीभगवन्तिमांजमालीनुंमहातंपमवरला एवुं पणजे अहिंसारूपके० तेक्रियासर्व

हेतुअहिंसा तथास्वरूपअहिंसारूपहत्ती पणते सुरडुरगतिदेइके० देवतानीडुरगति एटले किल्विषियाप्रमुखदेवतानीडुर्गतिआपीने पछे पाडेके० नाखे डुत्तरनवजलकू पके० डुःखेंतरायएवोसंसाररूपजलनोकुवो तेमांनाखे इति ॥ १० ॥

दुर्बलनग्नमासउपवासी ॥ जोछेमायारंग ॥ तोपण
गरनअनंतालेशे ॥ बोलेबीजुंअंग ॥ मन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ तेऊपर साख देखाडेछे जेम कोइक शरीरेंडुर्बल थयोहोय तथानग्नके० नागोरहेतोहोय अनेमासखमणनोपारणुंकरतोहोय एवोहोय अनेमायारंगके० मा यावंतहोय एटलेअज्ञानकष्टकरेछे एवोछे तोपण अनंतिवारगर्भमांउपजसे एटलेअ नंताजवकरसे एमवीजुंअंगजेसुयगडांगसूत्रतेबोलेछे यतः जइवियणिगिणेकिसे ॥ चरे जइविजुंजियमासमंतसो ॥ जेइहमायातिमज्जति ॥ आगंतागप्रायणंतसो १ ॥ इति द्वितीयाध्ययने एटले एनीदया कोइलेखामां नावे ॥ ११ ॥

निंदितआचारेंजिनशासन॥ जेहनेंहीलेलोक ॥ मायापे
हेलीतसअज्ञानें ॥ सर्वअहिंसाफोक मन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ ते निंदितआचारें लोक जिनशासन हीले एटलेजे एकलीदयामानेछे अ नेअज्ञानकष्टकरेछे तेप्राणीनेपूर्वाचार्यना जीतनीखबरनथी केजितव्यवहारें लोकनिं दानकरे अनेपोतानीमतियेंप्रवर्त्ते तेनाआचरणनी लोकनिंदाकरे तेवारेजिनशासननी पणनिंदाथाय के जुउआवालोक जिनशासनमांछे माटे जिनशासनपण दुर्गछाकर वायोग्यछे तेवारेंजिनशासननी हिनतानुं कारणथाय माटे तसके० तेप्राणीने अज्ञा नथपुं तेअज्ञानेकरीने मायापेहेलीके० प्रथममायाथयीज अनेज्यांमायाहेरी त्यांस र्वअहिंसाते फोकके० खोटीनिःफलजाणवी जेमाटें अज्ञानीनीदयाते हिंसाजजाण वी यतः मासेमासेयजोबालो ॥ कुसग्गेणंतुजुंजएनसो ॥ सुअरकायस्सधमस्स ॥ क लिअग्घइसोलसिं ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययनवचनात् ॥ १२ ॥

स्वरूपथीनिरवद्यतयाजे ॥ छेकिरियासावद्य ॥ ज्ञानश
कियीतेहअहिंसा ॥ दिएअनुबंधेसद्य ॥ मन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ आगलीगाथामां दयापालेने फलहिंसानुं आपे एम कह्युं हवे जेकथंचित् हिंसाथाय तेपण अहिंसानुंफलआपे तेकहेछे जे स्वरूपथीके० परमार्थेतोनिरवद्यछे

निःपापने अनेंक्रियातावद्यके० देखीतियद्यपिसावद्यछे तोपण तेजेस्वरूपथी हिंसाछे तेज्ञानशक्तियेंकरी दिएअनुबंधेके० अनुबंधआपे अहिंसाके० दयासद्यके० तत्काल एटलेएनावजेस्वरूपहिंसाजे दानविहारप्रमुख तेमुनिप्रमुखनीने तेअनुबंधेअहिंसानुंज फलआपे यतःभगवत्यांगे अणगारस्सणंभंतेभावि अप्पाणोपुरउदुहउजुगमायाएपेहा एरीयंरीयमाणस्स पायस्सअ हेकुक्कुमपोएवावट्टपोतेवाकुलिंगच्छाएवा परियावज्जेज्जा॥ तस्सणंभंतेकिंइरियावहियाकिरियाकज्जइसंपराइयाजावकज्जति गोयमाणोसंपराइया जावकज्जति इरियावहिया जावकज्जइ सेकेणं जावबुच्चइ जहासत्तमसएसंवुडुद्देसए जावअट्ठोनिक्खित्तो ॥ इतिअढारमांशतकनाआठमांउद्देशमांहे ॥ १३ ॥

जिनपूजाअपवादपदादिक॥शीलव्रतादिकजेम॥पुण्यअनु
त्तरमुनीनेआपी॥ दिएशिवपदबहुखेम॥ मन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वलीजेमपूर्वेमुनीनेहिंसा स्वरूपथी हती तेअनुबंधेअहिंसाकही तेमजजिनपूजा तथाअपवादपदादिकें वर्त्ततामुनी वलीशीलव्रतादिक जेममुनीने अनुत्तरके०उत्कृष्टपुण्यआपीने एटलेएजिनपूजादिकरणी यद्यपिकिंचितमात्र स्वरूपथीसावद्यछे अनेशीलव्रतादिकते स्वरूपथीनिरवद्यछे पणएबेहुभेदवालाने अनुबंधे अहिंसानुंज फल आपे तेमाटे एमकह्युंजे अनुत्तरपुण्यआपीने दिएके० आपे शिवपदके० मोक्षपद जे बहुखेमके० घणुक्षेमछेजिहां एटलेपरंपरायें सर्वसिद्धनु देनारछे ॥ १४ ॥

एहभेदविणएकअहिंसा ॥ नविहोवे थिरथंभ ॥ यावत
योगक्रियाछेतावत ॥ बोल्योछेआरंभ ॥ मन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एप्रकारे १ हेतु २ स्वरूप ३ अनुबंध एत्रणभेदेंहिंसा तथाएत्रणभेदें अहिंसाते जाण्याविना एकलीजअहिंसासामान्यप्रकारें माने ते नविहोवेके० नहोय थिरथंभके० थिरभावे एटलेएकअहिंसाठरेनही शामाटेके यावतयोगक्रियाछेके० ज्यांलगे मन वचन कायानायोगनीक्रियातेचलनक्रियाछे तावतके० तिहांलगें बोल्योछे के० कह्योछे आरंभके० कर्मबंध एटलेपोतापोताना गुणठाणानीमर्यादा माफक तेरमां गुणठाणालगें कर्मबंधछे अन्यथाइरियापथिकबंध बेसमयनी स्थितिनो केमक ह्योछे तेमाटे एकली अहिंसाकेवीतेकामनावे पणतेनाभेदसमजे तो सर्वठेकाणेजोडे

लागेपणलगवेनहिंहिंसा ॥ मुनीएमायावाणि ॥ शुभकि
रियालागीजेआवे ॥ तेमांतोनहींहाणि ॥ मन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ इहां कोइक एम कहेछे जे मुनिके० मुनिराजने विहारादिक करतां हिंसा लागेछे पण लगावेनहीएटलेहायेकरी जाणीने हिंसाकरेनही एमजेकहेछे ते माया वाणिके० कपटनुं वचनछे एटलेमारीमातावंध्या तेनीपरे मायागालीवातबोलेछे पण शुभक्रिया जे विहारपडिलेहण नदीउतरवी इत्यादिक करतां जे हिंसा लागी आवे छे तेपांनानीमेलेज लागेछे एमकेम कहेवाय केमके जे नदीउतरवी विहारकरवो ते अजाणोपनो नथी तेनो पोतेजाणेजछे जे नदीप्रमुख उतरतां हिंसाथशे तोपण उतरेछे प्रभुनी आज्ञाछे तेमाटे जेहिंसा शुभक्रियाकरतां लागीआवेछे तेमां हाणीके० दोष लागतो नथी ॥ १५ ॥

हिंसामात्रविनाजोमुनिने ॥ होयअहिंसकभाव ॥ सू
[illegible]मएकेंद्रिनेंहोवे ॥ तोतेशुद्धस्वभाव ॥ मन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हिंसामात्रविनाके० एक हिंसाज देखीति नकरी एटले देखातो कोइ [illegible] मात्रपीज जो मुनीनेके० साधुने होयअहिंसकभावके० अहिं [illegible] पावतो [illegible]एकेंद्रिनेके० लोकव्यापी पांचथावरनासूक्ष्मएकेंद्रिजीवोनेपण [illegible] जोइये केमके सूक्ष्मएकेंद्रिय जीवतेहिंसानामेज नथीकरता माटे [illegible] थया अने जे अहिंसकभावेंपरिणम्यो तेतो शुद्धस्वभावि नि [illegible] तेनो हिंसो कोए निगवरणथना देखातानथी तेमाटे मात्रहिंसाने [illegible] अहिंसानथाय जमाटनीपरें अविद्यापिहियाहिंसा ॥ हिंसाफलभाज [illegible]नात् ॥ १७ ॥

[illegible]अहिंसामाने ॥ तेमविजोढेगाम ॥ उत्सर्गअ
[illegible] । जिननीजाणेजाम ॥ मन० ॥ १८ ॥

[illegible] । इत्यनावप्रमुख भेदेकरी अनेक प्रकारनी अहिंसाछे ते [illegible] जेप्राणी अहिंसामाने नेके० नेप्राणी मविजोढेगामके० सर्व [illegible] जोइ तेप्राणीयी आगमवचन एकपण दुभायनही ते [illegible] काणे क्यारे जोडे जेवारे उत्सर्गअपवादेंया [illegible] एवंद्रुयेकरीने जिनेश्वरनी वाणीजाणे [illegible] आचारांगप्रमुखनेविषे नयाम [illegible]हिना मध्ये येनदीउतरवी इत्या

दिक अपवाद आज्ञा पण प्रभुयेंकरीने तोए सर्वउत्सर्गे अपवाद नावजाणे तेसर्व व चन गमेजोमे पण मूर्ख छुंजाणे ॥ १७ ॥

कोइकहेउत्सर्गेआणा ॥ ढांदोछेअपवाद ॥ तेमिथ्या
अणपामेंअर्थे ॥ साधारणविधिवाद ॥ मन० ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ इहां कोइक एमकहेछेजे उत्सर्गमार्गेचालवुं तेज आज्ञाछे पण अपवाद ते ढांदोछे एटलेपोतानीमतिकल्पनाछे पणजिनाज्ञा नथी एमकहेछे ते मिथ्याके० खोटुछे अणपामेंअर्थेके० अर्थजाण्याविना एमकहेछे तेनुं कारण के जे विधिवाद होयतेसाधारणजहोय एटले एमजाणवुंजे उत्सर्ग ने अपवाद एवेहु विधिवादछे ते सर्वजीवने साधारणछे पण एकजीवआश्रयीनथीकह्युंतेमाटे अपवाद पण आज्ञाछे पणढांदो एटले स्वमतिकल्पनानथी ॥ १ए ॥

मुख्यपणेजेमनावेआणा ॥ तेमतसकारणतेह ॥ कार्यइ
छतोकारणइहे ॥ एछेशुनमतिरेह ॥ मन० ॥ ६० ॥

अर्थ ॥ वली एजकहेछेके जंबूद्वीपपन्नतिनीवृत्तिमध्ये एमकह्युंछे के जेअपवाद तेकारण अने उत्सर्ग तेकार्य तेमाटे कहेछेजे मुख्यपणे जेमनावेआणाके० उत्सर्ग आज्ञानाछे एटले नावते कार्यकहीयें अने जे कार्य तेउत्सर्गकहीयें तेमाटे जेम उत्सर्ग आज्ञाछे तेमतसकारणतेहके० तेमजते उत्सर्गनुंजेकारण तेअपवादछे तेनीपणआज्ञाछे केमके जेकार्यने इछतोयको कारणपण इछे अनेजो कारणछेरेतो कार्यपणछेरे जोकारणनहीतो कार्यक्यांथीआवे एरीतेमाने तेनेजशुनमतिनी रेखा जाणवी ॥ अथवाएगाथानोअर्थवीजीरीतेकरीयेंछेयें जे इहांढुंढकलोकएमकहेछे जेअ मारेतोनावनिक्षेपतेवंदनाकरवायोग्यछे पण नामतथास्थापनाअनेद्रव्य ए त्रणनिक्षे पावंदनायोग्यनथी एमकहेछे तेनेशीखामण दीएछे जेमुख्यपणे जेमनावेआणाके०ना वनिक्षेपेआज्ञाछे एटलेनावनिक्षेपोवांदवायोग्यछे तेमतसकारणके० तेमजतेनावना कारणजेनामादित्रणनिक्षेपातेपण वांदवायोग्यछे केमके जेकार्यनेइछशे तेकारणने इछशे अनेकारण मान्याविना कार्यनेपामशेज नही एजशुनमतिनी रेखाछे एटले जे नावनिक्षेपोमानशेतेने नामस्थापनादिकपण मानवाजोइयें जोनामादिकनहीमाने तोनावनिक्षेपोपण नहीमनायो एमथयुं ॥ २० ॥

कल्पेंवचनकह्युंअपवादें ॥ तेआणानुंमूल ॥ मिश्रप
क्षतेमुनीनेनघटे ॥ तेहनहीअनुकूल ॥ मन० ॥ ६१ ॥

अर्थ ॥ इहां कोइक एम कहेछे जे मुनिके० मुनिराजने विहारादिक करतां हिंसा लागेछे पण लगावेनहीएटलेहाथेकरी जाणीने हिंसाकरेनही एमजेकहेछे ते माया वाणिके० कपटनुं वचनछे एटलेमारीमातावंध्या तेनीपरे मायागालीवातबोलेछे पण शुनक्रिया जे विहारपडिलेहण नदीउतरवी इत्यादिक करतां जे हिंसा लागी आवे ने तेपोतानीमेलेज लागेछे एमकेम कहेवाय केमके जे नदीउतरवी विहारकरवो ते अजाण्योयतो नथी तेतो पोतेजाणेजछे जे नदीप्रमुख उतरतां हिंसाथशे तोपण उतरेछे प्रनुनी आज्ञाछे तेमाटे जेहिंसा शुनक्रियाकरतां लागीआवेछे तेमां हाणीके० दोष लागतो नथी ॥ १५ ॥

हिंसामात्रविनाजोमुनीने ॥ होयअहिंसकनाव ॥ सू
क्ष्मएकेंद्रिनेहोवे ॥ तोतेशुद्धस्वनाव ॥ मन० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हिंसामात्रविनाके० एक हिंसाज देखीति नकरी एटले देखातो कोइ जीव नमार्यो एटला मात्रथीज जो मुनीनेके० साधुने होयअहिंसकनावके० अहिंसकपणुं थायतो सूक्ष्मएकेंद्रिनेके० लोकव्यापी पांचथावरनासूक्ष्मएकेंद्रिजीवोनेपण शुद्धस्वनाव होवो जोइये केमके सूक्ष्मएकेंद्रिय जीवतेहिंसानामेज नथीकरता माटे तेतमारे लेखे अहिंसक थया अने जे अहिंसकनावेंपरिणम्यो तेतो शुद्धस्वनावि नि रावरणिमाय पण तेएकेंद्रिनो कांए निरावरणथता देखातानथी तेमाटे मात्रहिंसाने अणकरवेज अहिंसकनथाय जमालीनीपरें अविद्धायापिह्यिाहिंसा ॥ हिंसाफलनाज नंगरन्देस्तुनिरहिंसाटकवचनात् ॥ १७ ॥

नावेंजेहअहिंसामाने ॥ तेसविजेडेठाम ॥ उत्सर्गेअ
पवादेंवाणी ॥ जिननीजाणेजाम ॥ मन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे जेप्राणी द्रव्यनावप्रमुख जेदेकरी अनेक प्रकारनी अहिंसाछे ते नावरूप नावेंके० परिणामें जेप्राणी अहिंसामाने तेके० तेप्राणी सविजोडेठामके० सर्व ठेकाणे पोतपोताने ठेकाणेजोडे तेप्राणीथी आगमवचन एकपण दुवायनही ते माटेथी अहिंसानाने सर्वथाठावाठेकाणे केवारे जोडे जेवारे उत्सर्गअपवादेंवा णीके० उत्सर्गवचन तथा अपवादवचन एवेद्वयेंकरीने जिनेश्वरनी वाणीजाणे एटले उत्सर्गे उत्सर्गमार्गे अहिंसा मुनिराजनें कही आचारांगप्रमुखनेविषे तथा साधुने वर्षाकाल पालीने वेंहनी जाणतो काटे तथा एकमहिना मध्ये बेनदीउतरवी इत्या

दिक अपवाद आज्ञा पण प्रभुयेंकरीने तोए सर्वउत्सर्ग अपवाद जावजाणे तेसर्व वचन गमेजोमे पण मूर्ख गुंजाणे ॥ १८ ॥

कोइकहेउत्सर्गेआणा ॥ गंदोछेअपवाद ॥ तेमिथ्या
अणपामेंअर्थे ॥ साधारणविधिवाद ॥ मन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ इहां कोइक एमकहेछेजे उत्सर्गमार्गेचालवुं तेज आज्ञाछे पण अपवाद ते गंदोछे एटलेपोतानीमतिकल्पनाछे पणजिनाज्ञा नथी एमकहेछे ते मिथ्याके० खोटुछे अणपामेंअर्थेके० अर्थजाण्याविना एमकहेछे तेनुं कारण के जे विधिवाद होयतेसाधारणजहोय एटले एमजाणवुंजे उत्सर्ग ने अपवाद एबेहु विधिवादछे ते सर्वजीवने साधारणछे पण एकजीवआश्रयीनथीकह्युंतेमाटे अपवाद पण आज्ञाछे पणगंदो एटले स्वमतिकल्पनानथी ॥ १९ ॥

मुख्यपणेजेमभावेआणा ॥ तेमतसकारणतेह ॥ कार्यइ
छतोकारणइछे ॥ एहेशुभमतिरेह ॥ मन० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वली एजकहेछेके जंबूद्वीपपन्नतिनीवृत्तिमध्ये एमकह्युंछे के जेअपवाद तेकारण अने उत्सर्ग तेकार्य तेमाटे कहेछेजे मुख्यपणे जेमभावेआणाके० उत्सर्गे आज्ञाछे एटले भावते कार्यकहीयें अने जे कार्य तेउत्सर्गकहीयें तेमाटे जेम उत्सर्गे आज्ञाछे तेमतसकारणतेहके० तेमजते उत्सर्गनुंजेकारण तेअपवादछे तेनीपणआज्ञाछे केमके जेकार्यने इछतोयको कारणपण इछे अनेजो कारणछेरेतो कार्यपणछेरे जोकारणनहीतो कार्यकिहांथीआवे एरीतेमाने तेनेजशुभमतिनी रेखा जाणवी ॥ अथवाएगाथानोअर्थबीजीरीतेकरीयेंछेयें जे इहांढुंढकलोकएमकहेछे जेअमारेतोभावनिक्षेपतेवंदनाकरवायोग्यछे पण नामतथास्थापनाअनेद्रव्य ए त्रणनिक्षेपावंदनायोग्यनथी एमकहेछे तेनेशीखामण दीएछे जेमुख्यपणे जेमभावेआणाके०भावनिक्षेपेआज्ञाछे एटलेभावनिक्षेपोवांदवायोग्यछे तेमतसकारणके० तेमजतेभावना कारणजेनामादित्रणनिक्षेपातेपण वांदवायोग्यछे केमके जेकार्यनेइछशो तेकारणने इछशो अनेकारण मान्याविना कार्यनेपामशोज नही एजशुभमतिनी रेखाछे एटले जे भावनिक्षेपोमानशोतेने नामस्थापनादिकपण मानवाजोइयें जोनामादिकनहीमाने तोभावनिक्षेपोपण नहीमनायो एमथयुं ॥ २० ॥

कल्पेंवचनकह्युंअपवादें ॥ तेआणानुंमूल ॥ मिश्रप
क्षतेमुनीनेनघटे ॥ तेहनहीअनुकूल ॥ मन० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ पंचकल्पमांहे एहवुंवचनकह्युंछे के अपवादमार्गते जिनाज्ञानुंमूलछे यतः अववाउववहारो॥ आणामूलंजउनवेतिछं॥ इतिवचनात् माटे मुनीनेतो ते मिश्र पक्षघटेनही रुडोनथी तेअनुकूलनथी केमके गुणस्थानादिक क्रियायेंमिश्रपक्षतान थी तेहिजआगलीगाथामांदेखाडेछे ॥ २१ ॥

अपुनर्वंधकथी मांडिनें ॥ जावचरमगुणठाण ॥ भावअ
पेक्षायेंजिनआणा ॥ मारगभाषेजाण ॥ मन० ॥ २२ ॥

अर्थ॥ फरीबंधनथी करवो तेने अपुनर्वंधककहीयेते अपुनर्वंधकजेचोथोगुणठाणो तिहांथी मांडिने जावचरमके०छेलाअयोगी केवली चउदमां गुणठाणालगें इहांअपु नर्बंधकशब्दें चोथोगुणठाणो जाणीयेंछेयें जेकारणे अंतःकोडाकोडी स्थितिकरीने कदा पिफरी मिथ्यात्वगुणठाणेआवेतोपण सितेरकोडाकोडीनीस्थितिफरी नबांधे तेमाटे अपुनर्बंधककहीयें तथा उपाध्यायजीयेंपण सवासोगाथाना तवनमध्ये एवीगाथाक हीछेके जेजेअंशेरेनिरुपाधिकपणुं ॥ तेतेजाणोरेधर्म ॥ सम्यक्दृष्टीरेगुणठाणाथकी॥ जावलहेशिवशर्म ॥ १ ॥ एगाथाने अनुमानेपण एमजणायछे पछेतो अपुनर्बंधकनो अर्थ बहुश्रुतकहे तेप्रमाण तथाउपाध्यायजीयेंस्वकृतअध्यात्मसारग्रंथमांपण कह्युंछे जे अपुनर्बंधकाधावत् गुणस्थानंचतुर्दशं ॥ इत्यादिथी स्पष्टजणायछे केचोथागुण ठाणाथी चउदमांलगें जिनआणाके० जिनेश्वरनी आज्ञाने अने जाणपुरुषते एनेज मार्ग कहेछे तेसर्वभाव भावनीअपेक्षायें जाणवा अन्यथाचोथागुणठाणाप्रमुखने विषे तोमहाविराधमार्गेछे पण भावनीअपेक्षायें जिनआणाछे इतिभावः॥ २२ ॥

एकअहिंसामांजेआणा ॥ भापेपूरवसूरि ॥ तेएकांतम
तिनविग्रहियें ॥ तिहांनयविधिछेभूरि ॥ मन० ॥ २३ ॥

अर्थ॥नयागाम्समां एकली अहिंसानी आज्ञानाछे जेम सर्वेजीवानहंतव्वाइतिआ चारांगादिकवचनथी एमपूर्वाचार्य यद्यपिकहेछे तथापि एपाठ एकांतमतिके० एकां तरूहें नविग्रहियेंके० अंगीकारनकरीयें तेमजतेअहिंसापण स्याद्वादमतें अंगीकार क रीयें जेम मुनिराज नवकोटीपच्चखाण करीने नदीउतरेछे अनेपच्चखाण करती वखते नदीनोकजीनो गम्यनथी तोते पच्चखाण स्याद्वादीछेपणएकांते नथी एम जाणवुं तेमाटे इहां नयविधिनेभूरिके० तेअहिंसानेविषे नयनोविधिघणोछे तेतो जैनदर्शन मनजे तेजाणे एटलेअहिंसाते अनेकप्रकारनीछे ॥ २३ ॥

आतमभावहिंसनथीहिंसा ॥ सघलाएपापस्थान ॥ तेहथ
कीविपरीतअहिंसा ॥ तासविरहनुंध्यान ॥ मन० ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ वलीनिजवात देखाडेछे आतमभावहिंसनथीके० जेकरणीकरतां पोताना आत्मभाव हणाणो तो तेमां हिंसाके० हिंसालागे तथाआत्मभावहणातायकाअढारे पापस्थानकलागे अने तेहथकीके० ते आत्मभावहणायायकी विपरीतके० आत्मभावजिहां नहणाय ते अहिंसाके० दयाकहीयें तासके० तेपापस्थानकना विरहनुंध्यानएवीएभावअहिंसाने एएदअहिंसानुं विशेषपणुंछे ॥ ७४ ॥

तसउपायजेजेआगममां ॥ बहुविधछेव्यवहार ॥ तेनिःशे
षअहिंसाकहियें ॥ कारणफलउपचार ॥ मन० ॥ ७५ ॥

अर्थ ॥ तसके० तेआत्मभाव नहणवाना उपायके० प्रकार जेजे आगममांके० सिद्धांतमां कह्याछे एवाव्यवहारते बहुविधछेके० अनेकप्रकारनाछे दान देवपूजा परिकमणा पोसहइत्यादिकअनेकछे अने लोकपरनी मूलगाथानोपाठ बिहुंविधहोयतो एमअर्थकरीयें जे उत्सर्ग तथा अपवाद एवेप्रकाररूप व्यवहारछे तेनिःशेषके० समस्त जेटला आत्मानहणाववाना प्रकारछेतेअहिंसाकहियें एटलेएभावजे अपवादपणआत्मा नहणाववानोकारणछे तथादान देवपूजाप्रमुखपण आत्मानहणाववानाकारणछे तेने अहिंसाकहीयें एमस्तवनकरनारे ठेराव्युं तेवारे अपवादने ठांदोछे अनेउत्सर्ग तेआज्ञाछे एरीतेपूर्वे प्रतिवादियें कह्युंहतुं तेदूरकर्युंइतिभावः॥इहांकोइकहेशेजे एअपवादप्रमुख अनेकआत्माने नहणवानाकारणछे अहिंसा केवीरीते कहीयें तेने कहेछे के कारणनेविषे फलउपचारके० कार्यनोउपचार करीयें छैयें यथातंडुलान् वर्षतिपर्जन्यइतिन्यायात् ॥ ७५ ॥

जीवअजीवविषयछेहिंसा ॥ नैगमनयमतजुत्त ॥ संग्रह
व्यवहारेंषटकायें ॥ प्रतिजीवेंऋजुसूत्त ॥ मन० ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ हवे पूर्वे कह्युंहतुंजे अहिंसामां नयनाप्रकार घणाछे तेदेखाडेछे तेमां प्रथमनैगमनयआश्रीजीवनेविषे तथा अजीवनेविषे हिंसाकहेछे तेनैगमनय एमकहेछेजे जेमलोकमां अमुके जीव हण्यो तेमज अमुके अजीवघटनेहण्यो घटनोविनाशकर्यो इत्यादिकहिंसाशब्द सघले प्रवर्त्तेछे तथा संग्रहनय अनेव्यवहारनयएबेहुनयनेमते

छकायनेविषे हिंसामाने पणजे अजीवनीहिंसा तेने हिंसामानतानथी इहांसंग्रहनय नावेनेहने एकदेशग्राहीसंग्रह वीजोसर्वग्राहीसंग्रह] तेमांसर्वग्राहीसंग्रहतो नैगमन यमां नव्यो माटे देशग्राहीसंग्रह इहांलीधोछे हिंसाशब्द अजीवमां प्रवर्त्ततो लीधोन थी तेमाटे देशग्राहीसंग्रह तथा व्यवहारनय तोजेरीतें लोकमाने तेरीतें एवेनयपण माने माटे लोकपण छकायने हिंसामानेछे तेमएवेनयवादी पणकहेछे तथा रुजुसूत्र नयवालो प्रतिजीवेंके० जीवजीवप्रतें भिन्नभिन्न हिंसामानेछे एमउघनिर्युक्तिनीवृत्ति मध्येकह्युंछे तेथ्यागलएज गाथामां कहेछे तथाचतदेशःतत्रनैगमस्य जीवेष्वजीवेषुहिं सा तथावक्तारोलोकेदृष्टाः यद्धतजीवोनेनहिंसितोविनाशितस्तथा घटोनेनहिंसितो विनाशितः ततश्चसर्वत्रहिंसाशब्दानुवर्तनात् जीवेष्वजीवेषुचहिंसानैगमस्यअहिंसा प्येवमेवेति संग्रहव्यवहारयोःषट्सुजीवनिकायेषु हिंसासंग्रहश्चात्रदेशग्राहीइष्टव्यःसा मान्यरूपभनैगमातंनोपि व्यवहारश्चस्थूलविशेषग्राही लोकव्यवहारणशीलश्चायंतथा पलोकोयाहुल्येनपट्स्वेवजीवनिकायेषुहिंसासंग्रहश्चात्र देशग्राहीमिछतितिरुजुसूत्रश्च प्रत्येकंप्रत्येकं जीरेजीवेहिंसां व्यतिरिक्तामिछतीति हवेशब्दार्थलखीयेंछेयेंजीवअजीवने विषे नैगमनयने मतेहिंसाकेहेवी एजुत्तके०युक्तछे अनेसंग्रहतथा व्यवहारनयनेमते छकायनेविषेज हिंसामानेछे तथारुजुसूत्रनेमते जीवजीवप्रतेहिंसाजुदीजुदीमानवी

आत्मरूपशब्दनयतिने ॥ मानेएमअहिंस ॥ उघवृत्ति
जोइनेलहियें ॥ सुखजशलीलप्रसंस ॥ मन० ॥२१॥

अर्थ ॥ आत्मरूपके० आत्मातेजसरूपछे माटे हिंसाअथवाअहिंसाते आत्मारूप मानेछे शब्दनयतिनेके० शब्दछेप्रधान जेने एवात्रणनय१ शब्द२समभिरूढ ३एवंभूत एत्रणनयमानेछे जेवारेतानो आत्मा प्रमादीथयो तिवारे आत्मातेहिंसा अने तेजआ त्मा जेवारे अप्रमादीथयो तेवारें आत्मा तेज अहिंसा यतःआयाचेवअहिंसा ॥ आयाहिंसनिनिच्छउएसो ॥ जोहोइअप्पमत्तो ॥ हिंसउअहिंसउइयरो ॥ १ ॥ इति उघनिर्युक्तिवचनात् पावजात्रणनयनिश्चयना घरनाछे माटे उघनिर्युक्तिवृत्तिनोपाठ एलखछे यथाशब्दसमभिरूढैवंभूतास्त्रनयाआत्मैवहिंसामिछंतीति ए जेमहिंसा सा मनरे एमजी तेमजअहिंसाके० अहिंसापण फलाविषें अहिंसाप्येवमेवेतिउघनि र्युक्तिवृत्तिवचनात् ए हिंसानानयाअहिंसानासर्वप्रकार ते उघनिर्युक्तिनीवृत्ति जोइने सु ख जशनीलीलाना मंदीरसंमाने लहियेंके० पामिये एटलेथयार्थ जाणवाथीएट लाहानो लहियें ॥ २१ ॥

ढालनवमोचैत्रिपुनमश्रनुक्रमेंएदेशी

कोइकसूत्रजश्रादरे ॥ अर्थनमानेसार ॥ जिनजी॥ श्रापमतिश्र
वलुंकरे ॥ मूलातेदगमार॥जिनजी ॥ तुजवयणेंमनराखीयें ॥ १॥

अर्थ ॥ आठमांढालने अंतेसातनयेंकरी हिंसाफलावी तेनयेंकरी हिंसातो तेवारे समजाय जेवारे सूत्रोनी टीका चूर्णितथाजाष्य अनेनिर्युक्ति मानीये तो समजाय पणकेवलसूत्रनो मूलपाठ वांचवाथी नसमजाय केमके जेसूत्रहोय तेसूचनामात्र होय माटेजे अर्थनेनथीमानता तेने शिक्षादेवा सारुं नवमांढालनेआठमांढालसा थेंसंबंधीकरी कहेछे जे कोइकके० जेढुंढक लुंपाक नामनदेवायोग्य माटेकोइक एवुं नामकह्युं ते सूत्रजश्रादरेके० केवलसूत्रजमानेछे इहां एवकारते वृत्त्यादिकनिषे धवाचकछे तथाअर्थके० टीकाप्रमुखतेनथीमानता जिनजीके० हेरागद्वेषनाजीतण हारहेवीतराग तेकेवाछे आपमतिके० स्वछंदेंचालणहारछे पणआगमानुयायी चाल तानथी अवलुंकरेके० जेछलुंकार्यकरेतेटलुं अवलुंकरेछे माटे तेमूर्खगमार मूलाज्ञ मेछे कारणके सूत्रतोगणधरनारच्या अने अर्थतो तीर्थंकरनोकह्यो यतः अत्थंजासइ अरहा ॥ सुत्तंगहंतिगणहरानिउणं॥ इतिवचनात् तेमाटे अर्थनी नाकेतां तीर्थंकर नीआशातनाकरेछे माटे अवलुंकरेछे माटे हेप्रजुतमारेवचने मनराखीयें ॥ १ ॥

प्रतिमालोपेपापीश्रा ॥ योगश्रनेउपधान ॥ जि० ॥ गुरुनो
वासनसिरधरे ॥ मायाविश्रज्ञान ॥ जि० ॥ तुज० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वली तेलोक प्रतिमाने लोपेछे एटले प्रतिमाउथापेछे पणकेवाछे जेपा पीश्राके० पापीछे शामाटे जेश्रीसमवायांग तथाजगवति तथाज्ञाता अनेउपासक रायपश्रेणी जीवाजिगम जंबूद्वीपपन्नति प्रमुखनेविषेसाक्षात्प्रतिमाकहीछे तेनेलोपी उत्सूत्रबोलेछे अनेजे उत्सूत्रबोलवुं तेश्रीजगवतिसूत्रमां पापकह्युं बोलाव्युंछे तेमाटे पापीयाकह्या तेप्रतिमानोअधिकारतो उपाध्यायजीयें ढुंढीना स्तवनमध्ये कह्योछे मा टे इहांनथीकह्यो वली योगवहेवा तेने लोपेछे कारणके श्रीनंदिसूत्र तथाअनुयोग द्वारसूत्र अनेउत्तराध्ययन ठाणांगप्रमुखसूत्रनेविषे योगपणकह्याछे तेपणउत्सूत्रबोली लोपेछे उपलक्षणथी श्रावकने सूत्रजणावे तेपण निशीथ तथा ठाणांग सुयगडांग व्यवहार उपासकप्रमुखमां नाकहीछे तेवातोपण ढुंढिनास्तवनमां आणीछे तेथीअहीं नथीकहेता माटे पापीछे वली उपधानलोपेछे केमके श्रीमहानिशीथप्रमुखसूत्रमां

उपधानकह्याछे तेलोप्यामाटे पापीकह्या वली गुरुनोवास मस्तकनेविषे नथरे एट लेएनावजे समवायांगसूत्र तथाश्री अनुयोगद्वारसूत्रप्रमुखनेलेखे तथा आवश्यकनि र्युक्तिप्रमाणछे तेमां गुरुनोवास कह्योछे तेलोप्यो माटेपापीकहिये वलीमायावीछे क पटेकरी लोकने नरममांनाखेछे अक्षरार्थे मरडवो तेवक्रता अनेजे वक्रताते माया व ली अज्ञाने नखाछे केमके व्याकरणादिकजणाविना सूत्रवांचेछे तेनघटे यतः अहकेरिसकंपुणाइं॥सच्चंतुनासियव्वंजंतंदव्वेहिं पज्जवेहियगुणेहिं॥कम्मेहिंवहुविहेहिं ॥ सिप्पेहिं आगमहियनामक्खायनिवाउवसगतद्धियसमाससंधिपद हेउ जोगीय उणा दिकिरिया विहाण धातु सरविभत्ति वन्नजुत्तं तेकल्लंदशविहंपिसच्चं जहभणियं तहय कम्मुणाहोइडुवालसविहायहोइभासावयणंपियहोइसोलसविहं इत्यादि प्रश्नव्याकरण सूत्रमध्येपाठछे माटेजेजाणेतेज्ञानीअन्यथा अज्ञानीकहियें ॥ २ ॥

आचरणातेहनीनवी ॥ केतिकहीयेंदेव ॥ जि० ॥ नित
त्रुटेछेसांधता ॥ गुरुविणतेहनीटेव ॥ जि० तुझ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेढुंढीआनी आचरणाजे बाह्यक्रिया तेसर्व नवीजछे मुखबांधीबाहेरनि कलवुं भांमो राखवोजनही विपाकसूत्रने विरोधी तथा भगवति दशवैकालकि प्रश्न व्याकरणादिकसूत्रयकी विरोधी आचारणा तेहनीकेतिके०केटलीकहीयें एटले घणीछे माटेहेदेव हेआत्मारांम हेपरमानंदविलासी वलीतेने निरंतर सांधतायकात्रुटेछे ए टले लोक वखाणेछे जे नवसांधे ने तेरत्रुटे तेउखाणो एनेघरेंछे वलीपूजामां हिंसाव तावे अने पोतेंमरे तेवारेशुंकरीयें तथा पोतानेवांदवा आवे तथादीक्षामहोत्सवकरे तेंमां हिंसापापके नथाय इत्यादिक बहुअधिकारछे पणकेटलोलखाय एमएकवात सांधवागयो एटले गामगामथी त्रुटीगयुं जेमाटे गुरुविना तेनीखराबटेवपडीगयीछे जोगुरुपरंपरागत होयतो कांइअटकेनही किवारें खलायनही संप्रदायविना गामग मथटकेछे एटले एनावजे नगुरात्रे मायेकोइनिकल्यो तेवारेपणगुरुनहतो ॥ ३ ॥

वृत्तिप्रमुखजोइकरी ॥ भापेआगमआप ॥ जि० ॥ तेहज
मूढाउलवे ॥ जेमकुपुत्रनिजवाप ॥ जि० ॥ तुझ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वृत्तिके० टीका अने प्रमुखशब्दें चूर्णिनिर्युक्ति आदिलेवा तेजोइकरीने आ पके० पोतेआगमने भापे एटले वृत्तिप्रमुखठानीराखी तेना भावजोइ आगमनोअर्थ लोकनेशाडे पछेलोकआगले एकलुं सूत्रवांचे एमतेअज्ञानी टीकाप्रमुखनेउलवे कोइपु

छे तेहीमानिर्युक्तिमानीतो तेवारें कहेछेजेनथी मानता जेम कुत्रुमदीपने पोताना बाप ने तेडवे पहले बापदादाजनां घनेपोतनाभाग, तेम पहेलांछुरुडेजे आतमाग शालगा छे तेवारें आदीकथणीजयादछापे तेसदीकाप्रमुखनो उपकार घनेतेनेज नमाने॥४॥

सूत्रादिकत्रणमानता ॥ सूत्रविराधेछीन ॥जि०॥ सूत्रअरथ तदुभयथकी ॥ प्रत्यनीककह्यातीन ॥ जि० ॥ तुज० ॥५॥

अर्थ ॥ वली सूत्रादिकके० सूत्रनिर्युक्तिभाष्यने अनुसारें प्रकरणचरित्रादिकनेत्रण माननायकत तेहीनके० तावदचाकरवायोग्य सूत्रनेज विराधेते सूत्रनीज आशातनाक रेजे श्रीसमवायांगसूत्रें तथानंदिसूत्रेंकह्युंछे आयरंगपरित्तावायणानंखिज्जाअणुउगा दारानंखिज्जावेढानंखिज्जानिज्जोगा नंखिज्जाउ निजुत्तीउनंखिज्जाउ पडिवत्तिउसंखिज्जा उ संगहणीउ इत्यादिककह्यांछे तेमानेनही तेवारें सूत्रनेविराधेजछे वली१ सूत्रप्रत्यनी क २ अर्थप्रत्यनीक ३ तदुभयप्रत्यनीक एश्रीठाणांगसूत्रेंकह्याछे यतः सुयंपडुच्चतउ पडिणीयापंतसुत्तपडिणीए अत्थपडिणीए तदुभयपडिणीए एत्रीजाठाणाना चोथाउदे शेंकह्युंछे एमज भगवतिसूत्रना आठमाशतकना आठमाउदेशामांकह्युंछे तो अर्थप्र त्यनीकतेनिर्युक्त्यादिकजेनथीमानता तेनेकहीयें तेशिवायअर्थप्रत्यनीक तथातदुभय प्रत्यनीक तेबीजाकोनेकहीयें तेवतावो ॥ ५ ॥

अक्षरअर्थजएकलो ॥ जोआदरतारवेम ॥ जि० ॥ भगव इअंगभाखिउ ॥ त्रिविधअर्थतोकेम ॥ जि० ॥ तुज० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जोकेवल एकलो अक्षरार्थ मानीयें एटले जेटलुं सूत्र तेटलुंज शब्दार्थ आदरीयें मानीयें अनेतेम मानता तमने खेमके० कुशलछे तोभगवतिसूत्रमांत्रिविध के० त्रणप्रकारें व्याख्यान अर्थ कहेवो कह्युंछे तेकेमघटे तथा अनुयोगद्वारें बे प्र कारें अनुगमकह्योछे सूत्ताणुगमेय निजुत्तिअणुगमेय तथानिजुत्तिअणुगमेतविहेप ओतेउवगाय निजुत्ति अणुगमेइत्यादिक तथाउद्देसे निद्देसे निग्गमे खेत्तकालपुरिसेय एगाथाअनुयोगद्वारमांछे तेनाअर्थकेमकरशोइतिभावः ॥ ६ ॥

सूत्रअरथपहेलोदीजो ॥ निर्युक्तिमीसम ॥ जि० ॥ निरवि शेषत्रीजोवली ॥ इमभापेजगदीश ॥ जि० ॥ तुज० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेजत्रणप्रकारनु व्याख्यानदेखाडेछे प्रथम सूत्रनो शब्दार्थ शिष्यनेदेवो जेम नमोके० नमस्कारथाउ अरिहंताणके० अरिहंत रागद्वेषरूपशत्रुहण्या माटे ते

इत्येसिंछन्हजीवनिकायाणं मेवसयंदंडसमारंनेज्जा इत्यादिक छजीवनिकायनाः रक्षक प्रमुखआचारांगादिकसूत्रनेविषे तेउत्सर्गसूत्रजाणवा तथाछेदग्रंथतेप्रायें अपवादसूत्रने अथवा नयालनिज्जानिउणंसहायंगुणाहियं वागुणओसमंवा ॥ इक्कोविपावाइ विवज्जयंते विहरिज्जकम्मेसुसज्जमाणो इत्यादिक अपवादसूत्रजाणवा तथा जेमां उत्सर्ग अने अपवादसायेकहेवाय तेतडुनयसूत्रकहीयें जेम अचड्डाणाजावे समंअहियासियवउवाहि ॥ तप्पावंमिउविहिणा ॥ पडियारपवत्तणंनेयं ॥ १ ॥ इत्यादिकअनेकप्रकारना स्वसमय परसमय निश्चय व्यवहार ज्ञानक्रियादिक नानाप्रकारें नयमतनाप्रकाशक सूत्रनाजेनेद तेअविवादपणेके० जेमांझगडोनकडे एरीते स्वस्थानकें अर्थयीजोडाय ॥ ११ ॥

एहनेदजाण्याविना ॥ कंखामोहलहंत ॥ जि० ॥ नंगंतर
प्रमुखेंकरी ॥ नाप्युंनगवइतंत ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १२ ॥

अर्थ॥तोएपूर्वोक्तनेद जाण्याविना नंगंतरप्रमुखेकरीने कंखामोहके० मिथ्यात्वमोहनीने लहंतके० वेदे एमनगवतिसूत्रमां तंतके० निश्चेंनाप्युंछे एटले एनावजेसूत्रतो विविध आशयनाहोय तेआशयनीजेवारेंमालमपडे तेवारें मनमां शंकाउपजेकेआस्युं के आवरुंकयीशंकाथाय अनेजेशंका तेमिथ्यामोहनीथाय तथाचोक्तंनगवत्यांगे प्रथमशतके तृतीयउद्देशके अत्थिणंनंतेसमणाविनिग्गंथाकंखामोहणिज्जंकम्मंवेदेति हंता अत्थिकहण्णंनंतेसमणाविणिग्गंथा कंखामोहणिज्जंकम्मंवेदेतिगोयमा तेहिंतेहिंनाणंतरेहिंदंसणंतरेहिं चरित्तंतरेहिं लिंगंतरेहिं पवयणंतरेहिं पावयणंतरेहिं कप्पंतरेहिंमग्गंतरेहिं मतंतरेहिं नंगंतरेहिं णयंतरेहिं णियमंतरेहिं पमाहिणंतरेहिं संकिता कंखिता वितिगिछिता नेपसमावन्ना कलुसमावणा एवंखलुसमणा निग्गंथाकंखामोहणिज्जंकम्मंवेदेतिइति एनासमाधान नगवतिनीवृत्तियी जोइलेजो तेमाटेटीकाप्रमुख अर्थ जाण्यावीन सर्वसमाधानथाय आम्नायपामियें पण केवल सूत्रेंज नपामियें इहां नंगंतरप्रमुखेंकरयुं तेनअथमहणेआर्यंतपोमेहणमितिन्यायात् णाणंतरेहिं पदपणलेवा॥ १२

परिवासितवारीकरी ॥ लेपनअशनअशेष ॥ जि० ॥ कारण
थीअतिआदरचा ॥ पंचकल्पउपदेश ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ परिवासितके० रात्रें वासीराखवुं तेवारीकरीके० वारीने एटले मुनीने संनिधिमात्र पणराखवुं ते रात्रें नघटे एहवुं छतेकहेले लेपनके० विलेपन अथवा कु

सुमवासिततेलप्रमुख अने अशनके० आहारतथाअशेपशब्दें प्रमुख लेवा तेवारीने वली कारणथी अतिके० अत्यंतकारणे आदर्याके० तेंमुनीयें अंगीकारकर्या एटले वासीराख वानी मुनीने आज्ञाकरी तेपंचकल्पग्रंथनो उपदेशछे उपलक्षणथी निशीथनेविषे पण कह्युंछे यतः ननुउंचयादिसंनिधिःक्रियतेनवा उच्यते उत्सर्गेणनकल्पते कारणेतुनवत्य पि तथाहिवोछिन्नमंडवनांमयछडुक्कोयणन्यंतरउंगामघोसाइनछितछतुरिएकज्जेनल प्पइअउंतछविन्नमंडवेउंसहगणोपरिवासिज्जइइतिनिशीथे तेमाटे एकारणादिक प्रका रतेटीकाप्रमुखविना जणायनही ॥ १३ ॥

वर्षागमननिवारीउं ॥ कारणेंनाप्युंतेह ॥ जि० ॥ ठाणंगे
श्रमणीतणुं ॥ अवलंबादिकजेह ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वर्षागमनके० चोमासानेकाले विहारकरवानुं निवार्युंछे श्रीठाणांगना बीजाउद्देशामध्ये यतः णोकप्पतिनिग्गंथाणंवानिग्गंथीणंवा पढमपाउसंमिगामाणुगा मंडुत्ति जित्तएइति तथा कारणेनाप्युंतेहके० तेजवर्षाकालमां कारणथी विहारकर वानी आज्ञाकरी तेपणठाणांगसूत्रना पांचमा ठाणाना बीजा उद्देशामांकह्युंछे यतः पंचहिंठाणेहिंकप्पंतितंजयंसिवा डुनिरकंवा जावमहतावाआणारिएहिं इतितथात त्थवासावासंपज्जोसवियाणं नोकप्पति निग्गंथाणवा निग्गंथीणवागामाणुगामेडु इज्जितंएवंपंचहिंठाणेहिं कप्पतितं णाणठयाए दंसणठयाए चरित्तठयाए आयरिय उवज्ञाएवा संविसुंभेज्जाआयरियउवज्ञायाणंवा बहिता वैयावच्चकरणयाएइति व लीएजश्रीठाणांगनेविषे श्रमणीके० साधवीने अवलंबनके० आलंबेतो प्रभुनी आ ज्ञा अतिक्रमेनही यतः पंचहिंठाणेहिंसमणेनिग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा अवलंब माणेवा णातिक्कमतितंनिग्गंथिचणं अन्नयरे पसुजातितेवा परिकजातिएवा उद्दातेज्जा तत्थनिग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णातिक्कमतिनिग्गंथे निग्गंथि डुग्गंसिवा विसमंसिवा परकलमाणिंवा पवडमाणिंवा गेन्हमाणेवा अवलंबमाणे वा णातिक्कमतिनिग्गंथे निग्गंथि सेयंसिवा पंकंसिवा पणगंसिवा उदगंसिवा उक्क माणिवा उवुज्झमाणिवा गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवा णातिक्कमति निग्गंथे नि ग्गंथि णावंआरुहमाणेवा उरुंभमाणेवा जावणातिक्कम निरकलइत्तं जरकतिछंजा वन्नत्तपाणपडियाइरिकतं निग्गंथे निग्गंथि गेन्हमाणेवा अवलंबमाणेवाणातिक्कमति इत्यादि एउपलक्षणथी साधुसाधवी एकस्थानके नेजावसे एवापणआलावा श्रीठाणांगमध्येछे तेकेटलाक लखाय अने वलीनवमेठाणे ब्रह्मचेराकह्या तेमांस्त्री

नाअंगोपांग जोवानही तथा नीतने आंतरे वसवुंनही एमकह्युं तेवातत्तो प्रसिद्ध छे माटे प्रतिपक्षीआलावो उपाध्यायजीयें संजाख्योनही तेथी अमे लख्यो पण नही तो वृत्त्यादिकविना केम बंधबेशेइतिजावः ॥ १४ ॥

आधाकर्मादिकनही ॥ बंधतणोएकंत ॥ जिन० ॥ सुयग
डेतेकेमघटे ॥ विणवृत्त्यादिकतंत ॥ जिन० ॥ तुज० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ आधाकर्मी आहारकरवो ते नहीके० नथीकह्यो बंधतणो एकंतके० कर्मबंधनो एकांतनथी एटले एनावजे आधाकर्मी आहारकरतां कर्मबंधाय पणखरुं अनेवली नबंधाय एम पण कह्युं श्रीसुयगडांगसूत्रमध्ये तेकेमघटे यतः आहागडा इंजुंजंति अणमणेसकम्मुणा उवलित्तेवियाणिज्जा अणुवलित्तेतिवापुणो ॥ १ ॥ एते हिंदोहिंगणेहिं ववहारोणविज्जइ॥ एतेहिंदेहिंगणेहिं आणायारं तुजाणए ॥ २ ॥ एसुयगडांगना २१ मांअध्ययनेछे माटेएवीवातोते टीकाप्रमुखविनाकेम सूत्रस्पष्टथाय

विहरमानगणधरपिता ॥ जिनजनकादिकजेह ॥ जिन० ॥ क्रम
वलीआवश्यकतणो ॥ सूत्रमात्रनहीतेह ॥ जिन० ॥ तुज० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ वली विहरमानके० विचरता वीसतीर्थंकर तथा तेओनागणधर अने तेओना पिता उपलक्षणथी माता लंछन नगरी विजय परिवार केवलीप्रमुख तेसूत्रमां जडेनही अथवा जेम वीस वेहरमानना गणधर तेमज उपलक्षणथी रूपनादिकना गणधरपण सर्वसूत्रमां नयी तथागणधरोना पिताप्रमुख सूत्रमात्रेनयी तथा जिनके० चोवीसतीर्थंकरना मातापिता उपलक्षणथी बीजोपणपरिवार तेसर्व सूत्रमां नयी ते आवश्यकादिक माने तोज जडे वली आवश्यकजे उजयटंक पडिकमणुंकरवुं तेहनोजे क्रमके० अनुक्रम ते जे असुक पछे असुक कहेवुं इत्यादिक सूत्रमात्रनहीके० मात्रएकलासूत्रमां नलाचे एवी घणीवातोछे तेकेटलीलखाय पण प्रकरण निर्युक्त्यादिकमाने तोपारपडे नहीतो गोथांज खाय ॥ १६ ॥

अर्थविनाकेमपामियें ॥ जावसकलअनिबद्ध ॥ जि० ॥ गुरु
मुखवाणीधारतां ॥ होवेसर्वसुबद्ध ॥ जि० ॥ तुज० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वली अर्थके० टीकाप्रमुखविना केमपामियें सकलके० समस्त अनिबद्धके० अणीबद्ध तेरूरथी ते वेडालगें सर्ववात केमजडे सूत्रमांतोलगारेक नाम मात्र

कहे संपूर्णतो टीकाप्रमुखमां लाभे अथवा अनिबद्धके० सूत्रमांनथी बंधाणा एवा भावतो घणा रह्याछे अत्यंत थावरमांथी आवीजेम मरुदेवाजी मोक्षेंगया इत्यादिक वगरबांध्या पांचसो आदेशछे तेसर्व केवल सूत्रेज केवीरीते गम्यमान थाय तेमाटे गुरुआदिकना मुखनी वाणी सांभलीयें जे संप्रदायिक होय तेधारताथकां होवेस र्वेसुबद्धके० सर्वसुबद्धथाय सुयुक्तिवंतथाय ॥ १७ ॥

पुस्तकअर्थपरंपरा॥सघलीजेहनेहाथ ॥ जि०॥ तेसुवि
हितअणमानतां॥ केमरहेसेनिजआथ॥जि०॥तुज०॥१८॥

अर्थ ॥ पुस्तक जेअंगोपांगादिक अक्षरन्यासरूप अर्थटीकाप्रमुख जेगुरुसंप्रदायनी परंपरा.तेसर्वजेने हाथेछे एवाजे सुविहित शुद्धमार्गना परुपनार तेहने अणमानतां एटले अंगीकार कर्याविना केम रहेशे निजआथके० पोतानी समकितरूप जे लक्ष्मी तेशीरीते रहेशे ॥ १८ ॥

सदगुरुपासेशिखतां॥ अर्थमांहेनविरोध॥जि० ॥ हेतुवाद
आगमप्रतें ॥ जाणेजेहसुबोध ॥ जि० ॥ तुज० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे स्वछंदापणुं टालीने सद्गुरुपासे विनयादिकेंकरीने सूत्रना अर्थ जे टीकाप्रमुख तेधारताथकां तेमां कांइविरोधनथी एटले तेमूर्खलोक एमजाणेछेजे सूत्रमां विरोधनथी अने अर्थमां विरोधछे पण गुरुमुखे शीखताथकां कांइ विरोध छेजनही तथा एरीतें गुरुपासें धारतां हेतुवाद कहेतां कारणनिमित्तवाद एहवो आगमजे सिद्धांत तेनेजाणे जेथकीसुबोधके० भलोबोधथाय ॥ १९ ॥

अर्थेमतभेदादिकें॥जेहविरोधगणंत॥जि० ॥ तेसूत्रे
पणदेखशे॥ जोजोशेएकंत ॥ जि०॥ तुज० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वली अर्थेके० टीकाप्रमुखनेविषे मतभेदादिकेंके० कोइमतभेदें कोइ वाचनांतरभेदें भेदपणुं देखीने जे विरोध गणेछे अने कहेछेजे टीकाप्रमुख विरोधीछे मलतानथी तोकेम मानीयें तेहने कहेछेके जेप्राणी टीकाप्रमुखमां विरोधपणुं जोशे तेसूत्रमांपण विरोधपणुं देखशे जोएकांते निश्चेकरी जोशे तो सूत्रमां पणघणो विरोधछे तेकेम नथीजोता इतिभावः ॥ २० ॥

संहरताजाणेनही॥ वीरकहेएमकल्प ॥ जि०॥ संहरतां
पणनाणनो ॥ प्रथमअंगछेजल्प॥जि०॥तुज०॥२१॥

नाअंगोपांग जोवानही तथा नीतने आंतरे वसवुंनही एमकह्युं तेवातता प्रसिद्ध छे माटे प्रतिपदीआलावो उपाध्यायजीयें संजाख्योनही तेथी अमे लख्यो पण नही तो वृत्यादिकविना केम बंधबेशेऽइतिजावः ॥ १४ ॥

आधाकर्मादिकनही ॥ बंधतणोएकंत ॥ जिन० ॥ सुयग
मेतेकेमघटे ॥ विणवृत्यादिकतंत ॥ जिन० ॥ तुझ० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ आधाकर्मी आहारकरवो ते नहीके० नथीकह्यो बंधतणो एकंतके० कर्मबंधनो एकांतनथी एटले एजावजे आधाकर्मी आहारकरतां कर्मबंधाय पणखरुं अनेवली नबंधाय एम पण कह्युं श्रीसुयगडांगसूत्रमध्ये तेकेमघटे यतः आहागडा इंजुंजंति अणमणेसकम्मुणा उवलित्तेवियाणिज्जा अणुवलित्तेतिवापुणो ॥ १ ॥ एते हिंदोहिंगणेहिं ववहारोणविज्जइ॥ एतेहिंदेहिंगणेहिं आणायारं तुजाणए ॥ २ ॥ एसुयगडांगना २१ मांअध्ययनेछे माटेएवीवातोते टीकाप्रमुखविनाकेम सूत्रस्पष्टथाय

विहरमानगणधरपिता ॥ जिनजनकादिकजेह ॥ जिन० ॥ क्रम
वलीआवश्यकतणो ॥ सूत्रमात्रनहीतेह ॥ जिन० ॥ तुझ० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ वली विहरमानके० विचरता वीसतीर्थंकर तथा तेओनागणधर अने तेओना पिता उपलक्षणथी माता लंछन नगरी विजय परिवार केवलीप्रमुख तेसूत्रमां जडेनही अथवा जेम वीस वेहरमानना गणधर तेमज उपलक्षणथी ऋषभादिकना गणधरपण सर्वसूत्रमां नथी तथागणधरोना पिताप्रमुख सूत्रमात्रेनथी तथा जिनके० चोवीसतीर्थंकरना मातापिता उपलक्षणथी बीजोपणपरिवार तेसर्व सूत्रमां नथी ते आवश्यकादिक माने तोज जडे वली आवश्यकजे उजयटंक पडिकमणुंकरवुं तेहनोजे क्रमके० अनुक्रम ते जे अमुक पछे अमुक कहेवुं इत्यादिक सूत्रमात्रनहीके० मात्रएकलासूत्रमां नलाजे एवी घणीवातोछे तेकेटलीलखाय पण प्रकरण निर्युक्त्यादिकमाने तोपारपडे नहीतो गोथांज खाय ॥ १६ ॥

अर्थविनाकेमपामियें ॥ जावसकलअनिबद्ध ॥ जि० ॥ गुरु
मुखवाणीधारतां ॥ होवेसर्वसुबद्ध ॥ जि० ॥ तुझ० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वली अर्थके० टीकाप्रमुखविना केमपामियें सकलके० समस्त अनिबद्धके० अणबद्ध तेदूरथी ते वेंडालगें सर्ववात केमजडे सूत्रमांतोलगारेक नाम मात्र

कहे संपूर्णनो टीकाप्रमुखमां लाले अथवा अनिबद्धके० सूत्रमांनथी बंधाणा एवा भावतो घणा रह्याछे अत्यंत थावरमांथी आवीजेम मरुदेवाजी मोक्षेगया इत्यादिक बगरबांध्या पांचसो आदेशने तेसर्व केवल सूत्रेज केवीरीते गम्यमान थाय तेमाटे गुरुआदिकना मुखनी वाणी सांभलीयें जे संप्रदायिक होय तेधारतायकां होवेस वेसुबद्धके० सर्वसुबद्धथाय सुयुक्तिवंतथाय ॥ १७ ॥

पुस्तकअर्थपरंपरा ॥ सवलीजेहनेहाथ ॥ जि० ॥ तेसुवि
हितअणमानतां ॥ केमरहेसेनिजआथ ॥ जि० ॥ तुज० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ पुस्तक जेअंगोपांगादिक अक्षरन्यासरूप अर्थटीकाप्रमुख जेगुरुसंप्रदायनी परंपरा तेसर्वजेने हाथेछे एवाजे सुविहित शुद्धमार्गना परुपनार तेहने अणमानतां एटले अंगीकार कर्याविना केम रहेशे निजआथके० पोतानी समकितरूप जे लक्ष्मी तेशीरीते रहेशे ॥ १८ ॥

सद्गुरुपासेशिखतां ॥ अर्थमांहेनविरोध ॥ जि० ॥ हेतुवाद
आगमप्रतें ॥ जाणेजेहसुबोध ॥ जि० ॥ तुज० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे स्वछंदापणुं टालीने सद्गुरुपासे विनयादिकेंकरीने सूत्रना अर्थ जे टीकाप्रमुख तेधारतायकां तेमां कांइविरोधनथी एटले तेमूर्खलोक एमजाणेछेजे सूत्रमां विरोधनथी अने अर्थमां विरोधछे पण गुरुमुखे शीखतायकां कांइ विरोध छेजनही तथा एरीते गुरुपासें धारतां हेतुवाद कहेतां कारणनिमित्तवाद एहवो आगमजे सिद्धांत तेनेजाणे जेयकीसुबोधके० भलोबोधथाय ॥ १९ ॥

अर्थमतभेदादिकें ॥ जेहविरोधगणंत ॥ जि० ॥ तेसूत्रे
पणदेखशे ॥ जोजोशेएकंत ॥ जि० ॥ तुज० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ वली अर्थके० टीकाप्रमुखनेविषे मतभेदादिकेंके० कोइमतभेदें कोइ वाचनांतरभेदें भेदपणुं देखीने जे विरोध गणेछे अने कहेछेजे टीकाप्रमुख विरोधीछे मलतानथी तोकेम मानीयें तेहने कहेछेके जेप्राणी टीकाप्रमुखमां विरोधपणुं जोशे तेसूत्रमांपण विरोधपणुं देखशे जोएकांते निश्चेकरी जोशे तो सूत्रमां पणघणो विरोधछे तेकेम नथीजोता इतिभावः ॥ २० ॥

संहरताजाणेनही ॥ वीरकहेएमकल्प ॥ जि० ॥ संहरतां
पणनाणनो ॥ प्रथमअंगछेजल्प ॥ जि० ॥ तुज० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ हवे तेज सूत्रना विरोधिपणाने देखाडेछे जे देवानंदानी कुखथी लेइने त्रिसलादेवीने कुखे संहरताके० संहख्या तेसंहरता वीरस्वामीयें जाण्युंनही एमश्री कल्पसूत्रमां कह्युंछे यथा ॥ साहरिज्जिस्सामित्तिजाणइ ॥ साहरिज्जमाणेनजाणइ साहरीएमतिजाणइ इतिपाठात् तथा वीरस्वामीने हरणगमेषीये संहख्या तेअवसरे प्रथमअंगजे श्रीआचारांगतेमां ज्ञाननो जल्पके० शब्दछे एटले एनावजे संहरताथ का प्रभुयेंजाण्युं एमकह्युंछे तथाचतत्सूत्रंसाहरिज्जिस्सामित्तिजाणइ साहरिमित्तिजाण इ साहरिज्जमाणेविजाणइ सेसमणाउसोइतिपंचदशेनावनाध्ययने इतिविरोधः २१॥

ऋषभकूटअडजोयणो ॥ जंबूपन्नत्तिसार ॥ जि० ॥ बारव
लीपाठांतरें ॥ मूलकहेविस्तार ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ वली ऋषभकूटनुं आठयोजन मूलविस्तारछे एमजंबूद्वीपपन्नत्तिसूत्रमां कह्युंछे यतः एथणंउसभकूडेनामकूडेपन्नत्ते अठ्ठजोयणाइंउद्धं उच्चत्तेणं दोजोयणाइं उव्वेहेणंमूलेअठ्ठजोयणाइंविरकंभेणंमज्झेछजोयणाइंविरकंभेणं उवरिचत्तारिजोयणाइं विरकंभेणंइत्यादिक जंबूद्वीपपन्नत्तिनोपाठछे सारके० प्रधान एहवी जंबूद्वीपपन्नत्तिकहे छे गाथानोअर्थअन्वयकरी करियें एटले एकपाठतो ए कह्यो वली एज जंबूद्वीप पन्नत्तिमां पाठांतरे बीजोपाठछे तेमां बारजोजन मूलेंविस्तार कह्योछे तेकेम मले एकज सूत्रमां बेपाठशा सर्वज्ञना ज्ञानमांफेरनथी तोसंदिग्धवचन केमहोय इति नावः तथाचतत्पाठः मूलेबारजोयणाइंविरकंभेणं मज्झेअठ्ठजोयणाइंविरकंभेणं उप्पिं चत्तारिजोयणाइंविरकंभेणंइत्यादिकपाठजोजो केवलसूत्र मेलवी थापजो ॥ २२ ॥

सत्तावनसयमल्लिनें ॥ मणनाणीसमवाय ॥ जि० ॥आठस
याज्ञाताकहे ॥ एतोअवरउपाय ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ श्रीमल्लिनाथस्वामीनें सत्तावनसो मनपर्यवज्ञानी श्रीसमवायांगसूत्रमध्ये कह्याछे यतः मल्लिस्सणंअरहंतोसत्तावन्नंमणपज्जवन्नाणीसयाहोत्थाइति ॥ तथा श्री ज्ञातासूत्रमध्ये मल्लिनाथस्वामीनेज आठसो मनपर्यवज्ञानी कह्याछे यथा अठ्ठस यामणपज्जवनाणीणं एम श्रीसमवायांगसूत्र तथाज्ञातासूत्र मल्युंनहीएविरोध एतो अवरउपायके० एमेलववानो उपायतो अन्यजछे तेतो गीतार्थज्ञानीजाणे॥ २३ ॥

उत्तराध्ययनेस्थितिकही॥ अंतरमुहूर्त्तजघन्य॥ जि०॥ वेदनी
यनीबारते ॥ पन्नवणामांअन्य ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ तथा श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमध्ये वेदनी कर्मनी स्थिति जघन्य अंतरमुहूर्त्त कहीने यतः उदहिसरिनामाणं तीसइकोडिकोडिउ उक्कोसियाठिइहोइ॥ अंतोमुहुत्तं जहन्निया ॥१॥ आवरणिज्जाणदुण्हंपि॥ पिवेयणिज्जेतहेवय॥अंतराएयकम्मंमिठिइएसा वियाहिया ॥२॥ इत्युत्तराध्ययनअध्ययन ३३ मांमध्ये कह्युंछे वली तेजवेदनी कर्मनीबा रमुहूर्त्तजघन्यस्थिति श्रीपन्नवणासूत्रमध्येकहीने यथा ॥ सायावेयणिज्जस्स ॥ इरिया वहियवंधगंपडुच्च॥जहणंमणुक्कोसेणं॥दोसमयासंपराइय॥वंधगंपडुच्चजहणेणं ॥ वार समुहुत्ताउक्कोसेणं॥पणरससागरो॥वमकोडाकोडिउ॥इत्यादिपन्नवणामध्येकह्युं तोतेउ त्तराध्ययननीसाथेमल्युंनही माटे विरोध तेतोअन्यके० जुदीजवातछे ॥ २४ ॥

अनुजोगधारेकह्या ॥ जघननिखेपाचार ॥ जि० ॥ जीवा
दिकतोनविघटे ॥ द्रव्यभेदआधार ॥ जि० तुज० ॥ ७५ ॥

अर्थ ॥ वली श्रीअनुयोगद्वारसूत्रनेविषे एम कह्युंछे के जेवस्तुना जेटला निखेपा करवाना तारीबुद्धीथाय तेवस्तुना तेटला निखेपातुं तिहांकरजे पण कदाचित घणा निखेपा तुं नजाणे तिहांपण चारनिखेपातो अवश्यकरजे एटले एमआव्युंजे जघन्य थीचारनिखेपातो सर्वत्रकरवा पणचारथीउंणातोहोयजनही १ नाम २ स्थापना ३ द्रव्य ४ भाव एचार अवश्यकरवा यतः जच्छयजंजाणिज्जा निखेवंनिखेवेनिरवसेसं ॥ जछवियनजाणिज्जा ॥ चउक्कयंनिखेवेतछ ॥ १ ॥ इत्यनुयोगद्वारसूत्रे तेवारे जीवादि कशब्दनानिखेपा नविघटेके० घटेनही शामाटे जे द्रव्यनिखेपो भेदआधारके० भिन्न आधारेथाय केमके जेभावनुंकारण तेद्रव्य तेवारे जीवनो द्रव्यनिक्षेपो केमथाय जेभावजीवथावानुं कारणहोय तेद्रव्यजीव कहेवाय तेतोज्ञानादिक गुणेहीणतो जी वहोयनही दव्वंपज्जवविज्जुयं ॥ दव्वविज्जुयायपज्जवानछि॥इतिवचनात् तेमाटे मूरख नी जटाना भारनीपरें समस्तधर्मरहित कोइपदार्थजनथी तोएद्रव्यनिक्षेप जीवादिक मांशून्यछेआदिशब्दथी बीजापणजीवादिकलीजीयें जेमद्रव्यदेवमुनिराजनेकहियेंतेमद्र व्यजीवकोनेकहेशोतेनासमाधानतोपंचांगीप्रमुखथीनीकले अत्रार्थेतत्वार्थवृत्तिजोजो

एमबहुवचननयंतरें ॥ कोइवाचनाभेद ॥ जि० ॥ एमअर्थें
पणजाणीयें ॥ नविधरीयेंमनखेद ॥ जि० ॥ तुज० ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ एरीते बहुके० घणा सङ्कडोगमेवचनविरोधलागे अल्पबुद्धीवालाने ए वापाठ सूत्रमध्येछे तेकोइ स्थानकें नयभेदभेदेंव्याख्याहोय अने कोइस्थानकें वा

चनाचेदके० वल्लनी तथा मथुरी एवे वाचना थइ तेथीजेदंथयो एमउपलक्षणथीमतां तर प्रमुख लिपिदोष पणलइये एवीरीते जेमसूत्रमांजेदछे तेमज अर्थकें० टीकाप्र मुखनेविषेपण नयांतरेकरी वाचनांतरेकरी कोइस्थानके चेदआवे तेमाटे टीकाप्रमु ख देखीने मनमांखेदनधरीयें सूत्रतथाअर्थबराबरछे ॥ २६ ॥

अर्थकारथीआजना ॥ अधिकाशुजमतिकोंण ॥ जि० ॥ तोले
अमियतणेनहि ॥ आवेकहियेंलूण ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ अर्थकारकें० जेनिर्युक्तिकार टीकाकार तेथकी आजनाजेआधुनिकमां अधिकाशुजमतिनाधणी कोणथया एटले एजावजे समुद्रजेवीबुद्धीनाधणी टीकाका रनधारीदपूर्वनाधणीनिर्युक्तिकार तेथी शुजमतिकोणथया एटले शुजमतिनहीज थ याइतिनावः लोकमांलवणोने जेखांडना खानार तेरीतना एशुजमतिजाणवा पण कोइकाले लूणजेनीमक तेअमृतने तोले आवेनही ॥ २७ ॥

राजासरिखुंसूत्रछे ॥ मंत्रीसरिखोअर्थ ॥ जि० ॥ एमांएके
हेलीजे ॥ दियेसंसारअनर्थ ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे राजासरिखुंकें० चक्रवर्ति बराबरसूत्रछे अने मंत्रीसरिखो अर्थछे एटले राजानोआशय मंत्री जाणे तेम सूत्रनोआशय अर्थकारकहे बीजो कोइसूत्र नोआशय जाणेनही एमांकें० एवेहुमांथी एकेहेलीजेकें० एकने निंदतायकां दिये संसारअनर्थकें० संसारनोअनर्थआपे नवपरंपरावधारे ॥ २८ ॥

जेमननोलेंआचरे ॥ सूत्रअर्थसुंप्रीति ॥ जि० ॥ तेतुऊक
रुणापंवरे ॥ सुखजशनिर्मलनीति ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २९ ॥

अर्थ ॥ माटेजे आत्मार्थिप्राणीने सूत्र तथाअर्थ बेहुने समतोलें सरिखीरीतें अंगीकारकरे प्रीतिधरे अथवाआनकरे तन्मयकरीजाणेतेप्राणीहेप्रजुतमारीकरुणाकें० दयाथेंवरेने सुखनेनिरावाधपणुं अनेजशकीर्ति तथानिर्मलजे नीतिकें० न्याय ते वरेकें० पामे ॥ २९ ॥ हवे दशमो ढालकहेछे तेने नवमां ढालसाथेए संबंधछे जेसूत्रतेनां सूत्र तथाअर्थमां एकनी हीलनाकरेतो तेनेसंसार वधेएम कह्युं तेसू त्रतथाअर्थ तो ज्ञानरूपछे माटेएदशमांढालमांज्ञाननुंवरणनकरेछे ॥

ढालदशमोआपठंदेठवीलावजवरेएदेशीने

ज्ञानविनाजेजीवनेरे ॥ क्रियामांठेदोपरे॥ कर्मबंधवेतेह्थी
रे ॥ नहिसमसुखसंतोपरे ॥ १ ॥ प्रभुतुऊवाणीमीठडीरे॥
मुऊमनसेंहेजसुहायरे ॥ अमीयसमीमनधारतारे ॥ पाप
तापसविजायरे॥ प्रभुतुऊवाणीमीठडीरे ॥ २ ॥ एआंकणी

अर्थ ॥ ज्ञानविना जेजीव केवलक्रियारुचिठे तेमां घणादोपनी उत्पत्तिठे तेअ ज्ञानक्रियाथी कर्मबंधजथायठे पणसमसुखसंतोषके० समतानासुख जेमां परनाव नीइहानही एहवो जेसंतोषते अज्ञानी क्रियाकरतोहोय तेहने थातो नथी यतः ना णगुणेहिंविहिणा ॥ किरियासंसारवढणीनणिया धम्मरुइएहवमित्ता नाणसमेयास याहुला॥१॥ एयोगनी वीतीमध्ये कहुंमाटे हेस्वामी तमारीवाणी घणीज मीठीलागेठे मारामनमांसेहेज सोहायठे पणकोइना बलात्कारथीनही तेअमृतसरिखीतमारीवाणी नेमनमांधारताथका पापरूप तापके० बलता तेसर्वमटीजायनेशीतलताथाय ॥२॥

लोकपंतिकिरियाकरेरे ॥ मनमेलेअन्नाणरे॥नवइहानाजो
रथीरे ॥ विणशिवसुखविन्नाणरे ॥ प्रनु० ॥मुऊ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ लोकपंतिके० लोकनी हारमां लोकानुजायी क्रियाकरे मनमेलेके० शुद्ध अध्यवसायविना अन्नाणके० अज्ञानीजीवते नवजे संसार तेनीइहाना जोर थकी एटले बहुलसंसारीजीवठे शिवसुखना विज्ञानविना एटले जेक्रियाकरे तेपण ज्ञानविना जशमानप्रतिष्ठानेअर्थेकरे ॥ ३ ॥

कामकुंनसमधर्मनुंरे ॥ मूलकरीएमतुन्नरे ॥जनरंजनकेवल
लहेरे ॥ नलहेशिवतरुगुनरे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ कामकुंन सरिखो मोक्षसुखनोआपनार एवोजेधर्म तेनुंयशमानादिक तुच्छ मूलकरीने तेप्राणीकेवल जनरंजनके० लोक रीजे एटलुंज फलपामे पणअज्ञानक्रि याथी मोक्षरूपजेवृक्ष तेनो गुछके० गुछो उपलक्षणथी फललीजीयें तेनपामे ॥४॥

करुणानकरेहीननीरे ॥ विणपणिहाणसनेहरे ॥ द्वेपधर
तातेहसुंरे ॥ हेगआवेतेहरे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ ५ ॥

चनानेदके० वह्ननी तथा मथुरी एवे वाचना थइ तेथीजेदथयो एमउपलक्षणथीमतां तर प्रमुख लिपिदोष पणजाइये एवीरीते जेमसूत्रमांनेदछे तेमज अर्थके० टीकाप्र मुखनेविषेपण नयांतरेकरी वाचनांतरेकरी कोइस्थानके नेदआवे तेमाटे टीकाप्रमु ख देखीने मनमांखेदनधरीयें सूत्रतथाअर्थबरावरछे ॥ २६ ॥

अर्थकारथीआजना ॥ अधिकाशुनमतिकोंण ॥ जि० ॥ तोले
अमियतणेनहि ॥ आवेकहियेंलूण ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ अर्थकारके० जेनिर्युक्तिकार टीकाकार तेथकी आजनाजेआधुनिकमां अधिकाशुनमतिनाधणी कोणथया एटले एनावजे समुद्रजेवीबुद्धीनाधणी टीकाका रतथाचौदपूर्वनाधणीनिर्युक्तिकार तेथी शुनमतिकोणथया एटले शुनमतिनहीज थ याइतिनावः लोकमांजखाणोछे जेखांडना खानार तेरीतना एशुनमतिजाणवा पण कोइकाले लूणजेनीमक तेअमृतने तोले आवेनही ॥ २७ ॥

राजासरिखुंसूत्रछे ॥ मंत्रीसरिखोअर्थ ॥ जि० ॥ एमांएके
हेलीजे ॥ दियेसंसारअनर्थ ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे राजासरिखुंके० चक्रवर्ति बरावरसूत्रछे अने मंत्रीसरिखो अर्थछे एटले राजानोआशय मंत्री जाणे तेम सूत्रनोआशय अर्थकारकहे बीजो कोइसूत्र नोआशय जाणेनही एमांके० एवेहुमांथी एकेहेलीजेके० एकने निंदतायकां दिये संसारअनर्थके० संसारनोअनर्थआपे नवपरंपरावधारे ॥ २८ ॥

जेसमतोलेंआचरे ॥ सूत्रअर्थसंप्रीति ॥ जि० ॥ तेतुऊक
रुणायेंवरे ॥ सुखजशनिर्मलनीति ॥ जि० ॥ तुऊ० ॥ २९ ॥

अर्थ ॥ माटेजे आत्मार्थिप्राणीते सूत्र तथाअर्थ वेहुने समतोलें सरिखीरीतें अंगीकारकरे प्रीतिराखे श्रवज्ञानकरे तन्मयकरीजाणेतेप्राणीहेप्रजुतमारीकरुणाके० दयायेंकरीने सुखतेनिराबाधपणुं अनेजशकीर्ति तथानिर्मलजे नीतिके० न्याय ते वरेके० पामे ॥ २९ ॥ हवे दशमो ढालकहेछे तेने नवमां ढालसाथेए संबंधछे जेपूर्वढालमां सूत्र तथाअर्थमां एकनी हीलनाकरेतो तेनेसंसार वधेएम कह्युं तेसू त्रतथाअर्थ तो ज्ञानस्वरूपछे वास्तेएदशमांढालमांज्ञाननुंवरणनकरेछे ॥

ढालदशमोआपढंदेठवीआठजवरेएदेशीठे

ज्ञानविनाजेजीवनेरे ॥ क्रियामांठेदोपरे॥ कर्मबंधठेतेहथी रे ॥ नहिसमसुखसंतोपरे ॥ १ ॥ प्रभुतुझवाणीमीठडीरे॥ मुझमनसेंहेजसुहायरे ॥ अमीयसमीमनधारतारे ॥ पाप तापसविजायरे॥ प्रभुतुझवाणीमीठडीरे ॥ २ ॥ एआकणी

अर्थ ॥ ज्ञानविना जेजीव केवलक्रियारुचिठे तेमां घणादोपनी उत्पत्तिठे तेअ ज्ञानक्रियाथी कर्मबंधजथायठे पणसमसुखसंतोपके० समतानासुख जेमां परभाव नीईहानही एहवो जेसंतोपतते अज्ञानी क्रियाकरतोहोय तेहने थातो नथी यतः ना णगुणेहिंविहिणा ॥ किरियासंसारवद्धणीभणिया धम्मरुइएहवमित्ता नाणसमेयास याहुज्जा॥१॥ एयोगनी वीसीमध्ये कह्युंमाटे हेस्वामी तमारीवाणी घणीज मीठीलागेठे मारामनमांसेहेज सोहायठे पणकोइना बलात्कारथीनही तेअमृतसरिखीतमारीवाणी नेमनमांधारतायका पापरूप तापके० बलता तेसर्वमटीजायनेशीतलताथाय ॥२॥

लोकपंतिकिरियाकरेरे ॥ मनमेलेअन्नाणरे॥भवइहानाजो रथीरे ॥ विणशिवसुखविन्नाणरे ॥ प्रभु० ॥मुझ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ लोकपंतिके० लोकनी हारमां लोकानुजायी क्रियाकरे मनमेलेके० शुद्ध अध्यवसायविना अन्नाणके० अज्ञानीजीवते भवजे संसार तेनीइहाना जोर थकी एटले वहुलसंसारीजीवठे शिवसुखना विज्ञानविना एटले जेक्रियाकरे तेपण ज्ञानविना जशमानप्रतिष्ठानेअर्थेकरे ॥ ३ ॥

कामकुंभसमधर्मनुंरे ॥ मूलकरीएमतुच्छरे ॥ जनरंजनकेवल लहेरे ॥ नलहेशिवतरुगुच्छरे ॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ कामकुंभ सरिखो मोक्षसुखनोआपनार एवोजेधर्म तेनुंयशमानादिक तुच्छ मूलकरीने तेप्राणीकेवल जनरंजनके० लोक रीजे एटलुंज फलपामे पणअज्ञानक्रि याथी मोक्षरूपजेवृक्ष तेनो गुच्छके० गुच्छो उपलक्षणथी फलजीजीयें तेनपामे ॥४॥

करुणानकरेहीननीरे ॥ विणपणिहाणसनेहरे ॥ वेपधर तातिहसुंरे ॥ हठाआवेतेहरे ॥ प्रभु० ॥ मुझ० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवे षोडशकमां पांचगुण आशयविशेष देखाडचाछे यथातृतीयषोमश के १ प्रणिधि २ प्रवृत्ति ३ विघ्नजय ४ सिद्धि ५ विनियोग भेदतःप्रायधर्मज्ञैरा ख्यातःशुभाशयःपंचधा त्रिविधा एपांचभेद अन्वयरीतें श्रीहरिभद्रसूरियें देखाडयाछे ते श्रीजशोविजयउपाध्यायजी व्यतिरेकें देखाडेछे तेमां प्रथमप्रणिधाननामाआ शयकहेछे जेहीनके० पोताथकी हीणगुणीछे एटले हीणगुणगणेवर्त्ते तेहनी करु णानकरे विणपणिहाणसनेहके० प्रणिधाननामाआशयविशेषना सनेहविना हीन नीकरुणानकरे वलीहीनगुणी ऊपरद्वेषकरतायकां जेएमांशागुणछे इत्यादिक द्वेषध रतां तेपोतेंज हेगआवे ॥ ५ ॥

एककाजमांनविधरेरे ॥ विणप्रवृत्तिथिरभावरे ॥ जिहांतिहांमो होडुंघालतांरे ॥ धारेढोरस्वभावरे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रवृत्तिनामाआशय वखाणेछे विणप्रवृत्तिके० प्रवृत्तिनामागुणवि ना एककाजमांके० एकजेधर्मकार्यमांमंड्युं तेमां नविधरेके० नराखे थिरभावके० थि रताभाव एटलेएककाजमां थिरनही अने प्रारंभितकार्यमां तेवोप्रयत्ननही एमपण समजवुं जिहांतिहां मुखघालतो एटले जेधर्मस्थानक मांड्युंछे तेमूकीने अकालें फलवांछे अनेअकालेंफल वांछवुंते तलथीआर्त्तध्यानछे तेवारे जिहांतिहां मोहोडुं घालतां ढोरनोस्वभावधरेछे जे खावा मूक्युंहोय तेमूकीने बीजामां मुखघाले ॥ ६ ॥

विनाविघनजयसाधुनेरे ॥ नविअविछिन्नप्रयाणरे ॥ किरियाथी शिवपुरीहोयरे ॥ केमजाणेअन्नाणरे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेत्रीजो विघ्नजय बतावेछे विघनके० अंतराय तेनो जयके० जीतवुं तेविघ्नजयनामागुणविना साधुने मात्रक्रियायेंकरी अविछिन्नप्रयाणकेमथाय एटले मोक्षमार्गे अविछिनपणे केमसधाये माटेविघ्नजयविना साधुनेक्रियाथी अविछिनप्रया णे शीवपुरनहोय एवातो अज्ञानी केमजाणे हवेविघ्न तथाविघ्ननोजयदेखाडेछे ॥७॥

शीततापमुखविघनछेरे ॥ बाहेरअंतरव्याधिरे ॥ मिथ्यादर्श नएहनीरे ॥ मात्रामृदुमध्याधिरे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेविघ्नना भेदत्रणछे १ हीनविघ्न २ मध्यमविघ्न ३ उत्कृष्टविघ्न एमां ही नविघ्नते जेधर्मकरतां शीतके० टाढवाए तथातापके० तडकोलागे तेधर्ममां विघ्नछे

तथा बाह्यव्याधिके० रोगज्वरकासश्वासप्रमुख जे शरीरना रोगते मध्यमविघ्नक ह्यिं जेमाटे टाहाढ तथातढका करतां शरीरना रोगतेविशेषविघ्नकरे तथात्रीजोउ त्कृष्टोविघ्नतेअंतरव्याधि मिथ्यादर्शनके० मिथ्यात्वमोहनीय ए उत्कृष्टो धर्ममां विघ्नछे जेमाटे धर्मकरतां जो मिथ्यादर्शननो उदयथयोजायतो धर्ममां महोटुंविघ्नथाय ए विघ्नपूर्वे जेनेविघ्नकह्यां तेकरतांएआकरुं विघ्नछे माटे उत्कृष्टोविघ्नकह्यो जेममार्गमां चालतां जघन्यमध्यम अनेउत्कृष्टो एत्रणविघ्नछे मार्गमांकांटालागेते जघन्यविघ्न मार्ग मां ज्वरप्रमुखतेमध्यमविघ्न मार्गमां दिगमूढथायतेउत्कृष्टोविघ्न तेमधर्ममांपण पूर्वो क्तत्रणविघ्नजाणवा तेनोमात्राके०प्रमाणकहेछे मृडुके०हीन मध्यके०मध्यम अनेअ धिके०उत्कृष्टोएमअनुक्रमे जोडवा॥एतोविघ्नदेखाड्यो हवेविघ्नजय अनुक्रमेदेखाडेछे

आसनअशनजयादिकेरे ॥ गुरुयोगेंजयतासरे ॥ विघनजो
रएनविटलेरे ॥ वगरज्ञानअभ्यासरे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ आसनके० वीरासनादिकेकरी पूर्वोक्त शीततापादिक विघ्ननो जयकरे त थाअशनएटले आहारेंकरी पूर्वोक्त ज्वरप्रमुखविघ्ननोजयकरे तथा गुरुयोगेंकरी पू र्वोक्त मिथ्यादर्शनरूपविघ्ननो जयकरे केमके गुरुयोगें समकितपामेज एविघ्ननुंजोर तेज्ञानाभ्यासविना टलेनही माटेज्ञानाभ्यासें परिणाम दृढराखे शीततापप्रमुखमां चलेनही अनेज्वरप्रमुखमां कृतकर्मअहियासे एटले एमजाणे जेमाराउदयआव्या कर्मनोगववुंं तथा मिथ्यात्वनेजोरे ज्ञानेसम्यक्जिनवचनभावे ॥ ए ॥

विनयअधिकगुणसाधुनोरे ॥ मध्यमनोउपगाररे ॥ सिद्धिवि
नाहोवेनहीरे ॥ कृपाहीननीसाररे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवे सिद्धिनामाआशय वखाणेछे जेपोताथकी अधिकगुणवंतासाधुनो विनय तेसिद्धिनामाआशयविशेष आव्याविना होयनही तथा मध्यमके० मध्यमगु णवंताहोय तेन उपगारकरे तेपण सिद्धियोगविना होयनही अने हीननीके० पोता थी हीनगुणी तेनी सारके० प्रधान कृपाके० दयातेपण सिद्धियोगविनानहोय॥१०॥

विणविनियोगनसंभवेरे ॥ परनेधर्मेयोगरे ॥ तेहविनाज
नमांतरेरे ॥ नहिसंततिसंयोगरे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥११॥

अर्थ ॥ हवे विनियोगनामापांचमोआशयवखाणेछे विनियोगनामागुणविना पर जीवने जेधर्मेजोडवुं तेयोग नसंभवेके०नहोय तेविनाके०तेहविनियोगविना जनमां

तरेंके० परजवनेविषे संततिके० परंपरानो संयोगते नहीके० नहोय एटले सिद्धनुं कार्यतेविनियोगछे तेयावत् सर्वसंवरथाय तिहांलगे धर्मपरंपराचूटेनही अनेजोविनि योगनामागुण नथयोहोय तोत्रूटीजाय एसर्वगुणतेज्ञानविनानहोय ॥ ११ ॥

किरयामांखेदेकरीरे ॥ दृढतामननीनाहिरे ॥ मुख्यहेतुतेधर्म नोरे ॥ जेमपाणीकृपिमांहिरे ॥ प्रजु० ॥ मुज० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे परमेश्वरनी वाणीमीठीछे तेवाणी स्तवनाद्वारें प्रजुनी स्तवनाकरे तेप्रजुनी स्तवनातो प्रजुजीनुं ध्यानकरियें एटलेते वीतरागनी स्तवनाजयथी तेप्र जुनुंध्यान बेनेदेछे एकसालंबन बीजुनिरालंबन तेमां सालंबनते चक्षुप्रमुखेंकरी जिनप्रतिमादिकनुंआलंबकरीने समवसरणस्थजिनस्वरूपनुं ध्यानकरवुं ते तथा वीतरागना शुद्धनिरावर्ण आत्मप्रदेश समुदायने केवलज्ञानादिकस्वनावनुं ध्यान करवुं तेनिरालंबनध्यानकहियें शुद्धपरमात्मगुणध्याननिरालंबन इतिवचनात् हवे इहांतो सालंबनध्याननी वातछे सालंबन केम थायतेकहेछे जेजूदाजूदा जीवनी अपेक्षायें आठचित्तनो त्यागकरेयके ध्यानथाय तेआठचित्तनानामकहेछे यडुक्तं चतुर्दशेषोडशके १ खेदो २ ढेग ३ क्षेपा ४ उान ५ च्रांत्य ६ न्यमु ७ रुगा ८ संगेः॥युक्तानिहिचित्तानिप्रबंधतोवर्जयेन्मतिमान् ॥ १ ॥ ए आठचित्तने दोषेकरीने ध्यानकरीशकेनही तेमां प्रथम खेदनामा दोषकहेछे खेदके० थाक जेम पंथेहिंम तांथाके तेनीपेरे खेददोषेकरी क्रियामां मननी दृढताके० एकाग्रपणुं तेनहोय एटलेक्रियामां प्रणिधाननरहे अनेजे प्रणिधान ते धर्मनोमुख्यहेतुछे जेम करशणमां पाणीते मुख्यहेतुछे तेमक्रियामां प्रणिधानते मुख्यहेतुछे ॥ १२ ॥

वेठापणजेऊपजेरे ॥ किरियामांउद्वेगरे ॥ योगद्वेषथीते क्रियारे ॥ राजवेठसमवेगरे ॥ प्रजु० ॥ मुज० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे उद्वेगनामा बीजो दोषवखाणेछे खेदविनापण वेठायकां उद्वेगथा य तेनीपेरे उद्वेगदोषमां पणजाणवुं वेठायका पणजेक्रिया करे तेमां उद्वेगऊपजे तोतेक्रियाकरतां तेप्राणीने सुखजेचित्तनीप्रसन्नता तेकेमउपजे जेवारे क्रियामां उ द्वेगथयो तेवारे द्वेषउपनो तेद्वेषथी राजानी वेठनीपेरें कथंचित्क्रियाकरे वेगके० उतावलोकरे एवीरीतें राजवेठनी पेरेंकरे तेने जन्मांतरे योगीनाकुलने विषेजन्मपण नहोय एअर्थषोडशकमांजोइलेजो ॥ १३ ॥

भ्रमथीजेहनसांभरेरे ॥ कांइअकृतंकृतकाजरे ॥ तेहथीशुभ किरियायकीरे॥ अर्थविरोधिअकाजरे॥प्रभु०॥मुक्त०॥१४॥

अर्थ ॥ हवे यद्यपि षोडशकमां भ्रांतिनामा पांचमो दोषकह्योछे तथापि उपाध्यायजीयेंइहांत्रीजोभ्रांतिनामा दोषवरणव्योछे एमअनानुपूर्वीपण व्याख्यानुंअंगछे हवें भ्रांतीनो अर्थकहेछे भ्रांतिके० वस्तु अन्यहोय तिहांअन्यजाणे जेम शुक्तिकानेविषे रजतनी भ्रांतिथाय तद्वत् भ्रमेकरी जेवस्तु सांभरेनही जेमेंकयुं अथवाथमेंकृत नथीकयुं उपलक्षणथी मेंउच्चर्यो के पाठनथीउच्चर्यो इत्यादि तेशुभक्रियायकी पण अर्थेविरोधि एवुंजे अकाजके० इष्टफलरूपजेकार्य ते नथाय तेनेअकाजकहियें॥१४॥

शांतवाहिताविणहोवेरे ॥ जेयोगेउत्थानरे ॥ त्यागयोगछे तेहथीरे ॥ अणछंभातुंध्यानरे ॥ प्रभु० ॥मुक्त० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे उत्थाननामाचोथो दोषवरणवेछे उत्थानके० चित्तनी अप्रशांतता तथा मनप्रमुखनी उद्धुकतायकी जेम कोइक पुरुष मदिराप्रमुखेंकरी मदावष्टब्धथयो होय तेनीपेरें जेयोगने उत्थानदोषेकरीने शांतवाहिताविणहोयके० शांतवाहिता न होय एटले जेक्रियाकरे तेमांउद्वेगरहे पण ठरणनहोय तेक्रियाकेवीछे के त्यागयोग के० त्यागवायोग्यछे पणतेहथीके० तेत्यागयोगक्रियाथी अणछंभातुं ध्यानके० छंभातुं तजातुंनथी एवुंध्यानछे जेम कोइक प्राणीयें दीक्षालीधीहोय अने सर्वथामूलोत्तर गुण निर्वाहकरवा असमर्थछे तेप्राणीनेविधिपूर्वक जेमश्रावकाचार ग्रहवानोउपदेशआपीयें ते लिंग त्यजवायोग्यछे पणलोकनी निंदाप्रमुखेंअणछंभातुंछे उक्तंचउपदेशमालायां ॥ जइनतरसिधारेउं ॥ मूलगुणभरंसउत्तरगुणंच ॥ मोत्तूणंतोतिभूमिं ॥ सुसावगत्तंवरतरागं ॥ १ ॥ १५ ॥

विचेविचेवीजाकाजमांरे ॥ जाएमनतेखेपरे ॥ ऊखणताजि मशालिनुंरे फलनहीतिहांनिर्लेपरे॥ प्रभु० ॥ मुक्त० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे पांचमो क्षेपनामादोषकहेछे जेक्रियामांमांडीहोय तेक्रियामां विचेंविचें वीजाकार्यमां मनजाय तेखेपकहियें ऊपणताके० उपाडीउपाडीने वारंवार एवीजेशालितेनुं निर्लेपके० चोखुंफल नहीके० नथाय एटले एनावजे एकवार शालि उगडीने वावेतो फलथाय पणवारंवारउखेडीने वावेतो फलनथाय तेमइहांवारंवार प्रारंभित क्रियामूकीने अन्यक्रियामांमनजाय तेफलनपामे ॥ १६ ॥

एकजगमेंरंगथीरे ॥ किरियामांआसंगरे ॥ तेहजगुणठा
णेथितिरे ॥ तेहथीफलनहीचंगरे ॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥१७॥

अर्थ ॥ हवे आसंगनामाछगे दोपकहेछे आसंगके० जेक्रियाकरतोहोय तेमां इदमेवसुंदरं एहवो जेरंग तेआसंगनामादोपकहीयें जोपणतेअनुष्ठानशास्त्रोक्तछे तो पण तेमां रंगनुंजे घरछे तेदोपरूपछे तेहजगुणठाणेथितिके० तेवेनेतेवेजगुणठाणेरहे पण आगल गुणठाणो चधेनही जेमश्रीमहावीरऊपरें गौतमस्वामीने नक्तिरागहतो तेथीतेजगुणठाणे स्थितिरही पणमोहनी कर्मनुंउन्मूलकरीने केवल ज्ञानरूपजेफलते चंगके०मनोहर नथयुं माटे आसंगते दोपता जाणवी एअर्थपोडशकवृत्तिमांजोजो१७

मांमीकिरियाअवगणीरे॥बीजेठामेहर्परे॥ इष्टअर्थमां
जाणीयेंरे ॥ अंगारानोवर्परे॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे अन्यमुद्नामा सातमो दोपकहेछे जेप्रारंनितकार्यथकी अन्यस्थानकें हर्प तेअन्यमुद्दोप जेमांमीकिरियाके० जेक्रियाकरेछे ते अवगणीके० तेनो आदरमू कीने बीजेगमेंहर्पके० बीजीक्रियामां हर्पराखे एटले चैत्यवंदनकरतोहोयने सामाय कमां हर्पकरे तेप्राणीने इष्टअर्थके० वांछितअर्थमां अंगारानोवर्पके० अंगारानो वर शादवरसेछे एटलेमांमेलीक्रियामांजे अनादरछे तेसर्वदोपनुंमूलछे ॥ १७ ॥

रोगहोएसमजणविनारे ॥ पीडानंगसुरूपरे॥ शुद्धक्रिया
उछेदथीरे॥ तेहवंध्यफलरूपरे॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ १ए॥

अर्थ ॥ हवे आठमो रोगनामादोप कहेछे तेपीडानंगसुरूपके० पीडासुरूप अथ वा नंगसुरूप एसमजणविनाजेपदछे तेशुद्धक्रियाने जोडीयें तेवारेएवो अर्थथायजे समजणविनाशुद्धक्रियानो उछेदकरे पण अशुद्धक्रियाकरेखरो तेवारे शुद्धक्रियाने पीडाथयी अथवा शुद्धक्रियानोनंगथयो एवे अर्थरोगनाथया एटले रोग दोपथके शुद्धक्रियानो उछेदते विनाशकरे तेवंध्यफलके० तेअशुद्धक्रिया वांछियाफलरूपथाय॥

मानहानीथीदुःखदिएरे ॥ अंगविनाजेमनोगरे॥ शांतोदात्त
पणाविनारे॥ तेमकिरियानोयोगरे॥ प्रनु० ॥ मुऊ० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ एकपर कह्याआठेदोप रहित जेहोय तेने शांतादिकगुणआवे माटे एक शांतबीजोउदात्त एवेगुणवखाणेछे तेमानीपुरुपने जेममाननी हाणीथाय एटले दुःख

उपजे तथाअंगविनाके० अंगोपांगेहीन होय अनेभोगनी सामग्रीस्त्रीप्रमुख मली होय तेजेम चित्तने दुःखआपे अथवाजेम भोगनी सामग्री मलीहोय तोपण मान हानीथीके० प्रमाणहीन अधिका उंगा भोगवे तो दुःखआपे तथाअंगविना पणदुःख थाय तेम शांतअनेउदात्त एवेगुण आव्याविना क्रियानो योगपणएवो जाणवो॥२०॥

शांततेकषायअभावथीरे॥ जेउदात्ततेगंभीररे॥ किरियादोष
त्यजीलहेरे ॥ तेसुखजशभरधीररे ॥ प्रभु० ॥ मुज० ॥२१॥

अर्थ ॥ शांततेकहियेंजे कषायनोअभाव अनेउदात्ततेगंभीरहोय एवाप्राणी जेहो यते क्रियामां लागता दोषत्यजीने लहेके० पामे ते धीरके० धीरपुरुष सुखनोअने यशनो भरके० समूहपामे ॥२१॥ हवेएढालमांशांत तथा उदात्तगुणवखाण्या तेशांत उदात्तगुणतो धर्मरूपछे तेधर्मरूपरत्ननी योग्यताकोनेहोय तेकहामांकहेछे ॥

दोहा ॥ एकवीसगुणपरिणमे ॥ जासचित्तनितमेव ॥
धरमरतननीयोग्यता ॥ तासकहेतूंदेव ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जेनाचित्तमां नितमेवके० निरंतर एकवीसगुणपरिणम्याहोय तेजीवने धर्मजे देशविरति सर्वविरतिरूपरत्न तेनी योग्यताहोय एम हेदेव तमेकहोछो ए एक वीसगुण द्रव्यश्रावकनाछे तेसंक्षेपेकहेछे ॥ विस्तारेंआगलकेशे

१ खुद्दनही २ वलीरूपनिधि ॥ ३ सोम्म ४ जनप्रियधन्य॥
५ क्रूरनही ६ भीरुवली ॥ ७ असठ ८ सारदखिन्न ॥ २ ॥

अर्थ ॥ १ क्षुद्रमतिनहोय एटले गंभीरहोय २ रूपनोनिधानहोय एटले पंचें द्रिय स्पष्टहोय ३ सोम्य होय तेस्वभावेंअपापकर्मिहोय ४ जनप्रियके० लोकने वल्लभहोय तेसदासर्वदासदाचारीहोय धन्यके० एप्रशंसाकरवायोग्यछे ५ क्रूरनही के० अक्लिष्टचित्तहोय एटलेसंक्लेशपरिणामीनहोय ६ आलोकपरलोकनाअपायथी भीरुके० बीहीतोरहे.७ असठ एटलेपरनेठगेनही ८ सारके० प्रधान दखिन्नके० दाक्षिण्यगुणवंतहोय एटले परनीप्रार्थनानोभंगनकरे ॥ २ ॥

९ लज्जालुअ १० दयालुअ॥ ११सोमदिठिमझथ्थ ॥१२ गुण
रागी.१३ सतकथ १४ सुपरक्ख १५ दीरघदरशिअथ्थ॥३॥

अर्थ ॥ ९ लज्जालुउके० स्वकुलादिकनी लज्जावंत एटलेअकार्यवर्जक १० दया लुउके० प्राणीमात्रनी अनुकंपावंत ११ सोम्यदृष्टीते यथावस्थितविचार [illegible]

दूरदोषत्यागीते सौम्यदृष्टिकहियेंतेज मज्ञछके० मध्यस्थ राग द्वेष रहित एटले सो
म्यदृष्टि अने मध्यस्थ एपदे एकज गुण कहियें १२ गुणरागी तेगुणीजीवनो पक्ष
पाती होय १३ सतकथ ते नली कथानो कहेनार एटले धर्मकथावाहालीजे जेने
१४ सुपरकके० सुशील अनुकूल परिवारयुक्त होय १५ दीरघदरसीके० अनागतका
ल विचारीने परिणाम सुंदरकार्यकारी होय अछके०ए अर्थछे ॥ ३ ॥

१६ विशेषज्ञ १७ वृद्धानुगत ॥ १८ विनयवंत १९ कृतजाण ॥
२० परहितकारी २१ लब्धलख्खा॥गुणएकवीसप्रमाण ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ १६ विशेषज्ञके० पक्षपातरहितपणे गुणदोष विशेषनो जाण १७वृद्धा
नुगतके० परिणतमतिपुरुषने सेवनारोहोय १८ विनयवंतके० गुणाधिक पुरुषनेवि
षे गौरवकर्त्ता १९ कृतजाणके० करयागुणनोजाण २० परहितकारीके० निर्लोनी
थको परोपकारकरे एटले जेदाक्षिणगुण तेपरनो प्रार्थ्यो उपकारकरे अने परहित
कारी तेपोताथी उपकारकरे एटलो आठमां गुणथी वीसमां गुणमां विशेषजा
णवो २१ लब्धलक्षगुणते धर्माधिकारी तेहनोजावार्थ लब्धश्चप्राप्तश्चलक्ष्योल
क्षणीयोधर्मानुष्ठानव्यवहारोयेनसलब्धलक्ष्यःसुशिक्षणीयइति एएकवीसगुणसंपन्न
जेजीव तेधर्मरत्नने योग्यहोय ॥ ४ ॥

खुद्दनहीतेजेह्मने ॥ अतिगंनीरउदार ॥ न
करेजनउतावलो ॥ निजपरनोउपगार ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेए एकवीसगुण अर्थ विस्तारें कहेछे खुद्दनहीतेके० अक्षुद्रतेनेकहियें
जेनुं मन अतिगंनीरहोय उदारहोय तुछन होय केमकेजे उतावलो मनुष्यहोय
ते पोताने तथा परने उपकार करीशकेनही एटले गंनीर होयते पोताने तथा
परने उपकार करे पण उतावलो होयते नकरीशके एप्रथमअक्षुद्रगुण ॥५॥

शुनसंघयणीरूपनिधि ॥ पुरणअंगउपंग ॥
तेसमरथसेजेंधरे ॥ धर्मप्रनावनचंग ॥ ६ ॥

अर्थ॥शुनके०उत्तम संघयणवंतहोय रूपनुं निधानहोय संपूर्ण अंगोपांगहोय पं
चेंद्रिय परवडाहोय ते धर्मकरणी करवाने सेहेजे समर्थहोय ते धर्मनी प्रनावनाकरे
इहां नंदिखेण तथा हरीकेशीप्रमुख साथेविरोध न गणवो केमकेतेपणासंपूर्ण अवय
ववंतहता तथा आवचनते प्रायिकछे जोशेषबीजागुणयुक्तहोयतोरूपनुंप्रयोजन नथी

पापकर्मवरतेनही॥ प्रकृतिसोम्यजगमित्त॥
सेवनीकहोवेसुखे॥ परनेप्रसमनिमित्त॥७॥

अर्थ॥पापकर्म तेआक्रोश वध हिंसा चोरीप्रमुखनेविषेनप्रवर्ते आजीविका प्रमुख कारण टालीने सेहेजे सोम्यस्वभाव अवीहामणो सर्वजगतनेविषे मित्रताहोयएवापुरुषने सुखेलोक सेवीशके परने प्रसमके० समतानुं कारणहोय एत्रीजो गुणथयो॥७॥

जनविरुद्धसेवेनही॥ जनप्रियधर्मेंसूर॥ मलि
नभावमनथीतजी॥ करीशकेअक्रूर॥ ८॥

अर्थ जनशब्देंलोककहियें तेलोकमांइहलोक तथा परलोक अने उभयलोक पण आवे एटले एभावजे इहलोक विरुद्ध नसेवे यडुक्तं सव्वस्सचेवनिंदा॥ विसेसउतहय गुणसमिद्धाणं॥ उजुधम्मकरणहसणं॥ रीढाजणपूयणिज्जाणं॥ १॥ बहुजणविरुद्धसंगो॥ देसाचारलंघणंतहय॥ उव्वणभोगोयतहा॥ दाणाइविपयडमनेउ॥ २॥ साहुवसणंमित्तो॥ सोसइसामहंमिअपडिआरोअ॥ एमाइयाइइहं॥ लोगविरुद्धाइंनियाणंति॥३॥तथा परलोकविरुद्धजेखरकर्मादि तेपन्नरकर्मादिकतथा उभयलोकविरुद्ध प्रते द्यूतादिक सात व्यसन नसेवे तोज जनप्रियके० लोकने प्रिय तथा धर्मे सूरके० धर्मनोअधिकारीहोय ए चोथो गुणकह्यो मलिनभाव मनथी तजीने धर्मकरीशके एटलुं धर्मपद वाहारथी लेवुं तेअक्रूर कहियें केमके लोकप्रिय तथा अक्रूरगुणनुं लक्षण धर्मरत्नप्रकरणमध्ये एमज वखाण्युंछे यथा॥ इहपरलोयविरुद्धं॥ नसेवए दाणविणयशीलड्ढो॥ लोयप्पिउजणाणं॥ जणेइधम्मंमिबहुमाणं॥ १॥ कूरोकिलिठ्ठभावो॥ सम्मंधम्मंनसाहिउंतरइ॥ इयसोनइत्थजोगो॥ जोगोपुणहोइअक्रूरो॥२॥ एगाथानेअनुसारें अर्थकर्योछे वली बुद्धिअविरुद्धपणे सुजेतोविशेषकरजोएपांचमोगुण

इहपरलोकअपायथी॥ वीहेभीरुकजेह॥ अप
यशथीवलीधर्मनो॥ अधिकारीछेतेह॥ ९॥

अर्थ॥ इहलोक तथा परलोकना अपायथीके० कष्टथी बीहे तथा अपयशथी बीहे तेभीरुकहियें तेपुरुष धर्मनो अधिकारीजाणवो एछठ्ठो गुणकह्यो॥९॥

असठनवंचेपरप्रतें॥ लहेकीर्त्तिविश्वास॥ भा
वसारउद्यमकरे॥ धर्मगमतेखास॥ १०॥

अर्थ ॥ असठके० मायावी नही एवो गुणवंत तेपरने वंचेके० ठगेनही तिवारे लोकमां कीर्त्तिपामे प्रशंसवायोग्यहोय अने लोकपण तेनो विश्वासकरे वली नाव सारके० पोतानुचित्त रीजवे पण परनुं चित्तरिजववामाटे नकरे तथाचोक्तं नूयांसो नूरिलोकःस्यात् चमत्कारकरानराः ॥ रंजयंतिस्वचित्तंये नूतलेतेतुपंचपाः ॥ १ ॥ इत्यादिक तथा धर्मठामनेविषे खासके० रुडो उद्यमकरे ॥ एसातमोगुण ॥ १० ॥

निजकारयठंमीकरी ॥ करेअन्यउपकार ॥ सुद
खिन्नजनसर्वने ॥ उपादेयव्यवहार ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ वली जेपोतानुं कार्य ठंमी एटले पडतुंमूकीने पण परउपकारकरे जेजे इहलोक परलोकनेविषे हितकारीने तेवाउपकारकरे पण पापहेतुयें नप्रवर्त्ते ते सुदाक्षिणनामाआठमोगुण कहियें तेजन सर्वलोकने उपादेयव्यवहारके० आदेयवाक्यव्यवहारहोय व्यवहारते वाक्यव्यवहार ॥ ११ ॥

अंगीकृतनत्यजेत्यजे ॥ लज्जालुतेअकाज ॥
धरेदयालुधर्मनी ॥ दयामूलनीलाज ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ धर्मकार्य जेअंगीकारकर्युं होय तेनत्यजे अने अकाजके० जेअकार्यहोय ते त्यजे तेने लज्जालु नामेंनवमुगुण कहियेंतथा दसमुंदयालु तेने कहियेंजे दयामूल धर्मछे तेनी लाज धरे एटले दयामूलधर्मनलोपे ॥ १२ ॥

धर्ममर्मअवितत्थलहे ॥ सोमदिठिमस्तथ ॥ गु
णसंयोगकरेसदा ॥ वरजेदोषअणत्थ ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे मध्यस्थ सोमदृष्टीनामा इग्यारमो गुणवखाणेछे मध्यस्थते कोइ दर्शनउपरें पक्षपातनथी तथा सोमदिठीके० द्वेषरहित दृष्टिदर्शन छेजेने तेम ध्यस्थ सोमदृष्टिकहियें तथा धर्मनो जेमर्म तेअवित्तछके० यथार्थ लहे जाणे एटले सगुण निर्गुण अल्पगुण बहुगुण तथासर्व पाखंमीनिरुपित जेधर्म ते कनक परिक्षक पुरुषनीपेरें जाणे अनेजेज्ञानादिकगुण तेनो सदासंबंधकरतोरहे तथाअनर्थनाकरनारादोष तेसर्ववर्जे तेइग्यारमोगुण ॥ १३ ॥

गुणरागीगुणसंग्रहे ॥ दूसेनगुणअनंत ॥ उ
वेखेनिर्गुणसदा ॥ बहुमानेगुणवंत ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ गुणनो रागीहोय धर्मकपरें रागधरे तथा गुणनो संग्रहकरे नवागुण अंगेआणे गुणअनंतके॰थणागुणवंतने दूसेनके॰ दुःखवेनही एटले एनावजे गुणथ णाहोय अने कदाचित् कोइक दोपहोय तोपण तेने दुःखवेनही यतः चूरिगुणाविरलच्चिय ॥ इक्कगुणेविहुजणोनसवच ॥ निद्दोसाणविभद्दं ॥ पसंसिमोथेवदोसेवि ॥ १ इत्यादि तथा निर्गुणने उवेखेके॰ दुखवेनही तेमजस्तवे पणनही अनेगुणवंत जे देशविरतिसर्वविरतिवंत तेनो बहुमानकरे जे धन्यए धन्यएनो अवतार इत्यादिकगुण रागीनामा बारमोगुणथयो ॥ १४ ॥

अशुभकथाकलुपितमति ॥ नासेरतनविवेक ॥
धर्मार्थिसतकथाहुए ॥ धर्मनिदानविवेक ॥१५॥

अर्थ ॥ अशुभकथाजे स्त्रियादिकनीकथा तेणेकरीने कलुपितमति थयीछे जेहनी तेप्राणीने विवेकरूपरत्न सदसद्वस्तुनुं जेपरिज्ञान तद्रूपरत्न नासे तेमाटे धर्मार्थिथको सत्कथकहोय तीर्थंकर गणधर महर्षिप्रमुखनाचरित्रकहे जेधर्मार्थि तेधर्मनो अर्थिथको ए सत्कथाजधर्मनुंनिदानछे विवेकके॰ विभागछे जेअशुभकथानो त्याग अने शुभकथाकरवी एतेरमोगुण ॥ १५ ॥

धर्मशीलअनुकूलयश ॥ सदाचारपरिवार ॥
धर्मसुपख्खविघनेरहित ॥ करीशकेतेसार ॥१६॥

अर्थ ॥ हवे सुपक्षयुक्तनामा चउदमोगुणकहेछे ते जेनोपरिवारने धर्मकरवानो आचारछे अनुकूलके॰धर्ममांविघ्नकरे तथा यशवंत अने सदाचारीपरिवारहोय एवो सुपक्षगुणवंत विघ्नेरहितहोय तेपुरुप सारके॰ प्रधानएवोजे धर्मते प्रतेकरीशके॥१६॥

मांम्हेसविपरिणामहित ॥ दीरघदर्शीकाम ॥
लहेदोपगुणवस्तुना॥विशेपज्ञगुणधाम॥१७॥

अर्थ ॥ हवे दीर्घदर्शिनामा पन्नरमो गुणकहेछे तेजे कामके॰ कार्यमांम्हे तेपरिणामे हितकारीजहोय उपलक्षणथी तेमां लाभघणोहोय अनेक्लेश अल्पहोय बहु लोकने प्रशंसनीकहोय यतः आढवइदीहदंसी ॥ सयलंपरिणामसुंदरंकज्जं ॥ बहुलाभमप्पकेसं॥सलाहणिज्जंबहुजणाणं॥१॥ इतिधर्मरत्नप्रकरणे हवेविशेषज्ञनामा सोलमोगुणवखाणेछे जे लहेके॰ जाणेवस्तुना गुणदोष एटले एअर्थजेपक्षपातविना व

स्तुना गुणदोष सर्वने जाणे;जोपक्षपातहोय तोगुणमां दोषकाढे अनेदोषमां गुण काढे पण मध्यस्थबुद्धीने यथास्थितजाणे एवोविशेषज्ञ तेगुणनुं धामके० घरहोय

वृद्धानुगतसुसंगते ॥ होवेपरिणतबुद्धि ॥ विनयवं
तनियमांकरे ॥ ज्ञानादिकनीशुद्धि ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवे वृद्धानुगतनामा सत्तरमो गुणकहेछे तेजे परिणतबुद्धिवान परिपाकबुद्धीनो धणीहोय तेपापना आचारनेविषे नजप्रवृत्ते अनेगुणवंतजे वृद्ध होयतेने अनुगतके० अनुजायीयें प्रवर्ते एटले वृद्धनी संगतकरवी तेसुसंगतकहियें तेसुसंगते करी पोते पण परिणतबुद्धीवालो थाय परीपक्वबुद्धिवानथाय यतः बुद्धोपरिणयबुद्धी॥ पावायारेपवत्तइनेवं॥वुद्धाणुगोविएवं॥संसग्गिकयागुणाजेणं इति हवेविनयनामा अढारमो गुणकहेछे तेविनयवंतप्राणी नियमाके० निश्चेंज्ञानादिकनीशुद्धिकरे एटले एनावजे सर्वज्ञानादिकगुणनुं तथा मोक्षनुंमूलतेविनयछे माटे विनयगुणजोइये यतः विणउसवगुणाणं॥मूलंसन्नाणदंसणाईणं॥मुक्खस्सयतेमूलं तेणविणीउइहपसत्थो१८

गुणजोम्हिगुरुआदरें ॥ तत्वबुद्धिकृतजाण ॥ पर
हितकारीपरप्रतें ॥ थापेमार्गसुजाण ॥ १ए ॥

अर्थ ॥ हवेकृतज्ञनामाओगणीसमोगुणकहेछे तेजेगुणनेविषे तथा धर्मनेविषे वीजानेजोडे तथा धर्मगुरुउपरे घणोआदरकरे तथा जेनें तत्व श्रद्वानी बुद्धिहोय तेने कृतजाणके० कृतज्ञ कहियें हवे वीसमो परहितकारीनामा गुणकहेछे जे परप्रतें धर्ममार्गेथापे अने सुजाणके० डाह्योहोय वलीजेणेधर्ममार्गजाण्योछे एटले गीतार्थछे केमके जोअगीतार्थहोयअनेतेपरनेहितकरवा चाहे तोपण अहितथाय यतः किंएत्तोकट्ठयरं॥जंसंममनायसमयसप्भावो॥अन्नंतुदेसणाए॥कट्ठयरागंमिपाडेइ

शीखेलखेसुखेंसकल ॥ लब्धलक्षशुभकाज॥ ए
मएकवीसगुणेवरचो ॥ लहेधर्मनुंराज ॥ २० ॥

अर्थ ॥ हवे लब्धलक्षनामा एकवीसमो गुणकहेछे तेजे शीखेके० थोडाकालमां आगमादिक नणे तथा लखेके० जाणे सुखेंके० अनायासें वगरप्रयासें सकलके० समस्त शुभकाजजे धर्मनाकार्य तेने लब्धलक्षकहियें यतः लक्खेइलद्धलक्खो ॥ सुहेणसयलंपिधम्मकरणिज्जं ॥ दक्खोसुसासणिज्जो ॥ तुरियंचसुसिक्खिउहोइ ॥ इतिधर्मरत्नप्रकरणे एरीते एकवीसगुणे करीविराजित होयते धर्मनुंराज्य लहेके० पामेइति

पूरणगुणउत्तमकह्यो॥ मध्यमपादेंहीन ॥ अ
र्द्धहीनजघन्यजन॥ अपरदरिद्रीदीन॥ २१ ॥

अर्थ ॥ एपूर्णएकवीसगुणे सहितहोय तेउत्तमकहियें अने पादेंके० चोथेनागेंही नहोय तेमध्यम कहियें तथा अर्द्धगुणेहीनहोय तेजघन्यकहियें अपरके० एअर्द्ध थकी हीनगुणी होयते दरिद्रि दीनजाणवा केमके दरिद्री होयते पोतानाउदरनर वानी चिंतायें व्याकुलपणेकरी रत्नना क्रयविक्रयनी चिंतानकरीशके तेम हीनगुणीते धर्मरत्ननोमनोरथ पणनकरीशके यतःपायद्धगुणविहिणा ॥ एएसिंमज्झिमावरानेया॥ इत्तोपरेणहीणा ॥ दरिद्दपायामुणेयव्वा ॥ १ ॥ २१ ॥

अरजेवरजीपापने ॥ एहधर्मसामान्य ॥ प्रजुतु
जक्तिजशलहे ॥ तेहहोएजनमान्य ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जे पापने वर्जिने एसामान्यधर्म जेश्रावकधर्म तेने अरजेके० उपार्जे ते प्राणी हेप्रजु तारी जक्तिकरीने जशलहेके० जशप्रतिष्टापामे एटले एवागुणवंतहोय तेतारी जक्तिकरेज तथा तेप्राणी सर्वलोकने मान्यहोय ॥ २२ ॥ ए एकवीस गुणेस हितहोयते जावश्रावकपणुंपामे माटे जावश्रावकना गुणवर्णवानेबारमोढालकहेछे

ढालबारमोचोपाइनीदेशीछे

एकवीसगुणजेणेलह्या ॥ जेनिजमर्यादामांरह्या ॥ तेह
जावश्रावकनालहे ॥ तसलक्षणएतुंप्रजुकहे ॥ १ ॥

अर्थ ॥ ए एकवीसगुणने जेपाम्याहोय वलीजे पोतानी मर्यादामांरह्याहोय आ चारशीलमांरह्याहोय तेजप्राणीजाव श्रावकप ·णुपामे एटले एजावजे पूर्वे इव्यश्रा वक थयीनेउत्तरकालें जावश्रावकथाय ते जावश्रावकना लक्षण एप्रमाणेहेप्रजुवीत रागपरमेश्वर तमेकह्याछे तेपरमाणे आगल कहियेछैयें ॥ १ ॥

कृतव्रतकर्माशीलआधार ॥ गुणवंतोनेऋजुव्यवहार ॥ गु
रुसेवीनेप्रवचनदक्ष ॥ श्रावकजावेंएप्रत्यक्ष ॥ २ ॥

अर्थ ॥ इहां मार्गानुसारीना पांत्रीस गुणज्ञानविमलसूरीयें लख्याछे पण विशेष शब्दार्थादिकमां प्रयोजननथी तथाएतुंमूल धर्मरत्नप्रकरणकह्युंछे तेमांपणनथीकह्या माटे अमेलख्यानथी १ कर्युंछे व्रतरूपकार्यजेणे तेकृतव्रतकर्माकहियें २ शीलवं

तहोय ३ विवक्षितगुणवंतहोय ४ ऋजुव्यवहार एटले सरलमनहोय ५ गुरुनीशुश्रूषा करे सेवाकरे ५ प्रवचनके० आगममांकुशलहोय माह्योहोय एछलक्षण जेमां होय तेप्रत्यक्षपणे नावश्रावक कहियें यतः कयवयकम्मोतह्य ॥ शीलवंचगुणवंच ऋजुववहारी ॥ गुरुसुस्सूसोपवयण ॥ कुसलोखलुसावगोनावे ॥१ ॥२॥

श्रवणजाणणाग्रहणउदार ॥ पमिसेवाएचारप्रकार ॥ प्रथ
मनेदनामनधारीयें ॥ अर्थतासइमअवतारीयें ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे उपरना ठ लक्षणमांथी प्रथमकृतव्रतकर्मानामें लक्षणना चारनेद ठे १ श्रवणके० सांजलवुं २ जाणणाके० जाणवुं ३ ग्रहणके० अंगीकारकरवुं उदारके० विस्तारपणे ४ पडिसेवाके० सम्यक्पालवुं एचारनेदकह्या एप्रथमनेदजेकृतव्रतकर्मानामे तेनाअवधारीयें तासके० तेनाअर्थ एम अवतारीयेंके० उतारीयें॥ ३ ॥

वहुमानेनिसुणेगियथ्थ॥पासेंनंगादिकवहुअथ्थ ॥
जाणेगुरुपासेंव्रतग्रहे ॥पालेउपसर्गादिकसहे॥ ४॥

अर्थ ॥ इहां वहुमान कह्युंपण विनयतथाबहुमान बने लेवा यतः विणयबहुमाणसारं ॥ गीयछाउकरेइवयसवणं इतिवचनात् गीयछपासेके० गीतार्थपासेथीजे निसुणेके० सांनले तेविनय तथा वहुमानसहित सांनले इहांचोनंगीकहेठे १ कोइकधूर्तमां वंदनादिक बाह्य विनयतोहोय पणनारीकर्मिमाटेवहुमान अंतरप्रीति न होय २ कोइकमां वहुमानहोय पण विनयकरवानी शक्तिनहोयतेग्लानादिक जाणवा ३ कोइक आसन्नसिद्धियाजीवमां विनय तथा वहुमान वेहुहोय ४ कोइकआकरापापकर्मीमां विनय तथा वहुमान एके नहोय इहां व्रतसांजलवाने कह्युं पण उपलक्षणथी सर्वशास्त्र सांनले सूत्रतेगीत अने तेवुं व्याख्यानतेअर्थ अने जेअर्थसहित तेगीतार्थ यतः गीयंजन्नइसुत्तं ॥ अछोतस्सेवहोइवरकाणं ॥ गीएणयअछेणय संजुत्तोहोइगीयछो ॥ १ ॥ एटले गीतार्थपासे सांनलीने एपहेलोनेद नंगादिक वहु अर्थ जाणेके० व्रतनानांगाप्रमुखवहुअर्थसमजे जेम पच्चरकाणना ४ए नंगाने त्रकालनागणियें तेवारे १४७ नंगाथाय वली व्रतआश्रीगणियें तेवारे एकव्रते ६ बेव्रते ४८ त्रणव्रते ३४२ इत्यादिक यावत्बारव्रते १३८४१२८७२०० नंगाथाय अत्रगाथा ॥ तेरसकोडीसयाइ ॥ चुलसीकोडीउंबारसयलरका ॥ सगसीइसहसदोसय ॥ सवगंगकनंगीए॥१॥ नवनंगीयेंएकव्रते ए बेव्रते एए यावत्बारव्रते एएएएएएएएएएएएए

अने एकवीसनंगीकरियेंतेवारें वारेव्रते १२७५५००२६३१०४९२१५ याच ४९नं गेवारेव्रते २४४१४०६२४९९९९९९९९९९९९९ नांगाथाय १४३ नांगायेंवारेव्रते ११०४४३६०३३१९६११५२३३५६९५३६९५ नांगाथाय सर्वअंकरसंचारणायें जाणवाइत्यादिक नांगानु ज्ञानकरे आदिशब्दें व्रतनाअतिचारजाणे एवीजो नेदविस्तारें धर्मरत्नप्रकरणथी जाणवो पठेगुरुपासेथीव्रतअंगीकारकरे आणंदादिकश्रावकनीपेरें इत्वरतेचोमासाप्रमुखना अथवा यावत्कथिकते जावजीवना एत्रीजोनेदथयो अने पालेके० सम्यक्पाले तथा उपसर्गादिक जेआवे तेसर्वसहे कामदेव श्रावकनीपेरें एचोथोनेद कह्यो एकृतव्रतकर्मांना चारनेदवखाण्या ॥ ४ ॥

सेवेआयतणाउद्देश ॥ परग्रहतजेअणुभडवेस ॥ वचन
विकारत्यजेशिशुलील ॥ मधुरन्नणेएपटविधशील ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेबीजुशीलव्रतनामालक्षणना ठनेदकहेठे सेवेआयतणाके० साधर्मिक ने मलवानुं स्थान तेवे यतः जठसाहम्मियाबहवे॥ शीलवंताबहुसुया॥ चरित्तायारसंपन्ना ॥ आययणंतंवियाणाहि ॥ १ ॥ तेवो उद्देशके० स्थानक सेवे पण निह्ननी पालीप्रमुखसेवेनही एपेलोनेद वली परगृहतजेके० पारका घरमांपेसतो नफरे केमके कांइवस्तु खोवाय तेवारेंतेनाउपर शंकाआवे पण कारणे कोइना घरमाजाय तेवात जूदीठे ए बीजोनेद तथा अणुभडवेसके० उन्नटवेसनपेरे जेयकी लांवीआ गोलीआ आदमीमां गणाय तेनकरे एत्रीजो नेद वली वचनविकार त्यजेके० जेथकी रागद्वेष वधे एवा विकारना वचनबोलेनही एचोथो नेद अनेशिशुलीलके० बालक्रीडा जुगटुं रमवुं इत्यादिक त्यजे एपांचमोनेद वली मधुरन्नणेके० मीठुंबोले गमेतेवुं कार्यपडे तोपण हेलोम्यहेसुंदर आकामकरशो एमकहे एठ नेद शीलवंतनामागुणना जाणवा ॥ ५ ॥ हवे एजठ नेद विस्तारीदेखाडेठे ॥

आयतनेसेवेगुणपोप ॥ परगृहगमनेवाधेदोप ॥ उन्नट
वेपनशोन्नालाग ॥ वचनविकारेंजागेराग ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ आयतनके०जेसाधर्मिना स्थानक तेसेवताथका गुणनी पुष्टिथाय गाथा॥ आययणसेवणाउ ॥ दोसाजिझंतिवड्इगुणोहोइइतिवचनात् ॥ वली परगृहगमनेंके० पारकेघरजातां वाधेदोषके० दोषवधे यतः परगिहगमणंपिकलंकपंकमूलंसुसीलाणंइतिवचनात् ॥ वली उन्नटवेषतेशोन्नालायेकनही गाथा ॥ सहइपसंतोधम्मीउभड

वेसोनसुंदरेतस्सइतिवचनात् ॥ सहस्के० शोचेप्रशांतधर्मिइति तथा वचनना वि कारेकरीने रागजागे माटे विकारना वचन कहेनही यतः सवियारजंपियाइ ॥ मूण मूइरंतिरागग्गिइतिवाक्यात्तेमाटेकहे यतः जंसुणमाणस्सकहंसुहुयरंजजइमाणसे मयणो॥समणणसावयेणविनसाकहाहोइकहियव्वा ॥ इतिवचनात् ॥ ६ ॥

मोहतणोशिशुलीलालिंग ॥ अनर्थदंडअछेएचंग ॥ क ठिणवचननुंजल्पनजेह ॥ धर्मिनेनहिसम्मततेह ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जे शिशुलीलाके० बालक्रीडा ते मोहतणोके० मोहनुंलिंगछे वली के वीछे अनर्थदंडछे तेजीवने चंगके० मनोहर लागेछे यतः बालिसजणकिलाविहु ॥ मूलंमोहस्सणथ्थदंडाउ ॥ इतिवचनात् हवे छठोभेद कहेछे ते कठिणवचननुं जेबो लवुं ते धर्म्मिजीवने सम्मतके० मान्यनही यतः फरुसनवणाजियोगो ॥ नसम्म उंतुहधम्मिणंइतिवचनात् एछजेदेकरी बीजो शीलवंतनामाभेद संपूर्णथयो ॥ ७ ॥

उद्यमकरेसदासझाय॥ करणविनयमांसर्वउपाय ॥ अन भिनिवेशीरुचिजिनआण॥ धरेपंचगुणएहप्रमाण॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवे गुणवंतनामानावश्रावकनुं त्रीजुं लक्षणकहेछे तेमां यद्यपि औदा र्य धैर्य गांभीर्य प्रियबोलवुं इत्यादिक अनेक गुणछे तोपण पांचगुणेकरी गुणवंत गीतार्थेकह्याछे १ सद्मायके० जणवा वाचवा पठनादिकनो उद्यमकरे २ करणके० अनुष्ठानक्रियाकरे ३ विनयमांके० गुरुआदिक आवे अभ्युत्थानादिककरे सदाउजमा लथको जेजेविनयनाप्रकारछे तेते सर्वकरे ४ अनभिनिवेशीके० कदाग्रहीनहोय इह लोक साधवामां कदाग्रहनकरे ५ रुचिके० आकरी श्रद्धा जिनआणके० जैनागम नेविषे होय एपांचगुणधरे तेगुणवंतकहियें ते प्रमाणके० मान्यछे ॥ ८ ॥

सझायेंधारेवैराग॥तपनियमादिककरणेराग ॥ विनयप्र युंजेगुणनिधितणो ॥ जेममनवाधेआदरघणो ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हवे एपांचेना फलकहेछे प्रथम सझायकरता जीवने वैरागवधे तथा अनुष्ठानमां सावधानथको जीव तप तथा नियममां उद्यमवंतहोय जेतपते बारभे दे प्रसिद्धछे अने नियमते साधुने विश्रामण उत्तरपारणालोचकराव्योहोय तेने घृ तप्रमुखनुं दानदेवुं यतः पढसंनगिलाणेसुंय ॥ आगमगाहिसुतहयकयलोए ॥ उत्त

रपारएगंमिय ॥ दाणेसुवहुफलंहोइ ॥ १ ॥ इति तथा गुरुवंदना चैत्यवंदना पूजा प्रमुखपणाए गुणमां लेवा २ तथा गुणनुं निधानपुरुषतेनोविनय प्रयुंजेके० करे गुणवंत आवे तेवारे उन्नोथाय सामोजाय मस्तके अंजलीकरे आसनआपे गुरुते गएपछी वेसे सेवाकरे जायतेवारे वोलावाजाय इत्यादिक विनयकरे तेविनयवंत देखीने तेनाऊपर गुरुनो घणो आदरवधे आम्नायादिकगुरुतेनेआपे ॥ ए ॥

अनभिनिवेशीअवितत्थगणे ॥ गीतारथभापीतजेसुणे ॥
सद्दहणायेंसुणवाचाह ॥ समकितनोमोटोउछाह ॥ १० ॥

अर्थ ॥ अनभिनिवेशीजेहोय तेने अवितत्थके० यथार्थ माने अनेगीतार्थ जेवोले गीतार्थकहेतेयथार्थजाणे तथा गीतार्थपासें सांभले श्रद्धापूर्वक सांभलवाने वांछे उपलक्षणथी श्रद्धायेंइच्छापूर्वकअनुष्ठानकरे एवी श्रद्धाविनासमकितनी शुद्धिक्यांथी थाय यतः सवणकरणेसुइच्छा ॥ होइरुसद्दहाणंसंजुत्ता एइएविणाकत्तो ॥ सुद्धिसम्मत्तरयणस्स ॥ १ ॥ इतिएसमकेतनो मोहोटो उछाहके० हर्षछे ॥ १० ॥

अवितथकथनअवंचकक्रिया ॥ पातिकप्रकटनमैत्रीप्रिया ॥
वोधवीजसभावेंसार ॥ चारभेदएऋजुविवहार ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे भावश्रावकनुं चोथुंऋजुव्यवहारनामा लक्षण चारभेदेंकरी कहेछे १ अवितथकथनते यथार्थवोले धर्म व्यवहारमां परने ठगवाने माटे धर्मने अधर्मनकहे अधर्मने धर्मनकहे क्रयविक्रयव्यवहारमां लेवेदेवे जूठुं नवोले तथा साक्षीव्यवहारमां राजदरवारें पण खोटीसाहेदी नपूरे तथा धर्मनी हांसीथाय एवुं पणनवोले ए प्रथमभेद २ अवंचकक्रियाके० वीजाने कष्टउपजे एवीक्रिया नकरे सारीवस्तुमांखरावस्तुभेलीनआपे अथवा ताकडीप्रमुखतोलमां अधिकुंओछुं आपीलेइने परने ठगेनही तथा आभवमां पणवचनक्रियाते केवलपापजछेएमदेखतो परने ठगवाथी निवृत्ते यद्यपिअवंचकक्रियाते पोतानो आत्माठगायनही ईहां योगअवंचक क्रियाअवंचक फल अवंचक इत्यादिकपूर्वना टवामां अर्थलख्योछे पण धर्मरत्नग्रंथमां एरीतेंनथी माटे अमे नथीलिख्यो ३ कोइक पापकरतोहोय तेने प्रकटनके० अपाय कही देखाडे जेहेंभइ पापकरतां अनर्थथाय इत्यादिक कहे पणतेने उवेखेनही ४ मैत्रीप्रियाके० निष्कपटपणे मित्राइकरे ते साचेभावेंकरे पण खोटेभावें नकरे माटे एमकयुंजे सारबोधवीजपामे एचारभेदेंकरी ऋजुके० सरलतानो व्यवहारकहियें अने एचारेंवोलथी विपरीतकरे तोवोधवीजजाय एम धर्मरत्न प्रकरणमांकयुंछे ॥ ११ ॥

गुरुसेवीचउविहसेवना ॥ कारणसंपादनजावना ॥ से
वेअवसरेगुरुनेतेह ॥ ध्यानयोगनोनकरेछेह ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे जावश्रावकनुं पांचमुं लक्षण गुरुशुश्रुषानामेकहेछे ते गुरुसेवा चउविहके० चारप्रकारेछे १ गुरुनीसेवनाकरे २ कारणके० बीजापासे गुरुनी सेवाकरावे ३ संपादनके० गुर्वादिकने औषधादिकनुं देवुंकरे ४ जावनाके० गुर्वादिकनो बहुमानकरे तथा गुरुना परिवारनो बहुमानकरे इहां गुरुतेधर्मगुरुलेवा पणमातापितादिकगुरुनलेवा यतः धर्मज्ञोधर्मकर्त्ताच सदाधर्मप्रवर्त्तकः ॥ सत्वेन्योधर्मशास्त्राणां देशिकोगुरुरुच्यते ॥ हवे एचारेजेदनो अर्थकहेछे १ अवसरपामीने गुरुनीसेवाकरे पणवगरअवसरें न करे तेकहेछे जे ध्यानके० धर्मध्यानादिकयोग तेप्रत्युपेक्षणा आवश्यकादिक तेनो न करेछेहके० छेद नकरे एटले व्याघातनकरे जीर्णश्रेष्ठनीपेरें ॥ १२ ॥

तिहांप्रवर्त्तावेपरप्रतें ॥ गुरुगुणजापेनिजपरछतें ॥ संपादे
औषधमुखवली ॥ गुरुजावेंचालेअविचली ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ २ वली ते परप्रतेंके० बीजाने गुरुसेवानेविषें प्रवर्त्तावे तेनाआगल गुरुगुण जापीके० वर्णनकरीने एटले एजावजे पोते गुर्वादिकना गुण वर्णनकरे तेथी प्रमादीहोय तेपणगुरुसेवामां प्रवर्त्तेइतिजावः ३ तथा निजके० पोताथी अने परछतेंके० परथकीसंपादेके० आपेअपावे औषधमुखवलीके० औषधप्रमुख तेमां एकद्रव्यते औषध अथवा बाह्यउपयोगी तेऔषध अने अनेक द्रव्यसंयोग अथवा शरीरमां जोगववा योग्य तेजेषज वली प्रमुखशब्दें जेसंयमोपकारिवस्तु जोइयें ते आपे अथवा अपावे ४ गुरुजावेंचालेके० गुरुने अजिप्रायें चाले गुरुनो बहुमानकरे तथा गुरुने अनुजायीचाले अविचलीके० अविचलथको ॥ १३ ॥

सूत्रअर्थउस्सग्गववाय ॥ जावेंव्यवहारेंसोपाय ॥ निपु
णपणुंपाम्योछेजेह ॥ प्रवचनदक्षकहिजेतेह ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवे जावश्रावकनो प्रवचनदक्षनामा छहुंलक्षण वखाणेछे ते छजेदेंछे ते माटे श्रावकपण छजेदें जाणवो तेकहेछे १ सूत्रनेविषेकुशल २ अर्थनेविषे कुशल ३ उत्सर्गनेविषे तेसामान्यसूत्रनेविषे कुशल ४ ववायके० अपवाद एटले विशेषसूत्रनेविषे कुशल ५ जावेंके० विधिपूर्वक धर्मानुष्ठाननेविषे कुशल ६ व्यवहारेंके०

गीतार्थनीआचरणारूपजेजितव्यवहार तेनेविषे कुशल सोपायके० उद्यमसहित निपुणके० कुशलपणुंपाम्योछे एवो जे पुरुष तेनेप्रवचनदक्षकहियें ॥ १४ ॥

उचितसूत्रगुरुपासेंजणे ॥ अर्थसुतीर्थेतेहनोसुणे ॥ विषय
विभागलहेअविवाद ॥ वलीउत्सर्गतथाअपवाद ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे एछभेद विस्तारीकहेछे १ उचितसूत्रके० श्रावकनेयोग्यसूत्र चौसर णादिक प्रवचनमाताथी मांडीने छजीवणीयाअध्ययनपर्यंतभणे उक्तंच ॥ पवयणमा इछजीवणिपंताउभयविथरस्स ॥ अस्यार्थः ग्रहण शिक्षा तत्रप्रकृता उभयतःसूत्रतो अर्थतश्चेतरस्यश्रावकस्येति एरीतें सूत्रभणेउपलक्षणथी पंचसंग्रह कम्मपयडीप्रमुख ग्रंथनासमूह तेपोतानीबुद्धीनेअनुसारेभणे २ अर्थके० तेसूत्रनोअर्थ ते सुतीर्थ के० संविज्ञ गुरुपासेथी सांभले ३–४ हवेउत्सर्गतथाअपवाद एबेभेदसाथेकं हेछे अविवादके० विवादरहितपणे विषयविभागलहेके० पोतपोतानेठेकाणेजा णे उत्सर्गनेउत्सर्गठामेजाणे अपवादने अपवादठामे जाणे पण एकलो उत्सर्गज नआलंबे अथवा एकलो अपवादज नआलंबे जेअवसरें जेकरवुंघटे तेअवसरें ते करे एटले लाभालाभ जोइ कार्यकरे एसर्वचारभेद कह्या ॥ १५ ॥

पक्षभावविधिमांहेधरे ॥ देशकालमुखजेमअनुसरे ॥ जाणे
गीतारथव्यवहार ॥ तेमसविप्रवचनकुशलउदार ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ ५ देववंदनादिक विधिनेविषे पक्षभावके० बहुमानहोय तथा बीजो कोइ विधिकरतोहोय तेहनोपण बहुमानकरे विधिसामग्रीना अभावें पण विधिआराधवा नो मनोरथ मूकेनही इत्यादिक उपलक्षणथी जाणवुं ६ हवे व्यवहारकुशलनामा छठोभेदवखाणेछे तेजेम देशकालप्रमुखहोय तेने अनुसरे एटले एनाव जे देशनंमु [illegible] दुर्भिक्षतादि तथाकालते सुकाल दुष्कालादिक प्रमुखनहिं [illegible] [illegible] नावथी हृष्ट ग्लानादिक तेसर्वने पोतपोतानीहदेजाणे गीतार्थनो व्यवहार मर्मसं तेजाणे एटले एनावजे उत्सर्गअपवादना जाणजेगीतार्थ तेणे आचर्योजे व्यवहा र तेपोतानी मनें दुरदेनहीं पण तेसर्वव्यवहार तेमज [illegible] [illegible] प्रवचनकुशल ते उदारके० प्रधानकहियें ए छलक्षण भावश्रावकना जाणवा ॥ १६ ॥

किरियागतएषटविधलिंग ॥ भाषेंजिनवरजअभंग ॥
एविधिश्रावकजेआचरे ॥ सुजसलालोलाचेआदरे ॥ १७ ॥

गुरुसेवीचउविहसेवना ॥ कारणसंपादनज्ञावना ॥ से
वेअवसरेगुरुनेतेह ॥ ध्यानयोगनोनकरेछेह ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे ज्ञावश्रावकनुं पांचमुं लक्षण गुरुशुश्रुषानामेकहेछे ते गुरुसेवा चउवि हके० चारप्रकारेछे १ गुरुनीसेवनाकरे २ कारणके० बीजापासे गुरुनी सेवाकरावे ३ संपादनके० गुर्वादिकने औषधादिकनुं देवुंकरे ४ ज्ञावनाके० गुर्वादिकनो बहुमानकरे तथा गुरुना परिवारनो बहुमानकरे इहां गुरुतेधर्मगुरुलेवा पणमातापितादिकगुरुनले वा यतः धर्मज्ञोधर्मकर्त्ताच सदाधर्मप्रवर्त्तकः ॥ सत्वेन्योधर्मशास्त्राणां देशिकोगुरुरुच्य ते ॥ हवे एचारेनेदनो अर्थकहेछे १ अवसरपामीने गुरुनीसेवाकरे पणवगरअवसरें न करे तेकहेछे जे ध्यानके० धर्मध्यानादिकयोग तेप्रत्युपेक्षणा आवश्यकादिक तेनो न करेछेहके० छेद नकरे एटले व्याघातनकरे जीर्णश्रेष्ठिनीपेरें ॥ १२ ॥

तिहांप्रवर्त्तावेपरप्रतें ॥ गुरुगुणज्ञापेनिजपरछतें ॥ संपादे
औषधमुखवली ॥ गुरुज्ञावेंचालेअविचली ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ २ वली ते परप्रतेंके० बीजाने गुरुसेवानेविषें प्रवर्त्तावे तेनाआगल गुरु गुण ज्ञापीके० वर्णनकरीने एटले एजावजे पोते गुर्वादिकना गुण वर्णनकरे तेथी प्रमादीहोय तेपणगुरुसेवामां प्रवर्त्तेइतिजावः ३ तथा निजके० पोताथी अने परछतें के० परथकीसंपादेके० आपेअपावे औषधमुखवलीके० औषधप्रमुख तेमां एकद्रव्यते औषध अथवा बाह्यउपयोगी तेऔषध अने अनेक द्रव्यसंयोग अथवा शरीरमां नोगववा योग्य तेनेपज वली प्रमुखशब्दें जेसंयमोपकारिवस्तु जोइयें ते आपे अथ वा अपावे ४ गुरुज्ञावेंचालेके० गुरुने अजिप्रायें चाले गुरुनो बहुमानकरे तथा गुरु ने अनुजायीचाले अविचलीके० अविचलथको ॥ १३ ॥

सूत्रअर्थउस्सग्गववाय ॥ ज्ञावेंव्यवहारेंसोपाय ॥ निपु
णपणुंपाम्योछेजेह ॥ प्रवचनदक्षकहिजेतेह ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवे ज्ञावश्रावकनो प्रवचनदक्षनामा छठुंलक्षण वखाणेछे ते छनेदेंछे ते माटे श्रावकपण छनेदें जाणवो तेकहेछे १ सूत्रनेविषेकुशल २ अर्थनेविषे कुशल ३ उत्सर्गनेविषे तेसामान्यसूत्रनेविषे कुशल ४ ववायके० अपवाद एटले विशेषसू त्रनेविषे कुशल ५ ज्ञावेंके० विधिपूर्वक धर्मानुष्ठाननेविषे कुशल ६ व्यवहारेंके०

गीतार्थनीआचरणारूपजेजितव्यवहार तेनेविषे कुशल सोपायके० उद्यमसहित निपूणके० कुशलपणुंपाम्योछे एवो जे पुरुष तेनेप्रवचनदक्षकहियें ॥ १४ ॥

उचितसूत्रगुरुपासेंजणे ॥ अर्थसुतीर्थेतेहनोसुणे ॥ विषय विभागलहेअविवाद ॥ वलीउत्सर्गतथाअपवाद ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे एछभेद विस्तारीकहेछे १ उचितसूत्रके० श्रावकनेयोग्यसूत्र चौसर णादिक प्रवचनमाताथी मांडीने छजीवणीयाअध्ययनपर्यंतजणे उक्तंच ॥ पवयणमा ऽछजीवणियंताउजयविपरस्स ॥ अस्यार्थः ग्रहण शिक्षा तत्रप्रकृता उजयतःसूत्रतो अर्थतश्चेतरस्यश्रावकस्येति एरीतें सूत्रजणेउपलक्षणथी पंचसंग्रह कम्मपयडीप्रमुख ग्रंथनासमूह तेपोतानीबुद्धीनेअनुसारेजणे २ अर्थके० तेसूत्रनोअर्थ ते सुतीर्थ के० संविज्ञ गुरुपासेथी सांजले ३–४ हवेउत्सर्गतथाअपवाद एबेजेदसाथेक हेछे अविवादके० विवादरहितपणे विषयविभागलहेके० पोतपोतानेठेकाणेजा णे उत्सर्गनेउत्सर्गठामेजाणे अपवादने अपवादठामे जाणे पण एकलो उत्सर्गज नआलंबे अथवा एकलो अपवादज नआलंबे जेअवसरें जेकरवुंघटे तेअवसरें ते करे एटले लाजालाज जोइ कार्यकरे एसर्वचारजेद कह्या ॥ १५ ॥

पक्षपातविधिमांहेधरे ॥ देशकालमुखजेमअनुसरे ॥ जाणे गीतारथव्यवहार ॥ तेमसविप्रवचनकुशलउदार ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ ५ देववंदनादिक विधिनेविषे पक्षपातके० बहुमानहोय तथा बीजो कोइ विधिकरतोहोय तेहनोपण बहुमानकरे विधिसामग्रीना अजावें पण विधिआराधना नो मनोरथ मूकेनही इत्यादिक उपलक्षणथी जाणवुं ६ हवे व्यवहारकुशलनाना छठोजेदवखाणेछे तेजेम देशकालप्रमुखहोय तेने अनुसरे एटले एनाव जे देशनेगु [illegible] स्थित दुर्भिक्षनादि तथाकालते सुकाल [illegible] कालादिक प्रमुखशब्दें [illegible] दुर्जनादि जावथी हृष्ट ग्लानादिक तेसर्वने पोतपे [illegible] नीहुंदेजाणे गी[illegible] सर्वपो तेजाणे एटले एनावजे उत्सर्गअपवादना जाणजेगी[illegible] व्यवहा र तेपोतानी मतें डुहवेनही पण तेसर्वव्यवहार [illegible] प्रकारनो प्रवचनकुशल ते उदारके० प्रधानकहियें ए छठ[illegible] कह्या ॥ १६ ॥

किरियागतएषटविधलिंग ॥ जाखेतुं[illegible] ॥

एविधिश्रावकजेआदरे ॥ सुजशशोजा[illegible] ॥ १७ ॥

गुरुसेवीचनुविहसेवना ॥ कारणसंपादनन्नावना ॥ से
वेअवसरेगुरुनेतेह ॥ ध्यानयोगनोनकरेछेह ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे नावश्रावकनुं पांचमुं लक्षण गुरुशुश्रुषानामेकहेछे ते गुरुसेवा चउविहके० चारप्रकारेछे १ गुरुनीसेवनाकरे २ कारणके० बीजापासे गुरुनी सेवाकरावे ३ संपादनके० गुर्वादिकने औषधादिकनुं देवुंकरे ४ नावनाके० गुर्वादिकनो बहुमानकरे तथा गुरुना परिवारनो बहुमानकरे इहां गुरुतेधर्मगुरुलेवा पणमातापितादिकगुरुनलेवा यतः धर्मज्ञोधर्मकर्त्ताच सदाधर्मप्रवर्त्तकः ॥ सत्वेन्योधर्मशास्त्राणां देशिकोगुरुरुच्यते ॥ हवे एचारेनेदनो अर्थकहेछे १ अवसरपामीने गुरुनीसेवाकरे पणावगरअवसरें न करे तेकहेछे जे ध्यानके० धर्मध्यानादिकयोग तेप्रत्युपेक्षणा आवश्यकादिक तेनो न करेछेहके० छेद नकरे एटले व्याघातनकरे जीर्णशेठनीपेरें ॥ १२ ॥

तिहांप्रवर्त्तावेपरप्रतें ॥ गुरुगुणन्नापेनिजपरछतें ॥ संपादे
औषधमुखवली ॥ गुरुन्नावेंचालेअविचली ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ २ वली ते परप्रतेंके० बीजाने गुरुसेवानेविषें प्रवर्त्तावे तेनाआगल गुरुगुण नापीके० वर्णनकरीने एटले एनावजे पोते गुर्वादिकना गुण वर्णनकरे तेथी प्रमादीहोय तेपणगुरुसेवामां प्रवर्त्तेइतिनावः ३ तथा निजके० पोताथी अने परछतेंके० परथकीसंपादेके० आपेअपावे औषधमुखवलीके० औषधप्रमुख तेमां एकद्रव्यते औषध अथवा बाह्यउपयोगी तेऔषध अने अनेक द्रव्यसंयोग अथवा शरीरमां नोगववा योग्य तेनेषज वली प्रमुखशब्दें जेसंयमोपकारिवस्तु जोइयें ते आपे अथवा अपावे ४ गुरुन्नावेंचालेके० गुरुने अनिप्रायें चाले गुरुनो बहुमानकरे तथा गुरुने अनुजायीचाले अविचलीके० अविचलथको ॥ १३ ॥

सूत्रअर्थउस्सग्गववाय ॥ नावेंव्यवहारेंसोपाय ॥ निपु
णपणुंपाम्योछेजेह ॥ प्रवचनदक्षकहिजेतेह ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवे नावश्रावकनो प्रवचनदक्षनामा छहुंलक्षण वखाणेछे ते छनेदेंछे ते माटे श्रावकपण छनेदें जाणवो तेकहेछे १ सूत्रनेविषेकुशल २ अर्थनेविषे कुशल ३ उत्सर्गनेविषे तेसामान्यसूत्रनेविषे कुशल ४ ववायके० अपवाद एटले विशेषसूत्रनेविषे कुशल ५ नावेंके० विधिपूर्वक धर्मानुष्ठाननेविषे कुशल ६ व्यवहारेंके०

गीतार्थनीआचरणारूपजेजितव्यवहार तेनेविषे कुशल नोपायकं० उपमलहित निपुणकं० कुशलपणुंपाम्योछे एवो जे पुरुष तेनेप्रवचनदक्षकहिये ॥ १४ ॥

उचितसूत्रगुरुपासेभणे ॥ अर्थसुनीयेंतदनोसुणे ॥ विषय
विभागलहेअविवाद ॥ वलीकल्पगतयाअपवाद ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे पठभेद विभागीकहेछे १ उचितसूत्रकं० श्रावकने योग्यसूत्र योग [illegible] पादिक प्रवचनमाताथी मांडीने छजीवणीयाअध्ययनपर्यंतभणे उकंच ॥ [illegible] छजीवणियंताउजयविषयम्म ॥ अस्यार्थः [illegible] शिक्षा [illegible] अर्थतश्चेनरच्छश्रावकस्येति एवीने सूत्रभणे [illegible] संघनामनृत तेपोतानीबुद्धीनेअनुसारेभणे २ [illegible] तेनुज्ञानोक्ते ते [illegible] कं० तेविद्या गुरुपासेथी सांभले ३-४ [illegible] लहे अविवादकं० विवादरहितपणे [illegible] णे [illegible] अपवादने [illegible] तथा [illegible] अथवा एवलो अपवादज [illegible] यें एटले लाभालाभ जोइ [illegible] ॥ १५ ॥

पञ्चमादिविधिमांहेपरे ॥ देशाकालअनुसारे [illegible] ॥ जाणे
गीतारथव्यवहार ॥ तेमनपिमदधनगुमाउदार ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ ५ देववंदनादिक विधिनेविषे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

ए. ते जनके० प्राणी पाससदृसके० बंधनसरिखो घरवासने माने जेम पक्षी पासमां पड्यो उडीनशके अने पोताना आत्माने दुःखीमाने एम गृहमातापितादिकसंबंधेदी क्षा लेइनशके पण दुःखमाने अनेतेंप्राणी अन्यासतो मोहने जीतवानोज करे ॥ ८॥

अष्टमदंसणगुणभरयो ॥ बहुभांतिंकरेगुरुभक्ति
रे॥ शक्तिरे ॥ निजसद्दहणानीफोरवेए ॥ ए ॥

अर्थ ॥ आठमो दर्शननामा गुणेभलोथको गुरुजेधर्माचार्य जेनाथी समकित पा म्योतेगुरुनी भक्ति बहुभांतेंकरे अने पोतानी श्रद्धानी शक्तिफोरवे एटले एनावजे अ स्तिक्यभावसहितअने अतिचाररहित दर्शननेधरतो शक्तियेंप्रभावना तथा वर्णवाद वृद्धिवंतकरे यतः अत्थिकभावकलिउं पभावणावन्नवायमाईहिं ॥ गुरुभत्तिजुउधीमं ॥ धरेइइयदंसणंविमलं ॥ १ ॥ ए ॥

लोकसन्नाद्दविपरिहरे ॥ जाणेगाम्भरिउपरिवाहो
रे ॥ लाहोरे ॥ एमनवमांगुणनोसंपजेए ॥ १० ॥

अर्थ हवे गाम्भरीकप्रवाहनामानवमोभेदवखाणेछे लोकसन्नाहके० लोकअविचा रित रमणीकतेने परिहरेके० त्यजे अने लोकनीचाल तेगाम्भरीयाप्रवाहजेवीछे जेम एकगाम्भरनेपछवाडे बीजुंगाम्भर चाले उपलक्षणथकी कीडीनो मंकोडानो प्रवाहपण केहेवुंतेजेम अविचारितछे तेम लोकनोप्रवाहपण तेवोछे तेमाटे वर्जे एम नवमागुण नोलाहोनीपजे ॥ १० ॥

आगमनेंआगलकरे ॥ तेविणकुणमारगसाखीरे॥
भापीरे ॥ एमकिरियादशमागुणथकीए ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवेदशमो आगमनामाभेद वखाणेछे जेकार्यकरेते आगमने आगलक रीनेकरे एम विचारेजे आगमविना जेपरलोकसाधवानोमार्ग तेनो कोणसाखी एटले वीतरागनाआगममांज एवामार्ग होय भापीके० एवुं कहीने एरीतनी क्रिया करे एटले एनावजे देववंदन गुरुवंदन प्रत्याख्यान प्रतिक्रमणादिरूपक्रिया जिनाग मतथ्य जाणीने आगमोक्तक्रियाकरे एदेववंदनादिक क्रियानोविस्तारधर्मरत्नमां जोइ लेजो एदशमागुणथकी क्रियापामे ॥ ११ ॥

आपअबाधायेंकरे ॥ दानादिकचारशक्तिरे ॥
व्यक्तिरे ॥ एमआवेगुणइग्यारमोए ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे दानादिक यथाशक्तियेंकरे एइग्यारमोन्नेदकहेले आपअबाधायेंके० पोताने पीडा नउपजेतेम दानादिकचारेकरे जोड्व्यपात्रहोय तो देतोथको थाकेज नही अने जोअल्पद्रव्यवानहोय तो अतिउदार नथाय उक्तंच ॥ लाज्ञोवियदाणें लाज्ञोवियन्नोयणें ॥ लाज्ञोवियपरिज्ञावे लाज्ञोवियनिधिकरेसिया इत्यादि एमथोडे कालेंघणुंआपीशके तेमज शील तप ज्ञावनानेविषेपण यथाशक्तिप्रवर्ते एमव्यक्तिके० प्रगटपणेइग्यारमोगुण श्रावकनेआवे ॥ ११ ॥

चिंतामणिसरिखोलही ॥ नविमुग्धहस्योपणलाजे
रे ॥ गाजेरे ॥ निजधर्मेंएगुणबारमोए ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे विहिकनामाबारमोगुणकहेले चिंतामणिरत्न सरिखो पोतानोधर्मल हीके० पामीने जोमुग्धके० मूर्खलोक तेणे हस्योथको पण नविलाजेके० नलाजे एटले धर्मकरणी करतो लाजेनही गाजेरेके० उत्सुकहोय हर्षवंतहोय निजधर्मेंके० पोतानाधर्मनेविषे एबारमो गुणजाणवो यद्यपि धर्मरत्नग्रंथमांचिंतामणिरत्नसरिखी क्रियाकरतोनलाजे एमकह्युंछे तोइहांचिंतामणिरत्नसरिखोधर्मकह्यो तेमांकांइविरुद्धन थीकेमकेक्रियाने धर्मकांइजुदोनथी ॥ १२ ॥

धनन्नवनादिकन्नावमां ॥ जेनविरागीनविद्वेषी
रे ॥ समपेषीरे ॥ तेविलसेगुणतेरमेंए ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवे तेरमोअरक्तद्विष्टनामान्नेद वखाणेछे शरीरनीस्थिति हेतुछे धनन्नव नआदिशब्दथी स्वजन आहार घर क्षेत्र कलत्र वस्त्र शस्त्र यान वाहन इत्यादिक सेवातेपदार्थमां रहेतोथको पण नविरागी नविद्वेषीके० रागद्वेषरहितनीपेरें होय एटले मंदआदरहोय अन्यथारागद्वेषरहितता उपलेगुणठाणे होय ते इहांकेमघटे अने समपेषीके० मध्यन्नावनो जोनारो होय जेमाटे न्नावश्रावक एमन्नावे यतः नेयइ ह्वकोइसयणो नसरीरंनेयन्नोगउवन्नोगा ॥ जीवोअन्नन्नवगइ गहइसवंपिमोत्तूणंइत्या दिअविनितलोक उपरद्वेषपण नकरे तेश्रावक तेरमागुणने विलसे ॥ १४ ॥

रागद्वेषमध्यस्थनो ॥ समगुणचन्द्रमेनवांधेरे ॥
साधेरे ॥ तेहठगंडीमारगन्नलोए ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे चउदमो मध्यस्थनामागुण वखाणेछे रागद्वेषमध्यस्थनोके० राग द्वेषमां तणायनही तेमां मध्यस्थपणुंराखे एरागद्वेषमध्यस्थनो समगुणकहियें एट ले एन्नावजे परमार्थविचारकरे जे मेंमतलीधोतेकेम मूकुं अथवा अमुक मारु मत

खंमेछे तेने खंभुएवो रागद्वेषनकरे तेप्राणी चौदमांगुणनेविषे बाधानपामे एटले स मगुणपीडायेनही तेप्राणीपोतानो हठके० कदाग्रहगमीने नजोमार्गसाधे एटले परने तथापोताने हितवांछकथको कदाग्रहमूकी मध्यस्थगीतार्थगुरुने वचने प्रवर्त्ते प्रदेशी राजानीपेरें एटले तेरमांगुणमां धननवनादिकमां मंदआदरहोय अनेचौदमांगुणमां धर्ममां कदाग्रहमूके सम्यक्अंगीकार करे ॥ १५ ॥

क्षणभंगुरताभावतो ॥ गुणपन्नरमेंसेवंतोरे ॥
संतोरे ॥ नधनादिसंगतिकरेए ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे असंबंधनामापन्नरमो भेदवखाणेछे क्षणभंगुरताभावतोके० सर्वप दार्थ क्षणभंगुरछे अनित्यछे तन धन स्वजन जीवित द्रव्यप्रमुख एसर्वेअनित्यछे एम विचारतो पन्नरमां गुणने सेवतोके० सेवे अने संतोके० सज्जनपुरुषोने नधनादिसं गतिकरेके० धनप्रमुखनी संगतनकरे एमविचारे यतः विम्राडपयंचडण्ययंच ॥ खित्तं गीहंधणधन्नंचसवंस ॥ कम्मप्पबीउअवसोपयाई ॥ परंभवंसुदरपावगंवा ॥ १ ॥ १६॥

भावविरतिसेवेमनें ॥ भोगादिकपरअनुरोधेरे ॥
बोधेरे ॥ एमउल्लसेगुणसोलमेंए ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवे सोलमो परार्थकामोपभोगीनामा भेदकहेछे भव जेसंसारनेविषे विर क्तमनथको भोगादिकने सेवे तेपण परअनुरोधेके० परनादाक्षिणादिकेंसेवे बोधेरेके० एवाउदासीनज्ञानेकरी सोलमोगुणउल्लासपामे ॥ १७ ॥

आजकालएछांम्सु ॥ एमवेश्यापरेंनिसनेहोरे॥
गेहोरे ॥ परमानेगुणसत्तरमेंए ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवे सत्तरमो वेश्यानीपेरें घरवासपाले एभेदवखाणेछे जेए घरवासछेते आज छांम्सु अथवा काले छांम्सुं एम वेश्यानीपेरें निस्नेहीरहे जेमवेश्यानिरधन देखी विचारे जे हवे आज अथवा काले छांडुं एमविचारे तेम गृहस्थपण आ स्थाप्रमुखविना घरमांवसे पणघरने परकरीमाने एसत्तरमेगुणे देशविरतिना अनेक भेदछे माटे नानाभिप्रायेवंतहोय तेमाटे पुनरुक्तदोषकोई भेदमांनजाणवुं ॥ १८ ॥

एगुणवृंदेजेभरचा ॥ तेश्रावककहियेंभावेरे॥
पावेरे ॥ सुजशपूरतुकभक्तिथीए ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ एगुणना वृंदके० समूह तेणेकरी जेभरयाछे ते भावेंके० भावथी

श्रावककहियें यतः इयसत्तरसगुणजुत्तो ॥ जिणागमेन्नावसावगोन्नणीयो ॥ इति वचनात् ते पावेके० पामे सुजशपूरके० न्नलाजशनो पूरपामे तुझन्नक्तियीके० हे वीतराग हेचिदानंदस्वरूपी तारी न्नक्तियकी पामे एटले तारीआज्ञायें न्नावश्रावकपणुंपालवुं तेतारी न्नक्तिजछे ॥१७॥ एतेरमांढालमध्ये न्नावश्रावकनुं लक्षणकह्युं ते न्नावश्रावकजे होय ते इव्यसाधु कहियें अनेजेइव्यसाधु होयते न्नाव साधुपणुंपामे तेमाटे हवे न्नावसाधुनालक्षण चउदमां ढालमां कहेछे ॥

ढाल चौदमो — नीदेशी

तेन्नावसाधुपणुंलहे॥ जेन्नावश्रावकसार॥ तेहनालक्षणसातछे॥
सविजाणेहोतुंगुणन्नंडार ॥ साहेवजीसाचीताहरीवाणी ॥ १ ॥

अर्थ जे सारके० प्रधानन्नावश्रावकपूर्वेकह्या तेन्नावसाधुपणुंपामे तेनावली सातलक्षणछे ते हेज्ञानदर्शनचारित्रवीर्य सुखदान लान्नन्नोग उपन्नोगादिक गुणनान्नंडार एवाहेपरमेश्वर तमेसर्व जाणोछो केवलज्ञान केवलदर्शनेकरी षट्इव्यनुं न्नासनथायछे तेमाटे हेसाहेवजी तमारी वाणीते साचीछे सत्यछे एटले एन्नावजे आचार्यपरंपरा तथा जितआचार तथाप्रकरणादिकमां जेन्नावकह्याछे तेतमारीज वाणीछे पणकोइनी कल्पित नथी ॥ १ ॥

किरियामारगअनुसारणी॥ श्रद्धाप्रवरअविवाद ॥ ऋजुन्नावे
पन्नवणिज्जता ॥ किरियामांहोनित्येंअप्रमाद ॥ सा० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवे सातलक्षणकहेछे सर्वक्रिया प्रत्युपेक्षणादि तेमार्गानुसारणी जे मोक्षमार्गने अनुजायीचेष्टाहोय तेप्रथमलक्षण तथाधर्मनेविषे श्रद्धाके० करवानीइच्छा प्रवरके० प्रधान अविवादके० विवादरहित तेवीजुंलक्षण अनेपन्नवणिज्जताके० प्रज्ञापनीयपणुं एटले परुपणाकरवी ते ऋजुन्नावेंके० सरलन्नावें एटले तेनी परुपणा तेअसदन्निनिवेश कदाग्रहेंनहोय एत्रीजुंलक्षण वली क्रियाजे शुन्नहितअनुष्ठान तेनेविषे निरंतर अप्रमादीहोय पणशिथिलनहोये एचोथुंलक्षण ॥ २ ॥

निजशक्तिसारुंकाजनो ॥ आरंन्नगुणअनुराग ॥ आराध
नागुरुआणनी॥ जेहथीलहियेंहोन्नवजलताग ॥ सा० ॥३॥

अर्थ ॥ तथा पोतानी शक्तिप्रमाणें तपसंयमादिक कार्यनो आरंन्नकरे पणशक्तिने उलंघी तपत्याप्रमुख नकरे एपांचमुं लक्षण अने गुणअनुरागके० गुणीनो पक्ष

पालहोय एवंछुंलक्षण तथा गुरुआज्ञानुं आराधवुं तथा गुरुना आदेशें वर्त्तवुं गुरु नीआणाथी संसारसमुद्रनो पारलहियेंके० पामियें एसातमुं लक्षण॥ ३ ॥

मार्गसमयनीथितितथा ॥ संविज्ञबुधनीनीति ॥ एदोई
अनुसारेक्रिया ॥ जेपालेहोतेनलेहनीति ॥ सा० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवे ऊपरकहेला सातभेदमांथी मार्गानुसारणीक्रिया नामें प्रथमभेदव खाणेछे मार्गके० समयनीस्थिति एटले आगमनी मर्यादा तेआगम केने कहियें यतः आगमोह्याप्तवचन माप्तंदोषक्षयाद्विदुः ॥ वीतरागोनृतंवाक्यं नब्रूयाद्धेतसंभवा त् तेआगमनी स्थिति उत्सर्गअपवादरूप शुद्ध संयमनो उपाय तेमार्ग कहियें अ थवाजे संविज्ञबुधनीनीतिके० संविज्ञ जेमोक्षाभिलाषी अनेबुध तेगीतार्थ इहां ब हुपदअधिकुंकहियें तेवारे एमकहेवुंजे संविज्ञ बहुगीतार्थनी नीतिके० जेआचरण क्रियारूप तेनेपण मार्गकहियें एदोईके० बेअर्थ मार्गनाकह्या तेवामार्गने अनुसार णीजेक्रिया आगमनी अबाधायें संविज्ञ व्यवहाररूप तेमार्गानुसारणीक्रिया कहियें एवी क्रियाजेपालेते नीतिके० संसारनीबीक नलहेके० कदापि नपामे इतिगाथार्थ ह वे संविज्ञ गीतार्थनीनीति एनापदछेदकरियेंछेयें संविज्ञपदकह्युं तेअसंविज्ञपणुं टाल वामाटेकह्युं तोतेघणा असंविज्ञमलीने जेआचर्योहोय तोपण प्रमाण नथाय य तः व्यवहारः जंजीयमसोहिकरं पासछपमत्तसंजयाईहिं ॥ बहुएहिंविआयरियं ॥ नपमाणंसुद्धचरणाणं ॥ १ ॥ इहां बहुगीतार्थपदमूक्यूं तेनुं कारण एजे एकगीता र्थें आचर्युंहोय तेकदाचित् अनाभोगें अनवबोधादिककारणे विपरीतपणे आचर्युं होय तेपण प्रमाण नथाय तेमाटे बहुगीतार्थपद मूक्युं तोते बहुगीतार्थ जेआच रेते अवितथहोय इहांकोइ प्रश्नकरे जेआगम मार्ग कहेवो तेतोयुक्तछे पण बहुज नाचरणकेहेवुं युक्तनथी केमके घणालोकोयें तोलौकिकमार्ग आचर्योहोय माटे आगमतेतोप्रमाण पण घणालोकोनुं आचरण प्रमाण नही वली आगमते ज्येष्ठछे अने बहुजनआचरणाते अनुज्येष्ठछे अने लौकिकमां पण ज्येष्ठनेमूकी अनुज्येष्ठनुं पूजन युक्तनथी तेमज आगमतो केवलीपण अप्रमाण नकरे यतः ओहोसुउवउ त्तो ॥ सुअनाणीजइविगिण्हइअसुद्धं ॥ तंकेवलिविभुंजइअ ॥ पमाणंसुअंनवेइहरा॥१॥ तथा आगमछतां जोआचरणा प्रमाणकरियेंतो आगमनीलघुता थाय हवे गुरुउ त्तर कहेछे जे संविज्ञगीतार्थछे तेआगमनी अपेक्षाविना आचरेजनही तेथुंआचरे नही तथाथुंआचरे तेकहेछे यतः दोसाजेणनिरुंभंति जेणखिज्जंतिपुवकम्माइं ॥ सो

सोमुक्तोयाउ ॥ गेणावहाुतसमणंच ॥ १ ॥ इत्यादिक आगमवचनसंजारी द्रव्य खे त्र काल जाव पुरुषादिकउचितजोइ संयमने वृद्धीकारीज आचरे तेवीजासंविज्ञगी तार्थ पणअंगीकारकरें तेमार्गकहियें अने बीजा बहुलोके आचर्युं तेतो असंविज्ञ अगीतार्थमाटे अप्रमाणने वलीआचरणा प्रमाणकरतां आगमतो अत्यंत प्रतिष्ठा पामेले श्रीठाणांगसूत्रमां पांचप्रकारना व्यवहार प्ररूप्याछे उक्तंच पंचविहे ववहारे पन्नते तंजहा आगमविवहारे सुयववहारे आणाववहारे धारणाववहारे जियवव हारे इहां जितअने आचरणा तेएकजअर्थछे तेमाटेआचारणा मानता अत्यंतपणे आगममान्युं तो आगमअविरोध जेआचरणा तेप्रमाणजछे ॥ ४ ॥

सूत्रजणयुंपणअन्यथा ॥ जुदुंजबहुगुणजाण ॥ संविज्ञवि
बुधेआचर्युं ॥ कांइदिसेछेकालादिप्रमाण ॥ सा० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वली एज वातकहेछे सूत्रेजणयुंके० आगमनेविषे कह्युंछे तोपण अन्यथा के० हेरफेरकरीने बहुगुणजाणके० तेमां घणोगुणजाणीने संविज्ञगीतार्थेलोकें जे आचरणकर्युं तेवी केटलीकवातो दीसेछे पणतेयुंजाणी आचर्युं तेकहेछेजे कालादि प्रमाणके० दुःखमादिकालप्रमुखनुं प्रमाण विचारीने आचर्युं ॥ ५ ॥

कल्पनुंधरवुंझोलिका ॥ जाजनेदवरकदान ॥ तिथिप
जूसणनीपालटी ॥ जोजनविधिछेइत्यादिप्रमाण सा० ॥ ६

अर्थ ॥ वली तेज देखाडेछे कल्पनुंधरवुंके० पूर्वेकल्पजेकपडोतेकारणे उढता त था गोचरीप्रमुखनेविषे वालीने खंदेमूकी चालतां एआगमनो आचारहतो अने ह वेतो गोचरीप्रमुखनेविषे पांगरीनेजावुं तथा चोलपटप्रमुख पणसमजवा पूर्वें कुणी येराखवा हमणाकंदोरे राखियेंछेयें तथापूर्वेंझोलिकाके० झोली मुठीयेंजाली ग्रंथी कुणीयें हुंकडीबांधता अने हमणा हाथमां झालियेंछेयें उपलक्षणथी उपग्रहिक कडासणु संथारीउ दंडासणादिकलेवा तथा तरपणीप्रमुखनेविषे दोरादेवा एम सी कीदोरानी झोलीना आधारविशेष इत्यादिक वली पात्रेलेपदेवा तथा पजूसणनी तिथीजे पांचम तेनीचोथकरी उपलक्षणथी चोमासापुनमनाटाली चउदशनाकर्या तथा जोजनविधिप्रमुख शास्त्रोक्तविनापण आचरितप्रमाणछे जोजनविधिते मांड लीयेंबेसवुं वेचीदेवुंइत्यादिक तथाचव्यवहारजाष्ये ॥ सछपरिणाछकाय ॥ संयमोपि उवत्तरह्राए ॥ रुरकेवसहेगोवे जोहेसाहीयपुरकरिणी ॥ १ ॥ एनोलेशथी अर्थकरे वे जेपूर्वें शास्त्रपरिज्ञाअध्ययन सूत्रार्थजणेके साधुने उवामणकरताहता अने ह

मणा दशवैकालिकनुं चोथुंअध्ययन जणेथके उगवणाथायछे तथा पूर्वें पिंडेप णाध्ययनजण्यापछी उतराध्ययन जणावता हमणा वगरजणेपण जणावियेंछेयें ति हांदृष्टांतकहेछे पूर्वेकल्पवृक्षहता हमणा आंबाप्रमुखें कामचालेछे पूर्वें अतुल्यबल धवल वृषभहता हमणा धुसरेंज कामचालेछे पूर्वें गोपजे करपणी तेचक्रवर्तिने तेजदिवसें धान्य नीपजावीदेताहता आजतेविनापणकामचालेछे तथापूर्वें सह स्रयोधीहता हमणा अल्पपराक्रमीसुभटोंथी पणशत्रूनोपराजयकरी राज्यपालेछे ते म साधुहमणा जितव्यवहारेंपण संयमपालेछे तथा षटमासनुं प्रायश्चित्तहोय तेने हमणा पांच उपवासकह्याछे तथापूर्वेंमहोटी पुष्करणीउंहती हमणा नानीछे तेथी कामचालेछे इत्यादिकदृष्टांते जितव्यवहारपण जाणवो अथवा किंबहुना जंसबहान॥ सुत्ते पडिसिद्धंतेयजीयववहे॥ उत्तंसवंपिपमाणं चारित्तधणाणजणियंच॥१॥ अवलं बिकणकज्जं जंकिंचिसमायरंतिगीयत्था॥ थोवावराहबहुगुणं सव्वेसिंतंपमाणंतु॥२॥ इत्यादिक जेम आर्यरक्षितजीयें आचर्युं तेदुर्बलिकापुष्पमित्रजीयें अंगीकारकर्युं ते मज सुविहीते जेआचर्युं ते सर्वकबूलकरे॥ ६॥

व्यवहारपांचेनापीया॥ अनुक्रमेंजेहप्रधान॥ आजतो
तेमांजीतछे॥ तेतजियेंहोकेमविगरनिदान॥ सा०॥७॥

अर्थ॥ तेमाटेज कहेछे जे पांचव्यवहार कह्याछे तथा अनुक्रमें जे प्रधानहोय ते आदरवो यदुक्तं कितिविहेणंभंतेववहारेपण्णत्ते गोयमा पंचविहे ववहारेपन्नत्ते तंज हा आगमे सुए आणाधारणाजीए जहासेतत्थआगमेसिया आगमेणंववहारंपट्ठवेज्जा णोयसेतत्थआगमेसिया जहासेतत्थसुएसिया सुएणंववहारंपट्ठवेज्जा २ णोयसेतत्थसु एसिया जहासेतत्थआणासिया आणाएववहारंपट्ठवेज्जा ३ णोयसेतत्थआणासियाज हासेतत्थधारणासिया धारणाएववहारंपट्ठवेज्जा ४ णोयसेतत्थधारणासिया जहासेत त्थजीएसिया जीएणंववहारंपट्ठवेज्जा ५ इच्चेतेहिंपंचहिंववहारंपट्ठवेज्जा तं आगमेणंसु एणं आणाए धारणाए जीएणं जहाजहासेआगमेसुएआणाधारणाजीएतहातहाणव हारंपट्ठवेज्जा सेकिंमाहुभंतेआगमबलियासमणानिग्गंथा इच्चेयंपंचविहंववहारं जदाज दाजहिंजहिंतहातहा तहिंतहिं अणिस्सितोवस्सयंसमंववहारमाणे णिग्गंथे आणाए आराहएनवइइतिजगवतिसूत्रेशतकआठमें उद्देशोआठमेंकह्युंछे आजतो तेपांचव्यव हारमां जितव्यवहारमुख्यछे, जितव्यवहारेंज कामचालेछे तेजातव्यवहार विगरनिदान के० कोइपणकारणविनाकेमत्यजियें एटले जितव्यवहार जेआचार्येंबांध्यो तेप्रमाणछे॥

श्रावकममत्वअशुद्धवली ॥ उपकरणवसतिआहार ॥ सुखशी
लजेजनआचरे ॥ नविधरियेंहोतेचित्तलगार ॥ सा० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवेएवीआचरणातेअप्रमाणछे केमके० सिद्धांतमां नाकहीछे जेश्रावक नुंममत्वनकरवुं यतः गामेवा कुलेवा नगरेवा देशेवा ममत्वभावंनकरेंचिकुज्जा इत्यादि श्रावकनुं ममत्वकरे तेअप्रमाणछे तथा अशुद्धमान उपगरण वसति आहारप्रमुख लेवानी आगममां नाकहीछे अने जो लीयेतो तेआचार अप्रमाणछे यतः आगमे पिंडसिज्जंचवत्थंच चउत्थंपायमेवय॥अकप्पियंनइच्छिज्जा पडिगाहेज्जकप्पियं ॥ १ ॥ इतिउपलक्षणथी वस्त्रपात्रादिकपण एमजाणवामाटे सुखशील लोकें जेआचर्युं एटले पोताना शरीरनी शोभानेअर्थे जेआचर्या तेअप्रमाण वाकी दुर्भिक्षादिक कारणे तोकांइ अशुद्ध लीयें तोपण निर्दोषछे यतः पिंडनिर्युक्तौ॥एसोआहारविहि ॥ जहभणीउसव्वभावदंसीहि ॥ धम्मावस्सगजोगा जेणनहायंतितंकुज्जा ॥ १ ॥ तथा कारणपडिसेवापुण भावेअणासेवणत्तिदिठ्ठव्वा॥आणाइतिभावे सोसुद्धोसुरकहेउत्ति॥ २॥ इत्यादिवचीववाइसूत्रे शुद्धेसणीए एवा अभिग्रह मुनियेंकर्या तेथी जाणियेंछेयेंजे पूर्वे अशुद्धपणकोइक कारणे लेतादीसेछे एअपवादतो प्रमाणछे पणसुखशीललोकेंजे आचर्युं ते चित्तमां लगार पणनधरियें एटलेए भावजे दुःप्रसहआचार्यलगें तो चारित्रसिद्धांतमां सांभलियेंछेचे अनेजो मार्गानुसारीक्रिया कहि तेरीतेंयत्नकरताहोयतेनेचारित्रीया नमानियें तो एथी बीजा चारित्रीया तोदेखातानथी तेवारे चारित्रविछेदगयो एम थयुं तोतेचारित्रविना तीर्थपण विछेदगयुं एमथयुं एम करतातो आगम विरुद्ध थायछे यतः व्यवहारभाष्ये जोभणइनत्थिधम्मो नयसामाइयं नचेववयवयाइं ॥ सो समणसंघवज्झो कायव्वोसमणसंघेण ॥ १ ॥ इत्यादिवचने तोमार्गानुसारीक्रियानो करनार तेभावसाधुछे एम थयुं एप्रथमक्रियानामाभेदथयो ॥ ८ ॥

विधिसेवनाअवितृप्तिशुभ ॥ देशनाखलितविशुद्धि ॥ श्रद्धा
धर्मइछाघणी ॥ चउभेदहोएमजाणेसुबुद्धि ॥ सा० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ हवे बीजुंलिंग श्रद्धाप्रवरनामाकहेछे तेना भेदचारछे तेकहेछे १ विधिसेवना २ अवितृप्तिके० अतृप्ति ३ शुभदेशनाके० शुद्धदेशना ४ खलित परिशुद्धिनामा चोथुंलिंग ते श्रद्धाप्रवरनोअर्थकहेछे श्रद्धाके० धर्मनीइछा घणीके० अत्यंतहोय पण बालकने रत्नग्रहवानी अभिलाषानी पेरें सामान्यपणे विषयप्रतिभास मात्रनहोयते एम ऊपरकह्या चारभेदएलिंगहोय तेजाणे सुबुद्धिके० बुद्धिवंतहोय तेजाणे ॥ ९ ॥

दृढरागछेशुभभोज्यमां ॥ जेमसेवतायेंविरुद्धि ॥ आपदा
मांरसजाणने ॥ तेममुनीनेहोचरणेंतेशुद्धि ॥ सा० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवे एश्रद्धाप्रवरनाचारभेदमां प्रथम विधिसेवनामेंभेदश्रोलखावेछे जे शक्तिवंतहोयतेश्रद्धावंतथको विधिप्रधानशक्तिवंतप्रत्युपेक्षणादिक क्रियाकरे अने जे शक्तिरहित होयते द्रव्य क्षेत्र काल तथा भावेंकरी जोताद्दशक्रियाकरी नशके तो पणप्रतिबंधते विधिअनुष्ठाननेविषेज होय यतः विहिसारंचियसेवइ सद्धालूसत्तिमं अणुठाणं ॥ दव्वाइदोसनिहउवि ॥ परकवायंवहइतंमि ॥ १ ॥ इहां कोइपुछेजे शक्ति रहितजे होय तेअनुष्ठान नकरे अनेविधिअनुष्ठानमां पक्षपातिकेमहोय तेनेअन्वय सहित गाथानाअर्थथीकहेछे जेमकोइक पुरुषहोय तेडकाल अथवादरिद्रपणुंपाम्यो तोतेपुरुष गोआर अरणीपत्र तथावृक्षनीछालप्रमुखखाइने दिवसव्यतिक्रमे पणतेवा भोजनमां लंपटायनही केमके पोते उत्तम आहारनो स्वादजाणेछे तेथी तेनोराग तो उत्तमभोजनमांज होयछे जे उत्तमभोजन केवारेंमलशे तेमलेतो वावरियें एवो अत्यंतरागहोय हवे अक्षरार्थ करेछे जे शुभभोज्यमां दृढरागछे तथा रसनो जाणते केमजे पूर्वेषटरस वावस्याछे तेस्वादनो जाणछे तेआपदामांके० डुकालादिक आप दामां विरुद्धसेवतो एटले कुधान्य खातोथको पण तेनोराग सुधान्यमां होय एदृष्टांतें मुनीनेपण चारित्रनी शुद्धि जाणवी एटले यद्यपिद्रव्यखेत्रादिक कारणपामी ने विरुद्ध सेवे तोपण शुद्धचारित्रनो रसीउछे तेथी भावचारित्रने उल्लंगेनहीतेनेभावथी चारित्री याज कहियें संगमाचार्यनी पेरें इत्यादिक बहुवक्तव्यताछे इतिप्रथमभेदः ॥ १० ॥

जेमतृप्तिजगपामेनही ॥ धनहीनलेतोरत्न ॥ तपविनय
वेयावचप्रमुख ॥ तेमकरतोहोमुनिवरबहुयत्न ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे अतृप्तिनामा वीजुं लक्षणकहेछे जेम धनहीनके० दरिद्रीहोय तेने रत्ननो ढगलोमल्यो तेवारें तेरत्नलेतां जगतमां तृप्तिके० संतोषपामेज नही तेम मुनीपण तप विनय वेयावच्च तथा प्रमुखशब्दें ज्ञानचारित्र तेहनेविषे घणोयत्नकरे यत्नकरतो थाकेजनही तृप्तिपामेजनही तेमां तपकरतांथकांतो निर्जराथाय तथाशा सनदीपे तेप्रसिद्धछे तथा विनयनो अधिकार उत्तराध्ययनना पेहेलाअध्ययनथीजा णवो अने वेयावच्चपण निर्जराने अर्थे अनेकप्रकारनुंकरे तेप्रश्नव्याकरणसूत्रथी जोजो तथा ज्ञानभणतांपण नवनवोवैरागउपजे यतः जहजहसुयमवगाहई अइ

सयरसपसरसंजुयमउव्वं ॥ तह्तह्पह्लाइमुणी नवनवसंवेगसद्धाइ ॥ १ ॥ इत्यादि त था चारित्रमांपण विशुद्ध विशुद्धतर संयमस्थानक पामवानेसर्वअनुष्ठानकरे उत्तरो त्तरसंयमकंमकआरोहतां अप्रमादपणे केवल ज्ञाननालाभ नणीथायज यतः जोगे लिए सासणंमिइरकरकयापउक्कंति ॥ इक्किक्कंमिअणंता वहंताकेवलीजाया ॥ २ ॥ इत्यादिबीजोभेदकह्यो ॥ ११ ॥

गुरुनीअनुज्ञालेइने ॥ जाणतोपात्रकुपात्र ॥ तेमदेश
नाशुद्धिदिए ॥ जेमदीपेशोनिजसंयमगात्र ॥ सा० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवे शुद्धदेशनानामा त्रीजुंलक्षण कहेछे गुरुनी अनुज्ञाके० आज्ञालेइ तेमज शुद्धिदेशनाआपे तेपण पात्रकुपात्रने जाणतोथको जेमसंयमरूप गात्रके० शरीर ते दीपेके० शोभे निजके० पोतानुं संयमरूपगात्र शोभेइत्यक्षरार्थ एटले एवा वजे सद्गुरुपासेथी सिद्धांतनो सारजाणी गीतार्थपणोहोय तोपण गुरुनी आज्ञाले इने पण पोतानीमेलेनही पोतेधन्यथको मध्यस्थपणे सद्भूतदेशनाआपे पणपात्रकु पात्रउलखीने देशनाआपे तेपात्रना त्रणभेदछे १ बाल २ मध्यम ३ बुद्ध यतः बा लःपश्यंतिलिंगं मध्यमबुद्धिविचारयेतवृत्तं॥आगमतत्वंतुबुधः परीक्षतेसर्वयत्नेन ॥१॥ इत्यादिक तेनीदेशनानीविधि बीजापोडशकथकी जाणवी इहां विस्तारथाय माटे न थीलखता तेमाटे जेपात्रने जेमउपगारथाय तेमतेपात्रने देशनाआपे अन्यथा संसा रवधारे इत्यादिक त्रीजुंलक्षण एत्रीजालक्षणमां पात्रापात्रविचार प्रमुखनी चर्चाय णीछे तेधर्मरत्नग्रंथथी जोजो जेम पोतानुसंयमगात्रशोभे ॥ १२ ॥

जेकदाचितलागेव्रतें ॥ अतिचारपंककलंक ॥ आलोयणें
तेशोधतां ॥ मुनिधरेश्रद्धानिःशंक ॥ सा० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवे खलितपरिशुद्धीनामा चोथुंलक्षणकहेछे तेजे कदाचित व्रतपालतां थकां कोइअतिचाररूप पंकके० कचरो तद्रूपकलंक जोव्रतने विषेलागे तेपण अना भोगेकरी अतिचारलागे १ प्रमाद २ दर्प्प ३ कल्प एत्रणरीतेलागे अने चोथो आकु ट्टियेंतोप्रायेंचारित्रीयाने संभवेजनही तेआकुट्टिप्रमुखनुं स्वरूपएछे यतः आउट्टिया उविच्चा दप्पोपुणहोइवग्गणाईउ ॥ विगहाईउपमाउ कप्पोपुणकारणेकरणं ॥ १ ॥ उपलक्षणथी अनेकप्रकारनी प्रतिसेवाछे तेसर्वएमांसमाय तेप्रायश्चित्तादिकलेइने शु द्धथाय एरीते करतोमुनिराज निःशंकपणेश्रद्धाधारे एचोथोभेदथयो ॥ १३ ॥

श्रद्धायकीजेसर्वलहे ॥ गंभीरआगमभाव ॥ गुरुवचनपेन्न
वणिक्कते ॥ आराधकहोहोवेसरलस्वभाव॥ सा० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ हवे बीजालक्षणनो उपसंहारकरतांत्रीजुंलक्षण कहेछे आखीगाथानोअ र्थ जेलोलिखियेंछैयें १ विधि २ उद्यम ३ नय ४ वर्णव ५ उत्सर्ग ६ अपवाद ७ तद्भ नय इत्यादिक आगमना जेगंभीरभावछे तेश्रद्धायकी सर्वे जाणे जोएसर्वेभाव नजा णेतो जमालीनीपेरेंमिथ्यात्वी थइजाय एबीजालक्षणनो उपसंहारथयो हवे त्रीजुंल क्षणकहेछे जेएवा भावनाजाणहोय तेगुरुनेवचने पन्नवणिज्जके० प्रज्ञापनीय एटले परूपवायोग्य पदार्थनो सरलस्वभावें उपदेश करतोथको आराधकहोय एत्रीजुंलक्षण

पटकायघातप्रमत्तने ॥ पडिलेहणादिकयोग ॥ जाणीप्रमादी
नविहोए ॥ किरियामांहोमुनिशुभसंयोग ॥ सा० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेक्रियानेविषेअप्रमादनामा चोथुंलक्षणकहेछे प्रमत्तके० प्रमादीने प डिलेहणादिकयोगवंतनेपृथिव्यादिक छकायनो घातथायछे एटलेएनावजे उपयोगवि ना प्रमादीथको पडिलेहणादिककरतो छकायनो विराधकथाय अनेउपयोगेंकरतो आराधकथाय यतः पडिलेहणंकुणंतोमिहो कहंकुणइजणवयकहंवा ॥ देइपच्च रकाणं वाएइसयपडीच्छइवा ॥ १ ॥ पुढवीआउक्काए तेऊवाऊवणस्सइतसाणं ॥ पडिलेहणापमत्तो छन्हंपिविराहउहोइ ॥ २ ॥ पुढवीआउक्काए ॥ तेऊवाऊव णसइतस्साणं ॥ पडिलेहणाआउत्तो छन्हंपिआराहउहोइ ॥ ३ ॥ इत्युत्तराध्यन छवीसमेंअध्ययने माटे एवुंजाणीपडिलेहणादिकयोगमांप्रमादी नहोय प्रमादकरतां जैनदिक्षावंत पणसंसारभमे आर्यमंगुनीपेरें माटे क्रियामां मुनिराजतेशुभसंयोग के० भलायोगवंत होय भलीक्रियानो संयोगकरे आगममां अनेकप्रकारनी क्रियाक हीछे तेसर्वेभलीरीतेंकरे एचोथुंलिंग ॥ १५ ॥

जेमगुरुआर्यमहागिरी ॥ तेमउद्यमेबलवंत ॥ बलअविषय
नवीउद्यमें ॥ शिवभूतिहोजेमगुरुहीलंत ॥ सा० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवे शक्तिअनुछाननामा पांचमुंलक्षणकहेछे तेजेम गुरुश्रीआर्यमहागिरि जीयें उद्यमकर्यो तेमबलवंतथको उजमेके० उजमालथाय एटले एनावजे संघयणी धृतिप्रमाणे निरवाहीशके तेक्रियानेजसुसाधुप्रारंभे पणप्रतिज्ञाभंगथाय तेवुंप्रारंभेन

ही वलञ्अविपयके० जेक्रियामां पोतानुं वलनचाले तेमांउद्यमनकरे अने करेतोउलटी खोटआवे यतः सोडुतवोकायद्यो जेणमणोमंगुलंनचिंतेइ ॥ जेणनइंदियहाणी जेण यजोगानहायंति ॥ १ ॥ इति जेमशिवनूतियें शक्तिउल्लंघनकरी गुरुवचन लोपीने गुरुनी निंदाकरवालागो तेरीतेंउत्तमसाधुनकरे इहांआर्यमहागिरी तथाशिवनूतीनो अधिकार धर्मरत्नग्रंथमांलख्योछे तेथीजाणवो ॥ १६ ॥

गुणवंतनीसंगतिकरे ॥ चित्तधरतगुणअनुराग ॥ गुणलेश
पणपरनुंथुणे ॥ निजदेखेदोअवगुणवडनाग ॥ सा०॥१७॥

अर्थ ॥ हवे छठोगुणानुरागनामा नावसाधुनुं लिंग कहेछे जे एवा चारित्रीयाहो य तेगुणवंतनीज संगतकरे अने पोताना चित्तनेविषे गुणनोज अनुरागके० रागधरे यतः वयसमणधम्मसंयम वेयावच्चंचवंनगुत्तीउ ॥ नाणाइतियंतव कोहाइति ग्गहाचरणमेयं ॥ १ ॥ एचरणसित्तरीकही तथा पिंडविसोहिसमइ नावणपडि माउइंदियनिरोहो ॥ पडिलेहणागुत्तिउ अनिग्गहाचेवकरणंतु ॥ १ ॥ एकरणसित्तरी इत्यादिक गुणनोरागधरे अनेबीजामां गुणनो लेशहोय तेपण स्तवे श्रीकृष्ण जेम कालाकुतराना दांतवखाण्या तेनीपेरें तथानिजके० पोतानाअवगुण देखे वडनागके० मोहोटा नागनोधणी जेमवेश्रावककालादेहरामां पेठा तेम पोताना अवगुणदेखे॥१७

गुरुचरणसेवारत्तहोइ ॥ आराधतोगुरुआण ॥ आचार
सर्वनोमूलगुरु ॥ तेजाणेहोचतुरसुजाण ॥ सा०॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवेगुरुआणाआराधननामा सातमुंलक्षणकहेछे इहांकोइपुछेजे नावसा धुनालिंग शास्त्रांतरमांतोछकह्याछे यतः मग्गाणुसारीसड्ढो पन्नवणिज्जोकिरियापरो चेव॥गुणरागी सक्कारंन संगउतहयचारित्ती ॥ १ ॥ एरीते छगुणकह्याछे तोनमे सात मोगुणकहांथकी कह्योछो तेनेउत्तरकहेछेजे चौदसेंचुमालीस प्रकरणरूप प्रसादनेविषे सूत्रधारसरिखा श्रीहरिभद्रसूरि तेणेउपदेशपदनामा ग्रंथनेविषे सातमुंलिंगपणकह्युं छे तथाचतत्सूत्रं एयंचअहिलरकणंमि ॥ मस्सनियमेनवयन्नस्स ॥ गुरुतहगुरुआणा संपा॥डणंचगमानेहलिंगं॥ इत्यलंविस्तरेण माटे सातकहियेंछयें हवेसातमांलक्षणनुं स्वरूपकहेछे गुरुजेछत्रीसछत्रीसीगुणे विराजमान तेनाचरणनी सेवानेविषे रक्तहोय तथा गुरुआदिकनी आज्ञाआराधतोपको वलीने साधुमुन जाणेजे सर्वआचारनुं मू लतेगुरुछे गुरुथीलवे प्रगटथाय तेचतुरसुजाण एमजाणे एसातमोगुणकह्यो ॥१८॥

एसातगुणलक्षणवरयो ॥ जेन्नावसाधुउदार ॥ तेवरेसुख
जशसंपदा ॥ तुजचरणेहोजश्नक्तिअपार ॥ सा० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ एसातलक्षणनेगुणेकरीवखोथको एवोजेनावसाधु उदारके० प्रधान ते सुखजशनी संपदा नेवरेके० पामे एटले उत्कृष्टजे मोक्षसुखतेनेतो तेवरेजेहेसर्वज्ञ केवलज्ञानज्ञास्कर तमारा चरणनेविषे जशके०जेने अपारज्नक्तिहोय तेवरे॥१९॥ एढालमां प्रथमथीमांमीने जेटली वात टवामां लखीने तेसर्वधर्मरत्नसूत्रवृत्तीथील खीने पण तेग्रंथमां विस्तारघणोने तेजोइलेजो एचउदमां ढालमां साधुना लक्षण कह्या तेलक्षण कहेला मुनिराजऊपर बहुमानउपनुं तेबहुमानना हर्षेकरी पन्नर मो ढालमध्ये साधुना गुण वर्णन करेने एसंबंधेपन्नरमोढालकहेने ॥

ढालपन्नरमोआजमारेएकादशीरेनिणदलमौनकरीमुखरहीयेंएदेशीने

धन्यतेमुनिवरारे ॥ जेचालेसमन्नावें ॥ न्नवसायर
लीलातरे ॥ संयमकिरियानावें ॥ धन्य० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ जे मुनीमांप्रधानसरिखा समनावे चालनारा रागद्वेषरहितपणेविचरे ते मुनिराजनेधन्यने तेमुनिसंयम जेचारित्र तेनी जेक्रियातद्रूप नावेंके० नावायेंकरीने नवसायरके० संसारसमुद्रनो लीलायेंके० सेहेजमां पारउतरेने ॥ १ ॥

न्नोगपंकतजीऊपरबेठा ॥ पंकजपरेंजेन्यारा ॥ सिंहपरें
निजविक्रमशूरा ॥ त्रिभुवनजनआधारा ॥ धन्य० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ न्नोग जेपंचेंद्रीना विषय तद्रूपजे पंकके० कचरो तेतजीने ऊपरबेठाके० अलगारह्या अने पंकजके० कमलनीपेरें जेन्याराने एटलेकमल तेकचराथी उपनो अने कचराथी न्यारोरहे तेम मुनिराजपण न्नोगरूप कचरामांउपना अने तेन्नोगथां मीने अलगा रह्या इतिन्नावः वली सिंहनीपेरें पोतानो विक्रमके० पराक्रम फोरववा नें शूरवीरने वलीस्वर्ग मृत्युने पातालरूप जेत्रणभुवननालोकने आधाररूपने ॥ २ ॥

ज्ञानवंतज्ञानीसुंमलता ॥ तनमनवचनेसाचा ॥ द्रव्यन्ना
वसुधाजेन्नापे ॥ साचीजिननीवाचा ॥ धन्य० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवे स्याद्वादशैली देखाडतायका मुनिराजनुं वर्णनकरेने पोतेज्ञानवं तने तथा ज्ञानीपुरुषसायें मलीरहेने पणखेदधरतानथी वली तनके० काया अनेम

न तथावचनेकरीसाचाछे पण जूठीप्रवृत्तिनथी वली जेमुनिद्रव्यथी तथा भावाथी सू धाभापेके० सत्यबोले एटले द्रव्यते षट्द्रव्यादिक अने भावते तेनापर्याय अथवा द्रव्यथी बाह्यवस्तु अने भावथी अभ्यंतरवस्तु तेसत्यकहे इत्यादिक अनेकप्रकार ते जिनेश्वरनी वाणीकहिये तेनेसाचीकहे एटले शुद्ध परुपकहोय इतिभावः ॥ ३ ॥

मूलउत्तरगुणसंग्रहकरता ॥ त्यजताभिक्षादोषो ॥ पग
पगव्रतदूषणपरिहरता ॥ करतासंयमपोषो ॥ धन्य०॥ ४ ॥

अर्थ ॥ मूलगुणजे पंचमहाव्रतादिक अने उत्तरगुणपिंडविशुध्यादिक तेनो संग्र ह करताके० राखता वली भिक्षा जेगोचरी तेना बेंतालीसदोष तेने त्यजताके० छां डता पगपगके० क्षणेक्षणे व्रतना दूषणजे अतिचार तेने परिहरताथका एरीते सं यमने पोषेके० पुष्टकरतारहेछे ॥ ४ ॥

मोहप्रतेंहणतानितआगम ॥ भणतासदगुरुपासें ॥ दूषम
कालेंपणगुणवंता ॥ वरतेशुभअभ्यासें ॥ धन्य० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तथा शुभअध्यवसायेंकरी मोहरूप शत्रूने हणता तथा नितके० निरंतर आगमके० सिद्धांतने सदगुरु पाशेथीभणता एवाविषमकालें पंचमआरेंपण गुणवं ता पुरुषछे ते रुडेअभ्यासेवर्त्तेछे एटले पूर्वार्द्धमांज्ञानकह्युं अनेपश्चिमार्द्धमांक्रियाकही

छठ्ठुगुणठाणुंभवअडवी ॥ उलंघणजेणेलहिउं ॥ तससो
भागसकलमुखएके ॥ केमकरिजाएकहिउं ॥ धन्य० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ प्रमत्तनामा छठुंगुणठाणुं तेकहेवुंछे जे भवअडवी उलंघणके० संसार रूपअटवीनो पारपमाडनारुंछे ते जेणे लहिउंके० जेपुरुषेपाम्युं यतः भवाटवीलंघन तुल्यमेतत् प्रमत्तनामक्रिययालमेतं ॥ गुणंगुणस्थानमसंख्यवृध्या प्रमादहानैःप्रव रंभजात्या ॥ १ ॥ तेमुनिराजनुं समस्तसौभाग्य तेएकेमुखे शीरीते कह्युंजाय ॥ ६ ॥

गुणठाणानीपरिणतिजेहनी ॥ नठीभवजंजाले ॥ रहे
शेलडीढांकीराखी ॥ केतोकालपराले ॥ धन्य० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥जेपुरुषने गुणठाणानी परिणतियथीहोय एटलेगुणठाणोपरणम्युंहोय तेनी परिणति भवजंजालेके० संसारविटंबनामां छीपेनहीके० छानीरहेनही तेपुरुष संसारमां

रह्योथको पण उदासीनज देखाय केनीपेरें जेमशेलडीने परांले करीढांकीराखीहोय तेकेटलोकालरहे आगलजातां अंकुराफूटे तेवारें प्रगटथाय पण ज्ञानीनरहे ॥ ७ ॥

तेहवागुणधरवाअणधीरा ॥ जोपणसूधुंनापी ॥ जिनशा सनशोभावेतेपण ॥ सुधासंवेगपापी ॥ धन्य० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेमुनिराजना पूर्वोक्तगुण धरवाने जेअणधीराके० असमर्थहोयएटले एहवा गुणजेसाधुधरीशकेनही तोपणजे सूधुंनापीके० शुद्धपरुपकहोय अनेदेशना प्रमुखगुणेकरीने जिनशासनने शोभावे तेपण सुधाके० शुद्धसंवेग पक्षीकहियें यतः संविग्गपक्कियाणं लक्कणमेयंसमासउंभणियं ॥ उसन्नचरणकरणा विजेणकम्मं विसोहंति ॥ १ ॥ सुद्धंसुसाहुधम्मं कहेइनिंदइयनियमायारं ॥ सुतवस्सियाण पुरउं होइअसव्वोमराइणिउं ॥ २ ॥ इत्याद्युपदेशमालायां ॥ ८ ॥

सद्दहणाअनुमोदनकारण ॥ गुणथीसंयमकिरिया ॥ व्यव हारेंरहियातेफरशे ॥ जेनिश्चयनयदरिया ॥ धन्य० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ सद्दहणाके० तत्वश्रद्धा अनुमोदनके० गुणवंतनी प्रशंसाकरवी तथा कारणके० मोक्षसाध्यनासाधन इत्यादिक गुणथीके०पूर्वोक्त गुणेकरीने जे व्यवहार मार्गेरह्या एवाजेपुरुष तेणे फरशेके० संयमक्रिया फरसीज एमजाणवुं केमकेजे नि श्चय नयरूपमतना समुद्रछे यतः सद्दहणाजाणणाणु मोयणकारणगुणापरेशिंजे णिछयववहारविक तेसिंकिरियाभवेभावा ॥ १ ॥ इतिसंमतिवृत्तौ ॥ ए ॥

दुःकरकारथकीपणअधिका ॥ ज्ञानगुणेईमतेहो ॥ धर्मदा सगणीवचनेलहियें ॥ जेहनेप्रवचननेहो ॥ धन्य० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ दुःकरकारयकीके० दुःखेथाय एवा कष्टना करनाराहोय अने अल्पआ गमना धणीहोय तो शोकामआवे तथा कष्टादिक थोरुंउंतुंहोय अने ज्ञानीपुरुषहो य तोतेज्ञानगुणेकरी कष्टनाकरनारथी अधिकाकह्याछे एम धर्मदास गणीयें उपदेश मालामध्ये कह्युंछे यतः नाणाहिउंवरतरं हीणोविहुपवयणंपभावंतो ॥ नयदुक्करंकरं तो सुट्ठुविअप्पागमोपुरिसो इतिवचनात् तेधर्मदासगणी केहेवाछे जेने प्रवचनके० आगमनेविषे घणोस्नेहहतो ॥ १० ॥

सुविहितगछकिरियानोधोरी ॥ श्रीहरिभद्रकहाय ॥ एह भावधरतोतेकारण ॥ मुझमनतेहसुहाय ॥ धन्य० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ सुविहितके० नलाआचारवंत गछछेजेहनो तथा वली क्रियावंतमां धोरीसमान एवा श्रीहरिभद्रसूरि १४४४ ग्रंथनाकर्त्ता शास्त्रकारेंकह्याछेते एहनावके० एसंवेगपक्षीना नावने धरनारहता तेकारणे माराचित्तमांपण तेसुहायछे गमेछे एटले तेसंवेगपक्षी शुद्धपरुपक यथाशक्तियें क्रियावंतहतामाटेमारा मनमांते घणागमेछे ११

संयमठाणविचारीजोता ॥ जोनलहेनिजसाखें ॥ तोजू

ठुंबोलीनेदुरमती ॥ शुंसाधेगुणपाखे ॥ धन्य० ॥१२॥

अर्थ ॥ वली संयमठाणके० संयमनास्थानक असंख्याताछे तेविचारीजोताके० विचारतां जोपोतानी साखें नलहेके० नदेखे संयमनीवाततो मोहोटीछे तेआगमने मेले जुएतो पोतामां कहांवीदेखे तो जूठुंबोलीने संयमविना संयमीनाम धरावीने दुरमतिके० हेदुष्टमतीनाधणी गुणपाखेके० गुणविना शुंसाधेछे गलीमेनतकांकरेछे यतः असंजएसंजमणमाणे पावसमणेत्तिवुच्चइइत्युत्तराध्ययनवचनात् ॥ १२ ॥

नविमायाधर्मेंनविकेहेवुं॥परजननीअनुवृत्ति॥धर्मवचनआ

गममांकहियें ॥ कपटरहितमनवृत्ति ॥ धन्य० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ नविमायाधर्मेके० धर्मनेविषे मायानथी एटले मायाकरतां धर्मनहोय वली परजननी अनुवृत्तिके० परनाअनुजायीपणे अथवा परने अवर्जननेअर्थे न विकेहेवुंके० धर्मदेशनाप्रमुख धर्मवचन नकेहेवुं एम आगमजेउपदेशमाला तेमांकहियेंके० वक्रोक्तियेंकहियेंछेयें एटले कह्युंछे यतः धम्मंमिनछिमाया नयकवमंच पुच्छतियंचेव ॥ कुडपागडमकडिल्लं धम्मवयणमुज्जुयंजाण ॥ १ ॥ इत्युपदेशमालायां तेधर्मवचनकेवुंछे जे कपटरहित सरलमननीवृत्तिहोय एरीते धर्मवचनकहे १३

संयमविणसंयततायापे ॥ पापश्रमणतेभाष्यो ॥ उत्तराध्य

यनेसरलस्वभावे ॥ शुद्धपरुपकदाख्यो ॥ धन्य० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वली पोतामांसंयम नहोय अने संयततायापे एटले साधुपणुं वेरावे जेअमे साधुछयें तेमुनीने पापसाधु कह्योछे तेमाटे सरलके० ऋजुस्वभावनोधणी ते ऋजुस्वभावेंकरीने शुद्धपरुपक कह्योछे एटलेसरलस्वभावीहोय तेशुद्धकहे माटे होय तेवुंज केहेवुं यतः समंदमाणिपाणाणि वीयाणीहरियाणिय ॥ असंजएसंजयमन्नमाणे पावसमणतिवुच्चइ ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययनेसतरमेंअध्ययनें ॥ १४ ॥

एकबालपणकिरियानयेंते ॥ ज्ञाननयेंनविबाला ॥ सेवायो
ग्यसुसंयतनेते ॥ बोलेउपदेसमाला ॥ धन्य० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एकबालके० कोइक बालछे पणकिरियानयें के० क्रियामां शिथिलछे एटलेक्रियानयेबालछे पणज्ञाननयेंनी अपेक्षायेंतो बालनथी के० गीतार्थछुद्नापीछे तेगीतार्थ सुसंयतके० नलाक्रियावंतसाधुनेपण सेववायोग्यछे एटलेक्रियावंतमुनि ते क्रियारहितगीतार्थनो वैयावच्चकरे एमउपदेशमालामध्येबोल्युंछे यतः हीणस्सविसुद्ध परुवयस्सनाणाहियस्सकायवं॥ जणचित्तगाहणछं करितिलिंगावसेसेवि ॥ १ ॥ १५ ॥

किरियानयेंपणएकबालते ॥ जेलिंगीमुनिरागी॥ ज्ञानयो
गमांजशमनवरते ॥ तेकिरियासोभागी॥ धन्य० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेक्रियानयनीअपेक्षायें बालछे एटले क्रियावंतनथी शिथिलक्रियावंत छे एवाजे लिंगीके० केवलसाधुनुंलिंगमात्र राखेछे पणजो मुनिरागीके० गुणवंतमुनी नारागीछे एटले पोते गुणवंतनथी पण गुणीनारागीछे तेकेवारेपोतेपणज्ञानीथाय तेमाटे केहेछे जे ज्ञानयोगमां जशमनवरतेके० एरीते जेनुंमन ज्ञानयोगमां वर्त्तेछे तेनी अल्पक्रियापण सोभागीके० सोभाग्यवंतजाणवी इहां अल्पक्रिया एवो अर्थ करियें तोपूर्वापरसंबंधमले एटले एभावजे पोतेअल्पक्रियावंत होय पणमुनिनो रागीछे तोएरीते ज्ञानयोगमांवर्त्ततां अल्पक्रियापणसोभाग्यवंती जाणवी ॥ १६ ॥

बालादिकअनुकूलक्रियाथी ॥ आपेंइछायोगी॥ अध्यात्म
मुखयेगअन्यासें ॥ केमनवकहियेंयोगी ॥ धन्य० ॥ १७॥

अर्थ ॥ आपेंके० पोते इछायोगीथकोरहे एटले योगत्रणप्रकारना कह्याछे १ इछा योग २ शास्त्रयोग ३ सामर्थ्ययोग तथापुनः श्रद्धानो विकलो १ वाक्याविकलं २ श क्यतिक्रम इतियोगनिर्णये एत्रण योगमां प्रथम इछायोगते श्रद्धाअविकलथकां आपेंके० पोते श्रद्धावंत अने क्रियावंतहोय तो तेक्रियाथी बालादिकअनुकूलके० बालजीवमार्गना रागीथाय एटलामांएवडोगुणछे तो अध्यात्ममुखके० अध्यात्मप्रमु ख योगसाधननामेंयोनो अन्यासकरे एटले अहोरात्री अध्यात्ममां मग्नरेहे तेपुरुषने योगीश्वर केम नकहियें एटले श्रद्धावंतथकोक्रियाकरतो बालजीवने उपकारीथायछे अनेसाधु केहेवापनेछे तोअध्यात्ममां मग्नरेहेतां साधुमुनीनेयोगी केम नकहियें ॥ १७ ॥

उचितक्रियानिजशक्तिछंडि ॥ जेअतिवेगेचढतो ॥ तेजवथि
तिपरिपाकथयाविण ॥ जगमांदिसेपडतो॥ धन्य०॥ १८ ॥

अर्थ ॥ वली अध्यात्ममार्गे पणपोतानी उचितशक्तियें क्रियाकरतो साधे अने यथाशक्ति क्रियामूकीने शक्तिउल्लंघनकरे तोतेने गुण नथाय माटे जेटली पोतानी शक्तिहोय तेटलीज क्रियाकरवी एनुंनाम उचितक्रियाकहियें तेरीतेनकरे अनेजे अतिवेगेचढतोके० शक्तिथी अधिककरे एटले एनावजे शक्तिने अजावें उपवास छठप्रमुखकरे अथवा आतापना लेवाजाय इत्यादिक कामकरतो तेप्राणीपण जवस्थिति परिपाक थयाविना जगतमां पडतादेखियेंछैयें एटले एनावजे शक्तिउल्लंघनकरीने अधिककरवाजाय अने जवस्थिति पाकीनथी तेथीपरिणामे टकेजनही परिणाम पडताजहोय शुकमालिकाप्रमुखनीपेरें इतिजावः ॥ १८ ॥

माचेमोटाईमांजेमुनी ॥ चलवेफाकफमाला ॥ शुद्धपरुपणगु
णविणनघटे ॥ तसजवअरहटमाला ॥ धन्य० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ वलीजे मुनी पोतानी मोटाइमां माचेके० रीजपामें एटले थोडीक्रियाप्रमुख आवडीहोय तेमां मगनरहे जेअमे समजुछैयें तथा फाकफमालचलावे एटलेलोकमां आमंबरयणोदेखाडे पणशुद्ध परुपकगुणविना तेनी जवके० संसाररूपअरहटनी माला ते घटेनही उंछीथायनही एटलेशुद्धपरुपकगुणविनासंसार उंछोनथाय॥१९॥

निजगणसंचेमननविखंचे॥ ग्रंथजणीजनवंचे ॥ लुंचेके
शनमुंचेमाया ॥ तोव्रतनरहेपंचे ॥ धन्य० ॥ २० ॥

अर्थ ॥ निजगणके० पोतानोजे गछसमुदाय तेने संचेके० जलाकरे जेअमारा श्रावकश्राविका साधुसाधवी इत्यादिक उपर ममत्वकरे मन नवीखंचेके० पोतानुं मन हीणीप्रवृत्तिथी खेंचीराखेज नही ग्रंथजणीके० इव्यनेअर्थे जनवंचेके० लोक नेठगे अथवा ग्रंथके० सिद्धांतशास्त्र जणीके० अध्ययनकरीने लोकनेठगे उत्सूत्रपरुपणाकरी लोकने दुर्गतियेंलेइजाय एरीतेंजे लुंचेकेशके०मस्तकेंकेशनुं लोचकरे अने नमुंचेमायाके० मायाकपट मूकेनही तोतेप्राणीना पांचमहाव्रतमां एके नरहे॥२०

योगग्रंथनाजावनजाणे ॥ जाणेतोनप्रकाशे ॥ फोकट
मोटाइमनराखे ॥ तसगुणदूरेंनासे ॥ धन्य० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेयकी आत्मस्वरूपसधाय एवाजे योगग्रंथके० परमार्थनाशास्त्र तेना भावके० रहस्यने नजाणेके०उलखेनही समजेनही अनेकदाचितजाणे तोप्रकाशेन ही भव्यजीवने तेग्रंथोनीवातो कहेनही कारणकेजो तेवीवातोकहे तोपोताने तेम ज करवुंपडे वली फोकट मोटाइके० मिथ्याअभिमानराखे जेअमेमोटाछैयें अमा रा जेवोकोइनथी एवो अहंकारराखे तसगुणके० तेप्राणीमां जोकोइगुणहोयतो तेप णदूरनासीजाय एमछता गुणपणजायतो अणछतानुंकेहेवुंजशुं ॥ २१ ॥

मेलेवेशेंमहियलम्हाले ॥ बकपरेंनीचोचाले ॥ ज्ञानविना जगधंधेघाले ॥ तेकेममारगचाले ॥ धन्य० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ मेलेवेशेंके० वस्त्रादिकमलीनराखे अने महियलके० पृथ्वीनेविषे म्हाले के० मलपतांफरे वली बगलानीपेरें नीचुंजोइनेचाले जेथी लोकजाणे ईर्याजूयेछे एवाहोय अनेजो ज्ञानीहोयतो सर्वलेखेछे पणज्ञानविना एटले अज्ञानीथका जगत ने धंधेके० क्लेशमां घालताफरे एटले एवीकष्टक्रियाकरनारनावचन लोकमाने अनेते पोतेंतो ज्ञानविनानोछे माटेअशुद्धपरुपे तेवारे लोकनेपण अज्ञानउपदेशलागेमाटे जगतने कदाग्रहरूपक्लेशमां नाख्युंज इतिभाव तो एवा अज्ञानीथकी जैनमार्गे केम चाले यतः मासेमासेयजोबालो कुसंगेणतुभुंजए ॥ नसोसुअस्कायस्सधम्मस्सकलि अग्घइसोलसिं ॥ १ ॥ तथाअन्नाणीकिंकाहिइत्यादिवचनात् ॥ २२ ॥

परपरिणतिपोतानीमाने ॥ वरतेआरतध्याने ॥ बंधमोक्ष कारणनपीछाने ॥ तेपहिलेगुणठाणे ॥ धन्य० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ परपरिणतिके० पारकी समजाणते पोतानीकरीमाने एटले परअज्ञानी नी मतेचाले अथवा परपरिणतिके० पुद्गलशरीर वस्त्रपात्रादिकनाजे परिणमन ते अज्ञानेकरीने तन्मयपणेपरिणमतो सर्वपोतानीज परिणतिमाने अथवा परजे स्व व्यतिरिक्त लोकनाघर तेनाजे परिणमनके० घरव्यापारनुं चिंतववुं तेपोतानु करी माने अनेतेथी आर्तध्याननोविकल्पकरे यतः सयंगेहंपरिवक्ष परगेहंसिवावडे इत्यु त्तराध्ययनवचनात् माटेपोतानुंघर मुकी परघरनी चिंताकरेतो पापश्रमणकह्योछे इतिभावः अने बंधमोक्षकारणके० बंधनाकारणजे मिथ्यात्व अविरतिकषाययोगप्र मादप्रमुखजेबंधना हेतु ते नपीछानेके० नजाणे मोक्षनाकारण जे कषायादिकनो अभाव अथवा ज्ञानक्रियाप्रमुख एटले नाणकिरियाहिमुक्खोइतिवचनात् ॥ इत्यादि

कर्मोदना हेतुने तेपण नपीछानेके० नजाणे एवाअज्ञानीप्राणी तेगमेतेटला कष्टा दिककरो तोपण अज्ञानीजेमाटे पेहेलेगुणठाणेजाणवा यदुक्तं ॥ नाणेणविणाचरणं पढमगुणठाणपुवीकरं इत्युपदेशमालावृत्तौ ॥ २३ ॥ ॥

किरियालवपणजेज्ञानिनो ॥ दृष्टिथिरादिकलागे ॥ तेथी
सुजशलहिजेंसाहिब ॥ सीमंधरतुझरागे ॥ धन्य० ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे ज्ञानिनोके० ज्ञानवंतनो क्रियानोलवके० एकअंशमात्र पण जे पांचमी थिरानामादृष्टि तिहांलागतोहोय एटले सम्यक्तसहितहोय आदिशब्दथी कांता प्रभा परा एत्रणदृष्टिलक्षें तेथीके० तेज्ञानसहित क्रियानाअंशथी हेसाहेब सुजश लहिजेके० भलोजशपामियें मोक्षरूपउत्कृष्टोजशपामियें पणते हेश्रीमंधरपरमात्मा तुझरागेके० तारे स्नेहकरीने पामियें ॥ २४ ॥ एपन्नरमांढालनी कोइकगाथामां ज्ञाननीमुख्यताकरी कोइकगाथामां चारित्रनी मुख्यताकरी तथा कोइक गाथामां बेहुनो स्याद्वादकह्यो तेसांभली कोइकशिष्यने व्यामोहउपजे जेतेवारेस्थित पक्षते शोहशे तेशंका टालवाने सोलमां ढालमां स्याद्वादमार्गनो स्थितपक्ष देखाडेछे

ढालसोलमोलफलसंसारअवतारएहंगुणं एदेशी

स्वामीसीमंधरातुंभलेंध्याइयें॥ आपणोआतमाजे
मप्रकटपाइयें॥ द्रव्यगुणपज्जवातुझयथानिर्मला॥
तेममुझशक्तिथीजइविभवसामला ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेसीमंधरसाहेब तुझने मनमांध्यावियें एज भलेंके० भलुंछे जेम तमारा ध्यानथी आपणोके० पोतानो आत्मातेप्रगटपामियें तमारा ध्यानथी ज्ञानीथयीयें तेज्ञाने पोतानो आत्मा आवरणरहित थयो तेवारे आत्मभाव पाम्याज इतिभावः तेवारेयथाके० जेम १ द्रव्य २ गुण ३ पर्याय ते तुझके० तमारानिर्मलछे एत्रणना लक्षणकहेछे यथा गुणाणमासउदव्वं एगदव्वसियागुणा ॥ लक्खणंपज्जवाणंतु उभउनिस्सियाभवे ॥ १ ॥ इत्युत्तराध्ययन मोक्षमार्गाध्ययन २८में अथवा गुणपर्याय छे भाजनतेद्रव्य सहभाविधर्म तेगुण क्रमभावी तेपर्याय इत्यादिक व्याख्यान ग्रंथां तरथी जाणवुं एरीतें जेमतमारुंआत्मद्रव्य असंख्यातप्रदेशरूप तथा तमारा ज्ञान दर्शनचारित्रादिक अनंतगुण तथा तेमांसमयसमय उत्पादव्ययपणानु परणमवुं तथा अनंतअगुरुलघुप्रमुख जेपर्याय तेसर्वनिर्मल थया निरावरणथया तेरीतें मारे

पण शक्तिथीके० यद्यपि व्यक्तिथीनथी तोपणशक्तियेंछेते जड्विके० यद्यपि नवके० संसारनेविषे सामलाके० मेलाछे एटले आवरणसहितछे एटलोफेरछे ॥ १ ॥

चारछेचेतनानीदिशाअवितथा ॥ बहुशयनशय
नजागरणचोथीतथा ॥ मिछअविरत्तसुयततेरमें
तेह्नी ॥ आदिगुणठाणेनयचक्रमांहेंमुणी ॥ २ ॥

अर्थ तेमाटे चेतनानीअवस्था वर्णवेछे चेतनानी अवितथाके० साचीदिशा चार छे तेदेखाडेछे १ बहुशयनके० घोरनिद्रारूपतेपहेली २ शयनके० चक्षुमिचवारूपवीजी ३ जागरणके० कांइक जागवारूपत्रीजी ४ चोथीतथाके० पूर्वेकही तेमज एटले बहुजागरणरूप इतिनावः हवेएचारअवस्थानेगुणठाणे फलावेछे आदिगुणठाणेएप द सर्वत्रजोडियें एटले बहुशयननी आदि मिछके० मिथ्यात्वगुणठाणो अनेबीजीश यनअवस्थानीआदि तेअविरतिसम्यक्दृष्टीगुणठाणो तथात्रीजी जागरणअवस्थानी आदि तेसुयतके० अप्रमत्तसातमो गुणठाणो ४ बहुजागरणअवस्थानीआदि तेसं योगीकेवलीनामातेरमोगुणठाणोछे तेह्नीके० तेअवस्थानी आदिगुणठाणते प्रथम धुरगुणठाणा एरीतेजोडजो एटले एअर्थ जेबहुशयनदिशाते १–२–३ गुणठाणेक हेवी अने शयनदिशाते ४–५–६ एत्रण गुणठाणेकहेवी अने जागरणदिशाते ७–८–९–१०–११–१२ एछ गुणठाणेकहेवी अने बहुजागरणते १३–१४ एबे गुणठाणे कहेवी एरीते अमने सुज्यो तेवोअर्थलख्यो वलीजे बहुश्रुतहोय तेणे नय चक्रग्रंथजोयी यथार्थकरवुं स्तवनकरतायेंतो नयचक्रमांमुणीके०नयचक्रमांगुणठाणा नीआदिजाणीएमकह्युं तेनयचक्रग्रंथह्मणाअमारीपासेनथी माटे विचारजो ॥ २ ॥

नावसंयोगजाकर्मउदयागता ॥ करमनविजीवन
विमूलतेनविगता ॥ खमीयथीन्नितिमांजेमह्होएश्वे
तता॥न्नीतिनवीखमीयनवीतेद्भ्रमसंगता ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ नावपदार्थजे संयोगसंबंधथीउपना कर्म्मनेउदयेंआव्यातेनाव कर्मनथी जीवनथी मूलथी तेउतापणेनथी जेम न्नीतिके०न्नीतमांहे खडीयके० ते खटीकाथ की श्वेतताके० धवलतायायछे तो तेधवलतामां न्नीतिनथी अनेखडीपणनथी अ न्योन्येनिन्नछे पण भ्रमेंकरी संगति ऐक्यतामिलतिथायछे ॥३॥ आगाथानुंअर्थ ज्ञान विमलसूरिनाटबाकपरथी लिख्युंछे ॥

देहनविवचननविजीवनविचित्तछे ॥ कर्मनविरा
गनविद्वेषनविचित्तछे ॥ पुद्गलिभावपुद्गलपणेप
रिणमें ॥ द्रव्यनविजूजूजूएकहोवेकिमे ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ देहके० शरीरनथी ऐक्यतापणे वचनकायिकवाचिकयोगनथी जीवनथी चित्तनथी कर्मनथी रागनथी द्वेषनथी विचित्रछेके० विचित्रताअनेकजातिछे एसर्वे पुद्गलिकभावछे तेपुद्गलपणेपरिणमे केमके पुद्गलनुं अनेकप्रकारें परिणमनधर्मछे पूरणगलणधर्माणः पुद्गलनुंएलक्षणछे तेमाटे जीवादिकजेद्रव्यछे तेसर्वथकीजूदोजूदो छे तेएककेमहोयनही उपचारेंएककहियें॥४॥ आगाथानुंअर्थ ज्ञानवि० टवा०लि०

पंथीजनलुंटतांचोरनेजेमभणे ॥ वाटेंकोलुंटि
येंतेमजमूढोगिणे ॥ एकक्षेत्रेमल्याअणुतणी
देखतो॥विकृतिएजीवनीप्रकृतिउवेपतो ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेम पंथीलोकने लुंटतांथका चोरने कोके० कोइक पुरुषएमकहे जे वाटेलुंटेछे पणतेचोर वाटनेलुंटतानथीपण वाटजे मार्गतेने विषेरह्याजेलोक तेलुंटायछे पण लक्षणे एमकहेछेजे वाटलुंटी तेमज मूढोके०मूर्खतेशरीर आत्माप्रमुखने एककरी गणेछे शामाटेजे एकक्षेत्रेमल्याके० जेक्षेत्रे आत्मा तेजआकाशप्रदेशेमल्या परस्परसंबंधथयो एवाजे अणुतणीके० परमाणुनी विकृतिके० विकारने देखतोके० देखीने मूर्ख एमगणेछे अने जीवनीप्रकृतिजेस्वभाव तेने उवेपतोके० लेखामां अणगणतो थको जीवते शरीरादिकने एकपणेगणेछे पणएम जाणतोनथीजे पुद्गलतेजडछे अचेतनछे अनेआत्मातो ज्ञानस्वरूपीछे तेएक केमथाय इतिभावः ॥ ५ ॥

देहकर्मादिसविकाजपुद्गलतणा ॥ जीवनातेव्यव
हारमानेघणा ॥ सयलगुणठाणजीअठाणसंयोग
थी ॥ शुद्धपरिणामविणजीवकार्यनथी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे देहके० शरीर तथा ज्ञानावरणादिकर्म अने आदिशब्दथी घरबार प्रमुख एसर्वे पुद्गलनाकार्यछे पुद्गलथी नीपनाछे तेपुद्गलनाकार्यने जीवनाकार्यकहीबोलावेछे तेव्यवहारमानेघणाके० तेव्यवहारनयथी जीवनाकार्यकहियें पणनिश्चयनय तोसर्वे पुद्गलस्वरूपछे सयलगुणठाणके० समस्तमिथ्यात्वादिकगुणस्थानक तथा जीअठाणके० समस्तएकेंद्रियादिकजीवस्थानक इत्यादिक सर्वप्रकारते संयोगथीके० पु

ज्ञानकर्मादिकना संयोगथीजाणवा पणएआत्मस्वरूपनही केमके शुद्धपरिणामके० समस्तउपाधिरहित जेनाप्रदेशनेविषे एक अणुमात्रपण नेजतथी एवुंजे शुद्धस्वरूप तेविना जीवकार्यनथीके० जीवरूपकार्यनथी ॥ ६ ॥

॥ तंतजोतानछे
तिथीकाजकारण
पणे ॥ रहितएमएकतासहजनाणीमुणे ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानदर्शन तथा चारित्र इत्यादिक अनंतजे शुद्धआत्मानापरिणाम छे ते तंतके० नियतपणाथीजोयियेंतो कांइजीवथकी भिन्ननथी केमके ज्ञानादिक गुण जोभिन्नहोय तो आत्मानिर्गुणजडपणे मानवोजोयियें तेतोनथी माटेजीवथी ज्ञानादिक गुणभिन्ननथी जेम स्फाटिकरत्नप्रमुख पोतानी ज्योतीथी भिन्ननथी शामाटे जे काजकारणपणे कहेतां कांइपूरवतुंनथी केमके जो रत्नथीज्योतिथयी एमकहियें तो जोतिविना रत्नहतुजनही माटेरत्नथी ज्योतिथयी एम कहेवायनही तथा ज्योतिथी रत्नथयुंएमपण नकहेवाय केमके रत्नविनाज्योतिपण किहांहती तेमाटे कार्य कारणपणेरहितछे एमके० एरीते आत्मा तथाआत्मगुण ते भिन्ननथी सहजस्वभावें जअभेदछे ऐक्यताछे एवात नाणीमुणेके०जेज्ञानीहोयतेजाणे पणमूर्ख समजेनही७

अंशपणनविघटेपूरणद्रव्यना ॥ द्रव्यपणकेमकहुं
द्रव्यनागुणविना॥ अकलनेअलखएमजीवअति
तंतथी ॥ प्रथमअंगेवदिउंअपदनेपदनथी ॥ ८ ॥

अर्थ॥ संपूर्णद्रव्यना जेअंश केहेवा तेपणयुक्तनथी केमके जेवारेंअंशकहीयेतेवारें द्रव्यपणशानुं एगंनिच्चंनिरवयवं अक्रियंसव्वगंचसामन्नं इतिमहाभाष्यवचनात् जेद्रव्य ते सामान्यछे अने जेसामान्यंते निरवयवछे तथा द्रव्यपणकेम कहुंद्रव्यनागुणविना के०द्रव्यसंबंधी जेगुणतेविना द्रव्यपण केमकेवाय कारणके गुणाणमासउदव्वंइत्युत्तराध्ययने २८ में अध्ययने द्रव्यलक्षणंतथागुणपर्यायवद्द्रव्यं इतितत्वार्थवचनात् तथा पर्यायनयवालानीयुक्तियेंतो द्रव्यछेजनही परमार्थे पर्यायजस्वतंत्रछे यथाफणविफण कुंडलितादि अवस्थाथी भिन्न सर्पद्रव्यते शीवस्तुछे तो फणविफणादिक द्रव्यनातोकहेवायजोद्रव्य ठेरेतो तेमाटे द्रव्यनथीतो द्रव्यना गुणकहांथकीहोय जेम गाम नहोय तोतेगामनी सीमकहांथकी इत्यादिवत् महाभाष्यमांजोजो एटले एनावजे अंशपण नकहुं अनेद्रव्यपण नकेहेवाय युक्तियेंतोएम आव्युं अने आग

ममांतो अंशसहित पणद्रव्यकहियें एमछे गुणपर्यायवत्द्रव्यं एजवचन सुचवेछे ते माटे अकलके० कल्योनजाय अनेअलखके० लख्योनजाय एरीतनो जीवके० आत्मा ते अतितंतथीके० अत्यंतपणे निश्चेयकीजाणवो एटले कांइकेहेवायनही यतः वरका तरएसव्वो॥ सराणीयट्टंतितक्काजछनविझ्ञति॥ मतितछगाहेयाउएअपइठाणस्सखेयन्ने सेणदीहेणहस्सेनवट्टेनतंसेनचउरंसेनपरिमंडलेनकिन्हेननीलेनलोहिएनहालिद्देनसु किल्लेनसुरनिगंधे नडुरनिगंधे नतित्ते नकडुवे नकसाये नआंबिले नमहुरे नकरकडे नमउए नगुरुए नलहुए नसीए नउन्हे नतिन्हे नलुरके नकाउ नरूहें नसंगे नइठी नपुरिसे नअन्नहा परिन्ने सन्नेउवमानिविझ्ञये अरूवीसत्ताअपयस्सपयंनछि ॥ इत्या दिकआचारांगपंचमाध्ययने उद्देशेछठेकह्युंछे तेमाहेलाविषमपदोनो अर्थकरियेंछैयें वरकातके० मोदतेनेविषे रएके० राता सव्वेसराके० तेमोक्षस्वरूपकेहेवुंछे तेकहेछे सर्वे स्वर निवृत्थाछे एटले कोइशब्देंवाच्यनथी तक्काके० विचारजे आमहशे केआमहशे ते केहेवाय नही मतिजे उत्पातकीप्रमुख तेनो ग्राहजेनेविषेनथी तेपण उएके० एकलुं छे पणकर्मकलंकसहित नथी अपइठाणस्सके० उदारिकादिकशरीरनुंप्रतिष्ठाननथी तथाखेअन्नेके० लोकालोकनुंज्ञायकछे तथा नकाउके० कायनथी नरूहेंके० सं सारमांउगवुंनथी अन्नहाके० नपुंसकनथी परिन्नेके० समस्तप्रकारेजाणछे सन्नेके० सम्यक्जाणेछे तथा अपयस्सपयंनछिके० अवस्थाविशेषजे पदतेनथी जेने तेअपद कहियें एटले अपदते सिद्ध नेपदके० जेअनिध्यानतेनथी एटले सिद्धनेकोइनामेंक हीबोलावीयें तेनथीइतिन्नावः ॥ ७ ॥

शुद्धताध्यानएमनिश्चयेंआपनुं ॥ तुजसमापति
नुंपधसकलपापनुं ॥ द्रव्यअनुयोगसंमतिप्रमु
खथीलही॥ न्नक्तिवैराग्यनेज्ञानधरियेंसही॥ ए ॥

अर्थ ॥ शुद्धताके० शुद्धस्वरूपनुंजे ध्यानतेहिजपोतानुंनिश्चयरूपेंजाणवुं माटेहे प्रन्नु सर्वपापनुंसमाप्तिऔषध सर्वदोषनाशनरसायन ते एहिजछे जे शुद्धउपयो गलक्षणते अने षटद्रव्यनीविचारणारूप अनुयोग संमतिमहातर्कादिग्रंथथकीजाणी ने साहिबनीविधिसेवापूर्वक निराशंसतारूपन्नक्ति वैरागके० विषयविमुखता ज्ञानते शुद्धउपयोग निश्चेयकीएहीजचित्तमांधरियें कार्यसाधकताएहिजछे एटले न्नक्तिदशा वैराग्यदशा ज्ञानदशा एत्रणकार्यसाधकताछे तिहांचोथोगुणठाणुंन्नक्तिमुख्ये पांचमो छठोगुणठाणो वैराग्यदशामुख्ये क्षीणमोहादिकगुणठाणुं ज्ञानदशामुख्ये इत्यादिक

व्यंजावेंसर्वेजाणवी मुख्यता गुणतायें एकेंज्ञाएोएकइत्यादिव्यक्तता ग्रंथांतरथीजाणवी ॥ ९ ॥ आगाथानोअर्थ ज्ञानविमलसूरिनाटबाउपरथीलिख्योछे

जेहअहंकारममकारनुंबंधनं॥ शुद्धनयतेदहेदहनजेमइंधनं॥ शुद्धन
यदीपिकामुक्तिमारगजणी ॥ शुद्धनयआथछेसाधुनेआपणी ॥१०॥

अर्थ॥जेअहंकारके० मान ममकारके० ममत्व तेनुं बंधनके०कारण एटलेअहंकारतथा ममकारनुंमूलरागद्वेषछे तेरागद्वेषथी अहंकार तथा ममकारहोय तेरागद्वेषने दहनजेमइंधनके०जेमअग्नि लाकडाने बालीनाखे तेनीपेरें शुद्धनयके०आत्मतत्वचिंतनरूपध्यानते दहेके०बाले एटले शुद्धध्यानथी रागद्वेषवली भस्मथाय शुद्धनयके० निश्चेनयतेमोक्षमार्गनोदीवोछे केमके मोक्षमार्गेगमनकरतां अजवालुंकरे माटेजे शुद्धनयतेज साधुने आपणीके०पोतानी आथके०संपत्तिछे यतः दीपिकाखलुनिर्वाणे निर्वाणपथदर्शिनि॥शुद्धात्मचेतनायाच साधूनामक्षयोनिधिः १॥ इतियोगनिर्णये१०॥

सकलगणिपिटकनुंसारजेणेंलह्यं ॥ तेहनेपणपर
मसारएहजकह्यं ॥ उंघनिर्युक्तिमांएहविणनवि
मिटे ॥ दुःखसविवचनएप्रथमअंगेंघटे ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ गणिके० आचार्य तेनासकलके० समग्रगुणरूपरत्ननी पिटकके०पेटीएटले द्वादशांगीरूपजेगणिनीपेटी तेनो सारके० प्राधान्यपणुं तेजेणे लह्युंके० जाण्युंछे एहवा समस्त द्वादशांगीनाजाणने पण परमसारके० प्रधानरहस्यपरमसारतेएजशुद्धनयपरिणमनरूपकह्युंछे एद्वादशांगीना जाणनेपण निश्चेनयज सारकह्युंछे तोवीजानीशीवात एमश्रीउंघनिर्युक्तिमध्येकह्युंछे यतः परमरहस्समिसीणंसम्मत्तगणिपिडगझरियसाराणं॥परिणामियंपमाणंनिछयमवलंबमाणाणं॥१॥ इति तोएहविणके० एनिश्चयनयसमज्याविना दुःखके० पापते नविमिटेके० नटले तथा कोइकपरतमां एहविणनघटे एमलख्युंछे तेनविघटेके० दुःखओछुं नथाय माटे बेहुनो भावार्थएकजछे एसर्ववचन प्रथमअंगेघटेके० श्रीआचारांगसूत्रमांघटमानछे युक्तछेजे एगंजाणइसे सव्वंजाणइ जेसव्वंजाणइ सेएगं जाणइ इत्यादिपाठात् ॥ ११ ॥

शुद्धनयध्यानतेहनेसदापरिणमे॥ जेहनेशुद्धव्यव
हारहीयडेरमे॥ मलिनवस्त्रेयथारागकुंकुमतणो ॥
हीनव्यवहारचित्तएहथीनविगुणो ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एटलीवार शुद्धनयनीमुख्यतायेंवातकही हवेकोइक एमतांजलीनेएकांतनिश्चयनयजअंगीकारकरे अनेव्यवहारनय लेखामांगणेजनही तेने शिक्षाकरेछे जेपूर्वोक्तप्रकारें शुद्धनयनुंजे ध्यान तेतो तेप्राणीनेसदानिरंतरपरिणमे जेप्राणीनेशुद्धव्यवहारसंयमानुष्ठानप्रवृत्तिरूप हीयडेरमेके० हृदयनेविषेरमे तेनाऊपरदृष्टांत कहेछे जेम मेलावस्त्रनेविषे कंकुनोअथवा केसरनोरंग नलागे तेमज हीणाव्यवहारवंतनाचित्तने नविगुणोके० गुणनहोय एटले व्यवहारविनानिश्चेंपरिणमेनही ॥ १२ ॥

जेहव्यवहारसेढीप्रथमछंडता ॥ एकएआदरे
आपमतमांडतां ॥ तासऊतावलेनविटलेआ
पदा ॥ क्षुधितइछायेंउंबरनपाचेकदा ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेप्राणी व्यवहारश्रेणीरूपजेअनुक्रम तेतोप्रथमछंडेछे तथा एकएआदरेके० एकलोएनिश्चय नयज आदरेछे आपमतमांडताके० पोतानुं मतदृढकरतां एकनवस्थितिऊपर दृढथयाछे पणउद्यम करतानथी तोतेनीउतावले आपदाटलेनही एटले एकलोनिश्चय पोकारवाथी संसारपरिभ्रमणरूप आपदा टलेनही जेमक्षुधितके० भूख्यानीइछायें उंबरनाफलकदापि नपाके एटले उंबरफल तेजलसेकादिकक्रियायेंपाके पणइछामात्रेंनपाकेइतिभावः ॥ १३ ॥

भावलवजेहव्यवहारगुणथीभले ॥ शुद्धनयभा
वनातेहथीनविचले ॥ शुद्धव्यवहारगुरुयोगपरिण
तपणुं ॥ तेहविणशुद्धनयमांनहितेघणुं ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ भावके० रुडाअध्यवसायनो लवके० अंशतेपण व्यवहारपडिनालिकारूप गुणथी भलतोहोय एटले व्यवहारसहितहोय तो शुद्धनयभावनाके० शुभअध्यवसायनीजेभावना घोलना तेतेप्राणीथी नविचलेके० खसेनही एटले शुद्धनयनीभावना तेतो तेवारे स्थिरथायके जो व्यवहारयुक्तहोयतो अन्यथा क्षणतोलो क्षणमासोथाय तेशुद्धव्यवहारतो गुरुयोगके० गुरुनासंयोगें एटले गुरुकुलवासें निर्मलव्यवहारथाय तेशुद्धव्यवहारथी परिणतपणुंके० परिपक्कपणुंहोय एटले शुद्धनयमां परिपक्क तोजेशुद्धव्यवहारवंतहोय तेहजथाय अन्यथाशुद्धव्यवहारविना शुद्धनयछेरीशकेनही अने तेहविणके० तेगुरुयोगशुद्धव्यवहारविना शुद्धनयमांके० अध्यात्ममां नहीगणवुं एटले गुरुकुलवासें शुद्धव्यवहार अनेशुद्धव्यवहारेपरिपक्कपणुं निश्चयमांनिश्चलपणुंहोयइति एटले शुद्धनयमांपरिपक्कतातोहोय जोगुरुयोगव्यवहारशुद्धहोयतो॥

केइनविनेदजाणेअपरिणतमती ॥ शुद्धनयअति
हिगंनीरछेतेवती ॥ नेदलवजाणतांकेइमारगतजे॥
होयअतिपरिणतीपरसमयस्थितिनजे ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एरीते केटलाकप्राणी अपरिणतमतीके० अपरिणामीतेने नयनेदजाणे के० अनेकप्रकारनी खबरनपडे इहां नेदते अपवाद उत्सर्ग निश्चयव्यवहारप्रमुख जाणवा तेनजाणे अपरिणतमतीशब्दें व्यवहारनयवालालीजियें तेकेमनजाणे जे शुद्धनयअतिहिगंनीरछेके० उपलानयतेअत्यंतगंनीरछे एटले एनावजे आगला १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार एत्रणनय यद्यपि अपरिणतमतीजाणे पणनिश्चेनय तो अतीगंनीर तेउपयोगरूपनयमांखबरनपडे इतिएटलेजे व्यवहारनय एकलोमा नें तेनेठबकोदीधो हवे एकलोनिश्चयनय मानेतेने ठबकोदीयेछे केटलाकप्राणी नेदल वजाणताके० नेदनो अंशमात्रजाणतामार्गने तजेके० छांमीदीये एटले अंशमात्र कांइकशिख्युंसांनल्युंछे तेवचनजाणे तेथी महा अहंकारधरता एमजाणेजे निश्चेसरू पनी वातो आपणे जाणियेंछैये एवी बीजोकोणजाणेछे अने आपणे आत्मसरू पजाण्युं एटले क्रियानुं शुंकामछे क्रियातो ज्ञाननीदासीछे इत्यादिकवचन बोलीकि यानकरे अनेमार्ग छांमे एवीरीतें जे अतिपरिणामिथाय तेशुंकरे तेकहेछे जे समय जेसिद्धांत तेनी परके० उत्कृष्टीस्थिति तेमर्यादा तेनेनजे एटले सिद्धांतमां उत्कृष्टी स्थिति जेनिश्चयनीवातोकरवी तेनजेके० करे अथवा परसमयस्थितिनजेके० अ न्यदर्शननीस्थितिनजे एटले एकांतनिश्चयनयवादी दिगंबरादिक तेपरदर्शनीकहि यें तेवारेएणेपरदर्शनिनीस्थितिनजी इतिनावः ॥ १५ ॥

तेहकारणथकीसर्वनयनविकह्या॥ कालिकश्रुतमां
हेंतीनप्रायेंलह्या ॥ देखीआवश्यकेंशुद्धनयधुरें
नणी॥जाणियेंऊलटीरीतिबोटिकतणी ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तेकारणथकी निश्चेपरिणामी तेएकली परिणामनी वातोकरीने मार्ग उपाडीनाखशे एवुंजाणीने १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र ५ शब्द ६ समनिरूढ ७ एवंनूत ए सर्वनयनथीकह्या किहां नथीकह्यातेकहेछे कालिकश्रुत मांहेंके० आचारांगादिक कालिकश्रुतनेविषे तीनप्रायेंलह्याके० बहुलतायें १ नैग म २ संग्रह ३ व्यवहार एत्रणनयलख्याछे एवात ग्रंथकार शिष्यनेकहेछे जेदेखी

आवश्यकेंके० आवश्यकनिर्युक्तिमां देखजो एटलेकालिकश्रुतमां प्रायेंनयक ह्याठे एम आवश्यकनिर्युक्तिमांकह्युंठे यतः एएहिंदिठ्ठिवाए परुवणासुत्तअत्थकहणाय इहपुणअणज्जुवगमो अहिगारोतीहिंउसन्नं ॥ १ ॥ पायसंववहारं तेहिंतेहिंवजलोएते एं परिकम्मणठंकालिय सुत्तेतदहिगारो ॥२॥ इत्यावश्यके एरीततोश्वेतांवरपक्षेठे जे पूर्वेव्यवहार समजावीने पठे निश्चयनीवात समजावेइति तथाहवेदिगंवरनीप्रक्रिया दूखवेठे जेशुद्धनयथूरेंके० निश्चयनयथूरेठे तेमाटे बोटिकके० दिगंवरनीरीती तेउलटीके० विपरीत जाणीयें जेमाटे पेहेलाथी निश्चयनय समजावे एटले व्यव हारमां हृदिथरेजनही माटे विपरीतकहिइतिज्ञावः ॥ १६ ॥

शुद्धव्यवहारठेगच्छकिरियाथिति ॥ दुप्पसहजाव
तीरयकह्युंठेनीति ॥ तेहसंविज्ञगीतार्थथीसंन्न
वे ॥ अवरएरंम्मसमकोणजगलेखवे ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ तेमाटे व्यवहार तेप्रधानठे तेशुद्धविवहारतो सुविहितगच्छजे साधुसमु दाय तेनी क्रियानी जेस्थिति तेमांत्रे एटले शुद्धव्यवहारते सुविहितगच्छमां होय छःप्रसहनामा आचार्यजेपांचमाआराने ठेडेथशे यावत्तिहांलगें नीतिके० निरंतर तीर्थेकह्युंठे यतः इयतव्वोदयजुगपवर सूरिणोचरणसंजुएवंदे ॥ चउरुत्तरडुसहस्स डुप्पसहतेसुहम्माइ ॥ इतिडुसमसंयस्तोत्रे तथा वासाणवीससहसा नवसयतिमा सपंचदिणपहरा ॥ इक्कावडियादोपलअरकरइगुआलजिणधम्मो ॥ इतिदीपालीकल्पे॥ तेतोथितो गीतारथसंविज्ञहोयतेथीज संज्ञवे एटले नाणक्रियाहिंमुक्खोइतिज्ञाप्यवच नात् एटलेज्ञानक्रियाथी मोक्ष तेज्ञानक्रिया तोगुणठे अने जेगुणठे तेगुणीथी अन्ने दरूपठे तेमाटेसंविज्ञशब्दे क्रियावंतआव्या अने गीतार्थशब्दे ज्ञानवंतआव्या तेसंविज्ञ गीतार्थथी जेवीजा तेएरंमासरिखाजाणवा तेने जगतनेविषे कोणलेखामांगणेठे॥१७

शास्त्रअनुसारजेनविहठेताणियें ॥ नीतितपगच्छ
नीतेन्नलीजाणियें ॥ जीतदाखेजिहांसमयसारू
बुधा ॥ नामनेठामकुमतेनहीजसमुधा ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेसंविज्ञगीतार्थ परमार्थेतोतेने कहियेंजे शास्त्रने अनुसारें हवेंताणेनही शास्त्रना अक्षरदेखे एटले पोतानोकदाग्रहमूकीआपे एवीरीती तोतपगच्छनी नलीके० घणीउत्तमठे एटले तपगच्छमां पंचांगीप्रकरणादिकजे सुविहितना कर्याग्रंथ तेसर्वप्र

माणछे एमजाणियें इतिजावः जिहांके० जेतपगछनेविषे सुधाके० पंमितलोक तेस मयसारूके० सिद्धांतप्रमाणे जीतदाखेके० वर्त्तमानकालनोजीतदेखाडेछे जेतपगछनो नामअने गामके०स्थानक तेकुमतेके० कदाग्रहे सुधाके० फोकट जसके० जेना नही के० नथी एटले एतपगछनोजेनामगामतेसर्वेगुणनिष्पन्नछे ॥ १८ ॥

नामनिर्ग्रंथछेप्रथमएहनुकह्युं ॥ प्रथमआठपाट
लगेंगुरुगुणेसंग्रह्युं ॥ मंत्रकोटीजपीनवमपाटेय
दा ॥ तेहकारणथयुंनामकोटिकतदा ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ हवे तपगछना नामधुरयकी अनुक्रमे निष्पन्नछे तेकेहेछे प्रथमश्रीसुधर्मा स्वामीथी निर्ग्रंथएहवुं नामप्रथमकह्युं तेप्रथमना आठपाटलगें गुरुगुणेके० मोटोटे गुणे निस्पृहतारूपगुणेकरी संग्रह्युंके० ग्रह्युंछे पछे नवमेंपाटे सुस्थित सुप्रतिबद्धआ चार्यें कोटीवार सूरिमंत्रजपीनेरह्याबीजाआचार्येते चारलाख तथा सवालाखमंत्रजपे एटलेसूरिमंत्रपुरोथयो अने एबेआचार्यें कोटीवारजप्यो तेकारणके० तेहेतुयें तेवारे कोटीकनाम केहेवाणुं एटलेएनामपणगुणनिष्पन्नछेपणकोइमतकदाग्रहेनथी॥१९॥

पंनरमेंपाटेंश्रीचंद्रसूरेंकरयुं ॥ चंद्रगछनामनिर्म
लपणेंविस्तरयुं ॥ सोलमेंपाटवनवासनिर्मम
मति ॥ नामवनवासीसामंतभद्रयति ॥ २० ॥

अर्थ ॥ तेकोटिकगछ चउदपाटलगेंचाल्युं तेवारपछि पंनरमेंपाटेंश्रीवज्रसेनाचार्य ना शिष्य चारथया तेलक्ष्मूलनी हांसी व्यवहारीयाने घरेचडी तेवारेबीजे दीनेसुकाल थशे एमकही जीवाड्या तेव्यवहारीयें तथा तेना चारपुत्रें उपकारजाणी चारित्र लीधुं तेचार शिष्यनानाम १ नागेंद्र २ चंद्र ३ विद्याधर ४ निवृत्ति एचार थया ते चारे आचार्यपदपाम्या तेमां चंद्रनामाआचार्यपन्नरमें पाटेंथया तेउथी त्रीजोचंद्रगछ एवुंनामनिर्मलपणे विस्तार पाम्युं तेपण गुणनिष्पन्नथयुं पण मतकदाग्रहे थयुंन थी पछेंसोलमेंपाटें वनमां वस्या ममत्वरहित जेनीमतिहति एवाआचार्यथया माटे वनवासीनामचोथुंकेवाणुं तेआचार्यनुंनामसामंतभद्र यतिके०जितेंद्रियहता॥

पाटछत्रीशमेंसर्वदेवाभिधा ॥ सूरिवडगछतिहां
नामश्रवणेसुधा ॥ वडतलेंसूरिपदआपीकेनेव
ती॥ वलीयतसत्रहगुणेजेहवांध्यायती ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ तथा ठत्रीशमें पाटेसर्वदेवानिधनामेसूरियकी वडनाफाडतळें सूरि पद था
प्यो माटे वडगच्छ विरुदथयुं तेश्रवणनेविषे सुधाके० अमृतसमान जाणवुं एटले वड
नाफाडहेठें आचार्यपदथाप्युं माटे अने वळीते आचार्यने गुणवंतयतिनो समुदाय
बहुवृद्धिपाम्यो एटले साधुनोसमुदाय तेवडनीपेरेंविस्तारपाम्युं तेथीवडगच्छ केवाणा
एनाम पणगुणनिष्पन्नछे तेमाटेवडगच्छनामथयुं ॥ २१ ॥

सूरिजगचंदजगसमरसचंद्रमा ॥ जेहगुरुपाटेचउअ
धिकचालीसमां ॥ तेहपाम्युंतपानामबहुतपक
री ॥ प्रगटआघाटपुरीविजयकमलावरी ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ पछे जगतचंद्रसूरिजे जगतनेविषे उपशमरसेकरी चंद्रमासरिखाथया एट
ले चंद्रमाअमृतरसेभर्यो तेमआचार्य ते समतारसेभरेला मोटापाटनाधणी चउ
अधिक चालीसमांके० चुम्मालीसमेंपाटेथया तेणे श्रीआंबिलवर्द्धमानादिकबहु
तप करीने प्रगटपणें आघाटके० उदयापुरनेविषे राणोजी हस्तीउपरें चडीआव
ताहता तेवारें श्रीजगच्चंद्रसूरी वर्द्धमानतपलागटकरता दुर्बल शरीरनाधणी सन्मु
खआवताहता तेवारें राणें प्रधानने पूछयुंजे एकोण आवेछे प्रधानेंकह्युं हेमहाराज
घणामोहोटा तपनाकरनारआचार्यआवेछे तेवारें राणोजी हस्तिउपरथी हेगाउत
री नमस्कारकरीने महातपा एवुंविरुददीधुं तेवारे प्रधानेकह्युं महाराज महापद
काढीनाखो नहीतरलोक महातपाने ठेकाणेमहात्माकहेशे तेमाटे महापद मकहो
तेसांभली राणाजीयें तपानामदीधुं एपण गुणनिष्पन्न छेनुंनामथयुं पणतपाएवुंना
मकदाग्रहथीथयुंनथी तथा विजयकमलावरीके० राणाजीनी सभामां चौरासी
वादीयोने जीतीने जयलक्ष्मीवरया तेवारे राणे हीरलाजगच्चंद्रसूरिकहीबोलाव्या

एहपटनामगुणठामतपगणतणा ॥ शुद्धसद्दहणगु
णरयणएहमांघणा ॥ एहअनुगतपरंपरभणीसेव
ता ॥ ज्ञानयोगिविबुधप्रगटजगदेवता ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ एपटनामके० एपूर्वोक्तछनाम तेकेवाछे जे गुणना स्थानकछे ते तप
गणतणाके० तपगच्छना जाणवा शुद्धसद्दहणाके० शुद्धश्रद्धावंत गुणरयणके० गुण
रूपरत्न तेंए तपगच्छमां घणाछे एटले श्रद्धावंत गुणवंतघणाछे एअनुगतपरंपरके०
स्वतंत्रपरंपरा आवी एटले जेनीपरंपरामां त्रुटपडीनथी तेनुंनाम अनुगतपरंपराक
हियें तेभणीके० तेमाटे सेवताके० सेवाकरतां एवाकोणछे जे ज्ञानयोगिविबुधके०

ज्ञानसंयोगवंतांपंमित अनुगतपरंपरानीसेवाकरेछे इतियोगः प्रगटजगदेवताके० ए जगतनेविषे प्रगटपणे देवताजछे एटलेपंमितलोकशुद्धपरंपरानीजसेवाकरे ॥ २३ ॥

कोइकहेमुक्तिछेविणतांचीथरां ॥ कोइकहेसहजजमतांघरदहिंथरां ॥
मूढएदोयतसभेदजाणेनहीं ॥ ज्ञानयोगेंक्रियासाधतांतेसही ॥२४॥

अर्थ ॥ हवे सर्वअधिकारकहीने छेडे निश्चयतथा व्यवहारनयफलाववातेफलावे छे कोइकव्यवहारनयवादिकहेछे जेविणतांचिथरांके० पमिलेहणा पडिकमणादिक तथा फाटात्रुटावस्त्रादिकपेहेरतां इत्यादिक कष्टकरतां मुक्तिछेके० मुक्तिपामियें तथा कोइकनिश्चयवादीएमकहेछे जे सेहेजरीतेघरनेविषे दहिंथरांजमतां उपलक्षणथी प वरमोदकप्रमुखलेवा एटले निश्चयनयवालाकहेछे जेकष्टकरेंशुंथाय खुबखाउंपीउं पे ण तत्वज्ञानथयुं एटलेसिद्धिजाणवी एवीजूदीजूदीरीतना बोलनाराते बेहु मूढके० मूर्खछे एटले तेमोक्षसाधवानो भेदके० प्रकारजाणतानथी केमके ज्ञानने संयोगेक्रि यासाधतां सहीके० तेमुक्तिसत्यछे यतः नाणकिरियाहिंमुक्खोइतिभाष्यवचनात् तथा हयंनाणंकियाहिणं हयाअन्नाणउकिया ॥ पासंतोपंगुलोदड्डो धावमाणोअअंधउ ॥ १ ॥ एवंसवेविनया मिछदिठ्ठिसपरकपडिवक्खा ॥ अन्नोन्ननिस्सियाउण हवंतित्ते चेवसम्मत्तं ॥ २ ॥ इत्यादिक आवश्यकनिर्युक्तिवचनात् ॥ २४ ॥

सरलभावेंप्रभोशुद्धएमजाणतां ॥ हुंलहुंसुजशतुझ
वचनमनआणतां ॥ पूर्वसुविहिततणाग्रंथजाणीकरी॥
मुझहोजोतुझकृपाभवपयोनिधितरी ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ माटेहे प्रभो एमके० एरीते सरलस्वभावें करीबेहुनयसिद्धीजे एरीतेजा णतां पणकपटेनही जेकहे एक अने चित्तमां बीजुंहोय एम कपटसहित नही त था तुझवचन मनआणतांके० पूर्वे ज्ञानक्रियाभ्यांमोक्ष एमजाणतां तथा मनआण ताके० प्रतितकरतां थका सुजशके० भलोजे जशतेहुंपामुं एटले मुनिराजप्रमुख सु विहितलोक भलोजशबोले एवीस्याद्वाददृष्टि केमथयीतेकहेछे जे पूर्वसुविहिततणा के० पूर्वाचार्य श्रीहरिभद्रसूरि तथाधर्मदासगणी भाष्यकारजी उमास्वातिवाचकप्रमु खना जेग्रंथते जाणीकरीने सम्यक्ज्ञानेकरी स्याद्वाददृष्टिथयी तेएवीदृष्टितो प्रभुकृ पाथी थाय तेमाटेप्रभुपासे प्रार्थनाकरेछे जेभवपयोनिधिके० जेसंसारसमुद्र तेनेविषे तुझकृपाके० तमारीदया तद्रूप तरीके० जहाज तेमुझहोजोके० मारेथाजो एटलेसं

सारसमुद्रमां तमारी रूपारूपजहाज मारेथाजो एसोलमांढालनेअंतेस्या द्वादद्दष्टिनी लिद्धिकही एवीदृष्टि पोतानीथची तेथीउपनोजेहर्ष तेहर्षेकरीसतरमांढालमां वोलेछे

ढालसतरमोकडखानीदेशीछे

आजजिनराजमुजकाजसिद्धासवे ॥ वीनतीमाह्
रीचित्तधारी ॥ मार्गजोमेंलह्योतुझकृपारसथकी
तोहुइसंपदाप्रगटसारी ॥ आज० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेजिनराज आजके०जेदिवसें स्याद्वादद्दष्टियें उलखाणथयुं तेदिवस क वीश्वरनुं वर्त्तमानछे तेमाटेआजकहियें तेआजें मारा जेकार्यतेसर्वेसिद्धथया शामाटे जेमारीवीनती चित्तमांपरमेश्वरेंधारी यद्यपि परमेश्वरतो वीतरागछे कोइनी वीनती चित्तमांधरतानथी तोपण परमेश्वरनीभक्तिजनितकार्य भक्तलोकने थयुं माटेकारणे कार्योपचारकरीनेकहेछेके जोतुझरूपारूपरसथकी मेंमार्गलह्योके०हुंमार्गपाम्यो अने तेमार्गरूप सारीके० मनोहर संपदा माह्हरेप्रगटथयी ॥१॥

वेगलोमतहुजेदेवमुझमनथकी ॥ कमलनावन
थकीजेमपरागो ॥ चमकपाषाणजेमलोहनेखेंच
से ॥ मुक्तिनेसेहेजतुझभक्तिरागो ॥ आज० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ माटे मारामनथकी वेगला मतयाजो एटले घटमांरेहेजो जेम कमलना वनथकी परागोके० वासना दूररेहेतीनथी एटले जेमकमलनीवासना तेकमलना वनमांरहे तेम तमेमाराचित्तमां रेहेजो चमकजातीनो कोइपथ्थर विशेष ते जेम लो हने खेंचसेके० जेम लोढानेखेंचे एटले एपथ्थरनो एवो सेहेजस्वभावछे जे लोढुं वे गलुंहोय तोपण तिहांथीपोतानी मेले आवीने पथ्थरनेवलगे तेरीते तमाराउपरें माह्हरोजेभक्तिरागछे तेस्वभावेंजमुक्तिनेखेंचशे ॥ २ ॥

तुंवसेजोप्रभोहर्षभरहीयमले ॥ तोसकलपापनाबंधत्रूटे ॥ उगते
गगनसूरयतणेमंडले ॥ दहदिशिजेमतिमिरपडलफूटे ॥ आ० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हेप्रभो हर्षभर्युं जेमारुंहीयुं तेनेविषे जोतुंवसे तोसमस्तजेभवांतरे पाप नाबंधकलाछे तेत्रुटीजाय तिहांदृष्टांत केहेछे जे गगनके० आकाशनेविषे सूर्यनावि माननुं मंडल तेउगेथके दहदिशिके० दशेदिशोनेविषे जेम तिमिरके० अंधकारना पडलजे समूहते फूटेके० नाशपामे तद्वत् पापपडल त्रूटे ॥ ३ ॥

सींचजेतुंसदाविपुलकरुणारसें॥ मुझमनेशुद्धमतिकल्पवेली॥नाण
दंसणकुसुमचरणवरमंजरी॥ मुक्तिफलआपशेतेएकेली॥आण॥४॥

अर्थ ॥ विपुलकरुणारसेंके० विस्तारवान करुणारूपरसेंकरीने माहारामननेवि षे शुद्धमतिरूप कल्पवृक्षनीवेलीते हेस्वामीतुंसिंचजे इतिभावः तेसिंचायका ज्ञानद र्शनरूपतो फुलथावशे तथा प्रधानचारित्ररूप मंजरीके० मांजरलागशे तेवारपछे मुक्तिरूपफलने आपशे तेएकेलीके० तेशुद्धमतिरूपकल्पवेलडी एकलीआपशे ॥४॥

लोकसन्नाथकीलोकबहुवाउलो॥ रानलोदासतेसवितवेषे॥एकतु
झआणसुंजेहरातारहे॥तेहनेएहनिजमित्रदेखे॥ आज०॥ ५॥

अर्थ ॥ लोकसंज्ञा जेगाडरियोप्रवाह तेथकी लोकबहुवाउलोके० घणोलोक घेलो थयोछे पणराउलोदासके० राजानोदास एटले तमारोदास एवोजेहुं ते सर्वगाडरियाप्रवाहनेउवेखुंछुं एटले खात्रमां आणतोनथी मात्र एक अद्वितीय तुझआणसुंजेरातारहेके० तमारी आज्ञाथी जेरंगाणाछे तेने एमारो आत्मा ते पोतानोमित्र करीजाणेछे एटले तमारीआणाथीजे बाह्यछे तेने उवेखुंछुं पण तमा री आज्ञावंतने मित्रकरीजाणुंछुं साधर्मिकसंबंधपणामाटे इतिभावः ॥ ५ ॥

आणजिनभाणतुझएकहुंशिरधरुं॥अवरनीवाणीनविकानेसुणियें॥
सर्वदर्शनतणुंमूलतुझशासनं॥तेणतेएकसुविवेकथुणियें॥आज०६॥

अर्थ ॥ हेजिनके० सामान्यकेवलीमां भाणके० सूर्यसरिखातारी एक अद्विती य आज्ञाते हुं मस्तकेंधरुं अने अवरके० बीजानीवाणीते कानेसांभलियेंनही ए टले वीतरागनी आज्ञा आदरियें पणअवरजे रागीद्वेषी तेना वचनकाने नधरियें इतिभावः सर्वदर्शनके० सम्यक केमके सकलनयअश्रयें सम्यक्त यदुक्तं महाभाष्ये पावइयावयणपहा तावइयानयाविय ॥ चेवहुंतिनयवाया कमयासम्मतंसमुदियास हे ॥ इतिवचनात् तेमाटे समकितनुंमूलते तुझशासनके० तमारी आज्ञाछे अथवा षटदर्शननुंमूलते तुझशासनछे एटले सर्वदर्शन तेतमाराजदर्शननाअंशछे तेमाटे त मारी आज्ञातेज एक अद्वितीय भलाविवेकेकरी स्तवियेंछेयें एटले सर्वदर्शननुं मूल छांडी अवरनीस्तवना कोणकरे इतिभावः ॥ ६ ॥

तुझवचनरागसुखसागरेहुंगणुं॥सकलसुरमनुजसुखएकबिंदू॥सा
रकरजोसदादेवसेवकतणी॥तुंसुमतिकमलिनीवनदिणंदू॥आज०७॥

अर्थ ॥ तमारा वचनउपर जेराग एटले जैनागमनोजेराग तद्रूपजे सुखसमुद्रना समूह तेआगलें समस्तदेवता तथासमस्तमनुष्य चक्रवर्त्यादिकनासुख तेएकबिंदुस मान हुंगणुंछुंके० हुंमानुंछुं तेमाटे हेदेव सदासर्वदा तमारो हुंसेवकछुं तेनी सारके० संभालकरजो एटले तमारासरिखो करजो तमे सुमतिरूपजे कमलिनी तेनुं जेवन तेनेविषे दिणंदछोके० सूर्यसरिखाछो एटले सूर्यजेम कमलिनीने विकस्वरकरे तेम सुम तिरूपकमलिनीने तमे विकस्वरकरो एटले तमथी सुमतिआवे इतिभावः॥ ७ ॥

ज्ञानयोगेंधरीतृप्तिनविलाजियें॥गाजियेंएकतुजवचनरागें॥शक्तिउ

ल्लासअधिकोहुसेतुजथकी॥ तुंसदासकलसुखहेतजागें॥आज०॥८॥

अर्थ ॥ ज्ञानयोगमां तृप्तिधरीने एटले ज्ञानमां मग्नरहीने क्रियानुष्ठान करतां लाजियेंनही पण सावधानथयीने एकतमारा वचननेरागेंकरीगाजियें एटले कोइक ज्ञानवादिक्रियानुष्ठान उथापतोहोय तेने आगमवचनेकरी गाजीनेजवाबआपियें ए रीतें प्रवर्त्ततां तुजथकीके० तमारा वचनथकी एटले तमारीआज्ञाथकी शक्तिनोउ ल्लास पणअधिकोथशे पणगलियायथयीने वेशीरहेतां वीर्योल्लासनहिवाधे उलटुंआ लशेंवधसे इतिभावः एवीरीतें प्रवर्त्तनकरतां कारणद्वारे कर्त्ताने फलदेखाडेछे तुंसदा सकलके० तमे सदानिरंतर समस्तसुख जेसिद्धनासुख तेनो हेतुके० कारणते जागे के० जागतुंछो एटले ज्ञानक्रियाभ्यासें मोक्ष एप्रभुनुं वचनछे तेवचनथकी भव्यप्रा णी अजरामरसुखनुं भाजनथाय तेमाटे तेसिद्धिनोहेतु पणतुंहिजथयो इतिभावः॥८

वडतपागछनंदनवनेसुरतरु॥ हीरविजयोजयोसूरिराया॥तास

पाटेविजयसेनसूरिसरू॥ नितनमेनरपतिजासपाया॥आज०॥९॥

अर्थ ॥ श्रीजगच्चंद्रसूरियें तपाबिरुदधराव्युं एमोहोटोतपगछतद्रूप नंदनवननेवि षे सुरतरुके०कल्पवृक्षसमान श्रीहीरविजयसूरि जयोके०जयवंतोवर्त्तो सूरिरायाके० बीजाआचार्यमां राजासरिखाथया तेहनेपाटें श्रीविजयसेनसूरि सर्वआचार्यामां ई श्वरतुल्यथया जेमनाचरणकमलने नरपतिके० पादशाह तेनिरंतर नमस्कारकरताह ता एटले एभावजेपादशाहजाहांगीरें षटदर्शनपरिक्षानेअर्थें सर्वदर्शनीनेतेडाव्या तेमां जैनदर्शनमाहेला श्रीविजयसेनसूरिगयाहता तेमणेसर्वदर्शननुंपराजयकर्यो तेवारें पादशाहेंकह्युंजे श्रीहीरविजयतेगुरु अने तमेसवाइ गुरुथया इतिभावः॥ ९ ॥

तासपाटेंविजयदेवसूरिसरू ॥ पाटतसगुरुविज
यसिंहधोरी ॥ जासहितसीखथीमार्गएअनुस
र्यो ॥ जेहथीसविटलीकुमतिचोरी ॥आज०॥१०॥

अर्थ ॥ वलीतेनेपाटें श्रीविजयदेवसूरिथया तथा तेमनापाटें श्रीविजयसिंहसूरि तेगछनो जारवेहेवाने वृषभसमानधोरीथया जेमनी हितसीखके० आज्ञापामीने में एसंवेगमार्ग आदर्यो एटलेएजावजे श्रीजशोविजयजीउपाध्यायें पण एमनी आज्ञा पामिने क्रियाउद्धारकर्यो तथाश्रीविजयसिंहसूरिना शिष्यअनेक हता तेमां सत्तर शिष्य सरस्वतिबिरुदधारीहता तेसर्वेमां मोहोटा शिष्य पंम्तिश्रीसत्यविजयगणीहता तेमणे श्रीपूज्यनी आज्ञापामि क्रियाउद्धारकीधो तेमाटे एमकह्युंजे मार्ग एअनुस र्योके० एसंवेगमार्गआदर्यो जेआदरवायकी तीर्थंकरअदत्त गुरुअदत्त इत्यादिक कुमतिकदाग्रहरूप चोरीटलीगयी एश्रीआचार्योनी परंपराकही ॥ १० ॥

हीरगुरुशीसअवतंसमोटोहुउ ॥ वाचकाराजकल्या
णविजयो ॥ हेमगुरुसमवडंशब्दअनुशासने ॥
शीसतसविबुधवरलाभविजयो ॥ आज० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ हवे उपाध्यायजी पोतानीपरंपराकहेने तेपूर्वेंकह्यांश्रीविजयसिंहसूरि तेना शीष्यसमुदायमां अवतंसके० मुकुटसमान महोटाथया वाचकाराजके० उपा ध्यायोमां राजसरिखा एवा श्रीकल्याणविजय उपाध्यायथया ते शब्दअनुशासनेके० व्याकरण शास्त्रमांतो हेमगुरुसमवडेके०श्रीहेमाचार्य सरिखाथया वली तेमनाशिष्य विबुधवरके० सर्वपंडितमां शिरोमणी एवा श्रीलाभविजयगणीथया ॥ ११ ॥

शीसतसजितविजयोजयोविबुधवर ॥ नयविजयविबु
धतससगुरुभाया ॥ रहिअकाशीमठेजेहथींमेंलले ॥
न्यायदर्शनविपुलभावपाया ॥ आज० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वली तेमना शिष्य एकश्रीजितविजयजीजयवंता पंम्तिोमां प्राधान्यस रिखा तथा बीजाश्रीनयविजयजी पंडितप्राधान्यथया तेश्रीजितविजयजीनागुरु भाइथया जेहथीके० तेवेहूगुरुनापसायथी हुं रहिअकाशीमठेके० काशीना मठने विषे रहीने लक्षीरीतें न्यायदर्शनके०न्यायशास्त्रना भावते विपुलके० विस्तारपणेपाम्यो

जेहथीशुद्धलहियेंसकलनयनिपुण ॥ सिद्धसेनादि
कृतशास्त्रभावा॥ तेहएसुगुरुकरुणाप्रभोतुझसुगुण॥
वयणरयणायरीमुझनावा ॥ आज० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेगुरुनाप्रसादथकी श्रीसिद्धसेनदिवाकर तथा आदिशब्दथी हरिभद्रसूरि उमास्वातिवाचकप्रमुख पंमितोनाकरेलाजेशास्त्रतेमांकह्याजेभाव तेनाशुद्धलहियेंके० शुद्धरहस्यपामियें तेभावकेवाछे जे सकलनयनिपुणके० समस्तजे न्याय तेमांनिपुण अथवा समस्तजेनैगमादिकनयतेमां निपुण एवाजे समति तत्वार्थ षड्दर्शनसमुच्च य नयचक्रसार धर्मसंग्रहणी अनेकांतजयपताका प्रमुखग्रंथोनाभाव तेना शुद्धरह स्यने हुं पाम्यो माटे एगुर्वादिकनीजे करुणाके० कृपा तेकेवीछे जेहे प्रभो तुझके० तमारुं जे सुगुणवयणके० गुणवंतजेवचन तद्रूप रयणायरीके० समुद्रनेविषे नावा के० जहाजसरिखीछे एटले एभावजे तमारा वचनरूपसमुद्रनोपार तोपामियेंजोगुर्वा दिकनी करुणारूपनावा होयतो तेमारागुरुनी कृपारूपनावा थयी ॥१३ ॥

॥ कलस ॥

इमसकलसुखकरदुरितभयहरस्वामीश्रीमंधरतणी ॥ एवीन
तिजेसुणेभावेंतेलहेलीलावणी ॥ श्रीनयविजयबुधचरणसे
वकजशविजयबुधआपणी॥ रुचिशक्तिसारुंप्रगटकीधीशा
स्त्रमर्यादाभणी ॥ १ ॥ इतिश्रीसीमंधरजिनविज्ञप्तिःसंपूर्णा॥

अर्थ ॥ हवे जेमनवोप्रासादकरावे तेनेमाथे कलशचढावे तेवारें संपूर्णथाय ते म आतवनरूपप्रासादनीपनुंतेसंपूर्णकरवामाटे कलशकहेछे एरीते सकलसुखना क रनारा तथादुरितके० पापनुं जेभयतेना हरवावाला एवा स्वामीके० नायक श्री सीमंधरप्रभुनी एमेंविनतीकही तेजेप्राणीभक्तिभावेंकरी सांभले तेप्राणी घणीसुखली लापामें एरीते श्रीनयविजयजीपंमितना चरणकमलनो सेवानाकरनार श्रीयशोविज यजीपंमित तेमणे पोतानी शक्तिप्रमाणे श्रद्धाभावनीजे रुचिहती एटले स्याद्वादमा र्गनी रुचिजेपोताना चित्तमांहतीते शास्त्रनीमर्यादायेंप्रगटकरी कहि देखाडी इति ॥१॥

इतिश्रीसीमंधरजिनस्तवनटबार्थःसमाप्तः

क्केदंकर्त्तुर्वचःशस्तंनानाशास्त्रार्थगर्भितं ॥ क्कमेल्पविषयाप्रज्ञामुसलायोपमाखलु ॥ १ ॥ यदत्रवितथंप्रोक्तंमंदबुध्यादिहेतुना ॥ तद्धीधनैःकृपांकृत्वामयिशोध्यममत्सरैः ॥ २ ॥ श्रीमद्विजयसिंहाख्यःसूरिराड्विजितेंद्रियः ॥ तस्यांतेवासीसत्यादिविजयःसान्वयःसुधीः ॥ ३ ॥ कर्पूरविजयस्तस्यशिष्योगुणगणैर्युतः ॥ तस्यापिक्रमयायुक्तःक्षमाविजयइत्यनूत् ॥ ४ ॥ जिनादिविजयस्तस्यशिष्योनूत्सूरिशिष्यकः ॥ शास्त्रज्ञःसज्जनोधीमान् कर्मबोधर्मेककर्मणि ॥ ५ ॥ उत्तमादिजयस्तस्य शिष्यःशिष्यांवसत्तमः ॥ सर्वोत्तमगुणैर्व्याप्तः कर्मशास्त्रकुशाग्रधीः ॥ ६ ॥ तस्यांघ्रिपंकजेपद्मविजयोभ्रमरोपमः ॥ नगाग्निवसुचंद्रेब्दे १८३० तेनेदंवार्त्तिकंकृतं ॥ ७ ॥

इतिश्रीसीमंधरजिनस्तवनकवियशोविजयकृतसा
र्द्धत्रिशतगाथाप्रवंधेतस्यकविपद्मविज
यकृतबालाबोध.समाप्तः

उँश्रीसर्वज्ञायनमः

अथ

श्रीपंमितदेवचंदजीकृतआगमसारलिख्यते

भव्यजीवनेप्रतिबोधवानिमित्तेंमोक्षमार्गनीवचनिकाकहेछे तिहांप्रथम जीवअना दिकालनो मिथ्यात्वीहतो तेकाललब्धिपामीने त्रणकरणकरेछे तेहनानाम पेहेलुं यथाप्रवृत्तिकरण बीजुंअपूर्वकरण त्रीजुंअनिवृत्तिकरण

तेमांपेहेलुं यथाप्रवृत्तिकरणकहेछे १ ज्ञानावरणी २ दर्शनावरणी ३ वेदनी ४ अंतराय एचारकर्मनी त्रीसकोडाकोडीसागरोपमनीस्थितिछे तेमांथी उगणतीस कोडाकोडीखपावे अनेएककोडाकोडीबाकीराखे तथा १ नामकर्म २ गोत्रकर्म एबे कर्मनी वीसकोडाकोडीसागरोपमनीस्थितिछे तेमांथी उगणीसखपावे अनेएककोडाको डीराखे अने मोहनीयकर्मनीसित्तेरकोडाकोडीसागरोपमनीस्थितिछे तेमांथी उगुण सेरखपावे बाकीएककोडाकोडीराखे एवीरीतें एकआयुकर्म्मवर्जीने बाकीसातेकर्म्मनी एकपल्योपमना असंख्यातमाभागेंन्यून एककोडाकोडीसागरोपमनीस्थितिराखे एहवुं जेवैरागरूप उदासिपरिणामते यथाप्रवृत्तिकरणकहियें एपेहेलुंकरण सर्वसंज्ञीपंचें द्रीजीव अनंतिवारकरेछे.

हवे बीजुंअपूर्वकरणकहेछे तेएककोडाकोडीसागरोपमनी स्थितिमांथी एकमू हूर्त्त अनेअनादिमिथ्यात्व जे अनंतानुबंधीआनीचोकडी ते खपाववाने अज्ञानहेय तेत्यागवु अने ज्ञानउपादेय एटले आदरवुं एवांछारूप अपूर्वकहेतां पहिलाकिवारेंना व्यो एहवोजे परिणाम ते अपूर्वकरणकहियें एवीजुंकरणते समकितयोग्यजीवनेथाय

हवेत्रीजुंअनिवृत्तिकरणकहेछे तेमुहूर्त्तरूपस्थितिखपावीने निर्मलशुद्धसमकेतपा में मिथ्यात्वनोउदयमिटे तेवारेंजीव उपशमसमकेतपामें एहवोजेपरिणामते अनि वृत्तिकरणकहियें एकरणकीधाथी गंठीभेदथयोकहियें उक्तंच आवश्यकनिर्युक्तौ "जा गंठीतापढमं गंठीसमयछेउभवेवीउ ॥ अनिअट्टिकरणंपुण समत्तपुरस्कडेजीवे" ॥१॥ कसरदेसंदढ्ढुल्लिअंच विज्झाइजणदवोपप्पइय ॥ मिछत्तस्सअणुदए उवसमसम्मंलहइ जीवो ॥ २ ॥ एममिथ्यात्वनोउदयमिटवाथी जीवसमकितपामेतेसमकितनी सद्दहणा नाबेभेदछे एक व्यवहारसमकेतसद्दहणा बीजी निश्चयसमकितसद्दहणा.

देवश्रीअरिहंत देवाधिदेव अने गुरुसुसाधु जे सूधोअर्थकहेते तथा धर्मकेवली नोपरुप्यो जे आगममां सातनय तथा एकप्रत्यक्ष बीजुंपरोक्ष एवेप्रमाण अने चारनिक्षेपेंकरीसद्दहे एहवी सद्दहणा ते व्यवहारसमकितकहियें एपुण्यनुं कारण तथा धर्मप्रगटकरवानुंकारणछे एहवीरुचि ज्ञानविनापण घणाजीवोने उपजे.

बीजोनिश्चेंसमकित तेआवीरीतेजे निश्चेंदेवते आपणोजआत्मा जीवनिष्पन्न स्व रूपी सिद्ध ते संग्रहनयनीसत्तागवेषतां तथा निश्चेंगुरुतेपण आपणोआत्माज तत्व रमणी अने निश्चेंधर्मते आपणाजीवनोस्वभावजछे एहवीसद्दहणा ते मोक्षनुंकारण छे केमकेजीवस्वरूपओलख्याविनाकर्म्मेंखपेनही एहवी शुद्धसद्दहणा तेनिश्चेंसमकेत

हवेज्ञाननुंस्वरूपकहेछे तेज्ञाननावेभेदछे एकव्यवहारज्ञान बीजुंनिश्चेंज्ञान तेमांजे अन्यमतिनासर्वेशास्त्रजाणवा अथवा जैनागममध्ये कह्याजे एकगणितानुयोग तेद्रे व्यमान बीजो चरणकरणानुयोग तेक्रियाविधि त्रीजोधर्मकथानुयोग एत्रणअनु योगनोजाणवापणुं तेसर्वेव्यवहारज्ञानछे अथवा अंतरउपयोगविनाजेसूत्रना अर्थ करवा ते पण व्यवहारज्ञानकहियें.

हवेनिश्चेंज्ञान ते छद्रव्य तथा तेनागुण अनेपर्याय सर्वनेजाणे तेमां पांचअ जीवद्रव्यछे तेहेयके० छांडवायोग्यजाणीछांडवा अने एकजीवद्रव्यतेनिश्चयनयकरी सिद्धसमान मोक्षमयी मोक्षनोजाणनार मोक्षनुंकारण मोक्षनोजावावालो मोक्ष मांजरहेने एहवोआपणोजीव अनंतगुणीअरूपीछे तेहनेजध्यावे तेनिश्चेंज्ञानकहियें

हवे एकधर्मास्तिकाय बीजोअधर्मास्तिकाय त्रीजोआकाशास्तिकाय चोथोपुद्गला स्तिकाय पांचमोजीवास्तिकाय अनेछठोकाल एछद्रव्यशाश्वताछे तेनुंज्ञानकहेछे ए छ द्रव्यमध्ये पांचअजीवद्रव्यछे अनेएकजीवद्रव्य ते चेतनालक्षणवंतछे उपादेयछे.

हवेएछद्रव्यनागुणकहेछे पेहेलोधर्मास्तिकायनाचारगुण एकअरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोगतिसहायगुण अनेबीजोअधर्मास्तिकायनापण चारगुणछे एक अरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोस्थितिसहायगुण अने त्रीजो आकाशा स्तिकायद्रव्यनाचारगुणछे एकअरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चोथोअवगाहना दानगुण हवेकालद्रव्यनाचारगुणकहेछे एकअरूपी बीजोअचेतन त्रीजोअक्रिय चो थोनवापुराण वर्त्तनालक्षण हवेपुद्गलद्रव्यनाचारगुणकहेछे एकरूपी बीजोअचेतन त्रीजोसक्रिय चोथोमिलणविखरणरूपपूरणगलनगुण हवेजीवद्रव्यनाचारगुणकहेछे एकअनंतज्ञान बीजोअनंतदर्शन त्रीजो अनंतचारित्र चोथोअनंतवीर्य एछद्रव्यना गुणमां तेनिश्चगुणछे ॥

हवेछद्रव्यनापर्यायकहेछे धर्मास्तिकायनाचारपर्यायछे एकखंध वीजोदेश त्रीजोप्र देश चोथो अगुरुलघु अधर्मास्तिकायनाचारपर्याय एकखंध वीजोदेश त्रीजोप्रदेश चोथोअगुरुलघु पुद्गलद्रव्यनाचारपर्याय एकवरण वीजोगंध त्रीजोरस चोथोस्पर्श अगुरुलघुसहित तथाआकाशास्तिकायनाचारपर्याय एकखंध वीजोदेश त्रीजोप्रदेश चोथोअगुरुलघु कालद्रव्यनाचारपर्याय एकअतीतकाल वीजोअनागतकाल त्रीजो वर्त्तमानकाल चोथोअगुरुलघु अनेजीवद्रव्यनाचारपर्याय एकअव्यावाध वीजोअ नवगाह त्रीजोअमूर्त्तिक चोथोअगुरुलघु एछद्रव्यनापर्यायकह्या.

हवेछद्रव्यनागुणपर्यायनुंसाधर्मपणुंकहेछे अगुरुलघुपर्यायसर्वद्रव्यमांसरिखोछेअ नेअरूपीगुणपांचद्रव्यमांछे एकपुद्गलद्रव्यमांनथी तथाअचेतनगुणपांचद्रव्यमांछे एक जीवद्रव्यमांनथी अनेसक्रियगुणजीव तथापुद्गलएवेद्रव्यमांछे वाकीचारद्रव्यमांनथी तथाचलणसहायगुणएकधर्मास्तिकायमांछे वीजापांचद्रव्यमांनथी वलीस्थिरसहाय गुण एकअधर्मास्तिकायमांछे वीजापांचद्रव्यमांनथी तथाअवगाहनागुणतेएकआका शद्रव्यमांछे वीजापांचद्रव्यमांनथी अने वर्त्तनागुणतेएककालद्रव्यमांजछे वीजापांच द्रव्यमांनथी तेमजमिलणविखरणगुणतेपुद्गलमांछे वीजाद्रव्यमांनथी तथाज्ञानचेत नागुण ते एकजीवद्रव्यमांछे पणवीजाद्रव्यमांनथी एमूलगुण कोइद्रव्यनाकोइद्रव्यमां मिलेनही एकधर्म वीजोअधर्म त्रीजोआकाश एत्रणद्रव्यना त्रणगुण तथा चारप र्यायसरिखाछे अनेत्रणगुणेकरीतो कालद्रव्यपणएसमानछे.

हवेवलीइग्यारवोलेंकरीछद्रव्यनागुणजाणवानेगाथाकहेछे "परिणामजीवमुत्ता॥ सपएसाएगखित्तकिरिआय ॥ निच्चंकारणकत्ता सव्वगदइयरअप्पवेसा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ निश्चेनयथीआपआपणा स्वभावेंतछद्रव्यपरिणामिछे अनेव्यवहारनय जीव तथापुद्ग ल एवेद्रव्यपरिणामीछे तथाएकधर्म वीजो अधर्म त्रीजोआकाश अनेचोथोकाल ए चारद्रव्यअपरिणामीछे तथाछद्रव्यमां एकजीवद्रव्यतेजीवछे वीजापांचद्रव्यअजीवछे तथाछद्रव्यमांएकपुद्गलमूर्त्तिवंतरूपीछे अनेपांचद्रव्यअमूर्त्तिवंतअरूपीछे छद्रव्यमां पां चद्रव्यसप्रदेशीछे अने एककालद्रव्यअप्रदेशीछे तेमां एकधर्मास्तिकाय वीजोअधर्मास्ति काय एवेद्रव्य असंख्यातप्रदेशीछे अने एकआकाशद्रव्यअनंतप्रदेशीछे जीवद्रव्यअ संख्यातप्रदेशीछे पुद्गलपरमाणुअनंतप्रदेशीछे परमाणुआअनंताछे एमपांचद्रव्यसप्र देशीछे अनेछठोकालअप्रदेशीछे.

छद्रव्यमां एकधर्मास्तिकाय वीजोअधर्मास्तिकाय त्रीजोआकाशास्तिकाय एत्रणते एकेकद्रव्यछे तथाएकजीवद्रव्य वीजोपुद्गलद्रव्य त्रीजोकालद्रव्य एत्रणद्रव्यअनेकअ

[illegible] अनेबीजापांचद्रव्य क्षेत्रीते निभेंनयथीद्रव्य [illegible] माटेसक्रियने अनेव्यवहारनयथी जीवतथापुद्गल एबे [illegible] सक्रियने अनेजीवद्रव्यतो संसारीयकोसक्रियने [illegible] तथाबाकीनाचारद्रव्यतोअ [illegible] अनित्यपणेंपणले त [illegible] बाकीनाचारद्रव्यअनित्यनेपयपिवहपा [illegible] नोवण एकधर्म बीजोअधर्म त्रीजोआकाश ए [illegible] तेमाटेनित्यकह्यां ॥

[illegible] अनेचारद्रव्यकारणले केमके पांचेद्रव्यजीवने [illegible] धर्मास्तिकाय [illegible] अधर्मा [illegible] पुद्गलास्तिकाय [illegible] नोगपणेथापले तथाकाळद्र [illegible] तथासंसारीजीव [illegible] अवस्था [illegible] जीवनेनोगथापले [illegible] माटे [illegible] अनेपांचद्रव्यनोगथाले [illegible] निभेंनयथी [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अनेचारपर्यायअनित्यछे पुद्गलद्रव्यनाचारगुणनित्यछे अनेचारपर्यायअनित्यछे जीव द्रव्यनाचारगुण तथा त्रणपर्यायनित्यछे अनेएकअगुरुलघुपर्यायअनित्यछे एरीतेनि त्यानित्यपक्षकह्यो.

हवेएकअनेकपक्षकहेछे एकधर्मास्तिकाय वीजोअधर्मास्तिकाय एवेद्रव्यनोखंधलो काकाशप्रमाणएकछे अनेगुणअनंताछे पर्यायअनंताछे प्रदेशअसंख्याताछे तेणेकरी अनेकछे आकाशद्रव्यनोलोकालोकप्रमाणखंधएकछे अनेगुणअनंताछे पर्यायअनंताछे प्रदेशअनंताछे माटेअनेकछे कालद्रव्यनोवर्त्तनारूपगुणएकछेअनेगुणअनंताछे पर्याय अनंताछे समयअनंताछे केमकेअतीतकालेंअनंतासमयगया अने अनागतकालें अनं तासमयआवसे तथावर्त्तमानकालेंसमयएकछे माटेअनेकपक्षछे पुद्गलद्रव्यनापरमा णुअनंताछे ते एकेकपरमाणुमां अनंतागुणपर्यायछे तेअनेकपणुंछे अनेसर्वपरमाणु मां पुद्गलपणुंतेएकजछे माटेएकछे.

जीवद्रव्यअनंताछेएकेकाजीवमां प्रदेशअसंख्याताछे तथागुणअनंताछे पर्यायअ नंताछे तेअनेकपणुंछे पणजीवितव्यपणोसर्वजीवोनो एकसरिखोछे माटे एकपणुंछे इ हांशिष्यपूछेछे जेसर्वजीवएकसरिखाछे तोमोक्षनाजीव सिद्धपरमानंदमयीदेखायछे अ नेसंसारीजीवकर्म्मवशपड्याडुःखीदेखायछे अनेतेसर्वजूदाजूदादेखायछे तेकेमतेहनेगु रुउत्तरकहेछे के निश्चयनयतोसर्वजीवसिद्धसमानछे माटेजसर्वजीवकर्म्मखपावीनेसि द्धथायछे तेथीसर्वजीवनीसत्ताएकछे.

फरिशिष्यपूछेछेके जोसर्वजीवसिद्धसमानकह्योछो तोअभव्यजीवपणसिद्धसमानछे एमठेसुं अनेतेतोमोक्षेजतानथी तेहनेउत्तर जेअभव्यनेकर्म्मचीकणाछे अनेअभव्य मांपरावर्त्तधर्मनथी तेथीसिद्धथतानथी माटेतेनोएहवोज स्वभावछे जेमोक्षेजवुंज नथी अनेभव्यजीवमांपरावर्त्तधर्मछे माटेकारणसामग्रीमिले पलटणपामे गुणश्रे णीचढी मोक्षकरीसिद्धथाय पणजीवनामुख्यआठरुचकप्रदेशजेछे तेनिश्चेनयथी भव्य तथाअभव्य सर्वनासिद्धसमानछे माटे सर्वजीवनीसत्ताएकसरिखीछे केमकेएआठप्रदे शने विलकुलकर्मलागता नथी तेश्रीआचारांगसूत्रनी श्रीसिलंगाचार्यकृतटीकानालो कविजयाध्ययने प्रथमोद्देशकेसाखछे तिहांथीसविस्तरपणेजोवुं

हवेसत्तथाअसत्पक्षकहेछे एछद्रव्य तेस्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल अने स्वभाव पणे सत्एटलेछताछे अने परद्रव्य परक्षेत्र परकाल तथा परभाव पणे असत् एटले अ छताछे तेनीरीतछताछतावानेअर्थे छएद्रव्यनो द्रव्य क्षेत्र काल भाव कहियेछेयें

धर्मास्तिकायनोमूलगुण चलणसहायपणो ते स्वद्रव्य अधर्मास्तिकायनोमूलगुण

स्थितिसहायपणो ते स्वद्रव्य आकाशास्तिकायनोमूलगुण अवगाहपणो तेस्वद्रव्य कालद्रव्यनोमूलगुण वर्त्तनालक्षणपणो ते स्वद्रव्य तथा पुद्गलनोमूलगुण पुरणग लनपणो तेस्वद्रव्य अने जीवद्रव्यनोमूलगुणज्ञानादिकचेतनालक्षणपणो ते स्वद्रव्य एछद्रव्यनो स्वद्रव्यपणोकह्यो.

हवे स्वक्षेत्र ते द्रव्यनोप्रदेशपणोछे ते देखाडेछे तिहां एकधर्मास्तिकाय वीजोअ धर्मास्तिकाय एबेद्रव्यनो स्वक्षेत्र असंख्यातप्रदेशछे अने आकाशद्रव्यनो स्वक्षेत्र अ नंतप्रदेशछे कालद्रव्यनो स्वक्षेत्रसमयछे पुद्गलद्रव्यनो स्वक्षेत्रएकपरमाणुछे तेपर माणुअनंताछे जीवद्रव्यनो स्वक्षेत्र एकजीवनाअसंख्याताप्रदेशछे.

हवे स्वकालते छएद्रव्यमां अगुरुलघुनोजछे अने एछद्रव्यनापोतपोताना गुणप र्यायते सर्वद्रव्यनो स्वनावजाणवो एटले धर्मास्तिकायमां पोतानाज द्रव्य क्षेत्र काल नावछे पणवीजा पांचद्रव्यनानथी तथा अधर्मास्तिकायद्रव्यमध्ये पण स्वद्रव्यादि कचारछे पणवीजा पांचद्रव्यनानथी एमजआकाशास्तिकायनेविषे आकाशनाज स्व द्रव्यादिकचारछे पणवीजापांचद्रव्यनानथी कालद्रव्यमां कालनाद्रव्यादिकचारछे वी जापांचद्रव्यनानथी अने पुद्गलनाद्रव्यादिकचार ते पुद्गलमांजछे पणवीजापांचद्रव्य नानथी तथा जीवद्रव्यना स्वद्रव्यादिकचार ते जीवमांछे पणवीजा पांचद्रव्यनानथी

जेद्रव्यतेगुणपर्यायवंत द्रव्यथीअनेदपर्यायहोयतेद्रव्यकहियें तथास्वधर्मनोआ धारवंतपणो ते क्षेत्रकहियें अने उत्पादव्ययनीवर्त्तना तेकालकहियें तथाविशेषगु णपरिणति स्वनावपरिणति पर्यायप्रमुख ते स्वनावकहियें.

इहां १ नेदस्वनाव २ अनेदस्वनाव ३ नव्यस्वनाव ४ अनव्यस्वनाव ५परम स्वनाव एपांचस्वनावकहेवा तेमांद्रव्यनासर्वधर्मने पोतपोतानास्वस्वकार्यने करवेक री नेदस्वनावछे अने अवस्थानपणेअनेदस्वनावछे अणपलटणस्वनावें अनव्यस्व नावछे तथा पलटणस्वनावें नव्यस्वनावछे अने द्रव्यनासर्वधर्म तेविशेषधर्मनेअनु जायीजपरिणमे तेमाटे ते परमस्वनावकहियें एसामान्यस्वनावजाणवा एरीतेंछएद्र व्यंस्वगुणेसतछे अनेपरगुणे असतछे.

हवे वक्तव्य तथा अवक्तव्यपक्षकहेछे एछद्रव्यमां अनंतागुणपर्यायते वक्तव्यएट लेवचनेकेहेवायोग्यछे अने धनंतागुणपर्यायतेअवक्तव्य एटले वचनेकह्याजायनही एवाछे तिहांकेवलीनगवंतें समस्तनावदीठा तेनेअनंतमेनागें जे वक्तव्य एटलेके वायोग्यहता ते कह्या वलीतेनोपणअनंतमोनाग श्रीगणधरदेवें सूत्रमां गुंथ्यो तेसूत्रमांगुंथ्यातेनेअसंख्यातमेनागें हमणाआगमरह्याछे ए छद्रव्यमांआठपक्षकह्या

हवेनित्यतथाअनित्यपक्षथीचौभंगीउपनीतेकहेछे एक जेनीआदिनथी अने अंत पणनथी तेअनादिअनंत पेहेलोभांगो अनेजेनी आदिनथी पणअंतछे तेअनादि सांतबीजोभांगो तथाजेनीआदिपणछे अनेअंतएटले छेहेडोपणछे तेसादिसांतत्रीजो भांगो वलीजेहनीआदिछे पणअंतनथी तेसादिअनंतनामेचोथोभांगोजाणवो.

हवेएचारभांगाछद्रव्यमांफलावीदेखाडेछे जीवद्रव्यमां ज्ञानादिकगुणतेअनादिअनंतछे नित्यछे अनेभव्यजीवनेकर्मसाथेसंबंध तथा संसारीपणानीआदिनथी पणसिद्ध थायतेवारे अंतआव्यो तेथीएअनादिसांतभांगोछे अनेदेवता तथा नारकीप्रमुखना भवकरवाते सादिसांतभांगोछे अने जेजीवकर्मखपावी मोक्षगया तेनी सिद्धपणेआ दिछे अने पाछोसंसारमां कोइकालेंआववुंनथी माटेअंतनथी तेथीएसादिअनंत भांगोछे एजीवद्रव्यमांचोभंगीकही जीवद्रव्यनाचारगुणअनादिअनंतछे जीवनेकर्मसा थेंसंयोगतेअनादिसांतछे केमकेकेवारेपणकर्मछूटेछे.

हवेधर्मास्तिकायमांचारगुण तथाखंधपणो ते अनादिअनंतछे अने अनादिसांत भांगोनथी तथा १देश २प्रदेश ३अगुरुलघु एसादिसांतभांगोछे तथासिद्धनाजीवमां धर्मास्तिकायनाजेप्रदेशरह्यांछे तेप्रदेशआश्रयीने सादिअनंतभांगोछे एवीजरीतें अध र्मास्तिकायमांपण चोभंगीजाणवी अनेआकाशद्रव्यमां गुणतथाखंधअनादिअनंतछे बीजोभांगोनथी अने १ देश २ प्रदेश तथा ३ अगुरुलघुसादिसांतछे तथासिद्धना जीवनीसाथे संबंधतेसादिअनंतछे.

पुद्गलद्रव्यमांगुणअनादिअनंतछे जीवपुद्गलनोसंबंध अभव्यने अनादिअनंतछे भव्यजीवनेअनादिसांतछे पुद्गलनाखंधसर्वसादिसांतछे जेखंधबांध्यातेस्थितिप्रमाणे रहीखिरेछे वलीनवाबंधायछे माटेसादिअनंतभांगोपुद्गलमांनथी.

कालद्रव्यमां गुणचारअनादिअनंतछे पर्यायमां अतीतकालअनादिसांतछे अनेव र्तमानकालसादिसांतछे अनागतकालसादिअनंतछे एकालनुंस्वरूपते सर्वउपचारथी छे एरीतेंकालद्रव्यमां चोभंगीकही.

हवे द्रव्यक्षेत्रकालतथा भावमांचोभंगीकहेछे जीवद्रव्यमां स्वद्रव्यथीज्ञानादिकगु णते अनादिअनंतछे स्वक्षेत्रेजीवनाप्रदेशअसंख्याताछे तेसादिसांतछे ततोचर्मनाप णे फिरेछे तेमाटे. अथवा अवगाहनामाटेसादिसांतछे पणव्रतिपणेतो अनादिअनंत छे स्वकालअगुरुलघुनेगुणे अनादिअनंतछे अनेअगुरुलघुगुणनो उपजवो तथाविण शवोतेसादिसांतछे तथा स्वभावगुणपर्याय तेअनादिअनंतछे अनेभेदांतरेअगुरुलघु तेसादिसांतछे.

धर्मास्तिकायमां स्वद्रव्यजेचलणसहायगुण तेअनादिअनंतछे अनेस्वखेत्रअसंख्या
त प्रदेशलोकप्रमाणने ते अवगाहनापणे सादिसांतछे स्वकालतेअगुरुलघुगुणेकरी
अनादिअनंतने अने उत्पादव्ययतेसादिसांतछे स्वभावते चारगुणअगुरुलघुअनादि
अनंतने १ खंध २ देश ३ प्रदेशतेअवगाहनानेप्रमाणे सादिसांतछे एमअधर्मास्ति
कायनापणद्रव्यादिचारभांगाजाणवा तथाआकाशास्तिकायमां स्वद्रव्यअवगाहनादा
नगुणतेअनादिअनंतने अनेस्वखेत्रलोकालोकप्रमाणअनंतप्रदेशते अनादिअनंतछे
स्वकालते अगुरुलघुगुणसर्वथापणेअनादिअनंतछे अनेउपजवे तथाविणसवेसादि
सांतने स्वभाव ते चारगुण तथा खंधअने अगुरुलघुते अनादिअनंतछे तथादेशप्रदे
शते सादिसांतने तेआकाशद्रव्यना वेभेदछे एकचौदराजलोकनो खंध लोकाकाश ते
सादिसांतने बीजोअलोकाकाशनो खंध तेसादिअनंतछे.

कालद्रव्यमां स्वद्रव्यजे नवपुराणवर्त्तनागुण तेअनादिअनंतछे स्वखेत्रसमयका
लते सादिसांतने केमके वर्त्तमानसमयएकछेतेमाटे. तथा स्वकालतेअनादिअनंतछे
स्वभावतेगुणचार अनेअगुरुलघु अनादिअनंतने अतीतकालअनादिसांतछे अनेवर्त्त
मानकालसादिसांतने अनागतकाल सादिअनंतछे.

पुद्गलद्रव्यमां स्वद्रव्यते द्रव्यपणे जेपूर्णगलनधर्मतेअनादिअनंतने अनेस्वखेत्र पर
माणुते सादिसांतने स्वकालस्थिति अगुरुलघुगुणते अनादिअनंतछे अगुरुलघुनोउप
जवोविणसवोते सादिसांतने स्वभावतेगुणचार अनादिअनंतने वर्णादिपर्यायचार एट
ले वर्ण गंध रस स्पर्श तेसादिसांतने एद्रव्यादिचारमां चौभंगीकही.

हवे छद्रव्यनासंबंधथाश्रीचौभंगीकहेछे तिहांप्रथमआकाशद्रव्यछे तेमांअलोका
काशमांकोइद्रव्यनथी अनेलोकाकाशमां छद्रव्यछे तिहांलोकाकाशद्रव्य तथाबीजुंध
र्मास्तिकायद्रव्य अनेत्रीजुंअधर्मास्तिकायद्रव्य ते अनादिअनंतसंबंधीछे जेलोकाकाश
नाएकेकप्रदेशमांधर्मद्रव्यतथाअधर्मद्रव्यनोएकेकप्रदेशरह्योछे तेपण किवारे विछडसेन
ही माटेअनादिअनंतसंबंधीछे आकाशखेत्रलोकमवे अनेजीवद्रव्यनोअनादिअनंतसं
बंधछे अनेसंसारीजीवकर्मसहित तथा लोकनाप्रदेशनोसादिसांतसंबंधछे लोकांतसिद्ध
खेत्रनासिद्धजीवोनो आकाशप्रदेशसाथेसादिअनंतसंबंधछे लोकाकाशअनेपुद्गलद्रव्य
नोअनादिअनंतसंबंधछे आकाशप्रदेशनीसाथे पुद्गलपरमाणुनो सादिसांतसंबंधछेएम
आकाशद्रव्यनीपरेधर्मास्तिकाय तथाअधर्मास्तिकायनोपण सर्वसंबंधजाणवो जीव
अनेपुद्गलनासंबंधमां अभव्यजीवनेपुद्गलनोअनादिअनंतसंबंधछे केमके अभव्यजी
वनाकर्मनोनाश क्यारेनथीमाटे अने भव्यजीवनेकर्मनुंलागवुंअनादिकालनोछे पणते

किवारेकछुटशे माटेजव्यजीवनेपुद्गलसंबंधअनादिसांतछे तथानिश्चेनयकरीछद्रव्यस्व भावपरिणामपरिणम्याछे तेपरिणामीपणोसदाशाश्वतोछे तेमाटेअनादिअनंतछे अने जीवतथापुद्गलबेहुद्रव्यमिलिसंबंधभावपामेछे तेपरपरिणामीपणोछे तेपरपरिणामि पणोअभव्यजीवनेअनादिअनंतछे अनेभव्यजीवनेअनादिसांतछे अनेपुद्गलनोपरिणा मीपणो तेसत्तायेंअनादिअनंतछे अनेपुद्गलनोमिलवो विछडवोतेसादिसांतछे एटले जीवद्रव्यपुद्गलसायेमिल्योसक्रियछे अनेपुद्गलकर्मथीरहित थाय तेवारेंजीवद्रव्यअ क्रियछे अनेपुद्गलद्रव्यसदासक्रियछे.

हवेएकअनेकपक्षथी निश्चेज्ञानकहेवाने नयकेहेछे सर्वद्रव्यमांअनेकस्वभावछे तेए कवचनयीकह्याजायनही माटेमाहोमाहेंनयकरीसंक्षेपपणेकहेछे तिहांमूलनयनाबेभे दछे एकद्रव्यार्थिक बीजोपर्यायार्थिक तेमांउत्पादव्ययपर्यायगौणपणे अनेप्रधानपणे द्रव्यनोगुणसत्तानेग्रहेतेद्रव्यार्थिकनयकहियें तेहनादशभेदछे १ सर्वद्रव्यनित्यछे तेनित्य द्रव्यार्थिक २ अगुरुलघु अनेखेत्रनीअपेक्षानकरे मूलगुणने पिंडपणेग्रहे तेएकद्रव्या र्थिक ३ ज्ञानादिकगुणेसर्वजीव एकसरिखाछे माटेसर्वनेएकजीवकहे स्वद्रव्यादिकनेग्र हे तेसत् द्रव्यार्थिक जेमसत्लक्षणंद्रव्यं ४ द्रव्यमांकेहेवायोग्यगुण अंगीकारकरे ते वक्तव्यद्रव्यार्थिक ५ आत्मानेअज्ञानीकहेवुं तेअशुद्धद्रव्यार्थिक ६ सर्वद्रव्यगुणपर्याय सहितछे एमकेहेवुं तेअन्वयद्रव्यार्थिक ७ सर्वजीवद्रव्यनीमूलसत्ताएकछे तेपरमद्रव्या र्थिकनय ८ सर्वजीवना आठप्रदेशनिर्मलछे तेशुद्धद्रव्यार्थिकनय ९ सर्व जीवनाअसं ख्यातप्रदेश एकसरिखाछे तेसत्ताद्रव्यार्थिकनय १० गुणगुणीद्रव्यतेएकछे तेपरम भावग्राहकद्रव्यार्थिकजेमआत्माज्ञानरूपछेइत्यादिकएद्रव्यार्थिकनयनादशभेदकह्या.

हवे पर्यायार्थिकनयनाछभेदकहेछे जेपर्यायनेग्रहेतेपर्यायार्थिकनयकहियें तेनाछभे दछे १ द्रव्यपर्यायतेजीवनेभव्यपणुं तथासिद्धपणुंकेहेवुं २ द्रव्यव्यंजनपर्याय तेद्र व्यनुंप्रदेशमान ३ गुणपर्यायजेएकगुणथीअनेकताथाय जेमधर्माधर्मादिद्रव्य पोताना चलणसहकारादिगुणथी अनेकजीवतथापुद्गलने सहायकरे ४ गुणव्यंजनपर्यायजे एकगुणनाघणाभेदछे ५ स्वभावपर्यायतेअगुरुलघुपर्यायथीजाणवुं एपांचपर्यायसर्व द्रव्यमांछे अनेछठोविभावपर्यायतेजीवपुद्गलएबेद्रव्यमांछे तिहांजीवजेचारगतिना नं वानवाभवकरे तेजीवमांविभावपर्याय तथापुद्गलमां खंधपणुंतेविभावपर्यायजाणवो.

हवेपर्यायनावीजाछभेदकेहेछे १ अनादिनित्यपर्याय तेजेमपुद्गलद्रव्यनोमेरुप्रमुख २ सादिनित्यपर्यायतेजीवद्रव्यनोसिद्धपणुं ३ अनित्यपर्यायतेसमयसमयमांद्रव्यउपजे

विणशेछे ४ अशुद्ध अनित्यपर्यायते जन्ममरणथायछे तेणेकरीकेवुं ५ उपाधिपर्यायतेकर्मसंबंध ६ शुद्धपर्यायजेमूलपर्यायसर्वद्रव्यनाएकसरिखाछे एपर्यायार्थिकनुंस्वरूपकह्युं.

हवेसातनयकहेछे १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र ५ शब्द ६ समभिरूढ ७ एवंभूत एसातनयनानामजाणवा तेमां पहेलोनैगमनयकहेछे नथीएकगमोतेनैगमकहियें गुणनोएकअंशउपनोहोयतो नैगमनयकहियें दृष्टांत जेमकोइकमनुष्यने पायलीभाववानोमनथयो तेवारेंजंगलमां लाकडुंलेवाचाल्यो रस्तामांकोइकमनुष्यमल्यो तेणेंपुछ्युंतुंक्यांजायछे तेवारें तेणेंकह्युं जे पायलीलेवाजाउंछुं तेपायलीतोहजीघडीनथी पणमनमांचिंतवी तेथइएमगण्युं तेमनैगमनय सर्वजीवनेसिद्धसमानकहे केमके सर्वजीवनाआठरुचकप्रदेशनिर्मलसिद्धरूपछे तेथीएकअंशेंसिद्धछे ते माटे सिद्धसमानसर्वजीवकह्या तेनैगमनयनात्रणभेदछे १ अतीतनैगम २ अनागतनैगम ३ वर्त्तमाननैगम एनैगमनयकह्यो.

हवेसंग्रहनयकहेछे सत्ताग्रहेतेसंग्रह जेएकनामलीधाथी सर्वगुणपर्यायपरिवारसहितआवे तेसंग्रहनयजाणवो तेनोदृष्टांत जेमकोइकमनुष्य प्रभातें दातणकरवानेअर्थे पोतानाघरनाबारणेबेशीने चाकरपुरुपनेकह्युंजेदातणलइआवो तेवारेतेचाकरमनुष्य पाणीनुंलोटो तथारुमालअनेदातण एमसर्वचीजलइआव्यो हवेशेठेंतोएकदातणनामलइनेमंगाव्युंहतुं पणसर्वनोसंग्रहकरीचाकरलेइआव्यो तेमज द्रव्यएवुंनामकह्युं तो द्रव्यनागुणपर्यायसर्वआव्या एसंग्रहनयनाबेभेदछे एकजेद्रव्यपणोसामान्यपणेबोलताजीव तथाअजीवद्रव्यनोभेदपड्योनही तेपेहेलोसामान्यसंग्रह तथाबीजोविशेपतानेअंगीकारकरेछे जेजीवद्रव्य एमकह्युंतो अजीवसर्वटल्या तेविशेपसंग्रह.

हवे व्यवहारनयकहेछे जेबाह्यस्वरूपदेखीनेभेदनीवेहेचणकरे अनेजेबाहेरदेखातागुणनेज माने पण अंतरंगसत्तानमाने एटलेएनयमां आचारक्रियामुख्यछे अंतरंगपरिणामनोउपयोगनथी केमके नैगमतथासंग्रहनयतेज्ञानरूपध्याननापरिणामविना अंशतथासत्ताग्राहीछे तेमइहांकरणीमुख्यछे तेव्यवहारनयपणे जीवनी व्यवस्थाअनेकप्रकारेंछे तिहां नैगम तथासंग्रहनयकरी सर्वजीवसत्तायें एकरूपछे पणव्यवहारनययोजीवना बेभेदछे एकसिद्ध बीजासंसारी तेवलीसंसारी जीवनाबेभेदछे एकअयोगीचौदमां गुणठाणावाला तथाबीजासयोगी तेसयोगीनाबेभेद एककेवली बीजोछद्मस्थ छद्मस्थनाबेभेद एक क्षीणमोही बारमांगुणठाणेवर्त्तता मोहनीयकर्मखपाव्युंते बीजाउपशांतमोह तेउपशांतमोहनावली बेभेद एकअकपायी.इग्यारमांगुणठाणानाजीव बीजासकपाइ तेसकपायीनाबेभेदछे एकसूक्ष्मकपायीदशमां

गुणगणानाजीव बीजाबादरकषायी तेबादरकषायीनावलीबेनेदछे एकश्रेणीप्रतिपन्न बीजाश्रेणीरहित तेश्रेणीरहितनाबेनेद एकअप्रमादी बीजाप्रमादी तेप्रमादीनाबे नेद एकसर्वविरति बीजादेशविरति देशविरतिनाबेनेद एकव्रतिपरिणामि बीजोअव्र तिपरिणामि अव्रतिनाबेनेद एकअव्रतिसमकेति बीजाअव्रतिमिथ्यात्वी तेमिथ्यात्वी नाबेनेद एकनव्य बीजाअनव्य तेनव्यनाबेनेद एकग्रंथीनेदी बीजाग्रंथीअनेदी एवीरीतेंजेजीव जेवोदेखाय तेनेतेवोमाने एव्यवहारनयछे एमजपुजलनानेदकरवा तेकहेने पुजलड्व्यनाबेनेदछे एकपरमाणु बीजोखंध खंधनाबेनेद एकजीवनेलागा तेजीवसहित बीजाजीवरहित ते घडोप्रमुखअजीवनोखंध हवेजीवसहितखंधना बेने दछे एकसूक्ष्मखंध बीजोबादरखंध.

इहां वर्गणानोविचारलखीयेछैयें तिहां पुजलनीवर्गणाआठछे १ उदारिकवर्गणा २ वैक्रियवर्गणा ३ आहारकवर्गणा ४ तेजसवर्गणा ५ नाषावर्गणा ६ उसासवर्गे णा ७ मनोवर्गणा ८ कार्मणवर्गणा एआठवर्गणानानामकह्या बेपरमाणुनेलाथाय द्व्यणुकखंधकहेवाय त्रणपरमाणुनेलाथाय तेवारे त्र्यणुकखंधथाय एमसंख्याता परमाणुमिले संख्याताणुकखंधथाय तेमजअसंख्यातें असंख्याताणुकखंधथाय त थाअनंतापरमाणुमिले अनंताणुकखंधथाय एखंधतेसर्वजीवने अग्रहणयोग्यछे अने जेवारें अनव्यथी अनंतगुणअधिकपरमाणुनेलाथाय तेवारें उदारिकशरीरने लेवा योग्यवर्गणाथाय.

एमजउदारिकथी अनंतगुणा अधिकवर्गणामां दलनेलाथाय तेवारेंवैक्रियवर्गणा थाय वली वैक्रियथकीअनंतगुणापरमाणुमिले तेवारेंआहारकवर्गणाथाय एमसर्ववर्ग णानाएकेकथी अनंतगुणाअधिकपरमाणुमिले तेवारेंतेवर्गणाथाय एटलेपेहेलीथी बीजीवर्गणा बीजीथीत्रीजी एमसातमीमनोवर्गणाथी आठमीकार्मणवर्गणामांअनंत गुणपरमाणुअधिकले इहां १ उदारिक २ वैक्रिय ३ आहारक ४ तेजस एचारवर्ग णाबादरछे तेमांपांचवर्ण बेगंध पांचरस आठस्पर्श एवीसगुणछे तथा १ नाषा २ उसास ३ मन ४ कार्मण एचारवर्गणासूक्ष्मछे एमांपांचवर्ण बेगंध पांचरस ४ स्पर्श एसोलगुणछे अनेएकपरमाणुमां एकवर्ण एकगंध एकरस बेस्पर्श एपांचगु णछे एमपुजलखंधनाअनेकनेदछे.

एव्यवहारनयनाछनेदछे १ शुद्धव्यवहार तेआगलागुणगणानो छोडवो अनेकपर नागुणगणानो ग्रहणकरवुं अथवाज्ञानदर्शनचारित्रगुणते निश्चेनयएकरूपछे पणते शिष्यनेसमजाववाने जूदाजूदानेदकहेवा तेशुद्धव्यवहारछे २ जीवमां अज्ञानरागद्वेष

लागाछे तेअशुद्धपणोछे माटेअशुद्धव्यवहार ३ जे पुण्यनीक्रियाकरवी तेशुभव्यव हार ४ जेथकीजीवपापरूपअशुभकर्मकरेतेअशुभव्यवहार ५ धन घर कुटुंब प्रत्यक्ष सर्वे आपणाथी जूदाजूदाछे पणजीवेंअज्ञानपणे आपणाकरीजाण्याछे तेउपचरितव्य वहार ६ शरीरादिकपरवस्तुयद्यपिजीवथीजूदीछे तोपणपरिणामिकभाव लोलीपणेए कण मिलीरह्याछे तेनेजीवआपणाकरीजाणेछेते अनुपचरित व्यवहारजाणवो एव्य वहारनयकह्यो.

हवेऋजुसूत्रनयनो विचारकहेछे जेअतीतकालअनेअनागतकालनीअपेक्षानकरे प ण वर्त्तमानकाले जेवस्तुजेवागुणेंपरिणमे वर्त्ततेवस्तुने तेवेजपरिणामेमाने माटे एनय परिणामग्राहीछे जेमकोइकजीवगृहस्थछे पण अंतरंग साधुसमानपरिणामछे तोते जीवनेसाधुकहे अनेकोइकजीव साधुनेवेपेंछे पणमननापरिणाम विषयाभिलाषसहि तछे तोतेजीव अव्रतीजछे एमऋजुसूत्रनोमानवोछे तेऋजुसूत्रनाबेभेदछे एकसूक्ष्मऋ जुसूत्रते एमकहेजे सदाकालसर्ववस्तुमां एकवर्त्तमानसमयवर्त्तेछे एटले जे जीवगया काले अज्ञानीहतो अनेअनागतकाले अज्ञानीभावेंअज्ञानीथशे एमबेहुकालनीअपेक्षा नकरे पणएकवर्त्तमानसमये जेजेवोतेनेतेवोकहे तेसूक्ष्मऋजुसूत्रकहियें अनेमहोटा बाह्यपरिणामग्रहे तेस्थूलऋजुसूत्र नयजाणवो एटलेऋजुसूत्रनयकह्यो.

हवेशब्दनयकहेछे जेवस्तुगुणवंत अथवानिर्गुण तेवस्तुनेनामकहीबोलावियें जे भाषावर्गणाथी शब्दपणेंवचनगोचरथाय तेशब्दनय जेकारणेअरूपीद्रव्यवचनथीग्रह्या जायनहीं पणवचनथीकहेवातेशब्दनयकहियें इहांजेशब्दनोअर्थहोय तेपणोजे वस्तु मांवस्तुपणेप्रामियें तेवारेंतेवस्तुशब्दनयकहियें जेमघटनीचेष्टानेकरतोहोयतेघट एश ब्दनयमां व्याकरणथीनीपना अनेबीजापणसर्वशब्दलीधा तेशब्दनयनाचारभेदछे १ ना म २ स्थापना ३ द्रव्य ४ भाव अने चारनिक्षेपानापणएहिजनामछे.

१ पहेलोनामनिक्षेपो ते आकार तथा गुणरहितवस्तुने नामकरीबोलाववो जेम एकलाकडीनो कटकोलेइने कोइकें तेहनेजीवएवुंनामकह्यो तेनामजीवजाणवुं जेम कालीदोरीने सापनीबुद्धियेंकरीबावहणे तेहनेसापनीहिंसालागे एनामसर्पथयो एवी ज्ञरीतें नाम तप अथवानामसिद्ध जेमवडप्रमुखने सिद्धवड एमकहीबोलावेछे तेना एनिक्षेपोकहियें एसूत्रसाखेंछे.

ली २ स्थापनानिक्षेपोकहेछे जेकोइकवस्तुमां कोइकवस्तुनोआकारदेखीने तेहनेतेव स्तुकहे जेमचित्राम अथवाकाष्टपाषाणनीमूर्त्ति तेनेघोडाहाथीनोआकारछे तोतेघोडा हाथीगुंवाय तेस्थापनाजाणवी एस्थापनानिक्षेपो नामनिक्षेपेंसहितहोय जेमस्था

पनासिद्धजिनप्रतिमाप्रमुख तेसद्भावस्थापनापणहोय अनेअसद्भावस्थापनापण होय अकृत्रिमजिनप्रतिमाते नंदीश्वर द्वीपप्रमुखनेविषे अनेजेइहांनीजिनप्रतिमाते कृत्रिम तेसर्वस्थापनाजाणवी जेम चित्रामनीस्त्रीजिहांमांमीहोय तिहांसाधुरहेनही कारणके स्थापनास्त्रीने तेस्त्रीतुल्यजाणवी तेमजजिनप्रतिमा जिनसमानजाणवी इहां कोइक अज्ञानीजीवकहेछे जे स्थापनामांज्ञानादिगुणनथी तेथी स्थापनानेमानवी पूजवीनही तेनेउत्तरकेहेछे केस्थापनारूपस्त्रीमां स्त्रीपणानागुणनथी तोपणतेविकारनुंकारणथायछे तेमज जिनप्रतिमापणध्याननुंकारणछे अनेजेएमपुछेके हिंसाथायछे अनेभगवंतेतोदयाने धर्मकह्योछे तेहनेएमकहेवुंजे परदेशीराजाकेसीगुरुने वांदवानेअर्थेबीजेदीवसें महोटाआडंबरथीआव्यो तेवंदनामांहिंसाथयी पणलाभकारण गणतात्रोटोनथयो बीजोमल्लिनाथजीयेंछमित्रप्रतिबोधवाने पुतलीनोदृष्टांतकह्यो ते हिंसातोघणीथयी पणतेलाभनाकारणमांगणीछे एमभावशुद्धहोय तिहांहिंसालागती नथी अथवा कोइकएमकहेछे जे अमेआपणेस्थानकेवेठांनमोत्थुणंकहिसुं अमनेलाभथासेतेखरो पणभगवतीसूत्रमां भगवाननेवंदनानेअधिकारें तोतिहांजइवंदनाकरवानुंफलमहोटुंकह्युंछे तथानिक्षेपानेअधिकारें एमकह्युंजे भावनिक्षेपोएकलोथाय नही पण नामस्थापना तथाद्रव्य एत्रणमिल्याभावनिक्षेपोथाय माटेस्थापनाअवश्य मानवी हवेजेस्थापनानमाने तेनेकहियें जे चित्रामनीमूर्त्तिनेहिंसानापरिणामथीफाडे तेहनेहिंसालागेछे तेमज जिनवरनाध्याने जिनप्रतिमा पूजतांलाभथायछे एमयुक्ति कर्त्ती तथाआगमनीसांखेपणजिनप्रतिमानेजिनसमानमानेतेआराधक अनेजेजिनप्रतिमानेनमाने तेणेस्थापनानिक्षेपोउथाप्यो अनेस्थापनाउथापीतो द्रव्यतथाभावनिक्षेपो थापनाविनाथायनही माटेद्रव्यतथाभावपणउथाप्यो एमत्रणनिक्षेपाउथाप्या तेवारेंसिद्धांतउथाप्याज माटेजेजिनप्रतिमानेनहीमाने तेविराधकजाणवोतेस्थापना इतर अनेयावत्कथिक एवेभेदेछे.

३ द्रव्यनिक्षेपोकहेछे जेनोनामपणहोय तथा आकारथापनागुणपणहोय अने लक्षणहोय पणआत्मोपयोगनमिले तेद्रव्यनिक्षेपोजाणवो एटलेअज्ञानीजीव तेजीवस्वरूपनाउपयोगविनाद्रव्यजीवछे अणुवउगोदव्वं इतिअनुयोगद्वारवचनात् वलीकेहुंछे जेसिद्धांतवांचतापुछतां पदअक्षरमात्राशुद्धअर्थकरेछे अनेगुरुमुखेसद्हेछे तेपणशुद्धनिश्चें पोतानीसत्ताउलख्याविना सर्वद्रव्यनिक्षेपामांछे जेभावविनाद्रव्यपणोछे ते पुण्यबंधनुंकारणछे पणमोक्षनुंकारणनथी एटलेजेकरणीरूप कष्टतपस्याकरेछे अनेजीवअजीवपदार्थनी सत्ताउलखीनथी तेने भगवतीसूत्रमां अव्रती तथाअपच्च

खाणीकह्याछे तथाजेएकलीबाह्यकरणीकरेछे अनेपोतेसाधुकहेवायछे ते मृषावादी छे एमउत्तराध्ययनसूत्रमांकह्युंछे नमुणीरन्नवासेणं एवचनें नाणेणयमुणीहोइ ॥ ए वचनथी जेज्ञानवानतेमुनीछे अनेजेअज्ञानीतेमिथ्यात्वीछे तथाकोइक गणितानुंयोग ना नरकदेवतानाबोल अथवा यतिश्रावकनो आचारजाणीनेकहेजे अमेज्ञानीछैयें ते पणज्ञानीनथी पणजेद्रव्यगुणपर्यायजाणे तेने ज्ञानीकहियें श्रीउत्तराध्ययने मोक्ष मार्गेकह्योछे गाथा एयंपंचविहंणाणं दव्वाणयगुणाणय ॥ पज्जवाणयसव्वेसिं ना णंनाणीहिंदंसियं ॥ १ ॥ माटे वस्तुसत्ताजाण्याविना ज्ञानीसमजवुंनही अनेनवतत्वउ लखेतेसमकेति अनेएहवाज्ञानदर्शनविना जेकहेकेअमेचारित्रिआछैयें तेपणमृषावा दीछे कारणके श्रीउत्तराध्ययनसूत्रमध्येकह्योछे जे नाणंदंसणनाणं नाणेणविनान हुंतिचरणगुणा ॥ एवचनछे तेमाटे आज केटलाक ज्ञानहीन क्रियानोआडंबरदेखा डेछे तेठगछे तेहनोसंगकरवोनही एबाह्यकरणीअनव्यजीवनेपणआवे माटेएबाह्य करणीऊपर राचवोनही अनेआत्मानुंस्वरूपउलख्याविना सामायक पडिकमणा पच्च खाणकरवाते सर्वद्रव्यनिक्षेपामां पुण्याश्रयछे पणसंवरनथी श्रीभगवतीसूत्रमध्येकह्युं छे आयासख्खुसामाइयं ॥ एआलावाथीजाणजो तथाजीवस्वरूपजाण्याविना तपसं यमपुण्यप्रकृति तेदेवतानाभवनुंकारणछे पुव्वतवेणंपुव्वसंयमेणंदेवलोएउववज्जंतिनो चेवणंआयभावत्तव्वयाए एआलावोभगवतीमांकह्योछे तथाजेक्रियालोपी आ चारहीनछे अनेज्ञानहीनछे मात्रगछनीलाजें सिद्धांतभणेवांचेछे व्रतपच्चखाणकरेछे तेपणद्रव्यनिक्षेपोजाणवो एम श्रीअनुयोगद्वारमांकह्योछे इमेसमणगुणमुक्क यो गीछकायनिरणुकंपा ॥ हयाइवउद्दामा ॥ गयाइवनिरंकुसा ॥ घट्ठामट्ठातुप्पोट्ठा ॥ पंडुं रपाउरणाजिणाणं ॥ आणाएसछंदा ॥ विहरिऊणउभउकालंआवस्सगस्सउवठंति तं ॥ लोगुत्तरियंदव्वावस्सयं ॥ अर्थ ॥ जेनेछकायनीदयानथी घोडानीपेरेंउन्मदछे हा थीनीपेरेंनिरंकुशछे पोतानाशरीरनेधोवता मसलता उजलेकपडेशिणगारकरी गछ नामम्त्वनावेंमाचतां स्वेछाचारी वीतरागनीआज्ञाभांजता जेतपक्रियाकरेछे तेपण द्रव्यनिक्षेपामांछे अथवाज्योतिषवैद्यककरेछे अनेपोताने आचार्य उपाध्यायकेवरा वीने लोकमांमहिमाकरेछे तेपत्रीनेंथखोटाल्पयाजेवाछे घणाभवभमसे माटेअवंद निकछे एमांसउत्तराध्ययनमध्ये अनाथीमुनीना अध्ययनथकीजाणवी अनेसूत्रनाअ र्थगुरुमुखेंसिख्याविना तथानयप्रमाणजाण्याविना निश्चेंआत्मानुंस्वरूप उलख्याविना निर्युक्तिविनाउपदेशआपेछे तेपोतेतोसंसारमांबुडाछे पणजे तेमनीपासेंबेसेछे तेमनेप ण संसारमांबुडावेछे एमप्रश्नव्याकरणसूत्र तथा अनुयोगद्वारसूत्रमांकह्युंछे अजाउचे

वत्तोलसमंइत्यादि अनेनगवतीसूत्रमांपणकह्युंछे सुत्तछोखलुपढमो वीउनिर्युक्तिमिस उनणिउ ॥ इत्तोतईयणुउगो नाणुन्नाउजिणवरेहिं ॥ अनेकेटलाकएमकहेछेजे अमे सूत्रऊपरअर्थकरियेछैयें तोनिर्युक्ति तथाटीकाप्रमुखनो स्योकामछे तेपणमृषावादछे केमकेश्रीप्रश्नव्याकरणमां वयणतियंलिंगतियं इत्यादिकजाण्याविना अनेनयनिक्षेप जाण्याविना जेउपदेशआपे तेमृषावादछे एमअनेकसूत्रमां कह्युंछे माटेवहुश्रुतपासें उपदेशसांजलवो श्रीउत्तराध्ययनमध्ये वहुश्रुतने मेरुनीतथासमुद्रनी अने कल्पवृक्षा दिसोलउपमादीधीछे एद्रव्यनिक्षेपोकह्यो.

४ जावनिक्षेपोंकहेछे जेनामस्थापना अने द्रव्यएत्रणनिक्षेपाते एकजावनिक्षेपा विनाअशुद्धछे जे नामतथाआकार लक्षण गुणसहित वस्तुते जावनिक्षेपोजाणवो उवउगोजावइतिवचनात् एटले पूजादान शील तप क्रिया ज्ञान एसर्वं जावनिक्षेपेसहि तलाजनुंकारणछे इहांकोइकहेछेजे मननापरिणामदृढकरीनेजेकरियें तेनेजावकहियें एमकहेछे तेजूगछे एतोसुखनीवांछायें मिथ्यात्वीपणघणाकरेछे तेगणवुंनही इहांसू त्रनीसांखे वीतरागनी आज्ञाहेयउपादेयनीपरीक्षाकरी अजीवतत्व तथा आश्रवतत्व अनेबंधतत्व ऊपर हेयके० त्यागजाव अने जीवनास्वगुणजे संवरनिर्जरा तथामो क्षतत्वऊपरेंउपादेय परिणामतेजावकहियें एटले रूपीगुणतेद्रव्यनिक्षेपछे अनेअरू पीगुणते जावनिक्षेपछे एटले मनवचनकाया लेश्यादिकसर्वद्रव्यनिक्षेपामांछे अनेज्ञा नदर्शनचारित्रवीर्य ध्यानप्रमुखसर्वगुण जावनिक्षेपामांछे एजावनिक्षेपो ते नामस्था पनातथाद्रव्य सहितहोय एटलेचारनिक्षेपाकह्या.

हवेचारनिक्षेपापदार्थऊपरलगाडीदेखाडेछे नामजीवतेचेतना अथवा मांचाने ए कवाणने जीवकहीनेजावेछे तेनामनिक्षेपेजीवमूर्तिप्रमुखथापियें तेस्थापनाजीव एकें द्रीथीपंचेंद्रीपर्यंत सर्वजीवछे पणउपयोगमिलेनहीतेद्रव्यजीव अनेमूर्तिमांजीवस्वरू पउलखीसमकितनाउपयोगमांछे तेजावजीवएमधर्मास्तिकायादिकद्रव्यमांपण जाण वो नामथीधर्मास्तिकायकहीनेजावचो तेनामधर्मास्तिकाय धर्मास्तिकायएहवाअक्षर लिखवा अथवादृष्टांतकारणे कांइकवस्तुथापवी ते स्थापनाधर्मास्तिकाय तथा धर्मा स्तिकाय जे असंख्यातप्रदेशी धर्मद्रव्यछे तेद्रव्यधर्मास्तिकाय एधर्मास्तिकायनेजेवारें चलणसहायगुणनी अपेक्षासहितउलखियें तेजावधर्मास्तिकाय.

हवे कोइकनोसाधुएहवोनामछे तेनामसाधु अनेस्थापनाकरियेंतेस्थापनासाधु त थाजे पंचमहाव्रतपाले क्रियाअनुष्टानकरे सुजतोआहारलीये पणज्ञानध्याननोजेवो

उपयोगजोइये तेवोउपयोगनहोय तेड्व्यसाधु जेनावसंवरमोक्ष्नोसाधकथइ नाव साधुनीकरणीकरे तेनावनिक्षेपेसाधुकहियें·

कोइकनोअरिहंतनामछे तेनामअरिहंत अनेअरिहंतनीप्रतिमाते थापनाअरिहंत जेटलासुधीछद्मस्थअवस्थाते द्व्यअरिहंत अनेकेवलज्ञानपाम्यापछे लोकालोकनो नावजाणेदेखे तेनावअरिहंत एमसिद्धमांपणकहेवो·

कोइजीवनोज्ञानएहवोनाम अथवाजावेंअजीवनोनाम तेनामज्ञान तथाजेज्ञानपु स्तमांलख्युंछे तेस्थापनाज्ञान जेउपयोगविनासिद्धांतनोजणवो अथवाअन्यमतिना सर्वशास्त्रनणवा तथाज्ञशरीरादिकतेसर्वेड्व्यज्ञान जेनवतत्वनोजाणवो तेनावज्ञान·

तथाकोइकनोतपएहवोनाम ते नामतप तथापुस्तकमां तपनीविधीनुंलखन ते थापनातप अने पुण्यरूपमासखमणादिककरवोतेड्व्यतप जेपरवस्तुऊपरत्यागनोपरि णामते नावतप एमसंवरादिकसर्वमांचारचारनिक्षेपाजाणवा तथाश्रीअनुयोगद्वारम ध्येकह्योछे यतः जत्थयजंजाणिज्जा निरकेवंनिरिकवेनिरवसेसं ॥ जत्थवियनजाणि ज्जा चोक्कयंनिक्खवेतथ्थ ॥१॥ एचारनिक्षेपाकह्या एटलेशब्दनयकह्यो·

हवे छठोसमभिरूढनयकहेछे जेवस्तुनाकेटलाकगुणप्रगटथाछे अनेकेटलाकगुण प्रगटथानथी पणअवश्यप्रगटशे एहवीवस्तुनेवस्तुकहे तेवस्तुनानामांतरएककरीजाणे जेम जीव चेतन तथाआत्मा एहनोएकअर्थकहे ते समभिरूढनयकहियें एनय एकअंशऊणीवस्तुनेपूरेपूरीवस्तुकहे जेमतेरमागुणठाणेकेवलीहोय तेहनेसिद्धकहे ए नयनाजेदविजकुलनथी एसमभिरूढनयकह्यो·

हवेएवंभूतनयकहेछे जेवस्तुपोतानेगुणेसंपूर्णछे अनेपोतानीक्रियाकरेछे तेने ते वस्तुकहीबोलावे जेममोक्षस्थानकें जेजीवपहोतो तेने सिद्धकहे जेमपाणीथीनरेलो स्त्रीनामाथाऊपरआवतो जलनरणक्रियाकरतो तेने घडोकहेएएवंभूतनयकह्यो·

हवेनैगमनयनादृष्टांत श्रीअनुयोगद्वारसूत्रथी लखियेंछेयें जेमकोइकपुरुषेकोइकने ज्ञा पुरुषनेपुछ्युं जेतमेकिहांवसोछो तेवारेंतेपुरुषेंकह्युं हुंलोकमांवसुंछुं तेवारेंअशुद्ध नैगमवालेपुछ्युं जेलोकनात्रणजेदछे १ अधोलोक २ त्रिछोलोक ३ उर्ध्वलोक तेमांतु किहांरहेछे तेवारेंशुद्धनैगमेंकह्युंजे त्रिछालोकमांरहुंछुं वलीपुछ्युंजे त्रिछोलोकमांअसं ख्याताद्वीपसमुद्रछे तेमांतुंकेहाद्वीपमांरहेछे तेवारें विशुद्धनैगमेंकह्युंजे जंबुद्वीपमां रहुंछुं तेजंबुद्वीपमांपेंत्रणाछे तेमांतुंक्याक्षेत्रमांरहेछे तेवारें अतिशुद्धनैगमबोल्यो जे नरतक्षेत्रमांरहुंछुं तेनरतक्षेत्रनाखंडछे तेमांहेजाकिहांखंडमांरहेछे तेवारेंकह्युं

जेमध्यखंडमांरहुंछुं एमक्रमेपूछता तेजेकह्युंजेआपणादेशमांरहुंछुं तेवारेंफरीपुंछयुंजे देशमांतोनगरग्रामवणाछे तोतुंकिहांरहेछे तेवारेंकह्युंजे हुंअमुकगाममांरहुंछुं तेगाममांवलीअमुकपाडो तथाअमुकघरवताव्यो तिहांसुधीनेंगमनयजाणवो.

अनेसंग्रहनयवालोवोल्योजे मारापोतानाशरीरमां वसुंछुं तथाव्यवहारनयवालोवोल्योजे संथारेबेगोछुंतेटलाजवीछानामांरहुंछुं अनेऋजुसूत्रनयवालेकह्युंजे माराआत्माना असंख्याताप्रदेशमांरहुंछुं वलीशब्दनयकहेजे मारास्वभावमांरहुंछुं तेमजसमभिरूढनयकहेजे हुंमारागुणमांरहुंछुं अने एवंभूतनयवादीकहेजे ज्ञानदर्शनगुणमां वसुंछुं एदृष्टांतकह्यो तेमसर्ववस्तुमांकहेवुं

तथाकोइके प्रदेशमात्रखेत्रअंगीकारकरी पुछयुंजे एप्रदेशकिहाद्रव्यनोछे तेवारेंनैगमनयवोल्योजेछएद्रव्यनोप्रदेशछे केमके एकआकाशप्रदेशमध्येछद्रव्यचालेछे तेवारें संग्रहनयवोल्यो जे कालद्रव्यतोअप्रदेशीछे तेमाटे सर्वलोकमां एकसमयसरिखोछे पण ते एक आकाशद्रव्यनाप्रदेशमां जूदोनथी माटे कालविनापांचद्रव्यनो प्रदेश छे तेवारेंव्यवहारनयवोल्योके जेद्रव्यमुख्यदेखायछे तेहनोप्रदेशछे तेवारेंऋजुसूत्रनयवोल्योके जेद्रव्यनोउपयोगदेइपुछियें तेद्रव्यनोप्रदेशछे जोधर्मास्तिकायनोउपयोगदेइपुछियें तोधर्मास्तिकायनोप्रदेशछे जोअधर्मास्तिकायनोउपयोगदेइपुछियें तोअधर्मास्तिकायनोप्रदेशछे तेवारेंशब्दनयवोल्योके जे द्रव्यनोनामलइपुछियें तेद्रव्यनोप्रदेशछे हवे समभिरूढनयवोल्योजे एकआकाशप्रदेशमध्येधर्मास्तिकायनोएकप्रदेशछे अधर्मास्तिकायनोएकप्रदेशछे अनेजीवनाअनंताप्रदेशछे पुद्गलनापणअनंताप्रदेशछे तेवारेंएवंभूतनयवोल्यो के प्रदेशनेजेद्रव्यनी क्रियागुणपर्यायअंगीकारकरी देखियें तेसमयते प्रदेश तेद्रव्यनोगणियें एप्रदेशमांसातनयकह्या.

हवेजीवमां सातनयकहेछे प्रथमनैगमनय निमते जेगुणपर्यायवंत शरीरसहित तेजीव एटलेशरीरमांजेवीजा पुद्गल तथाधर्मास्तिकायादिकद्रव्यछे तेसर्वजीवमांजगण्या तेवारेंसंग्रहनयवोल्यो जेअसंख्यातप्रदेशी तेजीव एटलेएकआकाशना प्रदेशटल्या वीजासर्वद्रव्यएमांगणाणा तेवारेंव्यवहारनयवोल्यो जेविषयलेयी कामवातसंभारे ते जीव इहांधर्मास्ति अधर्मास्तिकाय आकाश तथावीजापुंद्गलसर्वटल्या पणपांचेंद्री तथा मन अनेलेश्या एपुंद्गलछे तेजीवमांगणाणा कारणके विषयादिकतोइंद्रियोलेछे ते जीवथीन्याराछेपणइहांव्यवहारनयमते जीवभेलालीधाछे तेवारें ऋजुसूत्रनयवोल्यो जेउपयोगवंततेजीव इहांइंद्रियादिकसर्वटल्या पणअज्ञान तथा ज्ञाननाभेदटल्या

हवइगोलो ॥ इक्किकम्मिनिगोए अनंतजीवामुणेयव्वा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ लोकमांहेअ
संख्यातागोलाछे एकेकागोलामध्येअसंख्यातिनिगोदछे एकेकनिगोदमांअनंताजीवछे
गाथा ॥ सत्तरससमहिआ । किरइगाणुपाणमिहूंतिखुड्डभवा ॥ सगतिससयतिहुत्त
र । पाणुंपुणइगमुहुत्तंमि ॥ १ ॥ अर्थ ॥ निगोदियाजीवतेमनुष्यनाएकउसासमां
सत्तरभवझाझेराकरेछे अनेसडत्रीससोतिहुंतेर श्वासोश्वासएकमुहूर्त्तमांथाय गाथा
पणसठिसहस्सपणसय ॥ छत्तिसाइगमुहुत्तखुड्डभवा ॥ आवलियाणंदोसय ॥ छप्प
न्नाएगखुड्डभवे ॥ १ ॥ अर्थ निगोदनाजीवएकमुहूर्तमां ६५५३६ भवकरे अनेनि
गोदनोएकभव २५६ आवलीनोछे क्षुल्लकभवनोएप्रमाणछे ॥ गाथा ॥ अत्थिअनंता
जीवा जेहिंनपत्तोतसाइपरिणामो ॥ उववज्जंतिचयंतिय पुणोवितत्थेवतत्थेव ॥ १ ॥
अर्थ ॥ निगोदमांअनंताजीवएहवाछे जेजीवत्रसपणोपहेलाकिवारेपाम्यानथीअ
नंतोकालअतिक्रम्यो अनेअनंतोकालजाशे पणतेजीववारंवारतिहांजउपजेछे अने ति
हांजचवेछे एमएकनिगोदमांअनंताजीवछे तेनिगोदनाबेभेदछे एकव्यवहारराशीनि
गोद अनेबीजो अव्यवहारराशीनिगोद तेमांजेबादरएकेंद्रीपणो त्रसपणोपा
मिनेपाछानिगोदमांजाइरह्याछे तेनिगोदियाजीवने व्यवहारराशीयाकहियें अनेजेजी
वकोइवखतपणनिगोदमांथीनिकल्यानथी तेजीवअव्यवहाररासीयाकहियें अनेइहां
मनुष्यपणापामीनेजेटलाजीवकर्मक्षयकरीने एकसमयमांमोक्षजायछे तेटलाजीवतेजस
मये अव्यवहाररासी सूक्ष्मनिगोदमांथीनिकलीनेउचाआवेछे जोदशजीवमोक्षजाय
तो दशजीवनिकले कोइवखतएकपणजीव ऊंचानिकलेनो तेठेकाणेएकबेअनव्यनिकले
पणअव्यवहाररासीमांजीवकोइवखतघटेनही एवा निगोदनाअसंख्यातालोकमांहेलागोला
छे [illegible] आहारादिपणोलेछे तेमएकगोलाकेवाय अने लोकअंतना
प्रदेशेजे निगोदनागोलाछेतेने त्रणदिशीनाआहारनीफरसनाछे माटेविकलगोला
कहियें सूक्ष्मनिगोदमां पांच थावरनासूक्ष्म जीवतेसर्वलोकमांकाजलनीकुंपलीनीपरे
[illegible] अनेसाधारणपणाने माहाएकवनस्पतिमांजछे पणचारथावर
[illegible] सूक्ष्मनिगोदमांअनंतोदुःखछे तेदुःखदृष्टांतकहेछे मानमीनरकनांथावरो
[illegible] तेथीअनंतगणो [illegible] तेटलावनमानमीन
[illegible] तेटलानथमांजेटलोनेदन
[illegible] तेथीअनंतगुणोदुःखनिगोदनाजीव एकसमयमां
[illegible] कोइक

देवतासमकालेचोजे तेनेजेवेदनाथाय तेथीअनंतगुणीवेदनानिगोदमध्येछेअनेजज्जी वनेनिगोदनुंकारण तेअज्ञानदिशाछे माटेतेहेनोत्यागकरो एनिगोदनोविचारकह्यो एस र्वप्रमेयनोप्रमाताआत्मा पोतानाज्ञानगुणेकरीप्रमेयनोप्रमाणकरेएप्रमेयत्वपणोकह्यो.

५ सत्वपणो तेछद्रव्यएकसमयमांउपजे विणशेछे अनेस्थिरपणछे उत्पादव्यय ध्रुवपणोतेहिजसत्पणो उत्पादव्ययध्रुवयुक्तसत् इतितत्वार्थवचनात् तेविस्तारथी कहिदेखाडेछे जे धर्मास्तिकायनाअसंख्यातापदेशछे तिहांएकप्रदेशमां अगुरुलघुअसं ख्यातोछे अनेबीजाप्रदेशमांअनंतो अगुरुलघुछे त्रीजाप्रदेशमां संख्यातोअगुरुलघुछे एमअसंख्याताप्रदेशमां अगुरुलघुपर्यायघटतो वधतोरहेछे तेअगुरुलघुपर्यायचलछे तेजेप्रदेशमां असंख्यातोछे तेप्रदेशमां अनंतोथायछे अने अनंताने ठेकाणे असं ख्यातोथायछे एमलोकप्रमाणअसंख्यातप्रदेशमां सरिखोसमकालें अगुरुलघुपर्या यफिरेछे तेजेप्रदेशमांअसंख्यातोफिटीने अनंतोथायछे तेप्रदेशमांअसंख्यातपणा नोविनाशछे अनेअनंतपणानोउपजवोछे अनेअगुरुलघुपणे गुणध्रुवछे एमउपजवो विणसवो अनेध्रुव एत्रणेपरिणामछे.

अधर्मास्तिकायमां पणएत्रणेपरिणाम असंख्यातप्रदेशेंसदासमयसमयमां परि णमीरह्याछे तेमांपण उपजे विणशे अनेथिररहेछे एमआकाशनाअनंताप्रदेशमां पण एकसमयेंत्रणपरिणामपरिणमेछे अनेजीवनाअसंख्याताप्रदेशछे तेमध्येपणउ पजे विणशे थिररहे तथापुद्गलपरमाणुमांपणसमयसमयथायछे अने कालनोव र्त्तमानसमयफिटीनेअतीतकालथायछे तो तेसमयमां वर्त्तमानपणानोविनाशछे अ नेअतीतपणानोउपजवोछे कालपणेध्रुवछे एथूलथकीउत्पादव्ययध्रुवपणोकह्यो अने वस्तुगते मूलपणे ज्ञेयनेपलटवे ज्ञाननोपणतेभासनपणेपरिणमवोथाय तेपूर्वपर्याय नाभासननोव्यय अनेअभिनवज्ञेयनापर्यायभासननोउत्पाद तथाज्ञानपणानोध्रुव ए रीतेसर्वगुणना धर्मनीप्रवृत्तिरूप पर्यायनोउत्पादव्यय श्रीसिद्धभगवंतमांपणथइरह्यो छे एमजधर्मास्तिकायनाप्रदेशें जेक्षेत्रगतअसंख्यातापुद्गलतथाजीवने पहेलेसमय च लणसहायीपणोपरिणमतोहतो अनेबीजेसमय अनंतपरमाणु तथाअनंताजीवप्रदेश ने चलणसहायीथयो तेवारें असंख्याताचलणसहायनोव्यय अनेअनंताचलण सहायनोउपजवो अनेगुणपणेध्रुव एमधर्मद्रव्यमध्ये उत्पादव्ययथयोरह्योछे तेम जअधर्मादिकद्रव्यनेविषेपणजाणवुं तथावलीकार्यकारणपणे उत्पादव्यय तथाअगुरु लघुनाचलणनोउत्पादव्यय पंचास्तिकायनेविषे कहेवुं तथाकालद्रव्यतेउपचारछे ते नुंस्वरूपसर्वउपचारथीजकहेवुं एरीतें सर्वद्रव्यमांसत्पणोछे जो अगुरुलघुनोभेदन

थाय तोपणप्रदेशनोमांहोमांहेजेदकहेवोथाय तेमाटेअगुरुलघुनोजेदसर्वेमांछे अने जेनोउत्पादव्ययरूपसत्पणोएकछे तेड्रव्यएकछे तथा जेनोउत्पादव्ययसत्पणो जूदोतेड्रव्यपणजूदोछे एटलेसत्के० सत्वपणो कह्यो.

६ अगुरुलघुत्वपणोकहेछे जेड्रव्यनोअगुरुलघुपर्यायछे तेछप्रकारनीहानिवृद्धिकरे तेमांछप्रकारनीवृद्धिछे १ अनंतजागवृद्धि २ असंख्यातजागवृद्धि ३ संख्यातजागवृद्धि ४ संख्यातगुणवृद्धि ५ असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंतगुणवृद्धि हवेछप्रकारनीहानि कहेछे १ अनंतजागहानि २ असंख्यातजागहानि ३ संख्यातजागहानि ४ संख्यातगुणहानि ५ असंख्यातगुणहानि ६ अनंतगुणहानि एरीतेछप्रकारनीवृद्धि तथा छ प्रकारनीहानि तेसर्वड्रव्यमांसदासमयसमयथयीरहीछे वृद्धितेउपजवोअनेहानितेव्यपकहियें एअगुरुलघुपणोकह्यो नहीगुरुतथानहीलघु ते अगुरुलघुस्वजावकहियें एसर्वड्रव्यमध्येछे तेश्रीजगवतीसूत्रें सव्वदव्वा सव्वगुणा सव्वपएसा सव्वपज्जवा सव्वद्धा अगुरुलहुयाए अगुरुलघुस्वजावनेआवरणनथी तथाआत्मामध्येजेअगुरुलघुगुण तेआत्मानासर्वप्रदेशेंक्षायकजावथयें सर्वगुणसामान्यपणेपरिणमे पणअधिकाउछा परिणमेनही तेअगुरुलघुगुणनुंप्रवर्तनजाणवुं तेअगुरुलघुगुणने गोत्रकर्म रोकेछे एअगुरुलघुस्वजावतेसर्वड्रव्यमांछे.

हवेगुणनीजावनाकहेछे तिहांजेटलाछएड्रव्यमां सरिखागुणछे तेसामान्यगुणकहियें अनेजेगुणएकड्रव्यमांछे अनेबीजाड्रव्यमांनथी तेविशेषगुणकहियें जेगुणकोइक ड्रव्यमांछे अनेकोइकड्रव्यमांनथी तेसाधारणअसाधारणगुणकहियें एमएछड्रव्यमां अनंतगुण अनंतपर्याय अनंतस्वजावसदाशाश्वताछे जेमश्रीकेवलीजगवंतेंपरूप्या ते सर्वेजेजीवछे तेजीवसद्दहणापूर्वकयथार्थउपयोगथी श्रुतज्ञानादिकथीयथार्थपणेजाणपासरहवा एनिर्मलज्ञानतेमोक्षनुंकारणछे जेजीव ज्ञानपाम्यो तेजीवविरतिकरेछे तेचारित्रकहियें ज्ञाननुंफल विरतिपणोछे तेमोक्षनुंतत्कालकारणछे.

हवेनिर्मलचारित्र अनेव्यवहारचारित्रनोविचारकहेछे तेमांप्रथमव्यवहारचारित्रते जेनाअणतिपातविरमण प्रमुख पंचमहाव्रतरूप तेसर्वविरतिकहियेंअने स्थूलप्राणातिपात विरमणअनादिकश्रावकना बारव्रत तेदेशविरतिचारित्रजाणवुं एव्यवहारचारित्र मोक्षनुंकारणछे एवीरीतेश्रावकनाबारव्रत अनेयतिनापांचमहाव्रत तेअनअनेप आचारेतेपणदेवलोकनोनिकाचे पणमोक्षनिर्जरानुंकारणनथाय ज्यांकोइपुन्येकेमो क्षनुंकारणकहेतोएतुंरह शावाकर्मकहियें तेने उत्तर जे त्यागबुद्धी निर्मलज्ञानसहि

तचारित्र तेमोद्गनुंकारणछे माटेनिश्चेंचारित्रसहित व्यवहारचारित्रपालवुं तेनिश्चें चारित्रकहेछे शरीर इंद्रिय विषयकषाय योग एसर्वेपरवस्तुजाणीछांमवा तथाआहार तेपुद्गलवस्तुजाणीछांडवो आत्माआणाहारीछे तेमाटेमुऊने आहारकरवोघटेनही आहारतेपुद्गलछे आत्माअपुद्गलीछे तेमाटेत्यागकरवो तद्रूपजेतप तेतप निश्चेंचारित्र मांजाणवुं चारित्रकहेतांचंचलतारहति थिरतानापरिणाम अनेआत्मस्वरूपनेविषे एकत्वपणेरमण तन्मयतास्वरूपविश्रांति तत्वानुभवतेचारित्रकहियें तेचारित्रनावेभे दछे एकदेशविरति बीजीसर्वविरति तिहांदेशविरतिके० श्रावकनावारव्रत ते वारव्रतनि श्चेंतथा व्यवहारथीकहेछे.

१ प्राणातिपातविरमणव्रत ते परजीवने आपणाजीवसरिखोजाणी सर्वजीवनी रक्षाकरे तेव्यवहारदयाथवी माटे व्यवहारप्राणातिपात विरमणव्रतजाणवुं अनेजे आपणोजीव कर्मवशपडयोदुःखीथायछे तेआपणाजीवनेकर्मबंधनथीमूकाववुं अने आत्मगुणरक्षाकरीगुणवृद्धिकरवी तेस्वदया बंधहेतुपरिणतिनिवारी स्वरूपगुणनेप्र गटपणेकरवा जेगुणप्रगटथयोतेराखवो एटलेज्ञानेकरी मिथ्यात्वटाली आपणाजी वनेनिर्मलकरेतेनिश्चेंथी प्राणातिपात विरमणव्रतकहियें.

२ मृषावादविरमणव्रतकहेछे जूठुंवचनबिलकुलबोलवुंनही ते व्यवहारमृषावा दविरमणव्रत अने जे परपुद्गलादिकवस्तुनेआपणीकहेवी तेमृषावादवचनछे अनेजीव नेअजीवकहे तथाअजीवनेजीवकहे इत्यादिकअज्ञानभाव ते सर्वेनिश्चेंमृषावादछे अथवासिद्धांतनाअर्थ खोटाकहे एमृषावादजेणेछांमयो तेनिश्चेंमृषावादविरमणव्रत कहियें एटलेवीजाअदत्तादानादिक व्रतजोभांजे तोतेनोमात्रचारित्रभंगथाय पणज्ञान दर्शननोभंगनथाय अनेजेणेनिश्चेंमृषावादनो भंगकस्यो तेणे समकेततथाज्ञानअने चारित्रएत्रणेनोभंगकस्यो तथाआगममां एमकह्युंछेजे एकसाधुयेंचोथोव्रतभंगकस्यो अ नेएकसाधुयें बीजोमृषावादव्रतभंगकस्यो तोजेणेचोथोव्रतभंगकस्यो तेआलोवणलेइशु द्धथायपणजेसिद्धांतनाअर्थनोमृषाउपदेशआपे तेआलोवणलीधे पणशुद्धथायनही.

३ अदत्तादानविरमणव्रतकहेछे जेपारकुं धन वस्तु छुपावे चोरीकरे ठगबाजीक रीलीये तेचोरीछे एटलेपारकीवस्तुधणीनादिधाविनालेवीनही एव्यवहारथी अदत्ता दानविरमणव्रतजाणवुं अने जेपांचइंद्रियना त्रेवीसविषय आठकर्मवर्गणाइत्यादिक परवस्तु लेवीनही तथा तेनीवांछानकरवी तेआत्मानेअग्राह्यछे माटे तेनिश्चेंथीअदत्ता दानविरमणव्रतकहियें इहांकोइपुछेजे विषयनी अनेकर्मनीवांछाकोणकरेछे तेनेउ त्तरजे पुण्यनेभोगलेवायोग्यछे ते जीवकर्मनीवांछाकरेछे जेपुण्यना ४२ भेदछे तेचार

कर्मनीशुनप्रकृतिने एटलेजेव्यवहार अदत्तादानतोनथीलेता पणअंतरंगपुण्यादिकनी वांछाछे तेनेनिश्चेंअदत्तादानलागेछे.

४ मैथुनव्रतकहेछे जेपुरुषपरस्त्रीनोपरिहारकरे तथा जेस्त्रीपुरुषनोपरिहारकरे इहांसाधुनेस्त्रीनोसर्वथात्यागछे अनेगृहस्थनेपरणेलीस्त्रीमोकलीछे परस्त्रीनोपच्चखाण छे तेव्यवहारथीमैथुननुंविरमणकहियें अने जेविषयनाअभिलाषनुं तथाममतातृष्णानोत्याग परभाववर्णादिक परद्रव्यनास्वामित्वादिक तेनोअभोगीपणो आत्मास्वगुणज्ञानादिकनोभोगीछे अनेएपुद्गलखंध ते अनंताजीवनीएठछेतेनेकेमभोगवे एरीते त्यागतेनिश्चेंथी मैथुन विरमणकहियें जेएबाह्यविषयछांड्योछे अनेअंतरंगलालचबुटीनथीतोतेअनेतेमैथुननाकर्मलागेछे.

५ परिग्रहपरिमाणव्रतकहेछे परिग्रह धन धान्य दास दासी चौपद जमीन वस्त्र आभरणनोत्याग तेमांसाधुनेतोसर्वथापरिग्रहनोत्यागछे तथाश्रावकनेइच्छापरिमाणछे जेटलोइच्छाहोय तेटलो परिग्रहमोकलोराखे बीजानीव्रतिकरे एव्यवहारथीकह्यो अने [illegible] अज्ञानइत्यज्ञानावरणीप्रमुखआठकर्म्म अनेशरीर इंद्रियनो परिहार एटले [illegible] परजाणीछांड्यो तेनिश्चेंथीपरिग्रहनोत्याग एटलेपरवस्तुनीमूर्छाछांडवी जे [illegible] तेपरिग्रहछोडवोजछे एमजाणवुं.

६ दिशिपरिमाणव्रतकहेछे निश्चेंनिरभिचारदिशी पांचमीअधो छठीउर्ध्व एदशदिशी [illegible] तेव्यवहारथीदिशीपरिमाणकहियें अनेचारगतिमां [illegible] एमजाणी तेथीउदासीपणो अनेसिद्धअवस्थानुंउपादेयपणो ते निश्चेंदिशिपरिमाणव्रतकहियें.

७ भोगोपभोग परिमाणव्रतकहेछे जेएकवारभोगववुंतेभोग अनेजेवारंवार भोग ववुं तेउपभोग तेनोपरिमाणकरे ते व्यवहारभोगोपभोगव्रतकहियें अने जेव्यव [illegible] अने निश्चेंनयनोकर्मनोकर्त्ता कर्मनो आत्माअना [illegible] तेथीपरभावग्राहक अनेपरभावरक्षकथयो एटले आत्मा [illegible] तेवारेपरभाव [illegible] कर्मनोकर्त्ताथयोछे पणपरभावनोभावनोकर्त्ता छे [illegible] तेथीसकर्मकरीपरभावनोनथी विभावनेकरेछे अज्ञानपणे [illegible] पोताना ज्ञानादिकगुणनोकर्त्तानोकाल [illegible] निश्चें भोगोपभोगव्रत त्यागजाणवो.

८ अनर्थदंडविरमणव्रतकहेछे जेकामविनाजीवनोविघकरवो पारकावास्ते आरंभ प्रमुखकरवानी आज्ञाप्रमुखआपवी तेव्यवहारअनर्थदंडअनेजेशुभाशुभकर्म्मतेमिथ्यात्व अविरति कषाय योगथी बंधायछे तेनेजीवआपणाकरीजाणे एनिश्चेंथी अनर्थदंड.

९ सामायकव्रतकहेछे जे मनवचनकायाना आरंभटाळीने तेनेनिरारंभपणेवर्त्तवे तेव्यवहार सामायकजाणवो अनेजेजीवना ज्ञान दर्शन चारित्रगुणविचारे सर्वजीवनागुणनीसत्ता एकसमानजाणी सर्वजीवसाथे समतापरिणामेंवर्त्ते ते निश्चेंथी समतारूपसामायक कहियें.

१० देशावगाशीकव्रतकहेछे जेमनवचनकायानायोग एकठोरकरी एकस्थानकेंबेसीधर्मध्यानकरवो तेव्यवहारदेशावगाशीककहियें अनेजेश्रुतज्ञानेकरीछद्रव्य ओळखीनेपांचद्रव्यनोत्यागकरे अनेज्ञानवंतजीवनेध्यावे तेनिश्चें देशावगाशीकव्रतकहियें.

११ पोशहव्रतकहेछे जेचारपहोर अथवाआठपहोरसुधीसमतापरिणामे सावद्यजोगनी निरारंभपणे सिज्झायध्यानमांप्रवर्त्ते तेव्यवहारपोशहकहियें अनेपोतानाजीवनेज्ञानध्यानथीपोषीनेपुष्टकरे तेनिश्चेंथीपोशहव्रतकहियें जीवनेपोतानास्वगुणेकरी पोषीजेतेने पोशहकहियें.

१२ अतिथिसंविभागव्रतकहेछे जेपोशहनेपारणे अथवा सदासर्वदासाधुने तथाजैनधर्मिश्रावकने पोतानीशक्तिप्रमाणे दानदेवो तेव्यवहारअतिथिसंविभागकहियें अने पोताना जीवने अथवा शिष्यनेज्ञाननुंदानते भणवो भणाववो सुणवो सुणाववो तेनिश्चेंथी अतिथिसंविभागव्रतकहियें एटले श्रावकनाबारव्रतकह्या ते समकितसहित जेनिश्चेंतथाव्यवहारथीबारव्रतधारे तेजीवनेंपांचमेगुणठाणे देशविरति श्रावककहियें देशके० देशथकी थोडीशी व्रतिपणोछेमाटे अनेयतिनेसर्वथीव्रतिपणो छे तेथीपांचमहाव्रतजछे साधुनेपांचमहाव्रतमांसर्वव्रतआव्या एनिश्चेंत्यागरूपज्ञान ध्यान संवरनिर्ज्जरामां थिरतानापरिणाम तेनिश्चेंचारित्रना एकउत्सर्ग बीजोअपवाद एवेमार्गछे तेमांजेउत्कृष्ट तीक्ष्णपरिणाम तेउत्सर्ग अनेजेउत्सर्गेराखवाने कारणरूप तेअपवाद उक्तंच संवरणंमिअसुद्धं दुन्नविगिन्हतदेतयाणहियं ॥ आउरदिठंतेणंते चेवहीयंअसंघरणे॥१॥ एटले जिहांसुधीसाधकभावने बाधकनपडे तेहांसीम जेहनीनाकही तेआदरवोनही अनेजोसाधकपरिणाम रहेतानदीठा तेवारेंजेहनीनातें आचरे तेनेअपवादमार्गकहियें जेआत्मगुणराखवाने करवो तेअपवाद अनेगुणीने रागे भक्तियेंकरवो तेप्रशस्त एवेतोसाधनछे अनेजेउदैकनेअखमवाथीकरवुं तेअति

चारछे तथासबलो अने उदेकमाटे अशक्तपणेकरवुं तेपडिवाइछे तेमध्ये अपवाद मार्गेते परिणामदृढरहे तेमआज्ञायेंकरवो.

हवेचारध्यानकहेछे १ आर्त्तध्यान २रौद्रध्यान ३ धर्मध्यान ४ शुक्लध्यान तिहां पेहेलाबेध्यानतेअशुभकहियें अनेपाछलाबेध्यानतेशुद्धछे तिहांमनमां आहटदोहट ना परिणामते आर्त्तध्यानकहियें तेनाचारपायाछे १ नाइ मित्र सज्जन माता पिता स्त्री पुत्र धन प्रमुखइष्टवस्तुनोवियोगथयाथी विलापकरे तेपेलो इष्टवियोगनामा आर्त्त ध्यान तथा २अनिष्टजेशुंभाडुःखनाकारण दुसमन दरिद्रीपणो तथा कुपुत्रादिमलवाथी मनमां दुःखचिंताउपजे तेअनिष्टसंयोग नामाआर्त्तध्यान ३ शरीरमांरोगउपनाथका दुःखकरे चिंतायणीकरे तेरोगचिंतानामाआर्त्तध्यान ४ मनमांआगलनावखतनोसो चकरे जेआवर्षमां आकामकरशुं आवतावर्षमांअमुककामकरशुंतोअमुकलाभथशे अथवा दान शील तपनुंफलमांगे जे आभवमांतपकीधोछे माटे आवतेभवें इंद्र चक्रवर्त्तिनी पदवीमले एहवी आगलाभवनी वांछाछे तेअग्रशोच आर्त्तध्याननो चोथो पायोजाणवो एआर्त्तध्यानना चारभेदकह्या एतिर्यंचगतिनाकारणछे एध्याननापरिणा मतेपांचमांअथवाछठागुणठाणासुधीहोय.

२ जेकठोरपरिणामनुंचिंतवनतेरौद्रध्यान तेनाचारभेदछे १ जीवहिंसाकरीने हर षपामे अथवा बीजोकोइहिंसाकरतोहोय तेनेदेखी खुशीथाय अथवा युद्धनी अनु मोदनाकरे तेहिंसानुबंधी रौद्रध्यान २ जुठुं बोलीनेमनमां हरषपामे केंजुओमे के वोरूपटकेलाव्यो माराजूठापणानी खबरकोइनेपडीनही एवोमृषावादरूप परिणाम तेमृषानुबंधीरौद्रध्यान ३ चोरीकरी अथवाठगाइकरी मनमां खुशीथाय केमारा जेवो जोराबरकोणछे हुंपारकोमालखाउंछुं एवोपरिणामते चोरानुबंधि रौद्रध्यान ४ परिग्रह धनधान्य परिवार घणोवधवानी लालचहोय तेधनअथवा कुटुंबनेमाटे गमेतेवुंपापकरे अथवा घणोपरिग्रहमिल्याथीअहंकारकरे तेपरिग्रह रक्षणानुबंधी रौद्रध्यान एरौद्रध्याननाचारभेदकह्या एध्यान नरकगतिपमाडवानो कारणछे महा चिकणकर्मनुं कारणछे एपांचमां गुणठाणासुधीछेअने छठेगुणठाणेपण एकहिंसानु बंधी रौद्रध्याननापरिणाम कोइकजीवनेहोय.

हवेधर्मध्यानकहेछे जेव्यवहारक्रियारूप कारणनेधर्म तथाश्रुतज्ञान अनेचारित्र एकारणरूपसाधनधर्म तथारत्नत्रयी भेदपणे तेउपादानशुद्धव्यवहार उत्सर्गा नुसारी ते अपवादधर्मजाणवो अने अभेदरत्नत्रयी तेसाधनशुद्ध निश्चयनयें उत्सर्ग धर्म अने धम्मोवत्थुसहावो जेवस्तुनोमूलगुण शुद्धपरिणामिक स्वगुणप्रवृत्ति कर्त्ता

दिक अनंतानंदरूप सिद्धावस्थायेंरह्यो तेएवंभूत उत्सर्गेउपादान शुद्धधर्म तेधर्मनुं भासन रमण एकाग्रतापणे चिंतन तन्मयतानो उपयोग एकत्वनोचिंतववो तेध र्मध्यानकहियें तेनापायाचारछे तेकहेछे.

१ आज्ञाविचयधर्मध्यानते जेवीतरागदेवनीआज्ञा साचीकरीसद्दहे एटलेभगवंते छद्रव्यनुंस्वरूप नयप्रमाणे निक्षेपासहीत सिद्धस्वरूप निगोदस्वरूप जेमकह्या तेम सद्दहे वीतरागनीआज्ञा नित्यअनित्य स्याद्वादपणे निश्चेंव्यवहारपणे माने सद्दहे ते आज्ञाप्रमाणे यथार्थउपयोग भासनथयो तेनेहर्षेंकरी तेउपयोगमध्ये निरधार भा सन रमण अनुभवता एकता तन्मयपणो तेआज्ञाविचयधर्मध्यानकहियें.

२ अपायविचय धर्मध्यान तेजीवमां अशुद्धपणे कर्मनायोगथी संसारीअवस्था मां अनेक अपायके० दूषणछे तेअज्ञान राग द्वेष कषाय आश्रव एमाराथी हुं एथकीन्यारोछुं हुंअनंतज्ञान दर्शन चारित्र वीर्य मयी शुद्ध बुद्ध अविनाशीछुं अज अनादि अनंत अक्षय अक्षर अनक्षर अचल अकल अमल अगम्य अनमी अरू पी अकर्मा अबंधक अनुदय अनुदीरक अयोगी अभोगी अरोगी अभेदी अवेदी अछेदी अखेदी अकषायी असखाइ अलेशी अशरीरी अणाहारी अव्याबाध अनवगा ही अगुरुलघुपरिणामी अतेंद्री अप्राणी अयोनी असंसारी अमर अपर अपरंप र अव्यापी अनाश्रित अकंप अविरुद्ध अनाश्रव अलख अशोकी असंगी अनार क लोकालोकज्ञायक एवो शुद्धचिदानंद मारोजीवछे एहवो एकाग्रतारूप ध्यानते अपायविचयधर्मध्यानजाणवो.

३ विपाकविचयधर्मध्यानकहेछे जे एहवोजीवछे तोपण कर्मवशेंदुःखीछे तेकर्म नोविपाकचिंतवे जे जीवनोज्ञानगुण तेज्ञानावरणीकर्मेंदाब्योछे अनेदर्शनावरणीक र्मेंदर्शनगुणदाब्योछे एमआठकर्मे जीवना आठगुणदाब्याछे एटलेआसंसारमांभम ताथका जीवने जेसुखदुःखछे तेसर्वकर्मनाकीधाछे माटेसुखउपनेराचवुंनही अने दुःखउपने दिलगीरथवुंनही कर्मस्वरूपनीप्रकृति स्थिति रस अनेप्रदेशनो बंध उद य उदीरणा तथासत्ता चिंतववानुं एकाग्रतापरिणाम तेविपाकविचय धर्मध्यान.

४ संस्थानविचयधर्मध्यानकहेछे ते चउदराजमानलोकनुं स्वरूपविचारे जेएलो कतेचउदराजऊंचोछे तेमध्ये सातराजअधोलोकछे विचमां अढारसोयोजन मनुष्य खेत्र त्रिछोलोकछे तेऊपर कांइकऊणो सातराज ऊर्ध्वलोकछे तेमांसर्व वैमानिक देवता वसेछे अनेऊपरें सिद्धशिलासिद्धखेत्रछे एरीतेंलोकनुंप्रमाणछे एलोकनुंसंस्थान वैशाख छे अनंतोकाल आपणाजीवें संसारमां भमता सर्वलोकने जन्ममरणकरी फरस्यो

ुंजेलोकस्वरूप तथालोकनेविपे पंचास्तिकायनुं अवस्थान तयापरिणमन द्र
ध्ये गुणपर्यायनुं अवस्थानं तेनो जे एकाग्रतायें तन्मयचिंतवणपरिणाम एह
ध्यान तेसंस्थानविचयधर्मध्यानकहियें एधर्मध्यानना चारपायाकह्या एधर्मध्या
चोथागुणठाणाथी मांमीने सातमां गुणठाणासुधीछे.
हवेशुक्लध्यानकहेछे शुक्लके० निर्मलशुद्ध परआलंबनविना आत्मानास्वरूपने
मयपणेध्यावे एहवुंध्यान तेनेशुक्लध्यानकहियें तेहनापायाचारछे तेकहेछे.०
१ पृथक्त्ववितर्कसप्रविचार ते पृथक्त्वके० जीवथी अजीवजूदाकरवा स्वभा
विभाव तेनेजूदापृथक्पणे विहचणकरवी स्वरूपनेविपेपण द्रव्य तथापर्यायनो
थक्पणेध्यानकरी पर्यायतेगुणमां सक्रमावे अनेगुणते पर्यायमांसक्रमणकरे एरी
स्वधर्मनेविपे धर्मांतरभेद तेपृथक्त्वकहियें अनेतेनो वितर्क ते जेश्रुतज्ञाने स्थितउ
पयोग अनेसप्रविचार ते सविकल्पोपयोग एटलेएकचिंतव्यापछि बीजोचिंतववो तेने
विचारकहियें एटलेनिर्मलविकल्पसहित पोतानीसत्तानेध्यावे तेपृथक्त्ववितर्कसप्रवि
चार पेहेलो पायो एआठमांगुणठाणाथीमांमी इग्यारमां गुणठाणासुधीछे.
२ एकत्ववितर्क अप्रविचारनामा बीजोपायोकहेछे जेजीव आपणागुणपर्याय
नीएकताकरी ध्यावे तेआवीरीतेके जीवनागुणपर्याय अने जीवते एकजछे अ
ने माहारोजीव सिद्धस्वरूपएकजछे एवोएकत्वस्वरूप तन्मयपणेअनंता आत्म
धर्मनोएकत्वपणेध्यान वितर्कके० श्रुतज्ञानावलंबीपणे अनेअप्रविचारके० विक
ल्परहित दर्शनज्ञाननो समयांतरें कारणताविना रत्नत्रयीनो एकसमयी कारणकार्य
तापणेजेध्यान वीर्यउपयोगनीएकाग्रता तेएकत्ववितर्क अप्रविचारजाणवो एपायो
बारमांगुणठाणेध्यावे एबेहुपायामां श्रुतज्ञानावलंबनीपणोछे पण अवधि मनपर्यव
ज्ञानोपयोगेंवर्त्ततोजीव कोइध्यानकरीसकेनही एबेज्ञान परानुयायीछे माटे. एध्यान
थी घनघातीया चारकर्मखपावे निर्मलकेवलज्ञानपामे पछेतेरमेंगुणठाणे ध्यानंतरी
का पणेछे तेरमानाअंते अनेचउदमे गुणठाणे एबेपायाध्यावे.
३ सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपातिपायोकहेछे तेसूक्ष्म मन वचन कायानायोगरुंधे शैलेशी
करणकरी अयोगीथाय तेजेअप्रतिपातिनिर्मलवीर्य अचलतारूपपरिणाम तेसूक्ष्मक्रि
या अप्रतिपातिध्यानजाणवुं इहांसत्ताये ८५ प्रकृतिरहीहती तेमध्ये १२ खपावे.
४ उछिन्नक्रियानुवृत्तिपायोकहेछे जेयोगनिरुंधकीधापछे तेरप्रकृतिखपावे अकर्मी
थाय सर्वक्रियाथीरहितथाय तेसमुछिन्नक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यानकहियें एध्यानध्याव
ता शैलेशीकरण रूपक्रियाउछेदे अवगाहनादेहमानमांथी त्रीजोभागघटाडे शरीरमू

थी इहांथी मानगजकपर आवनेअंतनजाय सिद्धथाय इहांशिष्यपूछेछे चौदमेगुणठाणेतो अक्रियछे तोमालगजनेचोगथी गुक्रियाकेमकहेछे तेनेउत्तर जे सिद्धनोअक्रियछे परंतु पूर्वप्रेरणायें कुंचीनेदृष्टांते जीवसांचालवानोगुणछे धर्मास्तिकायमध्ये प्रेरणागुणछे तेथीकर्मरहितजीव मोक्षजतां लोकनेअंतजायछेत्यां इहांकोइपूछेछे आगल केमअलोकने निराक्रियजातोनथी तेनेउत्तर जेआगलधर्मास्तिकायनथी माटेन जाय वलीकोइपूछेछे तोअयोगनिये अथवातिर्च्छीगतिये केमनथीजातो तेनेउत्तर जे कर्मनाजारथीरहितथयो हलुवोथयो माटेतिर्छो नथाजातो जिमगोलजाय कारणके प्रेरककोइनथी तथाकंपनथी केमकेअक्रियछेमाटे तथाकोइपूछेछे सिद्धनेकर्मके मलागतानथी तेनेकहेछे जे कर्मतोजीवनेअज्ञानथी तथायोगथीलागेछे तेसिद्धना जीवने अज्ञान तथायोगनथी माटेकर्मलागेनही एशुक्लध्याननोअधिकारकह्यो.

हवेवलीबीजाचारध्यानकहेछे १ पदस्थ २ पिंडस्थ ३ रूपस्थ ४ रूपातीत तेमां पहेलुं पदस्थध्यानकहेछे जेअरिहंतादिक पांचपरमेष्ठीना गुणसंभारे तेनोचित्तमां ध्यानकरे तेपदस्थध्यान. २ पिंडके० शरीरमांरह्योजे आपणोजीव तेमां अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय अनेसाधुपणानागुण सर्वने एहवोजेध्यानतेपिंडस्थध्यान अथवा गुणीनागुणमध्ये एकत्वताउपयोगकरवोतेपिंडस्थध्यान. ३ रूपमांरह्योथको पण एमागेजीव अरूपीअनंतगुणीने जेवस्तुनोस्वरूप अतिशयावलंबीथयापछे आत्मानुं रूपएकतापणो एहवोजेध्यान तेरूपस्थध्यान एत्रणध्यानधर्मध्यानमांगणवा. ४ निरंजन निर्मल संकल्पविकल्परहित अभेद एकशुद्धसत्तारूप चिदानंद तत्वामृत असंग अखंड अनंतगुणपर्यायरूप आत्मस्वरूपनुंध्यानते रूपातीतध्यानजाणवुं इहांमार्गणागुणठाणा नयप्रमाण मतिआदिकज्ञान क्षयोपशमनाव सर्वठांमवायोग्यथया एक सिद्धनामूलगुणनेध्यावे ते रूपातीतध्यानजाणवो एटलेमोक्षनुंकारणजेध्यान तेकह्युं.

हवेजावनाकहेछे तेमांधर्मध्याननी चारजावनाकहेछे १मैत्रीजावनाते सर्वजीव साथे मित्रतानोजावचिंतववो सर्वनोजलोचाहवुं पणकोइनो मागेचिंतववोनही सर्वेजीवउपरहितबुद्धिराखवीते मैत्रीजावना २ गुणवंतअने ज्ञानादिकगुणउपरें रागते बीजीप्रमोदजावना ३ जेधर्मवंतउपर राग अनेमिथ्यात्वीउपर रागनही तेमद्वेषपण नही कारणके हिंसकउपरेंपण उत्तमजीवने करुणाउपजे जोउपदेशथकी सारामार्गेआवेतो तेने शुद्धमार्गेआणवो कदाचितमार्गेनआवे तोपणद्वेषनराखवो केमके ते अजाणछे एमसमजवुं एहवाजेपरिणाम तेमध्यस्थजावना ४ सर्वजीवने पोतानेतुल्यजाणी दयापाले कोइनेदहणेनही तथाजेदुःखी अथवाधर्महीन तेहनाउपरकरु

एवुंजेलोकस्वरूप तथालोकनेविषे पंचास्तिकायनुं अवस्थान तथापरिणमन द्र
व्यमध्ये गुणपर्यायनुं अवस्थान तेनो जे एकाग्रतायें तन्मयचिंतवणपरिणाम एह
वुंजेध्यान तेसंस्थानविचयधर्मध्यानकहियें एधर्मध्याननना चारपायाकह्या एधर्मध्या
न चोथागुणठाणाथी मांडीने सातमां गुणठाणासुधीछे.

हवेशुक्लध्यानकहेछे शुक्लके० निर्मलशुद्ध परआलंबनविना आत्मानास्वरूपने
तन्मयपणेध्यावे एहवुंध्यान तेनेशुक्लध्यानकहियें तेहनापायाचारछे तेकहेछे.०

१ पृथक्त्ववितर्कसप्रविचार ते पृथक्त्वके० जीवथी अजीवजूदाकरवा स्वना
व विनाव तेनेजूदापृथक्पणे विद्दचणकरवी स्वरूपनेविषेपण द्रव्य तथापर्यायनो
पृथक्पणेध्यानकरी पर्यायतेगुणमां संक्रमावे अनेगुणने पर्यायमांसंक्रमणकरे एरी
तेस्वधर्मनेविषे धर्मांतरनेद तेपृथक्त्वकहियें अनेतेनो वितर्क ते जेश्रुतज्ञाने स्थितउ
पयोग अनेसप्रविचार ते सविकल्पोपयोग एटलेएकचिन्त्यापत्ति बीजोचिंतववो तेने
विचारकहियें एटलेनिर्मलविकल्पसहित पोतानीसत्तानेध्यावे तेपृथक्त्ववितर्क सप्रवि
चार पेहेलो पायो एआठमांगुणठाणाथीमांडी इग्यारमां गुणठाणासुधीछे.

२ एकत्ववितर्क अप्रविचारनामा बीजोपायोकहेछे जेजीव आपणागुणपर्याय
नीएकताकरी ध्यावे तेआवीरीतेके जीवनागुणपर्याय अने जीवते एकजछे अ
ने माहारोजीव सिद्धस्वरूपएकजछे एवोएकत्वस्वरूप तन्मयपणेअनंता आत्म
धर्मनोएकत्वपणेध्यान वितर्कके० श्रुतज्ञानावलंबीपणे अनेअप्रविचारके० विक
ल्परहित दर्शनज्ञाननो समयांतरें कारणताविना रत्नत्रयीनो एकत्वमयी कारणकार्य
तापणेजेध्यान वीर्यउपयोगनीएकाग्रता तेएकत्ववितर्क अप्रविचारजाणवो एपायो
बारमांगुणठाणेध्यावे एवेडुपायामां श्रुतज्ञानावलंबनीपणोछे पण अवधि मनपर्यव
ज्ञानोपयोगेंवर्त्ततोजीव कोइध्यानकरीसकेनही एवेज्ञान परानुयायीछे माटे. एध्यान
थी घनघातीया चारकर्मखपावे निर्मलकेवलज्ञानपामे पछेतेरमेंगुणठाणे ध्यानांतरी
का पणेछे तेरमानाअंते अनेचउदमे गुणठाणे त्रीजोपायोध्यावे.

३ सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपातिपायोकहेछे तेमज्ञ्य मन वचन कायानायोगरुंध शैलेशी
करणकरी अयोगीयाय तेजेअप्रतिपातिनिर्मलवीर्य अचलतारूपपरिणाम तेसूक्ष्मक्रि
या अप्रतिपातिध्यानजाणवुं इहांसत्तायें ८५ प्रकृतिरहीहती तेमध्ये ७२ खपावे.

४ उछिन्नक्रियानुवृत्तिपायोकहेछे जेयोगनिरुंधकीधापछे तेप्रकृतिखपावे अकर्मी
थाय सर्वक्रियाथीरहितथाय तेसमुछिन्नक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यानकहियें एध्यानध्याव
ता शैलेशीकरण रूपक्रियाउछेदे अवगाहनाद्दमानमांथी त्रीजानागघटाडे शरीरमू

की इहांथी सातराजऊपर लोकनेअंतेजाय सिद्धथाय इहांशिष्यपूछेजे चौदमेंगुणठा णेतो अक्रियछे तोसातराजऊंचोगयो एक्रियाकेमकरेछे तेनेउत्तर जे सिद्धतोअक्रि यछे परंतु पूर्वप्रेरणाचें तुंबीनेदृष्टांते जीवमांचालवानोगुणछे धर्मास्तिकायमध्ये प्रेर णागुणछे तेथीकर्मरहितजीव मोक्षेजता लोकनेअंतेजायीरहे इहांकोइपुछेजे आगल ऊंचोअलोकछे तिहांकिमजातोनथी तेनेउत्तर जेआगलधर्मास्तिकायनथी माटेन जाय वलीकोइपुछेजे तोअधोगतियें अथवातिरछीगतियें केमनथीजातो तेनेउत्तर जे कर्मनाभारथीरहितथयो हलुवोथयो माटेनिचो तथाभावो जिमणोनजाय कार णके प्रेरककोइनथी तथाकंपेनही केमकेअक्रियछेमाटे तथाकोइपुछेजे सिद्धनेकर्मके मलागतानथी तेनेकेहेछे जे कर्मतोजीवनेअज्ञानथी तथायोगथीलागेछे तेसिद्धना जीवने अज्ञान तथायोगनथी माटेकर्मलागेनही एचारध्याननोअधिकारकह्यो.

हवेवलीबीजाचारध्यानकहेछे १ पदस्थ २ पिंमस्थ ३ रूपस्थ ४ रूपातीत तेमां पहेलुं पदस्थध्यानकहेछे जेअरिहंतादिक पांचपरमेष्टीना गुणसंभारे तेनोचित्तमां ध्यानकरे तेपदस्थध्यान. २ पिंडके० शरीरमांरह्योजे आपणोजीव तेमां अरिहंत सि द्ध आचार्य उपाध्याय अनेसाधुपणानागुण सर्वछे एहवोजेध्यानतेपिंडस्थध्यान अथ वा गुणीनागुणमध्ये एकलता उपयोगकरवोतेपिंडस्थध्यान. ३ रूपमांरह्योथको पण एमारोजीव अरूपीअनंतगुणीछे जेवस्तुनोस्वरूप अतिशयावलंबीययापछे आत्मानुं रूपएकतापणो एहवोजेध्यान तेरूपस्थध्यान एत्रणध्यानधर्मध्यानमांगणवा. ४ निरं जन निर्मल संकल्पविकल्परहित अभेद एकशुद्धसत्तारूप चिदानंद तत्वामृत असंग अखंड अनंतगुणपर्यायरूप आत्मस्वरूपनुंध्यानते रूपातीतध्यानजाणवुं इहांमार्ग णागुणठाणा नयप्रमाण मतिआदिकज्ञान क्षयोपशमभाव सर्वठांमवायोग्यथया एक सिद्धनामूलगुणनेंध्यावे ते रूपातीतध्यानजाणवो एटलेमोक्षनुंकारणजेध्यान तेकह्युं.

हवेभावनाकहेछे तेमांधर्मध्याननी चारभावनाकहेछे १ मैत्रीभावनाते सर्वजीव सायें मित्रतानोभावचिंतववो सर्वनोभलोचाहवुं पणकोइनो मागोचिंतववोनही स र्वजीवऊपरहितबुद्धिराखवीते मैत्रीभावना २ गुणवंतअने ज्ञानादिकगुणऊपरें रागते बीजीप्रमोदभावना ३ जेधर्मवंतऊपर राग अनेमिथ्यात्वीऊपर रागनही तेमद्वेषपण नही कारणके हिंसकउपरेंपण उत्तमजीवने करुणाऊपजे जोउपदेशथकी सारामा र्गेआवेतो तेने शुद्धमार्गेआणवो कदाचितमार्गेनआवे तोपणद्वेषनराखवो केम के ते अजाणछे एमसमजवुं एहवाजेपरिणाम तेमध्यस्थभावना ४ सर्वजीवने पोता नेतुल्यजाणी दयापाले कोइनेहणेनही तथाजेदुःखी अथवाधर्महीन तेहनाऊपरकरु

छे एवुंजेलोकस्वरूप तथालोकनेविषे पंचास्तिकायनुं अवस्थान तथापरिणमन द्र व्यमध्ये गुणपर्यायनुं अवस्थानं तेनो जे एकाग्रतायें तन्मयचिंतवणपरिणाम एह वुंजेध्यान तेसंस्थानविचयधर्मध्यानकहियें एधर्मध्यानना चारपायाकह्या एधर्मध्या न चोथागुणठाणाथी मांमीने सातमां गुणठाणासुधीछे.

हवेशुक्लध्यानकहेछे शुक्लके० निर्मलशुद्ध परआलंबनविना आत्मानास्वरूपने तन्मयपणेध्यावे एहवुंध्यान तेनेशुक्लध्यानकहियें तेहनापायाचारछे तेकहेछे.

१ पृथक्त्ववितर्कसप्रविचार ते पृथक्त्वके० जीवथी अजीवजूदाकरवा स्वभा व विभाव तेनेजूदापृथक्पणे विहचणकरवी स्वरूपनेविषेपण द्रव्य तथापर्यायनो पृथक्पणेध्यानकरी पर्यायतेगुणमां संक्रमावे अनेगुणते पर्यायमांसंक्रमणकरे एरी तेस्वधर्मनेविषे धर्मांतरभेद तेपृथक्त्वकहियें अनेतेनो वितर्क ते जेश्रुतज्ञाने स्थितउ पयोग अनेसप्रविचार ते सविकल्पोपयोग एटलेएकचिंतव्यापछि बीजोचिंतववो तेने विचारकहियें एटलेनिर्मलविकल्पसहित पोतानीसत्तानेध्यावे तेपृथक्त्ववितर्क सप्रवि चार पेहेलो पायो एआठमांगुणठाणाथीमांमी इग्यारमां गुणठाणासुधीछे.

२ एकत्ववितर्क अप्रविचारनामा बीजोपायोकहेछे जेजीव आपणागुणपर्याय नीएकताकरी ध्यावे तेआवीरीतेके जीवनागुणपर्याय अने जीवते एकजछे अ ने माहारोजीव सिद्धस्वरूपएकजछे एवोएकत्वस्वरूप तन्मयपणेअनंता आत्म धर्मनोएकत्वपणेध्यान वितर्कके० श्रुतज्ञानावलंबीपणे अनेअप्रविचारके० विक ल्परहित दर्शनज्ञाननो समयांतरें कारणताविना रत्नत्रयीनो एकसमयी कारणकार्य तापणेजेध्यान वीर्यउपयोगनीएकाग्रता तेएकत्ववितर्क अप्रविचारजाणवो एपायो बारमांगुणठाणेध्यावे एबेहुपायामां श्रुतज्ञानावलंबनीपणोछे पण अवधि मनपर्यव ज्ञानोपयोगेंवर्त्ततोजीव कोइध्यानकरीसकेनही एबेज्ञान परानुयायीछे माटे. एध्यान थी घनघातीया चारकर्मखपावे निर्मलकेवलज्ञानपामे पछेतेरमेंगुणठाणे ध्यानंतरी का पणेछे तेरमानाअंते अनेचउदमे गुणठाणे एबेपायाध्यावे.

३ सूक्ष्मक्रियाअप्रतिपातिपायोकहेछे तेसूक्ष्म मन वचन कायानायोगरुंधे शैलेशी करणकरी अयोगीथाय तेजेअप्रतिपातिनिर्मलवीर्य अचलतारूपपरिणाम तेसूक्ष्मक्रि या अप्रतिपातिध्यानजाणवुं इहांसत्तायें ८५ प्रकृतिरहीहत्ती तेमध्ये ७२ खपावे.

४ उछिन्नक्रियानुवृत्तिपायोकहेछे जेयोगनिरुंधकीधापछे तेरप्रकृतिखपावे अकर्मा थाय सर्वक्रियायीरहितथाय तेसमुछिन्नक्रियानिवृत्ति शुक्लध्यानकहियें एध्यानध्याव ता शेषदलखरण रूपक्रियाउछेदे अवगाहनादेहमानमांथी त्रीजोभागघटाडे शरीरमू

की इहांथी सातराजऊपर लोकनेअंतेजाय सिद्धथाय इहांशिष्यपूछेजे चौदमेंगुणठा णेतो अक्रियछे तोसातराजऊंचोगयो एक्रियाकेमकरेछे तेनेउत्तर जे सिद्धतोअक्रि यछे परंतु पूर्वप्रेरणायें तुंबीनेदृष्टांते जीवमांचालवानोगुणछे धर्मास्तिकायमध्ये प्रेर णागुणछे तेथीकर्मरहितजीव मोक्षेजता लोकनेअंतेजायीरहे इहांकोइपुछेजे आगल ऊंचोअलोकछे तिहांकिमजातोनथी तेनेउत्तर जेआगलधर्मास्तिकायनथी माटेन जाय वलीकोइपुछेजे तोअधोगतियें अथवातिरछीगतियें केमनथीजातो तेनेउत्तर जे कर्मनाभारथीरहितथयो हलुवोथयो माटेनिचो तथाभावो जिमणोनजाय कार णके प्रेरककोइनथी तथाकंपेनही केमकेअक्रियछेमाटे तथाकोइपुछेजे सिद्धनेकर्मके मलागतानथी तेनेकेहेछे जे कर्मतोजीवनेअज्ञानथी तथायोगथीलागेछे तेसिद्धना जीवने अज्ञान तथायोगनथी माटेकर्मलागेनही एचारध्याननोअधिकारकह्यो.

हवेवलीत्रीजाचारध्यानकहेछे १ पदस्थ २ पिंडस्थ ३ रूपस्थ ४ रूपातीत तेमां पहेलुं पदस्थध्यानकहेछे जेअरिहंतादिक पांचपरमेष्ठीना गुणसंभारे तेनोचित्तमां ध्यानकरे तेपदस्थध्यान. २ पिंडके० शरीरमांरह्योजे आपणोजीव तेमां अरिहंत सि द्ध आचार्य उपाध्याय अनेसाधुपणानागुण सर्वछे एहवोजेध्यानतेपिंडस्थध्यान अथ वा गुणीनागुणमध्ये एकत्वता उपयोगकरवोतेपिंडस्थध्यान. ३ रूपमांरह्योथको पण एमारोजीव अरूपीअनंतगुणीछे जेवस्तुनोस्वरूप अतिशयावलंबीयथापछे आत्मानुं रूपएकतापणो एहवोजेध्यान तेरूपस्थध्यान एत्रणध्यानधर्मध्यानमांगणवा. ४ निरं जन निर्मल संकल्पविकल्परहित अभेद एकशुद्धसत्तारूप चिदानंद तत्वामृत असंग अखंड अनंतगुणपर्यायरूप आत्मस्वरूपनुंध्यानते रूपातीतध्यानजाणवुं इहांमार्ग णागुणठाणा नयप्रमाण मतिआदिकज्ञान क्षयोपशमभाव सर्वछांडवायोग्ययथा एक सिद्धनामूलगुणनेध्यावे ते रूपातीतध्यानजाणवो एटलेमोक्षनुंकारणजेध्यान तेकह्युं.

हवेभावनाकहेछे तेमांधर्मध्याननी चारभावनाकहेछे १ मैत्रीभावनाते सर्वजीव सायें मित्रतानोभावचिंतववो सर्वनोभलोचाहवुं पणकोइनो माठोचिंतववोनही स र्वजीवऊपरहितबुद्धिराखवीते मैत्रीभावना २ गुणवंतअने ज्ञानादिकगुणऊपरें रागते वीजीप्रमोदभावना ३ जेधर्मवंतऊपर राग अनेमिथ्यात्वीऊपर रागनही तेमद्वेषपण नही कारणके हिंसकऊपरेंपण उत्तमजीवने करुणाऊपजे जोउपदेशथकी सारामा र्गेआवेतो तेने शुद्धमार्गेआणवो कदाचितमार्गेनआवे तोपणद्वेषनराखवो केम के ते अजाणछे एमसमजवुं एहवाजेपरिणाम तेमध्यस्थभावना ४ सर्वजीवने पोता नेतुल्यजाणी दयापाले कोइनेहणेनही तथाजेदुःखी अथवाधर्महीन तेहनाऊपरकरु

णा तेनाडःखटालवानोपरिणाम तथाधर्महीन जीवदेखीने एवोचिंतवेजे एजीवकिवा रें धर्मपामशे यथार्थआत्मसाधन पामीस्वरूपधर्मने किवारेंअवलंबशे एवो परिणा मते चोथी करुणाके० दयाभावना एचारभावनाकही.

१ हवेबारभावनाकहेछे शरीर कुटुंब धन परिवार सर्वविनाशीछे जीवनोमूलधर्म अविनाशीछे एम चिंतववुंतेपहेलीअनित्यभावना २ संसारमां मरणसमये जीवनेश रणराखनारकोइनथी एकधर्मनोशरणछे एवुंचिंतववुंते बीजीअशरणभावना ३ मा राजीवेसंसारमां भमतां सर्वभवकीधाछे एसंसारथी हुंकेवारेंछुटीश एसंसारमारोनथी हुंमोक्षमयीछुं एमविचारवुं तेत्रीजीसंसारभावना ४ एमाहरोजीवएकलोछे एकलो आव्योएकलोजशे पोतानाकरेलुंकर्म एकलोभोगवशे एमचिंतववुंते चोथी एकत्वभा वना ५ आसंसारमां कोइकोइनोनथी एमचिंतववुंतेपांचमीअन्यत्वभावना ६ आश रीर अपवित्र मलमूत्रनीखाणछे रोगजरायीभखोछे एशरीरथीहुं न्यारोछुं एमचिंतववो ते छठीअशुचिभावना ७ रागद्वेषअज्ञान मिथ्यात्वप्रमुख सर्वआश्रवछे एमचिंतववुं तेसातमी आश्रवभावना ८ ज्ञानध्यानमां वर्त्ततोजीव नवाकर्मबांधेनही ते आठमी संवरभावना ९ ज्ञानसहित क्रियातेनिर्जरानुंकारणछे तेनवमीनिर्जराभावना १० चउदराजलोकनुं स्वरूपविचारवुंते दशमी लोकस्वरूप भावना ११ संसारमांभमता जीवने समकितज्ञाननीप्राप्तिपामवीदुर्लभछे अथवा समकेतपाम्योपण चारित्र सर्व विरतिपरिणामरूपधर्म पामवोदुर्लभछे तेइग्यारमी बोधदुर्लभभावना.

१२ धर्मनाकहेणहारगुरु तथाशुद्धआगमनुं सांभलवुं एहवीजोगवाइ मलविदो हेलीछे तेबारमीधर्मदुर्लभभावना एटलेबारभावनाकही एचारित्रनुंस्वरूप संपूर्णकर्युं.

एवोसमकितसहित ज्ञानचारित्र तेमोक्षनुंकारणछे तेनाऊपर भव्यप्राणीयें विशेषें उद्यमकरवो अनेजोतेवुं ज्ञानचारित्रनहीपले तोपण श्रेणीकराजानीपेरें सद्दहणा शुद्धराखजो जोसमकेतशुद्धछे तोमोक्षनजीकछे समकेतविना ज्ञानध्यान क्रियासर्व निःफलछे एमआगममांकह्योछे ॥ गाथा ॥ जंसक्केतंकिरइ जंचनसक्केइतहयस द्दहइ ॥ सद्दहमाणोजीवो पावइअयरामरंठाणं ॥ १ ॥ अर्थ ॥ जेजीववुंकरीशके तोकर अनेजोनकरीशके तोपण जेवोवीतरागेंधर्मकह्यो तेरीतेसद्दहजे सद्दहणाशुद्ध राखनारजीव अजरामर स्थानक तेमोक्षपदवीपामे.

हवेसमकितनो मार्गकहेछे १ जीव २ अजीव ३ पुण्य ४ पाप ५ आश्रव ६ संवर ७ निर्जरा ८ बंध ९ मोक्ष एनवतत्वछे तेमांमोक्षनुंकारणजीवछे अनेसंवर तथानिर्जरा एबेगुणछे एटले जीव संवर निर्जरा मोक्ष एचारउपादेयछे अनेबीजा

पांचहेयछे एह्वो परिणामतेने समकेतज्ञानकह्यिं तेसमकेतज्ञानजजोजथाय तिहां अनुयोगद्वारमांकह्योछे ॥ गाथा ॥ नायम्मिगिन्हियव्वे अगिन्हियव्वम्मिचेव अछम्मि ॥ जइयमेवइयजो सोउवएसोनउतामं ॥ १ ॥ अर्थ ॥ ज्ञानथीछइव्यजाणीने लेवायोग्यहोयतेले अनेछांमवायोग्यछांमे एवोजेउपदेश तेनयउपदेशजाणवो हवेसमकेतनी दशरुचिकहेछे.

१ निसर्गरुचि तेनिश्चयनयकरी जीवादिनवतत्वजाणे आश्रवत्यागे संवरआदरे वीतरागनाकह्याजाव जेछइव्य तेइव्य खेत्र काल जावसहितजाणे नामादिचारनिक्षेपा पोतानी बुद्धीथीजाणे सद्दहे वीतरागनाजाष्याजाव तेसत्यजे एवीसद्दहणाहोय

२ उपदेशरुचि नवतत्व तथाछइव्यने गुरुउपदेशथीजाणीसद्दहेते उपदेशरुचि

३ आज्ञारुचि ते रागद्वेषमोहजेमनागयाछे अज्ञानमिटचुंछे एह्वाअरिहंतदेव तेणेजे आज्ञाकही तेनेमानेसद्दहे तेआज्ञारुचि.

४ सूत्ररुचि ते १ आचारांग २ सुयगडांग ३ ठाणांग ४ समवायांग ५ जगवती ६ ज्ञाताधर्मकथा ७ उपासकदशांग ८ अंतगडदशांग ९ अनुत्तरोववाइदशांग १० प्रश्नव्याकरण ११ विपाक एइग्यारअंग तथा बारमुंअंगदृष्टीवाद जेमांचउदपूर्वहता तेहमणाविछेदगयाछे तथा १ उववाइ २ रायपश्रेणी ३ जीवाजिगम ४ पन्नवणा ५ जंबुद्वीपपन्नति ६ चंदपन्नति ७ सुरपन्नति ८ कप्पीआ ९ कप्पविडंसिया १० पुप्फिआ ११ पुप्फचुलीआ १२ वन्हिदिशा एबारउपांगजाणवा अने १ व्यवहारसूत्र २ वृहत्कल्प ३ दशाश्रुतस्कंध ४ निशीथ ५ महानिशीथ ६ जितकल्प एछछेदग्रंथ तथा १ चोसरण २ संथारापयन्नो ३ तंडुलवेचालीया ४ चंदाविजय ५ गणिविजय ६ देविंदथुओ ७ वीरथुओ ८ गछाचार ९ जोतिकरंड १० आयुःपच्चखाण एदशपयन्नानानाम तथा १ आवश्यक २ दशवैकालिक ३ उत्तराध्ययन ४ उघनिर्युक्ति एचारमूलसूत्र तथा १ नंदि २ अनुयोगद्वार एपस्तालीसआगम तेमूलसूत्र तथा २ निर्युक्ति ३ जाष्य ४ चूर्णि ५ टीका एपंचांगीनावचन जेजीवमाने तथाआगमसांजलवानी तथा जणवानीजेनेघणीचाहनाहोय तेसूत्ररुचिजाणवी.

५ जेजीवगुरुमुखथी एकपदनोअर्थसांजलीने अनेकपदसद्दहे ते बीजरुची.

६ अजिगमरुचि ते जेसूत्रसिद्धांत अर्थसहितजाणे अनेअर्थविचार सांजलवानी घणीचाहनाहोय तेअजिगमरुचि.

७ जे छइव्यनागुणपर्यायने चारप्रमाण तथासातनये करीजाणे ते विस्ताररुचि.

८ क्रियारुचि ते दर्शन ज्ञान चारित्र तप विनय सुमति गुप्तिबाह्यक्रिया सहित आत्मधर्मसाथे जेनेरुचिघणीहोय तेक्रियारुचि.

९ संक्षेपरुचि ते जे अर्थनेज्ञानमां थोडोकहेयके घणो जाणीने कुमतिमां पडेनही जिनमतमांप्रतितमाने तेसंक्षेपरुचि.

१० जेपांचअस्तिकायनुंसरूपजाणे श्रुतज्ञाननोस्वनाव अतरंगसत्तासद्दहेतेधर्मरुचि.

हवेसमकेतनाआवगुणकहेछे १ निसंकाते जिनागममध्येसूक्ष्मअर्थकह्या तेसाचा सद्दहे तेमांसंदेहआणेनही तथासातनयथीपणदरेनही २ निकंषागुण ते पुण्यरूपफलनीचाहनानराखे केमके जिहांइछा तिहांकर्मनोबंधछे माटे ३ निवितिगछागुण ते शुनअशुनपुजल एकसरिखाछे तेमां पुण्यनाउदयथी शुनयोग मिल्याखुशीथइअहंकारनकरवो तथापापनाउदयथी डुःखसंयोगमिल्यादिलगीरयावुंनही ४ अमूढदृष्टीगुण ते जे आगममां सूक्ष्मनिगोदना तथाछद्रव्यना सूक्ष्मविचारकह्याछे तेसांनलतोथकोमुजायनही जेपोतानी धारणामांआवेतेधारीराखे अनेजेधारणामां नआवे तेनेसद्दहे ५ अवबुहगुण जे एआपणाजीवमां अनंतज्ञानादिकगुणछे तेछुपावयानही शुद्धसत्ताजेवीछे तेवीकहेवी रागद्वेष अज्ञानतेकर्मनीउपाधिछे जीवएउपाधीथीन्यारोछे ६ स्थिरिकरणगुण ते आपणापरिणाम ज्ञानमांस्थिरकरवा मगाववानही अथवाकोइनव्यप्राणीधर्मथीपडत्तोहोय तेने साह्यदेइउपदेशआपीस्थिरकरवो ७ वात्सल्यतागुण ते जेनीसाथे ज्ञान ध्यान तप परिकमणो जेलोकरता होये अनेसद्दहणापणएकजहोय तेआपणोसाधर्मिनाइछे तेनीनक्तिकरवी अथवा सर्वजीवनाज्ञानादिगुण आपणासमानछे माटे सर्वजीवऊपरदयाकरवी अथवाबीजाजीवनापण आपणातुल्यज्ञानादिगुणछे तेजीवने पोषवायोग्यज्ञानध्याननोघणोअन्यास करावे ८प्रनावकगुण ते नगवंतनाधर्मनीप्रनावनामहिमाकरवी अथवा पोतानेज्ञानादिगुणवधारवादानशील तप नावपूजा करीघणीमहिमाकरवी एसमकितनाआठगुण

हवेसमकेतनापांचनूषणकहेछे १ उपशमनावनूषण ते विवेकीप्राणीप्रायेंकषायनकरे अनेजोकदाचित्कषायकरेतोपण तरतमननेपाछोवाले २ आस्तानपण ते नंगवंतना वचनऊपरशुद्धप्रतितराखें नगवंतेंजेमआगममां आज्ञाकरीतेमसद्दहे ३ दयानावनूषण ते सर्वजीव पोतानासरिखाजाणीदयापालवी ४ संवेगनूषण जे संसारथी तथाधनथी शरीरथी उदासीपणोराखवो ५ निरवेदनूषण ते इंद्रियनासुखजीवेंअनंतिवारनोगव्या पणतेडुःखनाकारणछे एकचिदानंदमोक्षमयी अतींद्रियसुखनेआपणाकरीजाणे एसमकेतनापांचनूषणकह्या.

हवेछआयतनकहेछे १ निश्चेंकुगुरुतेभगवंतनावचननाखोटाअर्थकरे खोटीपरुपणाकरे २ व्यवहारकुगुरुते योगी सन्यासी ब्राह्मण अने आचारहीन वेषधारी यति तेपणछोडवा ३ निश्चेंकुदेवते जिणेश्रीवीतरागदेवनुंस्वरूपनथीजाण्युं ४ व्यवहारकुदेवते जेसरागीदेवकुलमाहादेव खेत्रपाल देवी पितरप्रमुख तेपणछोडवा ५ निश्चेंथीकुधर्मते जेएकांतमार्ग बाह्यकरणीऊपरराच्याछे अंतरंगज्ञाननथीऊलख्योते ६ व्यवहारकुधर्मते पारकाअन्यदर्शनीनामतसर्वेछांडवा एटलेकुदेव कुगुरु तथाकुधर्मनेछोडीशुद्धदेव गुरुतथाधर्मसद्दहे तेसमकेतनी सद्दहणाजाणवी समकेतनालक्षण पन्नवणासूत्रथीकहेछे गाथा ॥ परमत्थंसंथवोवा सुदिठ्ठपरठसेवणावावि ॥ वावन्नकुदंसणा वज्जणायसमत्तसद्दहणा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ परमार्थ ठद्रव्य नवतत्त्वनागुणपर्याय मोक्षनुंस्वरूप एटले जे परमार्थसूक्ष्मअर्थछे तेजाणवानोघणोपरचोकरे अथवाजाणवानीघणीचाहनाराखे अनेसुदिठ्ठके० भलीरीतेदीठाजाण्याछे परमार्थद्रव्यमोक्षमार्गजेणे एहवागुरुनीसेवाकरे एटलेज्ञानीगुरुधारवा अने वावन्नके० जिनमतियतिनामधरावी नेजेखेत्रपालप्रमुखने समकितविनामाने एवागुरुनोसंगवर्जे अनेकुदर्शनी जेअन्यमतितेनोसंगनकरे एवाजेपरिणामतेसमकितनीसद्दहणाजाणवी विरयासावज्जाउ कषायहीणामहव्वयधरावि॥ सम्मदिठ्ठिविहुणा कयाविमुरकंनपावंति॥२॥ अर्थ॥जेसावद्यआरंभथीविरम्याछेक्रोधादिआचारकषायजीत्याछेअनेशुद्धपांचमहाव्रतपालेछे पणसमकेतविनाछे तेजीवमोक्षपामेनही.

हवेसमकिततेसीवस्तुछे तेविषेगाथाकहेछे गाथा ॥ नयभंगपमाणेहिं जो अप्पासायवायभावेणं॥ जाणइमोरकसरूवं सम्मादिठ्ठिसोनेअ ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ नय तथा भंगेकरी तथाप्रमाणेकरी जेपोतानाआत्मानेजाणे ऊलखेस्याद्वादथ्यापक्षेजाणे अने एमस्याद्वादपणेमोक्षनिकर्मावस्थानेपणजाणे परवस्तुने हेयजाणे जीवगुणउपादेयजाणे तेने समकेतिजाणवो.

हवेजीवस्वरूपध्यानकरवाने गाथाकहेछे ॥ अहंमिक्कोखलुसुद्धो निम्ममओनाणदंसणसमग्गो ॥ तम्मिट्ठिओतच्चित्तो सव्वेएएखयंनेमि ॥४॥ अर्थ ॥ ज्ञानीजीव एहवुंध्यानकरे के हुंएकछुं परपुद्गलथीन्यारोछुं निश्चेनयकरीशुद्धछुं अज्ञानमलथीन्यारोछुं निर्मलछुं ममताथीरहितछुं ज्ञानदर्शनथीभर्योछुं हुंमारज्ञानस्वभावसहितछुं हुंमारगुणमांरह्योछुं चेतनागुणतेमांतल्लीननाछे हुंमारआत्मस्वरूपनेध्यावतो सर्वकर्मक्षयकरुंछुं॥गाथा॥ निरंजणंनिकलंअयलं देवअणाइअणंअणगारं॥ चेयणलरकणसिद्धसमपरमप्पासिवतत्तं ॥ ५ ॥ अर्थ ॥ कर्मअंजनथीरहित निरंजनछुं कलंकरहितछुं अप

लके० पोतानास्वरूपथीकिवारेचजायमानथातेनही परमदेवतुं जेनीआदिनथी तथा जेनोअंतनथी चेतनालक्षणतुं सिद्धसमानतुं संतसत्तामयीतुं गाथा ॥ जीवादिसद्दहणं सम्मत्तंएसअधिगमोनाणं ॥ तथेवसयारमणं चरणंएसोउमुक्खपहो ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जीवादिकछद्रव्यजेवाछे तेवासद्दहवा तेसमकेत अनेछद्रव्यजेवाछे तेहवा गुणपर्याय सहितजाणे तेज्ञानजाणवुं तेछद्रव्यजाणीने अजीवनेछांमे अने जीवना स्वगुणमां स्थिरथयीनेरमे तेचारित्रकहियें एज्ञानदर्शनचारित्र शुद्धरत्नत्रयी तेमोक्षनो मार्गछे माटेएज्ञानदर्शनचारित्रनोघणोयत्नकरवो एरत्नत्रयीपामीनेप्रमादकरवोनही तिहांनिश्चेयवव्हारनीगाथा ॥ नछियमग्गोमुक्खो ववहारोपुन्नकारणोवुत्तो ॥ पढमो संवररूवो आसवहेउतउवीउ ॥ ७ ॥

अर्थ निश्चेनयनोमार्ग ज्ञानसत्तारूप ते मोक्षनुंकारणछे एटलेमोक्षछे अनेव्यवहारक्रियानयते पुण्यनुंकारणकह्यो पहेलो निश्चेनयसंवरछे अनेनिश्चेसंवरनिश्चेनय तेएकजछे जूदानथी बीजोव्यवहारनय तेआश्रव नवाकर्मलेवानोहेतुछे एटलेशुभपुण्यकर्मनो आश्रवथायछे अनेअशुभव्यवहारें अशुभकर्म्मनोआश्रवथायछे कोइ पुछेजे व्यवहारनय आश्रवनुंकारणछे तो अमेव्यवहारनहीआदरसुं एकनिश्चेमार्ग आदरसुं तेनेउत्तरकहेछे ॥ गाथा ॥ जइजिणमयंपवज्जह तामाववहारनथ्यिएसु यह॥एकेणविणातिथ्थं छिज्जईअन्नेणउतत्त्व ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अहोभव्यप्राणी जोतमनेजिनमतनी चाहनाछे अनेजो तुमेजिनमतने इछोछो मोक्षनेचाहोछो तोनिश्चेनय अनेव्यवहारनय छांमशोनही एटलेवेहुनयमानजो व्यवहारनयचालजो अनेनिश्चेनयसद्दहजो जोतुमेव्यवहारनयउथापशो तोजिनशासनना तीर्थनोउछेदथाशे जेणेव्यवहारनय नमान्यो तेणे गुरुवंदना जिनभक्ति तप पच्चखाण सर्वनमान्या एम जेणेआचारउथाप्यो तेणे निमित्तकारणउथाप्यो अनेनिमित्तकारणविना एकलोउपादानकारण तेसिद्धनथाय माटे निमित्तकारणरूप व्यवहारनय जरुरमानवुं अनेजो एकलोव्यवहारनय मानियें तोनिश्चेनय उलख्याविना तत्वनुंस्वरूप जाणुंजायनही माटेतत्वमार्ग अनेमोक्षमार्ग तेनिश्चेनय विना पामियेंनही अनेतत्वज्ञानविना मोक्षनथी एटलेनिश्चेविना व्यवहारनिःफलछे अनेनिश्चेसहित व्यवहारतेप्रमाणछे तेनोदृष्टांत जेमसोनानाआभूषणमां उपधातु अथवाकिणजोमिश्रहोय तेपणउंचासोनानेभावेंलेइ राखियेंछेयें अनेजोतेकिणजो तथासोनुंजूंडंकरियें तो सहुकोइसोनानेले पण कोइकिणजोजेकथा तु तेजीयेनही

तेम निश्चेनय सोनासमानन्रे माटेनिश्चेनयसहित सर्वजजाते अनेनिश्चेनयविना स
र्वअलेखेंचे माटेआगममां निश्चेव्यवहाररूप मोक्षमार्गछे तेकह्यो.

वलीशरीरऊपर मोहकरेनही तेविषे ॥ गाथा ॥ छिज्जोभिज्जोजायखउ जोई
हमेंदुशरीर ॥ अप्पाभावेनिम्मलो जंपावंभवतीरं ॥ ए ॥ अर्थ॥ भव्यप्राणीएमचिंत
वेजे एशरीर छीजजाउ भिजजाउ क्षयथइजाउ विणशीजाउ एमाहरुं शरीरपुद्गली
कचे परवस्तुचे तेएकदीवसेंमूकवुंचे माटेरेप्राणी तुंआपणीआत्मानेनिर्मलपणेध्यावतो
संसारथी तरीनेकांठेपामीश॥गाथा॥एहिजअप्पासोपरमप्पा कम्मविसेसोईजायोज
प्पा॥इयमेदेवज्झाजुसोपरमप्पावदुतुलेअप्पोअप्पा ॥ १० ॥ अर्थ॥ अहोभव्यजीव
एहीजआपणोआत्माछे तेशुद्धब्रह्मचे पणकर्मनेवशपडयो जन्ममरणकरेचे पणएशरी
रमां जेजीवचे तेदेवछे परमात्माचे माटेतुमे आपणोआत्माध्यावो तरणतारणजिह्वा
ज एआपणोआत्माजचे एमश्रीहेमाचार्ये वीतरागस्तोत्रमांकह्योछे यःपरात्मापरंज्यो
तिः परमःपरमेष्टिनां॥ आदित्यवर्णोतमसःपरस्तादामनंतियं॥ १ ॥ सर्वेयेनोदमूलं
त समूलाःक्लेशपादपाइत्यादि ॥ अर्थ ॥ परमात्माछे परमज्योतिछे पंचपरमेष्टीथी
पणअधिकपूज्यछे केमकेपंचपरमेष्टीतो मोक्षमार्गनादेखाडनाराछे पणमोक्षमांजवावा
लोतो आपणोजीवछे अज्ञाननो मिटावनारछे सर्वकर्म्मक्लेशनो खपावनारछे एवो
आत्माध्यावो एहिजपरम श्रेयनुंकारणछे शुद्धछेपरमनिर्मलछे एहवोआत्माउपादेय
जाणीसदहे अनेजेवोपोताथी निरवाहथाय तेवोत्यागवैरागमांप्रवर्त्ते एटले धन तेपर
वस्तुजाणी सुपात्रनेदानआपे अनेइंद्रियनाविकारते कर्मबंधनाकारणजाणीपरिहरे शी
लपाले जेआहारछे तेपुद्गलीकपरवस्तुछे शरीरपुष्टीनुंकारणछे अनेशरीरपुष्टकीधाथी इं
द्रियोनाविषयनोपोषथाय माटेतेपरस्वभावचे अज्ञान संसारनुंकारणछे माटेआहा
रनोत्यागकरवो तेनेतपकहियें तथापूजाते जेश्रीअरिहंतदेवें मोक्षमार्गउपदेश्यो
तेआपणेजाण्यो माटेआपणाउपकारीचे तेउपकारीनी बहुमानसहित भक्तिकरियें
माटेश्रीअरिहंत देवाधिदेवनी पूजाकरवी एम दान शील तप पूजा सर्व जीव अजी
वनुंस्वरूप ओलख्याविनाजेकरवुं तेपुण्यरूप इंद्रियसुखनुंकारणचे अनेजे जीवनेउपादेय
करी वांछाविनाकरणीकरेछे तेनिर्ज्जरानुंकारणचे एमदयापण श्रीभगवतीसूत्रमां साता
वेदनीकर्मनुं कारणचे एटले सम्यक्ज्ञानीने सर्वकरणीतेनिर्ज्जरारूपचे अनेज्ञानविना
सर्वकरणी बंधनुंकारणचे माटेज्ञाननो घणोअभ्यासकरजो एभगवंतेंसीखामणदीधीचे.

तथाज्ञाननुंकारण श्रुतज्ञानछे तेनोवणोभावराखजो श्रीठाणांगमां तथा उत्तरा
ध्ययनमां तथाभगवतीमां १ वाचना २ पृछना ३ परावर्त्तना ४ अनुप्रेक्षा ५ धर्मक

था एसिज्ञाय जणवा गुणवानुंफल मोक्षकह्योछे सिज्ञायकरवाथी ज्ञानावरणी कर्मखपावे केमके वाचनाथी तीर्थधर्मप्रवर्त्ते महानिर्ज्जराथाय पुछवाथी सूत्रतथा अर्थशुद्धथाय मिथ्यात्वमोहनीयखपावे तेजेमजेम अर्थविचारपूछे तेमसमकितनि र्मलथायश्चने अनुप्रेक्षाते अर्थविचारतां सातकर्मनीस्थितिना रसपातलाकरे अनंतो संसारखपावीनेपातलोकरेतथाश्रुतज्ञाननीआराधनाथी अज्ञानमिटेएवाफलकह्याछे.

माटे वाचवा तथा जणवानो घणोउद्यमकरवो केमके आजपांचमांआरामां को इ केवलीनथी तथा मनपर्यवज्ञानी अनेअवधिज्ञानीपणनथी एकमात्रश्रुतज्ञान ते हिजआगमनो आराधकछे यतः कहअम्हारिसापाणी डुसमादोसदूस्तिया॥ हाय णाहाकहंहुंता नहुंतोजइजिणागमो ॥ १ ॥ अर्थ ॥ हेभगवंत अमसरिखाप्राणी नी गीगतिथात जेअमेंआडुसमपंचमकालमां अवतारलीधो हाइतिखेदे अमेअनाथ हुं जो जिनराजनाकहेला आगमनहता तोआजसुथान एटले आजआगमनोजआ धारछे माटेआगम अने आगमधर जे बहुश्रुत तेनोघणोविनयकरवो आगममांवि नयनुंफल तेमांभलवुं अनेसांभलवानुं फलज्ञानछे ज्ञाननुंफलमोक्षछे एमआगम सांभलीनेवायोग्यपलेजो अयोग्यछांमजो सद्दहणाशुद्धराखजो सद्दहणाते मोक्षनुंमू लछे एइंद्रियसुखतोआजीवें अनंतिवारपाम्याछे एहवी जाति जन्म योनी कोइरही नथी जेआपणाजीवेंनहीकरीहोय एजीवने संसारमांभमतां अनंतापुद्गल परावर्त्तमा नथया पणधर्मनी जोगवायीमलीनही तोहवेमनुष्यभव श्रावककुल निरोगशरीर पं चेंद्रीप्रगट बुद्धिनिर्मल एटलासंयोगमल्या वलीश्रीवीतरागनीवाणीनाकेहेनारा शुद्ध गुरुनी जोगवाइपामीने अहोभव्यलोको तुमेधर्मनेविषे विशेषउद्यमकरजो फिरिथीए वोजोगवाइ मिलवीदुर्लभछे माटेप्रमादकरशोनही एशरीर धन कुटुंब आयुषो सर्व चंचलछे क्षणक्षणछीजेछे माटे पांचसमवायकारणमल्या मोक्षरूपकार्य सिद्धकरवुं तेपंचसमवायनानामकहेछे १ काल २ स्वभाव ३ नियत ४ पूर्वकृत ५ पुरुषाकार एपांचसमवायमाने तेसमकेतिछे एमांएकसमवाय उथापे तेहनेमिथ्यात्वीकहियें एम सम्मतिसूत्रमां कह्योछे गाथा ॥ कालोसहावनियइ पुव्वकयंपुरिसकारणेपंच ॥ सम वाएसमत्तं एगंतेहोयमिछत्त ॥ १ ॥

अर्थ ॥ कालस्थितिविना मोक्षरूपकार्य सिद्धथायनही एटलेकालसर्वनुंकारणछे जेकालें जेकार्यथवानोहोय तेकार्यतेकालेंथाय एकालसमवाय अंगीकारकरीकह्यो इहांकोइपुछेजे अनव्यजीव मोक्षकेमजतानथी तेनेउत्तरजे अनव्यनेकालमले पण अनव्यमांस्वभावनथी तेथीमोक्षजायनही केमके कालस्वभाव एवेकारणजोइये ते

वारेंफरिपुछयुंजे नव्यजीवमांतो मोक्षजवानोस्वनावछे तोसर्वनव्य केममोक्षजतान थी तेनेउत्तर जे नियतके० निश्चेंसमकितगुणजागे तेवारेंमोक्षपामे एटलेकाल स्वनाव नियतएत्रणकारणमान्या तेवारेंफरिपुछयुं जे समकितआदिकारणतो श्रेणी कराजानेहता तोमोक्षकेमनथयो तेनेउत्तर जे पूर्वकृतकर्मघणाहता अथवापुरुषाकार ते उद्यमकरयोनही फरीपुछयुंजे शालीनद्रप्रमुखें तो उद्यमघणोकीधो तेनुंउत्तरजे तेमनापूर्वकृत शुनकर्मखप्यानहता माटेपांचसमवाय मिल्याकार्यनीसिद्धिथाय ते वारेंफरिपुछयुंजे मरुदेवामाताने तोचारकारणमिल्या पणपांचमो पुरुषाकारउद्यम काइकीधोनही तेनेउत्तर जे क्षपकश्रेणीचढवानो शुक्लध्यानरूप उद्यमकीधोछे माटे पांचसमवायमिल्या मोक्षरूपकार्य सिद्धथाय.

जेवारें केवलज्ञानेकरीसर्वद्रव्य जेमरह्याछे तेमदेखे एटले आकाशद्रव्य लोका लोकप्रमाणछे तेमांअलोकमां बीजुंद्रव्यकोइनथी लोकाकाशनाएकेकप्रदेशें धर्मास्ति काय अधर्मास्तिकायनो एकेकप्रदेशरह्योछे तथाअनंताजीवना अनंताप्रदेशरह्याछे अनंतापुजलपरमाणुरह्याछे कालनोसमय सर्वत्रवर्त्तेछे.

हवे छद्रव्यनीफरशनाकहेछे धर्मास्तिकायना एक प्रदेशें धर्मास्तिकायना छप्रदेश फरस्याछे तेआवीरीते के चारदिशीनाचार अनेपांचमोनीचे छठोकपर एछप्रदेशफर स्याछे तथा एकमूलपोतेंप्रदेश एमसातप्रदेशनो संबंधछे अनेधर्मास्तिकायना एकप्रदे शने आकाशद्रव्य तथा अधर्मास्तिकायना सातसातप्रदेश फरशेछे तेएकमूलनाप्रदे शने बीजाद्रव्यनो मूलनोप्रदेशफरशे माटे सातप्रदेशनीफरशनाछे अनेधर्मास्तिकायना एकप्रदेशें जीवपुजलना अनंताप्रदेशनी फरसनाछे अनेलोकनेअंतेजे धर्मास्तिकायना प्रदेशछे तेने आकाशनीफरसनातो छएदिशीनीछे अनेएकमूलप्रदेशसहुडां सातप्रदेश नीफरसनाछे अनेबीजाद्रव्यनी त्रणदिशीनीफरसनाछे एमसर्वद्रव्यनीफरशनाछे अने आकाशथी धर्म अधर्मनीअवगाहना सूक्ष्मछे धर्मअधर्मद्रव्यथीजीवनीअवगाहना सूक्ष्मछे जीवथी पुजलनी अवगाहना सूक्ष्मछे.

एमछद्रव्यना गुणपर्याय सामान्यस्वनाव ११ छे अनेविशेषस्वनावदशछे तेश्रीकेवली नगवंत ज्ञानथीजाणे दर्शनथीदेखे तेइग्यारसामान्यस्वनावकहेछे १ अस्तिस्वनाव २ नास्तिस्वनाव ३ नित्यस्वनाव ४ अनित्यस्वनाव ५ एकस्वनाव ६ अनेकस्वना व ७ नेदस्वनाव ८ अनेदस्वनाव ९ नव्यस्वनाव १० अनव्यस्वनाव ११ परमस्व नाव एइग्यारसामान्यनाव सर्वद्रव्यमांछे एसामानउपयोग दर्शनगुणथीदेखे दर्शन

शविशेषस्वभावकहेछे १ चेतनस्वभाव २ अचेतनस्वभाव ३ मूर्तिस्वभाव ४ अमूर्तिस्वभाव ५ एकप्रदेशस्वभाव ६ अनेकप्रदेशस्वभाव ७ शुद्धस्वभाव ८ अशुद्धस्वभाव ९ विभावस्वभाव १० उपचरितस्वभाव एदशविशेषस्वभाव तेकोइकद्रव्यमांकोइकस्वभावछे कोइकद्रव्यमांकोइकस्वभावनथी एज्ञानथीजाणे एटलेसिद्धभगवानलोकालोक सर्व ज्ञानोपयोगथीजाणीरह्याछे दर्शनोपयोगथीदेखीरह्याछे एह्वाअनंतगुणीअरूपी सिद्धभगवानछे तेसमान पोतानीआत्मानेजाणे उपादेयकरीध्यावे तेसमकेतजाणवो.

॥ दोहा ॥

अष्टकर्मवनदाहके ॥ भएसिद्धजिनचंद ॥ तासमजोअप्पागणे॥वंदेताकोइंद ॥१॥ कर्मरोगऔषधसमी ॥ ग्यानसुधारसवृष्टी ॥ शिवसुखामृतसरोवरी ॥ जयजयसम्यक्दृष्टी ॥ २ ॥ एहिजसदगुरुशीखछे ॥ एहिजशिवपुरमाग ॥ लेजोनिजग्यानादिगुण॥ करजोपरगुणत्याग ॥ ३ ॥ ग्यानवृक्षसेवोभविक ॥ चारित्रसमकेतमूल ॥ अमरअगमपदफललहो ॥ जिनवरपदवीफूल ॥ ४ ॥ संवतसत्तरठिहुतरे ॥ मनसुद्धफागुणमास ॥ मोटेकोटमरोटमे ॥ वसतांसुखचोमास ॥ ५ ॥ सुविहितखरतरगछसुथिर ॥ युगवरजिनचंदसूर ॥ पुण्यप्रधानप्रधानगुण ॥ पाठकगुणेपंडूर ॥ ६ ॥ तासशिष्यपाठकप्रवर ॥ सुमतिसारगुणवंत ॥ सकलशास्त्रज्ञायकगुणी ॥ साधुरंगजसवंत ॥ ७ ॥ तासशिष्यपाठकविबुध ॥ जिनमतपरमतजाण ॥ भविककमलप्रतिबोधवा ॥ राजसागरगुरुभाण ॥ ८ ॥ ग्यानधर्मपाठकप्रवर ॥ शमदमगुणेअगाह॥राजहंसगुरुगुरुभक्ति॥ सद्गुजगकरेसराह ॥९॥ तासशिष्यआगमरुचि ॥ जैनधर्मकोदास ॥ देवचंदआनंदमें॥ कीनोग्रंथप्रकाश ॥१०॥ आगमसारोद्धारएह ॥ प्राकृतसंस्कृतरूप ॥ ग्रंथकीयोदेवचंदमुनी॥ग्यानामृतरसकूप ॥११॥ कर्योइहांसदायअति ॥ दुर्गदासशुभचित्त ॥ समजावननिजमित्रकुं॥कीनोग्रंथपवित्त ॥१२॥ धर्ममित्रजिनधर्मरतन ॥ भविजनसमकितवंत॥ शुद्धअमरपदलख्यण ॥ ग्रंथकियोगुणवंत ॥ १३ ॥ तत्वग्यानमयग्रंथयह ॥ जोवेभावाबोध ॥ निजपरमतागमभनिग्य ॥ श्रोताजदप्रबोध ॥ १४ ॥ नाकारण देवचंद मुनी ॥ कीनोआगमग्रंथ ॥ भणसेगुणसेजेभविक ॥ लहेशेतेशिवपंथ ॥ १५ ॥ कथकशुद्धश्रोतारुची ॥ मिलजोएहसंयोग ॥ तत्वग्यानश्रद्धासहित ॥ वलीकायनिरोग ॥ ॥ १६ ॥ परमागमसुंगचजो ॥ लहेसोपरमानंद ॥ धर्मरागगुरुधर्मनो ॥ धरजोएसुखकंद ॥ १७ ॥ ग्रंथकीउमनरंगसों ॥ सितपखफागुणमास ॥ नांमवागअरुतिजतिथि ॥ सफलफलीमनआस ॥ १८ ॥

आआगमसारमां पेच १४६ नी लेन ए मीमध्ये चउदराजलोकनोखंधलोकाकाश सादिसांतछे तेआवीरीतेंजे लोकनामध्यनागेंआठरुचकप्रदेशथी मांमीनेसादिछेजिहां चउदराजलोकनोअंतआवे तिहांसांत तथा चउदराजलोकनोछेलोप्रदेशमूकीनेपछेअ लोकनीआदिलेवी पणअलोकनोअंतनथी माटेसादिअनंतकह्युंछे.

तथापेच १५३ नी पेलीलेनमां श्रीनगवतीसूत्रमांसुत्तछोखलुपढमो वीउनिज्जुत्तिमिसउनणिउ॥इत्तोतईयणुउगो नाणुन्नाउजिणवरेहिं ॥ एवीरीतेआगमसारनी जूदी जूदीत्रणप्रतोमां लख्युंहतुंमाटेमेंपण तेमजलख्युंने पणवीजाघणाठेकाणे एनगवतीनीसाखदीधीनेतिहांतो सुत्तछोखलुपढमो वीउनिज्जुत्तिमिसउनणिउ तइउयनिरविसेसो एसविहिहोइअणुउगे॥एवोपाठछे तेखरोजणायछे पछेवहुश्रुतकहेतेखरुं.

॥ इतिश्रीआगमसारोध्धारग्रंथःसमाप्तः ॥

शविशेषस्वनावकहेछे १ चेतनस्वनाव २ अचेतनस्वनाव ३ मूर्तिस्वनाव ४ अमूर्ति स्वनाव ५ एकप्रदेशस्वनाव ६ अनेकप्रदेशस्वनाव ७ शुद्धस्वनाव ८ अशुद्धस्वनाव ९ विनावस्वनाव १० उपचरितस्वनाव एदशविशेषस्वनाव तेकोइकद्रव्यमांकोइकस्व नावछे कोइकद्रव्यमांकोइकस्वनावनथी एज्ञानथीजाणे एटलेसिद्धनगवानलोकालोक सर्व ज्ञानोपयोगथीजाणीरह्याछे दर्शनोपयोगथीदेखीरह्याछे एह्वाअनंतगुणीअरूपी सिद्धनगवानछे तेसमान पोतानीआत्मानेजाणे उपादेयकरीध्यावे तेसमकेतजाणवो.

॥ दोहा ॥

अष्टकर्मवनदाहके ॥ नएसिद्धजिनचंद ॥ तासमजोअप्पागणे॥वंदेताकोइंद ॥१॥ कर्मरोगउपधसमी ॥ ग्यानसुधारसवृष्टी ॥ शिवसुखामृतसरोवरी ॥ जयजयसम्यक् दृष्टी ॥ २ ॥ एह्विजसदगुरुशीखछे ॥ एह्विजशिवपुरमाग ॥ लेजोनिजग्यानादिगुण॥ करजोपरगुणत्याग ॥ ३ ॥ ग्यानवृक्षसेवोनविक ॥ चारित्रसमकेतमूल ॥ अमरअग मपदफललहो ॥ जिनवरपदवीफूल ॥ ४ ॥ संवतसत्तरछिहुत्तरे ॥ मनसुद्धफागुणमा स ॥ मोटेकोटमरोटमे ॥ वसतांसुखचोमास ॥५॥ सुविहितखरतरगछसुथिर ॥ यु गवरजिनचंदसूर ॥ पुण्यप्रधानप्रधानगुण ॥ पाठकगुणेपंमूर ॥ ६ ॥ तासशिष्यपाठक प्रवर ॥ सुमतिसारगुणवंत ॥ सकलशास्त्रज्ञायकगुणी ॥ साधुरंगजसवंत ॥ ७ ॥ ता सशिष्यपाठकविबुध ॥ जिनमतपरमतजाण ॥ नविककमलप्रतिबोधवा ॥ राजसाग रगुरुनाण ॥ ८ ॥ ग्यानधर्मपाठकप्रवर ॥ शमदमगुणेअगाह॥राजहंसगुरुगुरुसक्ति॥ सहुजगकरेसराह ॥९॥ तासशिष्यआगमरुचि ॥ जैनधर्मकोदास ॥ देवचंदआनंदमें॥ कीनोग्रंथप्रकाश ॥१०॥ आगमसारोद्धारएह ॥ प्राकृतसंस्कृतरूप ॥ ग्रंथकीयोदेवचं दमुनी॥ग्यानामृतरसकूप ॥११॥ कस्योइहांसदायअति ॥ डुर्गदासशुनचित्त ॥ समजा वननिजमित्रकुं॥कीनोग्रंथपवित्त॥१२॥ धर्ममित्रजिनधर्मरतन ॥ नविजनसमकितवं त॥ शुद्धअमरपदउलखण ॥ ग्रंथकियोगुणवंत ॥ १३ ॥ तत्वग्यानमयग्रंथयह ॥ जो वेबालाबोध ॥ निजपरसत्तासबलिखे ॥ श्रोतालहेप्रबोध ॥ १४ ॥ ताकारणदेवचंद मुनी ॥ कीनोआगमग्रंथ ॥ नणसेगुणसेजेनविक ॥ लहेशेतेशिवपंथ ॥ १५ ॥ कथ कशुद्धश्रोतारुची ॥ मिलजोएहसंयोग ॥ तत्वग्यानश्रद्धासहित ॥ वलीकायनिरोग ॥ ॥ १६ ॥ परमागमसुंराचजो ॥ लहेसोपरमानंद ॥ धर्मरागगुरुधर्मतो ॥ धरजोएसु खकंद ॥ १७ ॥ ग्रंथकीउमनरंगसों ॥ सितपखफागुणमास ॥ नोमवारअरुतिजति थि ॥ सफलफलीमनआस ॥ १८ ॥

आ आगमसारमां पेच १४६ नी लेन ए मीमध्ये चउदराजलोकनोखंधलोकाकाश सादिसांतछे तेआवीरीतेंजे लोकनामध्यनागेंआठरुचकप्रदेशथी मांमीनेसादिछेजिहां चउदराजलोकनोअंतआवे तिहांसांत तथा चउदराजलोकनोछेलोप्रदेशमूकीनेपछेअ लोकनीआदिलेवी पणअलोकनोअंतनथी माटेसादिअनंतकह्युंछे.

तथापेच १५३ नी पेलीलेनमां श्रीनगवतीसूत्रमांसुत्तठोखलुपढमो वीउनिज्जुत्ति मिसउनणिउ॥इत्तोतईयणुउंगो नाणुन्नाउंजिणवरेहिं ॥ एवीरीतेआगमसारनी जूदी जूदीत्रणप्रतोमां लख्युंहतुंमाटेमेंपण तेमजलख्युंछे पणबीजाघणाठेकाणे एनगव तीनीसाखदीधीछेतिहांतो सुत्तठोखलुपढमो वीउनिज्जुत्तिमिसउनणिउ तइउयनिर विसेसो एसविहिहोइअणुउगे॥एवोपाठछे तेखरोजणायछे पछेवहुश्रुतकहेतेखरुं.

॥ इतिश्रीआगमसारोध्धारग्रंथःसमाप्तः ॥

॥ श्रीपरमगुरुभ्योनमः ॥

अथश्रीदेवचंद्रजीकृतनयचक्रसारनुंबालावबोधलिख्यते

मंगलाचरण

प्रणम्यपरमब्रह्मशुद्धानंदरसास्पदं ॥ वीरंसिद्धार्थराजेंद्रनंदनंलो कनंदनं ॥ १ ॥ नत्वासुधर्मस्वाम्यादिसंघंसद्वाचकान्वयं ॥ स्वगुरून् दीपचंद्राख्यपाठकान्श्रुतपाठकान् ॥ नयचक्रस्यशब्दार्थकथनंलो कभाषया ॥ क्रियतेबालबोधार्थं सम्यङ्मार्गविशुद्धये ॥ २ ॥

प्रशस्ति

श्रीजिनागमनेविषे १ द्रव्यानुयोग २ चरणकरणानुयोग ३ गणितानुयोग ४ धर्मकथानुयोग एचारअनुयोगकह्याछे तेमां छद्रव्य अने नवतत्व तेनागुणपर्याय स्व भावपरिणमननेजाणवुं तेद्रव्यानुयोग एवं पंचास्तिकायनुं स्वरूपकथनरूपछे तेपंचा स्तिकायमध्ये एकआत्मानामेअस्तिकायद्रव्यछे तेआत्माअनंताछे तेनामूलबेभेद छे तेमां एकसिद्धनिष्पन्न सर्वकर्मावरणदोषरहित संपूर्णकेवलज्ञान केवलदर्शनादि गुणप्रगटरूप अखंड अमल अव्याबाधानंदमयी लोकनेअंतेविराजमान स्वरूपभो गी तेसिद्धजीवकहियें तेसिद्धतासर्वआत्मानो मूलधर्मछे तेसिद्धतानीईहाकरवाने सि द्धभगवंतनो यथार्थसिद्धपणो ओळखीने निष्पन्नसिद्धनोबहुमानकरवो अनेपोते पोतानीभूले अशुद्धचेतनपणे परिणमतां बांध्याजे ज्ञानावरणादिकर्म तेटालीने पो तानीसंपूर्णसिद्धतानी रुचिकरवी एहीजहितसिद्धाछे.

वलीबीजोभेद संसारीजीवोनोछे तेजेणे आत्मप्रदेशें स्वकर्त्तापणे कर्मपुद्गलनेग्र ह्या जेनेकर्मपुद्गलनोलोलीभावछे तेमिथ्यात्व गुणठाणाथीमांडीने अयोगीकेवली गु णठाणाना चरमसमयपर्यंत सर्वसंसारीजीवकहियें तेनाबलीबेभेदछे एकअयोगी बी जासयोगी तेसयोगीनाबेभेद एकसयोगीकेवली बीजासयोगीछद्मस्थ छद्मस्थनाबेभेद एकअमोही बीजासमोही समोहीनाबेभेद एकअनुदितमोही बीजाउदितमोही उ दितमोहीनाबेभेद एकसूक्ष्ममोही बीजाबादरमोही बादरमोहीनाबेभेद एकश्रेणीवं

विन लपुईजेणपुव्वपडिवन्नो॥१॥माटेकर्म्मनी उत्कृष्टस्थितिनो वांधनारजीव ते चारसा मायकनोलाननपामेअनेजेजीवसातकर्म्मनी जघन्यस्थिति वांधे तेजीवतोगुणवंतजछे एरीतनेमाटेजेवारेंएककोडाकोडीसागरोपम पल्योपमने असंख्यातमेंजागेउणी स्थिति वांधतोहोय तेयथाप्रवृत्तिकरणकरे जेजीवकर्म्मक्षपणारूपशक्तिपाम्योनहतो तेशक्तिपा म्योतेनेयथाप्रवृत्तिकरणकहियें उक्तंचन्नाष्ये येनअनादिसंसिद्धप्रकारेण प्रवृत्तंकर्मक्षप णंक्रियते अनेनेतिकरणं जीवपरिणामएवउच्यते अनादिकालात्कर्मक्षपणप्रवृत्ताध्य वसायविशेषो यथाप्रवृत्तिकरणमित्यर्थः

क्षयोपशमीचेतनावीर्ये जेसंसारनी असारताजाणे संसार दुःखरूपकरीजाणे ते थीपरिग्रहशरीरथीखरे उद्वेगेंउदासीनता परिणामेकरीसातकर्मनीस्थिति अनेककोडा कोडीनाथोकडा असंख्याताजे सत्तामांहता तेखपावे नेकांइकउणी एककोडाकोडीरा खे एयथाप्रवृत्तिकरण आत्माअनंतिवारकरे पणग्रंथिनेदकरीशकेनही एकरण तेगि रिनदीनेविचें आव्युं पाषाणते घंचनाघोलनारूप चालवेकरीने जेमसहेजे सुंहालो थाय अने कोइकआकारपकडे तेमजन्ममरणादिदुःखनेउद्वेगें अनाज्ञोगथीज नववै रागें जीव यथाप्रवृत्तिकरणकरे एहिजजीवकोइकरीतें वैराग्येंविचारेजे नवभ्रमणते दुःखने एसंयोगवियोगादि असारने पणकांइक ज्ञानानंदादितेसारने एहवीगवेषणाक रनारोजीव तेयथाप्रवृत्तिकरणकरीनें अपूर्वकरणकरे इहांकोइपुछे जेनव्यनेतो पलटण योग्यताने पण अनव्यजीवकेमकरे तेनुंउत्तर जेतीर्थंकरनक्तिमांजे देवतानीमहि मा तथालोकसन्मानादिकदेखीने पुण्यनीवांछायें देवलराज्यादिकलाभइछायें इग्यार अंग तथावाह्यपंचमहाव्रतादिपामे पणतेनेसम्यक्तनहोय जेपुन्गलानिलाषीने तेनेगु णस्पर्शनथाय उक्तंचमहानाष्ये ॥ अर्हदादिविनूतिमतिशयवतींदृष्ट्वाधर्मादेवंविधस त्कारोदेवलराज्यादयःप्राप्यंते इत्येवंसमुत्पन्नवुद्धेरनव्यस्यापिदेवनरेंद्रादिपदेछया नि र्वाणश्रद्धारहित कष्टानुष्ठानं किंचिदंगीकुर्वतोज्ञानरूपस्यश्रुतसामायकमात्रलाभेपि सम्यक्त्वादिलाभःश्रुतस्यनत्रवत्येवेति ॥ एरीतेंधारवुं.

तथाअपूर्वकरण अनेअनिवृत्तिकरणनो अधिकार जेमआगमसारमां लख्योने तेजपरमाणें इहांपणजाणवां इमअणकरणकरीने उपशम अथवा क्षयोपशम अथवाक्षायक सम्यक्तजेपाम्यो अने आत्मप्रदेशें वर्तमाने सम्यक्दर्शनगुणनो रो धक एहवोमिथ्यात्वमोह प्रकृतिनाविपाकोदयने टालवेकरीने जेसम्यक्दर्शनगुणनी प्रवृत्तियाय तेथीयथार्थपणे निःशंकितजाणपणोप्रवर्त्ततेजीवनेद्रव्यानुयोगें तत्व ज्ञानप्रगटे तेथीजेआत्मगुणप्रगटे तेआत्मगुणरक्षणायेंजप्रवर्त्ते एहवीस्वरूपानुयायी

त बीजाश्रेणीरहित श्रेणीरहितनावेनेद एक संयमीविरति बीजाअविरति अविरतीनावलीवेनेद एकसमकेति बीजामिथ्यात्वी मिथ्यात्वीनावेनेद एकग्रंथिनेदी बीजाग्रंथिअनेदी ग्रंथिअनेदिनावेनेद एकनव्य बीजाअनव्य तेमां अनव्यजीवोनुं तो दलजएवोहोय जेश्रुतअन्यासपणकरे तथा इव्यथीपंचमहाव्रतआदरे पणआत्मधर्मनायथार्थ श्रद्धाविनापेहेलोगुणगणो किवारेमूकेनही माटेएजीवो तेसिद्धपदपामवानेयोग्यनही तेअनव्यचोयेअनंतछे.

बीजानव्य तेजेसिद्धपणानेयोग्यछे जेनेकारणयोगमिले पलटणपामे तेनव्यजीवो अनव्यथीअनंतगुणाछे तेमध्येकेइकनव्यसामग्रीयोगपामी ग्रंथिनेदकरीने समकितपामे अनेकेटलाएकनव्यतो सामग्रीनेअनावें समकितपामेजनही उक्तंचविशेषणवत्यां सामग्गीअनावाउ ववहारराशिअप्पवेशाउ ॥ नव्वावितेअणंता जेसिद्धसुहंनपावंति ॥ १ ॥

पणतेनव्यजीवोमां योग्यताधर्म छतोछे तेमाटेनव्यकहियें जेजीवमिथ्यात्वतजीने शुद्धयथार्थ आत्मपणेव्यापकरह्यो तेजमारोधर्म अनेजेथीते आत्मसत्तागतधर्मप्रगटे तेसाधनधर्मवेनेदेंछे एकवायणापुछणादि वंदननमनादि पडिलेहणप्रमार्जादि जेटलीयोगप्रवृत्तिते सर्वइव्यथी साधनधर्मकहियें तेनावधर्म प्रगटकरवाने जेकरे तेनेकारणरूपछे इव्यतेजेनावनुंकारण कारयासेदवं इतिआगमवचनात् ॥

अनेजेउपयोगादि पोतानाक्षयोपशमनावें प्रगटयाजे ज्ञानवीर्यादिगुण तेपुजलानुयायीरणाथीटालीने शुद्धगुणीजेश्रीअरिहंत सिद्धादिक तेनाशुद्धगुणने अनुयायीकरवा अथवाआत्मस्वरूप अनंतगुणपर्यायरूपतेने अनुयायीकरवा तेनावथीसाधनधर्मजाणवो एआत्मानीपजाववानो उपायछे.

जिहांलगेंआत्मानुंशुद्धस्वरूप चिदानंदघन तेसाध्यमानयो अनेपुजलसुखनीआशायें विव सरल अन्योन्य अनुष्ठान जेकरवुं ते संसारहेतुछे माटे साध्यसापेक्षपणे स्याद्वादस्वरूपें साधनकरवुं एनिजमार्गछे अने एमार्गनीजे प्रतितरुचि ते सम्यक्त्व कहियें तेसम्यक्त्वग्रंथिनेदकर्याविनामिलें नहीं तेग्रंथिनेदनो त्रणकरणकरेतोजहे तेत्रणकरण जीवकरे तेवारेंसम्यक्दर्शनपामे तेत्रणकरणमां पेहेलुंयथाप्रवृत्तिकरण बीजुंअपूर्वकरण त्रीजुंअनिवृत्तिकरण [illegible] तेमांप्रथमयथाप्रवृत्तिकरणतेनव्य [illegible] करे केटलाकजीवअनंतिवारकरे तेयथाप्रवृत्तिकरणनुं स्वरूपलखियेंछैये

[illegible] कर्मनी उत्कृष्टस्थितिना बांधनारजीवने [illegible] माटे यथाप्रवृत्तिकरणक [illegible] उक्तंच [illegible] [illegible] [illegible] सव्वजहन्नठिइ

विन लब्भइजेणपुव्वपडिवन्नो॥१॥माटेकर्म्मनी उत्कृष्टस्थितिनो बांधनारजीव ते चारसा मायकनोलाभनपामेअनेजेजीवसातकर्म्मनी जघन्यस्थिति बांधे तेजीवतोगुणवंतजछे एरीतछेमाटेजेवारेंएककोडाकोडीसागरोपम पल्योपमने असंख्यातमेंभागेउणी स्थिति बांधतोहोय तेयथाप्रवृत्तिकरणकरे जेजीवकर्म्मक्षपणारूपशक्तिपाम्योनहतो तेशक्तिपाम्योतेनेयथाप्रवृत्तिकरणकहियें उक्तंचभाष्ये येनअनादिसंसिद्धप्रकारेण प्रवृत्तंकर्मक्षपणंक्रियते अनेनेतिकरणं जीवपरिणामएवउच्यते अनादिकालात्कर्मक्षपणप्रवृत्तावध्यवसायविशेषो यथाप्रवृत्तिकरणमित्यर्थः

क्षयोपशमीचेतनावीर्य जेसंसारनी असारताजाणे संसार दुःखरूपकरीजाणे ते थीपरिग्रहशरीरथीखरे उद्वेगेंउदासीनता परिणामेकरीसातकर्मनीस्थिति अनेककोडाकोडीनाथोकडा असंख्याताजे सत्तामांहता तेखपावेनेकांइकउणी एककोडाकोडीराखे एयथाप्रवृत्तिकरण आत्माअनंतिवारकरे पणग्रंथिभेदकरीशकेनही एकरण तेगिरिनदीनेविचें आव्युं पाषाणते घंचनावोलनारूप चालवेकरीने जेमसहेजे सुंहालो थाय अने कोइकआकारपकडे तेमजन्ममरणादिदुःखनेउद्वेगें अनाभोगथीज भववैरागें जीव यथाप्रवृत्तिकरणकरे एहिजजीवकोइकरीतें वैराग्यैविचारेजे भवभ्रमणते दुःखछे एसंयोगवियोगादि असारछे पणकोइक ज्ञानानंदादितेसारछे एहवीगवेषणाकरनारोजीव तेयथाप्रवृत्तिकरणकरीने अपूर्वकरणकरे इहांकोइपुछे जेभव्यनेतो पलटणयोग्यताछे पण अभव्यजीवकेमकरे तेनुंउत्तर जेतीर्थंकरभक्तिमांजे देवतानीमहिमा तथालोकसन्मानादिकदेखीने पुण्यनीवांछायें देवलराज्यादिकलाभइछायें इग्यार अंग तथाबाह्यपंचमहाव्रतादिपामे पणतेनेसम्यक्तनहोय जेपुद्गलाभिलाषीछे तेनेगुणस्पर्शनथाय उक्तंचमहाभाष्ये ॥ अर्हदादिविभूतिमतिशयवतींदृष्ट्वाधर्मादेवंविधसत्कारोदेवत्वराज्यादयःप्राप्यंते इत्येवंसमुत्पन्नबुद्धेरभव्यस्यापिदेवनरेंद्रादिपदहेतुया निर्वाणश्रद्धारहित कष्टानुष्टानं किंचिदंगीकुर्वतोज्ञानरूपस्यश्रुतसामायकमात्रलाभेपि सम्यक्तादिलाभःश्रुतस्यनभवत्येवेति ॥ एरीतेंधारवुं.

तथाअपूर्वकरण अनेअनिवृत्तिकरणनो अधिकार जेमआगमसागरमां भाख्योछे तेजपरमाणे इहांपणजाणवो इमत्रणकरणकरीने उपशम अथवा क्षयोपशम अथवा.क्षायक सम्यक्तजेपाम्यो अने आत्मप्रदेशें वर्तमाने सम्यक्दर्शनगुणनो रोधक एहवोमिथ्यात्वमोह प्रकृतिनाविपाकोदयने टालवेकरीने जेसम्यक्दर्शनगुणनी प्रवृत्तिथाय तेथीयथार्थपणे निःसंदिग्धजाणपणोप्रवर्त्तेतेजीवनेद्रव्यानुयोगें सम्यग्ज्ञानप्रगटे तेथीजेआत्मगुणप्रगटे तेआत्मगुणरमणायेंप्रवर्त्ते एहवीस्वरूपानुयायी

आत्मगुणनीप्रवृत्ति तेहनेधर्मकरीसद्दहे तेमाटेस्याद्वादपरिणामी पंचास्तिकायछे ते स्याद्वादरूपज्ञान तेनयज्ञानेथाय माटेनयसहितज्ञानकरवुं तेनयज्ञानअतिउर्जनछे अनेनयनीअनंतताछे उक्तंच जावइयावयणपहा तावइयाचेवहुंतिनयवाया ॥ तेजे पूर्वापरसापेक्षनही ते कुनयकहियें अने सर्वसापेक्षपणेवर्त्ते तेसुनयकहियें तेमूलसात नयछेतेनुंस्वरूपअल्पमात्रलखियेंछैयें.

नयतेज्ञानगुणनुं प्रवर्त्तनछे जेकारणेएकद्रव्यमध्येअनंताधर्मछे तेएकसमयें श्रुतो पयोगमां आवेनही स्यामाटेजेश्रुतज्ञाननो उपयोग असंख्यातसमयेंथाय अनेव स्तुमध्येतोअनंताधर्म एकसमये परिणमतापामियें तेवारेंश्रुतज्ञान सत्यथायनही ते माटेनयेंकरीजाणे तथापिकेवलीनोउपयोग एकसमयीछे तेमाटेजाणवामां नय नुंकार्यकेवलीने पडेनही पणवचनेकहेतां केवलीनेपणनयेंकरीकहेवुंपडेकारणकेवचन तोक्रमेयोजायछे अनेवस्तुधर्मअनंताएकसमयकालेंछे तेमाटेनयेंकरीकहे वलीजिनभ द्रगणीक्षमाश्रमणपूज्यकहेछे.

जीवादिद्रव्यमांजेगुणछे तेअनंतस्वभावीछे गुणनीछति तेनुंपरिणमन तेनीप्रवृत्ति तेमांजेसमयेंकारणता तेसमयेजकार्यता इत्यादि अनेकपरिणतिसहितछे तेथीको इकालें सर्वनुं भिन्नाभिन्नपणे ज्ञानथाय तेनयथीथाय माटेसमकितरुचिजीवने नय सहितज्ञानकरवुं जे एटलाधर्म सर्वद्रव्यमध्ये रह्याछे माटे प्रथमतो श्रीगुरुकृपाथी द्रव्य गुण पर्याय उलखावेछे एणीविकाकही हवेमूलसूत्रनाअर्थनुं व्याख्यानकरेछे.

श्रीवर्द्धमानमानम्य स्वपरानुग्रहायच ॥ क्रि
यतेतत्वबोधार्थं पदार्थानुगमोमया ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीके० गुणनीशोभा अतिशयशोभायेंविराजमान एहवाश्रीवर्द्धमान अ रिहंत शासननानायक तेप्रतेंअत्यंतपणे नमीने नमस्कारकरीने पोतानोमानमूकी त्र णयोगसमावी गुणीनेअनुजायीचेतनानुंकरवुं तेनेनमवुंकहियें तेपण स्वके० पोता ने अने परजेशिष्यश्रवणश्रोतादिकने अनुग्रहके० उपकारने सारुं तत्वके०यथार्थव स्तुधर्मतेने बोधके०जाणवानेअर्थें पदार्थके० धर्मास्तिकायादिक छमूलद्रव्य तेनो अ नुगमके० साचोस्वरूपबोध ते क्रियतेके० करियेंछैयें.

जगतमांमतांतरीउ द्रव्यनेअनेकरूपेंकहेछे नैयायिक सोलपदार्थकहेछे वै शेषिक सातपदार्थकहेछे वेदांतिमांख्य एकपदार्थकहेछे मीमांसक पांचपदार्थकहेछे एमनेमतेंनिष्पाद्य तेपदार्थनुं स्वरूपजाणवुंनयी अनेश्रीअरिहंत सर्वज्ञप्रत्यक्षज्ञा

नी ते एकजीवअनेपांचअजीव एरीतेंछपदार्थकहेले इहांकोइपुछे जेनवतत्वरूप नवप दार्थकह्याछे तेकेम तेनेउत्तर जे एकजीव बीजोअजीव एवेपदार्थतोमूलछे अने शेष साततत्वतो जीवअजीवनो साधकबाधक शुद्धअशुद्ध परिणतिनीअवस्था भिन्नउंल खावबानेकह्याछे·

श्लोक द्रव्याणांचगुणानांचपर्यायाणांचलक्षणं ॥
निक्षेपनयसंयुक्तंतत्वभेदैरलंकृतम् ॥ तत्रतत्वभेदप
र्यायैर्व्याख्यातस्यजीवादेर्वस्तुनोभावःस्वरूपतत्वं

अर्थ ॥ द्रव्यना गुणना तथा पर्यायना लक्षणजेउंलखाण तेनिक्षेपेंकरी तथा नयेंकरीयुक्ततत्वनाभेदेंसहितकहेवुं तत्रके० तिहांजिनागमनेविषे तत्वजेवस्तुस्वरूप भेद तेनाजुदाजुदाभेदपर्याय तेमांरह्याजेधर्म एटलाप्रकारें व्याख्याके० अर्थनुंकहेवुं तेणेकरीने यथार्थ व्याख्यानथाय तिहांतत्वनुंलक्षणकेहेले व्याख्यानकरवायोग्य जे जीवादिकवस्तु तेनोमूलधर्म तेवस्तुनुंस्वरूपतत्वकहियें जेमकंचननुंस्वरूप पीत गुरुस्नि ग्धतादि तथाएनुंकार्यआभरणादिक अने एहनुंफलते एहथीअनेकभोग्यवस्तुआवे एमजीवनुंस्वरूप ज्ञानदर्शनचारित्रादिअनंतगुण तथाजीवनुंकार्यसर्वभावनुंजाणवुं प्रमुखएरीतें अभेदपणेंरह्याजेधर्म तेसर्ववस्तुनुंतत्वकहियें·

येनसर्वत्राविरोधेनयथार्थतयाव्याप्यव्यापकभावेनलक्ष्यतेव
स्तुस्वरूपंतल्लक्षणं तत्रद्रव्यभेदायथाजीवाअनंताःकार्यभेदे
नभावभेदाभवंति क्षेत्रकालभावभेदानामेकसमुदायित्वंद्रव्यत्वं

अर्थ ॥ हवेलक्षणकहेले जेगुणेकरीसर्वद्रव्य स्वजातिमां अविरोधिपणे यथार्थ पणे १ अतिव्याप्ति २ अव्याप्ति असंभवादिदोषरहित वस्तुजेव्याप्य तेहनेविषे व्या पकपणेलखियें जाणियें तेनेवस्तुनुंलक्षणकहियें तेलक्षणबेप्रकारनुंछे एकलिंगबाह्य आकाररूप अने बीजुं वस्तुमांरह्योजे स्वरूपते एवेभेदछे तेमांलिंगथीतो गायनुंलक्षण जेशास्नसहितपणो तेबाह्यआकाररूपलक्षणछे एबाह्यलक्षणेजेउंलखाणकरे तेबाल चालछे अनेजेवस्तुनेधर्मेंउंलखाय तेस्वरूपलक्षणकहियें जेमचेतनालक्षणतेजीव त थाचेतनारहिततेअजीव इत्यादिकलक्षणें लक्षणस्वरूपजाणवो एमअनेकरीतेंजाणी लेवो भेदाश्च हवेभेदनुंस्वरूपकहेले वक्तव्यवस्त्वंशाःके०जेवस्तुकथनकरताहोय तेहना चारभेदछे तत्रद्रव्यभेदाके० तिहांद्रव्यनाभेदमूललक्षणे सरिखापणपिंमपणेजूदाछे ते

द्रव्ययीभेदकहियें यथाके० जेम सर्वजीवजीवत्वसामान्ये सरिखाछे पणजीवजीवप्रते पोतानागुणपर्यायनो पिंडपणोजूदोछे कोइनुंकोइमांमिलिजातोनथी तेमाटे जीवअनंताद्रव्यभिन्नपणे तेमजअजीवअनंताद्रव्य भिन्नपणे एमपुद्गलपरमाणुपण जडतारूपपणेसरिखा पणसर्वपरमाणुआजूदाद्रव्यछे जेकालेंपूछियें तेकालें एटलानाएटलाछे कोइकालेंयटेनही तेमनवोवधेनहीए सर्वद्रव्यथी भेदजाणवो.

हवे क्षेत्रांशाः क्षेत्रयीभेदते जेविस्तरेतोजूदोक्षेत्रअवगाहीनेरहे जेमजीवादिद्रव्यनाप्रदेश अवगाहनाधर्मेंजूदाछे पणद्रव्ययीजूदापडेनही संलग्नपणेरहे गुणपर्यायसर्वप्रदेशें अनंताछे तेगुणपर्याय एकप्रदेशमूकीबीजाप्रदेशमांजायनही पर्यायविभागएकनो अनेप्रदेशनो अवगाहसरिखोछे पणतेपर्यायअनंताभिन्नछे अनेजेअनंतापर्यायमलीनें एककार्यकरेतेकार्यनेगुणकहेछे श्रीवीतरागसर्वज्ञएमकहेछे एक्षेत्रथीभेदछे

एकवस्तुमां उत्पादव्ययरूप पर्यायपलटवानुंमान तेसमयकहियें जेटलोउत्पादव्ययतथाअगुरुलघुनीहानिवृद्धिने परिणमतानुंमान तेसमयकहियें अनेतेथीबीजीपरिणमनथइ तेबीजोसमय एमजेअनंतिअतीतप्रवृत्तिथइ तेवर्त्तमानप्रवृत्तिनीपरंपरारूपजाणवी अनेआगामिकयासेते कार्यरूपेंयोग्यतारूपजाणवी अतीतकालनो तथाअनागतकालनो कोइटिगलोनथीअनेपिंडरूप पंचास्तिकायनुं वर्त्ततोजेपरणमनतेनुंमान तेकालकहियें तेनेसमयभेदते बीजोकालरूपभेदकहियें ते जेपर्यायभिन्नभिन्नकार्यकरे तेकार्यनेदेंभिन्नपणोछे तेमाटेचोथोभावयीभेदकहियें हवेद्रव्यनुंलक्षणकहेछे तेक्षेत्र काल अनेभावनाजेभेद तेसर्वेनुंएकठामिलिनेपिंडपणे एकाधारपणे समुदायीपणेरहेवुं तेद्रव्यकहियें.

> तत्रैकस्मिन्द्रव्येप्रतिप्रदेशे स्वस्वएककार्यकरणसामर्थ्यरूपाअनंताअविभागरूपपर्याया स्तेषांसमुदायोगुणः॥भिन्नकार्यकरणेसामर्थ्यरूपाभिन्नगुणस्यपर्यायाः एवंगुणाअप्यनंताः प्रतिगुणंप्रतिदेशंपर्यायाअविभागरूपाः अनंतास्तुएयाः प्रायोऽनितेचास्तिरूपाः प्रतिवस्तुनिअनंतास्ततोनंतगुणाः सामर्थ्यपर्यायाः

अर्थ ॥ हवेगुणनुंलक्षणकहेछे तिहां गुणानामासउद्रव्वं इतिवचनात् एकद्रव्यनेविषे समस्ते० पोतापोतानो एकजाणवाप्रमुख कार्यकरवानुं जेनेसामर्थ्यछे एवा अनं

तात्पर्य जेनो अविभागके० बीजोभेदनथाय एवाविभागनो जेसमुदाय तेनेगुणक हियें जेमएकदोरडो सोतांतणानोकर्यो तेमांतांतणा तोअविभागपणे छतापर्यायछे तेदोरडाथीअनेककार्यथाय अनेकवस्तुबंधाय अने अनेकनेआधारथाय अनेकबंधण थाय तेनेसामर्थ्यपर्यायकहियें छतिरूपजेपर्याय तेनोवस्तुरूपछे अने सामर्थ्यपर्याय तो प्रवर्त्तनरूप कार्यरूपछे तेछतिपर्यायनो समुदाय तेनेगुणकहियें छतिपर्यायनाअ विभाग तेयोगस्थान समयस्थानमां कह्योजछे अने भिन्नके० जुदोकार्य करवानुं जे मांसामर्थ्यहोय एवाअविभागरूप आत्मप्रदेशें वर्त्तता पर्याय तेभिन्नके० जुदागुणना पर्यायजाणवा जेम जेअविभाग परिणामालंबनरूपकार्य सामर्थ्यरूप तेनोसमुदाय ते वीर्यगुण एमज जाणवारूपसामर्थ्यछे जेमां एहवाजे अविभागपर्यायछे तेनो समुदा य ते ज्ञानगुण तेवागुण एकद्रव्यनेविषेअनंताछेतेएकगुणना प्रदेशें प्रदेशें पर्यायअ विभागरूप अनंताछे अनेसर्वप्रदेशें सरिखाछे तथापंचास्तिकायमध्ये एकअगुरुलघु पर्यायनोभेद तरतमछे तथापुद्गलपरमाणुमध्ये कालभेदें अथवाद्रव्यभेदें वर्णादिक नापर्यायनो तरतमयोग ते थोडावणापणांछे तेपर्यायअस्तिरूपछे सदावर्त्ताछे कोइ पर्यायद्रव्यांतरमां जातोनथी प्रदेशांतरमांपण जातोनथी तेछतिपर्यायथी सामर्थ्य पर्याय अनंतगुणाजाणवा तेकार्यरूपछे तथाचमहाभाष्ये यावंतोज्ञेयास्तावंतएव ज्ञानपर्यायाः तेचअस्तिरूपाः प्रतिवस्तुनिअनंताततोप्यनंतगुणाःसामर्थ्यपर्यायाः

तत्रद्रव्यलक्षणं उत्पादव्ययध्रुवयुक्तं सत्लक्षणंद्रव्यं ए
तत्द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक उभयनयापेक्षयालक्षणं ॥
गुणपर्यायवत्द्रव्यं एतत्पर्यायनयापेक्षया, अर्थक्रियाका
रिद्रव्यं एतत्लक्षणंस्वस्वशक्तिधर्मापेक्षया धर्मास्तिका
य अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय
जीवास्तिकाय कालश्चेति

अर्थ ॥ हवेवलीद्रव्यनुंमुख्यलक्षणकहेछे उत्पादके० नवापर्यायनुंउपजवुं व्य यके० पूर्वपर्यायनुंविणसवुं अनेध्रुवके० नित्यपणो एतीनपरिणमनपणें सर्वदाजेप रिणमे तेनेद्रव्यकहियें एटलेतेहिजगुणकारणकार्य वेधर्मेंसमकालेंपरिणमेछे कारण विना कार्यथायजनही अनेकार्यकरेनही तेकारणपणसमजवुंनही जेउपादानकार ण तेहिजकार्यथायछे तेकारणतानोव्यय अनेकार्यतानुंउपजवुं समकालेंथायछे वली

द्रव्यथीनेदकहियें यथाके० जेम सर्वजीवजीवत्वसामान्ये सरिखाछे पणजीवजी वप्रते पोतानागुणपर्यायनो पिंमपणोजूदोछे कोइनुंकोइमांनिलिजातोनथी तेमाटे जीवअनंताद्रव्यनिन्नपणे तेमजअजीवअनंताद्रव्य निन्नपणे एमपुजलपरमाणुप ण जडतारूपपणेसरिखा पणसर्वपरमाणुआजूदाद्रव्यछे जेकालेंपूछियें तेकालें एटला नाएटलाछे कोइकालेंघटेनही तेमनवोवधेनहीए सर्वद्रव्यथी नेदजाणवो.

हवे क्षेत्रांशाः क्षेत्रथीनेदते जेविस्तरेतोजूदोक्षेत्रअवगाहीनेरहे जेमजीवादि द्रव्यनाप्रदेश अवगाहनाधर्मेजूदाछे पणद्रव्यथीजूदापडेनही संलग्नपणेरहे गुणपर्या यसर्वप्रदेशें अनंताछे तेगुणपर्याय एकप्रदेशमूकीबीजाप्रदेशमांजायनही पर्यायवि नागएकनो अनेप्रदेशनो अवगाहसरिखोछे पणतेपर्यायअनंतानिन्नछे अनेजेअनंताप र्यायमलीनें एककार्यकरेतेकार्यनेगुणकहेछे श्रीवीतरागसर्वज्ञएमकहेछे एक्षेत्रथीनेदछे

एकवस्तुमां उत्पादव्ययरूप पर्यायपलटवानुंमान तेसमयकहियें जेटलोउत्पादव्य यतथाअगुरुलघुनीहानिवृद्धिने परिणमतानुंमान तेसमयकहियें अनेतेथीबीजीपरिण मनथइ तेथीजोसमय एमजेअनंतिअतीतप्रवृत्तियइ तेवर्त्तमानप्रवृत्तिनीपरंपरारूप जाणवी अनेआगामिकथाशेते कार्यरूपेंयोग्यतारूपजाणवी अतीतकालनो तथाअ नागतकालनो कोइटिगलोनयीअनेपिंमरूप पंचास्तिकायनुं वर्त्ततोजेपरणमनतेनुंमान तेकालकहियें तेनेसमयनेदते बीजोकालरूपनेदकहियें ते जेपर्यायनिन्ननिन्नकार्यकरे तेकार्यनेदेंनिन्नपणोछे तेमाटेचोथोनावथीनेदकहियें हवेद्रव्यनुंलक्षणकहेछे तेक्षेत्र काल अनेनावनाजेनेद तेसर्वनुंएकगमिलिनेपिंमपणे एकाधारपणे समुदायीपणेरे हवुं तेद्रव्यकहियें.

तत्रैकस्मिन् द्रव्येप्रतिप्रदेशे स्वस्वएककार्यकरणसामर्थ्यरू पाअनंताअविनागरूपपर्याया स्तेषांसमुदायोगुणः॥निन्न कार्यकरणेसामर्थ्यरूपानिन्नगुणस्यपर्यायाः एवंगुणाअप्य नंताः प्रतिगुणंप्रतिदेशंपर्यायाअविनागरुपाः अनंतास्तु ल्याः प्रायेःनितिचास्तिरूपाः प्रतिवस्तुनिअनंतास्तता नंतगुणाः सामर्थ्यपर्यायाः

अर्थ ॥ हवेगुणनुंलक्षणकहेछे निहां गुणानामासउदयं ऽतिवचनात् एकद्रव्यने विषे समस्तके० पोतापोतानो एकजाणवाप्रमुख कार्यकरवानुं जेनेसामर्थ्यछे एवा अनं

तारतम्य जेनो अविभागकं० वीर्जांतरेदनथाय एवाविभागनो जेसमुदाय तेनेगुणक हियें जेमएकदोरडो सोनांतणानोकर्यो तेसोनांतणा तोअविभागपणो तनापर्यायछे तदोरडाथीअनेककार्यथाय अनेकवस्तुबंधाय अने अनेकनेआधारथाय अनेकवेंटण थाय तेनेसामर्थ्यपर्यायकहियें ठतिरूपजेपर्याय तेनोवस्तुरूपछे अने सामर्थ्यपर्याय तो प्रवर्त्तनरूप कार्यरूपछे तेठतिपर्यायनो समुदाय तेनेगुणकहियें ठतिपर्यायनाअ विभाग तेयोगस्थान समयस्थानमां कह्योजछे अने भिन्नकं० जुदोकार्य करवानुं जे मांसामर्थ्यहोय एवाअविभागरूप आत्मप्रदेशें वर्त्तता पर्याय तेभिन्नकं० जुदागुणना पर्यायजाणवा जेम जेअविभाग परिणामालंबनरूपकार्य सामर्थ्यरूप तेनोसमुदाय ते वीर्यगुण एमज जाणवारूपसामर्थ्यछे जेमां एहवाजे अविभागपर्यायछे तेनो समुदा य ते ज्ञानगुण तेवागुण एकद्रव्यनेविषेअनंताछेतेएकगुणना प्रदेशें प्रदेशें पर्यायअ विभागरूप अनंताछे अनेसर्वप्रदेशें सरिखाछे तथापंचास्तिकायमध्ये एकअगुरुलघु पर्यायनोभेद तरतमछे तथापुद्गलपरमाणुमध्ये कालभेदें अथवाद्रव्यभेदें वर्णादिक नापर्यायनो तरतमयोग ते थोडावणापणोछे तेपर्यायअस्तिरूपछे सदावर्त्तताछे कोइ पर्यायद्रव्यांतरमां जातोनथी प्रदेशांतरमांपण जातोनथी तेठतिपर्यायथी सामर्थ्य पर्याय अनंतगुणाजाणवा तेकार्यरूपछे तथाचमहाभाष्ये यावंतोज्ञेयास्तावंतएव ज्ञानपर्यायाः तेचअस्तिरूपाः प्रतिवस्तुनिअनंताततोप्यनंतगुणाःसामर्थ्यपर्यायाः

तत्रद्रव्यलक्षणं उत्पादव्ययध्रुवयुक्तं सत्लक्षणंद्रव्यं ए
तत्द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक उभयनयापेक्षयालक्षणं ॥
गुणपर्यायवत्द्रव्यं एतत्पर्यायनयापेक्षया, अर्थक्रियाका
रिद्रव्यं एतत्लक्षणंस्वस्वशक्तिधर्मापेक्षया धर्मास्तिका
य अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय पुद्गलास्तिकाय
जीवास्तिकाय कालश्चेति

अर्थ ॥ हवेवलीद्रव्यनुंमुख्यलक्षणकहेछे उत्पादके० नवापर्यायनुंउपजवुं व्य यके० पूर्वपर्यायनुंविणसवुं अनेध्रुवके० नित्यपणो एत्रीनपरिणमनपणें सर्वदाजेप रिणमे तेनेद्रव्यकहियें एटलेतेहिजगुणकारणकार्य वेयमेंसमकालेंपरिणमेछे कारण विना कार्यथायजनही अनेकार्यकरेनही तेकारणपणसमजवुंनही जेउपादानकार ण तेहिजकार्यथायछे तेकारणतानोव्यय अनेकार्यतानुंउपजवुं समकालेंथायछे वली

कारणपणोपण समयेंसमयेंनवोनवोछे अनेकार्यपणोपण समयेंसमयेंनवोनवोछे ते माटेकारणपणानोपणउत्पादव्ययछे अनेकार्यपणानोपण उत्पादव्ययछे अनेगुणपिंडपणें द्रव्याधारपणेध्रुवछे एवीपरिणतियेंपरिणमे ते सत्के० छतिवंतद्रव्यजाणवो एटले एलक्षणते द्रव्यास्तिकनय तथापर्यायास्तिकनय एबेनेसालेइनेकह्योछे जे ध्रुवपणो ते द्रव्यास्तिकधर्मग्रह्योछे अनेउत्पादव्यय तेपर्यायास्तिकधर्मग्रह्योछे ते माटेएलक्षणसंपूर्णछे एतत्वार्थकारकनुंवाक्यछे.

तथावलीबीजुंलक्षण तत्वार्थमांजकह्युंछे एकद्रव्यमां वळामां स्वकार्यगुणेवर्त्तमानतेगुण अने पर्यायते गुणनुंकारणभूत द्रव्यनुंभिन्नभिन्नकार्यपणे परिणमे द्रव्यगुण एबेहुने साश्रयीपणेपरिणमन तेबेजेमां तेद्रव्यकहियें एटलेगुण तथापर्यायवंत तेद्रव्यकहियें तेद्रव्यएकनावेसंभवायजनही एमूलद्रव्यनुंलक्षणछे अनेजेघणापरमाणुना संधनेद्रव्यमान्योछे तेअपचारेंजाणवो जेनीपरिणतिश्रणकालमध्येतेरूपनेत्यजेनही ते द्रव्यपोतानीमूलजातत्यजेनही जेनेअगुरुलघुनुं षड्गुण हानिवृद्धिरूपलक्षण चक्रए [illegible] तेएकद्रव्य अनेजेने जुदोकिरे ते भिन्नद्रव्यकहियें एटले धर्म अधर्मआकाशए एक एक द्रव्यछे अनेजीव असंख्यातप्रदेशरूप एकअखंडद्रव्यछे एवा जीवसर्वलोकमध्येअनंताछे तेजीव [illegible] अनेसंसारीपणामांएकथायछे पण सर्वसंख्यामां [illegible] तथापुद्गलपरमाणु एकआकाशप्रदेशप्रमाण एकद्रव्यछे तेवापरमाणु [illegible] पण अनंतगुणाद्रव्यछे स्कंधपणे अथवा छुटा [illegible] पण परमाणुपुद्गलपणे जेसंख्याछे तेमांवधताघटता नथी एनिश्चयनयथी लक्षण कह्युं.

[illegible] अर्थजे द्रव्यतेनीजे क्रियाके० प्रवृत्तितेनेकरे तेद्रव्यकहियें [illegible] क्रिया ते ज्ञानादिकगुणनीप्रवृत्ति जेमसकलज्ञेयजाणवा माटे [illegible] गुणनुंजेकार्य जेमज्ञानगुणनुंकार्यविशेषधर्मनुंजाणवुं [illegible] गुणनुंकार्य [illegible] अने चारित्रगुणनुंकार्य तेस [illegible] धर्मास्तिकायनुंकार्य गतिगुणेपरिणम्याजे जीवतथापुद्गल तेने [illegible] सर्वद्रव्यनी [illegible] एलक्षण सर्वद्रव्यनाजेगुण छे [illegible] गुणनी प्रवृत्ति [illegible] क्रियाकहेवी हवेतेद्रव्यछे १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय ५ जीवास्तिकाय ६ काल [illegible] जे नैयायिकादिक [illegible] पदार्थकहेछे तेम [illegible] भिन्नपदार्थकहेछे तेनोछानछे तेआत्मानामा प्रमेयपणोगुण

े तेगुणीजेआत्मा तेमध्येरह्योछे तेने भिन्नपदार्थ केमकहियें वीजाप्रयोजन सिद्धां
ादिक तेसर्वजीवद्रव्यनी प्रवृत्तिछे ते माटे भिन्नपदार्थकेवायनही.

तथावैशेषिक १ द्रव्य २ गुण ३ कर्म ४ सामान्य ५ विशेष ६ समवाय ७
अभाव एसातपदार्थकहेछे पणतेनेकहियें जेगुणतेतो द्रव्यमांजरह्याछे तो तेनेभिन्न
पदार्थकरीकहेवुं तेकेमघटे अने कर्मतेद्रव्यनुंकार्यछे तथा सामान्य अने विशेष एवे
तोद्रव्यमध्ये परिणमनछे वली समवायते कारणतारूपद्रव्यनुं प्रवर्त्तनछे अने अभा
वतो अछताने केवाय ते अछताने पदार्थकेवुंघटतुंनथी तेमाटेवैशेषिकमतपणमृ
षाछे तेमध्येद्रव्यनवकहेछे १ पृथ्वी २ आप ३ तेज ४ वायु ५ आकाश ६ काल ७
दिशि ८ आत्मा ९ मन एनवपदार्थकहेछे तेनेउत्तर जे पृथ्वी आप तेज वायुएतोआ
त्माछे पणकर्मयोगें शरीरनेदें नामपडयाछे अनेदिशितोआकाशमांज मिलीगयीछे
तथामन तेआत्मानेसंसारीपणाना उपयोगप्रवर्तनानो द्वारछे तेनेभिन्नद्रव्यकेमकहियें.

वलीवेदांतिसांख्य तेएकआत्माअद्वैतपणे एकजद्रव्यमानेछे तेनीपणभूलछे केम
के जेशरीरछे तेतोरूपीछे अने पुद्गलद्रव्यनास्कंधछे तेकेमएकथाय तथाआत्मा अने
शरीरनोआधारते आकाशछे तेसर्वप्रसिद्धछे तेजूदोमान्याविना केमचाले तेमाटेअ
द्वैतपणोरह्योनही.

अनेबौद्धदर्शन तेसमयलमय नवानवापणे १ आकाश २ काल ३ जीव ४ पु
द्गल एचारद्रव्यमानेछे तेनेपुछीयें जेजीवपुद्गलएकक्षेत्रें केमरेहेतानथी तेतोचला
दिभावपामेछे माटेतेना अपेक्षाकारणरूप १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय एवेद्र
व्यपण मानवाजोइयें तथाकेटलाक संसारस्थितिनोकर्त्ता एकपरमेश्वरनेमानेछे तेपण
मृषाछे जेनिर्मलरागद्वेषरहित एवो परमेश्वर तेपरनासुखदुःखनो कर्त्ताकेमथाय वली
कोइक इच्छा वलगाडेछे तेइच्छातो अपूरानेछे पूरानेकेमहोय तथा केटलाक परमेश्व
रनी लीलाकहेछे तेलीलातो अजाण अपूरो तथा जेनेपोतानो आनंद पोतापासेनहो
य तेकरे पणजे संपूर्ण चिदानंदघन तेने लीला होयजनही धर्माधर्मौविनानांगंविनां
गेनमुखंकुतः॥मुखंविनानकर्तृत्वंतच्छास्तारःपरेकथं१ अनेमीमांसादिक पांचभूतकहेछे
तेमांपण चारभूततोजीवपुद्गलना संबंधेउपनाछेअनेआकाशतेलोकालोकभिन्नद्रव्यछे.

तत्रपंचानांप्रदेशपिंडत्वात् अस्तिकायत्वं कालस्यप्रदेशाभा
वात् अस्तिकायतानास्ति तत्रकालउपचारतेवद्रव्यंनवस्तुवृत्त्या॥

एरीतेअतत्वपरूपणानुंनिराकरणकरी आगमनीसांखे कार्यादिकनेअनुमाने द्रव्य

अर्थ ॥ स्थितिपणेपरिणम्या जेजीव तथापुद्गल तेने स्थितिना उपष्टंभनोहेतु ते अधर्मास्तिकाय द्रव्यकहियें तेपणलोकपरिमाणअसंख्यप्रदेशीछे

सर्वद्रव्याणांआधारभूतः अवगाहकस्वभावानां जीवपुद्गलानां अवगाहोपष्टंभकः आकाशास्तिकायः सचानंतप्रदेशः लोकालोकपरिमाणः यत्रजीवादयोवर्त्ततेसलोकः असंख्यप्रदेशप्रमाणः ततःपरमलोकः केवलाकाशप्रदेशव्यूहरूपःसचानंतप्रदेशप्रमाणः

अर्थ ॥ सर्वद्रव्यने आधारभूत अवगाहस्वभावी जे जीवतथापुद्गलने अवगाहनानोउपष्टंभनोहेतु तेआकाशास्तिकाय द्रव्यकहियें तेनाप्रदेश अनंताछे लोक तथा अलोकरूपछे तेमांजेक्षेत्रेंजीव तथा पुद्गल तथा धर्मास्तिकायअधर्मास्तिकायछे ते क्षेत्रनेलोककहियेंअने केवल एकलोकमात्र आकाशजजिहांछे तेनेअलोककहियें एटले जेलोक तेजीवादिद्रव्यसहित अने जीवादिकद्रव्य जिहांनथी तेने अलोककहियें ते अलोकना प्रदेशअनंताछे अवगाहकधर्में सर्वद्रव्य एमांसमायछे.

कारणमेवतदन्त्यं सूक्ष्मोनित्यश्चभवतिपरमाणुः॥एकरसवर्णगंधोद्विस्पर्शः कार्यलिंगीच॥पूरणगलनस्वभावः पुद्गलास्तिकायःसचपरमाणुरूपः तेचलोके अनंताः एकरूपाः परमाणवःअनंताः द्व्यणुकाअप्यनंताः त्र्यणुकाअप्यनंताः एवंसंख्याताणुकास्कंधाअप्यनंताः असंख्याताणुकस्कंधाअप्यनंताः एकैकस्मिन्आकाशप्रदेशे एवंसर्वलोकेपि ज्ञेयं एवंचत्वारोस्ति याः अचेतनाः

अर्थ ॥ हवेपुद्गलद्रव्यनुं स्वरूपलखियेंछयें जेपूरणके० पूरायें वरणादिगुणेवधे गलीजाय खरिजाय वरणादिगुणघटिजाय एवोजेमांस्वभावछे तेपुद्गलास्तिकायकहियें तेमूलद्रव्यपरमाणुरूपछे तेपरमाणुनुंलक्षणकहेछे द्व्यणुकादिक जेटलास्कंधछे तेसर्वनुं अत्यंतके० मूलकारणपरमाणुछे एटलेसर्वस्कंधनुं परमाणुकारणछे पणपरमाणुनुं कारणकोइनथी कोइनुंनीपजाव्योयचोनथी अनेकोइनेभिलवेपणथयोनथी सूक्ष्मछे एकआकाशप्रदेशनी अवगाहनातुल्य एकपरमाणुछे तोपणते एकआकाशप्रदेशमां

ठ ठरेछे माटेतेहिजमानवा तेमां पांचद्रव्य सप्रदेशीछे तेप्रदेशनापिंमपणामाटे अस्ति कायपणो पांचद्रव्यनेछे अने ठठोकालद्रव्य तेनेप्रदेशनथी तेमाटे अस्तिकायतानथी तिहांकालते मुख्यवृत्तियेंद्रव्यनथी उपचारथी द्रव्यकेवायछे जेमवस्तुगते धर्मास्तिका यादिक द्रव्यछे तेमकालद्रव्यनथी जोएकालने पिंडरूपद्रव्यमानियेंतो एनो मानकि हांछे जोमनुष्यक्षेत्रमांकालद्रव्यमानियेंतो बाहिरनाक्षेत्रमां नवपूर्णादिक तथाउत्पा दव्यय कोणकरेछे अनेजोचौदराजलोकमां व्यापीमानियेंतो असंख्यातप्रदेश मानवा जोइयें अनेप्रदेशमानवेकरी अस्तिकायथाय अनेजोरेणुक असंख्यातामानियें तोलो कप्रदेशप्रमाण रेणुकथाय तेवारें असंख्याताकालद्रव्यथाय तेतोअनंतद्रव्यमान्योछे माटेएकालने पंचास्तिकायना वर्त्तनारूपपर्यायने आरोपेंद्रव्यमानियें केमके अस्ति कायतानथी अनेसर्वमांवर्त्तनाकरे एपद्रूसत्यछे जे आगमनेविषे ठाणांगसूत्रनाआ लावामांछे किंभंते अद्वासमयेतिवुच्चति गोयमा जीवाचेव अजीवाचेव एटलेकाल ते जीवतथाअजीवनो वर्त्तमानपर्यायछे तेनाउत्पादव्ययरूप वर्त्तनानेकालकह्योछे ते कालने अजीवद्रव्यमांगण्यो तेनोआशयएछे जेजीववर्त्तनाथी अजीववर्त्तनाअनंतगु णीछे तेबहुलतामाटे कालने अजीवगवेष्योछे केमके कालनीवर्त्तना अजीवकपर अ नंतिछे अने जीवकपरतेथीथोडीछे माटे.

तथा विशेषावश्यकनाष्यमध्ये नपश्यतिक्षेत्रकालावसीतयोरमूर्त्तत्वात् अवधेश्च मूर्त्तिविषयत्वात् वर्त्तनारूपंतुकालंपश्यति द्रव्यपर्यायत्वात्तस्येति तथा बावीसहजा रीमध्ये तथा कालस्यवर्त्तनादिरूपत्वात् पर्यायत्वात् द्रव्योपक्रमः उपचारात् तथाजग वत्यांगे १३ तेरमांशतकमध्ये हांपुद्गलवर्त्तनानीअपेक्षायें कालनेरूपीगवेष्योछे.

तत्रगतिपरिणतानां जीवपुद्गलानां गत्युपष्टंभहेतुधर्मा स्तिकायः सचासंख्येयप्रदेशलोकप्रदेशपरिमाणः

अर्थ । हवेपंचास्तिकायनुं भिन्नभिन्नलक्षणकहेछे जेगतिपरिणामीपणेपरिणम्याजी वतथापुद्गलनेगतिनाथोउनानोहेतु तेधर्मास्तिकायद्रव्यकहियें तेधर्मास्तिकायअसं ख्याता प्रदेशपरिमाणछे लोकमांव्यापिछे लोकमानछे लोकनाएकएकप्रदेशेंधर्मास्तिका यनोएकएकप्रदेश तेअनंतसंबंधीपणेछे एधर्मादित्रणद्रव्य अचल अवस्थितअक्रियछे.

एवं स्थितिपरिणतानां जीवपुद्गलानां स्थित्युपष्टंभहेतुः स्तेऽधर्मास्तिकायः सचासंख्येयप्रदेशलोकपरिमाणः

अर्थ ॥ स्थितिपणेपरिणम्या जेजीव तथापुद्गल तेने स्थितिना उठंजानोहेतु ते अधर्मास्तिकाय द्रव्यकहियें तेपणलोकपरिमाणअसंख्यप्रदेशीछे

सर्वद्रव्याणांआधारभूतः अवगाहकस्वभावानां जीवपुद्गलानां अवगाहोपष्टंभकः आकाशास्तिकायः सचानंतप्रदेशः लोकालोकपरिमाणः यत्रजीवादयोवर्ततेसलोकः असंख्यप्रदेशप्रमाणः ततःपरमलोकः केवलाकाशप्रदेशव्यूहरूपःसचानंतप्रदेशप्रमाणः

अर्थ ॥ सर्वद्रव्यने आधारभूत अवगाहस्वभावी जे जीवतथापुद्गलने अवगाहनानोउठंजानोहेतु तेआकाशास्तिकाय द्रव्यकहियें तेनाप्रदेश अनंताछे लोक तथा अलोकरूपछे तेमांजेक्षेत्रेंजीव तथा पुद्गल तथा धर्मास्तिकायअधर्मास्तिकायछे ते क्षेत्रनेलोककहियेंअने केवल एकलोकमात्र आकाशजजिहांछे तेनेअलोककहियें एटले जेलोक तेजीवादिद्रव्यसहित अने जीवादिकद्रव्य जिहांनथी तेने अलोककहियें ते अलोकना प्रदेशअनंताछे अवगाहकधर्मे सर्वद्रव्य एमांसमायछे.

कारणमेवतदंत्यं सूक्ष्मोनित्यश्चभवतिपरमाणुः॥एकरसवर्णगंधोद्विस्पर्शः कार्यलिंगीच॥पूरणगलनस्वभावः पुद्गलास्तिकायःसचपरमाणुरूपः तेचलोके अनंताः एकरूपाः परमाणवःअनंताः द्व्यणुकाअप्यनंताः त्र्यणुकाअप्यनंताः एवंसंख्याताणुकास्कंधाअप्यनंताः असंख्याताणुकस्कंधाअप्यनंताः एकैकस्मिन्आकाशप्रदेशे एवंसर्वलोकेपि ज्ञेयं एवंचत्वारोस्ति णयाः अचेतनाः

अर्थ ॥ हवेपुद्गलद्रव्यनुं स्वरूपलखियेंछैयें जेपूरणके० पूरायें वरणादिगुणेवधे गलीजाय खरिजाय वरणादिगुणघटिजाय एवोजेमांस्वभावछे तेपुद्गलास्तिकायकहियें तेमूलद्रव्यपरमाणुरूपछे तेपरमाणुनुंलक्षणकहेछे द्व्यणुकादिक जेटलास्कंधछे तेसर्वनुं अत्यंतके० मूलकारणपरमाणुछे एटलेसर्वस्कंधनुं परमाणुकारणछे पणएपरमाणुनुं कारणकोइनथी कोइनुंनीपजाव्योथयोनथी अनेकोइनेमिलवेपणथयोनथी सूक्ष्मछे एकआकाशप्रदेशनी अवगाहनातुल्य एकपरमाणुछे तोपणते एकआकाशप्रदेशमां

अनंतपरमाणुसमायछे पणपरमाणुमध्ये बीजुंद्रव्यकोइसमायनही माटे परमाणु द्रव्य सूक्ष्मछे अनेनित्यछे जेटलुं परमाणुद्रव्यने तेरसंगादिक अनेकपणेपरिणमे पणपरमाणुद्रव्यकोइ विणसीजायनही एवुंपरमाणुद्रव्यने तेणकपरमाणुमां एकरस होय एकवर्णहोय एकगंधहोय अनेलुखोचिकणोटाढोउन्हो एचारफरसमाहेला गमे तेवेफरसहोय एवुंएकपरमाणुद्रव्यछे इहां कोइपुछेजे तेपरमाणुदेखातोनथी तोके वीरीतेमनाय तेनेउत्तर जेघटपटशरीरादिककार्यदेखायछे ग्रहवायछे तेरूपीछेतो एह नासंबंधनुंकारण परमाणुसूक्ष्मछे माटे इंद्रियज्ञाने ग्रहेवातोनथी परंतुरूपीछे केमके अरूपीथीरूपीकार्यथायनही तेमाटेज परमाणुरूपीछे तेथीएस्कंधपणरूपीथयाछे अ नेआकाशप्रदेश अरूपीछे तोतेनो अनंतप्रदेशीस्कंधपणअरूपीछे एमधारवुं तेपरमा णुना द्वयणुकादिकस्कंध अनंताछे तथाछुटापरमाणु तेपणअनंताछे तेवलीसंधमां मिलेछे तोवीजाखंधमांहेथी छुटाथायछे एमखंधविखरीजायने परमाणुथाय तेनी वर्गणा अठ्यावीसप्रकारनीछे तेअठ्यावीसजेदकम्मपयडीथीजाणवा एमएकजाप रमाणु तेपणअनंता तथावेमिलीनेखंधपाम्यातेवाखंधपण अनंता एमजसंख्याता णुकनाखंध पणअनंता तेमजअसंख्यात परमाणुमिलिखंधथाय तेपणअनंता तथा अनंतपरमाणु मल्याखंधथाय तेवाखंधपणअनंता तेएजातीनाखंध तेएकआकाश प्रदेश अवगाहे आकाशांशअवगाहे एमअसंख्याताप्रदेशअवगाहेछे पणएकवर्गणा नी अवगाहना अंगुलनेअसंख्यातमें जागेअवगाहे वधतिअवगाहेनही अनेअनंतिव र्गणामिले अंगुलहोय गाउ योजनादिकने मानेअवगाहनाथाय एमए१ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय ४ पुद्गलास्तिकाय एचारेद्रव्यअचेतनछे अजीवछे जाणपणारहितछे.

चेतनालक्षणोजीवः चेतनाचज्ञानदर्शनोपयोगी अनंतप र्याय परिणामिक कर्तृत्वजोक्तृत्वादिलक्षणोजीवास्तिकायः

अर्थ ॥ हवेजीवद्रव्यनुंस्वरूपकहेछे चेतनाजे बोधशक्तिछे लक्षणाजेनु तेजीवक हियें जेपोतानीपरिणमन तथा परनीपरिणमन सर्वनेजाणे तेजीव तथासर्वद्रव्य तेअनंतासामान्यस्वजाव अनेअनंताविशेषस्वजाववंतछे तेमांसर्वद्रव्यनाअनंताविशे षधर्मनुं अवबोधक तेज्ञानगुणकहियें तथासामान्यविशेष स्वजाववंतवस्तुनेविषें जे सामान्यस्वजावनुं अवबोधक तेदर्शनगुणकहियें तेज्ञानदर्शनोपयोगी जेअनंतपर्याय

तेनोपरिणामी कर्त्ता भोक्तादिक अनंतिशक्तिनुंपात्र तेजीवजाणवो उक्तंच नाणंच
दंसणंचेव, चरित्तंचतवोतहा ॥ वीरीयंउवउगोय एयंजीवस्सलरकणं ॥ १ ॥

चेतनालक्षण ज्ञानदर्शनचारित्रसुखवीर्यादिक अनंतगुणनुंपात्र स्वस्वरूपभोगी तथाअनवच्छिन्नजे स्यावस्थाप्रगटी तेनोभोक्ता अनंतास्वगुणनीजे स्वस्वकार्यशक्ति ते नोकर्त्ता भोक्ता परभावनोअकर्त्ताअभोक्ता स्वक्षेत्रव्यापी अनंतिआत्मसत्तानो ग्राहक व्यापक रमणकरनारो तेनेजीवजाणवो.

पंचास्तिकायानांपरत्वापरत्वेनवपुराणादिलिंगव्यक्त्यत्तिव
र्त्तनारूपपर्यायःकालः अस्यचाप्रदेशिकत्वेनअस्तिकायत्वा
भावःपंचास्तिकायांतर्भूतपर्यायरूपत्वेवास्य एतेपंचास्तिका
याः तत्रधर्माधर्मौलोकप्रमाणासंख्येयप्रदेशिकौ लोकप्रमा
णप्रदेशएवएकजीवः एतेजीवाअप्यनंताः आकाशोहि
अनंतप्रदेशप्रमाणः पुद्गलपरमाणुः स्वयंएकोप्यनेकप्र
देशबंधहेतुभूतद्रव्ययुक्तत्वात् अस्तिकायः कालस्य
भुपचारेणभिन्नद्रव्यताउक्ता साचव्यवहारनयापेक्षया आ
दित्यगतिपरिछेदपरिमाणःकालः समयक्षेत्रेएवएपव्यव
हारकालः समयावलिकादिरूपइति ॥

अर्थ ॥ हवेकालद्रव्यनुंलक्षणकहेछे जेपंचास्तिकायनेपरत्वे अपरत्वे एलिंगे तथापुद्गलखंधने नवपुराणपणे व्यक्तके० प्रगटछे वृत्तिके०प्रवृत्तितेनेवर्त्तनाकहियें ते वर्त्तनारूपपर्यायतेनेकालकहियें एनेप्रदेशनथीतेमाटे अस्तिकायपणोनथी एकालते पंचास्तिकायनेविषेअंतर्भूतपर्यायपरिणमनछे जातेधर्मास्तिकायादिकनोपर्यायछे एम तत्वार्थवृत्तिनेविषेकह्योछे तिहांधर्मास्तिकाय एकद्रव्यछे असंख्यातप्रदेशीछे लोकाकाशनाप्रदेशप्रमाणछे एमअधर्मास्तिकायपण एकद्रव्यछे लोकप्रमाण असंख्यातप्रदेशीछे अनेंएकजीवद्रव्यतेपण लोकप्रमाण असंख्यातप्रदेशीछे पण स्वअवगाहना प्रमाणव्यापकछे तेजीवद्रव्यअनंताछे अकृतसदाछता अखंडद्रव्यछे सत्चिदानंदमयीछे पणपरपरिणामीथवे पुद्गलग्राहक पुद्गलभोगीथवे प्रतिसमये नवाकर्मबांधवे संसारीथयाछे तेहिज जेवारेंस्वरूपग्राहक स्वरूपभोगीथाय तेवारेंसर्वकर्मरहितथयो परमज्ञा

नमयी परमदर्शनमयी परमानंदमयी सिद्धबुद्ध अनाहारी अशरीरी अयोगी अले शी अनाकारी एकांतिक आत्यंतिक निःप्रयासी अविनाशी स्वरूपसुखनोभोगी शुद्ध सिद्धथाय तेमाटेअहोचेतन एपरभावअभोग्य सर्वजगतनाजीवनीएठ तेनोजोगव वापणोतजी स्वभावभोगीपणनो रसीयोथयी स्वस्वरूपनिरधार स्वरूपभासन स्वरू परमणीथयी पोतानाआनंदनेप्रगटकरीनें निर्मलथावुं.

तथाआकाशद्रव्य तेलोकालोकमिलि एकद्रव्यछे अनंतप्रदेशीछे अनेपुद्गलद्रव्यते परमाणुरूपछे केमकेपरमाणुअनंताछेमाटे अनंताद्रव्यछेइहांकोइपूछेजे प्रदेशनासंबंध विनापरमाणुद्रव्यने अस्तिकायकिमकह्योछे तेनेउत्तर जेपरमाणुतो एकप्रदेशीछेपणअ नंता परमाणुथीमिलवानाजेकारण तेआद्रव्यतेणेयुक्तछे तेयोग्यतामाटे अस्तिकाय कह्योछे तथाकालद्रव्यने उपचारें भिन्नद्रव्यपणोकह्योछे तेव्यवहारनयनीअपेक्षायें जेमनुष्यक्षेत्रनेविषे सूर्यनीगतिनेपरिज्ञानेएटलेसमयावलिकादिरूप परिमाणे जेमान तेने व्यवहारथीकालकहियें इति एकालमुख्यवृत्तियें तोसमयक्षेत्रमध्येछे अने मनुष्य क्षेत्रथीबाहेर जेजीवोछे तेनाआयुपापणएजक्षेत्रप्रमाणे सर्वज्ञदेवेंकह्याछे तथासूर्य नोचारतेपण जीवपुद्गलनुंजप्रवर्तनछे कारणके सूर्यतेपणजीवतथापुद्गलजछे एटले ए कालद्रव्यतेकालपणे भिन्नपिंडपणे छेलोनही उपचारेंजछेखो एममानवो.

इहांकोइकहेजे एकएकद्रव्यनेविषे अनेकअनेकपर्यायछे ते कोइपर्यायने द्रव्यपणो नकह्यो अने एकवर्त्तनापर्यायनेविषे द्रव्यनोआरोप शामाटेकखो तेनेउत्तर एवर्त्तना परिणतितेसर्व पर्यायने सहकारीछे अनेसर्वद्रव्यनेछे तेथीमुख्यपर्यायछे माटेएने द्रव्यनोआरोपछे तेपणअनादिकालछे.

एतेपंचास्तिकायाःसामान्यविशेषधर्ममयाएवतत्रसामा
न्यतःस्वभावलक्षणं द्रव्यव्याप्यगुणपर्यायव्यापकत्वेन
परिणामिलक्षणंस्वभावः तत्रएकंनित्यंनिरवयवं अक्रियं
सर्वगतंचसामान्यंनित्यानित्य निरवयवसावयवःसक्रिय
तादेतुःदेशगतःसर्वगतंचविशेषपदार्थगुणप्रवृत्तिकारणं
विशेषः नसामान्यविशेषरहितं नविशेषःसामान्यरहितः

अर्थ ॥ हवेएपंचास्तिकायते सामान्यविशेषधर्ममयीछे ते सामान्यनुंलक्षण वि

ज्ञेपावश्यकेंकह्योछे तिहांप्रथमथी स्वजावनुंलक्षणकहेछे जेद्रव्यनेविपेव्यापतोहोय तथागुणपर्यायमांपण व्यापकपणेसदापरिणमतोथकोपामियें तेनेसामान्यस्वजावक हियें ते सामान्यस्वजावजेहोय तेएकहोय तथानित्यअविनाशीहोय तथानिरवयव के० जेहने अविजागरूप अवयवनहोय अने सर्वगतके० सर्वमांव्यापकपणेहोय ते सामान्यस्वजावकहियें जीवादिद्रव्यनेविपे एकपणोतेपिंमपणेछे तेसर्वद्रव्यनेविपेछे सर्वगुणपर्याय पोतानेरूपेंअनेकछे पणतेसमुदायपिंमपणुंमूकीने जूदाथायजनही ते माटेएरीतेंजे परिणमनहोय तेसामान्यस्वजावकहियें तेसामान्यनावेजेदछे अस्तिता दिकजेसर्वपदार्थनेविपेछे तेमहासामान्यकहियें एनीश्रुतज्ञानेकरी प्रतीतथाय पणप्र त्यक्षतो अविधिदर्शन केवलदर्शनेजजणाय परोक्षेंनग्रहवाय तथा वृक्ष अंब निंब जंबु प्रमुख व्यक्तिअनेकछे पणवृक्षत्वपणो सर्वमांछे एअवांतरसामान्य तेचक्षुदर्शी ने तथा अचक्षुदर्शनेग्रहवाय अने अस्तित्व वस्तुत्वादिसामान्य ते अविधिदर्शन त थाकेवलदर्शने ग्रहवाय अने विशेपधर्मते ज्ञानगुणेजग्रहवाय हवे विशेपनुंलक्ष कहियेंछैयें कोइकधर्मनित्य कोइकधर्मअनित्य कोइकरीतेंअवयवसहित कोइकरीतें अवयवरहित अविजागपर्यायें सावयव सामर्थ्यपर्यायें निरवयव पणसक्रियताहेतु देशगतजेगुणते गुणांतरमांव्यापतानथी तेमाटेदेशगतजेगुणहोय तेआखाद्रव्यमां व्यापकजहोय तेनेसर्वगतकहियें तोएवाजेधर्म तेसर्वविशेपजाणवा पदार्थनागुणनीप्र वृत्ति तेनाजेकारणतेविशेपस्वजाव जेकार्यकरेतेगुणनेपण विशेपधर्मजगणवो जेसा मान्यते विशेपरहितनथी अनेजेविशेपते सामान्यरहितनथी.

तेमूलसामान्यस्वजावाःपट् तेचामी १ अस्तित्वं २ वस्तुत्वं ३ द्रव्यत्वं ४ प्रमेयत्वं ५ सत्वं ६ अगुरुलघुत्वं तत्र १ नित्यत्वादीनां उत्तरसामान्यानां परिणामिकत्वादीनां विशेपस्वजावानामाधारजूतधर्मत्वं अस्तित्वं २ गुणपर्यायाधारत्वंवस्तुत्वं ३ अर्थक्रियाकारित्वंद्रव्यत्वं अथवाउत्पादव्ययपयोर्मध्येउत्पादपर्यायाणांजनकत्वप्रसवस्वाविर्नाव लक्षणव्ययीजूतपर्यायाणांतिरोजाव्यजावरूपायाःशक्तेरा धारत्वं द्रव्यत्वं ४ स्वपरव्यवसायिज्ञानंप्रमाणं प्रमीयते अनेनेतिप्रमाणं तेनप्रमाणेनप्रमातुंयोग्यंप्रमेयं ज्ञानेनज्ञा

यतेतद्योग्यतात्वंप्रमेयत्वं ५ उत्पादव्ययध्रुवयुक्तंसत्वं ६ षड्गुण
हानिवृद्धिस्वभावा अगुरुलघुपर्यायास्तदाधारत्वं अगुरुलघु
त्वंएतेषट्स्वभावाःसर्वद्रव्येषुपरिणमंति तेनसामान्यस्वभावाः

अर्थ ॥ तेमूलसामान्यना भेदछे तेसर्वद्रव्यमांव्यापकपणेछे १ अस्तित्व २ व
स्तुत्व ३द्रव्यत्व ४ प्रमेयत्व ५ सत्व ६ अगुरुलघुत्व एछमूलस्वभावछे ते सर्वद्रव्य
मध्ये परिणामिकपणेपरिणमेछे एधर्मनेकोइनोसहायनथी तत्रके० तिहां १ सर्वद्रव्य
नेविषे उत्तरसामान्यस्वभाव नित्यत्व अनित्यत्वादिक तथाविशेषस्वभाव तेपरिणामि
कत्वादिक तेनोआधारभूतधर्म तेधर्मनेतीर्थंकरदेवसामान्यस्वभाव अस्तित्वरूपकहेछे
तथा २ गुणपर्यायनो आधारवंतपदार्थ तेनेवस्तुत्वकहियें अने ३ अर्थजेद्रव्य
तेनीजेक्रिया जेमधर्मास्तिकायनी चलणसहायक्रिया अधर्मास्तिकायनी थिरसहायक्रि
या आकाशद्रव्यनी अवगाहरूपक्रिया जीवनी उपयोगलक्षणक्रिया तथापुद्गलनी
मिलवाविखरवारूपक्रियानो करवापणो एटलेजे पर्यायनीप्रवृत्ति तेअर्थक्रिया अनेते
अर्थक्रियानो आधारोधर्म तेनेश्रीसर्वज्ञदेवें द्रव्यत्वपणोकह्योछे.

वलीद्रव्यत्वपणानुंलक्षणांतरकहेछे उत्पादपर्यायनीजे प्रसवशक्ति एटले आवि
र्भावलक्षण जेशक्ति तेनाव्ययीभूतपर्यायनो तिरोभावथयो अथवा अभावथवारूप
शक्तिनो जेआधारभूतधर्म तेनेद्रव्यत्वकहियें.

४ स्वके० पोतेआत्मा अनेपरके० पुद्गलादिकधर्मास्तिकायादिक अन्यद्रव्यतेने
यथार्थपणेजाणे तेज्ञानकहियें तेज्ञानपांचभेदेंछे तेज्ञानना उपयोगमांआवे ए
वीजेशक्ति तेनेप्रमेयत्वपणोकहियें तेप्रमेयपणोसर्वद्रव्यनुं मूलधर्मछे प्रमाणमांवसा
व्योजेवस्तु तेने प्रमेयपणोकहियें तेसर्वद्रव्यसर्वगुणपर्यायप्रमेयछे अनेआत्मानो
ज्ञानगुण तेमांप्रमाणपणो तथा प्रमेयपणो एवेधर्मछे पोतानोप्रमाणपणोते पोते
जकरेछे दर्शनगुणनोप्रमाण ज्ञानगुणकरेछे केमके दर्शनगुणते विशेषछे सावयव
छे जेसावयवहोय तेविशेषजहोय अने जे विशेषहोयते ज्ञानथीजजणाय दर्शनगु
णते सामान्यधर्मनो ग्राहकछे तेपण प्रमाणकेवाय पणप्रमाणनाभेदकह्याछे तिहां
ज्ञानजग्रह्युंछे तेनुंकारणजेदर्शनोपयोग तेव्यक्तपछतोनथी तेमाटेप्रमाणमध्ये गवेष्यो
नथी तेप्रमाणना मूलबेभेदछे एकप्रत्यक्ष अने बीजोपरोक्ष स्पष्टंप्रत्यक्षं परोक्षमन्य
त् इतिस्याद्वादरत्नाकरवाक्यात्.

५ उत्पादके० उपजवो व्ययके०विणसवो ध्रुवके०नित्यपणो वस्तुनाएकगुणमां

एकसमये एत्रणेपरिणमनें सदापरिणमेछे एवोजेपरिणामते सत्पणोकहियें अनेते सत्पणानोजावते सत्वपणोकहियें.

६ तथावळी १ अनंतजागहानि २ असंख्यातजागहानि ३ संख्यातजागहानि ४ संख्यातगुणहानि ५ असंख्यातगुणहानि ६ अनंतगुणहानि एळप्रकारनीहानि तथा १ अनंतजागवृद्धि २ असंख्यातजागवृद्धि ३ संख्यातजागवृद्धि ४ संख्यातगुणवृद्धि ५ असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंतगुणवृद्धि एववृद्धि एमळप्रकारनीहानि तथावप्रकारनीवृद्धि तेअगुरुलघुपर्यायनी सर्वद्रव्यने सर्वप्रदेशें परिणमेछे तेकोइकप्रदेशेंकोइसमये अनंतजागहानिपणेपरिणमे अनेकोइकसमये कोइकप्रदेशें अनंतजागवृद्धिपणे परिणमेछे एवंबारप्रकारें परिणमेछे ते अगुरुलघुपर्यायनी परिणमनशक्ति तेअगुरुलघुत्वं अगुरुलघुनोजावजाणवो तत्वार्थटीकानेविषेपांचमांअध्यायें अलोकाकाशनेअधिकारें कह्योछे एमएळस्वजाव सर्वद्रव्यनेविषे परिणमेछे एळएद्रव्यनोमूळस्वजावछे द्रव्यनोंजिन्नपणो प्रदेशनोजिन्नपणो तेअगुरुलघुनेजेदपणे थायछे तेमाटे एळमूळसामान्यस्वजावछे एद्रव्यास्तिकधर्मछे अने एनुंपरिणमनते पर्यायास्तिकधर्मछे केटलाकवादीएमकहेछेजे पर्यायनोपिंमतेद्रव्यछे पणद्रव्यपणोजिन्ननथी जेम धूरी पइडा कागमो १ मागळी जूंहरी प्रमुख समुदायने गामोकहियें पण सर्वअवयवथीजिन्न गामापणोकोइदेखातोनथी तेमज ज्ञानादिकगुणथी जिन्नपणोकोइ आत्मादेखातोनथी तेने कहियें जे ज्ञानादिकगुणनेविषे छतिएकपिंमसमुदायता सदाअवस्थितपणो अनेद्रव्यथीमिळीनजाय तथासक्रियावंतपणो इत्यादिकसामान्यधर्मछे छतिअस्तित्व अर्थक्रियावंततेद्रव्यपणो एकपिंमपणोतेवस्तुत्व इत्यादिकते सर्वद्रव्यपणोछे एटले द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक ए वेहुमळीनेद्रव्यपणोछे उक्तंच संमतीदवापज्जवरहिआ नपज्जवादव्वविउप्पत्ति एमूळसामान्यस्वजावनाळजेदकह्या.

तत्रअस्तित्वं उत्तरसामान्यस्वजावगम्यं तेचोत्तरसामान्यस्वजावाअनंताअपिवक्तव्येनत्रयोदश १ अस्तिस्वजावः २ नास्तिस्वजावः ३ नित्यस्वजावः ४ अनित्यस्वजावः ५ एकस्वजावः ६ अनेकस्वजावः ७ जेदस्वजावः ८ अजेदस्वजावः ९ जव्यस्वजावः १० अजव्यस्वजावः ११ वक्तव्यस्वजावः १२ अवक्तव्यस्वजावः १३ परमस्वजावः इत्येवरूपंवस्तुसामान्यानंतमयं

अर्थ ॥ तथावली अस्तित्व उत्तरसामान्यस्वन्नावकहेठे ते उत्तरसामान्यस्वन्नावव स्तुमध्ये अनंताठे पणतेरसामान्यस्वन्नाव अनेकांतजयपताकादिग्रंथे वखाण्याठे ते मांथीलेशमात्र लखियेठैयें तेनानामरूपरनामूलपाठमां सुलनठे माटे लिख्यानथी तथाएनाव्याख्यानथीपणजणासे एतेर सामान्यस्वन्नावें परिणमतिवस्तुहोय.

स्वद्रव्यादिचतुष्टयेनव्याप्यव्यापकादिसंबंधि
स्थितानांस्वपरिणामात् परिणामांतरागमनहे
तुः वस्तुनःसद्रूपतापरिणतिः अस्तिस्वन्नावः

अर्थ॥तेमां१प्रथम अस्तिस्वन्नावनुं लक्षणकहेठे स्वके०पोतानाद्रव्यादिकचारधर्म तेनोजेमां व्यापकपणोछे १द्रव्यतेगुणपर्यायना समुदायनो आधारपणो २क्षेत्रतेप्रदेश रूप सर्वगुणपर्यायनी अवस्थानेराखवापणो जेजेनेराखे तेतेनुंक्षेत्रजाणवुं ३ कालते उत्पादव्यय ध्रुवपणेवर्त्तनाथवावते सर्वगुणपर्यायनो कार्यधर्म तिहांजीवद्रव्यनुं १स दृश्यप्रदेशगुणनोसमुदायद्रव्यछे तेगुणपर्यायनो जनकपणो तेस्वद्रव्यअने२जीवनाअ संख्यातापदेशतेसर्वपर्यायनोस्वक्षेत्रपर्यायतेजाणवा एटले देखवादिकजेगुणनोपर्याय तेनुंजेक्षेत्र तेस्वक्षेत्र ३पर्यायमध्ये कारणकार्यादिकनो जेउत्पादव्यय तेस्वकाल तथा ४ अतीतअनागत वर्त्तमानतुंपरिणमनतेस्वन्नाव तेकार्यादिकधर्म जेमज्ञानगुणनोप र्यायजाणंगपणो वेदारणो परिछेदकपणो विवेचनपणोइत्यादिक स्वन्नाव एमस्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वन्नाव जेपरिणामिकपणेपरिणमता तेनीअस्तिताकेवी एसर्वनीवर्त्ति वेतेदअस्तिस्वन्नावछे एअस्तिस्वन्नावेंद्रव्यछे तेपोतानोमूलधर्ममूकीअन्यधर्मपणे परिणम तोनथी परिणामांतरे आगमनछे एअस्तिस्वन्नावते सर्वद्रव्यमां पोतानागुणपर्यायनो सालसी जेअस्तितेसद्रूपता तनारूपपणानी परिणतिलेवी सर्वद्रव्य पोतानेंधर्मेंजप रिणमे पणजेजीवद्रव्यते अजीवद्रव्यपणेनपरिणमे तथा एकजीव ते अन्यजीवपणे नपरिणमे धर्मास्तिकायते अन्यगुणपणेनपरिणमे ज्ञानगुणनेविषे दर्शनादिकगुण नीनास्तिताछे अनेज्ञाननाधर्मनीअस्तिताछे तथा एकगुणनापर्यायअनंताछे तेसर्वपर्या यमांअस्तिताछे पण एकपर्यायनाधर्म बीजापर्यायमांनथी अने बीजापर्यायनाधर्म पे हलापर्यायमांनथी माटेसर्व पोतानेंधर्मेंजअस्तिछे एरीतेंअस्ति नास्तिनुं ज्ञानसर्वत्रकरवुं एद्रव्यनेविषे प्रथमअस्तिस्वन्नावकह्यो.

अन्यजातीयद्रव्यादीनां स्वीयद्रव्यादिचतुष्टयतयाव्यवस्थि
तानांविवक्षिते परद्रव्यादिकेसर्वदैवाभावाविच्छिन्नानां अन्य
धर्माणांव्यावृत्तिरूपोभावः नास्तिस्वभावः यथाजीवेस्वीयाः
ज्ञानदर्शनादयोभावाःअस्तित्वेपरद्रव्यस्थिताः अचेतना
दयोभावानास्तित्वे साचनास्तिताद्रव्येअस्तित्वेनवर्तते घटेघ
टधर्माणां अस्तित्वं पटादिसर्वपरद्रव्याणांनास्तित्वंएवंसर्वत्र

अर्थ ॥ हवेवीजानास्तिस्वभावनुं स्वरूपलखियेंछैयें अन्यके० वीजाजेद्रव्यादिक जेद्रव्यगुणपर्याय तेनापोताना जेद्रव्यक्षेत्रकालभाव तेतेहिजद्रव्यमां सदाअवर्तन पणेपरिणमेछे एटले विवक्षित द्रव्यादिकथी परजेवीजाद्रव्यादिकना जेधर्म ते ते मांसदाअभावपणे निरंतरअविछेदछे तेमाटेपरद्रव्यादिकना धर्मनीव्यावृत्तितापणा नोजेपरधर्म ते विवक्षितद्रव्यमांनथी एवाद्रव्यमांजेभावछे तेनास्तिस्वभावजाणवो जे मजीवनेविषे ज्ञानदर्शनादिक पोतानाजेभाव तेतोअस्तिपणेछे अनेपरद्रव्यमां र ह्याजेअचेतनादिकभाव तेनीनास्तिताछे एटलेतेधर्मजीवद्रव्यमांनथी माटे परधर्मनी नास्तिताछे पणतेनास्तिता तेद्रव्यमध्ये अस्तिपणेरहीछे जेमघटनाधर्मघटमांछे ते थीघटमां घटधर्मनोअस्तित्वपणोछे पणपटादिसर्वपरद्रव्योनो नास्तित्वपणो ते घट नेविषेरह्योछे तथाजीवमध्ये जीवज्ञानादिकगुण तेअस्तित्वपणेछे पणपुद्गलभाववर्णादि क जीवमध्येनथी माटेवर्णादिकनीनास्ति ते जीवमध्येरहिछे श्रीभगवतीसूत्रेकह्युंछे हेगौतम अथित्तं अथित्तेपरिणमयी नथित्तं नथित्तेपरिणमयी तथाठाणांगसूत्रे १ सियअत्थि २ सियनत्थि ३ सियअत्थिनत्थी ४ सियअवत्तव्वं एचोभंगीकहीछे अ नेश्रीविशेषावश्यकमध्येकह्युंछेके जे वस्तुनो अस्तिनास्तिपणोजाणे तेसम्यग्ज्ञानी अ नेजेनजाणे अथवा अयथार्थपणेजाणे ते मिथ्यात्वी उक्तंच सदसदविशेषणाउ भवहेउजहछीउवलंभाउ॥नाणफलाभावाउ मिछादिठ्ठिस्सअन्नाणं॥१॥ एगाथानीटीका मध्ये स्याद्वादोपलक्षितवस्तुस्याद्वादश्चसप्तभंगीपरिणामः एकैकस्मिन्द्रव्येगुणेपर्या येचसप्तसप्तभंगाभवंत्येव अतः अनंतपर्यायपरिणतेवस्तुनिअनंताः सप्तभंग्योभवंति इतिरत्नाकरावतारिकायां तेद्रव्यनेविषे गुणनेविषे पर्यायनेविषे स्वरूपेंसातभंगाहोय जेएसातभंगानो परिणामते स्याद्वादपणोकहियें.

तथाहि स्वपर्यायैःपरपर्यायैरुनयपर्यायैः सद्भावेनासद्भा
वेनोनयेनवार्पितोविशेषतः कुंनःअकुंनः कुंनाकुंनोवा
अवक्तव्योनयरूपादिनेदोनवति सप्तनंगीप्रतिपाद्यतेइत्य
र्थः उंष्ठग्रीवाकपोलकुक्षिबुध्नादिनिः स्वपर्यायैःसद्भावेना
र्पितः विशेषतःकुंनकुंनोनण्यते सन्घटइतिप्रथमनंगोन
वति एवंजीवः स्वपर्यायैः ज्ञानादिनिः अर्पितः सन्जीवः

अर्थ ॥ एसप्तनंगी परनीअपेक्षायेंनथी तेड्व्यादिकमध्येजछे यथास्वधर्मेंपरिणम
वुं एअस्तिधर्मछे अनेपरड्व्यनाधर्मेंनपरिणमवुं एनास्तिवुंफलछे तेमाटेएसप्तनंगी
तेवस्तुधर्मेंछे तेविशेषावश्यकथी सप्तनंगीलखियेंछैयें एकविवक्षितवस्तु स्वके० पोता
नेपर्यायें सद्भावके० छतापणेछे अनेपरपर्यायेंजे अन्यड्व्यनेपरिणमे तेनो असद्
नावके० अछतापणो परिणमेछे तथाजेछता अथवाअछतापर्याय तेनोछतापणोछे
कोइकपणे अछतापणोछे माटे छताअछतापणोपण तेजकालेंछे केमके वस्तुमध्ये अ
नेकधर्मेछे तेसर्वकेवलीने एकसमयें समकालेंनासेछे तेपणवचनेनंगांतरेजकहीशके
अनेछद्मस्थने श्रद्धामांतोसर्वधर्म समकालेसद्दहेछे पण छद्मस्थनोउपयोग असंख्या
तसमयीछे अनुक्रमेछे पूर्वापरसापेक्षछे तेथीसप्तनंगेनासनछे जेवस्तुमांसमकालेंछे स
मकेतिनी श्रद्धामां समकालेछे अने केवलीनाजासनमां समकालेछे तेश्रुतज्ञानीनाजा
सनमां क्रमपूर्वकछे केमके नापासर्वक्रमेंकेवायछे तेथीअसत्यथाय तेनेजोस्यात्पदेंपरु
पियेंजाणियें तोसत्यथाय माटेस्यात्पूर्वक सप्तनंगीकहियें ड्व्यगुणपर्याय स्वनावस
वेंमध्येछे तेरीतेंसद्दहवी तेदृष्टांतेकरीकहेछे उंष्ठके० होठ गावड कांठो कपाल तलो
कुक्षिपेटो बुध्न पोहोलो इत्यादिस्वपर्यायेंकरी घटछतोछे तेघटनेस्वपर्यायें छतापणे
अर्पितकरियें तेवारेंते कुंनकुंनधर्मे सन्के० छतोछे पणअछतादिकधर्मेनी छतिसापे
क्षराखवाने स्यात्पूर्वककहेवो एटले स्यात्अस्तिघटः एप्रथमनंगोजाणवो तथाजीवा
दिड्व्यनेविषे जीवनाज्ञानादिगुण तेनेपर्यायें जीवड्व्यनेनित्यादि स्वनावेंकरीने स्या
त्अस्तिजीवः एमसर्वड्व्यनेकहेवो यद्यपि जीवतथाअजीवनो नित्यपणो सरिखोना
से पणतेएनोतेमांनही अनेतेनोएमांनही जोपणजीवसर्व एकजातीड्व्यछे पणएकजी
वमांजे ज्ञानादिगुणछे तेबीजाजीवमांनथी माटेसर्वड्व्य स्वधर्मेंजअस्तिछे अने परध
र्मेनास्तिछे एमस्यात्अस्तिजीव एप्रथमनंगजाणवो.

तथापटादिगतैस्त्वक्त्राणादिभिः परपर्यायैरसद्भावेनार्पितः अविशेपितः अकुंभोभवति सर्वस्यापिघटस्यपरपर्यायैर सत्वविवक्षायामसन्घटः एवंजीवोपिमूर्त्तत्वादिपर्यायैः अ सत्जीव इतिद्वितीयोभंगः

अर्थ ॥ पटनेविपेरह्यात्वक्जे शरीरनीचामडीनेढाके जांत्रोपयराय इत्यादिपर्याय तेघटनापर्यायनथी परपर्यायछे पटनेविपेरह्याछे घटनेविपेएपर्यायनी नास्तिछे तेथी एपर्यायनो असद्भावछे तेमाटे एघटनापर्यायनथी एमसर्वपर्यायें घटनथी तेवारेंप रपर्यायना अछतापणानीविवक्षायें अछतोघटछे एमजीवपण मूर्त्तिपणादिक अचेत नादिपर्यायनो जीवमध्येअसत् अछतापणो तेथीजीवपरपर्यायेंनास्तिछे माटे स्यात् नास्ति एवीजोभांगोजाणवो केमके परपर्यायनी नास्तितानुं परिणमन द्रव्यनेविपेछे.

तथासर्वोघटःस्वपरोभयपर्यायैःसद्भावासद्भावाभ्यांसत्वास त्वाभ्यामर्पितोयुगपद्वक्तुमिष्टोऽवक्तव्योभवति स्वपरपर्या यसत्वासत्वाभ्यांएकैकेनाप्यसांकेतिकेनशब्देन सर्वस्यापि तस्यवक्तुमशक्यत्वादिति एवंजीवस्यापि सत्वासत्वाभ्यामे कसमयेनवक्तुमशक्यत्वात् स्यादवक्तव्योजीव इतितृतीयो भंगः एतेत्रयःसकलादेशाः सकलंजीवादिकंवस्तुग्रहणपरत्वात्

अर्थ ॥ सर्वघटादिवस्तुछे तेस्वपर्यायजे पोतानासद्भावपर्याय तेणेकरी छतापणे केवाय तथा परनेपर्यायें अछतापणकहेवाय तेवारें स्वपर्यायनोछतापणो परपर्याय नोअछतापणो एवेधर्मसमकालेंछे पणएकसमयेंकेवायनही तेमाटेएघटादिद्रव्यतेस्व द्रव्यमां स्वपर्यायनोसत्वपणो परपर्यायनोअसत्वपणो तेकोइपणएक सांकेतिकशब्दें करी केवानेसमर्थनही माटे सत्व अस्तिपणो असत्व नास्तिपणो ते एकसमयेंके वामां असमर्थछे तेथीवस्तुस्वभावनावेधर्म तेएकसमयेंछताछे तेनोज्ञानकरवामाटे स्यात्अवक्तव्य एवचनवोल्या केमके कोइकनेएवोबोधथाय जेसर्वथीवचने अगोचरज छे तेमाटेस्यात्पददीधो स्यात्के० कथंचितपणे कोइकरीतें एकसमयेंनकेवाय माटे स्यात्अवक्तव्यएजीवछे एमसर्वद्रव्यजाणवा एत्रीजोभांगोथयो एत्रणभंगासकलादेशी छे सर्ववस्तुने संपूर्णपणेग्रहेवारूपछे जीवादिकजेवस्तु तेनेसंपूर्णग्रहेवावंतछे.

अथचत्वारोविकलादेशाः तत्र एकस्मिन्देशेस्वपर्यायसत्वेन अन्यत्रतुपरपर्यायसत्वेन संश्च असंश्चभवति घटोऽघटश्च एवं जीवोपिस्वपर्यायैःसन् परपर्यायैः असन् इतिचतुर्थोभंगः

अर्थ ॥ हवेचारभांगाविकलादेशी कहेछे जेवस्तुनुंस्वरूपकेवो तेनाएकदेशनेजय हे एस्वरूपछे तिहांएकदेशनेविषे स्वपर्यायनोसत्वपणो अस्तिपणोगवेषेछे तेवारेवस्तु सदसत्पणेछे एटलेएघटछे अनेएघटनथी एमजीवपणस्वपर्यायेंसत् परपर्यायेंअ सत् तेमाटेएकसमयेंअस्तिनास्तिरूपछे पणकेवामांअसंख्यातसमयेंछे तेमाटेस्यात् पूर्वकछे एम स्यात् अस्तिनास्ति एचोथोभंगोजाणवो.

तथा एकस्मिन्देशेस्वपर्यायैः सद्भावेनविवक्षितः अन्यत्र तुदेशेस्वपरोभयपर्यायैःसत्वासत्वाभ्यांयुगपदसंकेतिकेनश ब्देन वक्तुंविवक्षितः सन्अवक्तव्यरूपः पंचमोभंगोभवति एवंजीवोपिचेतनत्वादिपर्यायैःसन्शेषैः अवक्तव्यइति

अर्थ॥ तथा एकदेशेंपोतानेपर्यायें सद्भ्यादिकें छतापणेगवेषीयें अने अन्यके० बीजादेशोनेविषे स्वपरएबेपर्यायें सत्वछतापणें तथा असत्व अछतापणें समकालें असं केतपणे नामनेअणकेवेगवेषीयें तेवारेंसत्के० अस्तिअवक्तव्यरूप भांगोउपजे अने एभांगोछतोबीजाछभांगाछे तेनीगवेषणामाटे स्यात्पदजोडीयें एटलेस्यात्अस्ति अव क्तव्य एपांचमोभांगोजाणवो जेमजीवनेविषे चेतनपणोसुखवीर्यगुणें अस्तिछे अनेना स्तिपणे अस्तिनास्ति समकालपणे वचनगोचरनावे ते स्यात्अस्तिअवक्तव्य.

तथा एकदेशेपरपर्यायैरसद्भावेनार्पितोविशेषतः अन्ये स्तुस्वपरपर्यायैःसद्भावासद्भावाभ्यांसत्वासत्वाभ्यां युगप दसंकेतिकेनशब्देनवक्तुंविवक्षितकुंभोऽसन् वक्तव्यश्चभ वति अकुंभोवक्तव्यश्चभवतीत्यर्थः देशेतस्याकुंभत्वात् देशेअवक्तव्यत्वादिति षष्ठोभंगः

अर्थ ॥ तथाएकदेशेंपरपर्याय जेनास्तिपर्याय तेने असद्भावके० अछतापणे अर्पि तकरीने १ स्थापणगवेषीयें तेवारपछिअन्यके०बीजास्वपर्यायें अस्तिपणोतथापरपर्या यजेनास्ति एबे सत्वके० छतापणे असत्वके० अछतापणे युगपत्समकालेक

ह्यिं एसंकेतिक शब्दने अनावें केवामांनावे अनेतेकह्याविनाश्रोतानेज्ञानकेमथाय तेमाटेस्यात्पदते अन्यन्नांगानी सापेक्षतामाटे तथा सर्वधर्मनीसमकालता जणाववा माटे स्यात्नास्तिअवक्तव्य एछठोनांगोजाणवो एटलेजीवपोताने स्वगुणेतोछतापणो सर्वपर्याय समकालनोअवक्तव्यपणो एस्यात्नास्तिअवक्तव्य छठोनांगोथयो.

तथाएकदेशेस्वपर्यायैःसद्भावेनार्पितः एकस्मिन्देशे परप र्यायै रसद्भावेनार्पितः अन्यस्मिंस्तुदेशेस्वपरोन्नयपर्या यैः सद्भावासद्भावाभ्यां युगपदेकेनशब्देनवक्तुं विवक्षि तःसन्असन्अवक्तव्यश्चन्नवतिइतिसप्तमोन्नंगः एतेनएक स्मिन्वस्तुन्यर्पितानर्पितेनसप्तन्नंगीउक्ता ॥

अर्थ ॥ तथाएकदेशें स्वपर्यायनेछतापणे अर्पितकरियें अनेएकदेशें परपर्यायने अछतापणेगवेषियें अनेतेसर्वपर्याय समकालेंनेलारह्याछे पणवचनेकेवायनही ए टलेअस्तिपणोपणछे अनेनास्तिपणोपणछे एसर्वधर्म समकालेंछे पणवचनेगोचरथा यनही एअपेक्षायें स्यात्अस्ति स्यात्नास्ति स्यात्अवक्तव्य एरीतेंवस्तुनोपरिणमनछे एसातमोनांगोजाणवो एसप्तन्नंगी अर्पितअनर्पितपणेकही तेअर्पितएकधर्मजहोय एमएकधर्मनेविषेसप्तन्नंगीकहीः

तत्रजीवःस्वधर्मेज्ञानादिन्निःअस्तित्वेनवर्त्तमानः तेनस्यात् अस्तिरूपःप्रथमन्नंगः अत्रस्वधर्माअस्तिपदगृहीताःशेषा नास्तित्वादयोधर्माः अवक्तव्यधर्माश्चस्यात्पदेनसंगृहीताः

अर्थ ॥ हवेस्वरूपपणेसप्तन्नंगीकहेछे जेएकद्रव्यनेविषे अथवाएकगुणनेविषे एक पर्यायनेविषे एकस्वन्नावनेविषे सातसातन्नांगा सदापरिणमेछे तेरीतेंसप्तन्नंगीकहेछे स्याद्वादरत्नाकरावतारिकामध्येकह्योछे एकस्मिन्जीवादौ अनंतधर्मापेक्षासप्तन्नंगीना मानलं एवंचनयीजाणीलेजो अत्थिजीवे इत्यादिगाथायीजाणजो एसुयगडांगसूत्रेंछे हवे पेलोन्नांगोलखियेंछेयें तिहांजीवद्रव्यपोताने स्वद्रव्यपिंमगुणपर्यायसमुदाय आ धारपणो स्वक्षेत्रअसंख्यप्रदेशें ज्ञानादिगुणनुंअवस्थान अगुरुलघुताहानिवृद्धिनोमान अनेस्वकाल तेगुणनीवर्त्तना उत्पादव्ययनीपरिणमननोनिन्नस्वन्नावतथाअनंतज्ञानअ नंतदर्शन अनंतचारित्र अनंतदान अनंतलान्न अनंतन्नोग अनंतउपन्नोग अनंतवी र्य अनंतअव्याबाध अरूपी अशरीरी परमक्षमा परममार्दव परमआर्जव स्वरूपनो

अथचत्वारोविकलादेशाः तत्रएकस्मिन्देशेस्वपर्यायसत्वेन अन्यत्रतुपरपर्यायसत्वेन संश्चअसंश्चभवति घटोऽघटश्चएवं जीवोपिस्वपर्यायैःसन् परपर्यायैः असन् इतिचतुर्थोभंगः

अर्थ ॥ हवेचारभांगाविकलादेशी कहेछे जेवस्तुनुंस्वरूपकेवो तेनाएकदेशनेजग्र हे एस्वरूपछे तिहांएकदेशनेविषे स्वपर्यायनोसत्वपणो अस्तिपणोगवेषेछे तेवारेंवस्तु सद्असत्पणेछे एटलेएघटछे अनेएघटनथी एमजीवपणस्वपर्यायेंसत् परपर्यायेंअ सत् तेमाटेएकसमयेंअस्तिनास्तिरूपछे पणकेवांमांअसंख्यातसमयेंछे तेमाटेस्यात् पूर्वकछे एम स्यात् अस्तिनास्ति एचोथोभंगोजाणवो.

तथाएकस्मिन्देशेस्वपर्यायैः सद्भावेनविवक्षितः अन्यत्र तुदेशेस्वपरोभयपर्यायैःसत्वासत्वाभ्यांयुगपदसंकेतिकेनश ब्देन वक्तुंविवक्षितःसन्अवक्तव्यरूपः पंचमोभंगोभवति एवंजीवोपिचेतनत्वादिपर्यायैःसन्शेषैः अवक्तव्यइति

अर्थ॥ तथा एकदेशेंपोतानेपर्यायें सद्भ्यादिकें - छतापणेगवेषीयें अने अन्यके० बीजादेशोनेविषे स्वपरएबेपर्यायें सत्वछतापणें तथा असत्व अछतापणें समकालें असं केतपणे नामनेअणकेवेगवेषीयें तेवारेंसत्के० अस्तिअवक्तव्यरूप भांगोउपजे अने एभांगाछतांबीजाछभांगाछे तेनीगवेषणामाटे स्यात्पदजोडीयें एटलेस्यात्अस्ति अव क्तव्य एपांचमोभांगोजाणवो जेमजीवनेविषे चेतनपणोसुखवीर्यगुणें अस्तिछे अनेना स्तिपणे अस्तिनास्ति समकालपणे वचनगोचरनावे ते स्यात्अस्तिअवक्तव्य.

तथाएकदेशेपरपर्यायैरसद्भावेनार्पितोविशेषतः अन्यै स्तुस्वपरपर्यायैःसद्भावासद्भावाभ्यांसत्वासत्वाभ्यां युगप दसंकेतिकेनशब्देनवक्तुंविवक्षितकुंभोऽसन् वक्तव्यश्चभ वति अकुंभोवक्तव्यश्चभवतीत्यर्थः देशेतस्याकुंभत्वात् देशेअवक्तव्यत्वादिति षष्ठोभंगः

अर्थ ॥ तथाएकदेशेंपरपर्याय जेनास्तिपर्याय तेने असद्भावके० अछतापणे अर्पि तकरीने मुख्यपणेगवेषीयें तेवारपछिअन्यके०बीजास्वपर्यायें अस्तिपणोतथापरपर्या यजेनास्तिपर्याय एबे सत्वके० छतापणे असत्वके० अछतापणे युगपत्समकालेक

हियें एसंकेतिक शब्दने अनावें केवामांनावे अनेतेकह्याविनाश्रोतानेज्ञानकेमथाय तेमाटेस्यात्पदते अन्यनांगानी सापेक्षतामाटे तथा सर्वधर्मनीसमकालता जणाववा माटे स्यात्नास्तिअवक्तव्य एछठोनांगोजाणवो एटलेजीवपोताने स्वगुणेतोछतापणो सर्वपर्याय समकालनोअवक्तव्यपणो एस्यात्नास्तिअवक्तव्य छठोनांगोथयो.

तथाएकदेशेस्वपर्यायैःसभ्भावेनार्पितः एकस्मिन्देशे परप र्यायै रसभ्भावेनार्पितः अन्यस्मिंस्तुदेशेस्वपरोभ्नयपर्या यैः सभ्भावासभ्भावाभ्यां युगपदेकेनशब्देनवक्तुं विवक्षि तःसन्असन्अवक्तव्यश्चभ्नवतिइतिसप्तमोभ्नंगः एतेनएक स्मिन्वस्तुन्यर्पितानर्पितेनसप्तभ्नंगीउक्ता ॥

अर्थ ॥ तथाएकदेशें स्वपर्यायनेछतापणे अर्पितकरियें अनेएकदेशें परपर्यायने अछतापणेगवेषियें अनेतेसर्वपर्याय समकालेंनेजारह्याछे पणवचनेकेवायनही ए टलेअस्तिपणोपणछे अनेनास्तिपणोपणछे एसर्वधर्म समकालेंछे पणवचनेगोचरथा यनही एअपेक्षायें स्यात्अस्ति स्यात्नास्ति स्यात्अवक्तव्य एरीतेंवस्तुनोपरिणमनछे एसातमोनांगोजाणवो एसप्तनंगी अर्पितअनर्पितपणेकही तेअर्पितएकधर्मजहोय एमएकधर्मनेविषेसप्तनंगीकहीः

तत्रजीवःस्वधर्मैर्ज्ञानादिभिःअस्तित्वेनवर्त्तमानः तेनस्यात् अस्तिरूपःप्रथमभ्नंगः अत्रस्वधर्माअस्तिपदगृहीताःशेषा नास्तित्वादयोधर्माः अवक्तव्यधर्माश्चस्यात्पदेनसंगृहीताः

अर्थ ॥ हवेस्वरूपपणेसप्तनंगीकहेछे जेएकद्रव्यनेविषे अथवाएकगुणनेविषे एक पर्यायनेविषे एकस्वनावनेविषे सातसातनांगा सदापरिणमेछे तेरीतेंसप्तनंगीकहेछे स्याद्वादरत्नाकरावतारिकामध्येकह्योछे एकस्मिन्जीवादौ अनंतधर्मापेक्षासप्तनंगीना मानंत्यं एवंचनंयीजाणीलेजो अत्थिजीवे इत्यादिगाथाथीजाणजो एसुयगडांगसूत्रेंछे हवे पेलोनांगोलखियेंछैयें तिहांजीवद्रव्यपोताने स्वद्रव्यपिंमगुणपर्यायसमुदाय आ धारपणो स्वक्षेत्रअसंख्यप्रदेशें ज्ञानादिगुणनुंअवस्थान अगुरुलघुताहानिवृद्धिनोमान अनेस्वकाल तेगुणनीवर्त्तना उत्पादव्ययनीपरिणमननोभिन्नस्वनावतथाअनंतज्ञानअ नंतदर्शन अनंतचारित्र अनंतदान अनंतलान अनंतनोग अनंतउपनोग अनंतवी र्य अनंतअव्याबाध अरूपी अशरीरी परमक्षमा परममार्दव परमआर्जव लघुपणो

गीप्रमुख स्वस्वनाव एअनंतज्ञेयज्ञायकपणे जीवद्रव्यठतोठे एमजीवनोज्ञानगुण सर्व में सकलज्ञेयज्ञायकपणो स्वशक्तिधर्में अनंतअविनागें एकएकपर्यायअविनागमां स र्वेअनिलाप्य अननिलाप्य स्वनावनोजाणगपणोठे इहांविस्तारेंलखियेंठेयें तिहांमति ज्ञानना पर्यायजूदाठे श्रुतज्ञानना अविनागजूदाठे मनपर्यायज्ञानना अविनागजू दाठे केवलज्ञानना पर्यायजूदाठे श्रीविशेषावश्यकें गणधरवादनेठेडेकह्योठे जोआव रवायोग्यवस्तुनिन्नठे तोआवरणजूदाठे तिहांक्षयोपशमनेनेदेंजाणेठे तेपरोक्ष अथ वादेशथीजाणेठे सर्वथाआवरणगयेथकेप्रत्यक्षजाणे पणकेवलज्ञानसर्वनावनोसंपू र्ण प्रत्यक्षज्ञायक तेसंपूर्णप्रगट्यो तेवारेंबीजाज्ञाननीप्रवृत्तिठे पणनिन्नपडतिनथी माटेतेकेवलज्ञाननो जाणपणोज केवायठे तथाकोइक ज्ञानगुणना अविनागसर्व एकजातीनाकहेठे तेअविनागमध्ये वरणादिकजाणवानीशक्ति अनेकप्रकारनीठे ते मांजेआवरणटले जे. शक्तिप्रगटे तेशक्तिनुं मतिज्ञानादिनिन्ननामठे अनेसर्वआवर णगयाथी एककेवलज्ञानरखुंठे ठद्मस्थज्ञाननोनासठे एपणव्याख्यानठे एवोज्ञान गुणपोतानास्वपर्याय ज्ञायक परिछेदक वेदृत्वादिकेंअस्तिठे एमसर्वगुणमां स्वधर्मनी अस्तिताकेवी तेमजजेअविनागरूपपर्यायठे जेनासमूहनी एकप्रवृत्तिनेगुणकहियेंठेयें तेपणस्वकार्यकारणधर्में अस्तिठे एमठद्रव्यनुंस्वरूप स्वस्वरूपेंअस्तिठे अने अन्यठ नांगापणठेएवोसापेक्षतामाटे स्यात्पददेइनेबोलवो तेस्यात्अस्तिएप्रथमनांगापणो थयो एटले गवेष्यो जेअस्तिधर्म तेपणनास्तिपणासहितठे एटलेअस्तिकहेतांथकां नास्तिप्रमुखठनांगानीठतिठे तिहांशब्दसहित उपयोगथयो तेथीसत्यपणोथयो.

तथास्वजात्यन्यद्रव्याणां तद्धर्माणांचविजातिपरद्रव्याणां
तद्धर्माणांच जीवेसर्वथैवअनावात्नास्तित्वंतेनस्यात् ना
स्तिरूपोद्वितीयोनंगः अत्रपरधर्माणांनास्तित्वं नास्तिपदे
नगृहीतं शेषाअस्तित्वादयः स्यात्पदेगृहीताइति

अर्थ॥हवेबीजोनांगोकहेठे जेएकजीवनुं स्वरूप उपयोगमां आण्योठे तेजीवनेविषे अन्यजे सिद्धसंसारी जीवठेते सर्वना गुणपर्याय अस्तित्वादिप्रमुख सर्वधर्मनीनास्तिठे अने अजीवद्रव्यतथातेना जडतादिकसर्वधर्मनीनास्तिठे जेम अग्निमांदाहकपणोठे तेनीपासेबीजोअग्निनोकणिउंपड्योठे तेपणदाहकठे पणतेदाहकपणोनिन्नठे एटले तेकणीआनोदाहकपणो तेअग्निमांनथी अने तेअग्निनोदाहकपणो तेकणीआमांनथी नेमज एकजीवमांज्ञानादिकगुणठे तेबीजामांनथी अनेबीजाजीवमां जेज्ञानादिकगु

एछेते तेमांनथी वाकीसरिखाछे तेमाटेजाणवादिककार्यसरिखाकरे तोपणसर्वमांपोत पोतानागुणछे पणकोइद्रव्यनागुण कोइद्रव्यमांआवतानथी तेमाटे स्वजाति अन्यद्र व्यपणो अन्यगुणपणो तथाअन्यधर्मपणो ते सर्वनीनास्तिछे एमजगुणमांपणसर्व अन्यद्रव्यादिकनीनास्तिछे तथापर्यायनाअविनागमां पण स्वजातिअविनागकार्यता कारणतानीनास्तिछे तेमाटेपरद्रव्यपणो परक्षेत्रपणो परकालपणो परनावपणोएनी नास्तिछे एवोनास्तिपणोपण तेमांजरह्योछे तेमाटेस्यात्नास्तिपणो एनांगोपणतेमांज छे एमएकजमात्रनास्तिपणोकह्येथके अस्तिपणो तथाएककालपणोपणछे तथाजीव मांजडतागुणनीनास्तिछे एटलेजडतानीनास्तिते जीवमांजरहीछे इत्यादिकअनंताधर्म नीसापेक्षतामाटे स्यात्पदेंबोलतां सर्वधर्मनोनासनथयो एटलेसत्यताथाय तेमाटे स्यात्नास्ति एवीजोनांगोकह्यो.

केषांचिद्धर्माणां वचनगोचरत्वेन तेनस्यात्अवक्तव्य इ
तितृतीयोनंगः अवक्तव्यधर्मसापेक्षार्थंस्यात्पदग्रहणं

अर्थ ॥ हवेत्रीजोनांगोकहेछे जेवस्तुहोय तेमां केटलाकधर्मएवाछे जेवचनेकरी केवातानथी तेअवक्तव्यछे तेकेवलीनेज्ञानमांजणायछे पणवचनेकरीतेपणकहीश केनहीं तेमाटेतेवाधर्मनीअपेक्षायें वस्तुअवक्तव्यछे एटलेकहेताथकां वक्तव्यनीनाथ यीपणकेटलाकधर्मवस्तुमध्येवक्तव्यछे तेजणाववामाटे स्यात्पदग्रहणकरीने स्यात् अवक्तव्य एत्रीजोनांगोकह्यो.

अत्रअस्तिकथने असंख्येयाः नास्तिकथनेप्यसंख्येयाः
समयावस्तुनिएकसमये अस्तिनास्तिस्वनावौ समकवर्त्त
मानौ तेनस्यात्अस्तिनास्तिरूपश्चतुर्थोनंगः

अर्थ ॥ हवेचोथोनांगोकहेछे जेअस्तिएवोशब्द उच्चारकरतांपणअसंख्यातसमयथा य तथानास्तिएशब्द उच्चारकरतांपण असंख्यातसमयथाय अनेवस्तुमांतो अस्तिधर्म नास्तिधर्मएवेहुएकसमयमांछे तेवेहुसमकालेंजणाववामाटे अनेजेअस्तिते नास्तिनथा यतथाजेनास्ति तेअस्ति नथाय तेसापेक्षतामाटेस्यात्अस्तिनास्ति एचोथोनांगोजाणवो

तत्रअस्तिनास्तिनावाःसर्वेवक्तव्याएवनअवक्त
व्याइतिशंकानिवारणायस्यात्अस्ति अवक्तव्य
इतिपंचमोनंगः स्यान्नास्तिअवक्तव्यइतिषष्ठः

अर्थ ॥ हवेपांचमोतथा छठोनांगोकहेछे तिहांस्यात्अवक्तव्य एमकेवाथी द्रव्य तेमूलधर्मएकलो अवक्तव्यथयो तेसंदेहनिवारवाने कह्योजे स्यात्अस्तिअवक्तव्य व स्तुमांअनंताअस्तिधर्मछे पणवचनेअगोचरछे अनेअनंताधर्मवचनगोचरपणछे तेना सापेक्षतामाटे स्यात्पदयुक्तकरीने एटलेस्यात्अस्तिअवक्तव्यः एपांचमोनांगोजाणवो एमजपांचमानीरीतें स्यात्नास्तिअवक्तव्यः एछठोनांगोजाणवो.

अत्रवक्तव्याभावाः स्यात्पदेगृहीताः अत्रअस्तिभावावक्त व्यास्तथाअवक्तव्याः तथानास्तिभावावक्तव्याअवक्तव्याः एकस्मिन्वस्तुनिगुणेपर्यायेएकसमयेपरिणममानाइतिज्ञा पनार्थं स्यात्अस्तिनास्तिअवक्तव्यइतिसप्तमोभंगः अत्र वक्तव्याभावास्तेस्यात्पदेसंगृहीताइतिअस्तित्वेनअस्तिध र्मानास्तित्वेननास्तिधर्मायुगपदुभयस्वभावत्वेनवक्तुमशक्य त्वात्अवक्तव्यःस्यात्पदेचअस्त्यादीनामेवनित्यानित्याद्यने कांतसंग्राहकं

अर्थ ॥ हवे सातमोनांगोकहेछे इहांअस्तिभावपणोवक्तव्यछे तेमजनास्तिभावप णवक्तव्यछे अने अवक्तव्यपणछे एसर्वधर्मएकसमयमां एकवस्तुमध्ये तथाएकगुणम ध्ये तथाएकपर्यायमध्ये समकालेंपरिणमेछे तेजणाववामाटे अस्तिनास्तिअवक्तव्यः एसातमोनांगो इहांअस्तितेनास्तिनथाय अने नास्तितेअस्तिनथाय तथावक्तव्यते अवक्तव्यनथाय अनेअवक्तव्यते वक्तव्यनथाय तेजणाववानेअर्थे स्यात्पदग्रह्योछे इ हांअस्तिपणेजेभावछे तेअस्तिधर्म अनेनास्तिपणेजेभावछे तेनास्तिपणेग्रह्याछे बेहु समकालेछेतेमाटे एकसमय वक्तव्यके० कहेवामांअशक्यछे असमर्थछे तेथीअवक्तव्य के० अगोचरपणोछे अनेजेस्यात्पदछे तेअस्तिधर्म नास्तिधर्म अवक्तव्यधर्मनोनित्य पणो अनित्यपणोप्रमुख अनेकांतनोसंग्रहकरेछे जेअस्तिधर्मछे तेनित्यपणेपणछे त थाअनित्यपणेपणछे एकपणेछे अनेकपणेछे भेदपणेछे अभेदपणेछे इत्यादिक तेअ स्तिधर्ममांअनेकांतताछे तेनेग्रहेछे केमके वस्तुनोएकगुण तेमांअस्तिपणोछे नास्ति पणोछे नित्यपणोछे अनित्यपणोछे भेदपणोछे अभेदपणोछे वक्तव्यपणोछे अवक्त व्यपणोछे भव्यपणोछे अभव्यपणोछे एअनेकांतपणो एहजस्याद्वादछे तेनुंसंकेति कवाक्य तेस्यात्पदछे एरीतेजाणवो.

आत्मद्रव्यनेविषे स्वधर्मनीअस्तिताछे परधर्मनीनास्तिताछे स्वगुणनोपरिणमवो अनित्यछे अनेतेजगुणपणेनित्यछे तथाद्रव्यपिंडपणेएकछे अनेगुणपर्यायपणेअनेक छे तथाआत्माकारणपणे कार्यपणें समयसमयमांनवानवापणोजेपामेछे तेनवनध र्मछे तोपणआत्मानोमूळधर्मजेपलटतोनथी तेअनवनधर्मछे इत्यादिकअनेकधर्म परि णतियुक्तछे एरीतेषट्द्रव्यनेजाणी निरधारीने हेयोपादेयपणे श्रद्धान भासनथाय तेसम्यक्ज्ञान सम्यक्दर्शनछे एजीवनीशुद्धता तेपरकर्त्ता परभोक्ता परग्राहकता टा ळवानाउपायतुंसाधन तेसाधनकरवे आत्माआत्मापणें मूळधर्मेरहे. तेसिद्धपणो तेनीरुचिव्यसनपणोकरवो एहिजश्रेयछे.

स्यात्अस्ति स्यान्नास्ति स्यात्अवक्तव्यरूपास्त्रयः सकला देशाः संपूर्णवस्तुधर्मग्राहकत्वात् मूलतः अस्तिभावाअ स्तित्वेनसंति नास्तित्वेनसंति एवंसप्तभंगाः एवंनित्यत्व सप्तभंगी अनित्यत्वसप्तभंगी एवंसामान्यधर्माणां विशेष धर्माणां गुणानांपर्यायाणां प्रत्येकंसप्तभंगी तद्यथा

अर्थ ॥ स्यात्अस्ति स्यात्नास्ति स्यात्अवक्तव्य एत्रणभांगा वस्तुनासंपूर्ण रूपनेग्रहे माटेसकलादेशीछे अने शेषरह्याजेचारभांगा तेविकलादेशीछे तेवस्तुनाए कदेशनेग्रहेमाटे. तथावळीअस्तिपणानेविषेजेअस्तिपणो तेनास्तिपणेनथी अनेना स्तिपणोनास्तिपणेछे तेमांअस्तिपणोनथी इहांकोइपुछेके वस्तुमांजेनास्तिपणोते अ स्तिपणेकहोछो तोनास्तिपणामां अस्तिपणानीनाकिमकहोछो तिनेउत्तर जेनास्ति पणोतेअस्तिछे छतापणेछे अने अस्तिधर्मकांइनास्तिपणामांनथी माटेनाकहीछे छति नीनाकहीनथी तथाएमज नित्यपणानीसप्तभंगी तथा अनित्यपणानीसप्तभंगीतेमज सामान्यधर्मसर्वनी भिन्नभिन्नसप्तभंगी तथासर्वविशेषधर्मनीसप्तभंगी तेमजगुणपर्या यसर्वनी जूदीजूदी सप्तभंगी केहवी तद्यथाके० तेकहीदेखाडेछे..

ज्ञानंज्ञानत्वेनअस्तिदर्शनादिभिः स्वजातिधर्मैः अचेत नादिभिः विजातिधर्मैः नास्ति एवंपंचास्तिकायेप्रत्यस्ति कायमनंतासप्तभंग्योभवंति अस्तित्वाभावेगुणाभावात् प दार्थेशून्यतापत्तिः नास्तित्वाभावेकदाचित् परभावत्वेन परिणमनात् सर्वसंकरतापत्तिः व्यंजकयोगेसत्तास्फु

रति तथाअसत्तायाअपिस्फुरणात्पदार्थानामनियताप्र
तिपत्तिः तत्रार्थेतन्नावाव्ययंनित्यं ॥

अर्थ ॥ हवेगुणनीसप्तन्नंगीकहीदेखाडेछे जेमज्ञानगुण ज्ञायकादिकगुणेअस्तिछे अनेदर्शनादिकस्वजातिएकद्रव्यव्यापिगुण तथास्वजातिभिन्नजीवव्यापि ज्ञानादिकस वेगुण अनेअचेतनादिक परद्रव्यव्यापि सर्वधर्मनीनास्तिछे एमपंचास्तिकायनेविषे अ स्तिकायें अनंतिसप्तन्नंगीउपामे एसप्तन्नंगी स्याद्वादपरिणामेंछे तेसर्वद्रव्यादिकमांहे हवे वस्तुमध्येअस्तिपणोनमानियें तोस्योदोषउपजेतेकहेछे जोवस्तुमांअस्तिपणो नमानियें तोगुणपर्यायनोअन्नावथाय अनेगुणनाअन्नावें पदार्थशून्यतापणो पामे तथाजोवस्तुमध्ये नास्तिपणोनमानियेंतो तेवस्तुकदाकालें परवस्तुपणें अथवा परगुणपणें परिणमिजाय तेथीकोइवारे जीवतेअजीवपणोपामे अनेअजीवतेजीवप णोपामे तोसर्वसंकरतादोषउपजे तथा व्यंजनके० प्रकटतानोहेतु तेनेयोगेंछतोधर्म तेफुरे पणजेधर्मनीसत्ताछतिनहोय तेफुरेनही जोनास्तिपणोनमानियें तोअसत्ताप णेफुरे अनेजेवारेंअसत्तास्फुरे तेवारेंद्रव्यनो अनियामकके० अनिश्चयपणोथइजा य तेमाटेसर्वन्नाव अस्तिनास्तिमयीछे व्यंजकतानोदृष्टांतकहेछे जेमकोराकुंमामांसुगं धतानीसत्ताछे तोजपाणीनेयोगेंवासनाप्रगटेछे जोवस्त्रादिकमांतेधर्मनथी तोतेमांप्रग टतोपणनथी एमसर्वत्रजाणवो हवेत्रीजोनित्यस्वन्नावकहेछे तेजेवस्तुनान्नावतेनो अ व्ययके० नहीटलवो एटलेतेमनोतेमजरहेवो तेनित्यपणोकहियें तेनावेन्नेदछेतेकहेछे

एकाअप्रच्युतिनित्यता द्वितीयापारंपर्यनित्यता ॥ तथा
द्रव्याणांऊर्ध्वप्रचयतिर्यग्प्रचयत्वेनतदेवद्रव्यमितिध्रुवत्वे
ननित्यस्वन्नावःनवनवपर्यायपरिणमनादिन्निःउत्पत्तिव्य
यरूपोनित्यस्वन्नावः उत्पत्तिव्ययस्वरूपमनित्यं ॥

अर्थ ॥ एकअप्रच्युतिनित्यता बीजीपारंपर्यनित्यता तिहां अप्रच्युतिनित्यतातेनेक हियें जेद्रव्यतेकर्ध्वप्रचय तिर्यक्प्रचयनेपरिणमवे एद्रव्यतेहिज एध्रुवतारूपज्ञानथा यछे एटलेसदासर्वदा त्रणेकालेतेहिज एवुंजेज्ञानथायछे जेमूलस्वन्नावपलटेनही ते अप्रच्युतिनित्यताकहियें अनेएनित्यतामांजे कर्ध्वप्रचयकह्यो तेउलखावेछे जेपहेले समयें द्रव्यनीपरिणतिहति तेबीजेसमयेंनवापर्यायनेउपजवे अनेपूर्वपर्यायनेव्ययें स र्वपर्यायनीपरावृत्तिथइ तोपणएद्रव्यतेहुंतेज एवुंजे ज्ञानथायते द्रव्यमांऊर्ध्वप्रचय कहियें उपरलेसमयेतेमाटेकर्ध्वप्रचयकहियें.

तथाअनंताजीवसरिखाछे पणसर्वेभिन्नभिन्नछे पणसर्वेजीवजाणताए पणजीवए वोजीवलसत्तायेंतुल्य भिन्नजीवसत्तारूपज्ञान थाय तेतिर्यक्प्रचयकहियें.

ऊर्ध्वप्रचय ते समयांतरे अनेकउत्पादव्ययनेपलटवे पणएजीवते तेजछे एवुंज्ञानथाय एनित्यस्वभावनोधर्मजाणवो एकारणथीकार्यउपनो तेनुंज्ञानथाय तेनित्यस्वभावनोधर्मजाणवो तथाएकारणथीजेकार्यउपनो वलीज्ञानथयुं तेकारणथीत्रीजेकारणेवीजुंकार्यथाय एमनवेनवेकार्यउपने पणजीवतेजछे एवुंजेज्ञानथाय परंपरारूपसंततिचालीजाय तेपारंपर्यनित्यताकहियें जेमप्रथम शरीरनेकारणेरागहतो तेहिजवस्त्रधननेकारणप्रतेरागथयो तेकारणनवारागनोनवापणोपणरागरहितआत्माकेवारे नही एपारंपर्य एटले परंपरानित्यताकहियें वीजुंनामसंततिनित्यताजाणवी तेकारणयोगेनिमित्तनीपजे नवानवापर्यायनेपरिणमवे एटले पूर्वपर्यायनेव्ययथवे तथा अभिनवपर्यायनेउपजवे अनित्यस्वभावजाणवो एटलेउत्पत्तिके० उपजवो व्ययके० विणसवो एवोजेस्वभाव ते अनित्यस्वभावजाणवो.

तत्रनित्यत्वंद्विविधं कूटस्थंप्रदेशादीनां परिणामित्वं ज्ञानादिगुणानां तत्रोत्पादव्ययावनेकप्रकारौ तथापिकिंचिल्लिख्यते विस्रसाप्रयोगजभेदात्द्विभेदोसर्वद्रव्याणांचलनसहकारादिपदार्थक्रियाकारणंभवत्येव ॥

अर्थ ॥तिहांवलीग्रंथांतरे नित्यपणोबेप्रकारेकह्योछे एककूटस्थनित्यता वीजीपरिणामिनित्यताछे जीवनाअसंख्यातप्रदेश तेसंख्यायें तथाक्षेत्रावगाह पलटतोनथीते तथागुणनोअविभाग तेसर्वकूटस्थनित्यताछे.

ज्ञानादिकगुणएसर्व परिणामिकनित्यतायेंछे केमकेगुणनोधर्मजएछे जेसमयेंसमयें स्वकार्यपणेपरिणमे अनेजेकार्यहोय तेपरिणामिकपणेजहोय एनीतिजछे अनेजोज्ञानगुणने कूटस्थनित्यतापणेमानियें तोपेहेलेसमयेंजे ज्ञानेकरीजाण्यो तेहिजजाणपणो सदासर्वदारहे पणतेमतोनथी ज्ञेयतोनवनवीरीतें परिणमतादेखायछे तो तेज्ञेयनीनवनवीअवस्थाज्ञानजाणेनही एटलेपहेलेसमयजेरीतें ज्ञानपरिणमेछे तेरीतें परिणमजोवुंजोइयें अनेएरीतें ज्ञानयथार्थथयुं एमघटेनही तेमाटेज्ञेयजेघटपटादिक तेजेमपलटेछे तेमज्ञानपणजाणे तोहिजज्ञानयथार्थथाय तेमाटेज्ञानगुण ते नवानवाज्ञेयनेजाणवामाटे परिणामीजाणवो अनित्यज्ञायकताशक्ति माटेनित्य एरीतें नित्यानित्यस्वभावी सर्वगुणछे सर्वद्रव्यनेविषेपोतानीक्रियाकुंकारणथायजछे.

तत्रचलनसहकारित्वंकार्यंधर्मास्तिकायं द्रव्यस्यप्रतिप्रदे शस्थचलनसहकारिगुणाविभागाः उपादानकारणंकारण स्यैवकार्यपरिणमनात् तेनकारणत्वपर्यायव्ययः कार्यत्वप्र रिणामस्योत्पादः गुणत्वेनध्रुवत्वं प्रतिसमयंकारणस्यापिउ त्पादव्ययौ कार्यस्याप्युत्पादव्ययावित्यनेकांतजयपता कायंग्रंथे एवंसर्वद्रव्येषुसर्वेषांगुणानांस्वस्वकार्यकारणताज्ञे या इतिप्रथमव्याख्यानं ॥

अर्थ॥ तिहांजेमधर्मास्तिकायद्रव्यनो चलणसहकारीपणो तेमुख्यकार्यछे अने अध र्मास्तिकायद्रव्यनो स्थिरसहायी तेमुख्यकार्यछे वलीआकाशद्रव्यनुंअवगाहनादानतं मुख्यकार्यछे जीवनोजाणवा देखवारूप उपयोगतेमुख्यकार्यछे पुद्गलनोवर्णगंधरसस्पर्श पणो तेमुख्यकार्यछे इत्यादिसकार्यनोथावुंछे तेजिहांथावुं तिहां नवनधर्मथयो अने जिहांनवनधर्म तेउत्पादथयो अनेउत्पादहोयते व्ययसहितजहोय तेनवनधर्म त त्वार्थंग्रंथमध्येकह्योछे हवेतेउत्पादव्ययबेप्रकारनाछे एकप्रयोगथीथाय अनेबीजो वि श्रसाके० सहजेपरिणामीधर्मेथाय हवेइहांसहजनो उत्पादव्ययकहेछे तिहांधर्मा स्तिकायादि छद्रव्यने पोतापोताना चलणसहकारादिगुणनी प्रवृत्तिरूप अर्थक्रिया नोकरवोथायज अनेचलणसहकारपणोतेकार्य धर्मास्तिकायद्रव्यने प्रतिप्रदेशे रह्यो जे चलणसहकारीगुणाविभाग तेउपादानकारणछे तेहिजकार्यपणेपरिणमेछे एटले कारणपणानोव्यय अनेकार्यपणानोउत्पाद तथा चलणसहकारीपणे ध्रुवछे एमज अधर्मास्तिकायनेविषे थिरसहायगुणनुं प्रवर्त्तनछे तथाआकाशास्तिकायनेविषेपण अवगाहनागुणनुंप्रवर्त्तन एमजछे वलीपुद्गलमां पूरणगलनादिकगुणनुंप्रवर्त्तनछे ते मजजीवद्रव्यमां ज्ञानादिकगुणनुंप्रवर्त्तनछे अथवावली अनेकांतजयपताकाग्रंथने विषेएमकह्युंछे जेप्रतिसमयें गुणनेविषे कारणपणो नवोनवोउपजेछे एटलेकार णपणानोपण उत्पादव्ययछे तेमजप्रतिसमयें कार्यपणोपण नवोनवो उपजेछे ए टलेकार्यपणानोपण उत्पादव्ययछे एमसर्वद्रव्यनेविषे सर्वगुणनोकार्यपणो कारण पणोउपजेविणसेछे एमउत्पादव्ययनो एकस्वरूपप्रथमभेदकह्यो.

तथाचसर्वेषांद्रव्याणांपारिणामिकत्वे पूर्वपर्यायव्ययः नवप र्यायोत्पादः एवमप्युत्पादव्ययौ द्रव्यत्वेनध्रुवत्वंइतिद्वितीयः ॥

अर्थ ॥ सर्वधर्मछेतेपरिणामिकन्नावेंछे तिहांपूर्वपर्यायनो व्यय अनेनवापर्यायनो उत्पाद एउत्पादव्यय समयसमयेंछे अनेद्रव्यपणोध्रुवछे एवीजोन्नेद.

प्रतिद्रव्यंस्वकार्यकारणपरिणमनपरावृत्तिगुणप्रवृत्तिरूपाप रिणतिः अनंताअतीता एकावर्त्तमाना अन्याअनागतायो ग्यतारूपाः तावर्त्तमानाअतीतान्नवंति अनागतावर्त्तमानान्न वंति शेपाअनागताकार्ययोग्यतासन्नतांलनंते इत्येवंरूपावु त्पादव्ययौ गुणत्वेनध्रुवत्वं इतितृतीयः अत्रकेचित्काला पेक्षया परप्रत्ययत्वंवदंति तदसत् कालस्यपंचास्तिकायपर्या यत्वेनैवागमेनुक्तत्वात् इयंपरिणतिः स्वकालत्वेनवर्तनात्स प्रत्यक्षं एवंतथाकालस्यन्निन्नद्रव्यत्वेपिकालस्यकारणताअ तीतानागतवर्त्तमानन्नवनंतुजीवादिद्रव्यस्यैवपरिणतिरिति ॥

अर्थ ॥ सर्वद्रव्यनेविपे स्वके० पोतानुंकारण परिणमन परावृत्तिके० पलटणपणे गुणनीप्रवृत्तिरूप परिणमनछे ते परिणतिअनंति अनंतजातिनी अतीतकालेंथइछे अ नेअनंतिजातिनी एकवर्त्तमानकालेंछे अनेवीजीअनागतयोग्यतारूपपणे अनंतिछे ते वर्त्तमानपरिणतिते अतीतथायछे एटले तेपरिणतिमध्ये वर्त्तमानपणानोव्यय अने अतीतपणानोउत्पाद तथा परिणतिपणेध्रुवछे अनेअनागतपरिणति तेवर्त्तमानथा यछे तिहांअनागतपणानोव्यय वर्त्तमानपणानोउत्पाद अनेछतिपणेध्रुव अने अनाग तकार्थयोग्यता तेदूरहताते आसन्नके० नजीकपणोपामे एटलेदूरतानोव्यय अनेन जीकतानोउत्पाद तथाअतीतमध्ये दूरतानोउत्पाद अनेनजीकतानोव्यय एरीतेंसर्व द्रव्यनेविपे अतीतवर्त्तमान तथाअनागतपणे परिणतिछे तेपरिणमेजछे एंद्रव्यनेवि पेस्वकालरूप परिणमनछे एउत्पादव्ययनोत्रीजोन्नेदजाणवो.

इहांकेटलाककालनीअपेक्षालेइने परप्रत्ययपणोकहेछे तेखोटोछे कारणके काल द्रव्यजेछेतेपंचास्तिकायनोपर्यायछे अने परिणतितोद्रव्यनोस्वधर्मछे माटेकालतेस्वका लरूपवस्तुनोपरिणाम तेनोन्नेदछे अथवाकालनेन्निन्नद्रव्यमानियें तोपणकालतेका रणपणेछे अनेअतीतअनागतवर्त्तमानरूपपरिणति तेतो जीवादिकद्रव्यनोधर्मछे ते माटेएउत्पादव्ययपणस्वरूपजछे एत्रीजोन्नेदथयो.

तत्रचलनसहकारित्वंकार्यंधर्मास्तिकायं द्रव्यस्यप्रतिप्रदे शस्थचलनसहकारिगुणाविभागाः उपादानकारणंकारण स्यैवकार्यपरिणमनात् तेनकारणत्वपर्यायव्ययः कार्यत्वप रिणामस्योत्पादः गुणत्वेनध्रुवत्वं प्रतिसमयंकारणस्यापित्र त्पादव्ययौ कार्यस्याप्युत्पादव्ययावित्यनेकांतजयपता काग्रंथे एवंसर्वद्रव्येषुसर्वेषांगुणानांस्वस्वकार्यकारणताज्ञे या इतिप्रथमव्याख्यानं ॥

अर्थ॥ तिहांजेमधर्मास्तिकायद्रव्यनो चलणसहकारीपणो तेमुख्यकार्यछे अने अध र्मास्तिकायद्रव्यनो स्थिरसहायी तेमुख्यकार्यछे तथाआकाशद्रव्यनुंअवगाहनादानते मुख्यकार्यछे जीवनोजाणवा देखवारूपउपयोगतेमुख्यकार्यछे पुद्गलनोवर्णगंधरसस्पर्श पणो तेमुख्यकार्यछे इत्यादिस्वकार्यनोथावुंछे तेजिहांथावुं तिहां नवनधर्मथयो अने जिहांनवनधर्म तेउत्पादथयो अनेउत्पादहोयते व्ययसहितजहोय तेनवनधर्म त त्वार्थग्रंथमध्येकह्योछे हवेतेउत्पादव्ययबेप्रकारनाछे एकप्रयोगथीथाय अनेबीजो वि श्रसाके०. सहजेपरिणामीथमेंथाय हवेइहांसहजनो उत्पादव्ययकहेछे तिहांधर्मा स्तिकायादि छद्रव्यने पोतापोताना चलणसहकारादिगुणनी प्रवृत्तिरूप अर्थक्रिया नोकरवोथायज अनेचलणसहकारपणोतेकार्य धर्मास्तिकायद्रव्यने प्रतिप्रदेशें रह्यो जे चलणसहकारीगुणाविभाग तेउपादानकारणछे तेनिजकार्यपणेपरिणमेछे एटले कारणपणानोव्यय अनेकार्यपणानोउत्पाद तथा चलणसहकारीपणे ध्रुवछे एमज अधर्मास्तिकायनेविषे थिरसहायगुणनुं प्रवर्त्तनछे तथाआकाशास्तिकायनेविषेपण अवगाहनागुणनुंप्रवर्त्तन एमजछे वलीपुद्गलमां पूरणगलनादिकगुणनुंप्रवर्त्तनछे ते मजजीवद्रव्यमां ज्ञानादिकगुणनुंप्रवर्त्तनछे अथवावली अनेकांतजयपताकाग्रंथने विषेएमपणकह्युंछे जेप्रतिसमयें गुणनेविषे कारणपणो नवोनवोउपजेछे एटलेकार णपणानोपण उत्पादव्ययछे तेमजप्रतिसमयें कार्यपणोपण नवोनवो उपजेछे ए टलेकार्यपणानोपण उत्पादव्ययछे एमसर्वद्रव्यनेविषे सर्वगुणनोकार्यपणो कारण पणोउपजेविणसेछे एमउत्पादव्ययनो एकस्वरूपप्रथमभेदकह्यो.

[illegible]

[illegible] ॥

अर्थ ॥ सर्वधर्मछेतेपरिणामिकनावेंछे तिहांपूर्वपर्यायनो व्यय अनेनवापर्यायनो उत्पाद एउत्पादव्यय समयसमयेंछे अनेद्रव्यपणोध्रुवछे एत्रीजोन्नेद.

प्रतिद्रव्यंस्वकार्यकारणपरिणमनपरावृत्तिगुणप्रवृत्तिरूपाप रिणतिः अनंताअतीता एकावर्त्तमाना अन्याअनागतायो ग्यतारूपाः तावर्त्तमानाअतीतान्नवंति अनागतावर्त्तमानान्न वंति शेषाअनागताकार्ययोग्यतासन्नतांलन्नंते इत्येवंरूपावु त्पादव्ययौ गुणत्वेनध्रुवत्वं इतितृतीयः अत्रकेचित्काला पेक्षया परप्रत्ययत्वंवदंति तदसत् कालस्यपंचास्तिकायपर्या यत्वेनैवागमेउक्तत्वात् इयंपरिणतिः स्वकालत्वेनवर्तनात्स प्रत्यक्षं एवंतथाकालस्यन्निन्नद्रव्यत्वेपिकालस्यकारणताअ तीतानागतवर्त्तमानन्नवनंतुजीवादिद्रव्यस्यैवपरिणतिरिति ॥

अर्थ ॥ सर्वद्रव्यनेविषे स्वके० पोतानुंकारण परिणमन परावृत्तिके० पलटणपणे गुणनीप्रवृत्तिरूप परिणमनछे ते परिणतिअनंति अनंतजातिनी अतीतकालेंथइछे अ नेअनंतिजातिनी एकवर्त्तमानकालेंछे अनेवीजीअनागतयोग्यतारूपपणे अनंतिछे ते वर्त्तमानपरिणतिते अतीतथायछे एटले तेपरिणतिमध्ये वर्त्तमानपणानोव्यय अने अतीतपणानोउत्पाद तथा परिणतिपणेध्रुवछे अनेअनागतपरिणति तेवर्त्तमानथा यछे तिहांअनागतपणानोव्यय वर्त्तमानपणानोउत्पाद अनेछतिपणेध्रुव अने अनाग तकार्ययोग्यता तेदूरहताते आसन्नके० नजीकपणोपामे एटलेदूरतानोव्यय अनेन जीकतानोउत्पाद तथाअतीतमध्ये दूरतानोउत्पाद अनेनजीकतानोव्यय एरीतेंसर्व द्रव्यनेविषे अतीतवर्त्तमान तथाअनागतपणे परिणतिछे तेपरिणमेजछे एद्रव्यनेवि षेस्वकालरूप परिणमनछे एउत्पादव्ययनोत्रीजोन्नेदजाणवो.

इहांकेटलाककालनीअपेक्षालेइने परप्रत्ययपणोकहेछे तेखोटोछे कारणके काल द्रव्यजेछेतेपंचास्तिकायनोपर्यायछे अने परिणतितोद्रव्यनोस्वधर्मछे माटेकालतेस्वका लरूपवस्तुनोपरिणाम तेनोन्नेदछे अथवाकालनेन्निन्नद्रव्यमानियें तोपणकालतेका रणपणेछे अनेअतीतअनागतवर्त्तमानरूपपरिणति तेतो जीवादिकद्रव्यनोधर्मछे ते माटेएउत्पादव्ययपणस्वरूपजछे एत्रीजोन्नेदथयो.

तथाचसिद्धात्मनिकेवलज्ञानस्ययथार्थज्ञेयज्ञायकत्वात् यथाज्ञेयाधर्मादिपदार्थाः तथाघटपटादिरूपावापरिणमंतितथैवज्ञाने भासनात् यस्मिन्समयेघटस्यप्रतिभासः समयांतरेघटध्वंसेकपालादिप्रतिभासः तदाज्ञानेंघटाप्रतिभासध्वंसः कपालप्रतिभासस्योत्पादः ज्ञानरूपत्वेनध्रुवत्वमितितथाधर्मास्तिकायेयस्मिन्समयेसंख्येयपरमाणूनांचलनसहकारिता अन्यसमयेअसंख्येयानां एवंसंख्येयत्वसहकारिताव्ययः असंख्येयानंत सहकारितोत्पादः चलनसहकारित्वेन ध्रुवत्वं एवमधर्मादिष्वपिज्ञेयं एवंसर्वगुणप्रवृत्तिषु इतिचतुर्थः ॥

अर्थ ॥ तथाके० तेमजवलीसिद्धात्मानेविषे केवलज्ञानगुणनीसंपूर्णप्रगटताछे तेयथार्थजेकालें जेज्ञेयजेमपरिणमे तेकालेंतेमजजाणे एहवोज्ञेयनोज्ञायक तेकेवलज्ञानछे जेमधर्मादिद्रव्य तथाघटपटादिज्ञेयपदार्थ जेरीतेपरिणमे तेरीतेज केवलज्ञानजाणे ते जेसमयेघटज्ञानहतुं तेसमयांतरे घटध्वंसथये कपालनुंज्ञानथाय तेवारेंघटप्रतिभासनोध्वंस कपालप्रतिभासनोउत्पाद अनेज्ञाननोध्रुवपणो एमदर्शनादि सर्वगुणनोप्रवर्त्तनजाणवो.

तथाधर्मास्तिकायनेविषे जेसमयेसंख्यात परमाणुनो चलनसहकारिपणो हतो फरीसमयांतरे असंख्यात परमाणुने चलनसहकारी पणोकरे तेवारें संख्याता परमाणुचलनसहकारतानोव्यय अनेअसंख्येयपरमाणुने चलनसहकारतानो उत्पाद अनेचलनसहकारी पणेध्रुवछे एमजअधर्मास्तिकायादिकनेविषे पण सर्व गुणनीप्रवृत्तिथायछे एरीतेएकद्रव्यनेविषेअनंतागुणनीप्रवृत्तिछे इहांकोइपुछशे जेधर्मास्तिकाय मध्ये अनंताजीवतथाअनंता परमाणु ते चलणसहकारीथाय एटलोचलनसहकारीछे तोथोडाजीव अनेथोडा परमाणुनें चलणसहकारकरतां बीजोगुणअणप्रवर्त्यो रह्यो एमकहे तेनेउत्तर के निरावरणजेद्रव्यछे तेनोगुणअणप्रवर्त्यो रहेजनही अनेजीवपुद्गलजे आवी पहोता तेनेसहकारेंसर्वे चलनसहकारीगुणना पर्यायते प्रवर्तेजछे केमकेअलोकाकाशमध्ये जोअवगाहकजीवपुद्गलनथी तोपण अवगाहकदान

गुणतोप्रवर्त्तेजछे तेमधर्मास्तिकायादिकमां जीवपुद्गलयोदाने पोचवे पणगुणतोवधो प्रवर्त्तेजछे एमधारवो एरीतेंगुण पर्यायनो उत्पादव्यय ध्रुवरूपधर्मकेवो एचोथुंरूपकह्युं.

तथासर्वेपदार्थाः अस्तिनास्तित्वेनपरिणामिनः तत्रास्ति भावानांस्वधर्माणां परिणामिकत्वेनउत्पादव्ययौस्तः नास्ति भावानांपरद्रव्यादीनांपरावृत्तौ नास्तिभावानांपरावृत्तित्वेना प्युत्पादव्ययौ ध्रुवत्वंच अस्तिनास्तिद्वयो इतिपंचमः

अर्थ ॥ तथासर्वद्रव्यमांअस्तितथानास्ति ए बे स्वभावपरिणमिरह्याछे तिहांजेअ स्तिस्वभावछे तेस्वद्रव्यादिकनोछे ते जेवारेंज्ञानगुण घटजाणतोहतो तेवारें घटज्ञा ननीअस्तिताहती अनेतेजघटध्वंस थये कपालज्ञानथयुं तेवारें घटज्ञाननीअस्तिता नो व्ययथयो अने कपालज्ञाननी अस्तितानोउत्पादथयो एरीतेंअस्तितानोउत्पादव्य यछे तेजरीतेंनास्तितानोपणउत्पादव्ययजाणवो जेपहेलीघटनास्तिताहती तेपछेघट ध्वंसेंकपालनास्तितायथी एमपरद्रव्यनेपलटवे नास्तितापलटेछे तेस्वगुणनेपरिणामिक कार्यनेपलटवेकरीनेअस्तितापलटेछे अनेजिहांपलटवापणो तिहांउत्पादव्ययथायेज एमद्रव्यमांसामान्यस्वभाव सर्वधर्मेछे तेमां जेमसंभवेतेम श्रीप्रभुनीआज्ञायें उपयोगदे इने उत्पादव्ययपणोकरवो अने अस्तिनास्तिपणे ध्रुवछे एपांचमोअधिकारकह्यो.

तथापुनःअगुरुलघुपर्यायाणां षड्गुणहानिवृद्धिरूपाणांप्र तिद्रव्यंपरिणमनात् नानाहानिव्ययेवृध्युत्पादः वृद्धिव्यये हान्युत्पादःध्रुवत्वंचागुरुलघुपर्यायाणां एवंसर्वद्रव्येपुज्ञेयं तत्वार्थवृत्तौ आकाशाधिकारेयत्राप्यवगाहकजीवपुद्गलादि नास्ति तत्राप्यगुरुलघुपर्यायवर्त्तनयावश्यत्वेचानित्यताभ्यु पेया तेचअन्येअन्येचभवंति अन्यथातत्रनवोत्पादव्य यौनापेक्षिकाविति न्यूनं एवंसल्लक्षणंस्यात् इतिपष्ठः ॥

अर्थ ॥ तथाके० तेमज वलीसर्वद्रव्यतथापर्याय ते अगुरुलघुधर्में संयुक्तहोय द्रव्यनेप्रदेशें अगुरुलघुअनंतोछे तेअगुरुलघुसमयेंसमयें प्रदेशें तथापर्यायें कोइ कवारेंवृद्धिपामे कोइकवारेंघटीजाय तेवधुघटुथवोछप्रकारेंछे १ अनंतभागहानि २ असंख्यातभागहानि ३ संख्यातभागहानि ४ संख्यातगुणहानि ५ असंख्यातगुण हानि ६ अनंतगुणहानि एछप्रकारेंहानि तथा १ अनंतभागवृद्धि २ असंख्यातगा

गवृद्धि ३ संख्यातनागवृद्धि ४ संख्यातगुणवृद्धि ५ असंख्यातगुणवृद्धि ६ अनंत गुणवृद्धि एवप्रकारनीवृद्धि तेसर्वद्रव्यनासर्वप्रदेशें सर्वपर्यायमांथाय एकप्रदेशमां को इकसमयेंवधेछे कोइकसमयेंघटेछे जेम परमाणुमांवर्णादिक वधेघटेछे तेमअगुरुलघु पणोपण वधेघटेछे हानिनोव्ययछे तोवृद्धिनोउत्पादछे अथवावृद्धिनोव्ययछे तोहानि नोउत्पादछे-पणअगुरुलघुध्रुवनोध्रुवछे एमसर्वद्रव्यनेविषेजाणवो सिद्धांतत्वार्थटीका मां आकाशद्रव्यनें अधिकारेकह्युंछे तेलखियेंछेयें जिहांअलोकाकाशमध्ये अवगाहक जीवपुद्गलादिकद्रव्यनथीतिहांपण अगुरुलघुपर्यायवंतपणो अवश्यछे तेअगुरुलघु नीअनित्यता अवश्यअंगीकारेछे अनेतेअगुरुलघु तेपर्यायें तथाप्रदेशें अन्यअन्यके॰ बीजोबीजोथायछे एटलेपूर्वसमयें अगुरुलघुनोव्यय अनेबीजेसमयें नवाअगुरुलघुनो उत्पादछे जोएरीतेनवोउत्पादव्यय गवेषियेनही तोअलोकाकाशनेंविषे सत्लक्षण न्यू नके॰ उत्पादव्यय जेउत्पादव्ययध्रुवतासंयुक्ततेसत्कहियें अनेजेद्रव्यहोयतेसत्पणासंयु क्तजहोय माटेअगुरुलघुनापरिणमन सर्वद्रव्यमांसर्वपर्यायमां सर्वप्रदेशमांछे एअगुरु लघुनो उत्पादव्ययकह्यो एवतोअधिकारथयो.

तथाजगवतीटीकायां तथाच अस्तिपर्यायतःसामर्थ्यरूपा
विशेषपर्यायास्तेचानंतगुणास्तेप्रतिसमयंनिमित्तजेदेनपराव
त्तिरूपाः तत्रपूर्वविशेषपर्यायाणांनाशः अजिनवविशेषपर्या
याणामुत्पादपर्यायवत्वेध्रुवत्वं इत्यादिसर्वत्रज्ञेयं इतिसप्तमः

अर्थ ॥ तेमजवली अस्तिपर्यायथी विशेषपर्यायजे सामर्थ्यरूप तेअनंतगुणाछे एजगवतीसूत्रनीटीकामध्येकह्योछे जेअस्तिपर्याय तेज्ञानादिकगुणनाअविजागरूपपर्या यछे जेपर्यायपर्यायमांसर्वज्ञेयजाणवानुं सामर्थ्यछे तेविशेषपर्यायछे तथामहाजाष्ये यावंतोज्ञेयास्तावंतोज्ञानपर्यायाः एसामर्थ्य पर्यायगवेष्याछे एसामर्थ्यपर्याय तेज्ञेयनें निमित्तेछे तेज्ञेयतोअनेकरूपजेछे नेअनेकविणशेछे तेवारेंविशेषपर्यायपणपलटेछे तेप्र तिसमयें निमित्तजेदनी परावृत्तिपलटवेथी पूर्वविशेषपर्यायनाशथाय तथाअजिनववि शेषपर्यायनोउपजवोछे अनेपर्यायनीअस्तिताध्रुवछे एमगुणपर्यायनोउत्पादव्ययध्रुव पणो ते सातमोछे ए अस्तिनास्तिस्वजाव वखाण्या.

नित्यताऽजावेनिरन्वयताकार्यस्यजवति कारणाजावताच
जवति अनित्यतायाअजावेज्ञायकतादिशक्तेरजावः अर्थ

क्रियासंभवः तथासमस्तस्वभावपर्यायाधारभूतभव्यदेशा
नांस्वस्वक्षेत्रभेदरूपाणामेकत्वपिंडीरूपापरित्यागः एकस्व
भावः क्षेत्रकालभावानांभिन्नकार्यपरिणामानांभिन्नप्रभाव
रूपोनेकस्वभावः एकत्वाभावेसामान्याभावः अनेकत्वाभा
वेविशेषधर्माभावः स्वस्वामित्वव्याप्यव्यापकताप्यभावः

अर्थ ॥ एमज सर्वद्रव्यमांनित्यता तथाअनित्यताछे एनित्य अनित्यपणाविना द्रव्यकोइनथी जोद्रव्यमांनित्यतानहोयतो कार्यनोअन्वयकोनेहोय एटलेअमुककार्यते अमुकद्रव्यें कर्यो एमकह्योजायनही माटेद्रव्यमांनित्यतामानवाथीज अमुकद्रव्येअमुककार्यकर्यो एमकेवायछे. माटे जोद्रव्यनेनित्यपणेजमानियें तोगुणनुंकार्य तेद्रव्यनोकेवाय अनेगुणतेद्रव्यनकेवाय अनेजोद्रव्यनित्यनहोय तोकारणपणानो अभावथाय माटेद्रव्यमां नित्यतामानवी अनेजोद्रव्यमां अनित्यपणोनमानियेंतो जाणंग आदेदेशनें सर्वद्रव्यना गुणरूपकार्यनो अभावथइजाय अर्थक्रियासंभवेनही एटलेकोइकअनित्यपणोहोय तोअर्थक्रियानेकरे केमकेकरवापणोकोइकवीजापणो एटलेनवापणो निपजाववो तेपूर्वपर्यायनो ध्वंसथयेथीथाय अनेतेएकनोध्वंस अनेंकोइकवीजानवानोनीपजवो तेद्रव्यमांअनित्यपणोछे एटलेनित्यस्वभाव. तथा अनित्यस्वभाव उलखाव्या हवेएकस्वभाव तथाअनेकस्वभाव उलखावेछे.

तथाके० तेमज समस्तके० सर्वजेस्वभाव अस्तित्व प्रमेयत्व अगुरुलघुआदिक समस्तपर्याय गुणाविभागादिक तेसर्वनुंआधारभूतक्षेत्र तेप्रदेशछे ते स्वके०पोतानाजेक्षेत्र तेसर्वभेदरूप जूदाजूदाछे एटलेसंख्याताप्रदेश भिन्नछे पणतेएकपिंडपणो किवारेंतजतानथी सर्वप्रदेशमां अंतरालक्षेत्रपणो कोईवारेंपामतोनथी जेअनंतास्वभाव अनंतपर्याय तेअसंख्यातप्रदेशरूप तेनुंप्रमाणफिरतुंनथी एवोजेद्रव्यनेविषे समुदायपिंडपणोरहेछे तेएकस्वभावकहियें तेपंचास्तिकायमध्ये १ धर्म २ अधर्म ३ आकाश एत्रणद्रव्यएकेकछे अनेजीवद्रव्यअनंताछे तेथीपुद्गलपरमाणु अनंतगुणाछे तेएकजीव अनेकरूपनवनवाकरे पण अंतरपडेनही तेमाटे द्रव्यमध्येएकस्वभावछे.

क्षेत्रअसंख्यातप्रदेश कालउत्पादव्ययरूप भावपर्याय गुणनाअविभागते पोतानाभिन्नकार्य परिणामीछे तेसर्वनोभिन्नप्रवाहछे एटलेसर्वनो कार्यपणोभिन्नछे तेमाटेद्रव्यने सर्वस्वभावपर्यायभेदें विचारतांद्रव्यमां अनेकस्वभावपणछे. जोवस्तुमां एकपणानो अभावमानियें तोसामान्यपणोरहेनही अनेगुणनो पर्यायनो स्वामीआधारते

कोणथाय अनेआधारविनागुणादिआधेयते क्यांरहे तेमाटेद्रव्यनो एकपणोछे. जो वस्तुमां अनेकपणोनमानियें तो द्रव्यतेविशेषरहितथईजाय तेथीगुणनोअनेकपणो शीरीतेद्रव्यनेविषे पामियें माटे द्रव्यमां गुणकार्यनो अनेकपणोपणछे. तथास्वस्वामि व्याप्य व्यापकभाव केमछेरे जेगुणपर्याय तेस्वके० धनअनेद्रव्यतेतेनोस्वामीछे अथवा द्रव्यतेव्याप्य अने गुणपर्यायते व्यापकछे एरीते द्रव्यमां एकस्वभाव तथाअनेकस्वभाव जाणवा.

स्वस्वकार्यभेदेन स्वभावभेदेन अगुरुलघुपर्यायभेदेन भेदस्वभावः अवस्थानाधारताद्यभेदेन अभेदस्वभावः भेदाभावेसर्वगुणपर्यायाणां संकरदोषः गुणगुणीलक्षलक्षणः कार्यकारणतानाशः अभेदाभावेस्थानध्वंसः कस्यैतेगुणाःकोवागुणीइत्याद्यभावः

अर्थ ॥ स्वस्वके० पोतपोताना कार्यनेभेदेंकरी एटलेजीवद्रव्यमां ज्ञानगुण तेजाणवानुंकार्यकरे अनेदर्शनगुण देखवानुंकार्यकरे तथाचारित्रगुण थिरतारमणतारूप कार्यकरे तथापुद्गलद्रव्य ते रूपपणोभिन्नकार्यकरे तथावर्णपणो गंधपणो रसपणो अनेस्पर्शपणो सर्वकार्यभिन्नछे तथास्वभावभेदते अस्तिस्वभावछतिरूपछे नित्यस्वभाव अविनाशीपणोछे अनित्यपणोते पलटणारूपछे एकपणोतेपिंडरूपछे अनेकपणोते प्रदेशादिकछे इत्यादि स्वभावभेद तथाअगुरुलघुपर्याय प्रदेशेंगुणाविभागें जूदोजूदोछे कोईकोईनोतुल्यनथी हानिवृद्धिरूपपरिणमनछे इत्यादि प्रकारे द्रव्यमांभेदस्वभावछे.

तथासर्वधर्मनो अवस्थानके० रेहेवो तेनेआधारपणो कार्यनी तुलनाके० सरिखापणोकेवारेंभिन्नपडतोनथी तेमाटेद्रव्यमां अभेदस्वभावछे.

जोद्रव्यगुणपर्यायमांभेदस्वभावनहोयतो सर्वसंकरएकपणोथाय तेवारें कार्यनो भेदकेमपडे तेमाटे सर्वद्रव्यगुणपर्यायमां भेदसर्वभावछे. जीवतेचेतनालक्षणवंत अजीवतेचेतनारहित एभेदछे अजीवमध्ये जेधर्मास्तिकायद्रव्यते चलणसहकार नेंकरेछे पणबीजाअजीवद्रव्यतेएकार्यकरतानथी एमअधर्मास्तिकाय थिरसहायगुणनेंकरेछे आकाशअवगाहदाननेंकरेछे पुद्गलरूपी आवरणस्कंधादिकपरिणमनकरेछे एमसर्वद्रव्यनेंभेदछे तोजभिन्नभिन्नद्रव्यकेहवायछे इहांकोइकहेशे जीवअनंताछेतेतोसरिखाछे तोसर्वजीवनें एकद्रव्यशावास्तेनकह्यो तेनेंउत्तरजेरूपैया सोनारूपापणे अथवा धवलापणे तोसपणोसरिखाछे पणवस्तुनापिंडपणे भिन्नछे तेमाटे सोनेपण भि

न्नभिन्नकह्यिएँ तेमजीवनेपण भिन्नभिन्नकह्यिएं वलीउत्पादव्ययनोफिरवो सर्वमां ते जरीतनोछे पणपलटण तेएकरीतनोनथी तथाअगुरुलघुनी हानिवृद्धिनो फिरवोपण सर्वद्रव्यमां पोतपोतानेछे तेथीसर्वजीव तथासर्वपरमाणुभिन्नछे एभेदस्वभाव जाणवो.

तन्मयतावस्थानाधारताद्यभेदेन अभेदस्वभावः तथातन्मयता अवस्थानतानो अभेदछे अनेआधारतानोपण अभेदपणोछे तेअभेदस्वभावछे.

तथाभेदनोजो अभावपणोमानिएँ एटलेवस्तुमांभेदपणो नमानिएँतो सर्वगुण तथापर्यायनो संकरके० एकमेकपणो एदोषलागे तोगुणीकोण तथागुणकोण द्रव्यकोण एमगुणपर्यायने केद्रव्यनो क्योपर्याय एमवेहेचणथायनही गुण तथागुणी तथा जेउलखवायोग्यलक्षण तेनुंचिन्ह तथाकारणधर्म तथाकार्यधर्मता एवेजूदापडेनही कार्यधर्म तथाकारणधर्मनो नाशथाय माटेवस्तुमां भेदस्वभावमानवो.

तथाजोवस्तुमांअभेदपणोनमानिएँ तोस्थानध्वंसथायछे जेस्थान कोण अनेतेस्थानकमां रहेतेकोणछे इत्यादिकनोअभावथायछे एमविचारतां सर्वथाएकपणोमानतां कोणगुणी अनेकोणगुण एमउलखाणनथाय. एरीतेंभेदाभेदस्वभाववस्तुमां मानवा.

परिणामिकत्वेउत्तरोत्तरपर्यायपरिणमनरूपोभव्यस्वभावः
तथाततार्थवृत्तौ द्रहेतुभावेद्रव्यंभव्यंभवनमितिगुणपर्या
याश्चभवनसमवस्थानमात्रकाएवउच्छ्रितासीनोत्कुटकजा
गृतशयितपुरुषवत्तदेवच वृत्त्यंतरव्यक्तिरूपेणोपदिश्यते जा
यतेअस्तिविपरिणमतेवर्द्धते अपक्षीयते विनश्यतीति पिं
भ्रातिरिक्तवृत्त्यंतरावस्थाप्रकाशतायांतुजायतेइत्युच्यते स
व्यापारैश्चभवनवृत्तिः अस्तिइत्यनेननिर्व्यापारात्मसत्ता
ख्यायते भवनवृत्तिरुदासीनाअस्तिशब्दस्यनिपातत्वात्
विपरिणमतेइत्यनेनतिरोभूतात्मरूपस्यानुछिन्नतथावृत्तिक
स्यरूपांतरेणभवनं यथाक्षीरंदधिभावेनपरिणमते विकारां
तरवृत्त्याभवनवत्तिष्टते वृत्त्यंतरव्यक्तिहेतुभाववृत्तिर्वाविपरि
णामः वर्द्धतइत्यनेनतुपचयरूपःप्रवर्तते यथांकुरोवर्द्धतेउ
पचयवत्परिणामरूपेणभवनवृत्तिर्व्यज्यते अपक्षीयते इत्य

नेननुतस्यैवपरिणामस्यापचयवृत्तिराख्यायते दुर्बलीनवत् पुरुषवत्पुरुषवदपचयरूपनवनवृत्त्यंतरव्यक्तिरुच्यते विन श्यति इत्यनेनाविर्भूतनवनवृत्तिस्तिरोनवनमुच्यते यथा विनष्टोघटः प्रतिविशिष्टसमवस्थानात्मिकानवनवृत्तिस्ति रोनूतानत्वन्नावस्यैवजाता कपालाद्युत्तरनवनवृत्त्यंतरक्र माविच्छिन्नरूपत्वादित्येवमादिनिराकारैर्द्रव्याण्येवनवनल क्षणान्यपदिश्यंते त्रिकालमूलावस्थाया अपरित्यागरूपो ऽनव्यस्वनावः नव्यत्वानावविशेषगुणानामप्रवृत्तिः अन व्यत्वाजावेद्रव्यांतरापत्तिः

अर्थ ॥ हवे नव्यस्वनाव तथाअनव्यस्वनावकहेछे जीवअजीवादिक द्रव्यछे तेप रिणामिछे समयेंसमयें नवानवापरिणामें परिणमेछे तिहांपूर्वपर्यायनेविनाशें अने उत्तरोत्तर नवानवापर्यायनेप्रगटवे एवीजे द्रव्यनीपरिणति तेनुंमूलकारणते नव्य स्वनावकहियें तिहांतत्वार्थटीकामध्येकह्योछे इहांद्रव्यानुयोगनेविषे नावधर्मनेविषे एटलेगुणपर्यायनेविषे द्रव्य ते नव्यके० नवनथयो एटलेनवोनीपजवो तेनवन इ तिके० एमवस्तुना गुणपर्यायजेछे तेनवनके० नवोथवारूप समवस्थानमात्रछे एटले नवानवा थावारूपछे तिहांदृष्टांतकहेछे जेपुरुष उदियतके० कठ्यो आसीनके० फ रीतेहिजबेठो वेसवुंतेपद्मासनकहियें अथवाउकडवुंतेआसनसहितरहवुं जेमइत्यादिक पर्यायेंतेपुरुषथायछे तेम तेहजवृत्त्यंतरके० पूर्वपर्यायनोविनाश अनेउत्तरपर्यायनो उ पजवोते वृत्त्यंतरकहियें वृत्त्यंतरव्यक्तिरूपपणेउपदेशेछे तेनवनधर्मनीप्रवृत्तिकहेछे जा यतेके० नवोऊपजे अस्तिके० छतिपणेरहे विपरिणमतेके० बीजापणेपरिणमे वली सामर्थ्यधर्मेवधे अने अपक्षीयतेके० घटे विनश्यतिके० विनाशपामे पिंफके० समुदा यपणो तेथो अतिरिक्तके० बीजीवृत्तिजे गुणनी प्रवृत्त्यंतरनी अवस्थाने प्रकाशयवे करीने जे नवनपणोथाय एटलेछेरीजेनवनवृत्ति तेसव्यापारछे पणनिर्व्यापारनथी.

अस्तिएवचने निर्व्यापार आत्मशक्तिछे तेकहियेंछेयें तेपण नवनवृत्तिथी उदासी नछे एटलेनवनवृत्तिने ग्रहणकरतीनथी अस्तिशब्दने निपातपणोछे विपरिणमतेएव चने तिरोनूतके० अणप्रगटीजेवस्तु तेमांतद्रूपपणे अनुच्छिन्नके० विच्छेदगई तथावृत्ति कस्यके० तेरीतें वर्ततिआत्मशक्ति तेनोरूपांतरेथवो तेनवनकहियें तिहांदृष्टांत जेम

क्षीरते दूध दधिन्नावेंपरिणमे विकारांतरेथवो तेरीतेंरहे एन्नवनधर्मकहियें जेज्ञानादिप र्यायमां अनंतज्ञेय जाणवानीशक्तिछे पणजेज्ञेय जेरीतेंपरिणमे तेरीतेंज्ञानगुणप्रवर्ते एज्ञानगुणनुंप्रवर्त्तन तेप्रतिसमयें विपरिणामपणे परिणमनछे एपणन्नवनधर्मछे व लीवृत्त्यंतरवर्त्तने अन्यपणे व्यक्तिनेहेतुकरणे जेन्नवांतरें वर्त्तवो तेविपरिणामकहियें त थावली वर्द्धतेके० वधेएवचने उपचयरूपपणेप्रवर्ते जेमअंकुरवधेछे तेमवर्णादिक पु द्गलना गुणउपचयपणेवधे एउपचयरूपन्नवनतावृत्ति व्यज्यतेके० प्रगटकरियेंछैयें.

एमगुणने कार्यांतरपणे परिणमवे द्रव्यमां न्नवनधर्मछे अपक्षीयते एवचनेकरीने तुके० वलीतेहिजपरिणामनो क्षणोथवो अथवाटलवोकहियें डुर्बलथतापुरुषनीपरें जेमपुरुषडुर्बलथाय तेमपर्यायनेघटवे द्रव्यप्रमाणादिक तथातेसमयें अगुरुलघुपर्या यघटवे तेडुर्बलथवुं तेरूपजेन्नवनवृत्तिनेअंतरे व्यक्तिके० प्रगटताकहिये तथाविनश्य ति एमकेवायी आविर्नूतके० प्रगटथयोजेन्नवनधर्मनुंवर्तवो तेनो तिरोन्नावथयोक हियें जेमविणस्योघट जेमृत्पिंडनेविषे तेचक्रादिकारणे प्रगटथयोजेघट तेनेप्रध्वंसें विनाशकहियें एमद्रव्यनेविषे कार्यकरवारूपजेपर्याय तेने तिरोन्नावें अन्यपणे कार्य करणरीते समवस्थानजेरहेवुं तेसमयेंतेन्नवनवृत्तिकहियें तथा तिरोन्नावपणानेअन्ना वें थावुंजेकपालादिक उत्तरन्नवन तेपणेवर्त्तवुं एपणन्नवनधर्मछे एमअनुक्रमेंअविछिन्न निरंतररूपें इत्यादिकअनेकआकारें द्रव्यतेजन्नवनलक्षणकहियें एन्नव्यस्वन्नाव जाणवो द्रव्यनेविषे जे अस्तित्व वस्तुत्व प्रमेयत्व अगुरुलघुत्वादिक धर्मतेत्रणेकालमां मूलस्व रूपने अपरित्यागेके० तजतानथी तेहिजरूपपणेरहे एहवाजेटलाधर्मते अन्नव्य स्वन्नावजाणवो जेअनेक उत्पादव्ययने परिणमने फिरवेफिरे पणजीवनोजीवपणोप लटायनही तेमज अजीवनो अजीवपणो पलटायनही एसर्वअन्नव्यस्वन्नावजाणवो.

हवे एबेस्वन्नाव जोद्रव्यमांनमानियें तोस्योदोषथाय तेकहेछे जोद्रव्यनेविषे न्नव्य पणोनमानियें तोद्रव्यनाजेविशेषगुण गतिसहकार स्थितिसहकार अवगाहदान ज्ञा यकता वर्णादिजेपंचास्तिकायना विशेषगुण तेनीप्रवृत्तिनथाय अनेप्रवृत्तिविना कार्य नोकरवोनथाय अनेकार्यनेअणकरवे द्रव्यनोव्यर्थपणोथाय तेमाटेन्नव्यस्वन्नावछे.

जोद्रव्यनेविषे अन्नवनरूप अन्नव्यस्वन्नावनहोय अनेएकलो न्नवनस्वन्नावजहोय तोनवानवापणेथवे तेद्रव्यपलटीने अन्यद्रव्यथयीजाय तेमाटे द्रव्यत्व सत्व प्रमेयत्वा दि धर्मअन्नव्यपणोछे तेथीज द्रव्यपलटतोनथी तेमनोतेमजरहेछे एअन्नव्यस्वन्नावछे.

वचनगोचरायेधर्मास्तेवक्तव्या इतरेअवक्तव्याः तत्राक्षराः संख्येयाः तत्संनिपाताअसंख्येयाः तद्गोचराभावाः भाव श्रुतगम्याः अनंतगुणःवक्तव्याभावेश्रुताग्रहणापत्तिः अ वक्तव्यभावे अतीतानागतपर्यायाणां कारणतायोग्यता रूपाणामभावः सर्वकार्याणां निराधारतापत्तिश्च सर्वेषांपदा र्थानांये विशेषगुणाश्चलन स्थित्यवगाहसहकारपूर्णगल नचेतनादयस्तेपरमगुणाः शेषाःसाधारणाः साधारणासा धारणगुणास्तेषां तदनुयायिप्रवृत्तिहेतुःपरमस्वभावः इ त्यादयःसामान्यस्वभावाः

अर्थ ॥ आत्मानो वीर्यनामागुण तेनाअविभाग जेवीर्यांतराय कर्म्मेंआवरयाछे ते जवीर्यांतरायनेक्षयोपशमें तथाक्षयथवाथी प्रगटथोजेवीर्यधर्म तेनेभापापर्याप्ति नाम कर्मनेउदयें लीयराणाजे भाषावरगणानापुद्गल तेशब्दपणेपरिणमे तेशब्दपुद्गलखंधछे पणश्रोताजनने ज्ञाननाहेतुछे एटलेजेमांजेगुणनहोय तेगुणनुंकारणपण थायनही एमजेकह्युंछे तेमृषाछे केमकेजेनिमित्तकारणहोय तेमांगुणहोयांकिवाभपणहोय अने उपादानकारणमां तेगुणनाकारणतापणे तथा योग्यतापणेनियामकछे तेवचनयोगें जमहणाय एवाजेवस्तुमांधर्मछे तेनेवक्तव्यधर्मकहियें अनेतेथीइतरके० जूदाजेधर्मा भिकायद्रव्यमां अनेकधर्मछे तेवचनमांग्रहवातानथी तेवासर्वधर्म अवक्तव्यकहियें ते वक्तव्यधर्मथी अवक्तव्यधर्म अनंतगुणाछे वचनतोसंख्याताछे पणतेवचनोमां एवो सामर्थ्यछे जेअवक्तव्यधर्मसर्वनो ज्ञायपणोथाय उक्तंच अभिलप्पाजेभावा अणंत भागोपअणभिलप्पाणं अभिलप्पसाणंतो भागसुएनिबद्धोअ ॥ १ ॥ तत्रके० तिहां अक्षरसंख्याताछे तेअक्षरना सन्निपात संयोगीभाव असंख्याताछे तेअक्षरसन्निपात नेग्रहणाय एवाजे पदार्थादिकनाभाव तेअनंतगुणाछे तेथीअवक्तव्यभाव अनंतगुण छे जेमनिज्ञान श्रुतज्ञान अभिलप्यभावनो परोक्षप्रमाणेग्राहकछे अवधिज्ञान तेपु. ज्जनो प्रत्यक्षप्रमाणेजाणगछे पणएकपरमाणुना सर्वपर्यायने जाणेनही केटलाकपर्या यनेजाणे तेमज असंख्यातसमयेंजाणे अनेकेवलज्ञान एकद्रव्यनासर्वपर्यायने एकस मयमां प्रत्यक्षजाणे माटेजोद्रव्यमां वक्तव्यपणोनहोय तोश्रुतज्ञानेग्रहणथायनही अ ने जेमंथनस्यामवर्णादिक सर्वकामथायछे तेनोएमनथीमाटेद्रव्यमांवक्तव्यपणोछे.

अवक्तव्यानावेके० अवक्तव्यपणाने नमानियेंतो अतीतपर्याय तेवस्तुमांकारण तानी परंपरामांरह्याछे तथा अनागतापर्याय सर्वयोग्यतामांरह्याछे तेसर्वनोअनाव थाय तेवारें वस्तुमां वर्त्तमानपर्यायनी ठतिपामियें तेथी अतीतअनागतनो ज्ञानथा यनही माटे अवक्तव्यस्वनाव अवश्यमानवो अनेवर्त्तमान सर्वकार्य ते निराधारथइ जाय अनेद्रव्यमां एकसमयमां अनंताकारणछे तेअनंताकारणना अनंताकार्यधर्म छे अनेअनंताकार्यना अनंताकारणपरंपरानुं ज्ञानतेकेवलीनेछे अनेवर्त्तमानकालें का रणधर्मतथाकार्यधर्मथी अनंतगुणा कारणकार्यनी योग्यरूपसत्ताछे तेकोइना अवि नागनथी पणअविनागी जेज्ञानादिकगुण तेमांअनंता कारणधर्म अनंताकार्यधर्म क पजवानी योग्यतारूपसत्ताछे तेसर्वअवक्तव्यरूपछे.

हवेपरमस्वनावनुं स्वरूपकहेछे सर्वजे धर्मास्तिकायादिकपदार्थ तेनाविशेषगुण जे धर्मास्तिकायनो चलनसहकारीपणो तथाअधर्मास्तिकायनो स्थितिसहाय आकाशा स्तिकायनो अवगाहक तथापुजलद्रव्यनो पूरणगलन जीवद्रव्यनो चेतनालक्षण ए सर्वद्रव्यना विशेषगुणकह्या एमलक्षणरूप तथाद्रव्यांतरथी निन्नपाडवानुं मूलकार ण तेपरमप्रकृष्टगुणकहियें एप्रधानगुणने अनुयायी बीजाजे साधारणगुण ते गुण पंचास्तिकायमां पामियें तेनानाम अविनाशीपणो अखंमपणो नित्यत्वादिकधर्म एपंचास्तिकायने सरिखाछे तेमाटेसाधारणगुण तथापंचास्तिकायमां कोइक अस्ति कायमांपामियें कोइकमांनपामियें तेगुणने साधारणअसाधारणकहियें तेसर्वगुणनेवि षे विशेषगुणने अनुयायिप्रवर्त्तनछे तेप्रवर्त्तननाकारण द्रव्यमां एकपरमस्वनावपणोछे तेपरमस्वनावने परिणमने द्रव्यनासर्वगुणमुख्यगुणने अनुगमेजप्रवर्ते तेपरमस्वनाव सर्वद्रव्यनेविषेछे एटले तेरसामान्यस्वनाव कह्यावली अनेकांतजयपताकामांकह्याछे.

तथास्तित्व नास्तित्व कर्तृत्व नोगतृत्व असर्वगतत्व प्रदेशव त्वादिन्नावाः पुनः तत्वार्थटीकायांपुनरप्यादिग्रहणंकुर्वन्ज्ञा पयत्यन्नानंतधर्मवत्वं तत्राशक्ताः प्रस्तारयंतुसर्वेधर्माः प्र तिपदंप्रवचनज्ञेनपुंसायथासंन्नवमायोजनीयाः क्रियावत्वं पर्यायोपयोगिताप्रदेशाष्टकनिश्चलता एवंप्रकाराःसंतिन्नू यांसः अनादिपरिणामिकान्नवंतिजीवस्वन्नावाः धर्मादिन्नि स्तुसमानाइतिविशेषः

अर्थ॥ तेमज अस्तिपणो नास्तिपणो कर्त्तापणो नोक्तापणो गुणवंतपणो असर्व

व्यापिपणो प्रदेशवंतपणो इत्यादिअनंतस्वनावववंतड्व्यछे तेमज तत्वार्थटीकामध्ये प रिणामिकन्नावनानेद वखाणतांकह्योछे पुनरपिआदिशब्दना ग्रहणकरतां एमजणावेछे जेवस्तुअनंतधर्मवंतछे तेसर्वविस्तारीशकेनही तोपणड्व्यड्व्यनेविषे प्रवचननाजाण पुरुषें जेमसंनवेतेमधर्मजोडवा तथाक्रियावंतपणो जेज्ञानादिकगुण तेलोकालोकजा णवाने प्रतिसमयेंप्रवर्तेछे श्रीनाप्यकारें ज्ञानादिगुण तेकरण अने तेजगुणनीप्रवृत्ति तेक्रियाजाणवी तथादेखवोतेकार्य एमधर्मास्तिकायादिकना सर्वगुण तेत्रणपरिणतियें परिणामीने तेमाटेपंचास्तिकाय तेअर्थक्रियाकरेछे तेक्रियावंतपणोजाणवो सर्वपर्या यनो उपयोगीपणो एपणजीवस्वनावछे तथाप्रदेशाष्टकनी निश्चलता एपणजीवनोस्व नावछे तिहांधर्माधर्म अनेआकाश एत्रण अस्तिकायनाप्रदेश अनादिअनंतकाल अव स्थितपणेछे पुजलनेचलणपणो सदासर्वदाने पुजलपरमाणु तथापुजलस्कंध तेसंख्या तोकाल अथवाअसंख्यातोकाल एकक्षेत्रेरहेपणपछे अवश्यचलथाय तथाजीवड्व्यने सकर्म्मा संसारीपणे क्षेत्रथी क्षेत्रांतरगमन नवथी नवांतरगमनरूप चलताछे तेजी वने सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान अनेसम्यक्चारित्रने प्रगटवे सर्वपरन्नावनोगीपणो नि वारवे आत्मस्वरूप निराधारण स्वरूपनासन स्वरूपपरिणमने करवे स्वरूपएकत्वें स धर्मकर्त्ता स्वधर्मनोक्तापणे सकलपरन्नावतजवे निरावरण निःसंग निरामय निर्द्वंद्व निष्कलंक निर्मलस्वीय अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र अरूपी अव्याबाध पर मानंदमयी सिद्धात्मा सिद्धक्षेत्रेरह्या तेसादिअनंतकाल स्थिरछे सकलप्रदेशस्थिरछे अनेसंसारीजीव तेनाआठप्रदेश सदासर्वदास्थिरछे तेआठप्रदेश निरावरणे तथा आ चारांगनीटीका शीलंगाचार्यकृतना लोकविजयाध्ययनने प्रथमोदेशके तदनेन पंचद शविधेना वियोगेनात्मा अष्टप्रदेशान्विहाय तप्तनाजनोदक वडुद्वर्त्तमानैः सर्वैरेवा त्मप्रदेशैरात्मप्रदेशावष्टब्धाकाशस्थं कार्मणशरीरयोग्यं कर्मदलीकं यत्बध्नाति त त्प्रयोगकर्मेत्युच्यते.

एटले आठप्रदेशें कर्मलागतानथी इहांकोइपुछेजेआठप्रदेशनिरावरणछे तो लोका लोकनेमजाणतानथी तिहांउत्तरजे आत्मड्व्यनी जेगुणप्रवृत्ति तेसर्वप्रदेशमिले प्रव र्त्ते तोतेमां एआठप्रदेश अल्पछे तेथीआठप्रदेशमां सर्वगुणनिरावरणछे पणकार्य क रीशकतानथी जेमअग्निनुंअत्यंतसूक्ष्मकणीयुंहोय तेमां दाहक पाचक प्रकाशक गु णछे पणअल्पनामाटे दाहकादिकार्य करीशकतुंनथी.

वलीकोइपुछेजे एआठप्रदेश ते निरावरण केमरहीशक्या तेनुंउत्तर जेचलप्रदेश होय तेनेकर्मलागे पणअचलप्रदेशने कर्मलागेनही एमनगवतीसूत्रेकह्युंछे जेथइ वे

अइ चलइ फंदइ घट्टइ तेवंधइ एपाठछे तेमाटे जेचलहोयतेवंधाय अनेआत्मप्रदेश तो अचलछे तेथीएआत्मप्रदेशने वंधनथी तथाकार्यन्यासें प्रदेशनेजाणाय तेथी प्र देशनागुणपण तिहांतेकार्यकरवाने प्रवर्त्तेछे तथाजेद्रव्यनो जेगुणजेप्रदेशेंहोय तेगु णतेप्रदेशमूकी अन्यक्षेत्रेंजायनही तथाजीवना आत्मप्रदेश सर्वथानिरावरणछे वीजा प्रदेशें अक्षरनोअनंतमोभाग चेतनासर्वदाउघाडीछे एरीतें संतिके० केवणाअनादि परिणामिकभावते भवंतिके० होय अनादिपरिणामिकभावछेते जीवनाभावछे अने सप्रदेशादिक धर्मास्तिकायप्रमुखनेविषे समानछे एमजाणवो इत्यादिकशेषस्वभावछे.

भिन्नभिन्नपर्यायप्रवर्तनस्वकार्यकरणसहकारभूताः पर्या यानुगतपरिणामविशेषस्वभावाः तेचके १ परिणामिक ता २ कर्तृता ३ ज्ञायकता ४ ग्राहकता ५ भोक्तृता ६ रक्षणता ७ व्याप्याव्यापकता ८आधाराधेयता ए जन्य जनकता १० अगुरुलघुता ११ विभूतकारणता १२ का रकता १३ प्रभुता १४ भावुकता १५ अभावुकता १६ स्वकार्यता १७ सप्रदेशता १८ गतिस्वभावता १ए स्थि तिस्वभावता २० अवगाहकस्वभावता २१ असंभ्रता २२ अचलता २३ असंगता २४अक्रियता२५ सक्रियता इत्यादिस्वीयोपकरणप्रवृत्तिनैमित्तिकाः उक्तंचसंमतौ आ रोपोपचारेण यद्यदपेक्षते तत्तवस्तुधर्मः उपाधिताभवनात् नचोपाधिवस्तुसत्ताइति

अर्थ ॥ हवेविशेषस्वभावकहेछे भिन्नभिन्नजेपर्यायछे तेनुंकार्यकारणपणे जेप्रवर्त्तन तेना सहकारभूत जेपर्यायानुगतपरिणामि एवाजेस्वभाव तेविशेषस्वभावकहियें ते नाअनेकभेदछे ते श्रीहरिभद्रसूरिकृत वार्तिकसमुच्चयग्रंथमांकह्याछे तेकहेछे.

१ सर्वद्रव्यने पोतानागुंण समयसमयमां कार्यकरवेप्रवर्त्ते ते भिन्नभिन्न परिणा मेपरिणमे तेसर्वपोतानागुणतेने कारणीकछे तेपरिणामिकपणोकहियें २ तत्रकर्तृत्वं जीवस्यनान्येषां तिहांआत्माकर्त्ताछे एटलेकर्त्तापणो जीवद्रव्यनेविषेछेअप्पाकत्ताबि कत्तायइति उत्तराध्ययनवचनात् ३ ज्ञायकता जाणपणानीशक्ति जीवनेविषेछे ज्ञा नलक्षणजीवछे तेमाटेगिन्दईकांईएणंइतिआवश्यनिर्युक्तिवचनात् ४ ग्राहकशक्तिप

व्यापिपणो प्रदेशवंतपणो इत्यादिअनंतस्वभाववंतद्रव्यछे तेमज तत्वार्थटीकामध्ये प रिणामिकभावभेद वखाणतांकह्योछे पुनरपिआदिशब्दना ग्रहणकरतां एमजणावेछे जेवस्तुअनंतधर्मवंतछे तेसर्वविस्तारीशकेनही तोपणद्रव्यद्रव्यनेविषे प्रवचननाजाण पुरुषें जेमसंभवेतेमधर्मजोडवा तथाक्रियावंतपणो जेज्ञानादिकगुण तेलोकालोकजा णवाने प्रतिसमयेंप्रवर्त्तेछे श्रीभाष्यकारें ज्ञानादिगुण तेकरण अने तेजगुणनीप्रवृत्ति तेक्रियाजाणवी तथादेखवोतेकार्य एमधर्मास्तिकायादिकना सर्वगुण तेत्रणपरिणतिर्ये परिणामीछे तेमाटेपंचास्तिकाय तेअर्थक्रियाकरेछे तेक्रियावंतपणोजाणवो सर्वपर्या यनो उपयोगीपणो एपणजीवस्वभावछे तथाप्रदेशाष्टकनी निश्चलता एपणजीवनोस्व भावछे तिहांधर्माधर्म अनेआकाश एत्रण अस्तिकायनाप्रदेश अनादिअनंतकाल अव स्थितपणेछे पुद्गलनेचलणपणो सदासर्वदाछे पुद्गलपरमाणु तथापुद्गलस्कंध तेसंख्या तोकाल अथवाअसंख्यातोकाल एकक्षेत्रेरहेपणपछे अवश्यचलथाय तथाजीवद्रव्यने सकर्म्मा संसारीपणे क्षेत्रथी क्षेत्रांतरगमन भवथी भवांतरगमनरूप चलताछे तेजी वने सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान अनेसम्यक्चारित्रने प्रगटवे सर्वपरभावभोगीपणो नि वारवे आत्मस्वरूप निराधारण स्वरूपभासन स्वरूपपरिणमने करवे स्वरूपएकत्वें स्व धर्मकर्त्ता स्वधर्मभोक्तापणे सकलपरभावतजवे निरावरण निःसंग निरामय निर्द्वंद्व निष्कलंक निर्मलस्वीय अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र अरूपी अव्याबाध पर मानंदमयी सिद्धात्मा सिद्धक्षेत्रेरह्या तेसादिअनंतकाल स्थिरछे सकलप्रदेशस्थिरछे अनेसंसारीजीव तेनाआठप्रदेश सदासर्वदास्थिरछे तेआठप्रदेश निरावरणे तथा आ चारांगनीटीका शीलंगाचार्यकृतना लोकविजयाध्ययनने प्रथमोद्देशके तदनेन पंचद शविधेना पियोगेनात्मा अष्टौप्रदेशान्विहाय तप्तभाजनोदक वद्धद्वर्त्तमानैः सर्वैरेवा त्मप्रदेशैरात्मप्रदेशावष्टब्धाकाशस्थं कार्मणशरीरयोग्यं कर्मदलीकं यत्बध्नाति त त्प्रयोगकर्मेत्युच्यते.

एटले आठप्रदेशें कर्मलागतानथी इहांकोइपुछेजेआठप्रदेशनिरावरणछे तो लोका लोककेमजाणतानथी तिहांउत्तरजे आत्मद्रव्यनी जेगुणप्रवृत्ति तेसर्वप्रदेशमिले प्रव र्त्ते तोतेमां एआठप्रदेश अल्पछे तेथीआठप्रदेशमां सर्वगुणनिरावरणछे पणकार्य क रीशकतानथी जेमअग्निनुंअत्यंतसूक्ष्मकणीयुंहोय तेमां दाहक पाचक प्रकाशक गु णछे पणअल्पतामाटे दाहकादिकार्य करीशकतुंनथी.

वलीकोइपुछेजे एआठप्रदेश ते निरावरण केमरहीशक्या तेनुंउत्तर जेचलप्रदेश होय तेनेकर्मलागे पणअचलप्रदेशने कर्मलागेनही एमभगवतीसूत्रेकह्युंछे जेअड वे

अइ चलइ फंदइ घटइ तेवंधइ एपाठछे तेमाटे जेचलहोयतेवंधाय अनेआठप्रदेश तो अचलछे तेथीएआठप्रदेशने वंधनथी तथाकार्यान्यासे प्रदेशनेजाथाय तेथी प्र देशनागुणपण तिहांतेकार्यकरवाने प्रवर्त्तेछे तथाजेद्रव्यनो जेगुणजेप्रदेशेंहोय तेगु णतेप्रदेशमूकी अन्यक्षेत्रेंजायनही तथाजीवना आठप्रदेश सर्वथानिरावरणछे वीजा प्रदेशें अक्षरनोअनंतमोजाग चेतनासर्वदाउघाडीछे एरीतें संतिके० छेयणाअनादि परिणामिकजावते नवंतिके० होय अनादिपरिणामिकजावछेते जीवनाजावछे अने सप्रदेशादिक धर्मास्तिकायप्रमुखनेविषे समानछे एमजाणवो इत्यादिकशेषस्वजावछे.

जिन्नजिन्नपर्यायप्रवर्तनस्वकार्यकरणसहकारजूताः पर्या यानुगतपरिणामविशेषस्वजावाः तेचके १ परिणामिक ता २ कर्तृता ३ ज्ञायकता ४ ग्राहकता ५ जोक्तृता ६ रक्षणता ७ व्याप्याव्यापकता ८आधाराधेयता ए जन्य जनकता १० अगुरुलघुता ११ विजूतकारणता १२ का रकता १३ प्रजुता १४ जावुकता १५ अजावुकता १६ स्वकार्यता १७ सप्रदेशता १८ गतिस्वजावता १ए स्थि तिस्वजावता २० अवगाहकस्वजावता २१ असंगता २२ अचलता २३ असंगता २४अक्रियता२५ सक्रियता इत्यादिस्वीयोपकरणप्रवृत्तिनैमित्तिकाः उक्तंचसंमतौ आ रोपोपचारेण यद्यद्पेक्ष्ते तन्नवस्तुधर्मः उपाधिताजवनात् नचोपाधिवस्तुसत्ताइति

अर्थ ॥ हवेविशेषस्वजावकहेछे जिन्नजिन्नजेपर्यायछे तेनुंकार्यकारणपणे जेप्रवर्त्तन तेना सहकारजूत जेपर्यायानुगतपरिणामि एवाजेस्वजाव तेविशेषस्वजावकहियें ते नाअनेकजेदछे ते श्रीहरिजद्रसूरिकृत वार्तिकसमुच्चयग्रंथमांकह्याछे तेकहेछे.

१ सर्वद्रव्यने पोतानागुण समयसमयमां कार्यकरवेप्रवर्त्ते ते जिन्नजिन्न परिणा मेपरिणमे तेसर्वपोतानागुणतेने कारणीकरे तेपरिणामिकपणोकहियें २ तत्रकर्तृत्वं जीवस्यनान्येषां तिहांआत्माकर्त्ताछे एटलेकर्त्तापणो जीवद्रव्यनेविषेछेअप्पाकत्तावि कत्ताय इति उत्तराध्ययनवचनात् ३ ज्ञायकता जाणपणानीशक्ति जीवनेविषेछे ज्ञा नलक्षणजीवछे तेमाटेगिन्हईकोंईएणंइतिआवश्यनिर्युक्तिवचनात् ४ ग्राहकशक्तिप

एजीवनेछे गृएह्नातीतिक्रियानोकर्त्ता जीवछे ५ नोक्ताशक्तिपण जीवमांछे जोकुणइ सोनुंजइ यःकर्त्ता सएवनोक्ता इतिवचनात् १ रकुणता २ व्यापकता ३ आधाराधेयता ४ जन्यजनकता तत्वार्थवृत्तिमध्येछे तथाअगुरुलघुता. विज्ञुता करणता कार्यता कारकता एशक्तिनीव्याख्या श्रीविशेषावश्यकेंछे नावुकता तथा अनावुकता शक्तितेश्रीहरिनइसूरिकृतनावुकनामे प्रकरणमध्येकह्निछे.

एमकेटलीकशक्तिजैननातर्कग्रंथोजे अनेकांतजयपताका सम्मतिप्रमुखमांछे तथा ऊर्ध्वप्रचयशक्ति अनेतिर्यक्प्रचयशक्ति उघशक्ति समुचितशक्ति एसर्वसंमतिग्रंथनेविषेछे तथाजेद्दिगुणीआत्मामाने तेसर्वधर्मशक्तिरूपजमानेछे तेएदानादिकलब्धि अव्याबाधसुखप्रमुख शक्तिजमानीछे इहांव्याख्यांतरे जेगुणतेंकरणछे नेकर्त्तादिकपणो तेसामर्थ्यछे जाणवोदेखवो तेकार्यछे केटलीकशक्तिजीवमांजछे अनेकेटलीक पंचास्तिकायमध्येछे तथादेवसेनकृत नयचक्रमध्ये जीवनेअचेतनस्वनाव मूर्तस्वनाव तथापुज्जलपरमाणुने चेतनस्वनाव अमूर्तस्वनावकह्या तेअसत्छे एतोआरोपपणेंकोइककहे तेकथनमात्रजाणवो पणएवातछतीमांनथी जेधर्मआरोपें तथाउपचारेंगवेषाय तेवस्तुनोधर्मनथी उपाधीथीथायछे तेमाटेजेउपाधि तेवस्तुनीसत्तानथी एमधारवुं

धर्मास्तिकायेअमूर्ताचेतनाक्रियगतिसहायादयोगुणाः अधर्मास्तिकाये अमूर्ताचेतनाक्रियस्थितिसहकारादयोगुणाः आकाशास्तिकाये अमूर्ताचेतनाक्रियावगाहनादयोगुणाः पुज्जलास्तिकाये मूर्ताचेतनसक्रियपूर्णगलनादयोवर्णगंधरसस्पर्शादयोगुणाः जीवास्तिकायेज्ञानदर्शनचारित्रवीर्याव्याबाधामूर्त्तागुरुलघुअनवगाहादयोगुणाः एवंप्रतिद्रव्यं गुणानामनं- ज्ञेयं ॥

अथ ॥ धर्मास्तिकायने
हाय इत्यादिअनंतगुणछे नणचार १ अरूपी २ अचेतन ३ अक्रिय ४ गतिस
क्रिय ४ स्थितिसहाय इत्यादि॰ स्तिकायनागुणचार १ अरूपी २ अचेतन ३ अ
२ अचेतन ३ अक्रिय ४ अव॰ गुणछे आकाशास्तिकायनागुणचार १ अरूपी
१ रूपी २ अचेतन ३ सक्रिय ४ अनंतगुणछे पुज्जलास्तिकायनागुणचारछे
स्यादिकगुणअनंताछे जीवास्तिकायने गलन १ वर्ण २ गंध ३ रस ४ स्पर्श ६
वेषे १ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र ४ वीर्य ५

अव्याबाध ६ अरूपी ७ अगुरुलघु ७ अनवगाहादिकअनंतगुणछे एरीतें द्रव्यनेवि पे अनंतागुणजाणवा.

पर्यायाःषोढा द्रव्यपर्यायाअसंख्येयप्रदेशसिद्धत्वादयः १ द्रव्यव्यंजनपर्यायाः द्रव्याणांविशेषगुणाश्चेतनादयश्च लनसहायादयश्च २ गुणपर्यायाः गुणा विभागादयः ३ गुणव्यंजनपर्यायाज्ञायकादयः कार्यरूपाः मतिज्ञानादयः ज्ञानस्यचक्षुर्दर्शनादयो दर्शनस्यक्षमामार्दवादयः चारि त्रस्यावर्णागंधारसास्पर्शादयोमूर्त्तस्यइत्यादि ४ स्वभावप र्यायाअगुरुलघुविकाराः तेचद्वादशप्रकाराःषट्गुणहानिवृ द्धिरूपाः अवाग्गोचराः एतेपंचपर्यायासर्वद्रव्येषु विभाव पर्यायाः जीवेनरनारकादयः पुद्गलेद्व्यणुकतोनंताणुकपर्यंतास्कंधाः

अर्थ ॥ हवेनयज्ञानकरवानो अधिकारकहेछे तिहांद्रव्यास्तिकनयनामूलबेभेदछे१ शुद्धद्रव्यास्तिक२अशुद्धद्रव्यास्तिकअनेदेवसेनकृतपद्धतीमांद्रव्यास्तिकनादशभेदकस्या छे तेसर्वएबेभेदमध्येसमायछेतथातेसामान्यस्वभावमांसमाणाछेतेमाटेइहांनवखाण्या.

हवेपर्यायना छभेदकहेछे तिहांप्रथम१जेद्रव्यनेविषे एकत्वपणेरह्या जेजीवादिकना असंख्याताप्रदेश तथाआकाशना अनंताप्रदेश एद्रव्यपर्यायकहियें २ सिद्धत्वादिक अखंडत्वादिक तथाद्रव्यनोव्यंजकके० प्रगटपणोजेमानेछे तेद्रव्यव्यंजनपर्यायकहियें

द्रव्यनोविशेषगुण जेअन्यद्रव्यमांनथी तेनेविशेषगुणकहियें तेजीवनेचेतनतादि क अने धर्मास्तिकायमांचलणसहकार तथा अधर्मास्तिकायमांथिरसहकार आका शमां अवगाहदान पुद्गलमां पूरणगलणरूप एसर्वस्वद्रव्यनीभिन्नताने प्रगटकरेछे ते माटे एधर्मनेद्रव्यव्यंजन पर्यायकहियें.

३ एकगुणना अविभाग अनंताछे तेनोपिंडपणो तेगुणपर्यायकहिये ४ गुण व्यंजनपर्यायतेज्ञाननो जाणंगपणो तथाचारित्रनो थिरतापणो इत्यादिक अथवा ज्ञा नगुणनाभेदांतर ज्ञाननाभेद जे मतिज्ञानादिक पांच तथादर्शनगुणना चक्षुदर्शना दिकभेद तथाचारित्रगुणना क्षमादिकभेद पुद्गलनोरूपीगुण तेनाभेदवर्णगंध रसस्प र्श संस्थानादिक अरूपीगुणना अवन्ने अगंधे अरसे अफासे इत्यादिकचारजाणवा तेगुण व्यंजनपर्याय ५ स्वभावपर्याय ते वस्तुनोकोइकस्वभावज एवोछे तेअगुरुलघुपणे

एजीवनेने गृएद्दातीतिक्रियानोकर्त्ता जीवठे ५ नोक्ताशक्तिपण जीवमांहे जोकुणइ सोतुंजइ यःकर्त्ता सएवनोक्ता इतिवचनात् १ रक्षणता २ व्यापकता ३ आधाराधेयता ४ जन्यजनकता तत्वार्थवृत्तिमध्येठे तथाअगुरुलघुता, विज्ञुता करणता कार्यता कारकता एशक्तिनीव्याख्या श्रीविशेषावश्यकेंठे नावुकता तथा अनावुकता शक्तिजेश्रीहरिनद्रसूरिकृतनावुकनामे प्रकरणमध्येकहिले.

एमकेटलीकशक्तिजननातर्कग्रंथोजे अनेकांतजयपताका सम्मतिप्रमुखमांठे तथा कर्ध्वप्रचयशक्ति अनेतिर्यक्प्रचयशक्ति उंघशक्ति समुचितशक्ति एसर्वसंमतिग्रंथनेविषेने तथाजेदिगुणीआत्मामाने तेसर्वधर्मशक्तिरूपजमानेठे तेएेदानादिकलब्धि अव्याबाधसुखप्रमुख शक्तिजमानीने इहांअव्याख्यांतरे जेगुणतेंकरणठे नेकर्त्तादिकपणो तेसामर्थ्यने जाणवोदेखवो तेकार्यठे केटलीकशक्तिजीवमांजठे अनेकेटलीक पंचास्तिकायमध्येने तथादेवसेनकृत नयचक्रमध्ये जीवनेअचेतनस्वनाव मूर्तस्वनाव तथापुजलपरमाणुने चेतनस्वनाव अमूर्तस्वनावकह्या तेअसत्ने एतोआरोपपणेकोइककहे तेकथनमात्रजाणवो पणएवातठतीमांनथी जेधर्मआरोपें तथाउपचारेंगवेषाय तेवस्तुनोधर्मनथी उपाधीथीयायने तेमाटेजेउपाधि तेवस्तुनीसत्तानथी एमधारवुं

धर्मास्तिकायेअमूर्ताचेतनाक्रियगतिसहायादयोगुणाः अधर्मास्तिकाये अमूर्ताचेतनाक्रियस्थितिसहकारादयोगुणाः आकाशास्तिकाये अमूर्ताचेतनाक्रियावगाहनादयोगुणाः पुजलास्तिकाये मूर्ताचेतनसक्रियपूर्णगलनादयोवर्णगंधरसस्पर्शादयोगुणाः जीवास्तिकायेज्ञानदर्शनचारित्रवीर्याव्याबाधमूर्तागुरुलघुअनवगाहादयोगुणाः एवंप्रतिद्रव्यं गुणानामनंतत्वंज्ञेयं ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायना गुणचार १ अरूपी २ अचेतन ३ अक्रिय ४ गतिसहाय इत्यादिअनंतगुणने अधर्मास्तिकायनागुणचार १ अरूपी २ अचेतन ३ अक्रिय ४ स्थितिसहाय इत्यादिअनंतगुणने आकाशास्तिकायनागुणचार १ अरूपी २ अचेतन ३ अक्रिय ४ अवगाहनादिक अनंतगुणने पुजलास्तिकायनागुणचारने १ रूपी २ अचेतन ३ सक्रिय ४ पूर्णगलन १ वर्ण २ गंध ३ रस ४ स्पर्श इत्यादिकगुणअनंताने जीवास्तिकायनेविषे १ ज्ञान २ दर्शन ३ चारित्र ४ वीर्य ५

अव्याबाध ६ अरूपी ७ अगुरुलघु ८ अनवगाहादिकअनंतगुणछे एरीतें द्रव्यनेविषे अनंतागुणजाणवा.

पर्यायाःषोढा द्रव्यपर्यायाअसंख्येयप्रदेशसिद्धत्वादयः १ द्रव्यव्यंजनपर्यायाः द्रव्याणांविशेषगुणाश्चेतनादयश्च चलनसहायादयश्च २ गुणपर्यायाः गुणा विभागादयः ३ गुणव्यंजनपर्यायाज्ञायकादयः कार्यरूपाः मतिज्ञानादयः ज्ञानस्यचक्षुर्दर्शनादयो दर्शनस्यक्षमामार्दवादयः चारित्रस्यावर्णागंधारसास्पर्शादयोमूर्त्तस्यइत्यादि ४ स्वभावपर्यायाअगुरुलघुविकाराः तेचद्वादशप्रकाराःषट्गुणहानिवृद्धिरूपाः अवाग्गोचराः एतेपंचपर्यायासर्वद्रव्येषु विभावपर्यायाः जीवेनरनारकादयः पुद्गलेद्व्यणुकतोनंताणुकपर्यंतास्कंधाः

अर्थ ॥ हवेनयज्ञानकरवानो अधिकारकहेछे तिहांद्रव्यास्तिकनयनामूलबेभेदछे १ शुद्धद्रव्यास्तिक २ अशुद्धद्रव्यास्तिकअनेदेवसेनकृतपद्धतीमांद्रव्यास्तिकनादशभेदकस्याछे तेसर्वएबेभेदमध्येसमायछेतथातेसामान्यस्वभावमांसमाणाछेतेमाटेइहांनवखाण्या.

हवेपर्यायिना छभेदकहेछे तिहांप्रथम १ जेद्रव्यनेविषे एकत्वपणेरह्या जेजीवादिकना असंख्याताप्रदेश तथाआकाशना अनंताप्रदेश एद्रव्यपर्यायकहियें २ सिद्धत्वादिक अखंडत्वादिक तथाद्रव्यनोव्यंजकके० प्रगटपणोजेमानेछे तेद्रव्यव्यंजनपर्यायकहियें

द्रव्यनोविशेषगुण जेअन्यद्रव्यमांनथी तेनेविशेषगुणकहियें तेजीवनेचेतनतादिक अने धर्मास्तिकायमांचलणसहकार तथा अधर्मास्तिकायमांथिरसहकार आकाशमां अवगाहदान पुद्गलमां पूरणगलणरूप एसर्वस्वद्रव्यनीभिन्नताने प्रगटकरेछे ते माटे एधर्मनेद्रव्यव्यंजन पर्यायकहियें.

३ एकगुणना अविभाग अनंताछे तेनोपिंडपणो तेगुणपर्यायकहिये ४ गुणव्यंजनपर्यायतेज्ञाननो जाणंगपणो तथाचारित्रनो थिरतापणो इत्यादिक अथवा ज्ञानगुणनाभेदांतर ज्ञाननाभेद जे मतिज्ञानादिक पांच तथादर्शनगुणना चक्षुदर्शनादिकभेद तथाचारित्रगुणना क्षमादिकभेद पुद्गलनोरूपीगुण तेनाभेदवर्णगंध रसस्पर्श संस्थानादिक अरूपीगुणना अवर्ने अगंधे अरसे अफासे इत्यादिकचारजाणवा तेगुण व्यंजनपर्याय ५ स्वभावपर्याय ते वस्तुनोकोइकस्वभावज एवोछे तेअगुरुलघुपणे

छे उप्रकारनीवृद्धि तथाउप्रकारनीहानि एवीरीतें बारप्रकारें परिणमेछे इहांकोइप्रेरक नो योगनथी वस्तुनेमूलधर्मनोहेतुछे एनोस्वरूपपूरूं वचनगोचरनथी अनुभवगम्यन थी केमके श्रीगणांगसूत्रनी टीकामध्येश्रुतज्ञानवृद्धिना सातअंगछे तिहांप्रथमसूत्र अंग बीजुं निर्युक्तिअंग ३ नाष्यअंग ४ चूर्णिवालोसूत्रादि सर्वनाअर्थकहेछे ५ टीका व्याख्यानिरंतर एपांचअंगतो ग्रंथरूपछे तथाछठोअंगपरंपरारूपछे तथासातसुंअंगअ नुभव एसातेकारणे विनयसहितनणतां सुणतांथकासाचाअर्थ पामिने आत्मातुंज्ञान निर्मलथाय श्रीनगवतिसूत्रे गाथा सुत्तछोखलुपढमो वीउनिर्युत्तिमिसिउनणीउ त इयोअनिरवसेसो एसविहिहोइअणुउगे एपांच पर्यायकह्या तेसर्वद्रव्यमध्येछे

६ विनागपर्याय तेजीव तथापुज्जलमध्येजछे तेविनावपर्यायजीवने नरनारकीपणुं पामवुंते तथा पुज्जलनो द्व्यणुकत्र्यणुकादिकस्वंधनोमिलवुंअनंताणुकपर्यंत अनंतपुज लस्कंधरूप ते विनागपर्याय कहियें.

मेर्वाद्यनादिनित्यपर्यायाः चरमशरीरत्रिनागन्यूनावगा हनादयःसादिनित्यपर्यायाः सादिसांतपर्यायानवशरीरा ध्यवसायादयः अनादिसांतपर्यायानव्यत्वादयः तथाचनि क्षेपाः सहजरूपावस्तुनःपर्यायाः एवंचत्वारोवथ्थुपज्जाया इतिनाष्यवचनात्नामयुक्तेप्रतिवस्तुनिनिक्षेपचतुष्टयंयुक्तम् उक्तंचानुयोगद्वारे जथ्थयजंजाणिज्जा निस्केवंनिस्कवेनिर वसेसं जथ्थयनोजाणिज्जा चउक्कयंनिस्कवेतथ्थ तत्रनाम निक्षेपः स्थापनानिक्षेपः द्रव्यनिक्षेपः नावनिक्षेपः तत्र नामनिक्षेपोद्विविधः सहजःसांकेतिकश्च स्थापनाऽपिद्वि विधा सहजाआरोपजाच द्रव्यनिक्षेपोद्विविधः आगमतो नोअगमतश्च तत्रआगमतः तदर्थज्ञानानुपयुक्तः नोआग मतोज्ञशरीरनव्यशरीर तद्व्यतिरिक्तनेदात्रिधानावनिक्षेपो द्विविधः आगमतोनोआगमतश्चतद्ज्ञानोपयुक्तःतद्गुणम यश्च वस्तुस्वधर्मयुक्तं तत्रनिक्षेपावस्तुनः स्वपर्यायाधर्मनेदाः

अर्थः॥पुज्जलनुंमेरुप्रमुख तेअनादिनित्यपर्यायछेजीवनीसिद्धावस्था सिद्धावगाहना दिकतेसादिनित्यपर्यायछे तथानावव्यनेशरीर तथाअध्यवसाय एत्रणप्रकारनायोगस्था

नजे वीर्यनाक्षयोपशमथीऊपना तेमांकषायस्थान जेचेतनानोक्षयोपशम कषायनाउ दयथीमिल्या अनेसंयमस्थानजे चारित्रनो क्षयोपशमपरिणमी जेचेतनादिकगुण ए सर्वअध्यवसायस्थानक तेसादिसांतपर्यायछे तथासिद्धिगमनयोग्यताधर्म तेनव्यपणो एपर्याय तेअनादिसांतछे जेसिद्धत्वपणोप्रगटे नव्यत्वपर्यायनोविनाशछे तेमाटे अना दिकालनोछे पणअंतथवासहितछे माटेअनादिसांतपर्यायछे एमपर्यायअनेकजाणवा.

तथावस्तुमां सहजना जेचारनिक्षेपाछेतेपणवस्तुनास्वपर्यायछे तेश्रीविशेषावश्य कनी नाष्यमध्येकह्योछे चत्वारोवस्तुपर्याया एवचनछे तेमाटेस्वपर्यायकहियें वलीश्री अनुयोगधारसूत्रमांकह्योछे जिहांजेवस्तुना जेटलानिक्षेपाजाणियें तिहां तेवस्तुना ते टलानिक्षेपाकरियें कदाचित्तवधतानिक्षेपा नासनमांनआवे तोपण १ नाम २ स्था पना ३ ड्व्य ४ नावएचारनिक्षेपातो अवश्यकरवा तेमांनामनिक्षेपानावेनेदछे.

१ सहजनाम २ सांकेतिकतेकोइकनोकस्योनाम तथास्थापनानावेनेदछे १ सहज स्थापना तेवस्तुनीअवगाहनारूप २आरोपस्थापनाते आरोपथीथयी माटेकृत्रिमकहि यें आरोपजाकहियें हवेड्व्यनिक्षेपानावेनेदछे तेकहेछे १ आगमथीड्व्यनिक्षेपो ते जे जेपुरुषना स्वरूपनाजाणपणे हमणातेऊपयोगेंनथी तेआलमड्व्यनिक्षेपजेवस्तुतेगु णसहितछे पणहमणातेपणेवरत्ततानथी तेहनात्रणनेदछे १ ज्ञशरीरजेहनाहत्ता प णमरणपाम्या तेथीतेनुंशरीर जेऊपजदेवना शरीरनीनक्ति श्रीजंबूद्वीपन्नतीमांछे २ नं व्यशरीरते हमणातो गुणमयनथी पणगुणमयथशे जेम अयमंतामुनो एनव्यशरी रजाणवो ३ तद्व्यातिरिक्त जेतेगुणेवर्तेछे पणतेऊपयोगें हमणावरत्ततानथी.

नावनिक्षेपानावेनेद १ आगमथी नावनिक्षेपो तेआगमना अर्थनोजाण वलीतेऊ पयोगेंवर्तेछे २ नोआगमथी नावनिक्षेपो तेजेपणेज्ञवर्त्तेछे तेजरूपछे एरीतेंनिक्षेपाकेवा.

एचारनिक्षेपामां पेहेलात्रणनिक्षेपा तेकारणरूपछे अनेचोथोनावनिक्षेपो तेकार्य रूपछे तेनावनिक्षेपाने निपजावतां पहेलात्रणनिक्षेपा प्रमाणछे नहींकांअप्रमाणछे पहेलात्रणनिक्षेपा ड्व्यनयछे एकनावनिक्षेपो तेनावनयछे नावनिक्षेपाने अणनिप जावतां एकलीड्व्यनीप्रवृत्तिते निष्फलछे एमश्री आचारांगनीटीकामां लोकविजया अध्ययने कह्युंछेतेलखीयेछैयें फलमेवगुणः फलगुणः फलंचक्रियातोनवतितस्याश्च क्रियायाः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र रहितायाऐहिकामुष्मिकार्थप्रवृत्तायाः अनात्यंति कोनैकांतिकोनवेत् फलंगुणोप्यगुणोनवति सम्यक्दर्शनज्ञानचारित्रक्रिया यास्त्वेकां तिकानाबाधसुखाख्यसिद्धिगुणोवाप्यते एतडुक्तंनवति सम्यक्दर्शनादिकैवक्रियासि द्धिफलगुणेनफलवत्यपरातुसांसारिकसुखफलान्यासएवफलाध्यारोपान्निष्फलेत्यर्थः

एटलेरत्नत्रयी परिणमनविना जेक्रियाकरवी तेथकीसंसारिक सुखथाय तेक्रिया निःफलछे एपाछ्छे माटेनावनिक्षेपाना कारणविना पेहेलात्रणेनिक्षपा निःफलछे निक्षेपातो मूलगीवस्तुनापर्यायछे इव्यनोसधर्मजछे.

नयास्तुपदार्थज्ञानेज्ञानांशाः तत्रानंतधर्मात्मकेवस्तुन्येक धर्मोन्नयनंज्ञानंनयः तथारत्नाकरे नीयतेयेनश्रुताख्यप्रमाणविपयीकृतस्यार्थस्यांशस्तदितरांशौदासीन्यतःसप्रतिपत्तुरभिप्रायविशेषोनयः स्वाभिप्रेतादंशादितरांशापलापीपुनर्नयाभासः सव्याससमासाभ्यांद्विप्रकारः व्यासतोनेक विकल्पः समासतोद्विभेदः द्रव्यार्थिकःपर्यायार्थिकः तत्रद्रव्यार्थिकश्चतुर्धा १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र भेदात् पर्यायार्थिकस्त्रिधा १ शब्द २ समभिरूढ ३ एवंभूतभेदात्.

अर्थ ॥ जेनयछे तेपदार्थनाज्ञाननेविषे ज्ञाननाअंशछे तिहांनयतुंलक्षणकहेछे अनंतधर्मात्मक जेवस्तु एटलेजीवादिक एकपदार्थमां अनंताधर्मछे तेनोजेएकधर्मगवेष्यो तोपण अन्यके० वीजाअनंताधर्म तेमांरह्याछे तेनोउछेदनही अनेग्रहणपणनही एकधर्मनीमुख्यताकरवी तेनयकहियें तेनयना व्यासके० विस्तारथी अनेकभेदछे अने समासके० संक्षेपथीवेभेदछे १ इव्यार्थिक २ पर्यायार्थिक तेरत्नाकरावतारिकाग्रंथथी लखियेंछेयें इवतिइोप्यति अइइवत् तांस्तान्पर्यायानितिइव्यं तदेवार्थःसोऽस्तियस्य विपयत्वेन सइव्यार्थिकः

जेवर्तमानपर्यायनेइवेछे अनेआगमिककालेंइवसे तथा अतीतकालेंइवतोहतो तेइव्यकहियें तेजछेअर्थप्रयोजनविपयपणेजेने ते इव्यार्थिककहियें एटलेपर्यायते जन्य अने इव्यतेजनककह्योतथाइव्यतेध्रुवअनेपर्यायते उत्पादविनाशरूपछे यकंच

पर्येतिउत्पादविनाशौप्राप्नोतीतिपर्यायः सएवार्थः सअस्तियस्यासौपर्यायार्थिकः

जे उपजवाविणशवानो धरिके० नवानवापणे एतिके० पामेतेजअर्थप्रयोजन तेने पर्यायार्थिककहियें तेइव्यार्थिकपर्यायार्थिक एबेधर्मने इव्यतथापर्यायकहियें

इहांकोइप्रश्नेजे त्रीजोगुणार्थिककेमकेतानथी तेवलीरत्नाकरावतारिकामध्ये कह्योछे गुणस्यपर्यायेएवांतर्भूतत्वात् तेनपर्यायार्थिकेनैवतत् संग्रहात्

जेगुणतेपर्यायनेविषे अंतर्भूतछे तेपर्यायार्थिकमध्येजसंग्रह्योछे तेपर्याय बेभेदेछे एक सहभावि बीजोक्रमभावि तेमांसहभावितेगुणछे तेपर्यायनेविषे अंतर्भूतछे ति हांद्रव्यपर्यायथी व्यतिरिक्तसामान्यविशेष एवेधर्मछे माटेसामान्यविशेष बेनयवत्ताके मकेहेतानथी एमकोइपुछेतेनेउत्तर.

जे द्रव्यपर्यायाभ्यां व्यतिरिक्तयोः सामान्यविशेषयोरप्रसिद्धेः तथाहि द्विप्रकारं सामान्यमुक्तमूर्ध्वतासामान्यं तिर्यक्सामान्यंच तत्रोर्ध्वसामान्यंद्रव्यमेव तिर्यक्सामान्यंतु प्रतिव्यक्तिसदृशपरिणामलक्षणंव्यंजनपर्यायएव एपावथी ऊर्ध्वसामान्यते द्रव्य नोधर्मछे अनेतिर्यक्सामान्यते पर्यायधर्मछे विशेषोपिवैसादृश्यविवर्त्तलक्षणंपर्यायए वांतर्भवतिनैताभ्यामधिकनयावकाशः

विशेषपणेअनेकरीतें वर्तवानोलक्षणछे तेपर्यायनेविषे अंतर्भावछे तेमाटे भिन्न नयनो अवकाशनथी एवेनयमध्येज अंतर्भावछे तेमांवली द्रव्यार्थिकना चारभेद छे १ नैगम २संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजूसूत्र तथापर्यायार्थिकना त्रणभेदछे १ श ब्द २ समभिरूढ ३एवंभूत.

विकल्पांतरेऋजुसूत्रस्यपर्यायार्थिकताप्यस्ति सनैगमस्त्रिप्र कारः आरोपांशसंकल्पभेदात् विशेषावश्यकेतूपचारस्य भिन्नग्रहणात्चतुर्विधःनएकेगमा आशयविशेषायस्यसनैग मः तत्रचतुःप्रकारआरोपः द्रव्यारोपगुणारोप कालारोप कारणाद्यारोपभेदात् तत्रगुणेद्रव्यारोपः पंचास्तिकायवर्त नागुणस्यकालस्यद्रव्यकथनं एतद्गुणेद्रव्यारोपः १ ज्ञा नमेवात्मा अत्रद्रव्येगुणारोपः २ वर्त्तमानकालेअतीतका लारोपःअद्यदीपोत्सववीरनिर्वाणं वर्तमानेअनागतकाला रोपः अद्यैवपद्मनाभे निर्वाणं एवंपट्भेदाः कारणेकार्या रोपः बाह्यक्रियायाधर्मत्वं धर्मकारणस्यधर्मत्वेनकथनं सं कल्पोद्विविधः स्वपरिणामरूपः कार्यांतरपरिणामश्च अं शोपिद्विविधः भिन्नोभिन्नश्चेत्यादिशतभेदोनैगमः

अर्थ ॥ वलीविकल्पांतरे ऋजुसूत्रते पर्यायार्थिकमां पणकह्योछे केमके एविकल्प

रूपनयछे तेमाटे. तेमांनैगमनात्रणनेदछे १ आरोप २ अंश ३ संकल्प तथाविशे पावश्यकमां चोथोनेदपणउपचारपणेकहेछे नथीएकगमो अभिप्रायजेनो तेनैगमन यकह्यिं एटलेअनेकआशयीछे तेनैगमनयना चारनेदछे तेमध्ये आरोपना चारप्र कारछे १ द्रव्यारोप २ गुणारोप ३ कालारोप ४ कारणाद्यारोप

१ तिहांगुणादिकनेविषे द्रव्यपणोमानवो तेद्रव्यारोपजेमवर्तनापरिणाम तेपंचा स्तिकायनो परिणमनधर्मछे तेने कालद्रव्यकह्विोलाव्यो एकालतेनिन्नपिंमरूपद्रव्यन थी पणआरोपेंद्रव्यकह्योछे माटेद्रव्यारोप अनेद्रव्यनेविषे गुणनोआरोपकरवो जेमज्ञानगुणछे पणज्ञानीतेजआत्मा एमज्ञानने आत्माकह्यो तेगुणनोआरोपकर्यो माटेगुणारोप तथा जेमश्रीवीरनिर्वाणथयातेने तोघणोकालगयोछे पणआजदीवा लीनादीवसेंवीरनोनिर्वाणछे एमकेवुं एवर्तमानमां अतीतनो आरोपकर्यो अथवा आजश्रीपद्मनाजप्रजुनो निर्वाणछे एमकेवुं तेमवर्तमाननेविषे अनागतकालनोआ रोपछे एवीरीतें वलीअतीतनाबेनेदछे तथाएवीजरीतेअनागतनाबेनेदछे अनेवर्तमा नना वेनेदरूपरकह्या तेसर्वमली कालारोपना छनेदजाणवा.

वलीकारणविषे कार्यनोआरोपकरवो तेकारणचारछे १ उपादानकारण २ नि मित्तकारण ३ असाधारणकारण ४ अपेक्षाकारण तेमाबाह्यद्रव्यक्रिया ते साध्यसा पेक्षवालाने धर्मनुंनिमित्तकारणछे तोपणएनेधर्मकारणकह्यिं तेमजश्रीतीर्थंकर मो क्षनुंकारणछे तेथीतेने तारयाणंकह्यो तेकारणनेविषे कर्त्तापणानोआरोपकर्यो एम आरोपता अनेकप्रकारेंछे तेकारणाद्यारोप वलीसंकल्प नैगमनाबेनेदछे १ स्वपरिणा मरूपजेवीर्य चेतनानो जेनवोनवो क्षयोपशमतेलेवो बीजोकार्यांतरे नवेनवेकार्यें नवो नवोउपयोगथाय ते एबेनेदथया तथाअंशनैगमनापणबेनेदछे १ निन्नांशतेजूदोअंश स्कंधादिकनो बीजो अनिन्नांश ते जे आत्मानाप्रदेश तथागुणनाअविजाग इत्यादिक एसर्वनैगमनयनानेदजाणवाएटलेनैगमनयकह्यो

सामान्यवस्तुसत्तासंग्राहकसंग्रहः सद्विविधसामान्यसंग्रहो
विशेषसंग्रहश्च सामान्यसंग्रहोद्विविधःमूलतउत्तरतश्चामूल
तोस्तित्वादिनेदतः षड्विधः उत्तरतोजातिसमुदायनेदरूपः
जातितः गविगोत्वं घटेघटत्वं वनस्पतो वनस्पतित्वं समुदय
तोसहकारात्मकेवनेसहकारवनं मनुष्यसमूहेमनुष्यवृंदइ
त्यादिसमुदायरूपः अथवाद्रव्यमितिसामान्यसंग्रहः जी

वइतिविशेपसंग्रहः तथाविशेपावश्यके संगहणंसंगिन्ह इसंगिन्हंतेवतेणजंभेया तोसंगहोसंगिहियपिंमियत्थंवजज्ज स्स संग्रहणंसामान्यरूपतयासर्ववस्तुनामाक्रोमनंसंग्रहः अथवासामान्यरूपतयासर्वंगृन्हातीतिसंग्रहः अथवासर्वे पिभेदाः सामान्यरूपतयासंगृह्यंते अनेनेतिसंग्रहः अथवा संगृहीतंपिंमितंतदेवार्थोभिधेयंयस्यतत्संगृहीतपिंमितार्थं एवंभूतंवचोयस्यसंग्रहस्येतिसंग्रहीतंपिंमितं तत्किमुच्यतेइ त्याह संगहीयमागहीयं संपिंमियमेगजाइमाणीयं ॥ संगही यमणुगमोवा वइरेगोपिंमियंभणियं ॥१॥ सामान्याभिमुख्ये नग्रहणंसंगृहीतसंग्रहउच्यते पिंमितंत्वेकजातिमानित मभि धीयतेपिंमितसंग्रहः अथसर्वव्यक्तिष्वनुगतस्यसामान्यस्य प्रतिपादनमनुगमसंग्रहोभिधीयते व्यतिरेकस्तुतदितरधर्म निपेधात्ग्राह्यधर्मसंग्रहकारकं व्यतिरेकसंग्रहोभण्यतेय थाजीवोजीवइतिनिपेधे जीवसंग्रह एवजाताः अतः १ संग्र ह २ पिंमितार्थ ३ अनुगम ४ व्यतिरेकभेदाच्चतुर्विधः अ थवास्वसत्ताख्यंमहासामान्यंसंगृह्णाति इतरस्तुगोत्वादिक मवांतरसामान्यंपिंमितार्थमभिधीयते महासत्तारूपं अवां तरसत्तारूपं एगंनिच्चंनिरवयवमक्कियं सव्वगंचसामन्नं एतत् माहासामान्यं गविगोत्वादिकमवांतरसामान्यमितिसंग्रहः

अर्थ ॥ हवेसंग्रहनयकहेछे सामान्य मूलसर्वद्रव्यव्यापक नित्यत्वादिक सत्ताप णे रह्याजेधर्म तेनोजेसंग्रहकरे तेसंग्रहकहियें तेनावेभेदछे १ सामान्यसंग्रह २ विशेपसंग्रह वलीसामान्यसंग्रहना वेभेदछे १ मूलसामान्यसंग्रह २ उत्तरसामान्य संग्रह वलीमूलसामान्यसंग्रहना अस्तित्वादिकछभेदछे तेपूर्वेकह्याछे तथाउत्तरसामा न्यना वेभेदछे १ जातिसामान्य २ समुदायसामान्य तिहांगायनासमुदायमां गोत्व रुपजातिछे तथाघटसमुदायमांघटत्वपणो अनेवनस्पतिनेविपे वनस्पतिपणो तेजा

तिसामान्यकह्यो अने आंबानासमूहनेंविषे अंबवनकहे तथा मनुष्यना समूहमां मनुष्यग्रहणथाय तेसमुदायसामान्य एउत्तरसामान्य तेचक्षुदर्शन तथाअचक्षुदर्शनने ग्राहीकछे अनेमूलसामान्य तेअवधिदर्शन तथाकेवलदर्शनथी ग्रहवायछे अथवा १ सामान्यसंग्रह २ विशेषसंग्रह तिहां षड्द्रव्यनासमुदायने द्रव्यकहेतांसामान्यसंग्रह इहांसर्वनोग्रहणथयोछे अनेजीवने जीवद्रव्यकही अजीवद्रव्यथी जूदोदपाड्यो एविशेषसंग्रह एविशेषसंग्रहनो विस्तारघणोछे तथाविशेषावश्यकथी संग्रहनयना चारभेद तेलखियेंछेयें मूलपाठमां कहेलीगाथानोअर्थछे.

संग्रहणंके० एकठो एकवचनमध्ये एकअध्यवसाय उपयोगमां समकालेंग्रहेंतुं सामान्यरूपपणे सर्ववस्तुनो आक्रोमण ग्रहणकरवो तेसंग्रहकहियें अथवासामान्यरूपपणेसर्व संग्रहकरे तेसंग्रहकहियें अथवाजेथकीसर्वभेद सामान्यपणे ग्रहिये तेने संग्रहकहियें अथवासंगृहीतं पिंमितके० जेवचनथी समुदायअर्थग्रहवाय तेसंग्रहवचनकहियें तेनाचारभेदछे १ संगृहीतसंग्रह २ पिंमितसंग्रह ३ अनुगमसंग्रह ४ व्यतिरेकसंग्रह.

१ सामान्यपणे वेचणविना ग्रहणथाय एवोजेउपयोग अथवा एवुंवचन अथवाएवोधर्म कोइपणवस्तुनेविषेहोय तेनेसंगृहित संग्रहकहियें.

२ अनेएकजातिमाटे एकपणोमानिने तेएकमध्ये सर्वनोग्रहणथायजेमएगेआयाए गेपुंग्गले इत्यादिवस्तुअनंतिछे पणजातिएकमाटेग्रहवायछे तेबीजोपिंमितसंग्रहकहियें

३जेअनेकजीवरूप अनेकव्यक्तिछे तेसर्वमांपामियें जेम सत्चित्मयोआत्मा एटलेसर्वजीव तथासर्वप्रदेश सर्वगुण तेजीवनालक्षणछे एनेअनुगमसंग्रहकहियें.

४ तथाजेनेनाकहेवे तेथीइत्तरनो सर्वसंग्रहपणेज्ञानथायतेजेमअजीवछेतेवारें जे जीवनहीतेअजीवकहिये एटलेकोइकजीवछे एमव्यतिरेक वचनेतेखो तथाउपयोगें जीवनो ग्रहणथायछे तेव्यतिरेकसंग्रहकहियें

अथवासंग्रहनयबेभेदेंकेवायछे १ महासत्तारूप २ अवांतरसत्तारूप एरीतेंपणसंग्रहनोस्वरूपकह्योछे सवतिन्नणिएणज म्हासव्वणुप्पवत्तएवुध्दि तोसव्वंसत्तमत्तं नत्थीतदंतरंकिंचि ॥ १ ॥ यद्यस्मात्सदित्येवंभणिते सर्वत्रिभुवनत्रयांतर्गतवस्तुनिबुध्दिरनुप्रवर्तते अथावर्तिनहितत् किमपिवस्तुअस्तियत् सदित्युक्तेजगतिबुध्दौनप्रतिभासते तस्मात्सर्वसत्तामात्रं नपुनःअर्थांतरं तत्श्रुतसामर्थ्यात् यत्संग्रहेन संगृह्यते तेनपरिणमनरूपत्वादेवसंग्रहस्येतिएटलेत्रणेभुवनमां एहवीवस्तुकोइनथीजे संग्रहनयनें रणमांआवतीनथी जेजेवस्तुछेतेसर्व संग्रहनयमां ग्रहवाणीजछे एसंग्रहनयकह्यो.

संग्रहगृहीतवस्तुभेदांतरेणविभजनंव्यवहरणंप्रवर्तनंवाव्य
वहारःसद्विविधःशुद्धोशुद्धश्च शुद्धोद्विविधः वस्तुगतव्यवहा
रः धर्मास्तिकायादिद्रव्याणां स्वस्वचलनसहकारादिजीव
स्यलोकालोकादिज्ञानादिरूपः स्वसंपूर्णपरमात्मभावसाध
नरूपो गुणसाधकावस्थारूपः गुणश्रेण्यारोहादिसाधनशु
द्धव्यवहारः अशुद्धोपिद्विविधः सद्भूतासद्भूतभेदात् सद्भू
तव्यवहारो ज्ञानादिगुणः परस्परंभिन्नः असद्भूतव्यव
हारः कषायात्मादि मनुष्योहं देवोहं सोपिद्विविधः संश्ले
षिताशुद्धव्यवहारःशरीरंममअहंशरीरी असंश्लेषितासद्भू
तव्यवहारः पुत्रकलत्रादि तौचउपचरितानुपचरितव्यवहार
भेदात्द्विविधौ तथाचविशेषावश्यके व्यवहरणंव्यवहारःएं
सतेणव्यवहार एवसामान्नंव्यवहारपरोद्यजउविसेसउतेण
व्यवहारःव्यवहरणंव्यवहारः व्यवहरतिसइतिवाव्यवहारः
विशेषतोव्यवहीयते निराक्रियते सामान्यंतेनेतिव्यवहारः
लोकव्यवहारपरोवाविशेषतोयस्मात्तेनव्यवहारः नव्यवहा
रास्वस्वधर्मप्रवर्तितेनकृतेसामान्यमितिस्वगुणप्रवृत्तिरूप
व्यवहारस्यैववस्तुत्वं तमंतरेणतभावात् सद्विविधः विभज
न१प्रवृत्ति२भेदात्प्रवृत्तिव्यवहारस्त्रिविधःवस्तुप्रवृत्तिः१सा
धनप्रवृत्तिः २ लौकिकप्रवृत्तिश्च३ साधनप्रवृत्तिस्त्रेधा लो
कोत्तर१ लोकिका २ कुप्रावचनिक३भेदात् इतिव्यवहारन
यश्रीविशेषावश्यके ॥

अर्थ ॥ हवेव्यवहारनयनी व्याख्याकरेछे संग्रहनयें ग्रहितजेवस्तु तेनेभेदांतरे विभ
जनके० वेचवुं तेव्यवहारनय जेमद्रव्यएवुंसामान्यनामकह्युं तेमां वलीवेचणकरि
येंजे द्रव्यनावेभेदछे १ जीवद्रव्य २ अजीवद्रव्य वलीतेमांपणवेचणकरियें जेजीवना
वेभेद १ सिद्ध बीजासंसारी एमवेचणकरवी तेसर्वेव्यवहारनयनो स्वभावजाणवो

तिसामान्यकह्यो अने आंबानासमूहनेंविषे अंबवनकहे तथा मनुष्यना समूहमां मनुष्यग्रहणथाय तेसमुदायसामान्य एउत्तरसामान्य तेचक्षुदर्शन तथाअचक्षुदर्शनने ग्राहीकछे अनेमूलसामान्य तेअवधिदर्शन तथाकेवलदर्शनथी ग्रहवायछे अथवा १ सामान्यसंग्रह २ विशेषसंग्रह तिहां छद्रव्यनासमुदायने द्रव्यकहुंएसामान्यसंग्रह इहांसर्वनोग्रहणथयोछे अनेजीवने जीवद्रव्यकही अजीवद्रव्यथी जूदोजेवपाड्यो एविशेषसंग्रह एविशेषसंग्रहनो विस्तारघणोछे तथाविशेषावश्यकथी संग्रहनयना चारभेद तेलखियेंछैयें मूलपाठमां कहेलीगाथानोअर्थछे.

संग्रहणंके० एकठो एकवचनमध्ये एकअध्यवसाय उपयोगमां समकालेंग्रहेवुं सामान्यरूपपणे सर्ववस्तुनो आक्रोमण ग्रहणकरवो तेसंग्रहकहियें अथवासामान्यरूपपणेसर्व संग्रहकरे तेसंग्रहकहियें अथवाजेथकीसर्वभेद सामान्यपणे ग्रहियें तेने संग्रहकहियें अथवासंगृहीतं पिंडितकें० जेवचनथी समुदायअर्थग्रहवाय तेसंग्रहवचनकहियें तेनाचारभेदछे १ संगृहीतसंग्रह २ पिंडितसंग्रह ३ अनुगमसंग्रह ४ व्यतिरेकसंग्रह.

१ सामान्यपणे भेदविना ग्रहणथाय एवोजेउपयोग अथवा एवुंवचन अथवाएवोधर्म कोइपणवस्तुनेविषेहोय तेनेसंगृहित संग्रहकहियें.

२ अनेएकजातिमाटे एकपणोमानिने तेएकमध्ये सर्वनोग्रहणथायजेमएगेआयाए गेपुंग्गले इत्यादिवस्तुअनंतिछे पणजातिएकमाटेग्रहवायछे तेबीजोपिंडितसंग्रहकहियें

३ जेअनेकजीवरूप अनेकव्यक्तिछे तेसर्वमांपामियें जेम सत्चित्मयोआत्मा एटलेसर्वजीव तथासर्वप्रदेश सर्वगुण तेजीवनालक्षणछे एनेअनुगमसंग्रहकहियें.

४ तथाजेनेनाकहेवे तेथीइत्तरनो सर्वसंग्रहपणेज्ञानथायतेजेमअजीवछेतेवारें जे जीवनहीतेअजीवकहियें एटलेकोइकजीवछे एमव्यतिरेक वचनेतेखो तथाउपयोगें जीवनो ग्रहणथायछे तेव्यतिरेकसंग्रहकहियें

अथवासंग्रहनयवेभेदेंकेवायछे १ महासत्तारूप २ अवांतरसत्तारूप एरीतेंपणसंग्रहनोस्वरूपकह्योछे सवत्तिनणिएएणज म्हासवन्नाणुप्पवत्तएवुद्धि तोसवंसत्तमत्तंनत्थीतदंतरंकिंचि ॥ १ ॥ यदस्मात्सदित्येवंभणिते सर्वत्रिभुवनत्रयांतर्गतवस्तुनिबुद्धिरनुप्रवर्तते प्रधावतिनहितत् किमपिवस्तुअस्तियत् सदित्युक्तेजगतिबुद्धौनप्रतिभासते तस्मात्सर्वसत्तामात्रं नपुनःअर्थांतरं तत्श्रुतसामर्थ्यात् यत्संग्रहेन संगृह्यते तेनपरिणमनरूपत्वादेवसंग्रहस्येतिएटलेत्रणेभुवनमां एहवीवस्तुकोइनथीजे संग्रहनयने ग्रहणमांआवतीनथी जेजेवस्तुछेतेसर्व संग्रहनयमां ग्रहवाणीजछे एसंग्रहनयकह्यो.

संग्रहगृहीतवस्तुभेदांतरेणविभजनंव्यवहरणंप्रवर्तनंवाव्य
वहारःसद्विविधःशुद्धोशुद्धश्च शुद्धोद्विविधः वस्तुगतव्यवहा
रः धर्मास्तिकायादिद्रव्याणां स्वस्वचलनसहकारादिजीव
स्यलोकालोकादिज्ञानादिरूपः स्वसंपूर्णपरमात्मभावसाध
नरूपो गुणसाधकावस्थारूपः गुणश्रेण्यारोहादिसाधनशु
द्धव्यवहारः अशुद्धोपिद्विविधः सद्भूतासद्भूतभेदात् सद्भू
तव्यवहारो ज्ञानादिगुणः परस्परंभिन्नः असद्भूतव्यव
हारः कषायात्मादि मनुष्योहं देवोहं सोपिद्विविधः संश्ले
षिताशुद्धव्यवहारःशरीरंममअहंशरीरी असंश्लेषितासद्भू
तव्यवहारः पुत्रकलत्रादि तौचउपचरितानुपचरितव्यवहार
भेदात्द्विविधौ तथाचविशेषावश्यके व्यवहरणंव्यवहारःएं
सतेणव्यवहार एवसामान्नंव्यवहारपरोयजउविसेसउतेण
व्यवहारःव्यवहरणंव्यवहारः व्यवहरतिसइतिवाव्यवहारः
विशेषतोव्यवह्रीयते निराक्रियते सामान्यंतेनेतिव्यवहारः
लोकव्यवहारपरोवाविशेषतोयस्मात्तेनव्यवहारः नव्यवहा
रास्वस्वधर्मप्रवर्तितेनकृतेसामान्यमितिस्वगुणप्रवृत्तिरूप
व्यवहारस्यैववस्तुत्वं तमंतरेणतभावात् सद्विविधः विभज
न१प्रवृत्ति२भेदात्प्रवृत्तिव्यवहारस्त्रिविधःवस्तुप्रवृत्तिः१सा
धनप्रवृत्तिः २ लौकिकप्रवृत्तिश्च३ साधनप्रवृतिस्त्रेधा लो
कोत्तर१ लोकिका २ कुप्रावचनिक३भेदात् इतिव्यवहारन
यश्रीविशेषावश्यके ॥

अर्थ ॥ हवेव्यवहारनयनी व्याख्याकरेछे संग्रहनयें ग्रहितजेवस्तु तेनेभेदांतरे विभ
जनकेo वेचवुं तेव्यवहारनय जेमद्रव्यएवुंसामान्यनामकह्युं तेमां वलीवेचणकरि
येंजे द्रव्यनावेभेदछे १ जीवद्रव्य २ अजीवद्रव्य वलीतेमांपणवेचणकरियें जेजीवना
वेभेद १ सिद्ध बीजासंसारी एमवेचणकरवी तेसर्वेव्यवहारनयनो स्वभावजाणवो

अथवा व्यवहरणके० प्रवर्तन तेव्यवहारनय तेनावेनेदछे १ शुद्धव्यवहार २ अशुद्धव्यवहार वलीशुद्धव्यवहारनावेनेदछे १ सर्वद्रव्यनी स्वरूपरूपशुद्धप्रवृत्ति जेमधर्मास्तिकायनी चलणसहायता तथाअधर्मास्तिकायनीथिरसहायता तथाजीवनीज्ञायकता इत्यादिकने वस्तुगतशुद्ध व्यवहारकहियें २ द्रव्यनोउत्सर्ग निपजवामाटे रत्नत्रयी शुद्धता गुणस्थाने श्रेणीआरोहणरूप तेसाधनशुद्ध व्यवहारकहियें

वलीअशुद्धव्यवहारनावेनेदछे १ सद्भूत २ असद्भूत तेमांजेखेत्रेअवस्थाने अभेदेंरह्याजे ज्ञानादिगुण तेनेपरस्परजेदेंकेवा ते सद्भूतव्यवहार

तथाजेमक्रोधीहुं मानीहुं अथवादेवताहुं मनुष्यहुं इत्यादिदेवतापणो तेहेतुपणेपरिणमतांग्रह्याजेदेवगतिविपाकीकर्म तेनेउदयरूपपरजावछे तेपणयथार्थज्ञानविना जेदज्ञानशून्यजीवने एककरीमानेछे तेअशुद्धव्यवहारकहियें तेनावेनेदछे १ संश्लेषित अशुद्धव्यवहार ते जे शरीरमारुं हुंशरीरी इत्यादिकसंश्लेषितअसद्भूतव्यवहार २ असंश्लेषितअशुद्धव्यवहार ते आपुत्रमारो धनादिकमारा एमकेवुंतेअसंश्लेषितअसद्भूतव्यवहार तेचउपचरित अनुपचरित एवेनेदजाणवा.

तथाविशेषावश्यकमाहाजाष्यमांकह्युंछे जे व्यवहारनयना मूलवेनेदछे एकवहेचणरूपव्यवहार बीजोप्रवृत्तिव्यवहार तेवलीप्रवृत्तिनात्रणनेदछे १ वस्तुप्रवृत्ति २ साधनप्रवृत्ति ३ लौकिकप्रवृत्ति तेमांवलीसाधनप्रवृत्तिनात्रणनेदछे १ जे अरिहंतनीआज्ञायें शुद्धसाधनमार्गे इहलोकसंसारपुज्जलनोगआशंसादिदोषरहितजेरत्नत्रयीनीपरिणति परजावत्यागसहित तेलोकोत्तरसाधनप्रवृत्ति २ जेस्याद्वादविना मिथ्याजिनिवेशसहित साधनप्रवृत्तिते कुप्रावचनिकसाधनप्रवृत्ति ३ अनेजेलोकनासस्देश कुलनीचालेप्रवृत्ति तेलोकव्यवहारप्रवृत्ति एत्रणप्रवर्त्तिकहियें एव्यवहारनयनानेदजाणवा तिहां द्वादशसारनयचक्रमां एकेकनयना सोसोनेदकह्याछे तेजैनशासनरहस्यनाजाणजीवे तेग्रंथमांथीधारवा एव्यवहारनयकह्यो.

उज्जुंरुजुसुअनाणे मुज्जसुयमस्ससोयमुज्जुसुत्त ॥ सुत्तयइवा जमुवत्थु तेणउज्जुसुतोत्ति ॥ १ ॥ उजुंतिरुजुश्रुतंसुज्ञानं वोधरूपंततश्चरुजुअवक्रमश्रुतमस्यसोयमृजुश्रुतंवा अथ वा रुजुअवक्रं वस्तुसूत्रयतीतिरुजुसूत्रइति कथंपुनरेतद भ्युपगतस्य वस्तुनोवक्रत्वमित्याह पच्चुपन्नंसंपयमुप्पन्नं जंचजस्सपत्तेयं तंरुजुतदेवतस्सत्थि उवकम्मन्नंतिजमसंतं

॥१॥ यत्सांप्रतमुत्पन्नं वर्त्तमानकालीनं वस्तुयच्चयस्य प्रत्ये कमात्मायत्तदेवतदुभयस्वरूपं वस्तुप्रत्युत्पन्नमुच्यते तदे वासौनयः ऋजुप्रतिपाद्यते तदेवच वर्तमानकालीनंवस्तु तस्यार्जसूत्रस्यास्ति अन्यत्रशेपातीतानागतंपरकार्यंच य द्यस्मात् असदविद्यमानं ततो असत्वादेवतद्यक्रमिच्छत्यसा विति अतएवउक्तं निर्युक्तिकृता पच्चुपन्नगाही उजुसुनयवि हीमुणेयव्वोति यत्कालत्रयेवर्तमानमंतरेणवस्तुत्वं उक्तंच यतः अतीतंअनागतंभविष्यति नसांप्रतंतद्वर्तते इतिवर्त मानस्यैववस्तुत्वमिति अतीतस्यकारणता अनागतस्यका र्यता जन्यजनकभावेनप्रवर्तते अतः ऋजुसूत्रंवर्तमानग्रा हकंतद्वर्तमानं नामादिचतुःप्रकारंग्राह्यं ॥

अर्थ ॥ हवे ऋजुसूत्रनयकहेछे ऋजुके० सरलछे श्रुतके० बोधतेऋजुसूत्रकहियें ऋजुशब्दें अवक्रएटलेसमोछे श्रुतजेने तेऋजुसूत्रकहियें अथवाऋजु अवक्रपणे वस्तु नेजाणे कहे तेऋजुसूत्रकहियें ते वस्तुनोवक्रपणोकेमजाणियें तेकहेछे सांप्रतके० वर्तमानपणे उपनोजेवर्तमानकालेंवस्तुतेऋजुसूत्रकहियें अन्यजे अतीतअनागत तेऋजुसूत्रनी अपेक्षायें अछतोछेकेमके अतीततोविणसीगयोछे अनेअनागतआव्योन थी तेवारेंअतीतअनागत एवेअवस्तुछे अनेजेवर्तमानपर्यायेंवर्त्ते तेवस्तुपणोछे जेपूर्वका लपश्चात्काल लेचीवस्तुकेवीते नैगमनयछे आरोपरूपछे तिहांकोइपुछे जेसंसारीसकर्मा जीवने सिद्धसमानकहेछे तेतोअनागतकालें सिद्धथसे तोतमेअनागतने अवस्तुकेम कहोछो तेनोउत्तर जेहेभव्यएअनागतभावि माटेकेतानथी एलोवर्तमान सर्वगुणनी छति आत्मप्रदेशेंछे तेआवरणदोपें प्रवर्ततिनथी तेथीतिरोभावीपणामाटे संग्रहनयें कहियें पणवस्तुमां सर्वकेवलज्ञानादिगुण छतावर्त्तेछे तेमाटेसिद्धकहियेंछेयें.

अनेजेवस्तु तेनामादिकपर्यायसहितवर्त्तेछे माटेनामादिकनिक्षेपा तेसर्वऋजुसूत्र नयनाभेदछे तथानामादिक त्रणनिक्षेपातोद्रव्यछे अनेभावतेभावछे एव्याख्याकारण कार्यभावनी वेचणकरियें तेमाटेछे पणवस्तुमां सहज चारनिक्षेपाते भावधर्मजछे तथा एस्वस्वकार्यनाकर्त्ताजछे एऋजुसूत्रनाबेभेद दिगंबरकहेछे १सूक्ष्मऋजुसूत्र २स्थू लऋजुसूत्र जेवर्त्तमानकालनो एकसमयतेने सूक्ष्मऋजूसूत्रकहियें अनेजेबहुकालिते

स्थूलऋजुसूत्र एपणकालापेक्षीनावछे तथाएनावनयछे अनेयोगावलंबीपणो तेवाह छे तेपणद्रव्यमाटे एकद्रव्यमध्येगणेछेएऋजुसूत्रनयकह्यो.

शप आक्रोशेशपनमाह्वानमितिशब्दः शपतीतिवाआह्वानयतीशब्दःशप्यतेआहूयते वस्तुअनेनेतिशब्दः तस्य शब्दस्य योवाच्योर्थस्तत्परिग्रहात्तत्प्रधानत्वात्नयशब्दः यथाकृतकत्वादित्यादिकपंचम्यंतःशब्दोपिहेतुः अर्थरूपं कृतकत्वमनित्यत्वगमकत्वान्मुख्यतयाहेतुरुच्यते उपचारवस्तुतद्वाचककृतकत्वशब्दोहेतुरभिधीयते एवमिहापिशब्दवाच्यार्थपरिग्रहादुपचारेणनयोपिशब्दोव्यपदिश्यतेइतिभावः यथाऋजुसूत्रनयस्याभीष्टं प्रत्युत्पन्नं वर्त्तमानं तथैवइच्छत्यसौशब्दनयः यद्यस्मात्पृथुबुध्नोदरकलितमृन्मयं जलाहरणादिक्रियाक्षमं प्रसिद्धघटरूपं भावघटमेवेच्छत्यसौनतु शेपान्नामस्थापनाद्रव्यरूपान्त्रीन्घटानितिशब्दार्थप्रधानोह्येपनयः चेष्टालक्षणश्चघटः शब्दार्थोघटचेष्टायां घटते इतिघटः अतो जलाहरणादिचेष्टांकुर्वन्घटः अतश्चतुरोपिनामादिघटानिच्छतःऋजुसूत्राद्विशेपिततरंवस्तुइच्छति असौशब्दार्थोपपत्तेर्भावघटस्यैवानेनाभ्युपगमादिति अथवाऋजुसूत्रात् शब्दनयःविशेपिततरःऋजुसूत्रेसामान्येनघटोभिप्रेतः शब्देनतुसद्भावादिभिरनेकधर्मैरभिप्रेतइति ते चसप्तभंगाःपूर्वमुक्ताइति ॥

अर्थ हवेशब्दनयनुं स्वरूपकहियेंछैयें शपतिके० बोलावे तेनेशब्दकहियें अथवा शपियेंबोलावियें वस्तुपणेतेशब्दकहियें तेशब्देंजेवाच्यअर्थ तेनेग्रहे एहवोछेप्रधानपणो जेनयमां तेपणशब्दनयकहियें जेमकृतकतेजेकखो तेनो हेतुजेधर्मते जेवस्तुमांहोय तेवोजाय एटलेशब्दनुंकारणतो वस्तुनोधर्मथयो जेमजलाहरणधर्मजेमांछे तेनेघटकहियेंछेयें एमइहांपण शब्देंवाच्यअर्थग्रहेतेमाटेतेनयनोनामपण शब्दकेवायजेमऋजुसूत्रनयने वर्त्तमानकालनाधर्मइष्टछे तेमशब्दादिकनयने पणवर्त्तमानतानाधर्मजइष्टछे.

केमकेपेटेपृथुके० पहोलो बुध्नके० घोल संकोचित उदरकल्पितयुक्त जलाहरणक्रियानेतमर्थे प्रसिद्धघटरूप भावघट तेनेजघटइछेछे पणशेष नाम स्थापना अनेद्रव्यरूप त्रणघटने एशब्दनयघटमानेनही घटशब्दनाअर्थने तेसंकेतनेजघटकहे घटधातु तेचेष्टावाचीछे अतःकारणात्के० एकारणपणामाटे एशब्दनयते चेष्टाकर्त्तानेजघटकहेएटलेऋजुसूत्रनय चारनिक्षेपासंयुक्तने पणघटमाने अनेशब्दनयते भावघटनेजघटमाने एटलोविशेषपणोछे शब्दनाअर्थनी जिहांउपपत्तिहोय तेनेजतेवस्तुपणेकहे एटलेऋजुसूत्रनयें सामान्यघटगवेष्यो अनेशब्दनयें सद्भावजे अस्तिधर्म तथाअसद्भाव जेनास्तिधर्म तेसर्वसंयुक्तवस्तुने वस्तुपणेंकहे.

एटले वस्तुने शब्देंबोलावतां सातभांगेबोलववो माटेएसप्तभंगीजेटलाज शब्दनयनाभेदजाणवा तेसप्तभंगीनो स्वरूपपूर्वकह्युंछे एशब्दादिकनय वस्तुनापर्यायने अवलंबीने वस्तुनाभावधर्मनाग्राहकछे तेमाटेवस्तुना भावनिक्षेपा एनयेंमुख्यछे धुरनाचारनयमां नामादिक त्रणनिक्षेपामुख्यछे एशब्दनयनुंस्वरूपकह्युं:

गाथा॥जंजंसण्णंभासइ॥तंतंचियसमभिरोहइजम्हा सण्णंतरत्थविमुहो तउनउसमभिरूढोत्ति ॥ १ ॥ यांयांसंज्ञांघटादिलक्षणांभापते वदतितांतामेवयस्मात्संज्ञांतरार्थविमुखः समभिरूढोनयःनानार्थनामा एवभापते यदिएकपर्यायमपेक्ष्यसर्वपर्यायवाचकत्वं तथा एकपर्यायाणांसंकरःपर्यायसंकरेचवस्तुसंकरोभवत्येवेतिमाभूत्संकरदोपः अत :पर्यायांतरानपेक्षएवसमभिरूढनयइति ॥

अर्थ ॥ हवेसमभिरूढनयनी व्याख्याकहियेंछेयें जेशब्दनयतेइंद्र शक्र पुरंदर इत्यादिकसर्वइंद्रनानामभेदछे पणएकइंद्रपर्यायवंत इंद्रदेखी तेनासर्वनामकहे उक्तंचविशेपावश्यके एकस्मिन्नपि इंद्रादिकेवस्तुनियावत् इंद्रनशक्रनपुंरदारणादयोर्थाघटंते तद्धेनेंद्रशक्रादिबहुपर्यायमपित द्वस्तुशब्दनयोमन्यतेसमभिरूढवस्तुनेवमंस्यतेइत्यनयोर्भेदः

जेएकपर्यायप्रगटपणे अने शेषपर्यायने अणप्रगटवे शब्दनय तेटलासर्वनामबोलावे पणसमभिरूढनयतेनबोलावे एटलोशब्दनय तथासमभिरूढनयमां भेदछे माटेहवे समभिरूढनयकहेछे.

घटकुंभादिकमां जेसंज्ञानो वाच्यअर्थदेखाय तेजसंज्ञाकहे जेमांसंज्ञांतर अर्थने

विमुखछे तेनेसमनिरूढनयकहियें जोएकसंज्ञामध्ये सर्वनामांतरमानियें तोसर्वनोसं करथाय तेवारेंपर्यायनो नेदपणोरहेनही अनेजेपर्यायांतरहोय तेतोनेदपणेजहोय ते थीपर्यायांतरनो नेदपणोजरह्यो तेमाटेलिंगादिनेदने सापेक्षपणे वस्तुनोनेदपणोजमा नवो एसमनिरूढनयवखाण्यो एनयमांपण नेदज्ञाननी मुख्यताछे.

एवंजहसदथ्थो संतोनूत्तदन्नहानूञ्ञ॥ तेणेवंनूअनञ सद थ्थपरोविशेशेणं ॥ १॥ एवंयथाघटचेष्टायामित्यादिरूपेण शब्दार्थोव्यवस्थितः तद्तितथैवयोवर्त्तते घटादिकोर्थः स एवंसन्नूतोविद्यमानः तदन्नहानूळत्तिवस्तुतदन्यथाशब्दा र्थोल्लंघनेनवर्त्ततेसतत्वतोघटाद्यर्थोपिनभवति किंनूतोविद्य मानःयेनैवमन्यते तेनकारणेनशब्दनयसमभिरूढनया न्यांसकाशादेवंनूतनयो विशेषेणशब्दार्थनयतत्परः अयं हियोपिन्मस्तकारूढं जलाहरणादिक्रियानिमित्तंघटमानमे व चेष्टमानमेव घटंमन्यते नतुगृहकोणादिव्यवस्थितंविशे पतःशब्दार्थतत्परोयमिति वंजणमथ्थेणथ्थंच वंजणेणो नयंविशेशे इजहघडसहंचेष्ठा वयातहातंपितेणेव॥१॥ व्यं ज्यतेअर्थोनेनेतिव्यंजनंवाचकशब्दोघटादिस्तंचेष्टावताएत द्वाच्येनार्थेनविशिनष्टिसएवघटःशब्दोयश्चेष्टावंतमर्थंप्रति पादयति नान्यइत्येवंशब्दमर्थेननैयत्येव्यवस्थापयतीत्य र्थः तथार्थमप्युक्तलक्षणमभिहितरूपेणव्यंजनेनविशेषय तिचेष्टापिसैवया घटशब्देनवाच्यत्वेनप्रसिद्धायोपिन्मस्तका रूढस्यजलाहरणादिक्रियारूपानतुस्थानतरणक्रियात्मि का इत्येवमर्थं शब्देननैयत्येस्थापयतीत्यर्थः इत्येवमुभयं विशेषयतिशब्दार्थानार्थः शब्देननैयत्येस्थापयतीत्यर्थः एतदेवाहयदायोपिन्मस्तकारूढचेष्टावानर्थो घटशब्देनो च्यतेसघटलक्षणोर्थः सचतद्वाचकोघटशब्दः अन्यदातुव

स्त्वंतरस्यैवतच्चेष्टाभावाद्घटत्वं घटध्वनेश्चावाचकत्वमित्ये वमुन्नयविशेषकः एवंभूतनयइति ॥

अर्थ ॥ हवेएवंभूतनयनोस्वरूपकहियें एवंके० जेमघटचेष्टावाची इत्यादिकरूपें शब्दनयनोअर्थकह्योने एरीतेजेघटादिकअर्थवर्त्ते ते एवंके० एमज जेविद्यमानपणे शब्दनाअर्थने ठंजंघीनेवर्त्ते तेतेशब्दनोवाच्यनथी अने शब्दार्थपणोजेमांनपामियें ते वस्तुतेरूपेनही माटेजोशब्दार्थमांथी एकपर्यायपण ठंगोहोयतो एवंभूतनयतेने तेप णोकहेनही तेमाटेशब्दनयथी तथासमभिरूढनयथी एवंभूतनयतेविशेषांतरछे.

एएवंभूतनयते स्त्रीनेमस्तकेचढ्यो पाणीआणवानी क्रियानोनिमित्त मा गेंआवतापणानी चेष्टाकरतोहोय तेनेघटमाने पणघरनेखूंणे रह्योजेघट तेनेघटक रीमानेनही केमकेते चेष्टाने अणकरतोछेतेमाटे. जेपकीअर्थने व्यंजीयेके० प्रगटक रियें तेनेव्यंजनकहिये व्यंजनतेवाचकशब्दछे तेअर्थनेकहेतेक्रियावंतथको तेनेजतेवस्तु कहे वीजानेनकहे अनेतेहिजअर्थेकह्युं जेलक्षण तेकह्यानेरूपेंविशेषथाय जेमचे ष्टावटशब्दवाचेप्रसिद्धछे योषित्के० स्त्रीनेमाथेपाणीलावतो तेघट तथास्थानकेंरह्यो अथवातरणक्रियाकरताने एवंभूतनयघटकहेनही एशब्देंअर्थ तथाअर्थेंशब्दनेथापेछे एतुंएरहस्यछे जेस्त्रीनेमस्तकेंचढ्यो चेष्टावंतअर्थ तेघटशब्देंबोलावे तेथीअन्यथा तेने तेपणेबोलावेनही जेम सामान्यकेवली जे ज्ञानादिकगुणेसमानछे तेने समभिरूढ नय अरिहंतकहे पण एवंभूतनयतो समोसरणादि अतिशयसंपदासहित तथाकेव लीते इंद्रादिकेंपूजतां युक्तहोयतेनेज अरिहंतकहे तेविनानकहे वाच्यवाचकनी पूरण तानेकहे एस्वरूपें एवंभूतनयजाणवो.

एसातेनयनाभेद ते विशेषावश्यकने अनुसारेकह्या तेमांनैगमनादसभेद संग्रह नाछभेद अथवाबारकह्या व्यवहारनाभेदआठ अथवाचउदकह्या ऋजुसूत्रनाचार अथवा ६ कह्या शब्दनासातभेदकह्या समभिरूढनाबेभेद अनेएवंभूतनो एकभेदक ह्यो एरीतेसर्वनाभेदकह्या वलीनयचक्रमां नयनाभेद सातसोकह्याछे तेपणजाणवा.

एवमेवस्याद्वादरत्नाकरात्पुनर्लक्षणतउच्यते नीयतेयेनश्रु ताख्यप्रामाण्यविषयीकृतस्यार्थस्यशास्त्रादितरांशौदासीन्य तः संप्रतिपत्तुरभिप्रायविशेषोनयःस्वाभिप्रेतादंशादपरां शापलापीपुनर्नयाभासःससमासतःद्विभेदः द्रव्यार्थिकःप

र्यायास्तिकश्च आद्योनैगम संग्रह व्यवहार ऋजुसूत्रभेदा
च्चतुर्द्धा केचित्ऋजुसूत्रंपर्यायार्थिकं वदंति तेचचेतनांशत्वेन
विकल्पस्यऋजुसूत्रेग्रहणात्श्रीवीरशासनेमुख्यतःपरिणति
चक्रस्यैवभावधर्मत्वेनांगीकारात् तेषांऋजुसूत्रःद्रव्यनयेएव
धर्मयोर्धर्मिणोर्धर्मधर्मिणोश्च प्रधानोपसर्जनआरोपसंक
ल्पांशादिभावेनानेकगमग्रहणात्मकोनैगमः सत्चैतन्यमा
त्मनीतिधर्मयोः गुणपर्यायवत्द्रव्यमितिधर्मधर्मिणोः क्षण
मेकोसुखीविषयासक्तोजीवइतिधर्मधर्मिणोःसूक्ष्मनिगोदजी
वसिद्धसमानसत्ताकः अयोगी नोसंसारीतिअंशयादीनैग
मःधर्मधर्मादीनामेकांतिकपार्थक्याभिसंधिनैगमाभ्यासः

अर्थ ॥ हवेस्याद्वादरत्नाकरथी नयस्वरूपलखियेंछैयें नीयतेके० पमाडीयें जेथ
कीश्रुतज्ञान स्वरूपप्रमाणे विषयेकीधो जेपदार्थनोअंश तेअंशथी इतरके० बीजोजे
अंश तेथकीउदासीपणो तेनेपडिवर्जवावालानोजेअभिप्रायविशेष तेनेनयकहियेएटले
वस्तुनाअंशनेग्रहे अनेअन्यथीउदासीनपणो तेनयकहिये एकअंशनेमुख्यकरीने बीजा
अंशनेउथापे तेनयाभ्यासकहियें तेनयनाबेभेदछे एकद्रव्यार्थिक बीजोपर्यायार्थिक ते
मांद्रव्यार्थिकना १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार ४ ऋजुसूत्र एचारभेदछे केटलाक
आचार्यते ऋजुसूत्रने विकल्परूपमाटे भावनयगवेषेछे तेरीते द्रव्यार्थिकेत्रणभेदछे.

हवेनैगमनयनुं स्वरूपकहेछे जेधर्मनेप्रधानपणे अथवागौणपणे अथवा धर्मीने
प्रधानपणे अथवा गौणपणे तथाधर्मधर्मीएबेउने प्रधानपणे तथागौणपणे जेगवे
षवो एटलेधर्मोनी प्राधान्यता तेवारेपर्यायोनी प्रधानताथयी अनेजिहांधर्मीनोप्रधा
नपणो तिहांद्रव्यनोप्रधानपणो तेमजगौणपणो तथाधर्मधर्मीनो प्रधानगौणपणो
एरीतेजेद्रव्यपर्यायनो गौणप्रधानपणानी गवेषणारूप ज्ञानोपयोग तेनैगमनयजाण
वो तेनाबोधने नैगमबोधकहिये तेनाउदाहरण कहेछे.

सत्के० छतापणो चैतन्यके० जाणपणो एबेधर्ममध्ये एकधर्मपक्षमुख्यपणेग
णे अनेबीजानेगौणपणे नगवेषे एरीतें नैगमनयजाणवो इहांचैतन्यनामेजे व्यंजन
पर्यायतेने प्रधानपणेगणे केमकेचैतन्यपणो तेविशेषगुणछे अने सत्वनामाव्यंजनप
र्यायछे तेसकलद्रव्यसाधारणछे तेमाटेतेने गौणपणेलेखवे एनैगमनोप्रथमभेदकह्यो.

तथाकलीवस्तुपर्यायवत्द्रव्यं एमबोलवुंते धर्मीनोनैगमछे इहांपर्यायवत्द्रव्यं एमवस्तुछे इहांद्रव्यनोमुख्यपणो वलीवस्तुनेपर्यायवंतकेवुं ते वस्तुनोगौणपणो अनेपर्यायनोमुख्यपणो इहांउत्तयगोचरपणामाटे एनैगमनोबीजोभेदकह्यो

क्षणमेकःसुखीविषयासक्तोजीवइतिधर्मधर्मिणोरिति इहांविषयासक्तजीवाख्य जे धर्मीना मुख्यताना विशेषपणाथी सुखलक्षणधर्मनीप्रधानता तेविशेषणपणेकरीने धर्मधर्मीने आलंबने एत्रीजोनैगम जेवारेधर्म तथाधर्मीएबेने अवलंबे ग्रहणकरे तेवारेसंपूर्णवस्तुनोग्रहणथयो तेवारेएज्ञाननेप्रमाणकह्यो तिहांउत्तरद्रव्यपर्यायतेबेहुनेप्रधानपणे अनुभवतो जेज्ञानप्रमाणथाय इहांबेपक्षनेविषे एकनीगौणता बीजानीमुख्यताजेइने ज्ञानथायछेतेमाटे नयकहियें तथाकलीसूक्ष्मनिगोदिजीव तेसमानलक्षावंतछे अथवा अयोगीकेवलीजिनतेने संसारीकेवुं तेअंशनैगम.

हवेनैगमाभ्यासकहेछे वस्तुमांधर्मअनेकछे तेएकांतेमाने पणएकबीजाने सापेक्षपणेनमाने एटलेएकधर्मनेमाने अनेबीजाधर्मनेनमाने तेनैगमाभ्यासकहियें एदुर्नयजाणवो केमके अन्यनयनेगवेषेनहीं माटेजेमआत्मानेविषे सत्वतथाचैतन्य एधर्मभिन्नभिन्नछे तेमांचैतन्यपणोनमाने ते नैगमाभ्यासकहियें एटलेनैगमनयकह्यो.

यथात्मनिसत्वचैतन्येपरस्परंभिन्ने सामान्यमात्रग्राहीसत्ता परामर्शरूपसंग्रहः सपरापरभेदात्द्विविधः तत्रशुद्धद्रव्य सन्मात्रग्राहकःपरसंग्रहः चेतनालक्षणोजीवइत्यपरसंग्रहः सत्ताद्वैतंस्वीकुर्वाणः सकलविशेषान्निराचक्षाणः संग्रहाभासः संग्रहस्यैकत्वेन एगेआयाइत्यनभिज्ञानात् सत्ताद्वैतएवआत्माततः सर्वविशेषाणांतदितराणांजीवाजीवादिद्रव्याणामदर्शनात् द्रव्यत्वादिनावांतरसामान्यानिमन्वानस्तद्भेदेपुगजनिमीलिकामवलंबमानःपरापरसंग्रहः धर्माधर्माकाशपुद्गलजीवद्रव्याणामैक्यं द्रव्यत्वादिभेदादित्यादि द्रव्यत्वादिकंप्रतिजानानस्तद्विशेषाननिन्हुवानस्तदाभासः यथा द्रव्यमेवतत्वं तत्पर्यायाणा मग्रहणाद्विपर्यामइतिसंग्रहः

अर्थ ॥ हवेसंग्रहनयकहेछे सामान्यमात्र समस्तविशेषरहित सत्यद्रव्यत्वादिकने ग्रहेवानोछेस्वभावजेनोते संक्षेपिसपणेविशेषराशीनोसंग्रह पणाख्यरूपणेसंग्रह स्वजाति

नादीगजे इष्टअर्थतेने अविरोधंकरीने विशेषधर्मोने एकरूपपणेजेग्रहणकरवो तेसंग्रहनयकहियें एनावनाछे तेनावेनेदछे १ परसंग्रह २ अपरसंग्रह तेमां अशेषविशेषो दासीनंनजमानंशुद्धद्रव्यं सन्मात्रमनिमन्यमानःपरसंग्रहइति जेसमस्तविशेषधर्मस्थापनानीनजनाकरतो एटलेविशेषपणाने अणग्रहतोथको शुद्धद्रव्य सत्तामात्रप्रतेमाने जेमद्रव्यएपरसंग्रह विश्वएकसत्पणामाटे एमकह्याथी छतापणाना एकपणानुं ज्ञानथायछे एटलेसर्वपदार्थनोएकपणेग्रहणछे तेपरसंग्रहकहियें.

तथाजेसत्तानो अद्वैतस्वीकारे अने द्रव्यांतरनेदनमाने समस्तविशेषपणाने नाकहेतोथको जेग्रहणकरे तेअद्वैतवादीवेदांत तथासांख्यदर्शन एपरसंग्रहानासछे केमके जेनेदधर्म छतादेखायछे तथाद्रव्यांतरपणो तेनेनमाने माटे परसंग्रहानासकहियें अनेजैनतो विशेषसहित सामान्यनेग्रहेछे माटेसंग्रहनयकहियें.

द्रव्यत्वादिनयांतरसामान्यानिमत्वातः तद्भेदेषुगजनिमीलिकावलंबमानः अपरसंग्रहः द्रव्यजे जीवअजीवादिक जेअवांतरसामान्यनेमानतो अनेजीवनेविषे प्रतिजीवनोविशेषनेद नव्य अनव्यसम्यक्तमिथ्यात्वी नरनारकादिजेनेद तेनेगजनिमीलिकाके॰ मात्ताइयेंनगवेदवो तेअपरसंग्रहकहियें अनेद्रव्यने सामान्यपणेमाने पणसद्रव्यनी परिणामिकतादिक धर्मनेनमाने तेअपरसंग्रहानासकहियें एसंग्रहनयनुंसरूपकह्यो.

संग्रहणेचगोचरीकृतानामर्थानांविधिपूर्वकमवहरणं येनानिसंधिनाक्रियतेसव्यवहारःयथयत्सत्तत्द्रव्यंपर्यायश्चेत्यादिः पुनरपरमार्थिकंद्रव्यपर्यायप्रविभागमाभिप्रैतिसव्यवहारानासः चार्वाकदर्शनमितिव्यवहारदुर्नयः

अर्थ ॥ हवेव्यवहारनयकहेछे संग्रहनयेंग्रह्याजे वस्तुनासत्वादिकधर्म तेनेजगुणनेदेंवेंचे निन्ननिन्नगवेषे तथापदार्थनीगुणप्रवृत्ति तेनेजमुख्यपणेगवेषे तेव्यवहारनयकहियें जेमद्रव्यछेतेनाजीवपुद्गलादिकपर्यायना क्रमनावी तथासहनावी एरीतेंवेनेदछे तेमांजीवजीवबेप्रकारें १ सिद्धना २ संसारी तेमजपुद्गलनावेनेद परमाणुतथास्कंध इत्यादिककार्यनेदें निन्नमाने तथाक्रमनावीपर्यायनावेनेद एकक्रियारूप बीजोअक्रियारूप इमवेंचणजे सामर्थ्यादिकगुणनेदेंपडे तेसर्व व्यवहारनयजाणवो अनेजेपरमार्थविना द्रव्यपर्यायनोविनागकरे ते व्यवहारानासजाणवो.

जेकल्पनाकरीनेदेवेंचे तेचार्वाकमतप्रमुख एव्यवहारनोदुर्नयछे जेम चार्वाकप्रमाणचें वलीजीवपणो लोकप्रत्यक्षमां दृष्टिगोचरनथी आवतो तेमाटेजीवनथी एमक

हे अनेजगत्मांपंचभूतादिकवस्तुनथी एमकल्पनाकरी भुललोकनेकुमार्गेप्रवर्त्तावे ते व्यवहारडुर्नयकहियें एव्यवहारनयनुंस्वरूपकह्युं.

ऋजुवर्तमानक्षणस्थायिपर्यायमात्रप्राधान्यतःसूत्रयतुअभि प्रायः ऋजुसूत्रः ज्ञानोपयुक्तःज्ञानीदर्शनोपयुक्तः दर्शनी कषायोपयुक्तः कषायीसमतोपयुक्तः सामायकीवर्तमाना पलापीतदाभासः यथातथागतमतइति ॥

अर्थ ॥ हवेऋजुसूत्रनयकहेछे ऋजुके० सरलपणेअतीतअनागतने अणगवेष तो अनेवर्तमानसमयवर्त्तता जेपदार्थनापर्यायमात्र तेने प्रधानपणे सूत्रके० गवेषे तेऋजुसूत्रनयकहियें तेज्ञाननेउपयोगें वर्ततानें ज्ञानीकहे दर्शनोपयोगें वर्तताने द र्शनीकहे कषायपणेवर्तताजीवने कषायीकहे समतानेउपयोगेंवर्तताजीवने सामाय कवंतकहे इहांकोइपुछेजे उपरकह्यामुजबतो ऋजुसूत्र तथाशब्दनय एवेएकजथायछे ते नेउत्तरकहेछे जेविशेषावश्यकमांकह्युंछे कारणंयावत् ऋजुसूत्रः एटलेज्ञाननेकारणपणे वर्ततो तेऋजुसूत्रग्रहेछे अनेजेजाणपणारूप कार्यपणेथाय तेशब्दनयकहियेंएफेरछे.

वर्तमानकालनेपण ग्रहणनकरे तेऋजुसूत्राभासकहियें जेछतानावनेअछताकहे अथवाविपरीतकहे जेमजीवनेअजीवकहे अजीवनेजीवकहे इत्यादिक ते गतके० बौद्धनोमतछे जेछतोसदासर्वदावर्ततो जीवादिद्रव्य तेनापर्यायने पलटवे सर्वथाद्र व्यने विनासिकमाने तेनेऋजुसूत्रनयाभासाभिप्रायजाणवो एऋजुसूत्रनयकह्यो.

एकपर्यायप्रागभावेनतिरोभाविपर्यायग्राहकशब्दनयःका लादिभेदेनध्वनेरर्थभेदंप्रतिपाद्यमानःशब्दः जलाहर णादिक्रियासमर्थएवघटः नमृत्पिंमादौ तत्तार्थवृत्तौशब्द वशादर्थप्रतिपत्तिः तत्कार्यधर्मेंवर्त्तमानवस्तुतयामन्वानः शब्दनयः शब्दानुरूपंअर्थपरिणतंद्रव्यमिच्छतित्रिकाल त्रिलिंगत्रिवचनप्रत्ययप्रकृतिभिःसमन्वितमर्थमिछति तभे देतस्यतमेवसमर्थप्रमाणस्तदाभासः

अर्थ ॥ हवेशब्दनयकहेछे जेवस्तुनाएकपर्यायने प्रगटदेखवे बीजाशब्दवाचकप र्यायने तिरोभावें अणप्रगटवेंपणतेपर्यायनेग्रहे अथवाकालत्रण वचनत्रण लिंगत्र

ण तेनेजेदें शब्दनोजेदपडे तेनेदेंजअर्थनेकहे अथवा जलाहरणादि समर्थनेघटकहे तथाकुंनादिक चिन्हपर्यायजेटलाछे तेटलानो अर्थवर्ततोनदेखाय तोपण तेनेनाम कहीबोलावे एमजेमां कार्यनोसामर्थ्यवंतपणोछे तेनेग्रहे पणमाटीनापिंमने घटक हेनही तेशब्दनयकहियें अनेजे संग्रह तथानैगमनयवालोकहेते सत्तायोग्यता अंश नाग्राहकछे तथातत्वार्थटीकामध्ये शब्दवशथीअर्थपडिवजवो तेशब्देंबोलावतोहोय जे अर्थतेवस्तुमां धर्मपणेप्रगटदेखाय तेनेज तेवस्तुमाने एनयने शब्दानुजायी अर्थप रिणमतिजेवस्तु तेनेवस्तुकहेछे काललिंगादिनेदें अर्थनोनेदछे तेनेद तेमते धर्मवस्तु माने तेशब्दनयकहियें अनेतेअर्थविना तेवस्तुमध्ये तेपणोवर्ततो देखातोनथी तेनेते वस्तुपणेसमर्थनकरे तेशब्दानासकहिजे एटलेशब्दनयकह्यो.

एकार्थावलंविपर्यायशब्देपुनिरुक्तिजेदेनजिन्नमर्थं समजि रोहन्समजिरूढः इंदनादिंद्रः शकनाछक्रः पुरदारणात् पुरंदरःइत्यादिपुयथापर्यायध्वनिनामाजिधेयनानात्वमेवक क्षीकुर्वाणस्तदाजासः यथाइंद्रःशक्रःपुरंदर इत्यादिजिन्नाजिधेये

अर्थे ॥ हवेसमजिरूढनयकहेछे जेएकपदार्थनेअविलंबी जेटलासरिखानाम तेट लापर्यायनामथया तेपर्यायनामजेटलाहोय तेटलानिरुक्तिव्युत्पत्तिजिन्नहोय तेअर्थनो पणजेदहोय तेअर्थने शंके० सम्यक्प्रकारें आरोहतो एटलेएटलासर्वअर्थसंयुक्तजेहो य तेसमजिरूढनयकहियें जेमइंड्रादिधातु परमैश्वर्यनेअर्थेछे तेपरमऐश्वर्यवंतनेंइंद्रक हियें तथाशकनकहेतांनविनविशक्तियुक्तने शक्रकहियें पुरके० देत्यने दरके० विदारे तेपुरंदर अनेशचिजेइंद्राणी तेनोपतिस्वामी तेशचीपतिकहियें एटलासर्वधर्मतेइंद्रमांछे तेमाटेजेदेवलोकनोधणीछे तेनेइंद्रएवेनामें बोलावेछे बीजानामादिकइंद्रने एनामेन बोलावे जेटलापर्यायनामछे तेनाजेअर्थथाय तेसर्वनेजिन्नजिन्नअर्थकहेछे पणएकार्थ नजाणेते समजिरूढाजासकहियें एटलेंसमजिरूढनयकह्यो.

एवंजिन्नशब्दवाच्यतत्वाछब्दानांस्वप्रवृत्तिनिमित्तजूतक्रिया विशिष्टमर्थवाच्य त्वेनाज्युपगछन्नेवंजूतः यथाइंदनमनुजव न्निंद्रःशकनाछक्रः शब्दवाच्यतयाप्रत्यक्षस्तदाजासःयथा विशिष्टचेष्टाशून्यं घटाख्यवस्तुनः घटशब्दवाच्यं घटश ब्दप्रवृत्तिजूतार्थशून्यत्वात् पटवदित्यादि.

अर्थ ॥ हवेएवंभूतनयकहेछे शब्दनीप्रवृत्तिनो निमित्तभूतजेक्रिया तेविशिष्टसंयुक्त जेअर्थ तेनेवाच्यजेधर्म तेनेजेपोचतोहोय एटलेतेकारणकार्यधर्मसहिततेनेएवंभूतनय कहियें तथा ऐश्वर्यसहित तेइंद्रशक्ररूप सिंहासनेबेशेतेशक्र शचिके० इंद्राणीनेसा घेवेछो तेवारेंशचीपतिकहे एटलेजेशब्दना जेटलापर्याय तेसर्वतेमांपोचताभावने ते नामकहिबोलावे अनेजेपर्यायपोचतोदेखेनहीतेपर्यायनीनाकहे जिहांसुधीएकपर्याय कणोछेतिहांसुधी समभिरूढनयकहियें अने सर्ववचनपर्यायनेपोचे तेवारेंएवंभूतनयक हियें जेपदार्थनोनामभेदनो भेददेखीनेपदार्थनीभिन्नताकहे तेएवंभूतनयाभासकहिजे नामभेदेंतेवस्तुजभिन्न जेम हाथी घोडा हिरण्यभिन्नछे तेमभिन्नपणोमाने जेमअर्थभि न्नपणामाटे घटथी पटभिन्नछे तेमइंद्रपणाथी पुरंदरपणोभिन्नमाने तेएवंभूतनयनोउ नयजाणवो एटलेएवंभूतनयकह्यो एरीतेसातनयनी व्याख्याकही.

अत्र आद्यनयचतुष्टयमविशुद्धपदार्थप्ररूपणाप्रवणत्वा त् अर्थनयानामव्यत्वसामान्यरूपानयाः शब्दादयो वि शुद्धनयाः शब्दावलंबार्थमुख्यत्वादाद्यास्तेतत्वभेदद्वारेणव चनमिछंतिशब्दनयास्तावत्समानालिंगानां समानवचना नांशब्दानां इंद्रशक्रपुरंदरादीनांवाच्यं भावार्थमेवाभिन्न मन्युपैति नजातुचिद्भिन्नवचनंवाशब्दंस्त्रीदाराः तथाआ पोजलमितिसमभिरूढवस्तुप्रत्यर्थंशब्दनिवेशादिंद्रशक्रा दीनांपर्यायशब्दत्वंनप्रतिजानीते अत्यंतभिन्नप्रवृत्तिनिमि त्तत्वादभिन्नार्थत्वमेवानुमन्यंते घटशक्रादिशब्दा नामिवेति एवंभूतः पुनर्यथासद्भाववस्तुवचनगोचरं आप्टच्छतीतिचेष्टा विशिष्टएवार्थोघटशब्दवाच्यः चित्रालेख्यतोपयोगपरिण तश्चचित्रकारः चेष्टारहितस्तिष्ठन्घटोनघटःतच्छब्दार्थरहि तत्वात् कूटशब्दवाच्यार्थवन्नापिभुंजानः सयानोवाचित्रका राभिधानाभिधेयश्चित्रज्ञानोपयोग परिणतिशून्यत्वाद्गोपा लवदेवमभेदभेदार्थवाचिनो नैकैकशब्दवाच्यार्थावलंबिन श्चशब्दप्रधानार्थोपसर्जनाच्छब्दनयाइतितत्त्वार्थवृत्तौ एते

पुनैगमः सामान्यविशेपोन्नयग्राहकः व्यवहारविशेपग्रा
हकःड्व्यार्थावलंविऋजुसूत्रविशेपग्राहकएव एतेचत्वारःड
व्यनयाः शब्दादयःपर्यायार्थिकविशेपावलंबीन्नावनयाश्चे
ति शब्दादयोनामस्थापनाड्व्यानिक्षेपादवस्तुतयाजाना
ति परस्परसापेक्षाःसम्यक्दर्शनिप्रतिनयंन्नेदानांशतं तेन
सप्तशतंनयाना मितिअनुयोगधारोक्तत्वात्ज्ञेयं

अर्थ ॥ एसातनयमां आद्यनाचारनयजेठे तेअविशुद्धठे शामाटे के जे पदार्थ
के० ड्व्य तेनेसामान्यपणेकेवाना अधिकारीठे एनयनुंकिहांएकअर्थनय एपणनाम
ठे तेअर्थशब्देड्व्यलेवुं तथाशब्दादिकत्रणनयते शुद्धनयठे केमके शब्दनाअर्थनी
एनेमुख्यताठेपेहेलानयतेन्नेदपणे वचननेवांठेठे अनेशब्दादिकनयतें लिंगादिके अ
न्नेदवचने अन्नेदकहे तथान्निन्नवचनने न्निन्नार्थकहीमाने अनेसमन्निरूढते न्निन्नशब्द
तेनेवस्तुपर्यायनमाने तथाएवंन्नूतते न्निन्नगोचरपर्यायने न्निन्नमाने जेचेष्टाकरतोहोय
तेनेपटकहे पणसूंएपडयोघटकहेनही चित्रामकरतोहोय तथातेजउपयोगेंवर्ततो
होय तेनेचित्रकारकहे पणतेजचित्रकारसुतोहोय अथवाखावाबेठोहोय तेनेचित्रका
रनकहे केमकेतेउपयोगेंरहितठे माटेएनयतेशब्द तथाअर्थनेअन्नेदपणेमानेठे अने
अर्थथीशून्यशब्दते प्रमाणनथी अनेशब्दप्रधान अर्थतेड्व्यने गौणपणेवर्तता शब्दा
दिकत्रणनयठे एमतत्वार्थटीकामध्येकह्योठे.

एसातनयनेविषे पेहेलोनैगमनयते सामान्यविशेपबेहुनेमानेठे संग्रहनयते सा
मान्यनेमानेठे व्यवहारनयविशेपनेमानेठे अने ड्व्यार्थावलंबीठे तथाऋजुसूत्रतोविशे
पग्राहकठे एचारतेड्व्यनयठे अनेपाठला शब्दादिकत्रणनयते पर्यायार्थिक विशेपाव
लंबी न्नावनयठे तथाशब्दादिकनयते नामस्थापनाड्व्य एपेहेलात्रणनिक्षेपाने अ
वस्तुमानेठे निश्चयनयपणेअवस्तु एअनुयोग द्वारसूत्रनुंवचनठे एसातेनयपरस्परसा
पेक्षपणे ग्रहेते समकेतिजाणवा अनेजो एनय परस्परविरोधीहोय तोमिथ्यात्वीजा
णवा तथाएकेकानयना सोसोन्नेदथायठे एमसातेनयनामली सातसोन्नेदथायठे ए
कार श्रीअनुयोग द्वारसूत्रथीकह्योठे.

पूर्वपूर्वनयःप्रचुरगोचरःपरास्तुपरिमितविपयाः सन्मात्रगो
चरात्संग्राहान्नैगमोन्नावान्नावन्नूमित्वाद्भूरिविपयः वर्त्त

मानविषया ऋजुसूत्राद्व्यवहार स्त्रिकालविषयत्वात्बहुविषय
कालादिभेदेनभिन्नार्थोपदर्शनात् भिन्नाहजुसूत्रविपरीतत्वा
न्महार्थःप्रतिपर्यायमशब्दमर्थभेदमभीप्सितःसमभिरूढा
च्छब्दप्रभूतविषयःप्रतिक्रियांभिन्नमर्थंप्रतिजानात्एवंभूता
त्समभिरूढःमहान्गोचरः नयवाक्यमपिस्वविषयेप्रवर्त्त
मानंविधिप्रतिषेधाभ्यांसप्तभंगीमनुव्रजति असंग्राहीनैगमः
सत्ताग्राहीसंग्रहः गुणप्रवृत्तिलोकप्रवृत्तिग्राहीव्यवहारःका
रणपरिणामग्राहीऋजुसूत्रः व्यक्तकार्यग्राहीशब्दःपर्यायां
तरभिन्नकार्यग्राही समभिरूढः तत्परिणामनमुख्यकार्य
ग्राहीएवंभूतः इत्याद्यनेकरूपोनयप्रचारः जावंतियावयण
प्पहा॥तावतियाचेवहूंतिनयवाया॥इतिवचनात् उक्तोनयाधिकारः

अर्थ ॥ एप्रकारे पूर्वके० पूर्वलोजेनैगम नय तेनो विस्तारघणोजाणवो अनेतेथी कपरलोनयतेनो परिमितविषयछे एटले थोडोविषयछे केमकेसत्तामात्रनुंग्राहकसंग्रह नयछे छतिसत्ताने संग्रहनयग्रहे अनेनैगमते छताभाव अथवा संकल्पपणे अछता भाव सर्वनेग्रहे अथवासामान्यविशेष बेधर्मनेग्रहे तेमाटेनैगमनोविषयघणोछे. तथा संग्रहनयते सत्तागत सामान्यविशेष बेहुनेग्रहेछे अनेव्यवहारते सत्एकविशेषनेज ग्रहेछे माटेसंग्रहनयथी व्यवहारनयनो विषयथोडोछे. अने व्यवहारनयथी संग्रह नयते बहुविषयीछे तथाऋजुसूत्रनयते वर्त्तमानविशेषधर्मनो ग्राहकछे अनेव्यवहार थी ऋजुसूत्रनयते कालविषयनोग्राहकछे तेमाटेव्यवहार बहुविषयीछे अने व्यवहार थी ऋजुसूत्रअल्पविषयीछे ऋजुसूत्रनयते वर्त्तमानकालग्रहे अनेशब्दनयकालादि वच नलिंगथी बेहेंचताअर्थनेग्रहे अने ऋजुसूत्रनयतेवचनलिंगने भिन्नपाडतोनथी तेमाटे ऋजुसूत्रथी शब्दनयअल्पविषयीछे ऋजुसूत्रबहुविषयीछे अनेशब्दनय सर्वपर्यायनो एकपर्यायनेग्रहताग्रहे अनेसमभिरूढतेजेधर्मव्यक्त तेवाचकपर्यायनेग्रहे तेमाटे शब्दन यथी समभिरूढनयते अल्पविषयीछे केमके समभिरूढते पर्यायनोसर्वकालगवेष्योछे. अने एवंभूतनयते प्रतिसमयें क्रियाभेदें भिन्नार्थपणो मानतोअल्पविषयीछे तेमाटे एवंभूतथी समभिरूढबहुविषयीजाणवो अनेएवंभूत अल्पविषयीजाणवो.

जेनयवचनछे तेपोतानानयने स्वरूपेंअस्तिछे अनेपरनयनास्वरूपनी तेमांनास्तिछे

एमसर्वनयनी विधिप्रतिषेधेंकरीने सप्तभंगीऊपजे पणनयनीजेसप्तभंगी ते विकलादेशी जहोय अनेजेसकलादेशीसप्तभंगी तेप्रमाणछेपणनयनीसप्तभंगीनऊपजे.

उक्तंच रत्नाकरावतारिकायां विकलादेशस्वभावाहिनयसप्तभंगीवस्त्वंशमात्रप्ररूपकत्वात् सकलादेशस्वभावनुप्रमाणसप्तभंगी संपूर्णवस्तुस्वरूपप्ररूपकत्वात्एवचनछे एटलेयथायोग्यपणेनयनोअधिकारकह्यो.

सकलनयग्राहकंप्रमाणं प्रमाताआत्मा प्रत्यक्षादिप्रमाणसिद्धः चैतन्यस्वरूपः परणामीकर्त्तासाक्षात्भोक्तास्वदेहपरिमाणःप्रतिक्षेत्रभिन्नतेनैवपंचकारणसामग्रीतः सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रसाधनात्साधयतेसिद्धिः स्वपरव्यवसायिज्ञानंप्रमाणं तद्द्विविधप्रत्यक्षपरोक्षभेदात्स्पष्टंप्रत्यक्षापरोक्षमन्यत् अथवाआत्मोपयोगताइंद्रियद्वाराप्रवर्तनेनयत्ज्ञानंतत्प्रत्यक्षं अवधिमनपर्यायोदेशप्रत्यक्षो केवलज्ञानंतुसकलप्रत्यक्षंमतिश्रुतपरोक्षे तच्चतुर्विधं अनुमानोपमानागमार्थापत्तिभेदात् लिंगपरामर्शोनुमानं लिंगंचाविनाभूतवस्तुकंनियतंज्ञेयं यथागिरिगुहिरादोव्योमावलंबिधूमलेखांदृष्ट्वाअनुमानंकरोति पर्वतोवन्हिमान्धूमवलात् यत्रधूमस्तत्राग्निः यथामहानसं एवंपंचावयवशुद्धं अनुमानं यथार्थज्ञानकारणं सदृश्यावलंबनेनाज्ञातवस्तुनायत्ज्ञानंउपमानज्ञानं यथागोस्तथागवयः गोसादृश्येनअदृष्टगवयाकारज्ञानं उपमानज्ञानं यथार्थोपदेष्टापुरुषआप्तः सद्भुत्कृष्टतोवीतरागः सर्वज्ञएव आप्तोक्तंवाक्यंआगमः रागद्वेषाज्ञानभयादि दोषरहितत्वात् अर्हतः वाक्यआगमः तदनुयायिपूर्वापर विरुद्धमिथ्यात्वासंयमकषायभ्रांतिरहितं स्याद्वादोपेतंवाक्यं अन्येषांशिष्टानामपिवाक्यंआगमः लिंगग्रहणात्ज्ञेयज्ञानोपकारकंअर्थापत्तिप्रमाणं यथापीनोदेवदत्तो दिवानभुंक्ते

तदाअर्थोज्ञातोभुंक्तेएवइत्यादिप्रमाणपरिपाटीगृहीतजीवाजीवस्वरूपःसम्यक्ज्ञानीउच्यते.

अर्थ॥हवेप्रमाणनुं स्वरूपकहेछे सर्वनयना स्वरूपने ग्रहणकरनारो तथासर्वधर्मनो जाणंगपणोछेजेमां एहवुंजेज्ञानतेने प्रमाणकहियें जेप्रमाणतेमापवानुंनामछे त्रणजगतनासर्वप्रमेयने मापवानुंप्रमाण तेज्ञानछे अनेतेप्रमाणनो कर्त्ताआत्मातेप्रमाता छे तेप्रत्यक्षादिप्रमाणे सिद्धके० छेहलोछे चैतन्यस्वरूपरिणामीछे वलीनवनवधर्मथी उत्पादव्ययपणे परिणमेछे तेमाटेपरिणामिकछेतथाकर्त्ताछे तथाभोक्ताछे जेकर्त्ताहोय तेजभोक्ताहोय भोक्तापणाविना सुखमयीकेवायनही तेचैतन्यसंसारीपणेस्वदेहपरिमाणछे प्रतिक्षेत्रके० प्रत्येकं शरीरभिन्नपणामाटे भिन्नजीवछे तेजीवपांचकारणनी सामग्रीपामीने सम्यक्दर्शन सम्यक्ज्ञान सम्यक्चारित्रनेसाधवाथी संपूर्णअविनाशी निर्मल निःकलंक असहाय अप्रयास स्वगुणनिरावरण स्वकार्यप्रवृत्ति अक्रूर अव्याबाधसुखमयी एवीसिद्धता निःप्पन्नतानीपजे एजसाधनमार्गछे.

स्वशब्देंकरीआत्मा परशब्देंपरद्रव्य स्वआत्माथीभिन्न अनंतापरजीवधर्मादिक तेनाव्यवसायीव्यवछेदकजेज्ञान तेनेप्रमाणकहियें तेनामूलभेदवेछे एकप्रत्यक्ष बीजो परोक्ष तिहांस्पष्टज्ञानते प्रत्यक्षकहियें तेथीइतरके०बीजोजे अस्पष्टज्ञानते परोक्षकहियें अथवा आत्माना उपयोगथी इंद्रियनीप्रवृत्तिविनाजे ज्ञानते प्रत्यक्षकहियें तेना बेभेदछे एकदेशप्रत्यक्ष बीजोसर्वप्रत्यक्ष तेमांअवधिज्ञान तथामनपर्यवज्ञान ते देशप्रत्यक्षछे केमके अवधिज्ञान एकपुज्ञलपरमाणुने द्रव्यंतथाक्षेत्रं अने कालें तथाभावें केटलाकपर्यायनेदेखे तथामनपर्यवज्ञानी मननापर्यायने प्रत्यक्षजाणे पणवीजाद्रव्यनेनजाणे माटेवेहुज्ञानने देशप्रत्यक्षकहियें कारणके देशथीवस्तुनेंजाणे पणसर्वथीनजाणेमाटे० अनेकेवलज्ञान ते जीवतथाअजीव रूपीतथाअरूपीसर्वलोकालोकना त्रणकालना सर्वभावने प्रत्यक्षपणेजाणे माटे सर्वप्रत्यक्षकहियें.

तथामतिज्ञान अनेश्रुतज्ञान एवेअस्पष्टज्ञानछे माटेपरोक्षछे तेपरोक्षप्रमाणना चारभेदछे १ अनुमानप्रमाण २ उपमानप्रमाण ३ आगमप्रमाण ४ अर्थापत्तिप्रमाणतिहांचिन्हेकरीने जेपदार्थनेओलखवुं तेनेलिंगकहियें तेपरामर्शके० संभालवाथी जेज्ञानथाय तेनेअनुमानज्ञानकहियें लिंगते जेविना तेवस्तुहोयजनही ते तेवस्तुनुंलिंगजाणवुं तेलिंगनेदेखवाथी वस्तुनोनिर्धारकरवो तेअनुमानप्रमाणजाणवो.

जेमगिरिगुहिरनेविषे आकाशावलंबी धूमनीरेषादेखीने अनुमानकरेजेएपर्वत अ

ग्निसहितछे ए पक्षतथासाध्यकह्यो जेपक्षतेपर्वत अनेसाध्यते अग्निवंतपणो साधवो तेहेतु जेधूमवंतपणामाटे एटलेजिहांधूमहोय तिहांअग्निअवश्यहोयेज आकाशने पोहोचती जेधूमरेषाते अग्निविनाहोयनही तिहांदृष्टांतकहेछे.

जेममाहानसके० रसोडो तेरसोडानेविषे धूमतथाअग्नीनेजोवादीठा तेमाटेइहां आअमुकपर्वतनेविषेधूमछे तोतिहांनिश्चेथीअग्नीछेज एहवीव्याप्ति निर्धारीनेज्ञानक रवो तेपंचावयवें शुद्धअनुमानप्रमाणकहियें तेअनुमानप्रमाण मतिज्ञान तथाश्रुत ज्ञाननुंकारणछे तेअनुमानेजे यथार्थज्ञानथाय तेनेमानके० प्रमाणकहियें अनेजे अ यथार्थज्ञानथाय तेप्रमाणनही

तथासरिखावलंबीपणे अजाणीवस्तुनो जेजाणपणोथाय जेम गोके० बलद ते म गवयके० गवो ए गो सरिखो गवयनुंज्ञानथयुं तेउपमानप्रमाणकहियें

यथार्थनावनो उपदेशकजेपुरुष तेआप्तकहियें तेउत्कृष्टआप्त वीतरागरागद्वेषर हितसर्वज्ञकेवलज्ञानीते आप्तनोकह्योजेवचन तेनेआगमकहियें जेराग द्वेषतथाअज्ञा नएदोषेआगोंपाछो अधिकोउछो बोलायछे तेआगमनही अने राग द्वेष तथ अज्ञान रहितजे अरिहंत तेनुंवचनते आगमप्रमाणजाणवो

तथावलीते अरिहंतनावचनने अनुजायी पूर्वापरअविरोधि मिथ्यात्व असंयम कषायथीरहित तेभ्रांतिविनास्याद्वादेंयुक्त तथाजे साधकते साधक बाधकते बाधक हेयते हेय उपादेयते उपादेय इत्यादिकवेचणसहित जेहोय तेनोकह्योते आगम प्रमाणजाणवो उक्तंच सुत्तंगणहररइयं तहेवपत्तेयबुधरइयंच ॥ सुअकेवलीनारहियं अभिन्नदसपुव्विणारइयं ॥१॥ इत्यादिकसद्उपयोगी नवजीरु जगतजीवोना उपकारी एवाश्रुतआधारधर जेश्रुतनेअनुसारेंकहे तेनोवचनपण प्रमाणमानवुं

तथाकोइक फलरूपलिंगेकरीने जेअजाण्यापदार्थनो निर्धारकरियें तेअर्थापत्तिप्र माणकहियें जेमदेवदत्तनो पीनके० पुष्टशरीरछे पण तेदेवदत्त दिवसनोजमतोनथीते वारेंअर्थापत्तिथीजाणीयें जेरात्रेंजमतोहशे माटेपुष्टशरीरछे एमअर्थापत्तिप्रमाणजा णवो एप्रमाणतेजाते अनुमाननोअंशछे तेमाटे श्रीअनुयोग द्वारमां प्रथमकह्योनथी.

इहांदर्शनांतरीजे प्रमाणमानेछे पणतेसत्यनथी जेमछप्रकारनाइंद्रिय सन्निकर्षथी उपनो जेज्ञान तेनेनैयायिक प्रत्यक्षप्रमाणकहेछे अने परप्रत्यक्षनेइंद्रियरहितमानेछेज्ञा नानंदमयीमानेछे तेवारें इंद्रियरहितज्ञानते अप्रमाणथायछे इत्यादिकअनेकयुक्तिछे तेमाटेतेप्रमाणनही तथाचार्वाकमतवाला मात्र एकइंद्रियप्रत्यक्षनेज प्रमाणमानेछे

एमदर्शनांतरीना अनेकविकल्पजालीने सर्वनयनिक्षेप सप्तभंगी स्याद्वादयुक्त जेवस्तु जीव तथाअजीवनोजे सम्यक्ज्ञानतेने सम्यक्ज्ञानीकहियें एज्ञाननुंस्वरूपकह्युंः

तत्वार्थश्रद्धानंसम्यग्दर्शनं यथार्थहेयोपादेयपरीक्षायुक्त ज्ञानेनसम्यग्ज्ञानंस्वरूपरमणपरपरित्यागरूपंचारित्रंएत द्रत्नत्रयीरूपमोक्षमार्गसाधनात्साध्यसिद्धिः इत्यनेनात्मनः स्वीयंस्वरूपंसम्यक्ज्ञानंज्ञानप्रकर्पएवात्मलाभः ज्ञानद र्शनोपयोगलक्षणएवात्मा छद्मस्थानांचप्रथमंदर्शनोपयो गः केवलीनांप्रथमज्ञानोपयोगः पश्चाद्दर्शनोपयोगसह कारीकर्तृत्वप्रयोगात् उपयोगसहकारेणैवशेपगुणानां प्रवृ त्यभ्युपगमात् इत्येवंस्वतत्वज्ञानकरणे स्वरूपोपादनं त थास्वरूपरमणध्यानैकत्वेनैवसिद्धिः

अर्थ ॥ हवेश्रीवीतरागना आगमथीजाण्यो जे वस्तुस्वरूप तेनेहेयोपादेयपणे निर्धारकरवो तेसम्यक्दर्शनकहियें तिहांतत्वार्थनेविपेकह्योछे के जे तत्वार्थश्रद्धान सम्यक्दर्शन उक्तंच उत्तराध्ययने जीवाजीवायबंधो ॥ अपुन्नंपावसवोतहा ॥ संवरो निज्जरामुक्खो ॥ संतिएतिहियानव ॥ १ ॥ तिहियाणंतुभावाणं सद्भावेउवएसणं॥ भावेणसद्दहंतस्स ॥ समत्तंतिवियाहियं ॥ २ ॥ इत्यादिकदशरुचीथी सर्वजाणवुं जे तत्वार्थ जीवादिपदार्थनो श्रद्धाननिर्धार ते सम्यक्दर्शनकहियें अनेजेसम्यक्दर्शनते धर्मनुंमूलछे तथाजेहेयतेतजवायोग्य अने उपादेयते ग्रहणकरवायोग्य एहवी परिक्षासहितजेजाणपणो तेसम्यक्ज्ञानछे जेमांहेयोपयोग संकोच अकरणबुद्धिनथी पणउपादेयनेउपयोगें एहवीचिंतवणाथायजेहवे किवारेकरुं एविनाकेमचाले एहवी जोबुद्धिनथी तो तेसंवेदनज्ञानछे तेथीसंवरकार्यथाय एवोनिर्धारनथी.

तथास्वरूपरमण परभावरागद्वेष विभावादिकनोत्याग तेचारित्रकहियें एरत्नत्रयीरूप परिणामते मोक्षमार्गछे एमार्गनेसाधवाथी साध्यजे परमअव्याबाधपद तेनी सिद्धिनिष्पत्तिथाय. जेआत्मानोपोतानुंरूप तेयथार्थज्ञानछे तथा चेतनालक्षणतेज जीवपणोछे अने ज्ञाननोप्रकर्ष बहुलपणोते आत्मानेलाभछे ज्ञानतथादर्शननो उपयोगलक्षणआत्माछे तिहांछद्मस्थने प्रथमदर्शनोपयोग पछेज्ञानोपयोगछे अनेकेवली

ने प्रथमज्ञानोपयोग पछेदर्शनोपयोगछे जेसर्व जीवनवोगुणपामेतेनो केवलीनेज्ञानोपयोग तेकालेथाय तेमाटे प्रथमज्ञानोपयोगवर्त्ते.

अनेसहकारीजेकर्तृताशक्ति तेजेमहतोतेमजछे एकगुणनेसाह्यकरे अनेत्रीजागुणनो उपयोगसहकारेंवर्त्तेछे सहकारतेज्ञानोपयोग विशेषधर्मनेजाणे तेजाणतांविशेषते सामान्यनेआधारेंवर्त्तेछे तेसहितजाणेएटले विशेषतेनेला सामान्यग्रहवाणा अनेसामान्यग्रहतां सामान्यतेविशेषता जनकहेता सहितजाणेतेमाटेसर्वज्ञसर्वदर्शीपणोजाणवोएरीतेस्वतत्वनुंज्ञानकरवुं तेथीस्वधर्मनो उपादानके० लेवापणुंथाय पछेसरूपनेपामवे स्वरूपमांरमणथाय तेरमणथकीध्याननी एकत्वताथाय एटलेनिर्भेज्ञान निर्भेचारित्र तथा निर्भेतपपणोथाय जेथकी सिद्धिके० मोक्षनिपजे एसिद्धांतजाणवो

तत्रप्रथमतःग्रंथिन्नेदंकृत्वा शुद्धश्रद्धानज्ञानं.द्वादशकषायोपशमः स्वरूपैकलध्यानपरिणतेनक्षपकश्रेणी.परिपाटीकृतघातिकर्मक्षयः अवाप्तकेवलज्ञानदर्शनः योगनिरोधात् अयोगीन्नावमापन्नः अघातिकर्मक्षयानंतरंसमयएवास्पर्शवज्ञत्याएकांतिकात्यंतकानांवाधनिरूपाधिनिरूपं चरित्रानयाशाविनाशिसंपूर्णात्मशक्तिप्राग्न्नावलक्षणं सुखमनुन्नवन् सिध्यति साद्यनंतकालंतिष्ठतेपरमात्माइति एतत्कार्यं सर्वन्नव्यानां.

अर्थ ॥ तेप्रथमग्रंथिभेदकरीने शुद्धश्रद्धावान तथाशुद्धज्ञानीजेजीव ते प्रथमत्रणचोकडीनो क्षयोपशमकरीने पाम्योजेचारित्र तेध्यानेंएकत्वथयीने क्षपकश्रेणीमांअनुक्रमेंघातिकर्म क्षयकरीने केवलज्ञान केवलदर्शनपामे पछेएसयोगीगुणें जघन्यथी अंतर्मुहूर्त अनेउत्कृष्टो आठवरसऊणापूर्वकोडीरहीने कोइककेवलीसमुद्घातकरे कोइककेवलीसमुद्घातनकरे पणआवर्जीकरण सर्वकेवलीकरे ते आवर्जीकरणनुंस्वरूपकहेछे इहांआत्मप्रदेशें रह्याजेकर्मदल तेपेहेलाचलेछे पछेउदीरणाथायछे पछेनोगवीनिर्जरेछे तिहांकेवलीने जिवारेतेरमेंगुणठाणे अल्पायुरहे तिवारेंआवर्जीकरणकरेछे तेआत्मप्रदेशगतकर्म्मदलने प्रतिसमयें असंख्यातगुणनिर्जराकरवीछे तेटलादलने.आत्मवीर्यकरीने सर्वचलायमानकरीमूके एवुंजेवीर्यनुंप्रवर्तन तेआवर्जीकरणकहियें एमकरतां त्रणकर्म्मदलवधतांरह्यातो समुद्घातकरे नहीकानकरे

तेमाटे आवर्जिकरण सर्वकेवलीकरे पछे तेरमांगुणगणानेअंते योगनोरोधकरीने अयोगी अशरीरी अणाहारीअप्रकंप घनीकृतआत्मप्रदेशीथको पांचलघुअक्षरजेट लोकाल अयोगीगुणगणेरहिने शेषसत्तागत प्रकृतिविद्यमान तथाअविद्यमान स्ति बुकसंक्रमें सत्ताथीखपावी सकलपुद्गलसंगपणाथीरहितथयी तेहिजसमयें आकाश प्रदेशनी वीजीश्रेणीने अणफरसतोथको लोकांतेसिद्धकृतकृत्य संपूर्णगुणप्राग्नावी पूर्णपरमात्मा परमानंदी अनंतकेवलज्ञानमयी अनंतदर्शनमयी अरूपीसिद्धथाय उ क्तंच उत्तराध्ययने कहिपडिहयासिद्धा॥कहिसिद्धापयठिया॥कहिंवोंदिंचइत्ताणं॥ कत्थं गंतुणसिज्झई अलोएपडिहयसिद्धा लोयग्गम्मिपयठिया॥इहवोंदिंचइत्ताणं तत्थगंतूण सिज्झइ। इत्यादि तेसिद्ध एकांतिक आत्यंतिक अनाबाध निरुपाधि निरुपचरित अना यास अविनाशी संपूर्ण आत्मशक्तिप्रगटरूपसुखप्रते अनुनवे अव्याबाधसुखते प्रदे शेंप्रदेशें अनंतोछे उक्तंच उववाइसूत्रे सिद्धस्ससुहोराशि ॥ सव्वद्धापिंडियंजहवज्जा ॥ सोणंतवग्गोनइयो ॥ सव्वागासेनमाइज्जा ॥ १ ॥ इतिवचनात् एरीतेपरमानंदसुख नोगवतारहेछे सादिअनंतकालपर्यंत परमात्मापणेरेहेछे तोएहिजकार्य सर्वनव्यने करवो तेकार्यनोपुष्टकारण श्रुताभ्यासछे तेश्रुतअभ्यासकरवामाटे एद्रव्यानुयोग नयस्वरूप लेशथीकह्यो तेजाणपणो जेगुरुनीपरंपराथी हुंपाम्यो तेगुर्वादिकनी परंप रानेसंनारुंछुं.

काव्य

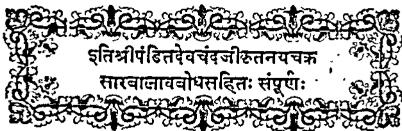
गच्छेश्रीकोटिकाख्येविशदखरतरेज्ञानपात्रामहांतःसूरिश्री
जैनचंद्रा गुरुतरगणभृत्शिष्यमुख्याविनीताः ॥ श्रीम
त्पुण्यात्प्रधानाःसुमतिजलनिधिपाठकाःसाधुरंगाः ॥ त
च्छिष्याःपाठकेंद्राःश्रुतरसरसिकाराजसारामुनींद्राः ॥ १ ॥

तच्चरणांबुजसेवालीनाः श्रीज्ञानधर्मधराः ॥ तत्शिष्यपाठकोत्तम दीपचंद्राःश्रुतरस ज्ञाः ॥ २ ॥ नयचक्रमेतत्तेषांशिष्येणदेवचंद्रेण ॥ स्वपरावबोधनार्थं कृतंसदभ्या सवृध्यर्थं ॥ ३ ॥ शोधयंतुसुधियःकृपापराः शुद्धतत्वरसिकाश्रपठंतु ॥ साधनेनकृतसि द्धिसत्सुखाः परममंगलनावमश्नुते ॥ ४ ॥ इतिश्रीनयचक्रविवरणंसमाप्तम् ॥

दोहा

सूक्ष्मबोधविणुजविकने ॥ नहोयेतत्वप्रतीत॥ तत्वालंबनज्ञानविण ॥ नटलेनवभ्र मनीत ॥ १ ॥ तत्वतेआत्मस्वरूपछे ॥ शुद्धधर्मपणतेह ॥ परनावानुगचेतना ॥ क

मेगेहनेएह ॥ २ ॥ तजीपरपरिणतिरमणता ॥ नजनिजनावविशुद्ध ॥ आत्मनाव थीएकता परमानंदप्रसिद्ध ॥ ३ ॥ स्याद्वादगुणपरिणमन ॥ रमतासमतासंग ॥ साधेशुद्धानंदता ॥ निर्विकल्परसरंग ॥४॥ मोक्षसाधनतणुमूलते ॥ सम्यक्दर्शनज्ञा न॥ वस्तुधर्मअवबोधविणु॥ तुसखंमणसमान ॥५॥ आत्मबोधविणुजेक्रिया ॥ तेतो बालकचाल ॥ तत्वार्थनीवृत्तिमें ॥ लेजोवचनसंनाल ॥ ६ ॥ रत्नत्रयीविणुसाधना ॥ निःफलकहीसदीव ॥ लोकविजयअध्ययनमें ॥ धरोउत्तमजीव ॥ ७ ॥ इंद्रिविपयआ संसना ॥ करताजेमुनिलिंग ॥ खूतातेनवपंकमें ॥ नाखेआचारंग ॥ ॥ ८ ॥ इमजा णीनाणीगुणी ॥ नकरेपुजलआस ॥ शुद्धात्मगुणमेंरमे ॥ तेपामेसिद्धिविलास ॥ए॥ सत्यारथनयज्ञानविनुं ॥ नहोयेसम्यक्ज्ञान ॥ सत्यज्ञानविणुदेशना ॥ नकहेश्रीजिन नाण ॥ १० ॥ स्यादवादवादीगुरु ॥ तसुरसरसियाशील ॥ योगमिलेतोनीपजे ॥ पू रणसिद्धजगीस ॥ ११ ॥ वक्ताश्रोतायोगथी ॥ श्रुतअनुनवरसपीन ॥ ध्यानध्येयनी एकता ॥ करताशिवसुखलीन ॥ १२ ॥ इमजाणीशासनरुची ॥ करजोश्रुतअन्यास ॥ पामीचारित्रसंपदा ॥ लेहेसोलीलविलास ॥ १३ ॥ दीपचंद्रगुरुराजने ॥ सुपसा येंउल्लास ॥ देवचंद्रनवीहितनणी ॥ कीधोग्रंथप्रकाश ॥ १४ ॥ सुणसेनणसेजेन विक ॥ एहग्रंथमनरंग ॥ ज्ञानक्रियाअन्यासतां लहेशेतत्वतरंग ॥ १५ ॥ द्वादशसा रनयचक्रले ॥ मल्लवादिकृतवृद्ध ॥ सप्तशतिनयवाचना ॥ कीधीतिहांप्रसिद्ध ॥ १६ ॥ अल्पमतिनाचित्तमें ॥ नावेतेविस्तार ॥ मुख्यथूलनयनेदनो ॥ नाष्योअल्पविचार ॥ ॥ १७ ॥ खरतरमुनिपतिगछपति ॥ श्रीजिनचंद्रसूरिस ॥ तासशीसपाठकप्रवर ॥ पुन्य प्रधानमुनीस ॥ १८ ॥ तसुंविनयीपाठकप्रवर ॥ सुमतिसागरसुसहाय ॥ साधुरंगगु णरत्ननिधि ॥ राजसारउवज्झाय ॥ १९ ॥ पाठकज्ञानधर्मगुणी ॥ पाठकश्रीदीपचंद ॥ ताससीसदेवचंदकृत ॥ नणतांपरमानंद ॥ २० ॥ इतिश्रीनयचक्रविवरणंसमाप्तं ॥



श्रीगौतमगुरुभ्योनमः

अथ

श्रीआनंदघनकृत ऋषभप्रमुखचोवीसजिनस्तुति बालावोधसहितप्रारंभकरियेछेयें॥

दोहाः

चिदानंदआनंदमय चिदरूपिअविकार ॥ सिद्धबुद्धसुविशुद्धतुं तुंजगपरमाधार॥ १ ॥ तुफकृपालताथीकरुं भापाभापारूप ॥ तवनाजिनचावीसनी आनंदघनरसकूप ॥२॥ राजऋद्धिजेमदेखीने डमककरेमनआस ॥ बुद्धिऋद्धिविणहुंडमक अरथराजऋद्धिरास ॥ ३ ॥ आशयआनंदघनतणो अतिगंभिरऊदार ॥ बालकबाह्पसारिजिम कहे ऊदधिविस्तार ॥ ४ ॥ तेममनोरथमुजमने बुद्धिविणकिमथाय ॥ गुरुकृपायीगह्नन ग पंगुपारलंघाय ॥ ५ ॥ सीभापाभापातणी कोएहेवुंकहिदेय ॥ पीस्यानूंछुंपीसवूं पीसेठाणनलेय ॥ ६ ॥

॥ अथश्रीऋषभजिनस्तवनलिख्यते॥

॥ रागमारूकरमपरिक्षाकरणकुमरचल्योरेएदेशी ॥

ऋषभजिनेश्वरप्रितममाहरोरे ॥ ओरनचाहुंरेकंत ॥ रीझ्यो
साहेवसंगनपरिहरेरे ॥ भांगेंसादिअनंत ॥ ऋषभ० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ इहांकोइपूछेजे एतवनोकेटलानामलवायीथयी तेनेकहेछे जे शुद्धचेतना श्रद्धासखीने पोतानाघरनीवातोदेखाडतिकहेछे के हेसखिमाराभर्त्तारनो वृत्तांतसांभलवायी माराघरनोसर्ववृत्तांत तुंपोतानीमेलेसमजीजइस केमके पोतानोभर्त्तार स्त्रीनाकथनमांहोय तोबीजातोहोयज माटेबीजासर्वमाराकथनमां एकभर्त्तारनेपठवाडे छे तेमारोभर्त्तार ऋषभदेव रागादिकेंशून्य एवोभर्त्तार पामिने हुंओरशब्दें रागादिक परिणतियें परिणम्या एवादेवोने भर्त्तारपणेवांछुंनही तेमाराभर्त्तारनो एवोस्वभावजछे जेमाराविना वीजाकोइथी एनुंरंजनथायजनही एटलेजेदिवसथी मारासाथेंरीझ्योछे तेदिवसथीआजपर्यंत मारासाहेवेंमारोसंघकेवारेंमूक्योनथी तेमआवतेकालेंमूकसे

पणनही अनेदरूपेंमिल्योकेवारें निन्नयायनही तेथीजमारासाहेबनोरीझवानो सादि अनंतनांगो प्रवचनमांकह्योछे शुद्धस्वनावप्रगटयोतेसादि अनेतेस्वनावत्रिकालेंअरूप माटेअनंत अथवा वीतरागपणे प्रतीतकरयोतेसादि अनेतत्स्वनाव स्वरूपतानावि तन्मयिनाव आचरणहेतुयें करीथयोतेअनंत तेथीमारोसाहेब रीझ्यापछे विछड वामां समजेज नही ॥ १ ॥

प्रीतसगाईरेजगमांसहुकरेरे ॥ प्रीतसगाईनकोय ॥ प्रीतस
गाईरेनिरूपाधिककहीरे॥सोपाधिकधनखोय॥ऋषन०॥२॥

अर्थ ॥ हवे लोकोत्तरप्रीति तेने लौकिकप्रीतपक्षें दृढकरतो कर्त्ताकेहेछे जगतमां अन्योन्य प्रीतथयारवामाटे समस्तजगतवासी जीव पुत्रपुत्रीनीसगाइसंबंधकरेछे पर तु तेप्रीतीनामिलापने विचारीजोउंतो हेप्रज्ञमाराजर्त्तारना प्रीतनीजेरीत तेमांतो एवीसगाइसंबंधमात्र कोयनथी केमकेमाराजर्त्तारनी प्रीततेस्वनावनुंमिलापछे माटे निरुपाधिकप्रीतिछे अनेसिद्धांतमांपण प्रीतीनीरीत उपाधिरहितकहीछे तोहेप्रज्ञवि नाचितो स्वनाविरुरनपरमात्मासाथें सोपाधिकप्रीतकरवावांछतो स्वनावनीप्राप्तिसं पेथी अनजिननीप्रीतिरूप परमधनने खोवे एटले आत्मगुणनोनाशकरे ॥ २ ॥

कोइकंतकारणकाष्टनक्षणकरेरे ॥ मलसुकंतनेधाय ॥ एमे
लोनविकहियेंसंनवेरे ॥ मेलोठामनठाय ॥ ऋषन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ फरिसोपाधिकप्रीतपक्षनादृष्टांतथी निरुपाधिकप्रीतपक्षदृढकरेछे जे हेप्र ज्ञ कोइकस्त्रीनर्त्तारनेमिलवावास्ते काष्ठचढे एटलेसतिथाय अथवा पक्षांतरें कोइकम तवादि निरंजनजर्त्तारनेमलवासारुं पंचाग्निजपापातसमाधिकरे शामाटे जेधायके० दो डीनेतुरतकंतनेमलुं तथा परतिर्मापेसखुं इत्यादिक महाकष्टोनेकरवे निरंजनथीतुरत मलिसुं परंतुएरीतें तो नर्तारनोमलवो त्रणेकालमांसंनवतोनथी केमके अमुकगति मांतुरणथाय अनेतुरणनेजगतिमांतेजस्थानकेंआवीस एवाविचारथी अग्निमांनस्म थयो स्त्रीनरवुं एमजाणोतामस्थाननही एमजनिश्चेंथायनही तथापंचाग्निझंपापाता दिके मरणथाय तेथणाजमरणमाटे सिद्धस्थानकने निश्चेंथीनहीजमिले ॥ ३ ॥

कोइपतिरंजनअतिघणोतपकरेरे ॥ पतिरंजनतनताप ॥ एप
तिरंजनमेंनविचित्तधरयुंरे ॥ रंजनधातुमिलाप ॥ ऋषन०॥४॥

अर्थ वली हेप्रज्ञ माराजर्त्तारथी मिलवामाटे कोइकक्रियारुचीजीव तेमा

रापतिने रंजनके० राजीकरवामाटे अत्यंतघणोतपकरे तेथीपण मारोभर्त्तार राजी थायनही केमके जेएकांततपस्या तेतो तनतापके० मात्रशरीरनेतपाववुंछे माटेएरी तेंतपस्यादिक बाह्यकरणिचें मारापतिनेराजीकरवुं तेहेअन्नलखी मेंचित्तमांनधा र्युं एटलेनवेराख्युं केमके माराभर्त्तारने राजीकरवानीरीततो धातुमिलापजेवी एटले तेनीधातुप्रकृतिछे तोतेवीप्रकृतिवंतथतोमिले तेथीराजीथाय ॥ ४ ॥

कोइकहेलीलारेअलखअलखतणीरे॥ लखपूरेमनआस॥ दोष रहितनेलीलानविघटेरे॥ लीलादोषविलास॥ ऋषभ० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलिकेइकइश्वरवादी एमकहेछे के अलखजेपरमेश्वरतेनीलीला ते अलख के० लखिजायनही जाणीजायनही तेमाटेअलखनामकहेछे तेनेपोतानीशक्तिफोरवीने लीलानीपरमकारणीभूत मायारची तेसर्वजगतनुं घटनविघटनरूपलीलानुं लखवुं जाणवुं तेज जननामननी लाखोगमेआशापूरेछे पणहेअन्नलखीजे एवुंकहेछे एपण बाधकवचनछे केमके जेरागादिदोषेंरहितनहोय तेनेअलखकेवायनही अनेअलखक ही फरितेनेलीलाकेवी एघटमाननथी केमकेजे लीलातेतो दोषनुंविलासछेहेरछे मा टेरागादिदोषविना लीलानोविलासनजहोय तो अलखकहि फरीपरमेश्वरनेलीलाछे रावनी एतोघहेलीनुंपहिरणोसाचो एमथयुं ॥ ५ ॥

चित्तप्रसन्नेरेपूजनफलकह्युंरे ॥ पूजअखंडितएह ॥ कपटर हितथयीआतमअरपणारे॥ आनंदघनपदरेह॥ऋषभ०॥६॥

अर्थ ॥ तेथीहेअन्ना तपसंयमनियम व्रतपालन एतारीलीलाछे अथवातुं तपसं यमादिककीधाविनाज लाखोगमेना मननीआशानो पूरणहारछो एवीआधीनतानुंनाप वुं तेपूजननही पणजे चित्तनीप्रसन्नता अल्हादपणुं तेजपूजननीसफलताछे जोअखं डतंडुल वस्त्र धूप दीप नैवेद्य फल जल फूल केशर चंदनादि सर्वसामग्रीअखंडछते चित्तनीप्रसन्नताजे शुभभाव तेनेअभावें तेअखंडपूजानही जेशुभभावतेज अखंडितपू जाजाणवी माटेहेसखी जेप्राणीआनंदघनपद पामवानीचित्तमां अभिलाषकरे तेप्रा णीमारा ऋषभभर्त्तारथी कपटरहित निष्कपटीथयी बहिरात्मापणोमूकी अंतरआ त्मावंतथतो थिरस्वभावें परमात्मस्वरूपने पोतानाआत्मामांचिंतवे एरीतें ऋषभपर मेश्वरथी आत्मानुंअर्पणकरे तेप्राणी आनंदशब्दें ज्ञानानंदनुंपद जे मुक्तिपद तेनी रेहके० रेखा एटलेमिलापछतेलिन्छे ॥ ६ ॥ इतिऋषभजिनस्तवनंसमाप्तं॥

॥ अथश्रीअजितजिनस्तवनं ॥

रागआसाकरीमारुंमनमोह्युंरेश्रीविमलाचलेरेएदेशी

पंथडोनिहालूंरेबीजाजिनतणोरे ॥ अजितअजितगुणधाम ॥
जेतेंजीत्यारेतेणेहुंजीतिओरे॥पुरुषकिस्युंमुजनाम॥ पंथ० ॥१॥

अर्थ ॥ आनंदघन सुमतिप्रतेंकहेछे जे बीजाअजितजिननुं पंथके० मार्गप्रवर्त्तनाते पूर्वप्रटमृगनीपरें निहालूंके० जोकंतु एटलेजेमार्गप्रवर्त्तने अजितप्रभु निर्वाणपदपाम्या तेमार्गनेगवेषूंछुं तेअजितनाथकेवाछे के जव्यरासोविना प्राणीमात्रेंजित्यानजाय तेवाअनंतज्ञानदर्शनादिक जेगुणतेनाधामछे एवापरमेश्वरथी सुमतिवंतछतोआनंदघनकहेछे जेहेअजितजिन जेरागद्वेषमोहादिकवैरीउने तमेएकलेजीत्या तेणेरागद्वेषादिकें मुजनेजीतिलीधो एटले ते रागादिकेंमुजनेहराव्यो तोहेपरमेश्वरमारुंपुरुषनामसुं. एटलेधर्मविना धर्मनीउलखाणशानी जिमतमेंएकले पुरुषत्वधर्मे रागादिकनेजीत्या तेमहुंजीत्योहत तोहुंपणपुरुषकेवात तेतोनजीत्यो माटेमारोपुरुषनामनही

चर्मनयणकरीमारगजोवतोरे ॥ जूल्योसयलसंसार ॥ जेणे
नयणेकरीमारगजोइयेंरे॥ नयणतेदीव्यविचार॥ पंथ०॥२॥

अर्थ ॥ हेपरमेश्वर चर्मचक्षुयेंकरी अथवा बाह्यदृष्टीयेंकरी तमारोमार्गजे आत्मिकस्वरूप वीतरागपरिणतियें परिणाम्यो परमात्माधर्मे धर्मितमार्गे जोवतोथको सकलसंसारमात्र जूलीजरह्योछे एटले बौध नैयायक सांख्य जैमनीय वैशेषकादिक मतमतनी एकांतवादी सर्वेतमारामार्गने जूलीरह्याछे माटेहेपरमेश्वर जेनेत्रेंकरी तमारोमार्ग जेशुद्धस्याद्वाद परमामृतमयी जैनदर्शन आत्मिकस्वरूप साक्षात्कार करवामाटे असाधारणकारण एवोमार्ग देखीयेंकियें तेतो दीव्यके० ज्ञानरूपनेत्रजविचारके० जाण एटले अजितपरमेश्वरनोमार्ग तेज्ञानरूपचक्षुथीजजोवाय ॥ २ ॥

पुरुषपरंपरअनुजवजोवतांरे ॥ अंधोअंधपुलाय ॥ वस्तु
विचारेरेजोआगमेंकरीरे॥ चरणधरणनहींठाय॥ पंथ०॥३॥

अर्थ ॥ वलीहेमुनि पुरुषोनीपरंपराजेश्रेणी एटलेमाजानामणियां नेअनुक्रमेंश्रुतपुरुषोनीपरंपरा [illegible] एकवचननयी पणगछोनाविचारक मतमतनी [illegible] अणकरता गछस्थापते परंपरायापी एवाशुद्धरवोने अनुजवके० विचारीजोइयें तोअंधनरपदनोदृष्टांत साक्षातूसंभवेछे एटले अंधो

अंधपरंपरित्ता पूरम ध्यानगहइ एवुंसुयगडांगना पहेलाश्रुतस्कंधने बीजेअध्ययनेकह्युं छे माटे जेमअांधलोअांधलाने गामांतरें पोचडववांने पणपोचीशकेनही तेथी ग्याननेत्र तथापुरुषपरंपरा एवेकारणमार्गपामवानातो निर्थकथया अने आगमजेसिद्धांत तेथीजो वस्तुके० तत्वविचारणाकरियें तोजेरीतें अजितपरमेश्वरप्रवर्त्या तेवोतेणें मार्गेनाप्यो तेमांसंपूर्णप्रवर्त्तवुंतो वेगलुंरह्युं पणतेमां चरणके० पगमूकवुं तेपणगाम छेकाणेपडवुंजकठणने एटलेतेप्रमाणे पगमात्रप्रवर्त्तवुंपणकठिणछे ॥ ३ ॥

तर्कविचारेंरेवादपरंपरारे ॥ पारनपहोचेकोय॥ अभिमतेंव

स्तुवस्तुगतेंकहेरे ॥ तेविरलाजगजोय ॥ पंथ० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीहेसुमति तर्कविचारेंजो मार्गनेविचारुं तो एककथन तेऊपरवीजुं तेऊपरत्रीजुं एमकथननीपरंपरा एटलेकथनऊपर कथनचालुंजाय एवीवादनीपरंपरा जोतांतो मारोजन्मवितिजाय तोपणपारनपामुं तेहुंतोशीगणतिमां पणकोइथीपारन पोचाय तोहेसुमति अभिमतेंके० पामवायोग्य जे वस्तुके० पदार्थतेजिनमार्गि सिद्धांतनेविषे गतशब्दें जिमरह्युंछे तिमनुंतिमकहे पणएकअक्षर हिनाधिकनकहे तेवा प्राणीजगतनेविषे केइकविरलाज तुं जोयके० देख एटलेयशोविजयउपाध्यायजीपण एमजकहेछे जे शुद्धभाषकनीबलिहारी ॥ ४ ॥

वस्तुविचारेंरेदीव्यनयणतणोरे॥विरहपडयोनिरधार॥तरत

मजोगेरेंतरतमवासनारे ॥ वासितबोधआधार॥ पंथ०॥५॥

अर्थ ॥ माटे जेणेकरीवस्तुनो यथार्थस्वरूपविचारुं एवाजेज्ञानरूपनेत्र तेनुंतोरागादिकेंकरी विरहके० अंतर निरधारके० निश्चेंथीपड्युं एटले मारोआत्मज्ञानरूप नेत्रफूटिगयुं अथवावीजेपक्षें वस्तुके० तत्वविचारें विचारीयेंतो दीव्यनयणते केवलज्ञानीविना शुद्धमार्गनपामियें ते केवलज्ञानीनो निश्चेथीविरहपड्यो माटेहेसुमति चर्मनेत्र पुरुषपरंपरा आगमथीरहस्यनुंविचार शुद्धकथक केवलज्ञानी इत्यादिकमार्गपामवाना कारणनुंतो अनावययो एमनिसंदेहयोग तोएकाळेंकोइनेहाथेंचढेनही तोमार्ग किहांथीपामियें एटलेतरतमयोगेकरी वासनाजे श्रद्धातेपण तरतमजथयि पणसंदेहरहित श्रद्धाछेरीनहीतोएवीश्रद्धायेंप्रतिवासित सुगंधितबोधग्यानतेनुंआधारमारेछे॥५॥

कालजवधिलहीपंथनिहालसुंरे ॥ एआस्याअविलंब॥एज

नजीवेरेजिनजीजाणजोरे॥आनंदघनमतअंब॥पंथ० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एपूर्वोक्तसर्ववातोविचारी सुमतिसहित आनंदघन लाखोविलखोथयीने

विनतीकरेछे जेहेप्रनु परिपाककालपामिने एटले चरमावर्त्तन नवस्थितिनुंपरिपाक एवीकालरूपलब्धिपामिने पंथके० तारोजेमार्गते निहालसुंके०जोसुं आकालेंतोतारोमार्गेहार्थेआववानुं कोइउपायनथी तोहेपरम्भर काललब्धिरूप आस्याएटले मननेथिरता एआस्याने अविलंबनके० ग्रहणकरीने एजनके० आजपंचमकालनापुरुषते जीवेके० जीवतारेहेछे कालक्षेपनाकरीरह्याछे एटलेनिराधारछतां कालनेपूरोकरेछे एवी पंचमकालवासीजीवोनी विवस्थातेहे जिनजीके० अजितजिनेश्वरतुमे जाणजोके० जाण्यारहेजो हेप्रनुतमेकेवाछो आनंदशब्दें ज्ञानानंदतेनो घनके० अतिंद्रियसुखनो समूह एटले केवलज्ञाननीकारक जेशुद्धस्याद्वादमत तेनाअंबछो सदाफलछो शुद्धस्याद्वादपरिणतिना परिपाकपणाथी ॥ ६ ॥ इतिअजितजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥अथश्रीसंनवजिनस्तवनप्रारंनः॥

रागरामगिरिरातडीरमिनेकिहांथीआवियारे एदेशी

संनवदेवतेधुरसेवोसवेरे ॥ लहिप्रनुसेवननेद ॥ सेवनकारणपेहलीनूमिकारे ॥ अनयअद्वेपअखेद ॥ संनव० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेसुमतिवंतछतो निजआत्मस्वरूपानुजायी पुष्टालंबन परमकारणनूतबीजा संनवपरमेश्वरनुं सेवन तेजपरमेश्वरपासेथी मांगवावांछतोछतो पोतेतेमजसर्वेने उपदेशरूप वीनतिकरतोकहेछे नोनव्यप्राणीयो संनवदेवतेने धुरके० प्रथमसेवो केमकेआत्मापोतानो अनंतकालनुंनूल्योजे आत्मिकस्वरूप तेस्वरूपनीओलखाण प्रथमएपरमेश्वरने सेव्याविना थायजनही तथायसेपणनही एटलेजेनव्यप्राणीयें पोतानाआत्मस्वरूपने अतितकालेंउलख्योछे तथावर्तमानेंउलखेछे अनेअनागतेंउलखशे तेसर्वप्रथमथी प्रनुनास्वरूपनुंसेवनकरीने उलखाणथयीछे इहांसिंह तथाबगनाद्दष्टांते जिमसोनानीखाणमां सोनुंमाटीसाथेनलीरह्योछे तेमआत्माअनादिकालनुं कर्मेंथीनिलीरह्योछे तेप्रथमसंनवदेवथी पोतानीएकताजाणी जडस्वनावथीनिन्नस्वनाविपणुजाणीनेजडथी आत्मानिन्नथाय तेमाटेअनादिकालनो नूल्योछतांआत्मानेस्वनावनीप्राप्तिनुं असाधारण कारणनूतपणुं तेधुरथीसंनवनुंनथी तोहेसुमति शुद्धात्मप्रवर्त्तिये परमेश्वरनेसरूपें सेवननुंरहस्यपामिने संनवपरमेश्वरनुं सेवन तेनीएतो पेहलीनूमिकाके० पेहलुंपायुंछे परंतुएपायुंकेवुंछे जेसेवनानुंपूर्वें लक्षणकयुं तेसेवनारूप कार्यनुकारकपणुंछे तेत्रणप्रकारेंछे १ अनयपणुं २ अद्वेपपणुं ३ अखेदपणुं एसेवनानाकारणनी पेहलीनूमिका एटलेस्थानकयुं ॥ १ ॥

भयचंचलतादोजेपरणामनीरे ॥ द्वेषअरोचकभाव ॥ खेदप्रव
त्तिहोकरतांथाकीयेंरे ॥ दोषअबोधलखाव ॥ संभव० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एत्रणमांथी पेलुंअभयनुंलक्षणकेहेछे संभवजिननुंचिंतवनकरतां तेचिंतव
नाथी परिणाम चलायमानथयीने अन्यचिंतवनामां मननुंप्रवर्तवुं इत्यादिकपरिणा
मनुं चंचलतापणुं अथिरपणुंतेनेभयकहियें अनेतेसर्वपलटावीने एकाग्रस्वरूपनुं चिंत
वनतेअभय हवे अद्वेषनुंलक्षणकेहेछे संभवजिननुंसेवन भजन स्वरूपचिंतवन तेचि
त्तमांरुचेनही सुहायनही इत्यादिक अरोचकभावतेद्वेष अनेप्रभुनो स्वरूपचिंतवन
रुडोलागेतेअद्वेष हवेअखेदनुंलक्षणकहेछे संभवप्रभुना स्वरूपचिंतवणानी प्रवृत्तिमां
मनप्रवर्त्योथको थोडाकालमां थाकीजाय पछेतेप्रवृत्तिमां प्रवृतिशकेनहीतेखेद अने
जे संभवदेवना स्वरूपचिंतवनथकी निवृत्तनहीतेअखेद माटेहेसुमति जेनेसंभवदेव
नीसेवनामां अभय अद्वेष अने अखेदीपणुंछे तेनेतोस्वरूपानुयायी बोधनुंलखावछे
अने जेनीसेवामां भय द्वेष अनेखेदपणुंछे तेने अबोधके० स्वरूपनुंअजाणपणु ने
दोषनुं लखावके० लखवुंछे ॥ २ ॥

चरमावर्त्तहोचरमकरणतथारे ॥ भवपरिणतिपरिपाक॥ दोषट
लेवलीदृष्टीखुलेभलीरे ॥ प्रापतिप्रवचनवाक ॥ संभव० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेदोषटालवानाजेकारण श्रीसंभवनाथें पोतानामुखथी सिद्धांतोमांकह्या
छे तेकहुंछुं तेमांपेहेलुंकारणतो जीवनेसंसारमां परिभ्रमणकरतां अनंतिउत्सर्प्पिणि
अवसर्प्पिणीथयी तेमांछेलीउत्सर्प्पिणी अथवाअवसर्प्पिणी संसारभ्रमणकरवानीहो
य तेचरमावर्त्तन अनेबीजोकारण अपूर्वकरणादिमानुंछेलोकरण तेचरमकरणकहि
यें तथाके० तेमजत्रीजुंकारण भवजेसंसारनीगत्यागति तेनुंजेपरिणमवुं तेनोपरि
पाक एटले गत्यागतिनोअभावते भवपरिणतिपरिपाकनामाकारण माटेहेसुमतिए
त्रणेकारण मिलताज जीवने भय द्वेष अनेखेदरूप दोषटलीजाय तिवारें अभयी
अद्वेषी अखेदी आत्माथताज भलीआत्मस्वरूपानुयायी एवीज्ञानरूप दृष्टीके० च
क्षुते खुलेके० उघडे तेज्ञानदृष्टीखुलवाथी प्रवचनवाक जेसिद्धांतोना सप्तनयाश्रित
वाक्य तेनीशंकारहित प्राप्तिथाय ॥ ३ ॥

परिचयपातिकघातिकसाधुसूंरे॥ अकुशलअपचयचेत॥ ग्रंथ
अध्यातमश्रवणमननकरीरे ॥ परिशीलननयहेत॥संभव०॥४॥

अर्थ ॥ जेवारें प्रवचनामृतनीप्राप्तिथयी तेवारेंमिथ्यादर्शनीओथी पेलापरिचयह तो तेटलीने आश्रवरोधि संवरसोधि प्राणातिपातादिकनाघातक मोक्षमार्गनाशाय क एवासाधुओथी तेजीवने परिचयके० आसेवनथाय तेवारे आत्मस्वरूपपामवा ने अकल्याणकारी एवोजेअसुद्धश्रद्धा तद्रूपअकुशलपणानो अपचयके० नाशकर नार एवो चेतके० चित्तथाय एटलेस्वरूपानुयायी चित्तथाय तेवोचित्तथयाथी संम ति तत्वार्थ अध्यात्मशार अध्यात्मकल्पद्रूमादिक अध्यात्मिग्रंथोनुं श्रवणके० सां नवुंथाय मननके० परिचिंतवन युक्तिसहितविचारणा तेणेकरी नैगमादिक सातेन यनो भिन्न भिन्नहेतुयें भिन्नभिन्नकथन केमके हेतुभिन्नभेअभावें कथनभिन्ननोअभा वछे तोइहांनयोनाहेतके० हेतुयेंकरीने संभवनाथनास्वरूपथी पोतानाआत्मस्वरूप नुं परिके० समस्तपणे शीलनके० स्वभावथीमिलाववुंथाय ॥ ४ ॥

कारणजोगेंह्योकारजनीपजेरे ॥ एमांकोइनवाद ॥ पणकारण
विणकारजसाधियेंरे ॥ एनिजमतउनमाद ॥ संभव० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेपरमेश्वरना स्वरूपथी निजस्वभावनुंमलाववुं तद्रूपकारणनेसंयोगें पो तानोस्वरूपरूपकार्य सिद्धथाय एमांकाइवादनथी केमके कारणेकार्यनिपजे एमांतो सुंकेवुं पणश्रीसंभवदेवना स्वरूपनुंसेवनरूपजेकारण तेकारणविना निजस्वरूपरूप कार्य तेप्रत्यक्ष करवाने साधवावांछियें एटलेकारणविना कार्यनीसिद्धता वांछवी ते तोपोतानीमतिनीउन्मतता हठ्याहीपणुंछे अथवापोतानी बहिरात्मापणारूपकुम तिनो उन्मादके० चित्तविभ्रमताछे ॥ ५ ॥

मुगधसुगमकरीसेवनआदरेंरे॥सेवनअगमअनूप ॥ देजोक
दाचितसेवकयाचनारे ॥ आनंदघनरसरूप॥संभव० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटेसंभवदेवना सेवनरूपकारणने सद्भावें पोतानास्वरूपरूपकार्यनुं नि संदेहसद्भावीपणुंजछे पणतेसेवनघणोदुष्करछे परंतुमुग्धजे सेवननाअहस्यनीभि कलोकते सुगमजाणीने संभवदेवनुंसेवनआदरें परंतुअंतरात्माविनाभोडताआत्म सेवननीकोइने गम्यनथी एसेवनतोपरमोत्कृष्ट निरुपमकह्युंछे तेसेवतोदेसुमति भ मवुं दुर्लभछे माटे संभवपरमेश्वरथी विनतिकरुंछुं जे चरमावर्त्तनाभुं सेवन तेनी पाम्युंजे कदाचितके०कोइनवें तेनवमां हुंतमारोसेवकजे पामरतेनी कखुं तेसेवना नरूपप्रार्थना तेमुफनेदेजो सफलकरजो हेपरमेश्वरतमेकेवाछो ३ अभेदपणुं ए व तेनु घनके० समूह एटलेकेवलज्ञान केवलदर्शनेकरी इव्यना

जाणवेथी उपनोजे आनंद तद्रूपरस तेठे रूपके० स्वरूपकथनजेनो एवातमेंठो ॥ ६ ॥ इतिश्रीसंनवजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीअनिनंदनजिनस्तवनलिख्यते ॥

रागधन्यासिरिसिंधुओआजनिहेजोरेदीसेनाहलोएदेशी

अनिनंदनजिनदरशणतरसियें ॥ दरशणदूर्लननदेव॥ मत

मतनेदेंरेजोजइपूठीयें॥सहुथापेअहमेव ॥ अनि० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अनिनंदनपरमेश्वरना दर्शनप्रतें एटलेजैनदर्शनप्रतें तरसियेंके० कोइरीतेमिले तेवांठियेंठयें पणहेप्रनु तारो जैनदर्शनतेदूर्लनने डुखेनलन्यतेतिदूर्लन एटले गतकालेंनपाम्यो आजन्ममांपामवानी विवस्था आगलकहीस माटेदूर्लन कह्युं इहां कोइपोतें अजाणठतो बीजानेमार्गपूठे तेन्यायें जेजूदीजूदीमतवालाठे तेमनेजइपुठियें जे शुद्धस्वरूपानुंजायी आत्मिकस्वरूताविठेदकावह्नदर्शनलेस्यो तेवारें सहुमतांतरनाथारकते अहमेवके० अहंएव एटलेनिश्चेअमेज प्रवृतियेंठयें तेजशुद्धदर्शनठे पण अमारादर्शनथी स्वरूपनीप्राप्तिनथी एवुंकोइकहेनही ॥ १ ॥

सामान्येकरीदरिशणदोहिलूं ॥निरणयसकलविशेष ॥ मद

मेंघेरयोरे आंधोकेमकरे॥रविशसिरूपविलेप॥ अनि०॥२॥

अर्थ॥माटेहेपरमेश्वरसामान्यप्रकारेंमतमतांतरना नेदेंकरी एटलेएकांतवादिर्जनेपूठतांतमारोजैनदर्शन पामवोदूर्लनने वली निरणयके० निश्चेंसंघातें स्वरूपानुंयायी परमतात्विकपणे अनंतेकेवलज्ञानीयेंनाष्युं तदाकारनूतें समस्तनयानुयायी विशेषपणें तमारुंदर्शन प्रत्यक्षपणेकेवुं तेपणकठणने हवेतेमतमतनेदिर्जथीइठलां तमारोदर्शननजपामियें तेउपरदृष्टांतकहेने जेमकोइकजन्मांधप्राणीने तेणे फिरिमद्यपान कर्युंहोय तेप्राणी सूर्य तथाचंद्रमानास्वरूपनो विशेषपणे लखवुंके० जाणवुं तेशीरीतेकरीशके तेमज जेमिथ्यादर्शनेकरी अंधतोठे वलीमतममत्वरूप मदिरामांघेराणा तेसूर्य चंद्ररूपजैनदर्शननुं विशेषपणेलखवुं केमकरीशके अर्थात नजकरीशके ॥२॥

हेतुविवादेंहोचित्तधरिजोइयें ॥ अतिदुरगमनयवाद ॥ आग

मवादेंहोगुरुगमकोनही॥ एशबलोविषवाद॥ अनि०॥३॥

अर्थ ॥ वलीहेपरमेश्वर जे साधवायोग्य कार्यनीप्राप्तिकरे एवा हेतुके० कारणोनो विवादके० विशेषपणेकथन तेने चित्तमांधारीने एटलेमनमां विचारीनेजोइयें अ

र्यातज्ञानदृष्टीयें विचारीजोयुंतो तमारादर्शनमां नयोनुं वादके० कथन एवोछे जेए कवस्तुने एकनयेंथापियें तोअन्यनयें उछापिजायछे माटेनयवादनीपण दूर्गमताछे ए टलेगम्यनपडे वलीतमारा आगमके० सिद्धांतोनो वादके०कथन तेथीतोसहज तमा रोदर्शनपामिशकियें पणतमारा सिद्धांतोनाकथननुं गुरुगमकोइनथी एटले जेगुरुथ की सिद्धांतोनी गम्यथाय समजपडे एवोगुरुकोइनथी अथवा गुरुपारतंत्रेकरीसम ज्युंहोय एवोपरंपरागमि कोइगुरुआकालमां देखातोनथी माटे मतमतांतरोनाजेदथी हेतुविवादोथी तेमजनयवादोथी तथा आगमवादथी तमारादर्शननी प्राप्तिनथी एज सबलोके० बलवान मनमां विषवादके० वढेगछेअसमाधिछे ॥ ३ ॥

घातिडुंगरआमाअतिघणा ॥ तुजदरिशणजगनाथ ॥ धीग
ईकरिमारगसंचरूं ॥ सेंगूकोइनसाथ ॥ अभि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ माटेहेजगनाथके० त्रिजगतनास्वामि तारोदर्शन पामवाने अंतरायनाकर नार घातकारक एवापूर्वोक्त जेकारणकह्या तद्रूपपर्वतोपम एवा अत्यंत घणामांघणा पूर्वेकह्या तेथी हजीवणारहिगयाछे माटेकेटलाककहुं तो पणहुं धीगाइकरि एटले त मारोदर्शनपामवानी घातनाकरनाराछे तेनेनहीगणता हगतुंयोगें जैनदर्शननामार्गे मां संचरुंके० प्रवृत्तनकरुं पण शुद्धस्या द्वादमार्गनो प्रवृतावववालो तेने सेंगूकहि यें तेवोकोइज्ञातापुरुष रस्तोदेखाम्नारसाथेंनथी जेनासहायथीमार्गे प्रवृतियें ॥ ४ ॥

दरशणदरशणरटतोजोफरूं ॥ तोरणरोजसमान ॥ जेहनेपी
पासाहोअमृतपाननी ॥ किमभाजेविषपान ॥ अभि० ॥५॥

अर्थ ॥ हेअभिनंदन परमेश्वर तारादर्शननी पूर्वोकतकारणे अप्राप्तिजाणीने मा त्रदर्शनीओथी दर्शनदर्शन अहोउपगारिओ शुद्धआत्मिक स्वरूपानुयायी परमपद प्रापक एवोदर्शनजेममारेहाथेंचढे तेरीतबतावो एमरटतोके० केहेतोथको लोके० कोइरीते फिरुंके० परिभ्रमणकरुं एटलेजैनीओसहीत सर्वमतोनावाचकधर्मिओथी वारंवारपूछतोनटकुं तोहेप्रभुतारोदर्शन एरीतेंतोहाथेचढेनही पणवलटो जैनदर्शननी सोधकरतोदेखीने सर्वदर्शनीएमकहेजे आतोमनुष्यकारें जंगलनारोजशरखो मूर्खशे खरछे माटेएरीतेंसर्वदर्शनीओथी जैननीसोधकरतेछते कोइमहावंचकी नयनापक्षथी एवीवातसंभलाविआपे के जेथकी जैनदर्शननी प्राप्तितोदूररहीपणजोकोइनयरूपनी वात पेटमांफालियाना फालियाजरीआपे तेथीभ्रष्टश्रद्धाछतो अन्यमत प्रवर्त्तनआद रीने जैनमतनी हेलनाकरवा लागीजाउं माटेजेनीचाहना तेतोमलेनही पणजेहुंन

वांतुं तेजेहेरूपमारीश्रद्धामां प्रवेशकरीजाय तोएअन्यमतिओनी एत्लाथीतसुं केमके जेनेअमृतपीवानी पीपासाहोय तेनेजेरआपेछते अमृतनी तृपाकेमजांजे ॥ ५ ॥

तरसनआवेहोमरणजीवनतणो ॥ सीजेजोदरिशणकाज॥ दरिशणदूर्लभसुलभकृपायकी॥आनंदघनमहाराज॥अभि० ॥६॥

अर्थ ॥ माटेहेपरमेश्वर एजैनदर्शन रूपकार्य जोकोइरीतेंसिद्धथाय तोमरणजीवननो तरसके० त्रासएटलेनयनआवे तेप्राणी जन्मजरामरणादिकना दुःखरहितथयी मोक्षपामें परंतुतारोदर्शन दुखेःपामवामांआवे पणतमारीकृपाथी स्वरूपज्ञानथाय अने जेस्वरूपग्यान तेजैनदर्शनमां अभेदपणेछे माटेतमारीकृपाथकी सुलभके० सुखेंपामियें तोहे आनंदघनशब्दें ज्ञानानंदना सघनपणासहित एटलेज्ञाननुं अत्यंतपणेंजराव तेनामहाराज तेआनंदघनमहाराज तमारीकृपाथी शुद्धस्वरूपात्मजैनदर्शन पामियें ॥ ६ ॥ इतिअभिनंदनजिनस्तवनसमाप्तः ॥

॥ अथश्रीसुमतिजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥रागवसंततथाकेदारो॥

सुमतिचरणकजआतम अरपणा ॥दरपणजिमअविकार ॥ सुग्यानी॥ मतितरपणवहुसम्मतजाणियें ॥ परिसरपणसुविचार ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ सुमतिनाथ परमेश्वरना पदपंकजमां माराआत्मानो अरपणके० स्थापन जेनिभ्रमपणे परमात्मानुं स्वरूपचिंतवन तेआत्मअरपणकहियें तेपरमेश्वर कपाधिजनितजे विकारतेथीरहित जेमआरीसामां जेवीअवस्थाहोय तेवीजासे तेथी भिन्नपणेनभासे तेनीपरेंनिर्विकारीछे यथातथ्य कांतिवंतछे नज्ञाकेवलग्यानीछे माटे हेसुमतिवंतप्राणी तेजे वहुके० घणामततेमने सम्मतचालतां तो आत्मअरपणानुं स्वरूपते मतितरपणथयीजाय एटलेबुद्धिनी तृप्तियथीजाय तेटलासुद्धिजाणियें समजीजहियें पठे परिके० समस्तपणे जेअन्यमतिओमां आत्मानोअरपण तेथी सरपणके० ओसरवुं कपरांगेप्रवर्त्तवुं तेज सुविचारके० नज्ञोयोग्यविचारछे ॥ १ ॥

त्रिविधशकलतनुंधरगतआतमा ॥बहिरातमधुरिभेद॥सु०॥ बीजोअंतरआतमतिसरो ॥ परमातमअविछेद सु०॥सुमति०॥२॥

अर्थ ॥ तेपूर्वोक्त एकआत्मअरपणथी ओसरवुंयोग्यकह्यो अनेबीजेआत्मभेदें आ

घातज्ञानदृष्टीयें विचारीजोयुंतो तमारादर्शनमां नयोनुं वादके० कथन एवोछे जेए कवस्तुने एकनयेंयापियें तोअन्यनयें उछापिजायछे माटेनयवादनीपण दुर्गमताछे ए टलेगम्यनपडे वलीतमारा आगमके० सिद्धांतोनो वादके०कथन तेथीतोसहज तमा रोदर्शनपामिशकियें पणतमारा सिद्धांतोनाकथननुं गुरुगमकोइनथी एटले जेगुरुथ की सिद्धांतोनी गम्यथाय समजपडे एवोगुरुकोइनथी अथवा गुरुपारतंत्रेकरीसम ज्युंहोय एवोपरंपरागमि कोइगुरुआकालमां देखातोनथी माटे मतमतांतरोनाभेदथी हेतुविवादोथी तेमजनयवादोथी तथा आगमवादथी तमारादर्शननी प्राप्तिनथी एज सबलोके० बलवान मनमां विषवादके० उद्वेगछेअसमाधिछे ॥ ३ ॥

घातिडुंगरआडाअतिघणा ॥ तुजदरिशणजगनाथ ॥ धीठा

ईकरिमारगसंचरूं ॥ सेंगूकोइनसाथ ॥ अभि० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ माटेहेजगनायके० त्रिजगतनास्वामि तारोदर्शन पामवाने अंतरायनाकर नार घातकारक एवापूर्वोक्त जेकारणकह्या तद्रूपपर्वतोपम एवा अत्यंत घणामांघणा पूर्वेकह्या तेथी हुजीवणारहिगयाछे माटेकेटलाककहुं तो पणहुं धीठाइकरि एटले त मारोदर्शनपामवानी घातनाकरनाराछे तेनेनहीगणता हठगतुंयोगें जैनदर्शननामार्ग मां संचरुंके० प्रवृत्तनकरुं पण शुद्धस्या द्वादमार्गनो प्रवृत्तावबवालो तेने सैंगूकहि यें तेवोकोइज्ञातापुरुष रस्तोदेखाडनारसाथेंनथी जेनासहायथीमार्गें प्रवृतियें ॥ ४ ॥

दरशणदरशणरटतोजोफरूं ॥ तोरणरोझसमान ॥जेहनेपी

पासाहोअमृतपाननी ॥ किमभाजेविषपान ॥ अभि० ॥५॥

अर्थ ॥ हेअभिनंदन परमेश्वर तारादर्शननी पूर्वोकतकारणे अप्राप्तिजाणीने मा अदर्शनीयोथो दर्शनदर्शन अहोउपगारियो शुद्धआत्मिक स्वरूपानुंयायी परमपद प्रापक एवोदर्शनजेममारेहायेंचडे तेरीतबतावो एमरटतोके० केहेतोथको जोके० कोइनीने फिरुंके० परिभ्रमणकरुं एटलेजैनीओमहीत सर्वमतोनावाचकधर्मिओथी वारंवारपूछतोनटकुं तोहेप्रभुतारोदर्शन एरीतेंतोहायेचडेनही पणवलटो जैनदर्शननी सोधकरतादेखीने सर्वदर्शनीएमकहेजे ल्यातोमनुष्यकारें जंगलनारोजशरखो मूर्खरो खछे माटेएनेंसर्वदर्शनोथी जैननीसोधकरतेवतें कोइमहावंचकी नयनापडयी एवीवातमंनआविचारे के जेथकी जैनदर्शननी प्राप्तितोदूररहीपणजोकोइनयरूपनी बाध पेटमांकाल्लिपाना फालियानरीआपे तेथीव्रष्टअक्षतो अन्यमत प्रवर्त्तनयाव रीने जैनमतनी हेलनाकरवा लागीजाउं माटेजेनीचाहना तेतोमलेनही पणजेदुंन

वांछुं तेजेहेररूपमारीश्रद्धामां प्रवेशकरीजाय तोएअन्यमतिओनी छायाथीतखुं केमके जेनेअमृतपीवानी पीपासाहोय तेनेजेरआपेछते अमृतनी तृषाकेमजांजे ॥ ५ ॥

तरसनआवेहोमरणजीवनतणो ॥ सीजेजोदरिशणकाज॥ दरि
शणदूर्लभसुलभकृपाथकी॥आनंदघनमहाराज॥अभि० ॥६॥

अर्थ ॥ माटेहेपरमेश्वर एजैनदर्शन रूपकार्य जोकोइरीतेंसिद्धथाय तोमरणजीवननो तरसके० त्रासएटलेभयनआवे तेप्राणी जन्मजरामरणादिकना दुःखरहितथयो मोक्षपामें परंतुतारोदर्शन दुखेःपामवामांआवे पणतमारीकृपाथी स्वरूपज्ञानथाय अने जेस्वरूपग्यान तेजैनदर्शनमां अभेदपणेछे माटेतमारीकृपाथकी सुलभके० सुखेंपामियें तोहे आनंदघनशब्दें ज्ञानानंदना सघनपणासहित एटलेज्ञाननुं अत्यंतपणेंभराव तेनामहाराज तेआनंदघनमहाराज तमारीकृपाथी शुद्धस्वरूपात्मजैनदर्शन पामियें ॥ ६ ॥ इतिअभिनंदनजिनस्तवनसमाप्तः ॥

॥ अथश्रीसुमतिजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥रागवसंततथाकेदारो॥

सुमतिचरणकजआतम अरपणा ॥दरपणजिमअविकार ॥
सुग्यानी ॥ मतितरपणबहुसम्मतजाणियें ॥ परिसरपणसु
विचार ॥ सुग्यानी ॥ सुमति० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ सुमतिनाथ परमेश्वरना पदपंकजमां माराआत्मानो अरपणके० स्थापन जेनिभ्रमपणे परमात्मानुं स्वरूपचिंतवन तेआत्मअरपणकहियें तेपरमेश्वर उपाधिजनितजे विकारतेथीरहित जेमआरीसामां जेवीअवस्थाहोय तेवीभासे तेथीभिन्नपणेभासे तेनीपरेंनिर्विकारीछे यथातथ्य कांतिवंतछे भलाकेवलग्यानीछे माटेहेसुमतिवंतप्राणी तेजे बहुके० घणामततेमने सम्मतचालतां तो आत्मअरपणानुं स्वरूपते मतितरपणथयीजाय एटलेबुद्धिनी तृप्तिथयीजाय तेटलासुद्धिजाणियें समजीजहियें पछे परिके० समस्तपणे जेअन्यमतिओमां आत्मानोअरपण तेथी सरपणके० ओसरवुं कपरांगोप्रवर्त्तवुं तेज सुविचारके० भलोयोग्यविचारछे ॥ १ ॥

त्रिविधशकलतनुंधरगतआतमा ॥बहिरातमधुरिभेद॥सुण॥ बी
जोअंतरआतमतिसरो ॥ परमातमअविछेद सुण॥सुमति०॥२॥

अर्थ ॥ तेपूर्वोक्त एकआत्मअरपणथी ओसरवुंयोग्यकह्यो अनेबीजेआत्मभेदें आ

त्मअरपण योग्यकह्युंने तेथीआत्मनाभेदकहेछे समस्त शरीरधारिओना शरीरनेवि
षेरह्योजे आत्माते त्रिविधके० त्रणप्रकारेंछे तेमांपहेलोवहिरात्मा बीजोअंतरात्मा त्री
जोअविछेदपरमात्मा इहांकोइपूछेजे सिद्धअनंताछे माटेअनंताभेद केमनकह्या तेने
उत्तर जेअनंतासिद्धनोरूपएकछे माटेअविछेद अभेदकह्यो इहांपेहेलोबीजो त्रीजो
आत्माकह्यो एलेखेतो जघन्य मध्यम उत्कृष्टआत्मात्रणप्रकारनाथया परंतुसत्तानि
श्रयीकोइपूछे तोतेना भेदअनंताथाय ॥ २ ॥

आतमबुद्धेंकायादिकेंग्रह्यो॥वहिरातम अघरूप ॥सुग्यानी॥ काया
दिकनोहोसाखीधररह्यो॥अंतर आतमरूप॥सुग्यानी॥सुमति०॥३॥

अर्थ ॥ तेपूर्वोक्त त्रणेआत्मानोस्वरूपकहेछे वहिरात्माते कुत्सितबुद्धियेंकरीने का
यादिकशरीरादिकेंग्रह्यो एटलेअहंबुद्धियें शरीरादिकथीबंधाणो एकायानेसुखेहुंसुखी
एकायानेदुखेहुंदुखी आदिशब्दें मायाममता मिथ्यात्वादिकेंग्रह्यो तेपरिणतियें परण
म्यो इत्यादिकलक्षणे लक्षितजेआत्मा तेनेवहिरात्माकहियें तेआत्माने अघके० पा
परूपअपापरूपनजाणवो अने जे कायाके० शरीर आदिशब्दें अंगोपांगादिक भूमिध
नादिकनो साखीनोभाववाळो एटलेअंतरात्मावंत दसमेंद्वारआत्मास्थापे अनेभ्रांति
पामि ए गर्जारनेरिव्यानिर्जीवने तेनोस्वासरुधिरादिकें साखनोदातार तथा कायादि
कनो निरममत्वीआत्मस्वरूपनोज्ञाता तेनेअंतरआत्मानो रूपएटलेलक्षणजाणवुं॥३॥

ज्ञानानंदेहोपूरणपावनो॥ वरजितसकलउपाधि सुग्यानी॥अतिंद्रि
यगुणगणमणिआगरू॥इमपरमातमसाध॥सुग्यानी॥सुमति०॥४॥

अर्थ ॥ स्वरूपज्ञानथी प्रगटथोजेआनंद तेहयेंकरीने संपूर्ण पावनोके० पवित्र
वलीकर्मजनित एवीसमस्त उपाधिओथीरहित केमके उपाधिरहितविना ज्ञानादिगु
ण महितनथाय माटेउपाधिवर्जितकह्यो तथाशब्द रूप रस गंध स्पर्श इत्यादिक इं
द्रीजनितगुणोना अनावर्यो प्रगटथोजे अनिंद्रियगुण ज्ञानदर्शनादिकना अनंता
समूह तद्रूपमहामणिओनो आगर जेमांथी मणिनासमूह पामियेंतेस्थानक एरीतें
परमात्मापणाने हेसुमतिनुं निःकर तागविना एपरमात्मानुं लक्षणसिद्धनजथाय॥४॥

बहिरातमतजअंतरआतमा ॥रूपथईथिरभाव॥सु०॥ परमा
तमनुंहोआतमभाववुं॥ आतमअरपणदाव॥सु०॥सुम०५॥

अर्थ ॥ इहांकोइपूछेजे आनंदघने प्रथमथी सुमतिपरमेश्वरने अरपी आत्म

अरपणाएवुंकह्युं पछिआत्माना त्रणलक्षणकेहेवालागा तेसुं तेनेउत्तरजे आत्माना एत्रणलक्षणकह्याविना आत्मअरपणानो स्वरूपजणायनही माटे बहिरात्मपणुं मूकीने अंतरात्मानुंजेस्वरूप तेमांथिरभावेंथयी एकाग्रस्वभावेंथयीने परमात्मानुंस्वरूप पोतानाआत्मामां भाववुं चिंतववुं एआत्मअरपणानुं दावके० उपायछे॥ ५ ॥

आतमअरपणवस्तुविचारतां॥भरमटलेमतिदोष॥सु०॥पर
मपदारथसंपतिसंपजे॥ आनंदघनरसपोष ॥सु०॥सु०॥६॥

अर्थ ॥ माटेआत्मअरपणानो वस्तुविचारतां एटलेतत्वविचारणा करतां जेपरस्वरूपने भ्रमथीमानीरह्योहतो तद्रूप मतिके० बुद्धिनोदूषणमटीजाय तेभ्रमंतामटी जताज केवलज्ञान केवलदर्शनथी पामिजेमुक्ति तेथीउपनोजे आनंदनो घनके०भराव तेणेकरीउपनोजेअनिर्वचनीयरस तेरसनीपुष्टताछेजेनेविषेएवो परमपदार्थजे उत्कृष्ट मोक्षरूप संपतिके०सपदाते संपजेके०प्राप्तथाय॥६॥इतिश्रीसुमतिजिनस्तवनसंपूर्ण॥

॥ अथश्रीपद्मप्रभजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥रागमारुतथासिंधुउचांदलीयासंदेसोकेहेजेमाराकंतनेरेएदेशी॥

पद्मप्रभजिनतुजमुजआंतरूंरे॥ किमभाजेभगवंत ॥ करम
विपाकेंकारणजोइनेरे ॥ कोइकहेमतिमंत॥ पद्म० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अहोश्रीपद्मप्रभपरमेश्वर सिद्धांतवचनपक्षें तमारीसाथेंमारे अंतरकांइनथी तोतमारेमारेअंतरशानो पणअन्वय व्यतिरेकलक्षणें तमारेमारेअंतरघणुपड्युं माटे हेभगवंतके० ज्ञानवंत तेअंतरशीरीतेंभांजसे ते तमेग्यानेकरीनेकहो हेपरमेश्वर तमारामाराअंतरनो ग्यानावर्णादिक कर्म्मना विपाकके० परणमवुं तेनाकारण मिथ्यात्वाविरति कषाययोगना बंधनेजोयीने कोइकमहाबुद्धिमंतग्यानी मतिमंतपुरुष तेणे तुजथीअंतरपड्युं तेकह्युं केजेछतेतेछतुंतेअन्वय अनेजेअछते तेअछतुंतेव्यतिरेक एटलेकर्मबंधकारणनेअभावें अंतरनोपणअभाव थाय ॥ १ ॥

पयइठिइअणुभागप्रदेशथीरे॥मूलउत्तरबहुभेद ॥ घातीअ
घातीहोबंधूदयउदिरणारे ॥ सत्ताकरमविछेद ॥ पद्म०॥२॥

अर्थ ॥ हवेअंतरपडवाना कारणमतिमंत पुरुषकहेछे १ प्रकृतिबंध २ स्थितिबंध ३ अनुभागतेरसबंध ४ प्रदेशतेदलनुंसंचय एचारप्रकारेंबांधे तेकर्म्मतेनीमूलप्रकृति आठछे अनेउत्तरप्रकृति एकसोअठावनछे तेमांवलीएकभेद आत्मगुणोना घातकर

नाराचकर्म तथावीजोभेद आत्मगुणना अघातिआचारकर्म्म वलीत्रीजाभेद बंध ऊदय ऊदिरणा सत्ता इत्यादिक एकर्मना विछेदके० विछेदभेदजाणवा वलीआदि शब्दथी ध्रुवबंधी अध्रुवबंधी ध्रुवोदयी अध्रुवोदयी ध्रुवसत्ता अध्रुवसत्ता तेमज भव विपाकि क्षेत्रविपाकी जीवविपाकी पुद्गलविपाकी तेमजसर्वघाति देशघाति परावर्त्त मान पुण्यप्रकृति पापप्रकृति इत्यादिकसर्व कर्म्मनाविछेदछे ॥ २ ॥

कनकोपलवत्पयडिपुरसतणीरे ॥ जोडीअनादिस्वभाव ॥ अन्यसंजोगीजिहांलगेंआतमारे ॥ संसारीकहेवाय ॥ पद्म० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एरीतें कर्म्मनी पयडिके० प्रकृति तेपुरुसशब्दें जीवनीसाथें अनादिकाल नी जोडीके० मिलापछे एटलेसंयोगसंबंधछे जेमखाणमां सुवर्ण तथापाखाणने अना दि संयोगसंबंध स्वभावेंजछे तेमप्रकृतिपुरुषनीजोडीछे तेअनादिनीस्वभावेंजछे माटे जिहांलगें आत्मा पुद्गलादिकअन्यसंयोगीछे तिहांलगें एआत्मासंसारीकेवायछे ॥ ३ ॥

कारणजोगेंहोबंधेबंधनेरे ॥ कारणमुगतिमूकाय ॥ आश्रवसं वरनामअनुक्रमेंरे ॥ हेयऊपादेयसुणाय ॥ पद्म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ आत्मामिथ्यात्वाविरति कषाययोगादिक कारणनेयोगें कर्मप्रकृतिरूप बंध नेबांधे तेमजकर्म्मबंधथी मुकयवानाकारण सम्यक्त विरति अकषायी सुभमनोयोगा दिकथी छूटे एमअनुक्रमें कर्म्मबंधना कारणनेमिलापेंआश्रव अनेकर्म्मछूटवाना का रणनेमिलापेंसंवर यथा आसमंतात्श्रवति कर्म्मजलंप्रतिआश्रव माटेआश्रवते हेय के० छांडवायोग्य अनेसंवृणते आगायते आश्रवद्वारंप्रतिरितिसंवर तेमाटेसंवरते ऊ पादेयके० आदरवायोग्य एरीतें सिद्धांतोनेंविषे सुणायके० संभलायछे ॥ ४ ॥

पूंजनकरणेंहो अंतरतुझपड्योरे ॥ गुणकरणेंकरीभंग ॥ ग्रंथ उकतेंकरीपंडितजनकह्योरे ॥ अंतरभंगसुअंग ॥ पद्म० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेथीहेजिनजने आनंदघनप्रतेंकह्यो के सिद्धांतोनीउक्तें त्रणकारणकह्या तेमांजे कारणेंकरी आत्मानेकर्म्मसंघातेजोडवुं मिलावबुं तेने पूंजनकरणकहियें ते पूंजनकरणेंकरीने हेआनंदघनतारे परमेश्वरसाथें अंतरके० भिन्नभावपणुं पडिगयुं छे ते ज्ञानकरणे आत्मस्वरूपजाणीने गुणपणेंआचरणा एटले कार्यकारणभावतुं अ भेदारोपणछे तेथी ज्ञानदर्शनतेआत्मा अनेआत्माते ज्ञानदर्शन एवाअभिन्नभावेंकरी ने हेआनंदघन तारेअनंतगुणपर्यें अंतरभंगजवुं छूटवुंछे तेवारेंफरि तेपंडितोने आ

नंदयनेपुळ्धुंजे एकथनतमे तमारीवुद्धियेंकह्योछे तेवारेंपंडितोयें प्रत्युत्तरकह्युं जे हेआ नंदघन जैननाग्रंथजेसिद्धांतो तेनान्यायथी अथवा कर्क्कके० तेसिद्धांतोना वचनथीक ह्येंछैयें पण स्वेछायेंकेतानथी माटेहेआनंदघन तमारेपरमेश्वरनेआंतरोनांगवानो रहस्यायें स्वरूपें एकथयवानो एहिज सुअंगके० नलोकपायछे ॥ ५ ॥

तुझमुझअंतर अंतरभाजसेरे ॥ वाजसेमंगलतूर ॥ जीवसरो वरअतिशयवाधसेरे ॥ आनंदघनरसपूर ॥ पद्म० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेथीहेपद्मप्रभु जेवारें हुंगुणकरणेप्रवर्त्तिस तेवारेंतारेमारे ध्याताध्येयरू पजे अंतरछे तेभांजसे एटलेभेदअनाविपणुंयासे तेथीस्वरूपप्राप्तिना हर्षोत्कृपनूं घो तरूपअनाहिद छनीरूपमांगलिकना वांजीत्रवाजसे एरीतेआत्मा परमात्मस्वरूप पा मेंयकेज आनंदघनशब्दें केवलज्ञान केवलदर्शनथी अनंताज्ञेयनो घटनविघटनना अ वलोकनथी ऊपजशेजेअल्हादरूपरस तेनापूरभरावथी अत्यंतसुष्क एवोजीवरूपजे सरोवर तेअनंतेज्ञानेकरी अत्यंतवृद्धिपामशे ॥ ६ ॥ इतिपद्मप्रभजिनस्तवनसमाप्तं ॥

॥ अथश्रीसुपार्श्वजिनस्तवनप्रारंभः ॥

॥ रागसारंगमल्हारललनानीदेशी ॥

श्रीसुपासजिनवंदियें ॥ सुखसंपतिनेंहेतु॥ललना ॥ शांत सुधारसजलनिधि॥भवसागरमांसेतू॥ललना॥ श्रीसु०॥१॥

अर्थ ॥ हवेसुमतिवंतछतो आनंदघन कुमतिसहचारी प्राणीओप्रतें आत्मसाध नतुंउपाय कथनपूर्वक श्रीसुपार्श्वपरमेश्वरनी स्तवनाकरतोकहेछे जेहेभव्यो श्रीसुपार्श्व परमेश्वरने द्वादशावर्त्तवादणायेंवांदियें तेमोक्षरूपसुख स्वभावप्राप्तिरूपसंपतिनाहेतुयें एवंदनछे ललनाइतिवाक्यालंकारे परंतुते सुपार्श्वजिनकेवाछे आत्मस्वरूपानुभवें राग द्वेषादिकनेअभावें प्रगटथोजे भवमुंशांतरस तेनासमुद्रछेवलीभवजेसंसारसमुद्रनिवा तीजीवोने सेतूके० पाजसमानछे ॥ १ ॥

सातमहाभयटालतो॥ सत्तमजिनवरदेव ॥ ललना॥ साव धानमनसाकरी॥ धारोजिनपदसेव॥ ल०॥ श्रीसु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वलीसुपार्श्वनाथकेवाछे वज्रोपम एवामोटा इहलोकपरलोकादि सातभ य अथवा काम क्रोध मद हर्ष राग द्वेष मिथ्यात्व एसातभयनाटाळणहारछे एवोगण नायेंसातमो श्रीसुपार्श्वते जिनके० सामान्यकेवलीमां वरप्रधानअथमामी देवध्रुति

नो धारकछे तेथी एनेसेवो एनेसेव्याथीसर्वनुं सेवनएमांअंतर्भूतछे एमअनेकनामो नोअर्थ तेनोविचाररहस्यचिंतवन एटलेएकेकनामनो व्युतपत्तिसहित अर्थनुंविवेच नकरवुं तेनेअनुनवगम्यकहियें एरीतेंजेनामोनो विचार हेतुसहितचिंतवन तेनी रीतजे जाणे तेप्राणीने श्रीसुपार्श्वपरमेश्वर आनंदघनअवतारकरे एटलेपरमानंदपणे अवतरणकरे ॥८॥ इतिश्रीसुपार्श्वजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीचंद्रप्रभजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागकेदारोतथागोडीकुमरीरोवेआक्रंदकरेमुनेकोइमूकावेएदेशी ॥

देखणदेरेसखीमुनेदेखणदे ॥ चंद्रप्रभमुखचंद स० ॥ उपश
मरसनोकंद ॥ स० ॥गतकलिमलदुखदंद ॥ सखी० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ शुद्धचेतनलक्षधर्मधर्मित एवीशुद्धचेतना परमेश्वरना मुखप्रमुख आंगोपां गमां व्यापीरहिछे तेपरमेश्वरनामुखादिक देखवा आपेनहि हवेअनादिकालनो कर्म उपाधियेंउपाधित एवोआनंदघननोआत्मा सुमतिवंतछतो परमेश्वरना मुखवुंदर्शन करवा वांछतो शुद्धचेतनानेकहेछे के हेशखीआवमांचंद्रप्रभप्रभुनुं मुखरूपचंद्रमा ते मुझनेदेखवाआप केमके एप्रभुनोमुखतुंतोअर्जनेसजूएछे अने हुंतोआगलकहित तेते स्थानकें मुखदीठुंनथी मांटेवीनतिकरूंछुं हवेतेचंद्रप्रभस्वामीनो मुखरूपचंद्रमाकेवुंछे तेकहेछे रागद्वेषरहितपणाथी उपशमरसथीउपनुंजेप्रशमरस तेनुं कंदके० उगतोन वोकिशलयछे वलीजेनेचारनिकायना सुरके० देवता तथा मनुष्य इंद्रसर्वतेवीरह्याछे तेसेवनारनाकलिमलजेपाप तथादुःखोनादंदजे समुदायते गतके० नासिगयाछे मा टेहेशखी मनेपणजोवाआप जेथीमारापणकलीमलदुःखदंदजतारहे ॥ १ ॥

सुक्ष्मनिगोदनदेखिओ ॥स०॥ बादरअतिहिविशेस॥स०
पुढवीआउनलेखिओ ॥ स० ॥ तेउवाउनलेस ॥स० ॥२॥

अर्थ ॥ वलीहेशखी अव्यवहारराली सुक्ष्मनिगोदमां एचंद्रप्रभुनोमुखनदीठो दर्श नथयोनही केमके सुक्ष्मनिगोदें रूपनुंअसंनव रूपनाअसंनवें चक्षुनोअसंनव तेथी देखवानुंसंनव क्यांथीहोय माटेहेशखीमुझनेजोवादे वलीहेशखी बादरनिगोदमांतो अत्यंतविशेषपणे दीठोनही केमके सूक्ष्मनिगोदमांनदीठो तोपणसिद्धनाजीवोथीनजी कछे एटलेसिद्धक्षेत्रमांपण सूक्ष्मनिगोदछे पणबादरनोढूकडोरेवासनथी तेमाटेबाद रमां अत्यंतविशेषपणेनदीठुं वलीपृथ्वीकाय अपकायमांपण नलख्यो एटले चक्षु दर्शननाअनावें जाणवामांनआव्यो तथा एकेंद्रीनिश्चेअज्ञानीछे माटेजाणवामांनज

आव्यो वलीतेउकाय तथावाउकायमांपण लेसमात्रनदीगो केमके मनुष्यनवेंप्रत्तुं दर्शनकरी मरणपामिने जोआवेतोअपर्यासाअवस्थायें पूर्वनयचूंतेसपामे पणमनुष्य एवेनिकायमां आवेजनही माटेनदीठुं ॥ २ ॥

वनसपतिअतिघणदिहा ॥ स० ॥ दीठोनहीदीदार ॥ स० ॥
बितिचउरिंदीजललिहा ॥ स० ॥ गतिसन्नीपणधार ॥ स० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वलीहेशखी मारोजीव वनस्पतिकायमांपण अत्यंतघणादिवश एटलेव णोकालरह्यो तिहांपणअनंतोकालत्युथी जोवानीविरहपड्यो तेथीप्रभुनो दीदार के० मुखकमलनदीठुं एरीतेंएकेंद्रीमांचक्षुनोअभावमाटे नदीठुंफरीहेशखीतुंएमकहि स के एतोतेंसर्वएकेंद्रीनाज स्थानकवताव्या पणएकेंद्रीमांयीछूटीने बेंद्री तेंद्री नेचक्षु नथी पणचौरेंद्रीनतोचक्षुछे तेपण चक्षुकेवीछे केजललिहाके० पाणीनीलीकजेम निष्फल तेमतेआंखपण दर्शनकार्यनीअसिद्धता माटेनिष्फलछे जेमपाणीमां लीक पामियें पणथायनही तेमआंखछतेदर्शननथाय तेथीचक्षुपामि पणनिर्थक माटेमुज नेजोवादे वली संज्ञीपणानी पणके० पांचेगतिमांपणनदेख्यो एमहेतुछचेतनाशखी तुं धारके० अवधार ॥ ३ ॥

सुरतिरिनिरयनिवासमां ॥ स० ॥ मनुजअनारजसाथ ॥ स० ॥
अपजत्ताप्रतिभासमां ॥ स० ॥ चतुरनचढीओहाथ ॥ स० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीविपयाशक्तछते देवतानीगतिमां तथा विवेकनाविकलपणामाटे ती र्यचनीगतिमांपणनदीठो वली नरकगतिनानिवासमांपण नित्यदुःखमांमग्नछते संज्ञा रखुंपणनथयुं तोदेखवुंकिहांथीथाय तेमज जिहांधर्माधर्मनुंज्ञातापणुनथी एवाअनार्य मनुष्यना साथके० संगते एटलेअनार्यमनुष्यमांथपनेथके तेमज अपर्यासामनुष्यनी प्रतिभा एटलेप्रतिबिंबतेजलक तेपणधर्मायमें विवेकविकलपणामाटे अपर्यासानेस हसनातेछे जातेंतेमनुष्यछे इत्यादिकपूर्वोक्त स्थलमात्रमां चतुरके० महानिपुण एवो परमेश्वर मारेहाथेंनआव्यो एटलेदर्शननी योगवाइनमिलि पणहमणादर्शननी योग वाइमलीछे माटेतुंकेमजोवादेतिनथी तोहेशखीहमणातुंमनेजोवाद्याप ॥ ४ ॥

एमअनेकथलजाणियें ॥ स० ॥ दरिशणविणुजिणदेव ॥ स० ॥
आगमथीमतजाणियें ॥ स० ॥ कीजेनिरमलसेव ॥ स० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एरीतेंपूर्वेकह्या तेमज कामि क्रोधी लोभी मोहि रागी अश्रद्धा अन्यम

ति चोराशीलक्षजीवायोनीफरसते इत्यादिकबीजापण अनेकस्थलजाणियें तेस्थलो नेविषे सामान्यकेवलीमां राजासरिखा एवाजिनदेवना दर्शनदीगविना तेसर्वस्थल निर्थकगया माटेहेसखीमनेदेखवाआप हवेसुमतिवंतआनंदघन शुद्धचेतनानेकहेहे के गयाजवतेतोरह्याआपण हमणामनुष्यनवमां शीरीतेंसेवाकरुं तिवारेशुद्धचेतना प्रत्युतरकहेहे हेआनंदघन आगमसिद्धांतोना कथनथी पूजानो मतके० कथनजाणियें एटलेसिद्धांतोमां हियाए सुहाए निस्सेसाए मुक्तिप्रापकसेवाजाणीने अनय अद्वेष अखेदपणे निर्मलनावांकित पूजाकरियें ॥ ५ ॥

निरमलसाधुन्नगतिलंही ॥ स०॥योगअवंचकहोय ॥स०॥
किरियाअवंचकतिमसही ॥स०॥फलअवंचकजोय॥स०॥६॥

अर्थ ॥ तेमजनिर्मल शुद्धमुक्तिमारगसाधक साधुओनी नक्तिनावांकित वात्सल्यपणुं लहिके० पामि एवीजोकारणमल्युं तेनासद्भावें ज्ञानादिक आत्मगुणनेग्गेनहीं एवा मनवचनकायाना त्रणेयोगनीप्रवृत्ति अवंचकथाय तेवारेंक्रियाकरवानुं सर्वप्रवर्त्तनतेपण अवंचकके० अवगाहरूपथाय तेवारेंमनोयोग अवंचकपणेप्रवर्त्ते तेथी सहिके० निश्चेथी आत्मस्वरूप अवच्छेदफलपणअवंचक जोयके० हेसखीतुंदेख ॥ ६ ॥

प्रेरकअवसरजिनवरू ॥ स०॥मोहनीयक्षयजाय स०॥॥
कामितपूरणसुरतरू ॥ स० ॥ आनंघनप्रनुपाय ॥ स०॥७॥

अर्थ॥जेअवशरेंअवंचकफल स्वरूपप्राप्तिथाय तेटाणे प्रेरकके०प्रेरणानुंकारकपोतानास्वरूपथी अन्यनास्वरूपनुं ओलखावनार तेचंद्रप्रनपरमेश्वर प्रावर्त्तकछे अनेआत्मा प्रवर्त्तकछे एमहेसखी स्वरूपतदाकारपणे आत्माप्रवर्त्यो तेवारें अचिंतनीयआत्मशक्तियें मोहनीयकर्म्मनोक्षयथाय तेथी केवलज्ञान केवलदर्शननुंजेपरमानंद तेनुंघनके० नराव तेजछेस्वरूपजेनुं एवोजेचंद्रप्रनप्रनु तेनाचरणकेवाछे कामितके० निजस्वरूपानिलाषीप्राणीउनो मनोवांछितपूरवाने शाक्षात् सुरतरूके० कल्पवृक्षछे॥७॥

॥ अथश्रीसुबुद्धिजिनस्तवनप्रारंनः ॥

॥ रागकेदारोएमधन्नोधणनेपरचावेएदेशी ॥

सुबुधिजिणेसरपायनमिने ॥ शुनकरणीएमकीजेंरे ॥ अति
घणाउलटअंगधरीने ॥ प्रहउठीपूजीजेंरे ॥ सुबु० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेआनंदघन सुबुधिजिननो पूजननाजेदपूर्वक स्तवनकरतो नव्यप्राणीओ

ने यथातथ्यपूजनतुं फलउपदेशेछे के अहोजव्योतमे प्रथमतोसुबुधिपरमेश्वरना च रणकमलनेनमिने एमके० आगलजेदेखाडीस तेरीतें सुनकरणीकरियें स्वरूपानुजा यीकर्त्तव्य आचरियें अथवा आत्मानेदेवतानीगतितसंबंधीसुखदायककरणी तेसुनकर णीआचरियें तेसुनकरणीकहेछे जेमसंसारीजीवोने विवाहप्रमुख ते अतिहर्षनुंस्था नकछे अथवा अपुत्रियानेघरेंपुत्रोत्पतिथाय तेथीअत्यंतघणोउत्सवथाय एवीरीतेंअ त्यंतउल्लास अंगमांधारणकरीने रोमांचितदेहकरी जन्ममांतेदीवशने धन्यमानतां अहोजव्योतमे एवेहर्षोत्कर्षसहित प्रजातनेविषे उठीनेबीजोसंसारसंबंधिकोइपणका र्यकर्याविना सुबुधिपरमेश्वरनापदकमलनेनमिने पछेपूजनरूपशुनकरणिकरो ॥१॥

द्रव्यजावसुचिजावधरीने॥ हरखेंदेहरेजइयेंरे ॥ दहतिग
पणअहिगमसाचवतां ॥ एकमनाधुरिथइयेंरे ॥ सु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एटले जेजेवखतेंपूजाकरवी तेते वखतें शरीरधोयी तथाधोतिप्रमुखधोयी धोयीसुकावीसुकावीने पेरवातेथीजमात्र सुचिके०पवित्रताकरवी तेतोकर्त्तायेंमानीनही पणजावनेधारवे द्रव्यतथाजावएवेनीसुचिताकहिछे एवोउतसांसाडात्रणक्रोडरोमवल्ला सितथका निस्सहिप्रमुखदसत्रिक तथा पांचअनिगमन जेरीतेंप्रवचनसारोद्धार तथा चैत्यवंदनजाप्यप्रमुखग्रंथोमांकह्याछे तेसर्वरीतसांचवतांथकां हर्षजरहियें जिनमंदिरे जइयें तिहांजइने धुरिके० प्रथमतो एकमात्रपूजाकरवानेविषेज मननीएकाग्रता त दाकारवृत्तिराखवी पणअन्यस्थानकोथीसर्वथाप्रकारें मननीनिवृत्तिकरवी एमतन्मयी पूजामयीजथइयें एरीतेंसुनकरणीकरिये ॥ २ ॥

कुसुमअक्षतवरवाससुगंधो धुपदीपमनसाखीरे॥अंगपूजा
पणजेदसुणीएम॥ गुरुमुखआगमजाखीरे ॥ सु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेपूजानाचारजेदछे १अंगपूजा २ अग्रपूजा३जावपूजा४प्रतिपत्तिपूजा एचारजेदोमां प्रथमअंगपूजाकहिते १ कुसुमतेफुलचंबेलीप्रमुख अक्षततेअखंडित तंदूल ३ वरके० प्रधान चंदनकपूरकस्तुरिकादिकसुगंधीद्रव्येंयथोजेवास ४ चंदनश्वे त अगर वालउड कपूरकाचरी कस्तुरी जीमसेनीबरास सेलारस एअष्टगंधधूपजाण वो ५ घृतमांजीसुतरनीवतिनोदीप एसर्वएकाग्रतायें मननीसाखें सार्थकछे तेविना निर्थकजाणवो एअंगपूजाते पूर्वोक्त पणके० पांचजेदें तेजेरीतेंआगममांजापी तेरीतें गुरुमुखेथी सांजलीकर्णगोचरकरी ॥ ३ ॥

एहनुंफलदोयभेदसुणीजें ॥ अनंतरनेपरंपररे ॥ आणापा
लणचित्तप्रसन्नी ॥ मुगतिसुगतिसुरमंदिररे ॥ सु० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेपूर्वोक्तजें अंगपूजानीविधिकही तेनोफलकहेछे एनुंकार्यसिद्धरूपफल एकअनंतर बीजोपरंपरारूप एवेभेदें सिद्धांतोमांथी सांभल्युंछे तेरीतेंकहुंछुं जेपूजा मांतदाकारवृत्तियें स्वामिसेवकसंबधेप्रवर्त्तें तेपरमेश्वरनीआज्ञानजलोपे चित्तप्रसन्नितें मननीहर्षवृत्तियें आज्ञापालनरूपफलनीप्राप्तिथाय तेपूजानुं अनंतरके० आंतरेरहि तफलजाणवुं केमकेजेने प्रभुआज्ञानीप्राप्तिथयी तेनेजैनदर्शननुं सर्वस्वहाथेंचढ्युं तथाएरीतेंआज्ञासहित पूजनकरनारने परंपरफलतो मुक्तिसिद्धप्राप्ति तथा सुगति के० सोभनिकमनुष्यपणानीगति अथवा सुरमंदिरतेदेवभुवनपामे तेमांपणनावाधि रूपणोमुक्तिजकहि तेनावाधिकपणुंपण तथाविधछे परंतुभवस्थितिनुंपरिपाककारण नमले तोपण मनुष्यअथवा देवतानीउत्तमगतिपामे ॥ ४ ॥

फूलअक्षतवरधूपपइवो ॥ गंधनैवेद्यफलजलभरीरे ॥ अंग
अग्रपूजामलिअडविध ॥ भावेंभविकसुभगतिवरीरे ॥ सु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेअग्रपूजानामें बीजुंपूजानोभेदकहेछे तेमांपांचभेदतोतेअंगपूजानाज छे फरिथ्रणथीजामळाव्या परंतुआगल सतरभेदादिक अन्यभेदकेशे तेसर्वअग्रपूजा नाभेदमळवाथीथशे हालअग्रपूजाआठभेदेंछेतेनानामकहेछे १ फूल २ अक्षत ३प्र धानधुप ४ पइवोके० प्रकृष्टदीप ५ सुगंधवासक्षेप ६ नैवेद्य ७ फल ८ गंगाप्रमुख नाजल एरीतें अंगपूजानापांचतेमज अग्रपूजानात्रणमलिने अडविधके० आठभेद थयपा तेअंगअग्रपूजाजे भव्यजीव भावसहितकरे तेप्राणीसुभगतिशब्दें पंचमगतिने वरे ॥ माटेपूजानेमोक्षपदनीप्राप्तिकरनारीछे ॥ ५ ॥

सतरभेदएकवीसप्रकारें ॥ अठोत्तरसतभेदेंरे ॥ भावपूजा
बहुविधिनिरधारी ॥ दोहगदुरगतिछेदेंरे ॥ सु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेअंगअग्रपूजानाभेदकिम्सत्तरभेदमांमिलवेछे १ न्हवण २ विलेपन३ वस्त्रयुग ४ गंधारोहण ५ पुष्पारोहण ६ मालारोहण ७ पंचवर्णपुष्पारोहण ८ चुए हं ९ पताका १० आभरण ११ पुष्पघर १२ पुष्पपगर १३ अष्टमंगल १४ धू प १५ गीत १६ नृत्य १७ वाजीत्र एसतरभेद तथावळीएकवीसप्रकारें तेमजवळी अठोत्तरसतके० एकसोआठभेदें तथाएकहजारआठभेदें एसर्वेअंगअग्रपूजानाभेद तेनउदाहरणसुगमछे हवेत्रीजोपूजानोभेद भावपूजाछे तेकहेछे भावशब्दें परमे

श्वरनास्वरूपनेज्ञानादिक बहुविधिके० घणाप्रकारें निरधारीके० तेतेलक्षणेअवधारी ने चिंतववुं एत्रीजीपूजाछे तेनुंफल उर्लग्यजेस्वरूपनीअप्राप्तिरूप एवीकर्म्मसंबंधनीचा रेडुगेति तेनो ठेदके० नासकरे नेपंचमगतिनीप्राप्तिकरे ॥ ६ ॥

तुरियभेदपडिवत्तीपूजा ॥ उपशमखीणसयोगीरे ॥ चउहा
पूजाइमउत्तरज्ञयणे ॥ नापीकेवलनोगीरे ॥ सु० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेपूजानो तुरियके० चोथोभेदजे प्रतिपतिपूजातेनुंस्वरूपलिखेछे प्रति पतिके० पडिवजवुं अंगिकारकरवुं एटलेपोतानास्वरूपने अविछनपणेजेआदरवुं तेप्रतिपतिपूजा ते इग्यारमांउपशम तथा बारमांक्षिणमोह अने तेरमां सयोगीगुण ठाणेपामे एरीतेचारप्रकारनीपूजा तेवक्तव्यतायें उत्तराध्ययनसूत्रना सम्यक्तपराक्रम नामा अध्ययने जेकेवलज्ञानना नोगीपुरषो तेणेनाषीके० उपदेशीछे तोअहोनव्यो कोइमतममत्वमांग्रस्याछतां परनवनावीकनेअवगणी उत्सूत्रनाषणकरता परमेश्व रनीफूलधुपादिक पूजामांआरंनवतावेछेतेजो केवलज्ञानीपूजामां आरंन जाणतातो पोतेजसिद्धांतोमां पूजानेनिषेधकरता परंतुइहांतोलानजाणीउपदेशीछे ॥ ७ ॥

एमपूजाबहुनेदसुणीने ॥ सुखदायकसुनकरणीरे ॥ ना
विकजीवकरसेतेलसे ॥ आनंदघनपदधरणीरे ॥ सु० ॥८॥

अर्थ ॥ माटेहेनव्यो एरीतेंद्रव्यनावपूजानावणानेद ते सुखशब्देंमुक्तिनासुखदेवा नेअर्थें पूजातेसुनकरणी एटलेआत्मानेस्वस्वरूपकरणीनाकर्त्तव्य सांनलीने श्रोत गोचरें मनमांअवधारणकरीने द्रव्यपूजा नावपूजा जेनाविकजीवकरशे आदरशे ते प्राणी आनंदशब्दें अनिर्वाच्य अतिसयानंदनो घनके० अत्यंतनरावरूपपद तेमुक्ति पदनी धरणीनामस्थानते लेसेके० पामसे ॥ ८ ॥ इतिसुवुधिजिनस्तवनसंपूर्ण॥

॥ अथश्रीशीतलजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागधन्यासरिगोमीमंगलिकमालागुणहविसालाएदेशी ॥

शीतलजिनपतिललितत्रिनंगी ॥ विविधनंगीमनमोहेरे ॥
करूणाकोमलतातीक्ष्णता ॥ उदाशीनतासोहेरे॥शी०॥१॥

अर्थ ॥ हेशीतलजिन सामान्यकेवलीनास्वामि तमारास्वरूपमां रमणथयीरहि वि रोधानासप्रत्यक्ष तेतमारेविषे अविरोधपणेप्रवृत्ति माटे ललितके० मनोहरकहीए वी त्रिनंगीके० त्रणछेप्रकारजेना तेएकत्रिनंगीनेविषे फरिमूलनंगीनानामोनाअर्थेवि

जेवें नगांतरनीरचना विविधके० नानाप्रकारनीछे तेनव्यजीवोने मनोहरचमत्कारक पछे परंतुमनमांजयानकपणेउर्धपनथी तेत्रिजंगीनीचंगरचनाकहेछे १ करूणातेम ननी कोमलतादयानापरिणामतेशीतलपरमेश्वरना स्वनावें अहिंसकनावेंज परिण म्याछे तेनेकरुणाकहियें इहां करुणानोकोमलताअर्थ योजनामांजकर्युं तेनुंहेतुजे नाष्यनिर्युक्तिमां पोतानापदनोअर्थ पोतेंजयोजनामांकरिजाय माटेदोपनथी वलीती क्ष्णता तेतीक्ष्णवृत्ति एटलेक्रूरताउर्ध्वपणुं एवीजोजांगोअनेउदाशीनवृत्ति एत्रीजोजां गो एटले नव्यजीवनेकालपरिपाककारणमिलें सहजेंसिद्धथाय माटेदयाचिंतवेसुं बी जुंकर्म्मपणसहजखपीजाशेमाटेकोमलता तथातीक्ष्णतामां मध्यस्थनावेंप्रवृतिजाण वी तेउदासीनतता एवीसीतलपरमेश्वरनीमनोहरत्रिजंगीकही ॥ १ ॥

सर्वजंतुहितकरणीकरुणा ॥ कर्मविदारणतीक्ष्णरे ॥ हाना
दानरहितपरणामि ॥ उदाशीनताविक्षणरे ॥ शी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेएजत्रिजंगीनुंसंनवबतावेछे समस्त सुक्ष्मबादर त्रसथावरसंसारीजीव मात्रनेहितकारीचिंतवणा तेकरुणानामेंपेलोजांगो बीजोज्ञानावरणादिकर्म्मनुंविदारवुं अनावकरवुं एतीक्ष्णताछे इहांनिर्दयीपणुंछे एटलेबापडाजडोनेकुणहणे एमकर्म्मोनो नासकरवामांदयाआवतिनथी तेबीजुंजंगो हवेत्रीजाउदासीनजंगनू उजयविलक्षणी माटेअसंनवजछे तेनुंसंनवकहेछे हानके० गेडवायोग्य आदानके० ग्रहणकरवायो ग्य तेपीरहितपरिणामिछे एटले गेडवायोग्यवस्तुनेगेडवानीइछानथी तथाग्रहणक रवायोग्यवस्तुनेग्रहवानीइछानथी एरीतेंइछानोनिरोधकर्युंछे तेपणजाणीने रोकील थी पणसहजनावेंज इष्टअनिष्टवस्तुउपरथीहानादानपणुंउठीगयुं तेउदाशीनतावृति णुं विक्षणके० विचक्षण तेपदपूरोकरवामाटेविक्षणपदमूक्युं एउदाशीनतानुंलक्षण कहेछे जेअनादिनिजस्वरूपनुंग्रहणतेआदान अनेपरपरिणतिनुंत्याग तेहान एबेथी रहितपरिणामिपणुंछे केमके एमारोअनादिस्वनावछे तेहुंपाम्योमाटेतेनोशोहर्षजे मग्यानदर्शनतेआत्मा अनेआत्मातेग्यानदर्शन तेमजनिर्भयपणेत्रणेकालें आत्मामां कर्म्मनोअसंनवजछे तेनोपणशोकहर्षनथी एरीतेंउदाशीनतानुंसंनवकर्युं ॥ २ ॥

परदुखछेदनइछाकरुणा ॥ तीक्ष्णपरदुखरीझेरे ॥ उदाशी
नताउनयविलक्षण ॥ एकठामेंकेमसीझेरे ॥ शी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेएत्रिजंगीनेविषें अर्थेजेवेंत्रिजंगीदेखाडेछे संसारीजीवोने अनादिकालनुं परपुद्गलादिकनेसंबंधें पर्याजेदुःख तेनेछेदवानीइछातेकरुणा एपेलोजंगो तथाजेम

महावीरस्वामिने संगमानाउपसर्गोथी परजेपुजलोतेनेडुःखपामतादेखीने रीझेके० ह
वेपामें एटलेज्ञानीपुरुषएमविचारेजे अनादिकालना ए मनेडुखआपताहता आजए
डुःखपामेछे एवीविचारणालेरीझकहियें एतीक्ष्णतावीजोनांगो अनेजे जनयविलक्ष
णके० एवनेलक्षणोधीरहितजूडजछे तेकदाशीनताश्रीजोनांगो तेआवीरीतें जेमपुजल
संगीजीवोने डुःखीजोयीने विचारेजे एनीनवस्थितिपरिपाकविना मारीकरुणाथीलुंथा
य तथाएपुजलादिकजडवस्तुने वीजानाकरेलाउपशर्गादिकना डुःखदेखीनेडुराजीथयो
परंतुमारोस्वरूप निर्श्रेयीएकानंदोपेतलछे माटेएलढरोकीशकेनही तेकदाशीनता एत्र
णेलक्षणकह्या ते एकपरमेश्वररूप ठामके० स्थानकमां शीरीतेसिद्धथाय केमकेएना
लक्षणभिन्नभिन्नछे तेथीएकस्थानकमांकेमपामियें तेनोआगलीगाथामांजवावआपेछे

अजयदानतेमलक्षयकरुणा ॥ तीक्ष्णतागुणनावेरे ॥ प्रेरण
विणुकृतकदाशीनता ॥ इमविरोधमतिनावेरे ॥ शी० ॥४ ॥

अर्थ ॥ हवेतेत्रिजंगीनु शीतलपरमेश्वरमां अविरोधिपणे अवतरणकरीदेखाडेछे
कोइनेजयनउपजाववुं एवोअजयदान सर्वजीवने परमेश्वरआपेछे तेनेजकरुणाक
हियें तेरागद्वेषरूप मलनाक्षयथीछे अथवा मलक्षयनुंअर्थ अलक्षयकरियें तोएजक
रुणानथी हवेइहांसुमतिपूछेछेके तीक्ष्णता तथाकरुणानेतो परस्परविरोधिजावछे मा
टेतीक्ष्णता केमसंजवे तेनेकहेछे जेएपरमेश्वरमां पोतानागुणनो स्वजाव एवोज
छे जे कर्मोंऊपरअतितीक्ष्णताऊपजे एरीतें मतिके० बुद्धिविरोधआवतीनथी अथ
वा मतितेहेसुमति एमविरोधिपणुंनथीआवतुं एवीजोजंगो हवेत्रीजाजंगानुस्वरूपवता
वेछे प्रेरणकखाविना कदाशीनताछे एटलेजिहां इष्टयोगें अनिष्टसंयोगें कदाशीनता
थाय तेडुःखनीप्रेरणाथीथयीकेवाय पणपरमेश्वरनेविषे जेकदाशीनताछे तेप्रेरणावि
नाछे केमके आत्मधर्मथी वीतरागपरिणतिपरिणमि परमात्मवृतियें स्वजावप्राप्तिथ
यी तेनोशोहर्ष तेथीप्रेरणाविना कदाशीनताछे माटे मतिके० हेसुमति शीतलपरमे
श्वरमां पूर्वोक्तविधें त्रिजंगीनी परस्परविरोधता आवतिनथी ॥ ४ ॥

शक्तिव्यक्तित्रिजुवनप्रजुता ॥ निग्रंथतासंयोगेंरे ॥ योगी
जोगीवक्तामौनी ॥ अनुपयोगिऊपयोगेंरे ॥ शी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीत्रिजांगानेप्रयोगें त्रीजोजांगोथाय एवीपांचत्रिजंगीकहेछे १ शक्ति २ व्य
क्ति वलीएवेनेसंयोगें त्रीजुंनशक्ति नव्यक्ति वली १ त्रिजुवनप्रजुता २ निर्ग्रंथता एवे
नेसंयोगें त्रीजुं नत्रिजुवनप्रजुता ननिर्ग्रंथता एटले स्वगुणपर्यायनेग्रहवेसामर्थ्यपणुं

तेशक्ति तेजशक्तिथी स्वस्वनावनुं प्रत्यक्षकरवुंतेव्यक्ति अनेस्वगुणग्रहणकरतां शक्तिफो रववानुंस्योकार्य एतोआत्मानागुणहता तेजआत्मामांप्रगट्या माटेनशक्ति अनेआ त्मापोतानास्वनावमांरम्योतेमांसुंप्रत्यक्षकरवुं तेनव्यक्ति एपेहेलीत्रिनंगी वली त्रणजग तनापूज्यमाटेत्रिनुवनप्रनुता बाह्याभ्यंतरग्रंथीथीरहितमाटेनिग्रंथता स्वह्यार्येत्रिजगत पूज्यनाअवांछकपणामाटे नत्रिनुवनप्रनुता पाछोउघोमुदपतिनराखे निग्रंथीथयीने फिरेनहीं माटेननिग्रंथता एबीजीत्रिनंगीकही १ योगी २ नोगी ३ नयोगीननोगी मनवचनकायानुंयोगीने पोतानागुणने नोगववामाटेनोगीने सिद्धावस्थाचितवतां न योगीछेयोगरहितछे निजगुणनेनोगवतोछेपरंतुस्वनावेंसिद्ध गुणनोअंतर्नावीपणामाटे ननोगी एत्रीजीत्रिनंगीकहि १ वक्ताछे २ मौनीछे ३ नवक्ता नमौनी द्वादशांगीनो वक्ता आश्रवसंबंधीवचननुंकथननकरेमाटेमौनी अनंतातीर्थंकरें द्वादशांगीनापीतेथी कांइपणहिनाधिकनकहुं तेथीनवक्ता तीर्थप्रवृत्तिनसमयें ते द्वादशांगीवचनवर्गणायेंना पी माटे नमौनी एचोथीत्रिनंगीथयी हवेअनुपयोग उपयोगनेसंयोगें पांचमीत्रिनंगी बतावेछे १ अनुपयोगी २ उपयोगी ३ नअनुपयोगी नउपयोगी उपयोगप्रयुंज्याविना अनंतापदार्थ केवलज्ञानथीप्रत्यक्षछे माटेअनुपयोगी केवलज्ञानोपयोगी केवलदर्शनो पयोगी पणामाटे उपयोगी सिद्धावस्थामां केवलज्ञान केवलदर्शन एवेउपयोगोनोसं नव तेमाटेनअनुपयोगी पणउपयोगप्रयुंजवानो कारणकोइवारें पडतुनथी तेमाटेन उपयोगी एमपणकहुंजाय एपांचमीत्रिनंगीकही ॥ ५ ॥

इत्यादिकबहुनंगत्रिनंगी॥चमतकारचित्तदेतीरि॥ अचरिज
कारीचित्रविचित्रा ॥ आनदघनपदलेतीरि ॥ सी०॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इत्यादिपूर्वेकही तेआदेदेइनेबहुद्विकसंयोगी त्रिनंगीओनानांगाछे जेम १ कामक्रमें २ क्रोधक्रमें ३ नकामक्रमे नक्रोधक्रमे स्वस्वरूपग्रहवानो कामके० पते क्रमके० व्यापिरह्योछे मोहादिकशत्रुहणता क्रोधव्यापिरह्योछे वारेसव... लोनखपावी वारमेंगुणगाणेचढयो तिवारेंनकामीनक्रोधी ... त्यागीने एत्रिनंगीथयी तेमज १ सकामी २ निष्कामि ३ नसकामिननिष्कामी स्वस्व रूपग्रहवाने अनिलापेंसकामी परपरिणतिने अणग्रहवेनिष्कामी कामकरमनेत्यागें नसकामी अने ताराअनंतागुणोमांथी तेंएकगुणहीनग्रहणनकरयो माटेतुंननिष्का मि इत्यादिक अनेक त्रिनंगीओछे असंनवपणाने प्राप्तकरतियकी चित्तनेचम त्कार उपजावनारीछे केमके चित्रके० नानाप्रकारना विचित्राके० अनेकनंगतर

गनी त्रिभंगी तेअसंभवसंभवरूप माटेअचरिजकारीछे जेमकरुणातिहांज तीक्ष्णता वलीतिहांज उदाशीनता एकेमसंभवे माटे आश्चर्यकारीकही एत्रिभंगीओनीफलप्राप्तिते ज्ञानानंदनुं भरावरूपजेमोक्षपदतेने लेतीके० ग्रहणकरतीछे एटलेत्रिभंगीओना भंगतरंगते केवलज्ञान केवलदर्शनात्मकछे अथवाएकेकभंगते आनंदघनपदथी व्यापिने रह्युंछे माटे आनंदघन पदलेतीयकीकही ॥६॥इतिशीतलजिनस्तवनंसंपूर्णं॥

॥ अथश्रीश्रेयांसजिनस्तवनप्रारंभः ॥

॥ रागगोडीअहोमतवालेसाजनाएदेशी ॥

श्रीश्रेयांसजिनअंतरजामी ॥ आतमरामीनामीरे ॥ अध्या
तममतपूरणपामी ॥ सहजमुगतिगतिगामीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीश्रेयांसजिनने साक्षीभूतकरीनेकहेछे हेसुमति केवलज्ञानदर्शनसंबंधी लक्ष्मीसहित श्रेयांसपरमेश्वर तेआपणा अंतरके० गुह्यनीसर्ववातना जामीके० जाणनारछे एसर्वनोअंतरजामीमाटेज एनोआत्मारामएवोनामछे जेणे स्वरूपसंबंधी मतिके० बुद्धिते पूरणके० अखंडित जेपरमेश्वरेंपामि तेमाटे अध्यात्ममतिनेपूरणपामी तेथीसहजनिप्रयासेंमुक्तिगतिनागामीके० जवावालाछे ॥ १ ॥

सयलसंसारीइंद्रियरामी ॥ मुनीगुणआतमरामीरे ॥ मुख्य
पणेजेआतमरामी ॥ तेकेवलनिःकामीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ सर्वसंसारीजीवमात्र तेतोइंद्रियोनासुखजे शब्दरूपरसगंधस्पर्शतेमां तदाकारीपणेप्रवृतिरह्याछे माटेइंद्रीयआरामीछे अनेएजसंसारमां सिद्धांतोकियें जेमुनीराजछे तेआत्मगुणज्ञानादिकमां रमिरह्याछे स्वरूपनेभजीरह्याछे तोमुख्यपणेतेनिश्चेनयजे गुणगुणीनेअभेदें आत्मस्वरूपमांतदाकार तद्रूपपणेप्रवृतिरह्या एवाजेमुनीराजतेनेतो निःकेवल एकआत्मस्वरूपविना अन्यअभिलापमात्रनथीरह्युं एवानिष्कामीछे ॥ २ ॥

निजस्वरूपजेकिरियासाधे ॥ तेहअध्यातमलहियेंरे ॥ जेकिरि
याकरिचउगतिसाधे ॥ तेनअध्यातमकहियेंरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हेसुमतिजेप्राणी पोताना आत्मस्वरूपें रमतां प्रतिक्रमणादिक पापनिवर्त्तनक्रियामात्रनेसाधे तेप्राणी अध्यात्मशब्दें आत्माने अधिअंतर्वर्त्तीरह्युं एवो स्वस्वरूपअविछेदकारूप आत्मस्वरूप ते लहियेंके० पामियें एटलेतेनेतो अध्यात्म कहियें पणजेप्राणी निजस्वरूपाभावें क्रियाकरीचारगतिनेसिद्धकरे एटलेसुनकरणि

यें देवता तथामनुष्यनीगतिनेसिद्धकरे अथवाअसुनक्रियाजे प्राणातिपातादिक तेक्रि याकरीने नरकतीर्यंचादिक गतिनेसिद्धकरे एटलेसाधुपणामांदेवतामनुष्यनीगतिसिद्ध करे अनेतेजसाधुठते वंचकपणानीकरणीकरे अथवाप्राणातिपातादिकें नरकतीर्यंचनो गतिसिद्धकरे तोतेक्रियाने अध्यात्मस्वरूपानुंजायी नकहियें ॥ ३ ॥

नामअध्यातमठवणअध्यातम ॥ द्रव्यअध्यातमछंमोरे॥ भा वअध्यातमनिजगुणसाधे ॥ तोतेहसुंरढमंमोरे॥श्रीश्रे० ॥४॥

अर्थ ॥ हवेअध्यात्मक्रियाना चारप्रकारछे तेकहेछे एकतो जेअध्यात्मशब्दनुंमा त्रअर्थपणनजाणे अनेजेपूछेतेनेकहेजे अमेंअध्यात्मीछैयें तेनामअध्यात्म तथाबीजुं अध्यात्मशब्दनुं अक्षरविन्याशीपणुं तेस्थापनाअध्यात्म त्रीजुं रेचक पूरक कुंभकादि केंकरी बाह्यवृत्तियें एवुंध्यानवतावे जेथकीलोकएमजाणेजे एणेअंतरवृत्तियें आत्मा नुंस्वरूपप्रत्यक्षकर्युंदेखायछे पणपोतेकोरानाकोरा एद्रव्यअध्यात्म एत्रणेअध्यात्मछां मवायोग्यछेतेछांमो अनेजेनिजस्वरूपसहित क्रियानुंप्रवृत्तवुं एवोजेभावअध्यात्म तेआ त्मानागुणज्ञानदर्शनादिकनेसाधे भावअध्यात्मिपणुंसिद्धकरे माटेअहोभव्योजोतम ने निजगुणनीसिद्धताकरवीछे तोभावअध्यात्मथीज रढमंमोके० रटनाकरो ॥ ४ ॥

शब्दअध्यातमअरथसुणीने ॥ निरविकल्पआदरजोरे॥शब्द अध्यातमभजनाजाणी॥ हानग्रहणमतिधरजोरे॥श्रीश्रे०॥५॥

अर्थ ॥ हेभव्यो आत्माने अंतर्वर्त्ति आत्मरूपमां तदाकारीपणेरमवुं एवुंअध्या त्मशब्दनुंअर्थछे तेगुरुमुखथीसांभलीने निश्चेनय आत्मानेविपे स्वरूपनुंनिरविकल्पि पणुंअनेदिपणुंछे ते आदरजो अवधारजो तथा अध्यात्मशब्दमां वली बेभेदछे एट ले एकमां स्वरूपअध्यात्मिपणुंछे अनेबीजामांस्वरुपअध्यात्मिपणुंनथी माटेभजनाछे एटलेजे निःकेवलनाम अर्थविनाएकलो अध्यात्मशब्द तेमांस्वरूपअध्यात्मिपणुंन थी तेथीशब्दअध्यात्ममां स्वरूपनीअसिद्धतामाटे हानके० छांमवानी मतिके० बुद्धी धारजो अने अर्थअध्यात्ममां स्वरूपनीसिद्धतामाटे ग्रहणकरवानी बुद्धिधारजो॥५॥

अध्यातमजेवस्तुविचारी ॥ बीजाजाणलवासीरे ॥ वस्तुग तेंजेवस्तुप्रकाशे ॥ आनदघनमतवासीरे ॥ श्रीश्रे० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटे वस्तुशब्देंआत्मतत्वने तदेंकपणेविचारवावाला लक्षलक्षणनाअनि न्नविचारी तेतोअध्यात्मनेग्रहणकरेछे अनेजेवस्तुविचारीअध्यात्मथीभिन्न हवयाहीप एेशुन्यरुदयछतां अध्यात्ममतममली एकनिश्चेनयवादी तेतोलबाडछे अनेजेमुनी

राज जेवस्तुनामसिद्धांतोनेविषे गतके० प्रासययो जेतत्वशब्दें अध्यात्मतत्व तेने प्रकाशेके० प्रगटकरे एटलेजेरीतेंसिद्धांतोमां अध्यात्मतत्वनाप्युंछे तेमप्रकाशे एवाको एहोय जेआनंदशब्दें अनंतकेवलज्ञानी तेथोनोजेसप्तनयाश्रितमत तेनेजिनमतकहियें तेजमतनेप्रकाशे ॥ ६ ॥ इतिश्रीश्रेयांसजिनस्तवनंसंपूर्ण ॥

॥ अथवासुपुज्यजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागगोडीतथापरजीउतुंगीयागिरिसिखरसोहेएदेशी ॥

वासुपूज्यजिनत्रिभुवनस्वामी॥घननामीपरनामीरे॥निराका
रसाकारसचेतन ॥ करमकरमफलकामीरे ॥ वासु० ॥१ ॥

अर्थ ॥ अहोभव्यो वासुंप्रज्यजिन तेत्रणभुवनना पूंज्यपणामाटेस्वामिछे वलीघननामीके० घणाछेनामजेना एटलेजे परमात्मानानाम तेपरिणामेजपरिणमिरह्याछे हवे एकबहिरात्मा बीजाअंतरआत्मा एरीतें संसारीजीवोनाबेभेदछे तेमां अंतरात्मानुं एकनिराकार तेसामानोपयोग बीजोसाकारतें विशेपोपयोगएवाउपयोगलक्षणेसके० सहितते चेतनकहियें तेकरमकरमफलकामीके० सामान्यविशेषसुभासुभोपयोगें प्रवृत्ततो चेतन कर्मजेज्ञानावरणादिक तेनुं कामीके० अभिलाषी तेमांसुभोपयोगेंप्रवर्ततोचेतन सुभपुण्यप्रकृतिनो कामीके० अभिलाषी असुभोपयोगेंप्रवृत्ततोचेतन असुभपापप्रकृतिनोकामी एम सुभासुभोपयोगेंकीधाजे सुभासुभकर्म तेनासुभासुभफलनो कामीके० अभिलाषी तेचेतनजाणवो १ ॥

निराकारअभेदसंग्राहक ॥ भेदग्राहकसाकारोरे ॥ दर्शन
ज्ञानदुभेदचेतना ॥ वस्तुग्रहणव्यापारोरे ॥ वासु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेंनिराकारनोलक्षण उलखावेछे जेभेदरहितनोसंग्रहीक तेनिराकार दर्शनोपयोगीपणुं अनेजे भेदके० भिन्नभिन्नस्वरूपनुंग्राहक तेसाकारज्ञानोपयोगीपणुं एनिराकारसाकारबेउपयोगनेभेदें चेतनापणबेभेदेंथयी एरीतें सामान्यविशेषबेउपयोगें जडथीआत्मतत्वनेस्वरूपेंग्रहवुं भिन्नके० जूदोकरीलेवुं तेछे व्यापारके० प्रवर्तनजेनुं एचेतनावंतअंतरात्मानोलक्षणकह्युं ॥ २ ॥

कर्तापरिणामिपरिणामो ॥ कर्म्मजेजीवेंकरियेंरे ॥ एकअने
करूपनयवादें ॥ नियतेंनरअनुसरियेंरे ॥ वासु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ कर्म्मनुंकर्त्तापणुंतेपरिणामिके० व्यापीने परिणामोके० परिणमेछे एटलेक

र्म्मेनुं कर्त्तापणुंतेपरिणामेंव्यापिरह्युंन्हे पणजीवमांनथी इहांकोइपुछेजे जीवमांकर्त्तापणुं केमनथी तेनेउत्तरजे करियेंके० जेपरिणामेंप्रवृत्तियें तेकर्म्मेजीवेंकरियें जेममिथ्या त्वपरिणामेंपरिणमतोजीव मिथ्यात्वकर्म्मप्रकृतिनेकरियें पणअविरतप्रतेंनकरियें ते थीकर्त्तापणुंपरिणाममांछे पणजीवमांकर्त्तापणुंनथी जेकरियेंतेकर्म्म तेथीकरवामात्र कर्म्मतोएकजछे परंतुनयवादेंके० नयवचनमार्गे तेनाअनेकरूपछे एटले वस्तुतले एकनयवचनमार्गें ज्ञानावर्णादिकर्म्मेआठछे तेहेनरके० नव्यमनुष्यो नियतेंके० निश्चें संघातें अनुसरियेंके० अवधारणकरियें एटलेकर्त्तापणानापरिणामें जेजीवेंकरियें ते वाकर्म्मनयवादेंआठथाय तेनिश्चेंथीअवधारियें ॥ ३ ॥

दुखसुखरूपकरमफलजाणो॥निश्चयएकआनंदोरे ॥ चेतन
तापरिणामनचूके ॥ चेतनकहेजिनचंदोरे ॥ वासु० ॥ ४ ॥

अर्थ॥तोहेनव्यो दूःखस्वरूप अनेसुखस्वरूप एबेकर्म्मनाफलजाणो तेव्यवहारन यनीअपेक्षायें अनेनिश्चेंनय विचारीने अनादिसिद्धअपेक्षायेंजोइयेंतो त्रणेकालें नि जस्वनावनोजकर्त्ताछे निश्चेंथीएकअद्वितीयआनंदमयीछे अनेचेतनानेविषे चेतनाध र्मतेचेतनतापणुंछे तेचेतनतानोपरिणामके० परिणमनने नचूके एटलेचेतनाचेतनता रूपधर्मनेमूकेनही तेचेतनजाणवी केमके चेतनतातेचेतननोधर्मछे तेधर्मथीधर्मिनी ओलखाणथाय दोहा ॥ धर्मिअपनेधर्मकूं ॥ नतजेतिनूकाल ॥ आत्मज्ञानगुणनातजे जडकिरियाकीचाल ॥ १ ॥ माटेधर्मनेअनावें धर्मिनोअनाव जेमजलावधारणधर्मने अनावें घटधर्मिनोअनाव तेथीचेतनताधर्मवंतने श्रीजिनचंद्रे चेतनकह्यो ॥ ४ ॥

परिणामिचेतनपरिणामो ॥ ज्ञानकरमफलनावीरे ॥ ज्ञान
करमफलचेतनकहियें ॥ लेजोतेहमनावीरे ॥ वासु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एटलेचेतनताधर्मे परिणामिके० व्यापीरह्यो एवोजेचेतन जीव तेनो प रिणामोके० परिणामनसुंछे एटलेधर्मसुंछे तेकहेछेजे ज्ञानशब्दें निजस्वरूपज्ञान एट लेहुंचेतनछुं अनेजेपुजलादिकमां रमिरह्योछुंतेजडछेहुंअविनासी एजडतेविनासी हुंचे तनाधर्मि एसडणपडण विध्वंसणधर्मि तोएआत्मानुं करमके० करवुं तेनुंफल शुद्धा त्मस्वरूप प्राप्तिरूप तेनुंनाविके० चिंतक विचारकरनारो तेथी ज्ञानके० आत्मज्ञाननुं करमके०करवुं प्रयुंजवुं तेनुंफलतेस्वरूपप्राप्तिरूप तेनेचेतनतावंतचेतनकहियें एटलेल क्षणसहितचेतनकहियें केमकेसिद्धांतोमां स्वरूपप्राप्तिथयी तेनेलक्षणसहितचेतनक सुंछे अनेबीजातोकथनमात्रचेतनजाणवा माटेअहोनव्यो तेहके० तेशुद्धात्मरूपने

मनावीजेजो अहोरात्रतेहथीज हेतराखजो स्वरूपमांजप्रवर्त्तजो एटलेस्वरूपचिंतवन विना अन्यचिंतवन कोइमात्रकरसोमां असिद्धछेमाटे ॥ ५ ॥

आतमज्ञानीश्रमणकहावे ॥ बीजातोद्रव्यलिंगीरे ॥ वस्तुग तेजेवस्तुप्रकासे ॥ आनंदघनमतिसंगीरे ॥ वासु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटेजेअंतरआत्मावंतते साधुनेकहियें केमके ते शुद्ध आत्मस्वरूपनाग्या ताछे तोजेनेआत्मस्वरूप प्रत्यक्षथयीरह्युंछे तेथीजते श्रमणके० साधुकेवायछे नाणे णयमुणीहोइइतिवचनात् अनेबीजाजेस्वरूपज्ञानथीरहिततछेतेतो मात्रउंघामुहपतिना धारकद्रव्यलिंगीछे पणभावलिंगीपणुंतो स्वरूपग्यानमांव्यापीरह्युंछे अनेउंघामुहपति मांद्रव्यलिंगीपणुंव्यापिरह्युंछे माटेजे वस्तुगतशब्दें आत्मवस्तुजेवीछे तेरीतेंज आत्मव स्तुतत्वनेप्रकासे प्रगटकरे एटलेआत्माथीबाहिरस्वरूपग्याननथी पणआत्मामांहेज आत्मस्वरूपज्ञानकहे ते आनंदघनमतिसंगीके० चित्आनंदरूपतस्वरूप तेनीमतिजेसुम ति तेनासंगीएटलेसहचारीहोय ॥ ६ ॥ इतिश्रीवासुपुज्यजिनस्तवनसमाप्तः॥

॥ अथश्रीविमलजिनस्तवनप्रारभ्यते ॥

॥ रागमल्हारइमरआंबाआंबलीरे ॥ इमरदाडिमद्राखएदेशी ॥

दुखदोहगदूरेंटल्यारे ॥ सुखसंपदसुंभेट ॥ धींगधणीमाथे कियारे॥ कुणगंजेनरखेट ॥ विमलजिन ॥ दीठालोयणआ ज ॥ मारासिद्धावंछितकाज ॥ विमलजिन ॥ दीठा० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेसुमति विमलपरमेश्वरनादेखवाथी चारगतिसंबंधी दुःख अनेअनादि कालनाअग्यानसंबंधी दौर्भाग्य तेदूरेंटल्या वेगलाथया अनेनेत्रोनाजोवाथी हर्षनिर्भ रगात्रें जेआत्मानेउल्लासथयुंतद्रूपसुखउपनुं तेसुखथीप्रगटी जेसमदमखम विचक्षण रुची एकतमारीस्वरूपानुंजायी अनुभव संबंधीनीप्रीत तेथी निजस्वरूपसंपदाजे रत्न त्रयरूपतेथी भेटके० मिलापथयुं तोहेसुमति जेपरमेश्वरना देखवाथी दुःखःदौर्भा ग्यदूरगया अनेसुखसंपदाथीमिलापथयुं एटलाकार्यतो मात्रएकदेखवाथीजथया तो एवा धींगके० समर्थवानने माथेंधणीकस्याछता एटले बलवानधणीनासेवकने खे टनरके० खेटानाकरनार जेखेटोखायनेमारवावाला एटले रात्रदिवशकांइगणे नही पण तेनाइलाजमांजप्रवृतिरह्याछे एवानरशब्देंपुरुषत्वधर्मवंतजे मोहादिक कषाय तेमांथीमुकनेकोणगंजीशके एटलेकोइगंजवानेसमर्थनथी एवाविमलपरमेश्वरने मेंमा

रानेत्रोथीआजदीग एटलेदर्शनकर्युं माटेआजनोदीवश वेलायडीधन्यछे तेविमलजि ननादेखवारूप कारणथी मारामनोवांछितकार्यसिद्धथया ॥ १ ॥

चरणकमलकमलावसेरे ॥ निरमलथिरपददेख ॥ समल अथिरपदपरिहरीरे ॥ पंकजपामरपेख ॥ वि०॥दी०॥२॥

.. अर्थ ॥ एगाथानुंअर्थेअन्वयकरिलखियेंछैयें हेसुमति केमलाजेलक्ष्मीतेणेपोताने वसवानुं पदके० स्थानकजेकमल तेकादवमांउपजवाथी समलके० मलसहितजाणुं फरिएकबेदीवशमां फूलीनेपांखडीपांखडीखरिजाय तेवारें तेस्थानकमूकीने फरिवी जाकमलनुं स्थानकग्रहणकरवुंपडे तेथीतेकमलरूपस्थानकने फरिअथिरपणेपणजा णुं तेअथिरजाणीने लक्ष्मीजीयें पोतानेवसवानुंकमल तेने पामरपेखके० रांकसमान गणीने परिहरिके० तेकमलमूकीने निरमलके० कर्म्मरूपमेलरहित एवोविमलनाथ परमेश्वरना चरणकमलके० पगरूपकमल तद्रूप थिरपददेखके० स्थिरस्थानकदेखी ने तेमांवासकर्युं एटलेत्रिजगलक्ष्मीते परमेश्वरनाचरणकमलोमांवसेछे मुग्धप्राणील क्ष्मीनुंवास अन्यस्थानकोमांधारिरह्याछे तेजुगछेमाटेविमलजिनना चरणकमलोनेसे वोजेथीसमस्तलक्ष्मीसंपजे केमकेनिर्वाणपदादिक संपदानोवासो एनाचरणमांछे॥२॥

मुझमनतुझपदपंकजेंरे ॥ लीणोगुणमकरंद ॥ रंक गणेमंदिरधरारे ॥ इंदचंदनागिंद ॥वि०॥ दी०॥३॥

अर्थ ॥ हेपरमेश्वर मकरंदनीपरें एटले कमलनापानउपर जेम भ्रमराकमल मांतदाकारथाय तेममारोमनरूपभ्रमरते अनंतज्ञानादिकगुणछेजेमां एवातमारापद पंकजमां लीणोके० तदाकारथयीगयुंछे वसीभूतथयीगयुंछे तेहर्षेकरीनेएवोउन्मतथ योछे के मंदिरके० मेरुपर्वतनीपृथ्वीसुवर्णमयी अथवानंदनवनादिकनी धराके० पृ थ्वीतेने रंकसमानगणेछे दरिद्रीनीगणतिमांगणेछे एटलेतमाराचरणकमलनीभक्ति आगल एशीवस्तुछे एमजमारोमनजाणेछे तेमजदेवतानापतिइंद्रने चंद्रमाने तथाना गिंद्रते नागकुमारवालीइंद्र इत्यादिकसर्वनेरांकतुल्यगणेछेएवोमारोमनमोटुंथयीगयुंछे॰

साहिबसमरथतुंधणीरे ॥ पाम्योपरमउदार ॥ मनवि सरामीवालहोरे ॥ आतमचोआधार॥वि०॥ दी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अहोसमर्थसाहेब हेपरमेश्वर ताराजेवोधणीहुंपाम्यो तोहवेमाराआठेक र्म्मरूपशत्रुतेपरिवारसहित मुझनेगंजीशकसेनहीं तेमजतुंतुष्टमानथाय तोपोतानुंज

पदआपे माटेपरमउदार एवोधणीछुंतो ते हुंपाम्यो फरितुमनेमायेधारतांज मुजनेथिर ताथाविगयी माटेमननोविश्रामि एवोतुंधणीहुंपाम्यो वलीमिथ्यात्वमतेमज्ञिन एवोमा रोआत्मा तेनेस्वरूपभातितुंआधार आश्रयतेतुंछो केमकेजिवारेहुंमाराआत्मानुंरूपपा मित ते त्यारेजआसरेपामिस माटेमारीआत्मानुंतुंआधारछो ॥ ४ ॥

दरिशणदीठेजिनतणोरे ॥ संशयनरहेवेध ॥ दिनकरकर भरपसरंतारे ॥ अंधकारप्रतिखेध ॥ वि० ॥ दी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेथीहेसुमति एवाविमलपरमेश्वरनेमें लोचनेकरीआजदीठा ते परमेश्वरनुं एवोप्रजावछे जेएनुंदर्शनदेखवाथी जेफलथायतेसांजल एनोभावशुद्धतायें दर्शन थतांज जेनीमति एकाग्रेएनादर्शनमांछेरी तेनेस्वस्वरूपनी मननेविषे संसयजेभ्रांतिते नरहे तेमज एप्रज्ञुनोनेमारोस्वरूपएकमाटे तेमांविरोधनथी एवुंमननुंनिरदोषपणुंथयी जाय माटे वेधनरहे तेनोदृष्टांतकहेछे जे दिनकरके० सूर्यतेना करके० किरणनो भ रके० समूह तेजगतमांपसारोकरताछतां अंधकारनुंप्रतिषेधके० निषेधथयीजाय एट लेसूर्योदयें अंधकारजाय तेमजतारोदर्शनथतांज संसय तथावेधमात्ररहेजनही॥५॥

अमीयभरीमूरतिरचीरे ॥ उपमनघटेकोय ॥ शांतसुधार सजीलतीरे ॥ निरपितत्रपतिनहोय ॥ वि० ॥ दी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ परमेश्वरनीमूर्त्ति रचनानी अधिक्यतानोवर्णन एकमुखेंकेटलोकरीशकुं परं तु थोडामांवर्णुंकहिवतावुंछुं जगतमांअमृतसमान प्रसंसाकरवायोग्य बीजोकोइपदार्थ नथी तेनिःकेवलअमृतथीभरीनें जेमकोइरचे तेवीजतारीमूर्त्तिसहजे रचाणीछे एमू र्त्तिनेजगतमां प्रत्यक्षप्रमाणेएटलीउपमांओमांथी कोइअव्याप्ति अतिव्याप्ति दूषणस हित प्रत्यक्षप्रमाणे अथवा उपमानप्रमाणे पणकोइउपमानुंसंभवजनथी इहांजेमूर्त्ति ने अमीयभरीकहि तेतोवचनगोचरकरवामाटेकही पणएमूर्त्ति रागद्वेषनीपरिणतिना क्षयथकी सहजआत्मस्वभावें प्रगटथोजे शांतरूपअमृतरसतेमांज फीलीरहिछे जा णियेंमूर्त्तिउपरशांतरसवरसीरह्युंछे तेथीउपमानोअसंभवछे केमके अमृतकीएकबुंदसें अजरहोतसबअंग तोएमूर्त्तितेसंपूर्णशांतरसस्वरूपथीभरी जन्ममरणरहितमाटे श्री उपमासंभवे तेमाटेनिरखीनिरखीनें मारीचक्षु तथामारेदर्शननीइछा तेमजमाराहृद यनेत्रथीस्मरण एमांथीएकनेपणतृप्तिनहोय एटलेअनक्षतृप्तिनथाय ॥ ५ ॥

एकअरजसेवकतणीरे ॥ अवधारोजिनदेव ॥ कृपा करीमुजदीजीयेरे ॥ आनंदघनपदसेव॥वि० ॥दी०॥७॥

अर्थ ॥ हवेसुमतिवंतआनंदघन विमलपरमेश्वरथी आधीनवृतियें वीनतिकरेछे केहेजिनदेव अहोसामान्यकेवलीओनापुजनीक हुंज्ञानानंदनामा तमारोअनुचरसे वक तेनीएकअरजते अवधारोके० मानोतो माराउपरसंपूर्णरूपानजरकरीने मुजने देवावांछोतो अन्यजेपांचअनुत्तर वासीप्रमुख देवतानासुखनुं हुंअभिलाषीनथी प णनिजस्वरूपथीउपनुंजेआनंदनोजराव तेपदनीकरनारी एवीसेवा दीजीयेंके० आपो अथवाहेजिनदेव बीजातोघणानी वीनतिअवधारोछो परंतुएकअरजमारीपण अवधा रोजेमाराउपरकृपाकरीने आनंदघनपदनीसेवाआपो अथवाहेजिनदेव मुजआनंदघन उपरकृपाकरीनेतमारापदकमलनीसेवाआपो ॥ ७ ॥ इतिविमलजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीअनंतजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागरामगिरिकडखानादेशीनीढाल प्रसिद्धछे ॥

धारतरवारनीसोहेलीदोहेली ॥ चउदमांजिनतणी
चरणसेवा ॥ धारपरनाचतादेखबाजीगरा ॥ सेव
नाधारपररहेनदेवा ॥ धा० ॥ १ ॥ एआंकणीछे

अर्थ ॥ आनंदघन आपंचकमालामां जैनदर्शनीओनी जैनदर्शनथीविरुद्ध आ चरणादेखीने दुःखी तेमजअनंतपरमेश्वरसेवितचारित्रनीदुक्करता दुसमकालेंदेखीने महादुःखीछतो सुमतिनेकहेछे के अत्यंततीक्ष्णछेधाराजेनी एवीतरवारतेनीधारउप र उगाडेपगेंचालवुं तेदोहेलुंछे परंतुविचारीजोतांते सोहेलीछे पण चउदमांपरमेश्व रनी चरणकें० चारित्र तेनुंसेववुंनामप्रवर्त्तना तेदोहेलीछे एटलेतरवारनीधारथी ए चारित्रनीधारकठणछे केमके बाजीनोकरवावालो तेचोगगमांचारेदिशायें चारतरवा रबांधीने तेतरवारोनीधारोविचें गुलाटाखातोखातो निकलीजाय एवाबाजीगरघणा नाचतादीठाछे माटेतरवारनीधाराउपरनाचवुंसुगमछे परंतु चारित्रनाप्रवर्त्तननीजे आसेवनारूपधारा तेउपरें तोमहाशक्तिनाधारक एवादेवतापणनरहिशके केमकेदेव तानाजवमांव्रतउदयनुंजअसंभवछे तोचारित्रप्रवर्त्तनकिहांथीहोय तेथीतरवारनीधा रातेसुगमछे अनेचारित्रनासेवननीधाराविषमजाणवी ॥ १ ॥

एककहेसेवियेंविविधकिरियाकरी ॥ फलअने
कांतलोचनदेखे ॥ फलअनेकांतकिरियाकरीबा
पडा ॥ रडवडेचारगतिमांहेंलेखे ॥ धा० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एककोइकगछनेदीतसमुदायनाधारक कहेजे विविधप्रकारेंतपस्यादिक नी क्रियाके० आचरणआचरीने परमेश्वरनाचारित्रनीसेवनाकरियें केमकेचारित्रनुंमू लक्रियाछे जेमढुंढकादिककरेछे तेनीपरें परंतुतेप्रवचनरहस्यनाअजाणछे केमके न थीजेमांएकांतफल तेनेअनेकांतफलकहियें एटलेअनेकक्रियाओनाअनेकफलछे जेजे क्रियाभिन्नभिन्न तेनुंफलपणभिन्नभिन्नछे उदयपणभिन्नभिन्न भोगपणभिन्नभिन्न जे मशालिनद्रसुखभोगव्याते संगमानेभवेंदाननुंफलते लोचनके० आखेनथीजोतासुं तो अनेकांतफलछेजेनां एवीअनेकक्रियाकरीने परमार्थेंतुल्य तेवापडा निर्थकछतांआंधी नालेंटनीपरें चारेगतिमां रडवडेके० परिभ्रमणकरे तेलेखेके० न्यायेंरडवडे केमके अनेकांतफलें गतिनीसमृधिथाय अनेगतिसमृधीपणेभवभ्रमणएटलेनही तेथीआत्मा नीशीलिद्धीथाय एवीएकांतक्रियाजकरवी तेतो आश्रवमांगणीछे ॥ २ ॥

गछनाभेदबहुनयणनिहालतां ॥ तत्वनीवातक
रतांनलाजे ॥ उदरभरणादिनिजकाजकरताथ
का ॥ मोहनडियाकलिकालराजे ॥ धा० ॥३॥

अर्थ ॥ इहांगछशब्देंसमुदायविशेष अथवा खरतर तपालोकादिगछो तेगछोनीमतो नाभेदग्रहणे प्रतिभेदनुंपणग्रहण तेथीमतमतांतरना बहुके० गणाभेदप्रतिभेद ते नयणनिहालतांके० तात्विकदृष्टीयें रूदयरूपनेत्रेंविचारीजोतां तेनिर्लज्जआत्मतत्वनी वातोकरताछतां लाजतानथीसुं केमकेममत्व अनेतत्वनीवातने महोमांहेविसंवादछे जेमकोटरमांअग्नीछतां वृक्षनेनवपल्लवथवानुंविसंवाद तेममममत्वीनेस्वरूपउलखाणनी वातकरतोदेखीने तत्वज्ञानीतेनेनिर्लज्जजाणे केमके गछभेदीओनेतो जेटलींधर्मकर णीप्रमुखनुंकरवुंतेपोतानापेटभरवानेअर्थें तथाआदिशब्दें क्रोधमानमायालोभ राग द्वेषकलह उन्नतादिककारणे सर्वकार्यनुंकरवुंछे तेमांततपुरुषतो लाखमांएकहसे ते नीनानथीवाकीबीजातोतत्ववेशनाकरनारा जाणवा केमके आकलिकालजेडुसमकाल तेनुंअधुवराज्यते बीजासंसारीओथीपण गछधारिओउपरें विशेषणपणेप्रवृत्तिरह्यो छे माटेमोहनेनडयाकह्या तेनुंरहस्यायीएछे जेसंसारीजीवोमां मोहने कोइगले कोइ गतियें कोइकेडे कोइनेयाप्रमुखेनडयाछे अनेगछभेदीतोमायासुद्धीनडीपांच्याछे॥३॥

वचननिरपेक्षव्यवहारजूठोकह्यो ॥ वचनसापे
क्षव्यवहारसाचो ॥ वचननिरपेक्षव्यवहारसं
सारफल ॥ सांभलीआदरीकांइराचो॥धा०॥४॥

अर्थ ॥ जेमतवादिहोय तेअपेक्षासहितवचनीयायजनही एकांतवादी निरपेक्षीएटले अपेक्षारहितवचनीजथाय तोअपेक्षारहितवचने जोअत्यंतकठणचारित्रमां प्रवर्त्तनहोय तोपणतेव्यवहार जूठोके० आज्ञाथीविरुद्धजाणवो तोदेनव्यो वांगयेंसहित तेसापेक्षकहियें तेसापेक्षवचने जेमनिश्चेसंबंधीवचन व्यवहारनीवांगरा तेमज्ञानक्रियासहित उत्सर्गअपवाद सापेक्षवचने जे व्यवहारके० चारित्रनुंप्रवर्त्तन तेसिद्धांतानुंजायीव्यवहारले तेचारित्रआज्ञाथी अविरुध माटेसाचोकह्यो तोगयीनेवांगजेवचनथी तेनेनिरपेक्षवचनकहियें तेवाएकांतवादिओनुंचारित्रते संसारफलनुंदेवावालोले माटेते एकांतवादीओनावचन स्वरूपाजिलाथीओने सांजलवायोग्य नथी कदाचितूसांजल्यो तो तेवचनआदरवायोग्यनथी अनेजोआदर्योतो तेनाउपरराघवुंनही एमनिरपेक्षिकवचन जैनमतथीविरुद्धजले तेसांजलीआदरीने कांराचोगो एटलेतेमनाथी शगरारवोगो तेनहिजरारवो ॥ दोहा ॥ नापेनिरपेक्षकवचन ॥ क्रियादेखावेकूर ॥ याकोतपसंयमसरव ॥ कर्योकरायोधूर ॥१॥ माटे जेएकांतक्रियापक्षी एकांतदयापक्षी एकांतपूजापक्षी एकांतजक्तिपक्षी एकांतगुरुपक्षी जेमगुरुगुरुजपना औररायगुपना इत्यादिकोनेवचनेजेप्रवर्त्तसे तेचारगतिमांजटकसे ॥ ४ ॥

देवगुरुधर्मनीशुद्धकहोकेमरहे ॥ केमरहेशुद्ध
श्रद्धानआणो ॥ शुद्धश्रद्धानविणसर्वेकिरिया
करी ॥ गरपरलीपणोतेहजाणो ॥ धा०॥५॥

अर्थ ॥ अहोनथीते एकांतवादिओनावचनथी शुद्धदेव शुद्धगुरु शुद्धधर्म एत्रणनीपरिक्षाकेमरहिनके अर्थात्नजरहिशके तोशुद्धदेवगुरुधर्मनोउंजलखाणनेअनावेंसाधारेयगुरुपरश्रद्धाजेप्रतित तेपणकेमरहे केमकेसाचीवस्तुनीउंजलखाणविना सांचीप्रतितनथजे एरीनें आणोके० अवधारणकरो अनेशुद्धप्रतितविना सर्वेक्रियानुंकरवुं तेकेवुंजे जेम नारके० राख अथवाझारतेखाजनीपृथ्वी तेनाउपरलाणप्रमुखवडेलीपंसुंकर्या तेनीरेरेनिर्थकजाणवुं॥ ५ ॥

पापनहीकोइउत्सूत्रजापणजिशो ॥ धर्मनहीकोइ
जगसूत्रसरिखो ॥ सूत्रअनुसारजेजविककिरिया
करे ॥ तेहनोशुद्धचारित्रपरिखो ॥ धा० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ माटेजेनिरपेक्षकवचनने उत्सूत्रनाथीरणांले तोतेउत्सूत्रथीविरुद्धनापणकरवुं तेमरवुंजगतमांबीजोकोइपापनही उत्सूत्रनाथीमहापापीकह्योले एपापरचीर

रने तेमजजगतमां सूत्रमांवचनछोयतेप्रमाणेज जापणकरवुं तेसरिखो वीजोतपसं यमादिकमांपण धर्मकोइनथी माटे सूत्रअनुसारके० सूत्रनीमर्यादायें जेनव्यजीव त पसंयमादिकक्रियाकरे तेचारित्रियानुं शुद्धचारित्र एटलेजेवोचउदमांपरमेश्वरेंचारि त्रसेव्यो तेवोजतेनुंपणचारित्र परिखोके० परिक्षाकरो जाणो ॥ ६ ॥

एहउपदेशनुंसारसंक्षेपथी ॥ जेनराचित्तमेंनित्य
ध्यावे ॥ तेनरादीव्यबहुकालसुखअनुनवी ॥ नि
यतआनंदघनराजपावे ॥ धा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एपूर्वोक्तउपदेशनुं सारके० रहस्यजेसूत्रानुंजायीचारित्रनुंप्रवर्त्तवुं तेसंक्षेप थकीकह्यो तेनेजेनव्यप्राणी पोतानाचित्तमांनिरंतरध्यावे एटलेआजनागछधारियो थीशुद्धधर्मतत्वपुछयायकां हठग्राहीपणुंसीखावे एवांमतवादीओनुंउपदेश नआदर वुं एवीवांछानाधारी सूत्रानुसारेंप्रवर्त्तकमनुष्यते दीव्यके० निरुपमिअथवादेवतासं बंधी अथवादीव्यके० मनोहरमनुष्यसंबंधी घणापल्योपमसागरोपमकालसुधी सातावे दनीना विपाकोदयने अनुनवीके० नोगवीने नियतके० निश्चेसंदेहरहितपणे आनं दशब्दें परमानंद ते अतेंद्रीयआनंदनुंसमूह एटलेमोक्षस्थानकनुंराजपामे ॥ ७ ॥ इतिअनंतजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीधर्मजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागगोडीतारंगरतीयानीदेसीमां ॥

धरमजिनेसरगाउंरंगसुं॥ नंगमपडसोहोप्रीत॥जिनेसर॥ वीजो
मनमंदिरआणुनही॥ एअमकुलवटरीत॥ जिनेसर ॥ धर्म० ॥ १॥

अर्थ ॥ आनंदघन शुद्धचेतनावंतछतो नावोल्लासें हर्षोत्कर्षी परंतुप्रीतनंगनानयें ससोकीयको शुद्धचेतनानेवतलावतोदी नवचने धर्मपरमेश्वरनी स्तवनाकरेछे धर्मपर मेश्वरने निजस्वरूपप्राप्तिरूप रंगके० रागथी वचनगोचरस्तवनायेंस्तवुंछुं पणदृष्टीरागा दिकेंनही पणहेशुद्धचेतना धर्मपरमेश्वरनीस्तवनारूप कार्यप्रारंन्यो तेअविछिन्नधारायें पारपामजो पणकोइविघ्नपडसोमां एधर्मजिनेश्वरविनावीजा रागद्वेषें परिणम्यादेवो ने मारामनरूपमेहेलमां लावुंनही अर्थात्मारामनमां वीजारागादिदोषेसहित देवो नुंध्यानकरुंनही एटलेजेशुनअात्मिलधर्मेधर्मित जेआत्मातेवाआत्मामात्रनाकुलनी वटके० मर्यादाएजछे एजधर्मछे एजलक्षणछे जेवीतरागविना वीजानेनध्यावे॥ १॥

धरमधरमकरतोजगसहुफिरे॥धरमनजाणेहोमर्म॥जि०॥धर
मजिनेसरचरणग्रह्यापछि॥कोइनबांधेहोकर्म॥जि०॥धर्म०॥२॥

अर्थ ॥ हेशुद्धचेतनाए अमारुंविष्णुधर्म अमारुंशिवधर्म अमारुंशन्यासधर्म अमारुंब्रह्मचर्यधर्म अमारुंग्रहस्थाश्रमधर्म यअमारुं तापसधर्म कुलधर्मादिधर्मइत्यादिक धर्मधर्मकरता एजगतमात्रना सर्वप्राणीते निर्थकभ्रमणकरीरह्याछे परंतुतेसर्वप्राणी धर्मशब्दनुंजे मर्मके० रहस्यतेनेजाणतानथी एटलेआत्मस्वभावरूपधर्म जेणेकरीविभाव परिणतिथीछुटवुं अनेस्वभावपरिणतिथी परिणमवुं तद्रूपधर्मनुं रहस्यजाण्याविना धर्मधर्मपोकारेछे तेवाप्राणीधर्मनुं लक्षणजाणतानथी तोहेशुद्धचेतना धर्मपरमेश्वरना चरणकमलोमां धर्मनुंमर्म समाइरह्युंछे केमके जेप्राणीयेंबहिरात्मापणुंमूकी अंतरआत्माभावंतवता धर्मपरमेश्वरना चरणकमलमां पोतानास्वरूपप्रवर्त्तियें मननेथाप्युं तोतेप्राणीआश्रवद्वारें कोइपणनवोकर्म बंधमांनपाडे ॥ २ ॥

प्रवचनअंजनजोसदगुरुकरे ॥ देखेपरमनिधान॥ जि०॥हृद
यनयणनिहालेजगधणी॥महिमामेरुसमान॥जि०॥धर्म०॥३॥

अर्थ ॥ तेधर्मनाथनुंस्वरूप शीरीतेंजणाय तेकहेछे हेसुमति शुद्धउपदेशकगुरु जोस्याद्वादरूपचक्षुनेविषे सिद्धांतरूपअंजनकरे तोतेथीअनादिकाल मिथ्यात्वरूपी हृदयनेप्रवर्तुंरोग दूरजाय तिवारेंपोतानास्वरूपरूप निधानके० धनजेअनादिनुंअजाण्युंगयो तेनेप्रत्यक्षकरे पछेतेहृदयरूपनेत्रेंकरीने त्रिजगतनास्वामिने निहालेके० देखे भावनायें पोतानास्वरूपने प्रगटजाणे जेप्राणीयेंपोताना स्वरूपनेजाण्यो तेजप्राणी हृदयनेत्रेंकरी परमेश्वरनुंस्वरूप जाणीशके तेप्राणीनो महिमाके० प्रभुता तेमेरुसमानमहोटोछे एटलेजगतमां मोटाइनीअवधिहती तेकहीबतावी पणतेवुं महिमानो निरुपमछे उपमाकोइनथी ॥ ३ ॥

दोडतदोडतदोडतदोडीयो॥जेतीमननीरेदोड ॥ जि० ॥ प्रेमप्रती
तविचारोढूंकडी॥ गुरुगमलेजोरेजोड ॥ जि० ॥ ध० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेशुद्धचेतना आनंदघनप्रतेकहेछेके प्रवचनकारणविना परमनिधानदेखवानो बीजामनमतवियोनो कहेवुंजेसिद्धांत तेकारणनथीमुं तिवारेआनंदघन शुद्धचेतनानेकहेछेके हुंतोनिजस्वरूपजाणवामाटे दोडीदोडीने थाक्योमतमात्र देरीहेरीदेख्या तेमांदाइटीनेनदी पण तेथ्योनासंकल्पित वेदांतन्यायादिक सिद्धांतोमां जे

टलीमारामननीदोडहति तिहांसुधीदोड्यो परंतुस्वरूपप्राप्तिनथयी माटे विचारकरियें प्रयूंजनकरियें तो प्रेमनामस्वरूपाभिलाप तेनीप्रतितनिश्चें तेसर्वथीधर्मजिनेश्वरनीप्रीत ढुकडीके० अत्यंतनजीकछे वेगलीनथी एटलेआत्मामांहेजछे परंतुनजीकछतां दूर केमथयीरहीछे एटलेपामियें नही तोनजीककेमजाणियें तेतो गुरुगमके० गुरुयेंवताव्योजेमार्ग तेजोडके० सहचारीकरीलेजो एटलेसूत्रमर्यादाथी गुरुजेमार्गेवतावे तेमार्गें तोनिश्चेंथीनिजस्वरूपनी धर्मजिनेश्वरथीप्रीतढुकडीछे ॥ ४ ॥

एकपखीकेमप्रीतिवरेंपडे ॥ उभयमिल्याहुएसंधि ॥ जि० ॥
हुंरागीहुंमोहेंफंदिओ ॥ तुंनिरागीनिरवंध ॥ जि० ॥ध०॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेधर्मजिनेश्वरनीसाथें एकतोप्रीतनोअभिलापीछे अनेवीजोप्रीतनुं अभिलापीनथी एटलेहुंतोप्रीतनुं अभिलापीछुं अनेप्रभुतोप्रीतना अभिलापीनथी एरीतें तोप्रथमप्रीतथायजनही कदाचित एकपखीप्रीतथयीतो वरेंपडेनही निभेनही एटले विरुद्धस्वभावें प्रीतनथाय नेथायतोनिभेनही तेथीहुंस्वरूरहित अनेप्रभुस्वरूपसहित तेनीशीरीतेंप्रीतवने अनेकदाचितवनीतो वरेंकिमपडे माटे उभयके० वेहुसमानधर्ममल्यां संधिके० मिलापहोय माटेहेजिनेश्वर हुंतुझथी सिंधिमिलापकरवावांछुंछुं परंतु मारामनथी मारापरिणामनो परिणमनविचारीजोउं तोविपअमृतजेटलोफेरछे केमके हुंरागी तुंनिरागी हुंमोहफंदे फंदाणुके० वंधाणुछुं अनेतुंतोवंधनमात्ररहित माटेतारेमारे प्रकृतियेंमिलापनहि तोप्रीतकेमथाय दोहा ॥ प्रकृतिमिलेतेंमनमिले अनमिलतेनमिलात दूधदहिंतेंजमतहे कांजीतेंफटजात तेमहुंतथातुंसत्तायेंतोएकछैयें जेमकांजीतथादही वेखटाशपणेएक परंतुदहीनाखटास तथाकांजीनाखटाशनी प्रकृतिभिन्न तेथीदहीनाखटासेंदूधजमे पणकांजीनाखटासें दूधफाटीजाय तेममारीसरागप्रकृति तारीनिरागप्रकृति तेथीप्रीतरूपदूधजमेनही एटलेहुंतोप्रीतनेजमावुं पणतारोवीतरागपणाथी प्रीतफाटवानुंधर्म तेथीएकपखीप्रीत वरेंपडेजनही ॥ ५ ॥

परमनिधानप्रगटमुखआगलें ॥ जगतउलंघीहोजाय ॥जि० ॥
ज्योतिविनाजुजजगदीसनी ॥ अंधोअंधपुलाय जि०॥ध० ॥६॥

अर्थ ॥ वलीहेशुद्धचेतना जगतनीविपरीत रीतवतावुं तेलोसांभल के पूर्वेनाख्योजे महानिधान तेजपरमनिधान तेछतोहीयामांज गडथोपडयोछे परंतुठीक्योनथी प्रत्यक्षमुखआगलें हृदयकमलमांजछे पणवेगलुंनथी तोपण जगतनाप्राणीमात्र तेनेउलंघीजायछे केमकेजिहांथीपामियें तेस्थानक नथीजजोता अनेकष्टक्रियादिक

जिहांचीनपामियें तेनेजहेरीरह्याछे केमके जगतनास्वामीनी ज्ञानप्रकाशकज्योति
अनेएआत्मानी स्वरूपप्राप्तिनीज्योति एबेनेअनेदपणुंछे पणजुओके विनाके० तेस्व
रूपज्योतिनेअनावें आंधलापूठेंआंधला दोड्याजाय तेमज्ञानस्वरूपदृष्टीनेफूटवे अज्ञा
नतिमिरनेपसरवे अज्ञानेअज्ञानीठेलायछे एटलेकेवावाला पणआंधलाने श्रोतापण
आंधला एमजनिश्चेछे॥ ६ ॥

निरमलगुणमणिरोहणभूधरा ॥ मुनीजनमानसहंश ॥ जि०॥ध
न्यतेनगरीधनवेलाघडी॥ मातापिताकुलवंश॥जि०॥धर्म०॥७॥

अर्थ ॥ जेजगदीश्वरनीज्योतिविनाजगतमां अंधकारप्रवृत्तिरह्युंछे तेजगदीश्वरके
वाने महाउज्वल ज्ञानादिक अनंतगुणनो आरोहणके० स्थापननो उपमानकरते
छते भूधराके० पर्वतोपमछे वलीमुनीराजोनो मानसके० मनतेनेविषे हंसतुल्य उज्व
लनाशछे अथवामुनीराजोनामनज मानशरोवरनेविषे हंसछे एटलेमुनीनामनमां वशी
रह्याछे एवापरमेश्वरें जेनगरीमांजन्मलीधुं तेनगरीसर्वनगरीओमां उत्कृष्टमाटेधन्य त
थाजेवेलाजेघडी तेपणधन्य वलीजेमातानीकुक्षीनेविषे जन्मथयो तेकुक्षीनीधारक
माता तेसर्वस्त्रीयोमांधन्य तथातेमजजेपीताने परमेश्वरजेवा पुत्रकेवाणा तेपीताने
धन्य तथाजेकुलमांपरमेश्वरें जन्मलीधुंतेकुल तथावंशसर्वनेधन्यछे ॥ ७ ॥

मनमधुकरवरकरजोमीकहे ॥ पदकजनिकटनिवास॥जि०॥घन
नामीआनंदघनमांजलो ॥एसेवकअरदाश॥जि०॥धर्म० ॥८॥

अर्थ ॥ तेमाटे वरके० प्रधानएवोमारोमनरूपभ्रमर तेपरमोल्लासवंतछतो हाथ
जोडीनेवीनतिकरेछेके हेप्रभुमारउपरकृपाकरीने तमाराचरणकमलोमां निकटके० न
जीकदुकहोयएदीलीयें अहोघननामी एटलेघणाछेनामजेना एवाधर्मपरमेश्वर हेचिदा
नंदनामभूद पदकजनिकटनिवास संबंधी सेवकनीअरदास आधीनवृत्तियें तेरूपाकरी
नेमांनलो ॥ ८ ॥ इतिश्रीधर्मजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीशांतिजिनस्तवनप्रारंभ ॥

॥ रागमल्हारचतुरचोमासोपडिकमीएदेशी ॥

शांतिजिनएकमुजवीनती ॥ सुणोत्रिभुवनरायरे ॥ शांतिसरुप
केमजाणियें ॥ कहोमनकिमपरखायरे॥शांति०॥१॥एआंकणी॥

अर्थ ॥ हेविश्वानंदन शांतिपरमेश्वरजी शांतिस्वरूप मयक परपदं निर्धेकरवा

कारणे वीनतिरूपप्रश्नकरेछे जेहेत्रणभुवननाराजा ते मारीविनतीरूपाकरीनेसांभलोअ होशांतिपरमेश्वरतुमें शांतरसेंपरिपूरितमाटे तमारोनामशांतिछे परंतुतेशांतरसनुं स्व रूप यथातथ्यपणे शीरीतेंजाणिशकियें तेथीरूपाकरीने मुजनेउपदेशो जेथकी मारा मनने शांतरसनी परखायके० परिक्षायथीजाय तेरीतेंकहो ॥ १ ॥

धन्यतुंआतमजेहने ॥ एहवोप्रश्नअवकाशरे॥ धीरजमन
धरीसांभलो ॥ कहुंशांतिप्रतीभासरे ॥ शांति० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेआनंदघन पोतानामनथी हर्षवंतथकोकहेछे जेहेमाराआत्मा तुंसर्व आत्मामात्रमांउत्कृष्ट माटेतुजनेधन्यछे केमकेमाराआत्माने शांतरसनास्वरूपनुंप्रश्न पुछवानो अवकाशके० अवशर तेजधन्यनुंकारण एमशांतिप्रश्नुनेपुछवाथी जिमप्र श्नुयें पाछोउत्तरदीधो तेरीतेंभव्यजीवोने आनंदघनकहेछे केअहोभव्यो हुंशांतिस्वरू पकहुंछुं तेमेमनमांधीरजधरी एटलेएकाग्रमननेराखी सांभलो जेरीतें शांतिजिनेश्वरें भाष्योतेनी प्रतिभासनामतेजरहस्यार्थंकहुंछुं पणस्वमतकल्पनायें कहेतोनथी॥ २ ॥

भावअविशुद्धसुविशुद्धजे ॥ कह्याजिनवरदेवरे ॥ तेतेमअ
तथ्यसद्दहे ॥ प्रथमएशांतिपदसेवरे ॥ शांति० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ षटद्रव्यनाशुद्धाशुद्धभाव जेरीतेंजिनवरदेवेंकह्याछे तेमांशुद्धभावनेशुद्धप णे तथाअशुद्धनेअशुद्धपणे अवितथके० निभ्रांतपणेशद्दहे ए प्रथमके० पेहेलोशां तिरसनोपदनामस्थानक तेअहोभव्यतुं सेवके० आदर एटलेशुद्धश्रद्धान आव्या विना आगलसंपूर्ण शांतिपदनुंकथनकह्युं तेसंभवेजनही माटेप्रथमशुद्धश्रधानरूप शां तरसनुंस्थानकते हेआत्मातुं सेवके०आदर॥ ३ ॥

आगमधरगुरुसमकेति ॥ किरियासंवरसाररे ॥ संप्रदायी
अवचंकसदा ॥ सुचीअनुभवाधाररे ॥ शांति० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीपरमेश्वरभाषीतसिद्धांतोना धारकगुरु इहांकोइकहेजे नवपूरवथी ओछु भणेतो अभव्यपणभणे तोआगमधारीगुरुनी सीअधिकता तेनेउत्तरजे शुद्धदेवगुरु धर्मनी प्रतितवंत एवासमकेतिगुरुथी शांतस्वरूपपामे तेगुरुकेवाहोय सारके० प्रधा न आश्रवनिरोधीने संवरसंबंधनीक्रिया साधवामां प्रवर्तिरह्याछे वली मुग्धप्राणीओ ने ठगवानी संप्रदायीके० परंपराजेनेनथी एटलेगुरुक्रमागतेंजेमां अन्योनेठगवानो आचरणप्रवर्त्तननथी माटेशुद्धसंप्रदायीछे वली सुचीके० पवित्रआत्मस्वरूपज्ञानका

एक एवोअनुनवसमृतेंनिन्नतात्कालिकस्वरूप ज्ञानरूप अनुनवनाआधारठे जेरात्रदीवश स्वरूपचिंतवनमांज प्रवर्त्तिरह्याठे तेवागुरुविना. शांतिस्वरूपनपामो॥४॥

शुद्धआलंबनआदरे ॥ तजीअवरजंजालरे ॥ तामसीवृ त्तिसविपरिहरी ॥ नजेसात्विकीसालरें ॥ शांति० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीगुरुकेहेवाठे आत्मानुनवेंकरी प्रगट्यो जेआगमानुंजायी शुद्धस्व रूपसंबंधी निर्मलज्ञानथी सिद्धस्वरूपनुं अवलंबके० आधारतेने आदरे एटले स्वरूपमांरहतो सिद्धादिकनुंध्यान अविलंबीरह्याठे ते अवरके० बीजाजेरागादि क्रो धादिमोह्आर्त्तरौद्र इत्यादिक ध्यानसंबंधी विघ्नकारकजंजालोने तजीके०दूरकरीने स्व रूपनुंआलंबन करीरह्याठे तथातामसीके० क्रोधसंबंधनी वृतिआजीविकाते मकार चकारादिककहीने आहारप्रमुखलावबुं तेनेपरिहर्योठे अथवाक्रोधसंबंधी दवग्राही पणे प्राणायामादिकनुं प्रवर्त्तनतजे एवो. शालके०प्रधान ज्ञानादिकगुणथीउपनीजे सात्विकवृत्तितेंथी शत्रुमित्रनीसाथेंसमपरिणामेंवर्त्ते सर्वजीवउपर मार्द्दवबुद्धीधारी॥५

फलविसंवादजेमांनही ॥ शब्दतेअर्थसंबंधिरे ॥ शकल नयवादव्यापिरह्यो ॥ तेशिवसाधनसंधिरे ॥ शांति० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एवागुरुतेवल्सूत्रनाथिनजहोय जेवचननापे तेमां विसंवादके०विरुद्धपणु तोहोयजनही जेवचननोफलविरुद्धनजहोय वली विसं- [illegible] जेवचननुं के० रहस्यार्थेठे तेवेज रहस्यार्थे तेवचनसंबंधितठे मिल्योठे फरीतेवचनमां सातेनयनुं वादके० कथनेकरी तेशब्दनुंअर्थ व्यापीरह्योठे अहोनव्यो एवोशांतरस नखुंजेसजरु तेशिवशाधननाहेतुनी सिंधिमिलापकारकठे ॥ ६ ॥

विधिप्रतिषेधकरीआतमा ॥ पदारथअविरोधरे ॥ ग्रहणवि धिमहाजनेपरिग्रह्यो ॥ इसोआगमेंबोधरे ॥ शांति०॥ ७॥

अर्थ ॥ एवागुरुनेमिलापें स्वरूपानिलापीप्राणी स्वकार्यसाधे तेविधिकहेठे जेयकी आत्मस्वरूपनुं ग्रहणसुखेंथाय एवोजे विधिके० आचरवायोग्यआचरण तेमजआ रमद्रव्यने सुखेग्रहणकरवाने अविरोधिके० विरुधनकरे एवोजे प्रतिपेधविधिके० प र जडादिस्वरूपनुं निषेधविधि एटलेअनाचरणीयविधि तेविधिनेप्रतिखेधेंकरी आत्मा कि पदनाअर्थकार्यनोकारकथाय. तेमाटेग्रहणकरवायोग्य विधिकर्त्तव्यकह्यो तेग्रहण करवायोग्यकार्य तो महाजनशब्दें महामुनीराजें समस्तपणेग्रहणकर्यो. एवोपरम

भरनाषित सिद्धांतनेविषे बोधके० जाणपणोछे अथवा आगमेंके० सिद्धांतोथीबोध जाणजो एटले पूर्वोक्तगुरुनीसंगते स्वरूपप्राप्तिरूपफलथाय ॥ ७ ॥

दुष्ठजनसंगतिपरिहरी ॥ नजेसुगुरुसंतानरे ॥ जोगसाम
र्थ्यचित्तनावजे ॥ धरेमुगतिनिदानरे ॥ शांति० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीशांतरसानिलाषिपुरुषते डुष्टके० क्षुद्रपुरुषजे मतममत्वनाग्राहक ह ठग्राहि तेनाकेवाथीभ्रष्टश्रद्धावानथाय माटेतेनीसंगतनकरे अनेरुडागुणनाधारकजेगु रु तेना संतानीआ एटलेपरंपरागते शीष्यशीष्यादिकोने नजेके०सेवे पछेजोगसामर्थ्य जे मनादिक त्रणयोग्यते स्ववसीनूतछते चित्तनेविषे नावके० आत्मस्वनाव अछेद अनेदादिकने जेप्राणी धरेके०धारीराखेतेप्राणीमुक्ति तेकर्म्मेमुकीजवातुं निदानके० मूलकारणछे केमकेचित्तवृतिनुंरोधन तेजकर्मेमोक्षनुंमूलकारणछे ॥ ८ ॥

मानअपमानचित्तसमगणे ॥ समगणेकनकपाखाणरे ॥
वंदकनिंदकसमगणे ॥ इशोहोयतुंजाणरे ॥ शांति० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ एवानिजात्मस्वनावमांप्रवृत्त्यां तेपुरुषोनाचित्तकेवाहोय तेनेकोइसत्का रसन्मानादिककरे तेमांहर्षउल्हादनधरे कोइअनादरें अस्तकारकरे असन्मानादिकें अपमानकरे तोपणमनमांविषवादनधारे एरीतेंचित्तनी समवृतिहोवाथी नोनदशामं दपडिगयी तेथीतेना सुखआगलकोइसूवर्णमूके तेमजकोइपछरनीछोढी आगलआवी मूकेतोपणतेवेनेतुल्य सरिखामाने पणसुवर्णने अधिकनमाने अनेछोढानेहिननमाने वलीकोइके प्रसंसाकरीवंदनाकरी तेथीमनमांप्रश्नथाय तेमजकोइकें निदाअछताछ ताअवगुणकह्यातोतेनाउपर रोसआणेनही मनमांउत्सुक अनुत्सुक स्वनावनहोय हेनव्य एवोजाणके० प्रवीणतुंहोय ॥ ९ ॥

सर्वजगजंतुनेसमगणे ॥ गणेतृणमणिनावरे ॥ मुक्तिसंसा
रवेहुसमगणे ॥ मुणेनवजलनिधिनावरे ॥ शांति० ॥ १० ॥

अर्थ॥वलीत्रसथावरमात्रसमस्तजगतना जंतुके० जीवोने एकराजा एकरांक एकश त्रु एकमित्र एकस्वजन एकपरजन इत्यादिकने समतुल्यमाने तेमजतृण तथा मणीशब्दें सूर्यकांति चंद्रकांत्यादिकमणीने नावके० तमनावेगणे पणहिनाधिकपणेनगणे वली मुक्ति तथाचारगतिरूप संसारएवेहुने समतुल्यमाने एटलेअप्रमादिज्ञातमां गुणठाणे प्रवर्त्तनेएकयनछे तेथीतिहांमनस्वस्थित वृतियेंछे हिनाधिकथीमनदरीगयुं माटेनं

शांतिपरमेश्वरनी मुजनेभेटके० प्राप्तिथयी तेथी अहोअहो नमोनमोमुजने एमकह्युं परंतुएगाथानुंरहस्यार्थतो आनंदघने श्रीशांतिपरमेश्वरने शांतरसनुंप्रश्नकर्युं तेना हर्षथी एवचनछे ॥ १३ ॥

शांतिसरूपसंक्षेपथी ॥ कह्योनिजपररूपरे ॥ आगममां
हेंविस्तरघणो ॥ कह्योशांतिजिनभूपरे ॥ शांति० ॥१४॥

अर्थ ॥ आनंदघनकहेछे अहोभव्यो एस्तवनमां शांतरसनुंस्वरूपते निजरूपेंएटले पोतानोस्वरूप तथापरभव्यजीवोनोस्वरूपप्राप्तिकारणे यथातथ्यकथने संक्षेपथीसूत्रें करीकह्यो पणअहोभव्यो जोतमेविस्ताररुचीछो तो शांतिजिनराजें शांतरसनुंस्वरूप स्वभावित्तसिद्धांतोनेविषे अत्यंतविस्तारपणे भाष्योछे तिहांथीअवधारणकरजो ॥१४॥

शांतिसरूपएमभावसे॥ धरीशुद्धप्रणिधानरे॥ आनंदघन
पदपामसे ॥ तेलेहेसेबहुमानरे ॥ शांति० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ माटेअहोभव्यो एमपूर्वोक्तरीतें रागद्वेषविषय कषायादिकेंरहित तेशुद्ध निर्मल अने प्रणिधानते मननीनिश्चलतावृत्ति एकाग्रताधारीने जेप्राणीशांतरसनुंस्वरूपभावसे विचारसे तेप्राणी आनंदशब्देंपरमानंदनो समूह तेसंबंधी निर्वाणपदपामसे त्रणजगत्पूज्यपणानो बहुमानपामसे ॥ १५ ॥ इतिश्रीशांतिजिनस्तवनसमाप्तः ॥

॥ अथश्रीकुंथुजिनस्तवनप्रारंभः ॥

॥ रागगुर्जरीतथारामकलीअंबरदेहोमुरारीहमारोएदेशी ॥

कुंथुजिनमनडुंकिमहीनबाजेहो ॥ कुं० ॥ जिमजिमजतन
नकरीनेराखूं ॥ तिमतिमअलगुंभाजेहो ॥ कुं० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेकुंथुपरमेश्वर मारुंमनमहोटेकष्टेंकरी तुजथीवजाववावांछुं जोडवाचाहुं तोपण भावस्तवसंबंधी ध्यानादिकमां कोइप्रकारेंनबाजे नमिले एटलेअन्यस्थानकें मलिरह्युंछे पणतुजथीभाजतुंनथी हेपरमेश्वर जेमजेमहुंमारामनने प्रयत्नकरीवणोजावतोकरी राखवावांछुं एटलेप्राणायामादिकें रेचकपूरककुंभकें इत्यादिकउद्यमेंकरीराखूं एटलेहुंतोएमजाणुंजे एनेएकाग्रराखवानुंउ पायजेध्यानहतो तेजमेंकर्यो माटे एकाग्रेंरेसे परंतु एमन तेमतेमतुजथीवेगलुं नासीजाय पणतारायीबाजेनही ॥१॥

रजनीवासरवसतीउजड ॥ गयणपायालेंजाय ॥ साप
खाएनेमुखडुंथोथुं ॥ एहओखाणोन्यायहो ॥ कुं०॥ २ ॥

अर्थ॥ इहांकोइएमकहेछेजे मननोएवोस्वजावजछे जे कोइस्थानकेंनजाय माटेप रमेश्वरकने पण नथीजातो एटले एनोफिरवानोस्वजाव नथी एवुंबोलनारने श्रानं दघनउत्तरआपेछे केहेनाइतेतोमारोजीवजाएछे एतोजेमरात्रें तेमदीवसें जेमवस्ती मां तेमउजाडमां जेमआकाशमां तेमपातालमांजाय एरीतेंमनफरीरह्योछे पणएनीग तिकोइस्थानकें रोकेते रोकातिनथी तेथीएमननी अप्रतिहतगतिछे फरीभ्रमणशीलीछे एनीचंचलतानी उपमानकरियें तेवोकोइजगतमां चंचलपदार्थनथी इहांकोइकेशेके जेफिरेतेवरेपणखरो माटे शब्दरूप रस गंध स्पर्श एडनोस्वादमनमां मिलतुंहसे ते नो दृष्टांत जेमकोइपुरुषनेसर्पेंखाधो एवुंकोइयेंकह्युं तेनेकोइयेंपूछ्युंजे सापनामुखमां कांइग्रासआव्युं तिवारेतेणेकह्युं सापनामुखमांसुंआवे सापनुंमुखतो थोथुके० खाली जरह्युं मात्रसापेंखाधो एवुंनामथयुं पणसापनामुखमां ग्रासतोएककवलमात्र नथी आव्युं एओखाणो न्यायके० साचुंछे तेमज शब्दरूपादिकनुंस्वादमात्रतो पांचेंइंद्रीलइ गया अनेमननामुखमांतो काइपडयुंनहीतेथी थोथुके० नराणुंनही ॥ २ ॥

मुगतितणाअभिलाषीतपीया ॥ ज्ञाननेध्यानअभ्यासें ॥
वयरीडुंकांइएहवुंचिंते ॥ नाखेअवलेपासेंहो ॥कुं० ॥३॥

अर्थ ॥ माटेएमनते महादुष्टनिर्दयीछे केमकेजेएकमोक्षनाजअभिलाषी तपस्या नाकरनार तेमननेसाधवामाटे ग्यानध्याननेअभ्यासें एटलेआत्मस्वरूपजाणवामाटे ग्याननोअभ्यासकरिरह्याछे तथापोतानुंस्वरूपप्रगटकरवामाटेध्यानते तदाकारवृतियें स्वरूपचिंतवनानुं अभ्यासकरीरह्याछे एवामहामुनीओनेपण एमनरूपमहादुष्टशत्रु तेकोइएवीरीतनुंचिंतें एटलेएवोकोइघाटनुं विचारविचारे जे अवलेके० सहजेंनिप्रया सें एटलेकोइविशेषविचारणारूप उद्यमकर्याविनाज कर्म्मरूप पासके० जालमांना खीआपे जेमप्रश्नचंदराजऋषीनें सातमीनरकना दलियाबंधावीदीधा तेमजएकआंख नाउलालामां केवलज्ञानपणउपजावीदीधुं ॥ माटेजिहांसुधीमनगमनआवे तिहांसु धी कष्टक्रियासर्वेनिःफलजाणवी॥ ३ ॥

आगमआगमधरनेहाथें ॥ नावेकिणविधिआंकुं ॥ किहां
कणेजोहठकरीहटकुं ॥ तोव्यालतणीपरेंवांकुंहो॥कुं० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ इहांकोइकसेजे जिहांसुधी आगमनीप्रवृति जाणीनहोय तिहांसुधीमनडः साध्यछे तेनुंउत्तर जे आगमजो मननी स्थिरतानुंकारणहोय तोआगमनाधरनार आगमहाथमांजछे वलीतेमांमनदमनकरवुं तेनुंज अधिकार वांचीरह्याछे तेटाणेपण

स्थिरताथी हे प्रभुताराचरणकमलोमां किणविधिके० कोइरीतेंनावे एटलेतमारा चरणकमलमां लाववाना जेटला यत्नकरुं तेटलातर्वेप्रयास निःफलकरीआपे केमकेए आंकुंके० वांकुंने शरलनथी वक्रने विना रोक्योतोकदापि स्थिरपणजाय परंतुरोक्योतो रहेजनही एमकोइप्रकारें तमाराचरणोथीनवाजे एवुंजोथीनेहुं किहांकणेके० कोइस्थानकें एमननेहठकरीनेजो हटकुंके० हटकहुं तोजेमसर्पनुंगमन तेठेडकीधाविनाजवक्रछे तोठेडकरवापठिवक्रतायीनुंसुंकेवुं तेमएमननेपण हटक्युंनही तिहांसुधीतोसर्वुं अने जोहटक्यो खीजव्योतोतेवारे सर्पनीवक्रतानीपरेंवांकुंथयीने हेकुंथुपरमेश्वर मारुं मनतुझथीवाजतुंनथी एटलेमारामननी प्रकृतितुझथीमलतिनथी ॥ ४ ॥

जोठगकहुंतोठगतोनदेखुं ॥ साहुकारपणनाही॥सर्वमांहेंने
सहुथीअलगुं ॥ एअचरिजमनमांहीहो ॥ कुं० ॥ ५ ॥

अर्थ॥अहोपरमेश्वरजो एमननेठगाइकरतोदेखूंतोठगकहुं पणएतोपांचेंइद्रीनेप्रेरकछे माटेठगाइनाकारकतोइंद्रीछे पणएनेठगाइकरतांदेख्याविना ठगकेमकहुं तेमजएनी प्रेरकशक्तिनेअनावें इंद्रीठगीशक्तानथी पांचेंइद्रीएनाप्रवर्त्ताव्याविना प्रवर्त्तनकरीशक्तानथी एटलेइंद्रीयोने शब्दरूपादिकमां प्रवर्त्तावववानुं मूलकारणमनछे माटेसाहुकारपणनथी तेथीएमनते नारदजेवुंमहाठग जणायछे केमके सर्वशब्देंपांचेंइद्रीयोमां एनोइंद्रीमलिरह्योछे एकीभूतथयीरह्योछे एनामिलापविना पांचेंइद्रीओथीठगाइथायजनही वलीइंद्रियोशब्दरूपरसादि पोतपोतानाविषयग्रहणकरे तेवखतें एपोतानीपातीवेचीलेतोनथी माटेसहुथीवेगलुंपणछे तेथीहेपरमेश्वर एमारामनमां महोटुंआश्चर्यलागेछे केमकेजे सर्वथीभेलुं तेवेगलुंकेमकेवाय अनेजेसर्वथीवेगलुं तेभेलुंकेमकेवाय एमअन्योन्यविरोधिछे परंतु एनेविषेबहुविरोधते अविरोधपणेभेलारह्याछे एआश्चर्यछे ॥ ५ ॥

जेजेकहुंतेकाननधारे ॥ आपमतेंरहेकालो ॥ सुरनरपंडि
तजनसमजावे ॥ समजेनमाहरोसालोहो ॥ कुं० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीमाहरामननें जेजेहुंहीतशीक्षानुं उपदेशकरुं तेमारोवचनमात्रकानेजनधारे एटलेपोतानी इछायें जेजेसुनासुनतरंगउपजे तेप्रमाणेरहे तेथीएमारोमनतेकालोके० महामेलोछे आर्त्तरौद्रचिंतवनायें उपगतमाटेस्यामछे तोहुंसुंसमजावीशकुं पण सुरके० देवतामहाशक्तिवंत तेपणमननें समजावेछे तेमजप्रबलमनुष्य जेथकी सिंह अष्टापदपक्षीजेवापण भयपामे एवापुरुषोमांपणवली पंडितके० महाकोविदते

शास्त्रवादेंसमजावे तोपणसमजेनही तोएमारी कुमतिस्त्रीनो ज्ञाता माटेसाजोछे अने आत्मा शुद्धोपयोगें प्रवृत्ते तेवारें सुमतिस्त्रीनुंज्ञातापण एहिजछे ॥ ६ ॥

मेंजाण्युएलिंगनपुंसक ॥ सकलमरदनेठेले ॥ बीजीवातें
समरथछेनर ॥ एहनेकोइनजेलेहो ॥ कुं० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीअहोस्वामि मेंशास्त्रद्वारायें एमननेनपुंसकलिंगीछे एमनिश्चेंकर्युं परंतुप्रत्यक्षप्रमाणे विचारीजोयुंतो एमनसमस्तमरदोनें ठेले हटावीनाखे एटलेजोपुरुषधर्मे सहीतहोयपण जो तेनोमनअन्यठेकाणें प्रवृत्तिरह्युंहोय तोठतोपुरुषस्त्रीनेसंयोगें नपुंसकसमानथयीजाय केमकेएमहामरदरूपमनजो पुरुषनेसहायी नेलोनत्थोतो ठतोमरदते नपुंसकप्रायेंथयीजाय तोएमन सर्वमरदोमांअग्रगामीछे माटेतप करवामां कष्टक्रियासाधवामां सिंहनागादिकनेदमनकरवामां समुद्रादिकजलतरणक्रियामां आकाशगमनमां भूतपीशाचादिक वसीकरणक्रियामां मनुष्यसमर्थछे परंतुं हेकुंथुपरमेश्वर एमनने एक नवपरिणतिपरिपाकी मुनिराजविना बीजोकोइपण जेले के० जीत्रीशकेनही एटले एनीगतिनेरोकीशकेनही एकाग्रतायेंराखीशकेंनही माटे मारुंमन कोइरीतेंतमारीसाथें तदाकारथातुंनथी ॥ ७ ॥

मनसाध्युंतेणेंसघलुंसाध्युं ॥ एहवातनहीखोटी ॥ एमकहे
साध्युंतेनवीमानुं ॥ एकहिवातछेमोटीहो ॥ कुं० ॥ ८ ॥

अर्थ॥माटेहेप्रभु चंचलतामिटावीने एकाग्रतायें जेपुरुषेंमनने साध्युंके०वसीभूतकर्युं तेपुरुषें सर्वतपसंयमादिकार्य साध्या एटलेएकसाधे सर्वसाध्युं केमकेसाधननुं अंत मननुंसाधवुंछे तेथीजेप्राणीयें मनवसकर्युं तेणेआत्मठकुराइनुं मूलसिद्धकर्युं एवातके० एकहाणीखोटीनथी निसंदेहसाचीछे पणकोइमाराजेवो महामूर्ख माया वीठतो पोतानामुखथी एमकहेके मेंमारुंमनसाध्युं तेनाकह्यावचनप्रतें मानुंनही प्रमाणनकरुंकेमके मेंमनवशकर्युं एवातमोटीछे घणीलांबीछे पणठोटीनथी ॥ ८ ॥

मनडुंदुराराध्यतेंवसआण्युं ॥ तेआगमथीमतिआणुं ॥ आनं
दघनप्रभुमादरुंआणो ॥ तोसाचुंकरीजाणुंहो ॥ कुं० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ माटेहेप्रभु दुराराध्य जेदुःखेकरीसाधवामांआवे एवुंमनते तुंमेंवशकर्युं तेमनवशकरवानीवात आगमके० सिद्धांतोथी मारीबुद्धीनेविषेआणुं एटलेतमेजेम मनवशकर्युं तेबुद्धीमारेसिद्धांतोथीछे पणप्रत्यक्षनथी तोहेपरमानंदनासमूहएवा प्रभु

के० सामर्थ्यवान कुंथुपरमेश्वर मारोमनतुमथीवाजतुंनथी तेनेएकतमारेविषे थिरतायें एकाग्रतायें प्रवृत्ताविथीतो साचोके० प्रत्यक्षप्रमाणेकरीजाणुं प्रमाणकरुं एटलेशब्दप्र माणेतो एवातप्रमाणजछे परंतुपरमेश्वरेंमनवसआएयुंते प्रत्यक्षप्रमाणे प्रमाणकरुं ॥ ए ॥इतिकुंथुजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीअरजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागपरजतथामारू॥ ऋषननोवंसरयणायरूएदेशी ॥

धरमपरमअरनाथनो ॥ किमजाणुनगवंतरे ॥ स्वपरसम
यसमजावियें ॥ महिमावंतमहंतरे ॥ ध० ॥ १ ॥एआंकणी

अर्थ ॥ एगाथानुं अर्थ अन्वयकरीलखियेंछेयें अहो महंतके० महोटामहिमावंत एटलेचोसवइंद्र असंख्यातादेवता चक्रवर्त्ति वासुदेव राजाशेवसेनापति तथाअन्यपुरु षोनीकोडीतेणेकखुं जयजयशब्द तेनाउच्चारपूर्वक समवसरणनी महोटीमहिमा तक्ष्त् एवाअरनाथपरमेश्वर तमारोकेवलज्ञानसंबंधीजे परमोत्कृष्टधर्म तेहुंकेमजा णुं शीरीतेंओलखुं हेनगवंत स्वसमयते स्वरूपप्राप्तिसमय एटलेजेसिद्धांतप्रमाणेप्रवर्त तां स्वरूपपामियेंते समजावियेंके० मुफनेसमजावो तेम एथीअन्यजे समयप्रमाणे प्रवृततां स्वरूपसिद्धिनपामियें तेपरसमयकहियें तेपणमुफनेसमजावो ॥ १ ॥

शुद्धातमअनुनवसदा ॥ स्वसमयएहविलासरे ॥ परवडी
गहडीजेहपडे ॥ तेपरसमयनिवासरे ॥ ध० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेपरमेश्वरउत्तरकहेले सेश्रानंदघन शुद्धनिर्मल स्वरूपवंत निरुपाधिक एवाआत्मतत्त्वनुं सदाके० निरंतर स्वरूपतावंत स्वरूपतुंप्रत्यक्षकरवुं तेअनुनवकहिये ए टलेजेथकीशुद्धात्मतुं तात्कालिकज्ञानथायते स्वसमयके० मारोस्याद्वादसिद्धांतनो वि लासके० विलसनते उलखाणजाणवी अनेए शुद्धात्मअनुनवथी निन्नथावतुंमात्रक थन तेमारोसमयनही तेजकहेछेजे परके० जेकथनमां शुद्धात्मअनुनवीपणुंनथी ए वुंजे वडेके० वट एटलेतेवाकथननुं जेटलुंविस्तारछे अथवाजेकथनमां शुद्धात्मअनु नवजेटलो विस्तारपणेकथननथी पण गहडीजेहपडे एटलेजेकथनमां आत्मअनुनव थी विरुधकथननी गयापडेछे एटलेकोइकजैनमतनुंज कथनकहिरसुंछे तेमांसर्वथा तोपरसमयनथी पणगयामात्रछे एटलेकोइकनयें आत्मअनुनवथी परकथनछे तो कर्त्ताआनंदघनना आसयप्रमाणे तोतिहांपणपरमेश्वरें परसमयकह्युं पणनिजसम

यनथीकह्युं रहस्यार्थेंतेविरुध समयके० सिध्दांतनो निवासके० स्थानकछे एटले श्रु द्धात्मनाअनुनवथी कोरखांडीतेज परसमयजाणवुं ॥ २ ॥

तारानक्षत्रग्रहचंदनी॥ ज्योतिदिनेसमझाररे ॥ दर्शनज्ञा नचरणथकी ॥ शकतिनिजातमधाररे ॥ ध० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ फरिआनंदघनकहेछे अहोस्वामि शुध्दात्मानुनवमां अनेज्ञानदर्शनचारि त्रमां नेदछेकिंवाअनेदछे हवेपरमेश्वर दृष्टांतसहितउत्तरकहेछे जेम तारा नक्षत्र ग्र ह चंद्रमांनीज्योति ते.दिनेसके० सूर्यनेविषे अंतर्नूतछे तेमज दर्शनशब्दें केवलदर्श ननीज्योति तथाकेवलज्ञाननीज्योति अने क्षायकचारित्रनीज्योति एत्रणेज्योति तेस र्वेपोतानाआत्मानी अनंतवीर्यरूपजेशक्ति सामर्थ्यता तेथकी धारके०अवधार एटले आतमशक्तिनीज्योतिमां ज्ञानदर्शनचारित्रनीज्योति अंतर्नूतछे॥ ३ ॥

नारीपीलोचीकणो ॥ कनकअनेकतरंगरे ॥ पर्याय दृष्टीनदीजियें ॥ एकजकनकअनंगरे ॥ ध० ॥ ४॥

अर्थ ॥ फरीएजकथनउपर दृष्टांतकहेछे सूवर्णधातुने कोइअजाणथकोपूछे जेसा तधातुथी एकसूवर्णधातुने निन्नलक्षणे शीरीतेउलखाय तेवारेंकोइकबोल्योजे पारादि कसर्वधातुथी वजनमांनारीहोयते सूवर्णधातुकहियें कोइबोल्योसर्वधातुमां पीलासें व रूप कोइबोल्योसर्वधातुमां अत्यंतसचिकण एमशोनानाअनेक तरंगके० पर्यायछे प रंतुपर्यायांतरें दृष्टीनआपियें अपेक्षानराखियेंतो पर्यायांतरसंबंधी जेनंगतेथीरहित एवोअनंग सूवर्णद्रव्यतेएकजछे ॥ ४ ॥

दरशणज्ञानचरणथकी ॥ अलखसरूपअनेकरे ॥ निरवि कलपरसपीजियें ॥ शुध्दनिरंजनएकरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ ॥

अर्थ ॥ तेमजकेवलदर्शनरूपपर्यायें पणएकअलखनोजस्वरूपछे अनेकेवलज्ञान रूप पर्यायेंजोइयें तोपणएकअलखनोज लक्षणछे वलीक्षायकचारित्ररूप पर्यायेंजो इयें तोपणएकअलखनोज लक्षणछे एमबीजापण अजर अमर अचल अकल अरु ज इत्यादिक अलखजेपरमेश्वर तेनाअनेकस्वरूपछे पण पर्यायांतरसंबंधी नेदकल्प नादिकरीरहित इव्यार्थिकपणे अनेदनिर्चिनवनरूप निरविकल्प रूप अमृतोपश मरसनुंपानकरियें तोशुध्दनिर्मल कर्मअंजनरहित जेपरमेश्वर तेएकजछे जेमऋषना दिकथी महावीरपर्यंत सर्वतीर्थंकर सत्तायेनिन्न पणरूपेंअनिन्न ॥ ५ ॥

परमारथपंथजेकहे ॥ तेरंजेएकतंतरे ॥ व्यव
हारेंलखजेरहे ॥ तेहनानेदअनंतरे ॥ ध० ॥ ६॥

अर्थ ॥ जे परमके० उत्कृष्ट अर्थके० कार्यनोकरनारएवोजे पंथके० मार्गते जे कहेके० जेउपदेशे तेएकांतनिश्चेनयनाज रंजेके० रागीछे एटलेजेसमात्र व्यवहारन यना अपेक्षीकनथी एकांतनिश्चेनयनाज अपेक्षीकछे अथवा एवेपदोनाअर्थनो अन्व यएवीरीतेंकरियें तोविशेपतीखोलासे एटलेजेएकांतरागी तेपरमार्थपंथकहे एटलेउत्कृ ष्टमार्गकहे पणबीजाथीनकेवाय एवुंनिश्चेनयनुं कथनकहीने वलीजेप्राणी व्यवहार नयनेज लखके० जाणीनेरह्याछे एटलेनिश्चे तथाव्यवहार एवेनयमां एकव्यवहारने जमुख्यजाणीरह्याछे तेव्यवहारनयवादीओना नेदके० विकल्प अनंतके०घणाछे॥६॥

व्यवहारेंलखेदोहिला ॥ कांइनआवेहाथरे ॥ शुद्धनयथा
पनासेवतां ॥ नवीरहेदुविधासाथरे ॥ धर्म० ॥ ७ ॥ ॥

अर्थ ॥ जेप्राणीव्यवहारना रसियाहोय तेस्थिविरगुणेप्रवृत्तकादिकोनी घणीसेव नादिक कष्टक्रियाथी तपसंयमादिक व्यवहारने लखेके० शीखीने दोहिलाके० महा कष्टेंप्रवर्त्ते परंतु तेवाव्यवहारनेसेवतां जन्मारोवहीजाय पणएकलाव्यवहारनी कडा कुटकरणीकरतां कांइ लिगारमात्र स्वरूपप्राप्तिरूपवस्तु हाथेंआवेनही तेथीजोशुद्धन यने थापनाके० प्रमाणकरीने एटले आत्माशुद्धनिर्मल कर्मोपाधियेंरहित एवीकरि येंते शुद्धनयनीस्थापना सेवियेंके० विचारियेंतो आत्माशुद्धस्वरूपेंरहितछे अथवा आत्माआत्मस्वरूपपामसे एवो दुविधाके० द्विधानावीपणानो शायके० कल्पना वि चारणातेनरहे एटलेआत्मा त्रणेकालेंशुद्धात्मस्वरूपीजछे एअरनाथनोधर्मएवोछे तेथ मनेप्रसादेंदुविधानी विचारणानरहे ॥ ७ ॥

एकपखीलखिप्रीतनी॥ तुमसाथेंजगनाथरे ॥ कृपा
करीनेराखजो ॥ चरणतलेंग्रहीहाथरे ॥ ध० ॥ ८॥

अर्थ ॥ माटेजोशुद्धात्मस्वरूपीहुंछुंतो तमेशुद्धात्मस्वरूपीजछो परंतु हुंरागी तुंनि रागी माटेतमारेमारे असमानधर्मिपणुंछे तेथीमेंतमारीसाथें एकपखीप्रीत लखिके० जाणी एटलेतमोनेतो मारीसाथें प्रीतकरवानीइच्छाजनथी तोप्राणे प्रीतशीरीतेंथाय तेथीअहो त्रिजगतनाथ तमारासाथेंप्रीतनीरीत नजयाय तमेत्रणजगतपूज्य हुंजग तुंनिखारी लोकोक्तिपणएमछे के वेर विवाह अनेप्रीतते शरिखासाथेंकरियें तोमहो

टायीप्रीतशी महोटानीतो कृपाजजोइयें दयावंतपणानुं तमारुंबिरूदछे माटेमाराउ पर.कृपाकरीने तमारा चरणके० पगनेनीचें मारोहाथग्रहीनेराखजो इहां परमेश्वर तो सिद्धगतिपाम्यामाटे तेमनेचरणनुं असंनव तथासेवकनुंहाथग्रहवुं तेनुंपणअसं वजछे परंतुएवचन नक्तिपद्धनुंछे तेथीदूषणनथी नक्तलोकओलंबा देताजआव्याछे॥८॥

चक्रीधरमतीरथतणो ॥ तीरथफलततसाररे ॥ ती
रथसेवेतेलहे ॥ आनंदघननिरधाररे ॥ ध० ॥ ए ॥

अर्थ॥ अहोपरमेश्वर एपूर्वोक्त तमारासमयधर्मनुं शुद्धात्मस्वरूप प्राप्तिरूपफलकहुं अनेतमाराधर्म समयसंबंधीतीर्थनुं आनंदघनप्राप्तिरूपफल आगलवर्णव्युं तेधर्मतीर्थ शब्दें चतुर्विधसंघनातमे चक्रवर्त्तिछो तेमाटेज धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणंकहुं तेथीतमा रीआण चतुर्विधश्रीसंघमां अखंमपणेप्रवर्त्ते तेमज तीरथफलके० चतुर्विधसंघनाशु मेंफलछो तेमज तीरथशब्दसाथें ततशब्दमिलाववुं तेवारेतीर्थनातत्वछो रहस्यछो तेमजतीर्थमां सारके० प्रधानवस्तुतमेछो एटलेजेतीर्थनुं ताराजेवो चक्रवर्तिप्रवर्त्तक त थाजेमांताराजेवो फलनूतपदार्थ वलीजेमांताराजेवोतत्व वलीजेमां ताराजेवोसारप दार्थ एवोजेतमारोतीर्थ जेनेतमाराजेवा नमोतीछस्स एवीवाणियें नमस्कारकरेछे एवो जेचतुर्विधसंघरूपतीर्थ तेनेजेप्राणीसेवे आदरे तेप्राणी निरधारके० निश्चेंथी निसंदेह पणे आनंदघननुंसमूहपामे ॥ ए ॥ इतिश्रीअरजिनस्तवनसमाप्तः ॥

॥ अथश्रीमल्लिजिनस्तवनप्रारंन ॥

॥ रागकाफिसेवककिमंअवगणियेंहोएदेशी ॥

सेवककिमअवगणियेंहो॥मल्लिजिन॥एहअबसोनासारी॥अव
रजेहनेआदरअतिदीए ॥ तेहनेमूलनिवारीहो ॥ मल्लि० ॥१॥

अर्थ ॥ अहोमल्लिपरमेश्वर अबके० हवेकर्म्मनेक्षयकरवाथी पाम्याजे केवलज्ञान केवलदर्शन तेनीशोना सारीके०रुडीप्रधानपामिने पोतानीसाचीसेवानुंकरनार चाक रतेनी एवेटाणेकेमअवज्ञाकरोछो एटलेमारीअवज्ञाकरवी योग्यनथी अवरके०ताराथी बीजाजे माराजेवा संसारीजीव रागादिपरिणतियें ग्रस्याछे जेनेआस्यादासी अत्यंत आदर सत्कारआपेछे तेआस्यादासीने हेप्रभुतमें मूलथीके० जडथी निवारणकरीने रहन्यायें जडथी निर्ज्जननाकिजियेंकरी वगेडीनाखीने दिक्षालेताज अस्यानुंत्यागक र्युं अनेजेवारे बारमेंगुणठाणेचढया तेवारेंमुक्तिप्राप्तिरूप आस्यानेपणनिवारी ॥१॥

ज्ञानसुरुपअनादितुमारुं ॥ तेलीधुंतुमेंताणी ॥ जुउअज्ञान
दशारीसावी ॥ जातांकाणनआणीहो ॥ मल्लि० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हेप्रभुतमारुं अनादिकालनुं ज्ञानस्वरूप तेमोहथीप्रगटीजे अज्ञानदशाते थी आच्छादितहतुं तेतुंमेंताणीलीधुं अनेहेप्रभुमतितुमे जुउके० देखो अनादिकालनी खीरनीरवत् जेअज्ञानदशानामे स्त्री तेमल्लिनाथपरमेश्वरने आत्मस्वरूपानुंनवने अमु दामणीलागी तेथीअप्रीतकारणीजाणीने तेनेआत्मरूपघरथी जातांजाणी पणकाण नआणी एटलेएथी अनादिकालनुंघरवासहतुं तेघरछांमीने जेमउठनेसींवगया तेम जायछेतोनलेजाओपरंतुएथीनापणकरवुं एटलीपण काणके० मर्यादनआणी॥२॥

निद्रासुपनजागरउजागरता॥तुरियअवस्थाआवी॥निद्रा
सुपनदशारीसाणी॥जाणीननाथमनावीहो ॥ मल्लि०॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेमजहेपरमेश्वर नव्यअनव्य शंसारीजीवोनेविषे निद्रातथा सुपनएवे अ वस्थापामियें तेमजनव्यने नव्यत्वपणानो परिपाककाल तेरमेंगुणगणेथाय तिवारें एवेअवस्थानो नाशथाय अनेजागृतअवस्थापामे तथाचउदमांगुणगणाना अंतथी तिहांनेविषे उजागरअवस्थाहोय एचारअवस्थामां हेप्रभुतमारे तुरियके० चोथीउ जागर अवस्था प्राप्तथयी तेजोचीने निद्रादशामां गर्भितसुपन अवस्था तेणेजाण्युं जे अमोनेप्रभुयें दूरवचनकह्याविनाज अमारीप्रतिपक्षणीओने मनावी माटेअमारो तीरस्कारथयो एमजाणीने रीसाणीथकी आत्मघरथीजातीदेखीने स्वरूपमांअंतराय कारकजाणीने हेनाथतमेतेनेमनावीनही ॥ ३ ॥

समकेतसाथेंसगाइकीधी ॥ सपरिवारसुंगाढी ॥ मिथ्याम
तिअपराधणजाणी ॥ घरथीबाहिरकाढीहो ॥ मल्लि० ॥४॥

अर्थ ॥ वलीहेपरमेश्वरतमे मिथ्यात्वथी उपरांगथयीने उपशम विवेक संवरादि कपरिवारसहित समकेतसाथें सगाइते गाढीके० अत्यंतनिवडकरी तिवारेतमे आ त्मस्वरूपथी विरुद्धप्रवर्त्तिका एवीमोहनीयनीपुत्रीजे मिथ्यामति तेआत्मथी मिलवा नीवांछाने नांलीनाखनारी माटेअपराधीजाणीने हेप्रभुतमेतमारा आत्मघरथी बाहेर काढीमूकी पणसर्वथाप्रकारें एनुंघरमांप्रवेशज नथीराख्युं ॥ ४ ॥

हास्यअरतिरतिशोकदुगंछा॥नयपांमरकरसाली॥नोकषा
यश्रेणीगजचढतां ॥ श्वानतणीगतिजालीहो ॥ मल्लि०॥ ५ ॥

अर्थ ॥ तेमजहेप्रभु नवनोकषायमां १ हास्यमोहनी २ अरतिमोहनी ३ रतिमोहनी ४ शोकमोहनी ५ दुगछामोहनी ६ भयमोहनी तेनोकषायमाटे क्रोधादिककषायनीअपेक्षायें पांमरके० रांक तथासंसाररूपखेतिनी वृधीकारकमाटे करसाके० खेतीखेडानी आलीके० पंक्तितेक्रोधादिककषायथी सहसमाटेनोकषाय तेजिवारें तमेक्षपकश्रेणीरूप गजके०हाथीनीस्वारीकरीतेवारें तेणे श्वानके०कुतरानीरीतग्रहणकरी जेमराजमार्गेंहाथीचालतां हाथीउपरचडनारने कुतरापोचीशकेनही परंतुहूहूतोकरेज तेमपरमेश्वर श्रेणीगजेंआरूढथया तिवारेंगरजतोसरेनही पणहाकथीतो हास्यादिकठणगयानही माटेकुतरानीपरें हाकहाककरतारह्या ॥ ५ ॥

रागद्वेषअविरतिनीपरिणति ॥ एचरणमोहनायोधा॥ वीतरागपरिणतिपरणमता ॥ उठीनाठाबोधाहो ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीरागदशा द्वेषदशा एवेनवबीजनाअंकूरनाउत्पादक तेमज अविरतिपणानेविषे तदाकारीपणेप्रवर्त्तवुं एत्रणेनुंपरिणमन ते चारित्रमोहनीयना योधाके० सुभटछे एटलेचारित्रमां प्रवर्त्ततामुनीराजोने चारित्रथीपाडवाना योधाछे परंतुहेपरमेश्वर तमेजिवारें वीतरागपरणतिनेविषे परिणमनके० तदाकारपणेथाताहतां एटलेतमोनेवीतरागपणामां एकाग्रवृत्तियेंप्रवृत्ततानीदशाजोइने तेणेविचार्युंजे अमारीविरोधी वीतरागता एवरमांआवी माटेआंइअमोठरियेंनही एमविचारीबोधावुध अवगमने जाणताहतां पोतानीमेलेज वलीने नासीगयाएकार्यतमारो सहजेथयो ॥ ६ ॥

वेदोदयकामापरिणामा ॥ काम्यकरसहुत्यागी ॥ निःकामीकरुणारससागर ॥ अनंतचतुष्कपदपागीहो ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीअहोपरमेश्वर वेदनाउदयतेथी कामना परिणामके० अभिलाष एटले पुरुषस्त्री स्त्रीपुरुष एवेनोअभिलाष वेदोनाउदयथीथाय तेवेदनाउदयथी कामनुंपरिणामपणुंनो वेगछांरखुं पणतमेतो कामके० वांछितकर्म्ममात्र सर्वनात्यागीहोतावेदनोसर्वथाअभाव तेनीजेअधिक्यता केमके वांछितकर्म्ममात्रना त्यागीथयातेथी शब्दरूपरसगंधादिकना अभिलाषनुंपण सर्वथाअभावथयीचूकूं माटेनिरअभिलाषीपणाथीज करुणाअपरसना समुद्रछो निष्कामीविना दयानापरिणामनुं अभाव जहोय तेथीतमे अनंतज्ञान अनंतदर्शन अनंतचारित्र अनंतवीर्य एअनंतचतुष्कपद तेनिर्वाणपदनातमे पागीके० पदनारंगाणा एटलेमोक्षपदमांलीनछो ॥ ७ ॥

दानविघनवारीसहुजनने ॥ अन्नयदानपददाता ॥ लान्नविघन
जगविघननिवारक ॥ परमलान्नरसमाताहो ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ वलीहेपरमेश्वरतमेकेवाथया दानसंबंधीविघन एटलेदानांतरायनुं निवार णकरीने न्नव्यरासीजीवमात्रने अन्नयपदजेमुक्तिपदतेना दानना दाताके० देवावा लायया वलीतमेंपोतानुं लान्नाअंतराय निवारीने जगतवासी सर्वजीवोने लान्नाअं तरायना निवारकके० दूरकरनारथयीने पोते परमके० उत्कृष्टआत्मऋधि तेसंबंधी रस अव्ययपदप्राप्तें उपनोजे अतिंद्रीयरस तेरसमां माताके० मग्नहो ॥ ७ ॥

वीर्यविघनपंम्भितवीर्येंहणी ॥ पूरणपदवीयोगी ॥ न्नोगोपन्नोग
दोयविघननिवारी ॥ पूरणन्नोगसुन्नोगीहो ॥ मल्लि० ॥ए ॥

अर्थ॥ वलीतमारे परमआत्मस्वन्नावनेपामवें उपनुंजेपरमोल्लास तेउल्लासें उल्लसी त परमआत्मवीर्य तद्रूपदरसपंडितवीर्यें एटलेपराक्रमेकरीने वीर्यांतरायनेहण्युं तेथी संपूर्णतीर्थंकरपदवीपाम्याछो एटलेआत्मवीर्यफोरवतां आत्मपदवीनोरोधक विघनक रताजेमोह तेनेतमें पंम्भितवीर्येंहण्यो तेथीपूर्णपदवीपाम्या एयोग्यछे इहांसूत्रकारेंयो गीपदगुंथ्योछे तेपदनुंप्राप्त मेलववामाटे गुंथ्योछे नेयोगीपदनुंअर्थेकरियें तोतेपदवीथी संयोगथयो तेआत्मानेस्वरूपपदवीनुं समवायसंबंधसंन्नवे पणसंयोगसंबंधनसंन्नवे तेथीयोगशब्दनोअर्थ एपदवीनेयोग्यछे एमलिख्युं कर्त्तानुंआशयकर्त्ताजाणे वलीतमें न्नो गांतराय उपन्नोगांतराय एवेअंतरायने आत्मवीर्यथी निवारणकरीने संपूर्णसिद्धा त्मसंबंधी आत्मगुणरूपन्नोगना सुन्नोगीके० न्नलान्नोगवनाराछो एटलेसुन्नोगने अंतराय करनारा न्नोगोपन्नोगांतराय एवेरोधकोनो नाशथयो ॥ ए ॥

एअढारदूषणवरजिततनुं ॥ मुनिजनवृंदेगाया ॥ अविर
तिरूपकदोषनिरूपण॥निरदूपणमनन्नायाहो०॥मल्लि०॥१०॥

अर्थ ॥ माटेहेपरमेश्वर एमअढारेदोषनुंपूर्वे वर्णनकर्युं एअढारेदोषनाकर्त्ता दूष णछेतेथी तमारो तनुंके० असंख्यातप्रदेशरूप आत्मपिंमरहितथयो तेथीतमे मुनी जनोना वृंदके० समूहनेगावायोग्यथया मुनीनावृंदोयें तमोनेस्तव्या परंतुहेसुमति अविरतीथी एटलेविरतिपणारहितथी नथीनिवर्त्तवुंजेने तेतोदोषनोनिरूपणकथनछे एटलेथढारेदूपणमां प्रवर्त्तवुं तेदोषतो सर्वजीवमात्रनेकेवाय पणप्रभुतो तेअविरतादि कदूपणथी रहितथयामाटेनिरदूपणपणे मनन्नायाके० मारामनमांसुहाया ॥ १० ॥

इणविधपरखीमनविसरामी ॥ जिनवरगुणजेगावे ॥ दीनबंधु नीमहिरनजरथी ॥ आनंदघनपदपावेहो ॥ मल्लि० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ माटेहेसुमति जेस्वरूपज्ञाताप्राणीते एपूर्वेअढारदोष वर्जवानी विधिके० रीतकही तेरीतें मनविसरामीके० मननेथिरताभावेंप्रवर्त्तावी नेजेअढारदूषणेरहित तेजअरिहंत देवाधिदेव एवीपरिक्षाकरीने सामान्यकेवलीओमांप्रधान एवाजेमल्लिप रमेश्वर तेनागुणग्राम एटलेस्तवनाकरे अथवामनने विसरामनाधाम एवामल्लिजिन ना गुणवर्णवीनेजे प्राणीगावेते मोहमल्लेहण्या एवानिजसरूपेंरहित संसारमांज न्मजरादिकें खिन्नथयला एवादीनप्राणीयोने बंधुके० भ्रातानीपरें सहायनाकारक एवामल्लिपरमेश्वरनी महिरके० रूपासंबंधी सीतलदृष्टीथी तेगुणगातापुरुष अति हीआनंदनोसमूह एवोजेमुक्तिपद तेनेनिःसंदेहपणेपामें ॥ इतिमल्लिजिनस्तवनसंपूर्ण

॥ अथश्रीमुनीसुव्रतजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागकाफीआघाआंमपधारोपूज्य ॥ एदेशी ॥

मुनीसुव्रतजिनरायएकमुजवीनतिनिसुणो ॥ आतमतत्वक्युंजा ण्युंजगतगुरु ॥ एहविचारमुजकहियो ॥ आतमतत्वजाण्याविण निरमल चित्तसमाधिनविलहियो ॥ मुनी० ॥ १ ॥ एआकणी

अर्थ ॥ अहोमुनीसुव्रतजिनराज मुजआनंदघननी एकआत्मतत्वसंबंधनी वीन तिके० प्रार्थनाते अतिशयपणेसांभलो हेत्रिजगद्गुरु आत्मानेविसर्यो जे आत्मधर्मरूप तत्व तेतमेंकेमजाण्यो एटलेशीरीतेनिर्श्चेकर्यो एहके० एआत्मतत्वतमे जेरीतेंजाण्यो तेनुंविचार अनुक्रमविधते मुजनेरुपाकरीनेकहेजो केमके आत्मतत्वजाण्याविना पु द्गलादिकजडथी आत्मानेभिन्नअवधारणकर्याविना काम क्रोध लोभ मोहादिकनेवसें तो मननीसमाधिके० स्थिरतासहजेंपामियें परंतुअकामि अक्रोधि अमानि अमायि अलोभि अमोही इत्यादिकनेविषे निर्मलवनो चित्तनिवृत्तिनिरोध तदाकारें स्वरूप नेविषेजप्रवर्त्तननें नविलहियोके० नपाम्यो माटे आत्मतत्वजेमजाणुतेम्पदे..... (थपातेथी)

कोइअबंधआतमतनमाने ॥ किरियाकरतोदीसे ॥ क्रियातणुंफलकहोकुणभोगवे ॥ इमपूछ्युंचितरीसें ॥ मुनी० ॥ २ ॥ अन

अर्थ ॥ इहांकोइकेजे मतवंतनोमां आत्मतत्वनुंकथनछेनो परमअर्थपामतांचतुर्थ कार्य तेनोउत्तरजे एमुनीसुव्रतप्रभुविनाजो बीजाने आत्मतत्वनुंनिरूपणपदापता...

शब्दें शांखादिकमतवाजाते अबंधपणे आत्मतत्वमानेछे विगुणोनबध्यते नमुच्यते एट लेआत्मा त्रणेकालेंकर्मनबांधे तोनिश्चेनयतोएमजछे परंतुव्यवहारनयनीअपेक्षायें ब धांति आत्मानेअबंधमानेछे अनेपोतेंज कामक्रोधादिकउपयोगें प्रवर्त्तेंछे तेनेकहियेंजे तुंदुःकर्मेंबंधाणुंछोतिवारेएम उत्तरआपेजे मान्योतोकर्मेबंधाणो अनेआत्मस्वज्ञावेंनिर्म लछे एवोविचारियेंतो आत्मानबंधाणुं एवीरीतेवेदांतिप्रमुख मुखथीकहे अनेफरितेज प्राणी क्रियाकरतो दीसेके० देखायछे माटेहेमुक्चेतनामेंतेनेक्रियामां प्रवर्त्ततुंजोयीने चित्तरीतेंके० मननीरीतेथी एटलेरीसनापरिणामें एमपुछ्युं प्रश्नकर्युं जेतमेआत्मानेतो अबंधमानोछो एटलेशुज्ञाशुज्ञकरणियें शुज्ञाशुज्ञकर्म आत्मानथीबांधतो आत्माआत्म स्वज्ञावें निर्मलछे अबंधकछे तो महाकष्टकरीने शुज्ञकरणीकरी तेक्रियानुंफल नोक्ता पणेमानसोतो आत्माअबंधकमानोछोते तमारोपक्षछेथोकेवासे अनेजो क्रियानुंफ ल आत्माननोगवे एमकेहेसोतो क्रियाकरोछो तेनुंफलकोणनोगवशे अनोजो करे लीक्रियानुंफल नोगववामांनआवेतो क्रियानुंकरवुं अत्तिव्यर्थ तोहेमुक्चेतना एवा नेपुछवाथी हुंआत्मतत्वकेमपामुं माटेजप्रज्ञुनेवीनतिकरीपुछ्युं ॥ २ ॥

जमचेतनएआतमएकज ॥ थावरजंगमसरिखो ॥ दुखसु खसंकरदूपणआवे ॥ चित्तविचारीजोपरिखो ॥मुनी०॥३॥

अर्थ ॥ वलीअद्वैतवादीना त्रणपक्षछे १ अद्वैत २ द्वैताद्वैत ३ विशिष्टाद्वैत एविशेष्टाद्वैतपक्षी तेविष्णुस्वामिनाउपाशनी तो जडचेतनके० जडसंबंधितचेतन ए आत्माएकजछे एटले यावत्मात्रसर्वशरीरधारियोमां एकांसेंपरमात्मा व्यापिरह्योछे एकसर्वगतोनित्य एतेमनोमूलसिद्धांत तेथीएकांश माटेजीवात्मा कोइकालें परमात्मा पणेनजथाय त्रणेकालें एजीवात्मा सेवक परमात्मास्वामिइत्यादिक केटलोलिखुं वली द्वैताद्वैतपक्षीते कथंचित् थावरजंगममां नेदमानेछे तेवली विशेष्टाद्वैतनेपुछेके पृ थ्वी अप्प तेज वायु वनस्पति पृथ्वीनेअंतनोंवीमानोछो तेथीथावरजंगममां जडसं बंधीत चेतनाएकछे अथवा कथंचित्पणेनेदछे किवानथी तेवारेतेकहेजे थावरजं गमसरिखोएटले थावरमांने जंगममांअनेदछे तोहेमुक्चेतना मेंतेओनेपुछ्युं जेत मेतमारोमतजेथाप्युंतेने चित्तविचारीजोपरखोके० तमेजतमारामनथीविचारीने परि क्षाकरो एटलेतमारामतमां तमाराजकेवाथी सुखदुखसंबंधी संकरदूषण आवेके० प्रवेशकरेछे एटलेसुखदुःखने परस्परमांहोमांहे अत्यंतसर्वथा अनाविपणुंने जेसुख तेदुःखनथाय अनेदुःखतेसुखनथाय तेसुखदुःखने समान एकअधिकरणहोय एटले

सुखनो कर्त्तापणथावरजंगममयी जडचेतन अनेदुःखनोकर्त्तापण थावरजंगममयी जडचेतन तेथीथावरनोकरेलो सुखदुखजंगममां प्रवेशथवुंजोइयें तेमजजंगमनुंकरेलो सुखदुःख थावरमांप्रवेशथवुंजोइयें तोएमकेवाथी शंकरदुपण थावरजंगमथाय ॥३॥

एककहेनित्यजआतमतत ॥ आतमदरशणलीनो ॥ कृतवि
नाश अकृतागमदूषण ॥ नवीदेखेमतहीणो ॥ मु० ॥ ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीकोइक अद्वैतवादी तेरापंथी समेसारीया वासिष्ठसारग्रंथी एमकहेछे जेनित्यके० निश्चेथी आत्माचारगतिसंबंधी हरेकनवनेपाम्यो पणआत्मापोताना स्वरूपदर्शनमां लीनोके०व्यापकछे एटलेत्रणेकालें आत्मास्वरूपदर्शनेरहितनथी तेने मेंएमपुछयुंजे आत्मा आत्मस्वरूपेंलीनहोयतो कृतविनाशके०साधवादिककरणीनुं कृतकरवो तेनोविनासनावदुपणते तुं नवीदेखेके०नथी देखतोसुं अनेवीजोदुपण अकृतागम एटले अणकीधानुंआववुं नकर्यानुंप्राप्तथावुं एटले जोआत्मा स्वरूपदर्शनमां नित्यलीनमानोतो स्वरूपेंलीनछतो आत्मादुःकृतनेतोनजबांधे अनेप्राणीओने दुःकृत आगमथयो एटलेपापनुंउदयआव्यो तेअकृतदुःकृतनोआगमरूपदुपण तेनेहेमतहीणातमे नथीजोतासुं एटलेतमाराज शास्त्रोमांएवुंदाख्यछेजे कृतविनाननोकर्व्युं तेमाटेकीधाविनानोगववुंसुं ॥ ४ ॥

सुगतिमतिरागीकहेवादी ॥ क्षिणकएआतमजाणो ॥ बंधमो
खसुखदुःखनघटे ॥ एहविचारमनआणो ॥ मुनी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीहेशुद्धचेतना सुगतके० बौधमतनारागीप्राणी वादीके० बोधमत नाशास्त्रनो पक्षकर्त्ताएमकहेछे यावन्मात्रआत्माते क्षणक्षणदीठ निन्ननिन्न जाणोके० अवधारो एटलेजगतमां आत्मामात्र तेमजअन्यपदार्थमात्र सर्वक्षणिकछे जेप्रथमक्षणेंअविछिनेछे तेथीवीजेक्षणेतेनथी एवोतेनुंसिद्धांतछे तेबौधवादीने मेंकह्युंजे आत्माने क्षणक्षणदीठजोतमे निन्ननिन्नतेरावशोतो बंधके० शुनाशुनकर्मबंधने तेमज मोक्षके० कृतकर्म्मना खपाववाने तथासुकृतकरे सुखनानोगववाने फरिदुकृत करे दुःखनानोगववाने एकपक्षग्रहणकरवाथीतो पूर्वेकह्याचारेप्रकारोने एआत्मा नघटेके० नसंनवे केमकेजे बंधननोकर्त्ता आत्माक्षणेंबंधकरे अनेतेक्षणथीबीजेक्षणेतो आत्मानिन्नछे तेवारेंबंधनोकर्त्ता आत्मापणनिन्न नोक्ताआत्मापणनिन्न एम कर्त्ताकोइक अनेनोक्ताकोइक एरीतेंअसंनवनोविचार मनमां आणोके० लावो माटे हेशुद्धचेतना जेपोतेजआत्मतत्व पाम्यानथीने चूलाजफरेछे तेथ्योथीपुछताहुं आ

त्मतत्वतुंजाणुं माटेपरमेश्वरथीपुंछुंछुं जेमारीवीनतिअवधारो अनेमुजनेआत्मतत्वनी ओळखाणथाय तेरीतेंकृपाकरीनेदाखो ॥ ५ ॥

भूतचतुष्कवरजितआतमतत ॥ सत्ताअळगीनघटे ॥ अं धशकटजोनजरनदेखे ॥ तोसुंकीजेंशकटें ॥मुनी० ॥ ६॥

अर्थ ॥ हेप्रभु चेतना वळीनास्तिकवादी एमकहेछे १ पृथ्वी २ आप ३ तेज ४ वायु एभूतचतुष्कवरजीने आत्मतत्वनो सत्ताके० छतापणुंते नघटे एटलेएचारभू तोथी अळगीके० वेगळी भिन्न आत्मतत्वनीसत्ता नघटेके० नसंभवे अनेजिहांएचा रभूतछे तिहांशून्यआकाशपणछेजेज तेथीएचारनुं ग्रहणकरी एभूतचतुष्कमयी आत्मसत्ता मदिरादृष्टांतेमानेछे जेममदिरानाएकेकाअंगमां छाकशक्तिनथी सर्वांगने मिळापें छाकशक्तिछे तेमजचारेभूतनेमिळापें चैतन्यशक्तिछे परंतुहेनास्तिकवादीअंध के०जन्मांधप्राणीते शकटके०गाडानो म्होटापणुं पहोळापणुं ते जोकोइचारेंपण नज रके०आंखेनदेखे प्रत्यक्षनकरे तोम्होटापण शकटके० गाडानेसुंकीजें केमके गाडानो मोटापणुं आंधळानेदेखवारूपकार्यनो तो साधकनही तेवारेंम्होटागाडानेपणसुंक रियें तेमतमनेपण गाडाजेटलोमोटोदृष्टांत कदंयरूपनजरेनदेखाय तेवारेंम्होटोदृ ष्टांतपणशाकामनुं जेमकोइकप्राणीमरणपाम्यो तेनाशरीरमां चारेभूतोमां प्रथमआत्म सत्ताप्रगटथयीहती अनेचारेभूतथी आत्मसत्ताअळगीनथीघटति तोआत्मसत्ता ते ओनेकेममूकीगयी माटेहेप्रभु चेतना एवाथीआत्मतत्व केमओळखाय ॥ ६ ॥

एमअनेकवादीमतविभ्रम ॥ संकटपडियोनलहे ॥ चित्तस माधतेमाटेपुछुं ॥ तुमविणततकोइनकहे ॥ मुनी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एमजैनविना एकांतपक्षीआ यावन्मात्र मतवादीना सिद्धांतोथी भिन्नभि न्नकथनना सांभळवाथीपाम्यो आत्मतत्वसंबंधीजे विभ्रमके० विशेषपणेभ्रम तेज थयो संकटके० महाकष्टरूपसमुद्रमां पडयोछतो भ्रममांफस्योछतो आत्मतत्वने न लहेके० नपामे परंतुहेप्रभु चेतना अनेकमतवादीओनाकथन तेनाविभ्रमरूप संक टमांहुंनथीपड्यो तेथीजमारेचित्तने समाधिछे एटले तेओनाकह्यामुजबतो मारूंम नप्रवर्त्ततुंनथी तेमाटेजपरमेश्वरथी पुछुंके० प्रश्नकरुंछुं जेहेप्रभु तुमविना अन्यकोइ नाममात्र मतोनाधारको जेयकीशुद्धआत्मतत्वपामियें एवुंकथनकोइकहेनही ॥ ७॥

वळतुंजगगुरुइणिपरेंभाखें ॥ पक्षपातसवछंडी॥ रागद्वेषमो हपखवर्जित ॥ आतमसुंरढमंडि ॥ मु० ॥ ८ ॥

नेश्वरनाअंगछे माटे. इहांकोइपुछेजे एगंतेहोयमिथ्वत्तं एकेमकह्युं परंतु जेजेमतोनाधा रकोथी जैनीस्थापनकरतो जेजेमतोने एस्तवनामां जेजेअंगठेराव्या तेतेजिनश्वरना अं गवतावे परंतु तेउनेसर्वथा असत्यकहेनही केमके कर्त्तायेंषटदर्शनजिन अंगजणिजे एवुंप्रावकह्युं पणदर्शनएवुंनकह्युंमाटे. परंतुछएदर्शनते हेशुद्धचेतना तुजने समाराध नकरी निरममत्वी समपरिणामिछतो षडंगके० एस्तवनमांजेम छएमतोनेछएअंगोनो न्यासके०स्थापनकर्युंने तेरीतेंजोकोइप्राणीसाधे तोसिद्धकरे तेकोणसिद्धकरेजे नमिप रमेश्वरनाचरणोपासकी एटलेचारित्रनी सेवानाकरनार निरममत्वी निरअहंकारी पु रुषोतेजेरीतेंएस्तवनमां परमेश्वरना अंगउपर छएदर्शनथाप्यातेवीज रचनायें आराधे के० साधनकरीशके कर्त्तानोआशयतो एमजणायछे जेमात्रदर्शनीछे तेसर्वएकेकन याश्रीतछे तेमनेतेतेनयेंसत्यकहे परंतुजेनयनावचनथी तेमनोपक्ष्उछपे तेवोवचन जेहांशुद्धी अन्यदर्शनी जैनदर्शनउथापक वचननकहेतिहांशुद्धी जैनीपणतेनेदूषव तोवचननजकहे केमकेएपणपरमेश्वरनाअंगछेतेमाटे॥१॥

जिनसुरपादपपायवखाणुं॥ सांख्यजोगदोयभेदेंरे॥ आ
तमसत्ताविवरणकरता॥ लहोदुग अंगअखेदेंरे॥ षट०॥२॥

अर्थ ॥ हवेछएमतोमां जेजेमत परमेश्वरनुंजेजेअंगछे तेतेकहिवतावेछे एकसांख्य अनेबीजो जोगके० नैयायिक एवेदर्शन ते नमिपरमेश्वरना सुरपादपके० कल्पवृक्ष समानउपमांछेजेने एवा पायके० चरण वखाणुंके० व्याख्यानकरुं केमकेजेम शरी रनुंमंमाणपगोथी तेमजीवमात्रनुंमंमाणसत्ताथकीछे तेमएवेदर्शनपण आत्मसत्तानुं विवेचनकरवावालाछे जेमसांख्यदर्शनकहेछे आत्ममात्र पुष्करपत्रवन्निरूप लेपप्रकृ तिः कर्त्री तेहनेमुखआगलविकृति इत्यादिककथनघणुंछे परंतुआत्मसत्तानुं विवेचन छे तेमज नैयायिकपण आत्मामात्रमां सत्तातोएकजमाने परंतु एकजीवात्मा बीजो परमात्मा एमआत्मानीवेजातमाने तेमांजीवात्माते मात्रकार्यनुं कारणभूतमाने अने कर्त्तापरमात्मानेमाने एरीतेंहेशुद्धचेतना जेमसत्तासर्वेनुंमूल तेमअंगोनुंमूलपाद माटे एवेदर्शनते परमेश्वरना दुगअंगके० वेचरण ते अखेदके० प्रश्नचित्तछता लहोके० जा णो एदर्शनोनुं विशेषस्वरूप षडदर्शनसमुच्चय प्रमुख ग्रंथोथीजाणवुं ॥ २ ॥

भेदअभेदसुगतमीमांसक ॥ जिनवरदोयकरभारीरे॥ लो
कालोकअवलंवनभजियें॥गुरुगमथीअवधारीरे॥षट०॥३॥

अर्थ ॥ वलीसुगतके० बौद्धदर्शन अने मीमांसकदर्शन तेमां बौद्धदर्शनतो क्षणे

एसर्वांगोनी धागके० प्रवाहनुं मिलापकरीने पीजेके० रसआस्वादनकरियें तेनिरम मत्वीगुरुनोवताव्योजेमार्ग तेविना सर्वांगदर्शननुं मिलापरूप तत्वनुंविचार तद्रूपसु धारसनीधारा शीरीतेंपानकरीशकीयें ममत्वरूपछुजनते पानकरतांछोजीआपे एरीतें पांचअंगवर्णव्या ॥ ४ ॥

जैनजिनेश्वरवरउत्तमअंग॥ अंतरंगबहिरंगरे ॥ अक्षरन्या सधराआधारक ॥ आराधेधरीसंगरे ॥ पट० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीजैनदर्शनते नमिपरमेश्वरनुं वरके० प्रधान सर्वअंगोमां शिरोमणी उत्तमांगते मस्तकछे केमके अंतरंगें जैनदर्शननाअभावें स्वस्वरूपप्राप्तिनथाय नथासे अने बाह्यांगेंजोइयेंतोपण एजैनदर्शनसर्वांसीछे केमकेएदर्शननुंकथन सर्वनयापेक्षी कछे तेमाटेअंतरंगें बाह्यांगेंपण उत्तमअंगजछे परंतुजेप्राणी निरममत्वीछतो अक्षर न्यासके० एकेकअक्षरनुंस्थापन एटलेएअक्षरपहेलुं एबीजुं तेनीधराके० भूमिका स्थानक एटलेएपेहेला अक्षरने रहेवानुंस्थानक एबीजाअक्षरने रेहेवानुंस्थानक तेए केकाअक्षरनो आधारकके० आधारभूत एटलेआश्रयकरीनेरह्युं जेअर्थ तेअर्थने सं गेधरीके० साथेंकरीने जेसर्वांसीजैनदर्शनने आराधेके० आराधनकरें एटलेएकअक्ष रमात्रनुं उछेदनकरवुं तेतोवेगलुंरह्युंपण अक्षरआगलपाछलपण नकहेवुं एवोजैनद र्शननुं आराधनकरे एछदर्शन परमेश्वरनाछअंगछे तेवर्णव्या ॥ ५ ॥

जिनवरमांसघलादरिशणछे॥ दर्शनेजिनवरभजनारे॥ सा गरमांसघलीतटनीसही॥तटनीमांसागरभजनारे॥ पट० ॥६॥

अर्थ ॥ एरीतें नमिपरमेश्वरमां सर्वदर्शनछे तेमाटे एछएदर्शन परमेश्वरना अंग छे पणएकेकादर्शननेविषे सर्वांगसत्तानपामियें एटलेसर्वदर्शनोमां सर्वांसें जैनदर्श ननपामियें तेनीभजनाछे केमके एकअंगेपामियें पणसर्वांगेंनपामियें जेमसमुद्रमां यावत्मात्र तटनीके० नदीओते सहीके० निश्चेंयीपामियें पण नदिओमां समुद्रनी भजनाजाणवी एटलेजेनदी समुद्रमांभलि तेमांसमुद्रनी वेलुनुंपाणीआवे एमनदीओ मांसमुद्रते एकदेशेंसंभवेछे तेरीतेंसमुद्रोपम जिनवरना एछएदर्शनते अंगकहियें॥६॥

जिनस्वरूपथइजिनआराधे ॥ तेसहीजिनवरहोवेरे ॥ भृं गीइलीकानेचटकावे ॥ तेभृंगीजगजोवेरे ॥ पट० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एरीतेंसर्वदर्शनोनुं एकजभावरूप जिनेश्वरदेवनुंस्वरूपके० आकारतेआका

रें पोतेंथयीने तदाकारवृत्तियें परमेश्वरनुं आराधनकरे ध्यानधरे तेप्राणी सहीके० नि श्चेथीजिनवरशब्दें केवलनाणदंसणीथाय जेम भृंगीके० भमरीते अल्पकालमां मदेश्रा वे तेमदनीउन्मत्ततायी एकतोचंचलतावधे बीजोपोताना कांटामांपणविषवधे पछे काली अथवापीली नीजेलीमाटीमां पोतेंलवमूकी गोलीवालीने एकेकगोलीलावी घरवांधी तेमांपोतें ईलीकाजे लटतेने कांटाथीचटकुदेइ तेलटने घरमांमूकी फरीएक गोलीयेंते घर नुंमुढोढांकीने सत्तरमेंदीवस चटकाथीते घरनुंमुखखोलतांजेलटतेभमरी थयीउडीजाय तेलटथीभमरीथयीने जगतदेखे तेमजिनस्वरूपेंथयीनेजिननेआराधवुं ते जथयुंपोते लटरूपआत्मानेचटकूं पछेनिजस्वरूपमां परिणमवुंतेघरमां रहेवुं अनेते घरमांज लटनुंभमरीथयीजावुं तेमजनिजस्वरूपरूपघरमां जिनस्वरूपनी प्राप्तिथाय पछेत्रणेजगतजोतेछते सिद्धमांगमन तेउडीजावुंथाय ॥ ७ ॥

चूरणभाष्यसूत्रनिर्युक्ति ॥ वृत्तिपरंपर अनुभवरे ॥ समय
पुरुषनाअंगकह्याए ॥ जेछेदेतेदुरभवरे ॥ पट० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अर्द्धमागीशुद्धश्रद्धा परमेश्वरनुंउत्तमांगरूप जैननुंसंबंधित समयपुरुषतेना अंगने १ पूर्वधरकृत छुटकपदनी व्याख्या तेचूर्णि २ भाष्यतेसूत्रोक्तार्थ ३ सु त्रते गणधरादिकृत सूत्रवचनमात्र ४ पूर्वधारीकृतनिर्युक्तिवचन ५ वृत्तितेटीका नि रंतरव्याख्या ६ परंपरअनुभवते गुरुसंप्रदायथी अनुभवके० यथार्थस्मृतिथी नि श्चयात्मकाज्ञिकज्ञान एरीतें समयके० सिद्धांतरूप पुरुषत्वधर्मवंतना एपूर्वोक्त चूर्ण भाष्यादि अंगने तेनेजेप्राणी परभवनावीकने अवगणी निर्नयथको उछेदीने ममत्व स्वपरमें हीनाधिकनारें तेप्राणीदृग्बुद्धी अथवा दुरभवके० दुष्टभवगामिजाणवो ॥८॥

मुद्राबीजधारणाअक्षर ॥ न्यासअरथविनयोगेरे ॥ जेध्या
वेतेनविवंचीजे ॥ क्रियाअवंचकभोगेरे ॥ पट० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ मुद्राबीजधारणा अक्षरन्यास एव्याख्याननाअंगने अने अर्थके० एमु द्राबीजधारणादिकनुं तात्पर्यार्थन्यास तेनो विके० विशेषपणे नियोगीके० विधिसं वेदी विधिनोज्ञाता एव्याख्याननाअंगोनो न्यास तेमुक्तेतोज्ञानासतुंनथी अनेकर्ता वेनो आगतजेध्यावे एवुंपदगुण्युं तेथीरूयानो ध्याननुंजकथनछे परंतुमुक्तेनतात्पर्यो कर्तानुंध्यानयकर्तानाण माटेजेप्राणीसमभवमां निर्ममत्वीतेनो एपूर्वोक्तमुद्राबी जधारणादिके एमननानी व्रतिविर्धयावे एटलेएकाग्रचित्तें तदाकार तद्रूप तन्मय थी तदेवी तदाभिज्ञातेनो ध्यानकरे विषयविरुपी अनिप्रपणेनागे एवोथयो तो

तेप्राणीनो आत्मस्वरूपरूप चिंतामणीरत्नते रागादिके अथवा इष्टमतममत्वीठगो थीनवंचिजेके० ठग्योजायनही तेप्राणी अवंचकक्रियानुं नोगीथाय एटलेजेशुद्धसर ल स्वन्नाविक करणीनुंनोगीथाय तेमायावीवचनोथी ठगायनही इहांकोइकप्रतमां जेथ्यावेनेठेकाणेजेसाधे एवुंपाठठे तेनोअर्थ मुझवीजधारणादिकेंजे समयपुरुषने सा धे तेक्रियाअवंचकनोनोगीहोय एपदनुंरहस्यकर्त्ताजाणे मुझनेतोनन्नास्यो ॥ ए ॥

श्रुतअनुसारविचारीबोलुं ॥ सुगुरुतथाविधिनमिलेरे ॥ किरिया करीनविसाधिसकीयें ॥ एविपवादचित्तसघलेरे॥पट० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेहेशुद्धचेतना एकालेंजेप्रवर्त्तेने मारोकालक्षेपथायछे तेमतुझनेकहुंछुं तेसांनल एजैनदर्शनतुं श्रुतके० सिद्धांतनुं नैगमादिक नयानुजायीकथनछे तेवचन वर्गणायें कहेतांठतां किहांनुंकिहांनिसरीजाय माटे अनुसारके० तेपाठने नजरआग लराखी अर्थकर्त्ता विचारीविचारीबोलुं परंतुसिद्धांतमां यथाविधगुरुनो लक्षणकह्युंछे जेविशुद्धश्रद्धावंत ज्ञानी आत्मार्थि परोपकारी निरमायी निरममत्वी कथनीकरणी सम ससनयानुंजायी जिनप्रवचन विशुद्धनापी तथाविधके० तेवोसोन्ननगुरुनो जो गवाइमुझनेनमिले तेथीसूत्रमर्यादायेंविचारीनेबोलुंतोसुंथयुं परंतुतेमर्यादामांरहीनेसा धुसंबंधी क्रियाकरी प्रवर्त्तताने उदयआव्युंजे साधुपणुंते नविसाधीसकीयेंके० सिद्ध करीनशकीयें केमकेश्रुतमर्यादायेंपण चारित्रसाधवी अतिकठिनछेमाटे एएक अनेबी जो तथाविधगुरुनो योगवाइनमिले तेथीतेवीक्रियानकरीशकुं माटेठतोजेपथारीवुं तो पणकोइपुछेतुंकोणछो तिवारेंमहाहीनवचने पोतानामुखथीकहुंजे हुंजैननोजंदोवुं ते थीसमस्त चित्तनेविपेप्रदेशेप्रदेशें विपवादके० उदासीनताजागीरहीछे ॥ १० ॥

तेमाटेन्नाकरजोमी ॥ जिनवरआगलकहीयेंरे ॥ समयचर णसेवाशुद्धदेजो ॥ जेमआनंदघनलहीयेंरे ॥ पट०॥११ ॥

अर्थ ॥ मादेहेशुद्धचेतनातुं तथाहुंअने त्रीजीशुद्धश्रद्धा आपणेत्रणे परमेश्वरआ गल बेहाथजोडी न्नायकाकहियें जेहेपरमेश्वर तमारोन्नाषित समयके० सिद्धांतसं बंधी शुद्धचारित्रतेनी सेवाके० सेववुंप्रवर्त्तवुंतेदेजो जेमअमेपणआनंदनासमूह ल हियेंके० पामियें अथवा हेपरमेश्वर मारे चरमावर्त्तन चरमकरण न्नवपरिणतिना प रिपाकसमयें शुद्धआगमोक्त चारित्रनीसेवादेजो अथवा चरमावर्त्तनादिककालें शुद्ध आगमोक्त तमाराचरणकमलनीसेवादेजो जेमआनंदघनपदपामियें ॥ ११ ॥ इति श्रीनमिजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीनेमनाथजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागमारुणीधणराढोलाएदेशी ॥

अष्टभवंतरवालहीरे ॥ तुंमुजआतमराम ॥ मनरावाला ॥
मुगतिस्त्रीमुंआपणेरे ॥ सगपणकोइनकाम ॥ म० ॥ १ ॥
घरआवोहोवालिमघरआवो ॥ मारीआस्यानाविसराम॥म०॥
रथफेरोहोसाजनरथफेरो॥साजनमारामनोरथसाथ॥म०॥२॥

अर्थ ॥ नेमपरमेश्वर राजेमतिनुं पाणिग्रहणकरवामाटे तोरणेआव्या तिहांमृगली प्रमुखिकपशुने सनयदेखी अनयवुद्धीयें सारथीनेकह्यं। रथपाछुंफेराव्युं तेमप्रभुने राजेमतिजीनुंवचन नेमपरमेश्वरथीने अहोपरमेश्वर आठभवमां एकेभवनेविषे थकां ननदी पणनवभवनेविषे प्रीनपात्रछुं नेमाटेतु मारात्र्यात्मानेविषे रमीरह्योछो एवे मारा दीलकमलनी पांखडी।पांखडीदीठ तुंरमिरह्योछो वसीरह्योछो नेमाटे मननाउ लनां प्यारनो माटेस्वामि मुक्तिस्त्रीसाथे आपणोस्त्रीनरतरनो सगपण संबंधकरवा नुं कांइकामनथी। केमके मुक्तिस्त्रीनो रूपरहितछे अनेहुंराजकुमरी। शोननरूपा एवी स्त्रीरूपनो रूपरहितमुक्तिस्त्रीथी। संबंधकरवानुंस्योकाम अथवामारानपर मुक्तिस्त्रीनें लावशो तेवारतेस्त्री। मारीशोकथाय अनेस्त्रीनेतो शोकनादुःखजेवुं मरणपणनथी तेथी तमारेमारे परमप्रीतीछे तेनुंनामकरवुंहाय तोतमेसंत्रीजेस्त्रीलावो ॥ १ ॥ माटेवली वालेसर श्रीघरनजीना घरनेविषेआवो इहांअभ्यंतरराग रंजीतचित्तथी। [illegible] हे साहेबपदवरपक्षी राजेमतीकहेछेके मारीआस्याना विसरामकरो भामनमना हुं केमाराआधार मारीआस्या आधेपपणेरहीछे तेथीहमनवाल्लमरा। [illegible] थाप्याकरवेजथुटीनो फरीगंथागनहो। तेथीहसाजनरथने पाछालावो [illegible] मनोरथ पुगकरो केमकेनमारारथने मारामनोरथजेनु साथफरिमनगमनहो।

नारीविनाग्योनेहलोरे ॥ साचकहेजगनाथ ॥ म० ॥ ३
ईश्वरअरधंगेधरीरे ॥ तुंमुजझालेनहाथ ॥ म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ नारीविनाग्यो स्नेह यद्यपिस्नेहनुवाग [illegible] [illegible] [illegible] स्नेहरूपजनीभावनाछे माटेनारीने शाक्षात्मूर्तिवनस्नेह [illegible] [illegible] [illegible] नारीविनानेजनकहे तेमानुंकहेछे जगदानित नारीविना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कहेवाय तेणेपानाना [illegible]

ने केमधारीज्ञीधुं नकरवायोग्यकार्यकर्युं तमनेतोतेमकरवुंनथी पणलगाइकरीने पा णिग्रह्णतो सर्वजगतकरेछे अनेतमेमुजने हायेनहीजालो करपीमनतोकरो ॥ ३ ॥

पसुजननीकरुणाकरीरे ॥ आणीह्रदयविचार ॥ म० ॥
माणसनीकरुणानहीरे ॥ एकुणघरआचार ॥ म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हेप्रच्चुतमेपसुजननी करुणानोविचार ह्रदयमांआण्यो जे एटलापसुओ नो संहारथसे माटेधिःकारपडोमारापरणवाने तोएवाअविवेकी प्राणीओनीदयाकरीने थपाछोफेरव्यो तोतेथीअसंख्यातगुण पुंण्यप्रबल एवामुजसरिखा माणसनीदयानथी आवती एक्यायरनोआचार एटलेजगतमां हीनमांहीन अधिकमांअधिक जातोना घ रोमात्रमां एवुंप्रवर्त्तननथीजणातुं ॥ ४ ॥

प्रेमकल्पतरुछेदीयोरे ॥ धरियोजोगधतूर ॥ म० ॥ च
तुराइरोकुणकहोरे ॥ गुरुमिलियोजगसूर ॥ म० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हेस्वामी तमे जेमकल्पवृक्ष आनवसंवंधी मनोवांछकछे तेमप्रेमरूपकल्पत रुपण आनवसंवंधी मनोवांछितनो पूरनारोछे एटलेस्त्रीओना नज्ञारूप हावनाव मु खविकार मंदहास्य वक्र तीक्ष्णकटाक्ष तेमजमननावता षटरसनोजन तथाअंतर पु ष्पादिकनीसुरनि इत्यादिकमनोवांछित प्रेमकल्पतरु उछेदीने योगरूपधतुरो धारणक र्यो केमकेक्षुधापिपासा शीतउलदंशमशक तेशरीरनीसाताने विषप्रायछे अशाताना कारकमाटे धतुरप्राय तोहेमनवल्लन्न एवोतमोने जगतमां सूरके० यावत्मात्र चंद्र मायह्नक्षत्रतारास्थाने चतुराइनोसीखवनारोगुरु कहोनेस्वामीकोणमिल्युं आपने हायें रत्नप्रायेंकिहांथीचढ्यो ॥ ५ ॥

मारुंतोएमांक्युंहीनहीरे ॥ आपविचारेंराज ॥ म० ॥
राजसनामेंवेसतांरे ॥ किसडीवधसीलाज ॥ म० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हेराजन् मनेमूकीनेतमेजाओछो तेमांमारीतो वदनामोसी किंचितमात्र नथी केमकेतमे पोतानीइछायें रथपाछोफेरव्यो तेथीमेंअकार्यकर्युं एमकोइकेसेनही पणतमेमुजने परिहरोछो तेतमेंपोतेतमारा चित्तमांजविचारो जे तमेंतमारावरोवरिया राजानीसनामां जयीवेसशो तेवारें किसडीके० केवीशोनापामशो एटलेवणातोनकहे शे पणकोइकवहुवोलोहशे तेतमनेसनामां आवतादेखीने कहेसेजेजूओ आपुरुषत्व धर्मेवंत पुरुषआव्या तेवारें केवीलाजवधशे घणीसरमजेवीवातछे माटेहजीकांइवग डयुंनथी तेथीरथपाछोफेरवो ॥ ६ ॥

प्रेमकरेजगजनसद्गुरे ॥ निरवाहेतेओर ॥ म० ॥ प्री
तकरीनेगेमीहेरे ॥ तेसुंनचालेजोर ॥ म० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ संसारीजीवमात्ररागीछे माटेप्रीततोकरे केमकेसरागीपणुंते प्रीतरूपक
र्मनुंकारणछे परंतुहीनाधिकवचन नविचारतां प्रीतनोनिरवाहकरे तेवाप्राणी थोर
के० वीजाजाणवा पणतमेतेवानथी एटलेतमेप्रीतकरवामांछो परंतुप्रीतनुं निभावत
मथीनथाय दोहा ॥ प्रीतरीतअतिकठिनहे समजकरइयोकोय नांगनखंतासोहली
लहिरांमुसकलहोय ॥ १ ॥ तोहेवल्लभजेप्राणी प्रथमतोअत्यंतप्रीतवांधे फरीतेजप्री
तनेछोडी त्रोडीनाखे तेप्राणीसाथेजोरनचाले जेमप्राणेप्रीतनथाय एवीकेवतछे॥७॥

जोमनमांएहवुंहतुंरे ॥ निसपतिकरतनजाए ॥ म० निसप
तिकरीनेगंमतांरे ॥ माणससहुयेनुकसाण ॥ मन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जोआपनाचितमां प्रथमथीजएवुंहतुंजे तोरणथीज रथनेपाछो फेरववुं
एटले प्रथमथीजमने छोडवानीइच्छाहतीतो जाणके० तेइच्छातमारामनमांजाणीने
निसपतिकरतनके० संबंधनकरता एटलेतमोने मारीसाथें संबंधकरवुंयोग्यनहतुं ते
तमेपोतेजविचारो पणस्त्रीमात्रनो जिहांसुधीसगाइनथयी तिहांसुधीसर्वजनथी संबंध
छे अने जेवारेंसगाइथयी तेवारें तेपुरुषथीसंबंधरह्यो पछेतेपुरुषजेवारेंछांडिआपे
तेवारें तेस्त्रीनेबीजोपुरुषतो रांधेलीहांमीप्रायेंजाणीने नजवांछे अथवाकोइकवांछे तेने
वीजापुरुषकहेके अहोनलाआदमी तमनेएविना बीजीकोइस्त्रीजगतमांनथीमलती
सुं केमकेएनीतोसगाइथयीहती तेणेमूकीदीधी तेथीविपकन्यादिदूषणविना सगाइथ
यापछे कोणमूके माटेसगाइथयापछेछांमवुं तेतो माणसनुं नुकसानछे तेहनेअछवुंदो
षप्रगटकरीने कलंकितकरवुंछे ॥ ८ ॥

देतांदानसंवत्सरीरे ॥ सहुलहेवंछितपोष ॥ म० ॥ सेव
कवंछितनवीलहेरे ॥ तेसेवकनोदोष ॥ मन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ हेस्वामीरथफेरीने घरेपहोतासुं एवेअवसरें लोकांतिकदेवतायें दीक्षानो
अवसर नजीकजाणीने हेपरमेश्वरतुंबूज एवावचने अवसरजाणवनाज प्रभुसंवत्स
दान देवालागा तेथीसर्वप्राणीमात्र मनोवांछितनीपुष्टतापामें एटलेएकदानदीधुंतेज
ोना घरनरीजदीधा एवीदाननीवर्षा वरसतांछतांपण मुफजेवो परमसेवक तेकांइ
एवंछीतनपामें यथा पेहारवावेंदूरका नूखामरेदनूरका अथवाघरनाछैयांपरटीचाटे

पाडोसणनेपेडा एकेवतहेप्रनुतमे साचीकरीबतावी पणतेसर्वहुं तमारीसेवकनोजदो षठे एटलेतेसर्वना जोगकर्मनो उदयहतुं तेणेतमथीइव्यपामी अनेमारेआनवें तमा रीसाथें जोगोपजोग कर्मनाउदयनो असंजव माटेवंठीतपोपनपामुं तेमारापूर्वकृतना उदयहुंदूपणठे ॥ ए ॥

सखीकहेएसामखोरे ॥ हुंकहुंलक्षणसेत ॥ म० ॥ इणलक्षणसाचीसखीरे ॥ आपविचारेहेत ॥ म० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ आजसुधी जेटलापुरुषमेंपारख्या ते तेमजनिवड्या परंतुतमनेहुं परखीश कीनही केमकेजेटाणे सगाइथयी तेटाणे मारी सखीनावर्गे मने कह्युंजे एतमारोजर्तार वाहिरतेमजअंतरपणश्यामठे तेवारेंमेकह्युं एवाह्यतोश्यामठे पणअंतरथीलक्षणे से तके० उज्वल निष्कपटीठे परंतु जलाराजनी पुत्रीयोथी प्रथमसंबंधकरीने पठेते नेकालीधारे ध्रसकाइदेवी एलक्षणेतो सखीओनावर्गेनुंकेहेवुं साचुंथयुं मारीपरीक्षा सर्वनिरर्थकथयीएरीतेंजे हेतके०कारणकह्या तेमांअसत्यहोयतोतमेंविचारीनेदेखो १०

रागीसुंरागीसहुरे ॥ वैरागीस्योराग ॥ म० ॥ रागविना किमदाखवोरे ॥ मुगतिसुंदरीमाग ॥ म० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ माटेहेप्रनु हुंसरागणीछुं तेमतमनेपण सरागीथवुं योग्यठे केमके जग तनीएनीतठे जेपोताथी रागराखे तेथीसहुरागजराखे पणजेपोते वैरागीके० रागर हितहोय तेनेकोइथी सानोरागहोय तेमहुंतमाराउपर रागवंतछुं माटेतमारामांपण जोरागहोयतो तमेमुजथीरागराखो पणतमारामां रागवस्तुजनथी तेथीतमारेकोइथी रागठेजखुंनही तो मारायी शानोरागहोय हवेराजेमती पोतानामनमां स्वामीनेस्थापन करी मनवचनयोगथी उर्जनारूप वीनतिकरेठे हेस्वामी पोतानावजनथीपण यथा स्थितवात बतावबानीनीतीनापक्षें अटकावनथी तेमाटेजोतमें रागीनथी तोरागनेअ जावें जेमार्गेप्रवर्त्तीने मुक्तिस्त्रीपामियें तेनेमुगतिसुंदरीमार्गेकहियें तेमार्ग बारेपरखदामां सर्वने सांजलताकेम दाखवोके०देखाडो तेमाटे कोठेंहोयतेहोठें तेथीएमजणायठे जेत मारो तेमुक्तिस्त्रीथीरागठे माटेजसर्व समक्ष लज्जाअवगणीने स्मरोठो तेथीठतेरागेंसु फनेकेमपरिहरोठो अनेजेना अनेकजर्त्तारठे एवीमुक्तिनेवांठोठों एक्यांयरनोआचार ११

एकगुह्यघटतुंनथीरे ॥ सयलोईजाणेलोक ॥ म० अने कांतिकजोगवोरे ॥ ब्रह्मचारीगातरोग ॥ म० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हेस्वामी सर्वलोकमुजने आवीकहेछे जेएतारानत्तोरनी सीचालछेजे तोर णेआव्या तुंजनेमूकीगया तेवारेंअमे सर्वलोकेंजाएयुंजे नेमनाथथी कामरूपीओ रो गगयुं तेमाटेब्रह्मचारीछे परंतुराजेमतीएकरहितोसुं पणतेतो अनेकांतिकजोगवेछे ने फरीब्रह्मचारी कहेवायछे तेथीतुंजइनेसमजाय केजोब्रह्मचारीनामकहावोतो हुंअर जकरुंलुं जे एकगुह्यघटतुंनथी एटलेलोकजाणीशके एशानोगुह्यलुपावयुं सुंलोकसर्व जाणेजे एअनेकजोगवेछे नेफरीब्रह्मचारी निःकामीनामधारवुं एतोअघटतुंगुह्यछे घटतुं गुह्यतो तेनेकहियें जेनेलोकनजाणीशकें अनेजोलोकेजाणीलीधु तोशानोगुह्य चतुर नोगुह्यतो जन्मारोवहिजाय तोपणकोइलोक जाणीशकेनही परंतु तमारोगुह्यतो हवेरह्युंजनही लोकमां प्रगटथयीगयुं जे अनेकनेजोगवोजछो तोएक मनेजोगववा मां सुब्रह्मचर्यनो भंगथयीजायछे अनेजो ब्रह्मचर्यने अखंमपाल्याचाहोछो तो अने कांतनेंजोगववुं मूकीयो पणतमेतो बेघोडेचढोछो अनेकांतनेंजोगवोछो नेफरी ब्रह्म चारी नामधरावोछो ॥ १२ ॥

जिणजोणीतुमनेजोंजुंरे ॥ तिणजोणीजोवोराज ॥ म० ॥
एकवारमुजनेजुओरे ॥ तोसीजेमुजकाज ॥ म० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हेस्वामीहुं जिणजोणीके० जेजोवानीरीतें तुमने जोउंके० देखुं एटलेस रागवर्त्तियें एकाग्रतदाकारें सलुणेनेत्रे हुंतमोने निरखणकरुंलुं तेमारानेत्रोथी निरखवा लुंसराग मारामनथी लिप्युंनथी माटेहुंआपथी अरजकरुंलुं केजेरीतें हुंतमोने निरखुं लुं तेवीजरीतें तमेपण मुजनेरात्रदीवस रुदयनेत्रेंजूओ तोमोटीकृपाकरो कदाचितरात्र दिवसनजूओतोरह्युं पणएकवारतो मुजनेजूओ तोपणमारोवांछितकार्य सिद्धथाय १३

मोहदशाधरीनावनारे ॥ चित्तलहेतत्वविचार ॥ म०॥ वी
तरागताआदरीरे ॥ प्राणनाथनिरधार ॥ म० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एटलासुधीतो राजेमतियें पोतानी सखिओसंघाते श्रीनेमनाथ संघातें मोहदशानी विवस्थासंबंधी मोहनीना वचनजाप्या हवेचित्तमां मोहदशायें वधाणो मन तेजमननेविषे नावनाके० बारनावनामांथी इहांप्रस्तावें एक एकत्वनावनाज उचितछे फरिएजनावनानेआशयें सूत्रकर्त्तायें पाछलीगाथाना उत्तरपदमां एकवारमुज नेजूओ एमकेहेवायी राजेमतीजीयें जेटलामोहमयी वचनकह्या तेकेहेताछतांजचित्त मां एकत्वनावनाआवी एटलेमारोआत्मद्रव्यतेमाराआत्मप्रदेशोने आधारेंरह्योछे तो मारेतेओने शोसंबंधछे एवो आत्मतत्वनो विचारके०जेदत्ते राजेमतीजी पाम्यायका

पोतानीआत्माने कहेछे केहेआत्मा प्राणनायक० प्राणोनानायजे नेमनाथ स्वामी ते णे निरधारके० निश्चेंयकी वीतरागता आदरीके० ग्रहणकरी तोहेआत्मा तारोराग एहुनेकेमजेदीशके तेमाटे एहुनुंनेमारो शोसंबंध एमएकत्वनेविचारताहुवा ॥ १४ ॥

सेवकपणनेआदरेरे ॥ तोरहेसेवकमाम ॥ म० ॥
आशयसाथेंचालीयेंरे॥एहीजरुडूंकाम॥म०॥१५॥

अर्थ ॥ हवेराजेमतीजी नीतीनापक्षें सन्मुखदृष्टीयें एकत्वभावना भावनकरेछे हेमाराआत्मा तने नेमनाथजीसाथें स्वामीसेवक संबंधकरवुं योग्यहतुं केमके ते संबंधकर्या उपरांत परवशवर्त्तिपणें प्रवर्त्तवुंपडे अनेजे परवशवर्त्तिपणे प्रवर्त्तवुंते स्वेछाचारीने नरकप्रायछे परंतुएवात प्रथमथीविचारवी योग्यहती हवेपाछळथी विचा रकरेशीशिद्धी तेमाटे स्वामीयें वीतरागता आदरी तेज सेवकपण निश्चेंथीअंगीकार करे तेवारें सेवकनो मामके० धर्मस्थिररहे माटेअहो माराआत्मा स्वामीनामननो आशयके० अभिप्राय तेनीसाथेंचालीयें एटले अभिप्रायानुंजायी चालियें स्वामीना आशयसाथें प्रवर्त्तवुं तेजरूडुंकामछे एटले सेवकनोसेवकत्वधर्म तेएहिजछे जेपोताने हित अहितनजूए पणस्वामिनी आज्ञाप्रमाणेवर्त्ते एजसेवकपणानुं लक्षणछे ॥१५॥

त्रिविधयोगधरीआदर्योरे॥नेमनाथभरतार॥म०॥धार
णापोषणतारणोरे ॥ नवरसमुगताहार ॥ म० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ माटेश्रीनेमनाथ स्वामियें त्रिविधधरीके०त्रणप्रकारनेधरी योगआदर्यो ए टले मनथी वचनथी अनेकायथी योगआदर्यो तोतेजआशयलेइनें मुजनेपण तेज योगधारवुं रुडूंकामछे परंतुमारामननो वल्लभश्री नेमनाथ भर्त्तारकेहेवोछे माराआ त्मिकगुणानो धारणके० आधारछे वळीमारा आत्मिकगुणोनो पोषणके० पुष्टनुंक रनारपण एहिजछे तेमज मारेसंसारसमुद्रथी तारनारपण एहिजछे वळीशृंगार हा स्य करुणा रौद्र वीर भयानक बीभत्स अद्भुत शांत एनवरसरूप मुगताके० मो तीनोहार माराकंठनोशृंगाररूप तेएहिजछे एटले निरुपम आत्मिकस्वरूपते अक्षिती यशृंगार अनादिकनकोपळीनीपरें प्रकृतपुरुषनी जोडीथीवियोग तेथीअतींद्रियनो ह र्षोत्कर्षतेयथुं परमहास्यरस्य सर्वजंतुनें अभयदानदेवुं तेकरुणारस कर्मनेविदारवुं ते रौद्ररस इत्यादिक नवेरसोनोसंभव यथातथ्यविचारीजेजो आइलिखतां वधीजाय मा टेनलख्युं एनवरसोना शुभशुभंतरभाव तरंगरूप यणामोती तेमाटेहारसंज्ञाबांधी॥१६

अर्थ ॥ हेस्वामी सर्वलोकमुझने आवीकहेछे जेएताराचत्तारनी सीचालछेजे तोर णेआव्या तुंझनेमूकीगया तेवारेंअमे सर्वलोकेंजाण्युजे नेमनाथथी कामरूपीओ रो गगयुं तेमाटेब्रह्मचारीछे परंतुराजेमतीएकरहितोसुं पणतेतो अनेकांतिकनोगवेछे ने फरीब्रह्मचारी कहेवायछे तेथीतुंजइनेसमजाव केजोब्रह्मचारीनामकहावोतो हुंअर जकरुंछुं जे एकगुह्यघटतुंनथी एटलेजोकजाणेशके एशानोगुह्यछुपावछुं सुंलोकसर्व जाणेजे एअनेकनोगवेछे नेफरीब्रह्मचारी निःकामीनामधारवुं एतोअघटतुंगुह्यछे घटतुं गुह्यतो तेनेकहियें जेनेलोकनजाणीशकें अनेजोलोकेजाणीलीधु तोशानोगुह्य चतुर नोगुह्यतो जन्मारोवहिजाय तोपणकोइलोक जाणीशकेनही परंतु तमारोगुह्यतो हवेरह्युंजनही लोकमां प्रगटथयीगयुं जे अनेकनेनोगवोजछो तोएक मनेनोगववा मां सुब्रह्मचर्यनो नंगथयीजायछे अनेजो ब्रह्मचर्यने अखंमपाल्याचाहोछो तो अने कांतनेंनोगववुं मूकीयो पणतमेतो वेघोडेचडोछो अनेकांतनेंनोगवोछो नेफरी ब्रह्म चारी नामधरावोछो ॥ १२ ॥

जिणजोणीतुमनेजोउंरे ॥ तिणजोणीजोवोराज ॥ म० ॥
एकवारमुझनेजुओरे ॥ तोसीजेमुझकाज ॥ म० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हेस्वामीहुं जिणजोणीके० जेजोवानीरीतें तुमने जोउंके० देखुं एटलेस रागवर्त्तियें एकाग्रतदाकारें सन्मुखेनेत्रे हुंतमोने निरखणकरुंछुं तेमारानेत्रोथी निरखवा नुंसराग मारामनथी छिप्युंनथी माटेहुंआपथी अरजकरुंछुं केजेरीतें हुंतमोने निरखुं छुं तेवीजरीतें तमेपण मुझनेरात्रदीवस ऋदयनेत्रेंजूओ तोमोटीकृपाकरो कदाचितरात्र दिवसनजूओतोरहुं पणएकवारतो मुझनेजूओ तोपणमारोवांछितकार्य सिद्धथाय १३

मोहदशाधरीनावनारे ॥ चित्तलहेतत्वविचार ॥ म०॥ वी
तरागताआदरीरे ॥ प्राणनाथनिरधार ॥ म० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एटलासुधीतो राजेमतियें पोतानी सखिओसंघाते श्रीनेमनाथ संघातें मोहदशानी विवस्थासंबंधी मोहनीना वचनजाष्या हवेचित्तमां मोहदशायें वधाणो मन तेजमननेविषे नावनाके० बारनावनामांथी इहांप्रस्तावें एक एकत्वनावनाज उचितछे फरिएजनावनानेआशयें सूत्रकर्त्तायें पाछलीगाथाना उत्तरपदमां एकवारमुझ नेजूओ एमकेहेवाथी राजेमतीजीयें जेटलामोहमयी वचनकह्या तेकेहेताछतांज चित्त मां एकत्वनावनाआवी एटलेमारोआत्मद्रव्यतेमाराआत्मप्रदेशोने आधारेंरह्योछे तो मारेतेओने शोसंबंधछे एवो आत्मतत्वनो विचारके० नेदते राजेमतीजी पाम्याथका

अर्थ ॥ हेप्रन्नुतमने सर्वज्ञपणामाटे केटलाक सर्वव्यापीकेहेछे तेतोआरोपेंघटेछे परंतुजो वस्तुधर्में सर्वव्यापिकहेतो दोषउपजे केमके जेपरमांव्यापे तेपरपणेपरिणमे अनेपरपरिणमन स्वरूपथयेतो इव्यनुं अस्थिरस्वनाव तथा अन्नव्यस्वनावरूप दूषणथाय वलीपररूपे एटले अन्यइव्यरूपेंथयो तोतत्वपणुंनलहे माटेपोतानीसत्ताज चिद्रूपज्ञानस्वरूपछे तेणेकरी तत्वपणुंकह्यिं ॥ २ ॥

ज्ञेय अनेकेंहोज्ञान अनेकता ॥ जलन्नाजनरविजेम॥सु० इव्यए
कत्वपणेगुणएकता ॥ निजपदरमताहोखेम॥सु०॥ध्रु०॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वलीज्ञेयजे सर्वइव्यते अनेकछे तेनेज्ञानेकरीजाणे तेणेकरी आत्मानुंज्ञान अनेकछे एटलेज्ञेयनानेदें ज्ञानपणअनेकरूपछे यद्यपिसूर्यएकछे तोपण जलन्नाजनमां प्रतिबिंबपडवेकरी अनेकजणायछे तेमज ज्ञानगुणाधिकरणनूत सर्वआत्मनावनुं अस्थलीनूतजे जीवइव्य तेनेएकपणे गुणनोपणएकपणो जाणवो केमके पर्याय अविन्नाग अनेकता पणज्ञायकरूपकार्यअन्नेदें ज्ञानगुणएकछे तेथीसर्वगुण पोतपोतानुं खेत्रजेइव्य तेमां रमतां क्षेमकल्याणछे एटलेकोइगुण परपरिणामीनथी ॥ ३ ॥

हित आत्मनूक्षेत्रेंगतज्ञेयनेजाणवे ॥परक्षेत्रेंथयुंज्ञान॥सु०॥ अस्तिप
त्रिविधये नक्षेत्रेंतुमेकह्यो॥निर्मलतागुणमान॥ सु० ॥ ध्रु० ॥४॥

णपोपणत अवगाहनाथी परके० अन्यक्षेत्रेंरह्युंजे जीवइव्य तथाअजीवइव्यरूप
णवेकरीने एज्ञानपरक्षेत्रीथयुं पणजेगुणीहोयते गुणथीअन्नेदपणेहो
अर्थ ॥ माटेश्रीनिजक्षेत्रेंके० पोताना असंख्याताप्रदेशें आत्मामध्ये व्यापकपणेरह्युंछे
टले मनथी वचनथी अनेपुंकह्युं तेज्ञानमां निर्मलतास्वनावछे तेथीएज्ञानमां इव्यआरी
पोगधारवुं रूडूंकामछे परंज्ञानने क्षेत्रें ज्ञेयजातोनथी अनेज्ञानते ज्ञेयमांआवतुंनथी ॥४॥
तिमकगुणानो धारणके० आध्यानविनिश्चयरू ॥ कालप्रमाणेंथाय ॥ सु०॥
रनारपण एहिजछे तेमज मारेसं सदा ॥ तेपररीतेंनजाय ॥ सु०॥ध्रु०॥५॥
स्य करुणा रौइ वीर नयानक वी
तीनोहार माराकंवनोशृंगाररूप ते घटादिकने विनाशें ज्ञानपणविनाशीकछे अतीतअना
यशृंगार अनादिकनकोपली ज अनागतपर्यायतेवर्त्तमानपणुं पामे वर्त्तमानपर्यायते अ
शोत्कर्षतेथयुं परमहास्यर यनो नासनधर्मज्ञानमध्येछे तेनासनपर्याय,एरीतें परिणमेछे
रौइरस इत्यादिक सर्वशा कधर्मछे तेनेउत्तरकहेछेजे स्वकालेंकरी पोतानाउत्पादव्यय
टेनलख्युं एनवरसो

रूप परिणमनजोतां एज्ञानउत्पादव्ययरूपछे तोपणएनो स्वसत्तायधर्मछे किवारेपर सत्तापणुंपामेनही परानुजायीनी चालनेग्रहणनकरे तेथी स्वरूपधर्मछे ॥ ५ ॥

परभावेंकरीपरतापामता ॥ स्वसत्ताथिरठाण ॥सु०॥ आत्मच
तुष्कमयीपरमांनही ॥ तोकिमसहूनोरेजाण॥सु०॥ध्रु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वलीपरभावेंकरी परभावना जाणंगपणामाटे ज्ञानतेपरयाय परतापणुं पामें पणस्वसत्तारूपछे तेस्थिरस्थानकछे माटेजे स्वसत्तारुपहोय तेकेवारेंपरपणुं पामेनही एटलेआत्मचतुष्कमयीपणोते परमांनपामियें जेस्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभावपणे आत्मानोधर्महोयते अन्यमांनपामियें एमनिरधारकरखो इहांकोईपुछेजे तेवारेंज्ञान सर्वपरद्रव्यनोजाण केमथयो ॥ ६ ॥

अगुरुलघुनिजगुणनेदेखतां ॥ द्रव्यसकलदेखंत ॥सु०॥सा
धारणगुणनीसाधर्म्यता ॥दर्प्पणजलनेदृष्टांत ॥सु०॥ध्रु०॥७॥

अर्थ ॥ तेनेउत्तरकहेछेजे जीवादिसर्वद्रव्यमां अगुरुलघुधर्मछे तेसर्वद्रव्यने साधारणछे तेजीवमांपण सर्वव्यापीछे तेपोतानो अगुरुलघुभावदेखतां सर्वद्रव्यनेदेखे सर्वनेजाणे एटलेदर्शनपणउपयोग ज्ञानपणउपयोग अने साधारणगुणने नित्यत्वादिकने तथा अगुरुलघुत्वादिकने समानधर्मि तेथीएकनेजाणवे सर्वनुंजाणथाय जेमआरसीमां सर्वनुंप्रतिबिंबपडेछे पणजेनुंप्रतिबिंब आरीसामांपडेछे तेवस्तुमां आरीसो प्रवेशकरतोनथी अनेतेवस्तुपण आरसीमां प्रवेशकरतीनथी तेमज जलके० पाणीनोदृष्टांतपण जाणवो तेजरीतें ज्ञानज्ञेयमध्ये परिणमतोनथी अनेज्ञेयज्ञानमध्ये परिणमतानथी एरीतें सअवगाहनागत ज्ञानगुणतेआत्मानुं स्वरूपछे ॥ ७ ॥

श्रीपारसजिनपारसरससमो ॥ पणइहांपारसनाहिं ॥ सु०॥ पूरणर
सीउंहोनिजगुणपरसनो ॥ आनंदघनमुझमांहिं ॥ सु० ॥ध्रु० ॥८॥

अर्थ ॥ एवापार्श्वनाथभगवान पारसपाषाणसमानछे जेमपारसपाषाणनेफरसवे लोहते कंचनथाय अशुद्धताटाले तेमपार्श्वप्रभुनेयोगें सेवकपरमात्माथाय पणइहांपार्श्वनाथ भगवानमां पारसपाषाणनो रसनथी पणपोतानाअनंतज्ञानादिकगुणरूपपारसपाषाणनो पूर्णरसीओछेते अनंतआनंदमयी माहरेमाहेंपणछे परतुसत्तारूपेछे अनेतमारे प्रगटछे माटेतुमेपूज्यछो ईश्वरछो ॥ ८ ॥ इतिपार्श्वजिनस्तवनसमाप्तः

॥ अथश्रीमहावीरजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ रागधन्यासरी ॥

वीरजीनेचरणेलागुं ॥ वीरपणुंतेमागुंरे ॥ मिथ्यामोह
तिमिरभयभागुं ॥ जितनगारुवागुंरे ॥ वी० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हुंश्रीमहावीरभगवान चोवीसमांतीर्थंकरनेपगेलागीने क्षायकवीर्यपणुंमां गुंछुं जेवीर्यनाउल्लासथकी मिथ्यात्वते कुश्रद्धारूप तथामोहतेमूढतारूप तद्रूपजे तिमिरके० अंधकारनुंभय तेदूरगयुंछे एवा हेप्रभुतमेअनादिकर्मशत्रुजीतिने जीतनोन गारुंवजाव्यो तेवीर्यमांगुंछुं जेवीर्यथीहुंपण कर्मशत्रुनेजीतुं ॥ १ ॥

छउमथ्थवीरयलेस्यासंगे ॥ अभिसंधिजमतिअंगेरे ॥ सु
क्ष्मथूलक्रियानेरंगे ॥ योगीथयोउमंगेरे ॥ वी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हेप्रभुछद्मस्थवीर्यते क्षयोपशमीवीर्य तेलेस्यायें जेपरिणाम्योते अभिसंधि जवीर्यें अनेककर्मग्रहणकरे जे मतिपूर्वक उपयुक्तवीर्य तेअभिसंधिजवीर्यकहियें ते सूक्ष्मक्रियाकंपनरूप स्थूलक्रिया आकुंचप्रसारणरूप एटले भावयोग तथा द्रव्ययो गरूप सूक्ष्मतथास्थूल क्रियानेरंगे योगवंतथयोथको आत्मासंसारमध्ये उमंगपामिर ह्योछे एविचार कम्मपयडीग्रंथमध्येछे ॥ २ ॥

असंख्यप्रदेशेंवीर्यअसंखें ॥ योगअसंखितकंखेरे ॥ पुद्गल
गणतेणेलेसुविशेषें ॥ यथाशक्तिमतिलेखेरे ॥ वी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ आत्माना असंख्याताप्रदेशछे तेएकेकाप्रदेशें असंख्याता वीर्यविभागछे एकम्मपयडीमध्ये योगस्थानकेंकह्याछे एरीतेंजीवने योगपणोअसंख्यातोछे एटलेजेक्ष योपशमीवीर्य असंख्यातोछेते योगरूपछे तेणेकरीजीव कर्म्मपुद्गलना समूहनेलीयें योगविशेषें विशेषकर्मनेलीयें यथाके० जेहवीयोगबलशक्ति तेवाकर्मनादलजीवलीयें एमंतिजाणवी ॥ ३ ॥

उत्कृष्टेंवीरयनेवेसें ॥ योगक्रियानवीपेसेरे ॥ योगतणीध्रु
वतानेलेसें ॥ आतमशगतीनखेसेरे ॥ वी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ अनेजिहां उत्कृष्टके० अनंतोअचलवीर्य तिहांकर्मनलागें अनेचलवीर्य होयतिहांकर्मलागें जेप्रदेशोमां उत्कृष्टवीर्यहोय तिहांयोगक्रियाजे कर्मग्रहणरूप क्रि

यातेपेसीशकेनही एटलेआत्माना आठरुचकप्रदेशतिहां कर्मग्रहणरूपयोगक्रियानथी वलीयोगनी ध्रुवताके० निश्चलताछे तेनोलेशजिहांहोय तिहांआत्मशक्तिप्रतेंकोइक मैखसावीशकेनही एटलेतेप्रदेशें आवरणनावनकरे ॥ ४ ॥

कामवीर्यवशेंजेमन्नोगी ॥ तेमआतमथयोन्नोगीरे ॥सूरप
णेआतमन्नपयोगी ॥ थायतेहनेअयोगीरे ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेमकामके० अनिलाषीवीर्यनेवसेंजेमन्नोगीपुरुष सर्वपरन्नावनेवांछे तेम आत्मापरन्नावनो न्नोगीथयो अनेतेहिज आत्मा सूरपणेपरिणमे जेमारास्वरूपविना परन्नावमांपेसवुंजनही एवीप्रतिज्ञापालतो आत्मोपयोगीथातो अयोगीपणुं प्रगटकरे एवोसूरवीरपणुं हेवीरपरमेश्वर तमारूंथयुंउत्कृष्टोछे ॥ ५ ॥

वीरपणुंतेआतमठाणे ॥ जाण्युंतुमचीवाणेरे ॥ ध्यानविनाणे
शकतिप्रमाणे ॥ निजध्रुवपदपहिचाणेरे ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एवुंवीरपणुंते आत्मानेस्थानकेंछे एटलेआत्मामांहेजछे तेमेंतुमारीवाणी थीजाण्युं तेहवे ध्यानने विज्ञाने तथाशक्तिनेप्रमाणे जेमजेमआत्मानुं मूलवीर्य वी रपणोचितवीर्यें जाणीयें तेमतेमजीवतेमांरमीने पोतानो ध्रुवपदके० निश्चलपरमानं दपदने पहिचानेके० उलखे ॥ ६ ॥

आलंबनसाधनजेत्यागे ॥ परपरिणतिनेन्नागेरे ॥ अक्षयद
र्शनज्ञानवैरागें ॥ आनंदघनप्रन्नुजागेरे ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥परंतुते परनेअविलंबनकरी जेसाधनकरवुं तेनेत्यागें एटलेपरालंबनपणुं ह्यां मे परपरिणति न्नागेके० जाय तेथीअक्षय अप्रतिपाति क्षायिक केवलदर्शन केवलज्ञान अनेवीतरागताते यथाख्यातचारित्रें लयलीनथयोथको आनंदघनशब्दें परमानंदमय प्रन्नुनाजागे ॥ ७ ॥ इतिश्रीमहावीरजिनस्तवनसमाप्त ॥ इहां श्रीज्ञानविमलसूरियें तथापंमित देवचंद्रजीयेंपण एचोवीसीना पाठलावे स्तवनकर्याछे तेमांज्ञानविमल जीयेंतोचोवीसीस्तवननो टवोपणकर्योछे अनेदेवचंद्रजीकृतटवोनथी कदापिहसेतो पण मारेजोवामां तथा सांन्नलवामां आव्युंनथी तोपणइहां वावीसस्तवनोनो वा लवोध ग्यानसारजीना करेला बालवोधउपरथी संक्षेपीनेलख्युं माटेएमनाजकरेला पाछलावेस्तवनो अर्थसहितनीचें लखियेंछेयें ॥

॥ अथश्रीपार्श्वजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ शांतिजिनएकमुजवीनतीएदेशी ॥

पासजिनताहरारूपनूं ॥ मुजप्रतिभासकेमहोयरे ॥ तुजमुजस
त्ताएकता॥अचलविमलअकलजोयरे॥पास०॥१॥एआकणीते

अर्थ ॥ अहोपार्श्वपरमेश्वर तमारास्वरूपनुं मुजने प्रतिभासके० प्रकर्षपणआभास एटलेसाक्षात्कार केमहोय केमथाय विचारीजोतांतो तारेमारे सत्ताएकछे माटेअ भिन्नताछे एटले भिन्नभाविपणाविना तारास्वरूपनुं मुजनेप्रतिभासकेमथाय वलीनि श्चेनयथी हुंमारास्वरूपने संभारुंतो जेमतुंतारा स्वरूपथी त्रणेकालेंचल्योनही तेमहुं पण मारास्वरूपथी चल्योनथी वलीजेमतुंनिर्मल तेमहुंपणकर्ममलरहित वलीजेम तुजनेंकालादिकें कल्योनही तेमनिश्चेकालादिकें हुंपणअकलतुं माटेएत्रणे व्युत्पत्ति यें एकता जोयके० देखीने अहोपार्श्वजिन तारुंरूपभिन्नपणे प्रत्यक्षकेमकरीशकुं॥१॥

मुजप्रवचनपक्षथी ॥ निश्चयभेदनकोयरे ॥ विवहारेंल
खिदेखीयें ॥ भेदप्रतिभेदबहुलोयरे ॥ पास० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेपरमेश्वर उत्तरकहेछे के हेआनंदघन निश्चेनयनी अपेक्षाकरियेंतो ता रेमारे एपरमात्मा एजीवात्मा एवोभिन्नभावीपणानो भेदकोयनथी अने व्यवहारन यनो आश्रयकरीने देखीयेंतो एटले रुदयनेत्रें हेतुप्रतिहेतुयें अवलोकनकरियें तो एजीवते लोयके० लोकनेजविषे बहुके० घणाभेदप्रतिभेदथाय एकदेवता एकमनुष्य तेमांवली देवतादेवतामां मनुष्यमनुष्यमां वलीतेजजीवने नरकप्राप्तथयुं एप्रतिभेद तेमांपणएक पेलीनरके एकतातमीनरकें एरीतेंप्रतिभेदमां प्रतिभेदघणाथाय॥२॥

बंधनमोखनहीनिश्चयें ॥ विवहारेंभजदोयरे ॥ अखंडित
अबाधितसोयकदा ॥ नितअबाधितसोयरे ॥ पास०॥ ३ ॥

अर्थ ॥ वलीहेआनंदघन निश्चेनयेंजजो आत्माने अवलोकनकरियें तोआत्मात्र णेकालें कर्मबंधनेनबंधाणुं केमकेनिश्चेथी जीवअरूपीजकह्युं तोअवस्तुनुंबंधहुं अने बंधनहीतोमोक्षके० मूकीजवुंजनथी एटलेनिश्चेनय बंधमोक्षनथी अनें व्यवहारनया सरीबंधमोक्षएबे भजके० अवधार एटलेंव्यवहारनयें एआत्माअखंडितनही अक्षरनो अनंतमोविभाग ज्ञानरहियुं तेमाटे अनादिनही पर्यायमरणमाटे अचलनही गत्या गतकरवामाटे नित्यनही क्षीणविनश्वरकर्मेपीडित माटे अबाधितनही एरीतेंव्यवहार

नयाश्रयीसोयके० आत्माने तेजआत्मा निश्चेनयविचारियेंतो आठरुचकप्रदेशथीएआ त्मानुं स्वरूपत्रणेकालें अखंडितछे अणाऽणअपज्ञायमिण [illegible] माटेअनादिछे आत्मा नेसर्वथा ज्ञाननोअनाव नथयोमाटे अचल त्रणकाले अनाअअपेक्षायेनित्यछे अबाधि [illegible] मायके० आत्माछे तते अनादिस्वरूपनी अपेक्षायें बाधापीडानहींमाटेअव्याबाधगुणीनें

अन्वयहेतुव्यतिरेकथी ॥ अंतरातुकमुरूपरें ॥ अंतरंग

अन्वयहेतुव्यतिरेकथी ॥ आत्मस्वरूपअनुपरें ॥ पाम० ॥ ४ ॥

टवाकारणं ॥ आत्मस्वरूपअनुपरें ॥

अर्थ ॥ हेप्रनु अन्वयहेतुथी तथा व्यतिरेकहेतुथी एटले स्वरूपनेअनावें परमा त्मानोअनाव तेथीतारारूपथीतुं रहित तेनेव्यतिरेक कहिये तेव्यतिरेकहेतुथी ताग मागस्वरूपमां अंतरके० नेदपड्योछे तेनारमारे अंतरमिटाववाने अन्वयहेतु का रणछे अनूपके० निरुपम एवोजेतागआत्मानुं आत्मस्वरूपते अन्वयहेतुथीछे एटले जेठते तेठतुंते अन्वयकहियें ॥ ४ ॥

आतमतापरमात्मता ॥ शुद्धनयनेदनएकरे ॥ अवरआ

रोपितधर्मछे ॥ तेहनानेदअनेकरे ॥ पाम० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हेप्रनु मागआत्मानेविषेरह्यो जे आत्मत्वधर्म तेनेविषेरहीजे आत्मताते मां अने परमात्मानेविषेरहीजे परमात्मतातेमां नेदकिंवाअनेद तेनुंतनरजे हेआनं दघन तागआत्मा अने मागपरमात्मामां शुद्धनयके० निश्चेनयथीकायनेदनथी के [illegible] मके अवरके० स्वरूपथी व्यतिरिक्त यावन्मात्र जेटलानंयोगजन्य आरोपितधर्मछे कर्मआरोपितछे तेनाअनेकनेदछे यथा कथकुंहाटककनकनाटक [illegible] हुं कयहुंनाटककबहुंफाटक चेटककबहुंरंक करमकीकिर्मीवानकहुं [illegible]नकनेदछे॥५॥

धरमीधरमथीएकता ॥ तेहमुरूपअनेदरे ॥ एकमता

लखएकता ॥ कहेतेमृढमनिखेदरे ॥ पाम० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हेआनंदघन आत्मत्वधर्मसहिततेआत्मा तेनारूपमा [illegible] अनेदपणुंछे केमके आत्मत्वधर्म सहितहुंतुं तेमजतोतारआत्म [illegible] तेमांअने मारामांनेदकोइनथी परंतुपरमात्मानी [illegible] थको त्रणेकालें कर्म्मलेपरहित निर्मलछुं एवुंजे एकता [illegible] लखके० निश्चेनेकहेछे तेनेविषे मूढमतिके० मृगरुढाता [illegible] से हठमाहीपणे अतात्विकपणुंछे ॥ ६ ॥

आतमधरमअनुसरी ॥ रमेजेआतमरामरे ॥ आनंद
घनपदवीलहे ॥ परमआतमतसनामरे॥ पास० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हेआनंदघन जेआत्मा आत्मधर्मने अनुसरी अंगीकारकरीने तद्रुपथतो रमेके० प्रवर्त्ते तदाकारपणुंनजे तेआत्मानुंनाम अभिधेयरामकह्यिं फरीतसके० ते ज आत्मानुंनाम आनंदशब्दे अनंतापदार्थोनुयोग्यता तद्रूपज्ञाननोभराव तेसंबंधनी षष्ठी जेमुक्तिपदवी तेनुंज लहेके० निदर्शनकरे वलीतेजआत्मानुंनाम परमात्माप णकह्यिं एरीतेंअहोप्रभु तमाराकेवाची मुजने तमारारूपनो प्रतिभास करतभवतुयसुं ॥ ७ ॥इतिश्रीपार्श्वजिनस्तवनसंपूर्ण ॥

॥ अथश्रीमहावीरजिनस्तवनलिख्यते ॥

॥ पंथडोनिहालुंरेबीजाजिनतणोरेएदेशी ॥

चरमजिणेसरविगतस्वरूपनूंरे ॥ भावुंकेमसरूप ॥ साका
रीविणध्याननसंभवेरे ॥ एअविकारअरूप ॥ चरम० ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हेशुद्धचेतना चरमजिणेसर शासननायक तेनुंस्वरूपतुंचिंतव तेवारे शु द्धचेतनाकहेछे जे तेतोविगतस्वरूपीछे एटले मनपर्यायज्ञानीथी पण जेनुंस्वरूप जाण्युंजायनही तोहुंशीरीतेंजाणीशकुं वलीसिद्धांतोमां सालंबनध्यानकह्युंछे तोरूप विना आलंबनकेमसंभवे अने आलंबननेअभावे ध्याननोअसंभव तेमाटे साकारी के० आकारसहितविना ध्यानकेमकरीशकुं फरीएपरमेश्वर ज्ञानावरणादिक कर्मना विकाररहित माटेअविकारी तथारूपआकाररहित माटेअरूपी तोएवाचरमपरमेश्वर अलखस्वरूपीने स्वरूपेकेमचिंतवीशकुं ॥ १

आपसरूपेंआतममांरमेरे ॥ तेहनाधुरवेभेद ॥ असंखउ
कोसेंसाकारीपदेंरे ॥ निराकारीनिरभेद ॥ चरम० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हेशुद्धचेतना तेंकह्युंजे विगतस्वरूपिने शीरीतेंध्यायीशकुं तेतारूंवचन स त्यासतछे केमके० अरूपीनुंध्यानसंभवे तेमाटेसत्य अनेतुंपण चेतनाचिंतववारूपछो माटेधर्मेरहित अनेहुंपण आत्माछतो अपरूपीछुं माराधर्मेरहितछुं एटलेआपणेवे विगतस्वरूपीनोध्यानध्यायवाने निरर्थकछुं परंतुतुंज शुद्धचेतनाथयीथकी माराआत्मा मांरमें तेवारेंहुंपण आपसरूपजे मारोआत्मा तेमांरमुं जेआत्मा आपस्वरूपें आत्मा मांरमे तेआत्माने ध्याताध्येयपणुं फरिकह्युंछे केमके तेआत्माने तथापरमात्माने

अनेदछे घनघातीआ चारकर्मखपीने अघातीआचारकर्म अवशेषरहिगया तेथी ते वाआत्माना प्रथमथीबेनेदथया एकसाकारी परमात्मा बीजोनिराकारी परमात्मा तेमांसाकारी परमात्माना वलीबेनेदछे एकतीर्थंकर नामकर्मोदयी साकारी बीजो अतीर्थंकरनामकर्मोदयी साकारी तेमांतीर्थंकर साकारीपद उत्कृष्टपदे १७० अने अतीर्थंकरसाकारी उत्कृष्टपदे नवकोडी केवली जेआकारसहित वर्ते तेसाकारी कहियें बीजो परमात्मानो नेद आकाररहित माटे निराकारी ते अनंतसिद्धो ना एकरूप माटे निरनेद नेदरहित जाणवा केमके अनंतसिद्धोनो एकरूप माटे निरनेद जाणवा ॥ २ ॥

सूखमनामकरमनिराकारजेरे ॥ तेदनेदनहीअंत॥निराका
रजेनिरगतिकर्मथीरे ॥ तेदअनेद अनंत ॥ चरम० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ फरीहेशुद्धचेतना आवचनकहुंतुंते लाडनुंवचनछे जेनिराकारनाबेनेद एकसूक्ष्मनामकर्म्मे निराकार एकनिर्गतकर्मेनिराकार एमतेओनाकथनतुं आश्या नकारणीयतो प्रस्तावनथी परंतु निराकारनाममात्र नेदनाकथन केवाकारणे इहांप्र स्ताव जे सूक्ष्मनामकर्मोदयथी पाम्युंजेणेनिराकारीपणुं तेनीनेदसंज्ञाकरियें तोतेनो अंतनही पारनही अनंताछेमाटे वलीनिरगतनाम सर्वथाखपाव्याछेकर्म्मजेणे तेथी निराकारीपणुं सहजेसिद्धथयुंछे तेनानेदपणअनंतछे सर्वसिद्धोनीसत्ता असंख्यातप्र देशात्मक निन्नपणामाटे अनंतछे ॥ ३ ॥

रूपनहीकइयेंबंधनघटयुंरे ॥ बंधनमोक्षनकोय॥बंधमोख
विणसादिअनंतनुंरे॥ नंगसंगकेमहोय ॥ चरम० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीहेआनंदघनजो आत्माने रूपनहीतो बंधनकइयेंघटयुं एटलेकर्म थीबंधाइजावुं क्यालेंसंनव्युं एटलेरूपविनाबंधनुं असंनव अनेजेवारेंबंधनही आ त्मात्रणेकालें अबंधकमानसो निरलेपमानसोतो पुण्यपापनाक्षयथी जेमोक्ष तेमोक्ष कोयनही तेमोक्षनेअनावें सादिअनंतनंगानुसंगके० संनवकेमहोय ॥ ४ ॥

द्रव्यविनातेमसत्तानवीलहेरे॥सत्ताविणस्योरूप ॥ रूपवि
नाकेमसिद्धअनंततारे॥नावुंअकलसरूप॥चरम०॥५॥

अर्थ ॥ जेमकोइमनुष्यें कोइनेपुछयुंजे एनूतलमांघटछे तेवारेंतेणे नूतलसामुंजो यीने नूतलमां घटस्वरूपनहीतुं तेवारेंकह्युंजे नूतलेंघटद्रव्यनथी तेमजद्रव्यनेअना

वें सत्तानबीजदेके० इव्यतुंठतापणुंनपामियें अने सत्तानेअनावें रूपके०स्वरूपपण स्यो माटेहेआनंदघन रूपनेअनावें वस्तुनोअनावथयो अनेजो वस्तुनोजअनाव तेवा रेंएकक्षेत्रणचारनी गणनापणनसंनवे तोसिद्धनी अनंतताकेमसंनवे माटे चरमजिने सरखुं स्वरूपचिंतवन तमेकह्युंपणते अकलस्वरूपनुं स्वरूपकेमजाणुं तेतमेजकहो॥५॥

आत्मतापरिणतिजेपरिणम्यारे ॥ तेमुजनेदानेद ॥ तदाका
रविणमारारूपनुंरे ॥ ध्यावुंविधप्रतिषेध ॥ चरम० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेशुद्धचेतना तथा आनंदघन एवेप्रतें चरमजिनेश्वरकहेछे के आत्मा नेविषे रह्योजे आत्मत्वधर्म तेनेविषें आत्मतानुंपरिणमवुं तद्रूपथावुं एटलेजेआत्मस्व रूपनेविषेथिरतानावें प्रवर्त्त्यां रूपातीतनावें अनेदोपचारें ज्ञानदर्शनतेआत्मा आ त्मताते ज्ञानदर्शन एवीपरिणतीयें परिणम्या तेमुजनेदानेदके० तेआत्माने तथामा रे एटलुंजनेद के तेसाकारीपरमात्मा अनेहुंनिराकारी परमात्मा माटेजो बहिरात्म पणुंमूकी अंतरआत्मस्वरूपवंतथयो मारोअनेद अछेदादिक स्वरूपधर्मछे तेनेविषे तदाकारीछतो मारारूपनुं ध्यायवुंके० ध्यानकरे तेतो विधके० ध्याननोविधिछे अ ने तेवातदाकारीपणा विणके०विना स्वरूपधर्मनेअनावें रहस्यार्थे बहिरात्मवंतछते करेते प्रतिषेधके० निषेधविधिजाणवो ॥ ६ ॥

अंतिमनवगहणेतुजनावनुंरे ॥ नावसुंशुद्धसरूप ॥ तइयें
आनंदघनपदपामसुंरे ॥ आतमरूपअनूप॥चरम०॥ ७ ॥

अर्थ ॥ माटेवीरपरमेश्वरथी हाथजोडीवीनतीकरेछे केअहोस्वामिअंतिमनवग हणेके० आगलसर्वथा अनावीपणुं एवोनवते चरमावर्त्तन चरमकरण तथानवप रिणति नेपरिपाक तेटाणे तुजनावनुंके० परमात्मस्वनावनुं शुद्धस्वरूपलेइने तारा परमात्मानो माराआत्मामां नावसुंके० चिंतवनकरसुं तेवारें उपमारहित आनंद घन पदपामसुं तेआनंदघनपद केवुंछे जेमां उपमाउपमेयरहित एवो आत्मानुंस्वरू पछे एटले आत्मानुं आत्मित्वधर्मपणुंछे ॥ ७ ॥ ॥ इतिमहावीरजिनस्तवनसंपूर्ण॥

आचोवीसीनो बालबोध ग्यानसारजीकृतछे परंतुतेमांकठणछे [illegible] त घणुंविस्तारकरेलुंछे माटेतेमनालखवाथी काइकन्यूनकरीने मेंज्ञानचंद्र [illegible] नावार्थ सर्वलीधोछे कदापिउतावलमां कांपीओजखतां किहांचूकथईहोयतो वाचना

रे सुधारीवांचवुं तथा बेत्रणठेकाणे मनेपणचूकजेवुंलागेछे पणपरतएकजहति बी जीपरतो ज्ञानविमलजीनाटबानीहती माटेतेमनीसाथे एटबानुंबराबर मिलापनथ युं तेथीसुधारीशक्योनथी फरीपेला श्रीऋषभदेवना स्तवनमध्ये कोइकहेलीजारेलल ख अलखतणी तेनेठेकाणे अलखअलखतणी एममूलपाठमांलखाणुंछे तथापांचमां श्रीसुमतिनाथजीना स्तवननी चोथीगाथानुं बीजोपद वरजितसकलउपाधिने ठेका णे वरजित सकउपाधि नजरचूकथीथयीगयीछे तथाचौदमां अनंतपरमेश्वरना स्त वननीबीजीगाथामां फलअनेकांतलोचननदेखे तेठेकाणे लोचनदेखे एमपदलखायी गयुंछे फरीएजतवननी पांचमीगाथामां देवगुरुधर्मनी शुद्धिनेठेकाणे शुद्धकहोकेमर हे एमचूकथीथयुंछे इत्यादिकचूकथयेलीछेते मारीनजरमां पाछलथीआवी माटेआइ लखीछे जेनहीआवी तेनुंमिछाडुक्कडं ॥

इतिश्रीआनंदघनकृत चोवीसजिनस्तुति तथाश्री
ग्यानसारकृत बे स्तवनमली छवीसस्तवन
बालावबोधसहितसमाप्त

श्रीशांतिनाथायनमः

अथश्रीमद्यशोविजयजीउपाध्यायकृतद्रव्यगुणपर्याय
नोरासबालावोधसहितलिखियेंछैयें

श्लोक

इंद्रश्रेणीनतंनत्वाजिनंतत्वार्थदेशिनं ॥ प्रबं
धेलोकवाचात्रलेशार्थः कश्चिदुच्यते ॥ १ ॥

॥ ढालपहेलीचोपाइनीदेशी ॥

श्रीगुरुजितविजयमनधरी ॥ श्रीनयविजयसुगुरुआदरी ॥
आतमअरथीनेउपकार ॥ करुंद्रव्यअनुयोगविचार ॥ १ ॥

अर्थ॥श्रीजितविजयपंडित अनेश्रीनयविजयपंडित एवेहुरुडागुरुने चित्तमांतेना
रीने आत्माअर्थि ज्ञानरुचि जीवना उपकारनेहेते द्रव्यानुयोगनो विचार करुंछुं जेअ
नुयोगते सूत्रार्थव्याख्यान तेहना चारभेद शास्त्रेंकह्याछे १ आचारवचन आचारांग
प्रमुखसूत्र ते चरणकरणानुयोग २ संख्याशास्त्र चंद्रप्रज्ञप्तिप्रमुखसूत्र ते गणितानु
योग ३ ज्ञाताप्रमुख आख्यायिकावचन तेकथानुयोग ४ षड्द्रव्यादिविचारते सूत्रम
ध्येसूत्रकृतांग तथाप्रकरणमध्ये संमतितत्वार्थप्रमुख महाशास्त्र तेद्रव्यानुयोग एचा
रभेदमां द्रव्यानुयोग जे द्रव्यगुणपर्याय ते विचारेछे तनोमहिमांकहेछे इहांप्रथम
गुरुने नमस्कारकरीने प्रयोजनसहित अभिधेयदेखाड्युं पेहलेपदें नमस्कारकर्यो
ते मंगलाचरणदेखाड्युं अने इहांअधिकारी आत्मार्थिजीवछे तथाआत्मार्थिने अ
वोधथसे ते उपकाररूप प्रयोजनजाणवुं द्रव्यनो अनुयोगके० कथन तेइहांआत्मा
र्थि ज्ञानरुचिजीवनाउपकारनेअर्थेकरुंछुं ॥ १ ॥

विनाद्रव्यअनुयोगविचार ॥ चरणकरणनोनहिकोसार ॥
संमतिग्रंथेंभाख्युंइस्युं ॥ तेतोवुद्धजनमनमांवस्युं ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एद्रव्यानुयोगनो विचारकर्याविना केवलचरणसित्तरी तथाकरणसि
प्रमुखनो सारकोइछेनही एवुंसंमतिग्रंथनेविषेकह्युंछे तेतो बुद्धजननामनमांव

एबाह्यदृष्टीना चित्तमांवसेनही उक्तंच चरणकरणप्पहाणा ॥ ससमयपरसमयमुक्क वावारा ॥ चरणकरणस्ससारं ॥ णिच्छयसुद्धंनयाणंति ॥१॥ वलीतेहीजदृढकरेछे ॥२॥

शुद्धाहारादिकतनुयोग ॥ मोटोकहिउंद्रव्यअनुयोग ॥ एउप
देशपदादिकग्रंथें ॥ सांखलहीचालोशुभपंथें ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ बेतालीसदोषरहित शुद्धआहारलेवुं इत्यादिकयोगछे पणतेसर्व तनुके० न्हानायोगकहियें अने स्वसमयपरिज्ञानजे द्रव्यअनुयोगते मोटोयोगकह्योछे केमके शुद्धआहारादिकेंतो स्वाध्यायनुंज साधनछे एलांख उपदेशपद आददेइने ग्रंथोथीले इने शुभपंथेंके० उत्तममार्गेचालो पणबाह्यव्यवहार प्रधानकरीने ज्ञाननीगौणताक रवी ते अशुद्धमार्गजाणवो अनेजिहांज्ञाननी प्रधानता राखवी तेशुभ उत्तममार्ग जाणवो जेज्ञानादिकगुणनोहेतु गुरुकुलवासतेनेछांडी शुद्धआहारादिकनी यत्नावंत ने महादोषें चारित्रहानि कहीछे यतः गुरुदोषारंभितयालब्धकरणयत्नतोनिपुणधी भिः ॥ सन्निंदादेश्चतथाज्ञायतेयन्नियोगेन इतिषोडशके ॥ ३ ॥

एयोगेंजोलागेरंग ॥ आधाकर्मादिकनहिभंग ॥ पंचक
ल्पभाष्येंइमभाख्युं ॥ सदगुरुपासेइस्युंमेंसुण्युं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ माटे द्रव्यानुयोगविचाररूप जेज्ञान तेनेयोगें जोअभंग सेवारूप रंगला गे तो गुरुकुलवासें समुदायमध्ये ज्ञानाभ्यासकरतां कदाचित्आधाकर्मादि दोषलागे तोपण चारित्रभंगथायनही केमके भावशुद्धि बलवंतछेमाटे. एरीतें पंचकल्पभा ष्यमांकह्युंछे तथा सद्गुरुपासेथीपण एमसांभल्युं अतएव कल्पाकल्पतो अनेकांत शास्त्रेकह्युंछे ॥ आहागडाइस्मुंजंति अण्णमण्णेसकम्मुणा उवलित्तेवियाणिज्जाअणुव लित्तित्तिवापुणोएतेहिंदोहिंगणेहिं ववहारेणविज्जइ एतेहिंदोहिंगणेहिंअणायारं तुजाणए ॥ २ ॥ एमबीजाअंगनापहेलाअध्ययनमांकह्युंछे तथा किंचिच्छुद्धंकल्प्य मकल्प्यंस्यादकल्प्यमपिकल्प्यं॥पिंडःशय्यावस्त्रंपात्रंवाभेषजाद्यंवा॥१॥ देशंकालंपुरुष मवस्थामुपयोगशुद्धिपरिणामान्॥प्रसमीक्ष्यभवतिकल्प्यं नैकांतात्कल्प्यतेकल्प्यं ए मप्रशमरतिग्रंथमांकह्युंछे ॥ ४ ॥

बाह्यक्रियाछेबाहिरयोग ॥ अंतरक्रियाद्रव्यअनुयोग ॥ बाह्य
हीनपणज्ञानविशाल ॥ भलोकह्योमुनिउपदेशमाल ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ आवश्यकादिरूपबाह्यक्रियातेतो बाह्ययोगछे अनेद्रव्यानुयोगजे स्वसम

यपरिज्ञानते अंतरंगक्रियाछे माटेजे बाह्यक्रियायेंहीनहोय पणज्ञानविशालबहुश्रुत होय एवोमुनीश्वरते उपदेशमालामां श्लोककह्योछे यतः नाणाहिउवरतरं हीणोवि हुपवयणंपन्नावंतो ॥ नयदुक्करंकरंतो सुट्ठुविअप्पागमोपुरिसो ॥ १ ॥ हीणस्सविसुद्धपरुवगस्स नाणाहियस्सकायवं तेमाटे क्रियाहीनतादेखीनेपण ज्ञानवंतनी अवज्ञा नकरवी तेहनेज्ञानयोगेकरीनेजप्रनाविकजाणवुं ॥ ५ ॥

द्रव्यादिकचिंतायेंसार ॥ शुक्लध्यानपणलहियेंपार ॥ ते
माटेएहिजआदरो ॥ सदगुरुविणमतन्नूलाफिरो ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इहांकोइपुछेजे क्रियाहीन ज्ञानवंतनेजलोकह्योतेतो दीपकसम्यक्तनी अपेक्षायेंकह्यो पणक्रियाहीनतायें मात्रज्ञानथीज पोतानो उपकारनथाय एमकहेते नीशंकाटालवाने द्रव्यादिकज्ञान तेहिजशुक्लध्यानद्वारें मोक्षनुंकारणछे माटेउपादेयछे एद्रव्यादिकनी चिंतवणायें शुक्लध्याननोपण पारपामियें केमके आत्मद्रव्य गुणपर्यायनेदचिंतायें पण शुक्लध्याननो पहेलोपायोहोय अने तेनीज अनेदचिंतायेंशुक्लध्याननो वीजोपायोहोय तथाशुद्धद्रव्य गुणपर्यायनीनावनायें सिद्धसमापत्तिथाय तेतो शुक्लध्याननुंफलछे एमप्रवचनसारोद्धारमध्येकह्युंछे जोजाणइअरिहंते दवगुणपज्जवंतेहिं ॥ सोजाणइअप्पाणं मोहोखलुजाहितस्सलयं ॥ १ ॥ तेमाटेएहिज द्रव्यानुयोगने आदरो एहिजउपायछे पणसद्गुरुविना स्वमतिकल्पनायें न्नूलाफिरसोनही ॥ ६ ॥

एहनोजेणेपाम्युंताग ॥ तेघेएहनोजेहनेराग ॥ एवेविण
त्रीजोनहिसाध ॥ नाख्योसंमतिअरथअगाध ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेजेज्ञानविना मात्रचारित्रथीज संतुष्टथायछे तेहनेशिक्षा कहेछे एकतो एद्रव्यानुयोगनोजे तागके० पारपामी संमतिप्रमुख तर्कशास्त्रनणीने जेगीतार्थथयो तेतथा वीजो उवेके० सामान्यप्रकारें एद्रव्यानुयोगनो जेनेरागछे तेगीतार्थनिश्रित एवेहुविना त्रीजोसाधुनही एवोअगाधअर्थ संमतिग्रंथमांकह्योछे तेमाटेज्ञानविना चारित्रजनहोय उक्तंच गाथा ॥ गीयछोयविहारो वीउगीयछनिस्सिउन्नणीउ ॥ इत्तोतइयविहारो नाणुणाउजिणवरेहिं ॥ १ ॥ एटलोविशेषजे चरणकरणानुयोग दृष्टी निशीथ कल्प व्यवहार दृष्टीवादीध्ययने जघन्यमध्यमोत्कृष्ट गीतार्थजाणवा द्रव्यानुयोगदृष्टीते संमत्यादिक तर्कशास्त्रपारंगामीज गीतार्थजाणवा अनें तेनीनिश्रायें ज अगीतार्थनेंचारित्रकहेवुं ॥ ७ ॥

तेकारणगुरुचरणआधीन ॥ समयसमयइणयोगेंलीन ॥ साधुजेकिरियाव्यवहार ॥ तेहिजअममोटोआधार ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ एद्रव्यानुयोगनी लेशमात्रप्राप्ति पोताना आत्मानें कृतकृत्यताकहेठे ते माटे द्रव्यानुयोगनी बलवत्तानेंहेतें गुरुचरणनें आधीनतायेंकरी मतिकल्पनापरिहरीनें समयसमय एद्रव्यानुयोगें लीनके० आसक्तथका जेक्रियाव्यवहारसाधु ठेयें तेहिजअमनें महोटोआधारछे केमके एनाथी इछायोगसंपजे तेहनुंलक्षणकहेछे कर्तुमिछोःश्रुतार्थस्य ज्ञानिनोपिप्रमादिनः॥विकलोधर्मयोगोय मिछायोगउदाहृतः॥१॥ एमललितविस्तरादिग्रंथनेविषेकह्युं एमइछायोगेंरहीनें हुंपरोपकारनेअर्थें द्रव्यानुयोगनो विचारकहुंछुं पणएटलेज संतुष्टकरवोनही विशेषार्थे गुरुसेवामूकवीनही एहितशिक्षाआगलीगाथामांकहेछे ॥ ८ ॥

संमतितत्वार्थमुख्यग्रंथ ॥ मोटाजेप्रवचननिग्रंथ ॥ तेहनो लेशमात्रएलह्यो ॥ परमारथगुरुवयणेरह्यो ॥ ए ॥

अर्थ ॥ संमतितत्वार्थ प्रमुखग्रंथजे महोटानिग्रंथ प्रवचनरूपछे तेनोलेवलेशमात्र एलह्योके० आप्रबंधमांबाध्योछे पणपरमार्थें गुरुवचनरहेजो थोडुंजाणीने गर्वकरशोनही अधनेनधनंप्राप्तं तृणवत्मन्यतेजगत् एदृष्टांते माटेज कपरलाचारनय ते अतिगंभीरछे घणाने नपरिणमे एमजाणीने सिद्धांते पेहेलादेखाड्यानथी अनेजेगंभीरहोयगुरुआधीनहोय तेहनेजदेखाडवाकह्याछे ॥ ए ॥

॥ ढालबीजोधनधनसंप्रतिसाचोराजाएदेशी ॥

गुणपर्यायतणूजेभाजन ॥ एकरूपतिहुंकालेंरे ॥ तेहद्रव्यनिजजातिकहियें ॥ जसनहिभेदविचालेंरे॥ जिनवाणीरंगेमनधरियें ॥ १ ॥ एआकणीछे॥

अर्थ ॥ गुणतथापर्यायनोजे भाजनके० स्थानक तेजेहनोअतीत अनागत तथावर्त्तमान एत्रणेंकालें एकस्वरूपेंहोय पणपर्यायनीपरेफिरेनही तेहनें निजजातिके० पोतानी स्वजाति द्रव्यकहियें जेमज्ञानादिक गुणपर्यायनुं भाजन तेजीवद्रव्यअने रूपादिगुणपर्यायनुं भाजनते पुद्गलद्रव्य तथा रक्तादि घटादि गुणपर्यायनुं भाजन ते मृद्द्रव्य वलीतंतुतेपटनीअपेक्षायें द्रव्य अनेतंतुअवयवनी अपेक्षायें पर्याय केमके पटनेविचालें पटावस्थामध्ये तंतुनोभेदनथी अनेतंतुअवयव अवस्थामध्ये अन्य

स्वरूपनेदछे माटेपुज्जलस्कंधमां द्रव्यपर्यायपणोतेअपेक्षायेंजाणवो इहांकोइकेहेसेजे एरीतेंद्रव्यत्वपणो स्वनाविकनथयुं पणअपेक्षिकथयुं तेनेउत्तरजे सवलवस्तुनो व्यवहारते अपेक्षायेंजहोयछे माटेइहांदोपनथी जेसमवायीकारणप्रमुखें द्रव्यलक्षण मानेछे तेनेपणअपेक्षा अवश्यअनुसरवी गुणपर्यायवत्द्रव्यं इतितत्वार्थे एजिनवाणीनेंरंगके० विश्वासें मनमांधरियें ॥ १ ॥

धरमकह्वीजेगुणसहनावी ॥ क्रमनावीपर्यायोरे ॥ निन्नअनिन्नत्रिविधतियलक्षण ॥ एकपदारथपायोरे ॥ जिन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ सहनावीके० यावत्द्रव्यनावीजेधर्म तेनेगुणकहियें जेमजीवनोगुण उपयोग अनेपुज्जलनोगुण ग्रहणपणो तथाधर्मास्तिकायनो गतिहेतुत्वगुण वलीअधर्मास्तिकायनो स्थितिहेतुत्वगुण अनेआकाशद्रव्यनो अवगाहनाहेतुत्वगुण कालद्रव्यनोवर्त्तनाहेतुत्वगुण एरीतेंद्रव्यना स्वनाविकधर्म ते गुणजाणवा तथा क्रमनाविके० यावत्द्रव्यनावीते पर्यायकहियें जेमजीवने नरनारकादिक पर्याय तथापुज्जलने रूपरसादि परावर्त्तिते पर्यायजाणवा एमद्रव्यादिक ते द्रव्य गुण पर्याय एत्रणरीतें निन्नछे तथालक्षणादिकथी अनिन्नछे अनेप्रदेशना अविनागथी त्रिविधछे केमके नवविधोपचारें एकेकमां त्रणत्रणनेद आवे तेनवविधोपचारकहेछे १ द्रव्येंद्रव्योपचार २ द्रव्येंगुणोपचार ३ द्रव्येंपर्यायोपचार ४ गुणेंद्रव्योपचार ५ गुणेंगुणोपचार ६ गुणेंपर्यायोपचार ७ पर्यायेंद्रव्योपचार ८ पर्यायेंगुणोपचार ९ पर्यायेंपर्यायोपचार तथातियलक्षणके० उत्पादव्यय अने ध्रौवस्वरूपछे एहवानावने एकपदार्थे जैनप्रमाणेपाम्यो थकोछे एहाररूप पाठलावेपद जाणवा ॥ २ ॥

जेममोतीउज्वलतादिकथी ॥ मोतीमालाअलगीरे ॥ गुणपरयायव्यक्तिथीजाणो ॥ द्रव्यशक्तितेमवलगीरे ॥ जिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ हवेआढालमांप्रथम द्रव्यगुणपर्यायनो नेदयुक्तिदेखाडेछे जेममोतीथकी तथामोतीना उज्वलतादिक धर्मथकी मोतीनीमाला अलगीछे तेमज द्रव्यनीशक्ति तेगुणपर्यायनी व्यक्तिथीअलगीछे तथाएकप्रदेश संबंधेंवलगीछे एटलेएमजे मोतीते पर्यायनेठामेंजाणवा अने उज्वलतादिकधर्मते गुणनेठामेजाणवो तथामालाते द्रव्यनेठामेजाणवी एमदृष्टांतजोडवो एरीतेंघटादिद्रव्य प्रत्यक्षप्रमाणें सामान्यविशेषरूप अनुनवेछे तेसामान्यउपयोगें मृत्तिकादि सामान्यनासेछे विशेषउपयोगें घटादिक विशेषनासेछे तेमांहेजे सामान्यते द्रव्यजाणवुं अनेविशेषते गुणपर्यायरूपजाणवा ॥ ३ ॥

उरधतासामान्यशक्तिते ॥पूरवअपरगुणकरतीरे॥ पिंमकुसू
लादिकआकारें ॥ जेममाटीअणफिरतीरे ॥ जिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेआगलीगाथामां द्रव्यनेसामान्यकह्युं तेसामान्यना बेप्रकारछे तेदेखा डेछे एकउर्ध्वता सामान्यरूपद्रव्यशक्ति ते तेह्नेकहियें जे पूरवके० पहेला अने अप रके० आगलें गुणके० विशेष तेनेकरती तेसर्वमां एकरूपेरहीछे जेम पिंमके० माटी नोपिंमो अने कुसूलादिके० कोठीप्रमुख एवामृत्तिकाना अनेक आकारफिरेछे पणते मां माटीफिरतीनथी तेपिंमकुसूलादिक आकारने उर्ध्वतासामान्यकहियें अनेजो पिंमकुसूलादिक पर्यायमां अनुगत एकमृद्द्रव्यनकहियेंतो घटादिपर्यायमां अनुगत घटादिद्रव्यपणनकहेवाय तेथीसर्वविशेषरूपथातां क्षणिकवादिबौद्धमतआवे अथवा सर्वद्रव्यमां एकजद्रव्यआवे माटेघटादिद्रव्य अनेतेमां सामान्यमृदादिद्रव्य अनुनयने अनुसारें परापरउर्ध्वतासामान्य अवश्यमानवा घटादिद्रव्य तेरक्तादिकथोडापर्यायने व्यापेछे अनेमृदादिद्रव्यते रक्तादिक घटादिक घणापर्यायनें व्यापेछे एमनरनारकादि कपणुतेपणद्रव्यनो विशेषजाणवो एसर्वनैगमनयनुंमत अने शुद्धसंग्रहनयनेमतेतो सदद्वैतवादें एकजद्रव्यआवे एमजाणवुं ॥ ४ ॥

भिन्नविगतमांरूपएकजे॥द्रव्यशक्तिजगदाखेरे॥तेतिर्यक्सा
मान्यकहीजें ॥ जेमघटघटपणेराखेरे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेबीजोभेददेखाडेछे ते भिन्नविगतमांके० भिन्नप्रदेशीविशेषमां जेद्रव्यपो तानीशक्ति एकरूपएकाकारछेते देखाडेछे तेतिर्यक्सामान्यछे जेमघटघटपणे घटत्वरा खेछे इहांकोइपुछेजे घटादिकभिन्नव्यक्तिमां जेमघटत्वादिक एकसामान्यछे तेमज पिंम कुसूलादिक भिन्नव्यक्तिमां मृदादिक एकसामान्यछे तो तिर्यक्सामान्य अने उर्ध्वता सामान्यनो स्योविशेषछे तेनेकहियेंजे देशभेदें जिहांएकाकारप्रतीतउपजे तिहांतिर्य क्सामान्यकहियें अनेजिहांकालभेदें अनुगताकारें प्रतीतउपजे तिहांउर्ध्वता सामा न्यकहियें कोइकदिगंबरानुसारी एमकहेछे जेपद्द्रव्यने कालपर्यायरूप उर्ध्वताप्रच यछे अनेकालविना पांचद्रव्यने अवयवसंघातरूप तिर्यक्प्रचयछे तेनेमते तिर्यक्प्र चयनो आधार घटादिक तिर्यक्सामान्यथाय पणपरमाणुरूप प्रचयपर्यायनो आ धारभिन्नद्रव्यजोइयें माटेपांचद्रव्यने खंध देश प्रदेशनावेंज एकअनेक व्यवहारउप जाववो पणतिर्यक्प्रचय नामांतरनकहेवुं ॥ ५ ॥

शक्तिमात्रतेद्रव्यसर्वनी ॥ गुणपर्यायनीलीजेंरे ॥ कार्यरूप
निकटदेखीने ॥ समुचितशक्तिकहीजेंरे ॥ जिन० ॥ ६ ॥

अर्थ॥ हवेकर्ध्वतासामान्यशक्तिनावेनेददेखाडेछे तेमांजे सर्वद्रव्यनी पोतपोताना गु णपर्यायनी शक्तिमात्रलीजे तेउंघशक्तिकहियें अनेजेकार्यरूप निकटके० वहेलुंउपज तुंदेखीयेंतेकार्यनीअपेक्षायें तेनेसमुचितशक्तिकहियेंसमुचितके० व्यवहारयोग्य ॥६॥

घृतनीशक्तियथातृणत्नावें ॥ जाणीपणनकहायरे ॥ दुग्धा
दिकन्नावेंतेजननें ॥ नापीचित्तसुहायरे ॥ जिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ इहांदृष्टांतकहेछे जेमपुजल द्रव्यमां घृतउपजवानीशक्तितृणनावेंछे न हीकांतृणआहारथीधेनुडुग्धआपेछे तेडुग्धमां घृतनीपजवानीशक्तिकिहांथीआवी एम अनुमानप्रमाणें तृणमांघृतशक्तिजाणी पणकहेवायनही माटेतेनेउंघशक्तिकहियें अ नेजोतृणने डुग्धादिकन्नावेंके० दूध दहीप्रमुखने परिणामें घृतशक्तिकहियेंतो तेनापी थकी जनके० लोकनाचित्तमांसुहायछे माटेतेनेसमुचितशक्तिकहियें एटले अनंत रकारणमां समुचितशक्तिकहेवी अने परंपरकारणमां उंघशक्तिकहेवी एविवेकछे एवे नाज १ अन्यकारणता २ प्रयोजनता एवेनीजानामपणकहेछे तेजाणवा॥ ७ ॥

धरमशक्तिप्राणीनेपूरव ॥ पुजलनेआवर्त्तरे ॥ उंघेंसमुचि
तजेमवलीकहियें ॥ छेहलेतेआवर्त्तरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ हवेएशक्तिते आत्मद्रव्यमांफलावेछे जेम प्राणीके० नव्यजीवने पूरव के० पहेलाअनंतापुजलपरावर्त्तवित्या तेमांपण उंघेंके० सामान्येंधर्मेशक्तिकहियें जोनकहियें तो छेहलेपुजलपरावर्त्ततेशक्तिआवेनही नासतोविद्यतेनाव इत्यादिवच नात् अनेछहेलेपुजलपरावर्त्तेधर्मनी समुचितशक्तिकहियें अतएव अचरमपुजलपराव र्त्तनावबालकालकह्युंछे अने छहेलोपुजलपरावर्त्तधर्मयौवनकालकह्युंछे अचरमपरि अट्टेसु कालोनवबालकालमोनणिउ ॥ चरमोउधम्मजुव्वण कालोतहचित्तनेउ त्ति ॥ १ ॥ एयोगनीबीजीवीसीमध्येकह्युंछे ॥ ८ ॥

कारयनेदेशक्तिन्नेदइम ॥ व्यवहारेंव्यवहरियेंरे ॥ निश्च
यनानाकारयकारण ॥ एकरूपतेधरियेंरे ॥ जिन० ॥ ९॥

अर्थ ॥ एमएकेकाकार्यनी उंघसमुचितरूप अनेकशक्तिएकद्रव्यनीपामियें केमके कार्यनानेदेंशक्तिनोनेदथायछे तेव्यवहारनयेंकरी विवहरियें केमके एव्यवहारनय ते

कार्यकारणनेदमानेढे अनेनिश्चयनयथीद्रव्यना नानाप्रकारनाकार्यकारण तेएकशक्ति स्वनावज हृदयमांधरियें नहीतोस्वनावनेदेंद्रव्यनेदथाय अनेव्यवहारनयें ते तेका लादिकनीअपेक्षायें एकनेअनेक कार्यकारण स्वनावमानता कोइदोषनथी कारणांत रनी अपेक्षापण स्वनावमांज अंतर्नूतढे तेमाटेतेनोपण निष्फलपणुंनथाय त थाशुद्धनिश्चयनयनेमतेंतो कारणकार्यतेमिथ्याढे आदावंतेचयन्नास्ति वर्तमानेपितत्त था इतिवचनात् कार्यकारणकल्पनारहित शुद्धअविचलितरूपद्रव्यजढे एमजाण वुं एशक्तिरूपद्रव्यवखाणुं ॥ ए ॥

गुणपर्यायविगतबहुनेदें ॥ निजनिजजातिवरतेरे ॥ शक्ति-
रूपगुणकोइकनापे ॥ तेनहिमारगनिरतेरे ॥जिन०॥१०॥

अर्थ ॥ हवेव्यक्तिरूपगुणपर्यायवखाणेढे तेगुणपर्यायनीव्यक्ति बहुनेदेंके० अने कप्रकारें निजनिजजाति सहनाविक्रमनावि कल्पनाकृत आपआपणेस्वनावेवर्तेढे को इकदिगंबरानुसारी ते शक्तिरूपनेजगुण नापेके० कहेढे तेआवीरीतेजे जेमद्रव्यगुण पर्यायनुंकारणद्रव्यढे तेमगुणपर्यायनुं कारणगुणढे द्रव्यपर्यायद्रव्यनो अन्यथानाव जेमनरनारकादिक अथवा द्यणुक त्र्यणुकादिक गुणपर्यायगुणनोअन्यथानावनही जेममतिश्रुतादिक विशेष अथवा नवस्थसिद्धादि केवलज्ञानविशेष एमएकद्रव्य वी जोगुण एजातिशाश्वत अनेपर्यायथीअशाश्वत एमआव्युं एमकहेढे ते निरतेके० रुडे मार्गेनही केमके एकल्पनाशास्त्रथी तथायुक्तियेंमिलेनही ॥ १० ॥

पर्यायथीगुणनिन्ननन्नापीउं ॥ संमतिग्रंथेव्यक्तिरे ॥ नेद
नोनेदविवक्षावशथी॥ तेकेमकहियेंशक्तिरे॥जिन०॥११॥

अर्थ ॥ तेहनेउत्तरकहेढे जेपर्यायथकीगुणते निन्नके० जूदोनाप्योनथी एमसंम तिग्रंथनेविषे व्यक्तिके० प्रगटअदरेकह्युंढे गाथा ॥ परिगमणंपज्जाउ अणेगकरणे गुणत्तिवुच्चा ॥ तहविणगुणत्तिनणइ पज्जवणयदेशणाजह्मा ॥ १ ॥ अर्थ ॥ जेमक्रमनाविपणुं पर्यायनुंलक्षणढे तेमअनेकपणुंकरवुं तेपणपर्यायनुंलक्षणढे द्र व्यतोएकजढे अनेज्ञानदर्शनादिकनेदकरेढे तेपर्यायढे पणगुणनकहियें केमके द्रव्य पर्यायनीदेशना नगवंतनीछे पणद्रव्यगुणनीदेशनानथी इतिगाथार्थ ॥ इहांकोइपुढे जे एरीतेंजो गुणते पर्यायथीनिन्ननथी तोद्रव्यगुणपर्याय एत्रणनानाम किमकहोढो तेमनेकहेवुंजे विवक्षाके० नेदनयनीकल्पना तेहथीजेम तैलस्यधारा इहां तेलने धारा निन्नकहीदेखाड्या पणतेल अनेतेलनीधारा निन्ननथी तेमसहनावी क्रमना

ची कहीनें गुणपर्याय भिन्नकहीदेखाड्या पणपरमार्थेंभिन्ननथी एरीतें भेदनोभेद उपचरितछे तेहनेंशक्तिकेमकहियें जेम उपचरित गायदूजेनही तेम उपचरितगुणतेपणशक्तिधरेनही ॥ ११ ॥

जोगुणत्रीजोहोएपदारथ ॥ तोत्रीजोनयलहीयेंरे ॥ द्रव्यारथपर्यायारथनय ॥ दोइजसूत्रेंकहीयेंरे ॥ जिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेजेगुणनेंपर्यायथीभिन्नमानेछे तेहनेंदूपणआपेछे के जोगुणएहवोत्रीजोपदार्थद्रव्यपर्यायथी जूदोभावहोय तोनयपणत्रीजो लहीयेंके०पामियें पणतेतोकिहांकह्यानथी सूत्रमांहेतो १ द्रव्यार्थ २ पर्यायार्थएवेहुजनयकह्याछे अनेंजोगुणहोय तोत्रीजोगुणार्थनयपणकह्योजोइयें उक्तंचसंमतौ दोउणणयाभगवया दव्वठियपज्जवठियाणियया ॥ जइपुणगुणोविहुंतो गुणठियणउविजुज्जंतो ॥ १ ॥ जंचपुणभगवया तेसुसुत्तेसुगोयमाईणं ॥ पज्जवसणाणीयया वागरियातेणपज्जाया ॥ २ ॥ रूपादिकनें गुणकहीनें सूत्रेंवोलाव्यानथी पणवन्नपज्जवा गंधपज्जवा इत्यादिकपर्यायशब्दें वोलाव्याछे तेमाटेपर्यायकहियें पणगुणकहियेंनही अनें एगगुणकालए इत्यादिकठामें जेगुणशब्दछे तेगणितशास्त्रसिद्धपर्यायविशेष संख्यावाचीछे पणतेवचन गुणास्तिकनयविषयवाचीनथी उक्तंचसंमतिग्रंथे जंपइअछिसमए एगगुणोदसगुणोअणंतगुणो॥ रूवाईपरिणामो भन्नइतम्हागुणविसेसो ॥ १ ॥ गुणसद्दमंतरेणावि तंपुपज्जवविसेससंखाणं॥ सिज्जइनवरंसंखाणे॥सत्थधम्मोणयगुणोत्ति॥ २॥जहदससुदसगुणमिय॥ एगंमिदसत्तणंसमंचेव॥अहियंमिविगुणसद्दे तहेवइयंपिदठव्वं ॥३ ॥ एमगुणतेपरमार्थदृष्टीयें पर्यायथीभिन्ननथी तोतेनेद्रव्यनीपरें शक्तिरूपकेवीरीतेंकहियें ॥ १२ ॥

जोगुणदलपर्यवनुंहोवे॥ तोद्रव्येंसुंकीजेरे॥गुणपर्यायपटंतरकेवल॥ गुणपर्यायकहीजेरे ॥ जिन०॥१३॥

अर्थ ॥ हवेजेपर्यायनुंदलतेगुणछे माटेगुणनेजेशक्तिरूपकहेछे तेहनेदूपणआपेछे जोगुणपर्यायनुं दलके० उपादानकारणहोय तोद्रव्येसुंकीजे द्रव्यनोकामगुणेजकीधो माटे १ गुण २ पर्याय एवेजपदार्थकहो पणत्रीजोद्रव्यपदार्थनहोय कोइकहेसे जे द्रव्यपर्याय तथागुणपर्यायरूपकार्यभिन्नछे तेमाटेएकद्रव्य वीजुंगुणरूपकारणभिन्नकहियें एमकहेछे तेजूगोछे केमके कार्यमांकारणशब्दनोप्रवेशछे तेथीकारणभेदेंकार्यभेदसिद्धथाय अनेकार्यभेदसिद्धथयोहोय तोकारणभेदसिद्धथाय नहिंकांअन्योन्याश्रयनामेदूपणउपजे माटेगुणपर्यायजेकहियें तेगुणपरिणामनोजे पटंतर भेदकल्पना

रूप तेथीजकेवलसंनवेछे पणपरमार्थनही अनेड्व्यगुणपर्याय एत्रणनामकहियेंछे तेपणनेदोपचारेंजकहियेंछेयें एमजाणवुं ॥ १३ ॥

एकअनेकरूपथीएणीपरे ॥ नेदपरस्परनावोरे ॥ आधा राधेयादिकनावें ॥ इमजनेदमनलावोरे॥ जिन० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एणीपरेके० एरीतें ड्व्यएक अनेगुणपर्यायअनेक एरूपें परस्परके०मा होमांहे नेदनावविचारो एमज आधार आधेयप्रमुख नावेंके० स्वनावेंकरीनेएनोने दमनमांलावो केमके परस्परअवृतिधर्म परस्परमांनेदजणावे ॥ १४ ॥

ड्व्यआधारघटादिकदीसे ॥ गुणपर्यायआधेनरे ॥ रूपा दिकएकेंड्रियगोचर ॥ दोइघटादिकवेनरे ॥ जिन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेतेहीज विवरीदेखाडेछे जेघटादिकड्व्यते आधारदेखायछे अनेएघटना रूपादिकते एमजाणियेछेयें जेगुणपर्याय रूपरसादिक तथानीलपीतादिक तेआधेय ड्व्यकपरेंरह्याछे एमआधाराधेयनावें ड्व्यथी गुणपर्यायिने नेदछे तथारूपादिकगुणप र्याय एकेक इंड्यिनो गोचरके०विषयछे जेम रूपते चक्षुरिंड्यिंज जणायछे तथारसते रसनेंड्यिंजजणाय इत्यादिक अनेघटादिकड्व्यछेते चक्षुइंड्य अनेस्पर्शइंड्य एदो इके० वेंड्यिंकरीजणायछे एनैयायिकमत अनुसरीनेकह्युं अनेस्वमते गंधादिकपर्यायते घ्राणेंड्यादिकेंपण ड्व्यप्रत्यक्षछे नहीकां कुसुमगंधतुं इत्यादिक ज्ञानने भ्रांतिपणोथा यछे तेजाणवुं एमएकअनेक इंड्यिग्राहकपणे ड्व्यथी गुणपर्यायिने नेदजाणवुं अने गुणपर्यायिने माहोमाहेंनेदते स्वनावी क्रमनावीपणेथाय एकल्पनाथीजनाववुं॥१५॥

संज्ञासंख्यालक्षणथीपण ॥ नेदएहोनोजाणीरे ॥ सुजश कारणीसुनमतिधारो॥दुरमतिवेलिकृपाणीरे॥जिन० ॥१६॥

अर्थ ॥ तथासंज्ञाके० नाम तेथीड्व्यनोनेद एटलेनामनेदेंनेद तेमांवली एकड्व्य नामथीनेद बीजोगुणनामथीनेद त्रीजोपर्यायनामथीनेद तथासंख्यातेएकवेत्रणनीग णना तेथीनेद एटलेछड्व्यछे गुणअनेकछे पर्यायअनेकछे अनेलक्षणथीनेदतेनअनेक पर्यायगमन ड्व्यलक्षण नएकथीअन्यने निन्नकरण तेगुणलक्षण परिगमनसर्वतोव्या प्ति तेपर्यायलक्षण एमड्व्यगुणपर्याय एहोनोमाहोमांहेनेदजाणीने उत्तमयशनीकर नारी नलीमतिनेधारो तेकहेवीछे जेडुरमतिके०ड्व्यादितपक्षनीमाठीमतितेरूपणीजेवे ली तेहनेविषे रुपाणीके०कोहाडीसमानछे एढालमां ड्व्यगुणपर्यायनोनेददेखाड्यो॥

॥ गलत्रीजोशालिभद्रभोगीरह्योएदेशी ॥

एकांतेजोभाषियेंजी॥द्रव्यादिकनोरेभेद॥तोपरद्रव्यपरेंहुएजी॥
गुणगुणीभावउछेदरे॥ भविका॥धारोगुरुउपदेश॥१॥ एआंकणी

अर्थ ॥ हवेजेद्रव्यमां एकांतेभेदमानेछे तेनेअभेदपक्ष अनुसरीने दूषणदीयेछे द्रव्यादिकके० द्रव्यगुणपर्यायनोजो एकांतेभेदभाषियें तो परद्रव्यनीपरें स्वद्रव्यनेविषे पण गुणगुणीभावनो उछेदथयीजाय जेमजीवद्रव्यनागुणज्ञानादिकछे तेनोगुणी जीवद्रव्य तथापुद्गलद्रव्यनागुणरूपादिकछे तेनोगुणी पुद्गलद्रव्यछे एव्यवस्था शास्त्रप्रसिद्धछे तेमांभेदमानतातेलोपाय जीवद्रव्यने पुद्गलगुणथीजेमभेदछे तेमपोतानागुणथीपणभेदछे तोअमुकद्रव्यनो अमुकगुण अथवा अमुकगुणनोअमुकगुणी ए व्यवहारछे तेनोविलोपथयीजाय माटेद्रव्यगुणपर्यायनो अभेदजसंभवे एहवो अभेद नयनागुरुनोउपदेशछे तेनेहेभव्यप्राणीतुमेधारो आदरो जेमआत्मद्रव्यशुद्धथाय॥१॥

द्रव्येंगुणपर्यायनोजी ॥ छेअभेदसंबंध॥भिन्नतेहजो
कल्पियेंजी॥तोअनवस्थाबंधरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ २॥

अर्थ ॥ वलीअभेदजपरयुक्तिकहेछे द्रव्यनेविषे गुणपर्यायनोजेसंबंधते अभेदजछे केमके जोद्रव्यनविषे गुणपर्यायनो समवायनामेसंबंधने भिन्नकल्पियें तोअनवस्थादोषनुंबंधनथाय जेथी गुणगुणथीअलगो समवायसंबंधकहियेंतो तेसमवायनेपण अनेरोसंबंधजोइयें वलीतेसंबंधनेपण अनेरोसंबंधजोइयें एमकरतां क्यांपणठहेरावन थाय अने जोसमवायनो स्वरूपसंबंधनेजअभिन्नमानियेंतो गुणगुणीनेस्वरूपसंबंध मानतांशुंविघटेछे जेफोकटनवासंबंधमानोछो ॥ २ ॥

सुवर्णकुंभलादिकहुतजी॥घटरक्तादिकभाव॥ एव्यव
हारनसंभवेजी॥जोनअभेदस्वभावरे॥भ०धा०॥३॥

अर्थ ॥ वलीजेअभेदनमाने तेहनेबाधककहेछे जे सुवर्णके० सोनुंतेकुंभजथयुं तथाघटोप्रथमश्यामहतो तेहिजरातोवर्णथयो एहवोसर्वलोकनोजे अनुभवसिद्धव्यवहारछे तेजोद्रव्यादिकत्रणने अभेदस्वभावनहोयतो तेव्यवहारपणघटेनहि ॥ ३ ॥

खंधदेशभेदेंहुएजी ॥ वमणीगुरुतारेखंध॥ प्रदेशगु
रुतापरिणमेंजी ॥ खंधअभेदसंबंधरे॥ भ० धा०॥४॥

अर्थ ॥ वलीजेअभेदनहीमाने तेहनेबीजुंबाधककहेछेजे खंधके० अवयवी अने

देशतेअवयव एह्वोनेजोनेदेंजमानियें तो वमणोनार. खंधमांहेंयवोजोइयें जेमाटे सोतंतुनोजेपटछे ते सोतांतुंआमांजेटलोनार तेटलोजनार तेनापटमांपण थायछे तथा जेकोइनवानैयायिक एमकहेछे जे अवयवनानारथी अवयवीनो नार अत्यं तहीनछे तोतेह्नेमतें द्विप्रदेशादिकखंधमांहे किहांपणउत्कृष्टगुरुता नथयीजोइयें मा टेद्विप्रदेशादिकखंधते एकप्रदेशादिकनीअपेक्षायें अवयवीछे अनेपरमाणुमांहेजो उ त्कृष्टगुरुत्वमानियें तोरूपादिकविशेषपण परमाणुमांहेमानवाजोइयें अनेद्विप्रदेशादि कमांनमानवाजोइयें अनेनेदनयनो वंधनमानियेंतो प्रदेशनोनार तेह्जिखंधनारपणे परिणमे जेमतंतुरूपपटरूपपणे परिणमे तेवारेंगुरुतावृद्धीनोदोषकह्योतेनलागे॥ ४॥

निन्नद्रव्यपर्यायनेजी ॥ नवनादिकनेरेएक ॥ नापेंकिम
दाखेनहीजी ॥ एकद्रव्यमांविवेकरे ॥ न० ॥ धा० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीजेद्रव्यादिकने अनेदनथीमानता तेह्नेउलंनोआपेछे निन्नद्रव्यजे पा षाण काष्ट पृथ्वी जलादिकतेनोपर्यायजेनवनादिक घरप्रमुख तेह्नेतुंएककहेछे जे एकघरइत्यादिक लोकव्यवहारछे तोएकद्रव्यमां द्रव्यगुणपर्यायनोअनेदहोय एहवो विवेक शावास्तेनथीकहेतो माटेजेआत्मद्रव्य तेह्जिआत्मगुण अनेतेह्जिआत्मप र्याय एहवो व्यवहारअनादिसिद्धछे ॥ ५ ॥

गुणपर्यायअनेदथीजी ॥ द्रव्यनियतव्यवहार॥ परिणति
जेंछेएकताजी ॥ तेणेतेएकप्रकाररे ॥ नवि० ॥ धा० ॥६॥

अर्थ ॥ वलीजीवद्रव्य अजीवद्रव्यइत्यादिक जे नियतके० व्यवस्थासहितव्यव हारथायछे तेगुणपर्यायनाअनेदथीथायछे जेमज्ञानादिकगुणपर्यायथी अनिन्नतेजी वद्रव्य अनेरूपादिक गुणपर्यायथी अनिन्नतेअजीवद्रव्य नहीकांद्रव्यसामान्यथी गुणपर्यायनी विशेषसंज्ञानथाय १ द्रव्य २ गुण ३ पर्याय एत्रणनामछे पणस्वजाति त्रणनेएकत्वपरिणामछे माटेएत्रणेनोएकप्रकारकहियें जेमआत्मद्रव्य ज्ञानादिकगुण तथातेह्नापर्याय एसर्वेएकजआत्माकहियें तथा जेम १ रत्न २ कांति ३ ज्वराप हारशक्ति एत्रणेनेएकजपरिणामछे तेमद्रव्यगुणपर्यायनेपण जाणवुं ॥ ६ ॥

जोअनेदनहीएह्नेंजी ॥ तोकारयकिमहोय ॥ अछतिवस्तु
ननीपजेजी ॥ शशविषाणपरेंजोयरे ॥ न० ॥ धा० ॥ ७॥

अर्थ ॥ वलीजेअनेदनमाने तेह्नेदोषदेखाडेछे जोएद्रव्यगुणपर्यायने अनेदनथी तो कारणकार्यनेपण अनेदनहोवोजोइयें तोमृत्तिकादिक कारणथी घटादिकार्यकेम

नीपजे अनेकारणमांहेकार्यनीशक्तिहोय तोजकार्यनीपजे पणकारणमांहे अछतिकार्यवस्तुनीपरिणतिनीपजेनही जेम शशविषाण शशलानाशिंगडा माटेजोकारणमांहे कार्यनीसत्तामानियेंतो अनेदसहजेजआव्यो ॥ ७ ॥

द्रव्यरूपछतिकार्यनीजी ॥ तिरोभावनीशक्ति ॥ आविरभा
वेंनीपजेजी ॥ गुणपर्यायनीव्यक्तिरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेजोकारणमांहे कार्यउपनाअगाउ जोकार्यनीसत्ताछे तोकार्यदर्शनकेमथतुंनथी एहवीशंकाकरनारने उत्तरआपेछे जे कार्यउपनोनथी तेवारेंकारणमांहे कार्यनीद्रव्यरूपेंतिरोभावनीशक्तिछे तेथीकार्यजणातुंनथी पणसामग्रीमले तेवारें गुणपर्यायनीव्यक्तिथीआविरभावके० प्रगटभावथायछे तेथीकार्यदेखायछे तिरोभाव तथाआविरभावपणे दर्शनादर्शन नियामककार्यनापर्यायविशेषजजाणवा तेथीआविरभावनेसत्असत्विकल्पेंदूषणहोयनही केमके अनुभवनेअनुसारेंपर्यायकल्पियें ॥ ७ ॥

नैयायिकभापेंइस्युंजी ॥ जिमअछतानुंरेज्ञान ॥ होवेविषय
अतीतनुंजी ॥ तिमकार्यसहिनाणरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ इहांनैयायिकएहवुंकहेछे के जेमअतीतविषयजे घटादिकअछताछे तेहनुंजेमज्ञानहोय तेमघटादिककार्यमृत्तिकादिकदलथकीपण अछताजछे सामग्रीमिलेनिपजसे अछतानीज्ञप्तिहोयतो अछतानीउत्पत्तिकेमनहोय घटनुंकारणदंडादिकअमेकहियेंछैयें तिहांलाघवछे तुमारेमतेघटाभिव्यक्तिनुं दंडादिककारणकहेवुंतिहांगौरवहोय वीजुंअभिव्यक्तिनुंकारणचक्षुप्रमुखछे पणदंडादिकनथी माटेभेदपक्षजघटेछे ॥ए॥

तेमिथ्यानहीसर्वथाजी ॥ अछतोविषयअतीत ॥ पर्यायार
थतेनहीजी ॥ द्रव्यारथछेनित्यरे ॥ भ० ॥ धा० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेनैयायिकमतनेदूषवेछे जे अछतानीउत्पत्तिहोयएमकहेछे तेमत मिथ्याछे केमके अतीतविषयघटादिक सर्वथाअछतोनथी तेपर्यायार्थेथीनथी अनेद्रव्यार्थेथीनित्यछे जेम नष्टघटपणमृत्तिकारूपेंछे जोसर्वथानहोयतो शशलानाशृंगपरेंथाय

अछतोभापेंज्ञाननेजी॥ जोस्वभावेंसंसार॥कहेतोज्ञाना
कारतोजी ॥ जीपेयोगाचाररे ॥ भ० ॥ धा० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेसर्वथाअछतोअर्थज्ञानमांहेभासेछे एहवुंकहेछे तेहनेबाधकदेखाडेछे जोज्ञाननेस्वभावें अतीतघटप्रमुखनोअछतोअर्थभासेछे एहवुंमानीयेंतो सर्वसंसारज्ञा

नाकारज छे बाह्यआकारअनादिअविद्यावासनायेंअछताजनासेछे जेमस्वप्नमांहे अछतापदार्थनासेछे एहवोबाह्याकाररहितशुद्धज्ञानते शुद्धनेजहोय एमकहेतो योगाचारनामेंत्रीजोबौधजजीपे तेमाटेअछतानुंज्ञाननहोय ॥ ११ ॥

हवणाजाण्योअरथतेजी॥ एमअतीतजेंजणाय ॥ वर्त्तमान
पर्यायथीजी॥ वर्त्तमानताथायरे ॥ ज॰ ॥ धा॰ ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जोछतानुंज्ञाननहोय तोहमणामेंअतीतघटजाण्यो एमकेमकहेवायछेतेअतीतघटमेंहमणाजाण्यो एमजेजणायछे तिहांद्रव्यथीछताअतीतघटनेविषे वर्तमानछेपआकाररूपपर्यायथी हमणाअतीतघटजाण्योजायछे अथवा नैगमनयथीअतीतनेविषेवर्तमानतानोआरोपकरियेछेयें माटेसर्वथाअछतिवस्तुनोज्ञाननथाय ॥ १२ ॥

धर्मिअछतेधर्मनोजी ॥ अछतेकालेंसुहाय ॥ सर्वकालनिर्नि
यपणेजी॥ तोशशशृंगजणायरे ॥ ज॰ ॥ धा॰ ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ धर्मिअतीतघटअछते धर्मघटत्वअछतेकालें घटनेअनावकालेंनासेछे अथवाधर्मिअतीतघटअछते धर्मज्ञेयाकारअछतेकालेंनासेछे एरीतेंजोतुजनेचित्तमांहेसुहाय तो सर्वअतीत अनागत वर्त्तमानकालेंनिर्नयपणे अदृष्टशंकारहितपणे शशशृंगपणजाण्युंजोइयें एमतो नथी ॥ १३ ॥

तेमाटेअछतातणोजी ॥ बोधनजनमनहोय ॥ कारयकारण
नेसहीजी॥ भेअनेदइमजोयरे ॥ ज॰ ॥ धा॰ ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेअछताअर्थनोबोधनहोय तथाजन्मपणनहोय एमनिर्धारकार्यकारणनोअनेदछे तेहष्टांते द्रव्यगुणपर्यायनोपण अनेदछे एमसईहवुं एनेदपक्षनाढालव पूरें अनेदपक्षनोढालकह्यो केमकेंनेदनयपक्षनो अनिमानते अनेदनयटाले ॥ १४

भेदेंनणेनैयायिकोजी॥ सांख्यअनेदप्रकाश॥ जैनउनयवि
स्तारतोजी ॥ पामेंसुजशविलासरे ॥ ज॰ ॥ धा॰ ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेएवेहुनयनास्वामीदेखाडीने स्थितपक्षकहेछे जेभेदनयतेनैयायिकनापेठे जेथीते असत्कार्यवादीदेखायछे तथासांख्यमततेअनेदनयप्रकाशेछे अनेजैनते वेहुनयस्याद्वादेंकरीविस्तारतोथको नलायशनोविलासपामे केमके पक्षपातिवेहुनय माहोमांहे घसातां स्थितपक्ष अपक्षपातितेस्याद्वादिनोजदीपेछे उक्तंच ॥ अन्योन्यपक्षप्रतिपक्षनावात् यथापरेमत्सरिणः प्रवादाः॥ नयानशेषानविशेषमिछन्नपक्षपाती

समयस्तथाते ॥ १ ॥ यएवदोपाःकिलनित्यवादे विनाशिवादेपितमास्तएव॥ परस्पर ध्वंसिपुकंटकेपु जयत्यधृष्यंजिनशासनंते ॥ २ ॥ ॥ १५ ॥

॥ ढालचोथी रागआसाउरी नंदनकुंत्रिसला हुलरावे एदेशी ॥

भेदअभेदउभयकिममानो ॥ जिहांविरोधनिरधारोरे ॥ ए
कठामेंकहोकिमकरीरहेवे ॥ आतपनेअंधारोरे ॥ श्रुतधर्मे
मनदृढकरीराखो॥जिमशिवसुखफलचाखोरे॥१॥एआकणी

अर्थ ॥ हवेभेदाभेदनोविरोध आशंकीनेटालेछे इहांकोइपरवादी कहेछेजे द्रव्यादि कनेविपे १ भेद २ अभेद एवेहुधर्मे किममानोछो जिहांविरोधताने निरधारोछो के मकेजिहांभेदहोय तिहांअभेदनहोय अने जिहांअभेदहोय तिहांभेदनहोय एविहुं भावाभावरूपें विरोधीछे तोवेहुविरोधी एकठामेंरहेनही जेमआतपहोय तिहांअं धारोरहेनही अनेजिहां अंधकारहोय तिहांआतपरहेनही तेमभेदाभेदपण एकत्रन होय इहांश्रुतधर्मे स्याद्वादप्रवचनमां मनदृढविश्वासवंत करीराखो जिनशासन अ श्रद्धपणे मोक्षरूप कल्पवृक्षना सुखरूपफलचाखो श्रुतधर्मविना चारित्रधर्म फल वंतनहोय केमके शंकासहित चारित्रिउपण समाधीनपामे यदुक्तं वितिगछसमाव न्नेणं अप्पाणेणंनलभतेसमाहिं इतिआचारांगे ॥ १ ॥

एहवीशिष्यनीशंकाजाणी॥ परमारथगुरुबोलेरे ॥ अविरो
धेंसवीठामेंदीसे ॥ दोयधर्मएकतोलेरे ॥ श्रुत० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एहवीशिष्यनी शंकाजाणीकरीने गुरुस्याद्वादी परमार्थबोलेछे जे घटप टाभावादिकने यद्यपिविरोधछे तोपणभेदाभेदने विरोधनथी केमके सर्वठामे भेद अभेद एवेहुधर्म अविरोधें एकाश्रयवृत्तिपणेज एकतोले देखायछे पणकोइकएमक हेछेजे अभेदस्वाभाविक साचोछे अनेभेद उपाधिकतेजूठो तेअनुभवतानथी केमके व्यवहारेपरापेक्षायें वेहुनेगुणादिकनोभेद तथागुणादिकनोअभेद एवचननथी ॥ २ ॥

एकठामेंसविजननीसांखे ॥ प्रत्यक्षभेदलहियेरे ॥ रूपरसा
दिकनीपरतेहनो ॥ कहोविरोधकेमकहियेरे ॥ श्रुत० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एकठामें घटादिकद्रव्यनेविपे सर्वलोकनीसाखें प्रत्यक्षप्रमाणे रक्तत्वादिक गुणपर्यायनो भेदाभेदजे लहीयेछेयें तेनोविरोधकहो केवीरीतेंकहियें जेमरूपरसादि कनो एकाश्रयवृत्तित्वानुभावथी विरोधनकहियें तेम भेदाभेदनुंपण जाणवुं उक्तंच

नह्निप्रत्यक्षदृष्टेर्थेविरोधोनाम् तथाजेमप्रत्यक्षदृष्टेर्थे दृष्टांतनुंपणकार्यनथी उक्तंच केद मन्यत्रदृष्टत्व मह्नोनिपुणतातव ॥ दृष्टांतयाचसेयत्त्वंप्रत्यक्षेप्यनुमानवत् ॥ १ ॥ ३ ॥

श्यामन्नावजेघटछेपेहेला ॥ पछेन्निन्नतेरातोरे ॥ घटन्नावेंन विन्निन्नजणाय ॥ सीविरोधनीवातोरे ॥ श्रुत० ॥ ४ ॥ ॥

अर्थ ॥ हवेन्नेदान्नेदना प्रत्यक्षनो अनिलाप तेपुक्लइव्यें देखाडेछे जेघटपहेलां श्यामन्नावेंछे तेपछेंरातोथयो तेवारें निन्नजजणायछे अनेविहुंकालें घटन्नावें अनिन्नज जणायछे श्यामतथारक्त अवस्थानेन्नेदेंघटएकजछे तोइहांविरोधतानीवातसीकहेवी४

बालन्नावजेप्राणीदीसे ॥ तरुणन्नावतेन्यारोरे ॥ देवदत्त न्नावेंतेएकज ॥ अविरोधेंनिरधारोरे ॥ श्रुत० ॥ ५ ॥ ॥

अर्थ ॥ हवेआत्मद्रव्यमां न्नेदान्नेदनो अनुन्नवदेखाडेछे जेप्राणी बालकन्नावें देखा यछे तेजप्राणी तरुणन्नावें न्यारोके० निन्नछे अनेदेवदत्तन्नावें एटलेमनुष्यपणाना प र्यायें तेएकछेतोएकपदार्थनेविषे बालतथातरुण न्नावेंन्नेदछे अनेदेवदत्तन्नावें अन्नेदछे एमअविरोधेंनिरधारो उक्तंच पुरिसंमिपुरिससद्दो जम्माइमरणकालपज्जंतो॥तस्सउबा लाईया पज्जवजेयाबहुवियप्पा ॥ १ ॥ इतिसंमतिग्रंथे ॥ ५ ॥

धर्मन्नेदजोअनुन्नवन्नासे ॥ धर्मिन्नेदनवीकहियेंरे ॥ निन्नध र्मनुंएकजधर्मि ॥ जडचेतनपणलहियेंरे ॥ श्रुत० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जिहांन्नेदहोय तिहांअन्नेद होयजनही केमके न्नेदव्याप्यवृत्तिछे एहवी प्राचीननैयायिकनी शंकानें तेटालेछे जे श्यामोनरक्तः इहां श्यामत्व रक्तत्वधर्म नान्नेदनो अनुन्नवन्नासेछे पणधर्मिजे घटपदार्थ तेनोन्नेद न्नासतोनथी माटेएमजो कहियेंतो जडचेतननो न्नेदन्नासेछे तेपण जडत्वचेतनत्व धर्मनोजन्नेदछे पणजडचे तन द्रव्यनोन्नेदनथी एरीतें अव्यवस्थाथाय धर्मने प्रतियोग्यपणे उल्लेखतो सिद्ध दार्मे सरिखोछे अनेप्रत्यक्ष तिहअर्थे बाधकतो अवतरेजनही ॥ ६ ॥

न्नेदान्नेदनिहांपणकहेतां ॥ विजयजैनमतपावेरे ॥ निन्नरूप मांरूपांतरथी ॥ जगअन्नेदपणआवेरे ॥ श्रुत० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेजडतथा चैतन्यमांपण न्नेदान्नेदकहेता जैननोमत विजयपामेछे माटे नि न्नरूपजे जीवअजीवादिक तेमांरूपांतर द्रव्यत्वपदार्थत्वादिक तेथीजगतमां पणअ न्नेदजोआवे एटलेन्नेदान्नेदने सर्वत्रव्यापकपणुंकह्युं ॥ ७ ॥

जेह्नोभेद अभेदजतेह्नो ॥ रूपांतरसंयुतनोरे ॥ रूपां
तरथीभेदजतेह्नो ॥ मूलहेतुनयसतनोरे ॥श्रुत०॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीएहिजविवरीदेखाडेछे के जेह्नोभेदतेह्नोज रूपांतरसहितनो अभेदहोय जेम थास कोस कुसूल घटादिकनोभेदछे अनेतेजमृद्‌द्रव्य विशिष्टअनर्प्पित स्वपर्यायनो अभेदछे वलीतेनोज रूपांतरथी भेदथाय जेम थास कोस कुसूलादिक पर्यायविशिष्ट मृद्‌द्रव्यपणें तेनोज भेदथाय एरीतेंभेदनेअभेदजेछे तेशैकडागमेनयनो मूलहेतुछे सातनयनाजे सातसेंनयभेदछे तेएरीतेंद्रव्यपर्यायनी अर्प्पणाअनर्पणायेंथायतेशतारनयचक्राद्यनयमां पूर्वेहता अनेह्मणा द्वादशसारनयचक्रमां विधिर्विधिविधिरित्यादिरीतें एकएकनयमां वारवारभेद उपजवाकह्याछे ॥ ८ ॥

खेत्रकालभावादिकयोगें ॥ थायभंगनीकोडीरे ॥ संखेपे
एकछमेंकहीयें ॥ सप्तभंगनीजोडीरे ॥ श्रुत० ॥ ए ॥ ॥

अर्थ ॥ जेमद्रव्यादिक विशेषपणे भंगथाय तेमज खेत्रादिकविशेषपणे पण अनेक भंगथाय जेमघटद्रव्यने स्वकरीविवक्षियें तेवारे खेत्रादिकघट परथाय एमप्रत्येकें सप्तभंगीपण क्रोडोगमेनीपजे १ घटःस्यादस्त्येव २ स्यान्नास्त्येव ३ स्यादवाच्यएव ४ स्यादस्त्येवनास्त्येव ५ स्यादस्त्येवस्यादवक्तव्यएव ६ स्यादनास्त्येवस्यादवक्तव्यएव ७ स्यादस्त्येवस्यादनास्त्येव स्यादवक्तव्यएवइतिप्रयोग तथापि लोकप्रसिद्धजे कंबुग्रीवादि पर्यायेंर्पितघटछे तेनेजसत्रैवडीने स्वरूपेंअस्तित्व पररूपेंनास्तित्व लेइनेसप्तभंगी देखाडेछे १ स्वद्रव्य स्वखेत्र स्वकाल स्वभावनी अपेक्षायें घटछे अने २परद्रव्य परखेत्र परकाल परभावनी अपेक्षायें घटनथी ३ तथाएकवारें बेपर्याय एकशब्दें मुख्यरूपें नकहेवायमाटे उभयविवक्षायें अवाच्यछे ४ एकअंशस्वरूपें अनेएकअंश पररूपें विवक्षियें तेवारें छेनेनथी ५ एकअंशस्वरूपें तथाएकअंश युगपत् उभयरूपें विवक्षियें तेवारेंछे अनेअवाच्य ६ एकअंशपररूपें अनेएकअंशयुगपत् उभयरूपें विवक्षियेंतेवारेंनथी अनेअवाच्य ७ एकअंशस्वरूपें तथाएकअंश पररूपें अनेएक अंश युगपत् उभयरूपें विवक्षियें तेवारें छे नथी अनेअवाच्य ॥ ए ॥

पर्यायारथभिन्नवस्तुछे ॥ द्रव्यारथेंअभिन्नोरे ॥ क्रमेंउभ
यनयजोअर्पिजे ॥ तोभिन्ननेअभिन्नोरे ॥ श्रुत० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेभेदाभेदमां सप्तभंगी जोडियेछैयें १ पर्यायार्थनयथी सर्ववस्तु द्रव्य गुणपर्यायलक्षणें कथंचित्पणे भिन्नछे २ द्रव्यार्थनयथी कथंचित्अभिन्नजछे केमके

द्रव्यनाजे गुणपर्याय तेह्माविर्नाव तथातिरोनावेंठे ३ अनुक्रमें जो द्रव्यार्थिक तथा पर्यायार्थिक एवेंहुनय अर्पियें तोकथंचित् निन्न तथाकथंचित् अनिन्नकहियें॥ १० ॥

जोएकदाउन्नयनयग्रहियें ॥ तोअवाच्यतेलहियेंरे ॥ एकेश
ब्दें एकजवारें ॥ दोयअर्थनवीकहियेंरे ॥ श्रुत० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ ४ जोएकवारेंज बेहुनयना अर्थविवक्षियेंतो तेअवाच्यलहियें केमकेएक शब्दें एकजवखते बेअर्थकह्याजातानथी संकेतिकशब्दपण एकजसंकेतिकरूपकहे पण बेरूप स्पष्टकही शकीयेंनही जेमपुष्पदंतादिक शब्दपणएकोक्ति चंद्रसूर्यकहे पणनि न्नोक्ति कहीशकेनही अनेबेनयनाअर्थ मुख्यपणेतो निन्नोक्तिज कहेवा घटे इत्यादि कयुक्ति शास्त्रांतरथी जाणवी ॥ ११ ॥

पर्यायारथकल्पनउत्तर ॥ उन्नयविवक्षासंधिरे ॥ निन्नअवा
च्यवस्तुतेकहियें ॥ स्यातकारनेबंधिरे॥ श्रुत० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ ५ जेमांप्रथमपर्यायार्थकल्पनापणछे पछेएकदाउन्नय नयार्पणाकरियें ते वारें वस्तुने निन्नअवक्तव्य कथंचित् एमकहियें ॥ १२ ॥

द्रव्यारथनेउन्नयग्रह्याथी ॥ अनिन्नतेह्अवाचोरे ॥ क्रमयुग
पत्नयउन्नयग्रह्याथी ॥ निन्नअनिन्नअवाचोरे ॥श्रुत० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ ६ प्रथमद्रव्यार्थ कल्पनापणछे अनेएकदाउन्नयनय अर्पणाकरियें ते वारें कथंचित् अनिन्नअवक्तव्य एमकहियें ७ अनुक्रमें बेहुनयनी प्रथमअर्पणाक रियें पछेबेहुनयनी एकवारेंअर्पणाकरियें तेवारेंकथंचित् निन्नअनिन्न अवक्तव्यएम कहियें ए एकनेदानेद पर्यायमां सप्तनंगी जोडी तेमजसर्वत्रजोडवी इहांशिष्यपुछे छेके जिहांबेनयनाजविषयनी विचारणाहोय तिहांएकेक गौणमुख्यनावें सप्तनंगी पावे पणजिहांप्रदेश प्रस्थकादिविचारें तो सात ठ पांच प्रमुखनयना निन्ननिन्नवि चारहोय तिहांअधिकनंगथाय तेवारेंसप्तनंगीनो नियमकेमरहे तेनेगुरुकहेछे के तिहांपणएकनयार्थे मुख्यपणेविधि बीजासर्वेनो निषेधलेइ प्रत्येकें अनेकसप्तनंगीक रियें अमेतांएमजाणियेंछैयेंजे सर्वनयार्थे प्रतिपादकता पर्यायाधिकरणवाक्य प्रमाण वाक्य एलक्षणलेइने तेवेगमें स्यात्कारलंबित सकलनयार्थसमूहालंबन एनंगेपण निषेधनथी तेमाटे व्यंजनपर्यायने लेकाणे बेनंगेपण अर्थसिद्धि संमतिग्रंथनेविषे देखाडीछे तद्गाथा ॥ एवसत्तवियप्पो वयणपहोहोइअठपज्जाए ॥ वंजणपज्जाए पुण सवियअप्पोनिवियप्पोअ ॥ १ ॥

ल्प सप्तप्रकारवचनपथ सप्तभंगीरूप वचनमार्ग तेअर्थपर्याय तेअस्तित्व नास्तित्वा दिकने विषे होय व्यंजनपर्यायजेघटकुंभादि शब्दवाच्यता तेहनेविषे सविकल्प विधि रूप निर्विकल्प निषेधरूप एवेभांगाहोय पण अवक्तव्यादि भंगनहोय केमके अव क्तव्य शब्दविषय कहियेंतो विरोधथाय अथवा सविकल्पशब्द समभिरूढनयमते अनेनिर्विकल्पशब्द एवंभूतनयनीमते एमबेभंगजाणवा अर्थनये प्रथमचारजे अ र्थनयछे तेतो व्यंजनपर्याय मानेनही तेमाटे तेनयनीइहां प्रवृत्तिनथी अधिकुं अ नेकांतविवस्थाथी जाणवुं तदेवमेकत्रविषये प्रतिस्वमनेकनयविप्रतिपत्तिस्थलेस्यात् कारलांछिततावन्नयार्थप्रकारकसमूहालंबनबोधजनकएकएवभंगएष्टव्योव्यंजनपर्याय स्थले भंगद्वयवत् यदिचसर्वत्रसप्तभंगीनियमएवाश्वासास्तदाचालनीचन्यायेनताव न्नयार्थेनिषेधबोधको द्वितीयोभंग स्तन्मूलकाश्चान्येतावत्कोटिकाः पंचभंगाश्रकल्पनीया इत्यमेव निराकांक्षसकलभंगप्रतिपत्तिनिर्वाहादितियुक्तंपश्यामः एविचार स्याद्वाद पं मितें सूक्ष्मबुद्धीयें चित्तमांधारवो ॥ १३ ॥

सप्तभंगएहढअभ्यासी॥ जेपरमारथदेखेरे ॥ जशकि रतिजगवाधेतेहनी॥ जैनभावेतसलेखेरे श्रुत० ॥ १४॥

अर्थ ॥ हवेएनोफलितार्थकहेछे एकह्याजेसातभांगा ते दृढअभ्यासें सकलादेशी विकलादेशी नयसप्तभंगप्रमाण सप्तभंगइत्यादि भेदें घणोअभ्यासकरी जीवाजी वादिपरमार्थसमजे देखे तेहनीजशकीर्त्तिवधे केमके स्याद्वादपरिज्ञानेज जैनने तर्कवादनुं यशछे अनेजैनभावपण तेप्राणीनोज लेखेजाणवो केमके निश्चेनयथी सम्यक्त स्याद्वाद परिज्ञानजछे उक्तंचसंमतौ चरणकरणपहाणा ससमयपरसम यमुक्कवावारा ॥ चरणकरणस्ससारं नछयसुद्धनयाणत्ति ॥ १ ॥ एचोथाढालमां भे दाभेददेखाड्यो अनेसप्तभंगीनुं स्थापनकर्युं ॥ १४ ॥

॥ ढालपांचमो ॥ आदिजिणंदमयाकरोएदेशी ॥

एकअरथत्रयरूपछे॥ देख्योभलेप्रमाणेरे॥ मुख्यवृत्तिउपचारथी ॥नयवादिपणजाणेरे ॥ १ ॥ ग्यानदृष्टीजगदेखियें ॥ एआंकणी

अर्थ ॥ हवेनयप्रमाण विवेककरेछे एकअर्थजे घटपटादिक जीवअजीवादिक ते त्रयरूपके० द्रव्यगुणपर्यायरूपछे केमके घटादिक मृत्तिकादिरूपेंद्रव्य अनेघटादिरू पें सजातीयद्रव्य पर्यायरूपरसात्मकपणेंगुण एमजीवादिकमां जाणवो एहवेप्रमा णें स्याद्वादवचनेदेख्युं जेमाटे प्रमाणेसप्तभंगात्मके त्रयरूपपणो मुख्यरीतेंजाणियें के

मके नयवादीजे एकांशवादीतेपण मुख्यवृत्ति अनेउपचारें एकअर्थनेविपे. त्रयरूपप णोजाणे यद्यपि नयवादिने एकांशवचने शक्तिएकज अर्थकह्यें तोपणलक्षणारूप उपचारें वीजाअर्थपणजाणे पणएकदावृत्तिद्वयनहोय एपणतंतनथी जेमगंगायां मत्स्यघोषौ इत्यादिस्थलें एमवेवृत्तिपणमानीछे इहांपणमुख्य अमुख्यपणे अनंतध र्मात्मिक वस्तुजणाववाने प्रयोजने एकनयशब्दनी वेवृत्तिमानतां विरोधनथी अथ वानयात्मक शास्त्रे क्रमिकवाक्यद्वयेंपणएअर्थ जणाविये अथवाएकवोधशब्दें एकवो धअर्थ एमअनेकनंगाजाणवा एरीतें ज्ञानदृष्टीयें जगतनानाव देखीयें एअर्थकह्योते हिजस्पष्टपणे जणाववानेआगलीगाथाकहेछे ॥ १ ॥

मुख्यवृत्तिद्रव्यारथो ॥ तासअनेदवखाणेरे ॥ नेदप
रस्परएहनो ॥ तेउपचारेंजाणेरे ॥ ग्यान० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ मुख्यवृत्तिके० शक्तिशब्दार्थे केहेतो जे द्रव्यार्थनयते तासके० तेनेएटले द्रव्यगुणपर्यायने अनेदवखाणेछे केमके गुणपर्यायें अनिन्न एवो मृद्द्रव्यादिक ते नेविपेघटादिपदनी शक्तिछे पणएनो परस्परके० माहोमांहेनेदछे तेउपचारेंके० लक्ष णेजाणे माटे द्रव्यनिन्न कंबुग्रीवादिक पर्यायनेविपे घटादिकपदनी लक्षणामानेछेअ नेमुख्यार्थसंबंधे तथाविधव्यवहार प्रयोजनें अनुसरीयें तिहांलक्षणाप्रवृत्ति दुरघटनथी

मुख्यवृत्तिथकोलेखवे ॥ पर्यायारथनेदरे ॥ उपचारें
अनुनववलें ॥ मानेतेहअनेदरे ॥ ग्यान० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एमपर्यायार्थनयनीमुख्यवृत्तिकरीने सर्वद्रव्यनागुणपर्यायनेदें लेखवे केम के एनयनेमतेमृदादिपदनो द्रव्यअर्थ अनेरूपादिपदनोगुणज घटादिकपदनो कंबु ग्रीवादिपर्यायज तथाउपचारें लक्षणायेंकरी अनुनवनेवलेकरी तेअनेदमाने जेमघ टादिमृद्द्रव्यादि अनिन्नजछे एप्रतीतें घटादिपदनी मृदादिकद्रव्यनेविपे लक्षणा मानियें एपरमार्थछे ॥ ३ ॥

दोयधर्मनयजेग्रहे ॥ मुख्यअमुख्यप्रकारोरे ॥ तेअनुसा
रेंकल्पियें ॥ तासवृत्तिउपचारोरे ॥ ग्यान० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ नेदअनेदप्रमुख बहुधर्मते द्रव्यार्थिक अथवापर्यायार्थिकनय जेग्रहे क हाख्यप्रमाणेधारे मुख्यअमुख्यप्रकारें साक्षात्संकेतें तथाव्यवहितसंकेतें तेअनुसारें तासके० तेनयनीवृत्ति अनेतेनयनो उपचारकल्पियें दृष्टांतजेम गंगापदनो साक्षात् संकेतते प्रवाहरूपअर्थनेविपेछे तेमाटेप्रवाहेशक्ति तथागंगानेतीरे जेगंगासंकेतकरवो

ते व्यवहित संकेतछे तेमाटे उपचारछे तेमज द्रव्यार्थिकनयनो साक्षात्संकेतते अ भेदछे अनेशक्तिनाभेदें व्यवहितसंकेतछे तेथीउपचारछे एमपर्यायाधिकनयनापण शक्तितथाउपचार तेभेदअभेदने विषेजोडवा ॥ ४ ॥

भिन्नविषयनयग्यानमां ॥ जोसर्वथानभासेरे ॥ तोस्वतंत्र
भावेंरहे ॥ मिथ्यादृष्टिपासेरे ॥ ग्यान० ॥ ५ ॥ ॥

अर्थ ॥ कोइकहेछेजे एकनयते एकजविषयने ग्रहेपणवीजानयनो विषयग्रहेनही तेहनेदूपवेछे जोनयज्ञानमां भिन्नविषयके० नयांतरनो मुख्यार्थ ते सर्वथाके० अमु ख्यपणेपण नभासे तो स्वतंत्रभावें सर्वथानयांतर विमुख्यपणें मिथ्यादृष्टिपासेरहे एटलेदुर्नयथाय पणसुनय थायनही एमजाणवुं ॥ ५ ॥

एहविशेषावश्यकें ॥ संमतिमांपणधारोरे ॥ एमनयथी
सविसंभवे ॥ भेदअभेदुपचारोरे ॥ ग्यान० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एअर्थविशेषावश्यके तथासंमतिग्रंथमांहे एमधारो यतः दोहिंविणएहिं णीअं सत्थमूलएणतहविमिछत्तं ॥ जंसविसयप्पहाण तणेणअणुणनिरवाके १ स्वार्थग्राहीइतरांशाप्रतिक्षेपीछुनयइतिसुनयलक्षणं स्वार्थग्राहीइतरांशप्रतिक्षेपीदुर्नय इतिदुर्नयलक्षणं एम नयविचारथी भेदअभेद ग्राह्य व्यवहारसंभवे तथानयसंकेतवि शेषथी ग्राहकवृत्तिविशेषरूप उपचारपण संभवे तेमाटेभेदअभेद तेमुख्यपणे प्र त्येकनयविषय मुख्यामुख्यपणे उभयनयविषयउपचारते मुख्यवृत्तिनीपरें नयपरिक र पणविषयनही एसमोमार्गते श्वेतांबरप्रमाणे शास्त्रसिद्धजाणवो ॥ ६ ॥

छंडिमारगएसमो ॥ उपनयमुख्यजेकल्पेरे ॥ तेहप्रपंच
पणजाणवा ॥ कहियेंतेजेमजल्पेरे ॥ ग्यान० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एसमोमार्गछंडिकरीने जेदिगंवर वाल उपचारादिक ग्रहवानेकाजे उपनय प्रमुखकल्पेछे तेप्रपंच शिष्यबुद्धी धंधनमात्रछे पणतेसमानतंत्र सिद्धांतछे माटे जाण वानेकाजे जेमते दिगंबरीयो जल्पेके० स्वप्रक्रियायेंबोलेछे तेमजकहियेंछैयें ॥ ७ ॥

नवनयउपनयतीनछे ॥ तर्कशास्त्रअनुसारोरे ॥ अध्यातम
वाचेंवली ॥ निश्चयनेव्यवहारोरे ॥ ग्यान० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेदिगंबरीओनेंमते तर्कशास्त्रने अनुसारें नवनय अने त्रणउपनयछे त था वली अध्यात्मवाचेंके० शैलीयें १ निश्चयनय २ व्यवहारनय एवेजनयकहाछे॥८॥

पहेलोद्रव्यारथनयो ॥ दशप्रकारतसजाणोरे ॥ शुद्धअक मोपाधीथी ॥ द्रव्यार्थिकधुरेंआणोरे ॥ ग्यान० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ एकद्रव्यार्थनय बीजोपर्यायार्थनय त्रीजोनैगमनय चोथोसंग्रहनय पांचमो व्यवहारनय छठोऋजुसूत्रनय सातमो शब्दनय आठमोसमनिरूढनय नवमोएवंभूतन यएनवनयनो नियमछे तेमां पहेलोद्रव्यार्थकनय तेना दशप्रकारजाणवा तेमां धुरके० पहेलो अकर्मोपाधिथी शुद्धद्रव्यार्थिकनय मनमांहेआणोएटलेकर्मोपाधीथीरहित शुद्धद्रव्यार्थिक एप्रथमभेदजाणवो ॥ ए ॥

जिमसंसारीप्राणीया ॥ सिद्धसमोवमगणीयेंरे ॥ सहेजभाव आगलकरी ॥ भवपर्यायनगणीयेंरे ॥ ग्यान० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ हवेशुद्धद्रव्यार्थिकनो विषयदेखाडेछे जेम सर्वसंसारीप्राणीमात्रने सिद्धस मानगणियें एटले सहजभावजे शुद्धात्मस्वरूप तेंआगलकरियें अने भवपर्यायजेसंसा रनाभाव तेगणियेंनही तेनीविवक्षानकरियें एअभिप्राय द्रव्यसंग्रहेकह्योछे यतः मग्ग णगुणगणेहिं चउदसहिंहवंतितहंअसुद्धणया विणेयासंसारी सब्वे सुद्धाहुसुद्धणया

उत्पादव्ययगौणता ॥ सत्तामुख्यजबीजेंरे ॥ भेदशुद्धद्रव्या रथें ॥ द्रव्यनित्यजिमलीजेंरे ॥ ग्यान० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ उत्पादव्ययनी गौणतायें अनेसत्तानी मुख्यतायें बीजोभेद शुद्धद्रव्यार्थ नोजाणवो उत्पादव्ययगौणत्वेन सत्ताग्राहक शुद्धद्रव्यार्थिक एबीजाभेदनेमते द्रव्य ते नित्यपणेलेवी एटले नित्यते त्रिकालेंअविचलितरूप सत्ताने मुख्यपणेलेता एना वसंभवे केमके जो पर्याय प्रतिक्षणे परिणामीछे तोपणजीवपुद्गलादिक द्रव्यसत्ता कदापिचलतीनथी ॥ ११ ॥

त्रीजोशुद्धद्रव्यारथो ॥ भेदकल्पनाहिनोरे ॥ जिमनिजगु णपर्यायथी ॥ कहीयेंद्रव्यअभिन्नोरे ॥ ग्यान० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेत्रीजोभेद तेभेदकल्पनायेंहीन शुद्धद्रव्यार्थकछे भेदकल्पनारहितशु द्धद्रव्यार्थिक इतितृतीयभेद जेमएकजीव अथवा पुद्गलादिकद्रव्यने निजके० पोता नागुणपर्यायथी अभिन्नकहियें केमके जोभेदपणुंछे तोपणतेनी अर्पणानकरियें अनेअभेदनी अर्पणाकरियें तोअभिन्नछेएत्रीजोभेद शुद्धद्रव्यार्थिकथयो ॥ १२ ॥

अशुद्धकर्मोपाधिथी ॥ चोथोएहनोभेदोरे ॥ कर्मभावम
यआतमा ॥ जिमक्रोधादिकवेदोरे ॥ ग्यान० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेद्रव्यार्थिकनो चोथोभेद ते कर्मोपाधिथीछे माटेअशुद्धकहेवुं कर्मोपाधिसापेक्षोअशुद्धद्रव्यार्थिक इतिचतुर्थभेद जेमक्रोधादिक कर्मभावमय आत्मावेदोछो जाणोछो के जेवारेंजेद्रव्य जेभावेंपरिणमे तेवारें तेद्रव्य तन्मयकरीजाणवुं जेमलोहअग्निपणे परिणम्युं तेकालेंलोह अग्निरूप जाणवुं एमक्रोध मोहनीआदि कर्मोदयनेअवसरें क्रोधादिभाव परिणतआत्मा क्रोधादिकरूप जाणवो अतएव आत्मानाभेदआठ सिद्धांतमां प्रसिद्धछे ॥ १३ ॥

तेहअशुद्धवलीपंचमो ॥ व्ययउतपतिसापेखोरे ॥ उत्पाद
व्ययध्रुवएकें ॥ समयेंद्रव्यजिमपेखोरे ॥ ग्यान० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेवलीअशुद्धद्रव्यार्थिकनामे पांचमोभेद तेव्ययउत्पत्तिसापेक्षजाणवो उत्पादव्ययसापेक्ष सत्ताग्राहकअशुद्धद्रव्यार्थिकपंचम जेमएकसमयें द्रव्यने उत्पादव्यय ध्रुवरूपकहियें जेकनकायुत्पादसमय तेहिज केयूरादि विनाशसमय अने कनकसत्तातो अवर्जनीयजछे एवंसति त्रैलक्षण्यग्राहकत्वेनेदं प्रमाणवचनमेवस्यान्नतु नयवचनमितिचेन्न मुख्यगौणभावेनैवानेननयेन त्रैलक्षणाग्रहणान्मुख्यनयस्वसार्थग्रहणे नयानां सप्तभंगीमुखेनैवव्यापारात् ॥ १४ ॥

ग्रहतोभेदनीकल्पना ॥ छछोतिहअशुधोरे ॥ जिमआतमि
कबोलीयें ॥ ज्ञानादिकगुणशुधोरे ॥ ग्यान ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ भेदनीकल्पनाग्रहतो छछोभदते अशुद्धद्रव्यार्थिक जाणवो जेमज्ञानादिक शुद्धगुण आत्मानाबोलीयें इहांषष्ठीविभक्तिभेदकहेछे भिक्षोःपात्रमितिवत् अनेगुणगुणीनें भेदतोनथी पण भेदकल्पनासापेक्ष अशुद्धद्रव्यार्थिकषष्ट ॥ १५ ॥

अन्वयद्रव्यार्थिककह्युं ॥ सप्तमएकस्वभावोरे ॥ द्रव्यए
कजिमभाषियें ॥ गुणपर्यायस्वभावोरे ॥ ग्यान० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ सातमोभेद अन्वयद्रव्यार्थिक कसुंछे जे एकस्वभावबोले जेमएकजद्रव्य गुणपर्यायस्वभावकहियें एटलेगुणपर्यायनेविषे द्रव्यनो अन्वयछे जेम द्रव्यनेजाणवाथी द्रव्यार्थादेशें तदनुगत सर्वगुणपर्याय जाण्याकहियें जेमसामान्यप्रत्यासत्ति परवादीनी सर्वव्यक्तिजाणी कहे तेमइहांजाणवुं एअन्वयद्रव्यार्थिक सप्तम ॥ १६ ॥

स्वद्रव्यादिकग्राहको ॥ नेदआठमोनाप्योरे ॥ स्वद्रव्यादि
कचारथी ॥ वतोअर्थजिमदाख्योरे ॥ ग्यान० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ स्वद्रव्यादिग्राहक नामेंद्रव्यार्थिकनो आठमोनेदनाप्यो जेम अर्थजे घटादिकद्रव्यतेस्वद्रव्य स्वखेत्र स्वकाल स्वनाव एचारथीवतोकह्यो स्वद्रव्यथी मृत्तिकायें अनेस्वखेत्रथी तेपाटलिपुरादिकें अनेस्वकालथी विवक्षितकालें तथास्वनावथी रक्तादिकनावें जे घटादिकनी सत्ताते प्रमाणछे सिद्धछे इतिस्वद्रव्यादिग्राहकद्रव्यार्थिक अष्टम एआठमोनेदथयो ॥ १७ ॥

परद्रव्यादिकग्राहको ॥ नवमनेदतेमाहिंरे ॥ परद्रव्या
दिकचारथी ॥ अर्थवतोकिमनाहिंरे ॥ ग्यान० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ तेद्रव्यार्थिकमां परद्रव्यादिक ग्राहक नवमोनेदकह्योछे जेम अर्थजेघटादिक तेपरद्रव्यादिकचारथी वतोनथी परद्रव्यजे तंतुप्रमुख तेथीघटअसत्कहियें अनेपरक्षेत्रजे काशीप्रमुख तथापरकालजे अतीत अनागतकाल परनावथी कालादिनावें विवक्षितविषयें अवतापर्यायतेथी परद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनवम

परमनावग्राहककह्यो ॥ दशमोजश अनुसारोरे ॥ ग्यान
सरूपीआतमा ॥ ग्यानसर्वमांसारोरे ॥ ग्यान० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ दशमो द्रव्यार्थिकनो परमनावग्राहकनामें नेदकहेछे जेनयने अनुसारें आत्मानेज्ञानस्वरूपकहियेंछैयें अने दर्शन चारित्र वीर्य लेश्यादिक आत्माना अनंतागुणछे पणसर्वमां ज्ञानते सारउत्कृष्टछे केमके अन्यद्रव्यथी आत्मानेनेदते ज्ञानगुणेदेखाडेछे तेमाटे शीघ्रोपस्थितिक पणे आत्मानुंज्ञानते परमनावछे एमबीजाद्रव्यनापण परमनाव असाधारणगुणलेवा परमनावग्राहकद्रव्यार्थिकदशम ॥ १९ ॥

ढालछठीएकवारदरिशनआपगुरुजीएदेशी

पटनेदनयपर्यायअरथो॥पहेलोअनादिकनित्यरे॥पुद्ग
लतणोपर्यायकहियें॥ जिममेरुगिरिमुखनित्यरे ॥ १ ॥
बहुनांतफेलीजैनशैली ॥ साचहुंमनधाररे ॥ खोटडुं
जेकांइजाणे ॥ तिहांचित्तनिवाररे ॥ बहु० ॥ २ ॥

अर्थ॥हवेपर्यायार्थिनय वनेदेंजाणवो तेमां पहेलोअनादिनित्य शुद्धपर्यायार्थिककहियें जेमपुद्गलनोपर्याय मेरुप्रमुख प्रवाहथी अनादीअने नित्यछे असंख्यातकाले

अन्योन्यपुज्जलसंक्रमे पण संस्थानतेहिजछे एमज रत्नप्रभादिक पृथ्वीपर्यायपण जाणवा ॥ १ ॥ एमवणाप्रकारें जैननी शैलीफेलीछे दिगंबरमतेंपण जैनदर्शननाम धरावी एवीनयनीअनेक शैलीप्रवर्त्तावेछे तेमांविचारतां जेसाचुंहोयते मनमांनिरधारी राखवुं अनेतिहांजेकांइ खोटुंजाणे तेचित्तमांनधरवुं पणशब्दफेरमात्रें द्वेषकरवोन ही अर्थजप्रमाणछे ॥ २ ॥

सादिनित्यपर्यायअरथो ॥ जिमसिद्धनोपज्जातुरे ॥ ग्रहे
शुद्धअनित्यसत्ता ॥ गौणवयतप्पातुरे ॥ वहु० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ सादिनित्य शुद्धपर्यायार्थिनय तेवीजोभेदजाणवो जेमसिद्धना पर्यायनी आदिछे केमके सर्वकर्मक्षययथयो तेवारेंसिद्धपर्यायउपनो तेथीआदिथयी पणतेनो अंतनथी केमकेपछे सिद्धभावसदाकालेंछे एरीतेंजपर्यायसरिखो सिद्धद्रव्यपर्यायभाव वो हवेसत्तागुणले उत्पादव्ययग्राहक अनित्यशुद्ध पर्यायार्थिक त्रीजोभेदकहियेंछेयें

जेमसमयमेंपर्यायनाशी ॥ छतिगहतनित्यअशुद्धरे ॥
एकसमयेंयथापर्याय ॥ तृतीयरूपेंरुद्धरे ॥वहु०॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेमएकसमयमां पर्यायविनाशीछे एमकहियें इहां नाशीकहेता एनोप्रतिपक्षी उत्पादतोआव्यो पणध्रुवताने गौणकरीदेखाडीनही चोथो छतिके० सत्तानेग्रहतो तेनित्यअशुद्ध पर्यायार्थिक कहियें जेमएकसमयमां पर्यायते उत्पादव्ययध्रुवलक्षण तृतीयरूपेंरुद्धछे एवुंबोलीयें पणपर्यायनुं शुद्धरूपतो तेनेकहियेंजे सत्तानदेखाडवी पणइहांतो मूलसत्तादेखाडी तेमाटेअशुद्धभेदथयुं ॥ ४ ॥

पर्यायअरथोनित्यशुद्धो ॥ रहितकर्मोपाधिरे ॥ जेमसिद्ध
नापर्यायसरिखा ॥ भवजंतुनानिरुपाधिरे ॥ वहु० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेकर्मोपाधिरहित नित्यशुद्धपर्यायार्थिक पांचमोभेद कहेछे ते जेम भवजंतुके० संसारीजीवना पर्याय सिद्धनाजीवो सरिखाकहियें जोपणकर्मोपाधिभाव वताछे तोपणतेनी विवक्षानकरियें अनेज्ञानदर्शन चारित्रादिक शुद्धपर्यायनीज विवक्षाकरियें ॥ ५ ॥

पर्यायअरथअनित्यअशुद्धो ॥ सापेक्षकर्मोपाधिरे ॥ संसा
रवासिजीवने ॥ जेमजनममरणव्याधिरे ॥ वहु० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेकर्मोपाधि सापेक्ष अनित्य अशुद्ध पर्यायार्थिक छठोभेदकहेछे जेम

संसारवासीजीवने जन्ममरणनीव्याधिछे एमकहियें इहांजन्मादिक जीवनापर्याय जे कर्मसंयोगेंछे तेअनित्य अशुद्धछे तेथीज जन्मादिपर्यायनो नाशकरवानेअर्थे मोक्ष थेंजीवप्रवृत्तेछे एरीतेंद्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक नयकह्या ॥ ६ ॥

वर्द्धमानआदिकह्योनैगम ॥ भेदतसछेतीनरे॥ वर्त्त
मानारोपकरवा ॥ भूतअर्थेलीनरे ॥वद्धु०॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे नैगमनयकहेछे सामान्यविशेषज्ञानरूप वद्धमानके० घणाप्रमाण ते नोग्राही नैगमनयकहियें नैकेर्मानैर्मिनोतीतिनिगमः ककारलोपान्नैगमइतिव्युत्पत्तिः तेनैगमनयना त्रणभेदछे तेमांप्रथमनैगमभूतार्थ वर्त्तमाननो आरोपकरवाने तत्परछे

भूतनैगमकह्योपदेलो ॥ दीवालीदिनआजरे ॥ यथास्वा
मीवीरजिनवर ॥ लहिउशिवपुरराजरे ॥ वद्धु० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ तेमांप्रथमभेदनुं उदाहरण देखाडेछे जेमआज दीवालीना दिवसनेविषे श्रीमहावीरस्वामी शिवपुरनोराजपाम्या इहांअतीत दिवालीनादिननेविषे वर्त्तमान दिवालीना दीवसनो आरोपकरियेंछेयेंएमवर्त्तमान दिवसनेविषे भूतदिवसनो आरोपकरियें देवागमनादिक महोटाकल्याण भाजनत्व प्रतीतप्रयोजननेअर्थे जेमगंगायांघोषः इहांगंगानातटनेविषे गंगानोआरोपकरियें शैत्यपावनत्वादि प्रत्यायन प्रयोजननणी तोएघटमानछे जो वीरसिद्धिगमननो अन्वय भक्तिनेवास्तेप्रतीतिकमानियें एयलंकारनाजाण पंमितहोय तेविचारजो ॥ ८ ॥

भूतवतकहेभाविनैगम ॥ भाविजेमजिनसिद्धरे ॥ सिद्ध
वंतछेवर्त्तमाने ॥ कांइसिद्धअसिद्धरे ॥ वद्धु० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ भावीनुं भूतवडुपचारकरे एबीजोनैगमनोभेद जेम जिननेसिद्ध कहियें छेयें केमके केवलीनेसिद्धपणो अवश्यभावीछे माटे कांइकसिद्ध अने कांइकअसिद्ध नेवर्त्तमानकहे तेवर्त्तमान नैगमकहियें ॥ ए ॥

भापींयेंजिमभक्तपचियें ॥वर्त्तमानारोपरे॥ करेकिरि
याभूतलेइ॥ भूतवचनविलोपरे॥ वद्धु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेम भक्तके० रसोइरांधिछे एमकहियें इहां रसोइना केटलाकअवयव सिद्धथयाछे अनेकेटलाक साध्यमानछे पणपूर्वापरभूतावयव क्रियासंतान एकबुद्धीयें आरोपियें तेने वर्त्तमानकहियेंछेयें एआरोप सामग्री महिमायें कोइअवयवनी भूत

क्रियालेइ पचतिएठेकाणे अपाक्षीत् एप्रयोगनयीकरता जेनैयायिकादिक तेएमकहे छे जे चरमक्रियाध्वंस अनेअतीत प्रत्ययविषय तेहनेकिंचित्पक्कं किंचित्पच्यते एवुं कहेछेतो एप्रयोगनयवोजोइयें तेमाटे एवर्त्तमानारोप नैगमनयनोभेदज नलोजाणवो

संग्रहेनयसंग्रहो ॥ तेद्विविधउंयविशेपरे ॥ द्रव्यसविअ
विरोधियाजेम ॥ तथाजीवअशेपरे ॥ बहु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेसंग्रहेते संग्रहनयकहियें तेना एकउंय वीजोविशेपए वेभेदछे तेमां एक उंयके० सामान्यसंग्रह अनेबीजो विशेपसंग्रह एवेभेदजाणवा द्रव्याणिसर्वाणिअविरोधीनि एप्रथमभेदनुं उदाहरण तथाजीवाःसर्वेअविरोधिनः एबीजाभेदनुं उदाहरण सर्वद्रव्यनेएकपणे बोलावबुंते सामान्यसंग्रह अने तेमांवली एकजीवद्रव्यने जूदोकरी सर्वजीवने एकजीवद्रव्य कहिवोलावबुं तेविशेपसंग्रह ॥ ११ ॥

व्यवहारसंग्रहविपयभेदक ॥ तेमजद्विविधप्रसिद्धरे ॥ द्रव्य
जीवाजीवभापें ॥ जीवभवियासिद्धरे ॥ बहु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेसंग्रहनयनो विषय तेनाभेदनोदेखाडनार तेव्यवहारनयकहियें तेना तेमज संग्रहनयनीपरें द्विविधके० वेभेदछे १ सामान्यसंग्रहभेदकव्यवहार २ विशेपसंग्रहभेदकव्यवहार एरीतें वेभेदजाणवा द्रव्यजीवाजीवौ एसामान्यसंग्रहभेदव्यवहार अने जीवाःसंसारिणः सिद्धाश्च एविशेपसंग्रहभेदकव्यवहार एमउत्तरोत्तरविवक्षायें सामान्य विशेपपणुंभावबुं ॥ १२ ॥

वर्त्ततोऋजुसूत्रभापें ॥ अर्थनिजअनुकूलरे ॥ क्षणिकपर्यय
कहेसुपिम ॥ मनुप्यादिकस्थूलरे ॥ बहु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ ऋजुसूत्रनयते वर्त्तमानें वर्त्ततो अर्थभापे पणअतीत अनागत अर्थनेनमाने अनेवर्त्तमानेपण निजअनुकूलके० पोताना कामनोअर्थमाने पणपरकीयमाने नही तेऋजुसूत्रनय वेभेदेंकहेवो १ सूक्ष्मऋजुसूत्र ते क्षणिकपर्याय जेउत्पादव्यय तेनेमाने अनेवीजोस्थूल ऋजुसूत्रते मनुष्यादिपर्यायमाने एटलेमनुष्यतीर्यंचादिक भवनापर्यायग्रहे पणकालत्रयवर्ति पर्यायमानेनही अनेजे व्यवहारनयछे तेत्रणेकालना पर्यायमाने तेमाटे स्थूलऋजुसूत्र तथाव्यवहारनयने संकरदोपनजाणवो ॥ १३ ॥

शब्दप्रकृतिप्रत्ययादिक ॥ सिद्धमानेशब्दरे ॥ समभिरूढ
विभिन्नअर्थक ॥ कहेभिन्नजशब्दरे ॥ बहु० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जेशब्दनयते प्रकृतिप्रत्ययादिक व्याकरणव्युत्पत्तियी सिद्धथयेलोशब्दमाने लिंगवचनादिभेदें अर्थनोभेदमाने जेमतटः तटी तटं एत्रणलिंगभेदें अर्थभेद त थाआपः जलं इहांएकवचन बहुवचनभेदें अर्थभेदमाने अनेकऋजुसूत्रनयने ए श ब्दनय एमकहेजे कालभेदें अर्थभेदतुंमानेछे तोलिंगादिभेदें भेदकांनथीमानतो अने छठोसमनिरूढनय एमकहेजे भिन्नशब्दते भिन्नार्थकजहोय माटे एनयते शब्दनयने एमकहेजे तुलिंगादिभेदें अर्थभेदमानेछे तोशब्दभेदें अर्थभेदकेममानतोनथी तेमाटे घटशब्दार्थभिन्न अनेकुंभशब्दार्थभिन्न एमएमाने एवेशब्दनुं एकार्थपणुं तेशब्दादिनय नी वासनायकी प्रसिद्धछे ॥ १४ ॥

क्रियापरिणतअर्थमाने ॥ सर्वएवंभूतरे ॥ नयेनयना
भेदएणीपरें ॥ अठावीसप्रभूतरे ॥ बहु० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेएवंभूतनयते सर्वअर्थक्रियाने परिणतक्रियावेलायें माने पणअन्यदा मानेनही जेमछत्रचामरादिके शोभे परषदामांबेठा चामरढलावे तेवारेज तेने राजा माने पण स्नानादिकवेलायें तेअर्थविना राजानकहियें एरीतेंनयेनयना अठावीसभेद तेप्रभूतके० घणायया १० द्रव्यार्थिकना ६ पर्यायार्थिकना ३ नैगमना २ संग्रहना २ व्यवहारना २ ऋजुसूत्रना १ शब्दनो १ समभिरूढनो १ एवंभूतनो ॥ १५ ॥

नयेनयएमकह्याउपनय ॥ तीनकहियेंसाररे ॥ साचमोश्रुत
अरयपरखी ॥ लहोजशविस्तार रे ॥ बहु० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एमनयेनयकह्या हवेत्रणउपनय ते दिगंबरप्रक्रियायेंकहियेंछेयें एमां साचोश्रुतनोअर्थ परखीकरीने बहुश्रुतपणाना यशनोविस्तारपामो ॥ १६ ॥

॥ ढालसातमोचऋअपनुंसाररे ॥ एदेशी ॥

सद्भूतव्यवहार ॥ भेदप्रथमतिहां ॥ धर्मधर्मिनाभेदथीए ॥१॥
शुद्धअशुद्धविभेद॥ शुद्धअशुद्धना॥ तेहअरयनाभेदथीए॥२॥

अर्थ ॥ नयसमीरेंतेउपनयकहियें तेमांसद्भूतव्यवहारते उपनयनोप्रथमभेदछे ते धर्म अने धर्मिना भेदरेखाडवाथी होय॥१॥ तेहनावलीबेभेदछे एकशुद्ध बीजोअशु द्ध तेमांहेलो शुद्धधर्मधर्मिनाभेदथी शुद्धसद्भूत व्यवहारथाय अनेबीजोअशुद्ध धर्म धर्मिनाभेदथी अशुद्धसद्भूत व्यवहारथाय इहांसद्भूतते एटलामाटेजे एकद्रव्यजछे अनेभिन्नद्रव्यसंयोगादि अपेक्षानथी तथा व्यवहार ते माटेजे भेददेखाडेछे ॥ २ ॥

जेमजगकेवलज्ञान॥आतमद्रव्यनुं॥मइनाणादिकतेहनुंए॥३॥
गुणपर्यायस्वन्नाव॥कारकतन्मनो॥अरथन्नेदछेएहनोए॥ ४ ॥

अर्थ॥ जेमजगतमां आत्मद्रव्यनुं केवलज्ञान पष्ठीयें प्रयोगकरियें तेशुद्धसन्नूतव्यवहारथयो तथामतिज्ञानादिकते आत्मद्रव्यनागुणछे एमबोलावियें तेअशुद्ध सन्नूतव्यवहारथयो ॥३॥ गुणगुणीनो पर्यायपर्यायवंतनो स्वन्नाव स्वन्नाववंतनोकारक अने तन्मयके० कारकी तेहनोजे एकद्रव्यानुगत न्नेदबोलावियें तेसर्वउपनयनो अर्थजाणवो घटस्यरूपं घटस्यरक्तता घटस्यस्वन्नावः मृदाघटोनिष्पादित इत्यादिप्रयोगजाणवा

असन्नूतव्यवहार॥परपरिणतिन्नलें॥द्रव्यादिकनुपचारथीए॥५॥
द्रव्येंद्रव्यनुपचार॥पुद्गलजीवने॥जिमकहियेंजिनआगमेंए॥६॥

अर्थ॥ परद्रव्यनी परिणति न्नलेंथके जेद्रव्यादिकने नवविधोपचारथी कहियें ते असन्नूत व्यवहारजाणवो ॥५॥ तेनवविधोपचारमां पहेलो द्रव्येंद्रव्यनोउपचार कहेछे जेमजिनआगममां क्षीरनीरनेन्यायें जीवतेपुद्गलसाथें मिल्योछे माटे जीवनेपुद्गल कहियें एजीवद्रव्यें पुद्गलद्रव्यनो उपचार तेद्रव्येंद्रव्योपचार पहेलोन्नेदथयो ॥ ६ ॥

कालीलेस्यान्नाव॥श्यामगुणेन्नली॥गुणउपचारगुणेंकहो ए॥७॥
पर्यायेंपर्याय॥उपचारेंवली॥हयगयखंधयथाकह्याए ॥ ८॥

अर्थ॥ जेन्नावलेश्यातेआत्मानो अरूपीगुणछे तेनेजे कृष्णनीलादिक कालीलेश्या कहियेंछैयें तेकृष्णादि पुद्गलद्रव्यनागुणनो उपचार करियेंछैयें एआत्मगुणे पुद्गलगुणनो उपचारजाणवो एरीतें गुणेगुणोपचारथयुं ॥ ७ ॥ वलीपर्यायें पर्यायोपचारते हय के० घोडा गयके० हाथी रथप्रमुख आत्मद्रव्यना असमानजातीय द्रव्यपर्याय ते ने खंधकहियेंछैयें तेआत्मपर्यायउपरें पुद्गलपर्यायजेस्कंध तेनोउपचारकरीने कहियें छैयें एपर्यायेपर्यायोपचारनो त्रीजोन्नेदथयो ॥ ८ ॥

द्रव्येंगुणउपचार॥वलीपर्यायनो॥गौरदेहहुंबोलतांए॥९॥गुणेद्र
व्यनुपचार॥पर्यायद्रव्यनुं॥गौरदेहजिमआतमाए ॥ १० ॥

अर्थ॥ द्रव्येगुणोपचारः चोथोन्नेदकहेछे ते हुंगौरवर्णछुं एमबोलताहुंतेआत्मा द्रव्य अनेजे गौरतेपुद्गलनो उज्वलतापणो उपचर्युं एचोथोन्नेद हवेपांचमुं द्रव्येंपर्यायोपचार ते जेमहुंदेहएमबोले तेमां हुंतेआत्मद्रव्य अनेदेहतो पुद्गलद्रव्यनो सामान्यजातीय द्रव्यपर्यायउपचार्युं एपांचमोन्नेदथयुं॥९॥गुणेद्रव्योपचारः जेम एगौरदेखा

यछे तेआत्मा एमगौरपणो कहेसीने आत्मविधानकरियें एटलेए गौरतारूप पुज्जलगुण उपरें आत्मद्रव्यनो उपचार तेगुणेद्रव्योपचार छठोनेदथयो तथापर्यायें द्रव्योपचारः ते जेम देहनेआत्माकहियें इहां देहरूप पुज्जलपर्यायनेविषे आत्मद्रव्यनो उपचारकस्यो एसातमोनेदथयो ॥ १० ॥

गुणपज्जवनुपचार ॥ गुणनोपज्जवें ॥ जिममतितनुत
नुमतिगुणोए ॥ ११ ॥ असद्भूतव्यवहार ॥ एमउ
पचारथी ॥ एहत्रिविधहवेसांभलोए ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ गुणेपर्यायोपचारः तेजेममतिज्ञानते शरीरजन्यछे तेमाटे शरीरजकहियें इहांमतिज्ञानरूप आत्मगुणनेविषे शरीररूप पुज्जलपर्यायनो उपचारकस्यो एआठमोनेदथयो हवे पर्यायेगुणोपचारः ते पूर्वप्रयोगनेज अन्यथाकरियें तेआवीरीतें केशरीरते मतिज्ञानरूप गुणजछे तोइहां शरीररूप पर्यायनेविषे मतिज्ञानरूप गुणनोउपचारकरायछे एनवमोनेद ॥ ११ ॥ एमउपचारथी असद्भूतव्यवहार नवप्रकारनोकह्यो हवेएना त्रणनेदछेतेकहियेंछैयें तेसांभलो ॥ १२ ॥

असद्भूतनिजजाति॥जिमपरमाणुओ ॥ बहुप्रदेशीभाषियेंए॥ १३ ॥
तेहविजातिजाणो ॥ जिममूरतमति ॥ मूरतद्रव्यंउपनीए ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एकसजाति असद्भूतव्यवहार ते जेमपरमाणु ते बहुप्रदेशीथवानी जातिछे माटे बहुप्रदेशीकहियें ॥ १३ ॥ तथा जेम मतिके० मतिज्ञानने मूर्त्तिवंत कहियें मूर्त्तजे विषयभूतोकनमस्कारादिकथी उपनोतेमाटे इहांमतिज्ञानते आत्मगुण तेनेविषे मूर्त्तत्वजे पुज्जलगुण तेनेउपचस्युं तेनेविजातीय असद्भूत व्यवहारजाणो एबीजोनेद॥ १४॥

असद्भूतदोउभांत॥जीवअजीवने॥विषयग्यानजिमभाषियेंए॥१५॥
उपचरितासद्भूत ॥ करियेंउपचारो ॥ जेहएकउपचारथीए ॥ १६ ॥

अर्थ ।दोउभांतिके० बेजाति तेसजाति अने विजातियें असद्भूत व्यवहारनो संबंध कहियें जेमजीवाजीव विषयज्ञानकहियें इहांजीवतेज्ञाननी सजातिछे अनेअजीवते ज्ञाननोविजातिछे एबेनोविषयविषयीनाव नामे उपचरित संबंधछे तेमसजाति विजातिनामे असद्भूतकहियें सजातीयांशेकिंनासद्भूतइतिचेत् विजातीयांशेविषयता संबंधस्योपचरितस्यैवादुनावादितिगृहाण एत्रणनेदकह्या ॥ १५ ॥ जेएकउपचारथी बीजोउपचारकरवो तेउपचरित असद्भूत व्यवहारकहियें ॥ १६ ॥

तेहस्वजातिजाणोरे॥हुंपुत्रादिक ॥ पुत्रादिकतेमाहराए॥१७॥विजा
तियीतेजाणोरे ॥ वस्त्रादिकमुज॥ गढदेशादिकउन्नयथीए॥ १८ ॥
उपनयन्नाष्याएम ॥ अध्यात्मनय ॥ कहीपरिक्षाजशलहोए॥१ए॥

अर्थ ॥ तेस्वजाति उपचरित असद्भूत व्यवहारजाणो संबंधीकल्पनं जेहुंपुत्रादि
क इहांहुंमारा एवुं जेपुत्रादिकनेविषेकेवुं तेपुत्रादिकने उपचरयाछे ते आत्मानो न्ने
दानेदसंबंध उपचरियेंछेयें जेपुत्रादिकते शरीरआत्मपर्यायरूपें स्वजातिछे पणकल्पि
तछे नहीतो स्वशरीरजन्य मतकुणादिकने पुत्रकेमनकहियें ॥१७॥तथाविजाति उप
चरित असद्भूत व्यवहारते कहियेंजे आवस्त्रादिक माहराछे इहांवस्त्रादिक पुजलनाप
र्यायें नामादिन्नेदें कल्पितछे नहीतो वल्कलादिक शरीराछादक तेनेवस्त्रकेम
नकहियें तेविजातिमां स्वसंबंध उपचरियेंछेयें तेमज माहरागढदेश प्रमुखछे
एमकहेतायका स्वजाति विजात्युपचरित असद्भूत व्यवहार कहियें केमके गढदेशा
दिकतो जीवअजीवउन्नय समुदायरूपछे ॥ १८ ॥ एरीतेंउपनयकह्या हवे आग
लीढालमां अध्यात्मनयकहिने एमांगुणदोष परिक्षानो यशपामो ॥ १ए ॥

॥ ढालआठमोजायातुजविणवडीरेछमासएदेशी ॥

दोयमूलनयन्नापीयारे॥निश्चयनेव्यवहार॥निश्चयद्विविधकह्युंरे॥शु
द्धअशुद्धप्रकाररे॥१॥ प्राणीपरखोआगमन्नाव॥ १ ॥ एआंकणीछे

अर्थ ॥ हवेप्रथम अध्यात्मनापायेंतो मूलवेजनयकह्याछे एकनिश्चयनय अने
वीजो व्यवहारनय तेमां निश्चयनयनावली वेन्नेदछे एकशुद्धनिश्चयनय अनेवीजो
अशुद्धनिश्चयनय हेप्राणीआगमना न्नावपरखीनेग्रहो ॥ १ ॥

जीवकेवलादिकयथारे ॥शुद्धविषयनिरुपाधि ॥ मइनाणा
दिकआतमारे ॥ अशुद्धतेहसोपाधिरे ॥ प्राणी० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जीवते केवलज्ञानादिरूपछे माटेजे कर्मोपाधिरहित केवलज्ञानादिक शु
द्धगुणविषयलेइ आत्माने अन्नेददेखाडियें तेशुद्धनिश्चय नयकहियें अने जे मतिज्ञा
नादिक अशुद्धगुणने आत्माकहियें तेअशुद्धनिश्चयनय सोपाधिकछे एटले जेनिश्चय
नयते अन्नेददेखाडे अनेजेव्यवहारनयते न्नेददेखाडे ॥ २ ॥

दोइन्नेदव्यवहारनाजी ॥ सद्भूतासद्भूत ॥ एकविष
यसद्भूतछेजी ॥ परविषयासद्भूतरे ॥ प्राणी० ॥ ३ ॥

पज्जवनयतिअंतमांरे ॥ प्रथमद्रव्यनयचार ॥ जिनभद्रा
दिकभापियारे ॥ महाभाष्यसुविचाररे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेसातनयमध्ये द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक एवेनय जेह्मानी आचार्य मत प्रक्रियादेखाडेछे जे अंतमांके० छहेलाजे शब्द समभिरूढ अनेएवंभूतरूप एत्र एनयते पर्यायनयकहियें अनेप्रथमनाचारनय जे नैगम संग्रह व्यवहार ऋजुसूत्र लक्षण तेद्रव्यार्थिकनयकहियें एरीतें जिनभद्रगणीखमाश्रमण प्रमुखसिद्धांतवादि आचार्यते श्रीविशेषावश्यकना महाभाष्यमध्ये निर्द्धारेंकहेछे ॥ १२ ॥

सिद्धसेनमुखएमकहेरे॥ प्रथमद्रव्यनयतीन॥ तसऋजुसू
त्रनसंभवेरे ॥ द्रव्यावश्यकलीनरे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेसिद्धसेन तथामल्लवादीप्रमुख तर्कवादीआचार्य एमकहेछे के प्रथम नात्रणनयजे १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार लक्षणते द्रव्यनयकहियें अने १ ऋजुसूत्र २ शब्द ३ समभिरूढ ४ एवंभूत एचारनय पर्यायार्थिककहियें. द्रव्यार्थिकमते सर्वे पर्यायाः खलु कल्पिताः॥ सत्यंतदन्वयिद्रव्यं कुंडलादिषुहेमवत् ॥ १ ॥ पर्यायार्थम ते द्रव्यं पर्यायेभ्योस्ति नोपृथक्॥यत्तैरर्थक्रिया दृष्टा नित्यं कुत्रोपयुज्यते ॥२॥ इतिद्र व्यार्थपर्यायार्थनयलक्षणात् अतीत अनागत पर्यायप्रतिक्षेपीऋजुसूत्रः शुद्धमर्थपर्या यमभ्यमानः कथंद्रव्यार्थिकः स्यादित्येतेषामाशयः तेआचार्यनेमते ऋजुसूत्रनय द्र व्यावश्यकनेविषे लीननसंभवे तथाच उज्जुसुअस्सएगे अणुवउत्तेएगंदव्वावस्सयंपुहु त्तंनइच्छी इतिअनुयोगद्वारसूत्रविरोधः वर्त्तमानपर्यायाधारस्यद्रव्यांशपूर्वापरपरिणा मसाधारण ऊर्ध्वतासामान्यद्रव्यांशसादृस्यास्तित्वरूपतिर्यक्सामान्यद्रव्यांशः एमांए केपर्यायनमाने तो ऋजुसूत्रने पर्यायार्थिकनयकहेता एसूत्रकेममिले तेमाटेक्षणिक द्रव्यवादी सूक्ष्मऋजुसूत्र तद्वर्तमानपर्यायापन्न द्रव्यादि स्थूलऋजुसूत्रते द्रव्यनयक हेवो एमसिद्धांतवादीकहेछे अनुपयोगद्रव्यांशमेव सूत्रपरिभावितमादायोक्तसूत्रता किंकमर्ततेनोपपादनीयमित्यस्मादेकपरिशीलितःपंथा. ॥ १३ ॥

इमअंतरभाविततणोरे ॥ केमअलगोउपदेश ॥ पांचथकी
जेमसातमांरे ॥ विषयभेदनहीलेशरे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ इमके० एरीतेंअंतरभावितके० मांहेजेआजे द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक नय तेनो अलगोउपदेश केमकरयो कदाचितजो इमकहेसोजे मतांतरें पांचनयक हियेंतेंपं तेमांवेनयनिर्धायका सातनयकहेता जेमअलगोउपदेशजे तेमअमारे द्र

आर्थिक पर्यायार्थिकनो अलगोउपदेशछे तेनुंउत्तरजे शब्द समभिरूढ तथाएवंभू तने जेमविषयभेदछे तेमद्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिकने सातनयथी भिन्न विषयदे खाडो जेमत्रणनयने एकसंज्ञायेंसंग्रही पांचनयकह्यांछे पणविषयभिन्नछे पणइहां तो विषयभिन्ननयथी केमके जेद्रव्यार्थिकना दशभेददेखाड्या तेसर्वशुध्धाशुध्दसंग्रहा दिक नयमांआवेछे तथाजे पर्यायार्थिकना छभेददेखाड्या तेसर्व उपचरितानुपचरित व्यवहार शुध्धाशुध्द रूजुसूत्रादिकमांआवे जोगोवलिवर्दन्यायें विषयभेदें भिन्ननयक हियें तोस्यादस्त्येव स्यान्नास्त्येव इत्यादिक सप्तभंगीमांकोडोरीतें अर्पितानर्पित स त्वासत्व ग्राहक नय भिन्नभिन्नकरतां सप्तमूलनयप्रक्रियाभांजे एपंभितेविचारवुं॥१४

संग्रहनेव्यवहारथीरे ॥ नैगमकिहांएकभिन्न ॥ तेणेते
अलगोतेहथीरे ॥ एतोदोयअभिन्नरे॥प्राणी०॥ १५ ॥

अर्थ॥इहांजो विषयभेदनेनयभेदकहेसो तो सामान्यनैगमसंग्रहनयमांअने विशेष नैगमव्यवहारनयमांभेलतांवाकीछनयजथयीजासेएहवी शिष्यनीआशंकाटालवानेअ र्थेकहेछेकेयद्यपि संग्रहनय तथाव्यवहारनयमांहेज सामान्यविशेषपर्यायेंनैगमनय भिलेछे तोपणकिहांएकप्रदेशादिदृष्टांतस्थानेभिन्नथायछे उक्तंच छन्हंतहयचउन्हं पंच विहोतहयहोइभणिज्जा ॥ तम्मयसोयपएतो सोचेवणचेवसत्तन्हं ॥ इत्यादिक तेमाटे किहांएक भिन्नविषयपणाथी नैगमनयभिन्नकह्युं पणइहांतो द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकवे हुनयनो नैगमादिकनयथी अभिन्नविषयछे तोतेने अलगाकरीने नवभेद शीरीतेकहियें

इमकरताएपामिएरे ॥ सर्वविभक्तविभाग ॥ जीवादिकप
रेंकोनहीरे ॥ इहांप्रयोजनलागरे ॥ प्राणी० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एमकरता नवनयदेखाडतां तो विभक्तनो विभागथाय एटले वहिंच्यानुं वहेचवुंथाय जोतमारे वेचणकरवीहोयतो तेवारें जीवाद्विधाः संसारिणःसिध्दाः संसारिणः पृथ्वीकायिकादि षट्भेदाः सिध्दाःपंचदशभेदाः एमज नयाद्विधाः द्रव्यार्थि क पर्यायार्थिक भेदात् द्रव्यार्थिकास्त्रिधाः नैगमादिभेदात् रूजुसूत्रादिभेदाच्चतुर्धा पर्यायार्थिकः एमकह्युंछे पणनवनया एमएकवाक्यनो विभागकीधो तेसर्वथा मिथ्याजा णवो नहीतो जीवसंसारी सिध्दाः इत्यादि विभागवाक्यपण थावापामे हवेकोइक हेसेजे जीवाजीवौतत्वं एमकहेता अनेरातत्वआव्या तोपणसात अथवानवतत्व जे मकहियेंछेयें तेमजद्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकौ नयौ एमकहेतायका अनेरानय सर्वआ वेछे तोपण अमे स्वप्रक्रियायें नवनयकहिसुं एमकहेतेनेकहियेंजे तिहांप्रयोजनभेदें

पक्षवनयतिअअंतमारे ॥ प्रथमद्रव्यनयचार ॥ जिनभद्र
दिकभापियारे ॥ महाभाष्यसुविचाररे ॥ प्राणी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवेसातनयमध्ये द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक एवेनय जेह्यानी आचार्य मत प्रक्रियादेखाडेछे जे अंतमांके० छेहलाजे शब्द समभिरूढ अनेएवंभूतरूप ए त्रणनयते पर्यायनयकहियें अनेप्रथमनाचारनय जे नैगम संग्रह व्यवहार ऋजुसूत्र लक्षण तेद्रव्यार्थिकनयकहियें एरीतें जिनभद्रगणीखमाश्रमण प्रमुखसिद्धांतवादि आचार्यते श्रीविशेषावश्यकना महाभाष्यमध्ये निर्द्धारिंकहेछे ॥ १२ ॥

सिद्धसेनमुखएमकहेरे॥ प्रथमद्रव्यनयतीन॥ तसऋजुसू
त्रनसंभवेरे ॥ द्रव्यावश्यकलीनरे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेसिद्धसेन तथामल्लवादीप्रमुख तर्कवादीआचार्य एमकहेछे के प्रथमनात्रणनयजे १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार लक्षणते द्रव्यनयकहियें अने १ ऋजुसूत्र २ शब्द ३ समभिरूढ ४ एवंभूत एचारनय पर्यायार्थिककहियें. द्रव्यार्थिकमते सर्वे पर्यायाः खलु कल्पिताः॥ सत्यंतत्स्वन्वयिद्रव्यं कुंभलादिपुहेमवत् ॥ १ ॥ पर्यायर्थमते द्रव्यं पर्यायेभ्योस्ति नोपृथक्॥यत्तैरर्थक्रिया दृष्टा नित्यं कुत्रोपयुज्यते ॥२॥ इतिद्रव्यार्थपर्यायार्थनयलक्षणात् अतीत अनागत पर्यायप्रतिक्षेपीऋजुसूत्रः शुद्धमर्थपर्यायमभ्युपगमानः कथंद्रव्यार्थिकः स्यादित्येतेषामाशयः तेआचार्यनेमते ऋजुसूत्रनय द्रव्यावश्यकनेविषे लीननसंभवे तथाच उज्जुसुअस्सएगे अणुवउत्तेएगंदव्वावस्सयंपुहुत्तंनइच्छी इतिअनुयोगद्वारसूत्रविरोधः वर्त्तमानपर्यायाधारस्यद्रव्यांशपूर्वापरपरिणामसाधारण ऊर्ध्वतासामान्यद्रव्यांशसादृश्यास्तित्वरूपतिर्यक्सामान्यद्रव्यांशः एमांएकपर्यायनमाने तो ऋजुसूत्रने पर्यायार्थिकनयकहेता एसूत्रकेममिले तेमाटेक्षणिकद्रव्यवादी सूक्ष्मऋजुसूत्र तद्वर्तमानपर्यायापन्न द्रव्यादि स्थूलऋजुसूत्रते द्रव्यनयकहेवो एमसिद्धांतवादीकहेछे अनुपयोगद्रव्यांशमेव सूत्रपरिभावितमादायोक्तसूत्रताकिकमतनैनोपपादनीयमित्यस्माभिःकपरिशीलितःपंथा. ॥ १३ ॥

इमअंतरजावितणारे ॥ केमअलगोउपदेश ॥ पांचयकी
जेमसातमारे ॥ विषयभेदनदीलेशरे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ इमके० एरीतेअंतरजावितके० मांहेभेलाजे द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक नय तेनो अलगोउपदेश केमकह्यो कदाचितजो इमकहेसोजे मतांतरें पांचनयकहियेंछेंतेमांहेनयनिर्द्धारकनि सातनयकहेता जेमअलगोउपदेशने तेमअमारे द

र्थिक पर्यायार्थिकनो अलगोउपदेशने तेनुंउत्तरजे शब्द समनिरुढ तथाएवंभू तने जेमविपयभेदछे तेमद्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिकने सातनयथी भिन्न विषयने खाडो जेमत्रणनयने एकसंज्ञायेंसंग्रही पांचनयकह्यांछे पणविपयभिन्नछे पणइहां तो विपयभिन्नथी केमके जेद्रव्यार्थिकना दशभेददेखाड्या तेसर्वशुद्धाशुद्धसंग्रहा दिक नयमांआवेछे तथाजे पर्यायार्थिकना छभेददेखाड्या तेसर्व उपचरितानुपचरित व्यवहार शुद्धाशुद्ध ऋजुसूत्रादिकमांआवे जोगोबलिवर्दन्यायें विपयभेदें भिन्ननयक हियें तोस्यादस्त्येव स्यान्नास्त्येव इत्यादिक सप्तभंगीमांकोडोरीतें अर्पितानार्पित स त्तासत्व ग्राहक नय भिन्नभिन्नकरतां सप्तमूलनयप्रक्रियाभांजे एपंमितेविचारवुं॥१४

संग्रहनेव्यवहारथीरे ॥ नैगमकिहांएकभिन्न ॥ तेणेते
अलगोतेहथीरे ॥ एतोदोयअभिन्नरे॥प्राणी०॥ १५ ॥

अर्थ॥इहांजो विपयभेदनेनयभेदकहेसो तो सामान्यनैगमसंग्रहनयमांअने विशेष नैगमव्यवहारनयमांभेलतांत्राकीछनयजथयीजातेएहवी शिष्यनीआशंकाटालवानेअ र्थेकहेछेकेयद्यपि संग्रहनय तथाव्यवहारनयमांहेज सामान्यविशेषपर्यायेंनैगमनय भिलेछे तोपणकिहांएकप्रदेशादिदृष्टांतस्थानेभिन्नथायछे उक्तंच छन्हंतहयचउन्हं पंच विहोतहयहोइभयणिज्जा ॥ तम्मयसोयपएतो सोचेवणचेवसत्तन्हं ॥ इत्यादिक तेमाटे किहांएक भिन्नविपयपणाथी नैगमनयभिन्नकह्युं पणइहांतो द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकबे हुनयनो नैगमादिकनयथी अभिन्नविपयछे तोतेने अलगाकरीने नवभेद शीरीतेकहियें

इमकरताएपामिएरे ॥ सर्वविभक्तविभाग ॥ जीवादिकप
रेकोनहीरे ॥ इहांप्रयोजनलागरे ॥ प्राणी० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एमकरता नवनयदेखाडत्तां तो विभक्तनो विभागथाय एटले वहिंच्यानुं वहेचवुंथाय जोतमारे वेचणकरवीहोयतो तेवारें जीवाद्विधाः संसारिणःसिद्धाः संसारिणः पृथ्वीकायिकादि पट्भेदाः सिद्धाःपंचदशभेदाः एमज नयाद्विधाः द्रव्यार्थि क पर्यायार्थिक भेदात् द्रव्यार्थिकास्त्रिधाः नैगमादिभेदात् ऋजुसूत्रादिभेदाञ्चतुर्धा पर्यायार्थिकः एमकह्युंछे पणनवनया एमएकवाक्यनो विभागकीधो तेसर्वथा मिथ्याजा णवो नहीतो जीवसंसारी सिद्धाः इत्यादि विभागवाक्यपण थावापामे हवेकोइक हेसेजे जीवाजीवौतत्त्वं एमकहेता अनेरातत्वआव्या तोपणसात अथवानवतत्व जे मकहियेंछेयें तेमजद्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकौ नयौ एमकहेताथका अनेरानय सर्वआ वेछे तोपण अमे स्वप्रक्रियायें नवनयकहिसुं एमकहेतेनेकहियेंजे तिहांप्रयोजनभेदें

पज्ञ्वनयतिञ्ञंतमारे ॥ प्रथमद्रव्यनयचार ॥ जिनजद्रा
दिकज्ञापियारे ॥ महाज्ञाष्यसुविचाररे ॥ प्राणी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ हवेसातनयमध्ये द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक एबेनय जेआनी
मत प्रक्रियादेखाडेछे जे अंतमांके० ढेल्लाजे शब्द समभिरूढ अनेएवंभूतरूप
एनयते पर्यायनयकहियें अनेप्रथमनाचारनय जे नैगम संग्रह व्यवहार
लक्षण तेद्रव्यार्थिकनयकहियें एरीतें जिनजद्रगणीखमाश्रमण प्रमुखसि०
आचार्यते श्रीविशेषावश्यकना महाज्ञाष्यमध्ये निर्द्धारेंकहेछे ॥ १२ ॥

सिद्धसेनमुखएमकहेरे॥ प्रथम द्रव्यनयतीन॥ तसऋजुसू
त्रनसंज्ञवेरे ॥ द्रव्यावश्यकलीनरे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेसिद्धसेन तथामल्लवादीप्रमुख तर्कवादीआचार्य एमकहेछे के प्रथम
नात्रणनयजे १ नैगम २ संग्रह ३ व्यवहार लक्षणते द्रव्यनयकहियें अने १
२ शब्द ३ समभिरूढ ४ एवंभूत एचारनय पर्यायार्थिककहियें. द्रव्यार्थिकमते
पर्यायाः रज्जु कल्पिताः॥ सत्यंतप्त्वन्वयिद्रव्यं कुंमलादिषुहेमवत् ॥ १ ॥
ते द्रव्यं पर्यायेन्योपि नोष्टथक्॥यन्नार्थक्रिया द्दष्टा नित्यं कुत्रोपयुज्यते ॥२॥ इत्य
र्थार्थपर्यायार्थनयलक्षणात् अतीत अनागत पर्यायप्रतिक्षेपीऋजुसूत्रः शुद्ध
पर्यायमानः कथंद्रव्यार्थिकः स्यादित्यतेषामाशयः तेआचार्यनेमते ऋजुसूत्रनय द्र
व्यावश्यकनेविषे लीननसंज्ञवे तथाच ऋजुसुत्रस्ताएगे अणुवउत्तेएगंदव्वावस्सयंपुहु
त्तंनइ॥ इतिअनुयोगद्वारसूत्रविरोधः वर्त्तमानपर्यायाधारस्यद्रव्यांशपूर्वापरपरिणा
मसाधारण ऊर्ध्वतासामान्यद्रव्यांशसाद्दश्यास्तित्वरूपतिर्यक्सामान्यद्रव्यांशः एमाए
वर्त्तपर्यायमाने तो ऋजुसूत्रने पर्यायार्थिकनयकहेता एसूत्रकेमसिद्ध तेमाटेक्षणिक
द्रव्यवादी शुद्धऋजुसूत्र तद्वर्त्तमानपर्यायापन्न द्रव्यादि स्थूलऋजुसूत्रने द्रव्यनयक
हेवो एमसिद्धांतवादीकहेछे अनुपयोगद्रव्यांशमेव सूत्रपरिज्ञावितमादायोक्तसूत्रता
त्पर्यमनेनेनोक्तमार्गस्यमित्यस्मात्पर्यालोचितःपंथा. ॥ १३ ॥

इमयंनरज्ञाविननणांरे ॥ केमअलगोउपदेश ॥ पांचथकी
जेमज्ञानमांरे ॥ विषयजेवनदीकेशरे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ इमहे० एमनेअंतरज्ञाविनके० मांहेजेआजे द्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिक
नय तेनो अलगोउपदेश केमकह्यो कदाचितजो एमकहेशोजे मनोनर पांचनयक
हियेंछैं तेम ... निराधका माननयकहेता जेमअलगोउपदेशतेमअमारे द

र्थाथिक पर्यायार्थिकनो अलगोउपदेशछे तेनुंउत्तरजे शब्द समभिरूढ तथाएवंभू तने जेमविषयभेदछे तेमद्रव्यार्थिक तथापर्यायार्थिकने सातनयथी भिन्न विषयदे खाडो जेमत्रणनयने एकसंज्ञायेंसंग्रही पांचनयकह्यांछे पणविषयभिन्नछे पणइहां तो विषयभिन्ननथी केमके जेद्रव्यार्थिकना दशभेददेखाड्या तेसर्वशुद्धाशुद्धसंग्रहा दिक नयमांआवेछे तथाजे पर्यायार्थिकना छभेददेखाड्या तेसर्व उपचरितानुपचरित व्यवहार शुद्धाशुद्ध ऋजुसूत्रादिकमांआवे जोगोबलिवर्दन्यायें विषयभेदें भिन्ननयक हियें तोस्यादस्त्येव स्यान्नास्त्येव इत्यादिक सप्तभंगीमांकोडोरीतें अर्पितानर्पित स त्वासत्व ग्राहक नय भिन्नभिन्नकरतां सप्तमूलनयप्रक्रियाभांजे एपंमितेविचारवुं॥१४

संग्रहनेव्यवहारथीरे ॥ नैगमकिहांएकभिन्न ॥ तेणेते
अलगोतेहथीरे ॥ एतोदोयअभिन्नरे॥प्राणी०॥ १५ ॥

अर्थ॥इहांजो विषयभेदनेनयभेदकहेसो तो सामान्यनैगमसंग्रहनयमांअने विशेष नैगमव्यवहारनयमांभेळतांवाकीछनयजथयीजातेएहवी शिष्यनीआशंकाटाळवानेअ र्थेकहेछेकेयद्यपि संग्रहनय तथाव्यवहारनयमांहेज सामान्यविशेषपर्यायेंनैगमनय भिळेछे तोपणकिहांएकप्रदेशादिदृष्टांतस्थानेभिन्नथायछे उक्तंच छन्हंतहपचन्हं पंच विहोतहयहोइभणिज्जा ॥ तम्मयसोयपएतो सोचेवणचेवसत्तन्हं ॥ इत्यादिक तेमाटे किहांएक भिन्नविषयपणायी नैगमनयभिन्नकह्युं पणइहांतो द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकवे हुनयनो नैगमादिकनयथी अभिन्नविषयछे तोतेने अलगाकरीने नवभेद शीरीतेकहियें

इमकरताएपामिएरे ॥ सर्वविभक्तविभाग ॥ जीवादिकप
रॅकोनहीरे ॥ इहांप्रयोजनलागरे ॥ प्राणी० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एमकरता नवनयदेखाडतां तो विभक्तनो विभागथाय एटले वहिंच्यानुं वहेचवुंथाय जोतमारे वेचणकरवीहोयतो तेवारें जीवाद्विधाः संसारिणःसिद्धाः संसारिणः पृथ्वीकायिकादि षट्भेदाः सिद्धाःपंचदशभेदाः एमज नयाद्विधाः द्रव्यार्थि क पर्यायार्थिक भेदात् द्रव्यार्थिकास्त्रिधाः नैगमादिभेदात् ऋजुसूत्रादिभेदाच्चतुर्धा पर्यायार्थिकः एमकह्युंते पणनवनया एमएकवाक्यनो विभागकीधो तेसर्वथा मिथ्याजा णवो नहीतो जीवसंसारी सिद्धाः इत्यादि विभागवाक्यपण थावापामे हवेकोइक हेसेजे जीवाजीवौतत्वं एमकहेता अनेरातत्वआव्या तोपणसात अथवानवतत्व जे मकहियेंछेयें तेमजद्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकौ नयौ एमकहेतायका अनेरानय सर्वथा वेछे तोपण अमे स्वप्रक्रियायें नवनयकहिसुं एमकहेतेनेकहियेंजे तिहांप्रयोजनभेदें

भिन्नभिन्न तत्व व्यवहारमात्र साध्यते तेतेमजसंनवे अने इहां 'इतरव्यावृत्तिसाध्य ते तिहांहेतु कोटि अनपेक्षित नेदप्रवेशे वैयर्थ्यदोषपछोय तत्वप्रक्रियायें एप्रयोजन ठे जीव अजीव एवेमुख्यज्ञेयपदार्थंनणीकहेवा अनेबंध मोक्ष एवे मुख्यहेयउपादेयते तेमाटे बंधकारण जेआश्रव ते हेयके० गांमवुं अनेमोक्षमुख्य पुरुषार्थछे तेनावेका रण एक संवर बीजोनिर्जराकहेवा एसाततत्वकहेवानी प्रयोजनप्रक्रियापुण्यपापरूप शुनाशुनबंध नेदविगति अलगाकरी एजप्रक्रियानवतत्वकथननीजाणवी॥ १६ ॥

भिन्नप्रयोजनविणकह्यारे ॥ सातमूलनयसूत्र ॥ तेणेअधिकुं
केमनापीयेरे ॥ राखीयेंनिजघरसूत्ररे ॥ प्राणी० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ माटेइहांद्रव्यार्थिक पर्यायार्थिकना भिन्नोपदेशनुं कोइप्रयोजननथी केमके सातमूलनयापणत्ता एहवुंसूत्रेंकह्युंने तेउल्लंघीने नवनयकहियें तो आपणापरवुं सू त्रकेमरहे तेमाटे नवनयाः एमकहेतोथको देवसेननामा बोटिकतेउत्सूत्रनापीजाणवो

दशनेदादिकपणइहांरे ॥ उपलक्षणकरीजाण ॥ नदीतोक
दोअंतरनवेरे ॥ प्रदेशार्थकुणठाणरे ॥ प्राणी० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥इहां नयचक्रग्रंथमां दिगंबरें द्रव्यार्थिकादिक दशनेदादिककह्या तेपण उपलक्षणेकरीजाणो नहीतो प्रदेशार्थ नयक्यास्थानकेंआवे तेविचारजो उक्तंचसू त्रे दव्वठ्ठयाए पएसठ्ठयाए इत्यादि तथाकर्मोपाधीसापेक्ष जीवनावग्राहक द्रव्यार्थिक नय जेमकह्यो तेम जीवसंयोगसापेक्ष पुद्गलनावग्राहकनयपण भिन्नकह्योजोइयें ए रीतेंकरियें तो अनंतानेदथाय तथाप्रस्थकादि दृष्टांते नैगमादिकना अशुद्ध अशुद्ध तर अशुद्धतम शुद्धतर शुद्धतमादिनेद किहांसंग्रहवाजाय उपचारते तेमाटे उप नयकहियेंतो अपसिद्धांतथाय एअनुयोगद्वारसूत्रें तेनयनानेद देखाड्यानें ॥ १८ ॥

उपनयपणअलगानहींरे ॥ जेव्यवहारसमाय ॥ नहींतोन
दप्रमाणनोंरे ॥ उपप्रमाणपणथायरे ॥ प्राणी० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ वलीरुक्तिनवानहवे जेउपनयकह्या तेपण व्यवहार नैगमादिनयथी अलगानथी उक्तंच तत्वार्थसूत्रे उपचारबहुलोविस्तृतार्थो लौकिकप्रायोव्यवहारइति एमहजना नयनानेदनेजो उपनयकरीमानसो तो स्वपरव्यवसायि ज्ञानप्रमाणं एह सूत्रें लक्षित ज्ञानरूपप्रमाणनो एकदेश मतिज्ञानादिक अथवा देशग्रहणादिक तेने उपप्रमाणपण केमनथीकहेता तस्मानुनय उपनय एबोटिकनीप्रक्रिया शिष्य बुद्धि धंधनमात्रजाणवी ॥ १९ ॥

व्यवहारनेनिश्चयथकीरे ॥ स्योउपचारविशेष ॥ मुख्यवृ
त्तिजोएकनीरे ॥ तोउपचारविशेषरे ॥ प्राणी० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ व्यवहारनेविषे उपचारछे अनेनिश्चेनयमां उपचारनथी एपणस्योविशेष जेवारें एकनयनी मुख्यवृत्तिलहियें तेवारें बीजानयनी उपचारवृत्तिआवे अतएव स्यादस्त्येव एनयवाक्यं अस्तित्वग्राहक निश्चेनयेंअस्तित्वधर्म मुख्यवृत्तिलेता कालादि कआठे अभेदवृत्युपचारें अस्तित्वसंबंध सकलधर्मलेतांज सकलादेशरूप नयवाक्य थाय एमआकरग्रंथेप्रसिद्धछे स्वस्वार्थे सत्यपणानो अभिमानतो सर्वनयने माहो मांहेछेज अने फलथीसत्यपणुंतो सम्यक्दर्शनयोगेंजछे ॥ १० ॥

तेणेएभाष्येभाष्युंरे ॥ आदरियेंनिरधार ॥ तत्वअरथनि
श्चयग्रहेरे ॥ जिनअभिमतव्यवहाररे ॥ प्राणी० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेनिश्चय तथाव्यवहारनुंलक्षण भाष्येके० विशेषावश्यकें कह्युंछे तेरी तें निरधारीने आदरो तत्वार्थग्राहीनयोनिश्चयः लोकाभिमतार्थग्राहीव्यवहारः जेत त्वअर्थते युक्तिसिद्धअर्थ जाणवो अनेजेलोकाभिमतते व्यवहारप्रसिद्धछे तेयद्यपि प्रमाणेतत्वार्थग्राहीछे तथापि प्रमाणस्य सकलतत्वार्थग्राही निश्चयनयः जछे एटले एकदेशतत्वार्थग्राही व्यवहार एभेदनिश्चे व्यवहारमांजाणवो अनेनिश्चेनयनी विष यता अनेव्यवहारनयनीविषयतातो अनुभवसिद्धभिन्नछे अत्राज्ञाननयनिष्ट जेमसवि कल्पकतानिष्टप्रकारी इत्यादिक अन्यवादिभिन्न मानेछे एमहृदयमां विचारवुं ॥११॥

अभ्यंतरताबाह्यनेरे ॥ जेवहुविगतिअभेद ॥ निरमलपरि
णतिद्रव्यनीरे ॥ एसवीनिश्चयभेदरे ॥ प्राणी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेबाह्यअर्थने उपचारें अभ्यंतरपणुं करियें तेनिश्चेनयनो अर्थजाणवो यथा समाधिनंदनंधैर्यं दंभोलिःसमताशची॥ज्ञानंमहाविमानंच वासवश्रीरियंपुनः॥१ इत्यादि पुंडरीकाध्ययनाद्यर्थोप्येवंभावनीयः जेवणीव्यक्तिनो अभेदढेखाडियें तेपण निश्चयनयार्थ जाणवो जेम एगेआया इत्यादिसूत्रें वेदांतदर्शनपण शुद्धसंग्रहनयादे शरूप शुद्धनिश्चयनयार्थ एमसंमतिग्रंथेंकह्युंछे तथाद्रव्यनीजे निर्मलपरिणति बाह्य निरपेक्ष परिणाम तेपणनिश्चयनयनोअर्थजाणवुं जेम आयासामाइए आयासामा इयस्सअठे एमजेजेरीतें लोकातिक्रांत अर्थपामियें तेते निश्चयनयनो अर्थभेदथाय अने तेथीलोकोत्तरार्थ भावनाआवे ॥ १२ ॥

जेहभेदहवेविगतिनोरे ॥ जेउत्कटपर्याय ॥ कार्यनिमित्त अभिन्नतारे ॥ एव्यवहारउपायरे ॥ प्राणी० ॥ १३ ॥

अर्थ॥जेव्यक्तिनो भेददेखाडियें जेम अनेकानिद्रव्याणि अनेकजीवा इत्यादिरीतें व्यवहारनयनोअर्थ तथा उत्कटपर्याय जाणियें तेपणव्यवहारनयनोअर्थ अतएव तिथ्यप्रणएणंपंचवन्ने नमरेववहारणएणंकालवणे इत्यादि सिद्धांतेंप्रसिद्धछे तथा कार्यने निमित्तके० कारण एवेहुने अभिन्नपणुंकहियें तेपणव्यवहारनयनो उपायछे जेमआयुर्घृतं इत्यादिककहियें एमजगिरिर्दह्यते कुंभिकास्रवति इत्यादिक व्यवहारजा पा अनेकरूपें कहियेंछैयें ॥ १३ ॥

एमबहुविपयनिराकरीरे॥ करतांतससंकोच ॥ केवलबाल बोधवारे ॥ देवसेनआलोचरे ॥ प्राणी० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एहवानिश्चेनय तथाव्यवहारनयनाघणाअर्थ तेनेनिराकरीके० टालीने ते नो संकोचकरतां थोडोभेददेखाडतां नयचक्रग्रंथनोकर्त्ताजे देवसेननामादिगंबरी ते नो आलोच ते पोतासरिखा केटलाक बालकनेज बोधवानोदेखायछे पणसर्वार्थनि रूपणनो आलोच देखातोनथी अनेजे शुद्धनयार्थतेतोश्वेतांबर संप्रदायना शुद्धनय नाग्रंथ तेनाअभ्यासथीज जणाय एवावार्थछे ॥ १४ ॥

एमबहुविधनयभंगसुंरे ॥ एकत्रिविधपयथ्थ ॥ परखोहर पोहैयडलेरे ॥ सुजशलहीपरमथ्थरे ॥ प्राणी० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एप्रक्रियामांपणअशुद्धटालीने जेयुक्तिसिद्धअर्थछे ते उपपाद्युंछे तेमाटे ए रीतें बहुप्रकारनयेंभंगे एकजअर्थ त्रिविधके० द्रव्यगुणपर्यायरूप परखो स्वसमय प रसमयनुं अंतरजाणीने हृदयनेविपे हर्षी परमार्थज्ञानयशपामीने ॥ १५ ॥

॥ ढालनवमो इमधन्नोधणनेपरचावे एदेशी ॥

एकअरयतिहुंलक्षणे ॥ जेमसहितकहेजिनराज रे ॥ तेमसद्दहणामनधारतां ॥ सीजेसघलासुभ काजरे॥जिनवाणीप्राणीसांभलो ॥एआंकणीछे॥१॥

अर्थ ॥ हवेएकजअर्थ जीवपुद्गलादिक तथाघटपटादिक ते जेम उत्पादव्ययध्रौ व्य एत्रणलक्षणेकरी सहित एमश्रीजिनराजकहेछे उपन्नेवा विगमेइवा ध्रुवेइवा ए त्रिपदीयेंकरीने तेमज सद्दहणामनमांधरतां सर्वकार्यसीजे एत्रिपदीने सर्वअर्थव्याप

कपणुं धारवुं तेजिनशासनार्थे पणकेटलाएक एकनित्यज केटलाएकएकअनित्यज एमनैयायिकादिककहेछे तेरीतिनथी केमके नित्यैकांत अनित्यैकांत पक्षतोलोकयु क्तिथीपण विरोधछे माटे दीपथीमांमीने आकाशसुधी जेटलापदार्थछेतेमां उत्पाद व्यय ध्रौव्य लक्षणमानवुं तेहिजप्रमाणछे उक्तंच श्रीहेमाचार्ये आदीपमाव्योमस मस्वभावं स्याद्वादमुद्रानतिभेदवस्तु॥तन्नित्यमेवैकमनित्यमन्य दितित्वदाज्ञाद्विपतांप्र लापः ॥ १ ॥ एजिनेश्वरनीवाणी हेप्राणीतुंमेसांभलजो ॥ १ ॥

उत्पादव्ययध्रुवपणे ॥ छेसमयसमयपरिणामरे ॥ षटद्रव्य
तणोप्रत्यक्षथी ॥ नविरोधतणोएठामरे ॥ जिन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेएहिजभाव विवरीनेकहेछे १ उत्पाद २ व्यय ३ ध्रुव एलक्षणे षट द्रव्यनो समयसमय परिणामछे इहांकोइकहेसेजे जिहांउत्पादव्यय तिहांध्रुवपणो नजोइयें अनेजिहांध्रुवपणो तिहांउत्पादव्यय नजोइयें एहवोविरोधछे तोत्रणलक्ष ण एकठामेकेमहोय जेम छाया तथाआतप एकठामेनहोय तेम ए त्रणलक्षणपण ए कठामे नहोवाजोइयें तेनेकहियेंजे शीत उष्ण स्पर्श जल तथाअनलके० अग्नीनेवि षे परस्परें परिहारेंदीठाछे तेने एकठामें उपसंहारे विरोधकहियें पण इहांतोत्रणल क्षण सर्वत्रएकठाज प्रत्यक्षथीदेखायछे परस्परपरिहारेंकिहांयें प्रत्यक्षसिद्धनथी तोए विरोधनोठाम केमहोय अनादिकालनी एकांतवासनायें मोहितजीव तेएहोनोविरोध जाणेछे पणपरमार्थे विचारीजोता विरोधनथी समनियततायें प्रत्ययजविरोधभंजकछे

घटमुकुटसुवर्णहआथिया ॥ व्ययउत्पतिथितिपेखंतरे॥ नि
जरूपेहोवेहेमथी ॥ दुखहर्षउपेक्षावंतरे ॥ जिन० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ तेहिजदेखाडेछे जे एकहेमद्रव्यनेविषे घटाकारेंनाश अनेमुकुटाकारेंउत्प त्ति तथाहेमाकारेंस्थिति एत्रणलक्षण प्रगटदेखायछे केमके हेमघटभांजी नेहेममु कुटथायछे तेथी हेमघटार्थि दुखवंतथायछे माटेघटाकारें हेमव्ययसत्यछे अने हेम मुकुटार्थि हर्षवंतथायछे तेमाटेहेमोत्पत्ति मुकुटाकारेंसत्यछे अनेहेममात्रार्थि तेकालें नसुखवंत नदुःखवंतथायछे स्थितिपरिणामेंरहेछे तेथी हेमसामान्यस्थिति सत्यछे एमसर्वत्र उत्पादव्यय स्थितिपर्याय द्रव्यरूपेंजाणवा इहांउत्पादव्यय भागेभिन्न द्रव्य अनेस्थितिभांगे भिन्नद्रव्य कोइदेखातुंनथी केमके घटमुकुटाद्याकारें स्पर्शि रहे मद्रव्यनेनही जेएकध्रुवहोय ध्रुवतानीप्रतितिपणछे माटेतभावाव्ययंनित्यं एलक्षण परिणामेंध्रुव अने परिणामेंअध्रुव एसर्वभावतुं ॥ ३ ॥

जेहभेदहेविगतिनोरे ॥ जेउत्कटपर्याय ॥ कार्यनिमित्त
अभिन्नतारे ॥ एव्यवहारउपायरे ॥ प्राणी० ॥ ३३ ॥

अर्थ॥जेव्यक्तिनो भेददेखाडियें जेम अनेकानिद्रव्याणि अनेकजीवा इत्यादिरीतें व्यवहारनयनोअर्थ तथा उत्कटपर्याय जाणियें तेपणव्यवहारनयनोअर्थ अतएव तिश्यपणएणंपंचवर्न्ने भमरेववहारएणंकालवर्णो इत्यादि सिद्धांतेंप्रसिद्धछे तथा कार्यने निमित्तके० कारण एबेहुने अभिन्नपणुंकहियें तेपणव्यवहारनयनो उपायछे जेमआयुर्घृतं इत्यादिककहियें एमजगिरिर्दह्यते कुंभिकास्रवति इत्यादिक व्यवहारना पा अनेकरूपें कहियेंछेयें ॥ ३३ ॥

एमबहुविषयनिराकरीरे॥ करतांतससंकोच ॥ केवलवाल
बोधछे स्यादुत्पद्यते स्यान्नश्यति स्यादध्रुवं एमजवाक्यप्रयोगकरियें ॥

अर्थ॰ वाशब्दोविवस्यायांसच स्याछब्दसमानार्थः अतएव कृष्णःसर्पः पण स्यात्शब्दलहीयें केमके सर्पने पृष्टावछेदेश्यामताछे पण उदरावछेदें श्यामता नथी तथासर्पमात्रे कृष्णतानथी शेषनाग शुक्लकहेवायछे तेमाटे विशेषणविशेष्यनिष मार्थजो स्यात्शब्दप्रयोगछे तोत्रिपदि महावाक्यपणे स्यात्कारनीभजनासंभवे ॥४॥

बहुकारयकारणएकजो ॥ कहियेंतेद्रव्यस्वभावरे ॥ तोका
रणभेदाभावथी ॥ होयकारयभेदाभावरे ॥जिन०॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहियेंजे हेमद्रव्यएकज अविकृतछे अनेजेविकार तेमिथ्याछे अनेशोकादिककार्यत्रय जननैकशक्ति स्वभावतेछे तेमाटे तेथी शोकादिककार्यत्रयथा यछे तोकारणनाभेदविना कार्यनोभेद केमथाय श्रेष्टसाधनते प्रमोदजनक अने स्वा निष्टसाधनते शोकजनक तदुभयभिन्नते माध्यस्थजनक एत्रिविधकार्य ते एकरूपथी केमहोय शक्तिपण दृष्टांतानुसारे कल्पियेंछेयें नहीतो अग्निसमीपें जलदाह जनक स्वभावे इत्यादिककल्पतां पण कोणनिषेधकछे तस्मात् शक्तिभेद कारणभेद कार्यने वानुसारे अवश्यअनुसरवो अने जननैकशक्तिशब्दज एकत्वानेकत्व स्याद्वादस्वभवेछे

शोकादिकजननेवासना ॥ भेदेकोइबोलेबुद्धरे ॥ तसमन
सकारनीभिन्नता ॥ विणनिमित्तभेदकिमशुद्धरे॥जिन०॥६॥

अर्थ ॥ शोकके० बौधमतवादि एमकहेछे जे तुनानोमस्रोतमननीपरें उत्पादव्य

कपणुं धारवुं तेजिनशासनार्थी पणकेटलाएक एकनित्यज केटलाएकएकअनित्यज एमनैयायिकादिककहेछे तेरीतिनथी केमके नित्यैकांत अनित्यैकांत पक्षतोलोकयुक्तिथीपण विरोधछे माटे दीपथीमांमीने आकाशसुधी जेटलापदार्थछेतेमां उत्पाद व्यय ध्रौव्य लक्षणमानवुं तेहिजप्रमाणछे उक्तंच श्रीहेमाचार्यैं आदीपमाव्योमसमस्वभावं स्याद्वादमुद्रानतिभेदवस्तु॥तन्नित्यमेवैकमनित्यमन्य दितित्वदाज्ञाद्विषतांप्रलापः ॥ १ ॥ एजिनेश्वरनीवाणी हेप्राणीतुंमेसांभलो ॥ १ ॥

उत्पादव्ययध्रुवपणे ॥ छेसमयसमयपरिणामरे ॥ षटद्रव्य
तणोप्रत्यक्षथी ॥ नविरोधतणोएठामरे ॥ जिन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवेएहिजभाव विवरीनेकहेछे १ उत्पाद २ व्यय ३ ध्रुव एलक्षणे षट द्रव्यनो समयसमय परिणामछे ~~[illegible]~~ व्यय तिहांध्रुवपणो नजोइयें [illegible]ध्यानस्वभावथी शोकप्रमोदादिक संकल्पविकल्पहोयछे जोत्रणलक्षणक निमित्तविनाश वासनाविशेषें घटपटाद्याकार ग्यानहोवोजोइयें तेथी वेगपण ए सर्वलोपाए अनेनिःकारण तत्तदाकारग्यानपण संभवेनही अंतरबहिराकारविरोधें बाह्याकार मिथ्याकहियें तोचित्रवस्तुविषय नीलपीताद्याकार ग्यानपण मिथ्याथयोजाय तथासुखाद्याकार नीलाद्याकारपण विरुद्धथाय तेथीसर्वे शून्यग्यानवादि माध्यमिकबौद्धनो मतआवीजाय उक्तंच किंस्यात्सा चित्रतैः कस्यांनस्यात्तस्यामतावपि ॥ यदीदंस्वयमर्थानां रोचतेतत्रकोवयं ॥ १ ॥ तेशून्यवादपण प्रमाणसिध्यसिद्धिं व्याहतछे तेमाटे सर्वनयशुद्धस्याद्वादज वीतरागप्रणीत आदरवो ॥ ७ ॥

घटनाशमुकुटउतपत्तिनो ॥ घटएकजरूपेंहेलरे ॥ एकांत
भेदनीवासना ॥ नैयायिकपणकेमदेतरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ॥एमशोकादि कार्यत्रयनेभेदें उत्पादव्ययध्रौव्य एत्रणलक्षण वस्तुमांसाध्यापण तेअभिन्नछे द्रव्यपणेअभिन्नछे अतएव हेमघटनाशाभिन्न हेममुकुटोत्पत्तिनेविषे हेमघटावयव विभागादिकहेतुछे अतएवच महापटनाशाभिन्न खंडपटोत्पत्तिप्रतिएकादि तंतुसंयोगापगमहेतुछे खंडपटें महापटनाशने हेतुताकहिये तोमहागौरवथाय एमजाणतो एजावयप्रियनैयायिक नाशोत्पत्तिना एकांतभेदनीवासना केमदीयेछे ते हतुंमतछे जे कल्पनागौरवंयत्र तंपक्षंनसहामहे॥कल्पनालाघवंयत्र तंपक्षंतुसहामहे

दुग्धव्रतदधीजिमेनही ॥ नवीदूधदधीव्रतखायरे ॥ नवीदो
इअगोरसव्रतजिमे ॥ तेणेतियलक्षणजगथायरे ॥ जिन० ॥ ९ ॥

जेहनेदतेविगतिनोरे ॥ जेउत्कटपर्याय ॥ कार्यनिमित्त अनिन्नतारे ॥ एव्यवहारउपायरे ॥ प्राणी० ॥ ३३ ॥

अर्थ॥जेव्यक्तिनो नेदवेखाडियें जेम अनेकानिद्व्याणि अनेकजीवा इत्यादि व्यवहारनयनोअर्थ तथा उत्कटपर्याय जाणियें तेपणव्यवहारनयनोअर्थ अर तिथ्यपणएणंपंचवर्ने नमरेववहारणएणंकालवणे इत्यादि सिद्धांतेंप्रसिद्धछे ह कार्यने निमित्तके० कारण एबेहुने अनिन्नपणुंकहियें तेपणव्यवहारनयनो अर्थ जेमआयुर्घृतं इत्यादिककहियें एमजगिरिर्दह्यते कुंभिकास्त्रवति इत्यादिक व्यवहार पा अनेकरूपें कहियेंछेयें ॥ ३३ ॥

एमवहुविपयनिराकरीरे॥ करतांतससंकोच ॥ केवलवाल बोधद्रव स्यादुत्पद्यते स्यान्नश्यति स्याद्ध्रुवं एमजवाक्यप्रयोगकरियें

अर्थ॥ 'वाशब्दोविवस्थायांसच स्याच्छब्दसमानार्थः अतएव रज्जुःसर्पः एलौकिकवाक्य पण स्यात्शब्देंलहीयें केमके सर्पने प्रष्टावच्छेदेश्यामताछे पण उदरावच्छेदें श्यामता नथी तथासर्पमात्रें कलतानथी शेपनाग शुक्लकहेवायछे तेमाटे विशेपणविशेष्यनिय मार्थजो स्यात्शब्दप्रयोगछे तोत्रिपदि महावाक्यपणे स्यात्कारनीजजनासंनवे ॥४॥

वहुकारयकारणएकजो ॥ कहियेंतेद्रव्यस्वनावरे ॥ तोका रणनेदानावथी ॥ होयकारयनेदानावरे ॥जिन०॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहियेंजे हेमद्रव्यएकज अविकृतछे अनेजेविकार तेमिथ्याछे अनेशोकादिककार्यत्रय जननैकशक्ति स्वनावतेछे तेमाटे तेथी शोकादिककार्यत्रयथा यछे तोकारणनानेदविना कार्यनोनेद केमथाय श्रेष्टसाधनते प्रमोदजनक अने मा निष्टसाधनते शोकजनक तडुनयनिन्नते माध्यस्थजनक एत्रिविधकार्य ते एकरूपथी केमहोय शक्तिपण दृष्टांतानुसारे कल्पियेंछेयें नहीनो अग्निममीयें जलदाह जनक स्वनावे इत्यादिककल्पतां पण कोणनिपेधकरे तस्मात् शक्तिनेद कारणनेद कार्यने दानुसारे अवश्यअनुसरवो अने जननैकशक्तिशब्दज एकत्वानेकत्व स्याद्वादसूचवे

शोकादिकजननेवासना ॥ नेदेकोईबोलेबुद्धरे ॥ तममन सकारनीनिन्नता ॥ विणनिमित्तनेदकिमशुद्धरे॥जिन०॥६॥

अर्थ ॥ शोकके० वौधमतवादि एमकहेछे जे तुनानोमझांतमननीपरे उत्पादव्य

यजएकदाठे क्षणिकस्वलक्षणनेध्रुवतातोठेजनही हेमथीशोकादिक कार्यहोयठे भिन्नभिन्नलोकनी भिन्नवासनाठे तेमाटे जेमएकजवस्तुवासनाभेदें कोनेअनिष्ट एप्रत्यक्ष ठे जेमसेलमीप्रमुख मनुष्यनेइष्टठे तथाकरभजेऊंट तेनेअनिष्टने पणतिहां वस्तुभेदन थी तेमइहांपणजाणवुं तेबौद्धने निमित्तभेदविना वासनारूप मनस्कारनीभिन्नता केमशुद्धथाय माटे शोकादिकनुं उपादान जेमभिन्नभिन्नठे तेम निमित्तपणभिन्न अवश्यमानवुं एकवस्तुनीप्रमातृभेदें इष्टानिष्टताठे तिहांपण एकद्रव्यना इष्टानिष्टग्यानजननशक्तिरूपपर्यायभेदकहेवाज ॥ ६ ॥

जोनिमित्तभेदविणग्यानथी ॥ शक्तिसंकल्पविकल्परे॥ तो
वाह्यवस्तुनालोपथी॥ नघटेतुजघटपटजल्परे॥जिन०॥७॥

अर्थ ॥ जो योगाचारमतवादि बौद्ध कहेसेजे निमित्तकारणनाभेदविनाज वासनाविशेषजनितग्यानस्वभावथी शोकप्रमोदादिक संकल्पविकल्पहोयछे तो घटपटादिक निमित्तविनाज वासनाविशेषें घटपटाद्याकार ग्यानहोवोजोइयें तेथी वाह्यवस्तु सर्वलोपाए अनेनिःकारण तत्तदाकारग्यानपण संभवेनही अंतर्बहिराकारविरोधें वाह्याकार मिथ्याकहियें तोचित्रवस्तुविषय नीलपीताद्याकार ग्यानपण मिथ्याथयोजाय तथासुखाद्याकार नीलाद्याकारपण विरुद्धथाय तेथीसर्व शून्यग्यानवादि माध्यमिकबौद्धनो मतआवीजाय उक्तंच किंस्यात्सा चित्रतैकस्यांनस्यात्तस्यांमतावपि ॥ यदीदंस्वयमर्थानां रोचतेतत्रकोवयं ॥ १ ॥ तेशून्यवादपण प्रमाणसिध्यसिद्धि व्याहतठे तेमाटे सर्वनयशुद्धस्याद्वादज वीतरागप्रणीत आदरवो ॥ ७ ॥

घटनाशमुकुटउत्पत्तिनो ॥ घटएकजरूपेंहतरे ॥ एकांत
भेदनीवासना ॥ नैयायिकपणकेमहेतरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ।एमशोकादि कार्यत्रयनेभेदें उत्पादव्ययध्रौव्य एत्रणलक्षण यत्नमीमांसाथीपण तेअविनतठे द्रव्यपणेअभिन्नठे अतएव हेमघटनाशाभिन्न हेममुकुटोत्पत्तिनिर्विषे हेमघटावयव विनाशादिकहेतुछे अतएवच महापटनाशाभिन्न खंडपटोत्पत्तिनिःकादि तंतुसंयोगापगमहेतुछे खंडपटें महापटनाशने हेतुताकल्पियें तोमहागौरवथाय एमजाणतो एनायवस्थितनैयायिक नाशोत्पत्तिना एकांतभेदनीवासना केमदीपेठे ते रतुंमतठे जे कल्पनागौरवंयत्र तंपक्षंनसहामहे॥कल्पनालाघवंयत्र तंपक्षंनुसहामहे

दुग्धभक्तदधीजिमेनही ॥ नवीदूधदधीव्रतम्थायरे ॥ नवीदो
इअगोरसव्रतजिमे॥तेणेत्रियलक्षणजगथायरे ॥जिन०॥९॥

घटव्ययतेउतपत्तिमुकुटनी॥ ध्रुवताकंचननीएकरे॥ दलएकें वर्त्तेएकदा॥ निजकारयशकतिअनेकरे ॥ जिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेउत्पादव्यय ध्रुवनुं अनेदसंबंध नेददेखाडेछे हेमनाघटनोजेव्यय ते हिज हेममुकुटनीउत्पत्ति एककारणजन्यछे तेमाटे विनाशपर्यायोत्पत्ति संतानछे ते थीजघटनाश व्यवहारसंनवेछे तेमाटे पण उत्तरपर्यायउत्पत्ति तेपूर्वपर्यायनो नाश जाणवो अनेकंचननी ध्रुवतापणतेहिजछे केमके प्रतिल्यपर्यायोत्पदें एकसंतानपणुं तेहिजद्रव्यलक्षण ध्रौव्यछे एत्रणलक्षण एकदलें एकदावर्त्तेछे एमअनिन्नपणे पण शोक प्रमोद माध्यस्थरूप अनेककार्यदेखीने तत्कारणशक्तिरूपें अनेकपणे निन्नतापणो जाणवो जेम सामान्यरूपें ध्रौव्य अनेविशेषरूपें उत्पादव्यय एममानतापण विरोध नथी व्यवहारतोसर्वत्र्मस्या त्स्यदर्थंतं, पत्स्येतंत्तरोय विशेषपरतापण व्युत्पत्तिविशेषेंज होय अतएव स्यादुत्पद्यते स्यान्नश्यति स्यादध्रुवं एमजवाक्यप्रयोगकीरेयंत्यें बला इ त्यादे याशब्दोविवस्थायांसच स्याच्छब्दसमानार्थः अतएव कलः सर्पः एलौकिकवाक्य पण स्यातूशब्देंलहीयें केमके सर्पने पृष्टावछेदेश्यामताछे पण उदरावछेदें श्यामता नथी तयासर्पमात्रें कलतानथी शेषनाग शुक्लकहेवायछे तेमाटे विशेषणविशेष्यनिय मार्थजो स्यातूशब्दप्रयोगछे तोत्रिपदि महावाक्यपणे स्यात्कारनीजनासंनवे ॥४॥

बहुकारयकारणएकजो ॥ कहियेंतेद्रव्यस्वनावरे ॥ तोका रणनेदानावथी ॥ होयकारयनेदानावरे ॥ जिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहियेंजे हेमद्रव्यएकज अविकृतछे अनेजेविकार तेमिथ्याछे अनेशोकादिककार्यत्रय जननकशक्ति स्वनावतेछे तेमाटे तेथी शोकादिककार्यत्रयथा यछे तोकारणनानेदविना कार्यनोनेद केमथाय श्रेष्टसाधनते प्रमोदजनक अने सा निष्टसाधनते शोकजनक तछ्नयनिन्नते माध्यस्थजनक एत्रिविधकार्य ते एकरूपथी केमहोय शक्तिपण दृष्टांतानुसारें कल्पियेंछयें नहीनो अग्निसमीपें जलदाह जनक स्वनावे इत्यादिककल्पतां पण कोणनिषेधकछे तस्मात् शक्तिनेद कारणनेद कार्यने दानुसारें अवश्यअनुसरवो अने जननकशक्तिशब्दज एकत्वानेकत्व स्याद्वादसूचवेछे

शोकादिकजननेवासना ॥ नेदेकोईबोलेबुद्धरे ॥ तसमन सकारनीनिन्नता ॥ विणनिमित्तनेदकिमशुद्धरे॥ जिन०॥६॥

अर्थ ॥ शोकके० बौधमतवादि एमकहेछे जे तुनानोमज्ञोतमननीपरें उत्पादव्य

यजएकदाठे क्षणिकस्वलक्षणनेध्रुवतातोठेजनही हेमथीशोकादिक कार्यहोयछे जि न्नजिन्नलोकनी जिन्नवासनाठे तेमाटे जेमएकजवस्तुवासनानेदें कोनेअनिष्ट एप्रत्यक्ष ठे जेमतेलमीप्रमुख मनुष्यनेइष्टछे तथाकरजजेउंट तेनेअनिष्टछे पणतिहां वस्तुनेदन थी तेमइहांपणजाणवुं तेवीछने निमित्तनेदविना वासनारूप मनस्कारनीजिन्नता के मशुद्धथाय माटे शोकादिकनुं उपादान जेमजिन्नजिन्नछे तेम निमित्तपणजिन्न अव श्यमानवुं एकवस्तुनीप्रमातृनेदें इष्टानिष्टताठे तिहांपण एकद्रव्यना इष्टानिष्टग्यान जननशक्तिरूपपर्यायनेदकहेवाज ॥ ६ ॥

जोनिमित्तनेदविणग्यानथी ॥ शक्तिसंकल्पविकल्परे॥ तो
वाह्यवस्तुनालोपथी॥ नघटेतुजघटपटजल्परे॥जिन०॥७॥

अर्थ ॥ जो योगाचारमतवादि बौद्ध कहेछेजे निमित्तकारणनानेदविनाज वास नाविशेषजनितग्यानस्वनावथी शोकप्रमोदादिक संकल्पविकल्पहोयछे तो घटपटा दिक निमित्तविनाज वासनाविशेषें घटपटाद्याकारग्यानहोयेजोइयें तेथी वाह्यवस्तु सर्वलोपाए अनेनिःकारण तत्तदाकारग्यानपण संजवेनही अंतरंगविज्ञानाकारनि रोधें वाह्याकार मिथ्याकहियें तोचित्रवस्तुविषय नीलपीताद्याकार ग्यानपण मिथ्या थयोजाय तथानुखाद्याकार नीलाद्याकारपण विरुद्धथाय तेथीनर्य शून्यग्यानवादि माध्यमिकबौद्धनो मतआवीजाय उक्तंच किंस्यान्नुखाचित्रतैः कस्यांतस्यानस्यामना वपि ॥ यदीदंस्वयमर्थानां रोचतेतत्रकोवयं ॥ १ ॥ तेशून्यवादपण प्रमाणसिद्धसि द्धि व्याहतठे तेमाटे सर्वनयशुद्धस्याद्वादज वीतरागप्रणीत आदर्यो ॥ ७ ॥

घटनाशमुकुटउत्पत्तिनो ॥ घटएकजरूपेंहतरे ॥ एकांत
नेदनीवासना ॥ नैयायिकपणकेमहेतरे ॥ जिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ एमशोकादिकार्यनेदथकीनेदें उत्पादव्ययध्रौव्य एत्रणलक्षण वस्तुमांसाध्याछेते तेअविजिन्नठे द्रव्यपणेअजिन्नछे अतएव हेमघटनाशाजिन्न हेममुकुटोत्पत्तिनेविषे हे मघटावयव विनाशादिकहेतुछे अतएवज महाघटनाशाजिन्न संकुटोत्पत्तिप्रतिपि ण्डादि तंतुसंयोगापगमहेतुछे खंडपटे महापटनाशने तंतुनाशविषे तोमहानाशघयाथ एमजाणतो एवादर्शविषेनैयायिक नाशोत्पत्तिना एकांतनेदनीवासना केमदीपेछे ते स्तुंमतठे जे कल्पनागौरवंयत्र तंपक्षंनमहानहे कल्पनालाघवंयत्र तंपक्षंमुगमहानहे

दुग्धमतदधीजिमेनहीं ॥ नदधिदुग्धधीव्रतस्थायरे ॥ नवलो
उन्नयोरस्मकनजिमे ॥ तेमांनिपलक्षणव्यापरे ॥ जिन० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेदधिद्रव्यते दुग्धद्रव्यनही केमके जेहनेदूधनुंव्रतछेएटलेदूधजजिमवुं ए हवीप्रतिज्ञारूपछे तो तेदहीजिमेनही माटे दूधपरिणामतेहिजदधि एमजोअनेदक हियें तोदधिजिमता दुग्धव्रतभंगथवोनजोइयें एमाटे जे दूध तेदधिद्रव्यनही अने जोपरिणामीछे माटे अनेदकहियें तो दूधजिमता दधिव्रतभंग नथवोजोइयेंअने जे हने दधिखावानुंव्रतछेतेपण दूधजिमतोनथी तथाअगोरसजजिमवुं एहवोव्रतवंत होय तेदूध तथादहीबेहुजिमेनहीएमगोरसपणे बेनेअनेदछे इहांदधिपणे उत्पत्तिअने दुग्धपणेनाशतथागोरसध्रुवपणोप्रत्यक्षसिद्धछे एदृष्टांते सर्वजग त्रिलक्षणात्र यपुक्तपणुं कहेवुं श्लोक पयोव्रतोनदध्यत्तिनपयोत्तिदधिव्रतः ॥ अगोरसव्रतोनोभे तस्माद्वस्तुत्रयात्मकं ॥ १ ॥ जे अन्वयिरूप अनेव्यतिरेकरूप द्रव्यपर्यायथी सिद्धांत अविरोधें सर्वत्रअवतारीने त्रणलक्षणकहेवा केटलाएकभाव व्यतिरेकीज अने केट लाएकभावअन्वयीज एरीतेंजे दर्शनीकहेछे तिहांअनेराभावस्याद्वादव्युत्पत्तीयें देखा डया वीजुंवस्तुनीसत्ता त्रणलक्षणरूपजछे उत्पादव्यय ध्रौव्ययुक्तं सदितितत्वार्थ वचनात् तोसत्ताप्रत्यक्ष तेहजत्रिलक्षणसाक्षात्छे तथारूपें सद्व्यवहार साध्य अनुमानादिकप्रमाणअनुसरियेंछेयें ॥ ९ ॥

उत्पन्नघटेंनिजद्रव्यना ॥ उत्पत्तिनाशकेमहोयरे ॥ सुणध्रु
वतामांपदेजाननिया॥तेअनुगमशक्तिदोयरे॥जिन०॥१०॥

अर्थ ॥ हवेयावत्काल एकेकवस्तुमां त्रिणत्रिणलक्षणादिक केवीरीतेंहोय तेनिर धारेछे उत्पत्तियथीछेजेहनी एहवोजेघट तेनेविषे द्वितीयादिक्षण स्वद्रव्यसंबंध रू पोत्तरपर्यायोत्पत्ति तेहिजपूर्वपर्यायनाश तेतुमेपूर्वेंथाप्योछे एहवुंशिष्येंप्रश्नपुछ्युं ते वारेंगुरुकहेछे प्रथमक्षणेंथयाजे उत्पत्तिनाश ते ध्रुवतामांनिल्या अने अनुगमके० ए कता तेशक्तिसदाइछे अवतेपण आद्यक्षणे उपलक्षणेथयीने आगलक्षणे द्रव्यरूपत तुसंबंधकहियें जेम उत्पन्नोघटः नष्टोघटः सर्वप्रयोगात् इदानींउत्पन्ननष्टः एमकहि यें तेवारें एनत्क्षणविशिष्टता उत्पत्तिनाशनेजाणियें तेद्वितीयादिक्षणेनथी तेमाटे द्वितीयादिक्षणे इदानींउत्पन्न इत्यादिप्रयोगनथाय घटके० इहांद्रव्यार्थदेशें मृद्द्रव्य लेवुं जेमाटे उत्पत्तिनाशथरतां सामान्यरूपेंकहियें तत्प्रतियोगिता तेविशेषरूपेंकहियें

उत्पत्तिनाशनेअनुगमें ॥ भूतादिकप्रत्ययभानरे ॥ पर्याया
रथयीसविचटें ॥ तमानेसमयप्रमाणरे ॥ जिन० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ निर्भेनयथी क्रमाणेकदे एवचनअनुसरीने उत्पद्यमानते उत्पन्नएमक

हियें पणव्यवहारनयथी उत्पद्यते उत्पन्नं उत्पत्स्यतेनश्यतिनष्टंनंक्ष्यति एविभक्त काल त्रयप्रयोगछे तेप्रतिक्षण पर्यायोत्पत्तिनाशनयवादी जे ऋजुसूत्रनय तेणेअनुगृहीत जे व्यवहारनयते लेइनेकहियें केमके ऋजुसूत्रनय समयप्रमाण वस्तुमानेछे तिहां जेपर्यायना वर्त्तमान उत्पत्तिनाश विवक्षीयें तेलेइने उत्पद्यते नश्यतिकहियें अने अ तीतलेइ उत्पन्नोनष्टः एमकहियें वली अनागतनेलेइ उत्पत्स्यतेनंक्ष्यति एमकहियें व्यवस्थासर्वस्याछब्दप्रयोगेंसंभवे ॥ ११ ॥

जोतुजउत्पत्तिविशिष्टनो ॥ व्यवहारनाशनोइष्टरे ॥ व्यवहा
रेंउत्पत्तिआदरो ॥ तोपहेलाअछतिविशिष्टरे॥जिन०॥१२॥

अर्थ ॥ जोउत्पत्तिधारारूप नाशनेविषे भूतादिकप्रत्ययनकहियें अने नशधातु नोअर्थ नाश ने उत्पत्ति एवेलेइ तदुत्पत्तिकालत्रयनो अन्वयसंभवतो कहियें एरीतें कहेतां नश्यसमयें नष्टःएप्रयोगनहोय केमके तेकालेंनाशोत्पत्तिनुं अतीतत्वनथी ए म व्यवहारनोजो समर्थनकरोछो तोव्यवहारें उत्पत्तिक्षणसंबंध मात्रकहो तिहां प्रागभावध्वंसनाकालभावथी कालत्रयनोअन्वय समर्थनकरो अनेजोएमविचारसो जेघटने वर्त्तमानत्वादिकें जेमघटवर्त्तमानत्वादि व्यवहारनहोय अने पटधर्मवर्त्तमा नत्वादिकें पटवर्त्तमानत्वादिकव्यवहारनहोय तेमनाशोत्पत्ति वर्तमानत्वादिकें नाश वर्तमानत्वादिव्यवहारनहोय तोक्रियानिष्ठा परिणामरूप वर्त्तमानत्वने अतीतत्वले इ नश्यतिनष्टः उत्पद्यतेउत्पन्नः एविभक्ति व्यवहारसमर्थन करो अतएव क्रियाका ल निष्ठाकालयौगपद्य विवक्षायें उत्पद्यमानं उत्पन्नं विगच्छद्विगतं एतिद्धांतिक प्रयो गसंभवे अनेपरमतें इदानीं ध्वस्तोघटः एआयक्षणे व्यवहारसर्वथा घटेनही पण अमारेनयभेदेंसंभवे उक्तंच संमतौ स्वाधिकरणक्षणत्वव्यापकस्वाधिकरणक्षणध्वंसा धिकरणताकत्वं अनुत्पन्नं ॥ उप्पज्जमाणकालं उप्पणंति विगयंविगच्छंतं ॥ भेदविपप भवंतो तिकालविसयंविसेसेई ॥ १ ॥ १२ ॥

उत्पत्तिनहीजोआगलें ॥ तोअनुत्पन्नतेयायरे ॥ जिमनाश
विनाअविनष्टछे ॥ पहेलातुजकेमसुहायरे ॥ जिन० ॥१३॥

अर्थ ॥ आगलेंके० द्वितीयादिक्षणेजो उत्पत्तिनही तोघटादिक द्वितीयादिकक्ष णे अनुत्पन्नथाय जेमध्वंसथयापहेला नाशविना अविनष्टकहियेंछैयें तोएतर्केतुज ने केमसुहातुंनथी तेमाटेप्रतिक्षणोत्पाद नाशपरिणामधारें मानवा द्रव्यार्थदेशें द्वितीयादिक्षणे जोउत्पत्ति व्यवहारकहियें तोनाशव्यवहारपण होवोजोइयें तथा

क्षणांतरभावें द्वितीयादिक्षणे उत्पत्तिपामीजोइयें जोअकल्पित अनुत्पन्नता होयन ही तोपणप्रतिक्षणे उत्पत्तिविना परमार्थथी अनुत्पन्नताथयी जोइयें ॥ १३ ॥

एणेभावेंभासिउं ॥ संमतिमांहेएभावरे ॥ संघयणादिकभ
वभावथी ॥ सीजंताकेवलजायरे ॥ जिन० ॥ १४ ॥
तेसिद्धपणेवलीउपजे ॥ केवलभावेंछेतेहरे ॥ व्ययउत्पत्ति
अनुगमथीसदा ॥ शिवमांतियलक्षणएहरे ॥ जिन० ॥१५॥

अर्थ ॥ एमपरिणामथी सर्वद्रव्यने त्रिलक्षणयोग समर्थिउं एजअभिप्रायें संमति ग्रंथमां एभावनाखुंछे जेसंघयणादिक भवभावथीसीजतां मोक्षसमयें केवलज्ञानजाय भवस्थ केवलज्ञानपर्यायें नाशथाय एअर्थतोसिद्धपणे सिद्धकेवलज्ञानपणे उपजे ते होजकेवलज्ञानपणे भावेंछे ध्रुवछे एमोक्षगमनसमयजे व्ययउत्पत्तिथया तत्परिणत सिद्धद्रव्यानुगमथी शिवमां मोक्षमां त्रणलक्षणहोय जेसंघयणाईया भवछकेवल वि सेसपज्ञाया ॥तेसिज्झमाणसमए एहोइविगयंतउहोइ॥१॥सद्धत्तणेणयपुणो उप्पणो एसअत्थपज्ञाउ केवलभावंतुपडुच्च केवलंदाइअंसुत्ते॥२॥एभावलेइने केवलनाणेदुवि हेपन्नते भवछकेवलनाणेय सिद्धकेवलनाणेय इत्यादिसूत्रें उपदेशछे एत्रणलक्षण स्थू लव्यवहारनय तिद्धनेथाय्युं पणसूक्ष्मनयनाथ्युं केमके सूक्ष्मऋजुसूत्रादिकनय तेसम यसमयप्रतें उत्पादव्ययमानेछे तेलेइने तथा द्रव्यार्थादेशनो अनुगमलेइने जेसिद्धकेव लज्ञानमां त्रिलक्षणकह्यिें तेजसूक्ष्मकहेवाय एमविचारीने पक्षांतरकहेछे॥१४॥१५॥

जेज्ञेयाकारेंपरिणमे ॥ ज्ञानादिकनिजपर्यायरे॥ व्यतिरेकेंते
थीसिद्धने ॥ तियलक्षणइमपणथायरे ॥ जिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेज्ञानादिकके० केवलज्ञान केवलदर्शन तेपोतानापर्यायें ज्ञेयाकारेंके० वर्त्तमानादिक विषयाकारें परिणमे व्यतिरेकेंके० प्रतिक्षणेअन्योन्यपणे सिद्धनेपरिण मे तेपीरणत्रणलक्षणथाय तेअावीरीतेंजे प्रथमादिसमये वर्त्तमानाकारछे तेहनो द्वितीयादिक्षणेनाश अतीताकारेंउत्पादअाकारेंभावें अनेकेवलज्ञान केवलदर्शनभा वें अथवा केवलमात्रभावें ध्रुवछे एमभावना करवी ॥ १६ ॥

इमजेपर्यायेंपरिणमे ॥ क्षणसंबंधेंपणभावरे ॥ तेथीतियल
क्खणसंभवे ॥ नहीतोनेयायअभावरे ॥ जिन० ॥ १७ ॥

अर्थ एमजेहेय दव्याकारसंबंधे केवलनेत्रिलक्षण कथुं हवेनिराकारजे सम्यक

वीर्यादिकनाव तेने तथा सिद्धादिक शुद्धद्रव्यने कालनासंबंधथी त्रैलक्षणदेखाडेछे एमजेनाव क्षणसंबंधेपण पर्यायथीपरिणमे एप्रथमपदार्थः तेथीत्रणलक्षण संनवे जेमद्वितीयक्षणेनाव अने आद्यक्षणे संबंधपरिणामें नाशपाम्यो अनेद्वितीयक्षणे संबंधपरिणामे उपनो वलीक्षणसंबंधमात्रें ध्रुवछे तेकालसंबंधथी त्रणलक्षणसंनवे नहीतोतेवस्तुनो अनावथयीजाय उत्पादव्यय ध्रुवयोग्यज नावलक्षणछे अनेतेरहित जे शशविषाणादिक तेअनावरूपछे ॥ १७ ॥

निजपरपर्यायेंएकदा ॥ बहुसंबंधेबहुरूपरे ॥ उत्पत्तिनाश
एमसंनवे ॥ नियमेंतिहांध्रौव्यसरूपरे ॥ जिन० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ एमपोतानापर्यायें जीव तथापुद्गलने अनेपरपर्यायें आकाश अनेधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकायएत्रणद्रव्यने एककालें बहुके० घणासंबंधे बहुप्रकारें उत्पत्ति नाशसंनवे जेटलास्वपर्याय तेटला उत्पत्तिनाशहोय तेथी तिहांध्रौव्यसरूपपण तेटला निरधारछे पूर्वापरपर्यायानुगतआधारांशतावन्मात्रहोय तेवति अत्रसंमतिगाथा एग समयंमीएग दवियस्सबहुआविहोंतिउ॥ उप्पायसमाविगमा ठिईयउस्सग्गोणियमा

द्विविधप्रयोगजवीससा ॥ उत्पादप्रथम अविशुद्धरे ॥ तेनिय
मेंसमुदयवादनो ॥ यतनेंसंयोगजसिद्धरे ॥ जिन० ॥ १९ ॥

अर्थ ॥ उत्पादद्विविधके० बेप्रकारेंछे एकप्रयोगज बीजोवीससाके० स्वनावज नित तेमांपहेलो उत्पादते व्यवहारनोछे तेमाटेअविशुद्धकहियें तेनिर्धार समुदयवादनो तथायत्नेकरी अवयवसंयोगें सिद्धकहियें अत्रसंमतिगाथा ॥ उप्पाउदुविअप्पो पउगजणीउअवीससाचेव॥ तत्थयपउगजणीउ ॥ समुदयवाउअपरिसुद्धो ॥१९॥

सहजेंथायतेवीससा ॥ समुदयएकत्वप्रकाररे ॥ समुदयअ
चेतनखंधनो ॥ वलीसचित्तमिसनिरधाररे ॥ जिन० ॥२०॥

अर्थ ॥ अनेजे सहजें यत्नविनाउत्पादथाय तेविश्रसा उत्पादकहियें तेएकसमुदयजनित अनेवीजोएकत्विक उक्तंच साहाविउविसमुदय कउवएगत्तिउठहोज्जाहिं॥ जेसमुदयजनित विश्रसाउत्पाद तेअचेतनस्कंध अभ्रादिकनो तथासचित्तमिश्रशरीर वर्णादिकनो निरधारजाणवो ॥ २० ॥

संयोगविनाएकत्वनो ॥ तेउव्यविनागेंसिद्धरे ॥ जिमखं
धविनागेंअणुपणुं ॥ वलीकर्मविनागेंसिद्धरे ॥जिन०॥२१॥

अर्थ ॥ संयोगविनाजे विश्रसाउत्पाद तेएकत्विकजाणवो तेद्रव्यविनागें सिद्ध के० उत्पन्नजाणवो जेमद्विप्रदेशादिक स्कंधविनागें अणुपणुंके० परमाणुद्रव्यनो उत्पादथाय तथाजेमजीवने कर्मविनागें सिद्धपर्यायनो उत्पादथाय अनेअवयवनासंयोगेंज द्रव्यनीउत्पत्तिहोय पणविनागेंनहोय एहवुंजे नैयायिकादिक कहेछे तेनेमतें एकत्वादिविनागें खंमपटोत्पत्तिकेमघटे प्रतिबंधकालनावसहित अवस्थित अवयवनासंयोगने हेतुताकल्पतां महागौरवहोय तेमाटेकिहांएकसंयोग किहांएकविनागें द्रव्योत्पादकमानवो तोविनागज परमाणुउत्पादपणे एपणअर्थेसिद्धथयो एसंमतिमांसूत्रछेजे तदुक्तं दवंतरसंयोगाहि केइदवियस्सविंतिउप्पायं ॥ उप्पायथ्याकुशलाविनागजायणइच्छंति ॥ १ ॥ अणुएहिंदवेआरद्धेतिअणुअंतिववएसो ॥ ततोअपुणविनत्तो अणुत्तिजाउअणुहोइ ॥ २ ॥ ॥ २१ ॥

विणखंधहेतुसंयोगजे ॥ परसंयोगेंउत्पादरे ॥ वलीजेह्नि
णक्षिणपर्यायथी ॥ तेएकत्वज अविवादरे ॥ जिन० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेमपरमाणुनो उत्पादएकत्वजछे तेमजजेनासंयोगें बंधनीपजेनही एहवोजे धर्मास्तिकायादिकनो जीवपुद्गलादिकना संयोग तद्दारें जेसंयुक्तं द्रव्योत्पादथ संयुक्त अवस्थाविनाशपूर्वक तथाऋजुसूत्रनयाभिमतजे क्षणिक पर्याय तेप्रथमद्वितीयसमयादि द्रव्यव्यवहारहेतुतद्दारें जेउत्पाद तेसर्वेएकत्वउत्पाद अविवादपणेजाणवो इहांकोइविवादनथी ॥ २२ ॥

परप्रत्ययधर्मादिकतणो ॥नियमेंनाख्योउत्पादरे॥ निजप्रत्य
यपणतेहिजकह्यो ॥ जाणीअंतरंगनयवादरे ॥ जिन० ॥२३॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकनो उत्पाद ते नियमेंपरप्रत्यय स्वोपष्टम्यगत्यादिपरिणत जीवपुद्गलादिकना निमित्तेंजनाख्युंछे तेउनयजनित तथाएकजनितपणहोय तेमाटेतेने निजप्रत्ययपणेकह्यो अंतरनयवाद के० निश्चेव्यवहारजाणीने एअर्थ थागासाइआगंति न्हंपरपच्चउनियमा एसंमतिनीगाथामध्ये अकारप्रश्लेषें बीजोअर्थ ट्तिकारेंकर्योछे तेअनुसरीने लिख्योछे ॥ २३ ॥

विविधनाशपणजाणीयें ॥ एकरूपांतरपरिणामरे ॥अर्थांत
रगमनन्नावगमनवली॥बीजोप्रकारअभिरामरे॥जिन०॥२४

अर्थ ॥ परिणामोह्यर्थांतरगमनंनचसर्वथाव्यवस्थानं ॥ नचसर्वथाविनाशः परिणामस्तद्विदामिष्टः॥सत्पर्यायेणविनाशः प्रादुर्नावोसताचपर्ययतः॥द्रव्याणांपरिणामःप्रो

कः खजुपर्यवनयस्य एवचन संमति तथाप्रज्ञापनावृत्तिमां कयुंछे कथंचित्सतुरुपांत रपामे पणसर्वथाविणसेनही तेड्व्यार्थिकनयनो परिणामकह्यो पूर्वसत्पर्यायेंविणसे अनेउत्तर असतुपर्यायेंउपजे तेपर्यायार्थिकनयनो परिणामकह्यो एअनिप्रायेंजोता ए करूपांतरपरिणाम विनाशअनेएकअर्थांतरगमनविनाशएरीतेंविनाशना बेनेदजाणवा

अंधारानेउद्योतता ॥ रूपांतरनोपरिणामरे ॥ अणुनेअणु
अंतरसंक्रमे ॥ अर्थांतरगतिनोठामरे ॥ जिन० ॥ २५ ॥

अर्थ ॥ तिहांअंधारो अनेउद्योतता तेअवस्थित ड्व्यनो रूपांतरपरिणामें रूप नाशजाणवो अने अणुके० परमाणु तेजेवारेंअणुअंतरसंक्रमे तेवारें द्विप्रदेशादि कनावथायछे तिहांपरमाणुपर्यायमूलगोटल्यो अनेस्कंधपर्यायउपनो तेणेकरीने अ र्थांतरगतिरूप नाशनो गमजाणवो ॥ २५ ॥

अणुनेछेयद्यपिखंधता ॥ रूपांतरअणुसंबंधरे ॥ संयोगवि
नागादिकथकी ॥ तोएणेएनेदप्रबंधरे ॥ जिन० ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ यद्यपि अणुनेअणुसंबंधे खंधताछे तेरूपांतर परिणामजछे तोपणसंयो गविनागादिकरूपें ड्व्यविनाश द्विविधनुंजछे एउपलक्षणजाणवुं केमके ड्व्योत्पाद विनागेंज जेमपर्यायोत्पादविनागथाय तेमड्व्यनाशविनागेंल पर्यायनाशविनागहोय तेसमुदयविनाग अनेअर्थांतरगमन एवेप्रकार व्यवहारियें पहेलोतंतुपर्यंत पटनाश अनेबीजोघटोत्पत्तियें मृडुपिंमादिकनो नाश उक्तंचसंमतौ विगमस्सविएसविहा समु दयजाणीयमिसोउडुविअप्पो ॥ समुदयविनागमित्तं अत्थंतरनावगमणंच ॥१॥२६॥

ध्रुवन्नावयुजक्जुसूत्रनो ॥ पर्यायसमयअनुसाररे ॥ संग्रहनो
तेहत्रिकालनो ॥ निजड्व्यजातिनिरधाररे ॥ जिन० ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ ध्रुवनावपण स्थूलतयासूक्ष्मनेदें वेप्रकारनोछे तेमां पहेलो स्थूलते कजु सूत्रनयने अनुसारे मनुष्यादिकपर्याय समयप्रमाणजाणवो अनेबीजो सूक्ष्मते सं ग्रहनयनेसम्मत तेत्रिकालव्यापकजाणवुं पणजीवपुजलादिक निजड्व्यजातीते जे मआत्मड्व्यें गुणपर्यायनुं आत्मड्व्यानुगमजध्रुव तेसामान्याधिकरणत्वे नान्वयानु गमज ध्रौव्य अनेपुजलड्व्यें गुणपर्यायनुं पुजलड्व्यानुगमज ध्रौव्य एमपोतपोतानी जातियें निरधारजाणवो ॥ २७ ॥

सविअर्थसमयमांनापिया ॥ एमविधत्रिलक्षणशीलरे ॥ जेना
वेएहनीनावना ॥ तेपावेसुखजशलीलरे ॥ जिन० ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ एरीतें समयके० सिद्धांतमां सर्वअर्थविविधप्रकारें त्रिलक्षणके० उत्पा
दव्ययध्रौव्य तत्शील तत्स्वनावनाप्याछे माटेजेपुरुषपदार्थमां एत्रणलक्षणस्वनावनी
नावनानावे तेप्राणीविस्ताररुची सम्यक्त अवगाहीने अंतरंगसुख अने प्रनाविकप
णानोयश तेनीलीलाप्रतेंपामे ॥ २८ ॥

॥ ढालदशमो आजनहेजोरेदिसेनाहलो ॥ एदेशी ॥

निन्नअनिन्नतिविहतियलक्षणो॥ नापिउंइममेंअत्य ॥ ने
दद्रव्यगुणपज्जवनाहवे ॥ नापीजेंपरमत्थ ॥ १ ॥ समकि
तसुधरेइणीपरेंआदरो ॥ समकितविणसविधंध ॥ समके
तविणजेरेहठमारगेंपम्या॥ तेसविजातिरेअंध ॥समण॥२॥

अर्थ ॥ एरीतें निन्नतयाअनिन्न अनेत्रिविध त्रीयलक्षणे अवके० एकअर्थ
ते एकपदार्थछे एवुंजेपहेलां वीजाढालमां हाररूपेंकहुंहतुं तेमेंविस्तारीने आगला
ढालेंकहुं हवेद्रव्यगुणपर्यायनाजे परमार्थनेदछे तेविस्तारीनेनापुंछुं ॥ १ ॥ एरीतें
द्रव्यगुणपर्याय परमार्थविचारीने विस्ताररुची सम्यक्तनेआदरो जोकदाचित् ताद
शधारणाशक्तिनहोय अने एद्रव्यगुणपर्यायनाजे विचार तेनेजनावथीसद्दहे तथाज्ञा
नवंतनोरागीहोय तेनेपणयोग्यतायें द्रव्यसमकेतहोय एवेप्रकारछे तेसमकेतवंतनी
दानदयादिक तथायोडीक्रिया तेपणसर्वेसफलहोय उक्तंच विंसेकायांदाणाइं आउयं
मिचेवसद्दनाउं ॥ हुंतिकिरियाउएआउ विहुजल्लामोरकफलाउपराउय ॥ १ ॥माटेसम
केतविना तेसर्वक्रिया धंधके० क्लेशरूपजाणवी अनेसमकेतविनाजेअगीतार्थ तथाअ
गीतार्थनश्रीत स्वस्वाज्ञिनिवेशें हठकदाग्रहमार्गे पडयाछे तेसर्वेजातिअंधसरिखा जा
णवा तेजोरूंजाणीकरे तोपणनलुंनहोय उक्तंच सुंदरबुद्धीइकयं बहुअंपिणसुंदरंहो
इ माटेद्रव्यगुणपर्याय नेदपरिज्ञानेकरीने सूधुंसमकेतआदरो एहितोपदेशछे ॥ २ ॥

धर्मअधर्महगगनसमयवली॥ पुजलजीवजएह ॥ पटद्रव्य
कह्यारेश्रीजिनशासने॥ जासनआदिनछेह ॥ सम० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ धर्मके० धर्मास्तिकाय अनेअधर्मके० अधर्मास्तिकाय तथागगनके० आ
काशास्तिकाय तथासमयके० कालद्रव्य तथाअद्धासमय जेहतुं वीजुंनामछे वली

पुद्गलके० पुद्गलास्तिकाय अनेजीवके० जीवास्तिकाय एपटद्रव्यश्रीजिनशासननेविषे कह्याछे जेनोद्रव्यजाति तथापर्यायप्रवाहें आदितथा छेहके० अंतनथी एहमध्ये ए ककालवर्जीने बाकीपांचद्रव्यते अस्तिकायकहियें अस्तय:प्रदेशास्तेःकायंतेशब्दायंते इ तिव्युत्पत्तेः एरीतेंप्रदेशनोसंबंधछे माटेअस्तिकायकहियें अनेकालद्रव्यने प्रदेशसंघात नथीमाटे अस्तिकायनकहियें केमके जे एकसमयते बीजासमयने मिलेनहीमाटे. ए मबीजापण धर्माधर्माकाशायेकैकमतःपरंत्रिकमनंतंकालंविनास्तिकाया जीवमृतेचा प्यकर्तॄणि इत्यादिकसाधर्म्य वैधर्म्यप्रशमइत्यादिक महाग्रंथथी जाणवुं ॥ ३ ॥

गतिपरिणामीरेपुद्गलजीवने॥झपनेजलजेमहोय ॥ तासअ
पेक्षारेकारणलोकमां ॥ धरमद्रव्यछेरेसोय ॥ सम० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ तेमांप्रथम धर्मास्तिकायद्रव्यनुं लक्षणकहेछे गतिपरिणामीजे पुद्गल त थाजीवद्रव्य ते लोकके० चतुर्दशरज्वात्मक आकाशखंमतेमांछे तेनुंजेअपेक्षाकारण परिणामव्यापाररहित अधिकरणरूप उदासीनताकारण जेमगगनगमनादि क्रियाप रिणत झपके० मत्स्यतेनेजेम जलअपेक्षाकारणछे तेहनीपरेंअपेक्षाकारणते धर्मास्ति काय द्रव्यजाणवुं स्थलेझपक्रिया व्याकुलतयाचेष्टाहेलिहालाभावादेव नभवति ननुज लाभावादिति गत्यपेक्षाकारणेमानाभाव इतिचेन्न॥अन्वयव्यतिरेकाभ्यांलोकसिद्धव्यव हारादेवतद्धेतुत्वसिद्धेरन्यथांत्यकारणेनेतराखिलकारणान्यथासिद्धिप्रसंगादितिदिग् ४

थितिपरिणामीरेपुद्गलजीवनी ॥ थितिनोहेतुअधर्म ॥ सवि
साधारणगतिथतिहेतुता ॥ दोयद्रव्यनोरेधर्म ॥ सम० ॥५॥

अर्थ ॥ हवेअधर्मास्तिकायद्रव्यनुं लक्षणकहेछे तेस्थितिपरिणामीजेपुद्गल तथाजी वद्रव्य तेहनीस्थितिनोहेतुके०अपेक्षाकारणजेद्रव्य तेअधर्मास्तिकायजाणवुं गतिस्थि तिपरिणत सर्वद्रव्यनुंजे एकद्रव्यलाघवें कारणसिद्धहोय तेएबेद्रव्यजाणवा तेथीज खादिगत्यपेक्षाकारण जलादिद्रव्यनेविषे धर्मास्तिकायादिक द्रव्यलक्षणनी अतिव्या प्तिनहोय एमगतितथास्थितिना हेतुतानोधर्म सर्वसाधारणपणें बेहुद्रव्यनुंबे ॥ ५॥

सहेजउर्ध्वगतिगामीमुक्तने ॥ विनाधर्मप्रतिबंध ॥ गगनेअ
नंतेरेकहीयेंनविटले ॥ फिरवारसनोरेधंध ॥ सम० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ हवेधर्मास्तिकायनेविषें प्रमाणकहेछे जोगतिनेविषे धर्मास्तिकायनो प्रति बंधके० नियमनहोय तोसहज उर्ध्वगतिगामीजे मुक्तके० सिद्धजीव तेएकसमयें लोका ग्रेजाय एहवेंस्वभावें अनंतेगगनेजता हजीलगें फिरवानारसनो धंधटलेनही केमके

अनंतालोकाकाशप्रमाणें एक अलोकाकाशछे तेमांलोकाकाशने गतिहेतुपणुंछे तेथीज लोकमां सिद्धगतिनहोयएमतो कहुंजायनही पण धर्मास्तिकायविना लोकाकाश विव स्थाजनहोय धर्मास्तिकायविशिष्टाकाशएवहि लोकाकाशस्तस्यच गतिहेतुत्वेघटादाव पि दंमविशिष्टाकाशसत्वेनैवहेतुतास्यादितिनकिंचिदेतत् बीजुं अन्यस्वनावपणे कल्पि तआकाशनेस्वनावांतर कल्पनाते अयुक्तछे माटेगतिनिबंधप्रमुख धर्मास्तिकायद्रव्य अवश्यमानवुं ॥ ६ ॥

जोथितिहेतुअधर्मनजापीयें ॥ तोनित्यथितिकोइठाए ॥ गतिवि एहोवेरेपुजलजंतुनी ॥ संजालोजिनवाण ॥ सम० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ हवे अधर्मास्तिकायनेविषे प्रमाणदेखाडेछे जोसर्वजीवपुजलने साधारण थितिहेतुत्व अधर्मास्तिकायद्रव्य नकहियेंतो किंतुधर्मास्तिकायानावप्रयुक्त गत्यना वे अलोकेस्थित्यनाव एमकहियेंतो अलोकाकाशें कोइकस्थाने गतिविना पुजलजी वद्रव्यनी नित्यस्थितिपामिजोइयें बीजुंगतिस्थिति स्वतंत्र पर्यायरूपछे जेमगुरु त्व लघुत्व एकने एकानावरूप कहेतां विशेषग्राहक प्रमाणनथी तेमाटेकार्यनेदें अपे क्षाकारण द्रव्यनेद अवश्यमानवो धर्मास्तिकायानावप्रयुक्तगत्यनावें स्थित्यनावक ही अधर्मास्तिकाय अपलपियेंतो अधर्मास्तिकायानावप्रयुक्त स्थित्यनावेंगत्य नावकही धर्मास्तिकायनोपण अपलापथाय जेमनिरंतर गतिस्वनावें द्रव्यनकहेवो जोइयें तोनिरंतर स्थितिस्वनावेंपण केमकहीयें तेमाटेश्रीजिनवाणीनो परमार्थ सां नलीने धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय एबेद्रव्य असंकीर्णस्वनावेंमानवा ॥ ७ ॥

सर्वद्रव्यनेरेजेदीयेसर्वदा ॥ साधारणअवकाश ॥ लोक अलोकप्रकारेंनापित्तं ॥ तेहद्रव्यआकाश ॥ सम० ॥८॥

अर्थ ॥ हवे आकाशद्रव्यनुं लक्षणकहेछे सर्वद्रव्यनेजे सर्वदासाधारण अवकाश आपे तेअनुगत एकआकाशास्तिकाय सर्वाधारकहियें इहपक्षीतेहपक्षी इत्यादिव्यवहा रयदेशनेदेंहोय तदेशीअनुगतआकाशज पर्यवसन्नहोय तद्देशोर्ध्वनागावच्छिन्नमूर्त्तना वादिनात द्व्यवहारोपपत्तिरिति वर्द्धमानाद्युक्तं नानवद्यतस्यानावादिनिश्चलेनानुनू यमानद्व्याधारांशापलापप्रसंगात्तावत्प्रतिसंधानेपि लोकव्यवहारेणाकाशदेशप्रतिसं धेयोक्तव्यवहाराच्च एमआकाश लोकालोकनेदें द्विविधनाष्युंछे यतःसूत्रं डविहेआगा सेपन्नतेजोआगासेयं अलोआगासेय ॥ ८ ॥

धर्मादिकसूरेसंयुतलोकछे ॥ तासवियोगअलोक ॥ तेनिर
विधछेरेअवधिअन्नावने ॥ वलगीलागेरेफोक ॥समण॥ए॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकथी संयुक्त जेआकाश तेलोकाकाशछे अनेते धर्मास्ति कायादिकनो जिहांवियोगछे तेअलोकाकाशकहियें तेअलोकाकाश निरवधिछे एटले तेहनोछेहनथी कोइएमकहेसेके जेमलोकनेपाशें अलोकनोछेहछे तेमआगलपणह शे तेहनेकहियेंजे लोकतोन्नावरूपछे तेमांतोअवधिघटेछे पणआगल अलोकमां केवलअन्नावछे माटेतिहां अलोकावधिपणोकेमघटे शशशृंगकुणनो अवधिहोय अनेजो न्नावरूप आत्मामानियेंतो तेअन्यद्रव्यरूपनथी आकाशदेशस्वरूपनेंतो तदंतपणोकहेतां वदव्याघातहोय माटेअलोकाकाश अनंतोजाणवुं ॥ ए ॥

वत्तणालक्षणसर्वद्रव्यहतणो ॥ पज्जवद्रव्यनकाल ॥ द्रव्य
अनंतनीरेद्रव्यअन्नेदथी॥नुत्तराध्ययनेरेन्नाल॥समण॥१०॥

अर्थ ॥ हवेकालद्रव्यने लक्षणेकरीकहेछे जेकालते परमार्थथीद्रव्यनथी तोशुंसर्वेद्रव्यनो वर्त्तनालक्षण पर्यायजछे तेपर्यायनेविषे अनादिकालीन द्रव्योपचारअनुसरीने कालद्रव्यकहियें अतएव पर्यायेंद्रव्यअन्नेदथी अनंतकालद्रव्यन्नेदनीन्नाल तेश्री उत्तराध्ययनेछे तथाचतत्सूत्रं धम्मोअधम्मोआगासं दव्वंइक्किक्कमाहियं ॥ अणंताणिय दव्वाणि कालोपुग्गलजंतवो ॥ १ ॥ टीकाएतदुपजीव्यान्यत्राप्युक्तं धर्माधर्माकाशाद्येकैकमतःपरंत्रिकमनंतमिति तेमाटे जीव अजीवद्रव्यजेअनंतछे तेहनीवर्त्तनापर्याय नणीज कालद्रव्य सूत्रनेविषे अनंतकह्याजाणवा ॥ १० ॥

जीवअजीवजसमयेंतेकह्युं ॥ तेणेकेमजुदोरेतेह ॥ एकव
खाणेरेआचारयइस्युं ॥ धरतांसुन्नमतिरेह ॥समण॥११॥

अर्थ ॥ कंइथीपणसूत्रें जीवाजीवथी अन्निन्न कालकह्योछे तेदेखाडेछे समयके० सूत्रेंतेकालने जीव तथाअजीवरूपजकह्योछे तेकारणे कालने जुदोके० न्निन्नद्रव्यरूप केमकहियें तथाचोक्तं जीवान्निगमादिसूत्रे किमयंन्नंतेकालोत्तिपवुच्चइ गोयमा जीवाचेवअजीवाचेवत्ती एकआचार्यतो सिद्धांतनापाठने अनुसारें शुन्नमतिनीरेखाधरतां कालद्रव्यने एरीतेंवखाणेछे ॥ ११ ॥

बीजान्नांपेरेजोइसचक्कने ॥ चारेंजेथितितास ॥ कालअ
पेक्षारेकारणद्रव्यछे ॥ पटनीन्नगवइन्नास ॥ समण॥१२ ॥

अर्थ ॥ [illegible] ॥१३॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥१३॥

अर्थ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] [illegible] अनंतां आकाशप्रदेशमां [illegible] ॥ [illegible] विचारी ने [illegible] समाने [illegible] चितुंतद्रूपीज उपपन्नदर्शन [illegible] निसूक्ष्मदृष्टयाविभावनीयं ॥

पंद्गलंनअणुपावनसंचरे ॥ नद्प्रदेशएकेठोर ॥ तेदसमय

नांरिचाजनकाळाणुं ॥ इमचांपिकोइठर ॥ सम० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ [illegible] उपन्यासेंरे जेएकनभप्रदेशनें [illegible] मंदगतिं [illegible] परमाणुमेट [illegible] संचरे तेपर्यायनेंसमयकहियें तदनुरूपें [illegible] तेएकेक आकाशप्रदेशें एकेकपरमाणु [illegible] एरीतें कोइक ठरके० जैनाभास [illegible] तेकालाणुअसंख्यदर्शाणि ॥ १४ ॥

योगशास्त्रनारे अंतरश्लोकमां ॥ एपणमतछेरेइह ॥ लोक
प्रदेशेंरे अणुआजूजुआ ॥ मुख्यकालेंतिहांदिठ ॥ सम० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ ते योगशास्त्रना अंतरश्लोकमां एदिगंबरमतपणछे केमके तेश्लोकमां लोकप्रदेशें जूजूआ कालनाअणुआ तेनेमुख्यकालकह्युंछे तथाचतत्पाठः लोकाकाशप्रदेशस्था भिन्नाकालाणवस्तुये ॥ भावानांपरिवर्त्ताये मुख्यकालःसउच्यते ॥ १ ॥

प्रचयऊर्ध्वतारे एहनोसंभवे ॥ पूर्वअपरपर्याय ॥ तिर्यक
प्रचयघटेनहीखंधनो ॥ विणप्रदेशसमुदाय ॥ स० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एकालाणुद्रव्यनो ऊर्ध्वताप्रचयसंभवे जेममृद्द्रव्यने स्यास कोस कुसूलादि पूर्वापरपर्यायछे तेमएहने समयावलीप्रमुख पूर्वापरपर्यायछे पणखंधनोप्रदेश समुदाय एकालद्रव्यनेनथी माटे धर्मास्तिकायादिकनीपरें तिर्यक्प्रचयसंभवेनही तेतिर्यक्प्रचयनथी तेथीजकालद्रव्यने अस्तिकाय नकहियें वलीएहने परमाणुपुद्गलनीपरें तिर्यक्प्रचय योग्यतापणनथी माटेउपचारेंद्रव्यछे तेथीपण कालद्रव्यने अस्तिकायपणोनकहेवाय ॥ १६ ॥

एमअणुगतीनीरे लेइहेतुता ॥ धर्मद्रव्यअणुथाय ॥ साधार
णतारे लेइएकनी ॥ समयखंधपणथाय ॥ सम० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एदिगंबरपक्ष प्रतिवादेंढुंपेछे एमजोमंदाणुगतिकार्यहेतु पर्यायसमयभाजन द्रव्यसमय अणुकल्पियेंतो मंदाणुगतिहेतुतारूप गुणभाजन तेधर्मास्तिकायाणुपण सिद्धहोय एमअधर्मास्तिकायादिक अणुनोपण प्रसंगथाय अनेजो सर्वसाधारण गतिहेतुतादिकलेइ धर्मास्तिकायादिक एकस्कंधरूपज द्रव्यकल्पियें देशप्रदेशनीकल्पना तेहनीव्यवहारानुरोधे पछेकरीतो सर्वजीवाजीवद्रव्य साधारणवर्त्तनाहेतुतागुणलेइने कालद्रव्यपण लोकप्रमाणे एककल्पवोजोइयें धर्मास्तिकायादिकने अधिकारें साधारणगति हेतुताद्युपस्थितिकल्पकछे अनेकालद्रव्यकल्पकते मंदाणुवर्त्तना हेतुत्वोपस्थितिजछे एकल्पनायेंतो अभिनिवेशीविना बीजोकोइकारण दिगंबरीयोमांजणातुंनथी ॥ १७ ॥

अप्रदेशतारे सूत्रेंअनुसरी ॥ जोअणुकहियेंरेतेह ॥ तोप
र्यायवचनथीजोभीयें ॥ उपचारेंसवीएह ॥ सम० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहेलोजे सूत्रेंकालप्रदेशकह्योछे तेहनेअनुसारें कालाणुकहियें

व्यलप्रमाणे ॥ परिछेद्यजेरूपजी ॥ प्रमेयलश्रा
णागमसुपीम ॥ अगुरुलघुलरूपजी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेगुणनानेव सामान्यतंत्रप्रक्रियायें कहियेंछेयें तिहां १ अस्तित्वगुणतेक हियें के जेह्थी सद्रूपतानो व्यवहारथाय २ वस्तुत्वगुणतेकहियें जेह्थी जातिव्यक्ति रूपपणो जाणियें जेमघटतेहिज सामान्यथी जातिरूपछे अनेविशेषथी तद्व्यक्तिरू पछे अतएव अवग्रहें सामान्यरूप सर्वत्रभासेंछे अपायें विशेषरूप भासेंछे पूर्णोपयो गें संपूर्णवस्तुग्रहणथायछे तथा ३ द्रव्यभावजे गुणपर्यायाधारतानिर्व्यंग्यजातिवि शेषते द्रव्यत्वएजातिरूपछे माटेगुणनहोय एह्वीनैयायिकादिवासनायें आशंका करवीनही केमके सहभुवोगुणाः क्रमभुवःपर्यायाः एह्वीजजैनशास्त्रनी व्यवस्थाछे द्रव्यत्वंचेद्गुणःस्याद्रूपादिवद्रूकर्मोपकर्षनागित्यादिति शुष्कचोद्यमेकत्वादिसंख्यायां प रमतेपि व्यभिचारेण तथाव्याख्यभावादेवनिरस्तनीयं ४ प्रमाणेपरिछेद्यजे रूपप्रमा ण विषयत्वते प्रमेयत्वगुणकहियें तेपणकथंचित् अनुगत सर्वसाधारणगुणछे परंप रासंबंधें प्रमाणसज्ञानेपण प्रमेयत्व व्यवहारथायछे तेमाटेजे प्रमेयत्वगुणते स्वरूप थीअनुगतछे ५ अगुरुलघुत्वगुण ते सूक्ष्मआज्ञाग्राह्यछे सूक्ष्मंजिनोदितंतत्वं हेतुभि र्नैवहन्यते ॥ आज्ञासिद्धंतुतद्ग्राह्यं नान्यथावादिनोजिनाः ॥ अगुरुलघुपर्यायाः सूक्ष्मा अवाग्गोचराः ॥ १ ॥

प्रदेशत्वअविभागीपुद्गला॥खेत्रभावजेव्यापिनजी॥चेत
नताअनुभूतिअचेतना॥भावअननुभवव्यापिनजी॥मूर
तताउरूपादिकसंगति ॥ अमूर्त्ततातदभावोजी॥दशसा
मान्यगुणाप्रत्येकें॥ आठआठएमभावोजी ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ६ जेअविभागीपुद्गल यावत्खेत्रेंरहे तावत्खेत्रव्यापीपणुं तेप्रदेशत्वनामा छठोगुणजाणवो ७ चैतन्यत्वगुण तेआत्मानो अनुभवरूप गुणकहियें जेसुख दुःखादिचिंतियें एव्यवहारथायछे जेह्थीजाति वृद्ध भग्न क्षत संरोहणादि जीवन धर्महोयछे ८ एथीविपरीत जेअचेतनत्वगुण तेअजीवमात्रनोगुणछे ९ मूर्त्ततागुणते रूपादिक सन्निवेशाभिव्यंग्यपुद्गलद्रव्यमात्रवृत्तिछे १० अमूर्त्तत्वगुणामूर्त्तत्वाभावस मनियतछे अचेतनत्वामूर्त्तत्वयोश्चेतनत्वमूर्त्तत्वाभावरूपत्वान्नगुणत्वमितिनाशंकनीयं अचेतनामूर्त्तद्रव्यवृत्तिकार्यजनकतावछेदकत्वेनव्यवहारविशेषनियामकत्वेनचतयोर पि पृथक्गुणत्वात् नञःपर्युदासार्थकत्वात् नञ्‌गर्भपदवाच्यतायाश्चानुसारीतस्परी

तोसर्वजीवाजीवनापर्यायरूपजकालकह्योछे तेमांविरोधनथी तोड्व्यकालपण केमक ह्योछेमाटेकालने द्रव्यत्ववचन तथालोकाकाश प्रदेशप्रमाणअणुवचन एसर्वे उपचारें ज़ोडीयें मुख्यवृत्तीते पर्यायरूपकालज सूत्रसंमतछे अतएव कालश्चेत्येके इहांएकवच नते सर्वसंमतत्वानावसुचव्यो ॥ १० ॥

पर्यायेजेमजाप्योद्रव्यनो ॥ संख्यारथउपचार ॥ अप्रदेश
तारेयोजनकारणें ॥ तेमअणुतानोरेसार ॥ सम० ॥ १ए॥

अर्थ ॥ हवे उपचारप्रकारज देखाडेछे पढेवड्व्यािण एसंख्यापूरणनेअर्थें जेमप र्यायरूप कालनेविषे द्रव्यपणानोउपचार नगवत्यादिकनेविषे करियेंछेयें तेमसूत्रें कालद्रव्यने अप्रदेशताकहियेंछेयें तथाकालपरमाणुपण कह्याछे तेयोजननेकारणे लो काकाशप्रदेशस्थ पुद्गलाणुनेविषेज योगशास्त्रनाअंतरश्लोकमां कालाणुनो उपचार कस्योछे तेजाणवो मुख्यकालद्रव्यस्यचानादिकालीनाप्रदेशत्वव्यवहारनियामकोपचा रविषयइत्यर्थः अतएव मनुष्यक्षेत्रमात्रवृत्तिकालद्रव्यंयेवर्णयंतितेपामपिमनुष्यक्षे त्रावच्छिन्नाकाशादौकालद्रव्योपचारएवशरणमितिदिङ्मात्रमेतत् ॥ १ए ॥

वर्णगंधरसफासादिकगुणे ॥ लिखियेंपुदगलनेद ॥ सहज
चेतनारेगुणवलीजाणियें ॥ जीवअरूपअवेद ॥ सम०॥२०॥

अर्थ ॥ हवेपुद्गल तथाजीवद्रव्य संक्षेपेकहेछे जेवर्ण गंध रस स्पर्शादिकगुणे पु द्गलद्रव्यनो अन्यद्रव्ययोनेदलखियें तेपुद्गलद्रव्य अनेजीवद्रव्य ते सहज चेतनागु णछे तेलक्षणेजसर्वे अचेतनद्रव्यथी निन्नछे ते व्यवहारनयतो रूप तथावेदसहितपणे छे अनेनिश्चयनयथी रूपतथावेदरहितछे उक्तंच अरसमरूवरसगंध अवत्तचेयणागु णमसद्दं ॥ जाणअलिंगगहणं जीवमणीदिठसंगाणं ॥ १ ॥ २० ॥

एमएनांप्यारेसंखेयेंकरी॥ द्रव्यतणापटनेद॥ विस्तारेतेजा
णिश्रुतथकी ॥ सुजशलहोगतखेद ॥ सम० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ एरीतें द्रव्यनासंक्षेपथी उनेदनांप्याछे तेविस्तारें श्रुतके० सिद्धांतथकी जाणीने खेदरहितथका प्रवचनदाक्षिणपणानो सुजशके० सुबोध तेपामो ॥ २१॥

ढालइग्यारमी सोवनगिरिजूपणत्रिसलानंदनएदेशी

हवेनेदगुणनानापीजे ॥ तिहांअस्तिताकहियेंजी ॥ सद्भूत
तावस्तुताजाति ॥ व्यक्तिरूपतालहियेंजी ॥ द्रव्यनावय

इत्यादीव्यभिचारेणपरेणपरेयामप्यनावत्वानियामकत्वाज्ञावांतरमनावोहिकयाविनु व्यपेक्ष्यपेतिनयाश्रयणेनदोपानावाञ्च ॥ एदशसामान्यगुणछे तेमां १ मूर्त्तत्व २ अमूर्त्तत्व ३ चेतनत्व ४ अचेतनत्व एचारगुणते इव्योनेविषे परस्परपरिहारें वेवेगुण रहे तेमाटे प्रत्येकें एकएकद्रव्यनेविषे आठआठगुणपामियें एमविचारीनेजावो ॥२॥

ज्ञानदृष्टीसुखवीर्यफरसरसा॥गंधवर्णएजाणोजी॥गति
थितिअवगाहनावर्तना॥हेतुनावमनआणोजी॥चेत
नादिचारेनेला ॥ विशेषगुणएसोलेंजी ॥ पटपुजल
आतमनेतिनद ॥ अन्यद्रव्यनेटोलेंजी ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ १ ज्ञान २ दर्शन ३ सुख ४ वीर्य एचारआत्मानागुणछे १ स्पर्श २ रस ३ गंध ४ वर्ण एचारपुद्गलना विशेषगुण शुद्धद्रव्येंअविकृतरूप अविशिष्टहे ते माटेएगुणकह्या विकृतस्वरूपते पर्यायमांनिले एविशेषजाणवुं १ गतिहेतुता २ स्थितिहेतुता ३ अवगाहनाहेतुता ४ वर्त्तनाहेतुता एचारगुणतेधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय अनेआकाशास्तिकाय तथाकालद्रव्यना प्रत्येकेंप्रत्येकेंविशेषगुणजाणवा एरीतेंयारगुणथया तेमां १ चेतनत्व २ अचेतनत्व ३ मूर्त्तत्व ४ अमूर्त्तत्व एचारगुणनेनीषें तेवारें सोलविशेषगुणथाय तेमध्ये पुद्गलद्रव्यने वर्ण गंध रस स्पर्श मूर्त्तत्व अचेतनत्व एगुणहोय अनेआत्मद्रव्यने ज्ञान दर्शन सुख वीर्य अमूर्तत्व चेतनत्व एगुणहोय बीजासर्वद्रव्यने टोलेके० समुदाय त्रणगुणहोय एकपोतानो अचेतनत्वगुण बीजोअमूर्तत्व त्रीजोगतिस्थित्यादि एमफलावीनेधारवुं ॥ ३ ॥

चेतनतादिकचारस्वजाति॥गुणसामान्यकहायजी॥वि
शेषगुणपरजातिअपेक्षा॥यहताचित्तसुहायजी॥विशे
षगुणछेसूत्रेंजापिया॥वहुस्वनावआधारोजी ॥ अर्थते
दक्षिमगणिआजावे ॥ एहअद्रव्यवहारोजी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेजेचेतनत्वादि चारगुणते सामान्यगुणमां पणकह्या अनेविशेषगुण मांपणकह्या तेनुंकारणकहेछे चेतनत्वादिचारगुण सजात्यपेक्षया अनुगत व्यवहारें तेपी सामान्यगुणकहियें अनेपरजातिनी अपेक्षायें चेतनत्वादिक तेअचेतनतादिकद्रव्यथी व्यावृत्तिकरेछे तेमाटे विशेषगुणकहियें नचारसामान्यगुणा मन्येविशेषगुणमेषामिनिनावः तथाज्ञानदर्शनगुणवीर्य चारआत्मविशेषगुणअने

स्पर्श रस गंध वर्ण एचार पुद्गलविशेषगुण एमजेकह्युं तेस्थूलव्यवहारजाणवुं जे मके अष्टौसिद्धगुणाः तथा एकत्रिंशत्सिद्धादिगुणाः एकगुणकालकादयः पुद्गलाश्चनं ताः इत्यादिसूत्रार्थविचारणायें विशेषगुण अनंताथाय तेठद्मस्थकेमगणीशके तस्मा द्धर्मास्तिकायानां गतिस्थित्यवगाहनावर्तनाहेतुत्वोपयोगग्रहणाख्याःषडेवास्तित्वाद यः सामान्यगुणास्तुविवक्षयाअपरिमिताइत्येवन्याय्यं षण्णांलक्षणवतां लक्षणानि षडेवेतिहिकोनश्रद्दधाति॥नाणंचदंसणंचेव चरित्तंचतवोतहा ॥ वीरियंउवउगोय एवं जीवस्सलरकणं ॥ १ ॥ सदंधआरउज्जोय पभावायातवेवय॥वण्णरसगंधफासा पुग्ग लाणंतुलरकणं ॥ २ ॥ इत्यादितुस्वभावविभावलक्षणयोरन्योन्येनांतरीयकत्वप्रतिपाद नायेत्यादिपंडितैर्विचारणीयं ॥ ४ ॥

धर्मअपेक्षायेंइहांअलगा ॥ स्वभावगुणथीभाष्याजी ॥
निजनिजरूपमुख्यतालेइ ॥ स्वभावगुणकरीदाष्याजी ॥
अस्तिस्वभावतिहांनिजरूपें भावरूपतादेखोजी ॥ पर
अभावपरेंतेजभावेंपण ॥ अनुभवि लेखोजी ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अनुवृत्ति आवृत्तिसंबंधें धर्ममात्रनेंविवक्षाकरीने इहांस्वभावनेगुणथ की अलगाके० जुदा पंडितेंभाष्याठे तेद्रव्यना निजनिजके० आपआपणारूपनी मु ख्यतालेइने अनुवृत्तिसंबंधमात्र अनुसरीने जेस्वभावठे तेने गुणकरीने दाख्याके० देखाडयाने माटे गुणविभागकहिने स्वभावविभाग कहियेंयेंठें तिहांप्रथम अस्तित्व भावते निजरूपें एटलेस्वद्रव्य स्वखेत्र स्वकाल स्वभाव स्वरूपें भावरूपतादेखो जेम परअभावें नास्तित्वभाव अनुभवियेंठेयें तेमनिजभावें अस्तित्वभावपण अनुभवियें ठेयें तेमाटेअस्तिभावतेलेखेठे एप्रथमअस्तिभावकह्यो ॥ ५ ॥

नहीतोसकलशून्यताहोवे ॥ नास्तिस्वभावपरभावेंजी॥
परभावेंपणसत्ताकहेता॥ एकरूपसविपावेजी ॥ सत्ताजे
मअसत्तानफुरे ॥ व्यंजकअमिलनवसयीजी॥ ठतोसरा
वगंधनवीभासे ॥ जेमविणनीरफरशायोजी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जोअस्तिस्वभाव द्रव्यनेंविषे नमानीयेंतो परभावापेक्षायें जेमनास्तिता ते मस्वभावापेक्षायेंपण नास्तितायाता सर्वशून्यताथयीजाय तेमाटेस्वद्रव्याद्यपेक्षायें अस्तिस्वभाव सर्वथामानवो एप्रथमगुण अनेपरभावेंके० परद्रव्याद्यपेक्षायें नास्तित्व

इत्यादीव्यभिचारेणपरेणपरेषामप्यभावत्वानियामकत्वाञ्चावांतरभावोहिकयाचित् व्यपेक्ष्येतिनयाश्रयणेनदोषाभावाच्च ॥ एदशसामान्यगुणछे तेमां १ मूर्त्तत्व २ अमूर्त्तत्व ३ चेतनत्व ४ अचेतनत्व एचारगुणते द्रव्योनेविषे परस्परपरिहारें बेबेगुण रहे तेमाटे प्रत्येकें एकएकद्रव्यनेविषे आवआवगुणपामियें एमविचारीनेभावो ॥२॥

ज्ञानदृष्टीसुखवीर्यफरसरस॥गंधवर्णएजाणोजी॥गति
थितिअवगाहनावर्तना॥हेतुभावमनआणोजी॥चेत
नादिचारेभेला ॥ विशेषगुणएसोलेंजी ॥ षटपुद्गल
आतमनेतिनह ॥ अन्यद्रव्यनेटोलेंजी ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ १ ज्ञान २ दर्शन ३ सुख ४ वीर्य एचारआत्मानागुणछे १ स्पर्श २ रस ३ गंध ४ वर्ण एचारपुद्गलना विशेषगुण शुद्धद्रव्येंअविकृतरूप अविशिष्टरहे तेमाटेएगुणकह्या विकृतस्वरूपते पर्यायमांभिले एविशेषजाणवुं १ गतिहेतुता २ स्थितिहेतुता ३ अवगाहनाहेतुता ४ वर्त्तनाहेतुता एचारगुणतेधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय अनेआकाशास्तिकाय तथाकालद्रव्यना प्रत्येकेंप्रत्येकेंविशेषगुणजाणवा एरीतेंचारगुणपया तेमां १ चेतनत्व २ अचेतनत्व ३ मूर्त्तत्व ४ अमूर्त्तत्व एचारगुणभेलीयें तेवारें सोलविशेषगुणथाय तेमध्ये पुद्गलद्रव्यने वर्ण गंध रस स्पर्श मूर्त्तत्व अचेतनत्व एछगुणहोय अनेआत्मद्रव्यने ज्ञान दर्शन सुख वीर्य अमूर्त्तत्व चेतनत्व एछगुणहोय बीजासर्वद्रव्यने टोलेके० समुदाय त्रणगुणहोय एकपोतानो अचेतनत्वगुण बीजोअमूर्त्तत्व त्रीजोगतिस्थित्यादि एमफलावीनेधारवुं ॥ ३ ॥

चेतनतादिकचारस्वजाति॥ गुणसामान्यकहायजी॥वि
शेषगुणपरजातिअपेक्षा ॥ग्रहताचित्तसुहायजी॥विशे
षगुणएमूर्त्तभाषिया॥वहुस्वभावआधारोजी ॥ अर्थेते
हकिमगणिआजावे ॥ एहथूलव्यवहारोजी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेंजेचेतनत्वादि चारगुणते सामान्यगुणमां पणकह्या अनेविशेषगुणमांपणकह्या तेनुंकारणकहेछे चेतनत्वादिचारगुण सजात्यपेक्षया अनुगत व्यवहारेंछे तेथी सामान्यगुणकहियें अनेपरजातिनी अपेक्षायें चेतनत्वादिक तेअचेतनत्वादिकद्रव्यथी व्याश्रय व्यावृत्तिकरेछे तेमाटे विशेषगुणकहियें एणपरसामान्यतनुं सामान्यविशेषरूपमेंनाभिनिनावः तथाज्ञानदर्शनसुखवीर्य एचारआत्मविशेषगुणअने

स्पर्श रस गंध वर्ण एचार पुद्गलविशेषगुण एमजेकह्युं तेस्थूलव्यवहारजाणवुं जे मके अष्टौलिकगुणाः तथा एकत्रिंशत्तिक्तादिगुणाः एकगुणकालकादयः पुद्गलाअनं ताः इत्यादिसूत्रार्थेविचारणायें विशेषगुण अनंतायाय तेअस्पर्शकेमगणीशके तस्मा द्धर्मास्तिकायानां गतिस्थित्यवगाहनावर्त्तनाहेतुत्वोपयोगग्रहणाख्याःषडेवास्तित्वाद यः सामान्यगुणास्तु विवक्षयाअपरिमिताइत्येवन्याय्यं द्रव्याणांलक्षणवतां लक्षणानि षडेवेतिह्किोनअव्याति॥नाणंचदंसणंचेव चरित्तंचतवोतहा ॥ वीरियंउवओगोय एवं जीवस्सलक्खणं ॥ १ ॥ सद्दंधआरउज्जोय पभाछायातवेहया॥वण्णरसगंधफासा पुग्ग लाणंतुलक्खणं ॥ २ ॥ इत्यादितुस्वभावविभावलक्षणयोरन्योन्यैनांतरीयकत्वप्रतिपाद नायेत्यादिपंडितैर्विचारणीयं ॥ ४ ॥

धर्म्मअरेक्तायेंइहांअँजगा ॥ स्वभावगुणयीभाख्याजी ॥
निजनिजरूपमुख्यतालेई ॥ स्वभावगुणकरीदाख्याजी ॥
अस्तिस्वभावतिहांनिजरूपें ॥ भावरूपतादेखोजी ॥ पर
अभावपरें॥जेभावेंपण ॥ अस्तिपनुभविलेखोजी ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अनुवृत्ति व्यावृत्तिसंबंधें धर्मभात्रनेंविवेचाकरीने इहांस्वभावनेंगुणय की अलगाके० जुदा पाडीनेंभाख्याने तेद्रव्यना निजनिजरूप० आपआपणारूपनी मु ख्यतालेइने अनुवृत्तिसंबंधमात्र अनुसरीनें जेस्वभावके तेनें गुणकरीनें दाख्याके० देखाड्याने माटे गुणविभागकहिने स्वभावविभाग कहियेंछैं तिहांप्रथम अस्तित्व भावते निजरूपें एटलेस्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभाव स्वरूपें भावरूपतादेखो जेम परअभावें नास्तित्वभाव अनुभवियेंछैयें तेमनिजभावें अस्तित्वभावपण अनुभवियें छैयें तेमाटेअस्तिभावतेजेखेछे एप्रथमअस्तिभावकह्यो ॥ ५ ॥

नहीतोसकलशून्यताहोवे ॥ नास्तिस्वभावपरभावेंजी॥
परभावेंपणसत्ताकहेता॥ एकरूपसविपावेंजी ॥ सत्ताजे
मअसत्तानफुरे ॥ व्यंजकअमिलनवसयोजी॥ तोसरा
वगंधनवीभासे ॥ जेमविणनीरफरश्यायोजी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जोअस्तिस्वभाव द्रव्यनेविषे नमानीयेंतो परभावापेक्षायें जेमनास्तिता ते मस्वभावापेक्षायेंपण नास्तिताथाता सर्वशून्यतायथीजाय तेमाटेस्वद्रव्यादिअपेक्षायें अस्तिस्वभाव सर्वथामानवो एप्रथमगुण अनेपरभावेंके० परद्रव्यादिअपेक्षायें नास्तित्व

इत्यादौव्यनिचारेणपरेणपरेयामप्यनावलानियामकलाज्ञावांतरमजावोह्किंयाचितु व्यपेक्ष्येतिनयाश्रयणेनदोपानावाच्च ॥ एदशसामान्यगुणछे तेमां १ मूर्त्तत्व २ अमूर्तत्व ३ चेतनत्व ४ अचेतनत्व एचारगुणते द्रव्योनेविपे परस्परपरिहारें बेबेगुण रहे तेमाटे प्रत्येकें एकएकद्रव्यनेविपे आवआवगुणपामियें एमविचारीनेनावो ॥२॥

ज्ञानदृष्टीसुखवीर्यफरसरस॥गंधवर्णएजाणोजी॥गति
थितिअवगाहनावर्तना॥हेतुनावमनआणोजी॥चेत
नादिचारेंजेला ॥ विशेपगुणएसोलेंजी ॥ पटपुज्जल
आतमनेतिनह ॥ अन्यद्रव्यनेटोलेंजी ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ १ ज्ञान २ दर्शन ३ सुख ४ वीर्य एचारआत्मानागुणछे १ स्पर्श २ रस ३ गंध ४ वर्ण एचारपुज्जलना विशेपगुण शुद्धद्रव्यअविकृतरूप अविशिष्टरहे ते माटेएगुणकह्या विकृतस्वरूपते पर्यायमांनिले एविशेपजाणवुं १ गतिहेतुता २ स्थितिहेतुता ३ अवगाहनाहेतुता ४ वर्त्तनाहेतुता एचारगुणतेधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय अनेआकाशास्तिकाय तथाकालद्रव्यना प्रत्येकेंप्रत्येकेंविशेपगुणजाणवा एरीतेंबारगुणथया तेमां १ चेतनत्व २ अचेतनत्व ३ मूर्त्तत्व ४ अमूर्त्तत्व एचारगुणनेलीयें तेवारें सोलविशेपगुणथाय तेमध्ये पुज्जलद्रव्यने वर्ण गंध रस स्पर्श मूर्त्तत्व अचेतनत्व एछगुणहोय अनेआत्मद्रव्यने ज्ञान दर्शन सुख वीर्य अमूर्तत्व चेतनत्व एछगुणहोय बीजासर्वद्रव्यने टोलेके० समुदाय त्रणगुणहोय एकपोतानो अचेतनत्वगुण बीजोअमूर्तत्व त्रीजोगतिस्थित्यादि एमफलावीनेधारवुं ॥ ३ ॥

चेतनतादिकचारस्वजाति॥ गुणसामान्यकहायजी॥वि
शेपगुणपरजातिअपेक्षा ॥यहताचित्तसुहायजी॥विशे
पगुणछेसूत्रेंनापिया॥वहुस्वनावआधारोजी ॥ अर्थते
हकिमगणिआजावे ॥ एहथूलव्यवहारोजी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेजेचेतनत्वादि चारगुणते सामान्यगुणमां पणकह्या अनेविशेपगुण मांपणकह्या तेनुंकारणकहेछे चेतनत्वादिचारगुण सजात्यपेक्षया अनुगत व्यवहारेंछे तेथी सामान्यगुणकहियें अनेपरजातिनी अपेक्षायें चेतनत्वादिक तेअचेतनत्वादिकद्रव्यथी स्वाश्रय व्यावृत्तिकरेछे तेमाटे विशेपगुणकहियें परापरसामान्यवत्सामान्यविशेपगुणमेतामितिनावः तथाज्ञानदर्शनसुखवीर्य एचारआत्मविशेपगुणअने

स्पर्श रस गंध वर्ण ए चार पुद्गलविशेषगुण एम जे कह्युं ते स्थूलव्यवहारजाणवुं जे मके अष्टौ स्पर्शादिगुणाः तथा एकद्वित्रिचतुःसंख्यादिगुणाः एकगुणकालकादयः पुद्गला अनंताः इत्यादिसूत्रार्थविचारणायें विशेषगुण अनंता थाय ते सर्व केवलीगम्य तस्माद्धर्मास्तिकायानां गतिस्थित्यवगाहनावर्तनाहेतुत्वोपयोगलक्षणास्त्वाद्यास्तिलोद यः सामान्यगुणास्तु विवक्षयाऽपरिमिताऽस्त्येवन्याय्यं गुणांशलक्षणवतां लक्षणानि षडेवेति हि किं न श्रद्धासि नाणंचदंसणंचेव चरित्तंचतवोतहा ॥ वीरियंउवउगोय एयं जीवस्सलरकणं ॥ १ ॥ सद्दंधयारउज्जोय पभाछायातहेवया वण्णरसगंधफासा पुग्गलाणंतुलरकणं ॥ २ ॥ इत्यादिसुस्वभावविभावलक्षणयोरन्योन्यनांतरीयकत्वप्रतिपादनायेत्यादिपंडितैर्विचारणीयं ॥ ४ ॥

धर्मीअनेकांतेंरह्यांजगा ॥ स्वभावगुणथीजाण्याजी ॥
निजनिजरूपमुख्यताजेह ॥ स्वभावगुणकरीदाख्याजी ॥
अस्तिस्वभावतिहांनिजरूपें ॥ भावरूपतादेखोजी ॥ पर
अभावपरेंजभावेंपण ॥ अस्तिस्वभावविशेषोजी ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अनुभूति प्रादुर्विवर्तवर्त्ते धर्मनानात्वविवेककरीने इहांस्वभावनेगुणथकी अलगाकरी जुदा पाडीनेभाख्यांछे तेद्रव्यना निजनिजरूप आपआपणारूपनी मुख्यताजेहने अनुवृत्तिविवर्त्तधर्मात्र अनुसरीने जेस्वभावछे तेने गुणकरीने दाख्याकहि देखाड्याछे माटे गुणविभागकह्युं स्वभावविभाग कहियेछैये तिहांप्रथम अस्तिभावते निजरूपें एटलेस्वद्रव्य स्वक्षेत्र स्वकाल स्वभाव स्वरूपें भावरूपतादेखो जेम परअभावें नास्तिस्वभाव अनुभवियेंछैयें तेमनिजभावें अस्तिस्वभावपण अनुभवियेंछैयें तेमाटेअस्तिस्वभावछेजेहने प्रथमअस्तिस्वभावकह्यो ॥ ५ ॥

नहीतोसकलशून्यताहोवे ॥ नास्तिस्वभावपरभावेंजी ॥
परभावेंपणसत्ताकहेता ॥ एकरूपसविपावेजी ॥ सत्ताजे
मअसत्तानफुरे ॥ व्यंजकअभिजनवसयोजी ॥ ज्योसरा
वगंधनवीलाले ॥ जेमविणनीरफरशायोजी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जोअस्तिस्वभाव द्रव्यनेविषे नमानीयेतो परभावापेक्षायें जेमनास्तिता तेमस्वभावापेक्षायेंपण नास्तिताथाता सर्वशून्यतापर्यवसाय तेमाटेस्वद्रव्यापेक्षायें अस्तिस्वभाव सदैवमानवो एप्रथमगुण अनेपरभावेंकरी परद्रव्यापेक्षायें नास्ति

इत्यादौव्यभिचारेणपरेणपरेषामप्यनावत्वानियामकत्वाज्ञावांतरमनावोह्यिकयाचिंतु व्यपेक्षयेतिनयाश्रयणेनदोषाजावाच्च ॥ एदशसामान्यगुणछे तेमां १ मूर्त्तत्व २ अमूर्त्तत्व ३ चेतनत्व ४ अचेतनत्व एचारगुणते द्रव्योनेविषे परस्परपरिहारें बेबेगुण रहे तेमाटे प्रत्येकें एकएकद्रव्यनेविषे आठआठगुणपामियें एमविचरोनेजावो ॥१॥

ज्ञानदृष्टीसुखवीर्यफरसरस॥गंधवर्णएजाणोजी॥गति थितिअवगाहनावर्तना॥हेतुजावमनआणोजी॥चेत नादिचारेजेला ॥ विशेषगुणएसोलेंजी॥ षटपुजल आतमनेतिनह ॥ अन्यद्रव्यनेटोलेंजी ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ १ ज्ञान २ दर्शन ३ सुख ४ वीर्य एचारआत्मानागुणछे १ स्पर्श २ रस ३ गंध ४ वर्ण एचारपुजलना विशेषगुण शुद्धद्रव्यंअविकृतरूप अविशिष्टहे ते माटेएगुणकह्या विकृतस्वरूपते पर्यायमांभिले एविशेषजाणवुं १ गतिहेतुता २ स्थितिहेतुता ३ अवगाहनाहेतुता ४ वर्त्तनाहेतुता एचारगुणतेधर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय अनेआकाशास्तिकाय तथाकालद्रव्यना प्रत्येकेंप्रत्येकेंविशेषगुणजाणवा एरीतेंबारगुणथया तेमां १ चेतनत्व २ अचेतनत्व ३ मूर्त्तत्व ४ अमूर्त्तत्व एचारगुणजेलीयें तेवारें सोलविशेषगुणथाय तेमध्ये पुजलद्रव्यने वर्ण गंध रस स्पर्श मूर्तत्व अचेतनत्व एछगुणहोय अनेआत्मद्रव्यने ज्ञान दर्शन सुख वीर्य अमूर्तत्व चेतनत्व एछगुणहोय बीजासर्वद्रव्यने टोलेके० समुदाय त्रणगुणहोय एकपोतानो अचेतनत्वगुण बीजोअमूर्तत्व त्रीजोगतिस्थित्यादि एमफलावीनेधारवुं ॥ ३ ॥

चेतनतादिकचारस्वजाति॥ गुणसामान्यकहायजी॥वि शेषगुणपरजातिअपेक्षा ॥ग्रहताचित्तसुहायजी॥विशे षगुणछेसूत्रेंजाषिया॥वहुस्वजावआधारोजी ॥ अर्थते हकिमगणिआजावे ॥ एहथूलव्यवहारोजी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेजेचेतनत्वादि चारगुणते सामान्यगुणमां पणकह्या अनेविशेषगुण मांपणकह्या तेनुंकारणकहेछे चेतनत्वादिचारगुण स्वजात्यपेक्षया अनुगत व्यवहारेंछे तेथी सामान्यगुणकहियें अनेपरजातिनी अपेक्षायें चेतनत्वादिक तेअचेतनत्वादिकद्रव्यथी स्वाश्रय व्यावृत्तिकरेछे तेमाटे विशेषगुणकहियें परापरसामान्यवत्सामान्यविशेषगुणमेषामितिजावः तथाज्ञानदर्शनसुखवीर्य एचारआत्मविशेषगुणअने

स्पर्श रस गंध वर्ण एचार पुद्गलविशेषगुण एमजेकह्युं तेस्थूलव्यवहारजाणवुं जे मके अठौसिद्धगुणाः तथा एकत्रिंशत्सिद्धादिगुणाः एकगुणकालकादयः पुद्गलाअनंताः इत्यादिसूत्रार्थविचारणायें विशेषगुण अनंताथाय तेठद्मस्थकेमगणीशके तस्मा द्धर्मास्तिकायानां गतिस्थित्यवगाहनावर्तनाहेतुत्वोपयोगग्रहणाख्याःपडेवास्तित्वाद यः सामान्यगुणास्तुविवक्षयाअपरिमिताइत्येवन्याय्यं पण्णांलक्षणवतां लक्षणानि पडेवेतिहिकोनश्रद्दधाति॥नाणंचदंसणंचेव चरित्तंचतवोतहा ॥ वीरियंउवउंगोय एवं जीवस्सलरकणं ॥ १ ॥ सदंधश्ररउज्जोय पभावायातहेवय॥वण्णरसगंधफासा पुग्गलाणंतुलरकणं ॥ २ ॥ इत्यादितुस्वभावविभावलक्षणयोरन्योन्येनांतरीयकत्वप्रतिपाद नायेत्यादिपंडितैर्विचारणीयं ॥ ४ ॥

धर्मअपेक्षायेंइहांअलगा ॥ स्वभावगुणथीभाष्याजी ॥
निजनिजरूपमुख्यतालेइ ॥ स्वभावगुणकरीदाष्याजी ॥
अस्तिस्वभावतिहांनिजरूपें ॥ भावरूपतादेखोजी ॥ पर
अभावपरें तेजभावेंपण ॥ अ[illegible]पनुभविलेखोजी ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अनुवृत्ति आवृत्तिसंबंधें धर्ममात्रनेंविवक्षाकरीने इहांस्वभावनेगुणथकी अलगाके० जुदा पंडितेंभाष्याठे तेद्रव्यना निजनिजरूपके० आपआपणारूपनी मुख्यतालेइने अनुवृत्तिसंबंधमात्र अनुसरीने जेस्वभावठे तेने गुणकरीने दाख्याके० देखाडयाठे माटे गुणविभागकहिने स्वभावविभाग कहियेछैयें तिहांप्रथम अस्तित्व भावते निजरूपें एटलेस्वद्रव्य स्वखेत्र स्वकाल स्वभाव स्वरूपें भावरूपतादेखो जेम परअभावें नास्तित्वभाव अनुभवियेंठेयें तेमनिजभावें अस्तित्वभावपण अनुभवियेंठेयें तेमाटेअस्तिभावतेलेखेठे एप्रथमअस्तिभावकह्यो ॥ ५ ॥

नहींतोसकलशून्यताहोवे ॥ नास्तिस्वभावपरभावेंजी॥
परभावेंपणसत्ताकहेता॥ एकरूपसविपावेजी ॥ सत्ताजे
मअसत्तानफुरे ॥ व्यंजकअमिलनवसथीजी॥ ठतोसरा
वगंधनवीभासे ॥ जेमविणनीरफरशथीजी ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जोअस्तिस्वभाव द्रव्यनेविषे नमानीयेंतो परभावापेक्षायें जेमनास्तिता तेमस्वभावापेक्षायेंपण नास्तितायाताा सर्वशून्यताथयीजाय तेमाटेस्वद्रव्याद्यपेक्षायें अस्तिस्वभाव सर्वथामानवो एप्रथमगुण अनेपरभावेंके० परद्रव्याद्यपेक्षायें नास्तिस्व

अर्थ ॥ गुणगुणीने पर्यायपर्यायीने कारककारकीने संज्ञा संख्या तथालक्षणादिक भेदेंकरीने सातमोभेदस्वभाव जाणवो अने अभेदनीजेवृत्ति ते लक्षणवंतआगमो अभेदस्वभाव जाणवो हवेजोद्रव्यनेविषे भेदस्वभाव नमानीयेंतो सर्वद्रव्यगुणपर्यायने एकपणोथाय तेथीकरी इदंद्रव्यं अयंगुणः अयंपर्यायः एव्यवहारनो विरोधथाय अनेजो अभेदस्वभाव नकहियेंतो निःकेवल निराधार गुणपर्यायनो बोधथवोजोइयेंनही केमके आधाराधेयनो अभेदविना बीजोसंबंध घटेजनही अत्र प्रवचनसारोद्धारनीगाथा ॥ पविभत्तपदेशत्त पुधत्तमितिसासणंहिवीरस्स ॥ अन्नत्तमतझावो एतप्पवंनवदिकधमेगत्ति ॥ १ ॥ १० ॥

शक्तिअवस्थितनिजरूपांतर ॥ भवनेभव्यस्वभावोजी ॥
त्रिहुंकालेमिलतापरभावें ॥ अभव्यनअभव्यस्वभावोजी॥
शून्यभावपणभव्यस्वभावें ॥ कूटकार्यनेयोगेंजी ॥ अभ
व्यभावेंविणद्रव्यांतरता ॥ थायेद्रव्यसंयोगेंजी ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ अनेककार्य कारणशक्तिकजे अवस्थितद्रव्यछे तेहने क्रमिकविशेषता आविर्भावें अतिव्यंग्यते नवमोभव्यस्वभाव कहियें त्रिहुंकालें परद्रव्यमांमिलतांपण परस्वभावें नपरिणमवुं तेदशमोअभव्यस्वभावकहियें अन्नोन्नंपविसंता देताउगासमण्णमणस्स ॥ मेलंताविियणीचं सगसगभावंणविजहंति ॥ १ ॥ हवेभव्यस्वभावविना कूटके० खोटाकार्यनेयोगें शून्यपणोथाय परभावेंनहोय अनेस्वभावेंहोय तेवारेंन व्यहोय अनेतेजो परभावेपणनहोय अने स्वभावेंपणनहोय तेवारें होयजनही एवुंथयुं तथाजोअभव्यस्वभाव नमानीयेंतो द्रव्यनेसंयोगें द्रव्यांतरपणुं थयुंजोइयें केमके धर्माधर्मादिकने जीवपुद्गलादिकने एकावगाहनावगाढ कारणें कार्यसंकर अभव्यस्वभावेंज नथाय तत्तद्रव्यने तत्कार्यहेतुता कल्पनपणे अभव्यत्वस्वभाव गमेजछे आत्मादेःस्वतस्त्वनंतकार्यजननशक्तिर्भव्यतातत्तत्सहकारिसमवधानेनतत्तत्कार्यापधायकताशक्तिश्च तयाभव्यतेति तथाभव्यतयैवानतिप्रसंगइतिवु हरिभद्राचार्याः

परमभावपरिणामिकभाव॥प्रधानतायेंलीजेजी ॥ एवि
णमुख्यरूपकेमद्रव्यें॥प्रसिद्धरीतेंदीजेजी॥एसामान्यस्व
भावइग्यारह ॥ सकलद्रव्यनेधारोजी ॥ आगमअर्थ
विचारीनेजग ॥ सुजशवादविस्तारोजी ॥ १२ ॥

अर्थ॥स्वलक्षणीभूत परिणामिकभाव प्रधानतायें परमभावस्वभावकहियें जेमज्ञानस्वरूपआत्मा एइग्यारमोभेदथयो जोपरमभाव स्वभावनकहियें तोद्रव्यनेविषेप्रसिद्धरूप केमदेवाय अनंतधर्मात्मवस्तुने एकधर्मपुरुषकारें बोलावियें तेहीज परमभावनुं लक्षणछे एइग्यारसामान्यस्वभाव सर्वद्रव्यनेधारवा एहवाआगमना अर्थविचारीने जगत्रमां सुयशविस्तारो ॥ १२ ॥ हवेआगलढालमांदशविशेषस्वभावकहेछे.

ढालबारमोजीहोसंभवनामसोहामणोएदेशी

जीहोचेतनभावतेचेतना॥लालाउलटअचेतनभाव॥जीहोचेतनता
विणजीवने॥लालाथाएकर्मअभाव॥चतुरनरधारोअर्थविचार॥१॥

अर्थ ॥ जेहथी चेतनपणानो व्यवहारथाय तेचेतनस्वभाव अनेतेथीउलटो तेअचेतनस्वभाव जोजीवने चेतनस्वभाव नकहियें तोरागद्वेष चेतनारूपकारणविना ज्ञानावरणादिकर्मनो अभावथाय यतः उक्तंच स्नेहाभ्यक्तशरीरस्य रेणुनाश्लिष्यतेयथा ॥ गात्रंरागद्वेषक्लिन्नस्य कर्मबंधोभवत्येवमिति माटेहेचतुरपुरुषोएरीतें अर्थविचारीनेधारो

जीहोजोचेतनतासर्वथा॥ लालाविना अचेतनभाव॥जीहोध्यान
ध्येयगुरुशीष्यनी ॥ लालासीखपशुद्धस्वभाव ॥ चतु० ॥२॥

अर्थ ॥ जोजीवने सर्वथा चेतनस्वभावजकहियें अनेअचेतनस्वभावनकहियें तो अचेतनकर्मनो कर्मद्रव्योपश्लेप जनितचेतनाविकारविना शुद्धसिद्धसदृशपणुंथाय तेवारें ध्यानध्येय तथा गुरुशिष्यनीशीखपतीपडे एरीतेंसर्वशास्त्रव्यवहार फोकटथयीजाय शुद्धने अविद्यानिवृत्तिपणे स्योउपकारथाय तेमाटे अलवणायवागूरितिवत् अचेतनआत्मा एमपणकोइकरीतें कहियें ॥ २ ॥

जीहोमूर्त्तभावमूरतीधरे ॥ लालाउलटअमूर्त्तस्वभाव ॥ जी
होजोमूर्त्ततानजीवने॥लालातोसंसारअभाव॥चतु० ॥३॥

अर्थ ॥ मूर्त्तिके० रूपरसगंधस्पर्शादिसन्निवेशतते जेहथीधरियें तेमूर्त्तस्वभावकहियें अनेतेहथीजे विपरीत तेअमूर्त्तस्वभावजाणवो जोजीवने कोइकरीतें मूर्त्ततास्वभाव नहोयतो शरीरादिसंबंधविना गत्यंतरसंक्रमविना संसारनो अभावथाय॥३॥

जीहोअमूर्त्तताविणसर्वथा॥लालामोक्षघटेनहीतास॥जीहो
एकप्रदेशस्वभावता॥लालाअखंडधनिवास॥चतु० ॥४॥

अर्थ॥ अनेजो लोकदृष्टव्यवहारें मूर्त्तस्वभावज आत्मानेमानीयें तोमूर्त्ततेहेतुसह

र्शेपण अमूर्त्तनहोय तेथीमोक्षघटेनही माटेमूर्त्तसंचलितजीवनेपण अंतरंग अमूर्त्तस्वनावमानवो वलीएकप्रदेशस्वनाव तेहनेकहियेंजे एकत्वपरिणति अखंमाकार धके० सन्निवेश तेहनो निवासके० नाजनपणुं तेएकप्रदेशस्वनाव जाणवो ॥ ४ ॥

जीहोअनेकप्रदेशस्वनावता ॥ लालानिन्नप्रदेशस्वनाव
जीहोजोनहीएकप्रदेशता॥लालानेदहुएबहुनाव॥चतु०॥५

अर्थ ॥ अने अनेकप्रदेशस्वनाव तेहनेकहियें जेनिन्नप्रदेशयोगें तथा निन्नप्रदेश कल्पनायें अनेकप्रदेश व्यवहारयोग्यपणुंहोय हवे जोएकप्रदेशस्वनाव नहोयतो असंख्याता प्रदेशादियोगें बहुवचनप्रवृत्ति एकधर्मास्तिकायछे तेमाटे एव्यवहारनहोयतो घणाधर्मास्तिकायछे इत्यादिक थयुंजोइयें ॥ ५ ॥

जीहोकेमसकंपनिःकंपता ॥ लालाजोनअनेकप्रदेश ॥ जीहो
अणुसंगतिपणकेमघटे॥लालादेशसकलआदेश॥चतु०॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जोअनेकप्रदेशस्वनाव इव्यनेनकहियेंतो घटादिक अवयवी देशथीसकंप तथादेशथीनिःकंप देखियेंछैयें तेकेममले अनेअवयवकंपे पणअवयवीनिःकंप एमकहियेंतो चलतिएप्रयोग केमथाय प्रदेशवृत्तिकंपनो जेमपरंपरासंबंधछे तेमदेशवृत्ति कंपानावनोपण परंपरासंबंधछे तेमाटेदेशथीचलेछे अनेदेशथी नथीचलतो एअस्खलितव्यवहारेंअनेकप्रदेशस्वनाव मानवो तथाअनेकप्रदेशस्वनाव नमानियेंतो आकाशादिइव्यें अणुसंगतिके० परमाणुसंयोग केमघटे ॥ ६ ॥

जीहोदेशसकलनेदेंविधा ॥ लालादीठीजगमांवृत्ति ॥ जी
होप्रत्येकेंदूपणतिहां॥लालाबोलेसंमतिवृत्ति॥चतु० ॥७॥

अर्थ ॥ वलीएहिजयुक्ति विस्तारीदेखाडेछे एकवृत्तिदेशथीछे जेमकुंमलइइनेइहांकुंमलतो कानमांपसखाछे तेकानतोइइनो एकदेशछे पणइइकहिवोजायछे तथाबीजीवृत्ति सर्वथीछे जेमसामान्यवस्तु इयनी एटलेजामो सर्वअंगमांपेखोछे तेदेवदत्त एसर्वथीजाणवी तिहांप्रत्येकेंदूषण संमतिग्रंथनी वृत्तिबोलेछे परमाणुने आकाशादिकें देशवृत्तिमानतां आकाशादिकनाप्रदेश अनियतापणआवे अनेसर्वथी वृत्तिमानतां परमाणु आकाशादिप्रमाण थयीजाय तथावलपानावेंतो परमाणुने अवृत्तिपणुंपाय मावद्विशेषानावस्यसामान्यनावनियतत्वादित्यादि ॥ ७ ॥

जीहोनावस्वनावइअन्यथा॥लालाबेविनावव्याधि॥जीहो
एविणनघटेजीवने॥लालाअनियतकर्मउपाधि॥चतु०॥८॥

अर्थ॥ स्वनावथी जेअन्यथानाव तेविनावस्वनावकहियें तेमहाव्याधिरूपछे ए विनावस्वनाव मान्याविना जीवने अनियतके० नानाप्रकारना देशकालादिविपाकी कर्मोपाधी नलागवाजोइयें उपाधिसंबंध योग्यतायें अनादिविनावस्वनावः॥८॥

जीहोशुद्धनावकेवलपणुं॥लालाउपाधिकजअशुद्ध॥जीहोवि
णशुद्धतानमुक्तिछे॥लालालेपनविगरअशुद्ध॥चतु०॥ ए ॥

अर्थ॥ केवलपणुंके० उपाधिनावरहितांतरनाव परिणमनते शुद्धस्वनाव अने जे उपाधिजनित बहिरनाव परिणमन योग्यताते अशुद्धस्वनावछे जोशुद्धस्वनाव नमानियेंतो मुक्तियटेनही अनेजोअशुद्धस्वनाव नमानियेंतो कर्मनोलेपघटेनही इहांशुद्धस्वनावनेकदापि अशुद्धतानहोय अने अशुद्धस्वनावने पछेपणशुद्धता नहोय एवेदांत्यादिक मतनिराकरी उन्नयस्वनावमाने जेथकीकोइदूषणनहोयतेवति॥ ए॥

जीहोनियमितएकस्वनावजे॥लालाउपचरियेंपरठाण॥जीहोतेउ
पचरितस्वनावछे॥लालाएविणकेमपरनाण॥चतु०॥१०॥

अर्थ॥ नियमितजे एकस्थाने निरधारयुंजे एकस्वनाव अनेपरस्थानकें उपचरियें तेउपचरित स्वनावहोय तेउपचरितस्वनाव नमानियेंतो स्वपरव्यवसायी ज्ञानवंतआत्मा केमकहियें जेमाटे ज्ञानने स्वविषयत्व तो अनुपचरितछे पणपरविषयत्व ते परापेक्षायें प्रतीयमानपणे तथापरनिरूपित संबंधपणेउपचरितछे॥ १०॥

जीहोकर्मजसहजबेनेदते॥लालामूर्त्तअचेतननाव॥जी
होप्रथमजीवनीसिद्धने॥लालाअपरपरज्ञस्वनाव॥चतु०॥११

अर्थ॥ तेउपचरित स्वनाव बेप्रकारेंछे एककर्मजनित बीजोस्वनावजनित तिहां पुजलसंबंधे जीवने मूर्त्तपणुं अनेअचेतनपणुंजे कहियेंछयें तिहांगोवाहीकः एरीतें उपचारछे तेकर्मजनितछे माटेकर्मतेहीज उपचरितस्वनावछे हवेजीवने अपरके० बीजोजे सहेजउपचरित स्वनाव तेसिद्धने परज्ञपणु तिहांकोइ कर्मोपाधिछेनही तड् कमाचारसूत्रे अकम्मस्सववहारोणविजइ कम्मुणाउवाहिजायतत्ति॥ ११॥

जीहोदशविशेषस्वनावए॥लालासर्वएकवीससंनाल॥जी
होसविहुंपुजलजीवने॥लालापन्नरनेदछेकाल॥चतु०॥१२॥

अर्थ ॥ एवेंशेविशेषस्वभाव नियतद्रव्यवृत्तिमाटे एमध्ये पूर्वोक्तइग्यार सामान्य स्वभाव भेळियें तेवारें सर्वमिळिने एकवीस स्वभावथाय तेपुद्गलतथाजीवने एकवीस स्वभावहोय तेएकवीसमांथी टकाढियें तेवारें कालद्रव्यने पन्नरस्वभावथाय तेसर्व भावनानाम आगलीगाथामां कहेछे ॥ १२ ॥

जीहोबहुप्रदेशचितमूर्त्तता ॥ लालाविभावअशुद्धअशुद्ध ॥ जीहो टालीआदिमसंभूआ ॥ लालासोलधर्ममुखबुद्ध ॥ चतु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ १ बहुप्रदेशके० अनेकप्रदेशस्वभाव २ चितके० चेतनस्वभाव ३ मूर्तस्वभाव ४ विभावस्वभाव ५ शुद्धस्वभाव ६ अशुद्धस्वभाव एछस्वभावकाढीयें तेवारें बाकी पन्नरस्वभाव कालद्रव्यनेथाय वली १ धर्मास्तिकाय २ अधर्मास्तिकाय ३ आकाशास्तिकाय एत्रणद्रव्यने आदिमके० पहेलो अनेकप्रदेशस्वभाव तेएसंयुक्तकरियें अने बीजापांचटालियें तेवारेंसोलस्वभावथाय ए एकविंशतिभावाःस्युर्जीवपुद्गलयोर्मताः धर्मादिनाषोडशस्युः कालेपंचदशस्मृताः ॥ १३ ॥

जीहोप्रमाणनयतेअधिगमें ॥ लालाजाणीएहस्वभाव ॥जीहोसुयशविबुधजिनसंगतें ॥ लालाधरोचित्तशुभभाव ॥ चतु० ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एएकवीस स्वभावते प्रमाणनयने अधिगमेके० ज्ञानेजाणीने सुयशके० शोभन अनुयोग पडिज्ञान यशवंतजे विबुधके० पंडितजन तेहनीसंगतकरी सर्वशकादोरटालीचित्तमांहें शुभभावधरो ॥ १४ ॥

॥ ढालतेरमी वीराचंदलाएदेशी ॥

स्वद्रव्यादिकग्राहकेंरे ॥ अस्तिस्वभाववखाण॥परद्रव्यादिकग्राहकेंरे॥ नास्तिस्वभावमनआणोरे॥ चतुरविचारियें॥१॥

अर्थ ॥ हवेस्वभावनो अधिगम तेनयेंकरीदेखाडेछे १ जेअस्तिस्वभाव द्रव्यनो छे तेस्वद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनयें वखाणियें अनेजे २ नास्तिस्वभावछे तेपरद्रव्यादिग्राहक द्रव्यार्थिकनयेंवखाणियें उक्तंच सर्वमस्तिस्वरूपेण पररूपेणनास्तिच॥१॥

उत्पादव्ययगौणतारे ॥ सत्ताग्राहकनित्य ॥ कोइकपर्यायार्थिकेंरे ॥ जाणोस्वभावअनित्योरे ॥ चतु० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ ३ उत्पादव्ययगौणत्वे अनेसत्ताग्राहक द्रव्यार्थिकनयें नित्यस्वभावक

हियें तथा ४ कोइकरीतें पर्यायार्थिकनयेंकरी उत्पादव्यय ग्राहकहोय तेणेकरीने द्रव्यनेविषे अनित्यस्वनावजाणो ॥ २ ॥

भेदकल्पनारहितथीरे ॥ धारोएकस्वनाव ॥ अन्वय
द्रव्यार्थिकनयेंरे ॥ अनेकद्रव्यस्वनावोरे ॥चतु०॥३॥

अर्थ ॥ ५ भेदकल्पनानी अपेक्षारहित शुद्धद्रव्यार्थिकनयें एकस्वनावजाणो तथा ६ अन्वयद्रव्यार्थिकनयेंकरी अनेकस्वनावजाणो कालान्वयेंसत्ताग्राहको देशान्वयेंचान्वयग्राहकोनयः प्रवर्त्तते ॥ ३ ॥

सद्भूतव्यवहारथीरे ॥ गुणगुणादिकभेद ॥ भेदक
ल्पनारहितथीरे॥जाणोतासअभेदोरे॥चतु०॥४॥

अर्थ ॥ ७ सद्भूतव्यवहारनयथी गुणगुणी पर्यायपर्यायीनो भेदस्वनावजाणवो ८ अने भेदनीकल्पनारहित शुद्धद्रव्यार्थिकनयथी अभेदस्वनावजाणवो यत्रकल्प्यमानस्यांतर्निगीर्णत्वेनग्रहस्तत्रैकस्वनावो यथावटोयमिति अत्रविषयविषयिणोर्वैविक्त्येनग्रहस्तत्राभेदस्वनावो यथानीलोघटइति सारोपासाध्यवसानयोर्निरूढत्वार्थमयं प्रकारभेदः प्रयोजनवत्वेतुतयद्वत्तानिमित्तकत्वेनस्वनावभेदसाधके इतिपरमार्थः

परमनावग्राहकनेरे ॥ नव्यअनव्यपरिणाम ॥ शु
द्धअशुद्धतेहथीरे ॥चेतनआतमरामोरे॥चतु०॥५॥

अर्थ ॥ हवे ए नव्यस्वनाव अने १० अनव्यस्वनाव एवेस्वनावते परमनावग्राहकनयें जाणवा नव्यताते स्वनावनिरूपितछे अनेअनव्यता तेउत्पन्नस्वनावनी तथापरनावनी साधारणछे तेमाटेइहां अस्ति नास्ति स्वनावनीपरें स्वपरद्रव्यादिक ग्राहकनय एवेप्रवृत्तिनहोय. शुद्धाशुद्धपणो संमुग्धजे परमनाव ग्राहकनय तेणेकरीने आत्मारामने ११ चेतनस्वनाव कहियें ॥ ५ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ चेतनकर्मनोकर्म ॥ परम
नावग्राहकनयेंरे॥ तेहअचेतनधर्मोरे ॥चतु०॥६॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी ज्ञानावरणादिककर्म तथानोकर्मते मनवचनकायपणुं तेहनेचेतनकहियें चेतनसंयोगकृतपर्यायतिहांछे तेमाटे इदंशरीरमावश्यकं जानातीत्यादिव्यवहारः अतएवनवति घृतंदहतीतिवत् अनेपरमनावग्राहकनयें तेकर्म नोकर्मने १२ अचेतनस्वनावकहियें जेम घृतअनुष्णस्वनाव ॥ ६ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ जीवअचेतनधर्म ॥ परम
नावग्राह्कनयेंरे ॥ मूरतकर्मनोकर्मेरे॥चतु०॥७॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी जीवने १२ अचेतन स्वनावकहियें अतएव ज डोयमचेतनोयमित्यादि व्यवहारछे एतेनमांनजानामीतिप्रतीत्या विलक्षणाज्ञान सिद्धिर्वेदांतिनामपास्ता सद्भूतव्यवहारनयग्राह्येणाचेतनस्वनावेनैवतडुपपत्तेः परमन नावग्राह्कनयें कर्मनोकर्मने मूर्त्तस्वनावकहियें ॥ ७ ॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ जीवमूरतपणहोय ॥ परम
नयेंपुद्गलविनारे॥ द्रव्यअमूर्त्ततुंजोयरे॥चतु० ॥८॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी जीवने १३ मूर्त्तस्वनावपणकहियें अतएव अ यमात्माहृश्यते अमुंआत्मानंपश्यामिएव्यवहारछे एस्वनावेंजे रक्तोचपद्मप्रनयाष्ठपू ज्यों इत्यादिवचनछे तथापरमनावग्राह्कनयें पुद्गलद्रव्यविना बीजासर्वद्रव्यने १४ अमूर्त्तस्वनावकहियें ॥ ८ ॥

उपचारेंपणपुद्गलीरे ॥ नहीअमूर्त्तस्वनाव ॥ उपचरि
येंअनुगमवसेरे ॥ व्यवहारेंजेहनावोरे ॥चतु०॥९॥

अर्थ ॥ चेतननासंयोगे देहादिकनेविषे जेमचेतनत्व उपचरियेंछेयें तेमअमूर्तत्व पचरतानथी तेमाटेअसद्भूतव्यवहारथीपण पुद्गलने अमूर्त्तस्वनावनकहियें प्रत्यास त्तिदोषे अमूर्तत्व तिहांकेमनउपचरिते उपचरितकहेछे अनुगमवसे एकसंबंधदोषे जे हनावविवहरियें तेउपचरियें पणसर्वधर्मनो उपचारनहोय तथाच आरोपेसतिनि मित्तानुसरणंनतुनिमित्तमस्तीत्यारोपइतिन्यायोनाश्रयणीयइतिनावः ॥ ९ ॥

एनावेंसंमतिनणिउरे ॥ अनुगतअर्थअशेष ॥ जलपयजे
मनविन्नंजीयेंरे ॥ यावतअंत्यविशेषोरे ॥ चतु० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ एनावेंके० एअनिप्रायें संमतिग्रंथमांकयुंछे जे अनुगतके० अत्यंतसंबंध अशेषके० सर्वेअर्थ जलपयजेमके० खीरनीरनीपरें विन्नंजेनहीं पृथक्करदेनहीं किहां तायें अंत्यविशेषतायें अंत्यविशेषे शुद्धपुद्गलजीवलक्षणे विन्नजीयें यथा उदारिकादि वर्गणानिष्पन्नाच्छरीरादेर्ज्ञानघनासंख्येयप्रदेशआत्मानिन्नइति अत्रगाथा ॥ अनुन्ना णुगयाणं इमवतंवत्तिविजयणमजुत्तं॥जहडुद्धपाणियाणं जावंतविशेषपज्जाया ॥ १॥

अनभिभूतजिहांमूर्त्ततारे ॥ अमूर्त्ततातिहांनाहिं ॥ जिहांअ
भिभूतअमूर्त्ततारे ॥ मूर्तिअनंत्यतेमांहिरे ॥ चतु० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ एमकहेता मूर्त्तता जोपुद्गलद्रव्य विभंजक अंत्यविशेषछे तोतेनोउपचार आत्मद्रव्यें केमहोय अनेजोते अंत्यविशेषनहीतो अन्योन्यानुगमे अमूर्त्ततानो उप चार पुद्गलद्रव्यें केमनहोय एहवीशंका कोइकनेहोयछे तेटालवानेकहेछे जिहांपुद्गल द्रव्यमूर्त्तता अभिभूतनथी किंतुउद्भूतछे तिहांअमूर्त्तता स्वभावनहोय तेमाटेअमूर्त्तता अपुद्गलद्रव्यनो अंत्यविशेष अनेजिहांआत्मद्रव्य कर्मनहोय तिहांअमूर्त्तता अभिभू तछे तिहांमूर्त्तता अनंत्य अनुगमजनित साधारणधर्मरूपहोय तथाचान्योन्यानुगमा विशेषेपिक्वचिदेवाकिंचित्केनचित्कथंचिदभिभूयत इतियथागमव्यवहारमाश्रयणीयं ११

पुद्गलनेएकवीसमोरे ॥ एमतोभावविभुत्त ॥ तेणेंअसद्भू
तहनयेंरे ॥ परोक्षअणुअमूर्त्तोरे ॥ चतु० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जो उपचारेंपण अमूर्तस्वभाव पुद्गलनेनहोय एमकहेतातो एकवीसमो भाव लोपाये तेवारें एकविंशतिभावाःस्युर्जीवपुद्गलयोर्मताः एवचनव्याघातथी अ पसिद्धांतथाय तेटालवानेअर्थें असद्भूतव्यवहारनयें परोक्षते पुद्गलपरमाणुछे तेनेअमू र्तकहियें व्यवहारिकप्रत्यक्षागोचरत्वममूर्तत्वं परमाणोःभाक्तंस्वीक्रियतइत्यर्थः ॥१२॥

कालपुद्गलअणुतणोरे ॥ एकप्रदेशस्वभाव ॥ परमनयेपर
द्रव्यनेरे ॥ भेदकलपनाअभावोरे ॥ चतु० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ कालाणुने तथापुद्गलाणुने परमभावग्राहकनयें १५ एकप्रदेशस्वभावकहियें एमकालतयापुद्गल एवेद्रव्यटालीने परद्रव्य जेबीजाचारद्रव्य तेहने भेदकल्पनारहि त शुद्धद्रव्यार्थिकनयें एकप्रदेशस्वभावकहियें ॥ १३ ॥

भेदकल्पनायुतनयेंरे ॥ अनेकप्रदेशस्वभाव ॥ अणुविण
पुद्गलअणुतणुरे ॥ उपचारेंतद्भावोरे ॥ चतु० ॥ ॥ १४॥

अर्थ ॥ अनेभेदकल्पनानी सापेक्षायें जेशुद्धद्रव्यार्थिकनयें अणुके० एकछुटापरमा णुविना सर्वद्रव्यने १५ अनेकप्रदेशस्वभावकहियें अने पुद्गलपरमाणुनेपण अनेकप्रदेश थवानीयोग्यताछे तेमाटे उपचारें तेहनेपण अनेकप्रदेश स्वभावकहियेंतयाकालाणु मां तेउपचारकारणनथी तेमाटे तेहनेसर्वथा एस्वभावनथी ॥ १४ ॥

शुद्धाशुद्धद्रव्यार्थिकेंरे ॥ जाणोविभावस्वभाव ॥ शुद्धेशुद्ध स्वभावछेरे ॥ अशुद्धेअशुद्धस्वभावोरे ॥ चतु० ॥ १५ ॥

अर्थ॥ शुद्धाशुद्धद्रव्यार्थिकनयें संमुग्धे १७ विभावस्वभावछे तथा शुद्धद्रव्यार्थिकनयें १८ शुद्धस्वभावजाणो अनेअशुद्धद्रव्यार्थिकनयें १९ अशुद्धस्वभाव जाणवो॥१५॥

असद्भूतव्यवहारथीरे ॥ छेउपचरितस्वभाव ॥ एस्वभाव नययोजनारे ॥ कीजेंमनधरीभावेरे ॥ चतु० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ असद्भूतव्यवहारनयथी २० उपचरितस्वभावछे एभावचित्तमांधरीनें स्वभावनयनी योजनाकरियें ॥ १६ ॥

अनुपचरितनिजभावजेरे ॥ तेतोगुणकहेवाय ॥ एकद्रव्याश्रितगुणकह्यारे ॥ उभयाश्रितपज्जायरे ॥ चतु० ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ एदिगंबरप्रक्रिया किहांकिहांसमयेंपण उपस्कृतकरीछे एमांदेखिवछे तेदेखाडेछे स्वभावते गुणपर्यायथीभिन्न नविवक्षियें जेमाटे जेअनुपचरितभाव तेगुणजजाणवो अनेजेउपचरितते पर्यायजजाणवो जेम द्रव्याश्रिततेगुण अनेउभयाश्रिततेपर्यायिकह्याछे तथोक्तमुत्तराध्ययनेषु गुणाणुमासउदव्वं एगदव्वस्सियागुणा ॥ लरकणंपज्जवाणंतु उभउअस्सिआभवेत्ति ॥ १ ॥ १७ ॥

स्वभावभेदसहितकह्यारे ॥ एमएगुणहप्रकार ॥ हवेभेद पज्जायनारे ॥ सुणयोसुयशभंभारोरे ॥ चतु० ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ यदिचस्वद्रव्यादिग्राहकेणास्तिस्वभावः परद्रव्यादिग्राहकेणनास्तिस्वभाव इत्युपगम्यते तदोभयोरपि द्रव्यार्थिकविषयत्वात्सप्तभंग्यामाद्यद्वितीययोर्भंगयोर्द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकाश्रयेण प्रक्रियाभज्येतेत्यायत्रबहुविचारणीयं ॥ स्वभाव एमएस्वभावभेदसहितगुणना प्रकारकह्या हवेआगलाढालमां पर्यायनाभेदकहुंछुं तेहेनेसुयशभांडार एहवाश्रोतापुरुषो तमेसांभलो ॥ १८ ॥

ढालचउदमो गोडीसीमंधरसामीआ तेमुजमिछामिडुक्कडंएदेशी

सुणोभेदपज्जायनारे ॥ तेदोयप्रकारव्यंजनअर्थवेभेदथी ॥ संक्षेपेंसार ॥ श्रीजिनवाणीआदरो ॥ १ ॥

अर्थ ॥ हवेपर्यायना भेदसांभलो तेपर्यायनाभेद संक्षेपथी बेप्रकारनाछे एकव्यंजनपर्याय बीजोअर्थपर्याय एसंक्षेपकह्या ॥ १ ॥

अनुगतकालकलितकह्यो ॥ व्यंजनपर्याय ॥ वर्त्तमानसु
पिमतिह्नां ॥ अरथह्पज्जाय ॥ श्रीजिन० ॥ २ ॥

अर्थ॥जेजेह्नो त्रिकालस्पर्शिपर्याय तेतेनोव्यंजन पर्यायकह्यिें जेमघटादिने मृदादिपर्याय तेह्मांसूक्ष्मवर्त्तमानकालवर्तितेअर्थपर्यायछे जेमघटनेतत्तत्क्षणवर्त्तिपर्यायते अर्थपर्याय ॥ २ ॥

द्रव्यगुणेविहुंभेदथी॥वलीशुद्धअशुद्ध॥शुद्धद्रव्यव्यं
जनतिह्नां ॥ चेतननेसिद्ध ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥

अर्थ॥ तेप्रत्येकें एकेकवेवेप्रकारें एकद्रव्यपर्याय बीजोगुणपर्याय भेदथीजाणवा तथातेवली शुद्ध अनेअशुद्धभेदथी वेवेप्रकारेंजाणवा तेमांशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायते चेतनद्रव्यने केवलज्ञानना भावथी सिद्धपर्यायजाणवो ॥ ३ ॥

अशुद्धद्रव्यव्यंजनवहु ॥ मनुजादिकभेद॥ गुणथीव्यं
जनएमविधा ॥ केवलमइभेद ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेअशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्याय तेमनुष्य देवता नारकी तीर्यचादिक वहुभेदेंजाणवो केमके तेद्रव्यभेद पुन्नलसंयोग जनितछे एमज शुद्धगुणपर्यायते केवलज्ञानादिरूप अने अशुद्धगुणव्यंजनपर्यायते मतिज्ञानादिरूपजाणवा ॥ ४ ॥

ऋजुसूत्रादेशेंकरी॥ क्षणपरिणतएह ॥ कहोअर्थ
पज्जायए ॥ अन्यंतरजेह ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एमऋजुसूत्रादेशें क्षणपरिणतजे अन्यंतरपर्याय तेशुद्धअर्थपर्याय अने जेजेह्थी अल्पकालवर्तिपर्याय तेतेह्थीअल्पविवक्षायें अशुद्ध अर्थपर्यायकहेवा५

पुरुषशब्दजेमपुरुषने ॥ व्यंजनपर्याय ॥ संम
तिग्रंथेअर्थथी॥बालादिकदाय॥श्रीजिन०॥६॥

अर्थ ॥ इहांवृद्धवचन संमतिग्रंथदेखाडेछे जेम पुरुषशब्दवाच्य जेजन्मादि मरणकालपर्यंत एकअनुगतपर्याय तेपुरुषनोव्यंजनपर्यायकह्यिें एसंमतिग्रंथेकह्युंछे तथा बालतरुणादि पर्यायते अर्थपर्यायकह्याछे एमतेहनुंजावीजेवुं अत्रगाथा ॥ पुरिसंमिपुरिससदो जम्माइमरणकालपज्जंतो ॥ तस्सउबालाईया पज्जवजोयाबहुवियप्पा

षटगुणहाणीवृद्धीथी ॥ जेमअगुरुलहुन ॥ पज्जव
तेमक्षिणभेदथी ॥ केवलपणेंवुन ॥ श्रीजिन०॥७॥

अर्थ॥ जेकेवलज्ञानादिकते शुद्धगुणव्यंजनपर्यायहोय तिहांअर्थपर्यायनयी एह वीकोइक दिक्पटानासनी शंकाटालेछे जे षटगुणहानिवृद्धिलक्षणागुरुलघुपर्यायाः सूक्ष्मार्थपर्यायाः एजेमकहुंछे तेमक्षणनेदथी केवलज्ञानपर्यायपण निन्ननिन्न देखा डयाछे ॥ पढमसमयसयोगिनवछकेवलनाणे ॥ अपढमसमयसयोगिनवछकेवलनाणे इत्यादिवचनात् तेमाटेरुजुसूत्रादेशें शुद्धगुणनापण अर्थपर्यायमानवा ॥ ७ ॥

शुद्धद्रव्यव्यंजनअणु॥ पुद्गलपर्याय॥ अशुद्धद्यणु कादिकगुणा ॥ निजगुणपर्याय ॥ श्रीजिन० ॥ ८॥

अर्थ ॥ पुद्गलद्रव्यनो शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायते अणुके० परमाणुजाणवो के मके तेपरमाणुनोकिवारें नाशनथी तेमाटेतथा द्व्यणुकादिकद्रव्यते पुद्गलद्रव्यना अ शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्याय संयोगजनितछे तेमाटे एम गुणाके० पुद्गलद्रव्यना शुद्धगुण व्यंजनपर्याय तथाअशुद्धगुणव्यंजनपर्यायते पोतपोताना गुणाश्रितजाणवा जेप रमाणुगुण तेशुद्धगुणव्यंजनपर्याय अनेद्विप्रदेशादिगुणते अशुद्धगुणव्यंजनपर्याय ८

सूक्ष्मअर्थपर्यायते ॥ धर्मादिकएम॥ निजपरप्र त्ययथीलहो॥ गंभिरछप्रेम ॥ श्रीजिन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकना शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायजछे एहवोजे हठकरेछे तेह नेकहियेंजे रुजुसूत्रादेशें क्षणपरिणतिरूप अर्थपर्यायपण केवलज्ञानादिकनीपरें ह ठवांमीने तिहांपणकेमनथीमानता ॥ ए ॥

जेमआकृतिधर्मादिकनी॥ व्यंजनछेशुद्ध ॥ लोकद्रव्य संयोगथी ॥ तेमजाणीअशुद्ध ॥ श्रीजिन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तेधर्मास्तिकायादिकमां अपेक्षायें अशुद्धपर्यायपणहोय नहीतोपरमाणु पर्यंत विश्रामेंपुद्गलद्रव्यपण नहोय एहवें अनिप्रायेंकहेछे जेमधर्मास्तिकायादिकनी आकृति लोकाकाशमान संस्थानरूपते शुद्धद्रव्यव्यंजन पर्यायकहियें परनिरपेक्षप णामाटे तेमजलोकवर्त्ति द्रव्यसंयोगरूप अशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायकहियें पणातेह नोपरापेक्षपणे कहेतायका अनेकांतिकने विरोधनथी ॥ १० ॥

संयोगेआकृतिपरें ॥ पज्जयकहेवाय ॥ उत्तराध्य यनेनाषिया ॥ लक्षणपज्जाय ॥ श्रीजिन०॥ ११॥

अथ जनपर्याय॥ जेआकृतिते पर्यायहसे अने एहवीआशंकाटालेछे

जे संयोगतेपण आकृतिनीपरें पर्यायकहेवायछे केमके पर्यायनालक्षण भेदरूप श्री उत्तराध्ययनसूत्रें एरीतेंकह्याछे ॥ ११ ॥

एकतपृथकतत्तेमवली ॥ संख्यासंठाण ॥ वलीसंयोग
विभागए ॥ मनमांतुआण ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ उक्तंच ॥ एगत्तंचपुहुत्तंच संखासंठाणमेवय॥संयोगायविभागाय पज्जवाणं तुलक्खणं ॥ १ ॥ एगाथातुंमनमांआण एमदिगंबरनयचक्रनाकर्त्तादेवसेननेकहेछे ॥ १२

उपचारीनयशुद्धते ॥ जोपरसंयोग ॥ असभूतम
नुजादिका ॥ तोनयशुध्योग ॥ श्रीजिन० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहेसोजे धर्मास्तिकायादिकने परद्रव्यसंयोगछे तेउपचरित पर्यायकहियें पणअशुद्धपर्यायनकहियें द्रव्यान्यथात्वहेतुनेविषेज अशुद्धत्त्व व्यवहारछे तेवतीतो तेमाटे मनुष्यादिकपर्यायपण अशुद्धनकहो असद्भूतव्यवहारनयग्राह्य माटे असद्भूतकहो ॥ १३ ॥

धर्मादिकपरपज्जयें ॥ विसमाइएम ॥ अशुद्धताअ
विशेषथी ॥ जिअपुग्गलजेम ॥ श्रीजिन० ॥ १४ ॥

अर्थ॥ छितंतुकादिक पर्यायनीपरें एद्रव्यजनकअवयवसंघातनयेंज अशुद्ध द्रव्यव्यंजनपर्यायपणुंज कहेतारुंलागे तस्मादपेक्षानपेक्षाभ्यांशुद्धाशुद्धानेकांतव्यापकत्वमेवश्रेयः तेहिजदेखाडेछे धर्मादिकने परपर्यायें एटलेस्वपर्यायथी विषमायीके० विलक्षणताएमजाणवी केमके परापेक्षायें जेमजीवद्रव्य पुग्गलद्रव्यनेविषे अशुद्धतानो विशेषनथी ॥ १४ ॥

एमजसजातिविजातियी ॥ द्रव्येंपज्जाय ॥ गुणेस्व
भावविभावथी ॥ एचारकहाय ॥ श्रीजिन० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवे प्रकारांतरे चारप्रकारनापर्याय नयचक्रमांकह्याछे तेदेखाडेछे एमज स्वजातीयद्रव्यपर्याय तथाविजातीयद्रव्यपर्याय वलीस्वभावगुणपर्याय अनेविभावगुणपर्याय एरीतेंचारभेद पर्यायनाकहेवा ॥ १५ ॥

द्व्यणुकमनुजकेवलीवली ॥ मतिमुखदिठंत॥ एप्रायि
कजेणद्रव्यथी ॥ अणुपज्जवसंत ॥ श्रीजिन० ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हवेउदाहरणदेखाडेछे द्विप्रदेशादिकस्कंधते स्वजातीय द्रव्यपर्यायकहि

अर्थ॥ जेकेवलज्ञानादिकते शुद्धगुणव्यंजनपर्यायहोय तिहांअर्थपर्यायनथी एह वीकोइक दिकपटाभासनी शंकाटालेछे जे षटगुणहानिवृद्धिलक्षणागुरुलघुपर्यायाः सूक्ष्मार्थपर्यायाः एजेमकह्युंछे तेमक्षणभेदथी केवलज्ञानपर्यायपण भिन्नभिन्न देखा ड्याछे ॥ पढमसमयसयोगिभवत्थकेवलनाणे ॥ अपढमसमयसयोगिभवत्थकेवलनाणे इत्यादिवचनात् तेमाटेऋजुसूत्रादेशें शुद्धगुणनापण अर्थपर्यायमानवा ॥ ७ ॥

शुद्धद्रव्यव्यंजनअणु॥ पुद्गलपर्याय॥ अशुद्धद्व्यणु
कादिकगुणा ॥ निजगुणपर्याय ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ पुद्गलद्रव्यनो शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायते अणुके० परमाणुउंजाणवो के मके तेपरमाणुनोकिवारें नाशनथी तेमाटेतथा द्व्यणुकादिकद्रव्यते पुद्गलद्रव्यना अ शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्याय संयोगजनितछे तेमाटे एम गुणाके० पुद्गलद्रव्यना शुद्धगुण व्यंजनपर्याय तथाअशुद्धगुणव्यंजनपर्यायते पोतपोताना गुणाश्रितजाणवा जेप रमाणुगुण तेशुद्धगुणव्यंजनपर्याय अनेद्विप्रदेशादिगुणते अशुद्धगुणव्यंजनपर्याय ८

सूक्ष्मअर्थपर्यायते ॥ धर्मादिकएम॥ निजपरप्र
त्ययथीलहो॥ गंभिहठप्रेम॥ श्रीजिन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायादिकना शुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायजछे एहवोजे हठकरेछे तेह नेकहियेंजे ऋजुसूत्रादेशें क्षणपरिणतिरूप अर्थपर्यायपण केवलज्ञानादिकनीपरें ह ठगीमीने तिहांपणकेमनथीमानता ॥ ए ॥

जेमआकृतिधर्मादिकनी॥ व्यंजनछेशुद्ध ॥ लोकद्रव्य
संयोगथी ॥ तेमजाणीअशुद्ध ॥ श्रीजिन० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तेधर्मास्तिकायादिकमां अपेक्षायें अशुद्धपर्यायपणहोय नहीतोपरमाणु पर्यंत विश्रामेंपुद्गलद्रव्यपण नहोय एहवें अभिप्रायेंकहेछे जेमधर्मास्तिकायादिकनी आकृति लोकाकाशमान संस्थानरूपते शुद्धद्रव्यव्यंजन पर्यायकहियें परनिरपेक्षप णामाटे तेमजलोकवर्त्ति द्रव्यसंयोगरूप अशुद्धद्रव्यव्यंजनपर्यायकहियें पणतेह नोपरापेक्षपणे कहेतायका अनेकांतिकने विरोधनथी ॥ १० ॥

संयोगेआकृतिपरें ॥ पज्जायकहेवाय ॥ उत्तराध्य
यनेभापिया॥ लक्षणपज्जाय ॥ श्रीजिन०॥११॥

अर्थ ॥ जेआकृतिते पर्यायहते अने संयोगपर्यायनहोय एहवीआशंकाटालेछे

जे संयोगतेपण आकृतिनीपरें पर्यायकहेवायछे केमके पर्यायनालक्षण नेदरूप श्री उत्तराध्ययनसूत्रें एरीतेंकह्याछे ॥ ११ ॥

एकतपृथकततेमवली ॥ संख्यासंगण ॥ वलीसंयोग
विजागए ॥ मनमांतुआण ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ उक्तंच ॥ एगत्तंचपुहुत्तंच संखासंगणमेवय॥संयोगायविजागाय पज्जवाणं तुलरकणं ॥ १ ॥ एगाथातुंमनमांआण एमदिगंबरनयचक्रनाकर्त्तादेवसेननेकहेछे १२

उपचारीनयशुद्धते ॥ जोपरसंयोग ॥ असजूतम
नुजादिका ॥तोनयशुद्धयोग ॥श्रीजिन०॥ १३ ॥

अर्थ ॥ हवेजोएमकहेसोजे धर्मास्तिकायादिकने परद्रव्यसंयोगछे तेउपचरित पर्यायकहियें पणअशुद्धपर्यायनकहियें द्रव्यान्यथात्वहेतुनेविषेज अशुद्धत्व व्यवहार छे तेवतीतो तेमाटे मनुष्यादिकपर्यायपण अशुद्धनकहो असद्भूतव्यवहारनयग्राह्य माटे असद्भूतकहो ॥ १३ ॥

धर्मादिकपरपज्जयें ॥ विसमाइएम ॥ अशुद्धताअ
विशेपयी ॥ जिअपुग्गलजेम ॥ श्रीजिन० ॥१४॥

अर्थ॥द्वितंतुकादिक पर्यायनीपरें एद्रव्यजनकअवयवसंघातनयेंज अशुद्ध द्रव्यव्यंजनपर्यायपणुंज कहेतारुंलागे तस्मादपेक्षानपेक्षाभ्यांशुद्धाशुद्धानेकांतव्यापकत्वमेवश्रेयः तेहिजदेखाडेछे धर्मादिकने परपर्यायें एटलेस्वपर्यायथी विषमायीकें० विलक्षणताएमजाणवी केमके परापेक्षायें जेमजीवद्रव्य पुग्गलद्रव्यनेविषे अशुद्धतानो विशेषनथी ॥ १४ ॥

एमजसजातिविजातियी ॥ द्रव्यंपज्जाय ॥ गुणेस्व
जावविजावथी ॥ एचारकहाय ॥ श्रीजिन०॥१५॥

अर्थ ॥ हवे प्रकारांतरे चारप्रकारनापर्याय नयचक्रमांकह्याछे तेदेखाडेछे एमज स्वजातीयद्रव्यपर्याय तथाविजातीयद्रव्यपर्याय वलीस्वजावगुणपर्याय अनेविजावगुणपर्याय एरीतेंचारजेद पर्यायनाकहेवा ॥ १५ ॥

द्व्यणुकमनुजकेवलीवली ॥ मतिमुखदिष्टंत॥ एप्राथि
कजेणद्रव्ययी ॥ अणुपज्जवसंत ॥ श्रीजिन०॥१६॥

अर्थ ॥ हवेउदाहरणदेखाडेछे द्विप्रदेशादिकस्कंधते स्वजातीय द्रव्यपर्यायकहि

यें. तथा द्रव्यबेमिलीएकद्रव्यउपनुं तेमाटे मनुजादिपर्यायते विजातीय द्रव्यपर्याय कहियें केमके तेबेद्रव्यमली परस्पर भिन्नजातीय द्रव्यपर्यायउपनो तेमाटे. तथाके वलज्ञानते कर्मरहितपणामाटे स्वभावगुणपर्यायकहियें अनेमतिज्ञानादिकते कर्मप रतंत्रपणामाटे विभावगुणपर्यायजाणवा एरीतें एचारभेदपण प्रायिकजाणवा केम के परमाणुरूप द्रव्यपर्यायते एचारमांहेन अंतरभवें पर्यायपणुंतेहने विभागजाति शास्त्रेंकह्युंछे तदुक्तं संमतौ अणुंदुअणुएहिंदवे आरद्धेदुअणुअंतिअणुतिववएसो॥ त त्तोयपुणविभत्तो अणुत्तिजाउअणुहोइ ॥ इत्यादिक ॥ १६ ॥

गुणविकारपज्जवकही ॥ द्रव्यादिकछंत ॥ सुंजा
णेमनमांहेते ॥ देवसेनमहंत ॥ श्रीजिन ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ गुणविकाराः पर्यायाः एमकहीने तेहनाभेदनेअधिकारें तेपर्याय छिभे द १ द्रव्यपर्याय २ गुणपर्याय इत्यादिककहेतोथको नयचक्रनोकर्त्ता जे देवसेनदि गंबर तेमनमांहेसुजाणेछे अर्थात् पूर्वापरविरोधभावपणथी कांइजाणतोनथी तेमाटे द्रव्यपर्यायजकहेवा पणगुणपर्याय जूदानकहेवा एपरमार्थछे ॥ १७ ॥

इमद्रव्यादिकपरखीया ॥ राखीगुरुआण ॥ उवेखी
बहुतनुमति ॥ अवगणीअजाण श्री० ॥ १८ ॥

अर्थ॥एरीतें द्रव्यगुणपर्यायते स्वरूपलक्षण भेदादिकेंकरीने परख्या गुरुआणाके० गुरुपरंपरानी आज्ञाराखीने तथाघणा तनुमतिके० तुच्छबुद्धीनाधणी तेहनेउवेखीने अजाणजेहठकदाग्रही तेहनेअवगणी निराकरीने द्रव्यादिकनीपरीक्षामेंकरी ॥ १८

जेदिनदिनएमभावसे ॥ द्रव्यादिविचार॥ तेलहेसेज
शसंपदा ॥ सुखसघलासार ॥ श्रीजिन० ॥ १९ ॥

अर्थ॥जे एअर्थेदिनदिनप्रतें द्रव्यगुणपर्याय विचाररूपभावसे तेप्राणी यशनीसं पदाप्रतें पामसे तथा सघलासुखप्रतें सारके० निश्चेंपामसे एगुरुनोउपदेश प्रमाणकरजो

दोहा

गुरुश्रुतअनुभवबलथकी ॥ कह्युंद्रव्यअनुयोग ॥
एहसारजिनवचननूं ॥ एहपरमपदभोग ॥ १ ॥

अर्थ ॥ गुरुउपदेश श्रुतशास्त्राभ्यास अनुभवबल सामर्थ्ययोग तेहथीए द्रव्यानु

योगकह्यो एसर्वजिनराजना वचनलुंसारछे एजपरमपदके० मोक्षतेहनोजोगछे केम के एद्व्यादिकविचारें शुक्लध्यानसंपदायें मोक्षपामियें ॥ १ ॥

मध्यमकिरियारतहुए ॥ बालकमानेलिंग ॥
पोमशकेंजाण्युंधरे ॥ उत्तमज्ञानसुरंग ॥ २ ॥

अर्थ ॥ एद्व्यानुयोगमां जे रंगधरे तेहनेजपंमितकहियें एहवुं अनियुक्तसाखेंसम र्थेछे षोडशकवचनंचेदं ॥ बालःपश्यतिलिंगं मध्यमबुद्धिर्विचारयतिवृत्तिं ॥ आगमत त्वंतुबुधः परीक्षतेसर्वयत्नेन ॥ २ ॥

नाणरहितजेशुजक्रिया ॥ क्रियारहितशुजनाण ॥
योगदृष्टिसमुच्चयकह्यो ॥ अंतरखजुआजाण ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानरहितजे शुजक्रिया अनेक्रियारहित जे शुजज्ञान तेनेयोगदृष्टिसमुच्चय मां खजुआ अनेसूर्यजेटलो आंतरोकह्युंछे ॥ ३ ॥

खजुआसमीक्रियाकही ॥ नाणजाणसमजोय ॥
कलियुगएहपटंतरो ॥ विरलाबूजेकोय ॥ ४ ॥

अर्थ॥ तात्विकः पक्षपातश्च जावशून्याचयाक्रिया॥अनयोरंतरंज्ञेयं जानुखद्योतयो रिव ॥ इत्यादिकयोगदृष्टि समुच्चयें कह्योछे ॥ ४ ॥

क्रियामात्रकृतकर्मखय ॥ दहुरचुन्नसमान ॥
ग्यानकिउंउपदेशपदें ॥ तासछारसमजाण ॥५॥

अर्थ ॥ मंडुकचुन्नकप्पो किश्याजाणिउंकउकिलेसाणं॥तहदहुरचुन्नकप्पो नाणकउं तंचआणाए ॥ १ ॥ इत्युपदेशरहस्ये एतदर्थसंग्रह ॥ ५ ॥

मिथ्यात्वादिककर्मथिति ॥ अकरणनियमेंजाप ॥
अप्रतिपातिज्ञानगुण ॥ महानिशीथहसाप ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेज्ञानते सम्यक्दर्शनसहितजआवे तेपाम्यापछि मिथ्यात्वमांआवेतोप ण एककोडाकोडी सागरोपम उपरांत कर्मबंधजीवनकरे वंधेणनवोलेपकयावितिवच नात् एअनिप्रायें नंदिषेणनेअधिकारें महानिशीथे ज्ञानगुण अप्रतिपातिकह्योछे उ त्तराध्ययनेप्युक्तं ॥ सूइजहासमुत्ता णणस्सईकयवरंमिपडिआ॥वि॥ इयजीवोविससुत्तो णणस्सइगउविसंसारे ॥ १ ॥ ६ ॥

ध्यानवंतहकेवली ॥ अव्यादिकअहिनाण ॥ ग्रह
स्कल्पनाजाण्यमां ॥ सरिपाजाण्याजाण ॥ ७ ॥
अर्थ ॥ वृहत्कल्पगाथाचेयं ॥ किंगीयत्थोकेवली चउविहेजाणपेयकहणेय ॥ तु ल्लेरागद्देसे अणंतकायस्सवज्जणवा ॥ १ ॥ ॥ ७ ॥
नाणपरमगुणजीवनो ॥ नाणजवार्णवपोत ॥
मिथ्यामतितमजेदवा ॥ नाणमहानुद्योत॥ ८ ॥
॥ ढालपन्नरमो होमतवालेसाजना. एदेशीने ॥
नाणसहितजेहमुनीवरा ॥ किरियावंतमहंतोरे ॥ तेमृगपतिजेमपाखरिया ॥ तेह नागुणनोनअंतोरे ॥ श्रीजिनशासनसेवियें ॥ १ ॥ एआंकणीने ॥ वशनिरुपक्रमक र्मने ॥ जेपणज्ञानविहीनारे ॥ तेपणमारगमांकह्या ॥ ज्ञानीगुरुपदलीनारे ॥ श्रीजि न० ॥ २ ॥ नाणरहितहितपरिहरी ॥ अज्ञानजहगरातारे ॥ कपटक्रियाकरतायति॥ नहुयेनिजमतिमातारे ॥ श्रीजिन० ॥ ३ ॥ कपटनजाणेरेआपणो ॥ परनागुह्यते खोलेरे ॥ गुणनिधिगुरूथकीबाहेरा ॥ विरुंनिजमुखेंबोलेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ४ ॥ बा हिरवकपरेंचालता ॥ अंतरआकरीकातीरे ॥ तेहनेजेहनलाकहे ॥ मतिनवीजाणेतेजा तीरे ॥ श्रीजिन० ॥ ५ ॥ बहुविधबाह्यक्रियाकरें ॥ ज्ञानरहितजेहटोलेंरे ॥ शतजि मअंधअदेखता ॥ तेतोपडिआनेनोलेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ ६ ॥ निजउत्कर्षथीहरवि या ॥ निजअवगुणनवीदाखेरे ॥ ज्ञानजलधीगुणअवगणी ॥ अवगुणलवबहुनांखे रे ॥ श्रीजिन० ॥ ७ ॥ गुणप्रियआगेंअछुटता ॥ जेगुणअल्पशोनापेरे ॥ तेपणअ वगुणपरिणमे ॥ मायाशल्यमनराखेरे ॥ श्रीजिन० ॥ ८ ॥ ज्ञानरहितजेएहवा ॥ जिन शासनधनचोरेरे ॥ तेहशिथलपरेंपरिहरूं ॥ गच्छाचारनेजोरेरे ॥ ९ ॥ एनवमीगाथा नोअर्थ ॥ गच्छाचारवचनंचेदं ॥ अगीअत्थकुसीलेहिं. संगंतिविहेणवोसिरे ॥ मुक्कमग्ग स्तिमेविग्धं पहंमितेणगेजहा इति॥ज्ञानीवचनविपअमृतछे उलटीभूरखवाणीरे॥आ गमवचनएआदरी ज्ञानग्रहोजविप्राणीरे ॥ श्रीजिन० ॥ १० ॥ अर्थ ॥ गीयत्थस्स वयणेणं विसंहालाहलंपिवे ॥ अगीयत्थस्सवयणेणं अमयंपिनघुट्टए ॥ १ ॥ इत्यादिव चनशास्त्रेंछे तेमाटे हेधमार्थिजव्यप्राणी ज्ञानपक्षदृढआदरो केमकेहमणांज्ञानप क्षनोदृढाधिकारछे ॥ १० ॥ चरणकरणगुणहीणडा ज्ञानप्रधानआदरियेंरे ॥ एम किरयागुणअन्यत्ती ॥ इच्छायोगथीतरियेंरे ॥ श्रीजिन० ॥ ११ ॥ अर्थ ॥ कर्तुमिच्छोः श्रु तार्थस्य ज्ञानिनोपिप्रमादिनः ॥ कालादिविकलोयोग इतीच्छायोगलक्षणं ललितविस्त

राद्ग्रंथे ॥११॥ चरणपतितवलीश्रावको ॥ तनुधर्मीविलीजेहोरे ॥ तेहनेज्ञानप्रधान छे ॥ मुनीनेतेगुणगेहोरे ॥ श्रीजिन० ॥ १२ ॥ आवश्यकमांहेनापिर्ड ॥ तेणेगही ज्ञानप्रधानोरे ॥ आचरणापथचालतां ॥ लेइयेंजशबहुमानोरे ॥ १३ ॥ अर्थ ॥ अत्र आवश्यकगाथा ॥ दंसणपरकोसावय चरित्तन छेयमंदधम्मेय ॥ दंसणचरित्तपरको सम णपरलोगकंखंमि ॥ १३ ॥

॥ ढालशोलमो समविसारदाए वरदायकदेवीएदेशी ॥

आत्मअर्थिनेअर्थप्राकृतवाणी ॥ एमएमेंकीधीहीयडेउलटआणी ॥ मिथ्यादृष्टी नेएहमांमतिमुझाणी ॥ सम्यकदृष्टीनेलागेसाकरवाणी ॥ १ ॥ गुरुपासेंसीखीअर्थेए हनाजाणी ॥ तेहनेएदेजोजेहनीमतिनवीकाणी ॥ लघुनेनयदेताहोएअर्थेनीहाणी ॥ योगदृष्टिसमुच्चयएहवीरीतिवखाणी ॥ २ ॥ सामान्यमजाणोएतोजिनब्रह्माणी ॥ न लीपरेंसंभालोतत्त्वरयणनीखाणी ॥ एछुनमतिमाताउरमतिवेलिकृपाणी ॥ एशिवसु खसुरतरुफलरसस्वादनिशाणी ॥ ३ ॥ एहनेसुपसायेंउनाजोडीपाणी ॥ सेवेनरकि न्नरविद्याधरपविपाणी ॥ एअमियदृष्टीथीजहेनीमतिसींचाणी ॥ तेमांहेउल्लसेसुरुचि वेलीकरमाणी ॥ ४ ॥ बहुभावएहनाजाणेकेवलनाणी ॥ संखेपेएतोगुरुमुखथीकहेवा णी ॥ एहथीसंभारीजिनगुणश्रेणीसुहाणी ॥ वचनानुष्ठानेसमापत्तिपरमाणी ॥ ५॥ एहथीनवीजाएपापश्रेणीउजाणी ॥ गुणश्रेणीचढतांलहेमुक्तिपटराणी ॥ घनघातिक र्मनेपीलियेंजेमतेलघाणी ॥ निर्मलगुणएहथीपामियाबहुभविप्राणी ॥ ६ ॥ खलज नजोएहमांक्षेपधरेअभिमानी ॥ तोपणसज्जनथीएहनीख्यातिमचाणी ॥ गुणमणिर यणायरजगउत्तमगुणखाणी ॥ जशदियेगुणीसज्जननेसंपअनंतकल्याणी ॥ ७ ॥

॥ ढालसतरमोदेशीहमचडीनीछे ॥

तपगछनंदनसुरतरुप्रगट्यो ॥ हीरविजयसूरिंदो ॥ सकलसूरिमांजेसोभागी जेम तारामांचंदोरे ॥ हमचडी० ॥ १ ॥ तासपाटविजयसेनसूरेश्वर ॥ ज्ञानरयणनोदरि ओ ॥ साहिसभामांजेयशपाम्यो ॥ विजयवंतगुणभरिओरे ॥ हम० ॥ २ ॥ तासपाटे विजयदेवसूरिसर ॥ महिमावंतनिरीहो ॥ तासपाटेविजयसिंहसूरिसर ॥ सकलसू रिमांलीहोरे ॥ हम० ॥ ३ ॥ तेगुरुनाउत्तमउद्यमथी ॥ गीतारथगुणवाध्यो ॥ तस हिततिखतएअनुसारें ॥ ज्ञानयोगएसाध्योरे ॥ हम० ॥ ४ ॥ जशउद्यमउत्तममार गनो ॥ भलेभावधीजहियें ॥ उत्तममहिमामहिमांयेविदीतो ॥ तसगुणकेमनगहियेरे॥ हम० ॥ ५ ॥ श्रीकल्याणविजयवरवाचक ॥ हीरविजयगुरुसीसो ॥ उदयाजशगुण

संततिगावे ॥ सुरकिन्नरनिसदीसोरे ॥ ह्रम० ॥ ६ ॥ गुरुश्रीज्ञानविजयवरपंमित ॥ ताससीसतसोनागो ॥ श्रुतव्याकरणादिकबहुग्रंथें ॥ निर्त्यंजशमतिजागीरे ॥ ह्रम० ॥ ॥ ७ ॥ श्रीगुरुजितविजयतससीसो ॥ महिमावंतमहंतो ॥ श्रीनयविजयविबुधगुरु भ्राता ॥ तासमहागुणवंतोरे ॥ह्रम०॥८॥ जेगुरुस्वपरसमयअभ्यासें ॥ बहुउपायकरी कासी ॥ सम्यग्दर्शनसुरुचिसुरनिता ॥ शुकमतिसुनगुणवासीरे ॥ ह्रम० ॥९॥ जशसे वासुपसायेंसहजें ॥ चिंतामणीमेंलहिउं ॥ तसगुणगाइशकंकेमतसघला ॥ गावानेगह गहिउरे ॥ ह्रम० ॥ १० ॥ तेगुरुनीनक्तिसुनशक्ति वाणीएहप्रकाशी ॥ कवियशविज यजणेएमनणयो ॥ दिनदिनबहुअभ्यासीरे ॥ ह्रम० ॥ ११ ॥

॥ कलश ॥

एमद्रव्यगुणपर्यायेंकरी जेहवाणीविस्तरी गतपारगुरुसंसारसागर तरणतारणवर तरी तेएहनापीसुजनमधुकर रमणसुरतरुमंजरी श्रीनयविजयबुधचरणसेवक जश विजयबुधजयकरी ॥ १ ॥ सर्वगाथा २८५ इयसुचितपदार्थोज्ञापनभव्यशोना बुधजनहितहेतुर्नावनापुष्पवाटी॥ अनुदिनमितएवध्यानपुष्पैरुदारै र्भवतुचरणपूजा जैनवाग्देवतायाः ॥ १ ॥

इतिउपाध्यायश्रीयशोविजयगणिकृतद्रव्यगुण
पर्यायनोरासबालावबोधसहितसमाप्तः

श्रीपार्श्वनाथायनमः

अथश्रीमद्यशोविजयजीउपाध्यायकृतआठदृष्टी नीसज्झायबालावबोधसहितलखियेंछैयें

ऐंद्रश्रेणीनतंपार्श्वं श्रीशंखेश्वरनामकं॥ लिखा मियोगदृष्टिस्वा ध्यायार्थंलोकभाषया ॥ १ ॥

अर्थ ॥ इंद्रनासमुदायछे जेनेविषे एवीश्रेणीपरंपरा तेनम्याछेजेने एवाश्रीशंखेश्वर पार्श्वनाथप्रते प्रणमिने यमनियमादिक तथाअष्टांगयोग प्राणयामादिकछे जेनेविषे एवाजे योगनाशास्त्रपातंजलादिक तेमांपोचवानेनजीक एवोश्रीहरिभद्रसुरिकृत यो गदृष्टिसमुच्चयग्रंथछे तेनाभावअणीने सकलतार्किकशिरोमणीवाचकराजश्रीयशो विजयजीउपाध्यायेंयोगदृष्टीनो सज्झायरच्योछे तेसज्झानोलेशमात्र भावार्थजाणवाने अर्थे प्राकृतभाषायें टवार्थलिखियेंछैयें.

तिहांप्रथम योगशब्दतेसुं तिहां मन वचन कायाएत्रणयोगछेतथाअष्टांगयोगछे त थाज्ञानदर्शनादियोगछे अथवाजेजेवस्तुनायोग युंजनकरियेंतेयोगकहियें एमबहुप्रका रनायोगछे पणइहांतो शास्त्रनीआदें पातंजलादिक ग्रंथानुयायी त्रणयोगकह्याछे ते ग्रहवा तेनानामकहेछे १ इच्छायोग २ शास्त्रयोग ३ सामर्थ्यप्रतिज्ञायोग.

१ तेमां तथाविधपोताना ज्ञानावरणादिककर्मने क्षयोपशम विशेषें सांभल्याश्रुत नुं अर्थज्ञानलेइने करवावांछतापुरुषने पणप्रमादथी धर्मव्यापारयोगें विकलरहित अ नेअंतःकरणनेविषे सूत्रार्थनो इच्छकपणोहोयपण यथार्थबोधनही तेइच्छायोगकहियें.

२ यथार्थस्वरूपें विकथादिकनोत्यागी अप्रमादिधर्मव्यापारयोगवंत श्रद्धावंत तीव्र बोधेंकरी वचननुं वितथ भाषणनकरे तथाविध मोहनाअपगमथी सत्यप्रतीतवं त तथा कालादिविकलपणानीबाधायें अतिचारादिकदोषने जाणेतोखरो पणतथा प्रकारेंटालीनशके तेवापुरुषने शास्त्रयोगकहियें.

३ शास्त्रमांदेखाडयाजेउपाय तेनेअतिक्रमिने शक्तिनाअधिकपणाथकी धर्मव्यापा रयोगआदरे तेसामर्थ्याख्ययोगकहियें सिद्धिपदप्राप्तिनाविशेषण एमांबहुंछे तेनेअ तिक्रमेनही शास्त्रथकीजसर्व अर्थातजाणे एसामर्थ्याख्ययोगथी सर्वज्ञपदप्राप्ति ति

क्षिपदसौख्यप्राप्ति सकलप्रवचन परिज्ञाप्राप्ति इत्यादिकसर्वनो साक्षात्ज्ञानकारीएवो गढे एसामर्थ्ययोगना बेभेदछे एकधर्मसन्यास बीजोयोगसन्यास.

धर्मसन्यासते मोहादिकक्षयोपशमरूप तथायोगसन्यासते कायादिकव्यापार कायोत्सर्गकरणादिक एवेप्रकारनुं सामार्थ्ययोगते समस्तज्ञानप्राप्तिहेतुथाय प्रथमतोधर्मसन्यास सामर्थ्ययोगते बीजेअपूर्वकरणेहोय एटलेप्रथम अपूर्वकरणे यथाप्रवृत्तिकरणनीसंज्ञाछे तेथीअधिकन धर्मसामर्थ्ययोगनहोय अनेबीजेअपूर्वकरणेतो ग्रंथिभेदनुंनिबंधनछे तेमाटेप्रथमसूकी बीजुंकह्युं यतः ज्ञागंठीतापढमं गंठीसमइक्कमंतवेबीयं ॥ अनिअट्टिकरणंपुण सम्मत्तंपुरक्कडेजीवे ॥ १ ॥ इतिवचनात्

अपूर्वकरणते आत्मवीर्य शुभपरिणाम अपूर्वअपूर्व अनादिकालें जेजेशुभशुभतर परिणाम धर्मस्थानकनेविषेहोय तेधर्मसन्यास बीजेअपूर्वकरणे ग्रंथिभेदफलते सम्यक्दर्शन समसंवेगादिकलिंग आत्मपरिणाम यत ॥ शमसंवेगनिर्वेदाऽनुकंपास्तिक्यलक्षणैः ॥ पंचभि पंचभि सम्यक सम्यक्त्वमुपलक्ष्यते॥ १ ॥ इतियोगशास्त्रे तत्वार्थश्रद्धान सम्यक्दर्शनं तेवारपछितथाविध कर्मस्थितिने उत्कृष्टे संख्यसागरोपमातिक्रम यावत् तेवारेंप्रथम धर्मसन्यास सामर्थ्ययोगहोय यत.गंठिभिन्मुहुर्त्ते कारकउवएरूढगूढगंठिव ॥ जीवस्सकम्मजणिउ घणरागदोसपरिणामो ॥ १ ॥ सम्मत्तंमिउलद्धे पलियपहुत्तेणसावउहुज्जा ॥ चरणोवसमखयाणं सागरसंखंतराहुंति ॥ २ ॥ माटे स्थितिभेदथीकपर जेमजेमवधे तेमतेम आयुर्जोकरणते जेमजेम आत्मवीर्यउल्लासे गुणस्थानकचढ़ेजत तेसर्वधर्मसन्यास सामर्थ्ययोगकहियें तेपारमार्थिक तात्विककहियें ते माटे प्रथमकह्यो अनेकोइकयेजायें प्रव्रज्याप्रतिपत्तिकालें अतात्विककहियें केमके प्रव्रज्यासन्मुखतोछे पणप्रव्रज्याआदरीनथी माटे तिहांज्ञानरूप प्रतिपत्तिविशेष होय पणधर्मसंन्याससामर्थ्याधिकारी नथविरक्तिजोइयें तेयुक्तछे केमकेतिहांनमक्तदुर्ग.

प्रव्रज्याधिकारी आर्यदेशोत्पन्न विशिष्टजाति कुलमर्यादोपेत अशुभकर्म मलबुद्धि पंच तेप्रायेंक्षीणछे अने मनुष्यपणानुं निमित्तदुर्लभ संपदानेचपलन विषयनडवारने जेसंयोगते वियोगमिश्रितछे शरीरते प्रतिक्षण मरणयुक्तछे दारुणविपाक एवानुं अनेकप्रकारे निर्गुणपणुंजाणीने सहजपणे तेसंसारथी विरक्तथयको अल्प अल्पहास्यादिकें निरविकारपणे बंधोदयादिकृतक्ष विनीतधर्मात्मा पण विद्वज्जन मान्य अद्रोहकारी सुंदरअंग श्रद्धावन्त स्याजनायन प्रव्रज्यागनोआराधनार इत्यादिक गुणावंत धर्मसंन्याससामर्थ्ययोगजाणवा

बीजोयोगसंन्यास सामर्थ्ययोगते पारमार्थिक तात्विककेनेकहियें क्षपकश्रेणीगत योगीने क्षांतादिकगुणसर्व क्षयोपशमपणे नीपनाने यावत्केवलज्ञानलाभ जोगशीज लगें तथातेहिजलाभवेलायें शैलेसीअवस्थागत योगनिरुंधनकालें पण परमार्थिक योगसंन्यास सामर्थ्यकहियें तेमाटेएत्रणयोगमां प्रथमयोगते चरमाकहियें पणजव्य मिथ्यादृष्टीनेहोय अनेबीजोयोग सम्यकदृष्टियंथिजेदपछे देशविरतिप्रमुखनेहोय तथा त्रीजोयोगते पण दीक्षानेसन्मुख जवविरक्तअप्रत यावत् अयोगअवस्थालगेंजाणवुं एमएत्रणयोगकह्याछे तेनुंविचार योगदृष्टिसमुच्चयग्रंथथी विशेषजाणवुं इहांजे शमात्रलख्युंछे तेयोगनुंदृष्टिदर्शन सामान्यमात्र ज्ञानावरणीयना क्षयोपशमेंजाणवुं इहादिविचारणायेंदेखवुं तेनेदृष्टिकहियें तेदृष्टिस्वरूप सर्वआगळेंकेसे तेथीजाणवुं.

॥ ढालपदेलोचतुरसनेहिमोहनाएदेशी ॥

शिवसुखकारणउपदिशी ॥ योगतणीअडदिठीरे ॥ तेगुणथुणी
जिनवीरनो ॥ करसुंधर्मनीपुठीरे ॥ वीरजिनेसरदेशना ॥ १ ॥

अर्थ ॥ शिवके० निरुपद्रव उत्तरोत्तरजेआव्यो निर्विघ्नसुखतेना कारणके० हेतुयें श्रीवीरस्वामीयें योगनीआठदृष्टीउपदेशी तेश्रीवीरनुंगुणस्तवीने धर्मनीपुष्टीकरसुं यतःविदारयतियत्कर्म तपसाचविराजते॥ तपोवीर्येणयुक्तश्च तस्मा द्वीरइतिस्मृतः॥१॥ तथा दुर्गतिप्रपतत्प्राणि धारणाधर्मउच्यते॥संयमादिदशविधः सर्वज्ञोक्तोविमुक्तये॥२॥ अथवा अपरभाव व्यतिरिक्त केवलवस्तुस्वभावपणुं निरावरणपणे सादिअपर्यवसा नपणेतेधर्म एसामान्यपणे एवीश्रीवीरनीदेशनाके० वाणीछे ॥ १ ॥

सघनअघनदिनरयणिमां ॥ बालविकलनेअनेरारे ॥ अ
रथजोयेजेमजुजूआ ॥ तेमउघनजरनाफेरारे ॥ वी० ॥२॥

अर्थ ॥ जेम सघनके० मेघसहितदिवस अने अघनके० मेघरहितदिवस एटले केटलाक मेघघटासहितदिवस अने केटलाकमेघघटारहितदिवस एरीतें जेमदिवसदिवसोमांभेद तेमज रात्रिनापणभेदछे वलीतेभेदनादेखनाराजेछे तेपण एकबालदृष्टि एकविकलदृष्टि एकअनेरा तेमांतरुण वृद्ध रोगीदृष्टी इत्यादिकअनेक तेजेम पदार्थनेजुए पणतेमां ज्ञानावरणीयादि कर्मविचित्रतायें सामान्य विशेषपणादिदृष्टीमां अनेकफेरपडे जुदाजुदाअर्थदेखे तेसर्वउघदृष्टिकहियें तेउघदृष्टिबहुजातिनीछे ॥ २ ॥

द्विपदसौख्यप्राप्ति सकलप्रवचन परिज्ञाप्राप्ति . फलावंनो . २५१ . . .
गठे एसामर्थ्ययोगना बेनेदठे एकधर्मसन्यास बीजोयोगसन्यास.

धर्मसन्यासते मोहादिकक्षयोपशमरूप तथायोगसन्यासते कायादिकव्यापार योत्सर्गकरणादिक एवेप्रकारनुं सामार्थ्ययोगते समस्तज्ञानप्राप्तिहेतुथाय मैसन्यास सामर्थ्ययोगते बीजेअपूर्वकरणेहोय एटलेप्रथम अपूर्वकरणे प करणनीसंज्ञाठे तेथीअधिकृत धर्मसामर्थ्ययोगनहोय अनेबीजेअपूर्वकरणेते नेदनुंनिबंधनठे तेमाटेप्रथममूकी बीजुंकह्युं यतःजागंठीतापढमं गंठ यं ॥ अनिअट्टिकरणंपुण सम्मत्तंपुरक्कडेजीवे ॥ १ ॥ इतिवचनात्

अपूर्वकरणते आत्मवीर्य शुभपरिणाम अपूर्वेअपूर्व अनादिकालें जेजे तर परिणाम धर्मस्थानकनेविषेहोय तेधर्मसन्यास बीजेअपूर्वकरणे ग्रंथिभेद सम्यक्दर्शन समसंवेगादिकलिंग आत्मपरिणाम यतः॥ शमसंवे क्यलक्षणैः ॥ पंचभिःपंचभिःसम्यक् सम्यक्त्वमुपलक्ष्यते॥१॥ इति ध्यान सम्यक्दर्शनं तेवारपठितथाविध कर्मस्थितिने ठंठीकरे संख्यसागरोपमातिक्रम यावत् तेवारेंप्रथम धर्मसन्यास सामर्थ्ययोगहोय यतःगंठित्तिसुदुब्भेठ क... रूढगूढगंठिव्व ॥ जीवस्सकम्मजणिउ घणरागदोसपरिणामो ॥१॥ सम्मत्तंमिउलद्धे लियपहुत्तेणसावठहुज्जा ॥ चरणोपसमखयाणं सागरसंखंतराहुंति ॥२॥ माटे स्थि तिनेदपीऊपर जेमजेमवधे तेमतेम आयुजीकरणते जेमजेम आत्मवीर्योल्लासें गुण स्थानकनजन तेसर्वधर्मसन्यास सामर्थ्ययोगकहियें तेपारमार्थिक तात्विककहियें माटे प्रथमकह्यो अनेकोइकवेलायें प्रव्रज्याप्रतिपत्तिकालें अतात्विककहियें केमके व्रज्यासन्मुखतोठे पणप्रव्रज्याआदरीनथी माटे तिहांज्ञानरूप प्रतिपत्तिविशेष होय पणधर्मसंन्याससामर्थ्याधिकारी नवविरक्तिजोइयेंतेयुक्तठेकेमकेसिद्धांतमांकह्युंठे.

प्रव्रज्याधिकारी आर्यदेशोत्पन्न विशिष्टजाति कुलमर्यादोपेत अशुभकर्म मलबुद्धि प्र पंच तेप्रायेंक्षीणठे अने मनुष्यपणानुंनिमित्तदुर्लभठे संपदातेचपलठे विषयतेदुःखोप हेतुठे जेसंयोगते वियोगमिश्रितठे शरीरते प्रतिक्षणे मरणयुक्तठे दारुणविपाक एवा संसारनुं अनेकप्रकारे निर्गुणपणुनावीने सहजपणे तेसंसारथी विरम्योथको अल्प कषाय अल्पहास्यादिकें निरविकारपणे वेदोदयादिकृतज्ञ विनीतघरवास पणे राजामात्यविद्वज्जन मान्य अद्रोहकारी सुंदरअंग श्रद्धावंत एवोजेहोयते प्रव्रज्या आराधक ज्ञानयोगनोआराधनार इत्यादिकगुणोपेत धर्मसंन्याससामर्थ्ययोगजाणवो.

सेवाजक्तिकरीते शुद्धचेतनाम्बी अनेविद्याधरगुरुमल्यो तेविद्याधरनीस्त्रीते दयाधर्मक रणो तेणेहितोपदेशरूप मनुष्यगतिसमानवट तेसकलसामग्रीवंतने संजीवनीनोचा रोचरावीयथास्थिततन्तरिकीयो केमकेशुद्धचेतनाने अनुवर्त्तितो सर्वगुणतुं नाजन थाय तेमउपनचेंथिरादिक चारदृष्टीनोधणीसर्वजीवनेहितकारीउपदेशआपे ॥४॥

दृष्टीथिरादिकचारमां ॥ मुगतिप्रयाणनभाजेरे ॥ रयणि
सयनजेमश्रमहरे ॥ सुरनरसुखतेमगाजेरे ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीथिरादिक चारदृष्टीमां मुक्तिनो प्रयाणके० गमनतेजाजेनही केमके एदृष्टीवंतप्राणीते प्रायेंप्रतिपातिनहोय जेमवांछितनगरेजाता विचमांरात्रेंविश्रामकरि यें तेथीजेमश्रमहराय पणतेथीइछितपुरेंजतां बाधकनथाय तेमसम्यक्तदृष्टीने मोक्षेज तायका विचमांकिहांएक सुबाहुकुमर तथा श्रीपालादिकनीपरें देवता तथामनुष्य नाजवकरवापडे तेथीमोक्षप्रयाणनो बाधनथाय ॥ ५ ॥

एहप्रसंगथीमिकह्युं ॥ प्रथमदृष्टीहवेकहियेंरे ॥ जिहांमि
त्रातिहांबोधजे ॥ तेतृणअगनिसोलहियेंरे ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एटलीवात प्रसंगथीजाणवाने योगदृष्टी तथाउगदृष्टी सर्वसंसारीजीव मात्रनीकही देखवुं जाणवुं ज्ञानावरणीयना क्षयोपशमआश्रीत्रे पणतेनोइहांअर्थ नथी इहांतोमित्रादिक आठदृष्टीनोअधिकारछे तेमांपहेली मित्रादृष्टीनुंलक्षण क्रियाबोधकहियेंछेयें जिहांसत्श्रद्धावंतना संगथकी असत्प्रवृत्तिनकरे सत्प्रवृत्तिनुं पदकहे इत्यादिकसंबोधज्ञानहोय तेमाटेदृष्टिकहियें हवेजिहां मित्रादृष्टीहोयतिहां जेबोधहोय तेकहेछे तृणस्पर्शना अग्नीसरिखो मिथ्यादर्शन मंदस्थिति रसादिक होय बोधअल्पहोय ॥ ६ ॥

व्रतपणइहांयमसंपजे ॥ खेदनहीशुनकाजेंरे ॥ द्वेषन
हीवलीअवरसुं ॥ एहगुणअंगविराजेरे ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एदृष्टीनेविषे यमादिक १ अहिंसा २ सत्य ३ अस्तेय ४ मैथुनविरमण ५ अपरिग्रहता एपांचव्रतपणसंपजे वलीशुनकार्यजे दान दया देवगुर्वादिकनी कार्यप्र वृत्तिमां खेदआलस्यादिकनउपजे वलीअपरदर्शनना तथाविधदेखीने द्वेषनउपजे ए वाजेसत्यप्रवृत्तिनाशुण ते असत्यवृत्तिनिवारणार्थे १ पांचमहाव्रतते पांचयम निय म शौच संतोष स्वाध्यायादिक ३ योगासन ४ प्राणायामते पवनरोधवुं ५ प्रत्या

दर्शनजेथयाजूजूआ ॥ तेरुथनजरनेफेरेंरे ॥ जेदथिरा
दिकदृष्टीमां ॥ समकेतदृष्टीनेहेरेंरे ॥ वी० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ उंथनजरनाफेरने अनुसारें षटदर्शननाजेद जूदाजूदाथया तेउंथदृष्टीइं इहां अधिकारनथी इहांतो मित्रा तारा बला दीप्रा स्थिरा कांता प्रजा परा॥नामानिथो गदृष्टीनां लक्षणेतुनिबोधत॥१॥ एआठयोगनीदृष्टीनो अधिकारछे तेमांबोधज्ञानप्रकाश कहेवोहोय तेकहेछे तृणगोमयकाष्टाग्नि कणदीपोपमप्रजा ॥ ताराकेचंद्रनारत्नतदृष्टे दृष्टिरष्टधा ॥ १ ॥ इतियोगदृष्टिसमुच्चये ए आठमांपहेली चारदृष्टीजगें मिथ्यादृष्टी अने पाछली थिरादिकचारदृष्टी ग्रंथिजेदथीहोय एटलेथिरादिकथी सम्यकछे माटेत दृष्टी योगदृष्टीएवुंविरुदघटेछे पणआठेनेयोगदृष्टी केमकहियें एवुंकोइप्रश्नकरे तेनेउ त्तरकहेछेजे पहेलीचारदृष्टीमां सतसंगनायोगछे तेमांपण बीजाध्यानकरेछे तेमाटे सदृष्टि कहियें एशब्दार्थेंयोगदृष्टीकही ॥ ३ ॥

दर्शनसकलनानयग्रहे ॥ आपरहेनिजजावेंरे ॥ हितक
रीजननेसंजीवनी ॥ चारोतेहचरावेरे ॥ वी० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ हवेथिरादिकदृष्टीवंतप्राणी समस्तषटदर्शनना नयग्रहणकरे तेने अपेक्षाएं गणे अनेपोतानास्वजावमां स्यादनित्यानित्यपणे जगतवर्त्तेछे एजावमांवर्त्ते शुद्धदृष्टीनो जंगकरेनहीहितकारी जव्यजननेशुद्धोपदेशरूप संजीवनीके० औषधीनोचारोचरावीने आत्मस्वरूपप्रगटकरावे तेनुंदृष्टांतउपनयें करीकहेछे कोइकनगरें कुलवंतपुत्ररहेछे तेनी धर्मीनेएकवृद्धसुशीलविनीताछे बीजीवक्रछे तेवक्रस्त्रीपोतेपोतानापतिसाथें कामक्रीडा करी दिवसेंवृषजनीविद्यायें वृषजकरी जत्तारनेखेत्रमांमूकीआपे अनेवृद्धस्त्री धणीनास्म रणनेमाटे दिवसनुंतेवृषजपासेरहिने चारापाणीनी खबरकरे एमकरतांकेटलेक दिवसें तिहांविद्याधरदंपतिविमानेबेसीआव्या तेवृषजदेखी विद्याधरपोतानीस्त्रीनेकहे वातागोके यावृद्धस्त्रीयें जत्तारनोसेवाकरवामांमीने लघुस्त्रीयेंजत्तारने वृषजकर्यो एमवतसांजली विस्मयचित्त थानंदपामीयकी तेविद्याधरनीस्त्रीपोतानाजत्तार ने कहेछेके एवृषजपुरुषथाय एवोकोइउपायछे विद्याधरेकह्युं अमुकवटसमीप संजीवनी तेचरावेतोपुरुषथाय एमकहीविद्याधरगयो वृद्धस्त्रीएं तेविद्याधर नीसर्ववातसांजलीने तेवचनप्रतीते प्रयत्नकरी तेसर्ववटसमिपवर्त्ति औषधीमध्येने तेनोचारोवृषजनेचराव्यो तेथीवृषजतेपुरुषथयो स्त्रीनीसेवानकि जत्तारेजाणी ए दृष्टांते इहां दृष्टांतदृष्टांततेआत्मा तेमजेपोषबुद्धायेंकर्यो तेग्रहबुद्धचेतनारुवी अनेतेणे

सेवानकिकरीते शुद्धचेतनाम्नी अनेविद्याधरगुरुमल्यो तेविद्याधरनीस्त्रीते दयाधर्मेक रणी तेणेहितोपदेशरूप मनुष्यगतिसमानघट तेलकज्ञसामग्रीवंतने संजीवनीनोचा रोचरावीयथास्थितजनावरकीधो केमकेशुद्धचेतनाने अनुवर्त्ततो सर्वगुणनुं नाजन थाय तेमउपनयेंथिरादिक चारदृष्टीनोधणीसर्वजीवनेहितकारीउपदेशआपे ॥ ४ ॥

दृष्टीथिरादिकचारमां ॥ मुगतिप्रयाणनजाजेरे ॥ रयणि
सयनजेमश्रमहरे ॥ सुरनरसुखतेमगाजेरे ॥ वी० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीथिरादिक चारदृष्टीमां मुक्तिनो प्रयाणके० गमनतेनाजेनही केमके एदृष्टीवंतप्राणीते प्रायेंप्रतिपातिनहोय जेमवांछितनगरेजाता विचमांरात्रेंविश्रामकरि यें तेथीजेमश्रमहराय पणतेथीइछितपुरेंजतां वाधकनथाय तेमसम्यक्तदृष्टीने मोक्षेज तायका विचमांकिहांएक सुबाहुकुमर तथा श्रीपालादिकनीपरें देवता तथामनुष्य नाजवकरवापडे तेथीमोक्षप्रयाणनो वाधनथाय ॥ ५ ॥

एहप्रसंगथीमेकह्युं ॥ प्रथमदृष्टीहवेकहियेंरे ॥ जिहांमि
त्रातिहांबोधजे ॥ तेतृणअगनिसोलहियेंरे ॥ वी० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एटलीवात प्रसंगथीजाणवाने योगदृष्टी तथाउगदृष्टी सर्वसंसारीजीव मात्रनीकही देखवुं जाणवुं ज्ञानावरणीयना क्षयोपशमआश्रीत्रे पणतेनोइहांअर्थ नथी इहांतोमित्रादिक आठदृष्टीनोअधिकारछे तेमांपहेली मित्रादृष्टीनुंलक्षण क्रियाबोधकहियेंछैयें जिहांसत्श्रद्धावंतना संगथकी असत्प्रवृत्तिनकरे सत्प्रवृत्तिनुं पदकहे इत्यादिकसंबोधज्ञानहोय तेमाटेदृष्टिकहियें हवेजिहां मित्रादृष्टीहोयतिहां जेबोधहोय तेकहेछे तृणस्पर्शना अग्नीसरिखो मिथ्यादर्शन मंदस्थिति रसादिक होय बोधअल्पहोय ॥ ६ ॥

व्रतपणइहांयमसंपजे ॥ खेदनहीशुभकाजेंरे ॥ द्वेषन
हींवलीअवरसुं ॥ एहगुणअंगविराजेरे ॥ वी० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एदृष्टीनेविषे यमादिक १ अहिंसा २ सत्य ३ अस्तेय ४ मैथुनविरमण ५ अपरिग्रहता एपांचव्रतपणसंपजे वलीशुभकार्यजे दान दया देवगुर्वादिकनी कार्यप्र वृत्तिमां खेदआलस्यादिकनउपजे वलीअपरदर्शनना तथाविधदेखीने द्वेषनउपजे ए वाजेसत्यप्रवृत्तिनागुण ते असत्यवृत्तिनिवारणायें १ पांचमहाव्रतते पांचयम निय म शौच संतोष स्वाध्यायादिक २ योगासन ४ प्राणायामते पवनरोधवुं ५ प्रत्या

हारते इंड्रियनेविषयार्थेनजोडे ६ धारणातेएकछ्रव्यवस्तुनुंचिंतन ७ ध्यानतेध्येयतुंक रे ८ समाधीते जेअर्थेचिंतव्या तेनुंजतन्मयपणेअनुनव एअष्टांगयोग प्रवृत्तिजाणवी

योगनाबीजइहांग्रहे ॥ जिनवरशुद्धप्रणामोरे ॥ ना
वाचारजसेवना ॥ नवउद्वेगसुठामोरे ॥ वी० ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीबीजी पणअष्टयोगांगीनी प्रवृत्तिकहिये १ अद्वेष २ जिज्ञासा ३ शुश्रूषा ४ श्रवण ५ बोध ६ मीमांसा ७ परिशुद्धि ८ अप्रतिपत्ति प्रवृत्तिरष्टांगकीतिते इत्यादिकसर्वेयोगनालक्षणछे वली १ जिननाम २ स्थापना ३ इव्य ४ नाव ५ मुद्रा इत्यादिक योगनाबीजछे तेनेइहांसंग्रहे तेनेप्रणमनकरे नावाचार्य सूत्रोक्तप्रवृत्तियें नापणंकरनार स्ववीर्यपंचाचारमां गोपवेनही तेवाआचार्यनीसेवना पर्युपासनाकरे तथानवउद्वेगजे संसारनोत्यागतेज शुनस्थानकनीप्राप्तिछे एवुंजाणे ॥ ८ ॥

ड्व्यअनिग्रहपालवा ॥ उपधप्रमुखनेदानेरे ॥ आदरआ
गमआसरी ॥ लिखनादिकबहुमानेरे ॥ वी० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ ग्रंथिनेदविना नावानिग्रहकहेवायनही तोपणड्व्यानिग्रहतो हर्षेथीपाले तेऔपधप्रमुख वस्त्रपात्रादिकदेवाना अनिग्रहते आदरसहित आगमनाविधिने अनुसारें साधुजनने उचितहोयतेआपे तथाबहुमानपणे पुस्तकलिखनादिक उद्यमकरावे इहासिद्धांतादिकमां सन्मार्गछेमाटे तेनुंलखनसमजवुं ॥ ए ॥

लेखनपूजनआपवुं ॥ श्रुतवाचनाउद्ग्राहोरे ॥ नाववि
स्तारसझायथी ॥ चिंतननावनचाहोरे ॥ वी० ॥ १० ॥

अर्थ ॥ सिद्धांतोना लखवादिकमां तथा वीतरागनाबिंबोनी पूजनामां तेनाइव्य मसारादिकना आपवाने सावधानहोय तथासन्मार्गपरूपक श्रुतके० शास्त्रनीवाचना नो उद्ग्राहीके० उद्यमयोगमेलवे वली सझायवाचनादि पांचप्रकारना विस्तारसांनली नावविस्तारते नावअास्थादिकनां प्रत्ययवधारे तेनीचिंतना नावनानी चाहनाधरे

बीजकथानलीसांनली ॥ रोमांचितहुयेदेहरे ॥ एहअ
वंचकयोगथी ॥ लहियेंधरमसनेहरे ॥ वी० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ संवेगनावनी यथास्थितता समसंवेगसत्प्रवृत्ति श्रद्धानिराशय परोपकारकरण दुःखितानुकंपा सत्शीलानुचरण औदार्य धैर्य गांनीर्य सहजप्रमुखादिक बीजकथी योगांगकथासांनलीने रोमांचित हर्षोत्कर्ष कंटकितशरीरथाय एहवाप्रश

स्त वाह्यनासंयोग सदभ्यासकरण करावणमलेयके योगनुंअवंचकपणुं तेसफल एटलेतेप्राणी विषक्रियावंचेनही क्रियानिःफलनकरे तेअवंचकयोगकहियें तेअवंचक योगपामिने परमोत्कृष्ट धर्मस्नेहपामें मनमांजाणेजे एलाभदुष्करपणेपाम्योछुं ११॥

सदगुरुयोगेंवंदनक्रिया ॥ तेहथीफलहोयेजेहोरे ॥ योग
क्रियाफलभेदथी ॥ त्रिविधअवंचकएहोरे ॥ वी० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ रूडागुरुसुसाधुनो योगपामिने वंदनक्रिया व्यवहारविधिपूर्वकपणेसाचवे तेथीजेफलथाय ते कहेछे एकमननेविशुद्धपणेराखवुंते योगअवंचककहियें तथा वचनअनेकायानुं निरवद्यपणेवर्तावबुं सकलविधिप्रवर्त्ततावबुं ते क्रियाअवंचककहियें तेणेकरी मिथ्यात्वादिक तथाविषयकषायादिकनी हीनतायें शुभगत्यादिकफलपामे ते फलावंचक एत्रणप्रकारना अवंचकयोग तेप्राणीनेहोय यद्यपिएत्रणअवंचकयोगते साधुदेसीनेहोय पणअवक्रसामायिकें तथाभावसमाधि अमहरपणे द्रव्यथीएकल्योछे

चाहेचकोरतेचंदने ॥ मधुकरमालतीभोगीरे ॥ तेमभविस
हजगुणेहोये ॥ उत्तमनिमित्तसंयोगीरे ॥ वी० ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेमचकोरपक्षी चंद्रमंडलनेदेखी चाहनाकरे जेमभ्रमर मालतीनाफूलनोभोगीहोय तेमभव्यप्राणीने यद्यपिमोहनो क्षयोपशमनथी तथापि उत्तमके० प्रधानजेशुभनिमित्त तेनोसंगीथाय एवोसहजगुणीहोय ॥ १३ ॥

एहअवंचकयोगते ॥ प्रगटेचरमावर्त्तेरे ॥ साधुने
सिद्धदशासमो ॥ बीजनुंचित्तप्रवर्त्तेरे ॥ वी०॥१४॥

अर्थ ॥ एवाअवंचकयोगते जेवारें चरमपुद्गलपरावर्त संसारथाकतोहोय तेवारें नीपजे तेपणकेटलाकप्राणीजेक्रियायोगीहोय तेहोने तथासाधुनेतो सिद्धदशासरिखो परमानंदपणुंउपजे तथामित्रादृष्टीवर्त्ततांप्राणी बीजयोगनाजेअंग समता औदार्यादिक ग्रहणकरवाने चित्तप्रयत्नवंतकरे ॥ १४ ॥

करणअपूर्वनानिकटथी ॥ जेपदेखुंगुणठाणुरे ॥ मुख्यपणे
तेहहांहोये ॥ सुयशविलासनुंठाणुरे ॥ वी० ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ इहांदहेलोवयाप्रवृत्तिकरण तेना निकटके० समीपपणाथीजे स्थितिरनें मंदपणे मिथ्यात्वगुणठाणे वर्त्ते शिवराज तापसादिकनी पूर्वेजेदिशाहती तेनीपरें मुख्यपणेतेजाणवुं तेकहेवुंजाणवुं भलायश शिष्टवखाणे एवा विला

सके० गुणतेनुं टाणुके० स्थानकहोय एटलेसुंकह्युं जे अनव्यने डुर्नव्यने बहुपुद्गल परावर्त्तवालानेतो थोडानवनहोय जे सछ्छ कदाग्रही अत्यंतअनिनिवेशी गुरुआशातनावालाने एदृष्टीनहोय ॥ १५ ॥ एरीतेंप्रथममित्रादृष्टीनोविचारकह्यो.

॥ ढालबीजोमनमोहनमेरेएदेशी ॥

दर्शनतारादृष्टीमां ॥ मनमोहनमेरे ॥ गोमयअगनिसमान ॥
म०॥ शौचसंतोपनेतपजला॥म०॥ सझायईश्वरध्यान॥म०॥१॥

अर्थ ॥ हवेतारादृष्टीनो विचारकहेछे तारादृष्टीनेविपे मित्रादृष्टीथी मिथ्यादर्शन शीरीतें मंदहोय तथातिहांबोध कवोहोय तेकहेछे गोमयके० छाणानीअग्निसरिखो जेमछाणनामोराथी अग्निवधे तेमबोधवधतोजाय कांइककार्यसाधकथाय तिहांशौच एटलेमननिर्मलरहे अने संतोपतेप्राप्तवस्तुथी आगलतृष्णानवधारे वली तपते इछारोधकरे एवोतपसझायते सुकथा सांनलवानुंतथा श्रुतनणवादिकनुंहोय अनेईश्वरध्यानते आत्मानेहितचिंतवनकरे जेरखेकोइ अकार्यसेवीसतो डुर्गतिपामिस॥१॥

नियमपंचइहांसंपजे॥म०॥नहीकिरियाउद्वेग ॥म०॥ जिज्ञासा
गुणतत्वनी ॥ म० ॥ पणनहीनिजहठटेग ॥ म० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ वलीएदृष्टीनेविपे पूर्वेंकह्याते पांचनियमसंपजे महोटीक्रियापामे तेमांअखेदहोय एटले परलोकहितारंन कार्यकरतां उद्वेगनपामे वलीजिज्ञासाते जाणवानी वांछाहोय तत्वगुणनेविपे तत्वसत्कथायोगनी जिहां प्रीतिहोय तथाकरणकरावणअनुमतिरूप निरविकारपणुंहोय पणविशिष्टपणे पोतानाहठकदाग्रहनोटेकराखेनही

एदृष्टीहोयवरततां ॥म०॥ योगकथाबहुप्रेम ॥म०॥ अनुचि
ततेहनआचरे ॥ म० ॥ वाल्योवलेजेमहेम ॥ म० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एदृष्टीमांवर्त्ततोप्राणी अष्टांगयोगादिकनी कथामांबहुप्रेमधरे योगशुद्धीक्रियाशुद्धीमां सफलप्रसिद्धकार्यसाधे जेथकीपरलोकनेविपे अहितारंनफलपामिये एवुंअनुचितकार्य आचरेनही तेप्राणीने हितसिखामणकहेछते जेरीतेंसोनुंवाल्योवलेतेवीरीतें सरलपणुंआदरे ॥ ३ ॥

विनयअधिकगुणीनोकरे ॥ म० ॥ देखेनिजगुणहाण ॥ म०
त्रासधरेनवनयथकी ॥ म० ॥ नवमानेदुखखाण ॥म०॥४॥

अर्थ ॥ जेपोतायीअधिक गुणवंतप्राणीहोय तेनोविनयकरे अनेपोते विशेपगु

णीहोयतोपण पोतामांहीनपणुंनावे सामान्यपणुंनावे एटलेथ्यद्दकृति उत्कर्षनकरे वली चतुर्गतिरूपसंसार दुःखनीखाणदेखीने तेनानयथी त्रासपामे यतः जम्मडुखं जराडुःखं रोगाणिमरणाणिय॥अहोडुःखेहुंसंसारो जत्थकिस्संतिजंतुणो ॥४॥

शास्त्रघणामतिथोमली ॥ म० ॥ शिष्टकहेतेप्रमाण ॥ म० ॥
सुयशालहेएनावथी ॥ म० नकरेजूठम्फाण ॥ म० ॥ ५ ॥

अर्थ॥शास्त्रतोघणाछे अनेपोतानीबुद्धियोडीछे माटेजे शिष्टके०महोटागुरुकहेतेवचन प्रमाणकरे सम्यक्प्रकारें मन वचन कायायें करण करावण अनुमतिरूपें निर्विकारपणुं होय तेविशिष्टनावना नावतोथको सुयशके०निर्मलकिरतीपामें तेप्राणीअछतागुणोनो जूठोम्फाणकरेनही शुनयोगकथानेविषें प्रीतिबांधे॥५॥ एटलेतारानामेंबीजीदृष्टीकही

॥ ढालत्रीजीप्रथमगोवालातणेनवेजीएदेशी ॥

त्रीजीदृष्टीबलाकहीजी॥काष्टअगनीसमबोध॥क्षेपनहीआसन
सधेजी॥श्रवणसमीहासोधरे॥जिनजी॥धनधनतुजउपदेश॥१॥

अर्थ ॥ हवे बलानामे त्रीजीदृष्टीकहेछे इहांसुखासने बेठेलानीपरें थिरचित्त होय देववंदन गुरुवंदन आवश्यकादिकार्य अनुकूलपणेकरे यद्यपि मिथ्यादर्शनछे तोपणतेमिथ्यात्वदृढपणेनहोय एटलेमिथ्यात्वीयोना भ्रांतिरूपचमत्कारिक ज्ञानदेखीचपलपरिणामिनहोय इहांशास्त्रमांसांजलवाने दृढतरबोधते काष्टनाअग्निसरिखो होय वलीएकेकक्रियानो अन्योन्येनेलकरे तेनेक्षेपदोषकहियें तेक्षेपदोषनहोय वली पर्यंकासन पद्मासनादिक त्रीजायोगनेसाधे सिद्धांतादिकसांजलवानी समीहाके० इच्छाहोय तथातेनासांजलवानी सोधनेसाधवाचाहे हेजिनजीतमाराउपदेशने धन्यछे एरीतेंआदरकरे पोतानीआत्माने धन्यमाने ॥ १ ॥

तरुणसुखीस्त्रीपरिवस्योजी ॥ जेमचाहेसुरगीत ॥ सांजल
वातेमतत्त्वनेजी ॥ एदृष्टीसुविनीतरे ॥ जिन० ॥ धन० ॥२॥

अर्थ ॥ जेमकोइक तरुणअभिनववय युवान सुखी धनाढ्य शुनतरुणीयें परवस्योते जेमदेवतागांधर्वना गीतगानसांजलवानेचाहे तेरीतें तत्त्वसांजलवानी इच्छाथ रे एमएदृष्टीनाजेधणी तेसुशोनन विनयवंत विनीतपुरुषजाणवा ॥ २ ॥

सरिएबोधप्रवाहनीजी ॥ एविणश्रुतथलकूप ॥ श्रवणस
मीहातेकिसीजी ॥ शयितसुणेजेमभूपरे ॥ जि० ॥ ध०॥३॥

अर्थ ॥ एदृष्टीनागुणते बोधज्ञानप्रवाहनी सरिसमानछे जेमकूपवापीप्रमुखे पाणी नीकलवानी सेरिहोय तिहांखणणकरतां पाणीतुरतपामियें तेनीपरें सिरीछे जेमराजा शय्यायेंसुतोहोय अनेकोइक याचकादिक आशाथीगीतगाय अनेराजा पोतानाविषय कषायमां एकवेशब्दसांनले तेजेमनिर्थक तेमएदृष्टीरूपगुणविना जेटलुंसांनलवुं तेबोधनकरे तेसर्वथलकूपसमानजाणवुं ॥ ३ ॥

मनरीजेतनुउल्लसेजी ॥ रीजेबुजेएकतान ॥ तेइछावि

णगुणकथाजी ॥ बहिराआगलगानरे ॥जि०॥ध०॥४॥

अर्थ ॥ जिहांमनमां रीजपामें शरीररोमांचितथाय तथारीजअने बुजके० बोध तेएकतानेमिले तेकथासांनलीलेखामांछे अनेतेवीइछानागुणविना जेतत्वकथासांनलवीतेतो जेमबहिराआगल गीतगानकरवा निःफलतेरीतेंनिःफलजाणवी ॥ ४ ॥

विघनइहांप्रायेंनहीजी ॥ धर्महेतुमांकोय ॥ अनाचारपरि

हारथीजी ॥ सुयशमहोदयहोयरे ॥ जिन० ॥ ध० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ एदृष्टीनागुणमां धर्मनुंकार्यकरताथका प्रायेंकोइविघन अंतरायथायनही केमके अनाचारनोपरिहारथाय तेथी नलोसुयश महोटाउदयनोलाज प्राप्तिनोविस्तारपणुं इत्यादिकगुणनो क्षेपहोय एदृष्टीनेविषे शुनयोगनाप्रारंनहोय सुकथाश्रवणतमीहा थिरकार्यकर्त्ताइत्यादिकगुणनोक्षेपहोय ॥ ५ ॥ एबलानामेत्रीजीदृष्टीकही

॥ ढालचोथीझांझरीयामुनिवरधनधनतुमअवतारएदेशी ॥

योगदृष्टीचोथीकहीजी ॥ दीप्रातिहांनउथ्थान ॥ प्राणायामतेनावथी

जी॥ दीपप्रनासमज्ञान॥ मनमोहनजिनजी॥ मीठीताहरीवाण॥ १॥

अर्थ ॥ हवेदीप्रानामे चोथीदृष्टीकहेछे एदृष्टीमां १ समान २ उदान ३ व्यान ४ अपान ५ प्राणायाम एपांच तेमां १ समान तेहृदयनानिनोवायु २ उदानते हृदयअने मस्तकवचें ३ व्यानते सर्वत्वचावर्त्ति वायु ४ अपानते अंगवर्त्तिवायु ५ प्राणायामते श्वासोश्वास ए अनिलके० वायुनापांचनेद जाणवा १ रेचक २ पूरक ३ कुंनक पवनसाधे तेथीप्रशांतवाहितानोलानथाय तिहां एकक्रियामां अपरक्रिया उपयोग तेउथ्थानदोष लागेछे तेयद्यपिइहांग्रंथिनेदनथी थयो तोपणप्रशस्तयोगवंतने नावथीप्राणायामकहियें एदृष्टीमां दीपप्रनासरिखोबोधजाणवो एटले तत्वश्रवण सुश्रूषाफलवती यमनियमादिकफलवति पणसूक्ष्मबोध जाणवो हेमननाप्यारा हेजिनजीताराउपदेशछे अनेतारीजेवाणीछे तेअत्यंतमीठीछे ॥ १ ॥

वाह्यभावरेचकइहांजी ॥ पूरकअंतरभाव ॥ कुंभ
कथिरतागुणेकरीजी ॥ प्राणायामस्वभाव॥म०॥२॥

अर्थ ॥ एकबहिरात्मायेंवर्त्तवुंते वाह्यभावते इहां रेचकपवनादिरोधजाणवुं बीजो अंतरभावें पवननेरोकवुंते पूरक अनेत्रीजो जेगुणआव्या तेनेथिरभावेंकरे तेकुंभक पवनरोध प्राणायाम श्वासप्रवेश रोधवानाएस्वभावछे ॥ २ ॥

धर्मअरथिइहांप्राणनेजी ॥ छंडेपणनहीधर्म ॥ प्राण
अरथेंसंकटपडेजी ॥ जूउएदृष्टीनोमर्म ॥ म० ॥ ३ ॥

अर्थ॥एदृष्टीनेविषेवर्त्ततोप्राणी धर्मनेअर्थे पोतानाप्राणनें तृणनीपरेंछंडे पणप्राण नेअर्थे संकटपडेतोपण धर्मनेछंडेनहीएवीरीतनोएदृष्टीनो स्थिरतानुंमर्मजूउके०देखो

तत्वश्रवणमधुरोदकेंजी ॥ इहांहोएवीजप्ररोह ॥ खारउद
कसमभवत्यजेजी ॥ गुरुभगतिअद्रोह ॥ म० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ एदृष्टीनेविषे सिद्धांतादिकोमांथी तत्वश्रवणरूप मधुरोदकनें सेववेकरीबी जके० संसारनी अनाशंसा विरक्तादिक प्ररोहके०अंकुराछे तेथीखारोदकसमान भवा भिनंदीपणुं तेनेत्यजे तेप्राणीसरलमने गुरुभक्तिनोअद्रोहीहोय एटलेगुरुनोभक्तहोय

सुक्ष्मबोधतोपणइहांजी ॥ समकेतविणनविहोय ॥ वे
द्यसंवेद्यपदेंकह्निजी ॥ तेनअवेद्येंजोय ॥म०॥ ५ ॥

अर्थ॥ यद्यपिसूक्ष्मबोध परिज्ञान एदृष्टीनेविषेनथी केमकेग्रंथिभेद समकेतविनान होय माटेजेसूक्ष्मबोधते वेद्यसंवेद्यपदरूप समकेत तेइहांनथी इहांतोअवेद्यपदछेमि थ्यात्वछेतेमाटेसूक्ष्मबोधनथी एविस्तारयोगदृष्टीसमुच्चयमांछे पणइहांसंक्षेपेंलखियेंछयें

मित्रादिचारदृष्टीयद्यपि क्रियादिकें सत्संगत्यादिकगुण तथाधर्मनावीजसंग्रहछे प णएचारदृष्टीते अवेद्यपदछे एटलेसूक्ष्मतत्वबोधनथी जेमपक्षीनीछायापाणीमांपडती देखी पाणीपणतेवीजप्रवृत्तिकरे तेनीपरेंप्रवर्त्तिकरे पणतत्वबोधनही तेमाटेअवेद्य पदते अपदछे जिहांअंतरमुहूर्त्तप्रमाणमात्रमां दर्शनमोहनीयनो क्षयोपशमग्रंथि भेदनकरे एवोआत्मनुंपमितवीर्यस्फुरेनही तेमाटेअवेद्यपदकहियें.

अनेथिरादिक आगलीचारदृष्टीमां वेद्यसंवेद्यपदछे जे वेद्यते जेसूक्ष्मबोध सम्यक् वेदनरूपछे एटलेमिथ्यात्वक्षयेपणे यद्यपि ठहेलीपापप्रवृत्ति नरकादिकगमन श्रेणीका दिकनीपरें तप्तलोहपदन्यास प्रवृत्तिसरिखीहोय पणतेवेद्यसंवेद्यपद सूक्ष्मबोधसहित

आत्मपंक्तिवीर्यनुं स्फुरणमिथ्यात्वादिकनाक्षयेंथीहोय॥५॥एहेपदनोअर्थलेशमात्रहे

वेद्यबंधशिवहेतुछेजी ॥ संवेदनतसनाण ॥ नयनि
क्षेपेंअतिभलुंजी ॥ वेद्यसंवेद्यप्रमाण ॥ न० ॥६॥

अर्थ॥ तेमाटेवेद्यपदनोबंधते शिवके०मोक्षनोहेतुछे अनेसंवेदनपदते तेनुंज्ञानजा एवुं नैगमादिकसप्तनय नामादिकचारनिक्षेपा तथा सप्तभंगादिक तथागमाजेसरि खापाठ इत्यादिकेंकरी निर्मलते प्रमाणेकरी वेद्यसंवेद्यपदते ग्रंथिभेदेंप्रमाणछे ॥६॥

तेपदग्रंथिविभेदथीजी ॥ छेहलीपापप्रवृत्ति ॥ तप्तलोहपद
धृतिसमीजी ॥ तिहांहोयअंतनिवृत्ति ॥ म० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ तेवेद्यसंवेद्यपदनुंदर्शन मोहनीनानाशथी ग्रंथिभेदेंउपजे तेथीअनादिनी अतत्ववासनामिटे संसारमांछहेली पापप्रवृत्तिते अग्नियेंतप्तलोहउपर पगमांड वानाधैर्यसरिखी समस्तअनर्थनी करनारी एवीपापप्रवृत्तिलागे तिहांअंतेएपापप्रव त्तिनीनिवृत्तिथाय एवेद्यसंवेद्यपदनुं लक्षणजाणवुं ॥ ७ ॥

एहथकीविपरीतछेजी ॥ पदते अवेद्यसंवेद्य ॥ भव
अभिनंदीजीवनेजी ॥ तेहोयवज्रअभेद्य ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अनेएवेद्यसंवेद्यपदथी विपरीतलक्षणते छतेमिथ्यात्वें सूक्ष्मबोध नहोय तेअवेद्यसंवेद्यपदछे एचारदृष्टीमां ग्रंथिभेददर्शनमोहनीयनो क्षयोपशमनहोय मा टेजेभवाभिनंदी संसारनासुखमां घणुराचेतेप्राणीने अवेद्यसंवेद्यपदहोय तेवज्रनीप रेंअभेद्य अनादिपदने शिरेंछे ॥ ८ ॥

लोभीकृपणदयामणोजी ॥ मायीमच्छरठाण ॥ भवअभिनं
दीभवभयभरयोजी ॥ अफलआरंभअयाण ॥ म० ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ एकलोभीसर्वत्र याचनशील बीजोछतेधनने भिक्षोगी कृपणतेतुच्छप्रकृतिकरे त्रीजोदयामणोते सर्वनेंअकल्याणवांछे चोथोमायीते सर्वकाममांकपटमयहोय पां चमुंमच्छरते परनेंसुखें पोतेदुःखीथाय छट्टोभवके० संसारतेनोज आनंदीहोय भव विरक्तताकेवारें नभावे सातमुंतेदायसदुखी भयपामतोरहे आठमुंअयाणते अज्ञानम मतत्वअतात्विकहोयकिस्युंनजाणे एआठदोषवताछे अनेटल्यानथी तिहांसुधीजेप्राणी धर्मनोप्रारंभसाधे तेजोसाचोहोय तोपणफलेनहीं कुशलादेवीनीपरे निःफलारंभथाय

एहवाअवगुणवंतनुंजी ॥ पदछेअविद्यकठोर ॥ साधुसं
गआगमतणुजी ॥ तेजीत्योधुरेंछोर ॥ म० १० ॥

अर्थ ॥ एवापूर्वोक्त अवगुणवंतने अवेद्यपदते कठोरके० आकरुंजहोय तेप्रा णीने ग्रंथिभेदनथाय अनेतिहांलगें सूक्ष्मबोधपणनथाय मिथ्यात्वेंवर्त्ते अवेद्यसंवेद्यप देंवर्त्ते पछेसाधुनोसंग अने आगमके० सिद्धांतनीसंगत एवेहेतुयेंकरीतेजीते तेजीतवा ना धुरके० प्रथमएवेप्रकारछे ॥ १०॥

तेजीतेसहजेंटलेजी ॥ विषमकुतर्कप्रकार ॥ दूरनिक
टहाथीहणेजी ॥ जेमएवठरविचार ॥ म० ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ तेमोहनीयजीतेथके विषमके० आकरामागतत्वनाजेविकल्प तेविचाररू पकुतर्कसहेजेंटलीजाय जेमवेदुवठरअज्ञानीहता तेनेहाथीऊपर वेसनारमावतेंकह्युंजे तमेदूररहो नहीतोहाथीतमनेहणसे तेसांभलीवठरें कुतर्कपणेविचारकर्युंजे हाथीप्राप्त थयेलानेहणेछे किंवाअप्राप्तनेहणेछे जोपाम्यानेहणेतोमावतनेहणे जोअणपाम्याने हणेतो आवनारनेहणे एमविचारकरेछे एटलामांतेहाथीआव्यो तेणेवेवठरनेउपा डिहणीनाख्या एवाकुतर्कप्रमुखनाविचारते सहजेटलीजाय ॥ ११ ॥

हुंपाम्योसंशयनहीजी ॥ मूरखकरेएविचार ॥ आलसु
आगुरुशिष्यनोजी ॥ तेतोवचनप्रकार ॥ म० ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हुंतत्वपाम्योछुं एमांकांइसंशयनथी एवोविचारतोजे मूर्ख आपमतिहोय तेकरे जेमआलसुगुरु तथाआलसुशीष्यना विचारें वचननाप्रकारघणाथया तेजेम पोतानी सज्ञायें आविशक्यानही तेमतेपणजाणवुं ॥ १२ ॥

छीजेतेपतिआववुंजी॥ आपमतेंअनुमान ॥ आग
मनेअनुमानथीजी॥ साचुलहेसुज्ञान ॥म०॥१३॥

अर्थ ॥ माटेजेप्राणी छीके०पोतानीवुद्धियेंकरीनेपत्तिआववुंके० प्रत्ययउपजाववुं तेपण अनुमानप्रमाणे आपके० पोतानीमतेंजकरे तेकाइनपामे अनेजे आगमप्रमा ण प्रवीणगुरुनीमतें आगमनाअनुमानथी प्रत्ययउपजावे तेहिजसाचुं सुज्ञान भ लीतत्वबुद्धिपामे एमजाणवुं पणस्वमतिकल्पनायेंनही ॥ १३ ॥

नहीसर्वज्ञजूजूआजी ॥ तेहनाजेवलीदास ॥ भगतिदे
वनीपणकहीजी ॥ चित्रअचित्रप्रकाश ॥ म०॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तिहांवलीविचारेजे सर्वज्ञदेवकोइ जूदाजूदानथी वीतराग अवितथवा दीएकजछे तेनाजे दासके० किंकरतेएकसर्वज्ञशासनाछे तेदेवनीभक्तिपणकहिछे ते मांएकचित्रभक्ति बीजीअचित्रभक्ति एबेहुनोप्रकाशके० विस्तारघणोछे तेकहेछे॥१४

देवसंसारीअनेकछेजी ॥ तेहनीभक्तिविचित्र॥ एक
रागपरद्वेपजी ॥ एकमुगतिनीअचित्र ॥म०॥१५॥

अर्थ ॥ जेवीतरागभाव नथीपाम्या अने संसारमांदेवनामधरावेछे एवाअनेकदेव छे तेनीभक्तिपण विचित्रके० अनेकप्रकारनीछे एकरागथीहोय परके० बीजीद्वेषथी होय तेसर्वेविचित्रभक्तिमांजाणवी अनेएककेवल वीतरागनीभक्ति मुक्तिनेअर्थेतेअ चित्रभक्तिकहियें ॥ १५ ॥

इंद्रियार्थगतवुद्धिछेजी॥ ज्ञानछेआगमहेत॥ असंमोह
शुभकृतिगुणेजी॥ तेणेफलभेदसंकेत ॥ म०॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एरीतेंभक्तितोवेप्रकारनीछे अनेतेनाफलभेदतो घणापडेछे तेकहेछे कोइ कप्राणीनीबुद्धिते इंद्रियमांहेंजपोचेछे कोइकप्राणीनुं ज्ञानते आगमप्राप्तिनोहेतुथायछे ज्ञानाभ्यासीविशेषपणे कोइकनेअसंमोहपणथायछे तेणेकरीशुभकृतिगुण निपजावेछे एनाप्रकारेंकरी फलभेदना पणबहुसंकेतथायछे ॥ १६ ॥

आदरकिरियारतिघणीजी ॥ विघनटलेमिलेलछि ॥ जि
ज्ञासावुद्धसेवनाजी॥ शुभकृतिचिन्हप्रत्यछि ॥म०॥१७॥

अर्थ ॥ हवेशुभकृतिगुणतेहुं तेकहेछे विधिपूर्वकक्रियानो आदरपणोउपजे शुद्ध क्रियानेविपे अभ्युद्यमहोय तथा रतिके० हर्षघणोहोय एवागुणथीसुंथाय कर्मांवर एनाविघनटलीजाय अनेअभ्युदयभावनीमोक्षरूपलक्ष्मीमिले तथा तत्वज्ञानजाणवा नी जिज्ञासाके०इछा तथा वुद्धके०ज्ञानीतत्वीपुरुपना चरणसेववानीइछा सत्संगति प्रत्यक्षपणे शुभकृतिना चिन्हलक्षणजाणवा ॥ १७ ॥

वुद्धिक्रियाभवफलदियेजी ॥ ज्ञानक्रियाशिवअंग ॥ असं
मोहकिरियादियेजी॥ शीघ्रमुगतिफलचंग॥ म०॥ १८ ॥

अर्थ ॥ हवेएनाफलकहेछे जेइंद्रियार्थगतवुद्धि एवीक्रियाते भवके० संसारफल आपे अनेज्ञानक्रियानुंफलतेशिवके० मोक्षनुंअंगछे तेज्ञानपूर्वकअसंमोहक्रियारूपजे

चारित्रते शीघ्रके० तत्काल चंगके० मनोहर मुक्तिनाफलआपे यतः ज्ञानस्यफलंविरति विरतिफलंसंवरोबोधः॥संवरफलंक्रियानिवृत्तिःक्रियानिवृत्तेरयोगित्वंइति ॥ १७ ॥

पुद्गलरचनाकारमीजी ॥ तिहांजशचित्तनलीन ॥ ए
कमार्गतेशिवतणोजी ॥ भेदलहेजगदीन ॥ म० ॥१ए॥

अर्थ ॥ जिहांसमस्त पुग्गलनी रचनाके० शोभाते कारमीजाणे एटले नवनाट कने शिशुके० बालकनाकरेला धुलिग्रहनीपरें असारजाणी तेनेविषेजेनुं चित्तला गेनही आसक्तनथाय तेहिजएकमोक्षनोमार्गछे तेमार्गमांजेप्राणीभेदपणुं लहेके० पामे तेप्राणीजगतमां दीनके० दुःखीजाणवा ते भवदुःखपामे ॥ १ए ॥

शिष्यभणीजिनदेशनाजी ॥ कहेजनपरिणतिभिन्न ॥ क
हेमुनिनीनयदेशनाजी ॥ परमार्थथीअभिन्न ॥म०॥२० ॥

अर्थ ॥ जेमश्रीवीतरागजेदेशनाकहेछे तेशिष्यगणधर तीर्थथापनादिकार्यमाटे क हेवे अगिलाएधम्मंदेसणाए तित्थंकरनामकम्मंवेईज्जइ इतिआगमवचनात् तेदेशना सकलजनसांभले तेसांभलनारानीपरिणतिपण भिन्नभिन्नहोय अने मुनिजननीदेशना पण नयेंनयेंभिन्नभिन्नहोय अने देशनाआपनारनीपरिणतिपण भिन्नभिन्नहोय पण तेसर्वपरमार्थे एकस्याद्वादमुद्रायें अभिन्नजाणवा॥ २० ॥

शब्दभेदझगडोकिस्योजी॥ परमारथजोएक॥ कहोगंगा
कहोसुरनदीजी ॥ वस्तुफिरेनहीछेक ॥ म० ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ माटेशब्दभेदमां झगडोविवादकांइनथी विवादतेअभिनिवेशेंजहोय पण जोपरमार्थेएकहोयतो शब्दफेरेंविवादनथी जेमकोइकगंगाने सुरनदीकहे कोइकजा न्हवीकहे एमजोपरमार्थेएकछेतोपर्यायनामेफेरसमजवुंनही जेम घटने कुंभ कलश इत्यादिकें बोलवता काइंवस्तुमांफेरसमजवुंनही ॥ २१ ॥

धर्मक्षमादिकपणमिटेजी॥ प्रगटेधर्मसंन्यास ॥ तोझगमा
झांटातणोजी ॥ मुनीनेकवणअभ्यास॥ म० ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ तेमएदृष्टीमां क्षमादिधर्म तेनेपरशासनमां खंतीमद्दवइत्यादिककह्योछे तेपणमटे केवलधर्मसंन्यासप्रगटे जेधर्मसंन्याससामग्रीते द्रव्ययोगनुंजवरछे तेधर्मसं न्यासतो असद्रूपंभितने अमायीनेजहोय तोझगडाझाटानुं मुनीनेअभ्यासनहोय॥ २२

अनिनिवेशसघलोत्यजीजी ॥ चारलहीजेणेदृष्टी ॥ तेलेसे
हवेपंचमीजी ॥ सुयशअमृतघनवृष्टी ॥ म० ॥ २३ ॥

अर्थ ॥ अनिनिवेश कदाग्रह मच्छरीपणुं इत्यादिकदोषसर्वत्यजीने जेणेमित्रा तारा बला दीप्रा एचारदृष्टिपामि तेप्राणीपांचमी थिरानामेंदृष्टिपामे तेदृष्टिकहेवीछे सर्वदिशेंप्रवर्त्ततो नलोयश तद्रूपअमृत वधारवाने घनके० जलधारासरिखीछे गौतमस्वामिना शिष्यपन्नरसेंतापसनापारणानीपरेंवृद्धिनीकरनारछे ॥ २३ ॥ एचोथीदीप्रा नामेंदृष्टिकहि एचारदृष्टीमां ग्रंथिनेदपणुंतोनही पणसत्संगति सदाचारप्रवृत्तिहोय

॥ ढालपांचमोधनधनसंप्रतिसाचोराजाएदेशी ॥

दृष्टीथिरामांहिदर्शननित्यें ॥ रतनप्रनासमजाणोरे ॥ न्रां
तिनहीवलीवोधतेसूक्ष्म ॥ प्रत्याहारवखाणोरे ॥ १ ॥
एगुणवीरतणोनवीसारूं ॥ संनारूदिनरातरे ॥ पसुटाली
सुररूपकरेजे ॥ समकेतनेअवदातरे ॥ एगुण० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेपांचमीथिरादृष्टिकहेछे तेथिरादृष्टीमां ग्रंथिनेदकरी सम्यक्दर्शन नित्यें होय तेनोवोधके० प्रकाशते रत्ननीकांतिसरिखोहोय वलीतेनेकोइजातनीन्रांतिनहोय अपर्याप्तपणाथीपृथककरीने सूक्ष्मबोध तत्वार्थरूप यथार्थज्ञानहोय अज्ञानमिथ्यातनापुंजल छेदातानहोयतेछेदाय सरलबुद्धिहोय सकलइंद्रियार्थविषयटलीने तत्वशुश्रूषाननेविषेप्रवर्त्तेविपर्यार्थमटे, तेप्रत्याहारकहियें ॥ १ ॥ एममहोटोश्रीमहावीरनोगुणते चित्तथीविसारुंनही दिनरात्रनित्यप्रतेंसंनारुं केमके एप्रंनुनाउपदेशथी माराइंद्रियादिकनागुण विषयादिकार्यें पशुप्रायेंहता तेटालीने सुररूपके० तत्वबोधवंतकीधा दर्शनमोहविनाशथी-उपनुंजे समकेतगुण तेणेकरीमननिर्मलकीधुं ॥ २ ॥

बालधुलिघरलीलासरिषी ॥ नवचेष्टाइहांनासेरे ॥ रिद्धिसि
द्धिसविघटमांपेसे ॥ अष्टमहासिद्धिपासेरे ॥ एगुण० ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेमवर्षाकालें नानाबालकधुलिनाघरकरी लीलामानेछे पणपरमार्थेनजाणे तेसरिखीएसंसारनीचेष्टारूप सर्वपुजलनाविलास इहांके०आदृष्टीमांनासेछे एरीतें संसारने अनित्यपणेजाणेथके पोतानाअंतरंगगुणनी ऋद्धितेसर्व तेनाघटमांपेदाथाय, एवोसंतोषसुखउपजे वलीअष्टमहासिद्धिपण तेनीपासेजछे तथासमस्त लब्धिनीसिद्धिते योगरूपकल्पवृक्षना कुसुमरूपछे एमकरीमाने ॥ ३ ॥

इहांअष्टमहा सिद्धिना नामकहेछे १ महिमाते शरीरादिकने मेरुपर्वतथकीपण महोटोकरवानी शक्तिहोय २ लघिमाते वायुथकीपण शरीरादिकने लघुकरवानीश क्ति ३ गुरुताते वज्रथकीपण अत्यंतभारीकरवानी शक्ति ४ प्राप्तिते भूमिकायेंरह्यो थकोपण अंगुलनोअग्रभाग मेरुप्रांतेंपोचाडवानीशक्ति ५ प्राकाम्यते पाणीनेविषेपण पृथ्वीनीपरें उन्मज्जन मज्जन प्रविशन गमनादिककरे तेजीवनी अनावाधपणे एह वीशक्तिहोय ६ ईशिताते त्रैलोक्यऋद्धिकरण तथातीर्थंकरादि ऋद्धिविकुर्वणशक्ति ७ वशिताते सर्वजीवनेवशीकरणशक्ति ८ अप्रतिघातते पर्वतमांपण प्रवेश निर्गमन शक्ति एम्रावतथावली अंतर्धान अदृश्यकरणशक्ति तथाकामरूपीनामे एटलेसमकालें नानाप्रकारनारूपकरणशक्ति इत्यादिक अनेकप्रकारनी सिद्धि ऋध्यादिकपासेंवसे॥३॥

विषयविकारेंनइंद्रियजोडे ॥ तेइहांप्रत्याहारोरे ॥ केवल ज्योतितेतत्वप्रकाशे॥ शेषउपायअसारोरे ॥एगुण० ॥४॥

अर्थ ॥ शब्दादिकत्रेवीसविषय तेनाविकारने इंद्रियनाकामभोगसाथें जोडेके० मेलवेनही तेनुंनामप्रत्याहारगुणकहियें तेगुणइहांउपजे तेप्राणीनीज्योति निःकेव ल तत्वरहस्यनेजप्रकाशे तत्वज्ञाननेजलेखेकरीजाणे शेषवीजासंसारना सर्वउपाय प्रपंच तेने असारकरीजाणे ॥ ४ ॥ तेनेजदृष्टांतेद्वारेंकरी आगलीगाथामांदेखाडेछे

शीतलचंदनथीपणउपनो ॥ अगनीदहेजेमवननेरे ॥ धर्मजनितपणभोगइहांतेम॥लागेअनिष्टतेमननेरे॥एगुण०॥५॥

अर्थ ॥ यद्यपिचंदनतो शीतलछे तोपणतेथीउपनुंजे अग्नितेजेमआखावनने वा लीनाखे तेमजधर्मजनित पतिव्रतादिक गृहस्थाधर्मसेवनादिकदेखाडी यद्यपिभोगा दिकनीसेवनाकरेछे तोपणतेनेमनमां अनिष्टलागे अवसरआवेथके तेभोगादिकने मूकीआपवाने वारलगाडेनही गृहस्थावासने पाशपरमाणेमाने ॥ ५ ॥

अंशेहोयइहांअविनाशी ॥ पुद्गलजालतमासीरे ॥ चिदानंदघनसुयशविलासी॥ केमहोयजगनोआसीरे ॥एगुण० ॥६॥

अर्थ ॥ इहां अंशेके०विभागेंअविनाशीथाय जेमजेमआश्रवनाहेतुओछा तेमतेम अविनाशी निरावर्णिथाय जेटलोपुद्गलनोखेल तेसर्वतमासारूप बाजीगरनीबाजीकरी जाणे तेप्राणिज्ञाननोजेआनंदतेनो घनके०निवडपणुं एवोजेभलोयश तेनोविलासके० लीलातेमांरहे पणतेप्राणीनेत्रणभुवनरूपजे जगततेमां कोइनीआसीनहोय सहज स्वरूपनुं विलासीहोय॥६॥एदृष्टिदर्शनमोहनीनाक्षयोपशम अथवाउपशमादिकेंहोय

ढालछठ्ठोनोलीडाहंसारेविषयनराचीयेंएदेशी ॥

अचपलरोगरहितनिठुरनहीं॥ अल्पहोयदोयनीति॥
गंधतेसारेरेकांतिप्रसन्नता ॥ सुस्वरप्रथमप्रवृत्ति
॥ १ ॥ धनधनशासनश्रीजिनवरतणु ॥ एआकणी

अर्थ॥वलीतेप्राणी इंद्रियार्थना चपलपणारहितहोय सम्यकनायोगें थिरहोयत था रोगादिकेंरहित शरीरहोय नठुरके० कठणरूदयनहोय एटलेकोमलपणुं होय वली लघुनीति वडीनीतिए दोयके० वेहु शरीरादिकमां अल्पहोय तथामलादिकनो गंधते नलोसुरनीवंतहोय वली कांतिलावण्यादिक सुंदरहोय तथासर्ववचनादिकें प्रसन्नता प्रसादपणुंहोय सुशोजनस्वर गंनीर्यहोय अतिगंनीर मधुरधर्मोपदेशरूप व चनहोय एरीतेंप्रथम एदृष्टीनुंप्रवर्त्तनहोय ॥ १ ॥ एवुंश्रीवीतरागनुं शासन आज्ञारू पप्रवचनते धन्य प्रशंसनीयछे ॥ १ ॥

धीरप्रनावीरेआगलेंयोगथी॥ मित्रादिकयुतचित्त ॥ लान
इष्टनोरेद्वंद्वअधृष्यता॥ जिनप्रीयताहोयनित्य॥धन० ॥ २॥

अर्थ ॥ आगलेकालें योगथी धैर्यतानागुण विशेषपणेनावे जेमअप्रमत्ततावधे तेमयोगथाय १ मैत्री २ प्रमोद ३ कारुण्य ४ माध्यस्थादियुक्त जेमनुंचित्तहोय इ ष्टज्ञानादिकनोलानथाय द्वंद्वनीअधृष्यता एटलेएकपणुं असहायीपणुंवांछे जनप्रिय के० लोकवल्लनतादिकगुण सदाईहोय इहांमैत्र्यादिक चारनावनाते धर्मध्याननी पुष्टिकरेछे यद्यपिध्याननी एकाग्रता मुहूर्त्तमात्रछे तोपणतेध्याननी नावना बहु कालसुधीछे माटेज्ञाननी चिंतवणापण बहुकालनीछे तेपण धर्मध्यानकहियें तेथी मैत्र्यादिकनावनाते धर्मध्याननुं रसायनछे. जेमजराअवस्थामां जर्जरितशरीरने र सायनखाधाथी दृढशरीरथाय तेमएनावनारूप रसायनपण ध्याननेदृढकरेछे तेनाव नानावली एनुंविशेषस्वरूप नवनावनाग्रंथ तथायोगशास्त्रादिकग्रंथोथी जाणवुं॥२॥

नाशदोषनोरेतृपतिपरमलहे ॥ समताउचित्तसंयोग ॥ ना
शवयरनोरेबुद्धिऋतंनरा ॥ एनिप्पन्नहयोग ॥ धन०॥ ३ ॥

अर्थ ॥ क्षुद्रादिकआवदोष तथारागद्वेष कामक्रोध मदहर्ष तेनोनाशकरे तथा अतत्वबुद्धिनाहेयपणायकी परमप्रकृष्टरुचिमार्गें तत्वश्रद्धानादिकें तृप्तिपामे रुतापरा धजनउपरपण तीव्रानुबंधीक्रोध नहोय पिशुनतानहोय तेप्राणी समतातथा त

त्नमार्गना धर्मव्यापारनो संयोगीहोय तेप्राणीने वयरनोनाशहोय अनेपापप्रवृत्तिनो पश्चात्तापहोय तेप्राणीनीएवीबुद्धिहोय जे शर्तन्नराके० शोकडागमेंपुरुषोने आजीविकादिकनीवृत्ति शंतन्नराहोय इत्यादिक योग आवदोषगयाथी सहजेनीपजे ॥ ३ ॥

चिन्हयोगनारेजेपरग्रंथमां योगाचारयदिठ ॥ पंचमदृष्टी
थकीतेजोमियें ॥ एहवातेहगरिठ ॥ धन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीयोगना चिन्हके० लक्षणजे परग्रंथमांकह्याछे ब्रह्मचर्यकृतप्रतिज्ञानिर्वाह अपाय निराकरणादिसर्वांगें योगाचार्येजेदीठाछे पातंजलादिकते सर्वपंचमदृष्टी सार्थेजोडियें एटले पूर्वलीदृष्टीथी अधिकगुणेकरी तेनीगरिष्टबुद्धिथाय माटेमोहनो क्षयोपशमजे ग्रंथिभेदतेथयोछे ॥ ४ ॥ एटलेपांचमीथिरानामें दृष्टीकही

छठिदिठिरेहवेकांताकहु ॥ तिहांताराभप्रकाश ॥ तत्वमिमां
सारेदृढहोयेधारणा ॥ नहीअन्यश्रुतवाश ॥ धन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेछठीकांतानामा दृष्टीकहियेंछैयें तेछठीदृष्टीमां जेमआकाशेंतारादीपे ते सरिखो तत्वज्ञानप्रकाशबोधदीपे तेसर्वतारासाथेजरहे पणजायनही जेमताराजाय नही तेनीपरेंनजाय तिहांतत्वनीज विचारणाहोय तत्वउपरेंदृढनिबन्धधारणाहोय अन्यमिथ्यात्वेप्रणीत श्रुतशास्त्रउपर वासनानहोय अर्हतप्रणीत तत्वनीश्रद्धानहोय

मनमहिलानुंरेवाहलाउपरें ॥ बीजाकामकरंत ॥ तेमश्रुत
धर्म्मेंरेएहमांमनधरे ॥ ज्ञानाक्षेपकवंत ॥ धन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमपतिव्रतास्त्रीनुंमन पोतानावल्लभ भर्तारउपरहोय बीजावरसंबंधी समस्तकार्यकरताथकापण तेनुंचित्तभर्तारउपरहोय तेम कांतादृष्टीवाला प्राणीने अर्हतप्रणित धर्मउपरेंचित्तरहे यद्यपिसंसारमांरह्यो सर्वकार्यकरे तथापितेनाउपर स्नेहधरेनही अनेसम्यकज्ञाननो आक्षेपके० आदरवंतहोय ॥ ६ ॥

एहवेज्ञानेरेविघननिवारणा ॥ भोगनहीभवहेत ॥ नविगुणदो
पनविपयस्वरूपथी ॥ मनगुणअवगुणखेत ॥ धन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एहवेज्ञानेकरी धर्मनेविघनकारी एवाजेकारण तेनीनिवारणाजकरे वलीअभयकुमारादिकनीपरें परनेपण शासनप्रभावनादिककारण अनेकमेलवीआपे तोतेप्राणीयद्यपि भोगादिकभोगवेछे तेभोगादिकपण भवके० संसारनाहेतुनहोय केमकेतेप्राणी एमजाणेछेजे स्वरूपथीविचारतां संसारनाजे विषयतेगुणपणन

ढालवढोनोलीडाहंसारेविपयनराचीयेंएदेशी ॥

अचपलरोगरहितनिठुरनही॥ अल्पहोयदोयनीति॥
गंधतेसारोरेकांतिप्रसन्नता ॥ सुस्वरप्रथमप्रवृत्ति
॥ १ ॥ धनधनशासनश्रीजिनवरतणु ॥ एआकणी

अर्थ॥वलीतेप्राणी इंद्रियार्थना चपलपणारहितहोय सम्यक्तनायोगें थिरहोयत था रोगादिकेंरहित शरीरहोय नठुरके० कठणक्रूदयनहोय एटलेकोमलपणुं होय वली लघुनीति वडीनीतिए दोयके० वेहु शरीरादिकमां अल्पहोय तथामलादिकनो गंधते नलोसुरजीवंतहोय वली कांतिलावण्यादिक सुंदरहोय तथासर्ववचनादिकें प्रसन्नता प्रसादपणुंहोय सुशोननस्वर गंनीर्यहोय अतिगंनीर मधुरधर्मोपदेशरूप वचनहोय एरीतेंप्रथम एहवीनुंप्रवर्त्तनहोय ॥ १ ॥ एवुंश्रीवीतरागनुं शासन आज्ञारूपप्रवचनते धन्य प्रशंसनीयछे ॥ १ ॥

धीरप्रनावीरेआगलेंयोगथी॥ मित्रादिकयुत्तचित्त ॥ लान
इष्टनोरेद्वंद्वअधृष्यता॥ जिनप्रीयताहोयनित्य॥धन० ॥ २ ॥

अर्थ ॥ आगलेकालें योगथी धैर्यतानागुण विशेपपणेनावे जेमअप्रमत्ततावधे तेमयोगथाय १ मेत्री २ प्रमोद ३ कारुण्य ४ माध्यस्थादियुक्त जेमनुंचित्तहोय ६ इष्ठज्ञानादिकनोलानथाय द्वंद्वनीअधृष्यता एटलेएकपणुं असहायीपणुंवांछे जनप्रिय के० लोकवल्लनतादिकगुण सदाईहोय इहांमैत्र्यादिक चारनावनाते धर्मध्याननी पुष्टिकरेछे यद्यपिध्याननी एकाग्रता मुहूर्त्तमात्रछे तोपणतेध्याननी नावना वहुकालसुधीछे माटेज्ञानननी चिंतवणापण वहुकालनीछे तेपण धर्मध्यानकहियें तेथी मैत्र्यादिकनावनाते धर्मध्याननुं रसायनछे जेमजराअवस्थामां जर्जरितशरीरने रसायनखाधाथी दृढशरीरथाय तेमएनावनारूप रसायनपण ध्याननेदृढकरेछे तेनाव नानावली एनुंविशेपस्वरूप नवनावनाग्रंथ तथायोगशास्त्रादिकग्रंथोथी जाणवुं ॥ २॥

नाशदोपनोरेतृप्तिपरमलहे ॥ समताउचित्तसंयोग ॥ ना
शवयरनोरेवुद्धिशतंनरा ॥ एनिष्पन्नहयोग ॥ धन०॥ ३ ॥

अर्थ ॥ क्षुद्रादिकआवदोप तथारागद्वेप कामक्रोध मददर्प तेनोनाशकरे तथा अतत्वबुद्धिनाहेयपणाथकी परमप्रकृष्टरुचिमार्गे तत्वश्रद्धानादिकें तृप्तिपामे रुतापरा धजनउपरपण तीव्रानुवंधीक्रोध नहोय पिशुनतानहोय तेप्राणी समतातथा त

त्वमार्गना धर्मव्यापारनो संयोगीहोय तेप्राणीने व्यसननोनाशहोय अनेपापप्रवृत्तिनो पश्चात्तापहोय तेप्राणीनीएवीबुद्धिहोय जे शतंनराके० शेकहागमेंपुरुषोने आजीविकादिकनीवृत्ति शंतन्नराहोय इत्यादिक योग आवदोपगयाथी सहजेनीपजे ॥ ३ ॥

चिन्हयोगनारेजेपरग्रंथमां योगाचारयदिठ ॥ पंचमदृष्टी
थकीतेजोमियें ॥ एहवातेहगरिठ ॥ धन० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ वलीयोगना चिन्हके० लक्षणजे परग्रंथमांकह्याछे ब्रह्मचर्यकृतप्रतिज्ञानिर्वाह अपाय निराकरणादिलक्षणें योगाचार्येजेदीठाछे पातंजलादिकते सर्वपंचमदृष्टीसाथेंजोडियें एटले पूर्वलीदृष्टीथो अधिकगुणेकरी तेनीगरिष्टबुद्धिथाय माटेमोहनो क्षयोपशमजे ग्रंथिभेदतेथयोछे ॥ ४ ॥ एटलेपांचमीथिरानामें दृष्टीकही

छठिदिठिरेहवेकांताकहु ॥ तिहांताराज्ञप्रकाश ॥ तत्वमिमां
सारेदढहोयेधारणा ॥ नहीअन्यश्रुतवाश ॥ धन० ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ हवेछठीकांतानामा दृष्टीकहियेंछयें तेछठीदृष्टीमां जेमआकाशेंतारादीपे ते सरिखो तत्वज्ञानप्रकाशबोधदीपे तेसर्वेतारासायेजरहे पणजायनही जेमताराजाय नही तेनीपरेंनजाय तिहांतत्वनीज विचारणाहोय तत्वउपरेंदृढनियमधारणाहोय अन्यमिथ्यात्वीप्रणीत श्रुतशास्त्रउपर वासनानहोय अर्हतप्रणीत तत्वनीश्रद्धानहोय

मनमहिलानुंरेवाहलाउपरें ॥ वीजाकामकरंत ॥ तेमश्रुत
धर्म्मेरेएहमांमनधरे ॥ ज्ञानाक्षेपकवंत ॥ धन० ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमपतिव्रतास्त्रीनुंमन पोतानावल्लभ भर्त्तारउपरहोय वीजायरसंबंधी समस्तकार्यकरतांथकांपण तेनुंचित्तभर्त्तारउपरहोय तेम कांतादृष्टीवाला प्राणीने अर्हतप्रणित धर्मउपरेंचित्तरहे यद्यपिसंसारमांरह्यो सर्वकार्यकरे तथापितेनाउपर स्नेहधरेनही अनेसम्यकज्ञाननो आक्षेपके० आदरवंतहोय ॥ ६ ॥

एहवेज्ञानेरेविघननिवारणा ॥ भोगनहीभवहेत ॥ नविगुणदो
पनविपयस्वरूपथी ॥ मनगुणअवगुणखेत ॥ धन० ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ एहवेज्ञानेकरी धर्मनेविघनकारी एवाजेकारण तेनीनिवारणाजकरे वलीअभयकुमारादिकनीपरें परनेपण शासनप्रभावनादिककारण अनेकमेलवीआपे तोतेप्राणीयद्यपि भोगादिकभोगवेछे तेभोगादिकपण भवके० संसारनाहेतुनहोय केमकेतेप्राणी एमजाणेछेजे स्वरूपथीविचारतां संसारनाजे विषयतेगुणपणन

थी अनेदोषपणनथी तेप्राणीविषयादिकनेविषे मनजोडवुंते अवगुणनुंदेत्रकरीमानेडे तेथी विषयार्थनेविषेमननजोडे ॥ ७ ॥

मायापाणीरेजाणीतिहने लंघीजायअमोल ॥ साचुंजाणी
रेतेविहतोरहे ॥ नचलेमामामोल ॥ धन० ॥ ८ ॥

अर्थ॥ तेप्राणीमायारूपपाणीना जेविविधतरंग तेना विलासदेखीने तेमायानेउ लंघीजाय केमके सम्यकश्रद्धान सम्यकज्ञानेकरी तेप्राणीअमोलछे नवप्रपंचमां मु जाववुंनही एमतेसत्यपणेजाणेछे माटेनवप्रपंचथी विहितोरहे संसारमांअविद्या प्रपंचमायादेखीने तेक्षोनपामेनही अंबडपरिव्राजिक तथासुलसानीपरेंचलेनही ॥ ८

नोगतत्वनेरेएमजनथनविठले ॥ जूगजाणेरेनोग ॥ तेएह
ष्टीरेनवसायरतरे ॥ लहेवलीसुयशसंयोग ॥ धन० ॥ ए ॥

अर्थ ॥ जेसंसारनानोगने तत्वकरीजाणे तेनेसंसारनुंनयटलेनही एरीतेंविचार करीने नोगजे इंद्रियार्थसुखते जूवजाणे एनोगथी नवप्रपंचवधे पणमोक्षपंथनमि ले एरीतेंजेप्राणीजाणे तेप्राणीएहष्टीयें वर्त्ततोथको नवसमुद्रनो पारपामे वलीकर्मर हितपणे सुशोननयश सिद्धपणानोसंयोग आत्मिकअक्षयसुखनी लीलाविलासपा मे ॥ ए ॥ एहछीकांतानामे दृष्टीकही

॥ ढालसातमोएहडिकिहांराखीएदेशी ॥

अर्कप्रनासमबोधप्रनामां ॥ ध्यानप्रीयाएदिठी ॥
तत्वलणीप्रतिपत्तेइहांवली ॥ रोगनहीसुखपुठीरे ॥
नविकावीरवचनचित्तधरियें ॥ १ ॥ एआंकणी ॥

अर्थ ॥ हवेप्रनानामें सातमीदृष्टीकहियेंछैयें एदृष्टीनोप्रकाशते अर्कके० सूर्यनीप्र नासरिखो बोधहोय जेमसूर्यनीशक्ति तिमिरनोनाशकरे तेमइहां प्रशांतवाहितादि कगुणते [illegible] एदृष्टीमां ध्यानप्रियहोय [illegible] सत्त्वमें अंगेयथाविधप [illegible] अन्यंतरप णे रोगआधिव्याधि असमाधिनहोय तेथीसुखनीपुष्टिहोय मनसमाधीमांरहे ॥ १ ॥ अहोनव्यो एहवाश्रीमहावीरना वचनतेमनमां तत्वपणेग्रहो ॥

सघलुंपरवशतेदुखलक्षण ॥ निजवशतेसुखलहियें ॥ एह
एंआतमगुणप्रगटे ॥ कहोसुखतेकुणकहियेंरे॥नवि० ॥२॥

अर्थ ॥ जेपरपुंगलादिकोने वशवर्त्तवुं आशीपणुराखवुं तेहिजदुःखनुंलक्षणछे अ
नेपोताना आत्मनावेंवर्त्तवुं तेजीवनेमुक्तसुखकहेवाय तो एतातमीदृष्टीमां आत्मिक
परमानंद सहेजसुखप्रगटथाय तेसुखज्ञानीविना कोइथीकह्याजायनही ॥ २ ॥

नागरसुखपामरनवीजाणे ॥ वल्लभसुखनकुमारी ॥ अनुभ
वविणतेमध्यानतणुसुख ॥ कुणजाणेनरनारीरे ॥ न० ॥३॥

अर्थ जेमनगरनावासी चतुरनागरलोक तेनासुखनी लीलानोविलास तेनीवात
पामरतुछ अज्ञानीलोकनजाणे तेमजकुमारीकन्या तेवल्लभनर्त्तारना सुखनीवातन
जाणे तेमयथार्थआत्माना अनुनव वोधज्ञानविना धर्मध्यान शुक्लध्यानादिक सुख
नोआनंदते कोणजाणेअर्थात् स्त्रीअथवापुरुषकोइ अनुनवज्ञानविना जाणीशकेनही

एहदृष्टीमांनिर्मलवोधें ॥ ध्यानसदाहोयेसाचुं ॥ दूपणर
हितनिरंतरज्योति ॥ रतनतेदीपेंजाचुंरे ॥ न० ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ एहदृष्टीमांवर्त्तताप्राणीने निर्मलवोधनोप्रकाशथयेछते सदैव धर्मध्यान तथा
शुक्लध्यान एवेध्यान तेसाचाजहोय तेध्याननोविचार आवश्यकनिर्युक्तिमां ध्यानशत
कछे तेनीवृत्तिथीविशेषजाणवुं जेम दूपणरहित निर्मलजातिनुंरत्न तेनीज्योतिनिरंत
र विशेषेंदीपे तेमध्यानमांलीनपुरुष कर्म्मोपाधिनेअनावें वलीएहदृष्टीमांपोतो तेथी
विशेषपणेदीपे ॥ ४ ॥

विपनागलयशांतवाहिता ॥ शिवमारगध्रुवनाम ॥ कहे
असंगक्रियाइहांयोगी ॥ विमलसुयशपरिणामरे॥न०॥५॥

अर्थ ॥ वलीएहदृष्टीनुं लक्षणकहेछे विपनागके० रागद्वेष अहंकृति कामोद्रेकादि
कदोषनाक्षयथीमोक्ष एवुंबौद्धमतेमानेछे वली निरापराधिनेविपे प्रशांतवाहिताते
निरंतरशांतपणुंतेने सांख्यमतमोक्षमानेछे तथाध्रुवनाम शिवनुंछे एटलेजिहां उत्पा
दविनाशनही तेध्रुवरूपमोक्ष एवुंजैमिनीयमानेछे अने इहांदृष्टीनेविपे एसर्वपदार्थअसं
गनावथी अलिप्तक्रियाहोय निर्मलज्ञायशरूप आत्मगुणनापरिणाम कर्म्मोपाधिवि
शुद्धएसर्वेमलीनेमोक्षछे एमएहदृष्टीनो वोधजाणवो ॥ ५ ॥ एप्रनानामेसातमी दृष्टिकही

॥ ढालआठमीतुजसाथेंनहीबोलुंमारावालातेमुजनेविसारीजीएदेशी ॥

दृष्टीआठमीसारसमाधि॥नामपरातसजाणजी॥आपस्व
नावेंप्रवृत्तिपूरण॥ शशिसमबोधवखाणजी॥निरतिचार
पदएहमांयोगी ॥ कहियेंनहिअतिचारीजी ॥ आरोहे
आरूढेगिरिने ॥ तेमएहनीगतिन्यारीजी ॥ १ ॥

अर्थ ॥ नव्यलोकनाआत्मनाव जिहांअक्षयपणेछे एवीआठमीदृष्टिते सारके॰ प्र
धानआत्मसमाधिरूपछे तेदृष्टीनुंनाम पराछे एमजाणवुं एदृष्टीमांपोताना आत्माना
स्वनावमां पूर्णप्रवर्त्तनहोय इहां संपूर्णचंद्रमा सरिखो निर्मल प्रशांतवाहितादिक
समानगुणवंत बोधप्रकाशहोय एस्थानकमां प्रवर्त्ततोयोगी निरतिचारपदेंवर्त्ते पण
केवारें अतिचारपदमां वर्त्तेनही १ अतिक्रम २ व्यतिक्रमइत्यादिक अनेअतिचार न
हीतो अनाचारनो स्योआसरो जेममुनिराज उपशम क्षपकश्रेणीरूप गिरिके॰ पर्व
तउपरे आरोहेके॰चढे तेमइहांपरिणामधारायें आत्मानापंभितवीर्यना विलासेंएण
गुणश्रेणीने आरूढेके॰आरोहे माटेएहनी गतिके॰गमनते नवगतिथीन्यारीछे ॥१॥

चंदनगंधसमानखिमाइहां॥ वासकनेनगवेपेजी॥ आ
संगेवर्जितवलीएहमां ॥ किरियानिजगुणलेखेजी॥ शि
क्षाथीजेमरतननियोजन॥दृष्टीनिन्नतेमएहोजी॥ तासनि
योगेंकरणअपूरव ॥ लहेमुनिकेवलगेहोजी ॥ २ ॥

अर्थ ॥ इहांजेमशरीरादिकनो चंदनसरिखोगंध सहजहोय तेम सहेजथीवचनप
ण चंदनसरिखोशीतल क्षमायुक्तहोय तथाक्षमादिकधर्मपण सहजथीहोय एवीसहेज
वातनो तहोय पणबीजाकोइद्रव्यनी अपेक्षानकरे केमकेजेनेसहजथीगुणउपना तेत
रनागुणो आव्यानेवांछेनही वलीएदृष्टीमां संसारनीआसंगता नहोय तथा सुमतिगु
प्तादिक मूलउत्तरगुणनो अन्यासतेथी क्रियासर्व आत्मानागुणनेलेखेथाय जेक्रियानेअ
नुसरतोहोयतेथ॰ ते क्रियाएवीहोयजे अक्रियागुणनेसाधे जेमक्षारादिक शतपुटादिक
शिक्षानायोगेंकरीनेरी रत्ननीजातिने तादृशस्थानकेंजोडियें तेरत्नतोएकजजातिछे पणजेवा
पुटदीधातेवो जे॰आधि वावालानीदृष्टीथी निन्न निन्न तेरत्नदेखाय तेमजएदृष्टीना जोवा
वाला निन्ननिन्नदृष्टिश्रीनीवंत केमकेछद्मस्थनुंज्ञान एकरूपीनहोय माटेतेनेनियोगें एदृष्टी

तठे पणयथाप्रवर्त्तिकरण अपूर्वकरणादिकगुणस्थानकना करणसाधतो अनुक्रमे ए दृष्टीयें वर्त्ततो मुनिराज केवलज्ञाननुंवरपामे ॥ २ ॥

क्षीणदोषसर्वज्ञमहामुनि ॥ सर्वलब्धिफलभोगीजी ॥ पर
उपगारकरीशिवसुखते ॥ पामेयोगअयोगीजी ॥ सर्व
शत्रुक्षयसर्वव्याधिलय ॥ पूरणसर्वसमीहाजी ॥ सर्व
अरथयोगेंसुखतेहथी ॥ अनंतगुणनिरीहाजी ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ एदृष्टीवंतप्राणी सर्वदोषथीक्षीणथाय वलीलोकालोकनासन सर्वज्ञमहो टोमुनी केवलज्ञानवंतोथाय समस्तलब्धीनाफल तेनोभोगीथाय वलीभव्यप्राणीउंने चारित्रधर्मपमाडतो परनेअत्यंत आनंदनोउपकाररूप निमित्तथाय तेपोते शिवके० मोक्षनासुखपामे तेरमांसयोगी गुणगणेवर्त्ततो चउदमांगुणगणें अयोगपदलेइ सि द्धिपामे सर्वकर्मरूपशत्रुनो क्षयकरी सर्वव्याधिजे बाह्याभ्यंतर रोगादिकतेक्षयकरे संपू र्ण समीहाके० वांछापूरीथयेथके तृप्तिप्रमोदकरी केवलआत्मरूपमां लयथयोथको एकरूपतापामे सर्वअर्थनेयोगें संपूर्णसुखवंत सदातृप्तिवंतरहे तेथीकरीने निरीहाके० निस्पृहतापणेप्रगटथाजेअनंतगुण तेणेकरीसुखपणअनंतपणेवधता अतींद्रियसुख होय एमअबाधनिर्मल सर्वोपाधिविशुद्ध आत्मानंदसुखवंतथाय ॥ ३ ॥

एअडदिठीकहीसंक्षेपे ॥ योगशास्त्रसंकेतेजी ॥ कुल
योगीनेप्रवृत्तचक्रजे ॥ तेहतणेहितहेतेंजी ॥ योगीकु
लेंजायातसधर्म्मे ॥ अनुगततेकुलयोगेंजी ॥ अ
द्वेषीगुरुदेवद्विजप्रिय ॥ दयावंतउपयोगेंजी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ एआठदृष्टिते भव्यप्राणीना उपकारनेअर्थे योगनाशास्त्र अध्यात्मनाग्रंथ उपमितभवप्रपंच भवभावनावृत्ति पातंजलशास्त्र तथा प्रवचनप्रबोधादिकग्रंथोने सं केतेकरी संक्षेपेकही केमके योगीत्रणजातनाकह्याछे १ कुलयोगी २ प्रवृत्तियोगी ३ चक्रयोगी तेपोतपोतानाचित्तमां अहंकारेकरीनानेजे धर्मेरणयोगीनाम धरावेछेएवं तेवाप्राणीओना हितने हेतेंके० कारणेकही केमकेतेवायोगीयेंजो एयोगदृष्टीजाणी होय तोपोतानुंस्वरूपविचारे हवेएत्रणजातनायोगी लक्षणेकरीदेखाडेछे जेयोगीने कुलेजन्म्याहोय तथातेनाधर्मोचार कहिनाराना अनुगतेचालनाहोय एनस्वामान्यबुद्धि नाठे यतेता नवतासतादिक षड्दर्शनीउं नेकुलयोगीजाणवा वलीअद्वेषादिकगुण

सज्झाऽत्रणश्रोतागुणअवगुण ॥ नंदिसूत्रेदीशेजी ॥तेजा
णिएग्रंथयोग्यने ॥ देजोसुगुणजगीशेजी ॥लोकपूरयो
निजनिजइछा ॥ योगभावगुणरयणेजी॥ श्रीनयविज
विबुधपयसेवक ॥ वाचकयशनेवयणेजी ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वलीसभात्रणकहिछे १ श्रोतानागुणतथा अवगुणदेखाडे तेमाहीराजहं स सरिखीसभानंदिसूत्रमांकहीछे २ अजाण्यापशुमृग कुर्कटनाबालसरिखोखपकरतां सीखे ३ जेथोरीगीतार्थनाअपमानीते अयोगसभा एवीत्रणसभाजाणी योग्यविनय हिताहितप्राप्तिपरिहारजाणीने एग्रंथनोहार्दकह्यो एवानेदेतां भलाप्रवचन शोभाका रकादिक अनेकगुणतेहथी पोतेपोतानीमेले भली जगीसके० लीलापामसे एम इछायोग तथाशास्त्रादिकनाजेयोग तेरूपजे भावगुणतद्रूपमणिरत्नेकरी समस्तलोक पूरयो विशिष्टआत्मयोग भावरत्नेकरी समग्रलोकभरीतृप्तिपामजो एग्रंथथुंरहस्यपा मि सदासंसारभावथीमूकाजो आपस्वभावमांरहेजो एअमारीप्रार्थनाछे एमश्रीनयवि जयनामा पंडितनापदनोसेवक उपाध्याय श्रीयशोविजयगणि जेश्रीकाशीनेविषे न्या यविशारद एवुंबीजुंबिरूदपाम्या तेनावचनथीजाणुं तेहवुंमेलिख्युंछे ॥ ८ ॥ तेकि हास्थानकेलिख्युं तेसर्वआगलेकहियेंछेयें ॥

काव्यं ॥ श्रीमद्यशोविजयवाचकराजराज विनिर्मितोदृष्टि
विचाररूपः॥ स्वाध्यायएषप्रथमंततोयं भाषामयोलेशतया
टवार्थः॥१॥श्रीस्तंभतीर्थेऽत्रतपागणीय नाम्नाचज्ञानाद्विमला
भिधेन॥ श्रीसुरिणाभूरिसुखावबोधा र्थमेविलिखितोहिभद्रं॥२॥

अर्थ॥ महोपाध्यायश्री यशोविजयगणिकृत दृष्टिविचार सज्झायहती तेनोसुखेअ वबोधथवाने अर्थे श्रीमत्तपागछीयसंविज्ञजनपक्षीय भट्टारक श्रीज्ञानविमलसूरियें लेशमात्रअर्थकरीने लिख्योछे श्रीखंबातबंदरमां दोशीमेघजीछदेकरण तथावडनगरी य शाघमुनिकना अनुग्रहनेहेतें प्रथमादर्शेलिखितः एप्रकारें योगदृष्टिसिझायटवा र्थसंपूर्णथयीसर्वगाथा ७६ तथाबेश्लोकमली ७८

इति महोपाध्यायश्री यशोविजयगणिकृत योगदृष्टिस्वा ध्याय तेश्रीज्ञानविमलसूरिकृतअर्थसहितसमाप्तः

ॐश्रीपंचपरमेष्टिभ्योनमः

अथ

श्रीउपमितभवप्रपंचवार्त्तिकरूपंलिख्यते

श्लोक.

वाग्देवीं प्रणिपत्य ध्यात्वाजैनंमतंसमृद्धिकरं ॥ नि
जगुरुचरणसरोजं हृदयेविनिधायभावेन ॥ १ ॥
उपमितभवप्रपंच मध्यस्थितजन्मिजीवसंबंधः॥ प्रा
कृत्याभारत्या विव्रियतेसरलबोधाय ॥ २ ॥

जिहां तीर्थंकर चक्रवर्ति प्रमुखने उपजवानुं स्थानक तथा सर्वधर्मनुं साधन अने चतुर्विध संघने हर्षकारक एह्वी मनुष्यगतिनामे नगरी तेनेविपे इंद्रादिकदेवताओथी पण जीतायेनही एह्वो अतुल्यपराक्रमी कर्म्मपरिणाम नामे महानिर्दयी राजा ते सर्वसंसारीजीवोने नरकादिरूपें नचावेछे.

तेराजाने कालपरिणति नामे स्त्रीछे तेहने राजाथी पणघणुंनाटकप्रियछे केमके ते स्त्री सर्वसंसारीजीवोने बाल युवान वृद्ध मृतिकादिक विशेष वेपलेवरावीने संतुष्ट थायछे कोइकसमे ते कालपरिणतिस्त्रीयें कर्म्मपरिणामनामे पोतानास्वामीने विनतीकरी के हेभर्त्तार तान्हरापसायथी मने सर्वमनोवांछितछे पणएक पुत्रमहारेनथी ते थायतोभलुं तेसांभली राजाबोल्यो जे महाराचित्तमांपण एहिजवातछे अने ताहरे चित्तमांपण एवातआवीछे माटेहवेबेहुनो मनोवांछितथाशे ते सांभली कालपरिणतिराणी आनंदपामी सुकनगांठेबांधी राजासाथे सुखविलासकरेछे.

एकदासमें सर्वांगसुंदर पुरुष मुखेप्रवेशकरीनेउदरेनिकल्यो तेहने कोइकमित्रेंलीधो एह्वो सुपन रात्रीनेविषे राणीयेंदीठुं ते सुपनराजाने संभलाव्युं तेवारें राजायेंकह्युं जे हेस्त्रीतुझनेपुत्रथाशे पणकोइक धर्माचार्यनेवचने प्रतिबोधपामीने पोतानोसर्वअर्थ सिद्धकरशे तेसांभली कालपरिणतिराणीबोली जे भलेथाओ पछे तेह्नोमनमाने तमकरो. हवेराणीनेगर्भरह्याथी अनुक्रमे धर्मकृत्योकरवाना मोहोला उपना तेमोहोलाराजायें पूर्णकर्या पछेगर्भकालसंपूर्णथयेथके शुभमूहूर्त्ते पुत्रनोज

दृष्टीयें जुएछे एवीउत्तमरीतीजाणी ते वेहुसखिलदागमनी सेवाकरवारही अने नव्यपुरुष निरविघ्नपणेजणेछे तथा मतिज्ञान अवधिज्ञान मनपर्यवज्ञान केवलज्ञानरूप एचारप्रधानपुरुष मनुष्यगतिनगरीनाछे तेपण आनंदपामेछे.

एहवामां एकपुरुष जेहने रासनउपर स्वारीकरावीछे अनेघणीविटंबनाथाते काहलिफूंकाते सदागमनाआगलें निकल्यो तेहनेजोयी करुणारसेकरी प्रज्ञाविशाला बोली जे अरेपुरुष तुंसदागमनुंशरणकर तो ताहरीसर्वविटंबनाटले एवोसांभली ते पुरुषने ज्ञानोदययथो तेयी तेपुरुषें सदागमनुं शरणकर्युं तेवारें सदागमें तेपुरुष नेसनमुखजोयुं एटलेविटंबनानाकरनार सर्वपुरुषनाठा तेदेखी सर्वलोकविस्मयपाम्या अनेते पुरुषपण हर्षसहित सदागमनेसनमुखवेठो.

हवे अगृहीतसंकेतायें ते पुरुषनेपुछ्युं जे हेपुरुषतुंकोणछो अनेताहरो शुंअन्यायछे जेयकी तुजने आवीविटंबनाथयी एवुंसांभली तेसंसारीजीववोल्योजे हुंतस्करछुं अनेमाहरा अन्यायनावातनीगम्य आ परमउपगारीसदागमनेछे तेवारेंसदागमें तेपुरुषनेकह्युंजे एअगृहीतसंकेताने ताहरोवृत्तांत सांभलवानुं कौतुकछे तोतुंएनेताहरीवितेलीवातकहे तेवारें तेसंसारीजीव एकांतेजइ सदागम तथा भव्यपुरुष अनेते वेहुसखियो नेसांभलतां पोतानेवितेलीवातकहेछे.

असंव्यवहारनामे नगर तिहांअनादिवनस्पतिनामे अनंताजीवछे तेनगरनेविषे कर्म्मपरिणामराजाना एकअत्यंतअबोधनामे तथाबीजो तीव्रमोहोदयनामे एवेअधिकारीछे अनेतेनगरनालोक प्रायेंमहाअज्ञानीमूर्छितछे तिहांहुंपणरहेतोहतो एटला मांलोकस्थितिनामे कर्म्मपरिणामराजानीवेहेने तन्नियोगनामे दूतमोकली तेवेअधिकारीनेकहेवराव्युं जे आपणाराजानो सदागमनामे एकशत्रुछे तेमनुष्यगतिनगरीथी लोकने मुक्तिनगरियें मोकलेछे तेफरीआंइआवेजनही तेयीमनुष्यगतिनामेनगरी शून्य थायछे माटे जेटलामुक्तिजाय तेटलालोकोने असंव्यवहारनगरथीतेडावो एममनेक ह्योछे तेमाटे इहांथी केटलाकलोकोने तमेमोकलो अनेएनगररूडीपरेंजालवो.

एहवुंदूतनुंवचन सांभली तेवेहुअधिकारीयें संसारीजीवनीस्त्री जे भवितव्यतानामे तेसर्वकार्यनीकरनारीछे तेहनीसाथेंविचारकरी असंव्यवहारनगरें गोलकनामे असंख्याताप्रासादछे तेएकेकाप्रासादें निगोदनामे असंख्याताओरडाछे तेएकेकेओरडे माहोमांहे परममित्र जे अहार निहारादिकसाथेंकरे एहवाअनंता अनंताजीव वसेछे

पछेतेवेहुअधिकारीयें सर्वजीवोनेजोयी भवितव्यतानेपूछीने मुजनेचलाव्यो अने तेवेअधिकारो तथा भवितव्यतापण महारीसाथेंथयां पछेअमेतिहांथी चाल्यां एटले

न्मथयो राजायें महोटामहोटा महोत्सवकरी शुनवेलायें नव्यपुरुपएह्वुंपुत्रनुं ना
मदीधुं अनेवलीमातायें सुमति एह्वुं बीजुंनामदीधुं.

हवे ते मनुष्यगतिनामे नगरीनेविपे एकअगृहीतसंकेता अने बीजी प्रज्ञाविशा
ला एह्वेनामे वेस्त्रीओरहेछे तेवेहुनेपोतामां सखिपणोछे तेमांअगृहीतसंकेतायें प्र
ज्ञाविशालाने पुछ्युं जे हे सखि आपणीनगरीनोराजा निर्बीजकहेवातोहतो अने
राणीपणवंध्याकहेवातीहती तोतेहोनेपुत्रथयो एमहोटुंआश्चर्यलागेछे तेसांभली प्र
ज्ञाविशालाबोली जेहेबेहेन तुंतो तारानामने अनुसारेंज अबुजदेखायछे केमके स
र्वेजगतएराजाराणीनुं संतानरूपछे एराजाना अविवेकादिकजेप्रधानोछे तेमणे राजा
राणीने दृष्टीदोपनलागे माटे निर्बीज वंध्यानोप्रवाद कर्योहतो तेहवे राणीनाकहे
वाथी प्रधाननेइह्वी पुत्रजन्मनो महोत्सवकरी ने निर्बीज अने वंध्यानो प्रवादटाळ्यो

तेवातसांभळी अगृहीतसंकेतायेंकह्युंजे हेसखीएंवात तें केमजाणी तेवारें प्रज्ञा
विशालाबोलीजे एहिजनगरीनेविपे समस्तजीवोनेहितकारी एह्वो सदागमनामे एक
प्रधानपुरुप वसेछे तेह्नीसायेंमाह्रेघणोस्नेहछे अनेतेराजातथाराणी वेहुनी एकांत
वार्त्तासर्वेजाणेछे वळी तेप्रधान नव्यपुरुपने हितकारी गुणवंतोजाणीने में तेह्नेमह
रीपासेतेडाव्वी परिचयकरावी स्नेहधरी जणवाराख्योछे. ते सदागमप्रधानथी राजा
नो तथा बीजाअविवेकादिकप्रधानोनो अने कामक्रोधादिक चौराटा विगेरेकोइनो
जोरचालेनही माटेतेसदागमना कहेवाथी हुंजाणुंछुं इत्यादिकवार्त्तासांभळी अगृही
तसंकेताबोली जे हे सखिते सदागमनामा प्रधाननोमुजनेदर्शनकराव. तेसांभळी
प्रज्ञाविशाला अने अगृहीतसंकेता एवेहुजणी जिहांघणुंसदागमनोनिवासछे एह्वो
महाविदेहरूप चहुटानीवस्तियें आवीनेजुवेछे तो सदागमप्रधान पोतानाराग़ी वच
ननामाननारा एह्वा अनेकजीवोने प्रतिबोधी कर्म्मपरिणामराजानी विटंबनाथी मू
कावीने अनंतेसुखनुंस्थानक एह्वोजे मोक्षरूपनगर तिहांपहोचाडेछे अने जे पा
पिष्टसदागमनी निंदानाकरनारा तथा सदागमना उपदेशने नथीमानता तेवापुरुषो
ने सदागम उवेखीमूकेछे.

पणकर्म्मपरिणामराजा तेअधमजीवोनासमुदायने निराधार अनाथजाणी ने
कामक्रोध लोभादिक लुंटारापासें तेमने घणीविटंबनाकरावी महानरकादिकबंधीखा
ने नाखी संतापेछे एरीतें तेवेहुसखिओए सदागमनेदेखी परिणामकरी तिहांबेसी
ने जुवेछे तो महाविनयवंत गंनीर अगंज साहसिकादिक अनेकगुणे परिपूर्ण एह
वो नव्यपुरुप ते सदागमपासेंबेठोजणाणे अने सदागमपण तेह्नेसाहसुं परमस्नेह

हष्टीयें ज्ञएने एवीचनमगीतीजाणी ते वेहुसखिसदागमनी सेवाकरवारह्ी अने नव्यपुरुर निरविन्नपणेजणेने तथा मतिज्ञान अवधिज्ञान मनपर्यवज्ञान केवलज्ञा नरूप एचारप्रधानपुरुर मनुष्यगतिनगरीनाने तेपण आनंदपामेने.

एह्वामां एकपुरुष जेह्ने रासनऊपर स्वारीकरावीने अनेघणीविटंबनायाते का हुलिफूंकाते सदागमनाआगलें निकल्यो तेह्नेजोयी करुणारसेकरी प्रज्ञाविशाला बोली जे अरेपुरुष तुंसदागमनुंशरणकर तो ताह्रीसर्वविटंबनाटलसे एवोसांनली ते पुरुषने ज्ञानोदयययो तेयी तेपुरुषें सदागमनुं शरणकर्युं तेवारें सदागमें तेपुरुष नेसनमुखजोयुं एटलेविटंबनानाकरनार सर्वपुरुषनाठा तेदेखी सर्वलोकविस्मयपाम्या अनेते पुरुषपण हर्षसहित सदागमनेसनमुखवेठो.

हवे अगृह्तीतसंकेतायें ते पुरुषनेपुछ्युं जे हेपुरुषतुंकोणछो अनेनाह्रो शुंअन्या यने जेयकी तुजने आवीविटंबनायथी एवुंसांनली तेसंसारीजीववोल्योजे हुंतस्करछुं अनेमाह्रा अन्यायनावातनीगम्य आ परमउपगारीसदागमनेने तेवारेंसदागमें तेपु रुषनेकह्युंजे एअगृहीतसंकेताने ताह्रोवृत्तांत सांनलवानुं कौतुकने तोतुंएनेताह् रीवितलीवातकह् तेवारें तेसंसारीजीव एकांतेजइ सदागम तथा नव्यपुरुष अनेते वेहुसखियो नेसांनलतां पोतानेवितलीवातकहेने.

असंव्यवहारनामे नगर तिहांअनादिवनस्पतिनामे अनंताजीवने तेनगरनेविषे कर्म्मपरिणामराजाना एकअत्यंतअवोधनामे तथावीजो तीव्रमोहोदयनामे एवेअधि कारीने अनेतेनगरनालोक प्रायेंमहाअज्ञानीमूर्छितने तिहांहुंपणरहेतोहतो एटला मांलोकस्थितिनामे कर्म्मपरिणामराजानीवेहेन तन्नियोगनामे दूतमोकल्यो तेवेअधि कारीनेकहेवराव्युं जे आपणाराजानो सदागमनामे एकशत्रुने तेमनुष्यगतिनगरीथी लोकने मुक्तिनगरियें मोकलेने तेफरीआंइआवेजनही तेयीमनुष्यगतिनामेनगरी शून्य थायने माटे जेटलामुक्तिजाय तेटलालोकोने असंव्यवहारनगरथीतेडावो एममनेक ह्योने तेमाटे इहांथी केटलाकलोकोने तमेंमोकलो अनेएनगररूडीपरेंजालवो.

एह्वुंदूतनुंवचन सांनली तेवेहुअधिकारीयें संसारीजीवनीस्त्री जे नवितव्यताना मे तेसर्वकार्यनीकरनारीने तेहनीसायेंविचारकरी असंव्यवहारनगरें गोलकनामे अ संख्याताप्रासादने तेएकेकाप्रासादें निगोदनामे असंख्याताओरडाने तेएकेकेओरडे माहोमांहे परममित्र जे अहार निहारादिकसायेंकरे एह्वाअनंता अनंताजीव वसेने पनेतेवेहुअधिकारीयें सर्वजीवोनेजोयी नवितव्यतानेपूछीने मुजनेवलाव्यो अने तेवेअधिकारो तथा नवितव्यतापण महारीसायेंययां पनेअमेतिहांथी चाल्यां एटले

एकेंद्रियनामे नगरआव्युं तिहां १ पृथ्वीकाय २ आपकाय ३ तेउकाय ४ वाउका य-५ वनस्पतिकाय एपांचपाडाछे तेमां वनस्पतिनोपाडो बेप्रकारनोछे एकसाधारण अनेबीजोप्रत्येक हवे सूक्ष्म अने बादर एनामेजे साधारणवनस्पतिनोपाडोछे तेमां हेथीहुं संसारीजीव नीकलीने पृथिव्यादिकने पाडेआव्यो तेवारें हुंव्यवहाररासीछे जीवकहेवाणो तिहांमने नवितव्यतायें एकनववेद्य कर्म्मसंचयरूप गोलीखवरावीने विविधप्रकारनारूपलेवरावी घणीविडंबनाकरतां तथातेवेहुअधिकारीयोने देखतां ते पांचेपाडामांघणोकालसुधीराख्युं.

एमकरता ते नवितव्यता कांइकमहाराजपर प्रसन्नथयी तेवारें तेनगरथकी मने चलावीने विकलेंद्रियनामे नगरमां आण्यो तिहां १ बेंद्रिय २ तेंद्रिय ३ चोरेंद्रि य एत्रणपाडाछे तेमांमुजने नवीनवी गोलीखवरावी अनेकप्रकारनारूपलेवरावी घणीरीतेंविडंबनाकीधी एम लखोगमेयोनी तथाकोडीकुलें फेरवतांफेरवतां केटलेक कालें तेनवितव्यता प्रसन्नथयी तेवारें तेहांथीमुजनेचलावीने पंचेंद्रियपशुसंस्थान नामेनगरनेविषे आण्यो.

तिहांपणगुटिकानेप्रयोगें हरणी शृगाल व्याघ्र सिंह गजादिरूपें अपर्याप्त पर्याप्त पणे घणोविडंब्यो एमकरतांकरतांफरी नवितव्यताप्रसन्नथयी तेवारें मुजनेपुण्योदय सहचारीनलावीनेकह्युं जेहे आर्यपुत्र घणाकष्टनोगवंता तादृश अध्यवसायसुंदरथ यो माटेहवेतुं मनुष्यगतिनामानगरीनेविषेचाल तेवारेंमेकह्युंवणुंसारुं पछे मनुष्य गतिनगरीयें तरतनामेपाडोछे तेहां जयस्थलनामेनगरनो पद्मनामेराजा तेहनीनंदा नामेस्त्रीनी कुक्षीनेविषे नवितव्यतायें गुटिकाखवरावीने अवताख्यो तेहांअनुक्रमेम हारो जन्मथयो राजायें महोटोमहोत्सवकरी महारुंनामनंदिवर्द्धन एहवुंदीधुं पछे पांचेधावे पालतो तथामातापिताने आनंदवधारतो हुंत्रणवर्षनोथयो.

हवे हुंजेवारें असंव्यवहारनगरथीनिकल्यो तेदिवसथी महारा बेपरिवारछे ए कत्रहिरंग बीजोअंतरंग ते अंतरंग परिवारमध्ये अविवेकता नामे मारीधावहती तेणेमनेजण्यो अनेतेजदिवसें तेणेबीजोपुत्रजण्यो तेहनुंनाम वैश्वानरदीधुं ते वैश्वान रने वैर अने कलह ए बे चरण तथा ईर्षा अने चोरी रूप बे जंघा वली पश्चात्ता प अने अनुपशमतानामे बे शाथल तथा चाडीरूप कटीतट तथा परमर्मोद्घट्टन नामें उदर अने अतिसंतापनामे हृदय तथा खार अने मत्सररूपहाथ वली क्रूरप रिणामरूपकोटी असत्यनापणादिरूपदांत प्रचंडपणुं अने असहजपणुनामे बे कान तामसपणुनामें नासिका रौद्रपणु तथानिर्दयपणु ए बे नामें बे लोचन

अन्याय आचरणरूप त्रिखुणीयुं मस्तक परसंतापरूप मस्तकनाकेश एहवे शरीरें सहित जे वैश्वानर तेहनीसाथे महारे प्रीतियची तेवारें पुण्योदयें अमारावेहुनो मि लादेखीने चित्तरिसालकीधुं अने पुण्योदयें एहवुंविचार्युं के जेजे महारावैरीने तेहनी सायें एनंदिवर्द्धनमिलेछे माटे एथी ए नंदिवर्द्धन घणुंदुःखपामसे तोपणहालतुरत हुं एहनेमूकूंनही एमविचारी पुण्योदय महारेपासें प्रछन्नपणेरह्यो पछेदिवसें दिवसें महारेतोवैश्वानरसायें प्रीतवधतीगयी अने सर्व नानामहोटा महारीआज्ञामां चा लवालागा एमकरतांहुं अनुक्रमेंआठवर्षनोथयो तेवारें महारेपितायें मने बुद्धिसमु द्रनामे उपाध्यायपासें जणवामोकल्युं तिहांगुरुनीपासें पुण्योदयेंकरीहुं थोडादिवस मां समस्तकलाशीख्यो पण वैश्वानरनी सोबतहती तेथी गुरुनोउपदेश कांइपणमा न्युंनही जोकोइहितशिक्षाआपे तेहनीसायें उलटोक्लेशकरुं एमवर्त्ततां सर्वविद्यावि स्मृतथयी अने कोइमहारासामुं वोलीशकेनही एवामांमुजने वशथयोजाणीने वैश्वा नरे क्रूरचित्तनामें वडा मुजनेखवराव्या तेथी वली हुं घणूजवैश्वानरने वशथयो.

हवेएकादालमे एकविदूरनामे विश्वासीपुरुषने राजायेंमहारी वियाजोवाने महा रीपासेंमोकल्यो तेणे जूतावेष्टसरिखुं महारुंशरीरजोयीने राजानेजयीकह्युं पछराजाते वातसांजली महादुःखपामिने बुद्धिसमुद्रनामे उपाध्याय ने तेडीपुछ्युं तेणेपणते मजकह्युं तेवारें राजायें उपाध्यायने फरीकह्युंके जेमए वैश्वानरनोसंगमूके तेउपा यकहो तेवारें उपाध्यायवोल्याजे आपणानगरनेविषे एकजैनमतनोजाण सिद्धपुरु पछे तेहनेतेडीप्रश्नकरो तेतेमनेएनो उपायकहेसे तेसांजलीराजायें जैनमतना ज्ञा नीने तेडीपुछ्युं जे हेस्वामी आमहारो छोकरो नंदिवर्द्धनते वैश्वानरनीसंगतमूके तेवो उपायकहो तेवारें जैनमतानुसारी ज्ञानप्रयुंजीने उपायकहेछे तेराजाप्रमुखसांजलेछे

चित्तसुंदरनामेनगर तेहांशुजपरिणामनामे राजा तेहनी निःप्रकंपतानामेंस्त्रीने सकलजननेंहितनीकरनारी क्षमानामेंपुत्रीछे ते कन्यानीसाथे नंदिवर्धनने पाणिग्रह णकरावो तो वैश्वानरनो संगमूकसे तेसांजलीराजायें मतिधननामा प्रधाननेकह्युं जे तमेजइने तेकन्यानीसायें विवाहमेलवीआवो तेवारें जैनमतज्ञेकह्युंजे हे राजन् वाह्यनगरें तोतमारोजोरचाले पण चित्तसुंदरनगरतो अंतरंगछे तेहांतो कर्म्मपरिणाम राजानो सुजट शुजपरिणामराजानेमित्र कर्म्मपरिणामनी लोकस्थितिनामेंबहेनछे ते सायेविचारकरो कालपरिणतिजे महाराणीतेहनेकहो स्वजावनामेजे कर्म्मपरिणाम नो महाप्रधान तेहनेपूछो तथा अनादिसंसारनीचाल्यिआवेछे एहवी जवितव्यताना मे जे नंदिवर्द्धननीस्त्री तेहनेमनावो तेवारपछी क्षमाकन्यानो तमारापुत्र नं

दिवर्द्धनसाथें विवादथाय एवात सांभली राजाह्मीणथयोदेखीने फरीजैनमतझकहुं के हे राजन् जेअसाध्यकार्यतेनथाय तोफोकटविषादस्योकरवो अनेए नंदिवर्धनने जिहांसुधी प्रछन्नपणे पुण्योदयछे तेहांसुधी एनो पापमित्रजे वैश्वानर ते जेजेमाठुंक रसे तेते एहने नखुंजपरणमसे.

तेसांभली राजायेंचित्तस्थिरकरी जैनमतज्ञने सनमान सत्कारदेयी विदायकीयो बीजेदिवसें राजायें पुत्रनाप्रेमवास्ते जिहांहुंभणतोहतो तिहांविदुरनेमोकलीने कहुंजे हे विदूरतुंजइने कोइक उपायकरी महाराछोकराने वैश्वारनोसंगमुकाव तेराजानुंवचन प्रमाणकरी विदूरमहारीपासें आव्यो तेहने मेंपुछयुंजे हेमित्र तुंकालेकेमनाव्यो ते वारें विदूरबोल्युंजे कालेजैनमतज्ञ राजापासेंआव्योहतो तेणेएक सुंदरयणीरमणी क वातराजानेकही तेहुंसांभलतोहतो माटेतारीपासेनाव्यो तेवारे में तेवार्त्ताविदूरनेपुछी एटलेविदूरेकहेवामांभी तेआवीरीते.

मनुष्यगतिनगरीयें भरतनामेपाडोछे तिहांक्षितिप्रतिष्ठितनामेनगर तेहनो कर्म विलासराजानी त्रणस्त्रियोछे १ शुभसुंदरी २ अकुशलमाला ३ सामान्यरूपा ते मां पहेलीनोपुत्रमनीषी बीजीनोपुत्रबाल अने त्रीजीनोपुत्र मध्यम एवेनामेछे एकदा राजाने आदेशें मध्यमबुद्धि किहांकचाल्योछे अने बाल तथा मनीषी ए बे उद्याने क्रीडाकरवागयांछे तेहांजुवेछेतो एकवृक्षमां पाशबांधीने एकपुरुष अपघातकरेछे ते देखीने तेबेहुकुमर उतावला तेहांजयी तेपाशत्रोडीनाखी अने ते पुरुषनेदुःखनी वातपुछी तेवारेंतेपुरुष दुःखनीवातकहेछे अने ते बेहुकुमरसांभलेछे.

तेकहेछे के महारुंनाम स्पर्शनछे अने महारे भवजंतुनामे एकमित्रहतो ते दर रोज विलेपनादिकें तथा सुकुमालवस्त्रादिकें मृदुशय्यायें इत्यादिकअनेकउपायकरी मुजनेपोषणकरतोहतो एवामां महाराअभाग्यनेलीधे ते महारोमित्रजे भवजंतु ते संतोषसाथेंमिलीने संतोषनोभाइजे सदागम तेहनेमिल्यो अनेतेहनीसाथें भवजंतु नी मित्राचारीथयी तेवारपछिते व्रतलेइ लोचकरावी विषमभूमिकायें शयनकरे जीर्णवस्त्रपहेरे इत्यादिकअनेकप्रकारें स्पर्शनकहेछे जेमुजनेघणोसंतापी वित्रोभकरी सदागमनीआज्ञायें ते भवजंतुनामे महारोमित्र मोक्षपुरीनगरीयें गयो एमसांभला मछे तोहवेहुंनिराधारथयो माटेजीवीनेसुंकरुं.

तेसांभली ने बालबुद्धिनामाछोकरो बोल्यो जे ते गयोतोजवादे हुं तुजनेमहारो मित्रकरीराखीश अने मनिषीयेंतो एमविचार्युंजे सदागम अने संतोषतो परमउप गारीपुरुषछे अने तेणे ए भवजंतुने जे स्पर्शसाथें मित्राचारीहती तेछोडावीहसे मा

टेएनोकांइक अन्यायहसे तोहवे महारे एनीसाथेंमिलवुंनही एहवोचित्तमांजाणी ठानोरह्यो पठे उद्यानथी तेवेनाइ तथात्रीजो स्पर्शनपुरुष एत्रणेजण घेरआव्या तेहां अकुशलमालातो स्पर्शनसाथें बालने मित्रताथयी एवुंजाणीनेहर्षपामी अने शुभसुंदरीयेंतो मनिषीनेवाह्युं जे ए स्पर्शनमहाडुष्टछे माटेएहनीसंगत तुंकरीसनही तथा ठोकरानो कर्मविलासनामेपिताछे तेंतो पोतानाचित्तमां जाणीरह्योके जेठोकरो स्पर्शनसाथें संगकरसे तेहनेहुं विपरीतफलदेखाडीस एरीतेंसर्वकोइप्रवर्त्तेछे.

हवे मनीषीयें तो स्पर्शननी मूलशोधजाणवानेवास्ते बोध एवेनामे पोतानोअं गरक्षक पुरुषछे तेनेतेडावीकह्युंजे तुंस्पर्शननी उत्पत्तिजोइआव तेसांभली बोधेंपोता नो प्रभावनामेदूतमोकली ते स्पर्शननीशोधकरावी पणबाह्यनगरेतो केहांपणतेह नी शोधमिलिनही तेवारें अंतरंग राजसिचित्तनामेनगर तेहांमहामोहनोपुत्र राग केसरीनामेराजा तेहनो विषयाभिलाषनामे प्रधान तेणेराजानी आज्ञायें इंद्रादिक थीपण जेमनीआणलोपायेनही एहवोउपायकरवावास्ते १ स्पर्शन २ रसन ३ घ्रा ण ४ चक्षु ५ कर्ण एपांचेंदुर्जयमानपुरुष ते राजानासेवावास्तेआ करीमूक्याछे तेथी सर्वलोकनेविषे ते राजानीआज्ञा अखंडप्रवर्त्तेछे इत्यादिकवृत्तांत ते विषयाभिलाष नोदूत विपाकनामेछे तेहनामुखथी बुद्धनोदूतजे प्रभावनामेछे तेणेसांभल्युं तथातेस मे रागकेसरीनामेराजा ते मिथ्याभिमानादिकरथ तथा ममतादिकहाथी अने अज्ञा नादिकअश्व वली चपलतादिकपायदललेइ महाकटकसहित स्पर्शनादिकनाजयनोक रनार एहवोजे संतोष तेउपरें विषयाभिलाषादिक प्रधानपुरुषें परवशोथको महा मोहसाथे रागकेसरीराजाचढेछे तेसर्ववात प्रभावेंदीठी अने पोतानास्वामी बोधनेक ही बोधेजइने मनीषीनेकही एरीतें मनीषीयेंस्पर्शननी शोधकहडावी ने स्पर्शननो मूलथीसंगमूक्यो अने एनोभाइ बाल तेतोमूर्खछे माटे घणुंज स्पर्शनसाथेसंगकरेछे

हवे बालनीमाता अकुशलमालाछे तेणेपणपोताना पुत्रने जेम स्पर्शनसाथें अ त्यंतप्रीतिथाय तेवोउपाय तेणेमंत्रशक्तियेंकर्यो एमप्रवर्त्ततांथकां एटलामां मध्यम बुद्धिपण किहांकथीआव्यो तेणेस्पर्शननेदेखी बालनेपुछ्युं जे एकोणछे तेवारेंबालें कह्युंजे ए महारोसुखदायी परममित्रछे तेसांभलीने मध्यमबुद्धीयें मनिषीनेपुछ्युं जे आस्पर्शनकोणछे तेवारेंमनीषीयेंकह्युंजे एमहादुखःदायकडुरात्माछे जोतुंतारो भलुं वांछवानीचहनाराखे तो ए स्पर्शनसाथेंकोइदाडे संगकरीसनही तेसांभलीने मध्यमबु द्धीयें पोतानी सामान्यरूपानामे मातानेकह्युं जे बाल तो स्पर्शननेसारुंकहेछे अने मनिषी तो स्पर्शननेनिंदेछे माटे हुं ए स्पर्शनने भलुंकेनहीभलुं.

तेवारेंमाताबोली के परीक्षाकरीजे पक्ष्बलवंतहोय तेतुंश्रादरजे पणहमणा मैथुनयुगलनीपरें थोडोविलंबकर तेवारेंमध्यमबुद्धीयें मातानें पुठ्युंजे तेमैथुनयुगल कोणठे हवेते सामान्यरूपा मैथुनयुगलनी वार्त्ताकहेठे अनेमध्यमबुद्धि सांनलेठे.

मनुष्यगतिनगरीसरिखुं एकनगरठे तेहांऋजुनामेराजाठे तेहनीप्रगुणाराणीने मुग्धनामेपुत्रठे तेहनीश्रकुटिलानामेस्त्रीठे एकसमे मुग्ध अने अकुटिला एवेस्त्री नर्त्तारनोजोकुंचद्यानेरमवागयुंठे तिहांजूदीजूदी पुष्पादिकनीक्रीडाकरेठे एटलामां श्रा काशमार्गे कालज्ञनामेदेवता अने विचक्षणानामेदेवीजायठे तेवेहुने मुग्धतथा अकुटिलासाथें नोगकरवानी वांठाथयी तेवारें ते देवता देवीयें परस्पर कपटरचनाकरी देवतायें मुग्धनुंरूपलेइ अकुटिलानेतेडी कंदलिगृहनेविषे लइगयो एटलामां देवीप णअकुटिलानुंरूपलेइ मुग्धनेतेडी तेहीजकंदलीगृहनेविषेश्रावी.

हवेमुलगाजे मुग्ध अने अकुटिला तेवेहुजणाश्रो चाररूपदेखोने जाणवालागा जे एवनदेवतायें आपणावेवे स्वरूपकस्याठे हवेतेहांथीचारेजणराजमंदिरेश्राव्या तिहांराजाराणीबेहुयें वे मुग्ध अने बे अकुटिलामिलो चारजणदेखीने विचार्युंजे कां इकदेवप्रयोगठे एहवुंजाणीने पुत्र तथावधूते न्यायप्रवर्त्तेठे एमठेराव्युं.

हवे एकदाकालज्ञदेवतायेंजोयुंजे श्रा बीजीअकुटिलाकोणठे अनेविचक्षणादेवीयेंपण ज्ञानेकरीजोयुं जे आवीजोमुग्धकोणठे तेवारें कालज्ञेंदेवीनुंस्वरूपजाण्युं अने विचक्षणायेंपण देवतानुंस्वरूपजाण्युं तेथी बेहुनेपरस्परें क्रोधउपनो पठे देवतायेंमुग्धनेहणवानी वांठनाकरी अने विचक्षणायें अकुटिलानेहणवानी वांठनाकरी वली क्षणेकवारें पोतेंपोतानो अन्यायजाणी तथा परस्परेंअनर्थथातोजाणी बेहुजणा मो हनपणेरह्याठे एटलामां मोहवलयनामा उद्याननेविषे बहुशिष्यपरवर्यां ज्ञानादिक गुणे संपूर्ण एहवाप्रतिबोधकनामे आचार्यपधास्या तेवातसांनलीने राजादिकसर्वलो क परिवारसहित आवीआचार्यनें तथाअनुक्रमे सर्वसाधुनीमंमलीनेवांदीने धर्मस नायेंबेठा तेमने आचार्येंधर्मोपदेश देवामांडयुं तेआवीरीते.

राधावेधनीपरेंडुःकर एहवो श्रामनुष्यनोअवतारपामीने संसारनुंस्वरूप अधम जाणी विषयाभिलाषपरिहरी अनंतसुखपामवानोपदजे मोक्षमार्ग तेहनो उपायजे ज्ञानमार्ग अनेक्रियामार्ग तेहनेविषे हेनव्यजीवोतुमेप्रवर्त्तो इत्यादिकधर्मदेशना सांनलीने ते कालज्ञदेवता अनेविचक्षणादेवी सम्यक्तपाम्या एटले एवेहुनाशरीरमांथी रुलरकपरमाणुघटीने एकपूतलीनिकली तेवारें ते देवता तथा देवी बेहुजणरुदन करता गुरुनेपगेलागी पोतपोताना अन्यायकहेवालागा तेवारेंगुरुयेंकह्युंजे हेमहानु

नावो तुमेतोनिर्मळजलो पणआपृतलीने नोगतृष्णाकहियें तेहने वधारवायकां तुमे ए अन्यायआचर्यो तेवारें तेनेंकुंछोल्याजे हेस्वामी एनोगतृष्णामिटे तेउपायकहो ते वारेंगुरुयेंकस्युं जे तुमेस्त्रीनुंस्वरूप विपरीतनावेंविचारी विकारनेपरिहरोतो तेहथीआ नवेंतो एनोगतृष्णा मिटसेनही पणकर्वेलथासें वाकीआवतेनवेंमिटशे तेमाटेसम्यक्त पालो कालविलंबेंजलुंथासे इहां कजुके० सरलस्वनाविराजासमजवो.

कजुराजातथा प्रगुणाराणीयें एसर्ववाततांनलीने विचारवालागाजे एवेंछुनेपुत्रप णे तथावडुपणेमान्या एमिथ्याछे तथा मुग्ध अने अकुटिलायेंपणविचार्युं जेआ शी लखंडनकर्युं तेमहोटोअन्यायथयो एमचारेजणा पश्चात्तापकरेछे एटलामांवलीते चा रेनाशरीरथीएकतेजवंत आनंदनोकरनार उज्वल एकबालकनिकल्युं फरीएककालुं बालकनिकल्युं वलीतेकालाबालकमांथी बीजुंएककालुंबालक निकलीने वधवाला गुं तेहनेउज्वलबालकें मायामांमारीनेनानुजराख्युं तेवारें राजाप्रमुखने गुरुयेंकह्युं जेहे महानुनावो आजे रुलबालकनिसर्युंते अज्ञानकहियें अने तेमध्येथी वलीबी जुं रुलबालकनिसर्युंतेपापकहियें तेअज्ञानेकरीपापनीवृद्धीथयी पणआउज्वल बा लकजे छे तेसरलपणुंकहियें माटेएणे पापवधवादीधुंनही हवेधर्मकरोके जेथकोन लुंथाय तेसांनली राजाप्रमुख चारेजणे महाआनंदेंकरी दीक्षालीधी पोतानास्वार्थ नी साधनाकरी हवेतेकालझदेवता तथाविचक्षणादेवीयेंजोकालविलंबकर्यो तोगुरु मिल्या अने धर्मप्राप्तिथयी एवातकहीने तेसामान्यरूपाली पोताना मध्यमबुद्धिपुत्र नेकहेछे जे तुंपणकालविलंबकरी परीक्षाकर एमसांनली मध्यमबुद्धिपरीक्षाकरेछे

हवेकोइकवेलायें वसंतकतुनोओछवआव्योछे सर्वनगरनालोक कामदेवनीपूजायें जायछे तेवारें तेबालनामापुत्र पोतानोस्पर्शननामा मित्रनीसाथें वसंतनुंकौतुकजो वा चाल्यो मध्यमबुद्धिपण तेहनीसाथेथयो.

हवे तेबाल लोकोनोवसंतोत्सवजोतोथको कामदेवनामंदिरेंपहोतो तेहांजेछेका ए माहेलीबाजुयें कामदेवनीसुकुमालशय्याछे तेहांगयो तेवारें शय्यानो स्पर्शथयो तेस्पर्शननेप्रनावें बालने गुरुनीशिक्षाआक्रमीनही तेज्ञानतोविसरीगयुं अने इंद्रि यनेपरवशपणे मूर्खथयीसुतो अने मध्यमबुद्धितो बाहिर तेहनीवाटजोतोथकोवस्यो छे एटलामां एहिज क्षितिप्रतिष्ठितनगरनो जेमकर्म्मविलासनामे अंतरंगराजाछे तेम एनगरनोबाहिरंग शत्रुमर्दननामेराजाछे तेहनीमहारूपवंत मदनकंमलीनामेस्त्रीछे ते राणीपणइहां कामदेवनीपूजायें आवीछे माटे अंदरजइ शय्यापूजवागयी तेवारेंते शय्याउपर बाल सुतोहतो तेहनेते मदनकंमलीनोस्पर्शथयोतेथीघणो विकलथयो

थको तेशय्यायें तडफडवालागो एटलामांते शय्यानोरक्षक व्यंतरदेवता आव्योते वालनेसुतेजोदेखीकहेवालागो के अरेपापिष्ट आकामदेवनीशय्यायें सुंसुतोछो एम कही तेउपरेंक्रोधकरी लोहनीशृंखलायेबांधी महाविडंबनाकरी पछेसर्वलोकदेखतां ते हनेधसडीने लोहनामुग्दरेंहणवामांमयो

तेवारें मध्यमबुद्धीयें बालनीएवीअवस्थाजोइ नाइनास्नेहवास्ते घणोवनयप्रतिपत्तिकरी ने व्यंतरपासेथी बालनेमूकावी घरेंआवीमध्यमबुद्धीयें पूछयुंके नाइतुजने किहांकिहांदूखेछे तेवारेंबालबोल्योजे मुजनेमात्र मदनकंमलीनो विरहथयो तेहिजड खेछे बीजुकांइपणदुखतुंनथी तेवारेंमध्यमबुद्धीयेंवाख्यो जे एतोराजानीस्त्रीछे माटेते हनोसंगतुं शावास्तेवांछेछे तेवारेंबाल क्रोधेकरीबोल्युंजे ताहरेसुंछे महारामांशक्ति छे तो हुं अवश्य मदनकंमलीनो संगकरीस तेसांजली मध्यमबुद्धिमौनपणेरह्यो।

हवेरात्रीथयी तेवारें बाल मदनकंमलीनामेराणीना संगनीइच्छायें बाहिरनिकल्यो तेवारेंबालनेजातोदेखी मध्यमबुद्धिपण स्नेहवास्ते तेहनीपछवाडेथयो एटलामां एकविद्याधर ते बालनेउपाडी आकाशमार्गेलेइचाल्यो तेवारें बालें पुकारकखो पण मध्यमबुद्धि नीचेरह्योमाटे तेहनोजोर तेविद्याधरसाथें चाल्युंनही पणनीचेपृथ्वीयें चालतो तेविद्याधरनी पछवाडेथयो आगलचालतो महाअटवीमांपडतो क्षुधायें ह पायेंतथा कांटाप्रमुखें महाकष्टनोगवतो सातमें दिवसें कुशस्थलनगर पासेंआव्योपण बालनी तो शोधमिलीनही तेवारें मध्यमबुद्धि दुःखनोमाखो एककुवामांपडवालागो

एटलामां नवितव्यतानेवसे एकनंदननामेपुरुष तिहांजतावलोआवीने मध्यमबुद्धीने कुवामांपडताथका वाखो अनेतेहनेदुःखनीवातपूछी तेवारेंमध्यमबुद्धीयें बालनोहरणथयो तेसर्ववार्त्ता कहीसंनलावी तेसांजली नंदनबोल्योजे आनगरनो हरिश्चंद्रराजाछे तेहनोरतिकेलीनामे एकविद्याधरमित्रछे तेणे एराजानेकोइ शत्रुपराजव करीशकेनही तेमाटे घणीक्रूरविद्यासिखवीने छमहीनाअधी तेविद्यानोसाधनकरी स धावीने तेहनेसातदीवसथया हमणास्मशानजूमीयें तेहनोमित्रजेविद्याधरछे तेएक पुरुषनेलाव्योछे तेपुरुषना मांसे तथा रुधिरेकरीने विद्यानी अधिष्ठायकदेवीआगलें राजा आहुतिकरेछे हालतेपुरुषमृत्युतुल्यछे पणराजायें मनेसोप्योछे माटेजो तेहि जताहशेनाइहोयतो उलख एमकहीनेते नंदने मृतकसरिखो पुरुषदेखाड्यो तेहने मध्यमबुद्धीयें ओलख्यो तेवारें विनतीकरी नंदनपासेथीतेपुरुषमांग्यो तेवारें नंदने कह्युंजे हजीआजनोदिवसराजाने एपुरुषनोकामछे पणपरउपगारमाटे आपुरुषहुंत

नेआपुंछुं पणतुंजतावलो इहांथीलेइजा तेसांजली मध्यमवुद्धि तेवालनेखंधेउपाडी पोतानानगरेंआव्यो तेहनाशरीरने औषधादिकेकरी समाधीकरी.

मध्यमवुद्धीयें पुछ्युंजे नाइतें महाकष्ट नोगव्युं माटेहवेपरस्त्रीनी वांछनाकरीस नही तेसांजली वालक्रोधेकरीवोल्युंजे तुंतो मनीषीनोपक्षपातीछो माटेरे मूर्खकोणें तुजने कह्युंहतुं जे तुंआकष्टमांथी मनेमूकावजे म्हारेतोजिहांसुधी मदनकंदलीनो समागमनथाय तिहांसुधी एमाराप्राणनेपण शत्रुतुल्यलेखवुंछुं इत्यादिक वालनाव चनसांजली मध्यमवुद्धीयें विचार्युंजे एदुष्टनेस्पर्शनेंद्रिय मिल्यामाटे पापात्माथयो तोहवेंहुंएनो संगमूकुं एमविचारी मध्यमवुद्धि मनीषीनेआवीमल्यो अनेवालनी सर्व वातकही तेसांजली मनीषीयेंकह्युंजे एवातहुंपण सर्वजाणुंछुं केमके जेवारेंवालने विद्याधरेंहर्यो तेवारेंवालें पुकारकर्यो अनेतुंपणपोकारकरतो पछवाडेदोड्यो तेथीलो कसर्वेजाग्या अनेपरस्परें वातोकरवालागा जे वालनेकोइक परउपगारीपुरुषेंहर्यो तेघणुंसारूंथयुं हवेजोएवालने हणवानीवातसांजलीयेंतो अत्यंतनलुंथाय वलीको इकएमवोल्युंजे मध्यमवुद्धितो जलोजछे पणएचंमालना स्नेहवास्ते हेरानथायछे वली कोइकें एमकह्युंजे मध्यमवुद्धिजोसाधुहोयतो मनीषीनेकांमलतुंनथी एवीएवीवातोलो कोकरताहताते मेंसांजलीने एसर्ववातमें मारापिता कर्म्मविलासनेकही तेवारेंतेपणक हेवालागो के जे माणसए स्पर्शननीसोवतंकरशे तेमाणशथी हुंघणोविपरीतचालीस.

हवे वालनीमाता अकुशलमाला तथाएनोमित्र स्पर्शन तेणेवालनेपुछ्युं के जो अमारोप्रनावकहेवोछे तेवारेंवालहुंकारोकरीनेवोल्युंजे हातमारोरूडोप्रनावछे एम करता केटलाकदिवसवितीगयां इहांमध्यमवुद्धीयेंतो सर्वथा वालनोसमागममूक्यो जलें वलीएकादासमयें ते वाल मदनकंदलीनीवांछनायें रात्रेंवाहिरनिकली राजमंदि रमांप्रवेशकरी जेहांराजानीशय्याछे तेहांआव्योदैवयोगेंकोइयें प्रवेशकरतांजाण्युंनही अनेरात्रपणहजीघणीवितीनथी मदनकंदलीतो शृंगारपहेरवागयीहती एटलामांवा लशय्यादेखी तेनाउपरवेंगे अने राणीनीवाटजूवेछे एटलामां शत्रुमर्दनराजाआव्यो तेणेवालने देखी अन्यायीजाणी पोताना विनीतपणनामें सेवकनेतेडी तेनाहाथें ते वालनेलोहयंत्रेंवंधावी आखीरात्रनारकीनीपरें विटंवनाकरावी प्रातःकाले गधेडाउपर चडावी चोराशीचहुटेफेरवी हणवानीआज्ञा राजायेंदीधी नगरनालोक परमआनंदपा म्या हवे वालने विटंवनाउपजावीगले पाशवांधी राजानासेवकपाछावल्या एटलामां न वितव्यतानेवशें पाशत्रूटो तेवारेंवालहेठेपड्यो पछे सावधानथयी तुरतपोताना घरे आव्यो तिहांप्रछन्नपणे रहेवालागो हवेकेटलाकदिवसपछि तेनगरना निजचित्तविल

लित नामाउद्यानेविषे सकलगुणेसंपूर्ण एहवा प्रबोधन रतिनामे आचार्यपधाख्या एटलेते गामनोराजा परिवारसहीत तथाप्रजालोकसहीत शुनसुंदरीयेंपरवलोयको मनिधी तथा मध्यमवुद्धीप्रमुखनेसाथेलेइवांदवाआव्यो वालपणतेदिवसें स्त्रीपुंना रूपजोवासारूं तेहांआव्यो हवेगुरूधर्मदेशनाआपेछे.

हेनव्यप्राणीओ जेहनीआदिनथी एहवासंसारमां घणोडुर्लन मनुष्यनवपामी १ स्पर्शेनेंद्रीय २ रशनेंद्रीय ३ घ्राणेद्रीय ४ चक्षुइंद्रीय ५ श्रोतेंद्रीय एरीतेएपां चेंइंद्रीउं वशकरवानेडुर्लनछे एइंद्रीओनापरवशपणे जीवअनंतडुःखपामेछे तेमाटे ए इंद्रीयोनेजीतो तेवारेंराजायें पुछ्युंजे हेस्वामी इंद्रीयजयनाकरनारा आसंसारमांको इहछे तेसांनलीगुरुयेंकह्युंजेछे केमके मनुष्यचारप्रकारनाछे १ जघन्य २ मध्यम ३ उ त्कृष्ट ४ उत्कृष्टतर तेमां जेसदागमनेसंबंधे सतोपराखी स्पर्शनेंद्रीयादिकना अधम विपाकजाणी इंद्रीयनाजयनेअर्थेप्रवर्त्ते तेने उत्कृष्टतमकहियें एवोगुरूनुंवचनसांन ली मनीषीयेंविचार्युं के जेजीवेसंतोपआणी सिद्धांतनेअनुसरी स्पर्शनेंद्रियजीत्युं तेप्राणीउत्कृष्टतमजाणवा वलीगुरुबोल्याजे स्पर्शनेंद्रियादिकनी शुद्धीजोवरावी एने रागद्वेपनासंबंधीजाणी अवगणनाकरी इंद्रियनोपोपकरेनही तेहने उत्तमकहियें एवो गुरुनुंवचनसांनली वलीमनीषेंविचार्युंजे तेरीतेतोमेंकर्युंछे माटेहुंउत्तमछुं.

फरीगुरुबोल्याके जेप्राणीपंमितनावचनथी स्पर्शनादिकइंद्रियना अधमफलजा णीने जेपुरुपचित्तमांसंदेहआणे अनेस्पर्शनादिकना लोलपीजे मनुष्य तेहनीविमंब नादेखीने पछेठेकाणेआवे तेमध्यमपुरुपकहियें एवोगुरुनुंवचनसांनली मनीषीयेंवि चार्युं के तेतोमारोनाइ मध्यमने मध्यमवुद्धीजकहियें केमके ते बालनुंकष्टदेखी पो तेंपणकष्टपामो कालविलंवकरी ठेकाणेआव्यो.

वलीगुरुयेंकह्युंजे स्पर्शनादिकइंद्रियना मागफलनो जेआस्वादनकरे महाविमंबना नोगवतोहोय तोपणतेइंद्रियनो नोगमूकेनही तेहने जघन्यपुरुपकहियें तेसांनली फरीमनीषें विचार्युंजे ते तो बाल जघन्यपुरुपकहियें केमके एटलीविटंबनाथयी तो पण ते बाल स्पर्शनेंद्रियनो संगमूकतोनथी एरीतें राजाप्रमुखेसर्ववात गुरुनामुख थी सांनली तथामदनकंदलीयें पणएसर्ववात गुरुमुखेसांनली पण बालेंतो मदन कंदलीनेदीठी तेहनो नखथीमांमीने केशासुद्धी वर्णवकरवांमांवखतगयो तेथीकरी ने कांइपणधर्मोपदेश बालेंसांनल्युंनही.

एहवामां एअनुमर्दनराजानो एकसुवुद्धिनामे प्रधानछे तेणेगुरुनेपुछ्युंजे एचारप्र कारनापुरुरतमेंकह्या तेहोमांसुंनेदथयो तेवारेंगुरुयेंकह्युं जे उत्कृष्टतरतो सर्वइंद्रिय

नोजयकारी केवलमोक्षपंथेजप्रवर्त्ते तेमाटेतेजूदोकह्युं अने जघन्य मध्यम तथा उत्कृष्टनातो कर्म्मनेविचत्रपणेजेदछे तेमाटे एत्रणेनो जनककर्म्मविलासराजा अनेते कर्म्मनीजे शुभपरिणति तेहनेजशुभसुंदरीराणीकहियें तेजेकांइ उत्कृष्टमनुष्योछे ते हनी जननीकहियें अनेजे अशुभकर्म्मनीपरिणतिते अकुशलमाला कहियेंते जघन्य पुरुषोनी माताकहियें अनेजे शुभाशुभकर्म्मनी परिणति ते कर्म्मनी सामान्यरूपा स्त्रीकहियें ते मध्यमपुरुषोनी माताकहियें एहवागुरुना वचनसांभली मनीषीयेंचिं तव्युं जे गुरुयेंतोअमारो चरित्रपणकहीदेखाड्युं एमविचारेछे एटलामांते बालें स्प र्शन अने अकुशलमालाना परवशपणे राजादिकना भयअवगणीने सर्वलोकने उवेखीनिर्लज्जपणे जेहां मदनकंदलीउभीछे तेहां कामांधथयी दोडतो दोडतोआ व्यो तेदेखीलोकोयें हाहारवकर्यो राजायेंपणक्रोधदृष्टियें जोयीने ओलख्योके अरे एतो पापात्माबालछे तेजाणी राजायें हुंकारोकर्यो तेवारेंबालनाशीगयुं पणदोडवा नीगति भंगथयी तेथी लांबोजयी पृथ्वीउपरपड्यो तेवारेंमनीषीपोतानाभाइनो एह वो अधमचरित्रदेखी लज्जापाम्यो अने बीजो मध्यमबुद्धिनाइछे तेपणलज्जापाम्यो एट लामांतेबालना शरीरमध्येथी एकपुरुषनिकली दूररह्यो तेवारेंराजायें गुरुनेपुछ्युंजे हे भगवन् एदुरात्मायें आटलालोकदेखतां एहवोदुराचार केमकर्यो तेवारेंगुरुबोल्या के हे राजा आपुरुषजे बालनाशरीरमांथी निकलीने वेगलोरह्योछे ते स्पर्शनछे एस्पर्शन ना वशपणाथकी एणे एअन्यायआचर्योछे अनेअकुशलमालाजे अशुभकर्म्मनीपरण तिते एहनीमाताछे तेनेवशें एमूढथयोथको शत्रुभूतजेस्पर्शन तेहने मित्रकरीमानेछे.

तेवारेंफरीराजायें पुछ्युंजे हेस्वामी तमारेपसायें पण एधर्मपाम्योनही तेशुंकार णसुं तेवारेंगुरुयेंकह्युंजे हे महानुभाव जे अत्यंतपुण्यना धरनार श्रीतीर्थंकरदेवाधि देव तेहनाउपदेशथी समवरसणनेविषे पण नित्यविरोधी निबडकर्मनावशथकी घ णाजीवो धर्मपामतानथी तोहे राजन् इहांधर्मनपामे एमांस्योआश्चर्य तेवारें सुबु द्धिप्रधाने कह्युंजे सत्यछे गुरुजी जेमने सिद्धांतनावचनउपर आसताहोय तेए बा लप्रमुखनीवातोथी कांइपण आश्चर्यपामेंनही.

वलीराजायेंकह्युंजे हे भगवन् हमणा आसवैसना धर्मोपदेश सांभलवाआवीने माटेहुंतो एदुष्टनेगारनेमूकुंछुं पणआगलजातां एनाशाहवालथासें तेकहो तेवारें गुरुबोल्याजे हेराजन् ए बालअहिंआथी नाशे ते कोल्लागसन्निवेसें एक सरोवरने तेमांकोइचंडालणीने जीलतीदेखी भोगनीवांछायें चंडालणीनीपासेंजयी बलात्कार करसे तेवातसांभली तेचंडालणीनोभरतार चंडालआवीने एनेबाणेहणसे तिहांथीमृ

स्वामी नरकादिकगतिना घणाडुःखपामसे एवातसांजली फरीराजायेंपुरुयुंजे हेस्वामी एबालनी माता अकुशलामाला तथाएनो मित्र स्पर्शन एबेहुकिहांजसे तेवारेंगुरुयेंकह्युंजे वलीइहांना लोकमध्येआवसे. फरीराजायेंपुरुयुंजे ए अकुशमाला तथा स्पर्शन शीरीतेंआपणनेमूके तेहनोउपायकहो तेवारेंगुरुयेंकह्युंजे एनेअप्रमादरूपयंत्रथीपीलो तोसर्वसिद्धीथाय फरी राजायेंपुरुयुंजे अप्रमादयंत्रतेकोनेकहियें गुरुवोल्याजे कोइपणजीवने लिगारमात्रपणपीडाकरियेंनही तथा जूठोबोलीयेंनही अदत्तवीजकोइनोलहियेंनही नववाडेसहितब्रह्मचर्यपालवुं समस्तपरिग्रहनो त्यागकरवो धर्मोपकरण तथाशरीरनीपण ममताकरवीनही रात्रीभोजनकरवुंनही मात्रविशुद्ध आहार संयमयात्रानेअर्थेंग्रहवुं पांचसुमति त्रणगुप्ति एआठप्रवचननीमाताछे तेपालवी विविधप्रकारना अभिग्रहधारवा कुमित्रनोसंगपरिहरियें उचितमर्यादा उलंघीयेंनही लोकमार्गनीअपेक्षाकरियेंनही गुरुजननेमानियें तथा गुरुनीआज्ञायेंचालियें सिद्धांतसांभलियें तथाद्रव्यादिपदार्थें धीरजपणोअवलंबियें चित्तनेउन्मार्गे प्रवर्त्तवाथी तुरतपाछुंवालियें कोइपणदूषणलागेतो तेहनेप्रयत्नकरी निवर्त्तावियें निःसंगपणेचित्तराखियें परमात्मानुंध्यानधरियें योगसाधनकरियें शुक्लध्यानध्यायियें आत्मातथाशरीरने भिन्नपणे चिंतवियें इत्यादिकनेअप्रमादयंत्रकहियें एवीगुरुनीवाणी सांभली मनीषीयेंकह्युंजे हेस्वामी मुजने एअप्रमादयंत्रयोगह्योयतो पसायकरो.

तेवामांराजायें मनीषीसांमुजोइने गुरुनेपुरुयुंजे हेभगवन्जी एकोणछे तेवारेंगुरुयेंकह्युंजे हे राजन् जेमतमे एनगरनाराजाछो तेम तमाराथीअधिक तमारुंराज्य लेवाने पण समर्थ एहवो अंतरंगनो कर्मविलासनामेराजाछे तेहनीशुभसुंदरीनामेस्त्रीनो आमनीषीनामेपुत्रछे तेमहारीपासेथी दीक्षालेवानीप्रार्थनाकरेछे ते सांभली मध्यमबुद्धीयें गुरुनेकह्युंजे हे स्वामी ए अप्रमादयंत्रतो चारित्रनेकहियें तेतोमहाराथी लेवायनही माटेमुजने श्रावकनोमार्ग उपदेशो तेसांभली राजायेंपणकह्युंजे हेस्वामी भलीवातछे तेश्रावकनोधर्मसुंछेतेकहो पछेगुरुयें बारव्रतरूप श्रावकनोधर्म उपदेस्युंते श्रावकनुंव्रतराजायें तथामध्यमबुद्धीयें सांभलीने बेहुजणायें आदर्युं पछे मनीषीने गुरु दीक्षादेवानेउठ्या तेवारें राजायें कह्युंजे हेस्वामी महारोमनोरथछे जे हुं मनीषीनो दीक्षामहोत्सवकरुं तेवातसांभली गुरुतो मौनपणेरह्या तेवारें सुबुद्धिप्रधानबोल्योजे हे राजन् एमहोत्सवकर्युं तेतो द्रव्यस्तवछे माटेगुरु उपदेशथकी अनुमोदनाकरे पणसाक्षात् आदेशआपेनही तेमाटेतमे एप्रार्थनामनीषीनेकरो तेवारेंराजायें मनीषीने प्रणामकरी पोतानोमनोरथकह्युं तेसांभली मनीषी

ने उत्सवनीइछानथी तोहेपण महापुरुषना मनोरथनो भंगकरवो नही एहवुंजा णी मनीषीयेंआदेशआप्यो हवेराजायें महोटाआमंबरे मनीषीने देवपूजाकरावी पछेहाथीउपरचढावी छत्रधरी महोटोदानदेतायका निर्घोषवाजीत्रवाजते सर्वलोक नेआनंदउपजावतां घरेतेमीलाव्या बंदीवानोने मूकीदीधा वलीमदनकंमलीयें यथा विधे मनीषीने मज्जनकरावी आजरण विलेपन वस्त्रादिकें सत्कारकरी विधियेंसहि त जोजनकराव्या पछेराजायें पोताना सुबुद्धिप्रधाननेकह्युंजे धन्यछे ए मनीषीने जे गुरुनेवचने संसारने अस्थिरजाणी चारित्रअंगीकारकरेछे तिसांजली सुबुद्धीयेंकह्युं हामहाराज जेलघुकर्मिहोय तेनेएहवीसामग्रीमिले.

तेवारेंराजायें सुबुद्धिप्रधानने एकांतेकह्युंजे एमनीषीने स्त्रीनो तथा धननो अने रा ज्यप्रमुखनो लोजदेखाडी केटलाकदीवसशुद्धीराखो तोपछेहुंपणएनीसाथें दीक्षाआ दरुं तेसांजली सुबुद्धिप्रधानवोल्युंजे हे राजन् एमनीषीउत्तमपुरुषछे ए संसारनासुख नेतो मृगतृष्णासमान गणेछे अनेहमणाएणे ताहरामनोरथमाटे आठलोकालविलंब कर्यो तोहवे एहनेकेमअंतरायकरियें एवोसुबुद्धिप्रधाननो वचनराजायें मानीने ज्यो तिषीतेडावी मुहूर्त्तजोवराव्युं तेवारें सिद्धार्थनामा ज्योतिषीयें कह्युंजे आजथी नवमें दिवसें उज्वलत्रयोदशीयें शुक्रवारें उत्तराजाद्रपदनक्षत्रें शिवयोगें सवाप्रहर दि वसचढते वृषलग्न निरविघ्नमुहूर्त्तछे पछेतेनिमित्तीयाने राजायेंघणुंदानआपी विदा यकर्यो वीजादिवसथीमांडी जैनचैत्यमां राजायें महोटामहोत्सवमंमाव्या अष्टाइम होत्सव थयीरह्यापछे मुहूर्त्तदिवसआवेथके मनीषीने हाथीउपरचढावी राजायेंछत्रध सुं चतुरंगीसेनासज्जकरी जैनशासननीशोजा वधारवानेअर्थे तथा बहुलोकोने मा र्गानुसारी करवावास्ते अने जव्यजीवोने वोधवीजनिर्मलकरवामाटे सर्वनगरसिणगा र्युं एम महोटीऋद्धीयें महोटे आमंवरें घणालोकेंअनुमोदते श्रावकश्राविकायें आनं दाश्रुजरेलोचने परवर्योथको प्रमोदशेखर चैत्येंआवीदेवपूजाकरीनें पछेमनिषीप्रमु ख सर्वगुरुपासे आव्या तेहांमहोटा आनंदसहित वधतेतेजे प्रसादथाते संसारने असारजाणी मेरुपर्वतनीपरे थिरथयी मनीषीयें चारित्रआदर्युं गुरुयेंधर्मदेशना आ पी जे हे महानुजावो आ अनंत सुखास्पद एहवाचारित्रमार्गने जाणीजुजी पछे कोणपुरुषसंसारउपरें रागधरे राज्यनोलाजछते चांमालपणुं कोणअधमपुरुषवांछे तो सर्वदुःखदारिद्रादिकनो विनाशकरनार एचारित्रछे अनें चोथुंपुरुषार्थ जे मोक्ष तेह नुं परमसाधनछे इत्यादिक सविस्तारपणे धर्मदेशनासांजली सुबुद्धिप्रधाने अवसरजा णी राजानेकह्युं के हे राजन् एप्रवोधरति सरिखोआचार्य अनें ए मनीषीसरिखो उत्तम

पुरुप एहवीधर्मसामग्रीफिरीमिलवीदुःकरछे तेमाटेजो तमारुंचित्त भावितहोयतो दीक्षाआदरो ते सांभली राजा तथा राजानीस्त्रीमदनकंदली तथा सुबुद्धिमंत्री अने मध्यमबुद्धिपण वैरागपामी सुलोचनकुमरने राज्यआपी सर्वजणायें दीक्षालीधी तेमने आचार्येधर्म्मशिक्षादीधी अनेकह्युं के जे कुमित्रनोसंगकरे ते बालनीपरें दुःखनीपरंपरापामे अनेजेपंमितोनावचनेप्रवर्त्ते ते मध्यमबुद्धीनीपरें कालविलंबे धर्म्म पामें तथाजे मनीषीतरिखाहोय ते पोतानीबुद्धीयेंज दुर्जनमनुष्यजाणीने तेहनो संगपरहरे तेमाटेउत्तमपुरुषनो संगकरीयें जेथकी इहलोकें तथा परलोकें कल्याण नीपरंपराथाय इत्यादिकधर्म्मशिक्षागुरुयेंकही तथा घणोकालसुधी सदागमविधियें चारित्रपाली मनीषीमोक्षेंपहोतो अने मध्यमबुद्धिप्रमुख तो चारित्रपाली देवलोकें पहोताअनेबाल तोस्पर्शननामा पापमित्रने संगें घणोकालदुःखपाम्यो.

॥ इतिविदुरोक्तं स्पर्शन कथानकंसमाप्तं ॥

हवेविदुरकहेछे जेहेनंदिवर्द्धन एकथानकजेजैनमतछेकह्युं ते में तमोनेकह्युं ते वात हमणा संसारीजीव अगृहीतसंकेता आगलें सदागम सांभलताकहेछेजे इत्यादिक वात विदुरपासेथी सांभलीनेमें विदुरनेकह्युंहतुंजे एकथातो घणीसुंदरछे तेवारें फरीविदुरेंमनेकह्युंजे जोपापमित्रनोसंगनकरियें तोएकथासांभलवानुं परमार्थपामियें तेवारें संसारीजीवकहेछेजेमेंविदुरनेकह्युं केखरीवातछे तेसांभलीविदुरहर्षितथयो थकोथव रजाणीकहेवालागो जेहेनंदिवर्द्धनमेंजोकवार्त्तायें सांभल्युंछे जेएतारोमित्र वैश्वानरमहादुरात्माछे तेमाटेतुंएनीसोबत मूकीआप विदुरनेएवीशिक्षादेतोजोयी वैश्वानरेंमुजने क्रूरचित्तरूपवडुंअपचाव्युं एटलेमेंक्रोधकरी विदुरनेकह्युंजे अरेदुरात्मा तुंमुजनेतेवालामानगणेछे अनेपरमहितकारकजे वैश्वानर तेहने सायेजेचपेटोदीधो माटेजाहवेहवे हवीमित्रताकरीनेहनांमनेतें पछेनिद्रांथी विदुरनाशीने पद्मराजापासेआवी सर्वमांडीवात कही राजानेवातसांभली अमातायरीस्यो केटलाकदिवसवित्यापछे हुंकलाशिख्यो जाणी तथापीवनवयस्था प्राप्तथयाजाणी राजायेंमनेतेडी मंदिरमांराख्यो.

हवेएकदामनेंमारोमामोजे कनकचूडतेनोपुत्र कनकशेखर तेपोतानापितायी रीसा योनेजनगरेंआव्यो एवानोजाणीहुंमामोजयीने कनकशेखरनेतेडीआव्यो मारापिता रहणजानतपा नंदावानाप्रमुख हर्षपाम्या हवेकनकशेखरने सुमेरदेनायको संकरि यदें कनकशेखरनेकुंवरं जेहनाछतारेपितामायें सायाम्ने क्षेमथयो तेवारें कनकशेखरनेतानीहकीकतकहे.

कुशावर्त्तनगरें कनकचूडराजातेनी अमृतमंजरीराणीयें लाडलडावीने मुक्तनेमह्लो टोकयो पछेएकदामाराभित्रना समुदायेंहुंपरवर्योथको वनक्रीडायेंगयोह्तो तिहांए कवृक्षतलें योगींद्रमुद्रायें बेठेलासाधुनेजोयी तेमनेप्रणामकरी हुंतेह्लांबेठो साधुयें पणमने धर्मलाभदेइ धर्मदेशनादीधी तेमांसाधुधर्म अनेश्रावकधर्मबेहुकह्या तेवारेंमें साधुधर्म दुःकरजाणी श्रावकव्रतआदरी पाछोमारामंदिरेंआव्यो तद्दिवसपछि हुंजेने श्रावकजाणुं तेनीसाथेंमित्राचारिकरुं अनेतेनाउपर कोइजातनोकर अथवादंडकरुं नह्ली तेवुंजाणीघणालोक श्रावकथयां ह्वेतेराजाने दुरमुखनामेप्रधानछे तेणेएमा रीचालजोयीने राजानेजइकह्युंजे हेराजन् तमेतोसर्वअधिकार पुत्रनेजआप्योछे पण पुत्र तोकोइनापालेथी कोइजातनोपणकर अथवादंडलेतोनथी माटेएरीतें तारुंराज्य चालेनह्ली केमकेकरदंडविना कोइलोकमानेनह्ली एवातदुरमुखप्रधाननामुखथीसांभ ली राजायेंदुर्मुखनेकह्युंजे तुंजजइनेमाराकुमरने शिखामणआप तेउपरथीदुरमुखेंआ वीने मुजने तेजरीतेंकह्युं तेसांभलीमेंकह्युंजे करतथादंडतो जेअन्यायीहोय तेनाउपर नाखियें पणन्यायवंतउपर दंडादिककरवुंसांभलुंनथी इत्यादिकमारावचन दुर्मुखेंसां भलीने मुजनेकपटेंवर्णवी प्रजालोकने एकांतेंतेडावी जयदेखाडी सर्वपाशेंथी करत थादंडलेवराव्या वलीतेंप्रजालोकने एवीधमकीआपीजे कोइकुमरनेकेहेशोतो हुंतमो नेमह्लोटीशिक्षाआपीश एमकह्लीप्रजालोकनेविसर्ज्या ह्वेतेवातचतुरदूत छरेंमेंजाणी अनेमारापितायेंपण एवातजाणीने दुर्मुखनेकाइकह्युंनह्ली तेमाटेहुंमारापिताथी रीसा वीआव्योछुं इत्यादिक कनकशेखरनीवातसांभली पद्मराजायें तथामें कनकशेखरने घणी आश्वासनादेइराख्यो.

ह्वेएकदिवसें कनकचूडराजाना त्रणप्रधान १ समति २ वैराग ३ केशरीनामे एत्रणप्रधान तेजयस्थलनगरेंआवी राजाने तथाकनकशेखरनेप्रणामकरी कनकशेखर नेकह्युंजे हेस्वामितमें चाल्यापछे राजाराणीमहादुःखपाम्या अनेदुर्मुखनाप्रपंचथी ए कप्रकारतमारोजाणी दुर्मुखने कुटुंबसहित देशबाहेरकाढीमूक्यो अने चतुरदूतना वचनथी तमनेइहांआव्याजाणी राजायेंएवीप्रतिज्ञाकरीछे जेमह्लारोपुत्र इहांआवेतो ज हुंआह्लारकरुं एवीप्रतिज्ञाकरीनेश्रा एटलामांवली एकवातबीजीथयी.

जेविशालानगरीनो नंदननामेराजा तेनीएकप्रभावती बीजीपद्मावती एवेस्त्रीछे ते मनेएकेकपुत्रीछे १ विमलानना अने २ रत्नावतीनामे बेपुत्रीछे तेमां विमलाननाने प्र भावतीयें पोतानोभाइ प्रभाकरनामें कनकपुरनोराजा तेनोपुत्रविभाकरनामेछे तेनेदी धीछे केटलाकदिवसें विमलानना कनकशेखरनो वर्णनसांभली तेनाउपरसरागिणीथ

यीने पोतानापितानेकह्युंजे मारोपाणिग्रहणकरावोतो कनकशेखरसाथेंकरावो पण विनाकरनेहुं परणीशनही एवोपुत्रीनोआग्रहजाणी तेनापितायेंतेवातमानी एटला मां रत्नवतियेंकह्युंजे हुंपणकनकशेखरना कोइमित्रने परणीस केमकेमहारे विमला ननासाथें वियोगनथाय अनेजोकनकशेखरने परणुंतो सपत्नीपणुंथाय इत्यादिकवा तसांभली रत्नवतीनुंवचनपण पितायेंमान्युं पछेराजायें बेहुकन्याने घणापरिवारसहि त आपणेनगरे मोकलीछे तेसांभलीआपणो कनकचूडराजा दुःखाक्रांतथयोछे तेमा टे प्रधानकहेछे जेहेकनकशेखरजी तमारामातापिताने हर्षउपजाववामाटे तुर तआपणानगरेपधारो एवातसांभली कनकशेखर पद्मराजानेपूछी तेसंसारीजीवकहे छेजेमुकनेसाथेंलेइ घणापरिवारेंचाल्या हवेमार्गेजाता रौद्रचित्तनामे अंतरंगनगरआ व्युं तिहांदुष्टाभिसंधिनामेराजा तेनीनिःकरुणतानामे स्त्रीनेंहिंसानामेपुत्रीछे एवामां सचित्तनामेनगरथी महामोहनोपुत्र द्वेषगजेंद्रराजा तेनीअविवेकतास्त्री तेगर्भवती थकांज कोइकप्रयोजने रौद्रचित्तनामानगरेआवी तेहनेदुष्टाभिसंधिराजासाथें परि चयथयो तिहांवैश्वानरनो जन्मथयो.

हवेसंसारीजीव अगृहीतसंकेताआगलकहेछे जे मुकनेमनुष्यगतिनगरीयें था प्योजाणीने अविवेकतायें वैश्वानरसाथें संबंधकराव्यो तेवैश्वानरें जेमकनकशेखर नजाणे तेवीरीतें रौद्रचित्तनगरेंतेमीने मुकनेहिंसानामे कन्यासाथे प्रीतउपजावीने पाणिग्रहणकराव्यो अनेमने एहवुंकह्युंके जो आहेडोकरोतो हिंसानामास्त्रीतमारे आधीनथासे एमकहिवैश्वानरें मुकने मृगयारमवासीखव्युं हवेतेहांथीचली कनक शेखरअने हुं वनेजणचाल्या मार्गमांएक विषमकूटनामा पर्वतआव्यो तेहांअमरैना मे चोरटानीमंडलीवसेछे तेनेपूर्वेकनकचूडराजायें घणापराजव्याछे तेवैरनेलीधे क नकशेखरनेआवतोजाणी तेचोरटाघणा चोरें परवरायका संग्रामकरवानेआव्या ते हांयुद्धकरतां कनकशेखरनुंकटक नाग्युं एटलेवैश्वानरें मुकनेक्रूरचित्तरूप वडाखवरा व्या अनेमारीहिंसानामेस्त्रीयेंमने उत्कर्षचडाव्युं तेहांप्रवरसेननामेंजे चोरटानोसामि तेणेयपाणमुक्यो मागउपरमूक्या पणप्राप्पोदयथी तेमुकनेपरानव करीशक्यानही अनेमेंतेचोरटानोसनि प्रवरसेननुं शिरछेद्युं तेवारेंजयजयकारशब्दथयो सर्वसैन्यआवि मह्युं अमरैनानेचोरटापण मदेमारा सेवकथयीम्हा अनुक्रमेकुशलें अमेकुशावर्त्तनग रे पहोंता कनकचूडराजाप्रमुख सर्वलोकआनंदपाम्या महोटाआडंबरें दानदेतायका नगरमांप्रवेशकराव्यो विमलाननना तथा रत्नवतीपण आनंदितथयी राजायेंमहोटा

[illegible]

[illegible]

[illegible] लानताने लिखोथी स्त्रीयावनाईइ पालपामूईपोताने [illegible] अनेहवाननीसमाग रथमांबेसारी जयपताकावजी महोटामहोत्सवें नगरमांप्रवेशकस्यो राजा तथा कनक ओखरप्रमुख पोताने स्थानकेंगया अने हुंरत्नशेखरराजनागेंजाणेंहुं एटलामां कनक शेखरराजानी स्त्रीनवनमंजरी तेनीरत्नमंजरीनामेंपुत्रीनेमें गोखेंदीठी तेमहारूप वंतहती माहरेमाहरीदृष्टितेहमांलागीरही अनेतेनीदृष्टिपण माहराउपरलागीरही एवुं देखी तेतलीवारमेंमारूंथी तेनीदृष्टिपणमाहराउपरलागी पछेतेरात्रियें मनेवाल्यो थकी हुंमहारामंदिरेंगयो पणतेरात्रियें मनेविरहनीवेदना नारकीनीपरें जोगवतांथयी प्रा नःकालेंतेकनकमंजरीनी विरहनीवात तथामाहरामनें कनकमंजरीनो विवाहमेलव वानीवात तेकनकमंजरीनीधाव कपिंजलानामे गुणिकाने तेपासेथीमेंसांभलीने हुंव णोहर्षवंतथयो एटलामांविमलनामे राजानोप्रधान तेणेआवीमने कह्युंजेहेनंदिवर्द्धन जी तमनेगुणवंतजाणीनें राजायेंतथा कनकशेखरेंविचारकरी कनकमंजरी तमनेंदीधी छे अनेकनकमंजरीनीबेहेनजे मणिमंजरी तेतोतमाराजीवर्द्धननामाप्रधानने पूर्वेप रणावीछे एवचनविमलप्रधाननुंसांभली एवातमेंतया तेतलीवेंकबुलकरी अनुक्रमेंवि वाहथयो पछेतेस्त्रीसाथें जोगविलासकरतां केटलाकदिवसवितिगया हवेविलाकरत आनंज पालागोहतो तेथीलेराजा एजनगरमांरह्योहतो तेनेसमाधीयपेथके कनकचूडें

घणोसनमानकरीतेने पोतानादेशेंविदायकस्यो पणतेविनाकरसाथेंमारेघणीप्रीतिथयी हवे हुंजेदररोज श्राहेडोकरुंतेवात कनकशेखरें जाणीनें एकदिवसें सनामध्ये मारासांजलतां पोतानापितापासें कहेराव्युंजे वैश्वानर तथा हिंसानेवसेंजे मृगया करेते घणीविम्बनापामे इत्यादिकबातोसांजली मनेक्रोधचड्यो हुंछुरीकाढीने कहे वालागोजे अरेडुरात्माकनकचूड अरेपापिष्टकनकशेखर तमेंमाहरोमित्र वैश्वानर तथामारीस्त्री हिंसानी हासीकरोछो पणजोएवेनहोत तोश्रातमारोदेशरहेतनही जा तोरहेत एमक्रोधसहितबोलतोथको मुजनेदेखीने सर्वसनानासीगयी मात्रराजात था कनकशेखर वेजणएकलाहता तोपणतेमना पुण्यनेबलें हुंतेमनेहण्याविना एमज रिसावीने मारेमंदिरेंश्राव्यो पछेराजादिकेंपण मनेउवेखीमूक्यो अनेहुंपणसनामां जातोनहतो एमकेटलाकदिवस विल्यापछे महाराजयस्थलनगरथी एकदूतश्राव्यो ते णेमनेकह्युंजे आपणानगरें वंगदेशनो यवननामेराजाकटकलेइ श्राव्योछे तेणेसर्वन गर घेरीलीधुंछे लोकसर्वमहानयनीतथयाछे सुंजाणियें श्राजकालतेहां शीहकिगत वनीहशे अनेमतिधन तथा बुद्धिविशालप्रधाने माहोमांहेविचार्युंजे इहांराजाने ज णावीसुंतो राजाडुहवाशे अनेकहेसेजे श्रावाविग्रहमां सुंनंदिवर्द्धननेतेडावोछो एम विचारी राजानजाणे तेरीतेंमाहराहसतक तमनेतेडवामोकल्योछे तेमाटेतमेवहेला चालो जेथकीश्रापणानगरने कुशलथाय एवातसांजली.

हुंपोतानोपरिवारलेइ कनकचूडराजादिकोने पूछ्याविनाज तेहांथीचाल्यो के टलेकदिवसें मारेनगरेश्राव्यो तेहांयवनराजासाथे महायुद्धकरी मेंतेनुंशिरछेद्युं जय जयशब्दथयो तेवातपद्मराजायेंजाणी राजाश्रने प्रधान तथामाताप्रमुख सर्वश्राविमि त्या सर्वनेश्रानंदथयो महारोयशवाद सर्वत्रपसर्यो एरीतें हेश्रगृहीतसंकेता मेंजे चो रनोपति प्रवरसेनने हण्यो तथासमरसेन अनेद्रुमराजाहण्या तथायवनराजाहण्यो तथाकनकमंजरी अने रत्नवतीसरिखीकन्याहुंपरण्यो एसर्वमाहरापुण्योदयथीथयो पण मेंतेंजाण्युंनही मेंतोएसर्ववैश्वानरथीज मनेनलुंथायछे एमजाणीफरी घणुंजवैश्वानर तथाहिंसानो संगकर्युं एमकरतांघणादिवस व्यतिक्रमथया.

हवेएकदाहुं मृगयारमवागयोहतो तेथीसनाने वखतेंश्राव्योनही तेवारेंराजायें वि डुरनेमोकली मारीखबरकरावी तेवारेंविडुरने कोइयेंकह्युंजे नंदिवर्द्धनतो दररोजश्राहे डोकरवाजायछे श्राजवली हजीसुधीश्राव्योनथी तेवातसांजली विडुरेंराजानेकही तेथीराजायें मनेवणोवार्यो पणमेंराजानुं कथनमान्युंनही फरीराजायें जैनमतना जाणनेतेडीपुछ्युं तेवारें तेणेकह्युं जे चित्तसुंदरनगरनो शुनपरिणामराजा तेनी

बीजीस्त्रीचारुतानामेछे तेनीदयानामेपुत्रीते तमाराकुमरने परणावोतो एहिंसातथा मृगयादिकव्यसननेमूकीदेशे पणतेतो क्षमानीपरें कालादिकसामग्रियें परणशे इत्या दिकसांजली राजायें मनेछवेरखीमूक्यो.

हवेएकदाराजायें शुभमुहूर्त्ते महोटेआमंबरे मनेयुवराजपदवीदीधी तेजवखते शार्दूलपुरनगरनो अरिदमनराजा तेनोस्फुटवचननामे प्रधानछे तेतेहांआवी राजानेप्रणामकरी कहेवालागोजे हेस्वामितमारो नंदिवर्द्धनपुत्रते महागुणवंतछे माटे अमारा राजानी मदनमंजूपानामे पुत्रीछे तेनोनंदिवर्द्धन सार्थेविवाह मेलववाआव्योछुं तेसांभली पद्मराजाप्रमुख आनंदपाम्या विवाहमेलवामांडयुं एटलामांमेंते स्फुटवचनप्रधाननेपुछयुंजे शार्दूलपुरनगर इहांथीकेटलुंदूरछे तेणेकह्युं अढीसोयोजनदूरछे तेसांभलीमेंकह्युं एकगाउउणा अढीसेंयोजनछे एमकहेता माहारेअने स्फुटवचनने माहोमां हेविवादथयो एटलेमें महाविकराल खड्गकाढयुं तेवारेंपुण्योदयजे माहरेसन्मुखहतो तेमनेनिर्गुणी अयोग्यजाणीनाठो मेंतेस्फुटवचननेहण्यो तेवारेंपद्मराजा सिंहासनथी उठी मनेवारवाआव्यो तेवारेंमेंविचार्युंजे जूउआमारो पिताते मारावैरिनोपक्षकरेछे एमजाणी क्रोधवशें पितानेपणहण्यो एटलेसुनंदानामें मारीमाता तेमंदिरमांथीरुदनकरती पुकारकरती माहरेहाथेंआवी विलगी तेमातानेपणमें हणीनाखी एटलेमाहरोपरममित्रजे शीलवर्द्धन अनेतेनीस्त्रीजे मणीमंजरी तथामारीस्त्री रत्नवती एत्रणेजणामने वारवाआव्या तेपणमेंहण्या तेवारेंमदनमंजरीजे महारीहृदयवल्लभाते वारवाआवी तेनेपणमेंक्रोधवशेंहणीनाखी तथाबीजापण बांधव प्रधानादिकजेजे वारवाआव्या तेसर्वनेमेंहण्या एमघणानेहणतां मारोपहेरवानुं वस्त्रनिसरीगयुं मस्तकना केशछूटा तेथीपिशाचसरिखोमने नग्नदेखीने बालक हशवालागा तेदेखीहुंक्रोधें तेबालकोने मारवादोडयो पछेघणेलोकेमने पृथ्वीयेंपाडयो माराहाथमांथी तरवारखेंची लेइ पाछलथीबांधी महाकष्टेंअंधारे बंदीखानेंनाख्यो तेहांएकमहीनासुधी क्षुधातृषायें पीडयोथकोमस्तकें बंदीखानाना कपाटभांजतेपण केणेकाढयुंनही पछेघणुजथाकां तथयो क्षणेकनिद्राआवी एटलेउंदरे मारोपाशत्रोडीनाख्युं पछेहुं जाग्योतेवारें माहाराहाथछुटाजाणी कपाटउघाडी बाहेरनिकल्यो तेवखतरात्रीघणीहती लोकतो निद्रामांहतातेवारेंहुंक्रोधवशें गामगामअग्नीदेइ संपूर्णनगरदाहकरी नाशीगयो अटवीमांजतां चोरमल्या तेणेघणीकदर्थनायें मनेपकडीने चोरनास्वामिपासे लेइगया तेणेकह्युंजे आपुरुषदेखातो महाउटछे तेमाटेसारीपछे कष्टआपीने बंदोबस्तकरीराखवुं केमके बब्बरकुलें वेचवानेकामआवशे एमकरीराख्यो एटलामां विजाकरराजानाकटकें तेचो

अनेकदेवनायें परवर्या गोष्यामादिकजीवोनेपण विरोधनीवात समावतायका सुघ
ंकरसर्वेवणायका धर्मनीदेशनाआपेछे.

तेवारेंनगरनोराजाजे अरिदमनते महाआडंबरें सपरिवारें वांदवाआवी धर्मदेश
नासांभलेछे जेअनादिसंसारें जैनधर्मनीप्राप्तिदुःकरछे अनेजैनधर्मपामि साधुमार्ग
तथा श्रावकमार्गआदरें तेनेनिर्वाणमार्गनुं साधनथाय इत्यादिकधर्मदेशना सांभल
तांराजायें पुछ्युंकेहेभगवन् महारीपुत्रीनो विवाहकरवाने मेंमारो स्फुटवचननामे प्र
धानने जयस्थलनगरें मोकल्योहतो तेनीपाछीकशी खबरआवीनही तेवारेंमंत्रीजो
मायलमोकलो खबरकरावीनो तेणेकह्युंजे जयस्थलनगरनाठेकाणेतो प्रज्वलितअ
टवीदेखायछे आगलापाछलागाममतोसर्व उध्वंसदेखायछे तोपणगामनोपद्मराजा अनेन
दिवर्धनप्रमुख सर्वेकिहांगया एवुंराजायेंपुछे थके केवलीकहेछेजे पेलोआडथोबोछेकदूरें
मजबुतबंधबांध्यो जेपुरुषदेखायछे तेजुओ राजायेंजोयुं एटलेकेवलियेंकह्युं जेएनं
दिवर्धन अनेएने छेदगजेंद्रराजानीत्रीजे अविवेकता तेनोपुत्रजे वैश्वानरबीजुंनाम
अनंतानुबंधीक्रोध तेनीसाथेंमित्राइछे तथा रौद्रचित्तनगरनोराजा दुष्टाभिप्राय तेनीस्त्री
निःकरुणता तेनीपुत्रीजेहिंसा तेएनीस्त्रीछे तेनावशवर्त्तियेंरेहवाथकी एनाएहालथयाछे
एमकहिमारी सर्ववात तेराजाआगलें केवलियेंकही तेवारेंराजायेंपुछ्युंजे एनंदिवर्धन
ने एनीसाथेंसंबंधथयें केटलाकदिवसथया तेवारेंकेवलियेंकह्युंजे.

असंव्यवहारनगरथीमांडी अनंतकालनो संबंधछे पणआत्मवंतो प्रगटपणेछे तेउ
परवली राजायेंपुछ्युंजे एनंदिवर्धन रुपवंत शूरवीर पराक्रमी इत्यादिक अनेकगुण
वंतकहेवातो अनेजेहांतेहां एनोजयसंभलातोहतो तेकेम तेवारेंकेवलियेंकह्युंजे एहने
जिहांसुधी पुण्योदय सखाइहतो तेहांसुधी जेमप्रवर्त्ततो तेमसघलुंजथातुंहतुं अने ते
स्फुटवचनसाथें जेवारेंविवादथयुं तेवारेंतेपुण्योदयनहतुं तेथीएनी एअवस्थाथयी ते
सांभली वलीराजायेंपुछ्युंजे एहिंसाअनेक्रोधसाथें बीजाकोइनोसंबंधछे तेवारेंकेवलियें
कह्युंजे सर्वसंसारीजीवोसाथें एनोसंबंधछे हवेकेवलिते संबंधनीवात विस्तारेंकहेछे.

हेराजन् जीवमात्रने त्रणत्रणकुटुंबछे तेमां क्षमा सरलपणुं निर्लोभीपणुं ज्ञान
दर्शन चारित्र सत्य शौच तप संतोषपणुं इत्यादिकतो स्वभाविक अंतरंग प्रथमकुटुंब
छे तथा क्रोध मान माया लोभ राग द्वेष अज्ञान शोक भयप्रमुख एबीजुंकुटुंब त
था माता पिता पुत्र पुत्री स्त्री प्रमुख त्रीजुंकुटुंबछे तेमांपहेलुंकुटुंबतो जीवने
मोक्षपमाडेछे अनेबीजुं कुटुंबते अभव्यनेतो अनादिअनंतकालहोय अनेभव्यनेतो
अनादि अनेअंतसहितहोय तथात्रीजुंकुटुंबतो सर्वसंसारीजीवने भवोभवें नवुंनवुं

रोनीपालनांगी सर्वचोरोनेबांधीलइगया तेनीसाथेंमनेपण बांधीनेलेइगया पछेनगरें जइ तेसर्वबंदीवानो विनाकरराजानेदेखाड्या तेवारेंजोताथका मुजनेविनाकरें उंल ख्यो विनाकरेंमनेपुछ्युंजे हेनाइनंदिवर्द्धन तारीआअवस्थाकेमथयी तेवारेंमेंसर्वमा हरीवितेलीवातकहीसंनलावी तेसांनली विनाकरमहाडुःखपामी मनेकहेवालागोजे हेनाइएअनर्थ तेशावास्तेकर्यो तेसांनलीमने क्रोधउपनुंपण माहारापाशे कोइशस्त्र हतुंनही जेणेकरी हुंविनाकरनेहणुं.

हवेएहवुंमाहरुंचित्त दिलगीरथतुंजाणी वातकरवीमूकीदेइने विनाकरेंमने बंधछो डावी मज्जनकरावी नलावस्त्र अलंकारपहेरावी अर्धासनेबेशाडी सुखनीवातकरवा मांडी एटलामांनोजनकरवानो वखतथयो तेहांमेंअने विनाकरें नलिविधियें नोजन कर्युं हवेतेविनाकरराजानो मतिशेखरनामेप्रधानछे तेणेमनेकह्युंके जेदिवसपीप्रनाक रराजा परलोकेंपहोता तेदिवसथी आजपर्यंत विनाकरराजाने असाताजहति ते हे नंदिवर्द्धनजी तमेंमिल्यामाटे राजाआजेसुखपाम्याछे हवेविनाकरें आग्रुपूर्वे नयणे करी मनेकह्योके हेनाइपितातो परलोकपहोता हवेअमारोतुंजपिताआराज्यताहरुं हुंतोतारोसेवक जेमनेबतावीसते हुंतारी सेवाकरीस इत्यादिकवचनकह्या पणमेंते वै श्वानरनेवशें सर्वकपटजाण्युं एटलामां रात्रीनोसमयथयो सनासर्वेविसर्जि राजाअ नेहुं बन्नेजण एकशय्यायेंसुता विनाकरनेनिद्राआवी एटलेमें विनाकरनुंखड्गलेइ वि नाकरनुंशिरछेदीनाठो जंगलअटवीओलंघतां हुंकुशावर्त्तनगरआगलेंनिसर्यो तेहांमने लोकेंदीठो तेणे राजानेजइ मारासमाचारकह्या राजाकनकचूड अने कनकशेखर मारे सन्मुखआव्या मने पुछ्युंजे तमेएकाकी आवेवेशेंकेमआव्याछो तेवारेंमारी वितेली सर्ववातकही तेसांनली कनकशेखरेंकह्युंजे जेहनेक्रोध अनेहिंसासमीपेंहोय तेनीएवि ज अवस्याथाय तेसांनली मनेक्रोधचड्यो अनेकनकशेखरनीज केडथकीछुरीलेइने ए नेजहणुं एटलामां कोइकदेवतायें मुजनेथंनीराखी तेहांथीउपाडी प्रवरसेननीछनी पासेंजइमूक्यो तेनीलेंमने ओलखी पहेलामारासेवकथयीरह्याहता माटेमने घणो आदरआपो सिंहासनेबेशाडी सर्ववातपुछी मेंसर्ववातकही एटलेसर्वनिह्ने मस्तकधु णाव्युं अनेमाहुयपुं एमकहेवालागा तेवारेंमने वैश्वानरदीप्यो पछेकोइकनिह्ननां श मणेइने केटलाकनिह्नोने तेहांहण्या पछेमनेउष्टजाणीपकडी बांधीने घणीकदर्थनाक री रात्रें तेअटवी उलंघावीने शार्दूलपुरनगर आगलमूकीगया तेनिह्नोए एमविचा र्युंजे अने मारीनाखसुंतो स्वामिघातनो अपवादचालसे माटेएमजमूकीगया एवामांसू र्योदयथयो जोयुंएटले एकदिशें महोटाअतिशयेंकरीयुक्त एवाविवेकनामें केवलीतें

अनेकदेवतायें परवस्था गोव्याघ्रादिकजीवोनेपण विरोधनीवात समावतायका सुव र्णकमलेंबेगायका धर्मनीदेशनाआपेछे.

तेहांतेनगरनोराजाजे अरिदमनते महाआमंत्ररें सपरिवारें वांदवाआवी धर्मदेश नासांजलेछे जेअनादिसंसारे जैनधर्मनीप्राप्तितेडुःकरछे अनेजैनधर्मपामि साधुमार्ग तथा श्रावकमार्गआदरे तेनेनिर्वाणमार्गनुं साधनथाय इत्यादिकधर्मदेशना सांजल तांराजायें पुछ्युंकेहेजगवन् महारीपुत्रीनो विवाहकरवाने मेंमारो स्फुटवचननामे प्र धाननें जयस्थलनगरें मोकल्योहतो तेनीपाछीकशी खबरआवीनही तेवारेंमंत्रीजो माणसमोकली खबरकरावीतो तेणेकह्युंजे जयस्थलनगरनाछेकाणेतो प्रज्वलितअ टवीदेखायछे आगलापाछलागामतोसर्व उध्वंसदेखायछे तोएगामनोपद्मराजा अनेनं दिवर्द्धनप्रमुख सर्वकिहांगया एवुंराजायेंपुछे थके केवलीकहेछेजे पेलोआइथीथोडेकदूरें मजबुतवंधेवांध्यो जेपुरुषदेखायछे तेजूओ राजायेंजोयुं एटलेकेवलियेंकह्युं जेएनं दिवर्द्धन अनेएने द्वेषगजेंद्रराजानीस्त्रीजे अविवेकता तेनोपुत्रजे वैश्वानरवीजुंनाम अनंतानुबंधीक्रोध तेनीतायेंमित्राइछे तथा रौद्रचित्तनगरनोराजा डुष्टाभिप्राय तेनीस्त्री निःकरुणता तेनीपुत्रीजेहिंसा तेएनीस्त्रीछे तेनावशवर्त्तियेंरेहवाथकी एनाएहालथयाछे एमकहिमारी सर्ववात तेराजाआगलें केवलियेंकही तेवारेंराजायेंपुछ्युंजे एनंदिवर्द्धन ने एनीसायेंसंबंधथयें केटलाकदिवसथया तेवारेंकेवलियेंकह्युंजे.

असंव्यवहारनगरथीमांमी अनंतकालनो संबंधछे पणआजवंतो प्रगटपणेछे तेव परवली राजायेंपुछ्युंजे एनंदिवर्द्धन रूपवंत शूरवीर पराक्रमी इत्यादिक अनेकगुण वंतकहेवातो अनेजेहांतेहां एनोजयसंजलातोहतो तेकेम तेवारेंकेवलियेंकह्युंजे एहनें जिहांसुधी पुण्योदय सखाइहतो तेहांसुधी जेमप्रवर्त्ततो तेमजलुंजथातुंहतुं अने ते स्फुटवचनसायें जेवारेंविवादथयुं तेवारेंतेपुण्योदयनहतुं तेथीएनी एअवस्थाथयी ते सांजली वलीराजायेंपुछ्युंजे एहिंसाअनेक्रोधसायें वीजाकोइनोसंबंधछे तेवारेंकेवलियें कह्युंजे सर्वसंसारीजीवोसायें एनोसंबंधछे हवेकेवलिते संबंधनीवात विस्तारेंकहेछे.

हेराजन् जीवमात्रने त्रणत्रणकुटुंबछे तेमां क्षमा सरलपणुं निर्लोभीपणुं ज्ञान दर्शन चारित्र सत्य शौच तप संतोषपणुं इत्यादिकतो स्वभाविक अंतरंग प्रथमकुटुंब छे तथा क्रोध मान माया लोज राग द्वेष अज्ञान शोक जयप्रमुख एवीजुंकुटुंब त था माता पिता पुत्र पुत्री स्त्री प्रमुख त्रीजुंकुटुंबछे तेमांपहेलुंकुटुंबतो जीवने मोक्षपमाडेछे अनेवीजुं कुटुंबते अजव्यनेतो अनादिअनंतकालहोय अनेजव्यनेतो अनादि अनेअंतसहितहोय तथात्रीजुंकुटुंबतो सर्वसंसारीजीवने जवोजवें नवुंनवुं

जहोय पणकेटलाक अघोरकर्मिते त्रीजाकुटुंबने पोषवामाटे वीजुंकुटुंब आदरी प्र थमकुटुंबने आघुंछेलीमूकेछे अनेजे आसनसिद्धिजीवहोय तेतो महोटापराक्रमे शूरवीरथयीने बीजातथा त्रीजाकुटुंबने मूलथीत्यागी पहेलाज कुटुंबनेआदरी महात्मा नंदपामेछे इत्यादिक वातकेवलिभगवंतना मुखथीसांभली राजायेंपुछ्युंजे हेस्वामि जेथकीप्रथमकुटुंबपामियें तेवोउपायकहो तेवारेंकेवलिभगवानकहेछे.

हेराजन् साधुनीपरें महानिर्दयथयी पहेलाकुटुंबनाजोरेंकरी अप्रमत्तथयीने बीजाकुटुंबने निरंतरहणे एटलेज्ञानेकरी महामोहनेहणे तथावैरागयंत्रेकरी रागनेहणे तथा मैत्रीरूपबाणेकरी द्वेषनेहणे अनेक्षमारूप करवतेंकरीक्रोधनेहणे तथा नम्रपणारूप खड्गेंकरी माननेखंमखंमकरीने हस्तपणधोयनही वलीसरलपणारूपदंडेंकरी मायानेहणे अने निर्लोभितारूप कोहाडेकरी लोभनेहणे तथा कामरूपसुभटने वस्तुविचारणायेंकरी मंकोडानीपरें चोलीनाखे ध्यानरूप अग्नियेंकरी शोकनेबाले धैर्यरूपजालेकरी भयनेहणे तथाहास्य रति जुगुप्साने विवेकरूप शक्तियेंकरीहणे तथापांचेंद्रियरूपजे पांचभाइतेने संतोषरूप खड्गेंकरीहणे एरीतेंनिर्दयीथयीने प्रथम कुटुंबेकरी बीजाकुटुंबनेहणे तेवारें प्रथमकुटुंबदीसथाय तेणेकरीसमस्तसिद्धिथाय एवातसांभली राजायेंपुछ्युंजे हेभगवन् मुजने तेमार्गकहो तेवारेंभगवानबोल्याजे

त्रीजुंअनित्यजे कुटुंबछे तेमूलथी परिहरियेंतो बीजुंकुटुंबमूकाय तेवारपछे प्रथम कुटुंब दीपावियें इत्यादिक धर्मदेशना सांभली संसारनुं स्वरूपअसारजाणी राजऋद्धि इंद्रादिकपणाथी पणएधर्ममार्ग अधिकजाणीने पोतानाश्रीधरनामें पुत्रने राज्यदयी विमलमतिप्रमुख प्रधानसाथें विधियें राजायेंदीक्षालीधी हवेतेसंसारीजीवकहेछेकेतेवेलायें राजायेंमुजने छोडावीमूक्यो हवेजेसमयें राजाप्रमुखें दीक्षालीधी तेसमयें केटलाकनारीकर्म्मि पापिष्ट नीचविषयलंपटी कुटुंबमोही प्रमुखलोकेंतो एवुंविचार्युंजे रखेनेराजा आपणनेपण बलात्कारें दीक्षाअपावे एवोभयपामिने नासवालागा तथाकेटलाक नीचोमुखकरी बेसीरह्यापण दीक्षालीधीनही हवेए विवेकनामा केवलीयें राजऋषि प्रमुखने संवेगनीदेशनादयी विहारकर्यो परखदाप्रमुख पोतपोतानेस्थानकेपहोता तेवारेंहे अगृहीतसंकेता मेंविचार्युंजे एदुष्टात्मा केवलीमारीनिंदाकरतोहतो तेजतोरह्यो माटेनठुंथयुं तेवारपछेहुं त्यांथीचाल्यो केटलोकमार्ग अतिक्रम्यो एटले विजयपूरनो शिखरीनामेराजा तेनोपुत्र धराधरनामे तेमारा जेवोज क्रोधी हिंसकछे तेनेराजायें बाहेराकढाडीमूक्योछे ते मनेमल्यो मेंतेनेमार्गे पुत्रपुंपण तेपोतेंक्रोधीमाटे मनेजवाबआप्युंनही तेथीमनेपण क्रोधव्याप्यो मेंतह

नाज केमपीछुरीकाढी एटलेतेणेपण विकराल तरवाल जंबीओकाढी मारातामे युद्ध करवामांड्युं एमवेजणयुद्धकरता मृत्युपामि छठिनरकेगयां तेवारपछे तेहांथीनिकली केटलाकनवजमतां तीर्यंचपणे तथानरकें कलहकरतांज कालगयो हवेमाहरीजे नवितव्यतास्त्री तेणें केटलेककाले कर्म्मरूप गुटिकाओलखरावी अनंतकालसुधी असं व्यवहारनगरें मूकी प्रायेंसर्वत्रस्थानकें नवेनवेरूपें वेपलेवराव्यां एमअनंतकालसु धी कष्टनोगवतां फरीनवितव्यता प्रसन्नथयी तेवारें मुफनेनविव्यतायें आहिरनो अवतारलेवरावी मध्यमगुणउपजावी कह्युंजे हेआर्यपुत्रतें घणाकष्टनोगव्या हवेतु फने पुण्योदय सहचारी नलावुंबुं माटेतुं मनुष्यगतिनामनीनगरीयें अवतारले तेवा रेंमेंकह्युं नलुं एम नंदिवर्द्धनना क्रोध अने हिंसानाफल मागजाणीने तथाबाल अने मनिषीनासंबंधथी स्पर्शनेंद्रियनो अधमविपाकजाणी हेनव्यजीवो तमे क्रोध तथा हिंसापरिहरो स्पर्शनेंद्रियनो जयकरो जेमसर्वमनोरथसिद्धथाय.

इतिक्रोधेहिंसायांचनंदिवर्द्धनकथाःसमाप्ताः

हवेंअगृहीतसंकेताने संसारीजीवकहेछे जे सिद्धार्थपुरीनगरी तेनो नरवाहनराजा तेनीविमलमालास्त्रीनी कुक्षीनेविषे अनुक्रमेंहुं अवतस्यो पुण्योदय सायेहतो तेथीशु नमुहूर्त्तें मारुंजन्मथयुं राजायेंमहामहोत्सवकरी रिपुदारण एवुंमारुंनामदीधुं अनुक्र मेंहुंमहोटोथयो तेवारें मातापिता तथाप्रजालोकघणुं आनंदपाम्या हवेजेअविवेकता नामें नंदिवर्द्धननाजवें मारीधावहती तेणेवली जाति लान कुल ठकुराइ बलरूप तप अनेश्रुत एआठमदरूप आठमस्तकेकरीशोनतुं एवोशैलराजातथामातानामें पुत्रजण्यो तेथीअविवेकताघणुं हर्षपामिपछे तेशैलराजासाथें माहरेप्रीतिथयी तेथीदेवने तथा गुरुने तथामातापिताप्रमुखकोइने नमस्कारकरुंनही उंचीआंखे आकाशजोतोचालुं कोइनेलेखामांगणुंनही पोतानाज जात्यादिकमदनी वातकरुं एहवोमनेमानसाथे मल्योजाणी पितायेंप्रधानादिक सर्वपुरुषोनेवारीमुक्योजे कोइएरिपुदारणनी आज्ञा लोपसोमां तेसांनली प्रधानादिकलोकसर्व महारीआज्ञामांरह्या मनेदेखे एटलेप्रणा मकरे तेथीमेंजाण्युंजे एमाहात्म्यसर्व मानमित्रनुंछे एमकरताकेटलाकदिवस वित्यापछें तेशैलराजायें मनेवशथयोजाणीने स्तब्धचित्तनामे औषध महारेहृदयें चोपड्युं ते थीहुं पथ्थरनास्तंननीपरे स्तब्धथयो.

हवेएकदिवसेहुंअंतरंगक्लिष्टमानसनामानगरेंगयोहतो तेहांदुष्टनावनामेंराजा तेनी जघन्यताहीनपरिणामनामेस्त्री तेनोपुत्रमृषावादनामे तेकपटचाडीपरद्रोहादिक परिवा

रें परवरयोयको मेंदीगो पछे तेमृपावादसाथे मेंमित्रताकरी तेवारपछेमारीप्रवृत्तिएवी थयीजे कोइपेमाहरोकुकर्मप्रत्यक्षदीठोहोय तेमनेआवीकहे तोपणहुंतेवातकबुलनही कहुंएक अनेकरूबीजो यद्यपि एकअहंकार अनेबीजो मृषावाद एबेदुपापमित्रना वश थकी क्रोडोगमेअनर्थ उपजे पणपुण्योदय सखायीहतो तेथीतेअनर्थविलयथयीजता हता पणतेमें अज्ञानपणाना वशथकीनजाएयुं हवे मने कलाजणावाने योग्यजाणी नरवाहनपितायें महामतिनामाकलाचार्यपासें जणवामोकल्यो पितायें मनेकह्युंजे हेवत्स दिनप्रतें गुरुचरणे परिणामकरी विनयपूर्वक विद्याजणजो एवुंसांभलीमेंक ह्युंजे हेपिता तुंतोमृढदेखायछे एकलाचार्यमां माराथीशाअधिकगुणछे केजेथकीहुं एगुरुनेनमस्कारकरुं तेसांभली राजायें कलाचार्यने एकांतेकह्युं जे एरिपुदारण थइं कारीछे तेमाटे तमारोविनयादिकनकरे तोपण माहरोपुत्रजाणी जणावजो इत्यादिक वातो कलाचार्यें सांभली पछेहुंकलाचार्यनो विनयादिक नकरुं तोपणतेमने जणा वताहता पणसन्निपातिने जेमजेम दुध खवराविये तेमतेमरोगवृद्धिपामे तेमहुंपण जेमजेमभणुं तेमतेम मने अविनयादिकनी वृद्धिथतिगयी.

एकेएकदिवसें गुरुयेंमनेकह्युं जे हेवत्सकुपात्रनीपरें जणतापणतुं अविनीतकेमथा पछे तेसांभलीमें गुरुनीघणीज हिलनाकरी पणगुरुसांभलीरह्या बीजाविद्यार्थियोने शीखव्याजे कोइएअधमने बोलावशोमा पछेकेवारेकहुं गुरुनेआसने जइबेसुं कोइ वारेतो मृषाबोलुंजे कोणवेठोहतो अथवागुरुनीनिंदाकरुं गुरुतेहवुंदेखीवारे तोगुरु नेरण मारीनेगयुं इत्यादिकथयां माहरोअन्यायजाणी गुरुयेंमने हांकीमूक्यो हुंग जमंदिरेंआव्यो राजायें मनेपुछ्युंजे हेपुत्रतुं सुंसुंजण्यो तेवारेंमें मृषावडेंकह्युंजे व्या करण छंद नक्ष गणित ज्योतिष धनुर्वेदादिक तथाबहुतेरकला चन्नसवकलाप्रमुखमें शीखव्यो तेसांभली राजायणोहर्षितथयो कलाचार्यनेघणुंद्रव्यअपाव्युं वलीराजायेंम नेकह्युंजे शास्त्रेंमुनिभिनियपरिचिंतनीयमाराधितोपिनृपतिःपरिशंकनीयः॥अंकस्थि तारिपुवनितारक्षणीया शास्त्रेनृपेयुवतीचकुतःस्थिरत्वमितिन्यायात् माटेकेवल दुर्विनयपुत्रराजेन्द्रो जेविद्याजण्यातो तेमंजाणजो तेवारेंमेकह्युंमारुं एमकहि राजमं दिरथी बाहेरआवीने में मारामृषावादमित्रने पुछ्युं जेहेनाथ ताहरीशक्ति अत्यंत महिमावंती छे हवेमृषावादबोलनाना शक्तिनीवातकहेछे राजराचितनगरनोग नेमार्गेगमनकरनारा तेनोमृदनानामेश्री तेमायानामेपुत्रीछे तेनेमेंमाहरीमहोटीबेहनक रीजाणीछे तेमाहारी मेंशक्तिजाणी जोंताहरेग शक्तिशिरवीलोयनो वेदपानेवाडे त ए दुरकर्मादिक स्थानकेजयीमीणवानो उद्यमकर अनेहुंपण वगलमां मायाने

तेडीतेहां आवीस तेसांजली संसारीजीवअगृहीतसंकेतानेकहेछे जेपछेहुं तेतेस्थानकें जयी खुन्नाथायी मृषावादचलाववापणानी शक्तिशीख्यो एमकरतांकेटलाकवर्षविल्या.

एटलामां शेखरपुरनगरनो नरकेसरीनामेराजा तेणेमारी कीर्त्तिसांजली जे नरवाहनराजानोपुत्र रिपुदारण महागुणपात्रछे तेजाणीने तेणेपोतानीस्त्रीजे वसुंधराते ने सर्ववातजणावीने महारूपवंत कलावंत घणीचतुरएवीजे नरसुंदरीनामे पोतानी पुत्रीछे तेहनेकह्युंजे रिपुदारणवरताहरेयोग्यछे तेनीसाथेंविवाहकरियें तेसांजली नर सुंदरियेंकह्युं नलेकरो पणसजामां एकविद्यानीपरीक्षाकरीपछे पाणिग्रहणकरीश तेसां जली राजायेंकह्युंघणुंसारुं पछे नरकेसरीराजा घणापरिवारें सहित सिद्धार्थपुरेंआवी नरवाहनराजानेंतेवातसंजलावी राजाप्रमुखसर्व हर्षपाम्या ज्योतषीनेंतेडी मुहूर्त्तलेवराव्युं राजायें महामंमपादिक सामग्रीकरावी मुहूर्त्तनादिवसें मनेंतेडावी नर वाहनराजा परिवारसहित विवाहमंमपें आवीवेंगा एहवामां नरकेसरीराजापण परिवारसहित मंमपेंआव्या सर्वलोकजोवानें एकगयया तिहां महामतिनामा कला चार्यनेंपण राजायेंतेडाव्यो तेपण मंमपेंआवीवेंगो.

एटलामां वसुधरामातायें सहित तयासखियें परवरीथकी सर्वलोकनाचित्तने रा गउपजावति रूपेंकरी रंजा तिलोत्तमानेपण जीपति वदनरूपचंद्रमायेंकरी दशोदिशो ने दीपावति स्तनयुगलेंकरी कनककलशना भ्रमनेउपजावति मधुरस्वरेकरी कोकिला नेपणजीपति विविधप्रकारना अलंकारवेषेकरी साधुजननेपण कौतुकउपजावति का मीलोकनाचित्तने आकर्षणकरति एवी नरसुंदरीपण सजामांआवी मारासन्मुख बेठी तेवारेंमहारोपिता तथा विमलमालामाता अनेहुंपण परमहर्षितथयो तेव खते हर्षितवदने नरसुंदरीबोली जेहेराजपुत्रजी कोइकविद्यामनेसंजलावो तेहांलोक सर्व उत्सुकथयीजूएछे अनेमनेतो जयथयो गलुबंधाइगयो केमकेविद्यानातोनामपण विस्मृतथयाहता तेथीहुं मृत्युप्रायेंथयीगयो नरसुंदरी तथा नरकेसरीप्रमुखतो मनेए वोदेखीने विलखाथया अनेमहारेपितायें महामतिनामा कलाचार्यने सन्मुखजोयीपु ठयुं जेआमारोपुत्र एवोपंमितकहेवातोहतो तेनीआजे जीजपणकेमउघडतीनथी ते उपरें महामतियेंकह्युंजे हेराजन् एताहरोपुत्र एकअहंकार अनेबीजोमृषावादएवेवा तें पंमितछे पणविद्याध्ययननोतो लेशमात्र समजतोनथी इत्यादिकअवगुण कलाचा र्यनामुखथी सांजली राजामहालज्जायमानथयी आवतिकालें विद्यानीपरीक्षाकरा वसुं एमकही सजाविसर्जनकरी राजाउठीगयो लोकतोसर्वेगामोगाम महारो हा स्यकरवालागा सजानालोकगयापछे हुंपणसावधथयी श्यामसुखकरी मंदिरमांगयो

जेमतेम कष्टेंकरीतेदिवसं वोल्यो रात्रेंहुंसुतो एवामां मारो पुण्योदयते मनेतथा मारा पिताने चिंतातुरजाणी लज्जापाम्यो म्हारा मित्रनेविटंबनाथयी तोहुंसुखे सुं बेसी रह्योछुं एवुंविचारी तेपुण्योदय नरकेसरीराजा पासेगयो एटले नरकेसरीने एवीबु द्धिउपनीजे नरसुंदरीनो रिपुदारणसाथें पाणिग्रहणथयुं एवातसर्वस्थले विख्याति पामिगयीछे तोहवेजोहुंनपरणावीसतो वेहुनिलाजरेसेनही इत्यादिकविचारी नरसुंद रीनेपणसमजावीने बीजादिवसें मारापिताने आवीकह्युंजे रिपुदारणने विद्याबोलाव्या विनाज नरसुंदरीसाथें पाणिग्रहणसुखेंकरावो तेवातसांभली नरवाहनराजा हर्षपा म्या महोटाआडंबरें विवाहकर्यो नरसुंदरीसरिखीस्त्रीपामि हुंपण परमहर्षपाम्यो नवा नवा भोगविलासें विषयसुखभोगववालागो नरकेसरीराजा आनंदपामि पोतानेनगरे पहोता हुंअनेनरसुंदरी वेहुनेपरस्परेंस्नेहरागें सुखभोगवतां घणावर्षवितिगया.

एकसमे अहंकारें मृषावादनेकह्युंजे हेमित्र आपणोपरमस्नेहीजे रिपुदारणतेतो नरसुंदरीसाथें एकथयोछे तेथीआपणे वेहुनेविसारीमुक्योछे माटेएहवो उपायकरिये के जेथकीएनरसुंदरीसाथें रिपुदारणनो विछोहथाय तेसांभली मृषावादेंकह्युंजे हुं पणएहिजविचारमांछुं हवेएकदिवसें नरसुंदरीसाथें विनोदकरतां नरसुंदरियें मनेपु छ्युंजे हेस्वामिविवाहनादिवसें विद्यापुछतां तमेक्षोभपाम्यातेनुंसुंकारण तेसांभलीमें कह्युंजेतुंस्त्रीजातिछो तोतारासाथें विसंवादकरतां अमेहलकाकेहेवायीयें तेमाटेहुं बोल्योनही तेवारें नरसुंदरियें म्हारुचित्त खोटुंजाणीकह्युंजेरुडुं पणहेस्वामिजीहुं जाणतो एकांतछे माटेहमणाजकोइकला कहीबतावो तेसांभलीहुं मारामनमां अभ्या पवानीचिंतवनकरुंछुंएटलामांशैलराजायेंस्तब्धचित्तनामे औषधमाहरे हृदयेंचोप ड्युं तेथीमेंअहंकारनेवशेथयी नरसुंदरीनेपगेठेलीनेकह्युंजे अरेरंडातुंगर्वकरी मनेपू छेजाणेछे तोजाहवेजे पंडितलोय अनेजेहारांताहरुंमनमाने तेनीपासेजा एमकही निर्लज्जनाकरीने नरसुंदरीनें काढीमूकी.

तेवारेंनरसुंदरीमहादुःखवंतथकि रुदनकरति महारीमातापासेजइएसर्व हकिगत कहि मातायेंपण एवातजाणी नरसुंदरीने आश्वासना आपी दुःखधारणकरी मने समजाववाआवी अनेकह्युंजेहेवत्स एह्वीचतुरगुणवंत स्नेहवंत स्त्रीनो शावास्ते अपमानकर्यो इत्यादिकमानाना वचनसांभलीमेंअहंकारवशें मातानेपणनिर्भत्संनाकरी काढीमूकी तोपणमारीमातायें नरसुंदरीने समजावी मनावीने महारीपासेंमोकली तेपेंआवीनेकह्युंजे हेनाथ हेप्राणवल्लभ हेचित्तेश्वर इत्यादिक ललितवचने तथा नयनकटाक्षेंकरी माहराचरण नमस्कारकरति पणेमस्तकनाकेशजगाडनि दीनवचनेना

पणकरीमनेमनाववालागी पणमेंअहंकारनावथी उलटोसामो तेहनेकह्युंजे हेकपटी हेधूर्त तुंएटलो पंमितायीनोमोलमाहराआगल सुंराखेछे इत्यादिकवचने निर्भर्त्सना करी काढीमूकी.

तेवारें निराशथयीथकी नरसुंदरी महाडुःखीथयी जेम कमलनीने उखेडीनाखी होय अथवाजेम विद्यायींभ्रष्टथयली विद्याधरीहोय तेवीथकी महाचिंतातुरथयीथकी क्षणेकवारतो मंदिरना द्वारें सुनीथइउनीरही पछेचालवामांमयुं तेवारेंमें विचार्युंजे किहांजायछे एमविचारीहुंपण तेनीपठवाडेथयो एटलामां सूर्यपणअस्तथयो अनेअं धकारव्याप्यो नरसुंदरियेंतो एकशून्यघरेंजयी उंचोपाशबांधी पोतानागलामांघाली न गरदेवताप्रमुखने पोतानी हकीगतकहिने मारेदेखताज मृत्युपामि एटलामां विमलमा लानामे माहरीमाततेपण पठवाडेआवी तेणेनरसुंदरीनी एवीअवस्थादेखीने गलेपा शोदेइतेपणमृत्युपामि अनेहुंतो तेवेहुनोमरणदेखतोथको पणअहंकारमयीजथइरह्यो हतोतेथीमने पापात्मा अयोग्यजाणी मारोमित्र पुण्योदयनामा तेअलगथयो एहवां मांकपिंजला दासी ते मातानीतथावहुनी शोधकरति तेपणतिहां शून्यगृहपासेंआ वी वेहुनीएहवी अवस्थादेखी तेणेपुकारकर्यो एटलामां चंद्रमानोउदयथयो लो कएकठाथया मनेपिशाचजेवोदेखीने अनेमातानी तथास्त्रीनी एरीतदेखीने लोकोयें माहरी घणीज निर्भर्त्सनाकरी केटलाकएमकेहवालागजे एकागडाने एहवीहंसणीस रिखीकन्या अथवा गधेडाने घोडीयोग्यनहति एमकहेताथका लोकमारीनिंदाक रेछे तेसर्ववातराजासांजलीने महाडुःखपाम्यो पछेतेवेहुना उत्तरकर्त्तव्यकरीमनेअ योग्यजाणी राजायें घरथीबाहेर काढीमूक्यो.

केटलाकदिवसपछे राजाने शोकनिवृत्तिथयी तेथी उद्यानेक्रीडाकरवा निकल्योछे एट लामां एकवृक्षनीचें धर्ममूरतितेजवंतमहाक्रियापात्र अनेकभव्यजीवोने तारवासमर्थ वहुसाधुनापरिवारें परवर्याथका एहवाविचक्षणनामे आचार्यने राजायेंदीठा तेनेप रमआनंदे प्रणामकरी राजाते आचार्य आगलवेठा एटलेबीजापण सर्वलोक वंदनाक री आचार्यआगलवेठा अनेहुंपण किहांकिहांथी भमतो भमतो तेसभामांआवीनेवेठो ह वेते विचक्षणनामा आचार्य सर्वसभानालोक सांभलतां धर्मदेशनादेवानो प्रारंभकर्यो.

आसंसारते दावानलनीपरें प्रज्वलितथयीरह्योछे तेअग्निनेतो सिद्धांतवासनायें धर्मरूपमेघप्राप्तथयोहोयतो उपशमावी शकाय तेमाटेहेभव्योतमे धर्मनेविषे उद्यम करो इत्यादिकधर्मदेशना सांभलतां केटलाएकभव्यतो चारित्रमार्गने वांछवालागा ए टलामांराजायें आचार्यनेपुछ्युंजे हेमहाराज तमेएयौवनअवस्थामां शीरीतेंचारित्र

व्रत ग्रहणकस्यो तेसांजली आचार्यबोल्या जेहेराजन्‌एवृत्तांतकहेताथको पोतानीस्तुति तथापरनीनिंदा अनेंपूर्वेक्रीडाजोगवी तेनुंकहेवापणुंथासे एटलोविरुद्धछे तोपण तमोने सांजलवानोविनोदछे माटेकहुंछुं तेसांजलो.

अनादितथा अंतरहित एहवुं पृथ्वीतलनामेनगर तेअनेकलोकेंकरीपरिपूर्ण तेहां मलसंचयनामेराजा तेहनीमलपंक्तिनामेस्त्री तेहना एकशुजोदय बीजोअशुजोदय एवेनामे वेपुत्र तेमांशुजोदयनी आपनलाइनामेस्त्री अने अशुजोदयनी आपयोग्यतानामेस्त्रीछे वलीशुजोदयने विचक्षणानामेपुत्रछे अने अशुजोदयने जडनामेपुत्रछे.

तेमांविचक्षणपुत्रतो धर्मवंत सत्यवादी धीरजवान देवगुरुनोपूजनारो जितेंद्रिय आचारतत्पर विनीत क्षमावंत इत्यादिक असंख्यगुणे संयुक्तछे तथाजडपुत्रतो विपरीताचारी असंतोषी मृषाजाषणकरनार कपटी देवगुरुनोनिंदनिक कायर लोजी क्रोधी अहंकारी परसंपत्तियेंदुःखी परआपदायेंसुखी इत्यादिक असंख्याता दुर्गुणे संयुक्तछे एरीतेंते वेहुपित्राइनाइर्ज यौवनअवस्थापाम्या.

एटलामां सकलगुणाकर एहवुंनिर्मलचित्तनामे अंतरंगनगरछे तिहांमलक्षय नामेराजा तेहनेंचित्तसुंदर्यता एहवेनामे स्त्रीछे तेहनीबुद्धिनामेपुत्रीछे तेविचक्षणकुमरनेपरणावी तेबुद्धिनामास्त्रीसाथें सुखजोगवतोथको विचक्षणकुमर कालव्यतिक्रम करेछे एकदिवसें मलक्षयराजायें पोतानीपुत्रीनो सुखजाणवानेअर्थे विमर्शएहवेनामें पोतानापुत्रने खबरकाहाडवामोकल्यो हवेते विचक्षणने प्रकर्षनामापुत्रथयो हवे विमर्शनी बहेनबुद्धि तथा प्रकर्षनामाजाणेज तेनास्नेहने प्रसंगे माहोमांहे वातविनोदकरतो तिहांजरह्योछे एरीतेंप्रवर्त्ततां एकदिवसेंविचक्षण अनेजड एबेहुपोताना सुखचित्तनामा बगीचेगया तेहांदंतरूप कुंदवृक्षनीशोजा जुएछे एटलामां एकदासीयें करीयुक्तलावण्यें रूपवंतएहवीस्त्रीदीठी जडकुमरतो तेस्त्रीनेदेखी मोहपाम्योअने विचक्षणकुमरेविचार्युंजे एस्त्रीएकलीज एकदासीसाथें वनमांफिरेछे माटे एधूर्त्तछे एहवुं विचारी जडकुमरने पोतानोहाथझाली आगलचाल्यो एटलेस्त्रीतो मूर्छापामी तेस्त्रीनीदासीशोकाक्रंदकरतीतें वेनाइओ आगलआवी मूर्छानीवातकही तेवारें जडकुमर विचक्षणनेसाथेंतेडी तिहांआवी दासीनेंस्त्रीनुंनामपुछ्युं तेवारेंदासीयेंकह्युंजे एहनुंनामजिव्हाछे अनेमारुंनाम लोलताछे तेवारेंजडेपुछ्युंजे हेलोलता अमाराथकी एजिव्हानें एटलीवधी शोगणछे केजेथको अमाराविरहथी एस्त्रीनेमूर्छाआवी तेवारेंस्त्रीना स्नेहनीवात लोलतादासीकहेछे.

असंव्यवहारनगरथी कर्मपरिणाम तथालोकमर्यादा प्रमुखनेंवसेंनिकली एकेंद्रि

यनगरेंआवी पछेविकलेंद्रिय नगरेंआव्या तेहांनेइंद्रियादिकत्रण पाडेरह्या तेदिवसनी एजिव्हास्त्री कर्म्मपरिणामराजायें तमने परणावीछे तेमाटे घणाकालनोसंबंध केमवी सारीमूकोछो इत्यादिक वातसांभली जडकुमरतो परमहर्षवंतथयो लोलतादासीसाथें जिव्हास्त्रीनेंआदरी अनेविचक्षणकुमरतो कर्म्मपरिणामराजायेंज जिव्हास्त्रीदीधीछे एमजाणीने मननारागविना एनेलौकिकरीतेंराखी पणलोलतादासीनेतो राखीनही अनेजडकुमरतो लोलतादासीनेंवशथयोथको द्राक्ष खजुरप्रमुख तथा डुध दधि घृत गोड सकर तथा मिष्टान्नभोजन शाक मद्य मांस मधु लविंगजाति फल तंबोल प्रमुखनी लालचनावशेंकरी जिव्हानी पुष्टीकरी हर्षपामें अने विचक्षणतो लौ किकरीतें जिव्हाने शुद्धअहारपोपे पण सरसआहारप्रमुखतो कारणविशेषेंजआपे नहिकांनआपे एरीतेंलोलतानो सर्वथासंगकरेनही एमजिव्हास्त्रीसाथें तेबेहुकुम रव्यवर्त्ततांथका लोकतो विचक्षणनी प्रशंसाकरवालागा केजूओ एविचक्षणकुमर स्त्री पाम्योछेपण छुखेमनेछे लिगारमात्र पण जिव्हानेवशथतुंनथी अनेजडकुमरतो शू धोजडजेवोजछे केमके जिव्हास्त्रीवास्ते धर्ममार्गमूकी महाआहेडाप्रमुखेंकरी पापक रेछे एमजडकुमरनी निंदाथवालागी.

हवेएकदिवसे जडकुमरे जिव्हानामेस्त्रीनी पुष्टिकरवानीवात पोतानीमाताआग लकरी.तेवारेंमातायेंकह्युंजे हेवत्स एस्त्रीनलीछे माटेजेमलोलताकहेतेरीतें जिव्हा वहुनुंपोषणकरजे तेसांभली.जडकुमरघणोज खाद्य अखाद्य पेय अपेयादिकेंकरी जिव्हानेपुष्टकरेछे हवेविचक्षणकुमर पण वहुनीइछाविनामात्र पेटभरवानेवास्तेजए लोव्हास्त्रीने संतोषुंछुं एटलीजवात पोताना मातापिता आगलकहि तेसांभली मा तापितायेंकह्युंजे हेवत्स तुंभलुंजकरेछे तथापिएवहुनी उत्पत्तिजोइकाढजे तेउपरें विचक्षणकुमरें तेवचनप्रमाणकरी पोतानोसालोविमर्श तथा प्रकर्षनामा पोतानोजे चतुरपुत्रछे तेवेहुजणने एकवर्षनी अवधिकरी जिव्हानी उत्पत्तिजोवामोकल्या वाह्य नगरेंतो मामांभाणेजेंजोयुंपण केहांजिव्हानीउत्पत्तिमलिनही·

तेवारें अंतरंग राजसचित्तनगरेंगया तेहांजोयुंतोतेनगर ऋद्धिसमृद्धियेंपूर्णछे पण कोइमनुष्यदीठुंनही तेवारेंमामेंकह्युंजे मनुष्यविना एनगरखालीथयोथको ऋद्धिवंततो देखायछे माटेंइहांकोइक भलोरखवालोहसेज एमकहेछे एटलामां दूरथकी एकपुरुष दीठो तेनीपासेंजइ.जुहारकरी तेनुंनाम तथाआनगर केमखालीथयुं तेनीहकीगतपु छी तेवारेंतेवोल्योजे मारुंनाम मिथ्याभिमानछे अनेमोहराजासहित मोहराजानो पुत्र रागकेसरीनामेराजाते सर्वकटकलेइ संतोषनामाचोरउपरें चड्योछे तेवातने अ

यनगरेआवी पछेविकलेंद्रिय नगरेआव्या तेहांवेइंद्रियादिकत्रण पाडेरह्या तेदिवसनी एजिव्हास्त्री कर्म्मपरिणामराजायें तमने परणावीछे तेमाटे घणाकालनोसंबंध केमवी सारीमूकोछो इत्यादिक वातसांभली जडकुमरतो परमहर्षवंतथयी लोलतादासीसाथें जिव्हास्त्रीनेआदरी अनेविचक्षणकुमरतो कर्म्मपरिणामराजायेंज जिव्हास्त्रीदीधीछे एमजाणीने मननाराग विना एनेलौकिकरीतेंराखी पणलोलतादासीनेतो राखीनही अनेजडकुमरतो लोलतादासीनेवशथयोथको द्राक्ष खजूरप्रमुख तथा दुध दधि घृत गोड सर्कर तथा मिष्टान्नभोजन शाक मद्य मांस मधु लविंगजाति फल तंबोल प्रमुखनी लालचनावशेंकरी जिव्हानी पुष्टीकरी हर्षपामें अने विचक्षणतो लौकिकरीतें जिव्हाने शुद्धअहारपोषे पण सरसआहारप्रमुखतो कारणविशेषेंजआपे नहिकांनआपे एरीतेंलोलतानो सर्वथासंगकरेनही एमजिव्हास्त्रीसाथें तेवेहुकुमरप्रवर्त्ततांथका लोकतो विचक्षणनी प्रशंसाकरवालागा केजूओ एविचक्षणकुमर स्त्री पाम्योछेपण छुखेमनेछे लिगारमात्र पण जिव्हानेवशथतुंनथी अनेजडकुमरतो शूधोजडजेवोजछे केमके जिव्हास्त्रीवास्ते धर्ममार्गमूकी महाआहेडाप्रमुखेंकरी पापकरेछे एमजडकुमरनी निंदाथवालागी.

हवेएकदिवसे जडकुमरे जिव्हानामेस्त्रीनी पुष्टिकरवानीवात पोतानीमाताआगलकरी.तेवारेंमातायेंकह्युंजे हेवत्स एस्त्रीनलीछे माटेजेमलोलताकहेतेरीतें जिव्हा वहुनुंपोषणकरजे तेसांभली. जडकुमरघणोज खाद्य अखाद्य पेय अपेयादिकेंकरी जिव्हानेपुष्टकरेछे हवेविचक्षणकुमर पण वहुनीइछाविनामात्र पेटभरवानेवास्तेजए जोव्हास्त्रीने संतोषुंछुं एटलीजवात पोताना मातापिता आगलकहि तेसांभली मातापितायेंकह्युंजे हेवत्स तुंभलुंजकरेछे तथापिएवहुनी उत्पत्तिजोइकाढजे तेउपरें विचक्षणकुमरें तेवचनप्रमाणकरी पोतानोसालोविमर्श तथा प्रकर्षनामा पोतानोजे चतुरपुत्रछे तेवेहुजणने एकवर्षनी अवधिकरी जिव्हानी उत्पत्तिजोवामोकल्या वाह्य नगरेंतो मामांभाणेजेंजोयुंपण केहांजिव्हानीउत्पत्तिमलिनही.

तेवारें अंतरंग राजसचित्तनगरेंगया तेहांजोयुंतोतेनगर ऋद्धिसमृद्धियेंपूर्णछे पण कोइमनुष्यदीठुंनही तेवारेंमामेंकह्युंजे मनुष्यविना एनगरखालीथयोथको ऋद्धिवंततो देखायछे माटेइहांकोइक भलोरखवालोहसेज एमकहेछे एटलामां दूरथकी एकपुरुष दीठो तेनीपासेंजइ जुहारकरी तेनुंनाम तथाआनगर केमखालीथयुं तेनीहकीगतपुछी तेवारेंतेवोल्योजे मारुंनाम मिथ्याभिमानछे अनेमोहराजासहित मोहराजानो पुत्र रागकेसरीनामेराजाते सर्वकटकलेइ संतोषनामाचोरउपरें चड्योछे तेवातने अ

चनगरेंआवी पछेविकलेंद्रिय नगरेंआव्या तेहांवेइंद्रियादिकत्रण पाडेरह्या तेदिवसनी एजिव्हास्त्री कर्म्मपरिणामराजायें तमने परणावीछे तेमाटे घणाकालनोसंबंध केमवी सारीमूकोछो इत्यादिक वातसांजली जडकुमरतो परमहर्षवंतथयो लोलतादासीसाथें जिव्हास्त्रीनेआदरी अनेविचक्षणकुमरतो कर्म्मपरिणामराजायेंज जिव्हास्त्रीदीधीछे एमजाणीने मननाराणविना एनेलौकिकरीतेंराखी पणलोलतादासीनेतो राखीनही अनेजडकुमरतो लोलतादासीनेवशथयोथको द्राक्ष खजुरप्रमुख तथा दुध दधि घृत गोड सर्कर तथा मिष्टान्नभोजन शाक मद्य मांस मधु लविंगजाति फल तंबोल प्रमुखनी लालचनावशेंकरी जिव्हानी पुष्टीकरी हर्षपामें अने विचक्षणतो लौकिकरीतें जिव्हाने शुद्धअहारपोपे पण सरसआहारप्रमुखतो कारणविशेपेंजआपे नहिंकांनआपे एरीतेंलोलतानो सर्वथासंगकरेनही एमजिव्हास्त्रीसाथें तेवेंकुम रप्रवर्त्ततांथका लोकतो विचक्षणनी प्रशंसाकरवालागा केजूओ एविचक्षणकुमर स्त्री पाम्योछेपण सुखेमनेछे लिगारमात्र पण जिव्हानेवशथतुंनथी अनेजडकुमरतो शू धोजडजेवोजछे केमके जिव्हास्त्रीवास्ते धर्ममार्गमूकी महाआहेडाप्रमुखेंकरी पापक रेछे एमजडकुमरनी निंदाथवालागी.

हवेएकदिवसे जडकुमरे जिव्हानामेस्त्रीनी पुष्टिकरवानीवात पोतानीमाताआग लकरी.तेवारेंमातायेंकह्युंजे हेवत्स एस्त्रीनलीछे माटेजेमलोलताकहेतेरीतें जिव्हा वहुनुंपोषणकरजे तेसांभली जडकुमरघणोज खाद्य अखाद्य पेय अपेयादिकेंकरी जिव्हानेपुष्टकरेछे हवेविचक्षणकुमर पण वहुनीइच्छाविनामात्र पेटभरवानेवास्तेजए जोव्हास्त्रीने संतोषेंछे एटलीजवात पोताना मातापिता आगलकहि तेसांभली मा तापितायेंकह्युंजे हेवत्स तुंभलुंजकरेछे तथापिएवहुनी उत्पत्तिजोइकाहडजे तेउपरें विचक्षणकुमरें तेवचनप्रमाणकरी पोतानोसालोविमर्श तथा प्रकर्पनामा पोतानोजे चतुरपुत्रछे तेवेहुजणने एकवर्पनी अवधिकरी जिव्हानी उत्पत्तिजोवामोकल्या वाह्य नगरेंतो मामांभाणेजेंजोयुंपण केहांजिव्हानीउत्पत्तिमलिनही.

तेवारें अंतरंग राजसचित्तनगरेंगया तेहांजोयुंतोतेनगर ऋद्धिसमृद्धियेंपूर्णछे पण कोइमनुष्यदीठुंनही तेवारेंमामेंकह्युंजे मनुष्यविना एनगरखालीथयोथको ऋद्धिवंततो देखायछे माटेइहांकोइक नजोरखवालोहसेज एमकहेछे एटलामां दूरथकी एकपुरुष दीठो तेनीपासेंजइ.जुहारकरी तेनुंनाम तथाआनगर केमखालीथयुं तेनीहकीगतपु छी तेवारेंतेवोल्योजे मारुंनाम मिथ्याभिमानछे अनेमोहराजासहित मोहराजानो पुत्र रागकेसरीनामेराजाते सर्वकटकलेइ संतोपनामाचोरउपरें चड्योछे तेवातने अ

चारप्रकारनीमाया अनेचारप्रकारनोलोन एआठवालकते रागकेसरीराजाना पुत्रोछे मूढतानामेराणीनी कुंखथीउपनाछे एरीतेंए सोलेकशायतेमहामोहराजाना पोत्रा जाणवा एरीतें एनुंस्वरूपसामान्यप्रकारेंकह्युं वली विशेषप्रकारें एहुनोअचिंतनीय शक्ति पणारूपसरूपकहेछे.

तथाआवलीरागकेसरीनामेराजानेपाशेंजे बेगोछे जेहनुं मुखतंबोलेंकरीशोजितछे सुगंधिकमलनो गंधलियेछे तथापासेबेठली जोगतृष्णानामेस्त्रीनाकंठनेविषे थापीछेबा हुजेहने तथा आलिंगनआपेछे अनेजोगतृष्णानाज मुखनेसन्मुखजेणेपोताना लोच नथाप्याछे तथास्त्रीना नेउर कंकणादिकना अवाजेकरीसर्वदिशीनेजीतीने तेहनेवि षेजदीधाछे समकालें बेहुकानजेणे तथा हावजावादिकना मधुरस्वरसांजलेछे सम कालें पांचेइंद्रियना विषयने जोगवतो एहवोए विषयाभिलाषनामेप्रधानछे अनेए नापासेजे एनीस्त्रीबेठीछे तेजोगतृष्णानामेछे.

एविषयाभिलाष पोतानीवीर्येंकरीसहितथको जक्ष्याजक्ष्ययोग्य पीवानपीवायोग्य हिताहित कार्य अकार्यादिकेंकरी सर्वलोकने विकलजावववंत कखाछे यगत्आंधला नीपरें चेष्टाकरेछे एहवोएअत्यंत शक्तिवंत जाणी रागकेसरीराजायें सर्वराज्यकारजो रमां एनेमुख्यप्रधानकखोछे तथास्पर्शनादिक पंचेंद्रियजे पूर्वेंकह्या ते एविषयाभिला षनाज पुत्रोछे अनेजेप्राणी एविषयाभिलाषने वशेंपडेतेप्राणी माह्योछतां मूर्खथाय चारित्रवंतछतां अचारित्रियोथाय धीरपुरुषनेकायरकरे एमएविषयाभिलाषनो वर्ण वसांजली प्रकर्षबोल्योजे हेमांमाजी एनेतोमेंतमाराकह्याविना एनावीर्यनुंस्वरूपदेख तांजजाणीलीधो केमके नितिशास्त्रमांकह्युंछे रूपतोज्ञायतेजाति जांतेःशीलंशुजाशुभं॥ शीलाद्गुणाःप्रकाश्यंते गुणैःसत्वंमहाधियां॥१॥ तेसांजली विमर्शबोल्योजेहे प्रकर्षतुं बु द्धिनो तथाविचक्षणनोपुत्रछो माटेएनुंस्वरूपजाणीजाय तेमांकांइ मट्टोटीवातनथी तो पण एमोहराजाना सैन्यनास्वरूप बाकीरह्योछेते हुंकहुंछुं माटेसावधानथयी सांजलजे.

आमंडपमांजे कुविकल्प अनेइष्टजावादिक उजारह्याछे तेसर्वमोहराजाना गोत्री छे तोपणतेमोहराजाने पोतानाकुलमां उत्तमजाणीने स्वामीपणेकरी सेवेछे माटेसुज टछे तथाआमोहराजानेपासे पोतपोताना परिवारसहित जेसातपुरुषबेठाछे तेमो होटापराक्रमवंतदेखायछे तेमांप्रथम ज्ञानावरणीकर्मनामेराजाछे तेपोतानाअंग जूतछे ते १ मतिज्ञानावरणी २ श्रुतज्ञानावरणी ३ अवधिज्ञानावरणी ४ मनपर्य वज्ञानावरणी ५ केवलज्ञानावरणी एपांचेमनुष्ये परवश्योथको पांचज्ञाननेआवरेछे लोकने अज्ञानेकरीआंधलाकरेछे तथाआबीजो राजाते दर्शनावरणीकर्मछे ते १ निद्रा

२ निद्रानिद्रा ३ प्रचला ४ प्रचलाप्रचला ५ थीणद्धी एपांचजातनीनिद्रा त. १ चक्षु २ अचक्षु ३ अवधि ४ केवलदर्शनावरणरूप एरीतें नवमनुष्यें परवस्त्री थको एपण सामान्यावबोधरूपज्ञानने आवरेछे.

तथासाता असातावेदनीरूप बेपुरुषेंपरवस्त्रो त्रीजो वेदनीकर्मनामे राजाछे तेप्राणीने सुखअने असुखना विपाकप्रतें देखाडेछे तथा चारेगतिनाथाजाका चारमनुष्यपरवस्त्रोथको जोवने हेडिनीपरें चारेगतिमां फेरवनारो ... नामा जाछे तथा १ मनुष्यादिचारेगति २ एकेंद्रियादिक पांच जाति ३ उदा... शरीर ४ उदारिकादि त्रणअंगोपांग ५ उदारिकादि पन्नरबंधन ६ उदारिकादिकांत संघातन ७ संघयणछ ८ संस्थानछ ए वर्णपांच १० गंधबे ११ पांच रस १२आठ स्पर्श १३ मनुष्यादिकचारगतिनीआनुपूर्वी १४ हिंमवानीगतिबे तथात्रस ब दर पर्याप्त प्रत्येक स्थिर शुन्न शुनग सुस्वर आदेय यशनाम एत्रसदशकपुरुषतथ थावर सूक्ष्म अपर्याप्त साधारण अथिर अशुन्न अशुन्नग डुःस्वर अनादेय अने अ श एथावरदशकपुरुषमली २० यथातथा अगुरुलघु उपघात पराघात उश्वा आताप उद्योत निर्माण अने त्रिजगत्पूज्य तीर्थकरनामकर्म ए १०३ प्रकृति १०३ मनुष्यपरवस्त्रोछे तेनेनामकर्मराजाजाणवो.

तथा उच्चगोत्र अने नीचगोत्र एबेसुनटेपरवस्त्रोथकोछे तेहने गोत्रकर्मराजाकहिये तेजीवोने नानाप्रकारनारूपेंकरी नाटककरावेछे तेउंचगोत्रअने नीचगोत्रनामे बेपुरुष युक्तथकोकुलादिकनेविषेप्राणीनेजोडेछे तथा १ दानांतराय २ लान्नांतराय ३ नोगां तराय ४ उपनोगांतराय ५ वीर्यांतरायरूप पांचेपुरुषें परवस्त्रोथको आयंतराय कर्मराजाबेगोछे एरीतें एसातेराजा मोहराजाना कुटुंबीछे ते मोहराजानी आज्ञायें प्र वर्त्तताथका सर्वसंसारीजीवने विविधप्रकारना विपाकदेखाडेछे एसातेनेजो सामान्य दृष्टीयेंकरी विचारियेंतो सर्वेराजाजदेखायछे पणमोहराजाना सुनटदेखातानथी अ नेजो विशेषरीतें विचारियेंतो मोहराजानासुनटदेखायछे पणराजादेखातानथी केम के जिनराजें अनेकांतिकवाद उपदेश्युंछे तेसत्यछे जेमाटे सुमुदायमात्रे सामान्य रीतें कथंचित् निन्न कथंचित् अनिन्न जेम जूदाजूदातंतुनो ग्रहणकीधेछतें पट जेवस्त्रतेनोअनावयाय अने संपूर्णपटनीअपेक्षायेंकरी तंतुआजणातानथी तेमज दं कहेनो ग्रहणकीधेछतें वननोअनावयाय अने सामान्यरीतें जोतां जूदाजूदा वृक्ष नोअनावयाय तेमकर्मोनी मूलप्रकृतिनो ग्रहणकीधेछते उत्तरप्रकृति जूदीनकहेवा

य अनेउत्तरप्रकृतिनी विवक्षानेविषे मूलप्रकृतिनपामियें इत्यादिप्रकारें सामान्यविशे षरीतें जैन सर्वपदार्थने ग्रहणकरेछते सर्वसमभावनेपामे एमकही.

विमर्शबोल्योजे हेभाणेज एसातराजामां त्रीजो चोथो पांचमो अने छठो एचार राजातो केटलाकनेदुःखआपे अने वली केटलाकने सुखपणआपेछे जेमशरीरादिकना योगथी व्याघ्रादिकहिंसाकरेछे अने साधुजनते एजशरीरादिकना योगथी जीवरक्षा करेछे इहांकेटलाक अज्ञानी केवलीने जीवघात कायादिकने हालवेकरीमानेछे ते मिथ्याजाणवुं जोहालवा चालवाथी जीवघातमानियेंतो केवलीने जीवघात निरंत रपणे मानवोजोइयें तेवाततोमलतीनथी जो व्याघ्रादिकपण निरंतर जीवघातना करनार कहेवातानथी तोकेवलीने निरंतरजीवघातक शीरीतेंकहियें तेमाटे सत्तहिं ठाणेहिं केवलीजाणेज्जा तंजहा नोपाणेअइवाइत्ता इत्यादिक श्रीठाणांगसूत्रनावच न तथा जैनमतनी प्रक्रिया सांचववामाटे जे केवलीते निर्दोषजमानवा.

तथावली विमर्शबोल्योजे पहेलो बीजो अने सातमो एत्रणराजाते सपरिवारें मोहराजासाथें मलीने सर्वजीवने एकांतें विडंबनाआपेछे एटले इग्यारमांगुणठा णासुधी मोहराजानीसत्ताछे तेहांसुधीतो जीवघातथायछे इत्यादिकमामाना वचन सांभलीने प्रकर्षबोल्योजे हेमामाजी एमोहराजानुं सैन्यजेहने पराभवकरीशकेनही एहवाकोइभवजंतुहशे तेवारें विमर्शबोल्योजे एहवापणछे जेजीव निर्मलचित्तवंतहोय तथाधीरपुरुषहोय तथा अनादि अने अंतरहित संसारसमुद्रनेजाणी दुर्लभमनुष्यभ वपामि सद्भूतभावें अप्रमत्तपणे प्रवर्त्ते तेहनीसाथें मोहराजा तथारागकेसरी प्रमुख कोइनोजोरचालेनही तथाजेप्राणी पाणीनापपोटानीपरें जीवतव्यजाणी अनेअशुचि रोगादिकें ग्रस्त क्षीण विनासी एहवुंशरीरजाणी यौवन संध्यारागसमानजाणे अनेवि षयसुखने किंपाकफलनीपरें पहेलातोसुंदरहोय अनेपछे अतिदारुणदुःखदायीजाणे वलीसज्जनकुटुंबनोसंबंधते पक्षीनामेलासरिखोजाणीने जीवितव्यतथा शरीर धनादि कनेविषेजेपुरुष अनित्यपणोभावे तेजीवसाथें मोहराजातथा मोहराजानीस्त्रीजे महा मूढतानामेछे तेबन्नेनो कांइजोरचालेनही तथा शोक भय हास्यादिक अने रागद्वेषा दिकनोपण कांइजोरचालेनही तथा जैनप्रक्रियायेंज जेणेआत्माशुद्धकर्योहोय तेहनी सायें मिथ्यात्वनामेप्रधानतया मिथ्यात्वनीस्त्रीजे कुदृष्टितेहनी शक्तिनोप्रचारचालेनही.

तथास्त्रीना शरीर ते मलमूत्र रुधिर मांस हाडेकरी भर्याहोय एवुंजाणी स्त्री थीविपरीतअशुचि भावनायेंकरी भावितमने प्रवर्त्ते तेपुरुषजोस्त्रीसहितहोयतोपण तेहनीसायें कामदेव तथा तेनीस्त्री रतिनामेछे तेबेहुनोजोरचालेनही.

तथासमस्त समुद्रनापाणीथी धोतायकापण मलमूत्रथी उपनोस्वनावथीज अशुचिवंत एह्वुं शरीरतेपवित्रनथाय तोङ्गच्छाशीकरवी एह्वुंजेविचारकरे तेह्नीता थें ङ्गच्छानोजोरचालेनही.

तथाजे सत्यज्ञाननी नक्तियें सज्ञायध्यानादिक पांचप्रकारें ज्ञाननो अन्यासकरे करावे अथवाअनुमोदे तेपुरुषने ज्ञानावरणीअने दर्शनावरणीयनामे एबेहुराजा प राजवकरीशकेनही वलीजेपुरुष सातक्षेत्रनेविषे धनखरचतोथको तृष्णारहितथको ज्ञा नाचारादिकनेविषे वीर्यवलपराक्रमफोरवेठे दानादिपराक्रमिहोय तेह्ने सातमोअं तरायराजाते परानवकरीशकेनही इत्यादिक सर्वमोह्राजाना सुनटोनेजीतवाना उ पायठे अनेतेनाजीतनारपणठे पणजेम शैलेशैलेनमाणिक्यं मौक्तिकंनगजेगजे॥ साध वोनहिसर्वत्र चंदनंनवनेवने इतिन्यायात् तेमजेनव्यजीवसाथें मोह्राजानोपरिवार सहित कांइजोरचालेनही तेवाजीवपणथोडाजठे हवेतेवातसांनली प्रकर्षबोल्योजे हेमामाजी तेवाविधिवंतपुरुषकिहांवसेठे तेउपरें विमर्श पोतानाजाणेजने आसन्न सिद्धिआजीवनीवातकहेठे.

जेअनादितया अंतरहित समस्तवृत्तांतने उपजवानुंस्थानक एह्वुं मह्ामह्ोटुं नवचक्रनामे नगरठे ते समस्तवाह्यनगर अनेअंतरंगनगरनो आधारनूतठे तेनगरमांव ली वीजावणानगरठे अनेघणापाडाठे घणाघर तथाघणादेहराठे तेहां अनंता लोकवसेठे तेनगरने अंतरंगपणकहियें तथावाह्यपणकहियें तेनगरमां मोह्राजा दिक सर्वनोजीपनार संतोषनामेमहासुनटपणतेहांवसेठे तेह्नासन्मुख जेतुरत मो हूना जनारनव्य पुरुषतेवसेठे तेवारें प्रकर्षपुछयुंजे हेमामा सुंतेहांपणमोह्राजादि कठे तेवारें मामेंकह्युंजे हा तेपणठे केमके मोह्राजादिकसर्व योगशक्तिवंतठे तेअने करूपेंकरी उत्कृष्टपणे नगरमां प्रवेशकरी सर्वलोकने जीपेठे इत्यादिक मामानावच नसांनली प्रकर्षबोल्योजे मोहादिकनाजयनोकरनारजे संतोष तेह्ने तथा नवचक्रन गरने तथानव्यजीवोने जोवानोमनेमहोटोउल्लासठे. माटेतेनगरमनेदेखाम्मो तेवारें मामेकह्युंजे जिव्हानी मूलशुद्धीनेअर्थें आपणेनीकल्या हता तेह्नीउत्पत्तितो आपणे जाणी जेरागकेसरीनोप्रधान विषयानिलाषठेतेहनीपुत्री स्पर्शनादिकोनी न्हानीवेहेन रसनाठे एटलुंतोजाण्युं तोह्वेलांबोजवानुंसुंकामठे फोकटनोकालक्षेपकरवोनही तें माटे जेकार्यकरवाआव्यातेथयुं तोहवेपोतानेनगरेंजइयें तेसांनली नाणेजबोल्योजे हजीतो एकवर्षनीअवधिमां वमहिनाथयाठे तेमाटेचालो कौतुकजोइयें एमनाणेज नाआग्रहथकी तेबेहुमामोनाणेज नवचक्रनगरजोवाने आगलचाल्या.

मार्गेंचालतां भाणेजेंपुछ्युंजे हेमामातांभलियेंछेयेंजेकर्मपरिणामराजा महावीर्यवंत कहेवायछे तोते महामोहादिकथीपणबलवंतहशे किंवामहामोहतेहिज कर्मपरिणामराजाछे एमएवेमांशोभेदछे तेवारें विमर्शबोल्यो के जे कर्म्मपरिणाम ते मोहराजानो वृद्धभाइ सर्वकार्यनोअधिकारीछे पणतेकर्म्मपरिणामने घणु नाटकप्रियछे अनेमोहतो चोरटोछे केमके संग्रामनेविषे रसिकथको जेहने तेहनेजीपतोफिरे तेमाटेज चित्तवृत्तिरूप अटवीमांनिवासकरीने जगतनेफसावेछे पणमोहराजानुंजेसैन्य तेजसैन्य कर्मपरिणामराजानुं पणसमजवुं तथाकर्मपरिणामतो जीवनेजेमकष्टआपेछे तेमविचविचमांसुखनोलेशपणआपेछे सारुं अथवा मांठुं एवेहुकार्यकरे अनेजेमोहराजातेतो निःकेवलदुःखनोजदेवावालोछे मांठुंजकरे तथामोहराजा तेकर्मपरिणामनो न्हानोभाइथाय माटेतेसर्वप्रपंचकरतोफिरे अनेकर्म्मपरिणामराजा स्त्रीयेंसहित नाना प्रकारेभवजंतुना नाटकोप्रतें जोतोथको सुखेंवेगेंराज्यकरेछे अने राजसचित्त तथा तामसचित्तनामे जेवेअंतरंगनगरते मोहराजाने भोगववामाटे कर्मपरिणाम राजायें आप्याछे अनेचित्तवृत्तिनामेअटवीनो राजातोपोतेभव्यजीवजहतो पणसकर्मकजे संसारीजीव तेहने एमोहादिकें बलवंतथयी दूरकरीने चित्तवृत्तिअटवीनोराज्य पोतानेहस्तककर्युंछे तथाबीजा एवेनगरभोगवेछे पणएहोने राज्यभोगवतां केटलोकाल थयो तेकेवलज्ञानीजजाणे अने एमांजे कर्मपरिणामराजाछे तेतोलेवामां तथा आपवामां बेवातेंसमर्थछे तथासर्वनाउपरचालनारोछे अनेमोहराजाते कर्म्मपरिणामराजायेंदीधुंजेकटकतेलेइ लोकनेजीपी कर्मपरिणामराजानोज भंभारवधारेछे.

इत्यादिकवातोनाविनोदेंकरी मार्गउलंघवानो श्रमपणतेनाजाणवामां आव्योनही एमजतांथका मामोअनेभाणेज बेहुजण भवचक्रनगरेंआव्या एहवामां कामदेवनोमित्रजे वसंत तेपण तेहिजनगरेंआव्यो तेवारें उद्याननेविषेनवानवाउपनाजेकुंपल तेना विकस्वरवंतसमूह तेवलीअतिसूक्ष्म अनेअतिसुंदरछे वलीसुखकारीवायुयें प्रबलपणे फलनासमूहनेंकंपाव्युंछे वलीआंबानीमांजरनेपामिने उन्मतजे कोकिलानोसमूहतेणे मधुरस्वरेंकरीने वनखंडनीभूमिनेवाचालकरीछे वली वृक्षफल्याछे. वेलडीओपुष्पवतीथयी वलीनहीमंदएहवोजेमकरंद तेहनाआस्वादेंकरी हर्षवंतअनेउन्मतथयीजेभमरानीश्रेणी तेहनोजे झंकारशब्द तेणेकरीमनोहरकर्युंछेवनखंडजेणे तथाबनवामी प्रमुखफलफूलनी छायायेंकरी गंभीरथयुंछे इत्यादिक वसंतनीशोभादेखीमामेंकह्युंजे हे प्रकर्षभाणेज. चालोआपण आवसंतनीशोभाजोइयें तेवारेंभाणेजेंकह्युंभलुं हवेतेबेहुजणाजूएछे तोवनमां स्थानके स्थानकेंबांधीछे मद्यपाननी गोष्टीवंत एहवा केटलाक

पुरुषछे केटलाकवलीमद्यपानकरी पृथ्वीनेविषे लोटीरह्याछे केटलाकवली स्त्रीनेआश्र यीने गायनकरीरह्याछे एम मद्यपानकरता नमताजमता नगरनालोक ठेकाणेठेकाणे मांकवेवेगदीगा एटलामांवली महोटापरिवारेंसहितमहोटीकद्धियें महोटे आडंबरें अनेकवाजित्रना निर्घोषथाते समुद्रनापूरनीपरें महोटाशब्दथाते छत्रचामरादिकें शोजतोथको चतुरंगणीसेनायेंसहित वली छत्रधरयोछेजेहने चामरादिकराजचिन्हवंत थको तेनगरनोराजा वसंतनीशोना जोवानेआवलोदीगो तेदेखी विमर्श प्रकर्षनेकह्युं जे हेजाणेज आजोजे जे महामोहें रागकेसरियें विषयाभिलाषें जोगतृष्णायें तथा मकरध्वजें अने हास्यादिकें जीत्याजेलोकतेतुंआजडपणुं अज्ञानकारीपणुं अकार्यकारीपणुं चित्तविकलपणुं तेतुंजो कहेवोने तेवारें प्रकर्षपुछयुंजे एसर्वलोक मोहादिक नेवशवर्त्तियथीने चेष्टाकरेछे तेकेमजीताणाहसे तेवारें विमर्शमामो तेनेजीतवानी वातकहेवालागो अने प्रकर्षसांभलवालागो

कर्मपरिणामराजानीबीजे कालपरिणति तेहना १ हेमंत २ शिशिर ३ वसंत ४ ग्रीष्म ५ वर्षा ६ शरद एहवेनामे ऋतुरूप छसेवकछे तेवलीयथानुक्रमें कालपरिणतिदेवीनाआदेशें जवचक्रनामानगरे मानवावासक्षेत्रमांआवीने पोतानावारानी मर्यादानेविषे पोतपोतानीआज्ञाप्रवर्त्तावेछे जेवारें वसंतऋतुनोवारोहोय तेवारें महादेवीपण तेहनेज इहांमोकले पणजेवारें वसंत महादेवीनी आज्ञायें जवचक्रनगरमाहेला मानवावासनामे नगरें आवे तेवारें मोहराजातेपण वसंतनोवह्लन मित्रजे कामदेवतेहने पोतानाप्रतापनीवृद्धिनेअर्थें तेनगरेंमोकले अनेपोते तथा सर्वसैन्य कामदेवनीसाथेंथाय तेमाटेवसंत हमणाइहां आव्योछे अने मकरध्वजजे राजायथीआव्योछे तेणेएसर्वलोकने जीत्योछे अने मोहराजाप्रमुखनेवशवर्त्तिकीधाछे वलीमोहराजादिक तेपण विचविचमांरूडीरीतेंआवीने पोतपोतानेअवसरें पोतानो व्यापार देखाडसे पणमोहराजाप्रमुखसर्वे योगशक्तिवंतछे तेथीसाक्षात् देखातानथी अनेमामेकह्युंजे माहरीपासेंविमलालोकनामे योगांजनछे तेथीहुंएसर्वनेदेखुंछुं अनें हे प्रकर्षतुजनेपण एनादर्शननो जोअभिलाषहोयतो एऔषधनुं अंजनकर एमकहीजाणेजने अंजनकर्युं तेहनाअनुजवथी जेहवुं मामेकह्युंहतुं तेतुंजसर्वप्रकर्षेपणदीठुं तेदेखीप्रकर्षबोल्योजे हेमांमाजी तमेंतोविस्मयरूप महोटुं कौतुकदेखाडयुं तेवारें विमर्शबोल्योजे एतोथोडुंजकौतुकछे पणहजीतोए जवचक्रनगरें घणुंकौतुकदेखसुं.

हवेवली प्रकर्षबोल्योकें जेवारें वसंत मानवावासनगरेंआवेछे तेवारें मोहराजा कामदेवने तेहिज नगरनुंराज्यआपेछे अनेपोतें तेहनो परिकरभूत थईने कामदेव

नीसरवाई आवेछे अनेपवनउपर पोतानोव्यापारकरतोदेखायछे तेम राणकेसरीनामे राजा अने विद्यानिलासनामेप्रधान तथानागकुलानामे तेहनीस्त्री इत्यादिकतो म धंडपांनानाव्यापारे प्रगटदेखायछे पण ठगजडादिक तथाशोकादिक केमदेखाता नथी तेनोतजो सांभलोत्याहां इयकहे तेठगजडादिक पणइहांजछे तेहनणागु मरत्राने पणपोतानाव्यापारे प्रगटथाशे तेवारेवली दर्कंपुरुषजे इमांनाजी मोह राजाप्रमुखजो इहांआव्याछे तो चित्तवृत्तिअटवी मार्गोथयीगयीहशे तेवारेमामेंकह्युं जेमोहराजप्रमुखनटे इहांरूपांछे जोचिंतवतो अनंतरूपकरीशके माटेतहांपण एहिजछे अनेइहांपणएहिजआव्याछे.

एममामोनाणेज वातोकरेछे एटलामां अतिलोलाक्षनामेराजा आव्योछे तेह थीथांतर्गतने चंडिकानामेदेवीनामंदिरमां जइ देवीने मद्यादिकेतोची तृप्तिवंतकरी तेवारपछे मद्यपानसंमुख आवीपरिवारसहितपोतें सुवर्णना रत्नजडितपात्रेकरी मद्य पानकरेछे अनेसर्वपरिवारपण मद्यपानकरी नवानवाप्रकारनी चेष्टाओकरेछे एटला मां लोलाक्षराजानो नानोभाइ जे रिपुकंपननामे तिहांवेगोहतो तेणे मद्यपानकर्युंह तु तेणेकरी परवशथयोने पोतानी रतिललितानामे जेस्त्रीहती तेहनेकह्युंजे तुं नाट क कर तेवारेतेस्त्रीयें जेवनी तथा लोकनीलज्जामूकी निर्लज्जथयीने भत्तारनाकेह वाउपरथी नृत्यकरेछे एटलामां रिपुकंपनप्रमुख मद्यपाननावशें प्रबलगाकवंततथयाच का चेष्टारहितथयाने भूमिनेविषे लोटवालागो बीजापण कुटुंबनासर्वलोकतेमद्यपा नेकरी चेतनावर्जिततुल्यथयीपड्याछे एटलामां रतिललितानेनाचतीदेखी लो लाक्षराजा परवशथयोथकोमदेउन्मत्तथयी चकुगेरायीगयीने वली भोगवांछनायें व शीभूतथको रतिललितानेजाणवाउठ्यो स्वजितमानने पगनूभूकवुंजेहनुं एहवीस्त्री पंजरएनो दुष्टअभिप्रायजाणी रतिललितायेंनासवामांडयुं तेहने लोलाक्षे दोडीने पकडी फरीतेनाहाथमांथीछूटी ने मंदिरमां चंडिकानी मूर्त्तिपाछलजयी लग इरही एटले ठगजडनो अवसरथयो तेराजानाशरीरमांपेठो एटलेराजायें खड्ग ही चंडिकानीमूर्त्तिनेछेदी तेहांथीवली रतिललिता पुकारकरतिनाठी अनेमद्यपा नी रिपुकंपनादिकजेहांपड्यांछे तेहांआवी तेहनीपठवाडे राजापण खड्गलेइआ व्यो एटलामां रिपुकंपन सावधानथयो तेणेमहोटाभाइनो एहवो अन्यायजाणी रि पुकंपनपण खड्गलेइउठयो तेवारेतो कोलाहलथयो ठेकाणेठेकाणेथी सुभटोसहुने इउठया मद्यनावशथयाथका पोतानातथापरना भागनेनथीओलखता एहवाथका प्रवर्त्त्या अने माहोमांहे युद्धथयुं लोकतोसर्वत्रासपामि दिशोदिशेंनाठागया.

तेवारेंमामें नाणेजनेकह्युंजे हेपुत्र जोआप्रगटनूत देपगर्जेंद्रनो महिमा कहेवो छे तेसांभली नाणेजेजोवामांडयुं एटलामांज रिपुकंपने नृहनाइने खड्गकरीहण्यो तेथी कोलाहल हाहाकारथइरह्यो तेवारें विमर्शेकह्युंजे जोआमद्यपाननीरीत कहेवीने जेमद्यपानकरे तथापरदारावांछे एहवाअनर्थकरनारने एहवीएहवी विटंबनाओथाय तेमाटे भलापुरुषें मद्यपान तथा परदारागमन परिहरवुं.

हवेरिपुकंपनपोतानाभाइनेहणीने पोतेराजाथयो देशनेविषे पोतानीआज्ञाप्रवर्त्तावी तेवारपछेतेजनगरमांते मांमानाणेजने कौतुकजोताज केटलेकदिवसें मिथ्याभिमान तेरिपुकंपनने आवीमल्यो एटलामां रिपुकंपननीवीजीस्त्री जे मतिकलितातेणे पुत्रप्रसव्यो राजानेवधामणीआवी. राजायें मिथ्याभिमाननेवशें मुकुटकुंमलादिक सर्वाभरण वधामणीनी देनारीदासीने आप्या राजमंदिरसमराव्युं गामगामें हर्षसहित महोत्सवमंमाव्या घणोअहंकारधरवालागो अनेविचार्युंजेअहोमहारो भाग्योदयकहेवोछे जेसमकालें राज्यनोलाभथयो अनेवली पुत्रनोपणलाभथयो.

एसर्व मामोभाणेजजुएछे एटलामां क्षणेकवारें वली मतिमोह अने शोकएवेहु सुभटने राजमंदिरमांप्रवेशकरतादेखीने प्रकर्षें पुछ्युंहेमांमा एमतिमोह अनेशोक एवेहुकिहांजशे तेसांभली विमर्शेकह्युंके हमणाए राजमंदिरमां जइने सुंतमासोकरेछेते तुंजोजे एटलामां एकदासीयें राजानेआवीकह्युं जेहेस्वामी पुत्रनेघणोरोगउपनोछे तेसांभली राजाजेहर्षधरतोहतो तेसर्वजतुरह्युं अने मतिमोह तथा शोकएवेराजाना शरीरमांपेगा तेथीराजा दुःखाक्रांतछतो रुदनकरतो पुत्रसमीपेंआव्यो अने अनेक यंत्र मंत्र तंत्र औषधकराव्या तेसर्वेउपायजेम कलरनीजमीनमां वर्षादनिःफलथाय तेम निःफलथयां क्षणेकेंराजानेदेखतांज बालकमृत्युपाम्यो तेहथी राजा अने राजानी स्त्रीबन्नेजणा मतिमोहनावशथकी इंटनेविषे मस्तकनुंफाडवुं तथा रुदयनुंकुटवुं इत्यादिकेंकरी मूर्छितथयो मृत्युपाम्या तेथीराजानुंकुल सर्वशोकातुरथयुं तेवारेंमांमें भाणेजनेकह्युं के जोआभवचक्रनगरनाकौतुक केहेवाछे.

प्रकर्षपण आश्चर्यकरी सहितथको खेदवचनेकरी मोहसैन्यना भावविलासनी वातोकरतां तेहांथीवली मामोभाणेज बन्नेजणा आगलचाल्या एटले जेहांहाटनी श्रेणीछे तिहांकौतुकजोवानेअर्थें आव्या तिहांएकमहोटा हाटनेविषें एकव्यापारी घणो व्यापार करतोथको हाटेंबेठोदीठो तेहनाआगल घणावाणीआनापुत्रो लखता वांचता तोलतां वेचता लेताइत्यादिकव्यापारनीक्रियाकरेछे विविधप्रकारना रत्न मणि माणिक्य सुवर्ण रूपुंप्रमुखना अंबार एटले ढगला भरयापडयाछेतेदेखीने प्रकर्षे विम

शीनेकहेले जेहेमामा आव्यापारीआगलें लोकप्रणामकरेले कोइलोलावेले कोइमांगेले तोपणतेहने सामुजोतोनथी तथा सांजलतोपणनथी अथवाघणेकालेपण बोलतो नथो अनेउंचीजनजरकरीरह्योले पण कोइनेजोतोनथीतेसुं.

तेवारेंमामोबोल्यो जेएव्यवहारियाना अंगनेविषे मिथ्याजिमाननोजाइ धनगर्वेना मेंपेगेले तेणेकरी धनगर्वितले तेहनावशथकी एह्वी एनीमाठी अवस्थाथयीले प णए एमजाणतोनथीजे एसर्वेक्षणीकले एममामोजाणेजवातोकरेले एटलामां राग केसरीराजानो पांचमोवालकजे अनंतानुबंधीलोज तेव्यवहारीयानाअंगमांपेठो एटला मांकोइकपुरुषेंआवीएक वहुमुलोरत्नजडितमुकुटते व्यवहारियानेएकांतेतेडी नेदेखा ड्युं व्यवहारियेंपणजाण्युंजे एमालचोरीनोले तोपणलोजनावशें तेव्यवहारियें थोडुं कड्व्यआपीने वेचातुंलीधो पठेतेवेचनारपुरुषतोजतोरह्यो एटलामांपाठलथी पग नेअनुसारें विजीपणराजानुं कटकआव्युं तेणेतेमुकुटसहित व्यवहारियानेपकड्युं सर्वलोकदेखतांतेनी डुकानलुंटीलीधी गधेडेचडावी विचित्रप्रकारनी विटंवनाकरी फेरव्युं लोकमांबहु अपकीर्त्तिचाली अपभ्राजनाचाली तेवारें आश्चर्यआकुलचिंतवंत थकोप्रकर्ष विमर्शनेकह्युंजे हेमामाआकेह्वो आश्चर्य एतेइंद्रजालके स्वप्न आएक क्षणवारमांआमकेमथयुं तेवारेंमामोवोल्यो जेहेप्रकर्ष एजेदेखायले तेसर्वेसत्यले ध नविजवादिनीएह्वीजगतिले केमकेजे उत्तमपुरुषहोय ते धननोगर्वकरेनही एधनते शरदऋतुनावादलनोपरें चंचलले देखतादेखताजतोरहे धननालोजीपुरुषो शइकला गमेंकार्यकरी हीनलोकनीपण सेवाकरेले पोतानागुणनोनाशकरेले हजारोगमेकव णउपायेंकरी महाकष्टेकरी धननेउपजावे तोपणएधन स्थिररहेनही तेवारेंवलीप्रक र्षेपुठ्युंजे हेमामास्यानावेंकरी चपलएह्वुंएधन तेसीरीतेंस्थिरथाय तेहनोउपायक हो तेवारेंमामो धनस्थिरथयाना उपायकहेले.

जेपुरुषनीतिथीउपजावेलुंधनपामिने देवगुरुनीपुजाकरे शुद्धाचारेंप्रवर्त्ते अशर णादिक जीवोउपरेदयाराखे परनेपीडानकरे परोपकारकरे पोतानोचित्तवशराखे शुज्ञ स्थानकें धनखरचे धनउपरमूर्छानराखे. इत्यादिकमां जेतत्परहोय तेपुरुषने पुण्यानु वंधीपुण्येकरी धनस्थिरथाय एमए मामोजाणेज विचित्रप्रकारनी वातोमां हर्षेकरी तत्परथकां उजारेले एटलामां एकयुवानपुरुष जेहने घणामल्लिनदलिद्रीजेवा फा टेलात्रुटेला वस्त्रपहेस्याले तथापि कांइकद्रव्यखरचीमोदक तांबूलादिकलेइ सुगंधवंत तेल अने पुष्पादिकेंकरी शरीरनेशोजायमानकरीने कांइकजाडुंआपी धोवीनाघरथी रूमांवस्त्रपहेरीने किहांकजतोहतो तेहनेप्रकर्षेदीठो तेवारेंमामानेपुठ्युंजे आमूर्खस

रिखोपण सोनापूर्वक लाफुतंबोलादिकलेइने कोणपुरुषजायछेश्रने एकिहांजतोहशे
तेसांजलीमामो तेपुरुषनीवातकहेछे जे.

एसमुद्रदत्तनोपुत्र रमणनामे एनगरनी वसनारी गणिकानेघरेरहीने तेव्यसनमां
श्राधीनथयीने पोतानापितानो श्रसंख्यद्रव्यहतुं तेसर्वनुंएणे नाशकर्युं फरीलोकना
घरे चाकरीकरतां श्राजीविकाचलावेछे श्राजतोकिहांकथी काइकद्रव्यपामिछे एटले
वली तेद्रव्यखरची नवोपहेरवाशकरी शरीरनेशोनावी मदनमंजरीनामे गणिकानी
पुत्रीकुंदलतानामेछे तेहनीपाशेजायछे तेणेश्रागलएरमणनुं द्रव्यसर्व खरचाव्युंछे
पछे दलिद्रीथयो तेवारेंमुश्रासरिखोजाणीने काढीमेल्यो तोपण वलीश्राजे नोगवांछ
नायें कामेहण्योथको तेहांजायछे तोचालोहवे श्रापणेपणतेहां एवुंकौतुकजोवा ज
इयें एमकहिते बन्नेजण तेनीपछवाडेथया गणिकानेघरें श्राव्या एटले विमर्शेनाक
मरडी माथुंधुणी नाकश्रागुं वस्त्रदेइ खेदेकरी प्रकर्षनेकह्युंजे श्रागणिका श्रशुचीनी
कोठी विष्टायेपरिपूर्ण जेनाबारे द्वारथी श्रशुचिनीकलोरहीछे डुर्गंधछछलेछे विष्टामूत्र
कृमियाजीव नस मांस हाम श्लेष्म गात्रश्रादिदेइने श्रपवित्रवस्तुयें व्यासछेश्रंतरजेहेतुं

पणकृत्रिम पुष्पगंधादिकें क्षणिकक्षयरूप शोनाउपजावीने कामेकरीश्रंधथयाएहे
वाजे कामीपुरुषतेने मोहउपजावेछे एहवुंसांनली प्रकर्षकहेछे श्रहोइतिश्राश्चर्य एड
र्गंध श्रसहेवायोग्यछे ते श्रापणाथी नखमाय माटेश्रापणेबाहेरजइयें पछेतेबन्नेज
ण मंदिरबाहेरनीकलीने कौतुकजुएछे एटलामां रमणते वेश्यानामंदिरमांगयो तेणे
मदनमंजरीनेदीठी मदनमंजरीयेंपण पूर्वेतोकाढाडीमूक्योहतो तथापिद्रमणाकांक्ष
वलीरुडीनोगवस्तु एनीपाशेजोइने कपटवचनेकरीकह्युंजे श्रहोस्वामिपधारो तमेजेदि
वसथीगयाछो तेदिवसथीमांमीने महारीपुत्रीजे कुंदलतिलकाते तमारेविरहें जेमपा
णीयी विछूटी माछलीहोय तेहनीपरें महाडुःखपामिहति इत्यादिकवचनें घणोकप
टरागदेखाडो कह्युंजे हे रमण हमणाराजपुत्र चंद्रनामेंइहांश्रावसे तेमाटेइहां तमे
हाल एकमुहूर्त्तमात्र प्रछन्नपणे वेशीरहो एटलीवातकरेछे एटलामांज राजानोपुत्र
चंद्रश्राव्यो तेथीरमणना शरीरमांजयनामेमोहराजाना सैन्यनोमनुष्यपेठो तेवारें चंद्र
राजपुत्रेंरमणनेदीठो तेथीक्रोधेंव्याप्यो हाथमांछुरीलेइने रमणना नाक तथा कानछे
दिनाख्या एकश्रांखफोडीनाखी लातोमारी बाहेरकाढीमूक्यो मदनमंजरी श्रने कुंद
लतिलकापण विचित्रप्रकारनो उपहासकरी घरथीबाहेरकाढीने खडखडहसवालागी
हवेरमणनेवली तिहांपण चंद्रनीश्राज्ञायें सुनटपुरुषोनीनिबडलाकडीमूठीप्रमुखेकरी
मारखातोथको मृत्युपाम्यो एहवोतेनोवृत्तांतदेखीने विमर्शेकह्युंके जोवत्स श्रागणिका

नो कुटिलपणो तथाकपटनुंपंडितपणुंकहेवोछे तथावली जोआकामदेवनीशक्ति पणक हेवीछे जोआगणिकानाव्यसनमां आसक्तपुरुषोनो विडंबनापणुं माटेहेवत्स गणिका नाआवा अधमपणाजाणी उत्तमपुरुषें जाति शील धन लज्जाइत्यादिक राखवाने अर्थे अनेकअनर्थरूपपूरेकरीनरपूर एहवी नदीरूप एगणिकानुं समागमराखवारूप व्यसनपरिहरवुं फरीविमर्शबोल्यो जेहप्रकर्ष हजीएनवचक्रनगरें घणुजोवुं बाकी रह्युंछे एतोअनंतकौतुकमयछे पणआपणीअवधिमां थोडादिवसबाकीरह्याछे तेमाटे महारुंवचन मानीने चालतोहुंतने एकसामटुं कौतुकदेखाडुं एमकही प्रकर्ष नाणे जने समजावी एकविवेकनामे महापर्वतछे तेहनाशिखरउपरचढिने मामोभाणेज बन्नेजण नवचक्रनो कौतुकजुएछे.

एटलामांएक नग्नपुरुष दीनरांकजेवो नपेंकरीसहित जेनाकेशसर्व उडीगयाथीगया छे पिशाचनीपरें कुक्षीदुखेकरी क्षीणथयोछे वली आंखचपलथयोछे दशेदिशेंजोतो थको घणापुरुषेंविंटयोथको नाशवावांछतो खडीमाटीयेंकरी धोयाछेहाथजेहना एहवो पुरुषदेखीप्रकर्षेपुछयुंजे हेमामा एकोणपुरुषछे तेवारेंविमर्शकहेछे.

कुबेरनामेसार्थवाहनो महाधनवंत ए धनेश्वरनामेपुत्रछे पणजुगटादिकनेविषे आसक्तछेमाटे एनेघणेलोकें कपोत एटलेहोलो एहवुंयथार्थनामदीधुंछे एणेजुगटाना व्यसनमां क्रोडोगमे रत्ननीराशी खपावीने पितानुंघरतमतमान जेहवुंकरीमूक्यो एवो अपलक्षणोजाणी पितायेंएनेघरथीबाहेरकाढीमूक्योछे वलीहारयोधन पाछोमेलववाने घणीचोरीओकरीपण राजायें एने रासभारोहणादिक कदर्थनाओकरी वाणियानो पुत्रनेएहवुंजाणीनेजीवतो मूक्योछे तथापिएव्यसनमूकतोनथी आजेरात्रेंवली एजु वटोरमतां पोतानो मस्तकहारयोछे तेमाटे आसवेंधूर्त जुवानारमनारलोक हमणांए नो मस्तकलेवावांछेछे तेवारें प्रकर्षेंपुछयुंजे धनक्षयादिक अनर्थनोकरनार अनेप्राण नोनाशकरनार इत्यादिकअनर्थनुंहेतुभूत जोजुवटुंछे तोलोकएहवी धूतक्रीडानावाले करेछे तेवारें विमर्शकहयुंजे मोहराजायें जेहनेपोतानेशक्तियें आंधलाकरयाछे माटेदे खतीआंखेपणनथीदेखता एहवाजे लोकते आवामाठाव्यसनना अधमकजनेचित्तकु ल जाणतानथी पणउत्तमपुरुषजेमोहराजादिकथी पराभववंतनथी एहवोजेहोयतेतो धूतव्यसन सर्वथानकरें एहवी वातकरेछे.

एटलामां प्रकर्षेंजंगलमध्ये एकचलारहाथमांतरवारलेइ शीघ्रागतीपणेवाडे दोड तोदेखी मामानेपुछयुंजे शाकारणे आविह्वलपणे शीघ्रपणे नटकामां उतावल थी व्याकुलथकोजीवनीपरवाहे धरवीनारजनछे नेकोणछेने तेनामनो विमर्शकहे

छे देपुत्रएनवचक्रमध्येज ललितांगपुरनामेनगरनो स्वामि ललनानामेराजाछे एनेच एणेआहेमोप्रियछे एरात्रदिवस निरंतर आहेडोकरतोकरतोजफिरेछे एणेराजकार्य सर्वविशारीमूक्याछे प्रधानादिकें घणुंवारयोतोपण एणेआहेडोमूक्योनही तेवारें प्र धानादिकें राजकरवाने अयोग्यजाणी एहनापुत्रने राज्यथापी एहनेनगरबाहेर का ढीमूक्योछे तेथीएललनराजा सुखतृषायें घणुदुःखीथायछे तथापि मांसनेलोजें आ हेडोमूकतोनथी आहिंपणकुटुंबधनादिकथी भ्रष्टथयो वलीपरनवेपण नरकादिकग तिप्रत्यें पामशे अनेजेपुरुषने मांसनक्षणनीवांछाहोय तेहनेसर्वथाधर्महोयजनही ते इहलोकें परलोकेंघणुदुःखपामे एरीतें मामोनाणेजवातकरेछे एटलामां ललनराजा जे शृगालनीपछवाडे अश्वदोडावतोहतो तेशृगालतोनासीगयो अने एनीदृष्टीतीया लउपरहती तेथी आगल एकखाडोआव्यो तेनाउपर एनोध्यानरह्योनही एटलामां घोडो अगाधखडांखाडामाजइपड्यो तेहांललनराजा चंपायीने क्षणेकमां मृत्युपा म्यो एटलेंविमर्श प्रकर्षनेदेखाडयुंकेजो आहेमाकरवाना फल तेमाटेजे सदाइं परि णामें उत्तमपुरुषहोय तेणेमांसनक्षण तथा आहेडोवर्जवुं धर्मतोआज्ञापूर्वकदयायेंछे

एहवामांवली कोइकपुरुषने जमराजानादूतसरखा राजानामाणसोये तेहनी जीनने उखेडीनाखीने गलामां तपावेलासीसानोरस पीवरावेछे तेदेखीने प्रकर्ष विम र्शनेपुछयुंजे हेमामा आकोणपुरुषछे एतोकोइ अपराधिपुरुषजणायछे माटेज एह नागलामां तपावेला शीसानोरसढोलीने एनेपीडाउपजावेछे तेवारेंमामोकहेछेजे एच रणकपुरनगरनो वसनारो महाधनवंत सुमुखनामेव्यापारीछे पणतेवालावस्थाथीज स्त्रीकथा देशकथा राजकथा नक्तकथा एचारकथारूपचारेंविकथानेविपे अतिआस क्तवंत महावाचाल तेथीकरीलोकें एनुंनामदुर्मुखदीधुंछे एकदिवसें एनगरनोराजाती व्रनामेछे तेनेकोइकपोताना डुसमनसाथें संग्रामथयो तेराजावैरीनोजयकरी पोता नानगरमांआवेछे एटलामांएदुर्मुखें गाममांएहवी अफवाकरीछेजे राजाहारीगयो अनेवैरीजीतिगया माटे जेहथीनसाय तेनासीजाओ नहीतोसर्वलूटासो एवातसां नली सर्वनगरनालोकेंनासवामांडयो नगरशून्ययथयुं एहवामां तीव्रनामेराजा शत्रुने जीतीने जेवारें पोतानानगरमांआव्यो तेवारें लोकोपणराजानाआववाथी हर्षवंत थका नगरनेविपेपाछाआव्या अनुक्रमेंराजायें नगरमांनयपेशवानुं कारणपूछेथके को इकनामूखथकी बीकउपजवानुंमूलएदुर्मुखहतो एवुंजाणी क्रोधेंकरी राजायें पोताना सेवकोने आदेशकर्युंके जेजीनेकरी एदुर्मुखेकह्युं तेजीननोमूलथी उन्मूलनकरीनाखो

वलीजेगर्दनरूपनालथकी एजीननी मूलप्रवृत्तिनीकली तेगर्दनरूपनालनेविषे तपावे लासीसानोरसनाखो तेमाटेराजानाहुकुमथी राजानासेवकोयें एहने एविटंबनाकरीछे.

तेसांभली प्रकर्षेकह्युंजे हेमामाजीजेविकथाना करनारछे तेहने एहवीविटंबना थायछे तेवारेंमामेंकह्युं जेहनामोकलामुखहोय अणविचार्युंबोलनारा विकथासक्त होय तेहनेएमजहोयतेमाटेजे सत्यपुरुषहोय सर्वलोकने हितवंछकहोय तेवा प्रमाणोपेतपुरुषनेज सत्यकहेनाराकहियें तेमाटे हितवंछकपुरुषें सर्वथाविकथावर्जवी.

एटलामां राजमार्गेजोतां प्रकर्षे एकउज्वलपुरुषदेखीपुछ्युंजे हेमामाजी आपेलो घोलाशरीरवंत पुरुषदेखायछे तेकोणछे तेवारें मामोतेहनीवातकहेछे जे एपुरुष रागकेसरीनामाराजानो सुभट हर्षनामेछे अनेए मानवावासनगरनोवसनार वासवनामे महोटोव्यवहारीओ तेहनो घणाकालनोविरहयुक्त धनदत्तनामेमित्रनो आववूंथसे तेणेकरीहर्षवंतथशे केमकेअत्यंतवल्लभ बालपणानोमित्रते हमणाघणादिवसेंआवि मल्योछे तेथीएहर्षहमणा तेहांजायछे एटलामांतो हर्षतिहांगयो हवेवासवें घणाकालेआविमल्युं एहवोपोतानो धनदत्तमित्रदेखीने हर्षनावशथकी आलिंगन आसनदेइने खेमकुशलादिकनीवातो पुछवाथी व्यवहारीओ महाहर्षपाम्यो मित्रनीघणीभक्तिकरी हास्यविनोदादिककरेछे घरनामाणसपण सर्वहर्षयुक्तथयाछे एममित्रसंघाते विनोदक्रीडानीवातोकरेछे एहवामांवली एक वासवनाघरनोचाकर देशांतरथकीआवीने मलानमुखथको कांइकबोलवाने प्रवर्त्तवालागोतेवामांज एक श्यामपुरुष ते हिजव्यवहारियाना घरतरफजातो प्रकर्षेदीठो तेवारें विमर्शनेपुछ्युंजे एकोणपुरुषजायछे तेवारें मामेंकह्युंजे एशोकनोमित्र विषादनामेंछे ए मोहराजानीसैन्यनुंमनुष्य अनेएव्यवहारियानाघरमांज जायछे केमके एव्यवहारीयाने शैकडागमेदेवदेविओमानतां वर्द्धननामेएकपुत्रथयोछे तेमहोटोथयो यौवनअवस्थापाम्यो तेवारें वासवेंवार्योथको पण घणुंद्रव्यलेइने परदेशेंव्यापारकरवागयो तिहांवली केटलोक कालरहीने क्रोडोगमेद्रव्योपार्जनकरी महोटासाथेंसहितघरप्रतें आवतोहतो एटलामांमार्गें क्रूरचोरमल्या तेणेसर्वसाथ लुंटीलीधो वर्द्धननेकुटुंबेकरीसहितपकडीलीधो तेमांथीएवासवनाज घरनोदासलंबनकनामे बंदीवानतिहांथी नासीआव्यो तेइहांवातकहेछे तेमाटेएविषादपण तिहांजजायछे एटलामांतो विषादपणते वासवव्यवहारियाना शरीरमांपेठो तेवारेंते व्यवहारीओ हाहतिखेदे हेपुत्र हेवत्स हेवर्द्धन तुजनेमें परदेशजवानीमनाइकरी तोपण तेंमानीनही हवेहुंसुंकरुं धनपणखोयुं हवेशोउपायकरी तनेमूकावुं इत्यादिक करुणाविलापेंआक्रंदकरवालागो तेदेखी घरनोस

वेपरिवारपण रुदनकरवालागो तेवारें प्रकर्षेपुरुखुंजे हेमामा नवचक्रनामानगरनो एरूपस्यो जेक्षणेकहर्षपामे अनेक्षणेक विषवादपामें तेवारेंमामोकहेछे जे हेप्रक र्षेतुं एटलोआश्चर्यसुंपामेछे एवाह्यलोक मोहनेवशें राज्य धन पुत्र मित्रादिक पामि क्षणेकमां महोटोहर्षपामेछे विश्वने तृणसमानगणेछे अनेक्षणेकमांवलीतेद्रिज वस्तु नाशपामेछे तेवारेंवलीघणो शोकअनेविषवादादिकधरेछे एसर्वेमूढपणाना लक्षण छे अनेजे विवेकीपुरुषछे तेतोधनादिकअनित्यवस्तुनेपामवाथी तथानाशथवाथी ह र्षअनेशोकपण नथीकरता एमकहीने वलीविमर्शएहबुंकह्युंजे हेवत्सतुजने प्रत्येकें प्रत्येकें नानाप्रकारना आश्चर्यमय एनवचक्रनगरना केटलाक कौतुकदेखाडुं तेमाटे संक्षेपेंजनवचक्रनगरनुं स्वरूपजाणवानो उपायतुजनेकहुंछुंतेसांजल.

यद्यपि एनवचक्रनगरते अनेकनगरेकरी संयुक्तछे तथापि १ मानवावास २ वि बुधालय ३ पशुसंस्थान ४ पापिपिंजर एचारनगरते महोटाछे बीजासर्वेनगर एमां अंतरगतछे तेमाटेएचारना देखवाथीज सर्वेनवचक्रनगरनुं स्वरूपजणासे तेहमां प्रथमए मानवावासनगरनालोक तेहने मोहादिकें घणुंपीड्याछे केटलाकसुखी अनेकेटलाकदुःखी केटलाक हर्षवंत अनेकेटलाकविषादवंत केटलाकरागेंकरी आ सक्तछे अने केटलाकद्वेषेंकरी तप्याछे कोइकसोनागी कोइदुर्नागी इत्यादिक विविध प्रकारना लोकदेखायछे तथाविबुधालयनगरना लोकोपण रत्नमयविमानो अने पु ष्करणीवाव्यो तथा कल्पवृक्षादिकनाजोग अने देवांगनानाविलासेकरी तथा चिंत वितसमकालें उपनाजेवांछितजोग तेणेकरी सातावेदनियने अनुजवतायकाछे त थापि इर्षा शोक जय लोज क्रोधादिक तिहांघणाछे तेहनाप्रयोगेंकरी तेनगरना लो कपणसर्वे मोहराजायें विटंब्याथकादेखायछे तथापशुसंस्थाननगरें तो क्षुधा तृषा उद्वेग दाह जयप्रमुख तथामनुष्यपरवशपणुं इत्यादिक अनेकरीतना दुःखेंकरी स र्वेलोक मोहादिकेंपीड्याछे केमके तेनगर कर्मपरिणामराजायें अशातावेदनीयना सुनटने निरंतर जलाव्युंछे तथा पापीपिंजरनगरें अवतरेला लोकतो निरंतरनिबिड दुःखें नित्येदुःखीजछे केमके तेनगरनालोकने परमाधामिओ तपाव्या त्रावानारस नुं पानकरावे तथा मुझरेकरीमारेछे लोहनायंत्रेकरी पीडेछे अग्निमां पचावेछे वेतर णीनदीमां वहेरावेछे तरवारेंकरी कान नाकप्रमुखछेदेछे करवतादिकेकरी वहिरेछे तथाएनगरना उपराउपरें सातपाडाछे अनेतेसर्वेपाडापाडाना लोकमोहादिकेंपी ड्याछे एकपाडाथी बीजापाडानालोक अधिकअधिक दुःखेंपीड्याछे तेदुःखकेवली विनाबीजोकोइ कहेवानेसमर्थनथी एमनवचक्रनगरना वसनारसर्वेलोक तेणेसंतोष

नामा महासुभटनुं शरणकखोनथी तेमाटेहेवरस एनवचक्रनामा आखुंनगरमोहा दिकेंपीडयुंछे.

एममामोवातकरेछे एटलामांवळी प्रकर्दैसातस्त्रीओ नवचक्रनगरमां देखीनेपु छयुंजे हेमामाआस्त्रीओकोणछे तेवारेंमामोकहेछे १ जरा २ रोगपीडा ३ मृत्यु ४ दुर्जनता ५ कुरूपता ६ दारिद्रता ७ दुर्भाग्यता एसातनामे सातेस्त्रीओ तेयथा संभवेकरी एटलेपोतपोताना नामप्रमाणे नवचक्रनगरना वसनार लोकोनेरुमीरीतें जीपीने पोतपोताविपाको लोकोनेदेखाडेछे.

तेमांपहेलीजरानामेस्त्रीतो कालपरिणतिराणीनीआज्ञायें युवान मदोन्मत सरि खानेपणवृद्ध अशक्त पलित शरीरेशिथिल इंद्रियबलेंरहित एहवोक्षीणकरेछे.

अनेबीजीरोगपीडानामे स्त्रीतो अशातावेदनीय पुरुषनीआज्ञायें बुद्धी शक्त्यादि कनो भ्रंशकरेछे वात पित्त कफादिकना विकारकरेछे अतिसार कुष्ट प्रमेह शूल व मन श्वास भ्रमर उद्रस खर्जु जलोदर प्रमुख एसर्व बीजीस्त्रीनोपरिवार जाणवो तेनिरोगतानेदूरकरीने लोकोनेपीडेछे.

तथात्रीजीमृत्युनामेस्त्रीते आयुकर्मराजाना हुकमथीआवे विष अग्नि शस्त्र उदक पर्वतथीपडवुं तथा अकस्मात् भयादिकेंकरी मृत्युकरेछे एएकलीयकीपण इंद्रचक्र वर्त्यादिक महोटापराक्रमि पुरुषोनेकंपावेछे धनवंत तथा दलिद्री वृद्ध तथा युवा न सबल तथा निर्बल पंडित अथवा मूर्ख राजा रांक इत्यादिकसर्वनेउपरें एसरिखी समतुल्य प्रवृत्तेछे केमकेएस्त्री धन मंदिर बंधु कुटुंब पुत्रादिक सर्वछंमावी पापतथापु एयरूप संबलसायेंलेवरावी जीवनेलेइ बीजीगतियेंजइमूके अनेपछवाडे कुटुंब परि वारहोयते बेचारदिवसरुदनादिककरी पछे निश्चिंतपणेखाय एमएनीआण त्रणभु वननेविषे अखंडपणेप्रवर्त्तेछे.

तथाचोथीदुर्जनतानामेस्त्रीते तेपापनाउदयथी आवेछे एस्त्रीथी कपट चाडीमित्र द्रोही निर्लज्जपणुं ईर्षा मत्सरादिक जगतनेठगवुं कीधागुणभुंहणवुं इत्यादिकअपलक्ष णकरेछे तेसर्वएस्त्रीनोप्रभावछे अनेपुण्योदयेंकरी उपनुंजेसज्जनपणुं तेहनेएस्त्रीदूरकरेछे

तथापांचमी जेकुरूपतानामेस्त्री तेनामकर्मराजानाहुकमथी प्रगटपणेआवेछे तेथी टुंटा खोडा बोडा काणा आंधला खूंधा वामणा नाकभुनेसवुं माठोरूप हीनअंग अधिकअंग प्रमुखजेलोकनेथायछे तेएस्त्रीनोप्रभावजाणवो.

हवेछठीदलिद्रता नामेस्त्रीते अंतरायकर्मराजानाआदेशेकरी पापनाउदयथी आवेछे एस्त्री जल अग्नि चोर द्यूतादिव्यसन चोरइत्यादिक निमित्तकारणेकरी तथा

धननानामथकी प्रगटथायछे तेयकीउपजे दीनपणुं मूढपणुं प्रायहोय बहुसंतान पणुं घणी क्षुधा उद्वेग संतापादिक चित्तनोघहेलापणो निरउद्यमपणो इत्यादिकथी एम्रो [illegible] अनेपुन्योदयथकीजे ठकुराइमले तेहनेएस्त्रीदूरकरे.

तथी स तनी दुर्गतानामेस्त्रीतेपण दुष्टनामकर्मनामें राजामोकलेले तेपुन्योदय [illegible] तेहनेदूरकरीने जीवनेदुर्भागी अनेसर्वलोकने तेथलखामणो [illegible] एमातेस्त्रीवोले आनंदनगरनामानगरनालोकने विविधप्रका [illegible] पदवि सामान्यप्रकारेंतो कर्मपरिणाम कालपरिणति स्वभाव लोकस्थिति [illegible] प्रमुखेंकरी कार्यमात्रनीपजेछे तोपणविशेषअपेक्षायेंकरी सातेस्त्रीओ [illegible] तेहुपणेछे.

[illegible] जे [illegible] निर्भयपणेतेनो एस्त्रीओनेदाखवानो कोइप्रति [illegible] एस्त्रीओने टालवाना तपस्यादिकप्रतिकारोछे केमके [illegible] प्रवर्तेछे माटेव्यवहारतेज बलवंतजा [illegible] तेनेदुनय मानवा केमकेबेदुनयसम्मत सर्वज्ञनोदर्शनछे [illegible] इत्यादिकवातसांभली प्रकर्षवोल्योजे हेमामा [illegible] एहवोहोइस्थानकछे तेवारें मामोबोल्योजे अने [illegible] निवृत्तिनामेंनगरीछे ते एजगतप्रमुख सर्वोपद्रवरहितछे [illegible] तेमुख्य ज्ञान दर्शन अने चारित्र एत्रण [illegible] तेनेनिवृत्तिनगरनेपामे.

[illegible] आ नगरमांजेनगरतेसंपूर्ण मोहराजादिकेंकरी व्यासछे तोपण [illegible] हीनहोइस्थानकेंथयिकहलिछे तेमांनली चिमटीयोयोजे [illegible] तिहांसर्वत्र मिथ्यात्वनी स्थितिछे तेमांपण वि [illegible] मिथ्यात्वनी स्थितिपणीजछे तेमां प्रथमतो [illegible] चोथुं [illegible] पांचमो मीमांसकपुर [illegible] नैयायिकनामा नगरमी अंतरभूत था [illegible] एमिथ्यामंत्रीने निरंतरनिवासना स्थानकछे

[illegible] ग्रन्थनामे शिखर उपरेंतमहामोहनोपमान [illegible] तेहने चि [illegible] अनेंमेहाने [illegible]

वलीप्रकर्षे पुछ्युंजे पांचपुरनालोकने मिथ्यात्व पराजयकरीशके अनेजैनपुरनालो कने पराजयनकरीशके एटलोफेरशावास्ते तेसांभली विमर्शबोल्युंजे.

अनंताआनंदनुं स्थानक एहवी एकमुक्तिनामे नगरीछे तेमां एतएपुरनालोकते मुक्तिनीवातजाणी सर्वतिहांजवावांछेछे पणपांचनगरनालोकतो स्वकल्पित विरुद्धमा र्गे चालनारा दिग्मूढथता खरामार्गनेअणजाणता उन्मार्गेचालेछे मिथ्यात्वनामाप्र धानेकरी घणाप्रकारें विटंबनापामेछे तेयणेकालेपण मुक्तिपामतानथी अने जैनन गरनावसनारालोकतो सम्यक्दर्शननेपोतानोस्वामीकरीने तेहनाकहेलामार्गनेजआ श्रयीनेचालेछे तेथीथोडाकालनेविषे तेमुक्तियें पहोंचेछे माटेएदर्शनजुदोकह्योछे हवे एपांचेदर्शनना लोक समजविनानाज प्रवर्त्तेछे तेहनीकथाखोलासायी विमर्शकहेछे.

कोइकनगरें सदाशिवनामे मौताचार्यछे तेकानेबहेरोछे एकदिवसें कोइधूर्त्तेंआवी सदाशिवनेहाथनी संज्ञायें करीकांइकतेहनेजणाव्युंजे हेजड्तमे वृद्धछो पणएकवात कहुंतेसांभलो जे लेणदार तथाशत्रुनीपरे व्याधीनेपण उवेखवाविना आगलजता महोटाअनर्थनीकरनारीथायछे तेमाटे बधिरपणानोकाइ औषधकरो अनेतमारोब हिरापणुंटालो तेसांभली सदाशिवें तेधूर्त्तनुंवचन सत्यमानी शांतिशिवनामें पोता नाशिष्यने कह्युंजेतुं वैद्यनाघेरजयी बधिरपणुंटले एहवुंऔषधपूछीआव पछे शांति शिव वैद्यनेघरेंआव्यो तेवारें वैद्यपोतानापुत्रने मजबुतदोरडेबांधीने रोषेंकरी लाकडी यें मारेछे एहवुंदेखी शांतिशिवेंपुछ्युंजे पुत्रने शावास्तेमारोछे वैद्येंकह्युंजे एपुत्रसांभल तोनथी तेमाटेमारुआपुंतुं एटलामां वैद्यनीस्त्री पुत्रनेमूकाववाआवी तेहने वैद्येंकह्युं जे हेरांड तुंदूरउभीरहे एपुत्रकोइरीतें मारोकह्योसांभलतोनथी तेमाटे अवश्यएह ने मारतोरहीश वलीयरनामाणसोयें वार्युंतेहनेपणवैद्येंकह्युंजे एहनेमेंसेकडावखत कह्युंहशेतोपण सांभलतोनथी तेमाटे एनेमारुंतुं तमेकोइप्रतिकारकरशोनही एमक रीशतोज एहनुं बहिरापणुंजाशे एमकहीपुत्रने मार्युं एटलीवातधारीने शांतिशिव नामाशिष्यपण परमार्थनेअणजाणतो तेवैद्यनुं बोलवुंजसांभलीने पोतानाआश्रमें आवी महेश्वरना घरथी एकदृढदोरडुंलेइने वैद्यनीरीतेंज पोतानागुरुने स्थांभेबांधी बांशअनेलाकडीओथीगुरुने कुटवामांडयो जेमजेमगुरुपोकारकरे तेमतेमवधारे मा रवापे तेशब्दसांभलीनेलोकएकठाथयातेणे कह्युंजे अरेपापिष्ट आशुंकरेछे तेवारें शां तिशिवेंकह्युंजे तमेशुंजाणोछोजे कानेसांभलतोनहोय तेनुंएऔषधछे एहवुंहुं वैद्यनाघे रथी शीखीआव्योछुं हुंमहाराआचार्यनो बहिरासपणुंटालवाने एकार्यकरुंछुं माटे तमेंदूरउभारहो अनेजोतमे वचमांपडसोतो तमनेपणहुंमारीस तेवातसांभलीलोकें

वैद्यनेतेडीपुछयुं तेवारेंवैद्येंकह्युंजे अरेमूर्ख माहारोपुत्रनथीसांजलतो तेनेतोहुंजणा वुंछुं तोपणरमतना आवेशथकी मारुंवचनचित्तमां धरतोनथी तेथीहुंतेनेमारीनेशी खामण आपतोहतो लोकेंपुछेथके वलीक्रोधनावशथकी मेंलोकोनेकह्युंजे एनथी सांजलतो पणजे बधिरहोय एटलेकानेबेरोहोय तेहनुंकांइएऔषधनथी इत्यादिक वै द्यनुंवचनसांजली लोकें शांतिशिवने घणुनिंद्यो माटेहेप्रकर्ष एनैयायिकादिकपांचद र्शनते शांतिशिवनीपरें मूर्खछे आपमतेंचालेछे जिहांतिहांथीसांजलेलीवात अंगिका रकरीने उन्मार्गेदोडताथका पराजवपामेछे तेथीमुक्तिपामतानथी अनेजैनदर्शन तो तत्वनाज्ञानथकीज मोक्षपदकहेछे इत्यादिक शुद्धमतेंचालेछे माटे जैनजमुक्तिपामेछे फरी प्रकर्षेंपुछयुंजे एनैयायिकादिक पांचदर्शन तथा छठुंजैनदर्शनए सर्व कहेवीक हेवीरीतें मुक्तिमानेछे तेसांजली विमर्शकहेछे.

नैयायिकदर्शनतो प्रमाण प्रमेय संशय प्रयोजन दृष्टांत सिद्धांत अवयव तर्क निर्णय वाद जल्प वितंडा हेत्वाजास छल जाति निग्रहस्थानकरूप ए सोलपदार्थना तत्वज्ञाननुंजाणवुंतेहथी मोक्षछे अने प्रत्यक्षप्रमाण अनुमानप्रमाण उपमानप्रमाण शब्दप्रमाण एचारजेदेंचारप्रमाणोकहेछे एहवुंमानेछे तथावैशेषिकतो द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष समवाय ए छतत्वमानेछे अने प्रत्यक्षप्रमाण तथा अनुमानप्रमाण एबेप्रमाणमानेछे एमतनेनैयायिकमतसाथें माहोमांहे तत्वनोविशेषपणोछेपण एकदे वपणाथकी तथाईश्वरकृतजगतइत्यादिकप्रकारेतो नैयायिकमतनेविषेज अंतरजूतथा यछे तथा सांख्यदर्शनीतो सत्वगुण रजोगुण तामसगुण एत्रणगुण तेम प्रकृति मह अ हंकार स्पर्शन रसना नासिका चक्षु कान पायू उपस्थ वाक् हाथ पग मन शब्द रूप रस गंध स्पर्श पृथ्वी आप तेज वायु आकाश एलक्षणेंचोवीसतत्वो पुरुष वलीपचीसमो गुणमानेछे तेहोनामतमां प्रमाणत्रणछे १ प्रत्यक्ष २ अनुमान ३ शब्द एलक्षणेप्रकृतिनुं वियोगपणुंतेमोक्ष एहवुंकहेछे एसांख्यदर्शनमांवली केटलाकईश्वरकर्तृत्वपणुंमानेछे केटलाईश्वरकृतजगतनथीमानता केटलाकनारायणनामेदेवकबूलकरेछे तथाबौद्धदर्श चारप्रकारनाछे तेमां १ वैजाषिकते क्षणिकवस्तुमाने बीजासौत्रांतिकते रूप वेदनानी ज्ञान संज्ञा संस्कार एपांचस्कंधजमाने त्रीजो योगाचारनामाबौद्धते मात्रविज्ञानिनेज माने चोथोमाध्यमिकते सर्वस्वप्नोपममाने एचारेनोसुगतनामेदेवछे सर्वपदार्थ क्षणजं गुरछे एममाने तथा प्रत्यक्षप्रमाण अनुमानप्रमाण एबेप्रमाणमानेछे रागादिकनाज्ञा ननीसंततिनी वासनाना छेदवाथकी मोक्षउपजे एहवुंएमतनुंसिद्धांतछे तथामीमां सकमतवालातो जगतनेविषेसर्वज्ञसर्वदर्शिविशेषणादिक वस्तुगोचरकरनार कोइदेव

नयी वेदनावाक्यथी अर्थनुंनिश्चयेंकरवुं वेदनुंजणवुं तेपूर्वकधर्मनीइछापणेकरीकार्य छे एहवुंकहेछे जेप्रेरणाकरवीतेहनेधर्मकहियें तेहनुंप्रवर्त्तकवेदवचनछे एदर्शन प्रत्यक्ष अनुमान शब्द उपमा अर्थापत्ति अभाव एछप्रमाणनेमानेछे आत्मानेविषेजली नयवुं तेमुक्तिएहवुंएमतनोसिद्धांतछे वलीनास्तिकवादीमतवालातो १ पुण्य २ पाप ३ परलोक ४ धर्म ५ अधर्म ६ जीव ७ स्वर्ग ८ मोक्षइत्यादिक सर्वपदार्थखोटाछे एहवुं कहेछे एटले जेटलोप्रत्यक्षदृष्टीयेंदेखे तेटलोज लोकछे एममाने पंचभूतात्मकदेहछे जेममद्यांगथी नीपनीजे मदशक्ति तेहनीपरे पंचभूतथीएचेतनपणोउपनो तेजीवकहेवामात्रछे जेवारेंपांचभूतरूप शरीरनोनाशथाय तेवारेंजीवनोपणनाशथयीजायएमजीवपदार्थजनथी माटेपरभवपणनथी तोप्रत्यक्षपाम्याजेसुखतेहनो त्यागकरीअदृश्यमानजे स्वर्गादिकेनासुखनो प्रयत्नकरवोते निष्फलछे एनास्तिकमतवाला एकप्रत्यक्षप्रमाणजमानेछे एपांचेदर्शन पोतपोतानामतनेविषे वचननाआडंबरनी स्फुरणाथकी पंडितपणुंमानताथका हायीयोनेलडाइकरवानी प्रमाणरूपभूमीनेउलंघतानथी.

अनेजैनमतें जीव अजीव आश्रव संवर बंध निर्झरा अने मोक्षएसात तत्त्व माने तेमां पुण्यपापमिलवाथकी वलीनवतत्त्वथाय तेमांशुभाशुभ कर्मनोकर्त्ताभोक्ता चेतनलक्षणवंत जीवतत्त्वछे तेथीविपरीतते अजीवतत्त्व साराकर्मनोविपाकतेपुण्यतत्त्व माठाकर्मनोविपाकतेपापतत्त्व वलीपांचमिथ्यात्व बारअविरति पचीसकषाय अनेपन्नरयोग एरीतेंसत्तावनभेद कर्मबांधवानाछे तेहनेआश्रवतत्त्वकहियें आश्रवनुं रोधवुंते संवरतत्त्वकहियें आत्मानेकर्मतायेमलाववुं तेबंधतत्त्व तथा कर्मनुंसमस्त प्रकारेंछांडवुं तेहने निर्झरातत्त्व कहियें अने निर्झरानुंफलते मोक्षतत्त्व ते अत्यंत पणेदेहादिकनो वियोगलक्षणरूपछे तथाअज्ञानादिक अढारदोषेरहिततेदेव पंचमहाव्रतनाधारक सत्यपरुपणाना करनारतेगुरु ज्ञानदर्शनचारित्ररूप लक्षणवंततेधर्म तथाअनंतपर्यायमय नित्यानित्य उत्पत्ति ध्रुव अने व्यययुक्त द्रव्यमानवो ज्ञानक्रियानायोगथकीमुक्तिछे सकलकलंकरहित जातिवंत मणीरत्ननीपरेंशोभित एहवुंकेवलज्ञानरूप अनुतभावेंसहित सर्ववस्तुनास्वरूपनेप्रकाशनार जैनदर्शनछे.

एहवुंजैनमार्गमूकीने नैयायिकादिक पांचेंदर्शनने कोइपणरीते कृत्रिमकांतिनेधरतायकां पणकाचतेमणिरत्ननीपरें परीक्षासहेनही तेम घणाकालसुधी क्लेशने सहेतायकापण मुक्तिनहोय अने जैनदर्शनते स्याद्वादमानेछे माटेजैननेज इष्टसिद्धि होय. अतएव परःसहस्राः शरदस्तपांसि युगांतरंयोगमुपासतांवा॥तथापितेमार्गमनापतंतो नमोक्षमाणाअपियांतिमोक्षं ॥ १ ॥ अर्थ ॥ हजारोवर्षसुधी अथवायुगां

तरसुधी योगसेवेपण जेहांसुधी हेनगवंत ताहरुं शासनपास्योनथी तिहांसुधीतेजी वसर्वयाप्रकारें मुक्तिपामेजनही केमके जेमिथ्यात्वीना मायस्नानादिकने सकामनि र्जराकहेछे अने मिथ्यात्वीनाधर्मनी अनुमोदनाकरेछे तेवाजैनशासनासर्ववचन मिथ्याजाणवा.

यद्यपिक्रियावादादिक पाखंमीओना ३६३ नेदछे तथापिमिथ्यात्वीछे वलीन्ह नवादिकजेउत्सूत्रपरूपक तेपणसर्वजैनदर्शनथी विरोधमार्गनाचालनारजाणवा ते घणाकालसुधी तपस्याप्रमुख क्रियाकरतायकापण मिथ्यात्वनामे प्रधानना परानव थकी उलटासंसारनी वृद्धीकरनारथायछे अनेज्ञानसमन्वित चारित्रेंकरीपवित्रजे जैनछे तेहनीपाशें मिथ्यात्वनोकांइजोरचालेनही इत्यादिक विस्तारसहित विमर्शनी वातसांनली प्रकर्षबोल्युंजे हेमामाजी हवेतेजेलोकोने मोहादिकें परानव्यानथी ते लोकदेखाडो तेवारेंमामेंकह्युंजे हेवत्स आजैनपुरनगरें तेहवालोकवसेछे तेमाटे चा लोतेनगर जोइयें एमकहिजैनपुरनगरमां बेहुयेंप्रवेशकर्यो एटलेसाधुजननेदीठा.

तेमोहादिकने दूरकरतांदेखी विमर्शेतेसाधुओना गुणवर्णवेछे जेएसाधुते त्रस थावरमात्रजीवने हितवांछकछे तथासत्यनापणकरनारा चारप्रकारें अदत्तादानना छांमनारातथा मनुष्य अनेदेवता तथातिर्यंचनीस्त्रीओने मातासमानमाने वलीबाह्य थी अनेअभ्यंतरथीपरिग्रहना छांमनारा पोताना शरीरनेविपेपण ममत्वधरेनही बे तालीसदोपरहित शुद्धमानआहारना ग्रहणकरनारा पांचसुमति त्रणगुप्तियेंकरी सहि त मोहादिकवैरीना घातकरनारा लोलतानात्यागी घणुंसुंवखाणियेंजेजेएसाधुउनीक्रि याछे तेतेमोहादिकने जीपनारीजछे तेमाटेचित्तवृत्तिरूप अटवीमां प्रमादपणारूपन दीछे तेतोएसाधुओनीआगल शुष्कथयीगइ तथाजे मंमपनीवेदिकाउपरनो सिंहास न तथातेनाउपर विराजनार मोहराजा तथातेहनो सर्वपरिवार तेसर्वएसाधुओनी आगले शक्तिरहितछे तथा एमनीजेचित्तवृत्तिनामेअटवीतेपण घणीसुंदर रुमाप्रका शवाली अनंतज्ञानादिकगुणरूपरत्नने उपजवानी नूमीसमानछे नित्यप्रतेंसुखमय प्रवृत्तेछे इत्यादिकसाधुओनोवर्णन सांनली हर्षपूर्वक प्रकर्षबोल्योजे हेमामातमे पू र्वेकह्युंहतुंजे तुजने संतोषराजा देखाडीस तेसंतोषराजाकिहांछे तेवारेंमामो क हेछेजे आउज्वलचित्त समाधाननामेदेहरो तेजैनपुरना लोकनेवल्लनछे तेहांअनेक राजवृंदे परिवर्योथको संतोषराजा सिंहासने वेठोछे एवुंविशेपवर्णनपहुंपछे देखा डीस तेजोयी प्रकर्षबोल्योजे धन्यए जैनपुरनगरने जेहनोए संतोपजेवोराजाछे फरीविशेपाकारें विमर्शकहेछे जे नवचक्रनगरमांज चित्तवृत्तिनामेअटवी तेमांवि

वेकनामापर्वतछे एहनाउपरें सात्विकमानसनामा अंतरंगनगरछे अनेनिर्मलचित्ता दिकजे घणाकनगरोछे तेसर्वेएमां अंतरजूतथायछे हवेजेप्राणी सम्यक्दर्शन अनेस दागमजे श्रुतज्ञान तेहनेउवेखीने मोहादिकने वशवर्त्तिथयाछे तेपुरुषकेवारेंपण सात्विकमानसादिकनगरोप्रते अनेविवेकनामापर्वतप्रतें देखवानेपण समर्थनथाय वि वेकपर्वत अने जैनपुरनगरना वसनारालोकोने धन्यछे केमके कर्मपरिणामनामे रा जातेपण एहोनेसमाधिनोकरनार सुखनोदेवावालोछे.

जेसात्विक मानस नगरनावसनारा लोकतेने मार्गानुसारीकहियें अनेजे जैनपुर ना वसनारालोक तेहनेजैनीकहियें

जेजैनी लोकते विवेकनामापर्वतउपर बेठायका संपूर्णजवचक्रनुं स्वरूप जेम हा थनेविषे आमलानुंफल प्रत्यक्षदेखाय तेहनीपरेंदेखी वैरागपामेछे अनेकिवारेंक मो हादिक पणअंतरकालदेखीने जैनलोकने जीतवाआवेछे पणविवेक पर्वतनेबलें मो हादिकनीशक्तिचालतिनथी तेहांथीपाछावलीजायछे जैनपुरनगरते घणेकष्टेंलोकपा मेछे यद्यपि मानवावासादिकचारेनगरमां जैनलोकवसतादेखायछे तोहेपण तत्त्वथ की तेजैननगरमांज वशेछे.

वलीप्रकर्षेपुछयुंजे हेमामा जेममिथ्यामतिलोकने मोहादिकनी चेष्टाछे तेमजैनी लोकोनेपण मोहादिकनी चेष्टातोदेखायछे केमकेजिनबिंबदेखी मोहपामेछे तथास्वा ध्यायादिकउपरें रागीथायछे सार्धमिकउपरें स्नेहधरेछे जलीक्रियानेविषे प्रीतिवंतथाय छे गुरुनादर्शनथकी हर्षवंतथायछे व्रतनाअतिचारउपरें द्वेषधरेछे सामाचारीलोप नार उपरें क्रोधधरेछे प्रवचनना प्रत्यनीकउपरें रोषकरेछे कर्मनिर्जराउपरें हर्षक रेछे प्रतिज्ञापालवा उपर अहंकारधरेछे देवादिकनाउपसर्ग उपरें विस्मयपामेछे व्रतेकरी मलिनपुरुषनीदुगंछाकरेछे इंद्रियरूपधूर्त्तने वचेछे तप तथा चारित्रउपरें लोजधरेछे वैयावच्चनीवांछाकरेछे परोपकार करीनेपण संतोषपामतानथी प्रमादरूप चोरने हणेछे संसारभ्रमणथी बिहेछे मागअाचरणथी शोकपामेछे पोतानामागच रित्रनो निग्रहकरेछे जिनाज्ञारूपस्त्रीनुं घणुंआराधनकरेछे इत्यादिकरीतें विचारतां जैननेपण मोहादिकनी चेष्टातो घणीजदेखायछे अनेकहेवायतो एमछेजे ए मोहा दिकनानाशकरनाराछे.

तेसांजली विमर्शबोल्योजे हेप्रकर्ष जेमोहादिकते बेप्रकारनाछे तेमांजेमिथ्यात्वी नेहोयते अप्रशस्त मोहादिककहियें ते कर्मपरिणामराजाना पक्षपातीहोय अने जै ननेतोप्रशस्त मोहादिकहोय तेचारित्रधर्मराजाना पक्षपातीहोय जेप्रशस्तमोहादिक

तरसुधी योगसेवेपण जेहांसुधी हेनगवंत तादरुं शासनपाम्योनथी तिहांसुधीतेजी वसवेयाप्रकारें मुक्तिपामेजनही केमके जेमिथ्यात्वीना माघस्नानादिकने सकामनि र्जराकहेडे अने मिथ्यात्वीनाधर्मनी अनुमोदनाकरेडे तेवाजैनाजासनासर्ववचन मिथ्याजाणवा.

यद्यपिक्रियावाद्यादिक पाखंमीओना ३६३ नेदछे तथापिमिथ्यात्वीछे वलीन्ह नवादिकजेउत्सूत्रपरूपक तेपणसर्वजैनदर्शनथी विरोधमार्गनाचालनारजाणवा ते घणाकालसुधी तपस्याप्रमुख क्रियाकरताथकापण मिथ्यात्वनामे प्रधानना पराजव थकी उलटासंसारनी वृद्धीकरनारथायछे अनेज्ञानसमन्वित चारित्रेंकरीपवित्रजे जैनछे तेहनीपाशें मिथ्यात्वनोकांइजोरचालेनही इत्यादिक विस्तारसहित विमर्शनी वातसांनली प्रकर्षबोल्युंजे हेमामाजी हवेतें जेलोकोने मोहादिकें पराजव्यानथी ते लोकदेखाडो तेवारेंमामेकह्युंजे हेवत्स आजैनपुरनगरें तेहवालोकवसेछे तेमाटे चा लोतेनगर जोइयें एमकहिजैनपुरनगरमां बेहुयेंप्रवेशकर्यो एटलेसाधुजननेदीठा.

तेमोहादिकने दूरकरतांदेखी विमर्शतेसाधुओना गुणवर्णवेछे जेएसाधुते त्रस थावरमात्रजीवने हितवांछकछे तथासत्यनापणकरनारा चारप्रकारें अदत्तादानना छांमनारातथा मनुष्य अनेदेवता तथातिर्यंचनीस्त्रीओने मातासमानमाने वलीबाह्य थी अनेअभ्यंतरथीपरिग्रहना छांमनारा पोताना शरीरनेविषेपण ममत्वधरेनही बे तालीसदोषरहित शुद्धमानआहारना ग्रहणकरनारा पांचसुमति त्रणगुप्तियेंकरी सहि त मोहादिकवैरीना घातकरनारालोलतानात्यागी घणुंसुंवखाणियेंजेजेएसाधुउनीक्रि याछे तेतेमोहादिकने जीपनारीजछे तेमाटेचित्तवृत्तिरूप अटवीमां प्रमादपणारूपनः दीछे तेतोएसाधुओनीआगल शुष्कथयीगइ तथाजे मंमपनीवेदिकाउपरनो सिंहास न तथातेनाउपर बिराजनार मोहराजा तथातेहनो सर्वपरिवार तेसर्वएसाधुओनी आगले शक्तिरहितछे तथा एमनीजेचित्तवृत्तिनामेअटवीतेपण घणीसुंदर रुमाप्रका शवाली अनंतज्ञानादिकगुणरूपरत्नने उपजवानी नूमीसमानछे नित्यप्रतेंसुखमय प्रवृत्तेछे इत्यादिकसाधुओनोवर्णन सांनली हर्षपूर्वक प्रकर्षबोल्योजे हेमामातमे पू र्वेकह्युंहतुंजे तुजने संतोषराजा देखाडीस तेसंतोषराजाकिहांछे तेवारेंमामो क हेछेजे आउज्ज्वलचित्त समाधाननामेदेहरो तेजैनपुरना लोकनेवल्लनछे तेहांअनेक राजवृंदे परिवर्योथको संतोषराजा सिंहासने बेठोछे एहुंविशेषवर्णनपछुंपछे देखा डीस तेजोयी प्रकर्षबोल्योजे धन्यए जैनपुरनगरने जेहनोए संतोषजेवोराजाछे फरीविशेषाकारें विमर्शकहेछे जे नवचक्रनगरमांज चित्तवृत्तिनामेअटवी तेमांवि

वेकनामापर्वतछे एहनाउपरें सात्विकमानसनामा अंतरंगनगरछे अनेनिर्मळचित्ता दिकजे घणाकनगरोछे तेसर्वेएमां अंतरभूतथायछे हवेजेप्राणी सम्यक्दर्शन अनेस दागमजे शुभज्ञान तेहनेजवेखीने मोहादिकने वशवर्त्तिथयाछे तेपुरुषकेवारेंपण सात्विकमानसादिकनगरोप्रते अनेविवेकनामापर्वतप्रतें देखवानेपण समर्थनथाय वि वेकपर्वत अने जैनपुरनगरना वसनारालोकोने धन्यछे केमके कर्मपरिणामनामे रा जातेपण एहोनेसमाधिनोकरनार सुखनोदेवावालोछे.

जेसात्विक मानस नगरनावसनारा लोकतेने मार्गानुसारीकहियें अनेजे जैनपुर ना वसनारालोक तेहनेजैनीकहियें

जेजैनी लोकते विवेकनामापर्वतउपर बेठाथका संपूर्णभवचक्रनुं स्वरूप जेम हा थनेविषे आमलानुंफल प्रत्यक्षदेखाय तेहनीपरेंदेखी वैरागपामेछे अनेकिवारेंक मो हादिक पणअंतरकालदेखीने जैनलोकने जीतवाआवेछे पणविवेक पर्वतनेबलें मो हादिकनीशक्तिचालतिनथी तेहांथीपाछावलीजायछे जैनपुरनगरते घणेकष्टेंलोकपा मेछे यद्यपि मानवावासादिकचारेनगरमां जैनलोकवसतादेखायछे तोहेपण तत्वथ की तेजैननगरमांज वशेछे.

वलीप्रकर्षेपुछयुंजे हेमामा जेममिथ्यामतिलोकने मोहादिकनी चेष्टाछे तेमजैनी लोकोनेपण मोहादिकनी चेष्टातोदेखायछे केमकेजिनबिंबदेखी मोहपामेछे तथास्वा ध्यायादिकउपरें रागीथायछे साधर्मिकउपरें स्नेहधरेछे भलीक्रियानेविषे प्रीतिवंतथाय छे गुरुनादर्शनथकी हर्षवंतथायछे व्रतनाअतिचारउपरें द्वेषधरेछे सामाचारीलोप नार उपरें क्रोधधरेछे प्रवचनना प्रत्यनीकउपरें रोषकरेछे कर्मनिर्झराउपरें हर्षक रेछे प्रतिज्ञापालवा उपर अहंकारधरेछे देवादिकनाउपसर्ग उपरें विस्मयपामेछे व्रतेकरी मलिनपुरुषनीदुगंछाकरेछे इंद्रियरूपधूर्त्तने वचेछे तप तथा चारित्रउपरें लोभधरेछे वैयावच्चनीवांछाकरेछे परोपकार करीनेपण संतोषपामतानथी प्रमादरूप चोरने हणेछे संसारभ्रमणथी बिहेछे माताआचरणथी शोकपामेछे पोतानामाठाच रित्रनो निग्रहकरेछे जिनाज्ञारूपस्त्रीनुं घणुंआराधनकरेछे इत्यादिकरीतें विचारतां जैननेपण मोहादिकनी चेष्टातो घणीजदेखायछे अनेकहेवायतो एमछेजे ए मोहा दिकनानाशकरनाराछे.

तेसांभली विमर्शवोल्योजे हेप्रकर्ष जेमोहादिकते बेप्रकारनाछे तेमांजेमिथ्यात्वी नेहोयते अप्रशस्त मोहादिककहियें ते कर्मपरिणामराजाना पक्षपातीहोय अने जै ननेतोप्रशस्त मोहादिकहोय तेचारित्रधर्मराजाना पक्षपातीहोय जेप्रशस्तमोहादिक

नगमुखी योगमेंपण जेहांमुखी हेभगवंत तारूं शासनपाम्योनथी तिहांसुधीतेजी वनवयाप्रकारें मुक्तिपामेजनथी केमके जेमिथ्यात्वीना मासक्षमणादिकने सकामनि र्जराकहेन्ने अने मिथ्यात्वीनाधर्मनी अनुमोदनाकरेन्ने तेवाजैनताभासनामवचन मिथ्यात्वीना.

[illegible] क्रियावाद्यादिक पाखंडीओना ३६३ भेदछे तथापिमिथ्यात्वीते यतीन्द्र नवादिकनेतत्त्वप्ररूपक तेपणसर्वेजैनदर्शनथी निर्ग्रंथमार्गनाचारनाजाणवा ते [illegible] तपस्याप्रमुख क्रियाकरनारकोपण मिथ्यात्वनामे प्रधानना पगनेव [illegible] [illegible] अनेकज्ञानसमन्वित चारित्रकर्मपवित्रजे [illegible] मिथ्यात्वनोकांइजोरचालेनहीं इत्यादिक विस्तारसहित विमर्शनी [illegible] [illegible] हेमामार्ज [illegible] मोहादिक [illegible] नथी ते [illegible]

[illegible]

तथापांचेंद्रियनोनिरोध अनेचारकषायनोजय तथामनोदंड वचनदंड अनेकाय दंड एत्रणदंडनी निवर्त्ति एरीतें सत्तरपुरुषेकरी परिवर्योयको एहसंयमनामापुरु षकहियें तथावली आ सातमो सत्यनामेपुरुष तथाआठमोद्रव्य तथाभावनी शु द्धिनीपजावनार एहवोशौचनामेपुरुषवेंगोछे तथापरिग्रहने छंमावनारोअकिंचनना मे पुरुषतेनवमोआवेगोछे तथादसमुं ब्रह्मचर्यते मन वचन कायायेंकरी दिव्य त थाउदारिकादिक कामनासंबंधयी छोडावनारो वलीदसमुंब्रह्मचर्यपुरुषवेगोछे एरीतें दसमनुष्यें परवर्योयको यतिधर्मनामे महोटो राजपुत्रवेंगोछे तथातेनेदावेपासेजस्त्री वेठीछे तेसद्भावसारितिनामे एयतिधर्मनीस्त्रीछे.

तथाआवीजो राजासमीपेंवेगोछेते ग्रहस्थधर्मनामें नानोराजपुत्रछे तेप्राणातिपा तादिक बारमनुष्यें परवर्योछे ते बारमनुष्यनानामकहियेंछेयें १ स्थूलहिंसाविरमण व्रत २ स्थूलमृषाविरमणव्रत ३ स्थूलअदत्तविरमणव्रत ४ परदाराविरमणव्रत ५ इच्छापरिमाण रूपपरिग्रहव्रत ६ दिशिनापरिमाणरूपते दिशिव्रत ७ भोगोपभोगव्रत ८ अनर्थदंडनिवर्त्ति ९ सामायकव्रत १० देशावगाशीकव्रत ११ पोषधोपवासव्रत १२ अतिथिसंविभागव्रत एबारपुरुषें परवर्योयको ग्रहस्थधर्मनामा लघुराजपुत्रवेंगोछे तथाएनी स्त्री सद्गुणरक्तनामें तेहनीपासेंजवेठीछे.

वलीआसम्यक्तदर्शननामे जेपुरुषवेगोछे तेचारित्रधर्मराजानो प्रधानछे तेराजा नी तथाबेहुराजपुत्रनी परिपालनाकरेछे ते १ उपशम २ संवेग ३ निरवेद ४ अ नुकंपा ५ आस्तिकता एपांचेपुरुषेंकरी परवर्योयको जणायछे तथा १ परहित बुद्धि २ गुणिजनउपरेंपक्षपात तथा ३ परदोष विनाशकरवानीइच्छा तथा ४ अ साध्यदोषउपरें उपेक्षा एचारभावनारूप चारस्त्रीएनाआभूषणनी धरवावाली परिच यनीकरनारीछे तेणेंकरीए सम्यक्तदर्शननामाप्रधानशोभेछे वली एसम्यक्तदर्शनना मा वजीरनीपासें जेसमस्तसुलक्षणेंकरीसहित गौरांगीस्त्रीवेठेछे तेसुदृष्टिनामे एनी स्त्रीछे एवजीरते मिथ्यात्वनो जीपनारछे तथादर्शनमोहनीयकर्मनेक्षयेंकरी तथाउप शमेंकरी अनेक्षयोपशमेंकरी १ उपशमसम्यक्त २ क्षयोपशमसम्यक्त ३ क्षायकस म्यक्त एत्रणलक्षणेंकरी त्रणरूपधरेछे.

वलीआवीजोसद्बोधनामे राजानो महोटोप्रधानवेंगोछे एभूत भविष्य तथावर्त्त मानकालना समयद्रव्यगुणपर्यायने जाणे एचारित्रधर्मराजाना राजमां जैननगरने विषे सर्वजैनलोकोने नीतिमार्गे प्रवर्त्तावेछे तथाएनीपासें जाणपणाएहवेनामे एनी स्त्रीवेठीछे वली १ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ अवधिज्ञान ४ मनपर्यवज्ञान ५ केव

ठेते पाशेंरहायकां मुक्तिनगरेपहोचाडे एमविविधप्रकारनी वातोमां तत्परथकातेवे हुजणायें जैनपुरनगरमां चित्तसमाधाननामेंमंमपनेदीठो तेमांनिस्पृहतानामें वेदिका तिहांजीवपराक्रमनामे सिंहासन तिहांबेगेथको दान शील तप अने नाव एचारेमु खेकरी शोनायमान एहवोचारित्रधर्मनामेराजा देखीने तेहनादर्शनथीहर्षितथको प्र कर्षने विमर्शकहेछे हेपुत्र जोआचारित्रधर्मनामेराजा चारेमुखेकरी चारप्रकारना ध र्ममार्गनो उपदेशकरेछे तेमांपहेलामुखथीअनयदान सुपात्रदान प्रमुखदानदेवानो उपदेशकरेछे तथाअनुकंपादिकदानप्रतेपण निषेधकरतुंनथी पण पृथ्वीदान कन्या दान मद्य जूए रथ घोडादिकनोमहाआरंनकारकदान तेहनेतोनिषेधेछे.

तथाबीजामुखेंकरी अढारहजार शीलांगरथनेजेदे शोनित शीलपालवानो उपदेश करेछे तथात्रीजामुखेंकरी बारप्रकारें वांगारहित तपकरवानो उपदेशकरेछे अने पंचा ग्निसाधन तथामाघस्नान इत्यादिकलौकिकमावातपनोनिषेधकरेछे तथाचोथामुखेंकरी अनित्यतादिक बारनावनाओकहेछे जेमएधनादिक सर्ववस्तु अनित्यछे इत्यादिककहे छे वलीएचारित्रधर्मराजानाजे सिंहासनादिक तथामंडप वेदिकादिकवखाण्या तेहोना पोतपोताना नामप्रमाणे प्रनाव पणतेहवुंजछे वली एहनाप्रनावथी एजैनलोकनित्या नंदीछे वलीएहनाप्रनावथकीमोहादिकपण उपद्रवकरीशकतानथी हीनकांतिवंतथका दूरथकीजनासीजायछे हवे विमर्शप्रकर्षने चारित्रधर्म राजानो परिवारकहिदेखाडेछे.

एराजानेसन्मुखजे महारूपपात्रस्त्रीबेठीछे ते एचारित्रधर्मराजानी विरतिनामेंपट राणीछे एजैनलोकोनेमुक्तिनगरीनी पमाडनारीछे तथाराजाने सन्मुख आ पांचपुरुष बेठाछे ते १ सामायक २ छेदोपस्थापनीय ३ परिहारविशुद्धी ४ सूक्ष्मसंपराय ५ य थाख्यात एपांचेनामेपांचपुरुषते एराजानाअंगनूतमित्रछे एपांचेमित्र जैनलोकने पा पथीनिवर्त्तावेछे तथाआराजाआगल यतिधर्मनामे राजानोपुत्र महाधुरंधरबेठोछे.

वलीएयतिधर्मनो परिवारनूतते आदसमनुष्यबेठाछे तेमां एकक्षमा बीजुं आर्ज वतेसरलातपणुं त्रीजुं मार्दवतेनम्रपणू चोथुंमुक्तितेनिःसंगपणुं पांचमोतपोयोग तेव लीबारमनुष्यें परवखोछे १ अनशन २ उनोदरी ३ वृत्तिसंक्षेप ४ रसत्याग ५ का यक्लेश ६ संलीनपणुं एवप्रकारेंबाह्यतप तथादसप्रकारें प्रायश्चित्ततप चारप्रकारेंवि नयतप दसप्रकारें वेयावच्च पांचप्रकारें सिज्झाय वेप्रकारेंध्यान तथाकायोत्सर्ग ए रीतेंछप्रकारनुंअन्यंतरतप मलिनेबारप्रकारनातपरूप बारपुरुषें परवख्यो तेपांचमो त पोयोगकहियें एहनीशक्तिथी साधुविविधरीतनातपकरीने कर्मपरिणामराजानेजर्जरी नूतकरेछे तथाछठोपुरुषते संयम जेमांप्राणातिपातादिक पांचआश्रवनी निवृत्तिवे

तथापांचेंद्रियनोनिरोध अनेचारकषायनोजय तथामनोदंड वचनदंड अनेकाय दंड एत्रणदंडनी निवर्त्ति एरीतें सत्तरपुरुषेकरी परिवर्योधको एछेसंयमनामापुरुषकह्नियें तथावली आ सातमो सत्यनामेपुरुष तथाआठमोद्रव्य तथाजावनी शुद्धिनीपजावनार एह्नवोशौचनामेपुरुषवेगोछे तथापरिग्रह्नने छंमावनारोआकिंचनना मे पुरुषतेनवमोआवेगोछे तथादसमुं ब्रह्मचर्यते मन वचन कायायेंकरी दिव्य तथाउदारिकादिक कामनासंबंधथी छोडावनारो वलीदसमुंब्रह्मचर्यपुरुषवेगोछे एरीतें दसमनुष्यें परवरयोथको यतिधर्मनामे मह्नोटो राजपुत्रवेगोछे तथातेनेदावेपासेजेस्त्री वेठीछे तेसद्भावसारितिनामे एयतिधर्मनीस्त्रीछे.

तथाआवीजो राजासमीपेंवेगोछेते ग्रह्नस्थधर्मनामें नानोराजपुत्रछे तेप्राणातिपातादिक वारमनुष्यें परवर्योछे ते वारमनुष्यनानामकह्नियेंछेयें १ स्थूलहिंसाविरमणव्रत २ स्थूलमृषाविरमणव्रत ३ स्थूलअदत्तविरमणव्रत ४ परदाराविरमणव्रत ५ इछापरिमाण रूपपरिग्रह्नवंत ६ दिशिनापरिमाणरूपते दिशिव्रत ७ जोगोपजोगव्रत ८ अनर्थदंडनिवर्त्ति ९ सामायकव्रत १० देशावगाशीकव्रत ११ पोषधोपवासव्रत १२ अतिथिसंविजागव्रत एवारपुरुषें परवर्योथको ग्रह्नस्थधर्मनामा लघुराजपुत्रवेगोछे तथाएनी स्त्री सद्गुणरत्नतानामें तेह्ननीपासेंजवेठीछे.

वलीआसम्यक्तदर्शननामे जेपुरुषवेगोछे तेचारित्रधर्मराजानो प्रधानछे तेराजानी तथावेहुराजपुत्रनी परिपालनाकरेछे ते १ उपशम २ संवेग ३ निरवेद ४ अनुकंपा ५ आस्तिकता एपांचेपुरुषेंकरी परवर्योथको जणायछे तथा १ परहितबुद्धि २ गुणिजनउपरेपक्षपात तथा ३ परदोष विनाशकरवानीइछा तथा ४ असाध्यदोषउपरें उपेक्षा एचारजावनारूप चारस्त्रीएनाआनूषणनी धरवावाली परिचयनीकरनारीछे तेणेकरीए सम्यक्तदर्शननामाप्रधानशोजितुंछे वली एसम्यक्तदर्शननामा वजीरनीपासें जेसमस्तसुलक्षणेकरीसहित गौरांगीस्त्रीवेठीछे तेसुदृष्टिनामे एनी स्त्रीछे एवजीरते मिथ्यात्वनो जीपनारछे तथादर्शनमोहनीयकर्मनेक्षयेंकरी तथाउपशमेंकरी अनेक्षयोपशमेंकरी १ उपशमसम्यक्त २ क्षयोपशमसम्यक्त ३ क्षायकसम्यक्त एत्रणलक्षणेकरी त्रणरूपधरेछे.

वलीआवीजोसद्बोधनामे राजानो मह्नोटोप्रधानवेगोछे एजूत जविष्य तथावर्त्तमानकालना समग्रद्रव्यगुणपर्यायने जाणे एचारित्रधर्मराजाना राजमां जैननगरने विषे सर्वजनलोकोने नीतिमार्गे प्रवर्त्तावेछे तथाएनीपासें जाणपणाएह्नवेनामे एनी स्त्रीवेठीछे वली १ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ अवधिज्ञान ४ मनपर्यवज्ञान ५ केव

ठेते पाछोंरह्यायकां मुक्तिनगरेपहोचाडे एमविविधप्रकारनी वातोमां तत्परथकातेवे
हुजणायें जैनपुरनगरमां चित्तसमाधाननामेंमंमपनेदीठो तेमांनिस्प्टहतानामें वेदिका
तिहांजीवपराक्रमनामे सिंहासन तिहांवेठेथको दान शील तप अने नाव एचारेमु
खेकरी शोनायमान एह्वोचारित्रधर्मनामेराजा देखीने तेह्नादर्शनथीहर्षितथको प्र
कर्षने विमर्शकहेठे हेपुत्र जोआचारित्रधर्मनामेराजा चारेमुखेकरी चारप्रकारना ध
र्ममार्गनो उपदेशकरेठे तेमांपहेलामुखथीअनयदान सुपात्रदान प्रमुखदानदेवानो
उपदेशकरेठे तथाअनुकंपादिकदानप्रतेपण निषेधकरतुंनथी पण पृथ्वीदान कन्या
दान मद्य लूण रथ घोडादिकनोमहाआरंनकारकदान तेह्नेतोनिषेधेठे.
तथाबीजामुखेंकरी अढारहजार शीलांगरथनेनेदे शोनित शीलपालवानो उपदेश
करेठे तथात्रीजामुखेंकरी वारप्रकारें वांछारहित तपकरवानो उपदेशकरेठे अने पंचा
ग्निसाधन तथामाघस्नान इत्यादिकलौकिकमार्गतपनोनिषेधकरेठे तथाचोथामुखेंकरी
अनित्यतादिक वारनावनाओकहेठे जेमएधनादिक सर्ववस्तु अनित्यठे इत्यादिककहे
ठे वलीएचारित्रधर्मराजानाजे सिंहासनादिक तथामंडप वेदिकादिकवखाण्या तेहोना
पोतपोताना नामप्रमाणे प्रनाव पणतेह्वुंजठे वली एह्नाप्रनावथी एजैनलोकनित्या
नंदीठे वलीएह्नाप्रनावयकीमोहादिकपण उपद्रवकरीशकतानथी हीनकांतिवंतथका
दूरथकीजनासीजायठे हवे विमर्शप्रकर्षने चारित्रधर्म राजानो परिवारकहिदेखाडेठे.
एराजानेसन्मुखजे महारूपपात्रस्त्रीवेठीठे ते एचारित्रधर्मराजानी विरतिनामेंपट
राणीठे एजैनलोकोनेमुक्तिनगरीनी पमाडनारीठे तथाराजाने सन्मुख आ पांचपुरुष
वेठाठे ते १ सामायक २ ठेदोपस्थापनीय ३ परिहारविशुद्धी ४ सूक्ष्मसंपराय ५ य
थाख्यात एपांचेनामेपांचपुरुषते एराजानाअंगनूतमित्रठे एपांचेमित्र जैनलोकने पा
पथीनिवर्त्तावेठे तथाआराजाआगल यतिधर्मनामे राजानोपुत्र महाधुरंधरवेठोठे.
वलीएयतिधर्मनो परिवारनूतते आदसमनुष्यवेगलो तेमां एकक्षमा वीजुं आर्य
वतेसरलातपणुं त्रीजुं मार्दवतेनम्रपणुं चोथुंमुक्तितेनिःसंगपणुं पांचमोतपोयोग तेव
लीवारमनुष्यें परवर्योठे १ अनशन २ ऊनोदरी ३ वृत्तिसंक्षेप ४ रसत्याग ५ का
यक्लेश ६ संलीनपणुं एठप्रकारेंवाह्यतप तथादसप्रकारें प्रायश्चित्ततप चारप्रकारेंवि
नयतप दसप्रकारें वैयावच्च पांचप्रकारें सिज्जाय वेप्रकारेंध्यान तथाकायोत्सर्ग ए
रीतेंठप्रकारनुंअभ्यंतरतप मलिनेवारप्रकारनातपरूप वारपुरुषें परवर्यो तेपांचमो त
पोयोगकहिये एह्नीशक्तियी साधुविविधरीतनातपकरीने कर्मपरिणामराजानेजर्जरी
नूतकरेठे तथाठठोपुरुषते संयम जेमांप्राणातिपातादिक पांचआश्रवनी निवृत्ति

तथापांचेंइंद्रियनोनिरोध अनेचारकषायनोजय तथामनोदंड वचनदंड अनेकाय दंड एत्रणदंडनी निवर्त्ति एरीतें सत्तरपुरुषेकरी परिवर्योयको एहछेसंयमनामापुरु षकह्यिं तथावली आ सातमो सत्यनामेपुरुष तथाआठमोऽव्य तथाजावनी शु द्धिनीपजावनार एह्वोशौचनामेपुरुषवेगोछे तथापरिग्रहने छंमावनारोअकिंचनना मे पुरुषतेनवमोआवेगोछे तथादसमुं ब्रह्मचर्यते मन वचन कायायेंकरी दिव्य त थाउदारिकादिक कामनासंबंधयी छंडावनारो वलीदसमुंब्रह्मचर्यपुरुषवेगोछे एरीतें दसमनुष्यें परवर्योयको यतिधर्मनामे महोटो राजपुत्रवेगोछे तथातेनेदावेपासेजेस्त्री वेठीछे तसन्नावसारितिनामे एयतिधर्मनीस्त्रीछे.

तथाआवीजो राजासमीपेंवेगोवेते ग्रहस्यधर्मनामें नानोराजपुत्रछे तेप्राणातिपा तादिक बारमनुष्यें परवर्योछे ते बारमनुष्यनानामकह्यिंछेयें १ स्थूलहिंसाविरमण व्रत २ स्थूलमृषाविरमणव्रत ३ स्थूलअदत्तविरमणव्रत ४ परदाराविरमणव्रत ५ इच्छापरिमाण रूपपरिग्रहव्रत ६ दिशिनापरिमाणरूपते दिशिव्रत ७ नोगोपन्नोगव्रत ८ अनर्थदंडनिवर्त्ति ९ सामायकव्रत १० देशावगाशीकव्रत ११ पोषधोपवासव्रत १२ अतिथिसंविन्नागव्रत एबारपुरुषें परवर्योयको ग्रहस्यधर्मनामा लघुराजपुत्रवेगोछे तथाएनी स्त्री सद्गुणरक्तानामें तेहनीपासेंजवेठीछे.

वलीआसम्यक्तदर्शननामे जेपुरुषवेगोछे तेचारित्रधर्मराजानो प्रधानछे तेराजा नी तथावेहुराजपुत्रनी परिपालनाकरेछे ते १ उपशम २ संवेग ३ निरवेद ४ अ नुकंपा ५ आस्तिकता एपांचेपुरुषेकरी परवर्योयको जणायछे तथा १ परहित बुद्धि २ गुणिजनउपरेपक्षपात तथा ३ परदोष विनाशकरवानीइच्छा तथा ४ अ साध्यदोषउपरें उपेक्षा एचारन्नावनारूप चारस्त्रीएनाआजूषणनी धरवावालो परिच यनीकरनारीछे तेणेकरीए सम्यक्तदर्शननामाप्रधानशोजेछे वली एसम्यक्तदर्शनना मा वजीरनीपासें जेसमस्तसुलक्षणेकरीसहित गौरांगीस्त्रीवेठीछे तेसुदृष्टिनामे एनी स्त्रीछे एवजीरते मिथ्यात्वनो जीपनारछे तथादर्शनमोहनीयकर्मनेक्षयेंकरी तथाउप शमेंकरी अनेक्षयोपशमेंकरी १ उपशमसम्यक्त २ क्षयोपशमसम्यक्त ३ क्षायकस म्यक्त एत्रणलक्षणेकरी त्रणरूपधरेछे.

वलीआवीजोसद्बोधनामे राजानो महोटोप्रधानवेगोछे एजूत नविष्य तथावर्त्त मानकालना समग्रद्व्यगुणपर्यायने जाणे एचारित्रधर्मराजाना राजमां जैननगरने विषे सर्वजैनलोकोने नीतिमार्गे प्रवर्त्तावेछे तथाएनीपासें जाणपणाएह्वेनामे एनी स्त्रीवेठीछे वली १ मतिज्ञान २ श्रुतज्ञान ३ अवधिज्ञान ४ मनपर्यवज्ञान ५ केव

लज्ञान नामेएपांचते एसद्बोधना अंगभूतमित्रबेगाछे हवेएसद्बोधते ज्ञानावरणीय कर्मराजानेक्षयें तथाक्षयोपशमें उपजे एपांचेमित्रमांबीजो श्रुतज्ञाननामा जेमित्र तेह नेज सदागमकहियेंछेयें ते सर्वचारित्रधर्मराजाना समग्रराजनी स्थिति अने मर्यादा नोकरनारछे.

अने मतिज्ञानादिक चारमित्रते मूगासरिखाछे पोतानाज अर्थकार्यने साधिशके छे पणपरार्थसाधिनशके तेकारणेजैनधर्मना लोकसदागमनीज आज्ञायेंक्रियादिक साधेछे योगउपधाननुं वहेवुं कालविनयादिक आठप्रकारें लखवुंवांचवुं इत्यादिक भक्तियेंकरी एनुंबहुमानकरेछे जेप्राणीसदागमनोपद अक्षर मात्रा ने लोपेंछे तेहनेनि श्चेंज मालीनोपरें अनंतसंसारजमवुंपडेछे एम एसदागमपोतेंजकहेछे के बारअंग रूपगणीनोपेटीनेजेविराधसे तेअनंतिवार भवचक्रमां रखडसे दुःखपामसे यथा इ च्चेइयंदुवालसंगंगणिपडिगंविराहेत्तातिकाले अणंताजीवाचाउरंतसंसारकंतारंपरि अट्टिसु इत्यादिसमवायांगसूत्रे नंदिसूत्रेच एमअनेकस्थान के सदागमबोलेछेतेमाटे एसदागमनीआज्ञाते उत्तमपुरुषे भलीरीतें आराधवी.

वलीजेजनलोक मुक्तिनगरें पहोचेछेते केवलज्ञानरूप पांचमांमित्रनाबले पहो चेछे वलीप्रकर्षेपुत्रयुंजेहे मामा आपणेइहां संतोष नामामहोटोसुभट जोवानेअ र्थे आव्याछीयें तेतोहमणा किहांपणदीठोनही तेहनोकारणसुं तेवारें विमर्शेकह्युं जे आचारित्रधर्मराजाने सन्मुख संयमआगलेंजे बेठोछे तेसंतोषकहियें यद्यपि एसं तोषते चारित्रधर्मराजानो सेवकछे तथापिएपांचेंइन्द्रियनो जयकरनारोछे अनेमहामो हनाने राजानापराक्रमने हणनारोछे तेमाटेचारित्रधर्मराजायें पोतानुंसर्वलश्कर एहने स्वाधिनकरीने सेनाधिपतिकर्योछे एमए संतोषते अतुल्यपराक्रमीछे तेथीएहि जराजाकहेवायछे अनेएनाउपरमोहराजाजे सपरिवारेंचडयोछे तेकोइकोइवारें एह नेजीतेछे अनेकिवारेंक एसंतोषपण मोहराजानेजीपेछे पणएवेहुने अनंतोकालउ दधरतांथयो पणहजीनाहोंमांहें युद्धचाल्याजकरेछे पणआगलेंसुंथासेते जणातुंन थी तथाएसंतोषनीपासेंजेबेठीछेतेनिःपिपासा अतृष्णानामे एसंतोषनीजस्त्रीछे एस्त्री लोकोने रागद्वेषरहितकरेछे वली लाननावलते तथा अलाननावलतें सुखनीं लावे दुःखनीचिंतायें माननीचिंतायें अपमाननीचिंतायें तथासरसव्यवहार निरसआहा रे एवजनलोकोनो मनसंतुष्टराखेछे.

एचारित्रधर्मराजा तथायतिधर्म अनेश्रावकधर्म एबेएनापुत्र तथासम्यक्दर्शन अने सद्बोधनामें एबेहुप्रधानते राजनीचिंतानाकरनारछे तथा संतोषनामेसेनाधिपति

ते सर्वलोकनेहितनोकरनार रखवालोछे इत्यादिक सर्वपरिवारसहितकह्या तेजेममो हादिकसर्वने दुःखदायीछे तेमएराजमंडलते सर्वजीवनेअनंतसुखनो उपजावनारछे

तयावलीआ चित्तसमाधनामा मंडपमांरह्याजे शुभाशयेंकरीविशुद्धययेला अ नेकसुजटोवेगछे तेसर्वएराजाना सेवकजाणवा हवेविमर्शकहुंजे हेवत्स एराजानुंव र्णन तथा सैन्यनुंवर्णन तेसर्वप्रकारेंकोणकरीशके तेमाटेचालोहवे आपणेआपणा स्थानकेंजइयें तेवारेंप्रकर्षेकह्युंजलुं हवेतेहांथीचाल्या मार्गमां गांजीर्य धैर्यादिकरय तथा यश सुजनपणोप्रमुखहस्ति वली बुद्धियेंकरीचतुर अनेतत्त्वबोधादिक अश्व त था अचलपणुं विनीतपणुं दाक्षिणपणो इत्यादिकपालोकटकजे चारित्रधर्मराजानुं छे तेसर्वजोताजोताचाल्या.

हवेप्रकर्षकहेछेजे हेमामातमेंतो मनेजलुंजकौतुकदेखाड्युं मोहराजानुंसैन्य तथा चारित्रधर्मराजानुंसैन्य अने जवचक्रनुंस्वरूप वली जैनपूरनुंस्वरूप तथाविवेक पर्वत इत्यादिकसर्वनुंस्वरूप तमेंमनेदेखाड्युं माटेहुंकृतकृत्यथयो हजीपणथोडादिव स आहिं विवेकपर्वतें रहिनेजवचक्रनगरनुं स्वरूपजाणियें तेवारेंफरी चारमहिना सुधी तेहांरह्याजैनपुरादिकना अनेककौतुकजोवाने तत्परथका सर्ववातने जलीपरे जाणी हवेतेहांथी प्रकर्ष अने विमर्श पोतानीअवधिनोकाल पूरोथयोजाणीने पो तानाघरप्रतें चाल्या तेअनुक्रमें पोताने मंदिरेंआवी शुजोदय विचक्षण अने बुद्धिप्र मुख सर्वनेसंतुष्टथयी परस्परें आलिंगनादिकेकरीमिल्या बुद्धीपोतानाजाइ अने पुत्र नेदेखी खुसीथयी अने प्रकर्षने विचक्षणेपोताने खोलेबेसाडी माहोमांहे खेमकुश लनी सर्वखबरकही विमर्श अने प्रकर्षे राजसचित्त तथा तामसचित्त प्रमुखनगरो नी दीठेली सर्ववातकही संजलावी.

फरीकह्युंजे हेविचक्षणजी एजिव्हाते रागकेसरीराजानो प्रधानजे विषयाजिला ष तेहनीपुत्रीछे अने चारित्रधर्मराजानो मुख्यसेवकजे संतोषनामेछे ते ए जिव्हा नो जीपनारोछे वली मोहराजानुंलशकर अने जवचक्रनगर तथाविवेकपर्वत जैन पुरनगर तथाचारित्रधर्मराजाना लशकरादिकनासर्व वृत्तांतकह्या तेसांजली विचक्षण हर्षपाम्योथको विशेषेंकरी रसनास्त्रीनीविषयजूतममतानो त्यागकरवालागो.

हवेजडकुमरतो लोलतादिकनेवशें रह्योथको मद्य मदिरा मांसादिकेंकरी जिव्हा नेपुष्ट करतो एकदिवसें बेटानामांसनेलोभें बेटानीभ्रांतियें एकगोवालियो सुतोह तो तेहनेरात्रीनेवखतबाणेंकरीमारीने तेहनीपासेगयो अनेजोयुंतो मनुष्यमुवेलोदे खीने मनमांविचार्युंजे अहोमें रसनानी तृप्तिनेअर्थे विचित्रप्रकारना मांसखाधाछे

पणमनुष्यनोमांस किवारेंखाधुंनथी तेश्राजेमने माहराजाग्योदयथी मल्युं माटेएमां संकरी रसनाने तृप्तिवंतकरुं एमविचारकरी मनुष्यनो मांसवावखुं तेथीलोलतावल वंतथयो तेवारपछेते मनुष्यनामांसनो लोनीथयो पछेएजनगरनाठोकराओने अपहरी ने नक्षणकरवालागो एकदिवसें रात्रनेसमे शूरनामें क्षत्रीनाघरमांपेसीने तेनोस्तन नोधावनारपुत्रने सुतोलेइ घरथीबाहिर निकल्यो एटलामां शूरजागीठयो तेणे जडने देखी दृढबंधनेवांधी सेकडागमे महाकदर्थनाकरी प्रनातेंसर्वलोकें जडनोवृत्तांतजाण्यो.

एटलेविचक्षणेपण पोतानोपित्राइनाइजे जड तेहनीअपभ्राजना विटंबनादेखी ने चित्तमांलज्जापाम्यो जेजुओ ए जडे जीव्हास्त्रीनेवशें अमारो कुललज्जाव्युं तोहुं एअधमकुलनीवपनीजे जिव्हास्त्री तेहनेछांडवानो उपायकरुं एमविचारी पोतानो पिता शुनोदय तथा मातानेपुछी पोतानी बुद्धिनामेस्त्री तथाप्रकर्षनामेपुत्र अने वि मर्शनामेसालो तेहनेसायेलेइ विवेकपर्वत उपरचढीने अप्रमतनामें शिखरउ पर जैनपूरनगरछे तेहांआवीनेश्रीगुणधरनामें आचार्यनीपासेंथी दीक्षालीधी तेवारें महारोपिताजे शुनोदय अने आपनलाइनामेंमहारीमाता ते पणमाहरा सायेंआव्या जिव्हापणसायेंहती हेराजन्तेजहुंविचक्षणसूरिछुं.

पछेगुणधरसूरिपासेंथी हुंसर्वयतिधर्म सीख्यो वलीअनेकप्रकारनातपकख्या तेणे करी रसनानामेइंद्रियने अकिंचित्करी केटलाकदिवसें मनेगुणवंतगीतार्थ जाणीने गुरुयें सूरिपदआप्युं इत्यादिकवात विचक्षणसूरिनामुखथी सांनली नरवाहनराजा प्रतिबोधपाम्या.

अने हाथजोडी कहेवालागाजे हेनगवन् प्रमादरूपविषेंकरीलेपाणो एहवामा हराचित्तने तमाराचरित्रना अमृतरूपपानेकरीने बोधवंतकख्यो एसंसारसर्व असा रछे माटेजो एटलीवात संनलावी मनेउपकारकख्यो तोहवेदीक्षाप्रसादकरी मनेसं पूर्णपसायकरो एहवाराजाना वचनसांनली विचक्षणसूरियेंपण राजाने योग्यता जा णीनेकह्युंके जेमतमने सुखउपजेतेमकरो तेवारेंराजायें राज्येबेसाडवाने पुत्रसंनाख्यो.

हवेसंसारीजीव अगृहीतसंकेताने कहेछेजे हेअगृहीतसंकेता तेवखतेएयोमने नानाप्रकारनोडखीदेखीने माहरोपुण्योदयलज्जापामि काइकमारानजीकआव्यो तं हथीपदपिडुं दोरनोढगलोहतो तोपणपुण्योदयनाअनुनावथी राजायेंमने सनामां म्लानमुखवंतथको बेठोदेखीने स्नेहनेलीधे उत्संगेबेसाडी आचार्यनेपुछ्युंजे हेमहा राज आरिपुदारणे पोतानीनाताजे विमलमाला तथानरसुंदरीनामेस्त्री तेहनीपोता नादोरेकरीने पोतानानजरेंदेखतां मरणअवस्थाकेमकरी एमांएहवोनिर्लज्जपणुंकेम

आव्यो तेवारें गुरुबोल्याजे हे राजन् ए यद्यपिताहरा कुलमांतो उपनो तोपणएहने मृषावाद अने शैलराजनामेंवे पापमित्रछे तेहनावशथकी जो एरुडोहोय तोपणनिर्लक्षयथोतेथी एनीएवीबुद्धिथयी वलीराजायेंपुछ्युं जे हेस्वामि एपापमित्रकोइपणरीतेंट ले एहवोकोइउपायछे तेवारेंगुरुबोल्याजे. हेराजन्

उज्वलमानसनामेनगरनो शुद्धाभिप्रायनामेराजा तेनीएकसौजन्यता अने बीजीश्रेष्ठतानामे एरीतेंवेस्त्रीओछे तेमांपेहेलीस्त्रीनीपुत्री नम्रपरिणामनामे अनेबीजीस्त्रीनीपुत्री सत्यतानामें एवेकन्याओजेवारें एतमारोपुत्र परणसे तेवारें शैलराजा अनेमृषावाद एवेहु पापमित्रटलशे पणतेतोकालांतरेंथशे पणहजीतो घणोकालसुधी एताहरोपुत्र एहवीज स्थितिमांचालसे तेसांभलीराजाने घणीअसातायथी तथापि चारित्रलेवाने उतावलहती माटे मने अयोग्यजाणीतोपण पुत्रनास्नेहमाटेमने राज्यआपी राजायें विचक्षणाचार्यपासेथी दीक्षालेइ गुरुसाथें विहारकरी अन्यस्थानकेंगया.

हवेसंसारीजीवकहेछेजे हुंजेवारथीराजाथयो तेवारथी पापमित्रतो उलटावध वालागा आखाजगतने तृणसमानगणतोहतो मिथ्यात्वनी प्रशंसाकरुं एरीतें शैलराजातथामृषावादने पुष्टिवंतकर्या घणुंखोटुंबोलुं एमकरतापण पुण्योदयनाजोरथी राज्यपालतां केटलाकदिवसविल्या एहवामांएक तपननामे चक्रवर्त्ति दिगविजयकरवा नेअर्थेनिकल्यो तेसिद्धार्थपुरें मारानगरेआव्यो तेवारेंमने प्रधानादिकेंकह्युंजे हेस्वामि एतपनचक्रवर्त्ति सर्वोपरिचालनार अतुल्यपराक्रमी आपणेसन्मुखआवेछे माटे भेटणाप्रमुखलेइ एहनासन्मुखजयी एहनीपूजाकरो जेथकीआपणाराजने कुशलथाय.

तेसांभली हुंतेचक्रवर्त्तिने सन्मुखजवानेइछुं एटलामां माहरेहृदयें शैलराजायें स्तब्धचित्तनामे औषध चोपड्युं तेथी हुंगर्वेकरीधमधम्योथको प्रधानने कहेवालागो जे एतपनचक्रवर्त्तिते महाराजजानापराक्रम आगलें शीगणतीमांछे तमेंजीखारीछो जेएनाथकीजयपामोछो हुंतोएनासन्मुखजनारनथी अनेजो वारंवार मनेकहोछो तो एकवारतमें सन्मुखजाओ हुं पाछलथीआवुंछुं एममृषावादेंहुंबोल्यो तेवारेंप्रधानादिक सुभटोनासमुदायसहित घणीभेटलेइने चक्रवर्त्तिनेजयी मिल्या चक्रवर्त्तियेंतेमने मानदीधुं कुशलनासमाचारसहित माहरानआववानो कारणपुछ्युं तेवारेंप्रधानादिकेंकह्युंजे हेस्वामिअमारोराजा आपनापगनी सेवानेविषे उत्सुकथको हमणाअमारीपछवाडेआवेछे एमकहितेप्रधानादिकेंफरी मनेतेडवानेअर्थे दूतमोकल्यो पणमेंतो शैलराजानावशथको प्रधानादिकने कहेवराव्युंजे अरेअरेअधमपुरुषो तमेमनेपुछयाविना कोहोनाहुकमथी एतपनचक्रवर्त्तिने मलवागया एचक्रवर्त्तिसुंकरना

रत्ने ढुंकाइथावतोनथी इत्यादिक सांजली दूतपाछोवल्यो तेणेजइने प्रधानादिकनेक सुं तेसांजलीने प्रधानादिक कीणयशा इत्यादिक महारोगवेंकरी आचरेलुंजे मातुं लक्षण तेसर्वचक्रवर्त्तियें वेशबदलावीनेछानो दूतमोकल्योहतो तेहनामुखथी चक्रवर्त्ति यें माहरीवात जाणीने योगेश्वरनामे एकमंत्रवादिनेसिद्धार्थपुरे मोकल्योतेवारेंमहा रोपुण्योदयनासीगयोछे तेणेमंत्रशक्तियेंकरी मनेविकलकखोथको ढुंवस्त्रवर्जितथको छुटाकेशो मायाउपरधुळनाखीने थानकेंथानकें चहुटेचहुटे हाथताळीकरतो नाचतो थको मनेचक्रवर्त्तिना लशकरनेकिनारेआण्योवली जेकोइचक्रवर्त्तिनीसाथें गर्वकरशे ते हनाएहवाहालथशे एहवी उदघोषणासहित सर्वस्थानकें समस्तप्रकारें जमावीने चक्रवर्त्तिनामाणसोये मुजरनाप्रहारादिकें शोकमार्गमेंविटंबनाकरीने मने मारीनाख्युं हवेतेहांथीढुंमरणपामिने.

पापिपिंजरनगरना महातमतमप्रजानामा सातमेंपाडे तेत्रीससागरोपमने श्रा उपे नारकीपणे उपीउपनो पछेहे अगृहीतसंकेता तेहांमें जेजेदुःखजोगव्यां तेस वेंदुःखयासदागम जाणेछे मनेकहेताथकां आजपणशरीरकंपेछेजे त्रासउपजेछे तेम हारुंमनजाणेछे तेवारपछि तेहांतेत्रीससागरोपमआयु पूरणजोगवीने तेहांथीनिक ल्यापछे महारीस्त्रीजे जवितव्यता तेणेनवीनवी कर्मगुटिकाओखवरावीने अनंतावा र नवानवा वेशें नचाव्यो बहुलतायें एकअसंव्यवहारनगरविना प्रायेंसर्वत्रस्थानकें मुजनेनमाव्यो किहांएकछेदनजेदनादिकेंकरी किहांएकपंत्रमांहेपीलाव्यो किहांएक भूख तरस टाढ उन्न जोगवाव्या किहांएकमूर्ख किहांएकदालिद्री तेमज हीनजातिप णुं हीनअंगपणुं कुटुंबवियोगपणुं दासपणुं दुर्जाग्यपणुं कुरूपपणादिक एमनाना प्रकारना जवजवनेविषे संसारमां दुःखजोगवतां तेमज स्वजनने अनिष्टपणुंजिव्हा छेदनपणुं इत्यादिक नानाप्रकारना संसारनेविषे दुःखजोगवतां अनंतकालसुधी वि टंबनाकरता करता थाकीयकी कांइकमहाराउपर रहेमनजरकरीने एकदिवश जवित व्यता महाराउपर प्रसन्नथयीने मनेकहेवालागीजे हेआर्यपुत्र तेपणादुःखजोगव्यां हवेतुं मनुष्यगतिनामानगरीयेंजा अनेपुण्योदयनामामित्रनेपण ताहरीसाथे नजावुं छुं एहवातेहनावचननेमें अंगीकारकखा.

एवातसांजली प्रज्ञाविशालाबोलीजे जूठोमृषावाद तथा अहंकारअने रसना इंद्री चोरीइत्यादिकनासंगथी उपनुंजेफलते सांजलीने एहनेविषे पंमितपुरुषेंकयार पण जक्तिकारववीनही तेमाटे उत्तमपुरुषें एरिपुदारणनो संबंधसांजलीने मृषावाद तथा अहंकारना मार्गकजाणी एवेवानापरिहरवा तथा विचक्षणसूरिनो संबंध

सांजली जिव्हाइंद्रियनो जयकरवो जेमसकलमनोरथनी सिद्धिहोय परमानंदथाय.
इतिउपमितजवप्रपंचनीकथाना द्वारविषे शैलराजाजेमान तथामृषावाद मदि
रापान मिथ्याजिमान धनगर्व गणिकानेघरेंजावुं जुगटानुंरमवुं आहेडोक
रवुं विकथानीशक्ति इत्यादिकोना विपाकनेदेखाडवारूप बीजोअधिका
रसंपूर्णथयो इतिमहामृषावादेच रिपु दारण कथानकःसमाप्तः

हवेसंसारीजीव अगृहीतसंकेतापासें सदागम तथा जव्यपुरुष अने प्रज्ञाविशा
ला सांजलतांथकां पोतानेमनुष्यगतिनगरियें आव्यानीवातकहेले जेपुण्योदयनेमित्र
करीने वर्द्धमाननामेनगर तेहांन्यायादिकगुणेयुक्त वलीपोतानीकिर्त्तियेंकरी उज्वलक
र्योले पृथ्वीनोवलयजेणे एहवो धवलनामेराजा तेहने कमलसुंदरीनामेपटराणीले ते
नोविमलनामेपुत्रले अनेतेहिज वर्द्धमाननगरें एकसोमदेवनामें व्यवहारीओ महा
बुद्धिवंत धनवंतवसेले तेहनेकनकसुंदरीस्त्रीले तेहनीकुक्षीनेविषे जवितव्यतानेवशें
गुटिकानाप्रयोगथी हुंअवतर्यो पलेअनुक्रमें पुण्योदयसंघाते महारुंजन्मथयुं पिता
येंमहोटो महोत्सवकरी महारुंनाम वामदेवपाडयुं अनुक्रमें दिवशें दिवशें माता
पितादिकें लाडलडाव्योथकोहुं महोटोथतोगयो.

एकदिवसें श्यामवर्णे वेपुरुषोतथा एक वक्रशरीरवंत अने चंचल स्त्री एरीतेंत्रणे
जणनेआवतामेंदीठा तेमांथीएकपुरुष महारापाशेआवी मनेरुडीरीतें आलिंगनदेइ
पुलवालागोजे हेमित्रतुंमनेओलखेले तेवारेमेंकह्युंना नथीओलखतुं तेवारेंते शोकातु
रथयोथको वोल्योजे हेमित्र असंव्यवहारनगरथीमांमीनेजेजे स्थानकेंतुंक्रीडाकरतो
तेतेस्थानकेंहुंपण ताहरीसाथेंअलक्षनीपरें ताहराघरमांज हतो पणजेवारें सिद्धार्थ
पुरनगरेंतुं रिपुदारणकहेवातोहतो तेवारेंतोहुंताहरीसाथें प्रगटपणेजमृषावादनामे
ताहरोमित्र हतो तेवारेंतुंमहाराउपर उत्कृष्टआसक्तहतो एमतेमहारीसाथें पूर्वेंघ
णीक्रीडाकरीले अनेएकदिवशेंतुं महारीशक्तियें रीज्योथको तेंमुजनेमहारीशक्तिपाम
वानुं कारणपुल्युं तेवारेंमें कह्युंजे रागकेसरीनामेंराजानीपुत्री मायानामे महारीअं
गीकारकरेलीबेंहेनले तेहनीपासेंथी हुंशीख्योलुं अने वखतउपरतुजनेपण हुंदेखाडी
स एहवुंमेंतुजने कह्युंहतुं तेमाहरोबोलवुं साचुंकरवानेअर्थे तेमहारीमहोटीबेंहेन
जेमाया तथावली स्तेयके० चोरीपणोनामे महारोनानोजाइ एबेहुनेंसाथेंलेइनेंहुं
ताहरीपासेंआव्योलुं.

एहवामृषावादना वचनसांजलीनेमेंकह्युंजे हेमित्रयद्यपिहुंतने ओलखतोनथी त

यापितुजनेदेखी म्हारोउदय तथा नयनप्रसन्नथायछे.तेथीजाणुंछुंजे ताहरीवातत
देखरीजछे अनेतुंमहारो उत्कृष्टमित्रछो माटे ताराना३तथावहेन सहितमाहरापाशें
वेश तेसांजली मृषावादेकह्युंजे हेवत्स तुंपरमस्नेहपात्रछो तेमाटे हमणातो माह
रीत्रेहेन माया अने स्तेयने प्रगटपणें ताहरीपासेंमूकुंछुं एत्रेहुनेतुंमित्रपणेजाणजे ए
पणतुजने विचित्रप्रकारनी शक्तिआपशे प्रस्तावेहुंपण प्रगटथइश हमणातो प्रछन्न
पणेरहुंछुं एमकहीमृषावादतो अंतरभूतथइगयुं अने मायातथा स्तेयतेप्रगटपणे र
ह्यादेखी हुंमहाआनंदपाम्यो शावास्तेके जुओआअनंतोकालवहिगयो तोपण मि
त्रेमाराउपर केहेवोउपकारकर्योछे.

हवेमायानाअनुभावथकी हुंमातापितादिकनेपणठगुं अनेस्तेयनेवशें चोरीकरुं ए
हवामाराल्क्षणजोइनेकुटुंबनालोकोनेविषेतोहुं अवगणनानाघरतुल्यथयो हवेराजा
नीस्त्री कमलसुंदरी अने म्हारीमाता कनकसुंदरी तेवेहुनेपोतामां सखीपणोहतो
तेहनासंबंधथी म्हारे अने राजपुत्रविमलनेपण माहोमाहेंमित्रताथयी हवेतेविम
लकुमरसज्जनमाटे म्हाराउपरउत्कृष्ट स्नेहधरेतो पणहुंतेहनीसाथें पणी ठगाइज
करुं एमकरतां केटलाकदिवसगया वलीअवसरें मातापितायेंअमने भणवामूक्या
पछे अमें वेहुजणा नेलागुरुपासेथीघणीकलाओभण्या.

एकदिवसंअमें कौतुकजोवानेअर्थें विविधप्रकारनावृक्षेंशोभित क्रीडाकरवानेयोग्य
एहवोनंदननामा उद्यानेगयाहता तेहांविविधप्रकारनावृक्षोनी शोभाजोइयेंछइयें ए
टलामां अमेवेहुयेंकोइअव्यक्त मधुरध्वनि दूरथीसांभली तेवारेंविमलें मनेपुछ्युंजे
हेमित्रकिंकणीयेंकरी दशिनेजिते एहवोए शब्दथायछे माटेनिश्चेंकरी वननाकुलजो
वानाकौतुकि कोइक किन्नर अथवादेवता इहांकोइवेलनासमूहनेविषे विचरतोहसे
तेमाटेचालोजोइयें एमविचारी अमेवन्नेजण शब्दनेअनुसारेंचाल्या एटले मार्गमां
अंकुश चक्र वज्रादिलक्षणोपेत कोइकना पगलांदेखी विमलकुमरबोल्योजे हेमित्र
आपगलांतोकोइक उत्तमपुरुषनादेखायछे आकाशनाचालनार देवतानेतो धरतियें प
गथापवानो अनावछे केमकेधरतिथी चारअंगुलउंचाचालेछे माटे देवताना पगलांए
नथी एमकहियोडेकेटे आगल चाल्या एटलेएकलतागृहमां सर्वांगेंसुंदरएहवुं स्त्रीपु
रुषनुंजोडलुंदीठुं तेनोदेवतायोपण अधिकरूपदेखीने विमल कुमरबोल्युंजे हेवामें
व एहनालक्षणजोतां एस्त्रीपुरुष महाउत्तमदेखायछे मेंपुछयुंजे एहवास्यालक्षणए
मने तेवारें विमलेंकह्युंके.

जेहनानख आरसीसरिखा चलकाटकरताहोय वली स्निग्ध अने पुटचरण

होय तथालिंगन्हानो उदरकृश नाभिगंजीर हृदयविशाल तथाकमलनापत्रस रिखा विशालनेत्र मस्तकविस्तीरण मध्यस्थशरीरवंतउचीनासिका भुजाओलांबी र क्तहस्त सर्वांगेंसुलक्षणवंत इत्यादिक अनेकरीतनालक्षण जेपुरुषनेहोय तेवारेंजाणि यें एमहाजाग्यवंत पुरुषछे तेमाटेएपुरुष चक्रवर्त्तियाशे अने एहनी स्त्रीनापणपद्म चक्रादिचिन्हेयुक्त चरणशोजेछे तथा वृत्तजंघा अने कठणस्तनवंत विपुलनितंबादि कें शोजेछे इत्यादिकरुडेलक्षणे शोजितसर्व अवयवदेखायछे माटे एस्त्रीपणसाक्षा तूलक्ष्मीनीपरें महाजाग्यवंत जणायछे एरीतेवेमित्रवातोकरेछे.

एटलामां आकाशमार्गे कोइकवेपुरुषो ते लतागृह उपरआव्या तेमांथी एकपुरुषें युगलने तिरस्कारकरी युद्धनेअर्थे बोलाव्यो केजोतुंपराक्रमवंतहोयतो आवमाहारी सायेंयुद्धकर एटलेते युगलपुरुषपण वेलनाघरमांस्त्रीनेमूकी क्रोधवंतथयो विकरालनेत्र करी तेहनेसन्मुखदोड्यो पछेवेहुयेंयुद्धकरवामांड्युं एटलामांते वेमाहेलोएकपुरुष ल तागृहमां प्रवेशकरी स्त्रीनेग्रहणकरवानेअर्थेदोड्यो एटलेस्त्रीजयपामियकी तिहांथी नासीने राजपुत्रविमलकुमरने कहेवालागी हेवीरपुरुष मनेराखराख एमकहेतियकी विमलनोशरणकरवालागी एहवामां वनदेवतायें विमलनापुण्योदयनेप्रजावें स्त्रीनेजा लनारदुष्टपुरुषने थंजीराख्यो एटलामां युगलपुरुषते पहेलायुद्धकरनार एकपुरुष नेजीत्यो तेपुरुषनाठो युगलपुरुषपण तेहनीपठवाडेगयो पछेतेथंजेला पुरुषेंदीठो ते वारेंतेणेपण तेहनीपठवाम्नेनासीजवानी इच्छाकरी एटलेतेने वनदेवतायेंमूक्यो तेवा रेंतेपण तेहनीपाछल नासीगयो एमत्रणजण आकाशमार्गें उंचाचाल्यातेजेवारें दी ठामांनआवे एटलाउंचागया तेवारें स्त्रीयेंजाण्युंजे घणोवखतथयो हजीमहारो जर्त्ता रआव्योनही तेथीएहने दुष्टोयेपराजवपमाड्यो अथवाहण्यो महोजो एमदुःखेपी डाणीयकी तेस्त्रीरोवालागी तेहने विमलकुमरें रुमीरीतें आश्वासनकरी तेहांबेसा डीने तेहनाजर्त्तारनेजोवाजायछे.

तेसमयें वेहुपुरुषनेजीति महाउत्साहवंतथको युगलपुरुष आकाशथीहेठेउत र्यो तेवारेंतेहनी स्त्रीयें विमलकुमरना उपकारसंबंधी पाछलोवृत्तांत जर्त्तारआ गलकह्यो तेसांजली युगलपुरुषें पणहर्षपामि विमलनेकह्युंजेआश्चर्य केहवीवातछे जे तमेकारणविना महारीस्त्रीने घणीआश्वासनाकरी दुःखिरास्त्रीनथी माटेमहाराउ परतमेंघणोउपकारकर्यो एमकही घणो सनमानदीधो अनेकहेवालागोजे हेविमल हेपिता हेमित्रजे तुंकहेतेदुंतुजनेआपुं तेमाटे तमेकोइकपणकार्यकहो एटले प्रतिउ पकारकरीहुंपण तमाराजेणोउतारुं एहवुं कहेछते विमलेंकह्युंहेमित्र तमेपोतानाव

छेफरी बेहुवेरीनेजीत्या तोतेवेकाणेहुं सुंउपकारकरतोहतो. पणतमारादर्शनथकीज महारासर्वकार्यनी सिद्धिथयी माटेतमारोवृत्तांतकहोने मनेसंतोषवंतकरो तेवारें युगलपुरुष पोतानीवातकहेले.

चंद्रनाकिरणनीपरें उज्वल एहवो वैताढ्यनामेंपर्वत तेहांदक्षणश्रेणीनेविषें गग नशेखरनामेनगर तेनो मणीप्रभनामेराजा तेहने कनकशिखानामेस्त्री तेहनोरत्नशिख रनामाएकपुत्र तथारत्नशिखा अनेमणिशिखा एवेपुत्रीछे तेमां रत्नशिखाते मेघनाद नामेविद्याधरने परणी तेहनोपुत्रहुं रत्नचूडनामे तथा मणिशिखानामापुत्रीतो शित प्रभनामाविद्याधरने परणी तेहना अचल तथा चपलनामेवेपुत्रछे हवे रत्नशेखरनी स्त्री रतिकांता तेहनी कुक्षीथीउपनी चूतमंजरीनामेपुत्री तेअमहारीस्त्री तमारापासें उभीछे. हवेकुमारावस्थायें अमेसर्वएकवा रत्नशेखरनामा अमारामामानाघरें क्रीडा करताहता एकदिवशे चंदननामा सिद्धपुरुष अष्टांगनिमित्तनोजाण अने जिनमत नोजाण वली रत्नशेखरनामे राजानोबालमित्रहतो ते यंत्र मंत्रज्योतिषादिक सर्वशास्त्र जाणेछे तथाजैनमतमां घणो कुशलछे तेहनासंयोगें रत्नशेखरपण जैनीथयो अनुक्र में महारी माता रत्नशिखा महारोपिताजे मेघनाद तेहनेपण जैनधर्म समजाव्यो वली रत्नशिखाने तथामनेपण धर्ममार्गेसमजाव्यो.

हवेएकदिवसें चंदने महारासन्मुखजोयीने रत्नशेखरने कह्युंजे आताहरोभाणेज रत्नचूडनामे ते विद्याधरोनो चक्रवर्त्तिथाशे एमजणायछे ते सांभली संसारीजीव कहेछेजे में विमलना सन्मुखजोयीनेकह्युंजे हेमित्रतेंएपुरुषनेशुभ लक्षणवंतकह्युंहतुं ते ताहरुंवचन मिलतुंयपुं एमकहिरह्यो एटलेफरी रत्नचूमेकह्युंजे हेविमल पछे र त्नशेखरविद्याधरें चंदननिमित्तियानावचनथकी उदयनोकरनार तथाजैनधर्मवंतमने जोयीने पोतानीपुत्री चूतमंजरी मनेदीधी तेवारें अचल तथा चपल महारामाताविषे असर्दहतायका मनमांदुहवाणा तेदिवसथीमांडी महाराउपर मत्सरभावराखेछे प णचूतमंजरीने हरवानेअर्थे तथामनेउपद्रवकरवाने असमर्थथका कालनामें दुष्ट विद्यानो साधनकरीने महारीस्त्रीहरणकरवानेविचार्युं तेवातमें मूखरनामादूतथीजा णीने विचार्युंजे एहोनीसायेंयुद्धकरतां महारीमासीनापुत्रोने हणवानोपाप महा राऊपरपडेनही एटलामाटेहुं प्रथमथीज माहरीस्त्रीनेतेडीने इहांथी अन्यत्रस्थानके जतोरहुं एमविचारी हुंमाहरीस्त्रीनेलेइ आक्रीडा नंदनवनमांआव्यो एटलामां पा छलथी तेवेहुपण किहांकथीमाहरेइहांआववानी खबरजाणीने तमारेदेखतांज इहांआव्या तेमांथी अचलेमने युद्धकरवानेअर्थेबोलाव्युं अनुक्रमें मेंतेहनेजित्यो

तेवारें तेणेनाशवामांड्युं पणमेंतेह्नीपाछलजयी पराक्रमेंवर्जितकरीमूक्यो अनेमेंवि चार्युंजे चपले रखेमाह्रीस्त्री चूतमंजरीने हरणकरीहोय एमजाणीहुं नयेंकरीसहि त आहिंआवतोहतो तेटलामां चपलपण मनेसन्मुखमल्यो तेनेपणतेमज हतवी येंकरी हुंइहांआव्यो एमाह्रोवृत्तांतकह्यो.

हवेतुंमहोटो उपकारीपुरुषछो माटेतुंपण ताह्रो संबंधकहे तेसांभली में तेवि द्याधरने विमलनोसंबंधसर्व कहितंभलाव्युं तेहथी रत्नचूडेहर्षितथयी एकमहाअमूल्य घणुंतेजवंत एहवुंमहोटुं रत्नतेबलात्कारेंकरी विमलकुमरने आप्युं तेवारपछे केटलीकवातोकरी रत्नचूडविद्याधरेंकह्युंजे हेविमल आउद्यानमां एकप्रासाद महारा पितायें कराव्योछे तेमांश्रीऋषभदेव जिनराजनीमूर्त्ति प्रतिष्ठितकीधीछे तेमाटेचालो तिहांजयी परमेश्वरनो दर्शनकरियें पछेअमेसर्वे चारेजण दर्शनकरवागयां तिहां उ चातोरणे विचित्रप्रकारना मणिरत्नेकरीबांधेलुंछे भूतलजेह्नो तेह्नीकांतियेंकरीश्वे तकीधोछे दिशिओनावलयने वलीरुडोउद्योतकारीछे मंदिरनोमध्यभागजेह्नुं एहवो महोशोभायमान प्रासाददेखी रत्नचूडें श्रीऋषभदेवनी मूर्त्तिनी नानाप्रकारनीस्तुतिकरी वलीविमलकुमरनेपण दर्शनथकी कहेवामांनआवे एटलोप्रेमनुंरसउपनुं तेहथीविशेषें हर्षवंतथयोथको भगवंतनेनमस्कारकरीने सर्वजणवाहेरना मंडपेंआवीबेठा एटला मांविमलने मूर्छाआवी तेह्नेशीतलउपचारेंकरीरत्नचूडें सावधनकर्यो तेवारें विमलें रत्नचूडनेपगेलागी कह्युंजे हेस्वामि हेउत्तमपुरुष हेबंधु तुंमह्रारेकारणविनानो भाइ छो अने गुरूपणतुंजछो तथा महोटोउपकारनोकरनारछो केमके ताह्राउपदेशथी भ गवंतनुं बिंबदेखीमने जातिस्मरणज्ञानउपनुं तेजेभवथकी हुंपूर्वेंसमकेतपाम्योहतो तेसर्वभवनीवातमने जाणवामांआवी मेंपूर्वेंनानाप्रकारें भगवंतनीपूजा भलीरीतेंक रीछे वलीइहांपण ताह्राप्रसायथकी आजथीमह्रारे जैनधर्मविषेप्रवर्त्तवुंथयुं.

एवातसांभली रत्नचूडपण विकस्वरथयी साधर्मिकजाणीभक्तियेंसहित विमलकुमर ने प्रणामकरी कहेवालागोजे हेविमलतुं धर्मपाम्यो तेथी माह्रासर्वमनोवांछित सि‌द्ध थया केमकेतेंअरिहंतनोधर्मआदर्यो तेहथीसाधर्मिकसाथेंजेमित्रपणुंते सोनुंअनेसुगं धसरिखुं ततोविशेष पुण्योदयेंकरीपामियें अनेजेमूर्खहोयतेतो स्त्री राज्य धन पुत्रादिक पामिने हर्षपामे अनेतुजनेतोमें चिंतामणी रत्नआप्युं तेवारेंपणतुंकांइ हर्षनपाम्यो अ टलोहमणा जातिस्मरणथी जैनधर्मपामिहर्षपामेछे माटेतुजनेधन्यछे तुं महा धीरपुरुषछो एमसांभली विमलकुमरबोल्युंजे हेरत्नचूड हमणामने संसार [illegible] किंपाकफलना विपाकसरिखुंभासवामांआवेछे माटेआजेज संयमआदरवाना [illegible]

पतलने हुजीजाएवुंनथी एहवा महारामातापिता आज्ञाआपेनही तेमाटे कोइकरीतें पणमहारा मातापिता प्रतिबोधपामे तेवारेंमहारुंमनोवांछितसिद्धथाय.

एमसांजली रत्नचूडबोल्योजे हेमित्र जोहमणाकिहांकथीपण बुद्धनामे आचार्यछे तेजोकदाच इहांआवेतो ताहरामातापितादिकने प्रतिबोधकरीसमजावे तेवारें विम लें पुछ्युंजे हेमित्र तेआचार्यने तमेदीगछे रत्नचूडेकह्युंजे गइअष्टमीनादिवसें अने कमुनीनावृंदे परवस्त्रोथको इहांज आप्रासादनेविषे जिनराजनेवांदवा आव्योहतो तेवारेंमें एप्रासादनाद्वारे मेघनीपरें गंजीरस्वरें नव्यजीवोने धर्मदेशनादेतोथको दीगे हतो पणशरीर श्याम निष्टरूप देखतोनयंकर त्रिखुणीओमस्तक चूलेलानेत्रो ऊंची नाशिका कोटलांबी पेटलांबो इत्यादिक महाकुरूपदेखीमें विचार्युंजे जुओगुरुना व चनतुंअतिशयपणुं माटे एमने एहवोकुरूपपणुंनजोइयें एमविचारीहुं देरासरमांज थी जगवंतनीपूजा विधिसहितआठप्रकारेकरीने शक्रस्तव मंगलादिकें वाजीत्रना नि र्घोषादिककर्यां पछेप्रासादथी निकल्यो एटलेते आचार्यने सुवर्णकमलें बेगासाक्षात् कामदेवसमान रूपवंत लक्षणोपेत अंगोपांगें विराजितदेखीने में विचार्युंजेएआचा र्यक्षणेकवारमां आवाजातिवंत सोनानीकांतिसरिखा केमथया वलीविचार्युंजे महा तपस्वी मुनिराजोतो अनेकलब्धिवंत एहवाजहोय.

एरीतेंपूर्वेमहारा चंदनधर्माचार्येपण मनेएमजकह्युंहतुं जे तपस्वी तो परमाणुजे हवो सूक्ष्मशरीरकरे तेमज मेरुपर्वतथीमहोटुंशरीरपणकरे वज्रथकीपणअत्यंतनारी थाय जूमिनेविषेरह्याथकापण अंगुलनेअग्रजागेकरी मेरुनेस्पर्शे जेवीरीतें जूमिनेवि षेचाले तेवीजरीतें अग्निज्वालानें विषेपणचाले वलीतेहनाआश्रितजीवोनें बाधापी डाउपजेनही तेमजचक्रवर्त्ति अनेंइंद्रादिकनी ऋद्धिनेविकूर्वे इंद्रअनें उपइंद्रादिकोनें पणवशवर्त्तिकरे एमअनेकलब्धियेंशोजित विचित्रप्रकारना रूपवंतहोय जुवनपूराइ जाय एटलोमहोटोपण शरीरकरे इंद्रसरिखानेपण किंकरगणे कठिणशिलामध्ये प्र वेशकरे एकपटना हजारपटकरे स्पर्शेंद्रियेंकरी सर्वरोगहरे अग्नि तथा जलादिकउ परेंचाले इत्यादिक सर्वप्रकार तपस्वीनेसाध्यजहोय तोसाधुते महोटाजजाणवा एह वुंजाणीने में सूरितथा सर्वयतिप्रतेंप्रत्येकेवांद्या यतियेंपण स्वर्गादिकसुखनोदायक धर्मलाभरूप आशीरवाददीधो तेवारपछि वैरागनीउपजावनारी धर्मदेशनाआपी ते थीहुं माहराचित्तमां घणोआनंदितथयो अनेजैनमतनेविषे घणोदृढथयो पछेकोइक मुनीनें आचार्यनोनामादिकपुछ्युं तेवारेंतेणेकह्युंजे एबुद्धनामाआचार्य सर्वलब्धीना

पात्रने एहवुंसांजली साक्षात्पणे तपनोप्रजावदेखीने हुंजैनमतनेविषे निवडजक्तिवंत थयो फरीसाधुओने नमस्कारकरीनेघरेआव्यो.

हवेतेसूरियेंपण मुनीनासमूहें परवस्याथकां बीजेस्थानकें विहारकस्यो माटेहे विमलकुमर जोतेआचार्यमलेतो अर्थसिद्धियाय एमसांजली विमलें रत्नचूडनेकहुं जे हेजाइते आचार्यकदाच तमोनेमलेतो तेहनेमहारेअर्थे एहवीयाचनाकरवी के तेगुरुइहांपधारे एहवावचनसांजली रत्नचूडेंमाहोमाहें स्नेहधर्मदृढकरवानेअर्थे वा तोनाआज्ञापेंकरी रत्नचूडतेविमलनोजाइ अने चूतमंजरीते विमलनीबहेन पणोक रीने तेबंदुखीनजार पोतानानगरेंचाल्या तेहनेघणीकजूमिसुधीवोलावीने दर्शनआप वाने कोइवारेंमनेसंजालजो इत्यादिक आंसुजरेनेत्र घणाप्रीतिना वचनवोली चूतमंजरीनेपण प्रेमनावचनेवोलावी विमलतेहांथीपाठोवल्यो अने रत्नचूडतथा चूतमंजरीपण घणास्नेहनावचन तथा धर्मनीस्थिरतापणानावचनकही घणाकष्टें तेहांथीचाल्या,

हवे संसारीजीवकहेछे जे हेअगृहीतसंकेता एविमलेंतथा रत्नचूडें अनेककथाउ महारासनिपेंकहि पणमंतो तेविमलनेजे रत्नचूडें चिंतामणीरत्नआप्युंहतुं तेहरणक रवानी चिंतायें करीआकुलथको कांइपणसांजल्युंनही हवेतिहांथीघरजणी चाल्या एट लेमार्गमां मेंकहुंजे हेमित्र एरत्ननेइहांजमूकीयें तेवारेंविमलतो सरलस्वजाविमाटेतेणें कहुंजेघणुंसारुं पछे तिहांजूमिखोदीनेमें रत्न एकत्रस्थानकेराखीने अमेघेरगया पणते रत्नहरवाना उपायचिंतववामाटे रात्रनीएकक्षणवारपण मनें निद्राआवीनही प्रजात समयेंमनें स्तेयनामे कुमित्रेंप्रेस्योथको रत्नलेवानेअर्थे हुंवनमांगयो एटलामां विमल कुमरपण जिननेवांदवानेअर्थे तेवनमांजवानिमित्तेंमाहरे घरे मनेतेडवाआव्यो एटले कोइकेंकहुंजे एतो उद्यानेगयोछे तेसांजली विमलपण उद्यानेआवचामहारेपछवाडे चाल्यो जेस्थानकेंरत्नराख्योहतो तेस्थानकेंजयीहुंवेगो एटलामांदूरथीविमलने आवतो देखी हुंआकुलव्याकुलथयो थकोमेंतेरत्नलेइने रत्ननेस्थानके एकपत्थरनोकटकोमूकी र त्नने विमलनीवीकथी बीजीजूमिनेविषेमूक्यो एटलामां विमलें आवी पुछ्युंजे हेजाइतुंइहां केमआव्योहतो तथाआमविलखानीपरें केमदेखायछे तेवारेंमेंकहुंजे हेजाइमें कोइनासुखथी एवुंसांजल्युंजे विमलआहिं आव्योछे माटेहुंतारापछवाडे इ हांआव्यो अनेतादृशोमुख जोवाविना हुंविलखोदेखाउंछुं तेसांजलीविमल सचिंतथ यो मनेकहुंजेजलुं हवेचालोजिनमंदिरे जइयें.

एमकहीदेहरेआव्या विमलतो प्रासादमांगयो पाछलथीनें विचर्युंजे रखेविमलें

रत्नलेतां मनेदीगोहोशे तोहवेहुंइहांथी नासीजाउं एमविचारी. जेस्थानकें रत्नराख्युं हतुं तिहांआवीने व्याकुलपणायकी रत्ननीभ्रांतियें पथ्थरनोकटकोलेइ वनमांनासी गयो. तेएहवोछतावलो चाल्योजे त्रणदीवसमां अठयावीसयोजन नूमिओलंघीगयो पछेतिहांकांइकविसामोखाइने गांठछोडीजोयुंतो रत्ननेबदले पथ्थरोदेखीमूर्छाआवी फरीसावधानथयी वलीरत्नलेवाने तेहांथीपाछोफर्यो.

हवेपछवाडेविमलें प्रासादथीबाहिरनिकली मनेदीठोनही तेथीव्यग्रचित्तकरीने सर्वत्रजोयी गामगामे महारीशोधकरवाने माणसोदोडाव्या तेमाहेलो एकपुरुष माहरासन्मुखआव्यो तेदेखीहुंनयपाम्योथको नासवानुंमनकरुंछुं एटलामां तेणेआवीमनेकह्युंजे हेवामदेवताहरेविरहें विमलमहादुःखपामेछे माटेतुंवहेलोतिहांचाल तेसांनली मेंजाएयुंजे हजीमाहरोअपराध विमलकुमरें जाएयोनथी एहवुंधैर्यआव्युंपछे हुं हर्षितथयोथको तिहांजयी विमलनेमल्यो विमलमहारेकंठेवलगी रुदनकरी मनेअर्द्धआसने वेसाडी पुछयुंजे हेमित्रतुंकिहांगयोहतोतेवारें मेंतेहनेअनुकूलवेंकरीनेकपटथी एककल्पितवातकही जेनाइतुंतो देराशरमांगयो एटलामां एकविद्यारियें मुजने हरणकरी आकाशमार्गे केटलाकयोजन उचाजयीने मारीसाथें नोगवांछवानीयाचनाकरीपण ताहरासाथे वियोगथाय माटेमेंतेहलुंवचन अंगीकारकर्खोनही एटलामांवली एकवीजीविद्याधरियेंदीठो तेपणनोगवांछनायें तिहांआवीनेमाहारा हाथनेवलगी पछेतेवेहुविद्याधरियें परस्पर युद्धकरवामांडयुं एटलामांहुं तेमनाहाथथी स्खलितथयोथको पृथ्वीउपरपडयो मनेघणुंवाग्युं तेथीजर्जरितअंग थयो तोहे पण ताहराप्रेमना परवशपणाथकी कोइकरीतें हलवेहलवेचालतोहतो एटलामां आ पुरुषमल्यो तेवारेंसर्ववात एहनामुखयी जाणीने हुंछतावलो आव्यो इत्यादिकमेंजे कपटनावें वातकहीते सर्वविमलें खरीजाणी केमकेते सरलस्वनावीहतो माटे.

इत्यादिकमें खोटावृत्तांतकह्या तेथीनिश्चेंमहारा शरीरमां महोटीवेदनाथयी ते वेदनानावशयकी चक्षुफूटवालागीनूमिनेविषेपडयो नांनवजित थयो एहवोमनेजोयीने महारेदुःखेपीमाणोथको विमलकुमरें हाहारवकर्खो धवलराजाप्रमुख सर्वएकगययां मंत्रतंत्रादि हजारोउपायकर्यापण तेसर्व निःफलथयां कांइपण वेदना उपशमीनही तेवामां विमलने रत्नसांनल्योआव्युं केमकेचिंतामणी रत्नछे माटेतेहनाजलेकरी प्रक्षालनकरवायी एवेदनाजसे एमविचारी तेरत्नलेवानेअर्थे जिहांरत्न दाटयुंहतुं तिहांजयीजोयुं पणरत्नदीठुंनही तेवारें विमलने चिंताथयीजे रत्नतोकोइकहरणकरीगयुं एमनिश्चेंकरीहाइतिखेदे तोहवेएमहारोमित्र वामदेव केमजीवसे

एमचिंतायेंपीडयोथको पाछोफरीजेवारें महारीपाशें आव्यो तेवामां महाविकराल रूपें वनदेवता प्रगटथयी सर्वलोकने सांजलतांकह्युंजे अहो ए वामदेव विश्वासघातक छे केमके प्रथमरत्नहर्युं वलीजुठुंबोलीने विमलनी सायें ठगाइकरीछे माटेएकर्मचंमा लनी में आवी मागीदिशाकीधीछे हजीहुंएनेघणी विटंबनाओकरीस एहवुंसांज लीने कृपायें जिन्नोचित्त एहवोविमलकुमरने मिष्टवचनेकरी वनदेवताने प्रसादवंत करी मनेरोगें वर्जित कराव्यो तेवारपछेसर्व लोकोयें एहवो महारोमागोचरित्रदेखीनेम नेवणो धिःकारकर्यो वली स्वजन कुटुंबादिकनावर्गेमने घेरथी बाहेरकाढीमूक्यो तो पणविमलकुमर माहरोस्वजन माटे आश्वासनादयी कांइपणमहारीसायें मलीनमन राख्युंनही उलटो एमकह्युंजेहेमित्र लोकतोबोकनीपरें उघाडेमुखेहोय माटेरखेतुं लो कनाबोलवाउपर अशातापामतोहोय.

हवेएकदिवसें फरीहुंअनेविमल वनेजाए क्रीडाकरवानाउद्याने श्रीकृषजदेवना प्रासादेगयाहता तेहांविमलकुमरें जगवंतने आगलें विविधन्नावेंसंयुक्त नवाकाव्य नाप्रबंधेकरी अनेकप्रकारनी स्तुतिकरवामांडी एटलामां रत्नचूड तेपोतानीस्त्री चूत मंजरीसायें तेहांआव्यो तेपण उत्कृष्टजक्तिसमोहेकरीने विमलनीस्तुतिसांजली महो टोआनंदपाम्यो थको पोतेपण जगवंतनीस्तुतिकरीरह्या पछे बेहुधर्ममित्र बाहेरनामं मपमांआवी आनंदन्नरेंलोचने आलिंगनदेइ एकस्थानकेंबेगा परस्परकुशलना स माचारपूछ्या.

रत्नचूडेकह्युंजे हेजाइविमल तुंतोमहारा हृदयमांजछे क्षणेकविसर्योनथी तोहे पणकार्यनाव्यग्रचित्तपणे आजलगीतने मलवाआव्योनही तथा बुद्धसूरिने तें तेमा व्योहतो तेहनेपणतेमीआव्योनही केमके हुंताहरीपासेथी निकल्यो तेजदिवसें वै ताढयपर्वतेंगयो मातापिता हर्षपाम्या हवेतेजदिवसनी पाछलीरात्रें रोहणीप्रमुख सोलविद्यादेवीप्रगटथयीने मनेआवीकह्युंजे हेवत्स ताहरेपुण्योदयेंकरी अमेंप्रसन्नथ याछुं अनेतुं विद्याधरनोचक्रवर्त्तिथाइश तेमाटेआजथीअमेसर्व ताहराशरीरमां प्रवेश करसुं अनेप्रन्नातेसर्वविद्याधरपण ताहरीआज्ञामानवा आवशे तेवारेंमेंविचार्युंजे एवि द्यादेवीओ तथाचक्रवर्त्तिनीठकुराइ तेसर्वपुण्यानुबंधी पुण्यनुंफलछे पणएपुण्यानुबंधी पुण्यते वीतरागनेखेखे सुवर्णशृंखलासमानछे अनेएरीतेंतो महारेविमलकुमरनीसायें दीक्षापणलेवायनही एमविचार्युंछुं.

एटलामांसर्वविद्यायें महाराशरीरमां प्रवेशकर्यो अनेसूर्योदय थये सर्वविद्याधरेंम होटामहोत्सवेंसहित मनेराज्याभिषेककर्यो तेदिवसथीमाहरीआज्ञा सर्वविद्याधरेंमस्त

केथरी सर्वश्रानंदितथया केटलाकदिवसतो विविधप्रकारना राजकार्यकरवेकरी व्यग्र चित्तथकागया पठेएकदिवसेंमने स्मरणथयुंके जुओमाहरोप्रमादपणुंजेविमलनुंकह्यो कार्यविसारीने राजनीपीमारूपकादवमां मग्नथको निरंतररहुंछुं पत्नेमेंपणएतेकाणें त पासकरी बुद्धआचार्यने शोधीने हेविमल में तमारादीक्षाना अभिलापनी याचनाक री अनेकुटुंबने समजाववानीपण वातकही तेवारेंबुद्धसूरियें मनेकह्युंजेयणुंसारुं श्र मेप्रस्तावें तिहांवर्द्धमाननगरेंजासुं पणविमलपासें डुःखीजननी खोजकरावजो हुंतो एवेजवेशें श्रावीस एहिजविमलनाकुटुंबने प्रतिबोधवानो उपायथासे तेसांजलीहुं तमारापासें श्राव्योछुं एमकहीने रत्नचूमेकोइक संकेतनीवात विमलना कानमांकही

एसर्ववातसांजलीने विमलकुमरहर्षवंतथको रत्नचूड तथाचूतमंजरीराणीप्रमुख ने पोतानानगरमां तेमीश्राव्यो तेमनीजलीरीतें जोजन वस्त्र श्रानूपणादिकें परो णागतकरी विविधप्रकारनी धर्मचरचायेंकरी सुखश्रनुजवतां विमलनास्नेहनेवशथ का पांचदिवसलगीनतारतेहांरह्या तेवारपठे रत्नचूड विमलनीरजालेइ पोताने नगरें पहोतो श्रनेविमलकुमरतो हलुकर्मिमाटे कर्मजालने श्रवगणी तेदिवसथीविशेषेंकरी संसारने श्रसारपणेजावतोथको दीक्षालेवानेघणो रागीथकोरह्योठे हवेएकदा धवलरा जायें तथाकमलसुंदरीयें विचार्युंजे श्रापणोपुत्रविमलकुमर नवो यौवनपाम्यो ठे महाशक्तिवंतठे तथापि साधुनीपरें इंडियनेसंवरीराख्योठे कांइपणविषयसुखने वांठतुनथी जोग्यतथा राज्यादिकने वांठतोनथी तोश्रापणेहवे विमलनेसमजावी रा ज्यदेइ विषयादिकसुख जोगवावियें.

एमविचारी विमलनेतेमी मातापितायेंकह्युंजे हेवत्स तुंश्रमाराप्राणने श्रालंबन करवामां लाकमीसमान कुलनेविषेधोरी श्रमने तुंघणामनोरथें घणाउपायेंकरो प्राप्तथयोठे तोतुजनेंजोगववायोग्य एसर्वराजनीसंपदा तेहथीतुं विरक्तनीपरेर हेठे तोश्रमनेशीरीतेसुखउपजे माटेहेकुमरतमे नवयौवनराजकन्यापरणो तेहनी साथेंमनोवांठितजोगनोगवो शब्दादिकपंचविषयने ग्रहणकरी श्राराज्यलक्ष्मीनो गवी श्रमारामनोरथ पूरणकरो इत्यादिक मातापिताना वचन सांजली विम लबोल्योजे हेपूज्यजी जगतनेविषे सुखतरसरूपडुःखेंपीड्या स्वजनकुटुंबनोवियो गइत्यादिक शेकडागमे डुःखेंपीडित पोतानादेशना लोक ठतेथके जेराजा राज्यजोगवे तेहनेनिःकेवल पेटजराकहियें पण राजानकहियें तोधिःकारपडो तेराजाना सुखने तेमाटेहुंतो हमणा मित्रादिकें परवस्योथको नगरनाउद्यानमांजइ रहुंछुं पण तमे वेकाणे वेकाणे मनुष्यमोकली डुःखीजोकोने तेमावो तेसर्वना डुःखनोद्ध

य करी पठेतमेजे आदेशआपसोतेहुं कबूलकरीस एह्वाविमलना वचनसांजली राजातथा कनकसुंदरी हर्षपाम्या अने पोतेनानाप्रकारना वृक्षनासमूह तथावेल तेणोरवाव्य इत्यादिकरमणिक वननीजूमिनेविषे तंबुआपीने विमलकुमरनीसंघाते परिवारसहित सनापूरीने वाजित्रनाटकनेविषे तत्परथकारह्या गामगाम मनुष्यमो कलीनेकह्युंके जेजेदुःखीलोकदेखो तेहनेतेडीलावो पठेसेवकलोको गामगामजइ जि हांजिहांदुःखीलोकनेदेखे तेहांतेहांथीतेडीआवे हवेएक अटवियें एकमनुष्य उघाडे पगें अत्यंततापपमते क्षुधायें तृषायें क्षीणथयेलोश्यामवर्णे कोढी कंपायमानशरीर गलतेलोचने जरायेंकरीजाजरुंठेअंग नाशिकामेलेंकरीसहित वेसीगयीठे हाथपग स डीगयलाठे मस्तकेंलोचकस्योठे समस्तप्रकारें सडीगयेलाजे लुगडानाकटका तेणे करी शरीरढांक्युंठे एककांबली एकदंम वेतुंबडा एकउननीपेंठीनोरजोहरण तेहाथेंध युंठे ग्रीष्मऋतुनामध्यानकालनो सूर्यतेनातापेंकरी तप्युंठेमस्तकजेहनुं लांबीठेएक साथलजेहनी नवो दवदग्ध काष्टतेहनाखीलासरिखीगर्दनठेजेहनी परसेवोअनेमेलें करीमलीनठे शरीरजेहनुं एह्वोपुरुष रखडतोथको देखीने राज्यपुरुषेंविचार्युंजे आपुरुषमहादुःखीठे माटेएने राजापासेतेडीजइयें एह्वुंविचारीने तेपुरुषपासेज यीपुछ्युंजे हेमनुष्य आउनाजानेतावडे आवावेशें उघाडेपगेंचालवानुंतुजनेसुंकारणठे

तेवारेंते मनुष्यबोल्योजे महारेसिरआवकर्मरूप लेणदारठे तेहनाथीछुटवामाटे हुंमाह्रागुरुनी आज्ञायें एरीतेंफिरुंछुं तेमाह्रागुरुनापसायथकी लेणामांथीछूटीस ए मकहीफरी चालवामांम्युं तेवातसांजली राजपुरुषेतेहने दुःखीजाणी हाथपकड्यो तेवारेंतेणेकह्युं माह्रोवृथाकालक्षेपथायठे तथामह्राकार्यनीहाणीथशे एमकहीफ रीचालवामांम्युं तेवारेंबलात्कारेंराजानासेवकोयें तेहनेराजानीसनामांआण्यो धवल राजा तथा विमलाराणीपासें तेडीआव्या एकुरूपवानहतो कुष्टरोगवंतहतो माटेआ मोपडदोबांधीने तेपुरुषनीसर्ववात राजानाचाकरेंकहीसंजलावी एटलामां विमलकुम रेंपडदो उचोकरीजोयो तेपुरुषनेदेखी मनमांविचार्युंजे मनेरत्नचूडेएकांते कह्युंहतुंजे आवेवेशें बुद्धनामाआचार्यआवसे अनेतुंदुःखीजननो शोधकरावजे तेमाटे माह्रा धारवाप्रमाणे एबुद्धआचार्यजठे एमजाणी विमलहर्षपाम्योथको विचारवालाग्यो जे अहोमहापुरुषोनुं कृपालुचित्तवंतपणुं कारणविनाउपकारनुंकरवापणुं इमविस्म यकरीसहित विकस्वरमनेंकरी तेपुरुषने नमस्कारकर्यो पुलकपणमनेंकरी धर्मलाजरूप आशीरवाददीधो एरीतेंबहुजणानो नमस्कार तथा धर्मलाजथयो तेकोइयेंजाण्योन

ही.पणविमलेंतोविचार्युंजे आमहाक्रियपात्रसूरियें जूओमने संसारसमुद्रथी उद्धा
रकरवामाटे कहेवोप्रपंचकर्योछे.

हवेवलीतेपुरुपे एमहावीहामणो ग्रीष्मऋतुनातापमां राजगृहजेहवुं शीतलग्रह
मूकीने चालवामांड्युं एटलेतेपुरुपने केटलाकलोक मूर्खकही हसवालागा केटलाक
नंदवालागा केटलाककोढीइत्यादिकवचने गालोदेवालागा इत्यादिकलोकोनो बोलवुं
सांभली.तेपुरुपें उगतासूर्यनीपरें रातालोचनकरी तपाव्यासोनानीकांतिसरिखुं शरीर
वंतथयो लक्ष्योधीथीजेम लोकभयपामिजाय तेहवो सर्वसभानेबीकनोकरनार थ
यीने भृकुटीचढावी बीहामणोमुखकरी सिंहनादकरी क्रोधेकरीसहितपुरुपनीपरें पो
तानोआत्मालोकोनेदेखाडीने महोटेस्वरेंकरीकह्युंजे अरेपापिओ अरेअधमपुरुपो अ
रेदुष्टात्माओ तमाराथीमने कुरूपवानगणोछो पणहुंतो एमजाणुंछुंजे तमेमाहराथी
रोगीकुरूपवंत कोढीआ दुखमरादलिद्रिछो समस्तदुःखेकरी दुःखीतछोतोपणसुंमारीम
शकरीकरीनेतमाराथकीमनेअधिकदोपवंतकहोछो इत्यादिकवचनेसर्वलोकनेनिःभ्रछ्या

एहवे क्रोधेकरीविकराल लोचनवंत स्वरूपदेखीनेराजायें विमलनेकह्युंजे देव
त्सएकोइकगुप्तवेशें महामुनीश्वरदेखायछे तोकदाचित्तेजुलेस्यायेंकरी समस्तदेशमां
हाहाकारशब्दकरावे महाटेपहेलाज आपणेएहने नमस्कारादिकेंकरी मनाविये ते
सांभली विमलेंपणहाकही एटलेराजाप्रमुख सर्वलोकें उठीने तेपुरुपने बेहाथजोडी
परणामकर्यो अनेकहेवालागाजे हेस्वामिअमेअज्ञानीछैयें तमेमहोटाआत्मानाध
णीछो तेमाटे अमाराउपरप्रसन्नथयो अमारोअपराधक्षमाकरीने तमारोमूलरूपदे
खाडो अमनेअनुग्रहकरो इत्यादिभक्तिनावचनेकरी क्रोधनेसमावी आंखमीचीउघा
डे एटलेवारमांराजाप्रमुखेंजोयुं तोमहारूपवंत तेजेंकरीसूर्यसमान सुवर्णकमलेबे
ठो देदीप्यमान सर्वांगसुंदर एहवोमहामुनीश्वरदीठो तेवारेंराजाप्रमुखसर्व हर्षवंतथ
का तेमहाऋपीने नमस्कारकरीने पुछ्युंजेहेभगवान पूर्वेतमारापोताना अंगमांकुरू
पपणुं कोढीआपणुं इत्यादिकदोपहतां ते सर्वे अमाराविपेज आरोपण कर्या अने
तेतो प्रत्यक्षपणे अमारामांदेखातानथीजे थकीतमारुंबोलवुं सत्यथातुंनथी अनेतमे
तो सत्यबोलनारछो माटेअमारोसंशयनाशपमाडवोतमनेयोग्यछेतेवारेंआचार्यकहेछे

अहोभव्यपुरुपोतमोनेमेंजे कुरूपपणोआदे कर्युंतेहना कारण कहुंछुं तेमांभलो
सोनानीकांतीशरीरवोजो संसारीजीवहोय तोपण पापरूपकादवेकरी लीपाणोछे
माटे कालाशरीरवंतजकहीयें अने साधुजोइयामअंगवंतछे तोपणतेहना रूडापरि
णामछे माटे गोरवर्णेजकहियें.

संसारी पुरुषजो निरोगीहोय तोपण मिथ्यारूपमहाकोढरोगेकरी ग्रस्तछेमाटे कोढीआजजाणवा अनेसाधुजो बाह्यिरंगे गलित कुष्टीवंतहोय तोपणमिथ्यात्व रूपकोढना नाशपणाथकी निरोगीजजाणवा.

संसारीपुरुषजो नित्यप्रते मिष्टान्नवस्तुना भोजनकरनाराहोय तोपण विषयरूपमाग अनाजेकरी सदासर्वदा अतृप्तछे माटेतेनेभूखवंतजजाणवा अने साधुतो बाह्यदृष्टीयें भूखेकरीक्षीणछे तोपण समतारूप अमृतना आस्वादेकरी हर्षवंतथका निरंतर तृप्तिवंतजाणवा.

संसारीजीवो यौवन अवस्थायें मदोनमत्तथकापण पंडितवीर्यनो उल्लासपाम्या नथी तथातेला पुद्गल परावर्त्तरूप स्वभावरूप यौवनअवस्थाने अणपामताछे तथा ज्ञानादिक रत्नत्रयीउपजाववानेविषेविकलपणामाटे जरायें करीजर्जरायथेला शरीरवंतजाणवा अने साधुतो बाहेरअंगें जरायेंकरीजर्जरितछे तोपण आत्मस्वभावरूप यौवनअवस्थाने पाम्याछे माटेयौवनअवस्थावंतजजाणवा.

संसारीजीवना रुडानेत्रछेतोपण तत्वज्ञानजोवाने मीचेलीआंखोजेहवा जाणवा अनेसाधुजो गलितचक्षुवंतछे तोपण तत्वनादेखवावालाछे माटेरुडानेत्रवंतजाणवा

संसारीजीव घरमांभीरह्याछेतोपण दुःखेतरवायोग्य एहवीभवरूपअटवीमांथी अणनिवर्त्त्यांथकाछे माटे निरंतर परिभ्रमणकरवाना आचारवंतज जाणवा अनेसाधुतो नित्यहर्षवंतथका विहारनाकरनार देशोदेशना विचरनार तोपण अप्रमत्तनामानगरना आशयपणाथकी निरंतरसुखआचारवंतज जाणवा.

एमसर्वभीजापण चारित्रादिकनाविशेष पणाथकी रुडीरीते विशेषेकरिभावितछे मनजेहनो माटेसाधुओनेज उत्तमउत्तमपदवीसंभवे पणसंसारीजीवोने संभवेनही केमके लोकोत्तरस्वस्वभावरूप लक्ष्मीनीठकुराइ तेरूपजेसुख तेनेविषेहर्षवंतपणो तेसाधुनेविषेजसंभवेछे.

इत्यादिक संसारनेसन्मुखपुरुषो तथासंसारथीपराङ्मुखपुरुषोनो स्वरूपते आचार्यनामुखथकी सांभळीने राजादिकसर्व हर्षवंतथका आचार्यप्रतेकहेवालागाजे हे स्वामितमे कुरूपपणादिकनास्वरूपनुं वणोरुडो निरुपणकर्युं पणहेस्वामिजो एहवोसंसारनुं स्वरूपअतिविहामणोछे तोपणलोकतेहना आसक्तभावने केमनथीमूकता

हवेआचार्यकहेछे केहेराजन् एकविशालनामा गामनेविषे विचित्रप्रकारना खाद्यादिकवस्तुतथा धन रत्ननीखाणेसंपूर्ण एहवुंमहादेवनुंमंदिरछे तेहांएकसारगुरुनामा मठनोस्वामीवसेछे तेनिरंतर तेजगामनारेहवासी धूताराओनीसाथेंमले अनेपो

तानाकुटुंबने उवेखीनाखे पुरुंखावानेपणआपेनही पठे अनुक्रमे तेधूर्त्तलोकोयें काम
णानाप्रयोगथी सारगुरुनेवशकरीलीधो पठेजेमधूतारालोकोकहे तेमजकरे एमकरतां
तेधूताराओये समस्तऋध्धियेंजरेलामळने पोतानेस्वाधीनकरी एकमहोटाधूर्त्तने तेहनो
नायककस्यो अनेसर्वधूर्त्तो पोतानीइछायें तेहनीलक्ष्मीने जोगववालागा तेसारगुरुने म
रवमांपणपेसवाआपेनही एहवुंकौतुकजोयीने तेनगरना वसनारा व्यवहारीलोकोमली
ने सारगुरुने अनेकप्रकारनी शीखामणआपवालागा अनेकहेवालागाजे अरेतुंपो
तानाकुटुंबनेमूकी आधुताराओने सुंपुटकरेठे एहथीतुंहेरानथयीस एतोतारा सा
क्षात्‌छसमनठे तनेघणाप्रकारनी विटंबनाओकरसे इत्यादिक साहुकारलोकोयेंकह्युं
तोपणतेसारगुरु कामणेकरी बंधाणोथको तेथीव्यवहारीआना वचनतेणेमान्यानही
पठेतेसाहुकारोजेलाथयीने तेगुरुनागुणप्रमाणे तेहनुं बवरएहवुंनामथाप्युं.

हवेजेजेरीते तेधूर्त्तलोको बवरनेनचावे तेतेरीतेंकरीने एगुरुहर्षवंतथाय तेगाममां
चारपाडाठे तेमांपहेलापाडानेविपे जांगेलाघडानोठीकरो हाथमांआपीने बवरगुरुने
तेधूर्त्तोनिक्षामंगावे वलीतेपाडानालोको धूर्त्तसायेमिलताठे माटेकठणवचनेकरी
तर्जनाताडनादिकें तेबवरगुरुने विटंबनाकरे हाथमानुं ठीकरुंजांगीआपे.

एटलेतेधूर्त्तोफरी एकसरावलो हाथमांआपी तेबवरगुरुने बीजेपाडे निक्षामांग
वामोकले तेहांनालोकपण तेहनुंसरावलुंजांगी संतापप्रमुखकरी काढीमूके.

वलीत्रीजापाडेमोकलतां त्रांबानोजाजन हाथमांआपे तेहांकांइक निरसअन्ननी
जिक्षापामे तेटलामां तेहांनालोक तेहनी निक्षालुंटीलेइ पोतेखाइजाय अने ताम्र
जाजनपण जांगीआपे.

एटलेवलीरूपानुं जाजनआपी चोयापाडामां निक्षामांगवामोकले तेहांकांइक
वधारेनिक्षापामे पणतेहांतेत्रीज जाजनजांगवा प्रमुखनीविटंबनापामे एरीतें धूर्त
लोकोते बवरगुरुने घणाप्रकारें नाटककरावेठे स्थानकें स्थानकें निखमंगावे पोतानाम
रवमांपोते पेशीपणशकेनही पोतानाकुटुंबने उवेखीमूके अनेतेधूर्तो एनीलक्ष्मीखाय लो
कसर्व एनीहांसीकरे पणबवरगुरुकामणे वशकस्योथको धूर्त्तोसायेज मित्राइकरे अ
नेतेधूर्त्तोनीकरेली विटंबनानेपण सुखजाणी सहनकरे.

तेमहेराजन् इहांपण एजउपनयठेजे संसाररूपगाम तेमांआत्मस्वरूप ज्ञानादिकर
[illegible]

तेहयोग्यनाविकगुणरूप पोतानाकुटुंबने उवेखीनाखेठे अनेमोहनीयते धूर्त्त.ना

स्वामि तेणेंआत्मस्वनावरूप शिवमंदिरने पोतानास्वाधीनकरीलीधुंछे तेहांसद्गुरुरूप व्यवहारियानो प्रतिबोधश्रणपामतोथको जेश्रात्मातेहिज वरगुरुजाणवो हवेते कर्मरूपधूर्त्तो नरक तीर्यंच मनुष्य अनेदेवतानाश्रायुरूप चारजाजनश्रापीने चारगति रूप चारपाडानेविपे विपयादिकनो निद्राकरावेछे तेहथी हजारोगमेपीडाने अनुन्न वतांथको उद्वेगपामेछे तोपणजीवनेसारुंलागेछे श्रनेरागादिक चोर नानाप्रकारनी विटंबनायेंजीवनेफेरवेछे माटेहेराजन् सर्वसंसारीजीव मोहना उन्मादादिक कामणे करी परवशथका संसारनादुःखने जाणतायकापण श्रजाणनीपरेंजटकेछे जोजैनगु रुरूप व्यवहारिश्रो श्रासंसारीजीवने संगतमूक्यानो तथा ज्ञानादिक कुटुंब पोषण करवानो धर्मोपदेशश्रापेछे तथापिमोहोन्मादरूप कामणेग्रथीलथयोथको तेविमंब नाउनेज श्टकरीमानेछे अनेते हितोपदेशनमाने माटेज्ञानीथको श्रज्ञानीकहेवायछे.

तेमांकोइक लघुकर्मीजीवहोयते गुरुनोउपदेश रुमीरीतेंजाणी मोहादिकधूर्त्तोनो तिरस्कारकरी स्वनाविक कुटुंबनो पोषणकरे तेपोतानी श्रात्मसंपदारूपलक्ष्मीनी समृद्धियें सहितसुखीथाय इत्यादिकदेशनासांजलीने वलीराजाकहेछे हेनगवन् तमारा जेवाजिहां बोधनाश्रापनारहोय तिहांनव्यजीव बोधपामेज एमांकांइसंशयनथी पण हेगुरुजीतुमेकोनाउपदेशथी शाहेतुथी व्रतश्रादर्युंतेसर्ववृत्तांतकहीनेश्रमने पवित्रकरो

हवेश्राचार्यकहेछेजे हेराजन् तुमेंसांजलो पृथ्वीतलनामा नगरनेविपें शुन्नविपाक नामेराजा तेहनी निजसाधुतानामेस्त्री तेहनोबुद्धनामापुत्र तेवणोगुणपात्रछे हवे शुन्नविपाकनोजाइ अशुन्नविपाकनामेराजा तेजगतनेवणोनयंकरछे तेहनोपुत्र समस्त दोपनुंघर एहवोमंदनामेछे हवेते बुद्ध अने मंदवेहु पिताइनाइते क्रीडाविनोदकरत्तां अनुक्रमें वधतावधतामहोटाथया एकदिवसें बुद्धतो निर्मलमानसनामा नगरनोस्वा मी शुनानिप्राय तेहनीपुत्री धिपणानामे तेहने बुद्धनीतायेंपरणावी तेहनासाथें सुखनोगवतायका विचारनामापुत्रथयो. हवेएकदिवसें बुद्धश्रने मंदवेनाइ पोताना क्षेत्रनेविपे ललाटके० कपालनामापर्वतेंगया तेहांवेविवरेंसहित नाशिकानामे गुफा प्रतेदेखीने तेमांनजरकरवालागा एटलामां ते गुफामांथी निकलतिएक कन्यादीठी पछेते कन्यानोनामादिक पुठवालागातेवारें तेकन्याकहेछे.

हेउत्तमपुरुषो जेवारेंतमो असंव्यवहारनामा नगरथीनिकलीने एकेंद्रियनामा नगरें घणोकालरहीने विकलेंद्रियनामानगरना तेंद्रियनामापाडानेविपेंश्राव्या तेवा रेंकर्मपरिणामनामनाराजायें घ्राणनामाचाकर तमारासायेंनेजो चालनार तम नेसोंप्योहतो तेतमारोघणाकालनोमित्र श्रागुफामांरहेछे हुंतेहनीजुजंगतानामे दासी

वुं तेतमाराआदेशथकीज इहांरहुंछुं तेमाटेजुनो स्नेहसंभालीने मने तथातमारो मित्रनासिकाने आदरोः

एहवातेहना वचनसांभलीने हर्षवंतथयोथको मंदकुमरतो घ्राणअने भुजंगताने भलीआश्वासनाकरीने तेवेहुनीसाथें अतिस्नेहधरवालागो अनेवुध्धकुमरतो मध्यम भावेंकरी घ्राणनामामित्रने पालवालागो अनेभुजंगतानेतो अधमस्त्रीजाणीने माह रेएनीसाथे सोवतकरवायोग्यनथी एवुंविचारी तेहनोसंगतो सर्वथाकीधोजनही.

हवेमंदकुमरतो भुजंगतायें प्रेर्योथको कपुर केशर सुगंधिपुष्पादिक सुरभिद्रव्यें करी घ्राणेंद्रियने पोषणकरवालागो कांइपणमाठीगंधनी वस्तुदेखीने नाशिकानेआ मोवस्त्रआपे अने दुगछाकरे अनेवुध्धतो सुगंधिदुर्गंधिद्रव्यनेविषे समचितपणेवर्त्ते ए मकरताकेटलाकदिवस वितिक्रम्या.

हवेवुध्धकुमरनोपुत्र धिपणानाअंगथी जन्मेलो विचारनामेछे तेपूर्वेकौतुक जोवाने अर्थें समस्तदिशाओनेविषेगयोहतो तेकेटलेकदिवसें वाह्यतथा अंतरंगवगेरे नगरो जोयीने पाछोफरीआव्यो तेणेपोतानापिता वुध्धनेसमीपें घ्राणेंद्रियनेजोइने कहेवाला गोजे हेपिताजी आघ्राणतेदुष्टमित्रछे माटेतमारे एनीसाथें सोवतकरवीयोग्यनथी एघ्राणनीउत्पत्तिने रूडीरीतेंहुंजाणुंछुं केमकेहुंइहांथीनिकल्योपछे दिशोदिशेभमतोय को हुंभवचक्रनामानगरे पहोंतो तिहांजिहांसुधीहुंराजमार्गनेविषे रह्योहतो तिहांए कदी मनेदेखीने तत्कालपणे आनंदवंतथको आसुंभरेलानेत्रे मनेकहेवालागीजे.

अहोपुत्रहुं मार्गानुसारीतानामे तारीमाताधिपणानी प्रीतिवंतनानी वहेनछुं तो तुमने उत्तलखतोनथीसुं तुंतोमाहरोभाणेजछो माटेहेपुत्रतुं सुखेयीमहारापासेंरहेश अनेहुंतुजने नानाप्रकारना भवचक्रनांकौतुकप्रतेंदेखाडुं तेचरित्र तने जोवाचुकजछे केमकेतुं धिपणानोपुत्र माटेविविधप्रकारना देशोदेशना चरित्रजोवारूप चतुराइपणुं ताहरामांहोवोजजोइयें एहवुंसांभलीने हर्षवंतथको हुंतेहनीसमीपेंरह्यो.

पछेतेणेमने विविधप्रकारना आश्चर्यमय भवचक्रनामानगर संपूर्णदेखाड्युं तेहां थीविवेकनामा पर्वतउपरजवानेअर्थें अमेंचाल्या मार्गमां निवडप्रहारेकरीजाजरु थ येलुछे अंगजेहनुं केटलाकमनुष्यें खांधउपरउपाडथोछे वलीघणामनुष्यें विटयोय को एहवोएकसुभटनेदेखी मेंपुछ्युंजे हेमाताजी एकोणपुरुषछे तेवारें मार्गानुसारी ताबोलीजे हेपुत्र आपर्वतउपर चारित्रधर्मराजाछेतेहनो महोटोपुत्रजे यतिधर्मनामा कुमार तेहनोए संयमनामासुभटछे तेक्रीडाकरवानेअर्थें वाहेरनिकल्यो तेहने मो हराजाना सैन्यको जे मिथ्यात्वादिक तेणेहण्योछे माटेहवेपोतानाघरें लइजायछे ता

चालोआपणेपण तिहांजइ कौतुकजोइयें जेहवेचारित्रधर्मराजासुंकरेछे एमकहीने अमेबेहुजण तिहांगया तिहांविवेकपर्वतनाउपरेंरह्यो एहवो अप्रमत्तनामानगरअमे दीठो तिहांचित्तसमाधाननामें मंडपनेविषे चारित्रधर्मनामेंराजा बेठोहतोते परिवारें सहित मने मारीमातायें उलखाव्यो वलीसनाना सर्वलोकनोसमूह तेपणजूदाजूदा नामोलेइने मार्गानुसारितायें उलखाव्या.

तेवामां संयमसुनटपण तेहवीज अवस्थावंतथको आणीने चारित्रधर्मराजाने सुनटोयेदेखाडयो वलीमोहराजानी सैन्यनोआकराइपणुं तेसर्वचारित्रधर्मराजाने सुनटोयेकह्युं हवेतेसंयमसुनटनेराजा सनामांसंनालीनेजूएछे तेसमये घणाआयुध वंत संतोषनामे दयानामे क्षमानामे ब्रह्मचर्यनामे इत्यादिक सुनटउठीने संनिधबद्ध थयी हुंकारशब्दमूकताथका राजानेकहेवालागाजे हेदेव आपणासंयमसुनटनेमोहा दिकेंकदर्थनाकरीछेमाटे मोहराजाने सन्मुखलडवानेअर्थे अमोनेआदेशआपोतो अमे एकक्षणमात्रमां सर्वमोहराजाना सैन्यने क्षीणकरीनाखियें माटेइहांहुकमआपवाने विलंबकरवुंनही केमकेवैरीने शिक्षाआपशोनही तोतमारीअखंडआज्ञाशीरीतेप्रवर्त्तसे इत्यादिकपराक्रमना वचनसांनलीने राजायें सद्बोधनामे प्रधानने सन्मुखनजरकरी

पछेसद्बोध अने सम्यक्दर्शन एबेहुमाहोमांहेवातकरीने राजानेकहेछे जेहेस्वा मि प्रथमतोराजाना सातअंगकह्याछे १ राजा २ प्रधान ३ मित्र ४ नंमार ५ देश ६ गढ ७ लशकर एसातअंगराजानाकह्याछे तेमज एकवकुराइपणानीशक्ति वीजी उ त्साहपणानीशक्ति त्रीजी मंत्रपणानीशक्ति एत्रणशक्तिनोबलाबल चिंतवीने पछेते रा जानोलाये जीतवानीइछाकरियें साम दाम नेद दंम. एमांहेथी जेयोग्यहोयतेउपा यकरियें वली संधि वियह यान आसन द्वेधा आश्रय एरूपछगुणते राजानाअंग नूलछे तेमांथीजेगुणे वर्त्तवायोग्यहोय तेगुणेविचारीने वर्त्तवो.

एहवीनीतिनी स्थितिछेमाटे सहसाकारीजलडवुंते युक्तनथी तोएनीतायें संधी करवातारुं कोइकदूतने पहेलाएनीपाशेंमोकलियें एमसांनलीनेराजायें तेवातप्रमाण करी सत्यनामेदूतने मोहराजापाशेंमोकल्यो तेदूतचालतोथको अनुक्रमे सचित्तवृत्ति नामे अटवीनेविषे प्रमत्तनामानदीने किनारे मोहराजाना लशकरनोपडावछे तिहां चित्तव्याक्षेपनामामंमपनेविषे परखदासहित मोहराजाबेठोहतो तेहने पोतानास्वा मिनुं कहेलोकार्यप्रगटपणे दूतेंआवीनेकह्युं जे हेमोहराजा आचित्तवृत्तिनामे अटवी तेपहेलातमारीनथी तेमअमारीपणनथी एहनोस्वामितो नवजंतुजछे वलीआपणे कर्मपरिणामादिकसर्वे नवजंतुनालसेवकछैयें एवातसाचीछता तमेतेनवजंतुने कांइ

कहीनसत्वकरीने तेनुं राजग्रहणकर्युंछे तेपणग्रमे कांइकहेतानथी तेमछतातमें ठगीठगीने ग्रमारासुनटोने कदाग्रहकरावो तेयातयुक्तनथी इत्यादिक सत्यनामादूत नो बोलवुंसांनळीने मोहराजानीस्त्रीजे महामूढतानामे ते ग्रत्यंतक्रोधवंतथईने दूतनेकहेवालागीजे ग्ररेदूततुं ग्रधमपुरुषछो एहवुंग्रसमंजस सुंबोलेछे जेमोहराजादि कते नवजंतुनाकिंकर एवुंबोलतांकांइ एनेशरमग्रावतीनथी माटेएनेशिक्षाग्रापो.

इत्यादिक कठणवचन कहेवालागी तेसमयें सर्वमोहराजानासुनटो भृकुटीचडा वीने क्रोधेंकरी धमधमतायका सत्यनामादूतने हणवानेग्रर्थेंउठ्या तेवारें सत्यना मादूतनो शरीरजयेंकरीकंपायमान ययोयको कांइकरीतें तिहांथकीनाशीने तुरतचा रित्रधर्मराजा ग्रागळग्रावी कहेवालागोजे हेस्वामिमोहराजातो मदेकरीउन्मत्तय योछे माटेतमने तृणनीपरेंगणेछे पणतमारोकर्युंमानतोनथी इत्यादिकवृत्तांतसांन ळी चारित्रधर्मराजापण क्रोधायमानययोयको रणजंनावजावी सर्वपोतानोलशकर लेइ मोहराजासायें युद्धकरवानेग्रर्थें चाल्यो एटलामां मोहराजापण महोटालश करें परवरचोयको चारित्रधर्मराजाना सैन्यनेसन्मुखग्राव्यो हवेतेबेहुसैन्यनो चित्तवृ त्तिनामा ग्राटवीनेविषे माहोमांहे विविधप्रकारना शस्त्रेकरी महायुद्धयातेथकेदुष्टा भिप्रायादिक मोहराजानासुनटोयें शुनाभिप्रायादिक चारित्रधर्मराजाना सुनटोने प्र हारेंकरी शिथिलग्रंगवंतकरतायका समस्तसैन्यनुं निर्मथनकर्युं.

एमपोतानोलशकर नांगीगयुंदेखीने चारित्रधर्मराजा लशकरेंसहित ग्रोशरीने पाछो जैनपुरनगरमांग्राव्यो ग्रने मोहराजापण जीतवंतथको पोतानालशकरेंस हित तेचारित्रधर्मराजाने चोमेरविंटीरह्योछे एवीतेंरीमने तेमार्गानुसारीतायें सम ग्रपणे चारित्रधर्म ग्रनेमोहराजानालशकरनुं स्वरूपदेखाडयुं तेदेखीनेतिहांथी पा छावळी ग्रनुक्रमेइहांहुंग्राव्योछुं ग्रने मार्गानुसारीतापण महारेपळवाडेग्रावतेतोति हांएघ्राणेंद्रीते विषयाभिलाषनामा प्रधाननापांचेंद्रियरूप पांचपुत्रमांहेलोएकपुत्रछे एहवुंमने मार्गानुसारितायें ग्रोळखाव्योहतो माटेएतमनेवर्जवायोग्यछे.

एहवाविचारनामापुत्रना वचनथकी सर्वथाप्रकारें जिहांसुधीबुद्ध घ्राणेंद्रियना संगनो त्यागकरवाना उपायनेचिंतवेछे तिहांसुधीमार्गानुसारीतापण तिहांग्रावीप होती तेहनासुखथकीपण तेवीजरीतें घ्राणेंद्रियनी उत्पत्तिसांनळीने बुद्धग्रत्यंतप णे तेघ्राणेंद्रियनो त्यागकरवामां उद्यक्तथयो.

ग्रनेमंदकुमरतो भुजंगताने ग्रनुरक्तथयी जिहांतिहांसुगंधनो लोलपीयको नम तोफिरेछे एकदिवसें देवराजनीस्त्री लीलावतीतेमंदनीबहेनथाय तेहनेघरेगयो तिहां

लीलावतीनीशोकें लीलावतीनो पुत्रमारवानेअर्थें एकविषमिश्रितसुगंधिकवस्तुनापडि
काने घरनाबारणाना बारसाखउपरमूक्युंछे तिहांमंदकुमरें आवताज भुजंगताना प
रवशपणाथकी तेसुगंधनापुडीकाने सुंगवालागो तेहथीएहनेविषव्याप्यो तेणेकरी मं
दकुमर एकक्षणमात्रमांहे मरणपाम्यो एममंदनामरणनुंकारण घ्राणेंद्रिनासंगनो
मार्गविपाकदेखीने विरक्तथको बुद्धकुमरते पोतानीसाधुतानामेमाता अने शुभवि
पाकनामेपिता तथाधिपणानामेस्त्री वली विचारनामेपुत्र अनेमार्गानुसारितानामे
शाली तथाबीजापण समस्तकुटुंबनेसाथेलेइने रुडागुरुपासेथीदीक्षालेइ थोडाकाल
मां समस्तसिद्धांतनोपारंगामीथयो तेथीगुरुयेंमने आचार्यपदवीदीधी.

तेमाटेहेधवलराजा एमहारात्रतग्रहणनुंकारणकह्युं तेजहुंबुद्धनामाआचार्यछुं इ
त्यादिकदेशनासांभली वैराग्यअने संवेगादिक दृष्टीवंतथको धवलराजा पोताना वि
मलनामाकुमरने कहेवालागोजे आराध्यनोनार तमेग्रहणकरो अनेहुंसंसारथी मु
क्तथवानेअर्थें चारित्रनेग्रहणकरीश तेसांभली विमलकुमरबोल्योजे हेपिताजीजोत
मेमाहराउपर प्रेमनजरराखोछोतो धर्मनोविघ्नभूत तथा पापनुंकारणभूत एहवोजे
राज्य तेहनेग्रहणकरवानुं मनेकांइपण प्रयोजननथी राज्यआपवाथी पुत्रनोहितवां
छकपणुंथाय एहवोतमे विचारताहशो पण हुंतोआगलथीज चारित्रव्रत ग्रहणकर
वानी उत्कंठावंतछुं एहवुंसांभलीराजायें विमलकुमरनोभाइ कमलकुमारनेराजआ
पी नगरमां चैत्यनेविषे अठाइमहोत्सवकरीने राजाअने विमलकुमरें तथाबीजापण
घणानगरनालोकें बुद्धाचार्यपासेंथी दीक्षालीधी.

हवेसंसारीजीवकहेछेजे हेअगृहीतसंकेता तेबुद्धनामे आचार्यनोदेशनासांभलीने
हुंचोरीनावशथकी कांइपणप्रबोध पाम्योनही उलटोविमलकुमरने व्रतग्रहणकरवा
नेअवसरें मेंविचार्युंजे रखेविमलकुमरमने बलात्कारेकरी दीक्षाग्रहणकरावे एहवुंजा
णी तिहांथीनाशीगयो पछेविमलकुमरें सेवकोमोकली महारीशोधकरावी पण हुं
किहांयेंमल्योनही तेवारेंविमलकुमरें गुरुनेपुछयुंजे हेस्वामि तमारीदेशनासांभलीने
कोइसर्वविरति कोइदेशविरति कोइसम्यक्तिइत्यादिक सर्वलोकयथाशक्तियें प्रतिबोध
पाम्या धर्मविषेउद्यमकरताथया पणमहारोमित्रवामदेवतो कांइपणप्रतिबोधपाम्यो
नही वलीहमणाते शाकारणेकिहांकजतोरह्योदेखायछे एहवुंपुछेथके आचार्यज्ञान
प्रयुंजी कहेवालागाजे हेमहाभाग्य जिहांसुधी एनीपासें मायाअने चोरीनामे बेदुष्ट
मित्रोछे तेहांसुधीए धर्मनोबोध पामशेनही हमणापणएविमलमने बलात्कारें सं

यमग्रहणकरावसे-एहवीवीकथकी नाशीगयोछे फरीविमलकुमरेंपुछयुंजे एडुष्टमित्रो नो त्यागशीरीतेंथाय तेवारेंगुरुबोल्याजे.

निर्मलचित्तनामा नगरनोस्वामी श्रेष्टाभिप्राय नामेराजा तेहनी एकशुद्धता अ ने बीजी पापनीरुतानामे बेस्त्रीओछे वलीतेमनीअनुक्रमें एकसरलता बीजीअचोरी ता नामे बेकन्याओछे तेजेवारेंएपरणसे तेवारें मायाअने स्तेयनोसंगमूकशे एहवुंसां भली अयोग्यजाणी विमलकुमरेमने उवखीमूक्यो पछेधवलराजा अने विमलकु मरादिक गुरुनीसाथें अन्यस्थानकें विहारकरीगया तेपछेहुंनगरमांआव्यो पणमेंपूर्वेंप णीचोरीओकीधीहती तेअपराधोनेलीधे हुंनगरनालोकोथी उपद्रवपाम्योथको स्वामि वर्जितपणेकरी तेनगरमांरहेवाने असमर्थथको देशांतरेचाल्यो मार्गमां कोइनगरे स रलनामे वाणीआनीडुकानेबेठो तेणेमने मारानामादिको सर्वपुछया तेवारेंमेंपण मारो यथास्थितस्वरूपकही तेसरलने कपटेकरीहुंपगेलागो पछेतेवाणीआयें माह रापितानेनामे मनेकुलवंतजाणीने कह्युंजेहेपुत्रतमें इहांमहाराघरनेविषे सुखेरहो.

मेंपणकपटे करीने कह्युंजे आजतमारादेखवाथीमने माहरापितानुं दर्शनथयुं इत्यादिककपटनावचनेकरी वाणीआनेवशकर्युं पछीमनेघरेतेमीगयो तिहांपोतानी स्त्री बंधुमतिनेकहेवालागोजे हेस्त्रीआपणे पुत्ररहितछैयें माटेभाग्योदयथी आवामदे वपुत्रआव्युंछे एनेपुत्रनीपरें संभालजो एहवुंकहीने मनेराख्यो पछेते सेठनाघर मां समस्तजेकांइ धनादिक पदार्थहता ते सर्वमनेदेखाडया केटलाकदिवसपछे तेस रलसेठनीवेहेन बंधुलानामे तेनछीजागरणना ओछवनेअर्थें सेठनेतेडवावास्तेआवी तेवारेंसरलसेठें मनेकह्युंजे हेपुत्रतुंसावधानथयोने हाटमांशयनकरजे हुंजागरणकर वानेअर्थेंजाउंछुं तेवारेंमेंकह्युंहुंतो एकलोइहांबीहुंछुं माटेघेरजयी शयनकरीश एह वुंकहिनेहुंघेरगयो सरलसेठमित्रनेघरेगयो हवेमध्यरात्रगयेथके महारास्तेयमित्रे म नेप्रेरयोथको हलवेहलवेघरथकीउठीने हाटउपरगयो तिहांथीधनलेइ किहांकबीजा स्थानकनेविषे दाटीआवीने पाछोवल्यो तेसमयें पोरायतपुरुषेंमनेदीठो तेणेंमनेचो रदासखपकडयो तिहांवणाकलोकनो कोलाहलशब्दसांभलीने सरलसेठपण आव्यो तेणेमनेपुछयुंजे हेपुत्र एनुंसुंकारणछे तेवारेंमेंकह्युंजे हेपितातमाराविना घेरसुते थके मनेनिद्राआवीनही तेवारेंमेंविचार्युंजे हाटेजयीने पितानीसुवानीपथारीनेविषे जोकोइरीतेंनिद्राआवेतो घणुंसारुं एमचिंतवीने घेरथीनिकली इहांसुधीआव्यो ते वारेंहाटनाकमाडउघाडाज पड्याहता तेदेखीने विलखोथकोबेसीरह्यो.

पणदैवयोगे एपोरायतलोकेंआवीने चोरनीबुद्धीयें मनेजपकडयो एहवुंसांभलीने

तेतेसर्वेपोरायतनेवाला तेयीपोरायतपुरुष भ्रष्टथया तोपणपोरायतेंकह्युंजे धनएणे जलीधुंत्रे तेंजिहांदाटचुंतेतेपण अमेदीठुंजे अने अमेसारीपेठेजाणुंछुंजे एह्निजचोरछे माटेप्रजाते एनीचोरीप्रगटकरसुं एमकहीमहारेसन्मुखजोयी बराबरमने ओलखीने जतारह्या पछेमेंविचार्युंजे एपोरायततोमने प्रजातेंजरूरपकडसे माटेहमणाज ना सीजाउं एमविचारीरात्रेंतेदाटेलुंधनलेइनेनाठो.

दैवयोगेंरस्तामां तेह्निजपोरायततेणे मने देखीनेपकड्यो पछे खासडा अने ला कडी तथा मुष्टिप्रहारेंकरी जाजरोकरी निबमबंधनेबांधी चोरीनामुहालसहित राजा नेसन्मुखलेइगया राजायें शूलियेंचढावबानो आदेशआपवामांड्युं तेटलामां ति हां सरलसेठेंआवी राजानेकह्युंजे हेस्वामी एमहारोपुत्र इत्यादिक विनतीकरी मने मूकाव्युं पण राजायें सरलसेठनेकह्युंजे हेसरलएताहरोपुत्र दुष्टछे ताहरायरमां राख वायोग्यनथी माटेताहराकहेवाथीजीवतोमूकवुं पणअमेजएनेराखसुं एहवुंकही रा जायेंपोताना मंदिरमांदासकर्म करावबानेवास्ते मनेराख्युं.

एकदिवसेंमें कोइकविद्यानाबलेकरी राजानाभंडारमांथीधन चोर्युं पणनिश्चेंयकी स र्वेथाप्रकारें महारोपुण्योदय खालीथयीगयो पछेपगनाजोनारपुरुषें कोइकरीतें मनेपक डीघणीविटंबनाकरीने मनेमारीनाख्यो.

हवेतेजव वेदवायोग्य कर्मरूप गुटीका क्षयथयेथके भवितव्यतायें वलीबीजीगुटि काआपीने पापिष्टनिवासनामानगरें मनेमोकल्योतेहांघणोकालसुधीरही सेकडागमेदुः खो अनुभवीने वलीतेहांयीनिकलीने स्त्रीवेदपणे नपुंसकवेदपणेकिहांकवली पुरुषवे दपणे विविधप्रकारनी जातिकुलादिकनेविषे अनंताकालसुधी भवितव्यतायें मनेवणी रीतें विटंबीने एकदिवसेवली कांइकमहाराउपर प्रसन्नथयी कहेवालागीजे हेआर्य पुत्रतेंघणाकष्टो अनुभव्या माटेहमणा तहारोपुण्योदयनामा मित्रलुजनेआपुंछुंतेह्नेले इनेमनुष्यगतिनामानगरियेंतुंजा तेसांभलीहुंचाल्यो एरीतेहेभव्यजीवो एवामदेवनो सं बंधसांभली माया चोरीपरद्रहो तथाबुद्धसूरिनोसंबंधसांभली घ्राणेंद्रियनोजयकरो अने घ्राणेंद्रियनासंगयकी उपनोजेअनर्थ तेनेजाणीनेसुखनीवृद्धिनेअर्थे एमाया दिकोउपर आसक्तथावुंनही.

एमउपमितिभवप्रपंच कथाद्वारनेविषे माया चोरी अनेघ्राणें
द्रियादिकनो विपाक देखाडवारूप त्रीजोअधिकारसंपूर्णथयो.

हवेसंसारीजीव अगृहीतसंकेतानेकहेछे जे हवेमाहारे मनुष्यगतिनगरीनेविषे आववानोवातकहुंछुं तेसांजल आनंदपूरनामानगर तिहां अहंकारप्रबलना बंठकरूप अन्यराजारूपहाथीनीघटा तेहनामदने उन्मूलवामां केसरीसिंहसमान एहवो केसरी नामेराजाहतो तेहनी जयसुंदरीनामेराणी तेनगरमां धनोपार्जयनामेशेठवसेछे तेह नी धनमंजरीनामेस्त्रीनी कुक्षीनेविषे लेजववनेविषे जोगववायोग्य कर्मरूपगुटिकाआपी ने जवितव्यतायें मनेअवतराव्यो.

हवेजवितव्यतायें जेवारेंपुण्योदयनामे मित्रमनेदीधुं तेवारेंबीजोपण लोजसमुद्र रूपमित्र मनेदीधुंहतो तेवारपछे गर्नकालपुरोथये मनेपुण्योदय अने लोजसमुद्र ए बेमित्रेंकरीसहित प्रसव्यो महारापितायें महोटामहोत्सवसहित धनशेखर एहवुं माहरुंनामदीधुं हवेअनुक्रमें हुंमहोटोथयो तेवारेंसागरमित्रना अनुजावथकी मनमां एवाविचाररूप विकल्पउपजेके संसारनेविषे धनतेहिज सर्वथीअधिकवस्तुछे माटे कोइपणउपायकरी धननोसंचयकरवुं एहिजश्रेष्ठछे केमकेधनमलेजोगादिकसर्वमिले तथाधनरहितपुरुषते तृणधुलीसमानकहेवाय तेमाटे गमेतेउपायकरवुंपण धनउ पार्जवुं इत्यादिकचिंतवतोथको हुंसर्वकलाजण्यो व्यापारनाकाममां चतुरथयो.

एकदिवसें महारापितानेकह्युंजे हेपिताजी तमारीआज्ञाहोयतो हुंव्यापारकरवा नेअर्थें देशांतरजाउं तेसांजली महारोपिता दुःखितथको कहेवालागोजे हेपुत्रतुं ए कजअमाराप्राण अविलंबनने लाकमीजूतपुत्रलो अनेपरदेशजावुंतेतो सेकमागमेदो पनुं हेतुजूतछे माटेहुंतुजने परदेशजवानीआज्ञाआपुंनही वलीदेशांतरजयीनेधनक मावीआववानी कांइआपणने जरुरनथी केमकेआपणाघरमां घणोइव्यहालविद्य मानछे माटेस्वेछायें धनखरची दान जोगादिककरीने इहांजरहो.

फरीमेंपितानेकह्युंजे हेपिताजी धनउपार्ज्याविना खरचकरतांथकां समुद्रसरि खाजंमारहोय तोपणक्षयपामिजाय तोआपणीपाशेवली केटलुंकधनछे वलीजेपुरु ष युवानअवस्थापामिने पोतेकमावतोनथी अनेपोतानापितानीज उपार्जनकरेली लक्ष्मी जोगवेछे तेंप्राणीपोतानी मातानेजजोगवेछे एहवीलोकोक्तिछे तेमाटेमने प रदेशजवानी आज्ञाआपो तोहुंनानाप्रकारनाउपायें धनउपार्जनकरी थोडादिवस मांपाछो घरेआवीश इत्यादिकवचनेंकरी माताअनेपिताप्रतें समजावी कोइकरीतें तेहनीआज्ञालेइने दक्षणदिशिनासमुद्रनेविषे रह्याजेदेशोतेहांहुंगयो तेसमुद्रनाकि नारे जयपूरनामानगरनेसमीपेंगयेथके हुंविचारकरवालागोजे हवेवाहणउपरचडी रत्नदीपेंजाउं अथवा चंडिकादिकदेवीओने रुधिरादिकना वलीदाने प्रसन्नकरी ध

ननीयाचनाकरुं अथवा कोइकपराक्रमें करी कोइकराजानेहणी तेहनुं राजलेकं अ थवा कोइपर्वतनीगुफादिकमांप्रवेशकरीनेरसकुंपिकादिकलेइआवुं अथवा कोइसायें वातचितकरुं अथवा पातालखोदी द्रव्यकाढुं इत्यादिक नानाप्रकारेधन उपार्जनकरवा ना उपायनेविचारतोथको आगलजाउंछुं तोमार्गमांएक केसुडानोवृक्षकुंपलेसहित देखीने कोइधातुरवादिना वचनथकी निश्चेथी इहांधनछे एवुंजाणीने ॐनमोधरणें द्राय नमोधनपालाय इत्यादिकमंत्रजपीनें जमीनखोदवामांमी तेपृथ्वीनातलामांथी हजार सोनामोरेंकरीनरेखुं एकत्रांबानुंपात्रनिकल्युं तेहनें ग्रहणकरीने हुंघणोह र्षवंतथयो.

वलीलोजनामासमुद्रजे महारोमित्रते बलवंतथयो पछेहुंजयपुरनगरमांगयो तेहां रहेतांथका वकुलनामाव्यवहारीसाथें महारोपरिचयथयो तेणेकुलशीलादिकगुणेक रीसहित मनेजाणीने कमलिनीनामे पोतानीपुत्रीते मनेपरणावी तेहनासंघाते नो गनोगवता मनेघणादिवसो व्यतिक्रम्या एकदिवसें लोजसागरनामामित्रेंमनेकह्युं ते थीमेंपणविचार्युंजे अहोजुओतोखराजे हुंनिश्चितथको उदरपूरणाजकरुंछुं अनेधन उपार्जनकरवामां अंतरायनीकरनार एहवीएनोगनी विटंबनाते शाथयेंनी जि हांसुधीधनना ढगला नेलाकरयानथी तिहांसुधीतो एसंसारादिकते मनेधनउपार्ज वामां अंतरायनाकरनाराछे एहवोमहारो विलखोचित्तदेखीने महारेससरे वकुलेंमने कह्युंजे हेपुत्रएमहारोधनादिक सर्वपदार्थ ताहराजछे तेमाटेयथायोग्य सुखनानो गप्रतेंनोगव एधनउपार्जनकरवानी चिंताकरवेथीसर्युं आपणनेकांइ धनखपतुंनथी तेसांनलीमेंकह्युंजे हेपिताजीएमछेतोपणहुं जुदोमाहरोव्यापारकरीस तोमनेसंतोष उपजे एहवुंकहीने मेंतिहांजुदाव्यापारनो प्रारंनकर्यो.

पछेलोनेअ.सक्तहतो तेणेकरीमाहारीधर्मबुद्धिनाशपामि दयानावदूरथयो अने पापथीडरवापणुंपणदूरथयुं तेथीमें रशनाव्यापार केशनाव्यापार विषनाव्यापार दंतना व्यापार तथालाखनाव्यापार इत्यादिक व्यापारोप्रते एमपन्नरेकर्म्मादानोमांहुं प्रव र्त्यो एमनानाप्रकारना व्यापारेंकरी हजारसोनामोरपेदाकरी तेवारें वेहजारसोना मोरनी वांछाथयी वलीसागरमित्र वृद्धिपाम्यो तेवारेजेथकी घणापापथाय एवाअर्हटा दिक अधमजातिनाव्यापारकरवामांड्या तेमां नोजनादिकना स्वादतज्या वस्त्र अनेघर आनूषणादिकनाउपनोगने विसारीमूक्यो तथास्त्रीना स्नेहनेअणगणतोथको दि वसअनेरात्रे व्यापारनेविषेज श्रमकरतो व्याकुलथको पर्यटनकरुं एमकरता केट

हवेसंसारीजीव अगृहीतसंकेतानेकहेछे जे हवेमाहारे मनुष्यगतिनगरीनेविषे आ
ववानीवातकहुंछुं तेसांजल आनंदपूरनामानगर तिहां अहंकारप्रबलना वंठकरूप
अन्यराजारूपहाथीनीघटा तेहनामदने उन्मूलवामां केसरीसिंहसमान एहवो केसरी
नामेराजाहतो तेहनी जयसुंदरीनामेराणी तेनगरमां धनोपार्जयनामेशेठवसेछे तेह
नी धनमंजरीनामेस्त्रीनी कुक्षीनेविषे तेजवनेविषे जोगववायोग्य कर्मरूपगुटिकाआपी
ने जवितव्यतायें मनेअवतराव्यो.

हवेजवितव्यतायें जेवारेंपुण्योदयनामे मित्रमनेदीधुं तेवारेंवीजोपण लोजसमुद्र
रूपमित्र मनेदीधुंहतो तेवारपछे गर्जकालपुरोथये मनेपुण्योदय अने लोजसमुद्र ए
वेमित्रेंकरीसहित प्रसव्यो महारापितायें महोटामहोत्सवसहित धनशेखर एहवुं
माहरुंनामदीधुं हवेअनुक्रमें हुंमहोटोथयो तेवारेंसागरमित्रना अनुजावथकी मनमां
एवाविचाररूप विकल्पउपजेके संसारनेविषे धनतेहिज सर्वथीअधिकवस्तुछे माटे
कोइपणउपायकरी धननोसंचयकरवुं एहिजश्रेष्ठछे केमकेधनमलेजोगादिकसर्वमिले
तथाधनरहितपुरुषते तृणधुलीसमानकहेवाय तेमाटे गमेतेउपायकरवुंपण धनउ
पार्जवुं इत्यादिकचिंतवतोथको हुंसर्वकलाजएयो व्यापारनाकाममां चतुरथयो.

एकदिवसें महारापितानेकह्युंजे हेपिताजी तमारीआज्ञाहोयतो हुंव्यापारकरवा
नेअर्थे देशांतरजाउं तेसांजली महारोपिता दुःखितथको कहेवालागोजे हेपुत्रतुं ए
कजअमाराप्राण अविलंबनने लाकमीजूतपुत्रछो अनेपरदेशेजावुंतेतो सेंकडागमेदो
पनुं हेतुजूतछे माटेहुंतुजने परदेशजवानीआज्ञाआपुंनही वलीदेशांतरजयीनेधनक
मावीआववानी कांइआपणने जरुरनथी केमकेआपणाघरमां घणोइव्यहाजविद्य
मानछे माटेस्वेछायें धनखरची दान जोगादिककरीने इहांजरहो.

फरीमेंपितानेकह्युंजे हेपिताजी धनउपार्ज्याविना खरचकरतायकां समुद्रसरि
खानंडारहोय तोपणक्षयपामिजाय तोआपणीपाशेवली केटलुंकधनछे वलीजेपुरु
प युवानअवस्थापामिने पोतेकमावतोनथी अनेपोतानापितानीज उपार्जनकरेली
लक्ष्मी जोगवेछे तेंप्राणीपोतानी मातानेजजोगवेछे एहवीलोकोक्तिछे तेमाटेमने प
रदेशजवानी आज्ञाआपो तोहुंनानाप्रकारनाउपायें धनउपार्जनकरी थोडादिवस
मांपाछो घरेआवीस इत्यादिकवचनेंकरी माताअनेपिताप्रतें समजावी कोइकरीतें
तेहनीआज्ञालेइने दक्षणदिशिनासमुद्रनेविषे रह्याजेदेशोतेहांहुंगयो तेसमुद्रनाकि
नारे जयपूरनामानगरनेसमीपेंगयेथके हुंविचारकरवालागोजे हवेवाहणउपरचडी
रत्नदीपेंजाउं अथवा चंमिकादिकदेवीओने रुधिरादिकना वलीदाने प्रसन्नकरी ध

ननीयाचनाकरुं अथवा कोइकपराक्रमें करी कोइकराजानेहणी तेहनुं राजलेउं अ थवा कोइपर्वतनीगुफादिकमांप्रवेशकरीनेरसकुंपिकादिकलेइआवुं अथवा कोइसार्थे वातचितकरुं अथवा पातालखोदी द्रव्यकाढुं इत्यादिक नानाप्रकारेधन उपार्जनकरवा ना उपायनेविचारतोथको आगलजाउंछुं तोमार्गमांएक केसुडानोवृक्षकुंपलेसहित देखीने कोइधातुरवादिना वचनथकी निश्चेथी इहांधनहशे एवुंजाणीने ॐनमोधरणें द्राय नमोधनपालाय इत्यादिकमंत्रभणीनें जमीनखोदवामांमी तेपृथ्वीनातलामांथी हजार सोनामोरेकरीनरेलुं एकत्रांबानुंपात्रनिकल्युं तेहनें ग्रहणकरीने हुंधणोह र्षवंतथयो.

वलीजेजननामासमुद्रजे महारोमित्रते बलवंतथयो पछेहुंजयपुरनगरमांगयो तेहां रहेताथका वकुलनामाव्यवहारीसाथें महारोपरिचयथयो तेणेकुलशीलादिकगुणेक रीसहित मनेजाणीने कमलिनीनामे पोतानीपुत्रीते मनेपरणावी तेहनासंघाते भो गभोगवता मनेघणादिवसो व्यतिक्रम्या एकदिवसें लोभसागरनामामित्रेंमनेकह्युं ते थीमेंपणविचार्युंजे अहोजुओतोखराजे हुंनिश्चितथको उदरपूरणाजकरुंछुं अनेधन उपार्जनकरवामां अंतरायनीकरनार एहवीएभोगनी विटंबनाते शाश्वथैनी जि हांसुधीधनना ढगला नेलाकरवानथी तिहांसुधीतो एसंसारादिकते मनेधनउपार्ज वामां अंतरायनाकरनाराछे एहवोमहारो विलखोचित्तदेखीने महारेससरे वकुलेंमने कह्युंजे हेपुत्रएमहारोधनादिक सर्वपदार्थ ताहराछे तेमाटेयथायोग्य सुखनाभो गप्रतेंभोगव एधनउपार्जनकरवानी चिंताकरवेयोसर्युं आपणनेकांइ धनखपतुंनथी तेसांभलीमेंकह्युंजे हेपिताजोएमछेतोपणहुं जुदोमाहरोव्यापारकरीस तोमनेसंतोष उपजे एहवुंकहीने मेंतिहांजुदाव्यापारनो प्रारंभकर्यो.

पछेलोभअ.सक्तहतो तेणेकरीमाहारीधर्मबुद्धिनाशपामि दयातोदूरथयो अने पापथीदरवापणुंपणदूरथयुं तेथीमें रशनाव्यापार केशनाव्यापार विषनाव्यापार दंतना व्यापार तथालाखनाव्यापार इत्यादिक व्यापारोप्रते एमपन्नरेकर्म्मादानोनांहुं प्रव र्त्यो एमनानाप्रकारना व्यापारेंकरी हजारसोनामोरपेदाकरी तेवारें वेहजारसोना मोरनी वांछाथवी वलीसागरमित्र वृद्धिपाम्यो तेवारेंजेथकी घणापापथाय एवाअस्त्या दिक अधमजातिनाव्यापारकरवानांड्या तेनां भोजनादिकना स्वादनथी वस्त्र अलंकार आभूषणादिकनाउपभोगने विसारीमूक्यो तथालोभना स्नेहनेअणगणतोथको दि वसथनेरात्रे व्यापारनेविषेज भ्रमणकरतो व्याकुलथको पर्यटनकरुं एमकरता छट

लेकदिवसें दशहजार सोनामोरपेदाकरी वलीकेटलेकदिवसें लाखसोनामोरथयो ते मजदशलाखपणथयी.

.. तेमजवली क्रोडसोनामोरोथवाना लाजनेअर्थे महारासागरमित्रें मनेप्रेरणाकरी तेवारेंप्रवहणोलेइ मालथीनरी परदेशमोकल्या मांसवीनाकामचलाव्या नपुंसक त थागणिकाओनापोपकस्था महाआरंनमय माठाव्यापारो प्रवर्त्ताव्या वलीपुण्योदय तुं साह्यहतो तेहनाबलथकी क्रोडसोनामोरपणमेलवी.

वलीसागरमित्रेकह्युंजे हजीतोरत्ननीरासी मेलववीजोइयें आक्रोडसोनैयाते शी गणतीमांछे तेवारेंप्रवर्द्धमानजे तृष्णा तेणेकरीमें वकुलनामा महारासस्सरानेकह्युंजे हेपिताहुं रत्नद्वीपे रत्नासमूहमेलववानेजाउंछुं तेसांजलीबकुलेंकह्युंजे हेपुत्रतुं कोटिध्वजथयो हजीतनेसुंओछुंछे जेवली रत्नद्वीपंजवानोविचारकरेछे इत्यादिकथणुं तेणेवायुंपण मेकह्युंजे हेपिताकोटीश्वरनेपण लक्ष्मीनालाननेअर्थे उद्यमकरवुं केम के उद्यमनेवशलक्ष्मीछे जेमगुणाढ्यहोय सर्वांगसुंदरहोय तोपणनपुंसकहोयतोतेह नेजेम स्त्रीलोकपरिहरेछे तेदृष्टांते निरुद्यमीने लक्ष्मीमूकीजायछे इत्यादिकवचनें स सराने निरुत्तरवंतकरीने वलीबलात्कारेंस्त्रीनी अनुज्ञालेइने नानाप्रकारना क्रियाणे करी समस्तप्रकारें वाहणजरीने चाल्योथको रत्नद्वीपेंजइपहोतो तेहांनो निलकंठना मेराजाने खेमकुशलेकरी प्रसन्नकस्यो राजापणमहाराउपर प्रसन्नथयो.

पछेअनेकप्रकारेकरी रत्नव्यापारनो प्रारंनकस्यो एकदिवसेंकोइक अईगरढी स्त्री मारेघरेंआवीने मनेकहेवालागीजे हेधनशेखरशेठ आनंदपुरनो केशरीनामेरा जानी जयसुंदरी अने कमलसुंदरीनामे वेस्त्रीओछे पणतेनगरनेराजायें राजनीवां छावंतथको एहवुंविचार्युंके जोकादाच महारोकोइमहोटोपुत्रथसे तो मनेहणीने तेराज्यगादिनोवारेशथाशे एमविचारीने जेजेपुत्रतेहनाघरें जन्मेछे तेहनेहणीनाखेछे एकदिवसे गर्नवंति कमलसुंदरीराणी पुत्रहणवानीबीकेकरी छुंवसुमतिनामेसखीने शायेंलेइ रात्रने समयेंनाठो तेदैवयोगें विषमअटवीनेविषेजइपडी तिहांआपद जना वरादिकना पुकारशब्दसांनलीतेहने वीकेंकरी तेणेपुत्रजन्म्योपछे तेराणीपुत्रजन्म्याने अनंतरें तुरतमरणपामि तेवारेंहुंदुःखवंतथकी रत्नाकरंडिआनीपरे घणेयत्नेकरी पुत्रनेलेइ सयबारानेसंयोगेअनुक्रमें इहांआवीने कमलसुंदरीनोजाइ नीलकंठनामे राजानेयगल सर्ववृत्तांतकहीने पुत्रतेहनेआप्युं.

वहेनतुंमरणसांनलीने राजादुःखपाम्यो पणदेवकुमरनी उपमासरिखो नाणेज देखीने हर्षवंतथयोथको तेहनुंहरिएहवोनामथापीने तेपुत्रनेप्राणथी अधिकयत्नेक

री तेहनेमहोटोकरवालागो हमणानेपुत्र यौवनअवस्थापाम्योछे एहरिकुमरते तुज
ने आनंदपुरयकी आव्योसांभलीने पोतानानगरनो वसनारजाणी अतिनम्रतापूर्वक
तुजने तेडवानेअर्थे मनेताहरीपासेंमूक्योछे तेमाटेतमेतुरतचालो एहवोसांभलीनेहुं
कुमरपासेगयो तेणेपणबहुमानपूर्वक पोतानानगरनीवातपूछवावी मेंतेहनेतेहांनो
सर्ववृत्तांतकह्यो पछेतेकुमरनीसाथें माहरेनित्यपरिचययवायकी मित्रतायवी तेथी
मनेजाइतुल्यकरी मानवालागो.

एकदिवसें वसंतऋतुयें मनेतेडीने हरिकुमर मित्रनासमूहेपरवस्योयको क्रीडा
नेअर्थे वनसंमेआव्यो तेहांअमेनानाप्रकारना विनोदजोवाने तत्पररह्याछैयें एहवा
मां एकवुढीतापसणीतिहांआवी आशीरवादपूर्वकें कोइकस्त्रीनो चित्रितलेख हरिकुम
रने हाथेंदइने किहांकजतिरही तेचित्रितस्त्रीनारूपने जोतोयको हरिकुमरपण चि
त्रलेखनीपरें स्तब्धययीगयो तेवारें मन्मयनामामित्रेंकह्युंजे हेकुमर तुंएकताने करी
विचारकरेछे तेवारेंकुमरनुंध्यानतोतेचित्रमांजहतुंतथापिते आकाररूपचित्रलेखने
छुपावीनेपोतानोअभिप्रायकोइने तंजणाव्योनही.

पण एचित्रकरनारानी चतुराइते आश्चर्यउपजावेइत्यादिक प्रत्युत्तरआप्या तेवारेंम
न्मय पद्मकेशर विभ्रमकपोलादिकमित्रोये विचित्रप्रकारनी परोलीओ अने समस्या
दिकनी वातोनारसेंकरी कोइकरीतें तेवातकुमरने विस्मृतथावेकरी

एटलामांवली एकमुहूर्त्तपछे चक्रवाकिनेजोइ तेहथीतेचित्रितस्त्रीनास्तननीस्मृति
तेहनाहृदयमांथयी पछेतेकुमरकिहांपणआनंदपामतोनथी तेथी सर्वमित्रोनेविस
र्जिकरी मनेसाथेलेइ एकस्थानकें वेलोनाघरमांजयी शयनकरवालागो त्यांपणउज
रेतोमांजेममाछलीतडफडेतेनीपरें लोटतोयको माहरोकरेलो शीतलउपचार तेथीप
ण क्षणमात्र रतिपाम्योनही हवेते मन्मथादिकपणक्यांएक प्रछन्नवेसीरह्याहता
तेणेगुप्तपणें तेसर्वव्यतिकरदीठुं पछेतिहांआवीने उपहांसेसहितकहेछेजे हेकुमर
स्त्रीनेतेववेकरी आताहरोताप उपशमसे इत्यादिक चिकित्सानाउपदेशरूप मीसते
णेकरी घणुंहास्यविनोदकरवालागा तेवारपछे तेकुमरतिहां सर्वमित्रोनीसमक्ष पो
तानोजेअभिप्रायहतोते प्रगटकरी तापसणीनेजोवानेअर्थेमनेमूक्यो हुंतेनगरने सन्मु
खजाउंछुंएटलामां अर्धमार्गेनेविषे तेतापसणी मनेमली में तेहनेनमस्कारकरीने
चित्रनारूपनुंकारणपुछ्युं तेणेकह्युं आजहुं निद्वालेवासारुं नीलकंठनामेराजाना म
होलमांगइहती तिहांसिखरणीनामे राणीने चिंतायेंपीडितजोयीनेमेंतेहने चिंता
नुंकारणपुछ्युं तेवारेंतेणेकह्युंजे

प्राणथीपण वल्लनएहवी मारी मयूरमंजरीनामेंपुत्रीछे तेआजजेमपिशाचवलगुंहो य तेमसुखनाचालाकरति नीसासामूकतीथकी व्यग्रचित्तकरीने वेठीहती तेहनीचिंता येंहुंपीडाणीछुं तेवारेंमें तेहनेलग्नजोयीकह्युंजे एहनामनमां परणवानीचिंताछे एहवुं सांजली मनेनमस्कारकरीने राणीबोलीजे हेतापसणीजी एवातसाचीछे केमके मयूरमंजरीनीवल्लजसखी जेलीलावतितेणे मनेकह्युंहतुंजे मित्रनासमूहें परवस्यो हरिकुमरने एणेआजदीठोछे तेवखतथी एम्लानमुखवंतथकी विलखीथयीवेठीछे तेवारपछे राणीनाकहेवाउपरथी हुंमयूरमंजरीनो चित्रपटमांआलेखी कुमरनेआपीजावंछुं.

हवेहेअगृहीतसंकेता तापसणीनामुखथी सर्ववृत्तांतसांजली हुंघणोहर्षवंतथको कुमरपासेजयीने सर्ववृत्तांतकह्योतेअणसदहतो हतोतोपणमेंसोगनखायीनेप्रतीतवंत कस्यो तेवारेंकुमर कांइकस्वस्थथयीने मित्रनासमूहें परवस्योथको पोतानाघरेंआव्यो हवेराणीयेंपण पुत्रीनोअजिप्राय राजानेसंजलाव्यो पछे राजायेंमहोटा महोत्सवेंक री मयूरमंजरीने हरिकुमरसाथें परणावी तेवारें हरिकुमरते पुण्यनाप्रागनावेंकरी उ पनोजेमयूरमंजरीनो समागम तेपामिने नानाप्रकारना जोगविलासने विलसतोथकोर ह्योछेतोपणमनेक्षणवार वीसारतोनहतो अनेहुंतोलोजसमुद्रनामे मारामित्रनावशथ की एमविचारुंजे इहांपणव्यापारमां अंतरायनीकरनार एहवो आकुमरनीसाथें मा हारे केहांथीसोवतथयी केमके एहनीसाथेगोष्टीकरवाना विग्रहचित्तथकी कोइपण जणसवेचवी लेवोइत्यादिक कार्यमां सामर्थवंत थयीशकतो नथी एमचिंतवतोथको थोडेथोडेतेकुमरनीसायें मित्राचारीनो समागममूकीने पोतानाकार्योमां आसक्तथयो थकोरत्नउपार्जनकरीहुंहर्षपामुं कोइनो विश्वासकरुंनही तथा रात्रेसुखेनिद्रापणक रुंनही एमउद्यमकरतां में नानाप्रकारना रत्ननोजातिनासमूह एकठाकस्या.

एहवामां कर्मपरिणामनामेराजानीस्त्री कालपरिणति तेणे एकयौवन अने वीजुं मैथुन एवेसुजटोमोकल्या तेमाहरापासेआव्या मेंतेवेहुसुजटोने आदरसत्कारें करीसहित यौवननामेसुजटने देहरूपघरनेविषे निवासआप्युं अनेमैथुननेहृदयने विषेआप्युं पछेयौवननामे मित्रना अनुजावथकी हुंचांकीनजरकरीने मुखअनेआंख नाविकाररूप अहंकारकरुं अने मैथुननामे मित्रनावशथकी सेकमागमे स्त्रीओना जोगेकरीपण तृप्तिपामुंनही तेमचक्षुइंद्रियना परवशपणायकी जेजेस्वरूपवंतस्त्रीने देखुं तेतेस्त्रीसायें रमवानीइच्छायें नवानवाप्रकारनी चेष्टाकरुं जोपण लोजसमुद्रमित्र नाउपदेशथी द्रव्यखरचवाना जयथी मैथुननोसंग निषेधकरुं तोपणतेमैथुनना स्ने हनापरवशपणाथकी हुंयोडुंद्रव्यआपीशकुं तेणेकरी वालविधवा नीधारण जत्तार

वर्जितस्त्री इत्यादि स्त्रीओनेभोगवुं एमअकार्यकरतोथको लोकमांहलकाइपणानो थानकभूतहुंथयो.

तोपणहरिकुमरनेबलेकरी मनेकोइ पराभवकरीशकेनही एवामांसर्वदेशनेविषे था प्युंछेपराक्रमजेहनुं वलीमहाबलवंत एहवुंहरिकुमरप्रतेंदेखीने नीलकंठनामेंराजा चिंतातुरथयो के आश्चर्यजेहवीवातछे जेनगरनासर्वलोकने हरिकुमरें वशकर्याछे व लीएहनोप्रताप दिनदिनप्रतेवधतोजायछे एहवोएहरिकुमरते मनेअपुत्रीआनेहणीने जोमाहरुंराज्यलेइमूकेतो हुंसुंकरुं एमविचारकरी पोतानासुबुद्धिनामेप्रधानने छानोबो लावीने पोतानाहृदयनीवातकही वलीएहवुंकह्युंजे कोइकरीतें एहरिकुमरनेमारवुं एहवोहुकमप्रधाननेदीधो हवेप्रधानेपण अज्ञानना परवशपणाथकी तेराजानावच नने कबुलकरी घरेंआवीने विचारकरवालागोजे हाइतिखेदे धिःकारथाओ आराज नालोभने केमकेएनीलकंठराजायें पोतानो पालेलोपुत्रजेवो जाणेज वलीतेहने ज माइपणकर्योछे एहवाहरिकुमरनेपण रागवर्जितथको हणवानेइछेछे एअसमंजस सरिखुंकरेछे जोपणलोभेकरीअंधथयो एहवोएराजा ते एमजाणतोनथी जेहुंअनर्थक रुंछुं तोहेपणमाहरेतोएकुमरने जीवतोजराखवो एमधारीने राजानोमागेअभिप्राय जेहतोतेप्रछन्नपणे हरिकुमरनेजइप्रधानेकह्यो.

तेवारपछे कोइनाखुदालायें मसलतकरी सुवर्णरत्नादिकेंकरी वाहणोभरीने मयू रमंजरीने लायेलेइ कोइपणनजाणे तेवीरीतें रात्रनेसमें वाहणेचडीने हरिकुमर पोतानादेशतरफजवालागो तेअवसरें व्यापारनालोभथकी हुंमहारादेशतरफजवाने अणइछतोथको पणहरिकुमरेंमने अत्यंतआग्रहथकी तेडाव्यो तेहांहुंपण एकव हाण रत्ने भरीने कुमर संघातेचाल्यो वायुसरखी गतिवंतवाहणे वेगथका अने विचित्रप्रकारना कौतुकप्रतेंदेखतायकां जिवारेंअमे अर्द्धपंथेआव्या तेवखते लागरअने मैथुनएबेमित्रे मनेप्रेर्योथको मेंविचार्युंजे आश्चर्यकारी हरिकुमरनीए प्रमाणरहितऋद्धि तथा साक्षात् इंद्राणीनीपरें एनीमयूरमंजरीनामेस्त्रीछे माटेजोएहरि कुमरनेमारीनाखुंतोसर्वस्व माहरेस्वाधिनथाय एहवीमातीबुद्धीयें छलेकरीने महासमु द्रमांमें तेहरिकुमरनेनाखीदीधुं तेथीवाहाणमांहे लोकोनोकोलाहलशब्दथयो एहवोम नेअनर्थनोकरनारजाणीने महारोपुण्योदय महारायीदूरथयो अनेहरिकुमरनेतो पो तानापुण्योदयना महात्म्यथकी समुद्रदेवतायें उपाडीनेवाहाणमां मूक्यो अनेहुंतो क्षीणपुण्योदयमाटे तेसमुद्रदेवतायेंज अतिक्रोधथकी घणोमार आपवामांडयुं तेवा

रें हरिकुमरेंदेवतानेकह्युंजे अपराधक्षमाकरो अपराधक्षमाकरो एहवुंसांभली देवता मने मारतोहतोतेमूकीने समुद्रमांनाखीदीधो.

हवेहरिकुमर खेमकुशलेकरी थोडादिवसमां समुद्रनोपारपाम्यो तेहांलोकनामु खथी पोतानापितानुंमरण सांभली आनंदपूरेजयीने पोतानापितानाराज्यनेअंगि कारकर्युं अनेमाहरो रत्नथीनरेलोवहाणतेमहारापिताने हरिकुमरेंदीधुं हुंतोचपलस मुद्रना कल्लोलेंकरी हणाणोथको जलचरजीवें नक्रकरतोथको सेंकडागमे असाता ने अनुभवतोथको भवितव्यतानावशथकी मुआसरिखो सातमेदिवसें समुद्रनोपारपा म्यो पछेमंदावायुना स्पर्शथी सचेतनावंतथयो भुख अने तृषायेंपीडितथको इहां तिहांभमवालागो तेवारपछेकांइक वनफलादिकखातोथको धीरेधीरे फिरतो फिरतो कोइकनगरेंजइपहोतो.

तेहांमिथ्याभिमानना वशथकी मेंविचार्युंजे एहवी माठीअवस्थायें पोतानेघरें अथवा ससरानेघरें केमजाउं माटेइहांजरही धनउपार्जनकरीने माहरेघरेजइश एह वुंविचारी वलीसागरनामा कुमित्रेंप्रेरयोथको विचित्रप्रकारना धनउपार्जनकरवाना उपायनेविषे प्रवर्त्यों पणपुण्योदयनाअभावथी विशेषें धननीप्राप्तिकिहांपणथयीनही

जोकरसणीनो कर्मकरवाजाउंतो अवृष्टिथाय जोकिहांचाकरीकरुंतो प्रहारेकरी जाजरा अंगवंतथाउं अने गाडादिकवाहनकार्यनेविषे प्रवर्त्तुंतोबलदप्रमुखमरणपामे एरीतेंजेजे उपायने आलंबीप्रवर्त्तु तेतेकार्य अनर्थनाकरनाराथाय तेथीकंटालीने दैव उपरआसरोकरी पगपसारीनेंबेसीरह्यो.

फरीसागरमित्रेकह्युंजे अहोएमनिश्चिंतथको शुंबेसेछे धननाअर्थिपुरुष पोताना मातापितादिकनेपण मरणप्राप्तकरे सइकडागमे अकार्यकरे एमविचारी में गलेफा सोआपीलोकानेमारीनाखवो इत्यादिक अकार्यकरवा पंथीलोकोनेलुटीलेवुं एमनाना प्रकारें चोरीनाकर्मनी क्रियाकरवामांडी तथाजुवटुंकर्युंएमसेंकडागमें माठाकर्मकरतां पण एकफुटकबकोडी पाम्योनही तिहांवधबंधनादिक असातायेंकरी दुःखनेवि षेरह्योथकोपण विचविचमां मैथुननीप्रेरणायें नीचजातिनीस्त्रीओसाथे वचननीचतु राइतोघणीजकरुं पणएटलोविशेषजे महारीपासेंद्रव्य नलहुलनहतुं माटेमहारी अभिलाषाकोइ ढेड चमरादिक नीचजातिनी स्त्री पणकरेनही

एकदिवसें आनंदपूरनगरना उद्यानखंडनेविषे उत्तमसूरिनामेआचार्य समोसर्या तिहांहरिनामेराजा परिवारेंसहित वांदवानेअर्थेंगयो गुरुयेंधर्मदेशनाआपी तेवारप छेराजायें गुरुनेपुछयुंजे हेस्वामि हुंधनशेखरउपरअत्यंतप्रेमराखतोहतोतोपणतेप्रेम

ने समुद्रमांकेमनाख्युं आचार्येकह्युंजे धनशेखरतो स्वजावेसारोजछे पण एहना सा गर अनेमैथुन एवेकुमित्रना परवशपणायकी एणेएअकार्यआदर्युं तेजेवारें शुभचि त्तनामानगरनो शुजाशयनामेराजा तेहनी प्रधानतानामेराणीनी कुक्षीनेविषे निजो त्पन्ना अने ब्रह्मव्रतीनामे बेकन्याओछे तेहनेपरणसे तेवारें सागर अने मैथुन एवे कुमित्रोनासंगथीमूकासे.

एमसांजलीने वलीकुमरेंपुछयुंजे हेमहाराज एहवा विचित्रप्रकारनाजीवहोयछे तेहनुंसुंकारण तेसांजली गुरुबोल्याजे हेराजन् कर्मपरिणामनामेराजा तेहनीकालप रिणतिनामेराणीछे तेबेहुने यद्यपि आसर्वजगतते संतानरूपछे परंतु अविवेकादि क प्रधानोएमजिने तेश्रीनिरतारवन्नेजणने डुर्जन दृष्टिदोषनो प्रवादनलागेतेमाटे निर्बीज वंध्याना प्रवादनुंप्रवर्त्तनकर्युंछे.

हवेएकदिवसें सर्वलोकनेहितकरनार यथार्थबोलनारा समस्तवस्तुना तत्त्वनाजाण एहवासिद्धांतनामेआचार्यने अप्रबोधनामाशिष्यें सर्व जीवोनेसुखडुःखनी प्राप्तिनुंकार णपुछयुं तेवारेंगुरुयेंकह्युंजे हेवत्सतुं सांजल जेजीव ज्ञानादिक शक्तियेंसहित चित्तवृत्ति नामे अटवीनेविषे पोतानाजावनी साम्राज्यलक्ष्मीनेजोगवे तेहने चारित्रधर्मनामे राजा हितनोकरनारथाय तेमाटेतेजीवनी सात्विकमानसनामानगर अने जैनपुरादि कनगरें वशवर्त्तिछे वली एक यतिधर्म अनेबीजोगृहस्थधर्म एवेचारित्रधर्मराजाना पुत्रोछे तथा एकसम्यक्दर्शन बीजो सद्बोध एवेप्रधानछे तथा सत्य अने संतो षादिक चारित्रधर्मराजाना सुजटोछे इत्यादिक जेकांइ परिवारछे तेसर्व तेसंसारी जीवने हितनुंछकथायछे.

हवेतिहां घातिकर्म अनेविषयकषायादिकचोर तथाप्रमादरूपधूर्त्ततेपणवशेछे तेमां कर्मपरिणाम अनेमोह एवेलुंटनारोनानायकोछे तेमणे एकदिवसें विचार्युंजे आपणा पराक्रमआगल संसारीजीवते तीगणतिमां तथा चारित्रधर्मराजातेपण तीगणतिमांछे एमविचारी संसारीजीवने पोतानास्वजावरूप महोटाइनावथकी विकलरूपकरीने चि त्तवृत्तिनामेअटवीप्रतें पोतानेवशकरी तिहां राजसचित्तादिकनगरो वसावीने तेनगरो नोमहामोहपोतेराजाथयो अनेकर्मपरिणामराजायेंतो राज्यनोजारपोतानाजाइनेविषे थापीने पोते संसारीजीवोनोकरेछुंनाटक तेजोवाने तत्परथयोछे पणकर्मपरिणामरा जायेंतोसंसारीजीव तथाचारित्रधर्म राजादिकोते निश्चेंकरीबलवंतछे एहवुंजाणीकाक रीनेकोइकोइवखते संसारीजीव अने चारित्रधर्मराजादिकोने अनुकूलपणेवर्त्ते पण मोहराजातो गर्वेंधमधम्योयको पोताना अहंकारेंकरी जगतनेपण तृणसमानगणेछे

अनेपोतानो आत्मांज सर्वने उपरवर्त्तमानपणेमानीनेएकांतपणे संसारीजीवनेपीडा आपेछे चारित्रधर्मादिकोने त्रासपमाडेछे.

फरीअप्रबोध शिष्यें पुछयुंजे हेस्वामि ह्मणासंसारीजीवकेवाप्रकारनोछे तेसांनली सिद्धांतनामे आचार्यकहेछे जेह्मणातोए उत्कृष्टवैरीनूतजे मोहादिकोछे तेहने हि तनाकारणकरीमानेछे वलीचारित्रधर्मादिकजे हितनाकरनार तेहने शत्रु पणेगणेछे तेमजसागर अने मैथुनतुंआसक्तछते नवचक्रमां नमेछे एमसामान्यप्रकारेंतेहनेकयुं.

वलीहेपुत्र हेअप्रबोधतुजने विशेषप्रकारेकहुंछुं तेसांनल कर्मपरिणामराजाना जो पणअनंतापुत्रोछे तोपण छपुत्रोतो जगत्नेविषे प्रसिद्धछे तेहने नामो सहितवखाणेछे

पहेलो निकृष्टनामापुत्रछे एकदिवसेकर्मपरिणामें तेह्नेराज्यदिधुं तेप्रकृतियेंक्रूरछे पापात्माछे दुर्नगछे कुरूपस्त्रीनासमूहेंपणजेह्ने नापसंनकर्योछे सर्वथाशुनअध्यव सायेंकरी वर्जितछे शुनलेश्याने जाणतोनथी पांचप्रकारना विषय सुखनेजाणतोनथी केवलपृथ्वीनेनारजूत एह्वाप्रकारनो तेह्नेदेखीने हर्षनेपाम्यायकामोहादिकोयें ए मविचार्युंजे एअमारोपोषनार एमचिंतवताथया तेमज चारित्रधर्मादिकोयें जाण्युंजे एअमारोशत्रुछे एमविचारीनेनासीगया वली राजसचित्तादिकनगरना वसनारालोकहर्षवंतथयाअने सात्विकमानसादिकनगरोनालोकते शोकेकरीसंकुलितथया तेमाटे नि कृष्टपुत्रनेमोहादिकेंविकलकर्यो तेथी विडंबितमानथयोयकी राजनेविषे प्रवेशपणन पामे रुष्टमानथयो कर्मपरिणामनामेंराजा तेणेपापिष्ठनिवासनामानगरेंमोकल्यो ए मनिकृष्टेंराजने मारीविधयें पाल्यो तेथकी उत्कृष्टकष्टनो स्थानकथयो हवेजे निकृष्टतेबा हिरलोकें पारधी माछिमार सौकरिक वागुरिक जालनाखनार इत्यादिक क्रूरकर्मि जी व जेह्नोसर्वलोकोयें तिरस्कारकर्युंछे तेसर्वेअधमकर्मनाकरवाथकी आलोकने विषे शोकडागमेंदुःखअनुनवीने पछे तेपुरुषोनरकनाजानार होय एह्वुंदेखाडवुंछे.

एकदिवसें कर्मपरिणामराजायें वीजाअधमनामापुत्रनेराज्यसोंप्युं तेपुत्रपणस्वना वथकीनिकृष्टसरिखोजछे पणकांइक धन अनेकामनोग तेणेकरी सहितछे धर्मिपुरुषो नीरुडीरीतेंउपहासकहेछे अने देव गुरु धर्मनीअवगणनाकरेछे पुण्यपाप अनेपरलो कादिकनेमानतोनथी केवलसंसारिकसुखनेज सारपणेगणेछे पंचेंद्रियनापरवशपणा थकी चांमालणीसरखी स्त्रीसाथें पणनोगसेवाकरेछे वलीनखावायोग्यने तथानपीवा योग्य अगम्यादिकोनेइछेछे एमतेपुत्रपण मोहादिकोप्रतें पोषीने तथा चारित्रधर्मादिको नेविटंबीने पोतानाराजनासुखनी गंधपणनपाम्यो माटेरुष्टमानथयो कर्मपरिणामरा जातेणे आदेशथाप्योयको पापिष्टनिवास नगरनेपाम्यो एवाहिर लोकोनेविषे नट

पुरुष विटपुरुष जुवटानारमनार चोरीनाकरनार वेश्यादिक जेलोकोछे बहुलतायें इहां तेवापुरुषोनो देखाडवुंछे.

तेवारपछेकर्मपरिणामराजायें त्रीजा विमध्यमनामापुत्रने राजआप्युं तेवलीमोह राजादिकनेविषे निरंतरआसक्तछे पणकोइकोइवारें चारित्रधर्मादिकोनेपण रुडीरीतेंजा वेछे प्रकृतियेंजद्रकछे देवनीबुद्धियेंकरी सर्वदेवनेसेवे वलीसरलपणेदानादिककरेछे पुण्य अनेपाप तथापरलोकादिकमानेछे धर्मनेवांछेछे पापथकीदरतोरहेछे तोपणमिथ्यात्वद र्शननामा प्रधानादिकोथी ठगाणोथको पोतानेजोगववानी जूमिमांप्रवेशकरी शकतोन थी एपुत्रनेसामान्यगुणवंतदेखीने कर्मपरिणामराजा किवारेक पशुसंस्थाननगरे तिर्य चमांमोकले वलिकेवारेक मानवावासें मनुष्यमांमोकले केवारेक विबुधालयनामान गरें देवतामांमोकले एवाहिरलोकनेविषे राजाओ क्षत्रियो ब्राह्मणो अथवाबीजा पणजे प्रकृतियेंजद्रकहोय धर्मार्थीहोय पणसद्गुरुनो संयोगपाम्यानथी तथासर्वज्ञदे वनो आगमलेशमात्रनथीजाण्यो वलीसद्गुरुनेसंयोगेंपण मागग्रहनाग्रस्तपणाथकी यथास्थितधर्मना तत्वोप्रतें असर्दहताथका सावद्यदान चांद्रायणव्रत होम यज्ञादि क कर्म धर्मबुद्धियेंकरीकरे इत्यादिक पुरुषानोइहां बहुलतायेंदेखाडवुंछे.

पछेकर्मपरिणामराजायें चोथो मध्यमनामापुत्रनेराजाकीधो तेवलीप्रकृतियेंकरी हि तकारक विवेकनोजाण अने चारित्रधर्मराजादिकोने पोतानाहितकारीजाणी ते होने आगेवानकरी मोहादिकोने शत्रुसरिखाजाणीने कांइकपीडेछे तेवारें मोहादि को कांइकम्लानमुखवंतथया अने चारित्रधर्मादिको उल्लासवंतथया जोपण धर्म अ र्थ अने कामनेसेवेछे तोपण धर्मनेजबहुमानकरेछे मोक्षनेजपरमार्थपणुंजाणेछे ते हवीशक्तिनाअजावेंपण यथाशक्तियें मोहादिकोप्रतें ताडनाकरेछे इंद्रियनासमूहने धीरेधीरेदमेंछे कषायादिकोनुं जीतवापणुंकरेछे तेहांसिद्धांतनामा महोटोउत्तमपुरुष सर्वराजनीस्थितिनोजाणछे तेहनेपूछी निर्णयकरीने केटलीक पोतानीराज्यनीस्थि तिमां प्रवर्त्तमानथयोछे पराक्रमरूपवीर्यनी शिक्षाने अनुसारेंकरी एपुरुषें केट लीकपोतानी आत्मसत्तारूप जोगववायोग्यपृथ्वीपामिने कांइकपोतानाराज्यमां सुखरूपवर्णिकाने वशकस्यो एरीतेंते मध्यमगुणेकरी कांइकसंतुष्टमानछे तेहने कर्म परिणामराजायें विबुधालयनगरें देवतानीगतिमां मोकल्यो इहांसम्यक्दृष्टीश्रावको जेणेयथाशक्तियें व्रतोनेअंगीकारकस्याछे एहवारूडापुरुषोनुं देखाडवुंछे.

हवेकर्मपरिणामराजायें पांचमा उत्तमनामेंपुत्रने राज्यदीधुं तेस्वजावथकीज मो हादिकोनोध्वंसकरनारोछे अनेचारित्रधर्मादिकोनो पक्षपातीछे पोतानुंराज्य पाल

वानेअर्थे हितकार्य अने अहितकार्यनो रुडोउद्यमवंतथयो तेवारें मोहादिकचोरोकंपायमानथयीने क्षोजनापाम्या वलीराजसचित्तादिकनगरोना वसनारलोकते हर्षवंतथया चारित्रधर्मादिकोना रोमराय उल्लसितथया सात्विकमानसनामेनगरादिकोमां महोटोओछवप्रवर्त्यो वलीएकदिवसें एराजायेंपोतानुंराज्यपामवाना उपायने वास्ते यथार्थनोबोलनारसिद्धांतनामे महोटाउत्तमपुरुषनेपूछ्युं तेवारें तेणेकह्युंजे हेमहानाग्यवंतसांजलजेनवसमुद्रथी विरक्तथयाछे विषयसुखथी पराङ्मुखथयाछे वलीजेहनुं चित्त मोक्षनासुखमांएकाग्रथयुंछे तेहवापुरुषनेपोतानाराज्यपामवाना उपायनुंपुछवुं युक्तजछे तेमाटे तुंअतरंगराज्यनासुखनो इछनारछो तोतुजनेउपायकहुंछुं तेसांजल.

प्रथमतोसद्गुरुनीसेवाकरवी वलीतेगुरुनोउपदेश रुडीरीतेंविचारवुं शास्त्रनाजावार्थमां सदाप्रवर्त्तवुं शास्त्रोक्त क्रियाकरवी सज्जनपुरुषनी सोबतअंगीकारकरवी दूर्जनपुरुषनी सोबतछांमवी हिंसा मृषावाद अदत्तदान अने मैथुननो त्यागकरवो बाह्यअने अन्यंतर एबेनेदें परिग्रहनेछांमवो साधुनोवेशधारणकरवो नवकोटियें विशुद्धआहार उपधि अने शय्यादिकेंकरी शरीरने क्षणक्षणेथापवो अने संसारनाकडुआविपाकछे एहवुंचिंतववुं पांचविषयनेजीतवुं तथा सीज्ञाय सत्य संतोष अने तप इत्यादिकनी वृद्धिकरवी एहमांजअहर्निश उद्यमकरवो एरीतेंकरतां तुजने पोताना राज्यमां प्रवेशपणुंथासे तेमाटे अन्यासनामे स्वांगिकअंतरंगनुं सहाय ग्रहणकरवो तेमज चारित्रधर्मराजानुं सैन्यतुजनेमिलशे अने बीजोताहरो वैरागनामेमित्रथासे तेवेहुयेंसहितयको तेणेकरीपूर्वदिशिना द्वारेंथयीने पोतानाराज्यमां प्रवेशकरवुं.

तेहमांवली ज्ञावेवाजु महामोहादिकोना सैन्यने आधारजूत ग्राम नगर आंकर पर्वतादिकोछे तेमूकीनेदक्षणदिशिनाजागनेविषे चारित्रधर्मनी सेनानेरहेवाजूत ग्रामादिकछेवलीएसर्वने आधारजूत चित्तवृत्तिनामा अटवीछे तेहनेछेहडे पश्चिमदिशिनाविजागनेविषे निवृत्तिनामेनगरीछे त्यांगयायीएपूर्वनाराज्यनुंफलथाशे तेमाटेताहरे चारित्रधर्मराजानी सेनाने अतिवल्लनकरी अने महामोहना सैन्यनेतजवेकरी उदासीनतानामे राजमार्गेंचालवो जेणेकरी अविछिन्नप्रयाणथाशे तिहांवचमांएक अध्यवसायनामे द्रहआवशे ते कलुषितजावयकीथायछे तेसजावेंज मोहराजानालशकरने पुष्टकरेछे अने चारित्रधर्मराजाना लशकरनेपिडानेअर्थें थायछे वलीतेहिज अध्यवसायनामेद्रहजो निर्मलहोयतो चारित्रधर्मराजाना लशकरनेपुष्टकरछे अने मोहराजाना लशकरने पीडाकरेछे तेमाटेतारे अध्यवसायनामाद्रहने निर्मलकरवानेअर्थें १ मैत्रीजावना २ प्रमोदजावना ३ करुणाजवना ४ उपेक्षाजावना एचारराणीओने थापवी

पछेतेओनेराख्याथी सुप्रसन्नभूतथयाथी तेइहनेविषे चारित्रधर्मादिकसांगिकराजाओ पुष्टीभूतथयाछे अनेमोहादिक चोरोना जेसमुदायते दुर्बलथयाछे.

वलीतिहांथी आगलेंजाइश तेवारेंतेहिजमहाद्रहमांहेथीनिकलेली एकधारणारूप महा नदीआवशे तेहनेस्थिरतारूप सुखनोकरनार वाहण तेरूपध्यासनेवेठेथके अ तिशीघ्रगतियेंकरी कोइकर्मादिकतनेहणेनही तेमाटे सावधानथयीने उल्लंघवी तेह थीआगलवली एकधर्मध्यान एहवेनामे अत्यंतसरल दंभोदेखीश तेदंभेंकरी आगल चालीसतेवारें वीजेंकरीसहित योगनामें महापंथमार्गपामिश तेमार्गेथयीने आगल जतायकां तुजने मोहादिकवैरीओ सर्वथंतरिक्षयाशे अने समस्तचारित्रधर्मादिकमि त्रोते प्रकर्षेकरीबलवंतथाशे तेहथी समस्तराज्यभूमि प्रगटथाशे वलीआगल शुक्ल ध्याननामेदंभोआवशे तिहांजतायकां तुजनेनिर्मल केवलज्ञानरूप प्रकाशथाशे ते पछे वीजवर्जितयोगनामे महोटोमार्गपामिने विषमशत्रुने समाकरवानेअर्थें जेकेव लीसमुद्घातनामे कर्तव्य तेप्रयत्नविशेषेंकरी मन वचन अने कायरूपयोगनामे त्रण मार्गवेतालोनेहणवा तेवारपछि शैलेसीनामेश्रेणीने आश्रयीने निवृत्तिनामेनगरनें विषेजावुं एसर्वव्यतिकरो उदासीनतानामे राजमार्गने नही मूकवाथीज तुजनेथसे.

वलीतिहांजता यथावस्थित सर्वपदार्थने अर्थेकरिसहित देखाडवावाली एहवीस मतानामें योगनालिकाआवशे तेप्रतेंदृष्टीथापेथके तुजनेसर्वपदार्थनुंज्ञानथाशे तेहथी पगेंपगें पोतानीमेलेज यथायोग्यकार्यनेजाणीश इत्यादिक सिद्धांतनीकही अवधार वायोग्य हितशिक्षा तेहिज शिक्षानीरीतें प्रवर्त्ततायकां अनुक्रमें मोहादिक शत्रुनेह णी तथाकर्मपरिणामनामें पितानेपणजीतिने मोक्षरूपनगरप्रतें गयायकां पोतानाआ त्मस्वरूपरूप राज्यनीसारभूत शाश्वत आनंदरूपसुखप्रतेंभोगवी इहांविशेषेंकरी संयम नाआराधकसाधु जेणेमोक्षमांजवांछांवांधीछे एहवा गणधरादिकनुंदेखाडचुंछे.

हवेछलोवरिष्टनामा कर्मपरिणामनोपुत्र राजाथयो तेहनाआववाथी मोहादिको हतपराक्रमवंतथया वली चारित्रधर्मादिको हर्षवंतथया जोपण उत्तमनीपरेंज एहनो सर्ववृत्तांतछे तोपणएटलोविशेषछेजे एहनेप्रथमथीज सिद्धांतनीसाथें परिचयहतोमाटे एसिद्धांतने पुछ्याविनाज समस्तराज्यनी स्थितिने साधतोआव्यो वलीएहनागुणेकरी खेंचाणायका बहिरंगजे गणधरनामेराजाते एनापगनीसेवाकरवानाभावनेपामे तेग णधरने एउपकारीजाणीने एवरिष्टनामाराजाते सिद्धांतनेप्ररुपेछे पछेतेगणधरो सिद्धां तप्रतेंपामिने पोतानीशक्तियेंकरी तेहना अंगोपांगने रुडीरीतेरचेछे यद्यपिएसिद्धांत

एवरिष्टपुत्रनागर्नकालथकीज मतिश्रुत अवधिरूपत्रणज्ञानेकरीशोनित अजरामरहतो तोपण श्रीतीर्थंकरदेवें ते अजरामरसिद्धांतनी लोकनेविषेख्यातिकरी प्रसिद्धकस्रो.

वलीएजगवान गर्नकालथकीज समस्तनावें मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान ए त्रणज्ञाने शोनित वली जन्मथकीज चारअतिशयेंकरिसहित लोकोत्तरगुणनासमूह नो समुद्र समस्तआश्चर्यनोकरनार एहवोसौनाग्यछेजेहनुं समस्तसुर अने असुरनाइं द्रादिकेंपूजित वली व्रतलीधाथीउपनुंछे चोथोमनपर्यवज्ञानजेहने घातिकर्मनोनाश करीने पांचमाकेवलज्ञाननेपाम्याछे कर्मनाक्षयथकी इग्यारअतिशयउपना वलीदेव तायें ओगणिश अतिशयकस्रा तथा आठप्रातिहार्यैकरी त्रणजुवननी साम्राज्यनेप्र काशकरीछे वली पांत्रीसगुणेसहित योजनगामिनी सर्वनयनीउपजावनारीवाणीछे तेवाणियेंकरी धर्मउपदेशकरतायका पोतानेविहारेंकरी पृथ्वीतलने पवित्रकरेछे एह वाजगवानने नमस्कारकरवाथी मिथ्यात्वरूप अंधकारनोनाशथायछे मुक्तिमार्गनोरु डोप्रकाशकरीने धर्मरूपतीर्थनेस्थापेछे एपूर्वोक्तप्रकारने अनुक्रमेंकरी निवृत्तिनामेनग रीने पाम्योथको शाश्वतपोतानीसाम्राज्य सुखनेजोगवे एमां अतीत अनागत वर्त्तमा नएत्रणेकालना तीर्थंकरोनुंदेखाडवुंछे.

हवेएछपुरुषनो दृष्टांतसांजलवाथीपण अप्रबुद्धते परमार्थपाम्योनही तेवारें तेह नेसिद्धांतनामागुरुयें विचाररूपमनुष्यआपीने अंतरंगनगरेमूकीने एछएनी राज्यस्थि ति साक्षात्देखाडीने प्रबोधवंतकस्रो.

तेमाटेहेराजा जेमनिकृष्ट अधम विमध्यमोयें राज्यनेमाठुंपाल्युं तेराज्यतेहनेकेवल उत्कृष्टडुःखसहेवायोग्यजथयुं अने मध्यमतोपालवाने सन्मुखपणाथी थोडाडुःखनो देखनारथयो वली उत्तम तथा वरिष्ट एबेहुयें रुडीरीतें राज्यपालवाथकी अनंतसुख नोदेवावालोथयो तेमज सर्वजीवोनेपोतानुंराज्य जेणेजेणेरुडुंपाल्युं तेनेतोसुखनो आपनारथयुं अने जेणे माठुंपाल्युं तेहनेडुःखदेवानुंज कारणथयुं एरीतेंजगतमां जेप्राणी नानाप्रकारना सुखीडुःखीछेतेहनुंकारणएहिजछे.

इत्यादिकदेशनासांनलीने हरिनामेराजाते यथायोग्यें पोतानाजावरूप राज्यपा लवानेविषे सन्मुखथयो पछेपोताना शार्दूलकुमरने राज्यथापी मयूरमंजरीआदेदे ई पोताना कुटुंबना अनेक समूहसहित संयमव्रतलीधुं.

हवेदेअगृही [illegible] एकदिवसें को इकुवन्नमांगयो [illegible] नूमीनेखोद वालागो तेवृक्षनामूलमांथी एकजयंकरसर्पनिकल्यो तेणेमनेदंस्यो तेथीतेनववेदवारू

प गुटिकानाक्षयथकी नवितव्यतायें बीजीगुटिकाखवरावीने पापिष्टनिवासनामानगरना सातमां पाडानेविषे मोकल्यो तिहांथणाडःखोअनुनवीने तेंत्रीससागरोपमायु पूरणकरी तिहांथीनिकलीने वली अनंतोकालक्षुद्री एकेंडियादिक नगरमांनम्यो तिहांअनंताडःखनोगव्या वलीपण महाराजपर नवितव्यता कांइकसुप्रसन्नथयी पुण्योदयनामे मित्रआपीनें मनुष्यगतिनामा नगरियेंजवानो आदेशकस्यो मेंपणतेहनासन्मुखें एवातअंगिकारकरिने मनुष्यगतिनगरियेंचालवामांडयुं एरीतें लोननुंफल मैथुननुंफल चक्षुइंडियादिकनेविषे आसक्तनुंफल एमेप्रकारेंजाणीनें बुद्धिवंतपुरुषें एहनो जयकरवानेदृढपणे प्रवर्त्तवुं.

एरीतेंजपमिति नवप्रपंच कथाद्धारनेविषे लोन मैथुन चक्षु इंडियनोविपाकवर्णन एहवेनामें चोथो अधिकारसंपूर्णथयो

हवेवली सदागम नव्यपुरुष प्रज्ञाविशालानेसमक्ष संसारीजीव अगृहीतसंकेताने संबोधनकरीकहेले के हेअगृहीतसंकेता सांनल मानवावासनामा नगरनेविषे कर्मरूपगुटिकानुंदेवुं तेनाप्रयोगेंकरीने साल्हादनामानगरें जीमूतनामेराजानी लीलावतीनामे राणीनी कुक्षीनेविषे नवितव्यतायें मुजनेंअवतास्यो तिहांसंपूर्णनवमास पूरे थयेथके पुण्योदयेंकरी सहितहुंजन्म्यो पितायेंमहोटोमहोत्सवकरी घनवाहन एहवुंमारुंनामपाडयुं. हवेजीमूतनामेराजाने नारदनामान्हानोनाइले तेहनीपद्मावती स्त्रीयेंपण माराजन्मनाअवसरेंज पुत्रनेजन्मआप्यो तेहनुंनाम अकलंकदीधुं पलेअमेबेहुनाइ अनुक्रमें वधतायका आठवर्षनाथया तेवारें कलाचार्यनीपासें समस्त शास्त्रनीकला नण्या पलेअनुक्रमे यौवनपाम्या.

हवेअकलंकतो हलुकर्मपणाथकी प्रकृतियेंदयालु क्षमा सत्य संतोषादिकेंयुक्त परजपकारी गुणीनोरागी इत्यादिक अनेकगुणेंकरीसहित हतो अनेंहुंतो स्नेहवर्जित सत्वेकरीरहित पारकाछिड्रनोजोनार एरीतेंनानाप्रकारना दोषनोआश्रयनूतहतो तोपणअकलंकते माहाराजपर घणोविशेष स्नेहराखतोहतो.

एकदिवसेंअमें नंदनवननेविषे क्रीडाकरवागयाहता तिहांएक जैनप्रासाद देखी मध्यानसमयें वलजणायें देवयात्राकरी तेवारपछिवाहरमंमपेंआव्या तिहां जेणेअष्टमतिथीना उपवासकस्याले एहवाअनेकसाधुओ अमेंदीठा तेसर्व जूदाजूदावेसीनेसिद्धांतनी सिझायध्यानकरताहता एहवासाधुओजोइ अकलंककुमरें तेमनेनमस्कारकरी एकसाधुनेपासें धर्मसांनलवानेअर्थेवेगो अनेंहुंपण अकलंकना अ

नुरोधथकी तेहांवेगो हवेश्रकलंकें साधुनेपुछयुंजे हेस्वामि तमोनेशोवैरागनुं कारण हतुं जेथकीतमो श्रावायौवन अवस्थामां व्रतअंगीकारकर्युंछे तेसांभली मुनिराजबो ल्याजे हेकुमर हुं तुजने महारो वैरागउपजवानुं कारणकहुंछुं ते सांभल.

हुंलोकोदरनामे गामनोवसनार कुलपुत्रहतो तिहांएकदारात्रें अग्निनोभयलागी तेहथीविकराल ज्वालाश्रोप्रगटथयी तेहनाधुमाडाथी नगरसर्वेढंकाइगयुं तेणेकरी नगरनासर्वेलोक आकुलव्याकुलथया अने स्त्रीबालकादिकोनो कोलाहलशब्द प्रवर्त्यो तिहांपांगला आंधला नपुंसकादिक घणाकमनुष्यबलताथका पोकारकरवालागा.

लोकोनोधनलेइने चोरलोकोये घणालोकोने मुसाडचा धूताराश्रने लुंटनाकरना र घणाहर्षवंतथया तेअवसरें प्रधाने पोतानावचननी शक्तियेंकरी चोतराविषे एकमं डलश्रालेखीने नगरनासर्वलोकनेबोलावी कह्युंके अहोभाइयो तमेश्रामंडलमांश्रा वीबेशो इहांतमनेबलवानीधास्ती बिलकुलनथी तेसांभलीने केटलाकलोकतोते मंड लमांजइबेठा.

अनेबीजातो उपना उन्मादनीपरें प्रधाननुंवचन अवगणीने तृण काष्टघृता दिकेंरी अग्निसमाववानेअर्थे प्रवर्त्या जेमजेमतेसमाववाना उपायकरे तेमतेम घृतादिकनेप्रयोगें अग्निअधिक वृद्धिनेपामे तेदेखीवली प्रधानेकह्युंजे हेमुर्खो पाणियें करी निवारवायोग्यअग्नितेहने घृतादिकनुंसीचवुंकरीने सीरीतेसमाविसकशो तोपण उ न्मत्तनीपरें तेप्रधाननावचनने निंदताथका फरीतेमजकरवालागा एहवामांहुंपण म हाराभाग्यनाबलथकी मंत्रीनोवचनप्रमाणकरी बलताघरनेमूकीमंडलमांपेठो एमजे पुरुषें मंडलनो आश्रयकर्यो तेतोबल्यानही अनेजे प्रधाननावचनअवगणीने मंडल थीबाहेररह्या तेपुरुषसर्वे बलीने भस्मभूतथया तेदेखीने मनेवैरागउपनुं तेहथीव्र तआदर्युं एकारणहतुं तेतुजनेसंभलाव्युं.

एहवासाधुना वचनसांभलीने लीधोछेपरमार्थजेणे एहवोअकलंककुमर हर्षवंत थको तिहांथीउठीने बीजामुनिराजने सन्मुंखजाताथकां मार्गमांमनेपुछयुंजे हेघनवा र श्रासाधुनावचनथी तेंकांइपणभावार्थजाएयुं मेंकह्युंहुंतो कांइपणतत्वपाम्योन ऌवारेवारेंअकलंकेंकह्युं हेमित्र हुंएहनोभावार्थकहुंछुं तेतुंसांभल.

१ पोतसंसाररूपनगर तेहांमोहमयरात्रजाणवी तेमांराग अने द्वेषनापरिणामरूप हवेहावी बलीतामसभावरूप धुमामाजाणवा रजोगुणस्वभावरूप अग्निनीज्वा लामांराजाणवी सोलकषायरूप बालकोजाणवा माठिलेश्यारूप स्त्रीउंजाणवी अज्ञान . . . . पांगला आंधला नपुंसकरूपप्राणीजाण

वा इंद्रियोरूपचोरजाणवा तेनुकृतरूपइव्यनेमुसाडेछे पाखंमादिकोरूप धूर्त्तजाण वा तिहांतीर्थंकररूप प्रधानजाणवो ते तीर्थरूपमंमलवनावी देशनारूप शब्देकरी लोकोने बोलाविने तीर्थरूपमंमलमां बेसवानो आग्रहकरेछे तेमांकेटलाएक कल्या णनावांछनार एहवा साधु साधवी श्रावक श्राविकारूप तेतो तीर्थरूपमंमलने आ श्रयीने अग्नियेंकरीरहितथायछे अनेबीजातो मोहनो उन्माद तेहनापरवशपणाथ की रागरूपअग्निने कामजोगादिक घृतनीधारायेंकरी सिंचेछे तेवापुरुषरागरूप अग्नि यॆंकरी जस्मनूतथायछे.

एहवाअकलंकना वचनसांजलीने मेंतेहनेकह्युंहेमित्र मुनितो वांकीयुक्तियेंकरीक हेछे तेताहराकहेवाप्रमाणेजहशे एमतें शीरीतेंजाण्युं तेवारेंअकलंकेंकह्युं हेजाइ मु नितोरुडीरीतेंकहेछे पणतुं अज्ञाननावलथकी एहनोजावार्थजाणतोनथी इत्यादिक वात करतायका बीजामुनीने पासेंगया तेहनेनमस्कारकरीने अकलंके वैरागपाम वानुं कारणपुछ्युं तेसांजलीमुनिराज बोल्या हेकुमर महारावैरागनुंकारण सांजल.

हुंमदिराशालामां मदिरानोपानकरतोहतो तेहांमने एकब्राह्मणें समजाव्योथको वैरागपामिने व्रतआदर्युं एमसांजली अकलंकेकह्युंजेहेजगवान एतमारोव्यतिकर अमनेविस्तारसहितकहो तेवारेंमुनिकहेछे.

अनंतामदिरायेंकरी संकीर्ण एहवी कामांधनामेंशाला तेविचित्रप्रकारना मदिरा येंकरीपरिपूर्ण तेमांलोकमदिरापिधेथके केटलाक पृथ्वीयेंलोटेछे केटलाकवलीजीने करी कांइक आस्वादनकरेछे केटलाक नाशिकायेंकरी कांइकसुंगेछे केटलाकनेत्रेकरी कांइकदेखेछे केटलाकवलीकानेकरी कांइकसांजलेछे एमकेटलाक एकजविषयप्रतेंसे वेछे केटलाकवली बे त्रण चार अथवाकेटलाकवली पांचेविषयोने समकालेंसेवेछे एरीतेंते मदिरायें विटंबितथका केटलाकस्त्रीनेकंठेवलगेछे केटलाकनाचेछे केटलाक हंसेछे केटलाककूदेछे एमविचित्रप्रकारनी चेष्टाकरतायका जमताहता.

तेमांहुंपण विविधप्रकारनीचेष्टाकरतोहतो मदिरानापरवशपणाथी चोरीकरुं प रस्त्रीहरण इत्यादिक अनेक अन्यायोप्रतें करतोथको विचित्रप्रकारनी कष्टरूपकद र्थना अनुजवतोहतो एकदिवसें ब्राह्मणेमने करुणानापात्रजेवोदेखीने प्रतिबोधदी धो महोटाप्रयत्नेकरी प्रतिबोधीने ब्राह्मणकह्यो तेवारपछि अनुक्रमेंवलीहुं साधुथयो हजीपणतेमदिरानुं अजीर्णपणुं मनेविद्यमानछे पणगुरुनोकह्यो औषधसेववाथीते नाशपामसे एमहारावैरागनुं कारणछे.

एवृत्तांतमुनीनामुखथी सांजलोने वैरागनोविकस्वरपणोउपनो तेहथी अकलंक

नुरोधथकी तेह्वांवेगो ह्वेअकलंकें साधुनेपुछ्युंजे हेस्वामि तमोनेशोवैरागनुं कारण हतुं जेथकीतमो आवायौवन अवस्थामां व्रतअंगीकारकर्युंछे तेसांजली मुनिराजवो ल्याजे हेकुमर हुं तुजने महारो वैरागउपजवानुं कारणकहुंछुं ते सांजल.

हुंलोकोदरनामे गामनोवसनार कुलपुत्रहतो तिहांएकदारात्रें अग्निनीलायलागी तेहथीविकराल ज्वालाओप्रगटथयी तेह्नाधुमाडाथी नगरसर्वढंकाइगयुं तेणेकरी नगरनासर्वलोक आकुलव्याकुलथया अने स्त्रीबालकादिकोनो कोलाहलशब्द प्रवर्त्त्यों तिहांपांगला आंधला नपुंसकादिक घणाकमनुष्यबलताथका पोकारकरवालागा.

लोकोनोधनलेइने चोरलोकोये घणालोकोने मुसाडया धूताराअने लुंटनाकरनार घणाहर्षवंतथया तेअवसरें प्रधाने पोतानावचननी शक्तियेंकरी चोतराविषे एकमंमलआलेखीने नगरनासर्वलोकनेबोलावी कह्युंके अहोनाइयो तमेआमंमलमांआवीनेशो इहांतमनेबलवानीधास्ती बिलकुलनथी तेसांजलीने केटलाकलोकतोते मंमलमांजइवेग.

अनेबीजातो उपना उन्मादनीपरें प्रधाननुंवचन अवगणीने तृण काष्टघृतादिकेंरी अग्निसमाववानेअर्थे प्रवर्त्त्या जेमजेमतेसमाववाना उपायकरे तेमतेम घृतादिकनेप्रयोगें अग्निअधिक वृद्धिनेपामे तेदेखीवली प्रधानेकह्युंजे हेमुर्खो पाणियेंकरी निवारवायोग्यअग्नितेह्ने घृतादिकनुंसीचवुंकरीने सीरीतेसमाविसकशो तोपण उन्मत्तनीपरें तेप्रधाननावचनने निंदताथका फरीतेमजकरवालागा एह्वामांहुंपण महाराजाग्यनावलथकी मंत्रीनोवचनप्रमाणकरी बलताघरनेमूकीमंमलमांपेगे एमजे पुरुपें मंमलनो आश्रयकर्यो तेतोबच्यानही अनेजे प्रधाननावचनअवगणीने मंमलथीबाहेररह्या तेपुरुपसर्वे बलीने नस्मनूतथया तेदेखीने मनेवैरागउपनुं तेहथीव्रतआदर्युं एकारणहतुं तेतुजनेसंजलाव्युं.

एह्वासाधुना वचनसांजलीने लीधोछेपरमार्थजेणे एह्वोअकलंककुमर हर्षवंतथको तिहांथीउठीने बीजामुनिराजने सन्मुखजाताथकां मार्गमांमनेपुछ्युंजे हेनवाह्ने आसाधुनावचनथी तेंकांइपणलावार्थजाएयुं मेंकह्युंहुंतो कांइपणतत्वपाम्यो नथी तेवारेंअकलंकेंकह्युं हेमित्र हुंएह्नोभावार्थकहुंछुं तेतुंसांजल.

आसंसाररूपनगर तेहांमोहमयरात्रजाणवी तेमांराग अने द्वेपनापरिणामरूप अग्निजाणवी वलीतामसनावरूप धुमाडाजाणवा रजोगुणस्वनावरूप अग्निनीज्वालानो समूहजाणवो सोलकपायरूप बालकोजाणवा मातिलेश्यारूप स्त्रीउजाणवी अने अव्रति अज्ञान तत्ववर्जितपणुं तेरूप पांगला आंधला नपुंसकरूपप्राणीजाण

वा इंद्रिओरूपचोरजाणवा तेसुकृतरूपद्रव्यनेमुसाडेछे पाखंमादिकोरूप धूर्त्तजाण वा तिहांतीर्थंकररूप प्रधानजाणवो ते तीर्थरूपमंमलबनावी देशनारूप शब्देकरी लोकोने बोलाविने तीर्थरूपमंमलमां बेसवानो आग्रहकरेछे तेमांकेटलाएक कल्या णनावांछनार एहवा साधु साधवी श्रावक श्राविकारूप तेतो तीर्थरूपमंमलने आ श्रयीने अग्निथेंकरीरहितथायछे अनेबीजातो मोहनो उन्माद तेहनापरवशपणाय की रागरूपअग्निने कामजोगादिक घृतनीधारायेंकरी सिंचेछे तेवापुरुषरागरूप अग्नि येंकरी जस्मजूतथायछे.

एहवाअकलंकना वचनसांजलीने मेंतेहनेकह्युंहेमित्र मुनितो वांकीयुक्तियेंकरीक हेछे तेताहराकहेवाप्रमाणेजहशे एमतें शीरीतेंजाण्युं तेवारेंअकलंकेंकह्युं हेनाइ मु नितोरुडीरीतेंकहेछे पणतुं अज्ञाननाबलथकी एहनोजावार्थजाणतोनथी इत्यादिक वात करताथका बीजामुनीने पासेंगया तेहनेनमस्कारकरीने अकलंके वैरागपाम वानुं कारणपुछ्युं तेसांजलीमुनिराज बोल्या हेकुमर महारावैरागनुंकारण सांजल.

हुंमदिराशालामां मदिरानोपानकरतोहतो तेहांमने एकब्राह्मणें समजाव्योथको वैरागपामिने व्रतआदर्युं एमसांजली अकलंकेकह्युंजेहेजगवान एतमारोव्यतिकर अमनेविस्तारसहितकहो तेवारेंमुनिकहेछे.

अनंतामदिरायेंकरी संकीर्ण एहवी कामांधनामेंशाला तेविचित्रप्रकारना मदिरा येंकरीपरिपूर्ण तेमांलोकमदिरापिधेथके केटलाक पृथ्वीयेंलोटेछे केटलाकवलीजीने करी कांइक आस्वादनकरेछे केटलाक नाशिकायेंकरी कांइकसुंगेछे केटलाकनेत्रेकरी कांइकदेखेछे केटलाकवलीकानेकरी कांइकसांजलेछे एमकेटलाक एकजविषयप्रतेंसे वेछे केटलाकवली बे त्रण चार अथवाकेटलाकवली पांचेविषयोने समकालेंसेवेछे एरीतेंते मदिरायें विटंबितथका केटलाकस्त्रीनेकंठवलगेछे केटलाकनाचेछे केटलाक हसेछे केटलाककूदेछे एमविचित्रप्रकारनी चेष्टाकरताथका जमताहता.

तेमांहुंपण विविधप्रकारनीचेष्टाकरतोहतो मदिरानापरवशपणाथी चोरीकरुं प रस्त्रीहरण इत्यादिक अनेक अन्यायोप्रतें करतोथको विचित्रप्रकारनी कष्टरूपकद र्थना अनुजवतोहतो एकदिवसें ब्राह्मणेमने करुणानापात्रजेवोदेखीने प्रतिबोधदी धो महोटाप्रयत्नेकरी प्रतिबोधीने ब्राह्मणकह्यो तेवारपछि अनुक्रमेंबलीहुं साधुथयो हजीपणतेमदिरानुं अजीर्णपणुं मनेविद्यमानछे पणगुरुनोकह्यो औषधसेववाथीते नाशपामसे एमहारावैरागनुं कारणछे.

एवृत्तांतमुनीनामुखथी सांजलीने वैरागनोविकस्वरपणोउपनो तेहथी अकलंक

कुमर जातिस्मरण ज्ञानपाम्यो पछेकह्युंछे नाइधनवाहन एउपदेशसांजलीने तेंकांइ एनोजावार्थजाण्युं तेवारेंमेंकह्युं हुंतोकांइपण जावार्थसमज्योनही.

तेवारें अकलंककहेछे सांजल हेजाइ संसाररूप महोटीमदिरानी शालाजाणवी तेमांअनंतासंसारीजीव मदिरानापीवावालाजाणवा अनेआठप्रकारना कर्मनासमूह तेरूपमदिरानाअंगजाणवा तथाकषायरूप तेमदिरानोरसजाणवो तेमां घातिकर्मनी प्रकृतिरूपमदिरा अनेआयुरूप पात्रजाणवुं तथाशरीररूप प्यालाजाणवा पछिते मदिरापीथायकी तेप्राणी विविधप्रकारनी कुचेष्टाकरेछे एकेंद्रियादिकथी पंचेंद्रियना नवपर्यंत एकनीआदिथी मांमीने पांचविषयोलगण यथासंजवपणेसेवेछे.

हवेतिहां मद्यशालामां तेरप्रकारनालोकछे तेहनानामकहेछे १ असंव्यवहार सूक्ष्मनिगोदीनामें बीजा व्यवहार साधारणवनस्पतिरूप बादरनिगादनामें एपण सूक्ष्मवनस्पतिकाय जाणवा त्रीजा पृथ्वी अप्प तेउ वाउ अनेबादरवनस्पतिरूपजाणवा चोथावेइंद्रियजाणवा पांचमातेइंद्रियजाणवा छहाचौरेंद्रियजाणवा सातमा असंज्ञीपंचेंद्रियजाणवा आठमांनारकीजाणवा नवमांसंज्ञीपंचेंद्री तिर्यंचजाणवा दसमांमनुष्यजाणवा इग्यारमांवली निःकायथीउपना चारनिकायना देवता जाणवा बारमां ब्राह्मणतेसाधुजाणवा तेरमां मदिरायेंवर्जित सिद्धनाजीवजाणवा.

इहांएसाधुते तेरप्रकारनालोकमाहेना पहेलालोकनेमांहे अनंताअनंतकालसुधी नवितव्यतानावशथकीभ्रमणकरी तेवारपछि तेहांथी निकलीने बीजादसप्रकारनालोकनेविषे अनंतोकालरही घणाप्रकारनी विटंबनाओ अनुनवीने वली तिहांथीनिकलीने बारमाजेदनेविषे चारित्रना अध्यवसायपामिने तेवारपछि एसाधुतेपोतानी शुनदशानेवशें बारमांजेदनाजीवजे साधुतेएहनेमल्या तेणेएसाधुने संसाररूपमदिरानी शालानास्वरूपने रुमीरीतेंसमजावीज्ञानमार्गे तथाक्रियामार्गेस्थापीने दीक्षादीधी अनेसमनावरूप औषधनासेववाथी शेषघातिकर्मरूप मदिरानुं अजीर्णपणुंहतुं एएहनोनावार्थजाणवो हेअगृहीतसंकेता तुसांनल एरीतें जातिस्मरणज्ञानावसथकी तात्पर्यार्थेंकरीने अकलंककुमरें मुजनेरुडीरीतेंसमजाव्यो तोपणमेंकांइ सर्द्दह्योनही.

वलीत्रीजामुनिराज पासेगया तेहनेनमस्कारकरी अकलंककुमरेंपुछयुं जेहेस्वामिन तमारावैराग्यनुंकारणननेकहो तेवारें मुनिराजबोल्या जेअरहट्टनुंदेखवुं तेमहारुंवैराग्यनुंकारणजाणवुं एहवुंसांनली हांस्यकहसितपइ फरी अकलंककुमरें तेहनोनावार्थपुछ्यो मुनिराजकहेछे हे कुमरतुंसांनल.

संसाररूप अरहट्टनिहां राग द्वेष चित्तनांनाव अनेमिथ्यात्व एचार दंतोजाणवा

अने महामोहनामे राजाते पोतेकर्षणीनो स्वामिहलनोधणीजाणवो हवेते अरहट्टने फेरववावास्ते चारापाणी इत्यादिकें वर्जितथका सोलकषायरूप सोलबलदो निरंतरव हेछे अने तिहांहास्य शोक नयादिकते कामनाकरनारजाणवा तथा रति अरतिइत्या दिक अव्रतिजलेंरूप परिपूर्ण तेअसंयमनावेंकरी जीवितव्यरूप कुवोजाणवो तेमां जीवनासमूहरूप घटीनुंयंत्र जाणवुं तथा डुष्टयोग अनेप्रमाद एवेतुंबा जाणवा अनेसंविभ्रमपणुं तथाविलासपणुं इत्यादिकएहना आराजाणवा मरणनामे पा णीनोकाढनारोजाणवो एदूरथीपण विवेकिपुरुष जाणेछे मिथ्यानिमान एहवेनामे रेंटनीकुंडीजाणवी आत्माने अज्ञानरूपजे मलिनतानाव तेजलनीग्रहणकरना री परनालिकाजाणवी क्लेशेंकरीसहितचित्त तेरूपखालजाणवी नोगनीवांछातेरूप पाणीनीनीक जाणवी जन्मनीपरंपरा तेखेत्रजाणवुं एकजन्मथी वीजुंजन्मपामवुं ते रूपकीयाराजाणवा तिहांजीवपरिणाम नामें धानतुं वावनारोपुरुषजाणवो कर्मरूप वीजजाणवुं वली असत अने अज्ञाननामेचारकते पाणीपीवरावेछे तेथकीडुःखरूप धाननीपजे एहवाप्रकारना क्षेत्रमांहुंसुतोहतो तेवारेंएसूर्यसरिखामारागुरुयें मनेजा ग्रतकरीनेकह्युं जेहेअजाणतुंहिजआखेत्रथीउपनुं जे डुःखरूपधान तेहनाफलनो नोगवनारथयीस तेमाटेसावधानथयीने तावमतोत्र एअरहट्टनास्वामिपणानो त्याग कर तेसांनलीने मनेवैरागउपनुं तेथीकरी मेंतेहनो ममत्वनावमूकीने व्रतआदखुं छे एहवुंसाधुनामुखथी सांनलीनेहुंतो शून्यचित्तवंतथयो अने अकलंककुमरतो उ त्कृष्टवैरागनेपाम्यो.

वलीचोथासाधुने नमस्कारकरी तेहना वैरागनुंकारणपुछयुं तेवारेंसाधुकहेवा लागा के जिहां अनंताठोकराओवशेछे तिहांहुंपणवशतोहतो एकदिवसें महाराकु टुंबनूत पांचमाणस तिहांआव्या पणतेतो साक्षात् वैरीसरिखाहता पणमेंतेमने हि तनाकरनारकरीमान्या पछेएकदिवसेंते कुटुंबीपांचेजणना आग्रहसहित सर्वछोकरा ओने नोजनकराव्युं तेनोजननावशथकी अमेंसर्वे चैतनेकरिविकलथया पछेज्ञानीमा फक प्रवर्त्या वलीविचित्रप्रकारनी कुचेष्टाकरवारूपजे सन्निपातते वृद्धीनावनेपाम्यो धरथरो ताप सीतादिकथया सर्वनागजारुंधाइगया जीव्हापेंकंटकथया तेवारपछे नवितव्यतानेवलेंकरी तथाविधमाठी अवस्थावंत मुजनेदेखीने आमहात्माभहा रागुरुतेणे औषधदेइने मनेसज्जकस्यो वलीकह्युंके जेमएगरिवो विषरूपजोजनथकी सर्वेकष्टने अनुनवेछे तेमतुंपणएहवीज हालतमांहतो पणमें औषधनावलेंकरी तुजने सावधानकस्यो तेमाटे आजथीमांमीने एकुटुंबनो विश्वासकरजेनही हजीप

एकांइक अजीर्णयीउपनुं संन्निपातछे तेमाटेमहारूंकहेलुं औषधसेवतोरहेजे एहवुं गुरुनुंवचनसांजली वैरागपामिने मेंव्रतअंगिकारकर्युं एहवुंसाधुना मुखथीसांजलीने तेहनोनावार्थ अकलंककुमर मुजने कहेवालागो.

संसाररूपमठ तेमांजोखदनाखीलानीपरें माहोमांहेअसंबंधेंमिलेला सर्वजीव तेरू पछोकरा तेमां १ प्रमाद २ अविरति ३ मिथ्यात्व ४ कषाय ५ योगएनामे एपांच मनुष्य कुटुंबीजाणवा जोएपांचेवैरीनूतछे तोहेपणमोहनावशथकी जीवएहने हित कारीकरीमानेछे तेहनुंदीधुंजे कर्मरूपनोजन तेणेकरी स्वनावेंविकलकथा अने अनानिगृहीतमिथ्यात्व तेरूपसन्निपातें पीमाणाथकां एकेंद्रियादिकनेविषें भ्रमणक रतुंते विविधप्रकारनी चेष्टाजाणवी.

केटलाकवली मागोथ्याजिनिवेशक मिथ्यात्वनाउन्मादे पीडयाथका उत्सूत्रप्ररूप णारूप पर्यरादिकेंपीडायछे एहवाप्रकारनुंछुं तेहने नवितव्यतानावशथकी गुरुरूप वैद्य तेणेसम्यक्त्वरूप औषधनाप्रयोगेंकरी सचेतनावंतकरीने सर्वप्राणीना कर्मनाउ न्मादनुं यथार्थस्वरूपकह्युं वलीकर्मरूपअजीर्णनो नाशकरनार एहवुं संयमरूप औषधदीधुं एनावार्थेअकलंके कह्युंते सांनलीने मेंतेमांथीकांइपण अवधार्युंनही.

हवेपांचमामुनीने आगलजइनमस्कारकरीने अकलंकेवैरागनुंकारणपुछ्युं तेवारेते मुनि कहेछे जेहेराजपुत्र सांजल गुरुनीकहेली विचित्रप्रकारनी देखामवामयीएककथा सांनलीने हुंवैराग्यपाम्यो तेथीमें व्रतग्रहणकर्युं तेकथाहुंतुजनेकहुंछुं.

वसंतपुरनगरनारहेवासी १ चारू २ योग्य ३ हितज्ञ ४ मूढनामेंचारवाणिया हता तेइःमेंतरवायोग्यसमुद्रने रूमीपरेंओलंगीने रत्नउपार्जनकरवानेअर्थे रत्नद्वी पप्रतेंपाम्या तिहांचारूतोपोतें रत्नपरीक्षानेविषे निपुणहतो निरंतरउद्योगेकरीनेघणा बहुमूला रत्नने उपार्जनकरवालागो अनेजे योग्यनामावाणियोहतो तेतो रत्ननीप रीक्षाप्रतें जाणतोयकोपण क्रीडानोविनोदपणुं तेहनाउपर आसक्तथको घणोका लतहनांज रूपकरतोहतो तेहथी थोडाकरत्नोउपार्जनकरतोहतो अनेहितज्ञनामा त्रीजोवाणीयोतेतो पोतेरत्ननीपरीक्षानजाणे तथावलीक्रीडामां आसक्तथको थोडो उद्यमकरे पणपरीक्षानजाणे तेहथी धुत्तारादिकेंकरी ठगाणोथको केटलाककाच नेज मणिरत्ननीबुद्धियेंकरी लेवालागो अनेचोथोजे मूढनामेंवाणियोहतो तेतोपोते परीक्षापणचित्तहून करीशकेनही वलीव्यापाररूप उद्यमपणकरेनही केवलभूता रादिकोमांये नेत्रोथको कालगमावतोहतो.

हवेचारूयेंनो थोडाकालमां घणारत्नउपार्जनकरवानी प्रेरणापाम्योथको कौतुक

दिकनी आसक्तिनावमूकीने आर्जवरूप उद्यमकस्यो तेणेतोकेटलेककाले रत्ननाढग लाउपार्जनकरीने महानंदनगरेंजयीने सुखजोगववालागो.

वलीयोग्यनामावीजोवाणियो तेणेपणरत्नतो मेलव्यापण क्रीमादिकमांगमाव्या फरीचारुनाकहेवाउपरथी सारीपठेव्यापारनो उद्यमकरी रत्नपेदाकरी तेपणमहानं दनगरेपहोतो अनेहितज्ञेपण घणाककालसुधीतो कांचमणिनेसंग्रह्या पणअंतेंकां चनुंस्वरूपजाणवाथी अणकरवायोग्यकार्य मेंकर्युंएमविचारी तेणेकरी खेदवंतथ योथको चारूपासेथीकोइकरीतें रत्ननीपरीक्षासीखीने वलीमहोटोउद्यमकरी रत्नउपा र्जनकरीने महानंदनगरेजयी पहोतो तिहांसुखजोगववालागो.

अनेमूढनामा चोथोवाणीयोतो धुतारादिकोनीसोबतमां आसक्तथयी चारूनीहि तशिक्षाने नमानतोथको विचित्रप्रकारना अकार्यकरवालागो तेहनेराजायें घणीवि टंबनाथ्योकरी जेहनोपारपामियेंनही एहवासमुद्रमांहेनाख्यो तेहथीघणाकालसुधी दुःखनोजोगवनारथयो एहवोसाधुनीकहेली कथासांजलीने अकलंकमनेकहेवाला गोजे हेजाइयनवाहन एकथानोजावार्थसांजल.

सूक्ष्मनिगोदरूप वसंतपुरनगरजाणवुं तिहांविचित्रप्रकारनी जवितव्यतायें यथा र्थनामें चारप्रकारनाजीवोकह्यां तेचारवाणीआजाणवा अनेसंसारनोविस्ताररतेरूप स मुद्रजाणवो अनेमनुष्यजवरूप रत्नद्वीपजाणवुं नानाप्रकारनाविषयते कौतुकोनास्था नकजाणवा तेमांधूतारारूप कुतीर्थजाणवा अनेकुधर्मरूपकांचमणीजाणवा अनेत त्वज्ञानते रत्ननीपरीक्षाजाणवी वलीज्ञानदर्शनचारित्रादिकोने जिनोक्तधर्मरूप वाह णजाणवुं अने मोक्षरूपनगरते महानंदनगरजाणवुं वलीकर्मपरिणामतेराजाजाणवो तेमां चारुनामेव्यापारीतेरूप स्यानकवंतसाधुजाणवा ते तत्वज्ञानेकरी ज्ञानादिकर त्नउपजावे अनेजिनधर्मना आश्रयथकी मोक्षप्रतेपामे तेमज योग्यनामाव्यापारी रूप स्यानकवंत ते श्रावकजाणवा तेविषयप्रमादादिकनेविषे आसक्तछे पणसाधुने वचनेकरी तत्वज्ञानपामि विषयादिकनो आसंगोमूकीने महायानंदनगरनेपामेछे.

अनेजेनद्रकपुरुषो तेतोहितज्ञरूप स्थानकवंतजाणवाते विषयादिकें आसक्त थका किवारेंक धर्मरूपउद्यमने कोइकरीतेंपामे पणकुतीर्थियेंठग्याथका तत्वज्ञान थीविकलथका मार्गधर्मनेउपजावी अणकरवायोग्यकार्यनाकरनारथका कोइवारेंपण साधुनेवचनेकरी तत्वज्ञानपामीने घणेकालेंपणपोताना अर्थनेसाधेछे तथावली अ नव्यजीवो अने बहुलनविजीवोते मूढस्थानकियाजाणवा तेकेवल विषयादिक नेविषे आसक्त व्यसनादिकमां तत्परहोय तेणेकरी शोकडागमें अकार्यकरे अने दि

तोपदेशश्रापनारउपरें देषधरे तेश्रोने कर्मपरिणामनामेराजाते दुःखेंतरवायोग्य संसारसमुद्रमांनाखेठे.

जोपणएहवाजीवोने किवारेक कोइकरीतें द्रव्यसाधुपणुं श्रथवा द्रव्यश्रावकप णुं उपजे तोपण तत्वनीसद्दहणानहोय माटेसमस्तप्रकारें नवाजिनंदियका मोक्ष रूपपुरुषार्थेनेनसाधे एहवोजावार्थसांजलीने मेंकांइकपरमार्थेलीधो पठेक्षणमात्र ते हना श्रास्वादने श्रास्वादनकरीने वली शून्यचित्तनीपरेंवेठो.

तेवारपठिश्रमें उहामुनीश्वरपाशेजयी नमस्कारकरीतेमने श्रकलंककुमरें वैराग्य पामवानुं कारणपुठयुं तेवारेंमुनियेंकह्युं हाटनीश्रेणीनुंदेखवुं तेहिजमाहारुं वैराग्यनुं कारणछे फरीश्रकलंककुमरें तेहनोजावार्थपुठयो तेवारेंमुनिकहेवालागा सांजलहेम हानाग्यवंतपुरुष.

संसाररूपनगरमां जन्मनीपरंपरारूप हाटनीश्रेणीजाणवी तेमांजवजंतुरूप वा णीपोजाणवो वलीसुखश्रने दुःखनाजेदेंकरी जूदाजूदा विचित्रप्रकारना क्रियाणाजा णवा पुन्यश्रने पापरूपक्रियाते क्रयवक्रयपणुंजाणियें एम पुन्यपापरूप क्रयवक्रय करतेथके केटलाकलाजनेपामेठे केटलाकजेटलो गांठमांद्रव्यछेतेटलोजराखेछे लान खोटपामतानथी श्रने केंटलाकहारीजायछे तेनगरनोमाहामोहनामे रखवालोछे श्रनेकामक्रोधादिक तेहनासेवकछे तेकारणविनापण लोकोनेविटंबनाकरेछे.

हुंपणतिहांनोज रेयासीवाणीयोहतो तेएकदिवसें एमहारोगुरु तेणेसम्यक्रूप पोगानंनने प्रयोगेंकरी मार्गदेखाडीने मने पोतानामठनेविषे लाव्यो श्रनेहाटनीश्रे णीनुं श्रसारपणुंमनेजाणव्युं पछे श्रनंतसुखनाघरसरिखी मोक्षरूपमंदिरेंपहोंचाड नारी एहवीदीक्षामने गुरुयेंश्रापीने कह्युंजे पंचेंद्रियरूप गोखनीजारीने रुडीपरेंगव वायो एदीक्षाते तुजने महाश्रानंदनी करनारीथाशे माटेएदीक्षाते जेम कषायरूप उंदरेंकरी नसायनही श्रने नवनोकषायरूप विछियेंकरीपीडायनही तथाश्राहार संज्ञा दिकरूप बिलाडीयेंकरी एहनोपराजवनथाय वली रागद्वेषरूपसुश्ररेंकरी (डुकरेंकरी) उपद्रवनथाय महामोहरूप जंगलीबिलाडो (जंगबिलाडो) तेणेकरीनखवाय परिसह रूप दांसा श्रनेमछर तेणेकरीनदंसाय ठुष्टानिप्रायादिक मांकण तेणेकरीपीडायन ही चिंताकरूपगरोलियेंकरी व्याकुलवंतनथाय प्रमादरूपसरडायेंकरी पराजवनपामें वली श्रविरतिरूपवहुं (लीख) तेणेकरी विटंबनानपामे तथा मिथ्यात्वरूपतिमिरेंकरी श्रांधलीनथाय एहवीरीतें यत्नकरीएदीक्षानेतुंराखजे

एवुं महाजंउपद्रव तेउपद्रववंतपणोजेहोयते वेदनायेंव्याकुलवंतपणो पंचेंद्रि

यरूपगोखना वारणाथीनिकलीने रौद्रध्यानरूप अग्निकुंमनेविषे अथवा आर्त्तध्यान रूप महोटाखाममांजयीपडे

वलीआशरीररूप ओरमाने पांचेंद्रियरूपगोखछे तेएकेकागोखनावारणामां एके कविषनोवृक्षछे तेजेजेवारें जीव वृक्षने सुंगेछे अथवादेखेछे स्पर्शकरेछे सांजलेछे ते तेवारें एजीव तेहनाविषथकी मूर्छितथको महोटीआपदानेपामेछे माटेविषवृक्षथ की जीवने दूरजराखवुं एहवुंसांजलीने अकलंकेंकह्युं हेस्वामितमे एमनरूपवांदराने राखवानोउपाय घणुंरुडोकह्यो केमके नवांतरेंपणमुजने महारागुरुराजें मनरूपवां दराने राखवानोउपाय एमजकह्युंहतो एहवुंकहिनेवली जातिस्मरणज्ञानेकरीजे पूर्व लेजवेंचारित्रनोमार्गआदर्योहतोते सर्वएनेजाणवामांहतुं तेप्रमाणेसर्ववृत्तांत गुरुआ गलेंकहीसंजलाव्यो मुनिराजेपण एजरीतेंप्रमाणकरीने फरीगुरुकहेवालागाजे.

हेमहाजाग्यवंत वलीपणमहारेगुरुयें मनेकह्युंछेतेप्रमाणे तुजनेकहुंवुं तेसांजल आ शिवालयनामामठनेमार्गें शरीररूपघरनेविषे कृष्णलेश्या नीललेश्या कापोतलेश्या एत्रणदासीने तेमनरूप मांकडाने डुःखनीदेवावालीने अनेएत्रणेजो मनरूपमांकडा नी परिचर्याकरनार करियें तोएमांकडानेंसर्वउपड्रवना घरसरिखीथाय तेमजवली तेजु पद्म अने शुक्ल एत्रणलेश्यानामे त्रणदासीओते एमनरूपमांकडाने हितनीकरना रीने तेमाटेएहिज एहनारक्षणनेअर्थे थापवी.

हवेतेलेश्यारूप दासियेंज शिवालयनामामठना स्वामिपणानेअर्थें देहरूपअत्यंत रयरमां परिणामनामा एकनिश्रेणीकरीने तेणेकरीउपरचडायछे तेदाघराना वली ते लेश्यायेंज चित्तअध्यवसायस्थानक एहवेनामे असंख्याता पगथीआरूप पाटीआक र्याछे तेमांप्रथमनीत्रणलेश्यानाकरेला पगथीआनीश्रेणीयें चडतेयके एमनरूपवांद राने पूर्वोक्त विविधप्रकारनाउपड्रवेंकरी पराजवथायछे तेउपरेंवली तेजुलेश्यादिक त्रणलेश्यानीकरेली पगथीआनीश्रेणीनेविषे जेमजेमउपरेंचढे तेमतेम विषयरूप वि षयप्रवेशनो चपलतापणुं निवर्त्तिपामे क्षयथाय.

वलीपूर्वेनाउपना कर्मरूपरोग तेरूपसमस्त उपड्रवो तेधर्मध्यानरूप शीतलवायु ति हांआवेछे तेहनाफरसवायकी क्षयथाय वलीतिहां शम दम संतोष संयम सद्बोधादि क वांदरायेंशोजित एहवी धृति श्रद्धा सुखाशिका विविदिषा जाणवानीइच्छा विज्ञप्ति स्मृ तिवुद्धि क्षमादिक वांदरियें शोजित धैर्य वीर्य शौर्य गांजीर्य ज्ञान दर्शन तप सत्यादिक अनेकनानामर्कट तेणेकरी संकीर्ण एहवोविशुद्धधर्मनामे एकमहोटोवांदरो रूडोमहो टो घणावांदरानुं एकयूथराखेछेने तेयूथआवे तेवारें तेहनोसायेंजातोयको एमनरू

प्रमाकडोपण. उपद्रववर्जित शुक्लध्यानरूप चंदननेठांटणेकरी कर्मरूपरोगने नाशप माडे पठेसुखेकरी उंचापगथीआउपरसीघ्रपणेचडेठे तेमाटेएकदेशमार्गेकरी मनरूप मरकटनेयत्नेकरी उंचपदप्रते पामतोथको तेहनीसाथेंतुंपण तेस्थानकप्रते आरोहिस.

तेवारपठे तेमनरूपमर्कट तथातेवानरानायूथनेवली तिहांजमूकीने शैलसीकर णनामें ठेकडेकरीठेकीने अनंतआनंदमय शिवालयनामे मठमांजइयें एहवोगुरुयेंमने मार्गकह्योठे माटेहमणांहुं मनरूपमर्कटनो राखवुंकरुंछुं एहवुंसाधुपासेथी सांभली ने अकलंककुमरें मने अनुग्रहबुध्धियेंकरी रूडीरीतें तेहनोभावार्थजणाव्यो हवेएवख तेजेथयुंते हेअगृहीतसंकेतातुं उपयोगदेइने सावधानथइ सांभल.

पूर्वेवामदेवनाभवनेविषे बुध्धनामाआचार्यना चरित्रमांहें बुध्धिनापुत्र विचारें क ह्युंहतुंके संयमनेघातकरवाना वैरथकी मोहराजा अने चारित्रधर्मराजा ए वेहुनेयुध्ध थयुं तेवारपठे मोहराजायें चारित्रधर्मराजाने पराभव्योतेथी चारित्रधर्मराजानाशी ने जैनपुरमांजइवेठो पठे पोतानापराजयपणाथी दुःखपामीने चारित्रधर्मराजानी सायें सद्बोधमंत्रीयें विचारकरवामांडयुंजे हवेआपणने शोउपायकरवो पठे पक्षोविचारकरी सद्बोधनामा प्रधानबोल्योजे हेस्वामि संसारीजीवजेठे ते आपणो स्वामीठे तेजिहांसुधी आपणाथीदूरठे तिहांसुधीशत्रुओ आपणने पीडाकरशे पण तमेंकांइविषादकरशोनही केमके हमणांआचित्तवृत्तिनामाजे अटवीठे तेघणीखदे खायठे माटेआपणो स्वामीपणहवे इहांथीनजीकजहशे एमजणायठे.

तोहवेकर्मपरिणामनामेराजानेपुठी कोइकमनुष्य तेहनेसन्मुखमोकलियें केमके तेहनीपासेंघणो जावा आववादिकना परिचयेंकरी तेआपणने रुडीरीतेंउलखसे एह वोसद्बोधनुंवचन अंगीकारकरीने चारित्रधर्मनामें राजायेंकह्युंके आपणा एकसम्य क्दर्शन बीजोसदागम नामा महोटोउत्तमप्रधान एवेप्रधान घणानीतिमांनिपुण मा ह्याठे तेमांप्रथमसदागमनेज मूकियें.

जोसदागमनावचनेकरी आपणाविषे रागवंतथाय तोपठेसम्यक्तो महोटोठेते हनेपणमूकवो पणहालतो सदागमनेज तिहांमोकलवोयोग्यठे एहीवोविचारकरी क र्मपरिणामनामे राजानेपुठीने मुजने धनवाहनभवमां रह्योजाणने सदागमने म हारापासेंमूक्यो पठेतेसदागमआवीने महारापासेरह्यो.

हवेसांभलहेभद्रे सदागमना सान्निध्यपणाना अनुभावथकी तेठत्रासाधुनी कहे लीवातसांभलीने अकलंकेमने तेहनोभावार्थकह्यो तेभावार्थरुडीरीतें जाणीनेहुं श्रुत ज्ञानपाम्यो तेथीघणुदर्पवंतथयो पठे अकलंककुमरें मुजनेसदागमने आश्रितजा

णीने तेपणहर्षवंतथयो पछे सर्वसाधुनानायकनूत कोविदनामा आचार्य सातमांम हानुनावने नमस्कारकरीधर्मपुठवालागा तेवारेंगुरुयें विस्तारसहित धर्मनुंस्वरूपकह्युं.
तेसांजलीने अकलंकेमनेकह्युंजे हेजाश्यनवाहनएगुरुपासें समस्तप्रकारेंसदागमवसे ले तेमाटेएमनामुखयकीकोश्कपणश्रुतनोअभ्यासकरियेंतोमहारुंहृदय हर्षवंतथायः
एहवाअकलंकना अनुरोधयकी हुंकोश्कनमस्काराादिक श्रुतप्रतेंजण्यो अनुक्रमेंको श्क इव्यश्रावकना मार्गनाजाणथयो अने अकलंककुमरतो जातिस्मरणेकरी उत्कृष्ट वैरागपाम्यो पछेमातापितानेकहीने श्रीकोविदनामा आचार्यपासेथी संयमआदर्युं.
हवेसदागमेकरीसहित मनेदेखीने ज्ञानावर्णनामेराजा क्रोधपाम्योथको महामो हराजापासेंजयीकह्युंजे जव्यजीवतो सदागमनीसायें मलीगयोडे इत्यादिकवात सां जलीने मोहराजामहाक्रोधवंतथयो वली रागद्वेषादिक तयातेहनी सैन्यानामाणस दोपेकरीपीडित सर्वक्रोधवंतथया हवेसंग्रामनेविषे उद्यमवंत एहवामोहराजाना स र्वमाणसोने निवारीकरीने पोतानोपुत्र रागकेसरीनामेराजा अनेलोजसागरनोजाइ प रिग्रहनामे एबेहुनेसायेलेश्ने मोहराजापोतें महारीपासेंआव्यो मेंपणतेहने पूर्वना परिचयथकी अत्यंत स्नेहनावरकरीराख्या.
एहवामां जीमूतनामें महरोपिता परलोकेंपहोतो तेहनाप्रेतकार्यकरीने पछेहुंरा जाथयो महारीआज्ञाप्रवर्त्तावी हवेसदागमतो मनेएहवुंकहेजे एसर्वपुजलिकसुखते अ नित्यडे धन यौवन राजलक्ष्मीप्रमुखते सर्वक्षणवारमां क्षयथाय माटेएनाउपरमोहकर वुंनही इत्यादिक उपदेशमनेकहे अनेवली मोहराजातो एहवोउपदेशकरेजे हेजाइ घनवाहन इहांतो मनगमता विषयसुखनोगववा कोणेपरलोकदीगोडे वली पुण्य पापादिकोपणनथी जेमचारवाकमतवाला नास्तिक कहेडे.
पिवखादचचारुलोचनेयदतीतंवरगात्रितन्नते॥नहिनीरुगतंनिवर्त्ततेसमुदयमात्रमि दंकलेवरं॥१॥ तथा॥ कालिंगनंभुजनिपीडितबाहुमूलो भुग्नोन्नतस्तनमनोहरमायात क्ष्याः॥निक्षोपवासनियमार्कमरीचिदाहैर्देहोपशोषणविधःकुधियांकचैषः ॥१॥ एरीतें नास्तिकमतनेविषे प्रेरणाकरे तेमजमोहराजानीसायेआवेलो परिग्रहपण संसारइत्या दिकनी वृद्धिनेअर्थे प्रेरणाकरे एमतेत्रणेना जूदाजूदावचनो सांजलीने घणापरिचयप णायकीमोहअने परिग्रह एबेहुनोवचन प्रमाणकर्युं अनेसदागमनुंवचन अवगण्युंपछे तेदिवसथीमांमीने में नमस्कार जाप देवपूजादिक जेसुकृतअनुष्टानहताते मूकीदीधा.
तेवारपछे ज्ञानावर्णिकर्मनामें राजायेंपण मनेआवीआश्रयो तेवारें मागमि त्रोमां आसक्तथयोदेखी मने अयोग्यजाणीने सदागमदूरजतोरह्यो पछे सुपात्रदान

संघनीपूजा साधर्मिनीवात्सल्यता इत्यादिकसर्वशुभकार्यमूकीने हुं केवल अर्थे अनेकाम एवेवर्गमां लुब्धथयो एकदिवसें अकलंकादिक घणाशिष्यंकरी परवस्या श्री कोविदनामाआचार्य तिहांआव्या अकलंकना दारूणपणाथकी हुंवांदवानेअर्थे तिहांगयो तेवारें मोहअने परिग्रहेंकरीआसक्त तथा सदागमेंकरी वर्जित एहवो देखीने अकलंकेमने प्रतिबोधवानेअर्थे गुरुनेदेशनाविषे प्रेरितमानकस्यो तेवारें गुरुपोताना चरित्रनेकहेवेकरी सदागमनुंवर्णन करवालागा.

निश्चयचूतनामा नगरनेविषे मलनिचयनामाराजा तेहनी मलानुभूतिनामेस्त्री तेहना एककोविद अनेबीजो बालिश एहवेनामेबेपुत्रो तेहमां कोविदतो जातिस्मरण ज्ञाननाबलथकी पूर्वपरिचयवंत सदागमने नलीपरें उलखीने परमवांछित बुद्धियेंकरीसेवे तथापोतानाभाइ बालिशनेपण सदागमनागुणकहे पणतेमानेनही हवेएहोने कर्मपरिणामराजायें पूर्वेनवनेविषे श्रुति(बेकान)नामे कन्यापरणावीहति.

एकदिवसें तेकन्यासंगदासेसहित एटलेसांभलवापणारूप दासजेचाकर तेणेकरी सहित मोकलीथकी स्वदेहनामापर्वतना मस्तकनामे शिखरनेविषे बेठिइरह्याछे तेमांते श्रुतिनामास्त्रीनेतोराखी पणसदागमनावचनथकी संगदासने अधमजाणी कोविदेंतो संगदासने दूरकस्यो पण बालिशायेंतो संगदासनेपणराख्यो तेवारपछि कोविदतो शुभ अशुभशब्दनाभेदनेविषे संतोष तथा द्वेषपणुंराखेनही अनेबालिशतो संगदासने आसक्तथको अनिष्टशब्दउपरद्वेषराखे तथाइष्टशब्दउपरप्रीतिराखे.

एकदिवसें तुंगशिखरनामे बाह्यपर्वतनेविषे कोविद अने बालिश एवेक्रुक्रीडाकरवानेगया तिहांएकगुफामां किन्नरदेवतानायुगलनुं गीतसांभलीने कर्णेंद्रिनापरवशपणाथकी कोविदेंतेहने घणोवास्यो तोपणतेहनी शिखामणअणमानतो बालिशते सांभलवानेअर्थे गुफामांपेगे तेवारेंकिन्नरदेवताना युगलेजाण्युंजे अमारेजोवानेअर्थे एआव्यो पछेकोधेकरीतेदुष्ट किन्नरें बालिशनेहण्यो तेदेखीने कोविदेंतोवैराग्यपामि सदागमनेपूछी चारित्रलीधो माटेसांभलहे घनवाहनराजा तेजहुंकोविद पोतानाआत्मस्वभावथी उपनुंजे परमसुखते सदागमनी सेवनाथीहुंपाम्यो माटे बीजापण सुखनावांछनारें सदागमनीसेवा तत्परपणेकरवी इत्यादिकगुरुनावचनथी तथा अकलंकना आग्रहथी हुंचैत्यवंदनादिक कांइकश्रुत भणीनेद्रव्यश्रावकनी क्रियाआदरी एरीतेंमुजने मार्गेस्थापीने अकलंकादिक मुनीयें शोभित एहवाकोविदनामा आचार्य बीजेस्थानकें विहार करिगया.

केटलाकदिवसपछि वली मोह तथा परिग्रहना आसक्तथी में सदागमनोत्याग

कर्यो अने सेकडागमे स्त्रीओपरण्यो राजनीऋद्धिनी तृष्णायेंकरी कर्मनावशथकी म होटामहोटापाप प्रवर्त्ताव्या एहवामां मनेप्राणथकीपण अतिवल्लन एहवी मदनमं जरी नामेमाहरीपटराणी मरणपामि तेवारें मोहराजाना शोकनामेसुनटेंकरीहुंघ णोपीडाणो वलीतेशोकनावशथकीमस्तकपीटन रुदन विलापादिककरवाने प्रवर्त्यो खानपानआनरणादिकसमस्तनोगवस्तुनो त्यागकर्युं नीसासेकरी दिवसनिगमतोहतो.

एवीरीतेंमने शोकेंकरीपीमायमानथयो सांजलीनें अकलंकनामेंमुनि गुरुनेपुछी मनेप्रतिबोधकरवाने अर्थेंआव्या तेणेअनित्यनावनामय विचित्रप्रकारना उपदेशदी धा पणजेमआंखें आंधलाहोय तेहनेदीपकशाकामनुं तेन्यायनीपरें विफलनूतथया फरीमुनियेंकर्युं हेघनवाहन पंमितपुरुषोएमकहेछे के शरीरवंतनोजे जीवितव्यपणोछे तेमरणनीजप्रकृतिछे केमके मरवुंसर्वनेछे माटेजेजेमांथी उत्पन्नथाय तेतेहनीप्रकृति कहेवाय तोप्राणीमात्रनो जिहांसुधी श्वासोश्वासछे तिहांसुधीतेहने महोटोलानवं तकहियें माटेएअनित्यवस्तुनेविषे शोककरवुंयुक्तनथी इत्यादिक अनेकउपदेशना सां नलवाथीमें शोकनेमंदकर्यो तथा मोह अने परिग्रहएबेहुने दूरकर्या तेथी महारा पासें सदागमआव्यो तेहनासंयोगथी पूर्वेंनणेलो श्रुतसंनार्युं वली जिनराजनामंदि रें बिंबोनी प्रतिष्ठाकरावी अने तीर्थयात्रा स्नात्रमहोत्सवादिक द्रव्यस्तवना कारणो कराव्या वलीपरनेंनयकरवो क्रोध करवो हीनपुरुषनीसोबत करवी मृषावादबोलवुं चोरीकरवी खोटुं अनिमान धरवुं परस्त्रीनुंवांछवुं तथा परनाअवर्णवादबोलवा इ त्यादिकमाठाकार्यनुंमें समस्तप्रकारें त्यागकर्युं.

तथा दया अनुकंपादिक गुणनेविषे अनुरागपणुं सुकृतनुंअनुमोदवुं परनोउपकार करवुं देवगुरुनी पूजाकरवी सज्जनलोकोनी वर्तणुक परमाणें वर्तवुं शासननीप्रना वना करवी दान शील इत्यादिकशुनकृत्योआदर्या.

वलीकुलनीमर्यादानुं अतिक्रमणकरुंनही तथालोकविरुद्धकार्य आचरुंनही पर नाममर्मादिक उघारुंनही साधुनीसेवाकरुं श्रुतज्ञाननुं अभ्यासकरुं पुस्तकनीपूजा शा स्त्रसांनलवुं इत्यादिकमां प्रवर्त्ततोरहुं तथा पंचपरमेष्ठीमंत्र नवकारनुंजापजपूं इंद्रि यनेजीतवाना उद्यमनुं आचरणकरुं मिथ्यात्वदुःकृतनो निंदाकरुं तथासुकृतनो अ नुमोदनकरुं पोतानादेशमां न्यायतथानीतिने प्रवर्तावुं एरीतेंहे अगृहीतसंकेता हुं श्रावकपणुंपाम्यो तेदेखीने अकलंकनामामुनि संतुष्टथया.

एहवामां वली नवितव्यताना वशथकी मायाअने सागरके० लोन तेणेआवीने मने आलिंगनकर्युं तेहोनाअनुनावथी मेंचिंतव्युंजे अहो अहो अकलंकमुनीना ए

इव्यस्तवनाउपदेशथकी घणाइव्यनोव्यय में कस्योअनेकरुंडुं माटे कोइकउपायकरी हुंएहनेविहारकरावुं एहवुंध्यानकरी अकलंकमुनीने मेंजइकह्युंके हेस्वामि तमेंमुज ने शोकरूपकादवथी उद्धस्यो तेदानेकरी अनुग्रह्योमुजने अनेहमणा तमारोमास कल्प संपूर्णथयो माटेसुखें विहारनोकार्यकरो नहीतो गुरुअमने उलंनोदेशे एहवोमेंक ह्युं तिवारें महारीकलुषतानो अभिप्रायेंजाणीने अकलंकनामेमुनि विहारकरीगया.

तेमनागयाथीज मेंसदागमने विस्मृतकस्युं तेथी मोह अने परिग्रह पराक्रमवंत थया तेणेकरीवली तेवीजरीतें महाआरंभ महापरिग्रहमां आसक्तथयो तेसांभली ने अकलंकमुनिफरी मनेप्रतिबोधवानेअर्थे गुरुनीआज्ञामांगेथके गुरुकहेवालागाजे हे अकलंकमुनी एघनवाहनने ताराशेंकडामे उपदेशलागवानानथी जेमकानेबहिरो होयतेनाथीकोइ वातसंभलायनही तथा आंधलाने नाटकदेखाडवुंतेजेमव्यर्थथाय तेहनीपरे एहने प्रतिबोधकरवाना श्रमपण निःफलथवानोछेः

एहवुंगुरुनामुखथी सांभलीने फरीपणअकलंकनामा मुनियें मनेप्रतिबोधकरवानो उपायपुछेथकेगुरुयेंकह्युं जे सम्यक्तनामाप्रधाननी पुत्री विद्यानामाकन्याने जेवारें ए घनवाहन परणशे तेवारें मोह अने परिग्रहनेत्यजी प्रतिबोधपामवाने योग्यथाशे एकामतो कर्मपरिणामराजा अने कालपरिणति स्त्री इत्यादिकने आधीनछे माटे कालना परिपक्वेथशे तोहमणाए चिंतायेंकरीसर्युं माटेहेसाधुतुं पोतानाअर्थनेसा ध्यकर एहवागुरुनावचन सांभलीने अकलंकनामामुनियें मनेउवेखीनाख्यो.

हवेसांभलहे कल्याणकारणी अगृहीतसंकेता पूर्वे रिपुदारणना नवमां विच क्षणनामे थाचार्यना चरित्रनाअवसरें चित्तवृत्तिनामें अटवियें चित्तव्याक्षेपनामा मंडपनेविषे रह्युंजे मोहराजानुं सैन्य .तेसमस्तप्रकारेंविमर्श अने प्रकर्षे वर्णव्युंछे तुं तेसर्वसैन्यआवीने महारेपाशेंरह्युं तेवारपछि महामूढताना अनुभवथी हुंसंसा रनेविषेज आसक्तथयो अने मिथ्यादर्शनना वशथकी धर्मबुद्धियेंकरी पापकर्मकरुं वांछित शब्दरूपादिक विषयनेविषे हुंरागीथयो अनेअवांछितपदार्थउपर द्वेषधरुं त था अभिमानगर्वअने हर्ष तथाविषादादिको पण पोतपोताना विषयनेविषे वीर्य फोरववालागा शोकेकषायपणादीसथया दुष्टाभिप्रायनामे राजानामोकलेला आ र्त्तध्यान रौद्रध्यान ते निरंतर एकठेकाणें समाश्लिष्टपणेरह्या ज्ञानावर्णादिक सातेराजाओ पराक्रमें वध्यायका व्यापीरह्यातेवारें कामदेवपण रतिविषयनो अभिलाष अने भोगतृष्णापंचेंद्रियादिक परिवारेंसहित मनेघणीविटंबनाकरे ते हनावशथकी में बलात्कारें परस्त्रीओनेग्रहणकरी तीव्राभिलाषेंकरी पांचेविषयसेव्या

लुगडुं आहेडो इत्यादिक सातेव्यसनसेव्या वली अत्यंतकठोर दंडेकरी समस्तप्रजाजो कने पीडघा इत्यादिकरीतें महाअनर्थनोकरनार मनेदेखीने महारोपुण्योदयनामा जेमित्रते महारायीदूरथयो तेणेकरीमहाराउपर सर्वराजमंमल अने प्रजालोक वि रक्तथया तेथीएकदिवसें महारा प्रधानादिकें माहोमाहें विचारकरीने हुंकुलनेकलंकनो करनारवुं एहवादोपनोमहाराउपर आरोपकरी मनेवंदीखानेनाख्युं अने महारापाटे महाराभाइ नीरदवाहननेथाप्यो.

पछेहुंवंदीखानामां पडथोथको नूखतृषायें पीडथोथको शोकमांगमेंडुःख अनुभवी तेभवबेदवायोग्य गोळीनुंनाशथयेथके तिहांथीमरीने पापिष्टनिवासनामा नगरना सातमांपाडेगयो तिहांतेत्रीस सागरोपम सुधीमहाडुःखोभोगवीने तिहांथीनिक ल्यो वलीभवितव्यतायें घुअड विल्लाडो गरोली कानकीडादिक विचित्रप्रकारना हिं सकोनाभवमां अनंतकालसुधी नचाव्यो.

एकदिवसें मोहादिकोकांइक क्षीणथयाथी भवितव्यतायें मने मानवावासनामा नगरना भरतनामेंपाडामां सांकेतपुरनामा नगरनेविषे आनंदनामा वाणीआनेघरें धनसुंदरीनामास्त्रीनी कुक्षीनेविषेमने पुत्रपणेउपजाव्यो तिहांमहारुंनाम अमृतोदर राख्युं पछेहुंअनुक्रमें यौवनअवस्थापाम्यो वलीतिहां सदागम महारेसन्मुखआव्यो तेहनावशथकी सुदर्शननामा साधुपासेंथी हुंनमस्कारादिकश्रुतसीख्यो तेवारपछि कां इक द्रव्यश्रावकपणुं आराधीने गुटिकानोक्षयथयेथके मरणपामिने विबुधालयना मा नगरेंदेवताथयो.

हवेतेविबुधालय नगरनेविषे भवनपति व्यंतर ज्योतिषी अने वैमानिक एचारनि वासनामें चारपाडाछे तेमां पहेलाभवनपतिनामे पाडानाप्राणी दशप्रकारना अने बीजाव्यंतरनामे पाडानाप्राणी आठप्रकारें त्रीजाज्योतिषिनामा पाडानाप्राणी पांचप्र कारें चोथावैमानीकनामेपाडानाजीव बेप्रकारनाछे तेमांहुंपहेलापाडामां दोढपल्योप मनेआयुपें देवतापणेउपनुं वलीतेहांथी चवीने मानवावासनामें नगरें बंधुदत्तनामें वाणीआनेघरें प्रियदर्शनानामेस्त्रीनीकुक्षीयें पुत्रपणेउपनुं महारुंनाम बंधु पाड्युं यौवनअवस्थापामेथके सुंदरनामा मुनीनेपासेंथी द्रव्यसाधुपणोपामि तिहांथीमर णपामिने व्यंतरदेवतापणे उपनुं एरीतें अनंताकालसुधी अनंतामनुष्य देवता ति र्यंचादिकना भवकस्या तेमां किहांकसदागमपणुं किहांक द्रव्यश्रावकपणुं किहांकद्र व्यसाधुपणुं तेणेकरीदेवतापणुं मनुष्यपणुंपाम्यो किहांकवली कुतीर्थि पाखंडादिक मतोने सेवीने संसारमां घणाभवभ्रमण कस्या.

एरीतें ध्याववाजाववानी परंपरायेंकरी कांइकमहारी चित्तवृत्तिनामे अटवीनिर्मलथयी तेवारपछिपोतानुं अवसरदेखी चारित्रधर्मनामेंराजा तथा सद्बोधादिकने पूछीने सम्यक्दर्शननामें प्रधान महारापासेंआववामाटे सद्बोधमंत्रीनी विद्यानामें कन्यानेसाथें लेइ समययोग्यताजाणीने हुंजइश एहवोविचारकरीनेरह्यो.

एहवामांहुं जनमंदिरपुरनेविषे आनंदनंदननोपुत्र वैरोचननामेंथयो यौवनअवस्थामां धर्मघोषआचार्यनी देशनासांभलीने सदागमनो परिचयकस्यो तेणेकरी जीवअजीवादिक तत्वनेवीर्योल्लासेंकरी जाण्या तेथी मनेकर्मपरिणामराजायें अपूर्वकरणनामें कुहाडोदीधो तेकुहाडेकरी कर्मनीगांठभेदीने सम्यक्दर्शननामा प्रधाननेंजोयुं तेहनादर्शनथी मने समस्तसंसारमां पूर्वेकोइवारेंपण अनुभव्युंहतुंनही एहवो सम्यक्प्रगटयो तेथी में कोइकलोकोत्तर प्रमोदेकरी शुद्धदेव शुद्धगुरु अने शुद्धधर्मप्रते साक्षात् उलख्या तेणेकरी मोहादिकनाशीगया.

तेवारेंमें श्रावकधर्म अंगीकारकरीने श्रावकनाकेटलाक व्रतग्रहणकस्या जेपूर्वेंधनवाहनादिकना भवोमां अकलंकादिकने वचनेकरो मेंसदागम अने श्रावकपणु इत्यादिकनी आराधनाकरीहति तेतो श्रद्धाशून्यपणेकरीहति अनेइहांतो निश्चयथीश्रद्धावंतहतो एरीतेंतेनवमां सम्यक्तनोमूलरूप जेश्रावकधर्म तेहने आराधिने तेभवरूपगोलीनो क्षयथयाथके वलीबीजीगोलीलेइकरीने सौधर्मनामादेवलोकें महोटीऋद्धिवंत देवताथयो तिहांजयजयनिंदा जयजयनद्रा इत्यादिक देवीनावचन सांभलीने ज्ञानोपयोगदीधो तेहथी वैरोचननो भवदेखीनि सम्यक्दर्शन अनेसदागम वेहुप्रगटया.

तिवारपछि शाश्वताअरिहंतना बिंबोनीपूजा जिनराजनाकल्याणिकोना उत्सवादिकइव्यस्तवप्रतें करवालागो वेसागरोपम कांइकऊणा देवतासंबंधीभोग भोगवीने गुटीकाक्षयथयथकें तिहांथी चवीने मानवावासनगरें मदननामेपुरुषनी रेणानामेस्त्री तेहनो कुंदलनामेपुत्रहुं आहेरजातिमांउपनुं प्रकृतियेंभद्रक तथापापथीदरखुं इत्यादिकगुणे सहितथयो वली तिहांथी चवीने ज्योतिषिदेवताथयो तेवारपछि सम्यक्त अने सदागम एवेहुयेंमनेतज्यो अने मोह तथापरिग्रह एवेहुयें विंटितथयो वली तिहांथीचवीने पंचेंद्रिय पशुसंस्थान नगरें देरुकापणुंपाम्यो पछीभवितव्यतायें घणा कालसुधी विचित्रप्रकारनारूपकरीने विटंबितकर्युं.

एकदिवसें वलीमानवावासनगरें भवितव्यतायें मुजनेलावीने कांपिलपूरनो वसुबंधराजा तेहनीधरानामेराणीनीकुखें पुत्रपणेउपजाव्युं तिहांवासव एहवुंमारुंनामदीधुं अनुक्रमेंहुं यौवन अवस्थानेपाम्यो पछे शांतिसूरिनामा आचार्यनीपासेथी विधि

थंसहित धर्मसांजलीने सम्यक्त तथा सदागम वेहुनेपाम्यो तिहांथी वलीदेवताप णुंपाम्यो देवतानोआयुक्षयेथयाथीवली कांचनपुरनगरें मनुष्यपणुंपाम्यो तिहां मोह अने परिग्रहते वृद्धिन्नावने पाम्या तथा सम्यक्त अने सदागम एवेहुदूरगया वलीहुं घणाजवसुधी संसारमां जम्यो तिहां सम्यक्दर्शन अने सदागम एवेहुमाहरापासें असंख्यातिवार आवीआवीने पाछागयां अनेकेवल एकलो सदागमतो अनंति वारआवीने पाछोगयो ते जिवारेंजिवारें सम्यक्त अने सदागमआवे तिवारें तिवारें मोहादिकदूरथाय अनेवली पुण्योदयपण प्रगटथाय तथा जेवारेंजेवारें मोहादिक बलवानथाय तेवारें तेवारें सम्यक्दर्शन तथा सदागमएवेहु दूरथाय अने पुण्योद यपण नाशपामें एरीतें अनंतकालजगण संसारसंबंधी सुखदुःखप्रतें अनुजविने.

एकदासमें सोपारकपुरनेविषे शालिजद्रनोस्त्री कनकप्रजानीकुक्षीनेविषे हुंविजीष णनामे पुत्रपणेउपनुं अनुक्रमें यौवनअवस्थापाम्यो तेवारें कोइकआचार्यना वचन सांजलीने सम्यक्त अने सदागमवेहुपामि द्रव्यथकी साधुन्नावपणपाम्यो एटलामां वली मोहादिकप्रबलथया तेवारें सम्यक्दर्शनतो दूरगयो तेथीतीर्थंकरनी निंदादि कमहोटी अशाताओकरीने फरीअनंताजव संसारमांजम्यो.

एरीतें विचित्रप्रकारना जवेंकरीगुहिर अनेविखम एहवोसंसारीजीवनो व्रतांत सांजलीने अगृहीतसंकेता ते सम्यगुके० जलीरीतें लांधुंछेपरमार्थ माटे विस्मयवंत थका थंजाणाछे नेत्रोजेहना एहवीथयीरही एवखतें प्रज्ञानविशाला विचारकरवा लागीजे हाइतिखेदे एजवप्रपंचते महाविह्वामणोछे निश्चेंथकी दुःखेजीतवायोग्य ए हवाएमोहादिकोछे केमके नंदिवर्द्धनादिकनेजवेंतो सम्यक्तदीठुंजनहतुं माटेमोहादि क अवश्यपीडाकरे पणएतो विशेषजे वैरोचनादिकनाजवमांतो सम्यक्तप्राप्तथयुं तो हेपणएमविटंबनाकरी तेमाटेएमोहादिकोनी शक्ति अचिंत्यछे इत्यादिकविचारमांचेतीने तेहनेफरीजव्यपुरुषकहेछे जे हेमाताजी सुंआवीरीतें विस्मृतिन्नावपामेछे हवेथाग लनुं संबंधकहुंछुंते सावधानथयीने सांजल तेवारें प्रज्ञाविशाला बोलीजे हेपुत्र हुंविस्मृतीजावपामतिनथी हुंतोएसंसारना स्वरूपनुंविचारखुं तेहनेविषे एकतानथयीछुं

एमसांजली फरीसंसारीजीवकहेछे सांजलहेजद्रे तेवारपछिहुं जद्रिलपुरनेविषे स्फटिकनामेराजानो विमलालंदनामे पुत्रथयो तेयौवनअवस्थामां सुप्रबुद्धनामा आचार्यनावचनेकरी सम्यक्त अने सदागमने उलखी में श्रावकनोधर्म ग्रहणकर्यो तिहांश्रावकनोधर्मपालीने गोलीनाप्रयोगेंकरी त्रीजादेवलोकेंदेवतापणे हुंउपनो ति हांपणमुजने सम्यक्त अने सदागमवेहुमल्या शाश्वताजिनमंदिरनी अर्चादिक द्रव्य

स्तवप्रतें आराधि देवतासंबंधीसुखअनुजवीने तिहांथीचवीने मनुष्यपणुंपाम्यो वली तिहांपण देशविरतिपणुं पालीने चोथेदेवलोकेंगयो एम सम्यक्त अनेसदागम तथा देशविरतिना प्रजावथकी बारेदेवलोकोनेविषे देवतानासुखोने अनुजव्या तेवारपछि जवितव्यतायें तेजववेदवायोग्य गोलीदेइने मुजने मानवावासनामा नगरनेविषे पुण्योदयकरीसहित मोकल्यो एम मोहनीयकर्म अने परिग्रह तथा श्रोतेंद्रियनुं संगलयजी ने वलीसद्दर्शन एकांतसुखनुं देवावालोजाणीने हेजव्योतमे सद्दर्शननेजजो सेवो.

इति उपमिति जवप्रपंच कथाद्वारनेविषे मोह परिग्रह श्रोतें द्रियादिकनाविपाकवर्णनरूप एपांचमो अधिकारसंपूर्णथयो.

हेकल्याणकारी हेअगृहीतसंकेता हवेआगल माहरुंचरित्रकहुंछुं तेसांजल सप्रमोदनामानगरनो मधुवारणनामेराजा तेहनी सुशालिनीनामेंराणीनी कुंखनेविषे हुं गर्नकालपूर्णथये पुण्योदयें सहितजन्म्यो महारापितायें महारोगुणधारणएहवुंनाम दीधुं वली तेहिजनगरमां विशालनामे महारापितानुं मित्ररहेछे तेहनोपुत्रकुलंधर नामें तेहनीसाथें बालअवस्थाथीज मनेमित्रताथयी अनुक्रमें अमेबेहुमित्र यौवनअवस्थायें कलाचार्यनीपासेंथी समस्त कलाओसीख्या.

एकदिवसें आल्हादमंदिरनामा उद्यानेंक्रीडाकरवाने अर्थेंगया तिहांस्वरूप अने सौंदर्य वडेतिरस्कारकर्योछे देवांगनानासमोहनारूपने एहवीकोइकस्त्री सखीसहित चालतिथकी अमेंदीठी तेहनारूपथी महारोचित्तहणाणो तेहथी तरलितदृष्टीयें फरीफरी तेहनासन्मुखजोउं अनेतेहनेपण माराउपर रागउपनुं तेणेकरी वारंवार महारामुखने विकारसहितनेत्रें जोतिथकी कटाक्षनाखतिहति तिवारेंकुलंधरें मनेविकारसहित जाणीने महारामुखउपर दृष्टीकरी तेहथीहुंलज्जापाम्योथको आकृतिगोपवीने कुलंधरनीसाथें घरेंआव्यो पणमहारुंचित्त तेस्त्रीनेविषेमूकाणुं तेणेकरी अनेकविकल्पें आकुलथको किहांपण साताउपनीनही एमकष्टेंकरी तेरात्रमने युगरूपथइविती.

प्रजातें में कुलंधरनेकह्युं केहेमित्र हमणाहुं वनमां जाउंछुं तेसांजली विस्मितथको कुलंधरबोल्युंजे हुंताहरुंकुचेष्टितपणुं जाणुंछुं तेवारेंमेंपण माहारामननो जावकह्युंजे हेमित्रजो तेस्त्रीपरणेलीहसे तेवारेंतोतेंपरस्त्री एवसरिखी अनर्थनीखाण तेहनेतोहुं स्वप्नमांपण इछुंनही अनेजोकुमारिकाहसे तिवारेंतो शेकडागमे उपायकरी पण हुंतेहनेपरणीस माटेतिहांजयी निर्णयकरियें पछेअमें उद्यानमांगया तिहांचारे

दिशायेंजोयी पणतेस्त्रीने किहां दीठीनही तेहथीहुंपणुं दुःखेपीडितथयो कुलंधरपण चिंतातुरथयोथको अमेवेहुजणा एकवृक्षनीचेंजइबेठा.

एटलामांएकस्त्री तिहांआवी आशीसआपी कुलंधरनेएकांते तेडीने कहेवालागीजे हेसुनग वैताढ्यपर्वतें गंधसमिद्धनामे नगरनोस्वामी कनकोदरनामाराजा विद्याधरोनो चक्रवर्त्ती तेहनीहुं कामलतानामेंस्त्रीछुं अमनेअनेक उपायकरेथके समस्तकला विलासना घरसरिखी एकमदनमंजरीनामें अमारीपुत्रीथइछे.

एकदिवसें तेकुमरीने उत्कृष्ट यौवनअवस्थामांदेखीने तेहनारूपसरिखो वरपामवानी चिंतायेंपीडितथको किहांपणयोग्यभर्त्तारने अणदेखतोथको राजायें स्वयंवरमंडपकरी सर्वविद्याधरोना राजाने एकठाकस्या तेसर्वराजाओने जुदाजुदाजोतांथका कोइपणराजाते कुमरीनाचित्तमां आकर्षथयोनही तेहथीतेकुमरी क्षीणथइथकी पुरुषद्वेषणीथइ सर्वराजाओपण अहोइति आश्चर्य अमेसर्वेने एणेअवगण्या एमद्वेषधरताथका जेमआव्या तेमपाछा पोतपोतानेघेर जतारह्या तेवारेंकनकोदरराजातो वज्रेकरीहणाणा पुरुषनीपरें विलखोथयो तेमजमनेपण उत्कृष्टदुःखउपनुं तेथीरोवालागी तेवारेंकुमरीनी वल्लभसखी लवलिकानामें हति ते आवीनेअमनेकहेवालागीजे शावास्ते एटलोबधोखेदकरोछो हुंपोतेज एकुमरीनामननो अभिप्राय ग्रहणकरीस इत्यादिकवचने आश्वासनाकरी.

हवेतेजदिवसनीरात्रीनेविषेराजायें स्वप्नदीठुं तेमां बेपुरुष अने बेस्त्रीओ मलीचारेजणे आवीराजानेकह्युं केहेराजन् अमेचारजणभेलाथयीने महाभाग्यनानिधानसरिखी एहवीजे ताहरीपुत्री मदनमंजरीछे तेहनो वर निरधारसोछे माटे तुमारेकांइ आपुत्रीनावरनी सोचनाकरवीनही एहवोस्वप्नदेखवाथी राजाकांइक स्वस्थतानेपाम्यो हवेएकदिवसें लवलिकानामेंसखियें मदनमंजरीनेपुछ्युं जेहेसखी जो कोइपणपुरुषतुजने रुचतोनथी तोताहरोशो अभिप्रायछे तेवारेंकुमरीबोलीजे जेहनी सायें महारुंमन स्नेहपामें एहवोकोइ श्रेष्ठपुरुषहुंदेखतीनथी तेवोपुरुष जेवारें हुं जोइश तेवारें तेहनेपरणीस एमसांभली लवलिकायें मनेआवीकसुं मेंवली राजानेकसुं तेवारेंराजायेंकह्योएमजथायो कुमरीपोतेज वरनेजोइलेसे.

तेवारपछि पितानाआदेशथी मदनमंजरी लवलिकासखीने सायेंलेइ विद्यावलेकरी आकाशमार्गनी चालनारी अनेकनगरोने जोतीथकी गइकालें आउद्यानमां आवीहती तेवारेंताहरोमित्र एकुमरप्रतेदेखीने एनेतत्काल स्नेहनोउग्रतापणो प्रगट्यो तथामिलवानी उत्कंठावृद्धिभावनेपामि वलीकामदेवेंपीडितकर्युं हृदयजेहनुं

एह्वीयंकी घरप्रतें आवी तेवारपछि लवलिकासखीना मुखथी तेवातजाणीने हर्षपामतिथकी मेंराजानेजइकह्युं राजापणतेसांभलीने हर्षवंतथयो तेवारपछि कुम रीने आश्वासनाआपीने हुंतमारीशोधकरवानेअर्थे इहांआवीछुं माटे एकुमरने एमा हारीपुत्रीनो पाणिग्रहणकरावो

एह्वातेह्ना वचनसांभलीने कुलंधरेंआवी मनेकह्युं मेंपणतेह्नावचन अंगीका रकर्या तेवारें कामलता हर्षवंतथयीने पोतानेस्थानकेगयी पछेंअमेंबन्नेजण पणप्री तिवंतमनेथका घरेंआव्या ह्वेबीजादिवसें अमेबेहुजण उद्यानेगया तेसमयेंतिहां रत्नादिकलक्ष्मीयेंपूरित्त वेमाने करीसहित वली मदनमंजरीना विवाह्नीसामग्रीलेइने कामलतादिक कुटुंबीपुरुषोयें सहित कनकोदरनामे विद्याधरनोस्वामी तेपणपूर्वेंअवग ण्या विद्याधरोथी इहांकार्यनेविषे कोइविघ्नमथाजो एह्वी आशंकाकरी तुरततुरत विवाह्नो आरंभकरो मने मदनमंजरीसाथें पाणीग्रहणकराव्यो अनेघणुं रत्नादिकइ व्यतुंदायेंजो पण आप्युं.

एटलामां क्षणेकवारमां पूर्वे अपमानपामेला एह्वाघणाक विद्याधरोनाराजा ओ तिहां युद्धनेअर्थे आव्या पणमहारा पुण्योदयना अनुभावथी तेसर्वमनेदेखी ने कहेवालागाजे एराजहंसयोग्यछे एह्वीयुक्तिसहित क्रोधनिवारीने मने तथा क नकोदरने अभ्यासनादेइने ठानारह्या पछेएसर्ववृत्तांत जाणीने मधुवारणनामाराजा जे महारोपिता तेपण सैन्यसहित तिहांआव्यो सर्वकुटुंब हर्षवंतथयो पछेते कन कोदरादिक राजाओपण माहरापिताने तथामने जणावी रजालेइने पोतपोताने स्थानकेंगयां अमेपणमहोटे महोत्सवेंकरी पोताना नगरमांआव्या तेवारपछिहुं म दनमंजरीसाथें मनगमता देवतासंबंधी भोगभोगवतोथको विचरुंछुं.

एकदिवसें महारामित्र कुलंधरने स्वप्नमां त्रणपुरुष अनेबेस्त्रीओआवीनेकहेछे के अहोकुलंधर गुणधरकुमरजे विचित्रप्रकारना सुखभोगवेछे तेसर्व अमेपांचजण ना अनुकूलताना अनुभावथकी भोगवेछे एह्वोस्वप्ननो भावार्थते मने कुलंधरेंक ह्युं तेवारेंमेंविचार्युंजे अहोइतिआश्चर्य पूर्वे कनकोदरराजायें चारमनुष्योदीठा अ नेहमणातो कुलंधरेंपांचदीठा माटेएमांसुंविभेदछे एह्वासंदेह्वंतथको कुलंधर अने मदनमंजरीयें युक्त क्रीडाकरवानेअर्थे अल्हादमंदिर उद्यानेगया तेवखतें तिहांएक कंदनामा महाऋषिदीठा तेह्नेनमस्कारकरीने परिवारसहित धर्मसांभलवानेअर्थे तेमुनिराजपासेंबेठो तेवारेंमुनिराजेपण धर्मदेशनादीधी तेसांभलवाथी सम्यक्त अने सद्यागम एबेहुमाहरे पासेआव्या तेदयीमाहरो चित्तवृत्तिनामा अटवी निर्मलथ

यी अनेमोहादिको सर्वक्षोजनेपाम्या तेवारपछि चारित्रधर्मराजायें सद्बोधनामा प्रधाननेकह्युं के विद्यानामा कन्यानेलेइतमें हमणा नवजंतुपासेजाओ एहवुंसांभली सद्बोधेंकह्युंजे हेस्वामि हमणापणनवजंतुनेपासें पुण्योदय अने शातानोउदय छे तेमाटे कालविलंबकरवुंयोग्यछे तेटलासुधी गृहस्थधर्म अनेतेहनी गुणरक्षाना मारी एवेंकुस्त्रीभर्त्तारने एनवजंतुपासे मोकलीयें.

एहवाप्रधानना वचनसांभलीने राजायें तेस्त्रीभर्त्तारने आदेशआप्युं तेवारें ते गृहस्थधर्मनामापुरुष पोतानापरिवारभूत वारमनुष्येंसहित महारापासेंआव्यो तेवारें कंदमुनीनामुखथी सम्यक्तछे मूलजेहनुं एहवावारव्रतरूप श्रावकनाधर्मने में अंगीकारकर्युं अने मदनमंजरी तथा कुलंधरपण सम्यक्तपाम्या.

पछेमें मुनिराजने स्वप्ननो भावार्थपुछ्यो तेवारें कंदमुनि कहेवालागाजे हेराजन् एस्वप्ननोअर्थ गंभीरछे माटे निर्मलाचार्यनामे केवली महारागुरुछे तेमनेपूछीनेहुंक हिश अथवातो जगतनेउपकारना करनार केवलीपण निश्चेंविहारकरतां इहांजआवशें एहवुंसांभली परिवारसहित हुंमहारेघरेंआव्यो कंदमुनिपण विहारकरीगया.

हवेमनेराजेंथापीने महारोपिता मधुवारणनामेंराजा परलोकेंपहोतो तेवारपछि हुं उत्कृष्टीराज्यलक्ष्मीने भोगवतोहतो पण सम्यक्त अने सदागमना सद्भावथकी शुद्धधर्म रूडीविधियेंपालुं एमकेटलाकदिवस वित्यापछे एकदिवसें अनेकसाधुसहित श्रीनिर्मलाचार्यकेवली नगरनाउद्यानें समोसर्या तेवारेंकल्याणनामा उद्यानपाल कें आचार्यनुंआववुं कहेयके हुंहर्षवंतथयीने तेहनेलाखसोनामोरनुं दानआप्युं पछेहुंमहोटी ऋद्धियेंसहित वांदवानेअर्थेंगयो पांचअभिगमपूर्वकेंसहित त्रणप्रदक्षणाकरी गुरुनेवांदीपछे यथायोग्यस्थानकें सर्वसभालोकवेठा तेवारें सुवर्णकमलेंबेठा एहवाश्री निर्मलाचार्यनामा केवलीतेणे देशनाआपवानोप्रारंभकर्यो.

हेभव्योतमेसांभलो आभवचक्रनामामगरमां जीवमात्रने धर्मविना वीजाकोइनो शरणनथी केमके जिहांजन्म तिहांनिश्चेंथी मरणपणछे वलीजिहां संयोगतिहां वियोगपणनिश्चेंहोय तथाजिहांसंपदा तिहांविपदापणहोय अने जिहांभोगहोय तिहांअवश्य रोगपणथाय तथाजे यौवनअवस्थाते जरायेंहणायलीजहोय वली हर्षपणशोकेंसहितहोय एटलेजिहांहर्ष तिहांशोकपण अवश्यआवे एमजगतमां प्राणीमात्रजेहनेजेहने सुखनाकारणपणेमानेछे तेहिजसर्व परमार्थेंजोतां दुःखनाकारणजछे तेमाटे एसंसारते सुखथीउपरांगेजाणवो तोजे पोतानाआत्मस्वभावनासुखें हर्षवंत एहवाजे संसारथीपराङ्मुखथयलापरमात्मा तथा उपशमादिकं मुक्तदेहथा

रीसाधुतेह्नेज तत्वथी सुखीकह्यिं तेसुखप्राप्तिनुंकारणतो, चारित्रधर्मनामाराजाछे माटेह्तिनाअर्थिपुरुषें संसारथकोपराङ्मुखथयी तेह्नोजसरणकरवो.

इत्यादिक धर्मदेशनासांजलीने अमृतेंसोच्यानीपरेंहुं प्रीतिवंतथयो पछेदेशनापूरीथयायी मेंस्वप्ननाअर्थे गुरुनेपुछ्या तेवारें आचार्यबोल्या हेराजन् एस्वप्ननोघणो वृत्तांत छे माटेएस्वप्ननुंमूलकहुंछुं तेएकचित्तेंथइ सांजल हुंपण तेह्वीजरीतें सांजलवावेगो.

पछेगुरुयें असंव्यवहारनामा नगरथीमांडीने मह्यारोमूलथी विस्तारेंसहित पूर्वजवनुंचरित्रकह्युं सांजलहेराजन् ताह्री चित्तवृत्तिनामा अटवीमां अनेकनगरेंयुक्त मह्योटुंअंतरंगराज्यछे पणतेराज्यतो बलवानजे महामोह्नामा लुटनारलोकोनो स्वामी तेणेतुजनेतथाताह्रा हितवांछुजे चारित्रधर्मादिकोतेह्ने पराजवीने प्रकर्षपणे पोतेंग्रह्णकरयो तेवारें कर्मपरिणामनामेराजापण ताह्राउपर प्रतिकूलह्तो अनेह्मणातो ताह्राउपर अनुकूलछे तेमज कालपरिणतिनामें तेह्नीराणी तथा स्वजावनामेंप्रधान तथा जवितव्यतानामें अनादिकालनी जेताह्रीस्त्री तेचारेताह्राउपर अनुकूलपणुंधरेछे जोपूर्वेपण एह्जिचारजणनीसाथेंतुं मल्योतेवारें पणएतुजने पुण्योदयनजावी सुखोपार्जनकारीह्ता वलीजेदिवसथीतुं सदागमादिकसाथें मल्यो तिह्रांथीमांडीतो एचारेजण ताह्राउपरविशेषथी अनुकूलथयाछे माटेज पूर्वजवविषेतुजने स्वर्गनासुखदीधा वली आजवमां कनकोदरनेस्वप्नेआवी ताह्रापासें मदनमंजरीने मूकी अनेवली पुण्योदयपण शुजकार्यनेविषे कारणताधरेछे तेमाटेते ह्नेपण प्रगटकरवाने अर्थें कर्मपरिणामादिकें कुलंधरने स्वप्नमांहे पांचमनुष्यदेखाड्या

केमके नंदिवर्धननाजवमां कनकमंजरीनीप्राप्ति तेमज रिपुदारणना जवमां नरसुंदरीनीप्राप्ति वली वामदेवनाजवमां विमलमित्रनीप्राप्ति अने धनशेखरनाजवमां रत्नादिकनुंउपार्जन तथा ह्रिकुमरसाथें मित्रतापणुं वली घनवाह्ननाजवमां अकलंकनीसाथें मित्रता अने आजन्ममां मदनमंजरीनो समागम तथासंग्रामनेविषे जोपण विद्याधरो उन्मूलह्तातोपण एनाप्रजावथकी सुंदरनघतावंतथया तथा एसीवाइत्रीजापण अंतरें अंतरेंजेजेसुखनाकारणोथयां तिह्रांसर्वत्रपुण्योदयज कारणजूतह्तो पण तेंतो विवेकविकलपणेकरी पुण्योदयने विसारीने हिंसा तथा वैश्वानरके० क्रोध मृषावाद मान माया चोरी लोज मैथुन मोह् परिग्रह्यदिक महाअनर्थनाकरनार तेह्[illegible]

ह्वेसांजलहे [illegible]

पण एपुण्योदय [illegible]

नी एमपुछवाथी आचार्यकह्युंजे हेराजन् जोपण चित्तवृत्तिनामा अटवीनोस्वामीतुं हिजछो तोहेपण तिहांएक मोहराजानुंसैन्य अने बीजुं चारित्रधर्मराजानुं सैन्यएवे हु अनादिकालना माहोमांहे वैरजावेंसदाइंरहेछे तेहांवली कर्मपरिणामराजाते ड मरूकमणिन्यायें वेहुपक्षमांहेवर्त्ते जेवारेंजेपक्ष बलवंतदेखे तेवारेंतेपक्षनेआसरे ते कर्मपरिणामराजानावली एकपुण्योदय अने बीजोपापोदय एवेप्रधानछे तेमांपापो दय ताहरासाथें उत्कृष्टवैरजावेंवहेछे अनेपुण्योदयतो ताहरा हितनोकरनारछे ते मांपापोदय तेअसंव्यवहारनगरथी मांडीने ताहरेपासेंजहतो पण जेवारें जेवारें ताहरामोहादिकवैरीनी प्रवलताहति तेवारें तेवारें तेपणतुजने अशरणदेखीने वि टंबनाकरतोहतो वली पुण्योदयतो जेवारें जेवारें मोहादिकोनो शिथिलपणुं अनेचा रित्रधर्मादिकनो प्रबलतापणुं देखे तेवारेंतेवारें ते उल्लासपाम्योथको ताहरीपासेंर हे अने ताहरुंनलुंकरे अने पापोदयतेविलख्योथकोरहे पणअसंव्यवहारथी मांडी पापोदयते अनादिनुं ताहरीसाथेंजछे माटेतेहनुंरूपनदेखाड्युं अनेपुण्योदयते कि वारेंक प्रगटेछेमाटे जविव्यतायेंदेखाड्यो तथा नंदिवर्द्धनादिकना जवमांपण जवित व्यता नित्यसहचारीहतीमाटे तुजने पापनोउदयतोदेखाड्युंनही पणकदाचित् जवि तव्यतायें पुण्योदयनीज मात्र अवगणनाकरी पण ताहराहितनाकरनारजे चारित्रध र्मादिक तेहने दूरकरीने मोहराजायें तहारी चित्तवृत्तिनामा अटवीनुंजेराजलइलीधुं इत्यादिक सर्वजेमाणविलासथयाते सर्वपापोदयनुंज फलजाणजे.

वलीमेंपुछयुं हेस्वामि तोहमणा एमागआत्मानोधणी पापोदयते महाराथीदूरशी रीतेंगयो तेवारेंआचार्यबोल्या हेराजन् एपापोदय तेपोतानेस्वाधीननथी पराधीनछे एतो १ कर्मपरिणाम २ कालपरिणति ३ स्वजावतथा ४ जवितव्यता एचारनेवशछेवलीहम णाते चारेतहाराउपर सुप्रसन्नथयी पुण्योदयने ताहरापाशेंमूकीने पापोदयनेदूरकीधोछे.

वीजुंवली नंदिवर्द्धनादिकोना जवमां विचक्षणाचार्यादिकनीसाथें जेसदागमा दिक हताते हनेंजेतें उलख्यानही तेपण एचारनाज प्रतिकूलपणाथी अने पापोदयनो सानिध्यपणोथयोतेथीजाणवुं तथा हमणाजे सदागमादिकसाथें ताहरोपरिचयथ यो तेपणएचारनीज अनुकूलताथी अने पुण्योदयना सानिध्यपणाथीथयुंछे माटेहे राजा जेजेकांइ शुनकार्यनीपजे तेसर्व एहिजचार अथवा पांचमो पुण्योदयनी अ नुकूलताथी रुडुंनीपजे तथाएहनीज प्रतिकूलताथी अशुननीपजे.

एहवुंसांजलीने फरीमेंपुछयुं हेस्वामि जोतमेएरीतें शुजअशुजकार्यमां कर्मपरिणा मादिकनेज कारणपणेकहोछो तेवारेंहुंतोकांइपण करनारनथयो तोसुंएमांकांइपण म

द्दारीअपेक्षाछे किंवानथी फरीआचार्यबोल्या हेराजन् सर्वकार्यनेविषे तुंहिजमुख्यप्र धानछो केमके ते कर्मपरिणामादिकोपण तादृशीयोग्यताना वशथकोकामकरेछे तेमा टेसर्व शुभाशुभकार्यनोकरनार तोभवजंतुजछे एहवुं अमेकहियेछेयें फरीमेंपुछ्युं हे स्वामि एटलाजकारणछेके कांइकबीजापण कारणछे.

तेवारेंगुरुबोल्या जेमकर्मपरिणामादिकचारछे तेमपांचमो भवजंतुपोते मली एहि जपांचकारणछे तथावलीबोजुंपण एकउत्कृष्टकारणछे तेसांभल मोक्षनगरें अनंतज्ञा नादिकेंयुक्त परमऐश्वर्यताभावेंकरीशोभित एहवो सुस्थितनामाराजा चक्रवर्त्तीछे तेह नाअनेकरूपछे पणएकरूपपणे गवायछे तेमज बुद्ध विष्णु महेश्वर निःकलजिन ब्र ह्मादिक विचित्रप्रकारनानामेपण तेहनेजकहियेंछैयें.

जोपणएवीतरागछे माटेपोतें किहांपण रागकरतोनथी तेमज द्वेषपणकरतोनथी तोपणपोतें भवजंतुने एवीरीतें आज्ञाआपेछे केअहोभव्यो तमेचित्तवृत्तिनामाअटवी मां हेयवस्तुत्यजीने उपादेयवस्तुने अंगीकारकरी गोक्षीरपरेंउज्वलकरो तेमज मोहा दिकशत्रुनो समागममूकीने आत्मानाहितकारकजे चारित्रधर्मादिक तेहनीसेवाकरो इत्यादिरूप हेय अनेउपादेयें करीप्रगट एहवीजेआज्ञातेज सर्वप्राणीने समस्तसुखदुः खनो कारणभूतथायछे केमके तेप्रभुनीआज्ञा आराधवाथी सर्वसुखनुंकारणथायछे अनेतेहनी आज्ञा विराधियकी दुःखनीकरनारथायछे आज्ञाआराधियकी मोक्षने अर्थेथाय अने विराधियकी भवनेअर्थेथायछे माटे द्वादशांगी लक्षणरूप आज्ञानो जेकोइप्राणी अक्षरमात्रापण विरोधकहेछे तेअनंताकालसुधी भवभ्रमणकरेछे.

हेराजन् तेंपणपूर्वे एद्वादशांगीनी आज्ञाविराधीछे तेहनावशथकोज घणाकष्टअनु भव्या अनेहमणातो तुंतेहनी आराधनाने अभिमुखछो तेहथीतुजने एटलोसुखनो लेशथयो एरीतें आज्ञानुंस्वरूप सांभली संदेहरहितथको.

वलीमेपुछ्युंहेभगवान जोहजीपणतमे मनेसुखनोलेश कहोछो तोशुंएथकीपण वधारेसुख जगतमांकोइहशे तेवारेंकेवलीबोल्याहेराजन् संसारमां कोइपणस्थान केतेवुंसुखनथी अनेजे तें मनुष्य देवतादिकनाभवमां तथावली आजन्ममां सुखअ नुभव्या तेसर्वनेजेलाकरियें तोपणसदागमनी आज्ञाथीउपनुंजेसुख तेहनेअनंतमें भागेपण एताहशंसुख योग्यथायनही पणतेसुखतो जेवारेंतुं क्षांत्यादिकदश कन्या ओ परणीस तेवारेंमहाराकह्याविना पोतेंजजाणीजइश.

एहवामां कंदनामामुनियेंकह्युं हेभगवान तेदशकन्यानानामसुंछे तेकहो तेवारें आचार्यकहेछे चित्तसौंदर्यनामानगरें शुभपरिणामनामेराजा तेहनी निष्प्रकंपता तथा

चारुतानामे बेराणीठे तेहोनी अनुक्रमें एकक्षमा बीजीदयानामें बेकन्याओठे तेम जवली उज्वलमानसनामानगरें शुभाभिप्रायनामे राजा तेहनी एकस्थिरता बी जीधैर्यतानामे बेस्त्रीओनी अनुक्रमएकनम्रता बीजीसत्यतानामे बेकन्याओठे तेम ज निर्मलचित्तनामानगरें श्रेष्ठाभिप्रायनामेराजा तेहनीएकशुध्दता बीजी पापभीरु ता एबेस्त्रीओने तेहनीअनुक्रमें एकसरलता बीजी अचौर्यतानामें बेकन्याओठे ते मज शुभ्राचित्तनगरें सदाशयनामेराजा तेनी एकवरेण्यता बीजीप्राधान्यता तेहनी अनुक्रमे एकब्रह्मरति बीजीमुक्ता एबेनामे बेकन्याओठे तेमज सम्यक्तनामा प्रधान नी सुदृष्टीनामेस्त्री तेहनी विद्यानामेपुत्री तथाचारित्रधर्मराजानी विरतिनामेराणी तेहनी निरीहतानामापुत्री एदशकन्यानामकह्या.

वलीकंदमुनियेंपुछ्युंजे हेभगवान एतमारीकहेली दशेकन्याओने एगुणधारणना माराजाते क्यिवारेंपरणसे तेवारेंआचार्यकहेठे हेमुनिजेवारें कर्मपरिणामनामाराजा तेकालपरिणतिनामा पोतानीस्त्री तथास्वभावनामाप्रधाननीसाथें विचारकरी भवित व्यतानी अनुज्ञाने ग्रहणकरी पुण्योदयने आगलकरी कन्यानामातापिताने अनुकूल ताकरीते कन्याआपसे तेवारेंनिश्चेंपोतानीयोग्यताने आश्रयीने एराजातेकन्याओपर णसे माटेजो एसद्गुरुनाअभ्यासेंकरी पोतानीयोग्यताने उपजावेतो कर्मपरिणामना मा राजापण सर्वसामग्रीमेलवी एदशेकन्याओआपसे एहवुंसांभली कंदमुनिबोल्या जे हेस्वामि तमारापसायथीज एराजायोग्यतापामसे तेमाटेकृपाकरीने जेमएराजा तेकन्यापरणवाने योग्यथासे तेहनोउपायकहो हवेसांभलहेभद्रे हेअगृहीतसंकेता श्रीनिर्मलाचार्य तेहनोउपायकहेठे तेहुंएकाग्रचित्तें सांभलुंछुं.

जेपुरुष समस्तप्राणीनेंविषे मैत्रतापणोविचारे अनेबीजानाकरेला पराभवसहन करे उपसर्गसहेतोथको पणएमविचारेजे एमहाराकर्म निर्ज्जराकरवानुं साह्यकरेठे परो पकारचिंतवे परनेपराभवकरवा होयतेनिंदे मननेस्थिरतापणेकरीने मैत्रीभावनेधरें तेपुरुषने क्षमास्त्रीते पोतानीमेलेंज वांछावंतथयीने परणे.

वलीजेपुरुष परनेसंताप करतानथी तथा परोपकारकरेठे जेहवीपोतानीआत्मा तेहनीपरें सर्वजीवोप्रतें देखेठे परनेदुःखीदेखीने पोतेंदुःखवंतथाय समताआदरे ते पुरुषदयानामास्त्री परणवानेयोग्यथाय तोतेहनेपोतानीमेले दयास्त्रीआवीपरणे.

वलीजेपुरुष जातीमदआदेदेइने आठमदवर्जितपणुं आदरेठे तथाविनीतपणुं माखणनीपरें चित्तसुकुमालतापणुं इत्यादिकउपायेंकरी नम्रतास्त्रीनेपरणे.

जेपुरुष परनामर्मप्रकाशवाने तथा परनीनिंदाकरवाने शून्यचित्तराखे कठोरवच

नबोलवानुंवर्जवुं तथापरमर्म अनेवाकुबोलवुं इत्यादिकनेवर्जे अनेपरनेहितकारी प्रमाणोपेतयथार्थकहे इत्यादिकप्रकारें सत्यतास्त्रीपरणवानो उपायजाणवो.

तथाजेपुरुष अकुटिलतापणुं आदरे अनेपरनेठगवानुंवर्जवुंकरे चित्तनिर्मलराखे सरलभावआदरे तेपुरुष सरलतानामास्त्रीनेपरणे.

तेमजपरने पीडाकरेनही बीकणपणुंवर्जे परद्रोहनकरे परद्रव्यमां वांछानकरे तथाचोरीनामाठाविपाकचिंतवी माठीगतिमांपडवुं तेहथीभयपामिने चोरीनकरे इत्यादिकअचौर्यतास्त्रीने परणवानाउपायजाणवा.

तथा बाह्य अने अभ्यंतर परिग्रहथी आत्मानेजूदोचिंतवे अर्थकामथीओसरे पोतानोआत्मानुभाव अनेपरपुद्गलादिकनोभाव एबेहुनाभेदजाणीने परपुद्गलादिकना भावनुंछांडवुंकरे एरीतेंमुक्तिनामास्त्रीनेप्राप्तिनोउपायजाणवो.

तेमजजेपुरुष सर्वस्त्रीओने मातासमानजाणेछे स्त्रीपशु पंडगादिकयुक्तस्थानमां वसेनही स्त्रीनीसाथे आलाप संलापकरेनही तथास्त्रीना मुख नयन स्तन साथल नितंबादिक अवयवोनेनजुए पूर्वकालेंकरेला स्त्रीओसाथें सुखविलासनो स्मरणनकरे रससहितआहार तथा घणोआहारकरेनही शरीरनीशोभानकरे इत्यादिकगुणेसहितजेहोय तेपुरुषने ब्रह्मचर्यनामाजेस्त्री तेपोतेंजवरे.

तथाशरीरधन विषयादिकोने अनित्यतापणे अने अशुचीपणेचिंतवे तथापोतानुं एकलापणुंचिंतवे समस्तमाठाविकल्पनो त्यागकरे तथा जेवस्तुजेवाप्रकारनीहोय तेवस्तुनातत्त्वनेतेजरीतेंजाणे एरीतें विद्यानामास्त्रीने परणवानोउपायजाणवो.

तेमजजेदुःखनाहेतुभूतभोगनो अभिलाषजाणेछे तथाविचित्रप्रकारना चित्तसंतापछेने अनर्थनुंकारणभूत तेविषयसुखनी तृष्णाछे मरणनुंकारणजन्मछे अने वियोगनुंकारणतेसंयोगछे एमजजेवांछितपणे ग्रहियेंछियें तेतेअनिष्टरूपजछे तेमाटेजेसंसारनेविषे प्रवृत्तिछे तेदुःखनी कारणभूतजाणवी अनेजे संसारथी निवृत्तिभावछे तेसुखनोकारणभूतछे इत्यादिकजेपरिणामतें निरीहतानामास्त्रीनी प्राप्तिनोउपायजाणवो.

एमजेनरजंतु जेवारेंएदशकन्याओपरणे तेवारेंज चारित्रधर्मराजानुं सैन्यबलवंतथाय तथामोहराजानुं सैन्यक्षयपामे वली एहिजउपायकरवाथी कर्मपरिणामराजापण अनुकूलथाय इत्यादिकवातसांभलीने वलीकंदमुनिपेंपुछयुं हेस्वामि एकन्या गुणधारणनामराजा केटलाककालपछि परणसे तेवारेंगुरुबोल्या ठमहिनापछे एकन्याओ परणसे तेसांभली मेंकयुंजे हेंभगवानहुंतो हमणाजसंयम ग्रहणकरवानी वांछावंतछुं मोलमेककारणे एटलाथकनो विलंबकछोतो.

तेवारेंकेवलीनगवानबोल्या हेराजा अनंतीवार तमेंपूर्वेंद्रव्यलिंगोआदर्या तोपण तेथीकांइ अर्थसिद्धिनथयी माटेंअमाराकहेलामार्गप्रमाणे हमणातमे गुणनोअभ्यास करो पछे योग्यताजोइने चारित्रधर्मराजानो सद्बोधनामाप्रधान आवीनेपोतानीमेले जतुजने विद्याकन्या परणावसे तेथीतमनेसर्वतत्वनोपरिज्ञानथसेतेणेकरी नावशुद्धथ येयके सर्वदशेकन्याओतुजनेमलशे माटेहमणाकाल विलंबकरवुं तेहिजतुजने कल्या णकारीछे एहवुंगुरुनोवचन प्रमाणकरी गुरुनेवांदी परिवारसहितहुं महारेघरेंआव्यो.

हवेजेगुरुनोकह्योमार्ग तेणेकरीहुंगुणनो अभ्यासकरतोथको केटलाकदिवसवि तिक्रम्या एकदिवसें शेषथोडीरात्री रहेयके हुं गुरुनीकहेलीदेशनाने रुडेप्रकारेंविचा रुंछुं तिहांसद्बोधनामा प्रधानेंआवीने आस्तिक्यता तेनिश्चेंतत्वनुंजाणवुं तथा संवे ग उपशमादिक अनेकसुंदरीयेंशोभित विद्यानामा कन्यामनेपरणावी तेवारपछि प्र नातकालें गुरुने सन्मुखजइ नमस्कारकरीने धर्मदेशनासांनलुंछुं तेटलामां वली गुरुबोल्याजे हेराजन् गयादिवसें कर्मपरिणामादिकना अनुकूलपणाथकी तुंवि द्याकन्याप्रतें परण्यो तेसांनलीमेंपणकह्युं खरीवातछे माटेहेस्वामि तमारोप्रसाद तेहिज इहांकारणछे तेवारेंवलीकेवलीकहेछे हेराजन् एहनुंव्यतिकरकहुंछुं तेसांनल.

विद्यालीनेलेइने सद्बोधप्रधान ताहरेपासेंआवतोहतो वचमां ज्ञानावरणीनामा राजायें महोटुंयुद्धकर्युं पछेज्ञानावरणीने जीतीलीधायी तेणेमोहराजापासें आवीपो कारदीधी तेवारें क्रोधायमानथयोथको मोहराजापोतानुं सैन्यलेइने ताहरेसन्मुख आवतोहतो पणकर्मपरिणामराजानी अनुकूलतानहती तेथीचारित्रधर्मराजानो प राक्रमवध्यो माटेतेणेवचमांज मोहराजानुंसमस्तसैन्यने मथनकर्युं वली राग द्वेप अने पापोदयादिकना सुनटोनेप्रहारेंकरी जर्जरीतकर्या तेवारपछि निरविघ्नपणे तेवि द्यानामाकन्या परणी हमणाते मोहराजादिकसर्व जीवितव्यने वांछता नासीने कोइक दिशायें छुपीरह्याछे तोपणतेमोहराजादिकछिद्रना जोनाराछुजेनो कांइकआंतरोपा मीने तुजनेउपद्रवकरवाने अर्थेंआवसेपणते ताहरे सद्बोधप्रधानना वशथकी चा रित्रधर्मनुं सैन्यआगलकरीने नासपमाडवा इत्यादिक शिक्षाअवधारी देशना पूरीथयायी गुरुनेनमिने हुंमाहरेघरेंआव्यो हवेमनेधर्ममांदृढकरीने पूर्णमासकल्प थयेथके निर्मलाचार्यनामाकेवली अन्यस्थानकें विहारकरीगया.

एकदिवसें सद्बोधमंत्रियें धर्मध्यान अनेशुक्लध्याननामा सुनटोमनेदेखाडया वली तेहनीपरिचर्यानीकरनारी तेजूलेस्या पद्मलेस्या अने शुक्ललेस्यानामे एत्रणस्त्रीओदे खाडी वलीमने कह्युंजे एहनीतुं निरंतरसेवाकरजे तेवारपछिमें तेहोनीसेवा आरंनी

वली सद्बोधें विवेकपर्वतउपररह्या जैनपुरनगरना वसनारा एह्वाशुभाशयनामा राजादिको जेचारित्रधर्मराजाना सैन्यनाछे तेसर्वमनेदेखाडया अनुक्रमे तेहोनीसाथें माहरेपरिचयथयो तेणेंकरी तेसर्वमने हितकारीथया एरीतें सद्बोधनी शिक्षायें प्रवर्त्तता मनेपांचमहिना वितिक्रम्या तेवारपछि योग्यतानेजोइ महाराउपर कर्मप रिणामादिको अनुकूलथया तेह्नीप्रेरणायेंकरी शुभपरिणामादिकराजायें क्षमादिक कन्याओ देवानेअर्थें लग्नलेवरावी निश्चेकर्युं.

एटलामां विषयाभिलापनामा प्रधाने मोहराजानेकह्युं कें हमणाअमने उद्यम करवानो अवसरछे माटेपगपसारी वेसीरहेवुं योग्यनथी केमके कर्मपरिणामादिकस र्व एकठाथइने भवजंतुने क्षमादिक कन्यापरणावेछे तेपरण्यापछितो एसमूलथी अ माराकुलने उन्मूलीनाखसे एह्वोसांभलीने कंपायमानथयोथको मोहराजापोते कर्म परिणामने सन्मुखजइ कहेवालागोजे हेनाइतुंगोत्रनेविषे वृद्धथइने आपणोशत्रुजे भवजंतुनामाछे तेह्नोपक्षपातकरी पोतानागोत्रनो क्षयकरावेछे एतुजने निश्चेंथीघटतुं नथी तेवारेंकर्मपरिणामेंकह्युंजे हेनाइसुंकरियें हमणातो भवजंतुते अणओलंगवायो ग्य वीर्यवंतथयोछे माटेवखतविना विरोधकरवो युक्तनथी तोहमणातमें मौनपणे ज रहो तेसांभली मोहादिकसर्व मौनपणे रह्या पछेहुंतो निरंतर सद्बोधनी शि क्षायेंकरी वृद्धिभावनेपामतो पोताना वीर्योल्लासेंकरी क्षमादिकदशकन्याओ परणीने पछे चारित्रधर्मनामा राजानी सेवाकरीसएह्वा विचारमां हुंतत्परथकोवेठोहुं.

एटलामां भवितव्यताना वशथी क्षणेकवार माहारासमीपथकी सद्बोधनामा प्रधान दुरोगयो तेवारेंमेंविचार्युंजे चारित्ररूपकष्टनिश्चेंथी दुःकरछे वलीआमनुष्य लोकनेविषे कामभोगनासुख तेदुःखेंत्यजवायोग्यछे तेमाटेहमणातो मदनमंजरीसा थेज संसारीक भोगभोगवूं पछे चारित्रग्रहणकरीस एह्वाविकल्पमां व्याकुलहुं ए टलामांवली सद्बोधनिकटआव्युं तेणेमुजनेकह्युंजे हेमित्र सुंआवीरीतें माठाविचारो चिंतवेछे एनोपापरूपवेताल तेमाठामनोयोगरूप पिशाचादिकेंकरी समयपामीने ताहरीनार्यें क्षमादिककन्याना विवाहमां विघ्नकरेछे इत्यादिक शिक्षायें फरीमनेस्थि रकरी चित्तसमाधाननामामंडपमांआणीने सद्बोधेंमने चारित्रधर्मनामाराजा परि करेंसहितदेखाड्यो अनेतेचारित्रधर्मादिकेंपण घणुंसत्कारेंसहित मनेबोलाव्युं.

तेवारेंमोहादिक नाशपाम्या माहरीचित्तवृत्तिनामे अटवीशुद्धथइ वली सद्बोधें शिलकन्यातरणाराणीनो विवाहमहोत्सव प्रारंभ्यो तेमांपहेली आठप्रवचनमाताने नि मंत्रणकरीने मुजने सद्बोधेंकह्युंजे हेमित्र प्रथमथी ईर्यासुमति पामेयके जेनथ

मेवालाने भूमिप्रमुखजीवानीशुद्धीनुं करवुंथायछे बीजीभाषासुमतितेवचनशुद्धीप्र तेकरेछे त्रीजीएषणासुमतियें अहारनीशुद्धिकरे चोथी आदानभंडपात्र निखेवणासु मतिते वस्त्रपात्रादिक प्रमार्जनादिकनी शुद्धिकरेछे पांचमी पारिठावणियासुमतिते मलमूत्रादिकनी परिठवणाकरवाने शीखावेछे छठीमनोगुप्तिते मननेरूडेप्रकारें राखी स्थिरकरेछे सातमीवचनगुप्तिते सावद्यवचनबोलवानुं निषेधकरेछे आठमीकायगुप्ति ते असंवरित अंगोपांगनी चेष्टानेनिषेधेछे एरीतें एआठप्रवचनमाताते जैननगरनी स्वामिनीछे माटेएहोनीतुं सेवाकर एमपहेलादिवसें आठेप्रवचनमाताओ सद्बोधेमा हारापालेंयथाविधियेंपूजावी एम आठप्रवचनमातानेपूजी पछेउत्कृष्टवीर्यरूप कुंभने विषे धर्मध्यानरूपअग्नीबालीने तेजलेश्या पद्मलेश्या शुक्ललेश्यारूप कुलवंतस्त्रीयेंम ने स्नानअंगरागादिक संस्कारकर्युं तेमजसमस्तधर्मराजाना सैन्यनापुरुषोयें मनेविवि धप्रकारें शोभावंतकर्यो एरीतेंअलंकृतथयेलो मुजने कुंभनेसन्मुखबेसाडी सद्बोधप्र धान पोतेंपुरोहितथयीने कर्मरूप लाकडानाखवाथी धर्मध्याननामें अग्निदीप्तवंतथ यो तेमांभावनारूपकडछीएटलेघृतहोमवानोसरवोलेइ अने कुवासनारूप यव तिला दिक आहुतिनाइष्यने होमतेथके पछेसदागमनामा ज्योतिषियेंकह्युं एहवुं शुभलग्न नो अंश आवेथके क्षमानामें कन्यालायें माहरेपाणिग्रहणकराव्युं तेथीशुभपरिणा मादिक परिकरसवे हर्षवंतथया निःप्रकंपतादिक प्रमोदवंतथया मंडलप्रते नमा ड्या एमअनुक्रमे तेहिजलग्ननेविषे दयादिकसमग्र आठेकन्यापरणी पछिहुंतोतेस्त्री ओसहवर्त्तमान निजवीर्यनामे आलनउपरबेठो चारित्रधर्मादिक हर्षवंतथया हवेय द्यपि विद्यानामाकन्यानो मात्रपाणिग्रहण करेथकेज महामोहादिक प्रबलनीपरंथ याहता पणदग्धरज्जुसमानरह्यावली क्षमादिकना विवाहथकी तोलशकरेंसहित वैश्वा नरादिक तेपापोदयेंसहित प्रछन्नतापाम्या एटलेधृतिश्रद्धादिक तेपण मने आविमल्या पछे तेकन्याओनामिलापथी जेसुखनुंअनुभवउपनुं तेणेकरीपोतानुंज्ञान प्राप्तथयुं तेज्ञाननायोगे उत्कृष्टसुखना प्रागभारेंकरीने श्रीगुरुनावचन अंगीकारकर्या.

हवेएकदिवसें श्रीनिर्मलाचार्यनामा केवलीआव्या तेहनेवांदवानेअर्थे हुंगयो ध र्मदेशनासांभली मैंव्रतलेवानी याचनाकरी गुरुयेंकह्युं हेराजन् जोपणक्षमादिकना वि वाहपछि भावथकीतुं साधुनासरिखोजछो तोपणलोकमां व्यवहारज बलवानछे मा टेहवे द्रव्यदीक्षाआपियें तेवारें पोतानापुत्रने राज्यआपी सातक्षेत्रेंधनखरची मदन मंजरी अनेकुलंधरादिक घणाजव्यलोकें सहित श्रीनिर्मलाचार्यनामा केवलीपासेंथी मेंदीक्षालीधी पछेहुंअनुक्रमें इग्यारअंगभणी यथाविधियें संयमपालीने अंतेसंलेष

णाकरी तेजववेदवायोग्य गोलीनेकर्ये वलीवीजीगोलीने प्रयोगेकरी हुंपहेलाग्रैव्यक नेविपेगयो तिहांत्रेवीससागरोपमसुधी सुखअनुजवी तेहांथीचवीने सिंहपुरनगरनो म हेंइनामेराजा तेनीवीणानामेराणीनीकुक्तिनेविपेपुत्रपणेउपनो यौवनअवस्थामां जा तिस्मरणनावशथकी सुघोपनामनाआचार्यपासे दीक्षालेइविधियें पालीने बीजा ग्रै व्यकनेविपे देवताययो एम पांचवारग्रैव्यकने विपेजावुंआववुंकरीने तेवारपठी धात कीखंडनाजरतक्षेत्रमां शंखपुरनगरनो माहागिरिनामेराजानी जड़ानामेराणीनी कुक्षी नेविपेपुत्रपणेउपनो मातापिताए सिंह एहवुंमारुंनामआप्युं यौवनअवस्थामां धर्मवं धुनामेआचार्यनी देशनायेंचारित्रपाम्यो हुंथोडाकालमां चौदपुरवजण्यो उग्रक्रिया पात्रथयो गुरूयेंयोग्यताजाणीमने आचार्यपददीधुं पठीमाहारी कीर्त्तिसर्वस्थान केविस्तरी ठेकाणेठेकाणेमने बहुश्रुतजाणी माहारी लोकोस्तवनाकरे विचित्रप्र कारेंकरी मने पूजे पर्युपासनाकरे वस्त्रपात्रआहारादिक जक्तिकरे चतुर्विध संघमा हारेगुणेरीज्योयको अज्ञोयज्ञानरूप अंधकारनेहरवामां सूर्यसमान सकलसाधु नागुणरूपरत्न तद्रूपसमुइतेएआचार्यछे इत्यादिकस्तुतियेंकरी माहारीस्तवनाकरे तेवार पठीमेंसमस्तकुत्सितवादीना अहंकारनोनाशकीधो अनेक महर्धिकोने प्रबोध वंतकर्या अनेकविधियेंजिनशासननी उन्नतिकीधी.

एवासमयनेविपेसांजलहे अगृहीतसंकेता माहारीमोहोटाइ अणसहतीथकी ज वितव्यतायेंमोहादिकने कह्युंजे हमणाकोइकपण पराक्रमकरोतोघणुंसारुं केमके एसमयछे नहीतोनवजंतुतमने परिकरसहित उन्मूलीनाखशे इत्यादिकजवितव्यताना [illegible]

[illegible]

हेतुयकी मिथ्यात्व ज्ञानावर्णि मान रुद्धिगारव शातागारव रसगारव इत्यादिक माह राजानानायक मारीपासेंआव्या तेवारेंतोआर्त्तध्यान अनें रौद्रध्याननामनावेसुजटप णआव्या तेवारपठी तेमनी कृष्णलेश्या नीललेश्या कापोतलेश्यानामे त्रणदासीयोप ण आवी एमधीरेधीरे मोहराजानो सर्वलशकरआवी मुजनेरोकीरह्युं तेवारपठी प्रम त्ततानामे नदीरणपूरेकरी दुःखेतरवायोग्ययइ तेवारपठी विपयाजिलापें चित्तव्याक्षे पादिक मंडपोने सह्याकर्या पठी हेंजरेहुं माननावशथकी एहवोविचारुंके अहोमा हारुं पंडीतपणुं अहोमारुं गुणधारणपणुं हुंयुगप्रधानछुं समस्तगुणअनेज्ञानविचा रिकजना अनिजपोनुजनेज आश्रितछे हुं पूर्वेपण जगतनेविपे उत्कृष्टसौजाग्यवं तताआहतो अनेकनेमान्यहतो अनेहमणापणउत्कृष्ट माहात्मानीपदवीने पाम्योछुं इ

त्यादिकुं शैलराजानेवशे माहारीआत्मस्तुतिकरवाने प्रवर्त्यो पछीज्ञानावर्णीकर्म आ श्रितथयोथकोगर्वेंकरी एकअर्थने वीजीरीतेकहुं जेमतेमविरुद्ध परूपणाकरुं.

एरीतेंप्रवर्त्तमानथकोहुंरह्यो पछेमिथ्यात्वना सान्निध्यथकी चउदपूर्वमाहेला लहे लासाडाचारपूर्व मने मूलथीअर्थसहितविशरीगयां एटले प्रमत्तनामानदीपूरेंसहित महारी चित्तवृति अटवियें वहेवालागी तेवारेंमें विचार्युंजे अहोइतिआश्चर्य जेजुवो तोखरा केवामहारा शिष्योछे तथामाहराश्रावकपण कहेवाभक्तिवंतछे तेमज ऋद्धि गारवादिकना वशथकी वस्त्र पात्रउपधी शय्या आसनादिकना सुखनो गर्वकरवालागो तेमज रसगारवनावशथकी अहारादिकनी लोलताकरी आधाकर्मादिकदोष उपार्ज्या.

एहवाप्रकारनो मनेरहेतोथकोदेखीने चारित्रधर्मादिकतो महाराथी दूरथया तेथी यतिनालिंगने धरतोथकोपणहुं मिथ्यादृष्टिथयो तेवारें कर्मपरिणामादिक क्रोधवंत थयीने पापोदयनामेएकपुरुष आगलचालनारो महारीसाथेआपीने गोलीनाभ्ययथ वाथी फरीमने एकेंद्रियनगरेंमोकल्यो तिहांवलीमने एकअत्यंतअबोध अनेवीजो ती व्रमोहोदयनामें बेहुमल्या तेणेकरी अनंताकालपर्यंत सूक्ष्मवनस्पत्यादिकमां भवितव्य तायें तथाआयुकर्मराजादिकेंमने अत्यंत विटंबनाकरी.

वलीअनुक्रमें वीजीगुटीकाना आपवाथी पंचेंद्रियपशुसंस्थाननामानगरें मुजने आण्युं तेवारपछि व्यंतरादिकनेविषेआण्युं तेवारपछि मनुष्यनोभवपामि सम्यक्तमूल ग्रहस्थनोधर्म आराधीने सौधर्मादिकदेवलोकोनेविषेगयो तेवारपछि किवारेंक अकर्म भूमिनेविषे युगलीयापणे उपनुंवलीकर्मभूमिनेविषे मनुष्यपणेउपनुं तिहांअज्ञानना वशथकी विषभक्षणकरवुं पर्वतउपरथी जंपापातखावुं हाथरूपपात्रमां भिक्षानुंलेवुं माघमहीनानुं स्नानकरवुं इत्यादिक कष्टोप्रतें अनुभवीने किल्विषियो देवताथयो.

वलीमनुष्यपणुंपामि तापसादिक अवस्थाप्रतेंसेवीने ज्योतिषिदेवताथयो वली मनुष्यपणे द्रव्यसाधुपणुंग्रहीने केवल क्रियानापालवाथकी नवमांग्रैव्यकसुधीग यो एमहेलोली सिंहाचार्यनाभवमां अहंकारनाकरवाथकी अनेक्रियानी शिथिलता थकी हुंअनंतोसंसार भम्यो तेमांविचित्रप्रकारें दुःखनी परंपरा अनुभवी अनेजोते भवमां ज्ञाननोमद नकस्योहतो तोतेहिजभवें मोक्षेजात.

इत्यादिकवात सांभलीने अगृहीतसंकेताकहेछे के जो सिंहाचार्यनाभवमां नि र्मलस्थिरपणे मोहराजानीआज्ञा पालीतमानथवी तेथीज एटलीकष्टनी परंपराभोग वी तेमाटेतेंतिहां जेजे ज्ञाननामदेंकरी सद्बोधनी आज्ञानेविराध्युं तेकामतेंरूडुंक र्युंनही तेवारें संसारीजीवकहेछे भद्रेभद्रे हेलोलीतेंजेकह्युंते रूडुंरूडुं तेमाटपूर्वेंतो

तुंनामथकी अने परमार्थथकीपण अगृहीतसंकेताहती वलीहमणातो तेंपरमार्थ जाण्युं तेमाटेतुं नामथकीज अगृहीतसंकेताछो पण परमार्थथीतोतुं विचक्षणाछो एहवाप्रकारें सर्वज्ञनीआज्ञानुंउलंघवुं तेविषे नवजंतुनाविपाकनेजोइ निर्मलआज्ञा पालवानेविषे पंम्तिपुरुषें रूडोयत्नकरवो.

इतिउपमिति नवप्रपंच कथारूप द्वारनेविषे आज्ञानोविराधवो अने श्रुतनामदादिकनो विपाकदेखाम्वारूप ठठोअधिकारसंपूर्णथयो.

हवेसंसारीजीवकहेछे सांनलहे अगृहीतसंकेता माहरुंचोरनी अवस्थानुं स्वरूप तुजनेकहुंछुं तेमजहुं नवमांग्रैव्यकथकी तेनववेदचायोग्य गोलीनादेवाथकी नवित व्यतायें मुजने मानवावासनामा नगरेंमोकल्यो तिहां महाविदेहनामा चौवटामां सुकच्छनामाविजयें क्षेमपुरनगरें युगंधरनामाराजा तेहनी नलिनीनामाराणीनी कुक्षीनेविषे हुंपुत्रपणेआवी अवतस्यो तेहिजरात्रीनेविषे तेनलिनीराणियें हाथी वृषनादिक चौदसुपनदीठा मातापितायें तेहनाफलपुछवाथी सुप्नपाठकेंकह्युंजे तमारे चक्रवर्त्तीपुत्रथसे इत्यादिक फलकह्युं तेसांनलीने माहरामातापिता आनंदपाम्या पछेगर्भनकालपूरोथये हुंपुण्योदयेंकरी सहितजन्म्यो पितायें जन्ममहोत्सवकरी अनु सुंदर एहवुंमारुंनामदीधुं अनुक्रमें पांचधावमातायेंकरी लालतोपालतोथको हुं विद्याभ्यास करवायोग्यथयो.

पछेकलाचार्यनीपासें हुंथोमाकालमां समस्तकलाओ सीख्यो अनुक्रमें यौवनअवस्थापाम्यो तेवारेंमाहरोपिता मरणपाम्यो पछेमहारा पितानापाटे वेसामवासारुं सामंतपुरुषें मुजनेराज्याभिषेक करवाने महोटोउत्सवकस्योतेसमयें आयुधशालामां चक्ररत्नप्रगटथयुं पछेतेचक्रनी उत्पत्तिनिमित्तें अष्टाइमहोत्सवकरीने हुंदिग्विजयकरवा निकल्यो उएसंमप्थ्वीसाधी अनुक्रमें चउदेरत्न नवनिधाननो अधिपतिथयो तेवारें गेंवर अनेनूचर सर्वराजायें जेलायथी बारवर्षलगण चक्रिपदनो महोत्सवकस्यो एरीतेंअसंकरपणे वर्नमृथ्वीना सुखने अनुनवता मुजने चोरासीलाखपूर्वअतिक्रम्या.

पछेवृद्धावस्थामां पूर्वसाधेलादेशोने फरीजोवानिकल्यो हुंसघलाकरेसहित अनुक्रमें नानाप्रकारना देशोनेजोतोथको शंखपुरनगरने समीपेंआव्यो तेवारें सैन्यनेपछवाडेमूकी पोताकेटलाएकपरिवारें सहित चित्तरमनामा उद्यानें कौतुकजोवानेअर्थेंआव्यो.

हवेहेनोली पूर्वे गुणधारणना नवमां महाबोधमाचार्यजे कंदनामामुनिकह्यां वली कुलंधरनहागेमित्र तथा मदनमंजरी महाराणी एत्रणेनुवृत्तांत कहुंछुं ते सांनल.

तिहांकंदमुनि भवितव्यताना वशथकी भवचक्रनगरमां भमतो किहांक स्त्रीवेद उपार्जनकरी इहां भरतनामा विजयनेविषे हरिपुरनगरें भीमरथनामाराजानी सुभद्रानामेराणीनें कुखें पुत्रीपणे अवतरीने तेहनापिता मातायें महाभद्राएहवुंनाम दीधुं हवेमहाभद्रानो वडो समंतभद्रनामे महोटोभाइछे तेएकदिवसें सुघोषनामा आचार्यनी देशनासांभली वैराग्यपाम्योथको मातापितानी आज्ञालेइने व्रतअंगीकारकर्युं अनुक्रमें चउदपूर्वभणी गीतार्थथयो तेवारपछि योग्यतादेखीने गुरुयेंआचार्यपददीधुं पछे अनेकसाधुयें परिवर्योथको समंतभद्रनामा आचार्य अनेकप्राणीनाचित्तरूपपृथ्वीनेविषे बोधरूपबीजने वावतोथको पृथ्वीनातलनेविषे विहारकरतोफिरेछे हवेमहाभद्रातो यौवनअवस्थापामिथकी गंधनामानगरना दिवाकरराजाने एना पितायें परणावी भवितव्यतानावशथकी तेदिवाकरराजा मरणपाम्यो.

तेवारें महाभद्राघणाशोकेकरी आकुलथयी एहवामां समंतभद्रनामा आचार्यतिहांआव्या तेणेपोतानी बहेनने शोकेपीडितजाणी देशनाआपी बोधपमाडी दीक्षाआपी अनुक्रमे इग्यारअंगनी भणनारीथयी तेवारेंगुरुयें प्रवर्त्तिनीनेपदेंथापी.

एकदिवसें अनेकसाध्वीओनासमूहें परवरीथकी विहारकरती रत्नपुरनगरेंआवी तिहांमगधसेननामेंराजा तेहनीसुमंगलानामाराणीनीकुक्षीयें भवितव्यतानावशथकी तेमदनमंजरीनोजीव पुत्रीपणेआवीउपनो मातापितायें सुललिता एहवुंनाम दीधुं अनुक्रमें यौवनअवस्थापामि पण विवाहनी वांछनाकरेनही केवल पुरुषद्वेषणीथइ पछेतेहना मातापिताबेहु चिंतायें पीडितथया तेवामां महाभद्रासाध्वीनुं आववुंसांभलीनें तेबेहुराजाराणी परिकरेसहित रूडीसुललितानामापुत्रीयेंसहित वांदवानेअर्थें गयां महाभद्रासाध्वीयें धर्मनीदेशनाआपी.

हवेसुललिताते देशनानाभावार्थने अणजाणतीथकीहति तोपणमहाभद्राना दर्शनथीज स्नेहनुंप्रबलपणुंउपनुं तेहथी उपनुंजेसुख तेहनेविषेंज पोतानारुडा लोचनथाप्याछे पछे पोतानामातापिताने कहेवालागीजे तमेंआज्ञाआपोतो हुं प्रवर्त्तिनीना चरणनीसेवाकरुं तेसांभलीने सुमंगलानामाराणी तेपुत्रीनाविरहथकी रोवालागी तेवारें मगधसेनराजायें आश्वासनादेइने पुत्रीप्रतें महाभद्रानेविषे स्नेहआसक्तजाणीने गृहस्थनेवेशेंज तेहने महाभद्रासाध्वीपासेमूकी हवेमहाभद्राते सुललितानेविविधप्रकारना उपदेशनीयुक्तियेंकरी धर्मनोउपदेश अने धर्मनुंस्वरूपजणावे तोहिपणते भावार्थप्रतेंकांइजाणेनही एमअनुक्रमेंकरी महाभद्रानेसाथें विविधप्रकारना नगरोजोतीथकी शंखपुरनगरेंआवी.

हवेसांजलहेनोली शंखपुरनगरनोस्वामी माहरोमामो श्रीगर्जनामाराजा तेहनी कमलिनीनामेस्त्री तेवलीमहानइानीमातानीवेहेनथाय तेस्त्रीनरतारें संतानपामवा नेअर्थं अनेकउपायोकस्यां एअवसरें कुलंधरनोजीव घणाजवनेजमवेकरीने संतुष्टथ यी एहवीजवितव्यताना वशथकी कमलिनीना कुक्षीनेविषे पुत्रपणेअवतस्यो तेदिवस रात्रे कमलिनीयेंस्वप्नदीठुं जे कोइकसुंदरआकारवंतपुरुष महारामुखमां प्रवेशकरी ने पेटमांथयीनिकल्यो तेवारपछि कोइकनीसाथें जतोरह्यो पछेतेस्वप्ननो नावार्थपुछे थके राजाकहेछे हेदेवीतुजने पुत्रथासे पणतेबालकअवस्थामांज कोइकगुरुनाउप देशथी दीक्षालेसे एहवुंसांजलीने कमलिनीराजीथयी.

अनुक्रमेंगर्नवधतेथके त्रीजामहिनाथी मांमीने कमलिनीना मनमां गर्जना अनु नावथकी जेजेउत्तमउत्तमदोहला उपना तेतेसर्वेराजायें संपूर्णकस्या पछे गर्जकालपू रणथये रूडेमुहूर्त्तेंपुत्रजन्मथयुं तेहनो महोत्सवकरी पुंमरीकएहवुंनामदीधुं.

एहवामां श्रीसमंतनइनामा आचार्यने केवलज्ञान उपनुंछे ते चित्तरमनामा उद्याननेविषे समोसस्या तेवारें कोइकरीतें सुलजितानहीजाणे तेवीरीतें महानइा नामा प्रवर्तिनी वांदवानेअर्थेआवी तेवामांसजामां कोइकें राजपुत्रनो जन्ममहो त्सवादिक वृत्तांतकह्यो तेवारेंकेवलीबोल्याजे एराजपुत्र लघुकर्मीवंतछे मादेतुरतथोडा कालमांचारित्रव्रतग्रहणकरी सदागमने आराधसे इत्यादिकवातसांजली गुरुप्रतेनम स्कारकरी महानइासाध्वी अपासरेआवी.

तेवामां सुलजितापण चित्तरम उद्यानें कौतुकेंतत्परथकीगयी तेणेपण तेराज पुत्रनागुण वर्णवताथकां समंतनइनामा गुरुनेदीठा वलीगुरुयेंकह्युं जेकर्मपरिणाम राजाअनेकालपरिणती राणियें अनुकूलथयीने एपुंमरीकने मनुष्यगतिनगरियें आ एयोछे तेमाटेएहनो नव्यपुरुषसुमतिएहवुंबीजुंनामपणकहियें एमहागुणवानथवानुं छे इत्यादिकसांजलीने सर्वसंघहर्षवंतथयो अनेसुलजिताती तेहना नावार्थने अ णजाणतीथकी चिंतवणाकरवालागीजेएतो शंखपुरनगरछे माटेआगुरुयें मनुष्यग तिनाला नगरकेमकह्युं तेमज एनगरनोश्रीगर्जनामेराजा अनेकमलिनीनामेराणीछे ते हनेकहेछे कर्मपरिणामराजा अने कालपरिणतिस्त्री एबेने एराजकुमरना पितामा ताकहेछे गुरुयेंकह्युं वलीराजपुत्रनोपणनव्यपुरुषसुमति एहवुंअन्यथा बीजुंना मकेम गुरुयेंकह्युं वलीएगुरुनाविगुणने शीरीतेंजाणेछे

एरीतें सुलजिता संदेहपीडितथकी महानइासाध्वी पासेंआवीने तेहनुं कारण पुछवालागी तेवारें सुलजिताने वणी मुग्धाजाणीने महानइायें चिंतव्युंजे एदिवसद

ने प्रतिबोधकरवानो उपायछे पछे युक्तियेंकरी तेसर्वे वृत्तांतकह्यो वलीहेजद्र जेतेस नामांव्याख्यानकरतायका सदागमनेदीठाते पोतें नगवानछे एअतीत अनागत वर्त्तमान त्रणेकालना समग्रपदार्थनोजाणछे हुंपणतेहना प्रसादथीजाणुंतुं माटेतुं पण तेहनीसेवाकर जेथकीगुणनीवृद्धिथाय इत्यादिकवचने तेहने सदागमउपर स रागणीकरीने महानद्रासाध्वी तेहनेगुरुनीपासेतेडीआवी तेवार पठिसुललिताये पण हर्षेकरी समंतनद्रनामा आचार्यनी पर्युपासनाकरवा प्रारंनी.

हवेपूर्णमास कल्पथये सदागमगुरु महानद्रानेकहेवालागाजे हेनद्रे तुंचालवामां क्षीणजंघाछो तेमाटेलुजने इहांजशंखपुरनगरेंरहेवुं केमके साध्वीयें आश्रितक्षेत्रमां बहुक्तायें साधुनेरहेवुं योग्यनथी अप्रीत्यादिकदोषनेअणथवाथकी अमेअांहियी विहारकरशुं वलीकालांतरें लालजाणी आवीशुं तिहांसुधीतुं जेते उपायकरी राज पुत्रनी सायेंपरिचयकरीप्रतिबोधकरजे एहवुंकहिने आचार्य विहारकरिगया.

हवेमहानद्रासाध्वी पुंडरीकनामराजपुत्रने स्नेहेकरीसहितबोलावे अनेराजपु त्रपण महानद्रानेदेखी हर्षवंतथाय एमकेटलेकदिवसें तेबालकसम्यक्प्रकारेंयथो तेहवोसमयजोइने समंतनद्रकेवली तिहांआव्या तेवारें महानद्रापणते राजपुत्रने सायेंलेइ वांदवानेअर्थेंआवी अनेकहुंके हेपुत्र आसदागमनामागुरुछे तेसांनली पुं मरिकेंकह्युं हेमाता एसदागमनेदेखी मनेमहोटो हर्षनोउदयथायछे माटेएगुरुनीपा सें हुंश्रुताभ्यासकरीश एमकही पछितेपुंडरीककुमर सामायिकादिक श्रुतनणवाला गो एरीतेंहेजद्र एमहानद्राते कंदमुनीनोजीवजाणवो एनुंवली प्रज्ञाविशाला एह वुंबीजुंनाम गुरुकहेछे तथा तुंवली सुललिताते पूर्वेंमदनमंजरीनो जीवछोते तुं पर मार्थे अणजाणवायकी अगृहीतसंकेता एहवुंताहरुंनाम गुरुकहेछे एवलीपुंडरीकना माराजपुत्र कुलंधरनोजीवतेहने नव्यपुरुष सुमति एहवुं बीजुंनाम गुरुकहेछे हवे महारीचोरीनी अवस्थानोवृत्तांत कहुंछुंतेसांनल.

आजेंजइहां चित्तरमनामा उद्याने प्रासादनेआगल श्रीगुरु धर्मउपदेशआपेछे एट लामां हुंवनजोवानेअर्थे इहांआव्यो अने महाराजशकरनो कोलाहल शब्दथइरह्यो हतो तेवारें गुरुयें तुजने अने पुंमरीकने प्रतिबोधवानेअर्थे महानद्रानुं संबोधनकरी नेकह्युं के अहोप्रज्ञाविशाले आसंसारीजीवचोरछे तेहने चोरीनामुद्रासहित उष्टा शयादिक राजानापुरुषेंबांधीने सर्वलोकनादेखतां मनुष्यगतिनगरीना महाविदेहरूप चउटामां नमावीने कर्मपरिणामनामे राजानीआज्ञायेंकरी पापीपिंजरनरकमां ना खवानेअर्थे वियकरवाली पृथ्वीयेंलइजायछे तेहनोए कोलाहलथायछे.

एहवुंसांजलीतें कह्युंजे हेजगवन् एतोमनुष्यगतिनगरीनथीपण एत
वलीथ्या चोवटुंनथीपण चित्तरमनामा उद्यानछे तेमजइहांतो श्री
छे पणकर्मपरिणामनामा राजानथी तेमाटे तमे एमकेमकहोछो एहवुंकहेथके श
रुयेंकह्युंजे तुंतो थ्यगृहीतसंकेताछो माटेएवचननो परमार्थजाणतिनथी.

वलीतें चिंतव्युं जेथ्यहोजगवंते तो महारुंपण वीजुंनामकह्युंछे एम विस्मयनेप्रा
मिरही तेवारें महाजद्रायें विचार्युं जे कोइकमहापापीजीव नरकगतिनो जवावालो
हशे तेहनुं एहवुंस्वरूप जगवतेंप्रकास्युं तेवारेंकरुणाकरीगुरुनो थ्यादेशलेइने मुजनेप्र
तिबोध करवानेथ्यर्थे महाजद्रासाध्वी महारासमीपेंथ्यावीने मुजनेकह्युं के थ्यहोजइतुं
सदागमनुं शरणकर जेथकी तुजने चोरीनाथ्यपराधथी उपनीजे विटंवनाते थायनही
थ्यने विकस्वरपणुंपामें एहवुंकहिनेमुजने इहांथ्याण्युं तेवारें हुंजगवंतने देखीने थ्य
णकहेवायोग्य थ्यानंदनाबहुलपणाथकी मूर्छापाम्यो वली चैतन्यवंतथयो तेवारेंगुरु
येंकह्युं हेमहाजाग्यवंततुं कोइनोजयराखीसनही इत्यादिक वचनेकरी गुरुयेंमहारी
थ्याश्वासनाकरी तिवारेंदुष्टाशयादिक विटंबानानाकरनार ते मुजनेत्यजीने वेगलारह्या
तेहथीहुंस्वस्थथयो.

तेवारेंतें माहरुंस्वरूप पुछ्युं तेयद्यपि सदागम थ्यनेप्रज्ञाविशाला एवेहु महारुंस्वरू
पजाणेछे तोपणमेंतुजने तथापुंमरीकने प्रतिबोधवानेथ्यर्थें महारोमूलथी वृत्तांतकह्यो.

वलीसांजलहेजोली माहरुंथ्यंतरंग चोरीपणानुंस्वरूपकहुंछुंतेमज हुंनवमां ग्रैव्यक
थकी सुकछनामा विजयनेविषे क्षेमपुरीनगरियें ज्ञुगंधरराजानी नलिनीराणीना कुंखेपु
त्रपणे उपनुं तेवारें जवितव्यतायें मोहादिकनेजणाव्युं जे संसारीजीव हमणा सम्य
क्त्वथकी जूदोययोछे तेमाटेतमारो बलफोरावबानो थ्यवसरछे एहवुंसांजली मोहादि
केंमुजने बालपणाथकीज मांसादिकव्यसनमांप्रवर्त्ताव्योहतो वलीयौवनथ्यवस्था
मांतो चक्रवर्त्तिनीपदवीहती तेमांतो महाथ्यारंज महापरिग्रहें करीविटाणोथको हिं
सा क्रोध मृगयादिक व्यसनकरुं एरीतें महारी चित्तवृत्तिनामा थ्यटवी मलिनथयी
दुःखेंतरवायोग्य प्रमत्तनामानदीपूरेंजरीथ्यावी एमथ्यनुक्रमे सर्वमोहराजानुंलशकर
महारीपासेंथ्याव्युं थ्यने चारित्रधर्मनामाराजानुंलशकर सर्व दूरथइगयुं तेवारें मो
हराजायें फरीराजसचित्त थ्यने तामसचित्तनामा नगरनुं स्थापनकर्युं.

पछेमोहराजानुं थ्यविद्यामयशरीरते पुष्टथयुं थ्यने पोतानापरिवारने कहेवाला
गोजे थ्यहोजाईयो थ्यापणाजाग्योदयथी घणाकालें जवजंतु थ्यापणेवशथ्याव्योछे पू
र्वेंथ्यापणने एजवजंतुयें घणानिर्वलकरयाछे तेहजीसुधी वीसरतुंनथी तेमाटेहवे त

नारेहट उद्यमेंएहनीपठवाडेप्रवर्त्ततुं जेमएकिवारें चारित्रधर्मादिकोने स्वप्नमां पणदे खेनही एवीरीतेप्रवर्त्तजो पछिमोहराजानी आज्ञायेंकरीअनादिकालनुं मोहराजानुंरा जस्थिरकरवामाटे रागकेसरीप्रमुखें कर्मपरिणामराजानीजअसत्कर्म तथाअकुशल कर्मनीवर्गणाना समूहरूपद्रव्यनीचोरी महारेंहाथेकरावीने पछेतेरागकेसरीप्रमुखडुष्टा शयादिकें तेचोरेखुं द्रव्यनामुद्दातायेंजमनेबांधीने कर्मपरिणामनामा राजानेजइदेखा ड्युं तेवारें क्रोधवंतथयोथको कर्मपरिणामराजा कहेछेकेजूओजूओ हुंएनोकेटलोका लथयोपक्षपातकरुंछुं तोपणएमहारीज चोरीकरवाने प्रवर्त्यो माटे विटंबनापूर्वक एह नेवधकरवानी भूमियेंआणिने पापिपिंजरनगरमां नाखीयो इत्यादिकराजानोआदेशपा मिने मागडुष्टाशयादिक सुभटहर्षवंतथयीतेणेभुजने कर्ममलरूप भस्मअंगेचोपडीने अने राजसगुणरूप लोनागेरुनाहाथहायादेइने वली तामसगुणरूप शाहिनाति लककरी तथा रागनीपरंपरारूप कणेयरनाफूलनीमाला तेणेकरी महारागलाने शोभितकर्युं वली कुविकल्परूप शरावलानीमालायेंकरी महारारुदयस्थलने विटंबना वंतकर्युं एरीतेंवधकरवासारुं मनेशोभावंतकरी हीणआचाररूपमहोटा गधेडानीपीठ उपर चढाव्यो तेवारपछि पापोनोउद्वेगरूप भांगेलोकूंडो मस्तकेदेइनेअकुशलकर्म रूप अपहरेखुंधन तेमहारे गलेबांधीने.

शब्दादिक त्रेवीसविषयरूप विस्तारवंत पडहवजावते कोलाहलादिक वाजित्रवा जतेथके बहिरंगरूप अंगलोकनेजोतेथके विवेकिपुरुषोने भंदवायोग्यथको साध्यके० मध्यमपुरुष तेहनेअनुकंपा दयाउपजावतोथको राजानापुरुषजे डुष्टाशयादिक चो कीदारेंविटाणोथको कषायरूप वालकें उपहास्यकरावतोथको माहरापोतानादेश ना दर्शनकरावववानी वांछाना मीसथकी महाविदेहरूपहाटनीश्रेणीमां भमावीने जिहांलगणभुजने वधकरवानी भूमिने सन्मुखलेइ जवामांडयुं एटलामां हुंआस्थानकें आव्यो एटलेमहाभद्रापणगुरुपासेंआवी अनेहुंपणतेसमयें हाथीनाखंधायीउतरीने राताअशोकवृक्षतलेंवेगेथको वननीशोभाजोउंछुं तेवारें महाभद्रा महारेभजरेआवी एणेपण पूर्वस्नेहनावशथकी स्नेहसहित भुजनेजोयो मेंप्रणामकर्यो तेवारेंमहाभद्रा येंपण धर्मलाभरूप आशीरवाददीधो अनेकह्युंकेहे राजा एडुष्टाशयादिक राजपुरुषते कर्मपरिणामनामाराजाना आदेशथकी वधकरवाने शोभावंतकरी तुजने वधभूमियें लेइजायछे तेतुंकेम नथीजाणतो.

जिहांलुधीहुं महाभद्रानोकहेलो भावार्थविचारुंछुं एटलामांवली रुडीरीतें महारा जोवाथकी महाभद्रा जातिस्मरणज्ञानपामि तेवारेंतेणे कंदमुनीनाभववी मांमीनेस

वेवृत्तांतदीगे, वलीतेह्विज शुनअध्यवसायना प्रवलतायकी अवधिज्ञानउपनुं तेह नावलथकी गुणधारणना नवनीतीमांसुधी महारुंपण नवचरित्र एणेदीतुं तेवारें मनेकह्युंके हेराजन् तुजनेनिर्मलाचार्यनावचन अने क्षमादिककन्याना विवाहनुंसु ख तथाप्रैव्यकादिकनासुख सांजलेछे केनही.

इत्यादिकवचनसांजली मनेपंडितवीर्योल्लास उपनो तेहनाअनुनवथकी मोहरा जाने पराजवकरी सम्यक्त अने सदागम एवेहु महारेसन्मुख आव्या तेवारें चित्त वृत्तिनामा अटवीमां वेहुसैन्यनुं युद्धथयुं पणमहारी प्रवलतायकी मोहराजाना सै न्यने वीर्यरहितकरी चारित्रधर्मनामा राजा जयरूपलक्ष्मीपाम्यो तेहथीमने गुण धारणानाजवनी सीमालगण जातिस्मरणज्ञान प्रगटथयुं वलीविशेष शुनअध्यवसा यना योगथी असंख्याता द्वीपसमुद्रना विषयजाणवारूप अवधिज्ञानउपनुं तेणे करीमें असंख्याताजवना प्रपंचदीगा वली सिंहाचार्यनाजवमां जणेलुंजे चउदपूर्व श्रुतते मने सांजलीआव्युं.

तथा निगोदथी मांमीने जवनोविस्तारजे निर्मलाचार्यें कह्योहतोते सर्वसांजल्यो प छेमने उत्कृष्टवैराग्यउपनुं तेथी गुरुनीकहेली चोरनीअवस्था साचीकरवाने अर्थे वैक्रिय शक्तिनावलथी चोरनुंस्वरूपकरी प्रज्ञाविशालानी सायेइहांआव्यो तेवारपछि तुज ने अने पुंमरीकने प्रतिबोधवानेअर्थें गुरुयें महारामुखथीज महारो वृत्तांतकहेराव्यो छमहिनासुधी कहेवायोग्य एवृत्तांतहतो पण आजगवंतना प्रसादथकी मेंत्रणपहो रमां हेनोलीएमाहरा अंतरंगनी चोरीनुंजेस्वरूप हतुंते ताहरा आगल कहिसंजलाव्युं

तेमजवली वहुलतायें सर्वसंसारीजीवोनेविषे पणहुंदेखुंछुं एरीतें संसारीजीवनो कहेलोवृत्तांत सांजलीने सुललिता नावितचित्तवंतयइ तेमजराजपुत्र पुंमरीकपण ह र्षवंतथको फरीपुछवालागोजे हेआर्य हमणाताहरी चित्तवृत्तिनामा अटवीमां शोवृ त्तांतछे तेवारें अनुसुंदरवोल्युं जेसांजलहे सुमति जेवारेंहुं सदागमनुं शरणकरीने सं वेगंपूर्णथको पोतानोवृत्तांत कहेवानेप्रवर्त्यो तेवारेंज चारित्रधर्मराजा पोतानो अ वसरजाणीने सैन्यसहित महारीपासें आववाने प्रवर्त्यो तेथी सात्विकमानस ना मानगरते आनंदवंतययो वली विवेकनामापर्वत निर्मलथयो तथा जैनपुरनगरव स्युं वली चित्तसमाधानमंमपइत्यादिक स्थानको वृद्धिपाम्या अने महारादेखतांजचा रित्रधर्म अने मोहराजानो माहोमांहे महोटुंयुद्धथयुं पणसम्यक्त अने सद्बोधसहित महारा पराक्रमना अनुनावथकी चारित्रधर्मराजायें तेमोहराजाने सैन्यसहित वीर्यरहितकर्युं हमणा चारित्रधर्मराजा सर्वजशकरसहित माहारापासेरह्योछे ह

वेढुं जैनलिंगग्रहणकरीने तेहनुंपोषणकरीत इत्यादिक अनुसुंदरें चोरीनुंस्वरूपक हिनेचोरनुंरूपउपसंहार्युं पठेदेवतानीकांतिसमान पोतानुंमूलरूप प्रगटकर्युं एट लामां ते अनुसुंदरनुं लशकरपण तिहांआवीपहोतुं एसर्वदेखीने पुंडरीकादिक विस्म यवंतथयाथका विचारवालागाजे अहोआपणे एहनेपूर्वें चोरजाणताहता पणए तो महोटीविस्तारवंत ऋद्धिनोधणी चक्रवर्त्तिसरिखोछे.

पठेअनुसुंदरें पोतानोपुत्र पुरंदरने राज्यदेइने तथावली राज्यनांजेचिन्हहतां तेप णदीधां श्रीजिनराजनीपूजाकरी चारित्रलेइने वलीसुललिताने प्रतिबोध आपवाला गोजे हेसुललिता मेंएटलोसंसारनोविस्तार तने कह्यो तोपण तुंहजीसुधी केम शून्यचित्तनीपरें देखायछे असंव्यवहारनामा नगरथीमांमी एकेंद्रिय तिर्यंचादिक ज वोनेविषे माहरीअनुज्ञवेली विटंबनासांजली तोपण केमसंवेगवैरागनेनथीपामति.

तेमज नंदिवर्द्धनादिकना नवमां हिंसा क्रोध मान माया चोरी लोज मैथुन अने मोहपरिग्रहादिकना संगथीमने अनेकप्रकारना कष्टथया तेसांजलीपणतुं हजीतत्त्वने णतिनथी तो हेअगृहीतासंकेता तुंतो ताहरानामप्रमाणेज यथार्थछो.

वली वाल मंद जड अने अधम वालिशनास्पर्शनेंद्री रसनेंद्री घ्राणेंद्री चक्षुइंद्री श्रोतेंद्रीना परवशपणानुं अधम फल तेमज मनिषीनाचरित्र तेमज विचक्षण नामाआचार्य बुद्धनामाआचार्य कोविदनामाआचार्यना चरित्रोनीदेशनासांजलीने प णजो तत्त्वनाअर्थमां विकलछो तोमनुष्यपणो धारणकरयाछतांपण पशुसरिखीछो.

वलीचित्तवृत्तिनामा अटव्यादिकनुं स्वरूप मोहनासैन्यनुंस्वरूप जवचक्रनुंस्वरूप तथा सात्विक मानसनगर विवेकपर्वत जैनपुरनगर तथा चारित्रना सैन्यादिकनुं स्व रूपसांजलीने जोताहरुंचित्त जिनोनहीं तोतुंपछरसरिखीदेखायछे.

वली कनकशेखर नरवाहन विमल हरिराजा अकलंक प्रमुखोनुं सुज्ञनतापणुं त था कोविदनामाआचार्यना छशिष्योना वैरागनाकारणो सांजलीनेपणजो संसारथकीछू टतीनथी तोतुंसर्वथा कोरडूंसरिखीदेखायछे तेमज जेकांइहुं पुण्योदयना साह्यथकी सु खपाम्यो जेकांइमने तथापापोदयनासाह्यथी दुःखनी प्राप्तिपाम्यो वलीसिंहसूरिनाज वमां श्रुतनामदादिकेकरी सुस्थितराजानी आज्ञाविराधीने अनंताजव जमवारूप कष्ट नेपाम्यो तेसांजलीनेपण जोतुंप्रतिबोधपामतिनथी तोहवेकहेजे एयकीवधारे किहो ताहरे प्रतिबोध पामवानो उपायछे.

वलीहेसुललिता पूर्वेंगुणधारणनेजवेंतुंमहारी मदनमंजरीनामास्त्रीहती ते जव मांजतें श्रीनिर्मलाचार्यनी अमृतोपम देशनासांजलीहति वली तेजवेंदीक्षानुंआरा

धनकर्युं तेहनेपणकेम संभालतीनथी इत्यादिक प्रचोरणावचनेकरी अनुसुंदरें वारंवार पूर्वे अनुभूतवृत्तांतनुं फरीफरी संभलाववेकरीने सुललिताने प्रतिबोध कर्यो तेवारेंतेणीनें पुंडरीककुमरने जातिस्मरण ज्ञानउपनुं तेथीमूर्छापाम्यो तेवारें दुःखें [illegible]वंत एहवा श्रीगर्भराजादिकें शीतलउपचारेकरीने सावधानकर्युं पछेतेकुमर [illegible] देखता एमबेसाधीनातने कुंतानुग्रहपसायथी जातिस्मरण ज्ञानपाम्यो तेथी [illegible] कुलंधरनामा गुणधरनो मित्रहतो तिहांनिर्मलसूरिना वचनरूप अंशसान [illegible] संतमदलकर्यो तोहवेपण संसारगामीने प्रतअावरुं एहवुंसांभलीने पुंडरीक [illegible] नहिर्नगम[illegible]लागी तेवारेंश्रीगर्भराजा कहेवालागोजे देखीकारणविना [illegible] पतांप्रथम तादृराज स्वप्नने अनुसारेंकरी अमेएरीतेंजाण्युंछे तोतेस्वप्नने [illegible] नथी [illegible] चारित्रग्रहणेंजुं सारुंछे एमकहिनेते [illegible] संयमग्रहणकरवामां एकचित्तवंतथया.

[illegible] सांभलीने नम्रवंतथकी गुरुनेकहेछे हेभगवानमेंपूर्वे केम [illegible] सकलागमें [illegible]पण मुजनेज्ञानोदयथतोनथी वलीवेरा [illegible] तेवारें समंतभद्रसूरिनाकहेवाथी आगळज अनु [illegible] पूर्वे मदनमंजरीनाभवमां दीक्षालेइने ज्ञाननाअभ्यासमां [illegible] तेहनाविपाकथी इहांएरीतें दुर्बोधवंतथइछो तथावलीतेभवमां [illegible] तेमहवापण [illegible] संगनेदूतिनथी.

[illegible] सुललिताएंसमकितनेअर्थी आगुभूकति अज्ञानने नाशकरवानो [illegible] तेवारें अनुसुंदरकह्युं [illegible] कर्मक्षय [illegible] अने [illegible] नहिकर एहनी नहिज प्रायें सर्वत्रा [illegible] इत्यादिक वचनेकरी संवेगनीवृद्धीथयी अनेएदिवसता [illegible] पदकमलनेविषेपडीने कहेवालागी.

[illegible] [illegible] मदतारो उपकारको उपकारको [illegible] तेथीतेसुललिताने [illegible] जातिस्मरण ज्ञानउपनुं तेहनाप्रभावथी साक्षात् मदनमंजरी [illegible] अनुसुंदरना [illegible] [illegible] [illegible] साक्षात् [illegible] [illegible] [illegible]

अनेतमेंमुजने उद्री एहवामां सुललितानामातापिता सुमंगलाअने मगधसेन ए वेस्त्रीनत्तार परिवारेंसहित पुत्रीनेमिलवाने उत्तकवंतथका आव्या.

तेवारें सुललितायें पोतानीमातापितापासेथी व्रतलेवानी आज्ञामागी तेसांन लीने तेस्त्रीनत्तारने शोकउपनो तेणेकरी आकुलथया तेहनेसुललितायें अनेकजा तिना उपदेशनाजेदेंकरीने तेवेहुनेप्रतिबोधपमाडी व्रतलेवानेउजमालकस्था तथापो तेपण व्रतलेवाने सन्मुखथइ वली श्रीगर्नेराजा मगधसेनराजा तेणेपण पोतपो तानुंराज्य अनुसुंदरचक्रवर्त्तिनापुत्र पुरंदरनेआप्यो तेवारपछि अनुसुंदरादिक साते जणाने महोटाउत्सवेंसहित श्रीसमंतन्नद्रनामासूरिये विधियेंसहित दीक्षादीधी वलीसंवेग तथा वैराग्यनीवृद्धिकरनार एहवीधर्मदेशनाआपी.

तेवारपछि गुरुप्रमुखसर्व मुनीओने नमस्कारकरीने मनुष्यदेवतादिक जेवीरीतें आव्याहता तेवीरीतें सहुपोतपोताने स्थानकेंगया एटलामां संध्यासमयथयो तेवा रें आवश्यकादिककार्यमां सर्वसाधुओ प्रवर्त्यातेसर्वसाधुओमां स्वाध्यायनाध्याननेवि पे अनुसुंदरमुनि अयेलरथइने ध्यानमांज मननेसीचतोथको तेहिजरात्रीयें उपशमश्रे णीयें चडीने उपशांतमोहगुणगणे पोतानुंआयु पूरणकरी उदारिकशरीररूप पांज रुंमूकीने सर्वार्थसिद्धविमाने तेंत्रीससागरोपमने आउपे देवतापणेउपनो तेवुंकारण जाणीने श्रमणसंघें तेहनाशरीरने वालवारूप संस्कारकस्यो मनुष्यदेवतायें ओठवकस्यो

हवेधर्माचार्यना स्नेहेंकरी सुललितानामा साध्वीनेशोकेपीडाणी जोइनेगुरु येंकह्युं हेआर्या महात्मापुरुषें शोककरवोनही एणेतो एकदिवसमात्र चारित्रपा लवाथी नरकेंजवायोग्य पापनेखपावीने सर्वार्थसिद्धिना सुखउपजाव्या वलीति हांथीचवीने पुष्करार्धना नरतक्षेत्रमां गंधारराजानी पद्मिनीराणीनो अमृतसागरना मा पुत्रथशे तेयौवनअवस्थामां विपुलाशयनामासूरिना वचनेकरीने सदागम तथा सम्यक्त्वादिकने ओलखी मातापितानी आज्ञालेइने जेरीतेंगुणधारणना नवमांकह्युंछे तेरीतें निरंतरक्षमादिकना विवाहमांअग्रेसरीनूत थकोऐश्वर्यवंत एहवी दीक्षाव्रतपा मिनेनीवाणवर्जित तप अने संयमेंकरी सर्वकर्मनामलधोइ केवलज्ञानप्राप्ति मो क्षजसे तेमाटेएहर्षनुंज कारणछे एहनुंमरणपणुंत सुकृतरूपकार्यनकरवुं जाणवुं.

इत्यादिकवचनेकरी सुललिता शोकनेमूकी पोतानाआत्मानी शुद्धिनेअर्थे छठअठ म दशम द्वादश रत्नावली मुक्तावली लघुसिंहनीक्रीडित नद्रादिकप्रतिमा चांद्रायण य वमध्य वज्रमध्य इत्यादिक घणाडःखेंकरी तपनायोग्य तपनेंतनिर्वाहथकी विचरवालाग्ये गी हवेपुंडरीकनामामुनीते ज्ञाननोअभ्यासकरताथका अनुक्रमें गीतार्थथया तेवार

वि एकदिवसें समस्तअर्थने सारनूतपणुं जाणवानेअर्थे विनयसहित गुरुनेनमस्कारकरीने पुछयुंजे हेनगवन् आगमरूपसमुद्रनो सारमुजनेकहो तेवारें आचार्यबोल्या हेआर्यजेध्यानयोग तेहिजसमस्तआगमोनो सारनूतपणुंछे केमके साधुने अनेश्रावकनाजेकांइमूलोत्तरगुणछे तेसर्व बाह्यक्रिया अनेध्यानयोगना फलनूतछे तेमाटे ध्यानतयाक्रियाना अंगनूतजेमूलोत्तरगुण तेणेकरी चैतन्यनी शुद्धिकरीने साधुयें ध्यानयोगसाधवो एहवुंसांनजी पुंमरीकमुनिबोल्या.

योगनाअंगतेपूर्वेअज्ञान अवस्यामां पणहुंमोक्षमार्गनो कौतकीहतो माटेयणा कुतीर्थिने पुछेयके तेणेययार्थ पोतानामतनुं आलंबनकरी तत्वकह्युं हतुं.

तेमांएककहेछे के सर्वजगतनेहणीने पण बुद्धिकांइलेपातिनयी एटले जेमकादवयी आकाशलेपातोनयी तेनीपरें एआत्मा गमेएटली हिंसाकरेसमस्त जगतनेहणीनापणतोपण पापेंकरीलेपातोनयी.

वलीकोइक एहवुंकहेछेजे जीवमात्रनेछेदीनेदी तथासेकडागमे पापोकरीने पण एक विरूपाक्ष जेशिवतेहनुंस्मरणकरेयकेज तेप्राणी सर्वपापथीमुक्तथायछे.

वलीकोइकएमकहेछेजे अपवित्रहोय अथवा पवित्रहोय इत्यादिक पण सर्वअवस्यानेविषे प्रातयकांजे कमलसरिखानेत्रवंत एहवा श्रीनगवंतने समरेछे तेप्राणी बाह्ययी तथा अन्यंतरयी पवित्रजजाणवा.

बीजावली पापनाशननामामंत्रनुं जापजपयुं तेहजपापनानाशनुं करनारछेएमकहे छे केटलाकतो यापूनेजीतवुं पवननुंरोधवुं समाधीकरवी तेहनेज मोक्षसाधनकहेछे केटलाकवलीकहेछेकेहदयकमल तेहनुंचिंतववुं तेनेज मोक्षनुंकारणमानेछे बीजावली रेचककुंनकादिकवायुनेजमोक्षनुं कारणजाणेछे तयाकेटलाक नादबिंदुचंद्रकला ज्योतिनाडी प्रणव शून्यादिकनुंध्यानकरवुं इत्यादिक योग्यपणेमुक्तिकहेछे एरीतें नानाप्रकारेंकरी ध्यानयोग वदेवानुंसारकहेछे पणएकजमोक्ष साधननेविषे अपर अपरजे जोगीछे तेहनावली ध्येयपणनानाप्रकारनाछे अनेसाधनतो सर्वएकमां हनुंबकहेछे एमहांटोतने संशयछे एहवुंपुछेयके.

हवेआचार्यकहेछे हेनोजातुंतो सामान्यगीतार्थछो केमके जिनागमनुं रहस्य विशेषपणेजाणतोनयी माटेएसर्व परतीर्थिते खोटावेषजाणवा मात्रजिनराजरूप सदैवना पणानाकडनाराछे तेहनुंदृष्टांतकहुंछुं.

जेमएकनगरमां सर्वलोकरोगेकरीपस्तछे तेहांवली एकमहोटोवैद्यछे तेदिव्यज्ञानवंत सर्वरोगोना आशांनोदरजावनार समस्तरोगनोहरनार सर्वलोकोने उपकारनोक

रनार एह्वोछतांपण तेहांनगरनालोक निर्द्धनपणाथकी तेह्नावचनने अंगीकारकरतानथी वलीजेह्नेकल्याणथवानुंछे तेह्वालोकतेह्नेअंगीकारकरेछे तेवैद्य वलीनिरंतर पोतानाशिष्यनेजणावेछे.

एकदिवसेंतेनगरमां कोइकप्रसंगथकी केटलाकधूताराआव्या तेणेते सद्वैद्यनुं कांइकलेशमात्र व्याख्यानसांभलीने तेह्नाअंशमात्रें संतुष्टथका पोतामां पंडितपणोमानवालागा पछेतेमांथीकेटलाकधूर्त्तोयें पोतानीपूजानेअर्थें तेअंशमात्रज्ञानने अनुसारें पोतेंपोतानी संहिताओरची वली केटलाकपोताना मनकल्पित बीजावचननी रचनाकरी कोइकेंतो वली तेसद्वैद्यनाशास्त्रोनो अंशलेइने पोतानाकल्पित विरुद्ध वाक्यतेमांघणाजनाख्या अने संहिताओरची.

बीजाओयेंतो अतिपंडितताने अभिमानेकरी वली ते सद्वैद्यना वचनथी विपरीतजवचनगुंथ्या एमते चिकित्साना करवावालानेविषे नानाप्रकारनीरुचिवंत तेनगरनालोकतेह्ने तोतेखोटावैद्यमांथी कोइकज कोइकनाचित्तनेगमे बीजोगमेनही ते वारपछि प्रसिद्धतानेपाम्याथका तेसर्ववैद्योनीशालावंतथया वलीतेणेपण सहुयें पोतपोतानाशिष्योने पोतपोतानी रचेली कल्पित संहिताउजणावी वलीतेजणनारपण वाचालपणाथकी लोकमांमहोटावैद्यनी प्रशंसानेपाम्या.

पछेतेमूल महावैद्यनेतो कोइकजनगरनोलोक उलखे एमछतापण तेह्नेआश्रयासर्व लोकोना रोगने छेदवावास्ते तेह्नीसंहितानाजणनारानी परंपराचाली.

तेमजवली कूटवैद्यजेथया तेहोनीरचेली संहिताओना जणवावालानीपरंपरापण चाली पणते सर्वोये असत्कल्पनाना मूलनेग्रहणकरनाराहता माटेआश्रयकरनार लोकोनेउलटीरोगवृद्धिकरवानेअर्थेथया तेमांपणवली तेह्नाआश्रयला कोइकलोकने रोगनुंमूकाववुंपणथयुं तेतोतेहोनी संहिताओमां गुंथेला सद्वैद्यनावचनना अनुभावथकीजाणवा पणतेहोना पोतानाकल्पित विरुद्धवचनना अनुभावथकी जाणवानही.

तथाजेवली मावीबुद्धिनाधणीयें सर्वथा सद्वैद्यना वचनने विपरीततापणेज संहिताओरचेलीहती तेह्ना आश्रयेंजे रोगीपुरुषलागा तेतोसर्वथाप्रकारें रोगनीवृद्धिनेजपाम्या तेरीतें इहांपण उपनयजाणवो जे आसंसाररूपनगरजाणवुं तेमां रोगीआपुरुषते सर्वजवजंतुजाणवा अने सर्वज्ञरूपसद्वैद्य जाणवो सिद्धांतरूप संहिताओजाणवी तेकर्मरूपरोगने हणनारछे.

अनेकुतीर्थरूप कूटवैद्यजाणवा तेह्नाशास्त्रते कूटसंहिताओजाणवी तेमांथो भाज जेकोइने कल्याणथवानुंहोय एह्वाजे भव्यजीवोतेतो सर्वज्ञरूप सद्वैद्यनावच

न अंगीकारकरेछे तेओनेकर्मरूपरोगथी निश्चेथकी मूकावबुंथायछे जेवलीअथन्यप णे कुतीर्थरूप खोटावैद्यनी सेवामांतत्परछे तेओने कर्मरूपरोगनो मूकावबुंथायनही केमके विपरीतआचरणथकी उलटीरोगनी वृद्धिथाय.

वलीअन्यतीर्थिनेविषेपण किहांक सांख्यादिकमत आस्तिकमां कर्मरूपरोगनेहल काइथवापणुं देखायछे केमके तेहनामतना ग्रंथगुंथवावालामां सत्य संतोष क्षमा धृति आर्जवइत्यादिक सर्वज्ञना वचननुंज माहात्म्यजाणवुं वलीतेहनापोतानाकल्पि त यज्ञ होम पशुवधादिक उपदेशोमां तत्परोनो कूटवचनपणोछे तेमांकर्मनुं हल वायथवापणुंनथी उलटीकर्मरूपरोगनी वृद्धिकरेछे एपरमार्थछे माटेजिनशासन तेहि ज कर्ममूकाववानुं कारणजाणवुं.

हवेजे सर्वज्ञरूप सद्वैद्यनावचनथी केवलविपरीतजछे एहवाजे चार्वाकादिक नास्तिकछे तेहनाआश्रयवालाओ एकांतथी कर्मरूपरोगनी वृद्धिनाकारणभूतजछे ते माटेहे महाभाग्यवंत सर्वशासनते वीतरागना कहेलावचनथीज निकल्याछे तेमाटेए जिनशासनते सर्वमतव्यापककहियें एमछते जेकांइपण सत्य अहिंसा ब्रह्मचर्य शौच इंद्रियनिग्रह तथावलीजेकांइ निराशीभावें तप ज्ञान ध्यान देवगुरुनीभक्ति इ त्यादिक रूडापणाना सद्भाव परतीर्थिओमां देखायछे.

पणतेयाग होमादिकना उपदेशरूपवचनेकरी मिश्रितछे माटेरूमीसंगतिप्रतेपाम तानथी तेथीतेजूदाजदेखायछे तेमाटे जिहांतिहां सर्वदर्शनोमां पणभावथकी सर्व ज्ञनावचन आचरवाथीज मोक्षछे पणतेमां कोइपणदर्शननालिंगनुं कांइकारणनथी.

जेवलीसर्वज्ञनाकहेला ज्ञानथीविपरीत एहवामाठाआचारवंतछे अनेकहेछेकेअमे ध्यानीछयें एवुंमानेछे तेतोबोलवामात्रज जाणवा पणविवेकीने आस्थाना करनार जा णवानही एहवुंजाणीने सर्वज्ञनावचनोमां जेकांइमनने निरोधकरनाराहेतुने देखाडना राजेउपाय तेसर्वस्वार्थसाधकजनेजेमएअर्थयनुंमूलकरनार सिद्धर्षिगणीयेंपोतेजकह्युंछे.

जेजिनशासनमां कहेलाभावतीर्थमां रह्याजेध्येयनाभेद तेकांइदूरीतयतानथी यतः सद्भावाय मूलं दुवालसंगंजउसमत्थाएं रयणागरतुंअखलुतो सयंसुदरत्तंमि इति

वलीपुंमरीककहेछे हेभगवंत जेमआपणे जिनशासनने सर्वव्यापककहियेंछैयें ते मज अन्यतीर्थिपण पोतपोतानादर्शनने सर्वदर्शनव्यापि कहेछे किंवाभथीकहेता ए मजुबराबी गुरुबोल्याजे हेआर्य जेसम्यक्दृष्टितेहिज भावथकी जैनदर्शननेजाणेछे तेमां मोहनामहादकी उत्तनोजे भेदरूपबुद्धितें पोतानीमेजेज नाशपामेछे केमके स मज्ञ कुत्सतान्यतेरहित अढारदोषेरहित सर्वज्ञ सर्वदर्शी परमात्मा तेएकजतमये

छे एहवोपरमार्थजाणीने जेकोइ ब्रह्मा विष्णु शिव बुद्ध जिनादिकनानाममांहेला को इपणनामेंकरी ने तेहनेध्यावेछे तेपुरुषतेहिजनामना ध्यानेकरी सिद्धिनोकरनारथाय.

वलीजेणे परमात्मानुंस्वरूप जाण्युंनथी अने कदाग्रहमां प्रवेशकस्योछे तेहनेको इवारेंपण अर्थसिद्धिथायनही तेमज क्षमा मार्दव शौच तप संयम निर्लोभ सत्य ब्रह्म आर्जव अकिंचनरूप दशप्रकारनोधर्म तेकोइएकजाना वापनोनथी तथा वली इहांकोइनो संबंधनथी केवलजे एहनेजाणेछे तेवेछे तेहनोजएधर्मछे केमके लोक नीपण एहवीयुक्तिछे जे गंगानामानदीते कोइनावापनीनथी एनावार्थजाणवो.

तेधर्म जैन अथवा वैष्णव अथवा बौद्ध अथवा ब्रह्मसंबंधी अथवा महादेव संबंधी इत्यादिक गमेतेकह्योपण तेतत्वार्थ जाण्याथीज प्रसन्नथायछे माटेजे पंडित होयते शब्दमात्रेंकरी धर्मजाणेनही जो अन्यतीर्थिओपण एरीतेंज देवनुंस्व रूप धर्मनुंस्वरूपजाणीने पोतानादर्शनने जोसर्वव्यापीकहेतो तेमांकांइविरोधतानथी अनेजो एपूर्वोक्तरीतथी अन्यथाजकहे तो कुग्रहेंग्रहणबुद्धियेंकरी जातिअंधसरिखो थयो ते विवादरूप अनर्थनुंजकारणथाय माटेतेह्थी उदाशी रहेवुंते रूडुंजाणवुं.

तेओनेजो छतिशक्तियें कोइकरीतें तत्वसमजावे तेहनेजरूडोपुरुषजाणवो केमके तत्वज्ञाननादानथी उपरांत बीजोकोइ महोटोउपकारनथी बीजुंवली हेमहानाग्य वंत जेवारें सर्वनयनुंसमुद्ररूप एहवुंजे दृष्टिवादनामाअंग तेह्मांथी सर्वनयदृष्टिवं तरूपनदी पमतियकीदेखील तेवारें समस्तताहरासंदेहजेछे तेपोतानीमेलेज नाशथ इजशे अने सर्वथकीउत्तम तेएकसर्वज्ञना शासननेज जाणीस इत्यादिक श्रीगुरुराज नाकहेलावचन तेणेकरी समस्तप्रकारेंतज्योछे संदेहनोसमूहजेणे एहवाश्रीपुंमरी कनामामुनि तेविशेषेंकरी सिद्धांतना अन्यासमां तत्परथका अनुक्रमें द्वादशांगीना पारंगामी उत्कृष्टगीतार्थथया पछिसमंतनामाकेवलियें पुंमरीकमुनीने सर्वआगममां विशारदयोग्यजाणी गछनानायककरी पोते संलेपणाआदरी शरीररूपपंजरने मूकी मोक्षरूपमहोलने अंगीकारकस्यो.

हवेपुंडरीकसूरि अवधिज्ञानपाम्या पछेअनुक्रमें मनपर्यवज्ञानउपनुं तेणेकरी सू र्यनीपरें शासनरूपआकाशने प्रकाशकरतां ग्राम आकर नगरादिकनेविषे विचरवा लागा एरीतेंघणा कालसुधी लोकोने उपकारकरी जगतमां मोहरूप अंधकारनो ना शकरीने अनुक्रमे अधिकगुणवंत शिष्यनोसमूहनीपजावीने शेषथोडुंआयुपरहेथ के धनेश्वरनामासाधुने पोतानापाटेथापी तेहनेकह्युंजेहे महानाग्यवंत तें जिनरा जनो सिद्धांतजाण्यो छे माटेतुजनेधन्यछे वलीतुंअतिउत्तमएहवा आचार्यनापदनेपा

न्योगो तेआचार्यपदतो जे उत्तमपुरुषहोयतेहनेजमिले अने तेहिजतेपदनो पारंगामीथाय माटेतुजने नाववैद्यसरिखासाधुना संपेंआसखुंछे तेहनेरूडीरीतेंनिनावबुं इत्यादिक शीखामण कही नेवलीबीजा शिष्योनासमुदायनेपण कह्युंके हेनोलाउ तमोने संसाररूपसमुद्र तरवाने आआचार्यते वाहणसरिखाछे माटेएमनो संगकिवारेपण तमारेमूकवोनही कुलवंतिस्त्रीना न्यायनीपरें जोशेकमागमे निन्नछनाकरेतोपण एहनापगरूपमूलने किवारेंत्यजवुंनही.

इत्यादिक शिक्षाकहीने श्रीपुंडरीकनामासूरिते गुफामां निर्मलशिलाना तलाउपररहीने चौसरणादिकपूर्वकेंसहित पादोपगमनआदरी रूडाध्याननी धारणायेंकरी समग्रकर्ममलना समूहनेंधोताथका क्षपकश्रेणी आरोहि केवलज्ञानउपजावी शैलेशीकरणरूप तलवारेंकरी समस्तकर्मप्रकृतिछेदीने परमपदनेपाम्या तेमजवली महाजद्रा तथा सुललिता एबेहुसाध्वीयें उग्रतपस्याकरी कर्मक्षयकरीने मोक्षपदप्रतें पाम्या वली श्रीगर्नराजातथा सुमंगलादिकसाधु तेपणचारित्र आराधी देवलोकेंगया.

हवे सुंघणुवखाणकरियें तिहांचित्तरमनामा उद्यानमां जेटला नव्यजीवें एअनुसुंदरनुंचरित्र जोकौतुकेंकरीपण सांनल्युं तेसर्वेना मन संसारथी विरक्तथया ते वारपछि कोइक सर्वविरति कोइकदेशविरति केटलाकसम्यक्त केटलाकसंवेगपणुं पाम्या.

तेमजहेनव्यलोको तमेंपण यथाशक्तियें धर्मनोउद्यमकरीने एउपदेशनाश्रमने सफलकरवुं केमके वहुलतायें सर्वसंसारीजीवना वृत्तांतनुंकारण एअनुसुंदरसरिखुंज छे तोजेमएपुंडरीकने नाविकल्याणपणायकी गुरुयें नव्यपुरुष सुमति एहवुंनामदीधुं तेमज बीजापण नाविकल्याणवंत एहवाजे नव्यजीवो तेहनानामजाणवा केमके ते नव्यपुरुषपणुं अने सुमतिपणुं अंगीकारकरेछे एरीतेंसदागमनुं प्रगटपणेकहेवुंछे

जेमवली महानद्रायें समंतनद्रनामा आचार्यनावचनेकरी तत्वनेजाणीआदरीने जाणयइ तेहथी तेहनुं प्रज्ञाविशालानाम सदागमेंकह्युं तेमबीजापण उत्तमप्राणी जे जिनराजनो सिद्धांतसांनली तत्वनेजाणे तेतो प्रथमथीज संसारथी विरक्तहोय तेहनेतत्वथकी प्रज्ञाविशालाजकहियें.

तथाजेम सुललिताने महानद्रायें पूर्वअन्यासना स्नेहवशथकी संबंधउपनो ते गुणप्रगटकरवाने अर्थेथयो तेमजबीजा नारीकार्मिजीवोनेपण सत्संगतेंगुणप्राप्तिकरवानेअर्थेजथाय.

वलीजेम महानद्राने सुललिताने पुंडरीकने समंतनद्रनामा आचार्यना उपदेशथी सदागमनी नक्तिउपजावी तेमआजपण जेरूमासाधुहोयते परनाहितकरवा

ने रक्तयका हलुकर्मि तथा नारकर्मि प्राणीने कोइकपणउपायेंकरीने जिनराजना आगमनी नक्तिनेअवश्यउपजावे.

वली अनुसुंदरें सुललिता तथा पुंडीरक एवेंहुने संवेग उपजवानेअर्थें प्रपंचें सहित पोतानानवभ्रमणनुं स्वरूपकह्युं तेबहुलतायें सर्वसंसारीजीवोने सरिखुंजछे.

जेम सुललिताते नारीकर्मिहतीतेथी पूर्वेतत्वने अणजाणतियकीहति माटेतेह ने अगृहीतसंकेताकहि अनेवलीतेणेज जेवारें सदागमनी शुश्रूषाशिथिलकरीनही तेवारेंतेहने सर्वसिद्धियथी तेमवीजापण नव्यप्राणी नारीकर्मिपणाथकी गुरुवचन ना तत्वने अणजाणताथकाहोयते गुरुनावचननो संकेतग्रहणकरीशकेनही माटेते वाजीवोने थगृहीतसंकेताजकहियें तथाजोवलीतेवाजीवोते सिद्धांतसांनलवानो आ दरनमूके तो तत्वज्ञानने अवश्यपामेंज एमनिःसंशयपणेजाणवुं.

तेमाटेअहोनव्यो एकलोकस्थिति बीजीकालपरिणति त्रीजोकर्मपरिणाम चो थो स्वनाव अने पांचमीनवितव्यता तेपोतानी नव्यतादिक माहोमांहे अपेक्षायेंस हित कारणनाउदयथी उपनोएहवोजे नवोनोप्रपंचतेहनो परिपाकलाधो अने तेहना नाशनोकारक तेवली परमेश्वरनो अनुग्रहछे तेप्रतेंजाणीने तेमज वस्तुतत्वेंतो जिन राजनीआज्ञा आराधवाथीमोक्ष अने आज्ञाविराधवाथी संसारनीवृद्धिथाय एहवुंरु डीरीतेंजाणीने जिनराजनी आज्ञापालवाविषेज प्रवर्त्तवुं अनेजिनराजनी आज्ञाविरा धवापणानुं वर्जवुं तथा विषय कषायादिक अंतरंग परिवारनेजीतवा अतिआश्रवना द्वारनेरोकवा इंद्रियनासमूहनो निग्रहकरवुं जेथकी समस्तकर्ममलना समूहनाशपा में अने क्षमागुणरूप कदंबप्रगटथाय तथाशीघ्रपणेवली नवदुःखनाक्षयथकी अनं तानंतसुखनुंवर एहवुंजेमोक्षपद तेप्रतेपामोः

माटेहेनव्यो एरीतें संसारनादुःखनाक्षयनो उपायरूप जेरूडुंतत्व जेहनोकोइवा रें नाशजयथवानोनथी परमानंदनो जिहांऐक्यनावछे एहवामोक्षपदना रुडासाधनने आलसरूप कदाग्रहमूकीने उद्यमकरो जेथकी थोडाकालमांसर्वअर्थनी सिद्धिथाय.

इत्ययंहंसरत्नेन स्वल्पबुद्धिहितेछया॥ उपमित्याकथोद्धारो लिखिलेशमात्रतः १॥

अर्थ ॥ एरीतेंश्री हंसरत्ननामामुनीतेणे अल्पबुद्धिवंतजीवोना हितनीइछायें उ पमितिप्रमाणनी कथानोउद्धार लेशमात्रलिख्योः

एमअध्यात्मरूप अमृतनासमुद्र एहवाजेश्रीसिद्धर्षिगणी नामुखथीनिकली वैरा गअनेसंवेगादिरूपअनेक तरंगेकरी गहनगंनीर अनेअल्पशक्तिवंतजीवने दुःखेअव गाहवारूप एहवीजे उपमिति नवप्रपंचनामा समुद्रनीमर्यादारूप वेलाके०पाणीनी

नरती तद्रूपग्रंथमांथी महाराजेवा अल्पशक्तिवंतप्राणीना अनुग्रहनेअर्थे लेशमात्र उद्धारकरीने केवलवार्त्तारूपकथालखीछे जेमनी वाणीरूपमहोटी जलधाराना बिंदु मात्रथी नविप्राणीनाहृदयरूप क्यारामां मैत्र्यादिक सद्भावनरूपवेली नवपल्लवथा यछे अनेएकहृणवारमां दुःखेकरीचिंतन करवायोग्य एहवा दुर्ध्यानरूप उष्णतानोजे तीव्रतापतेहनासमुदाय तेह्नीणथयीजायछे एमसंपूर्णदोपनोनाशकरनार एहवोजेश्री सिद्धर्षिगणिरूपअमृतनोमेघ तेसर्वत्रउत्कृष्टपणेवर्त्तेछे.

स्वस्तिश्रीर्गुणरागिणी च यदनुध्याना वृणीते स्वयं प्रोद्भूताद्भुतसाध्वसा इव जयाद्दूरं व्रजंत्यापदः॥यस्य ज्ञानमनंतवस्तुविषयं शक्रश्च संस्तूयते श्रीमान् पार्श्वजिनः स वः प्रन वताद्भव्याजवार्त्तिच्छिदे ॥१॥ वागासारजरेण यस्य सततं मैत्र्यादिसद्भावना वल्यः पल्ल विता नवंति नविनां स्वांतालवालावनौ ॥ दुर्ध्यानातपतीव्रतापपटली संक्षीयते च क्ष णात् श्रीसिद्धर्षिसुधाघनः स जयतान्निःशेषदोपापहः ॥ २ ॥ आकर्ष सुमतेर्वशीकृति मथ स्वर्गापवर्गश्रिया मुच्चाटं मदनादिदुष्टसुहृदां विद्वेषणं दुर्धियः॥स्तंनंदुर्गतिपाततो ऽधिकतरं मोहस्य संमूर्छतां वाङ्मंत्राः प्रथयंतु वः प्रतिदिनं सिद्धर्षिवक्रोद्भवाः ॥३॥

आउपमिति नवप्रपंचग्रंथ तेप्रथम श्री सिद्धर्षिगणीयें १६००२ श्लोकसंख्या नो संस्कृतनापामां रचेलोछे तेमांथीयोडुकजावायीलेइने हंसरत्नमुनियें संस्कृतगद्य मांरच्युं तेनुंप्राकृतनापांतर अमृतसागरगणियेंकर्युं तेनाउपरथी अमेप्रथमछापवा मांड्युं पणसवाचारफारम छपाइरह्यापछे हंसरत्नना करेलासंस्कृतगद्यसाथें मेलवी जोतां एमांकेटलोकसंबंध ओगेलिघेलो मालमपडवायकी पाछिलीसर्वकथा हंसरत्न मुनिकृत संस्कृतगद्यउपरथी प्राकृतकरीछापीछे उतावलनेलीधे एनीनापावरावरसुध रीनथी तथा केटलेकठेकाणे करेकशनकरनारनीचूकथी अने नजरदोपथीन्हस्वदीर्घ अक्षरमात्राप्रमुखछापवामां फेरफारथयुंहसे ते सज्जन पुरुषोये सुधारीवांचवुं .

इतिश्रीउपमिति नवप्रपंचग्रंथांतर्गत

लेशमात्रकथावार्त्तिकरूपः समाप्तः

॥ श्रीआदिनाथायनमः ॥

अथ

श्रीयशोविजयजी उपाध्यायकृत अध्यात्मसार ग्रंथ अर्थसहित प्रारंभ करियेंछैयें

॥ श्लोक ॥

ऐंद्रश्रेणिनतः श्रीमान्नंदतान्नाभिनंदनः ॥ उद्दधार युगादौ यो जगदज्ञानपंकतः ॥ १ ॥ श्रीशांतिस्तांतिभिद्भूयाद्भविनां मृगलांछनः ॥ गावः कुवलयोल्लासं कुर्वते यस्य निर्मलाः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ इंद्रसंबंधीजे श्रेणीतेणे नतके० नमस्कारकर्योछे अने अष्टमहाप्रातिहार्यरूपलक्ष्मीयेंकरीयुक्त तथा युगनेआदें जगतने अज्ञानरूप कादवमांथी उद्धारनाकरनार एहवाजे श्रीऋषभदेवभगवान तेजयवंतावर्त्तो॥१॥श्रीशांतिनाथ भगवंतते भव्यप्राणीओप्रतें संतापना भेदनाराथाओ मृगनुं लांछनछेजेने जेमचंद्रकिरण निर्मल थका कुमुदनीनेविकसितकरेछे तेमजेनीगावःके०वाणीते पृथ्वीनेविषे उल्लासकरेछे २

श्रीशैवेयं जिनं स्तौमि भुवनं यशसेव यः ॥ मारुतेन मुखोत्थेन पांचजन्यमपूपुरत् ॥ ३ ॥ जीयात् फणिफणप्रांत संक्रांततनुरेकदा ॥ उद्धर्तुमिव विश्वानि श्रीपार्श्वोबहुरूपभाक् ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ शिवाराणीनापुत्र श्रीनेमनाथजी तेमनेस्तवुंछुं जेभगवंतेपोताना यशेंकरीने जेम जगतनेभर्युंछे तेमजपोतानामुखथी प्रगटथ्योजेवायु तेणेकरीने पांचजन्य नामे शंखनेपूरीने तेनोनादकीधो ॥३॥ फणीके० शेषनागतेनी फणनाप्रांतजेमणीतेनेविषे संक्रम्युंजेशरीर तणेकरीने त्रणजगतनो उद्धारजजाणेकरताहोयनी एवाजे श्रीपार्श्वनाथबहुस्वरूपनाकर्त्ता तेजयवंतवर्त्तो ॥ ४ ॥

जगदानंदनः स्वामी जयति ज्ञातनंदनः ॥ उपजीवंति यद्वाच मद्यापि विबुधाः सुधाम् ॥ ५ ॥ एतानन्यानपि जिनान्नमस्कृत्य गुरूनपि ॥ अध्यात्मसारमधुना प्रकटीकर्तुमुत्सहे ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जगतनेआनंदनाकरनार वलीजेहनी अमृतसरिखीवाणीने हजीसुधी पंमितलोको सेवेछे अंगीकारकरेछे एहवा ज्ञातनंदनजेश्रीवीरजिन तेजयवंतावर्तो ५॥ एपांचेपरमेश्वरने तथा बीजापण जिनोने तथापोतानागुरुने नमस्कारकरीने अध्यात्मनो सारजेरहस्य तेप्रगटकरवाने हवेउद्यादकरुंछुं ॥ ६ ॥

शास्त्रात्परिचितां सम्यक् संप्रदायाच्च धीमतां ॥इहानुजवयोगाच्च प्रक्रियां कामपिब्रुवे ॥ ७ ॥ योगिनां प्रीतये पद्य मध्यात्मरसपेशलं ॥जोगिनां जामिनीगीत संगीतकमयं यथा ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ घणाशास्त्रोथीनलीरीतेंपरिचिंतनकरीने वलीपंडितलोकोना संप्रदायथकी जेअध्यात्मशास्त्रनेविषे अनुजवयोग्यथयुंतेथकी हुंकांइक संक्षेपमात्र प्रस्तावनाकरुंछुं ॥ ७ ॥ जेरीतेंजोगीपुरुषने स्त्रीनागीतसंगीत प्रियकारीलागेछे तेरीतें योगीश्वरपुरुषने प्रीतिनाअर्थें आ अध्यात्मरसेंकरीने मनोहरकारी एहवोपद्यबंधतायेंकरुंछुं॥८॥

कांताधरसुधास्वादा यूनां यज्जायते सुखं॥बिंडुः पार्श्वे तदध्यात्मशास्त्रस्वादसुखोदधेः ॥ ए ॥ अध्यात्मशास्त्रसंजूत संतोषसुखशालिनः ॥ गणयंति न राजानं न श्रीदं नापि वासवम्॥१०॥

अर्थ ॥ स्त्रीनाअधररूपअमृतना स्वादथीजे जुवानपुरुषने सुखउपजेछे तेसुखनो स्वादतो अध्यात्मशास्त्रनास्वादनो जेसमुद्रछे तेनोएकबिंडुमात्र स्वादछे ॥ ए ॥ जेप्राणीनेअध्यात्मशास्त्रथी मनोहर संतोषरूपसुख प्रगटथयुं तेप्राणी राजाने तथाधनदने अनेइंद्रसरिखानेपण लेखामांगणतानथी ॥ १० ॥

यः किलाशिक्षिताध्यात्मशास्त्रः पांडित्यमिछति ॥ उत्क्षिपत्यंगुलीपंगुः सस्वर्द्रुफललिप्सया ॥ ११ ॥ दंजपर्वतदंजोलिः सौहार्दांबुधिचंद्रमाः ॥ अध्यात्मशास्त्रमुत्ताल मोहजालवनानलः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेमकल्पवृक्षना फलनेलेवानी इछाये पांगलोपुरुष आंगलीऊंचीकरेछे ते जेमव्यर्थछे तेमजेप्राणीनिश्चेंअध्यात्मशास्त्र नेपाम्यानथी अने आचार्यपंडितपणुं इछेछे तेपणव्यर्थछे ॥११॥ कपटरूप पर्वतनेजेदवाने वज्रसमान मैत्रतानावरूपसमुद्रनी वृद्धिकरवाने चंद्रमासमान एहवुं अध्यात्मशास्त्रते वृद्धिपामेलुंएहवुंजे मोहजालवन तेहने बालवानेअर्थे दावानलसमानछे ॥ १२ ॥

अथवा धर्म्मस्य सुस्थः स्यात्पापचौरः पलायते ॥ अध्यात्मशा
स्त्रसौराज्ये न स्यात्कश्चिदुपप्लवः १३॥येषामध्यात्मशास्त्रार्थतत्वं
परिणतं हृदि ॥ कषायविषयावेश क्लेशास्तेषां न कर्हिचित्॥१४॥

अर्थ ॥ अध्यात्मशास्त्रनो नलोराजप्रवर्ततेथके कशोएउपद्रव थायनही धर्मनो मार्गसुगमथाय अने पापरूपचोरटानासीजाए॥१३॥ जेप्राणीना हृदयनेविषे अध्यात्म शास्त्रनाअर्थनुं तत्वत छत्परिणम्युंछे तेनेकषायरूपविषनावेगनो कलेशतेकदीएनथाय॥१४

निर्दयः कामचंडालः पंडितानपि पीडयेत् ॥ यदि नाध्यात्मशा
स्त्रार्थबोधयोधकृपा भवेत्॥ १५ ॥ विषवल्लिसमां तृष्णां वर्धमा
नां मनोवने ॥ अध्यात्मशास्त्रदात्रेण छिंदंतिपरमर्षयः ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जोअध्यात्मशास्त्रना अर्थनाबोधनी कृपापंडितजेवाने पणानहोयतो निर्द यएवोजे कामरूपचंडाल तेपंडितनेपणपीडाकर्याविना रहेनही ॥१५॥ जेपरमऋषी श्वरछेते अध्यात्मशास्त्ररूप दातरडेकरीने मनरूपीवननेविषे वृद्धिपामती एहवी तृष्णारूप जेहेरनीवेली तेनेछेदीनाखेछे ॥ १६ ॥

वने वेश्म धनं दौस्थ्ये तेजो ध्वांते जलं मरौ॥दुरापमाप्यते धन्यैः
कलावध्यात्मवाङ्मयं ॥ १७ ॥ वेदान्यशास्त्रवित् क्लेशं रसमध्या
त्मशास्त्रवित् ॥ भाग्यभृद्भोगमाप्नोति वहते चंदनं खरः ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ जेमवननेविषेघर दरिद्रनेधन अंधारामांउद्योत तथा मरुदेशनेविषेजे पाणीतेदुःखेंपामवायोग्यछे तेमजेधन्यप्राणीहोयछे तेनेजअध्यात्मशास्त्र कलियुगने विषे प्राप्तथायछे॥१७॥वेदनाजाणतथा बीजाशास्त्रना जाणनारातो क्लेशनाभोक्ताछे अ नेरसनाभोक्ता तेअध्यात्मशास्त्रना जाणनाराछे तेएरसनोभोगतो जेभाग्यवंतहोय तेज पामे अनेजेगधेडोहोय तेतोमात्रचंदनना भारनेउपामेएटलुज ॥ १८ ॥

भुजास्फालनहस्तास्यविकाराभिनयाः परे॥ अध्यात्मशास्त्रवि
ज्ञास्तु॥ वदंत्यविकृतेक्षणाः॥१९॥अध्यात्मशास्त्रहेमाद्रिमथिता
दागमोदधेः॥ भूयांसि गुणरत्नानि प्राप्यंते विबुधैर्नकिम् ॥२०॥

अर्थ ॥ भुजानाआस्फोटकरवेकरीने वलीहाथने तथामुखनेविकारेकरीने इत्यादि कनाटिकना अभिनयेंकरवेकरीने भोगीपुरुषसुखकरीमानेछे अनेअध्यात्मशास्त्रना

जाणजेपुरुषछे तेतोअविकारीनेत्रनाधणी इंद्रियनाविकाररहितछे ॥ १९ ॥ अध्यात्म शास्त्ररूपजे हेमाचलपर्वत - तेणेमथ्योजे आगमरूपसमुद्र तेथकीनिकल्या घणागुण रूपीयां जेरत्नतेतो विबुधजेपंडितलोकतेपामेछे ॥ २० ॥

रसोभोगावधिः कामे सद्भक्ष्ये भोजनावधिः॥ अध्यात्मशास्त्रसे वाया रसोनिरवधिः पुनः॥ २१ ॥ कुतर्कग्रंथसर्वस्वगर्वज्वरवि कारिणी॥ एति दृग्निर्मलीभाव मध्यात्मग्रंथभेषजात्॥ २२ ॥

अर्थ ॥ कामभोजेरस तेभोगवतांसुधी मधुरछे भलांभोजननोजेरस तेजमवानी वखतसुधी मधुरपणेवर्त्तेछे पणअध्यात्मशास्त्रनीसेवानोजेरस तेतोनिरवधिछे केमके प्रारंभकालथीमांमीने सदाईवधतोजरसछे पणकिवारे विरसनथाय ॥ २१ ॥ कुतर्क शास्त्रना सर्वरहस्यनो जेअहंकारतेरूपीताव तेहनाविकारवाली थइएहवीजे दृष्टितेअ ध्यात्मशास्त्ररूप औषधनायोगथी निर्मलपणाने पामेछे ॥ २२ ॥

धनिनां पुत्रदारादि यथा संसारवृद्धये ॥ तथा पांडित्यदृप्तानां शास्त्रमध्यात्मवर्जितं ॥२३ ॥ अध्येतव्यं तदध्यात्मशास्त्रं भाव्यं पुनःपुनः॥ अनुष्ठेयस्तदर्थश्च देयोयोग्यस्य कस्यचित्॥ २४ ॥

अर्थ ॥ धनवंतजनने जेमपुत्रअनेस्त्री तेसंसारनीवृद्धीना कारणछे तेम अभि मानेभरायला पंडितलोकने अध्यात्मशास्त्रविना मात्रसंसारनी वृद्धीछे ॥ २३ ॥ तेमाटे अध्यात्मशास्त्रनेभणवुं वलीवारंवारहृदयनेविषेभावq एनाअर्थनुंवारंवार चिंतनकरवुं अनेजेपुरुषयोग्यहोय तेनेजरुरीखवq पुस्तकआपवुं ॥ २४ ॥ एरीतें अध्यात्मशा स्त्रनामहात्म्यनो पहेलोअधिकार पुरोथयो.

भगवन् किं तदध्यात्मं यदित्थमुपवर्ण्यते॥शृणु वत्स यथाशास्त्रं वर्णयामि पुरस्तव ॥ १ ॥ गतमोहाधिकाराणा मात्मानमधि कृत्य या॥ प्रवर्तते क्रिया शुद्धा तदध्यात्मं जगुर्जिनाः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ हवेशिष्यपुछवुंके हेभगवंतअध्यात्म तेशुंछेकेजेनुंतमे आवुंवर्णन कीधुं त्यारेगुरुकहेछेके हेशिष्य शास्त्रमर्यादायें तनेकहुंछुंतेसांभल ॥१॥ जेमुनिराजनोमो हनो अधिकारनाशपाम्योछे अनेजेआत्माने आश्रीनेशुद्धक्रियायें अंतरआत्मानेविषे प्रवर्ते तेनुंनाम परमेश्वर अध्यात्मकहेछे ॥ २ ॥

सामायिकंयथासर्वं चारित्रेष्वनुवृत्तिमत् ॥ अध्यात्मं सर्व
योगेषु तथानुगतमिष्यते॥३॥अपुनर्बंधकाद्याव कुणस्थानं
चतुर्दशं ॥ क्रमशुद्धिमती तावत् क्रियाध्यात्ममयी मता॥४॥

अर्थ ॥ सामाइकचारित्रजेम सर्वचारित्रनेविषे अनुगतकारणपणे वर्त्तेछे तेमस र्वजोगनेविषे अध्यात्मपण सद्दचारीपणेवर्त्तेछे॥३॥अपुनर्बंधी जेचोथोगुणठाणो त्यां थीमांमीने चउदमां गुणठाणालगें अनुक्रमेजेआत्मानी विशुद्धता प्रगटथाय ते सर्व अध्यात्मक्रियाजाणवी ॥ ४ ॥

आहारोपधिपूजर्द्धि गौरवप्रतिबंधतः॥ नवाभिनंदी यां कुर्यात्
क्रियां साध्यात्मवैरिणी॥५॥ क्षुद्रोलोभरतिर्दीनो मत्सरी भयवा
न् शठः ॥ अज्ञोभवाभिनंदीस्या न्निष्फलारंभसंगतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ अनेजेआहारोपधीनेअर्थें तथा पूजापामवानीऋद्धि तेनीगौरवतायें बं धाणथका नवाभिनंदीजे क्रियाकरेतेसर्व अध्यात्मक्रियानीवैरीणीजाणवी ॥ ५ ॥ १ क्षुद्रता २ लोभ ३ रति ४ दीनता ५ मत्सरीपणुं ६भय ७ शठता ८ अज्ञानता एभवाभिनंदिपणाना संगथकीजेक्रियाकरे तेक्रियानोआरंभ निःफलथायछे ॥ ६ ॥

शांतोदांतः सदागुप्तो मोक्षार्थी विश्ववत्सलः॥निर्दंभां यां क्रियां
कुर्यात् साध्यात्मगुणवृद्धये ॥७॥ अतएव जनः पृछोत्पन्नसंज्ञः
पिपृछिषुः॥ साधुपार्श्वे जिगमिषु र्धर्म्मं पृछन् क्रियास्थितः॥८॥

अर्थ ॥ १ शांतगुण २ दांतगुण ३ सदागुप्तेंद्रियपणुं ४ मोक्षार्थिपणुं ५ वि श्वनुंवात्सल्यतापणुं इत्यादिकनिरदंभीपणेजेक्रियाकरे तेक्रिया अध्यात्मगुणनी वृद्धि कर्त्ताथाय ॥७॥ तेमाटेजेनेतत्वपुछवानीसंज्ञा उपनीछे तथापिपृछिषुके० तत्वप्रतेंहवे पुछवाने सन्मुखथयोछे साधुनेपासे तत्वसांभलवानेअर्थे जवानुंशीलछेएम क्रियायोग नेविषे रह्योथको धर्मनातत्वने पुछेछे ॥ ८ ॥

प्रतिपित्सुः सृजन् पूर्वं प्रतिपन्नश्च दर्शनं॥श्राद्धोयतिश्च त्रि
विधोऽनंतांशक्षपकस्तथा॥९॥ दृङ्मोहक्षपकोमोहशामकः
शांतमोहकः॥क्षपकः क्षीणमोहश्च जिनोऽयोगीच केवली॥१०॥

अर्थ ॥ एमतत्वनेअंगीकार करतोथकोजेने पूर्वेप्रतिपन्नथयोछे सम्यक्तदर्शन एवा

श्रावकतया यतितेत्रणप्रकारना १ उपशमसमकेति २ क्षयोपशमसमकेति ३ क्षायकसमकेति तेअनंतानुबंधीनो अंशखपाव्युंछेजेणे ॥ ९ ॥ वलीजेणेदर्शनमोहनीय खपावीने अथवा मोहनीयने उपशमावीछे एहवाजे उपशांतमोही तथा क्षपक श्रेणीने विषेवर्त्तने तथा जेणेमोहनोक्षय कर्योछेते संयोगीकेवली तथाअयोगी केवलीनगवंतजाणवा ॥ १० ॥

यथाक्रममभी प्रोक्ता असंख्यगुणनिर्जराः ॥ यतितव्यमतोध्या त्मवृद्धये कलयापि हि ॥ ११ ॥ ज्ञानं शुद्धं क्रिया शुद्धेत्यंशौद्वावि ह संगतौ ॥ चक्रे महारयस्येव पक्षाविव पतत्रिणः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ एअनुक्रमेजेकह्या तेसघला एकएकथकी असंख्यातगुणीनिर्जराना कर ताछे एक कलायेकरीनेपण अध्यात्मनीवृद्धिने अर्थे उद्यमकरवो एहिजहेतुछे॥ ११ ॥ जेम रथनावेचक्रते रथनीसाथें संलग्नजछे तथा पक्षीनीबेपांखोते पक्षीनीसाथे संलग्नज छे तेमएक शुद्धज्ञान अनेबीजीशुद्धक्रिया एबेअंशते अध्यात्मनीसाथे संलग्नजछे १२

तत्पंचमगुणस्थाना दारभ्यैवैतदिच्छति ॥ निश्चयोव्यवहार स्तु पूर्वमप्युपचारतः ॥१३॥ चतुर्थेपि गुणस्थाने शुश्रूषा द्या क्रियोचिता॥ अप्राप्तस्वर्णभूषाणां रजताभरणं यथा ॥१४॥

अर्थ ॥ पूर्वोक्त निश्चयनय अने व्यवहारनयनो आरोपणमात्र उपचार थीछे पण पांचमांगुणठाणाथी मांनीनेएनयइच्छेछे ॥ १३ ॥ अने चोथेगुणठाणेपण शुश्रूषादिक क्रियाते उचितछे जेमकोइनेसोनाना घरेणानमलताहोय तेनेरुपाना मलतेसते करांननाय ॥ १४ ॥

अपुनर्बंधकस्यापि या क्रिया शमसंयुता॥ चित्रा दर्शनभेदेन ध र्मविघ्नक्षयाय सा ॥१५॥ अशुद्धापि हि शुद्धायाः क्रियाहेतुःस दाशयात् ॥ ताम्रं रसानुवेधेन स्वर्णत्वमधिगच्छति ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ समतायेकरीनेसहित विचित्रप्रकारना दर्शनभेदेकरीने अपुनर्बंधीजेनो पोद्गलपरावर्त्तनेदनी जे क्रियानेतोपण धर्मनाविघ्नने करनारीछे ॥ १५ ॥ तोपण न लाआशयथकी अशुद्धक्रियाछे तेपण शुद्धथाय जेम त्रांबुंजेछे तेनेगालीनेमां रसा [illegible]यी रसादनक्तथायी सोनुंथइजायछे ॥ १६ ॥

अतोमार्गप्रवेशाय व्रतं मिथ्यादृशामपि॥ द्रव्यसम्यक्त्वमारो
प्य ददते धीरबुद्धयः॥१७॥ योबुध्वा भवनैर्गुण्यं धीरः स्याद्व्रत
पालने ॥ सयोग्योभावभेदस्तु दुर्लक्ष्योनोपयुज्यते ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ एहिजकारणमाटे धीरबुद्धिनाधणी रत्नत्रयनामार्गनेविषे पेसवाने मिथ्या
दृष्टीवालानेपण द्रव्यसमकितनो आरोपकरीने चारित्रआपेछे॥१७॥जेप्राणी संसारनुं
निर्गुणपणुं जाणीने व्रतपालवानेविषे धीरथाय तेप्राणी धर्मनेजोगजाणवो अनेअंत
रंगभावनो भेदतोदुःखेकरीने समजायछे माटेतेउपयोगमांनकरवो ॥ १८ ॥

नोचेद्भावापरिज्ञाना त्सिद्ध्यसिद्धी पराहते॥ दीक्षाऽदानेन भव्या
नां मार्गोच्छेदः प्रसज्यते ॥१९॥ अशुद्धानादरेभ्यासा द्योगान्नो
दर्शनाद्यपि॥ सिद्धिर्नैसर्गिकी मुक्ता तदप्यभ्यासिकं यतः ॥२०॥

अर्थ ॥ कदापिकोइक एमकहेसेजे भावजाण्याविना चारित्रदेवाथी सिद्धिअसिद्धि
सर्वहणाइजाय तेवारें भव्यनेपणदीक्षानआपवी केमके तेनेअंतरंगनी खबरनथी अने
एरीतें दीक्षानआपवाथी तो सम्यक्मार्गनो उछेदथाय ॥ १९ ॥ एमअशुद्धनोअना
दरकरे अने शुद्धजोगनोअभ्यासनकरे त्यारेदर्शनजेसमकित तेपणशुद्धनथाय केमके
एकनिसर्ग समकितटालीनेशुद्धकरवुं तेपणअभ्यासथीज थइशके ॥ २० ॥

शुद्धमार्गानुरागेण शठानां यथा तु शुद्धता॥गुणवत्परतंत्राणां
सा न क्वापि विहन्यते॥ २१ ॥ विषयात्मानुबंधैर्हि त्रिधा शु
द्धं यथोत्तरं॥ब्रुवतेकर्म्म तत्राद्य मुक्त्यर्थं पतनाद्यपि ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धमार्गने अनुरागेकरीने अशठताभावेजे आत्मानी शुद्धताके० निर्म
लतायें गुणवंतप्राणीने आधीनथइने वरतेतो तेप्रवृत्ति कोइछेकाणे हणायनही॥२१॥
विषयेंकरीने आत्मायेकरीने अनेअनुबंधेकरीने एत्रणप्रकारनी विशुद्धिछे ते एकेकथी
निर्मलछे एत्रणेकर्मछे तेमां जेदुखथी पोताना आत्माने मुकाववाने झंपापातप्रमुख
करे तेहनेविषयशुद्धिकहियें ॥ २२ ॥

अज्ञानिनां द्वितीयं तु लोकदृष्ट्या यमादिकं॥तृतीयं शांतवृत्त्या त
त्तत्त्वसंवेदनानुगं ॥२३॥ आद्यान्नाज्ञानबाहुल्या न्मोक्षबाधक
बाधनं ॥ सद्भावाशयलेशेनो चितं जन्म परे जगुः ॥ २४ ॥

असतीनां यथा शीलमशीलस्यैव वृद्धये ॥ दंभेनाव्रतवृद्ध्यर्थं व्रतं वेषभृतां तथा ॥ ८ ॥ जानाना अपि दंभस्य स्फुरितं बालिशा जनाः ॥ तत्रैव धृतविश्वासाः प्रस्खलंति पदेपदे ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ जेमकुलटानारीनुंशील जेआचारते कुशीलनी वृद्धि नेअर्थेज होय ते मकपटेवेषधरनार व्रतवंताने नवनीवृद्धिथाय तेअव्रतनी वृद्धिनेअर्थेजथाय ॥ ८ ॥ कपटना विपाकनेजाणतायकापण मूर्ख अज्ञानीप्राणीतेज कपटनेविषे विश्वास करतायका पगलेपगले खलनापामेछे ॥ ९ ॥

अहो मोहस्य माहात्म्यं दीक्षां भागवतीमपि॥ दंभेन यद्विलुंपंति कज्जलेनेव रूपकं॥१०॥ अब्जे हिमं तनौ रोगो वने वन्हिर्दिने निशा ॥ ग्रंथे मौर्ख्यं कलिः सौख्ये धर्म्मे दंभ उपप्लवः ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ अहोइतिखेदेजुओ मोहराजानोमहिमा जेभगवंतसंबंधीदीक्षातेपणजेम काजलेकरीने चित्रामणनुं लोपथायछे तेहनीपरे कपटेकरीने लोपीनाखेछे जेमकमलनेविषे हिम शरीरनेविषेरोग वननेविषेअग्नि दिवसनेविषेरात्री ग्रंथनेविषे मूर्खता सुखनेविषे क्लेश तेमधर्मनेविषेकपट तेउपद्रवनाकरताछे तेमधर्मनेविषेकपट तेदुःखकर्ताछे ॥११॥

अतएव न यो धर्तुं मूलोत्तरगुणानलं॥ युक्ता सुश्राद्धता तस्य ननु दंभेन जीवनं ॥१२॥ परिहर्तुं न यो लिंग मप्यलं दृढरागवान्॥ संविज्ञपाक्षिकः सस्यान्निर्दंभः साधुसेवकः ॥१३॥

अर्थ ॥ एहिजहेतुमाटे मूलगुणपंचमहाव्रत अनेउत्तरगुण करणसित्तरीप्रमुख धरवाने जेप्राणी समर्थनहोय तेणेश्रावकनाव्रतपालवा तेयुक्तछे पणकपटचारित्र जीववुं तेरूडुंनथी॥१२॥ वलीजेप्राणी व्रतनेमूकवाने समर्थनथी केमके जेनेव्रतउपर दृढरागलाग्यो होय तेमुक्तीकेनहो तोतेनेसंविज्ञपक्ष अंगीकारकरवो श्रेष्ठछे केमके निर्दंभलाधुनी सेवनाकरवाथी घणोगुणथायछे ॥ १३ ॥

निर्दंभस्यावसन्नस्या प्यस्यशुद्धार्थभाषिणः॥ निर्जरां यतना दत्ते स्वल्पापि गुणरागिणः ॥१४॥ व्रतभारासहत्वं ये विदंतोप्यात्मनः स्फुटं ॥ दंभाद्यतित्वमाख्यांति तेषां नामापि पाप्मने ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ निष्कपटीहोय शुद्धसिद्धांतना अर्थनाभाषकहोय तेगुणेकरीने तेअ

सन्नाप्रमुखसाधुजो थोडीपणजतना करेछे तोपण तेगुणनारागीपणाथी वर्त्ततायका तेनेनिर्ज्जराथायछे ॥१४॥व्रतनोजारनथी उपमतो पोतायीएवुंजाण्याछता पणजेपोताना आत्माने प्रगटरीते कपटेकरीने यतीपणुंवरावेछे संयमीपणुं स्थापेछे तेलिंगीनुंनामलेतांपण पापथाय तोतेनीसेवनातो पापकारीथायज तेमांशुंकेहेवुं॥ १५ ॥

कुर्वते ये न यतनां सम्यगालोचितामपि॥तैरहो यतिनाम्नैव दांभिकैर्वंच्यते जगत् ॥ १६॥ धर्मातिख्यातिलाभेन प्रछादितनिजाश्रवः॥तृणायमन्यते विश्वं हीनोपि धृतकैतवः ॥१७॥

अर्थ ॥ जेलिंगीभलीरीतें द्रव्यक्षेत्रकालभावजोइने यत्नथीकरता तेलिंगीयतिए वेनामेकरीनेकपटीयइ लोकनेठगताफरेछे॥१६॥जेहीनाचारीयको कपटनोधरनारो लिंगीहोय अनेतेयतिधर्मीछे एवीप्रसिद्धियइहोय तेनालोभेकरीने तेणेपोताना आश्रवनेढांक्याहोय एह्वाजे यतिते समग्रजगतते तृणतुल्यजाणेछे ॥ १७ ॥

आत्मोत्कर्षा त्ततोदंभा त्परेषां चापवादतः ॥ बध्नाति कठिनं कर्म्म वाधकं योगजन्मनः ॥१८॥ आत्मार्थिना ततस्त्याज्योदंभोऽनर्थनिवंधनं॥शुद्धिः स्यादृजुभूतस्येत्यागमे प्रतिपादितं॥१९॥

अर्थ॥पोतानाआत्मानी वडाइकरे घणुंकपटधरे अनेपारकाअवरणवादवोले तेणेकरीने कठिणकर्मवांधेछे तेवापुरुपोतेयोगीनाजन्मने बाधककरनाराछे तेशुद्धचारित्रने पामीशकेनही ॥ १८ ॥ माटेअनर्थनुंकारणजेकपट तेनेधर्मार्थिप्राणीयें तजवुं केमके आत्मानीशुद्धीतो सरलताभावेंथायछे एवुंआगमनेविपेकह्युंछे ॥ १९ ॥

जैनैर्नानुमतं किंचि न्निषिद्धं वा न सर्वथा॥ कार्ये भाव्यमदंभेनेत्येपाज्ञा पारमेश्वरी॥ २० ॥ अध्यात्मरतचित्तानां दंभः स्वल्पोपि नोचितः ॥ छिद्रलेशोपि पोतस्य सिंधुं लंघयतामिव ॥२१॥

अर्थ ॥ तीर्थंकरेंएकांतने आज्ञापणनथीकरी तेमसर्वथा निपेधपणनथीकीधो तोपणजेकार्यकरवुं तेकपटरहितकरवुं एहिजपरमेश्वरनी आज्ञाछे॥२०॥जेम वाहाणमां छिद्रनो लेशहोयतेपण समुद्र तरवामांयोग्यनही तेम अध्यात्मनेविपे जेनुंमनरंगायुछे तेनेजरापण कपटकरवुं तेयोग्यनथी ॥ २१ ॥

दंजलेशोपि मल्ल्यादेः स्त्रीत्वानर्थनिबंधनं ॥
अतस्तत्परिहाराय यतितव्यं महात्मना ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेम मल्लीनाथजीने कपटनोलेशपण स्त्रीवेदनोकारणीकथयो माटे महा नपुरुषें कपटतजवाने घणोयत्न करवो ॥ २२ ॥ इति श्रीअध्यात्मसार ग्रंथनेविषे दंजत्यागनामा त्रीजोअधिकार समाप्तथयो ॥

तदेवं निर्दंजाचरणपटुना चेतसि जवस्वरूपं संचिंत्य क्षण मपि समाधाय सुधिया ॥ इयं चिंताऽध्यात्मप्रसरसरसी तीरलहरी सतां वैराग्यादिप्रियपवनपीना सुखकृते ॥ १ ॥

अर्थ ॥ एटलामाटे निरदंजआचरणकरवाने हेचेतन तुं सावधानथा आत्मस रूपनुं चिंतनकर केमके क्षणमात्रपण सद्बुद्धिहृदयमांधरीने आत्मसरूपनीचिंता करवी तेहिज आतमदिशारूप सरोवरनीलहरीने तेशीतलताकरेएवीने एहिजसज्जन लोकने वैराग्यदिशारूप पवनपूर्णपुष्टताकारीने माटेते आत्मिकसुखनेअर्थेसाधवी१

इतः कामौर्वाग्निर्ज्वलति परितोङुःसह इतः पतंति ग्रावा णो विषयगिरिकूटाद्विघटिताः॥इतः क्रोधावर्तो विकृततटिनी संगमकृतः समुद्रे संसारे तदिह न जयं कस्य जवति ॥२॥

अर्थ ॥ एकतरफकामरूप वडवानलनो अग्निबलीरह्योछे तेडुःखेसहनथाय ए वोछे अने एकतरफ पंचप्रकारनाविषयरूप पर्वत तेहथीपडयाजे उन्मादरूपपथरा तेणेकरीनपंकर एकतरफ विकारदिशारूपनदीना संगमथकी क्रोधनाआवर्त्तपडयाछे एवोजेआसंसारसमुद्रतेनेविषे कहो,कयाठेकाणे प्राणीनेजयनथी सर्वत्रजयजवर्त्तेछे.

प्रिया ज्वाला यत्रोद्वमति रतिसंतापतरला कटाक्षान् धूमौ घान् कुवलयदलश्यामलरुचीन्॥ अथांगान्यंगारा कृतबहुविका राश्च विषया दहंत्यस्मिन्वन्हौ जवत्रपुषि शर्म क सुलजं ॥ ३ ॥

अर्थ ॥ जेसंसारनेविषे रतिनासंतापेकरीने तरलाके० चपलएवीजे प्रियाके० जायातेरूपज्वालावर्त्तेछे वली नीलकमलदलना सरखी जेनीकांतिछे एहवानेत्र नाखूणामांथीजेजोवुं तेनुंनामकटाक्ष तेरूपधूमना समूहचालेछे तथास्त्रीनाअंगते

अंगारासमानछे जेअंगवस्त्रेघणाप्रकारना विकारप्रगटथायछे तेमाटेसंसाररूप अग्नीमां बलीरह्याजे प्राणीतेने नवमांपणसुखनथी तेमजशरीरमां पणकइजसुखनथी ॥३॥

गले दत्वा पाशं तनयवनितास्नेहघटितं निपीड्यंते यत्र प्र
कृतिकृपणाः प्राणिपशवः॥ नितांतं दुःखार्त्ता विषमविषयै
र्घातिकजनैर्भवः सूनास्थानं तदहह महासाध्वसकरं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेनागलानेविषेपुत्र तथा स्त्रीरूपस्नेहनोफांसो नखायोछे तेनास्नेहपाशमां पड्यातुछस्वभावनाधणी तेअतिशयपणे पीडापामेछे आकराविषयरूपजे घातकी सुभट तेणेकरीनेसंसारते खाटकीनुंस्थानकछे माटेहाहासंसारतेकेवलदुःखनुंमूलछे ४॥

अविद्यायां रात्रौ चरति वहतो मूर्ध्नि विषमं कषायव्यालौघं
क्षिपति विषयास्थीनि च गले॥महादोषान् दंतान् प्रकटयति
वक्रस्मरमुखो न विश्वासार्होयं भवति भवनक्तंचर इति॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अज्ञानदिशारूप रात्रिनोचालनार जेनामाथाउपर विषमकषायरूप सर्पनोसमूहरह्योछे जेनागलानेविषे विषयरूपहाडकांबांध्याछे जेमहोटादोषरूप दांतप्रगटकरेछे जेनुंसुख कामनीचेष्टाकरेछे एवोसंसाररूपीराक्षस तेविश्वासकरवानेयोग्यनथी.

जना लब्ध्वा धर्म्मद्रविणलवभिक्षां कथमपि प्रयांतोवामा
क्षीस्तनविषमदुर्गस्थितिकृताः॥ विलुप्यंते यस्यां कुसुमशर
भिल्लेन बलिना भवाटव्यां नास्यामुचितमसहायस्य गमनं॥६॥

अर्थ ॥ जेप्राणीधर्मरूपधनना लवलेशनेपाम्योछे तेणेभिक्षामागवाने एकलाविचरवुंनही केमके भवाटवीनेविषे बलवत्तरभील एवोजेकाम तेस्त्रीनास्तनरूप विषयीकोटमांरहीने तेप्राणीमात्रना धर्मरूपधनने लुटीलेछे माटे सहायविना तेप्राणीयेएकलुं विचरवुं (चालवुं) योग्यनथी ॥ ६ ॥

धनं मे गेहं मे मम सुतकलत्रादिकमतो विपर्यासादासादि
तविततदुःखा अपि मुहुः ॥ जना यस्मिन् मिथ्यासुखमद
भृतः कूटघटनामयोयं संसार स्तदिह न विवेकी प्रसजति॥७॥

अर्थ ॥ धन घर पुत्रने स्त्रीआदी सर्ववस्तुमारीछे एवाविपर्यासपणाथी निरंतर

सिद्धदुःखजछे माटे जेप्राणीवारंवार सुखनेमदेजखायका सुखमानेछे तेफोकटछे. ए संसारतो केवल कपटरचनायें जखोछे तेनेविषे विवेकीप्राणीयेंप्रीती करवीनहीं॥७॥

प्रियास्नेहोयस्मिन्निगडसदृशो यामिकभटोपमः स्वीयो वर्गोधनमभिनवं बंधनमिव ॥ महामेध्यापूर्णं व्यसनबिल संसर्गविषमं भवः कारागेहं तदिह न रतिः क्वापि विदुषां॥८॥

अर्थ ॥ स्त्रिनोस्नेहतेबेडीसमानछे बीजासगासंबंधीलोकते पोरियातसमानछे ध नसंपत्तीते नवाबंधनसरखीछे अनेमहा अमेध्येंकरीसहितछे सातप्रकारना व्यसनरूप बिलेंसहितछे दुःखामांकहियेंतोआसंसारते बंदिखानाजेवोछे माटेपंडितलोकने एवस्तु मांहेली एकेवस्तुउपर रतिके० मरजीथतीनथी॥ ८ ॥

महाक्रोधोगृध्रोऽनुपरतिशृगाली च चपला॥ स्मरोलूकोयत्र प्रकटकटुशब्दः प्रचरति॥प्रदीप्तः शोकाग्नि स्ततमपयशोभ स्म परितः श्मशानं संसारस्तदतिरमणीयत्वमिह किं ॥ ९॥

अर्थ ॥ जेपंडितलोकते आसंसारने स्मशानसरखोकहेछे केमके स्मशानमांरेहेना रीचीजो सर्वसंसारमांछे तेकहीबतावेछे जेमस्मशानमां गिधपक्षीछे तेमसंसारमां म हाक्रोधते गीधपक्षीछे अरतिरूपवणीचपल शियालणीछे घुवडपक्षीरूप कामछेतेप्रग टपणे कडवाशब्दथी रुदनकरेछे देदीप्यमान शोकरूपी अग्निप्रज्वलेछे निरंतर अप यशरूप राखछे माटे संसारते स्मशानछे एमांरमणीक चीजकोइनथी ॥ ९ ॥

धनाशा यच्छायाप्यति विषममूर्छा प्रणयिनी विलासोनारीणां गुरुविकृतये यत्सुमरसः ॥ फलास्वादोयस्य प्रसरनरकव्या धिनिवह स्तदास्या नो युक्ता भव विषतरावत्र सुधिया॥१०॥

अर्थ ॥ धननीजेइच्छा तेअतिशयविषयरूप विषममूर्छानी विलासनारीछे स्त्रीयांनो विलासते महाविकारकारी कुसुमनोरसछे जेनाफलनोस्वाद विस्तारपामतोनर्कनीपिडा ना समूहनुंअथाय एवुंसंसाररूप विषवृक्षछे एनीछेहल विश्रामकरवोयुक्तनथी॥१०

क्वचित् प्राज्यं राज्यं कुचन धनलेशोप्यसुलभः क्वचि ज्जातिस्फा तिः क्वचिदपि च नीचत्वकुयशः ॥ क्वचिल्लावण्यश्रीरतिशयवती क्वापि न वपुः स्वरूपं वैषम्यं रतिकरमिदं कस्य नुभवं ॥ ११॥

अर्थ ॥ कोइनेतोविस्तारवाळुंराज्यछे कोइनेधननोलेशपण दोहेलोछे कोइनीउ त्तमजातीछे कोइनीनीचजातीछे कोइनेअपयशछे कोइनेलावण्यलीलानी लक्ष्मीवणीछे कोइनुंशरीरपण रुडुंनथी एवुंसंसारनुंस्वरूपविषमछे तेकोनेरतिकारीथाय ? ॥ ११॥

इद्दोद्दामः कामः खनति परिपंथी गुणमही मविश्रामः पार्श्वे
स्थितकुपरिणामस्य कलहः॥ बिलात्यंतः क्रामन्मदफणभृ
तां पामरमतं वदामः किंनाम प्रकटभवधाम स्थितिसुखं॥१२॥

अर्थ॥ इहांउद्दामकामदिशाछे तेजपरिपंथीके० शत्रुछेतेगुणरूपजे महीके० पृथ्वीते नेखणेछे अनेपासेरह्योजे कुपरिणामते विश्रामलीधाविना निरंतर क्लेशकरेछे एक्लेश वरूे खरडाया एवाजेप्राणी तेअष्टमदरूपसर्प तेणेकरीयुक्तछे एवुंपामरलोकने मानवा योग्य आसंसाररूपजेघर तेनुंशुंसुखकहियें ॥ १२ ॥

तृषार्त्ताःखिद्यंते विषयविवशा यत्र भविनः करालक्रोधार्का
द्धमसरसि शोषं गतवति ॥ स्मरस्वेदक्लेदग्लपितगुण
मेदस्यनुदिनं भवग्रीष्मे भीष्मे किमिह शरणं तापहरणं॥१३॥

अर्थ ॥ संसारनेविषे प्राणीमात्र पुद्गलनी तृष्णारूपतरसेकरीने पीडाणाछे अने विषयनीआशायेंकरी परवशथयाछे एहवाप्राणीयो विह्वामणाक्रोधेंकरीपीडायछे केम केतेमनेमाटे शमतारूपसरोवरतो सुकाइगयुंछे अनेकामदिशारूपजे परस्वेद तेनीजे ग्लानता तेणेकरीनिरंतर गुणमेदाखरडायछे ज्यां एहवोविह्वामणो आसंसाररूपउन्ह काल तेनातापनेहरे एवोकोइनथी ॥ १३ ॥

पिता माता भ्राता प्यभिलपितसिद्धावभिमतो गुणग्रामज्ञाता
न खलु धनदाता च धनवान्॥ जनाः स्वार्थस्फातावनिशमवदा
नाशयभृतः प्रमाता कः ख्याताविह भवसुखस्याशु रसिकः॥१४॥

अर्थ॥आसंसारनेविषे पितामातानेभ्राताके० भाइआदी तेसर्वचिंतितअर्थनी अ भिलाषापुरे त्यांलगीअभिमतके० संमतकरीमाने तथागुणनासमूहनोजाण एहवो धनवंतप्राणीहोयतेपण कृपणपणेकरीने गुणीजनने धनदेइशकेनही एम सर्वप्राणी पोताना स्वार्थसाधनकरवाने सावधानपणेवर्त्तेछे पणपरमार्थथी वेगलावसेछे एवाभ वसुखना रसियाजेजीवतेहना स्वरूपनेकेहेवाने कोणसमर्थथइशके॥ १३ ॥

पणेः पाणिंगृह्लात्यहह महति स्वार्थ इह यान् त्यजंत्युच्चैर्लोक
स्तृणवद्घृणस्तानपरथा॥ विषं स्वांते वक्त्रेऽमृतमिति च विश्वा
सहतिकृन्वादित्युद्वेगोयदि न गदितैः किं तदधिकैः ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ एमस्वार्थने वशथइनेप्राणी चंडालनो हाथपकमी चालेछे अहोइतिआ भर्य जेस्वार्थपणुंतेएहवुंछे वलीजेउत्तमकुलथी उपजेलातेहनेतजेछे अने तरणा जेवोनिरलज्जथइने दयामांतो फेरजथुंहोय पणमोडे अमृतजेवुंमीठुंबोलेछे एवाअनेक प्रपंच स्वार्थमाटेप्राणीकरेछे नेविश्वासघातीथायछे एवाप्राणीआसंसारमांवसेछे ते जोइनेपण आसंसारथी जेवुंमनउद्वेगपामतुंनथी तेनेवणुंशुंकहियें ॥ १५ ॥

दृशां प्रांतैः कांतैः कलयति मुदं कोपकलितैरमीभिः खिन्नः
स्यादयनधननिधीनामपि गुणी ॥ उपायैस्तुत्याद्यैरपनय
ति रोषं कथमपीत्यहो मोहस्येयं जवजवनवैषम्यघटना॥१६॥

अर्थ ॥ स्त्रीनीदृष्टीना प्रांतके० खुणातेमनोहरछे माटेतेनाजोवाथी हर्षउपजेछे अने स्त्रीनीक्रोधयुक्तदृष्टीखरावछे माटेतेवेखीनेखेदउपजेछे तथाधणाधनवालापुरुष ने गुणीजनोस्तुतीआदीकरीरीजवेछे ने कष्टसहीनेतेमनोरोषउतारेछे एसघलुंमोहथ कीथायछे माटे जुओमोहरूपीराजानुं केवुंविषमतापणुंछे केजेतजवायोग्यछे तेनो आदरकरावेछे अने जेनोआदरकरवोजोइये तेनोत्यागकरावेछे ॥ १६ ॥

प्रिया प्रेक्षा पुत्रोविनय इह पुत्री गुणरति र्विवेकाख्यस्तातः
परिणतिरनिंद्या च जननी॥ विशुद्धस्य स्वस्य स्फुरतिहि कु
टुंबं स्फुटमिदं नवे तन्नोदृष्टं तदपि बत संयोगसुखधीः॥१७॥

अर्थ ॥ जीवनेतत्वविचारणाकरवीतेस्त्रीछे विनयकरवुंतेपुत्रछे गुणनेविषेजेरतिक रवीतेपुत्रीछे स्वा...दपणेत्वपरविवेचनकरवुंतेपिताछे अनिंद्याजेपारकीनिंदातजवीते ...नी माताछे एवुंजेअंतरंगकुटुंबछे तेतोजेवारें आत्माशुद्धथाय तेवारेंप्रगटरीतें ...राबर पणतेनेजेकुटुंबसंयोगीसुखमां मग्नथइरह्योछे तेतोस्वप्नेपणदेखतोनथी॥१७

पुरा प्रेमारंभे तदनु तदविच्छेदघटने तदुच्छेदे दुःखान्यथ क
ठिनचेता विषहते ॥ विपाकादापाकाहितकलशवचापवद्गु
डलं जनोयस्मिन्नस्मिन्कचिदपि सुखं हंत न जवे ॥ १८॥

अर्थ ॥ प्रथमप्रेमकरताडुःखछे तेपछीतेनेनिश्चलपणेराखवाने पणघणुंडुःखछे व लीतेप्रेमपात्रनो विछेदथायतो मरणथाय अथवाप्रेमत्रुटे त्यारेतउथीवधारे डुःखउप जेनेते सहनकरवाने गतीघणीकठणराखवीपडे निमामानापाकनेविषे आरोपितकर्यो एवोजेघट तेनालरखीतापनी वहुलताछेज्यां तोएवोजे आसंसाररूप नीमाडोतिहांसु खतो काइजनथी समयडुःखमयजछे ॥ १७ ॥

मृगाक्षी दग्वाणै रिहहि निहतंधर्म्मकटकं विलिप्ताहृद्देशा
इह च वहुलैरागरुधिरैः ॥ भ्रमंत्यूर्ध्वं क्रूरा व्यसनशतगृ
ध्राश्च तदियं महामोहक्षोणीरमणरणभूमिः खलु भवः॥१९॥

अर्थ ॥ आसंसारनेविषे धर्मराजाना कटकनेतोमृगनयनीना दृष्टीरूपीबाणेहणी नाख्युंछे रागदिशारूपरुधीरवडे लोपाइगयाछे हृदयप्रदेशजेनाते उपर अनेकप्रकारना मन तनसंबंधीकष्टरूपीगीधपक्षीयो भमीरह्याछे एवोमहामोहरूप क्षोणीरमणजे राजा तेनीरणभूमीसमान आसंसारछे ॥ १९ ॥

हसंति क्रीडंति क्षणम थच खिद्यंति वहुधा रुदंति क्रंदति क्ष
णमपि विवादंविदधते ॥ पलायंते मोदं दधति परिनृत्यंति
विवशा भवे मोहोन्मादं कमपि तनुभाजः परिगताः ॥२०॥

अर्थ ॥ क्षणमांहसे क्षणमांक्रीडाकरे (रमे) क्षणमांखेदकरे क्षणमांवहुप्रकारें रडे क्षणमांविलापकरे क्षणमांअनेकप्रकारनो विवादकरे क्षणमांनासीजाए क्षणमां हर्षितथइ नाचवामांडे इत्यादीउन्मादसंसारनेविषे देहधारीप्राणीयोकरेछे तेसर्व मोहराजानेआधीनथकाकरेछे ॥ २० ॥

अपूर्णा विद्येव प्रकटखलमैत्रीव कुनयः प्रणालीवा स्था
ने विधववनितायौवनमिव ॥ अनिष्णाते पत्यौ मृगदृशाइव
स्नेहलहरी भवक्रीडाव्रीडा दहति हृदयं तात्विकदृशां॥२१॥

अर्थ ॥ असंपूर्णविद्याजेमपंडितने तेमज खलमाणसनीमित्राइ वलीराजसभामां अन्यायनी प्रणालिका एटलेअन्यायनोमार्ग तथा विधवास्त्रीनुंयौवन वलीमूर्खभरतार नेआगलस्त्रीनास्नेहनीलहरी तेजेमखेदनोपात्रथायछे तेमजसंसारनीक्रीडा जेलज्जा मयीछे तेथी तत्वदर्शीप्राणीडुःखपामेछे ॥ २१ ॥

प्रनाते संजाते नवति वितथा स्वापकलना विचंद्रज्ञानं वा
तिमिरविरहे निर्म्मलदृशां ॥ तथा मिथ्यारूपं स्फुरति विदि
ते तत्वविषये नवोयं साधूनामुपरतविकल्पः स्थिरधियां॥२१॥

अर्थ ॥ जेम प्रनातसमयस्वप्ननीरचना निष्फलथइजायछे जेमकोइनाआखमां जाकलआवीहोय तेहनेआकाशमां बेचंद्रमानासे पणनिर्मलदृष्टीथतां बेचंद्रमाउं न्रांतिज्ञानमटीजायछे तेमसंसारथीन्यारारह्या एहवाजेस्थीरबुद्धिवाला तत्वज्ञानसम जेलासाधु तेनेआसंसारते मिथ्यारूपनासेछे ॥ २२ ॥

प्रियावाणीवीणाशयनतनुसंवाधनसुखै र्नवोयं पीयूषैर्घ
टितइति पूर्वं मतिरनूत् ॥ अकस्मादस्माकं परिकलितत
त्वोपनिषदामिदानीमेतस्मिन्न रतिरपितु स्वात्मनि रतिः॥२३॥

अर्थ॥स्त्रीनीवाणीयेंकरीने तथा विणानादेकरीने शय्यायेंकरीने वलीशरीरनेचोलवुं चापवुंतेणेकरीने जे सुखउपजेछे ते अमृतेकरीनेघुटेलुंहोयतेवुंछे एवुंपूर्वेबालकाले वनासुंहतुं पण हवेसहसात्कारेंअमने तत्वदिशानारहस्यनी परिकलनाथइ जाणपणुं थयुं तेथीसंसारनेविषेतत्वरुचिवर्त्ततिनथी पणआत्मतत्वमांरुचिथइछे ॥ २३ ॥

दधानाः काठिन्यं निरवधिकमाविद्यकनवप्रपंचाः पांचाली
कुचकलशवन्नातिरतिदाः ॥ गलत्यज्ञानाभ्रे प्रसृमररुचावा
त्मनि विधौ चिदानंदस्यंदः सहजइति तेन्योस्तु विरतिः॥२४॥

अर्थ ॥ संसारनासमस्तप्रपंच तेअतिशयकठिणताने धरतायकाले माटे मुजने काष्टअनेपाषाणनी पुतलीनास्तननीपेरे रतिकारीनथीलागता केमके अज्ञानरुंवाद लगलीगयुंने अनेआत्मिकज्ञानरूप चंद्रोदयथयो तेथीसहजचिदानंदरसनी शीतलता प्रगटीतेणेकरी विरयतापनीअरतिमटीगइ ॥ २४ ॥

नवे या राज्यश्रीर्गजतुरगगोसंग्रहकृता न सा ज्ञानध्यानप्र
शमजनिता किं त्वमनसि॥ वहिर्याः प्रेयस्यः किमु मनसि ता ना
त्मरतय स्ततः स्वाधीनं कस्त्यजति सुखमिन्द्रत्यय परं ॥२५॥

अर्थ ॥ संसारनेविषे हाथी घोडा बलद प्रमुखजेराजलक्ष्मीने तेशुंअंतरंगआ त्मानेनथी ? अर्थात् ने ज्ञानहाथी ध्यानघोडा समतातेबलद एलक्ष्मीआत्मानीने

अनेतुंजो मनवडेबाह्यसार्थे प्रेमकरेछे तोपोतानाआत्मासार्थे रतीकेमकरतोनथी आत्मिकसुखतजीने पुज्ञलिकसुखने कोणइच्छे एवोमूर्खकोणहोय॥ २५॥

परार्धीनं शर्म्म क्षयि विषयकांक्षौघमलिनं नवे नीतेः स्थानं त दपिकुमतिस्तत्र रमते॥ बुधास्तु स्वाधीने क्षयिणि करणौत्सुक्य रहिते निलीनास्तिष्ठंति प्रगलितनयाध्यात्मिकसुखे॥ २६॥

अर्थ॥ पौज्ञलिकसुखकेवुंछे एकतोपराधीनछे स्वनावेक्षयथवालायकछे विषयनी वंछनावडेमलीनछे एमसंसारनेविषेनयनास्थानथणाछे तेछताकुमतिनायणी संसारमां रमेछे अनेपंडितलोकजेछे तेस्वाधीनसुखमांरमेछे तेसुखकेवुंछे केजेकोइकालेंक्षयपामे नही इंद्रियोनीउत्सुकतायेंरहितछे जेप्राणीआत्मज्ञानमां लयपाम्यायकालेतेप्राणी स कलनयदिशा रहितथका परमानंदनेविषे मग्नपणेरहेछे॥ २६॥

तदेतन्नापंते जगदनयदानं खलु नवस्वरूपानुध्यानं शमसु खनिधानं कृतधियः॥ स्थिरीनूते ह्यस्मिन्विधुकिरणकर्पूरवि मला यशःश्रीः प्रौढा स्याज्जिनसमयतत्त्वस्थितिविदां॥२७॥

अर्थ॥ आजगतप्रत्येपंडितलोक एमकहेछे जेपोतानाआत्मनावना स्वरूपनुंचिं तनतेजशमताना सुखनुंकारणछे अनेजगतनेअनयदाननुं देवावालोछे जेणेकारकता नावेंबुद्धिकरीछे तेनेआत्मस्वरूपज्ञान स्थिरथयेथके चंद्रकिरणकर्पूरसरीखी उज्वल यशलक्ष्मीतेप्रौढपणे विस्तारपामे एवातत्वज्ञानी तेजिनेश्वरप्रणित सिद्धांतनातत्वनी मर्यादायेंवर्त्ते॥ २७॥ इतिनवस्वरूपचिंताधिकारःचतुर्थःसमाप्तः॥

इतिश्रीनयविजयगणिशिष्य श्रीयशोविजयेनविरचिते अध्यात्मसा रप्रकरणे प्रथमः प्रबंधः॥१॥ सर्वश्लोक १०२ तेमां पेहलाना २४ बीजाना २९ त्रीजाना २१ तथा चोथाअधिकारना २७

नवस्वरूपविज्ञाना द्वेषान्नैर्गुण्यदृष्टिजात्॥ तदिवोछेदरू पं जाग् वैराग्यमुपजायते॥१॥ सिद्धा विषयसौख्यस्य वैराग्यं वर्णयंति ये॥ मतं न युज्यते तेषां यावदर्थोप्रसिद्धितः॥ २॥

अर्थ ॥ नवतुंस्वरूपजाएयायकी संसारउपरद्वेषथयायकी संसारनेनिर्गुणपणेदेख वायकी शिघ्रपणे संसारना विच्छेदनोवैराग्य आत्मानेविपे प्रगटथाय ॥ १ ॥ विष यसुखनीसिद्धि निष्पत्तिप्राप्तितेवडे जेवैराग्यनुंवर्णनकरेछे तेनुंमतघटमाननथी जि हांसुधी अर्थके० इच्छेतिहांसुधीविषयछे एवीप्रसिद्धिछे अर्थसत्वेविषयसत्वंइति.

अप्राप्तत्वभ्रमाद्च्चै रवाप्तेप्वप्यनंतशः॥ कामभोगेपु मूढानां
समीहा नोपशाम्यति ॥३॥ विषयैः क्षीयते कामो नेंधनैरिव
पावकः ॥ प्रत्युत प्रोल्लसच्छक्ति र्भूय एवोपवर्द्धते ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेएमजाणेछे जेहुंकोइकाले संसारनेविपेआव्योजनथी जोअनंतिवारवि षयसेव्याछे तेवतांआविषयनवापाम्यो एवोभ्रमजेनेउपजेछे एवाजेकामभोगनेविषे मुंझाइरह्याछे तेनीअभिलाषानोनाशथतोजनथी ॥ ३ ॥ जेमइंधनेअग्निघटेनही पणउलटीवृद्धिजपामे तेमविषयसेवतां कामभोगपण कदापिक्षयपामेनही उलटी शक्तिउल्लासपामतीजाये वारंवारवधतीजजाए ॥ ४ ॥

सौम्यत्व मिव सिंहानां पन्नगानामिव क्षमा॥विषयेपु प्रवृत्ता
नां वैराग्यं खलु दुर्वचं ॥५॥ अकृत्वा विषयत्यागं योवैराग्यं
दिधीर्षति ॥ अपथ्यमपरित्यज्य स रोगोच्छेदमिच्छति ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमसिंहनेसोमपणुंनथी सर्पनेजेमशमतानथी तेमविषयमां जेप्रवर्त्या तेमने वैराग्यदोह्लिोछे पणसुगमनथी ॥ ५ ॥ जेविषयनोत्यागकर्याविना चित्तमां वैराग्यनी धारणाकरेछे तेकुपथ्यतज्याविना रोगटालवानी इच्छाकरेएवुंछे ॥ ६ ॥

न चित्ते विषयासक्ते वैराग्यं स्थातुमप्यलं॥अयोघन इवोत्तप्ते
निपतन्बिंदुरंभसः॥७॥ यदींदुः स्यात् कुहूरात्रौ फलं यद्यव
केशिनी॥तदा विषयसंसर्गिचित्ते वैराग्यसंक्रमः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेम लोढानो घण तपोहोय तेपाणीनाबिंदुने शोषीजायछे तेमजेनुंचि त्तविषयासक्तछे तेनाहृदयमां वैराग्यरहीशकतुं नथी ॥ ७ ॥ जो अमासनीरात्रीये चं द्रउगे अने जोवांझीआवृक्षने फलआवे तोविषयीजीवना हृदयमां वैराग्यसंक्रमे॥८॥

भवहेतुपु तद्वेषा द्विषये प्वप्रवृत्तितः॥ वैराग्यं स्यान्निराबाधं
भवनैर्गुण्यदर्शनात् ॥९॥ चतुर्थेपि गुणस्थाने नन्वेवं तत्
प्रसज्यते॥ युक्तं खलु प्रमातृणां भवनैर्गुण्यदर्शनं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जवनी वृद्धिनाहेतुउपरजेनेद्वेषहोय विषयनेविषे जेनीप्रवृत्तिनहोय तेप्रा
णीने संसारनीनिर्गुणताना चिंतनथकी निराबाधपणे वैराग्यउपजे ॥ ९ ॥ चोथागु
णठाणानेविषेपण समकेतवंत ज्ञातापुरुषनिश्चयपणे संसारनीनिर्गुणताज जुएछेतो
तेने वैराग्यनीप्राप्तिथायछे तेयुक्तजछे ॥ १० ॥

सत्यचारित्रमोहस्य महिमा कोप्ययं खलु ॥ यदन्यहेतुयोगे
पि फलायोगोत्र दृश्यते॥११॥दशाविशेषे तत्रापि नचेदं ना
स्ति सर्वथा॥स्वव्यापारहतासंगं तथा च स्तवभाषितं॥१२॥

अर्थ॥ चारित्र मोहनीनोमहिमा साचोजछे केमके निश्चेथकी अन्यजोगहेतुयेंपण
फलनुं अयोग्यपणुं तेथकी जोवामां आवेछे ॥ ११ ॥ समकेतनीदिशाविशेषेंकरीने
तेचोथेगुणठाणेपण सर्वथावैराग्यनजहोय एमनजाणवुं तिहांपणपोताना आत्मिक
स्वभावनी रमणतायें कुसंगपणुंहणायछे एअर्थ वीतरागस्तोत्रनेविषे श्रीहेमाचार्य
जीयें करेलोछेमाटे चोथेगुणठाणे वैराग्यपणुंहोय ॥ १२ ॥

यदा मरुन्नरेंद्रश्री स्त्वया नाथोपभुज्यते॥यत्र तत्र रतिर्नाम
विरक्तत्वं तदापि ते॥१३॥भवेछा यस्य विछिन्ना प्रवृत्तिःकर्म्म
भावजा ॥ रतिस्तस्य विरक्तस्य सर्वत्रशुभवेद्यतः॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जेकालें देवतानाराजानीलक्ष्मी हेनाथतमेंभोगवी तिहांपणजिहांजिहां
रतिमोहिनीउपजेते तमेकरीनथी त्यांपणतमेंविरक्तपणुंजकर्युंछे पणरंगायानथी॥१३
माटे भवनीइछाजेहनेविछेदथायछे तेनेजेअवश्यवेदवायोग्य भावकर्मनी प्रवृत्तीप्रमुख
जेविरक्तआत्मानेरतिपणुंछे तेसर्वत्र शुभवेदनीजवर्त्तेछे. ॥ १४ ॥

अतश्चाक्षेपकज्ञानात् कांतायांभोगसंनिधौ॥ न शुद्धिप्रक्रयो
यस्मा द्धारिभद्रमिदं वचः॥ १५ ॥ मायाम्भस्तत्वतः पश्यन्ननु
द्विग्नस्ततोद्रुतं॥ तन्मध्ये न प्रयात्येव यथा व्याघातवर्जितः॥१६॥

अर्थ॥ एहिजकारणमाटे स्वरूपज्ञाननाअभ्यासेंकरी अथवा अन्यवस्तुयेंकरी अन्य
वस्तुनुंपुरवुं तेक्षेपककेवाय तेक्षेपकपणुंजेनेनथी तेनुंनामअक्षेपककहियें एहवोअक्षे
पकज्ञानवंत निश्चेभावनुंग्रहणकरनारो ते पुरुषजोकांता जेस्त्रीतेनाभोगनेसन्मुख प्रव
र्त्ततोहोय तोपणतेहनी शुद्धिनोप्रकर्षरीतें क्षयनथाय एटले ज्ञानशुद्धितें कर्मक्षपणनुं
कारणछे एवुंहरिभद्रसूरीनुंवचनछे ॥ १५ ॥ परमार्थदिशायको सर्वसंसारने इंद्रजा

लसमान देखतोथको अनुद्वेगदिशामांवर्त्ते जेहनेकामनोगमां उद्वेगनथी नेरागपण नथी ते तेणेकरीतेमां तन्मयपणुंनकरे तेनिरविघ्नपणे यथायोग्येंमोक्षंजजायछे॥१६॥

नोगान् स्वरूपतः पश्यं स्तथा मायादिकोपमान्॥नुंजानोपि ह्यसंगः सन् प्रयात्येव परं पदं॥१७॥नोगतत्वस्य तु पुन र्न न वोदधिलंघनं॥ मायोदकदृढावेश स्तेन यातीह कः पथा॥१८॥

अर्थ॥ जेप्राणी शब्दादिकनोगने परमार्थेदिशायें जोतोथको इंद्रजालसमानजाणेते विषयादिकने नोगवतोपण तेमांलोपातोनथी तेनिश्चयपरमपदजे मोक्षतेनेपामेछे॥१७॥अनेजेनवानिनंदीप्राणी तेसंसारना नोगनेजतत्वकरीमानेछे तेप्राणीसंसारसमुद्रने उलंघीनशके केमके मायारूपउदकनाआवेशें तेप्राणीकुपंथनेविषेजायछे॥१८॥

स तत्रैव नवोद्विग्नो यथा तिष्ठत्यसंशयं॥ मोक्षमार्गेपि हि तथा नोगजंबालमोहितः॥ १९॥ धर्म्मशक्तिं न हंत्यत्र नोगयोगवलीयसी॥ हंति दीपापहोवायु र्ज्वलंतं न दवानलं॥ २०॥

अर्थ॥ तेप्राणीनोगनो जंबालके० कलिमलतेणेमोहितथयोथको मोक्षमार्गना साधननेविषेपण नवोद्विग्नतापणेनिश्चयथकीरहेछे॥ १९॥ धर्मनीसामर्थताने कामनोगनोसंयोग हणीशकतोनथी केमके धर्मनीसामर्थता घणीबलवत्तरछे दीपकसमानथउर धर्मनेतोकदापि वायुसमानविषयथोलवीनाखे पणजाज्वलमान दावानलसमानजे महाधर्मनीवासना तेनेवायुनडीशकतोनथी॥ २०॥

बध्यते बाढमासक्तो यथा श्लेष्मणि मक्षिका॥ शुष्कगोलवद्भिलष्टो विषयेभ्योन बध्यते॥२१॥ बहुदोषनिरोधार्थ मनिवृत्तिरपि क्वचित्॥निवृत्तिरिव नो दुष्टा योगानुजवशालिनां॥ २२॥

अर्थ॥ जेम श्लेष्मनेविषे माखीजेपाइ फसाइजायछे तेम विषयनेविषे गाढपणे आसक्तपणं प्राणीबंधाइजायछे सुकीमृत्तिकानागोलामांजेम माखीफसातीनथी तेम अनासक्तवृत्तिवालाप्राणी एवाजेजीव तेविषयनेविषे बंधातानथी॥ २१॥ जेम रोग नेहटाववा अत्यंतनीकल्ले तेमघणादूषणनो रोधकरवानेअर्थे क्वचितअनिवृत्तिपण दुष्टनथी जेमकामनोगनी त्यागवृत्तिदुष्टनथी तेमअनुनवजोगेकरीने सहित छेतेने अनिवृत्तिमात्र अनिवृत्तिछे तेपण निवृत्तिनीपरेंज दुष्टनथी॥ २२॥

यस्मिन्निषेव्यमाणेपि यस्याशुद्धिः कदाचिन॥ तेनैव तस्य शुद्धिः स्यात् कदाचिदिति हि श्रुतिः ॥ ७३ ॥ विषयाणां ततोवंध जनने नियमोस्ति न॥ अज्ञानिनां ततोवंधो ज्ञानिनां तु न कर्हिचित् ॥७४॥

अर्थ ॥ जेमशत्रुनी सेवनाकरनारोपुरुष दुःखीथोयछने कालांतरेसुखीथाय तेम कदापि विषयनेसेवनारो कर्मेकरीने तेहिजविषयादिकथीशुद्धथाय एवीपण कोइकनी श्रुतीछे ॥७३॥ जेविषयतेएकांतेकर्मबंधनुंजकारणछे एवोएकांतनियमनथी पण जेअ ज्ञानीछे तेनेंजकर्मबंधनु कारणछे पणजेतत्वज्ञानी समतारसमां मग्नछे तेनेनथी॥ ७४॥

सेवते सेवमानोपि सवेमानो न सवते॥कोपि पारजनो न स्या घहन् परजनानपि ॥७५॥ अत एव महापुण्यं विपाकोपहि तश्रिया ॥ गर्भा दारभ्य वैराग्यं नोत्तमानां विहन्यते ॥७६॥

अर्थ ॥ केटलाकप्राणी विषयनेद्रव्यथी अणसेवतायका पणभावथी विषयनेसेवछे केटलाकप्राणी द्रव्यथीसेवछे पणभावथीनथीसेवता पारकीसेवनाकरतोयको पण तेहनो परमार्थपरप्रतेनदेतोयको एहवोजेज्ञानीते कर्ममयीजनथीथतो ॥ ७५ ॥ एमाटेउत्तमपुरुषें महापुण्यविपाकनायोगें प्राप्तकरी एहवीजे तीर्थंकरादिकनीलक्ष्मी तेनेगर्भथकीमांमीनेपण वैराग्यधारात्रुटतीनथी. ॥ ७६ ॥

विषयेभ्यः प्रशांताना मश्रांतं विमुखैः कृतै॥करणैश्चारुवैरा ग्य मेषराजप थः किल ॥७७॥ स्वयं निवर्त्तमानैस्तै रनुदीर्णै रयंत्रितैः॥ तृप्तै ज्ञानवतां तस्मात्स्या दसावेकपदी मता॥७८॥

अर्थ ॥ जेहनेविषयथकी प्रशांतचित्तथयोछे अनेविश्रामरहित इंद्रियोनाविषयने विमुखकरवो तेणेकरीने मनोहरवैराग्यमार्गसेववानुंछने अनेविषयनोपणत्यागथायते तोनिश्चेयथकी वैराग्यदिशानो राजमार्गछे ॥ ७७ ॥ अनेजेइछाविना सहेजेकोइकार णयोगे पोतेइंद्रियविकारथकीनिवर्त्तेछे पण प्रशांतनेअणउदीरवेकरीने अनियंत्रणा येकरी एटलेइंद्रियनोनिरोध हजीकरवोनथी पणसहेजचारित्रप्रमुखना योगेंइंद्रियनि रोधथयोछे एहवातृप्तिवंत ज्ञानीपुरुषतेनुंवैराग्यते पूर्वोक्तराजमार्गनावैराग्यनी एक पदीछे एटलेएकदंडीछे जेमगाडाचालवानामार्गने तोमहोटोमार्गकहियें पणमाण सोनेपगेचालवानुंरस्तो न्हानोथायछे तेवुंतेवैराग्यपण न्हानोकहियें. ॥ ७८ ॥

बलेन प्रेर्यमाणानि करणानि वनेन्नवत्॥न जातु वशतां यां
ति प्रत्युतानर्थवृद्धये ॥ २९ ॥ पश्यंति लज्जया नीचै र्डुर्ध्यानं
च प्रयुंजते॥ आत्मानं धार्मिकाभासाः क्षिपंति नरकावटे॥३०॥

अर्थ ॥ बलात्कारेंप्रेरणायकापण वननाहाथीनीपेठेइंद्रियो कदापिवशथतीनथी वलटीअनर्थनी वृद्धिकरनारीथायछे ॥ २९ ॥ लाजेकरीनीचुंजुएछे अनेमनमांडुध्याानधरेछे एवाधर्मधुताराप्राणीते पोतानाआत्माने नरकनाकूपमां नाखेछे ॥ ३० ॥

वंचनं करणानां त द्विरक्तः कर्तुमर्हति॥सभावविनियोगेन स
दास्वान्यविभागवित् ॥ ३१ ॥ प्रवृत्तेर्वानिवृत्तेर्वा न संकल्पो
न च श्रमः॥विकारोहीयते क्षाणा मिति वैराग्यमद्भुतं ॥३२॥

अर्थ ॥ शुभनावनेअर्पणकरीने सदास्वपरविवेचन ज्ञानयुक्त भावनावालाज्ञाता विरक्तप्राणी इंद्रियोनेठगवानेसमर्थथायछे पणबीजानथीथाता ॥ ३१ ॥ प्रवृत्तिनेविषे अथवा निवृत्तिनेविषे जेनेसंकल्पनथी अनेथाकपणनथी एवासमभावेंवर्तनारना सर्व विकारदूरथायछे अनेएनुंजनामअद्भुतवैराग्यपणछे ॥ ३२ ॥

दारुयंत्रस्थपांचाली नृत्यतुल्याः प्रवृत्तयः॥योगिनो नैव बाधा
यै ज्ञानिनो लोकवर्तिनः॥३३॥इयं च योगमायेति प्रकटं गीयते
परैः॥ लोकानुग्रहहेतुत्वान्ना स्यामपि च दूषणं ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ जेमकाष्ठनीपुतलीने दोरीनासंचारेंकरी नाचनारीनामाफकनाचती जोइयेंछइयें पणतेनेकर्मबंधननथी तेमलौकिकव्यवहारनेविषे वर्त्तताज्ञानी जेयोगीश्वरपुरुषतेहनेसंसारनी प्रवृत्तिपीडाकरतीनथी॥ ३३ ॥ एवैराग्यदिशाने परदर्शनीजोगमायानेनामेप्रगटपणे बोलावेछे एपणलोकनेउपकारकरताछे एनेविषेदूषणनथी ॥ ३४ ॥

सिद्धांते श्रूयते चेय मपवादपदेष्वपि॥ मृगपर्षत्परित्रास नि
रासफलसंगता ॥ ३५ ॥ औदसीन्यफले ज्ञाने परिपाकमु
पेयुषि ॥ चतुर्थेपि गुणस्थाने तद्वैराग्यं व्यवस्थितं ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ सिद्धांतमांपणसांभलीयेंछइयेंके अपवादनेविषे मृगलासरखीपरखदाने पण निरासकरवी एजवृषभतुल्यगीतार्थनी शुद्धज्ञानदिशाजाणवी. ॥ ३५ ॥ परिपक्वथयकी एवीजेज्ञानदिशाअने जेनुंफलउदासीनताछे तेयकीचोथेगुणस्थानके पणवैराग्यदिशा प्राप्तथायछे इतिवैराग्यसंभवाधिकारपंचम समाप्तः ॥ ३६ ॥

तद्वैराग्यं स्मृतं दुःख मोहज्ञानान्वया त्रिधा॥ तत्राद्यं विषयाप्रा
प्तेः संसारोद्वेगलक्षणं ॥ १ ॥ अत्रांगमनसोः खेदो ज्ञानमाप्यांय
कं न यत् ॥ निजाभीप्सितलाभे च विनिपातोपि जायते॥ २ ॥

अर्थ ॥ तेवैराग्यत्रणप्रकारनोछे दुःखगर्भित मोहगर्भित अने ज्ञानगर्भित तेमां प्रथमकह्योतेविषयादिकने नपामवायकी संसारथीउद्वेगपामवानुं लक्षणछे माटेतेह नेदुःखगर्भितवैराग्यकहियें. ॥ १ ॥ देहसंबंधी मनसंबंधी जेखेदतेथीउपज्युं जेज्ञा नतेअव्यापकके० वृद्धिकारीनथाय आत्मानीपुष्टिकर्त्तानथाय केमके तेप्राणीपोता ने अभिलाषकरवायोग्य धनादिकवस्तुनेपामीने तापसादिपणुंछोमीने पाछुंग्रहस्थप णुंअंगीकारकरे ॥ २ ॥

दुःखाद्विरक्ताः प्रागेवे छंतिप्रत्यागतेः पदं॥ अधीराइव संग्रा
मे प्रविशंतो वनादिकं ॥ ३ ॥ शुष्कतर्कादिकं किंचि द्वैद्यका
दिक मप्यहो ॥ पठंति ते शमनदीं नतु सिद्धांतपद्धतिं ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ दुःखथकीजेवैराग्यपामेछे तेतोप्रथमथीज पाछाग्रहस्थावासनी इछाकरेछे जे दुःखटलेतो घरेजइये जेमअधीरपुरुष जेकायरते संग्रामनेविषे जतोथको वननी गलीमांजराइ वेसवानीइछाकरेछे तेहनीपरें ॥ ३ ॥ प्राणीयोवादविवाद करवाने शुष्कतर्क ग्रंथनणेछे आजीविकानेअर्थें वैद्यकप्रमुखना ग्रंथनणेछेपण शमतारसनी नदी एवी सिद्धांतनी जेपद्धति तेजणतानथी ॥ ४ ॥

ग्रंथपल्लवबोधेन गर्वोष्माणं च बिभ्रति॥ तत्वांतं नैव गछंति
प्रशामामृतनिर्झरं ॥ ५ ॥ वेषमात्रभृतोप्येते गृहस्थान्नाति
शेरते ॥ नपूर्वोछायिनोयस्मा न्नापि पश्चान्निपातिनः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेशमताअमृतना झरणनेपाम्यानथी तेग्रंथनापल्लवमात्रके० खंमखंम मात्रेंकरीने गर्वनीगरमीनेधरीनेज वर्त्तेछेपणतत्वना रहस्यने पामताजनथी ॥ ५ ॥ जेसाधुनावेषमात्रेंकरीने पोतानुं जीवितव्यपणुंराखेछे तेपणग्रहस्थतुल्यजछे पण ग्रहस्थथी न्यारानथी जेणेआगलउछाह धर्योनथी जेगुणपामिनें पडवाइ पण थयानथी केमकेजे गुणपामीने तजेतेतोपडवाइकेवाय पणएतोकोइवारें पडवाइ पणथयानथी एहवाजे छे तेतोगुणनेपाम्याजनथी ॥ ६ ॥

गृहेन्नमात्रदौर्लभ्यं लभ्यंते मोदका व्रते ॥ वैराग्यस्यायम र्थोहि दुःखगर्भस्य लक्षणं ॥ ७ ॥ कुशास्त्राभ्यासंसंभूत भव नैर्गुण्यदर्शनात् ॥ मोहगर्भं तु वैराग्यं मतं बालतपस्विनां॥ ८ ॥

अर्थ अहोघरमांतो पुरुअन्नपणनथीमलतुं नेदीक्षालीधायकी तोलाभवामलेछे तेमाटेदीक्षालेवामां शुंदुःखछेएवुंजाणीने जेदीक्षालियेछेतेनुंनाम दुःखगर्भित वैराग्य जाणवुं ॥ ७ ॥ एरीतेंप्रथम दुःखगर्भितवैरागपणुंदेखाड्युं हवेमोहगर्भित वैराग्य कहेछे कुशास्त्रनाअभ्यासथी प्रगटयुंजेसंसारनुं निरगुणीपणुं तेथीमोहगर्भित वैराग्य थायछे तेबालतपस्वी प्रमुखजाणवा ॥ ८ ॥

सिद्धांत मुपजीव्यापि ये विरुद्धार्थभाषिणः ॥ तेषामप्येतदेवे ष्टं कुर्वता मपि दुष्करं ॥ ९ ॥ संसारमोचकादीना मिवैतेषां न तात्विका ॥ शुभोपि परिणामोय ज्ञातानज्ञान रुचिस्थितिः १०

अर्थ॥ जेसिद्धांतनुंउपजीवन करीनेपण सूत्रविरोधि अर्थकेहेछे तेप्राणीजो दुष्कर करणीकरेछे तोपणतेनेएवोजजाणवो ॥ ९ ॥ संसारना दुःखथीमूकाववाना हेतुथीजे मुसलमानते घोडाप्रमुखने दुःखीदेखी तेनेदुःखथी मोकळवाने दयाभावेकरीमारीना खेछे तेपणशुभपरिणामनी बुद्धिराखेछे तेठतांपरमार्थेपापजछे तेममोहगर्भितने पर मार्थेजमेनही जोएनो परिणामशुभहोय तोपणपरमार्थे ज्ञाननीरुचियायनही॥१०॥

अमीषां प्रशमोप्युच्चै र्दोषपोषाय केवलं॥अंतर्निलीनविषम ज्वरानुभवसन्निभः ॥ ११ ॥ कुशास्त्रार्थेषु दक्षत्वं शास्त्रा र्थेषु विपर्ययः ॥ स्वछंदता कुतर्कश्च गुणवत्संस्तवोज्झनं॥१२॥

अर्थ ॥ जेअंतरंगमां लीनथइरह्यो एहवोहाडवेदीज्वर दुःखदाइथायछे तेमएने पणजेप्रशमादिकगुण थायतेपण घणुकरीने केवलदूषणभणीजथाय पणगुणभणीन होजयाय केमकेअंतरंग मिथ्यात्वगयाविना वैराग्यतेदुःखदाइछे ॥ ११ ॥ कुशास्त्र नाअर्थने विषे डाह्याथाय नेशास्त्रनाविपरीत अर्थकरे स्वछंदपणेवरते कोइसाथेहु मारालेनही अनेगुणीनी प्रशंसानकरे ॥ १२ ॥

आत्मोत्कर्षः परद्रोहः कलहो दंभजीवनं ॥ आश्रवाछादनं श क्त्युल्लंघनेन क्रियादरः ॥ १३ ॥ गुणानुरागवैधुर्य मुपकारस्य विस्मृतिः॥ अनुबंधाद्यचिंता च प्रणिधानस्य विच्युतिः ॥१४॥

अर्थ ॥ जेपोतानीमोटाइकरे पारकोद्रोहकरे कलेशकजीआकरे कपटराखे पोता नापापढांके पोतानोसामर्थ्य उलंघीने क्रियानोउद्यमकरे तेआर्त्तध्याननेकेवाय॥ १३ ॥ वलीजेगुणीपुरुषोनो रागीनहोय बीजानाकरेलाउपकारने विसरीजाय तीव्रकर्मबंधनी चिंतासहितवर्त्ते अनेशुभअध्यात्मना अध्यवसाय रहितपणेवर्त्ते ॥ १४ ॥

श्रद्धा मृदुत्वमौद्धत्य माधुर्य्यमविवेकिता ॥ वैराग्यस्य द्वितीयस्य स्मृतेयं लक्षणावली॥१५॥ ज्ञानगर्भं तु वैराग्यं सम्यक् तत्व परिच्छिदः॥स्याद्वादिनः शिवोपायस्पर्शिन स्तत्वदर्शिनः॥१६॥

अर्थ ॥ श्रद्धा मृदुता उद्धतता मधुरता अविवेकतापणु एमोहगर्भित वैराग्यनी परंपराजाणवी॥ १५॥एरीतेंमोहगर्भितवैराग्यनुं स्वरूपकह्युं हवेज्ञानगर्भितवैराग्यनुंस्व रूपकहेछे जेतम्यक्रीतेंतत्वनीओलखाणकरे स्याद्वाददृष्टियेंवर्त्ते मोक्षनुंचिंतनकरे मो क्षनाउपायनेफरसे अनेतत्वदिशा देखवानुंअर्थीथाय तेज्ञानगर्भितवैराग्यजाणवुं१६॥

मीमांसा मांसला यस्य स्वपरागमगोचरा ॥ बुद्धिः स्यात्तस्य वैरा ग्यं ज्ञानगर्भ मुदंचति॥१७॥ न स्वान्यशास्त्रव्यापारे प्राधान्यं य स्य कर्मणि ॥ नासौ निश्चयसंशुद्धं सारं प्राप्नोति कर्म्मणः॥ १८॥

अर्थ ॥ जेहनोविचार पुष्टकारीहोय अनेस्वसिद्धांत तथापरसिद्धांतसंबंधी बुद्धि होय तेने वैराग्यनीवातकहियें अनेएवानेज ज्ञानगर्भित वैराग्यप्रगटथाय ॥ १७ ॥ जेनेस्वशास्त्र परशास्त्रना व्यापारनुं प्राधान्यपणुनथी तेमज क्रियानेविषेपण प्राधान्य तानथी तेनिश्चेयकीक्रियानो निरमलसारभूतजेफल तेनेक्यारेपणपामेनही ॥ १८ ॥

सम्यक्त्वमौनयोः सूत्रे गतप्रत्यागते यतः॥ नियमोदर्शित स्तस्मा त् सारं सम्यक्त्वमेव हि॥ १९॥ अनाश्रवफलं ज्ञान मव्युत्थानम नाश्रवः॥ सम्यक्त्वं तदभिव्यक्ति रत्येकत्वविनिश्चयः ॥ २० ॥

अर्थ॥जेसमकिततेमौनचारित्रकहियें अनेचारित्रते मौनसमकितकहियें एवुंश्री आचारांगमध्ये गतप्रत्यागतेकरीने कह्युंछे जंसम्मंतिपासहा तंमोणंतिपासहाजम्मो तेमाटे नियामकतापणुंजाणवुं सिज्झंतिचरणरहिया दंसणरहियानसिज्झंति इतिवच नात् तेमाटेसमकितते सारभूतजाणवुं ॥ १९ ॥ आश्रवनोत्याग तेज्ञाननुंफलछे अनेयनाश्रवनुंफल तेअव्युत्थान एटलेविषयमां उजमालनथाय विषयनोत्यागीहोय

एवुंनाम निश्चयसमकितकहियें कारकसमकेतीनी एवीदृष्टिहोय एटलामाटे निश्चय नयनीरतिके० प्रीतितेशुद्धचारित्रवंतनेजहोय ॥ २० ॥

वहिर्निर्वृत्तिमात्रं स्या चारित्र्या द्यावहारिकात् ॥ अंतःप्रवृत्ति सारं तु सम्यक् प्रज्ञानमेव हि ॥२१॥ एकांते नहि षट्काय श्रद्धा नेपि न शुद्धता॥संपूर्णपर्ययालाभाद् यन्न याथात्म्यनिश्चयः॥२२॥

अर्थ ॥ वाह्यथीधन कण कंचन कामिनीप्रमुख वाह्यवस्तुनोज त्यागीथाय एव्यव हारचारित्रना पालवाथी तेप्राणीव्यवहार दृष्टियेंजचालेछे अनेजेने समकितसहित ज्ञाननी प्रवृत्तिहोय तेहनेजअंतरंग प्रवृत्तिनुं सारकहियें ॥ २१ ॥ समस्तनयनी वासनारहितथका एकांतेछकायनारिक्षानी श्रद्धाकरताथकां समकितनीशुद्धता नके वाय पणसंपूर्णनयनीअपेक्षायें द्रव्यार्थिकपर्यायार्थिकनयना जाणविना यथार्थपणा नो जाणनहीजथाय माटेशुद्धनयनी अपेक्षायेंवर्त्तवुं ॥ २२ ॥

यावंतः पर्यया वाचां यावंतश्चार्थपर्ययाः ॥ सांप्रता नागताती तास्तावद्द्रव्यं किलैककं ॥ २३ ॥ स्यात्सर्वमयमित्येव युक्तं स्व परपर्ययैः ॥ अनुवृत्तिकृतं सत्वं परत्वं व्यतिरेकजं ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जेमजगतमांवर्त्तमान अनागत तथाअतिकालना जेटलाशब्दपर्याय वचन नाछे तथापदार्थनाजेटला अर्थपर्यायछे तेसर्वपर्यायनिश्चेंथी एकजद्रव्यछे॥ २३ ॥ जेसत्वके० पदार्थते सर्वस्वपरपर्यायमयीहोय तेआवीरीतेंजे अनुवृत्तिसहचारी गु णपणेसत्वके० स्वपणुजाणवुं अने परपणुते व्यतिरेकपणेकरीजाणवुं ॥ २४ ॥

ये नाम परपर्यायाः स्वास्तिलायोगतोमताः॥ स्वकीया अप्यमी त्या ग स्वपर्यायविशेषणात् ॥ २५ ॥ अतादात्म्येपि संवधो व्यवहा रोपयोगतः॥तेषां सत्वं धनस्येव व्यज्यते सूक्ष्मया धिया॥२६॥

अर्थ॥जेटलापरपर्यायछे तेसर्वपोतानीआस्तिक्यताना अजोगथीजाणवा तेयद्यपि पोतानाछे तोपणगतनावेंछे अनेपोतानापर्यायतो सामान्यतापणेछे ॥२५॥ परपर्याय जोपणतादात्म्यनावेंनथी तोपण व्यवहारनयना जोगथीतेहनो संवंधछे जेमधननोध णी अनेधनते जुदाजुदाछे तोपणसूक्ष्म बुद्धियेंविचारतां तेमनोसंवंधजणायछे॥२६॥

अर्थ ॥ आगमनाअर्थनुं उपनयनजेथापवुं तेयकीआज्ञजे बुध्दिवंत तेनुंज्ञान
वैव्यापकपणेप्रवर्त्ते कार्यादिकजेव्यवहारछे तेतोनिश्चयपणें चित्राम ...
श्रेष्ठरूपकरवाने जेमआलेखकरे तेसरिखोव्यवहारछे अनेसमग्ररूपकरवा तम।
श्रयनयछे॥३३॥ तेमाटेएकांतनय अंगीकारकरीनेप्रवर्त्तनारा वैराग्यवंतनेपण कुग्रहो
कहिये तोवीजामात्र नामधरावनारहोय तेनीतोसीवातो एकनयवालोशास्त्रना अर्थ
नोवाधककरता जाणवुंतेजोपण जैनाभासछे तोपण पापकारी जाणवो ॥ ३४ ॥

उत्सर्गे चापवादेपि व्यवहारेथ निश्चये॥ ज्ञाने कर्म्मणि वा
यं चे न्न तदा ज्ञानगर्भता॥३५॥ स्वागमेन्यागमार्थानां शत
स्येव परार्ध्यके॥तावताप्यबुधत्वं चे न्न तदाज्ञानगर्भता॥३६॥

अर्थ ॥ उत्सर्गमार्गमां अपवादमार्गमां व्यवहारमार्गमां निश्चयमार्गमां ज्ञानन
यनेविषे अनेक्रियानयनेविषे जोकदाग्रहनथी तोतेनेज्ञानगर्भितपणुंछे अनेतेज्ञानी
पणछे ॥३५॥ स्वसिध्दांतनाजाणवाथी अन्यशास्त्रनुं जाणवुंते तेमांजसमायीजायछे
जेमपरार्ध्यनामे उत्कृष्टगणितछे तेमांसोनुगणितपण समाइजायछे अनेतेटलो ज्ञा
नपामिनेपण जोअज्ञानपणुरहेतो तेनेज्ञानगर्भिताविलकुलनथी एमजाणवुं ॥३६॥

नयेषु सार्थसत्येषु मोघेषु परचालने ॥ माध्यस्थ्यं यदि नायातं
न तदा ज्ञानगर्भता ॥ ३७॥ आज्ञयागमिकार्थानां यौक्तिकानां
च युक्तितः ॥ न स्थाने योजकत्वं चे न्न तदा ज्ञानगर्भता ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ पोतपोताना स्वार्थनेविषे सघलानयसत्यछे नेपरमार्थनी चालनानेविषे
निष्फलछे अनेतेनयना विवादमांजो मध्यस्ततानआवी तोतेनेज्ञानगर्भताछेजनहीं
॥३७॥जेआज्ञायाह्यअर्थने आज्ञायें ग्रहेनहीं आगमप्रमाणेग्रहवायोग्यने आगमें ग्रहे
नहीं अनेयुक्तियाह्यनेयुक्तीवडेग्रहेनहीं एमसहुने पोतपोतानेठेकाणे जोडीजाणेनहीं
तोतेने ज्ञानगर्भिता मूलथीजनथी एमजाणवुं ॥ ३८ ॥

गीतार्थस्यैव वैराग्यं ज्ञानगर्भं ततः स्थितं ॥ उपचारादगीतस्या
प्यभीष्टं तस्य निष्ठया ॥ ३९ ॥ सूक्ष्मेक्षिका च माध्यस्थ्यं सर्वत्र
हितचिंतनं ॥ क्रियायामादरोभूयान् धर्मे लोकस्य योजनं॥४०॥

अर्थ ॥ उपरकह्या मुजवतो गीतार्थनेज ज्ञानगर्भितवैराग्यछे पणअज्ञानीनेन
थी एमकह्युं तोपणतेनाउपचारथकी अगीतार्थने पणगीतार्थनीनिष्ठायें ज्ञानगर्भितवै

राग्यछे ॥ ३९ ॥ तेमाटेसूक्ष्मदृष्टियें मध्यस्थपणुं अंगीकारकरीने अनेपरदूषण तजी नेवर्त्तवुं सर्वजगतनाजीवनुं हितचिंतवनुं मैत्रीभावधरवो क्रियानेविषेयणो आदरक रवो उपयोगधरवो अनेधर्ममार्गमां लोकनेजोडवा एहिजश्रेष्टछे ॥ ४० ॥

चेष्टा परस्य वृत्तांते मूकांधबधिरोपमा॥उत्साहः स्वगुणाभ्यासे
दुःस्थस्येव धनार्जने ॥ ४१ ॥ मदनोन्मादवमनं मदसंमर्द
मर्दनं ॥ असूयातंतुविछेद समतामृतमज्जनं ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ मुगाने तथाआंधलाने अनेबेहराने बोलवामां देखवामां अनेसांभलवामां इत्यादिकपारकावृत्तांतनेविषे जेणेचेष्टातजीछे अनेपोताना गुणनाअभ्यास करवामां जे उत्साहवंतछे जेमदरिद्रीधनकमाववानो उद्यमीहोयतेनीपरें उजमालथकोवर्त्ते ॥ ४१ ॥ कामनाउन्मादनुं वमनकरनारा मदनातमूलने टालनारा ईर्षारूपतंतुनातो डनारा अनेसमतारूपअमृत कुंडमांमज्जनकरनारा ॥ ४२ ॥

स्वभावान्नैव चलनं चिदानंदनयात्सदा ॥ वैराग्यस्य तृतीयस्य
स्मृतेयं लक्षणावली ॥ ४३ ॥ ज्ञानगर्भमिहादेयं द्वयोस्तुस्वो
पमर्दतः ॥ उपयोगः कदाचित् स्या न्निजाध्यात्मप्रसादतः ॥४४॥

अर्थ ॥ तथाचिदानंदमयपणाना स्वभावथी सर्वदा चलायमाननही एहवावर्त्त नुकवंत जेहोय एत्रीजा ज्ञानगर्भित वैराग्यनागुणनी लक्षणावलीकही ॥ ४३ ॥ इहां ज्ञानगर्भितवैराग्यतेग्रहेवायोग्यछे अने मोहगर्भितवैराग्य तथा दुःखगर्भितवै राग्यनुं उपमर्दनकरीने पोतानाअध्यात्मभावनाप्रसादथकी कदाचित् ज्ञानगर्भित वैराग्यनो उपयोगथाय ॥ ४४ ॥ इतिश्रीवैराग्यभेदाधिकारः षष्टःसमाप्तः

विषयेषु गुणेषु च द्विधा भुवि वैराग्यमिदं प्रवर्त्तते ॥
अपरं प्रथमं प्रकीर्तितं परमध्यात्मबुधैर्द्वितीयकं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ पृथ्वीनेविषे विषयमांअने गुणमांएबेप्रकारे वैराग्यप्रवर्त्तेछे तेमांविषयवै राग्यतो अमुख्यपणेकह्युंछे बीजुंअध्यात्मभावयुक्तगुणवैराग्यतेमुख्यपणेजाणवुं॥ १ ॥

विषयानुपलंभगोचरा अपि चानुश्रविकाविकारिणः ॥
न भवंति विरक्तचेतसां विषधारेव सुधासु मज्जतां ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेविषयवैराग्यछेते प्राप्तिगोचरपणे वर्त्तेछे पणनिश्चेंथी ज्ञातापुरुषतेरूपरसा

दिकनेविषे आसक्तिकरेनही जेविरक्तचित्तवालाते अविकारीयकाजहोय केमकेजेथ ध्यात्मरूप अमृतधारानेविषे मज्जनकरताहोय तेहनेविषनीधारासुंकरनारछे अर्थात् तेहनेकांइविषनीधाराथीमाकारीशक्तिनथी ॥ २ ॥

सुविशालरसालमंजरी विचरत्कोकिलकाकलीनरैः ॥
किमु माद्यति योगिनां मनो निभृतानाहतनादसादरं॥३॥

अर्थ ॥ जेयोगीश्वर अनहदनादेसहितछे तेनेयोगमारगेंकरीने सर्व देहरंध्रपुरीने अर्हपद अथवा सोहंपद अथवाॐकारध्वनि मनमांधरेछे तेनोब्रह्मद्वारेजेनाद थएछे तेनुनाम अनहदनाद कहियें तेणेकरीजेयुक्तछे तोतेवायोगीश्वरनुंमन नवीविस्तारवंती आंबानीमंजरीनेविषे विचरतीजे कोकिला तेना मनोहर शब्दसांभलीनें शुंमग्नथसे अर्थात्नहीजथसे ॥ ३ ॥

रमणीमृदुपाणिकंकण क्वणनाकर्णनपूर्णघूर्णनाः ॥ अ
नुभूतनटीस्फुटीकृत प्रियसंगीतरता न योगिनः ॥ ४ ॥

अर्थ॥ स्त्रीनासुकोमल हाथमांरह्यांजेकंकण तेनोशब्दसांभलीने पूर्णपणे घुम्याछे लोचन तेनीअनुभवनदिशारूप नाटककरनारीस्त्रीयें प्रियकारीसंगीतबंध कीधांतो तेमां योगीश्वरनुंमन रंगायनही एटलेलीनायनही ॥ ४ ॥

स्खलनाय न शुद्धचेतसां ललनापंचमचारुघोलना ॥
यदियं समतापदावली मधुरालापरते न रोचते ॥ ५ ॥

अर्थ ॥ स्त्रीनीपंचमरागनी घोलनाते समतापदनीश्रेणीना मधुरआलापनी रतीवालाशुद्धचेतनावंत जोगीनेरुचेनही एटलेशुद्धचेतनावंतने स्खलनाकारीनथाय॥५॥

सततं क्षयि शुक्रशोणित प्रभवं रूपमपि प्रियं नहि ॥
अविनाशिनिसर्गनिर्म्मल प्रथमानस्वक रूपदर्शिनः॥६॥

अर्थ ॥ अविनाशी सहजनिर्मल अनेविस्तारपामतुं एहवोजे पोतानुंसरूप तेहनाजोनार योगीश्वरतेनेतोजेनुं निरंतर शीलक्षयथायछे अनेवीर्यरुधिरथी उपनुंएवुंजे स्त्रीआदिकनुं रूपते प्रियकारीलागतुंनथी ॥ ६ ॥

परद्रव्यमपायसंकुलं विषयो यत्खलुचर्मचक्षुषः ॥
न हि रूपमिदं मुदे यया निरपायानुभवैकगोचर ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेवोनिरपायके० जेहनोनाशनथी एहवोअनुभवदिशाने जोवानोरसछे

तेवो रूपते परपदार्थके० वीजानेजोवायोग्यछे तथानाशवंतछे अनेचर्मचक्षुनो विषयछे एह्वो जेरूप तेजोवाथकीतेनोजेरसते निश्चयनयथकी हर्षकारीनथाय ॥ ७ ॥

रतिविभ्रमहास्यचेष्टिते ललनानामिह मोदतेऽबुधः ॥
सुकृताद्रिपविष्वमीषु नो विरतानां प्रसरंति दृष्टयः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ रतिसुखनेदेखीने तथास्त्रीनानेत्रविभ्रमनी चेष्टायेंकरीने अबुद्धजेअज्ञानी प्राणी तेघणोहर्षपामेछे पणए विभ्रमविलासादिकतो सुकृतरूप पर्वतनेवज्रथइ भेदेए वांछे माटेयोगीश्वरनी दृष्टितेमांरमतीनथी ॥ ८ ॥

न मुदे मृगनाभिमल्लिका लवलीचंदनचंद्रसौरभं ॥ वि
दुषां निरुपाधिबाधित स्मरशीलेन सुगंधिवर्ष्मणां ॥ ए ॥

अर्थ॥ कस्तुरी मालतीनापुष्प लवलीके० एलचीचंदनतथाचंद्रके० कपुरनीसुगंधीते पंडितलोकोने मग्नकरतीनथी तेमनेतो निरुपाधिक अनुभवगोचर स्वरूपचिदानंदने विषेज मग्नपणुवर्त्तेछे पणरूपादिकनेविषेमग्नतापणु नथी ॥ ए ॥

उपयोगमुपेति यच्चिरं हरते यन्नविभावमारुतः ॥ न ततः
खलु शीलसौरभा दपरस्मिन्निह युज्यते रतिः ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जे घणाकालसुधी उपयोगमांआवे जेनीसुगंधीने विभावदिशारूपवायु हरी शकतोनथी एवीजेशीलसुगंधीतेनेमूकी योगीश्वरनुं चित्तअन्यसुगंधीमां लोभातुंनथी

मधुरैर्न रसैरधीरता क्व च नाध्यात्मसुधालिहां सतां ॥ अ
रसैः कुसुमैरिवालिनां प्रसरत्पद्मपरागमोदिनां ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ जेम विकस्वरथतां जे कमलतेना स्वाद सुगंधयुक्त रसेमग्नथया एवाजे भ्रमर ते निरस कुसुमउपररतीपामेनही तेम अध्यात्मरूप अमृतरसनाभोगी जेप्राणी तेने वीजाशर्करादिक मधुररसनी अधीरजताउपजतीनथी गृधतापणुं करेनही

विषमायतिभिर्नु किं रसैः स्फुटमापातसुखैर्विकारिभिः ॥
नवमे नवमे रसे मनो यदि मग्नं सततविकारिणि ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जे आगल कडवा विपाकआपे एवामधुररसेशुंसारुं वलीप्रगटपणे राज्य ऋद्धि स्त्रीविषयादिक सुखपाम्याअनेतेपाछंजतांरहे तेथीविक्रियाप्रगटे तोतेवासुखथी शुंसारुं जोसदायअविकारी एवोपूर्णनवमोजेशांतरस तेनेविषे मनमग्नछे तो पूर्वेकह्यां एवारसेशुंफायदोथाय अर्थात्कांइजनही ॥ १२ ॥

मधुरं रसमाप्य निःपते ऊसनातोरसलोन्निनां जलं॥ परि
नाव्य विपाकसाध्वसं विरतानां तु ततोद्दशोर्जलं ॥ १३॥

अर्थ ॥ एकअचरत जुवोके रसना लालचीजेप्राणी तेमधुररसने जोइने अथवा खाधानीवात सांनत्रीने केहेछेके मारामुखमांपाणीन्नरायछे एटलेजीनथीपाणीपडेछे अनेसर्वविरतिजे मुनिराजते मांसादिकमधुररसखाधे आगलमावाविपाकआवशे ते नालपनेविचारी वेचअर्थातेपाणीआणेछे एटलेआंखमांथी आंसुपाडेछे ॥ १३ ॥

इह ये गुणपुष्पपूरिते धृतिपत्नीमुपगुह्य शेरते ॥ विमले सु
विकल्पतल्पके क बहिःस्पर्शरता नवंतु ते ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ इहांचरणकरणादिकजे गुणतेरूपफुलेंपुरीएवी निर्मलजे सुविकल्पके०म नकुशलतारूपशय्या तेहनेविषे संतोषरूपस्त्रीने आलिंगन देइनेसुएछे तेवामुनिराज ते बाह्यस्त्रीना स्पर्शविषेरत्तकेमथाय ॥ १४ ॥

हृदिनिर्वृतिमेव बिभ्रतां न मुदे चंदनलेपनाविधिः ॥
विमललमुपेयुपां सदा सलिलस्नानकलापि निःफला॥१५॥

अर्थ ॥ हृदयनेविषे निवृत्ति सुखनेधरनारा जेप्राणी तेनेबावनाचंदनना लेपनी विधि तेहर्षआपतीनथी तथासदैवनिर्मलनावने धरताजेप्राणी तेनेजलस्नानविधि तेनिष्फलजाणवी ॥ १५ ॥

गणयंति जनुः स्वमर्थवत्सुरतोल्लाससुखेन नोगिनः ॥
मदनाहिविषोग्रमूर्छना मयतुल्यं तु तदेव योगिनः॥१६॥

अर्थ ॥ नोगीप्राणीस्त्रीतायें विलासलंनांगना सुखेकरी जन्मारोसफलमानेछे अ ने योगीश्वरपुरुषतोमदनजेकाम तेनीचेष्टानेसर्पनाविषनी थाकरीमूर्छातुल्यमानेछे १६

तदिमे विषयाः किलैहिका न मुदे केपि विरक्तचेतसां ॥ पर
लोकसुखेपि निःस्पृहाः परमानंदरसालसा अमी ॥ १७ ॥

अर्थ ॥ वैरागीजीवने आलवमांकृपेकसुखआपे एवाजेविषय तेनिश्चयथकीकांइप हर्षकारीनथी केमकेत्यागीप्राणीतोपरलोक जेस्वर्गादिकनासुख तेनेविषेपण निस्पृ हछे तेतोमात्रमोक्षसुखनाअथनिलारीछे ॥ १७ ॥

मदमोहविषादमत्सर ज्वरबाधाविधुराः सुरा अपि ॥ विष
मिश्रितपायसान्नवत् सुखमेतेष्वपि नेति रम्यतां ॥ १८ ॥

अर्थ॥ गर्व अज्ञान विषाद अने मत्सर ते रूप जावनी पीडायें रहित एवा जे देवता तेहना जे विषयादिकसुख ते पण विषमिश्रित अपाकना जोजननी परें मनोहरकारी नथी॥ १७॥

रमणीविरहेण वन्हिना बहुबाष्पानिलदीपितेन यत् ॥ त्रिद
शैर्दिवि दुःखमाप्यते घटते तत्र कथं सुखस्थितिः॥ १ए ॥

अर्थ ॥ केमके स्त्रीनावियोगरूपअग्नी तेअांसुरूप वायरेकरी देदीप्यमानथयो एहवो जे शोकरूपअग्नी प्रगटथयोतेथी स्वर्गनादेवतानेपण पीडाथायछे तेवारेंस्वर्गमां देवतानेपणसुखनीस्थितिछे एहवुं केमकहेवाय ॥ १ए ॥

प्रथमानविमानसंपदां च्यवनस्यापि दिवोविचिंतनात् ॥
हृदयं न हि यद्विदीर्यते द्युसदां तत्कुलिशाणुनिर्मितं॥ २० ॥

अर्थ ॥ जेनेविमान संपदामोटीछे एवादेवतानेपण चवनवेलायेंजे दुःखप्रगटेछे तेदुःखथीदेवतानुं हृदयमात्रफाटतुंनथी तेनुंकारणजे तेमनोहृदयतेवजानापरमाणुयेंकरी उत्पन्नकरेलुंछे तेथीघणोकठणछे माटेजफाटतुंनथी ॥ २० ॥

विषयेषु रतिः शिवार्थिनो न गतिष्वस्ति किलाखिलास्वपि॥
घननंदनचंदनार्थिनो गिरिनूमिष्वपरद्रुमेष्विव ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेमनिविड नंदनवनना चंदनना विलेपनवालाने परवतनीनूमियें अथवा बीजाकोइपणवृक्षेंरतिथातीनथी तेममोक्षार्थिने विषयउपर प्रीतिथतीनथी तेमजमनुष्य तथा स्वर्गप्रमुख समग्रगतिनेविषे पण प्रीतिथतीनथी ॥ २१ ॥

इति शुद्धमतिः स्थिरीकृता ऽपरवैराग्यरसस्ययोगिनः ॥
स्वगुणेषु वितृष्णतावहं परवैराग्यमपि प्रवर्त्तते ॥ २२॥

अर्थ ॥ एमविचारी शुनबुद्धिस्थिरकरीने जेनेबीजावैराग्यनो गुणप्रगटथयोछे तेवा योगीने आत्मगुणनेवधारे एवीतृष्णानुं आगमरूप परमवैराग्यप्रगटथाय ॥ २२ ॥

विपुलर्द्धिपुलाकचारण प्रबलाशीविषमुख्यलब्धयः ॥
न मदाय विरक्तचेतसा मनुषंगोपनताः पलालवत् ॥२३॥

अर्थ ॥ विपुललब्धि पुलाकलब्धि चारणलब्धि महोटीआशीविषलब्धि प्रमुख अनेक लब्धिओजोपणउपजे तोपण तेवैरागीमुनीने अहंकारजणीथायनही मात्रएकमुक्तिसुखविना पलालना पुंजरूपतेमानेछे ॥ २३ ॥

कलितातिशयोपि कोपि नो विबुधानां मदकृद्गुणव्रजः॥ अ
धिकं न विदंत्यमी यतोनिजभावे समुदंचति स्वतः ॥ २४ ॥
अर्थ ॥ पंडितते कोइ मोटाअतिशयादिगुणना समूहेसहितहोय तोपणमदकरे
नही अनेतेयोकांइ अधिकतापणनगणे मात्रपोताना शुद्धस्वभावमांज आनंदपामे
हृदये न शिवेपि लुब्धता सदनुष्ठानमसंगमंगति ॥
पुरुषस्यदशेयमिष्यते सहजानंदतरंगसंगता ॥ २५॥
अर्थ ॥ पोतानाहृदयनेविषे मुक्तिसुखउपरपण लुब्धतानथी एकसद्अनुष्ठानरू
प सहेजानंदना कल्लोलने मळतोअसंगानुष्ठानरूपपुरुषनी जेदशातेने वंछेछे पामेछे
इति यस्य महामतिर्भवे दिह वैराग्यविलासभृन्मनः ॥ उ
पयंति वरीतुमुच्चकै स्तमुदारप्रकृतिं यशःश्रियः ॥ २६ ॥
अर्थ ॥ वैराग्यविलासीपुरुषने एवीबुद्धिउपजेछे नेतेवाउदारप्रकृतिवालाने य
शरूपजेलक्ष्मी तेहर्षधरीने वरवानेइछेछे इतिश्रीवैराग्य विषयाधिकारःसप्तमः॥२६॥

इतिमहोपाध्यायश्रीयशोविजयेनविरचिते अध्यात्मसारप्र
करणेद्वितीयप्रबंधः संपूर्णः पांचमांअधिकारमां२६तथा
छठामां४४अनेसातमांमां२६कुलमळिनेश्लोक॥१०६॥

[illegible] ज्ञो
ममतामत्यनर्थदां ॥ १ ॥ विषयैः किं परित्यक्तै र्जागर्त्ति ममता
यदि ॥ त्यागात्कंचुकमात्रस्य भुजंगोनहि निर्विषः ॥ २ ॥
अर्थ ॥ ममतारहितप्राणीनेज वैराग्यस्थीरपणेरहेछे तेमाटे बुद्धिवंतप्राणीयें अ
नर्थदायकजे ममतातेनेतजवी ॥ १ ॥ जेमसर्पकांचळी काढवाथी विषरहितथतोन
थी तेमजेनेममता जागेछे तेविषयने त्यागकरे तोपण त्यागीथतोनथी ॥ २ ॥
कष्टेन हि गुणग्रामं प्रगुणीकुरुते मुनिः॥ ममता राक्षसी सर्वं
भक्षयत्येकहेलया ॥ ३ ॥ जंतुकांतं पशूकृत्य शागविद्या
पधीनतान् ॥ उपायैर्बहुभिः पत्नी ममता क्रीडयत्यहो ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेगुणसमूहनेमुनिराज घणीकष्टेकरीप्रगटकरेछे तेने ममतारूपराक्षसी एककोलीयेंखाइजायछे ॥ ३ ॥ केवुंआश्चर्यछेके स्त्रियाराज्यनीपेरे ममतारूपस्त्रीते जीवरूपजत्तारने पशुजेमर्कट तेरूपेंकरीने शीघ्रपणेअज्ञानरूप जडीबुटीनावलयकी घणेंप्रकारेनचावीने रमाडेछे ॥ ४ ॥

एकः परभवे याति जायते चैकएव हि॥ ममतोद्रेकतः सर्वं संबंधं कल्पयत्यथ ॥ ५ ॥ व्याप्नोति महतीं भूमिं वटबीजाद्यथा वटः ॥ तथैकममताबीजा त्प्रपंचस्यापि कल्पना ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ एकलुंचेतन परभवेजायछे अनेएकलुंज आभवेंआवेछे पणममताने वश थइने रत्नादेवीनीपरें मिथ्यासगपण न्यातजातवगेरेनी कल्पनाकरेछे ॥ ५ ॥ जेमएक वडना बीजथकी घणीधरतीयें वडव्यापीनेविस्तारपामेछे तेमएकममताना बीजथकी घणाप्रपंचनी कल्पनाउठेछे ॥ ६ ॥

माता पिता मे भ्राता मे भगिनी वल्लभा च मे॥ पुत्राः सुता मे मित्राणि ज्ञातयः संस्तुता श्च मे ॥ ७ ॥ इत्येवं ममताव्याधिं वर्द्धमानं प्रतिक्षणं ॥ जनःशक्नोति नोछेत्तुं विना ज्ञानमहौषधं ॥८॥

अर्थ ॥ मातापिता भाइ बेन स्त्री एसर्वेमाहरांछे पुत्र पुत्री मित्र एपणमाहरांछे न्याति परिचित एमाहरांछे ॥ ७ ॥ एप्रकारेंममतारूपरोग दिवसेंदिवसें वधतोजायछे तेनेमटाडवाने कोइपणज्ञानरूप औषधविना समर्थथातोनथी ॥ ८ ॥

ममत्वेनैव निःशंक मारंभादौ प्रवर्त्तते ॥ कालाकालसमुत्थायी धनलोभेन धावति ॥ए॥ स्वयं येषां च पोषाय खिद्यते ममतावशः ॥ इहामुत्र च ते न स्यु स्त्राणाय शरणाय वा ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेमवेलाकवेलाउठीने विप्रवेमासासोनुं लेवानेगयो तेनीपरेंएक ममतायेंकरीनेनिःशंकपणे आरंभमांप्रवर्त्तेछे ममणसेठपरें धननेलोभेकरीदोडेछे ॥ए॥ परभवमांइहांनुंकुटुंब शरणआधारनथी तोपणकुटुंबनेपोषवानी ममतामां खेदपामेछे॥१०॥

ममत्वेन बहून् लोकान् पुष्णात्येकोर्जितैर्धनैः ॥ सोढा नरकदुःखानां तीव्राणामेक एव तु॥११॥ममतांधोहि यन्नास्ति तत्पश्यति न पश्यति॥जात्यंधस्तु यदस्त्येत भेद इत्यनयोर्महान्॥१२॥

अर्थ ॥ पोतेएकलो धनमेलवीने ममत्वेंकरीने पणलोकने पुष्टिकरेछे पणपरभ वमां आकरांनारकीनांदुःखआवसे तेवारेंएकलोजभोगवसे॥ ११॥जीवतोआंधलोनथी पणममतायेंकरी नास्तिकपदार्थने खरुंकरीमानेछे तेहनेमिथ्यादृष्टि अंधकहियें के मके तेनीचर्मचक्षुछे तोपणतेचक्षुयेंकरी आत्मिकअर्थने नथीदेखतो माटेएनेदेख तो पणआंधलोजजाणवो अनेजेजातिअंधतोछे पणज्ञानीनेसंयोगें आत्मार्थने जुए छे माटेएवेप्रकारना अंधमांपणोअंतरछे ॥ १२ ॥

प्राणाननित्यताध्यानात् प्रेमभूम्ना ततोधिकां॥ प्राणापहां प्रि
यां मत्वा मोदते ममतावशः॥१३॥ कुंदान्यस्थीनि दशनान् मुखं
श्लेष्मगृहं विधुं॥मांसग्रंथी कुचौ कुंभौ हेम्नोवेत्ति ममत्ववान्॥१४॥

अर्थ ॥ रागदिशायेंकरीने प्राणनेअनित्यमाने पणप्राणनी लेनारीजेस्त्री तेनेमम तानें वशपड्यकाजाणीने हर्षपामेछे ॥ १३ ॥ तेस्त्रीनादांतयद्यपि हाडकानाछे तोपणतेने कुंदफुलनी कलीनेजेवाजाणे अनेश्लेष्मजेलाल तेणेकरीनरेलुं मुखहोय तेनेचंद्रतुल्यवखाणेने अनेस्तनमांसनागंठाछे तेनेसोनाना कलशसमान लेखेछे एवा तो सर्वममत्वनेलीधे थायछे ॥ १४ ॥

मनस्यन्यद्वचस्यन्यत् क्रियायामन्यदेव च॥यस्यास्तामपि लो
लाक्षीं साध्वीं वेत्ति ममत्ववान्॥१५॥या रोपयत्यकार्येपि रागि
णां प्राणसंशये॥दुर्वृत्तां स्त्रीं ममत्वांध स्तां मुग्धामेव मन्यते ॥१६॥

अर्थ ॥ वलीतेस्त्रीकेवीछे जेनामनमांकोइकहोय अनेवचनमां वलीबीजो कोइक होय अनेनोगततोवली कोइबीजानी सायेजकरे एवीछे तेनेवैरागीपुरुषकहेछे जेएस्त्री पकी सर्वसगं एटलेलो सर्वथीभुडीगणेछे पणजेप्राणीममतावंतछे तेतोएवीचंचल नेत्रवालीस्त्रीने सतीमानेछे ॥ १५ ॥ स्त्रीपोतानारागी धणीनेमरणथाय एवांकाम नजाये अनेतेपण ममत्वेंआंधलोपुरुष तेकार्यकुटाइ पीडाइनेकरे वली स्त्रीअनिया रणीहोय तोपणतेनेभोलीकरीमाने तेउपरएक दृष्टांतछे लालीकेतीआपडी अयला गेलभरेल आंपीलाव्योलाकडी त्यांनीत्यांलइमेल ॥ १६ ॥

चर्मास्थिमज्जांत्रवसास्थि विण्मूत्रपिठरीष्वपि ॥ वनितासु ममत्वं
य तन्मनस्तं विजृंभितं ॥ १७ ॥ लालयन्बालकं तात त्वयं भूत
मनन्यवान् ॥ वेत्ति च श्लेष्मणा पूर्णां मंगुलीममृतांचितां॥१८॥

अर्थ ॥ जेममत्वनी चेष्टाते धूळजीआ तरखीछे तेनेवशथइरह्यो एवोजेपुरुषते हाडमांसविष्टामूत्रतथा चर्मेथीमळेली ह्यांछळीजेवीस्त्रीउपरप्रेमकरेछे ममत्वथरेछे॥१७ वळीममत्वेंकरीने पोतानापुत्रनेरमाडे तेवखतेतेनेबापबापकरीकहे अने तेबाळकना हाथनीआंगळीयो श्लेष्मथीभरीहोय तेनेअमृतसमानजाणे ॥ १७ ॥

पंकार्द्रमपि निःशंका सुतमंकान्न मुंचति ॥ तदमेध्येपि मेध्यत्वं जा नात्यंबा ममत्वतः ॥ १९ ॥ मातापित्रादिसंबंधो नियतोपि म मत्वतः ॥ दृढभूमि भ्रमवतां नैयत्येनावभासते ॥ २० ॥

अर्थ ॥ मोहथकी बाळकनीमाता पोतानाबाळकने कादवेंभरयोहोय तोपणनिः शंकपणे खोळामांथी मुकतीनथी वळीविष्टायेंअशुचिहोय तोपणतेबाळकने तेनीमा ता मोहनावशथकी तेहनेपवित्रगणेछे ॥ १९ ॥ जेमधरती शाश्वतदृढछे पणधतुरा नाफळनभक्षकरनार प्राणीनेफेरआवेछे त्यारेतेनेधरतीफरतीजणायछे तेममातापि तादिकनो संबंधसंसारमां अनादिनो शाश्वतछे पणमोहवडेमुझाणोप्राणी एमकहेछे जे मातामरीगइ हवेकेमथशे शीरीतेंचालसे ॥ २० ॥

भिन्नाः प्रत्येकमात्मानो विभिन्नाः पुद्गला अपि॥ शून्यसंसर्ग इ त्येवं यः पश्यति स पश्यति॥२१॥ अहंताममते स्वत्व स्वीयत्वभ्र महेतुके ॥ भेदज्ञानात्पलायेते रज्जुज्ञानादिवाहिभिः ॥ २२॥

अर्थ ॥ तेमप्रत्येकेंजीवपण जुदाजुदाछे अनेतेकइगतीथीआव्या अनेकइगतियें जसे तेमजपुद्गलपणजुदाछे तथाशरीरनो संगपणशून्यछे एरीतेजेदेखेछे तेनेदेखतो जाणवो ॥२१॥ जेमदोरडानुं ज्ञानथये सर्पनीभीति नाशपामेछे तेमहुंअनेस्त्रीआदि क माहरीछेएवो ममत्वथायछे तेभ्रमहेतुछे तेभ्रमभेद ज्ञाननजरेंजोवाथी नाशपामे

किमेतदिति जिज्ञासा तत्वाभिज्ञानसंमुखी॥ व्यासंगमेव नोत्थातु दत्ते क ममतास्थितिः ॥ २३ ॥ प्रियार्थिनः प्रियाप्राप्तिं विना क्वा पि यथा रतिः॥न तथा तत्वजिज्ञासो स्तत्वप्राप्तिं विना क्वचित्॥२४॥

अर्थ ॥ एसंसारनोसंबंधशुंछे एमआत्मतत्वने सन्मुख ओळखवानी इच्छायइ ए टलेममता तरतनाशपामे आत्मज्ञानीआगळ ममताकिहांठकाणेरहे॥२३॥ जेमका मीपुरुष स्त्रीनोअर्थीथयो तेस्त्रीपाम्याविना कोइपणठेकाणे रतिनपामे तेमतत्वनो जाण पुरुषपण तत्वपाम्याविना क्यांयेंरतिनपामे ॥ २४ ॥

अत एव हि जिज्ञासा विष्कंभति ममत्वधीः ॥ विचित्राभि
नयाक्रांतः संभ्रांत इव लक्ष्यते ॥२५॥ धृतो योगो न ममता
हृता न समताऽऽदृता॥ न च जिज्ञासितं तत्वं गतं जन्म निर
र्थकम् ॥ २६ ॥ जिज्ञासा च विवेकश्च ममतानाशकावुभौ॥
अतस्ताभ्यां निगृह्णीया देनामध्यात्मवैरिणीं ॥ २७ ॥

अर्थ ॥ एकारणमाटे तत्वजाणवानी इच्छायेंकरी ममतानीबुद्धिजेणेवधावीछे ते प्राणी विचित्रप्रकारनी नय गम भंग रचनायें व्याप्योथको संसारना सर्वपदार्थ नें संभ्रांतजाणे एटलेइंद्रजालवत्जाणे ॥ २५ ॥ जेणेजोगपणधर्योनही अनेममता पण हणीनही तथा समतापणआदरीनही वलीशास्त्रजाणवानी इच्छापणनकरी ते नोनरजन्मनिष्फलगयो एमजाणवुं ॥ २६ ॥ एकजाणवानीइच्छा एनेबीजोविवेक ए बेममताने नाशकरनाराछे तेमाटेएबेहुथकी ममतानो निग्रहकरवो कारणके ममता ते अध्यात्मनी दुश्मनछे ॥ २७ ॥ इतिममता त्यागाधिकार अष्टमसमाप्तः

त्यक्तायां ममतायां च समता प्रथते स्वतः॥ स्फटिके गलितो
पाधौ यथा निर्मलतागुणः॥१॥प्रियाप्रियत्वयोर्यार्थे व्यवहार
स्य कल्पना॥निश्चयात्तद्व्युदासेन स्तैमित्ये समतोच्यते ॥२॥

अर्थ ॥ हवेसमता आववानो अधिकारकहेछे जेमफटकनेविषे उपाधिपणुंटले तेवारें निर्मलतापणुंवधेछे तेमजेवारें ममतानोत्यागथाय तेवारेंपोतानीमेलेज समताविस्तरे ॥ १ ॥ संसारनेविषेपोताने अर्थेकोइकामपडे तेवारें एमजाणेजेआमाह रो वहालोछे अनेआदुश्मनछे पणएसर्व व्यवहारकल्पनाछे निश्चयथकीतो तेव्यवहा रनाशेकरी मध्यस्थपणुंपामे तेवारेंज तेसमतावंत केहेवाय ॥ २ ॥

तेष्वेव द्विषतः पुंस स्तेष्वेवार्थेषु रज्यतः ॥ निश्चयात्किंचि दि
ष्टं वाऽनिष्टं वा नैव विद्यते॥३॥एकस्य विषयो यः स्या त्स्वाभिप्रा
येण पुष्टिदः ॥ अन्यस्य द्वेष्यतामेति स एव मतिभेदतः ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ व्यवहारकल्पनायाजोतो जेनेविषेद्वेषजागे तेनेजविषे पोतानाअर्थेराग नेकरी गलीयाय पणजोनिश्चयथकीविचारें तोएमांकांइ इष्टनथी तेमअनिष्टपणनथी

॥ ३ ॥ एकविषयजे एककार्यछेतेएकजणने पोतानीरुचीयेंपुष्टकारीछे अनेबीजाने तेथीज द्वेषउपजेछे एमतिकल्पनानाभेदछे एमजाणवुं ॥ ४ ॥

विकल्पकल्पितं तस्मा द्वयमेतन्न तात्विकं ॥ विकल्पोपरमे तस्य द्वित्वादिवदुपक्षयः ॥५॥ स्वप्रयोजनसंसिद्धिः स्वायत्ता भासते यदा ॥ बहिरर्थेषु संकल्प समुत्थानं तदा हतं ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ इष्टअनिष्टए विकल्पनीकल्पनाथकीछे एवेनेजरागद्वेषजाणवा पणएमां कांइ तत्वनथी जोमनथीविकल्पजाय तोरागद्वेष एवेदुदूरथाय॥५॥पोताना प्रयोजन नीसिद्धि जेवारेंपोताने स्वाधीनथाय तेवारेंबाह्यरना अर्थसंकल्पनो उगवनाशपामे

लब्धे स्वभावे कंठस्थ स्वर्णन्यायाद्भ्रमक्षये ॥ रागद्वेषानुप स्थाने समता स्यादनाहता॥७॥ जगज्जीवेषु नो भाति द्वैविध्यं कर्मनिर्मितं॥यदा शुद्धनयस्थित्या तदा साम्यमनाहतं ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेमकंठउपररहेलुं सुवर्ण साक्षातदेखायछे तेमस्वभाविकगुण पामेथके विभाविकभ्रमणादूरजाय तेवारें रागद्वेषउभीदूरथाय अनेसमताविशेषेंवधे ॥ ७ ॥ जगतनाजीवनेविषे कर्मनुंविचित्रपणुंछे माटेतेविभावपणुं सारुंनरतुंकेवानीरीतें जेवारेंन भासे तेवारेंशुद्धनयमां रह्योथको प्रबलसमतानेपामे ॥ ८ ॥

स्वगुणेभ्योपि कौटस्थ्या देकत्वाध्यवसायतः ॥ आत्मारामं म नो यस्य तस्य साम्यमनुत्तरं ॥९॥ समतापरिपाके स्या द्विषय ग्रहशून्यता॥यया विशदयोगानां वासीचंदनतुल्यता ॥ १० ॥

अर्थ ॥ पोतानागुणथकी पोतानोआत्मासाक्षीकरीने पोतानाएकशुद्धअध्यवसा यथकी आत्मानेविषे जेनुंमनरमेछे तेनीसमताअनुत्तरकहियें ॥ ९ ॥ एमजेनेपाकीस मताथइ तेनोविषयरूपयरहनुंथयुं एमजेमुनिनेनिर्मल समतायोगप्रगट्यो तेमुनीने वासलेंकरी कोइछेदे अथवा चंदनेकरीकोइपूजेतो तेवेहुतुल्यछे. ॥ १० ॥

किं स्तुमः समतां साधो या स्वार्थप्रगुणीकृता ॥ वैराणि नित्य वैराणा मपि हंत्युपतस्थुषां ॥११॥किं दंभेन तपोभिर्वा यमैश्च नियमैश्च किं ॥ एकैव समता सेव्या तरिः संसारवारिधौ॥१२॥

अर्थ ॥ एवा साधुनीसमतानी शीवखाणकरियें जेणेपोतानाआत्मानी सिद्धि

करवाने समताआदरी एह्वामुनीते समतारूपघरमांरहेतायका आनवनातथा आ गलाकश्कनवतेसर्वे नवनावेरनावने टालीनाखेछे जेमनित्यपासेवसतांयका कुतरा अने मांजरीके० वलामीतेमनावेरपण शमीजायछे तेह्नीपरेजाणवुं ॥ ११ ॥ कपटी वेशधारणकरवायीशुंथाय तथायपणीतपस्यायेंपण शुंथाय वलीमौनधारी थतीतनीते इंद्रियदमनकीधेशुंथाय अने व्रतधारणकरेपणशुंथाय मात्रएकसमताजे संसारु पसमुद्रतरवामां नौकाजेवीछे तेनुंजसेवनकरवुंतेद्विजश्रेष्ठछे ॥ १२ ॥

दूरे स्वर्गसुखं मुक्ति पदवी सा दवीयसी ॥ मनःसंनिहितं दृष्टं स्पष्टं तु समतासुखं ॥ १३ ॥ दृशोः स्मरविषं शुष्येत् क्रोधतापः क्षयं व्रजेत्॥औद्धत्यमलनाशः स्यात् शमतामृतमज्जनात्॥१४॥

अर्थ ॥ देवलोकनासुखतोदूरछे वलीमोक्षपदवीतेतोमोटीछे अनेनवस्थितीनेहा थछे तेवारे मननीपासे प्रगटपणेदेखीयें एवीसमतानुंसुखते सुखोडुंछे ॥ १३ ॥ समतारूपअमृतकुंडमां स्नानकरवानाप्रनावथी आंखयकी कंदर्परूपदर्पनुं विषसोषाइ जायछे क्रोधरूपतापते नाशपामेछे उद्धताइरूपीओमेल तेपणदूरकरे ॥ १४ ॥

जरामरणदावाग्नि ज्वालिते नवकानने ॥ सुखाय समतैके व पीयूषघनवृष्टिवत् ॥ १५॥ आश्रित्य समतामेकां निर्वृता नरतादयः॥नहि कष्ट मनुष्ठानमभूत्तेषां तु किंचन ॥ १६ ॥

अर्थ॥जन्मजरामरणरूप दावानलेकरीबलतुंएवुं संसाररूपवनखंम तेमांसमतांज जेसुखछे तेअमृतनावरसादसरखुंजाणवुं ॥ १५ ॥ चित्रशालीमध्ये एकजसमताने अ वलंबता नरतराजाआदि आठपाटकेवलपामिने सिद्धथया पण तेमने कष्टक्रियाकां इपण करवीपडीनही एह्वीएसमताछे ॥ १६ ॥

अर्गला नरकद्वारे मोक्षमार्गस्य दीपिका ॥ समता गुणरत्ना नां संग्रहे रोहणावनिः॥१७॥मोहाच्छादितनेत्राणा मात्मरूपम पश्यतां ॥ दिव्यांजनशलाकेव समता दोषनाशकृत् ॥१८॥

अर्थ ॥ वलीसमता तेनरकनेबारणे नोगलजेवीछे अनेमोक्षमार्गनीदीवीछे वलीगु णरूपरत्ननो संग्रहकरवाने रोहणाचलपर्वतनी नूमिकासरिखीछे ॥ १७ ॥ जेनानेत्र मोह्वडेढंकायाछे अनेजेपोतानास्वरूपने जोइशकतानथी तेनेदिव्यअंजनआंजवाने समताते शलाकारूपछे अनेअज्ञाननापमलने छेदनारीछे ॥ १८ ॥

क्षणं चेतः समाकृष्य समता यदि सेव्यते ॥ स्यात्तदा सुखम
प्यस्य यद्वक्तुं नैव पार्यते॥१९॥कुमारी न यथा वेत्ति सुखं दयित
भोगजं ॥ न जानाति तथा लोको योगिनां समतासुखं ॥२०॥

अर्थ ॥ जेप्राणी एकक्षणमात्र मननेखेचीने समतानेसेवे तोतेप्राणीने एहवुंसु खप्रगटे जेहनुंमुखेकहेताथकां पारआवेनही ॥१९॥ जेमकुमारिका भरतारनासुखने जाणतीनथी तेम लोकोपणमुनिराजनी समतानासुखने जाणतानथी ॥ २० ॥

नतिस्तुत्यादिकाशंका शरस्तीव्रः स्वमर्म्मभृत् ॥ समतावर्मगुप्ता
नां नार्त्तिकृत्सोपि जायते ॥ २१ ॥ प्रचितान्यपि कर्म्माणि जन्मनां
कोटिकोटिभिः॥तमांसीव प्रभा भानोः क्षिणोति समता क्षणात्॥२२॥

अर्थ ॥ जेणेसमतानुं बखतरपेहेर्युंछे तेनेनमस्कार स्तुति पूजा लाभ परद्रव्यनी इछादिरूप जेपोतानाज मर्मनेलागनारा एहवाजेतीक्ष्णबाणो तेपीडाकरीशकतान थी॥२१॥ जेमसूर्यकिरणप्रकाशथी अंधकारनाशपामेछे तेमकोटीकोटी भवना प्राणी ना निबडसंचितजे पापकर्मछेते समतावडे एकक्षणमांनाशपामेछे ॥ २२ ॥

अन्यलिंगादिसिद्धाना माधारः समतैवहि ॥ रत्नत्रयफलप्राप्ते
र्यया स्याद्भावजैनता ॥ २३ ॥ ज्ञानसाफल्यमेपैव नयस्थानाव
तारिणः ॥ चंदनं वन्हिनेव स्यात् कुग्रहेणतु भस्म तत् ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जेअन्यलिंगीसिद्धथया तेपण द्रव्यथी मोक्षफलसाधताथका रत्नत्रयना फलनीप्राप्तिवडे भावथीजैनपणुंपाम्या माटेतेअन्यलिंगीओनेपण समताते एकआधा रभूतछे॥२३॥ जोनयस्थानके उतारीजोइयेंतो एसमताजज्ञाननुंफलछे नेजेमज्ञा नवडेभवतापशमेछे तेमसमतारूपचंदनेकरी भवतापशमोजायछे पण कुग्रहके० क दाग्रहरूपअज्ञानरूप अग्नीवडेतो समतारूपचंदनबली भस्मथायछे ॥ २४ ॥

चारित्रपुरुषप्राणाः समताख्या गता यदि ॥ जनानुधावनावेश
स्तदा तन्मरणोत्सवः ॥ २५ ॥ संत्यज्य समतामेकां स्याद्यत्कष्ट
मनुष्ठितं ॥ तदीप्सितकरं नैव बीजमुप्तमिवोषरे ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ आसंसारूपगामनेविषे सर्वलोक क्रयविक्रयकरता दोडादोडकरेछे तेसुंछे तेकहेछे केजेवारेंचारित्ररूपीपुरुष मरणपाम्यो तेवारें समतारूपीप्राणपण जतारह्या

पछी तेनामृतकार्यनोउत्सव पायरणास्नानसूतक वगेरे करवानेजाणियेंएलोको दो
मादोडकरेछे एमसमजवुं ॥ २५ ॥ जेमउखरक्षेत्रमां बीजवाव्युं तेकछेफलनही ते
मएकसमतानेछोमी जेप्राणीकष्टक्रियाकरेछे तेनेरूडुंफल आगलमलतुंनथी ॥ २६ ॥

उपायः समतैवेका मुक्तेरन्यः क्रियाभरः॥ तत्तत्पुरुपभेदेन तस्या
एव प्रसिद्धये ॥२७॥ दिङ्मात्रदर्शने शास्त्रव्यापारः स्यान्न
दूरगः ॥ अस्याः स्वानुभवः पारं सामर्थ्याख्योवगाहते ॥२८॥

अर्थ ॥ मुक्तिनोउपायतो एकसमताछे बाकीक्रियाकष्ट सर्वआडंबरछे तेपुरुपने
भेदेंकरी एटलेतपजप सर्वसमतानी प्रसिद्धिछे पुरुषभेदते गृहस्थ अने मुनीने शीखेछे
एटले क्रियाकरवामां गृहस्थ तथामुनीनो व्यवहारजुदोछे पणतेवेउनीक्रिया समतायें
वखाणवी एवीशास्त्रनीआज्ञाछे ॥२७॥ शास्त्रनाउपदेशतो जेमकोइआंगलीवडे मार्ग
बतावे पणपोतेकोइसाथेंआवेनही तेमदिशिमात्रने बतावेएवाछे पण जेशास्त्रसांभलीने
पोतानाअनुभवमांलावी पोतानेसामर्थ्यंकरी पंथअवगाहेतोजभवाटवीनोपारपामे२८

परस्मात् परमेपा य न्निगूढं तत्वमात्मनः ॥
तदध्यात्मप्रसादेन कार्योस्यामेव निर्भरः॥२९॥

अर्थ ॥ परपुद्गलादिक वस्तुतेआत्मानानथी अने देखवाथी आत्मापरमपवि
त्रछे आत्मानेविपेआत्मतत्व गुप्तछे माटेअध्यात्मने प्रसादेकरी समतानेविषे दृपेउ
ल्लासकरवो ॥ २९ ॥ इतिसमताधिकार नवमसमाप्तः ॥

परिशुद्धमनुष्ठानं जायते समतान्वयात् ॥ कतकक्षोदसंक्रां
तेः कलुपं सलिलं यथा ॥ १ ॥ विपं गरोऽननुष्ठानं तद्धेतुर
मृतं परं ॥ गुरुसेवाद्यनुष्ठान मिति पंचविधं जगुः ॥ २ ॥

अर्थ ॥ जेम कतकफलना चूर्णनेयोगें मोहलुंपाणिनिर्मलथायतेम समतानायो
गथी शुद्धअनुष्ठानप्रगटथायछे ॥ १ ॥ विपयानुष्ठान गरलानुष्ठान अन्योनानुष्ठान
तद्धेतुअनुष्ठानने अमृतानुष्ठान एपांचअनुष्ठान गुरुसेवादिक करणीमांकह्यांछे ॥ २ ॥

आहारोपधिपूजर्द्धि प्रभृत्याशंसया कृतं ॥ शीघ्रं सच्चित्तहं
तृत्वा द्विपानुष्ठानमुच्यते ॥ ३ ॥स्थावरं जंगमं चापि तत्क्षणं
भक्षितं विपं ॥ यथा हंति तथेदं सच्चित्तमैहिकभोगतः ॥४॥

अर्थ ॥ मिष्टान्नभोजननी लालचें वस्त्रनीलालचें पूजानीलालचें दोलतनीइछायें जेतप जप कष्टक्रियाकरे तेक्रियापोताना शुभचित्तनीहणनारीछे एनुंनाम विषअनुष्ठानजाणवुं ॥३॥ स्थावरविषते सोमलजाणवुं अनेजंगमविषसर्पादिकनुंजाणवुं एबेउ मांथी एकविषखायाथी तरतमरेछे तेमभोगाभिलाषेंक्रियाकरवी तेशुभचित्तनेहणेछे ४

दिव्यभोगाभिलाषेण कालांतरपरिक्षयात् ॥ स्वादिष्टफल संपूर्त्तं गेरानुष्ठानमुच्यते ॥५॥ यथा कुद्रव्यसंयोगजनितं ग रसंज्ञितं ॥ विषं कालांतरे हंति तथेदमपि तत्वतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेदेवेंद्रादिकना सुखपरभवें पामवानीइछाकरी नेतपस्याकरेतेप्राणीकालांतरें नरकगतिपामे कष्टकरीने अणदीगफलनीवांछाकरे तेनेगरलानुष्ठानकेवुं ॥ ५ ॥ जेमवंगडीचूर्णप्रमुखनिर्बलद्रव्यने संयोगेंप्रगटथतुंविष तेगरलनामाविषकह्यियेंते घणा दिवस कष्टपमाडीमारेछे तेमएपणतत्वथी नर्कफलनीप्राप्तिकरेछे ॥ ६ ॥

निषेधायानयोरेव विचित्रानर्थदायिनोः ॥ सर्वत्रैवानिदान त्वं जिनेंद्रैः प्रतिपादितं ॥ ७ ॥ प्रणिधानाद्यभावेन कर्म्मा नध्यवसायिनः ॥ संमूर्छिमप्रवृत्त्याभ मननुष्टानमुच्यते ॥८॥

अर्थ ॥ अनेकप्रकारें महाअनर्थउपजावे एवाएपूर्वोक्तबेअनुष्ठाननो निषेधकरवाने समस्ततीर्थंकरें नियाणुंवर्जवानुंकह्युंछे ॥ ७॥ प्रणिधानादिकनेअभावें कर्मजेक्रियाते मां अध्यवसायरहितके० शून्यपणेसंमूर्छिमनीपरें शून्यमननी प्रवृत्तियें अथवा देखादेखीयेंजे क्रियाकरे तेअन्योन्यानुष्ठानकह्यियें ॥ ८ ॥

उधसंज्ञात्र सामान्यं ज्ञानरूपाभिबंधनं॥लोकसंज्ञा च नि र्दोषसूत्रमार्गानपेक्षणी॥ ए ॥ न लोकं नापि सूत्रंनो गुरु वाचमपेक्षते॥अनध्यवसितं किंचित्कुरुते चौघसंज्ञया॥१०॥

अर्थ ॥ इहांसामान्यप्रकारें ज्ञानरूपतुंकारणनगवेषे तेउवसंज्ञा प्रवाहरूपकह्यियें तेथी निर्दोषसूत्रनामार्गनीअपेक्षाविना लोकदेखादेखीयें क्रियाकरे अथवा उपयोग शून्यथकाजेक्रियाकरे तेअन्योनानुष्ठानछे॥ए॥एटलेलोकनीरीतविना अने सूत्रनी तथा गुरूनावचननीअपेक्षाविना उपयोगशून्यपणे जेकांइकरवुं तेनुंनाम उवसंज्ञाछे ॥१०॥

शुद्धस्यान्वेषणे तीर्थोच्छेदः स्यादिति वादिनां ॥ लोकाचारादर
श्रद्धा लोकसंज्ञेति गीयते ॥ ११ ॥ शिक्षितादिपदोपेत मप्या
वश्यकमुच्यते॥द्रव्यतोभावनिर्मुक्त मशुद्धस्यतु का कथा॥१२॥

अर्थ ॥ जोअत्यंतशुद्धमार्ग खोलवाजइयेंतो तीर्थनोउच्छेदथाय माटेलोकना आचारउपरआदर श्रद्धाकरवो जेमचालेतेम चालवादीजे एहवावचनबोलता जेलौकिकआचारेंप्रवर्त्ते तेनुंनाम लोकसंज्ञाछे ॥ ११ ॥ अनेशिक्षाग्रहण आसेवन तथापद संपदायें सहित भावशून्यपणेजे आवश्यककरे तेपण द्रव्यआवश्यक कह्युंछे तोजे अशुद्धज करेतेनी तोशीवातकहियें ॥ १२ ॥

तीर्थोच्छेदभिया हंता विशुद्धस्यैव चादरे ॥ सूत्रक्रियाविलोपः
स्या ज्ञतानुगतिकत्वतः॥१३॥धर्म्मोद्यतेन कर्तव्यं कृतं बहुभि
रेव चेत्॥तदा मिथ्यादृशां धर्मो न त्याज्यः स्यात्कदाचन॥१४॥

अर्थ ॥ जेतीर्थनोउच्छेदथाय तेनाभयथी अशुद्धक्रियानेविषे गाडरीयाप्रवाहनी पेरेंगतानुगतिकपणें आदरकरतां कांइपरमार्थ जाणेनही अनेज्ञानक्रियानो नाशकरे॥ १३ ॥ जेधर्मनाअर्थीयइने एमकहेसो केजेघणाजन करेतेआपणपण करवुं तोमिथ्यात्वताधर्मनापण घणासेवनारछे माटेतेपण कोइकालेछंडाशेनही एमठेखुं॥ १४॥

तस्माज्ञतानुगत्या यत् क्रियतेसूत्रवर्जितं ॥ उघतोलोकतो
वा त दननुष्ठानमेव हि॥१५॥अकामनिर्जराकलं कायक्लेशा
दिहोदितं ॥ सकामनिर्जरा तु स्यात् सोपयोगप्रवृत्तितः॥१६॥

अर्थ॥माटेसूत्रनीशैलीरहितपणे गतानुगतिकपणे उघसंज्ञायें अथवा लोकसंज्ञायें जेकरवुं तेनेअन्योन्यानुष्ठानकेवुं ॥ १५ ॥ जेअज्ञानपणे कायकक्लेशकरे तेनेअकामनिर्जराकहेवी अने उपयोगसहित ज्ञानक्रियाकरवी तेनुंनामसकामनिर्जराछे ॥ १६ ॥

सदनुष्ठानरागेण तद्धेतुर्मार्गगामिनां॥एतच्च चरमावर्ते नो
भोगादेर्विना भवेत्॥ १७॥ धर्मयौवनकालोयं भवबालद
शापरा॥ अत्र स्यात्सक्रियारागो न्यत्र चासक्रियादरः॥१८॥

अर्थ ॥ मार्गानुसारीपुरुष शुद्धक्रियानुष्ठाननेरागेकरी जेकरेतें तद्धेतुअनुष्ठानके वाय तेजेवारेंछेलुंपुद्गलपरावर्त्तेरहे तेवारेंजेक्रियाकरे तेअनाभोगेनकरे माटेएअनु

ष्टानपणतेवारेंजहोय ॥ १७ ॥ ठेल्लेपुज्ञ्लपरावर्त्तेजेवारें तद्धेतुअनुष्टानप्रगटे तेवारेंए धर्मनोयौवनकाल प्रगटयो अनेसंसारमांबालदिशाद्दतितेमटिगइ एमजाणवुं एअनु ष्टानेशुद्धक्रियानोरागउपजेठेअनेपूर्वनात्रणअनुष्टानेअशुद्धक्रियानोआदरउपजेठे १ ७

जोगरागाद् यथा यूनो बालक्रीमाऽखिला ह्रिये ॥ धर्म्मयूनस्त
या धर्म्म रागेणासक्रियाह्रिये ॥ १ए ॥ चतुर्थं चरमावर्त्ते तस्मा
द्धर्म्मानुरागतः॥ अनुष्ठानं विनिर्दिष्टं वीजादिकमसंगतं॥२०॥

अर्थ ॥ जेमयुवानपुरुष जोगनोविलासी थायठे नेवालक्रीडाथी लजवायठे ते मधर्मयौवन कालवंतपुरुष धर्मनारागेंकरी शुद्धक्रियाथी लजवायठे ॥ १ए ॥ तेमाटे तेधर्मनाअनुरागथी चरमपुज्ञ्लपरावर्त्तेजवली तद्धेतुनामेंचोथोअनुष्टानकह्युंठे पणवी जादिकजेसमकित तेतो असंगके० अप्राप्तठे ॥ २० ॥

वीजं चेह जनान् दृष्ट्वा शुद्धानुष्ठानकारिणः॥वहुमानप्रशंसा
ज्यां चिकीर्षा शुद्धगोचरा ॥ २१ ॥ तस्याएवानुवंधश्चा कलंकः
कीर्त्यतेंऽकुरः॥तद्धेत्वन्वेषणा चित्रा स्कंधकल्पाच वर्ण्यतां॥ २२॥

अर्थ ॥ इहांसमकेतरूपवीज तो तेवारेंथाय जेवारें शुद्धक्रियाकरतांप्राणीने दे खीने वहुमानप्रशंसाकरे अनेआगमविधिरागेंपोतेपण ज्ञानेशुद्धविधिगोचरहोय तेवा रेंसमकितउपजेठे ॥ २१ ॥ एतद्धेतुअनुष्टाननोअनुवंधजे शुद्धप्रणमनते कलंकरहि तअंकुरकहियें अने तद्धेतुअनुष्टाननी खोलकरवी तेनानाप्रकारनो स्कंधकहियें॥ २२॥

प्रवृत्तिस्तेषु चित्रा च पत्रादिसदृशी मता ॥ पुष्पं च गुरुयो
गादि हेतुसंपत्तिलक्षणं ॥ २३ ॥ जावधर्म्मस्य संपत्ति र्या च
सद्देशनादिना॥फलं तदत्र विज्ञेयं नियमान्मोक्षसाधकं॥२४॥

अर्थ ॥तेमध्येप्रवृत्तवुंतेरूप विचित्रप्रकारनापानडा जाणवांअने सद्गुरुना योगवडे स्वर्गमांसुखसंपदापामवी तेरूपफूलजाणवा॥ २३ ॥जेवारेंगुरुपासें देशनासांजलीने जावधर्मरूप संपदापामे तेफलकहियें तेफलमोक्षसाधनरूपठे एमजाणवुं ॥ २४ ॥

सहजो जावधर्मोहि शुद्धचंदनगंधवत् ॥ एतगर्जमनुष्ठा
न ममृतं संप्रचक्ष्यते॥२५॥ जैनीमाज्ञां पुरस्कृत्य प्रवृत्तं चि
त्तशुद्धितः ॥ संवेगगर्जमत्यंत ममृतं तद्विदोविडुः ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ सहजस्वभाविकजे भावधर्मछे तेतोचंदननी सुगंधसमानछे तेसहितजेअ नुष्ठान क्रियाकरवी तेनुंनाम अमृतानुष्ठानछे ॥ २५ ॥ प्रभुनीआज्ञावडे मनशुद्धियें प्रवृत्ते अनेअत्यंतपणे संवेगगुणेसहितहोय तेनेगणधरादिक अमृतानुष्ठानकहेछे२६

शास्त्रार्थालोचनं सम्यक् प्रणिधानं च कर्म्मणि॥कालाद्यंगा विपर्यासो मृतानुष्ठानलक्षणं॥२७॥ द्वयं हि सदनुष्ठानं त्रयम त्रासदेवच ॥ तत्रापि चरमंश्रेष्टं मोहोग्रविषनाशनात्॥२८॥

अर्थ ॥ जलीरीतेंशास्त्रना अर्थनेविचारें क्रियामध्येवीर्यउल्लासधरे पंचमकालना दोषनगणे अथवाजेकालेजें उचित क्रियाहोयतेक्रियाकरे एलक्षणअमृतानुष्ठानना जाणवा ॥ २७ ॥ एपांचअनुष्ठानमांहेला वेअनुष्ठानतेरुडांछे अनेप्रथमनात्रण अनुष्ठा न ते रुडांनथी तेमांपणसर्वथा श्रेष्टतोअमृतानुष्ठान जाणवुं केमके मोहके० अज्ञान तेनुं थाकरुंजेविषतेएअनुष्टान वडेनाशपामेछे ॥ २८ ॥

आदरः करणे प्रीति रविघ्नसंपदागमः ॥ जिज्ञासा तत्ज्ञसे वा च सदनुष्ठानलक्षणं ॥२९॥ नेदेभिन्नं नवेदिच्छा प्रवृत्ति स्थिरसिद्धिभिः॥चतुर्विधमिदं मोक्ष योजनाद्योगसंज्ञितं॥३०॥

अर्थ ॥ क्रियापेंआदरकरतांरागधरे तथाआगमने अतिमोटीसंपदानुमाने वली जाणवानीइच्छाकरे जाणनोसंगकरे एगुणक्रियानालक्षणछे ॥२९॥ तेनापण चुदाजुदा भेदछे१ इच्छा२प्रवृत्ति३स्थिरता४सिद्धियोग एचारयोगमोक्षनेजोडे माटेयोगकहियें३०

इच्छा तद्वत्कथाप्रीति युक्ता विपरिणामिनी॥ प्रवृत्तिः पालनं सम्यक् सर्वत्रोपशमान्वितं ॥३१॥ सत्क्षयोपशमोत्कर्षाद तिचारादिचिंतया॥रहितं तु स्थिरं सिद्धिः परेषामर्थसाधकं॥३२॥

अर्थ ॥ जेगुरुनोउपदेशसांभली गुरुउपर अनेकथाउपर परमप्रीतिधरे गुणपरणमे तेनेइच्छा इच्छायोगकहियें पछेगुरुनाकह्या प्रमाणेसमतायें सहितव्रतपाले क्रियायें सहितप्रवर्त्ते तेबीजोप्रवृत्तियोगकहियें ॥ ३१ ॥ जेहक्षयोपशमना उत्कर्षथी अति चारनलगाडे अने मनस्थिरपणेप्रवर्त्ते एत्रीजोस्थिरयोगकह्यो अनेनिरतिचारशुद्ध क्रि यामांबीजा प्राणीनेजयनें तेनोपणअर्थसधावे तेचोथो सिद्धियोग जाणवो ॥३२

भेदा इमे विचित्राःस्युः क्षयोपशमभेदतः ॥ श्रद्धाप्रीत्यादियो
गेन भव्यानां मार्गगामिनां॥३३॥अनुकंपा च निर्वेदः संवेगः
प्रशमस्तथा॥एतेषा मनुभावाः स्यु रिछादीनां यथाक्रमं॥३४॥

अर्थ ॥ एइछादिकयोगनाबली विचित्रभेदछेते क्षयोपशमभावना भेदथीछे ते श्रद्धाप्रीतिप्रमुखयोगेंकरीने मुक्तिमार्गपामनार भव्यजीवने होय ॥ ३३ ॥ १ करुणा २ वैराग्य ३ संवेग ४ उपशम एअनुकमे इछादिकनाचारप्रकारछे ॥ ३४ ॥

कायोत्सर्गादिसूत्राणां श्रद्धमेधादिभावतः॥ इछादियोग
साफल्यं देशसर्वव्रतस्पृशां ॥ ३५ ॥ गुडखंडादिमाधुर्यभेद
वत् पुरुषांतरे ॥भेदेपीछादिभावानां दोषोनार्थान्वयादिह॥३६॥

अर्थ ॥ कायोत्सर्गादिक आवश्यकसूत्रनुं श्रद्धापणुंजोभावथीथाय तोश्रावक त घाताधुने इछादिकयोग सफलथाय ॥ ३५ ॥ कोइनेगोलमीगोलागेछेअने कोइनेखां डमीठीलागेछे एरीतेंमीठासनास्वादमां जेमभिन्नताछे तेमजपुरुषोनी प्रकृतिभिन्नभिन्न माटे इछादिकयोगनाजेभाव तेनापणभेदछे तोपणतेमांकांइ दूषणनथी केमके जे मशर्करादिकनोमीठाश जुदोजुदोछे तोपणमिठाशपणानो अर्थएकजछे मिठासगमें तेनीहोयपण तेथी मिठाशपणानो अर्थतरेछे तेमज इछादिकयोगना जोपणभेदछे तोपणतेथकी अर्थजेफल तेएकजमलेछे माटेदूषणनथी एमजाणवुं ॥ ३६ ॥

येषां नेछादिलेशोपि तेषां त्वतत्समर्प्पणे॥ स्फुटोमहामृषावाद इ
त्याचार्याः प्रचक्षते॥३७॥उन्मार्गोत्थापनं बाढ मसमंजसकारणे॥
भावनित्यमिदं तत्वं जनानैर्योगविंशिकां॥३८॥त्रिधा तत्सदनुष्ठान
मादेयं शुद्धचेतसा॥ज्ञात्वा समयस द्भावं लोकसंज्ञां विहाय च॥३९॥

अर्थ॥पणजेने शुद्धअनुष्ठानने विषे इछादियोगनो लेशपणनथी तेवाअयोग्यनरने जेइछादियोगआपे तेनेप्रगटमृषावादनुं पापलागेछे एवुंपूर्वाचार्यकेहछे ॥ ३७ ॥जेअ तिअसमंजस कारणछेतेनेविषे उन्मार्गस्थापनथायछे माटेयोगविंशिका ग्रंथना जाण पुरुषें एतत्वचिंतवीने सद्अनुष्ठानकरवुं एटलेजेमतेमकरियेंतो उन्मार्गनुं स्थापनथइ जाय॥३८॥ माटेशुद्धचेतनायें मनवचनकायायेंकरीने सदनुष्ठानतेववा तिद्धांतना स भावजाणी लोकसंज्ञातजीने शुद्धक्रियाकरवी॥३९॥ इतितदनुष्टानाधिकारदशम ॥

उचितमाचरणं शुभमिच्छतां प्रथमतोमनसः खलु शोधनं ॥
गदवतां ह्यकृते मलशोधने कमुपयोगमुपैतु रसायनं ॥ १ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मनी शुद्धिकरवामाटे प्रथमथीतो उचितपणे शुभआचरणनीइ छाकरवानेमननी शुद्धताकरवी जेमरोगवंतप्राणी मलशोधनकरवाने रेचलीधाविना रसायनखायतो तेथीतेनेकांइगुणथायनही केमकेमलजाय तेवारपछिरसायणखाय तोगुणकरे तेमप्रथममनशुद्धिथइहोय तोजअध्यात्मनी शुद्धीथाय ॥ १ ॥

परजने प्रसभं किमु रज्यते द्विषति वा स्वमनोयदि निर्मलं ॥
विरहिणामरतेर्जगतोरते रपिच काविकृतिर्विमले विधौ॥२॥

अर्थ ॥ हेचेतनजो तारुंमननिर्मलछे तो लोकताहराउपर रागधरसे अथवा द्वेष करसे तेथकीताहरे शुंवगाडथवानोछे जेमचंद्रमानिर्मलछे पणतेनाउदयथी विरही जीवो थयवाचोरलोकोने अरतिउपजेछे अनेजगतनाबीजाजीवोने तेथीआनंदथाय छे पणतेथीचंद्रमाने गुणअथवा अवगुणकांईजयतुंनथी ॥ २ ॥

रुचितमाकलयन्ननुपस्थितं स्वमनसैव हि शोचति मानवः ॥
उपनते स्मयमानमुखः पुनर्भवति तत्र परस्य किमुच्यतां ॥३॥

अर्थ ॥ रुडीवस्तुमनमांचिंतवी मनोरथकीधो अनेतेमनोरथ निपनोनही तेवारें तेप्राणीपोतानामनमां शोकधरेछे अनेजेवारें तेधारेलीवस्तुमलेछे तेवारें खुसीथायछे एहवेशोकनोकरता आत्मानेएकमनजछे तो वीजायेमहारुंशारुंनरसुंकर्युं एमसुंकहेवुं

चरणयोगघटान्प्रविलोठयन् शमरसं सकलं विकिरत्यधः ॥
चपल एष मनःकपिरुच्चकै रसवणिग् विदधातु मुनिस्तु किं ॥४॥

अर्थ ॥ जेमनतेमांकडाजेवुंछे केमकेतेचारित्रना योगरूपघृतनाघडाने उंधावालेछे तथासमतारूपीअमृतरसनायमाने ढोलीनाखेछे एवुंएचपल मनते खरेखरुंवांदरुंछे तेनीआगलमुनिरूप रसवाणीजनुंकरनार वाणीयुंविचारोशुंकरे ॥ ४ ॥

सततकुट्टितसंयमभूतलो त्थितरजोनिकरैः प्रथयंस्तमः ॥
अतिदृढश्च मनस्तुरगोगुणै रपिनियंत्रित एष नतिष्ठति॥ ५ ॥

अर्थ ॥ वलीमुनियेचारित्रेकरी कर्मरूपीधूलने दाबीनाखीहती पणमनरूपीघोडा ये नित्यकुरकुरीने संयमरूपभूमीनोतलियुं उखेड्युं तेथीकलुषतारूप रजथीते

हनासमूहेंकरी अज्ञानरूपअंधकारथयो एवोअतिआकरो एमनरूपवायरोछे तेश्रुतरू पीदोरडेवंधायोछतो तोफानकरेछे पणसमोरहेतोनथी ॥ ५ ॥

जिनवचोघनसारमलिम्लुचः कुसुमसायकपावकदीपकः ॥
अहह कोपि मनःपवनो बली शुभमतिद्रुमसंततिभंगकृत्॥६॥

अर्थ ॥ एककौतुकजुवोके मनरूपीवायुमहाबलवानछे केमके रुडीबुद्धिरूपवृक्षने भांगीनाखेछे तथा जिनवचनरूप बरासनोचोरछे वली कंदर्परूपअग्नीनोदीपावनारछे६

चरणगोपुरभंगपरः स्फुर त्समयबोधतरूनपि पातयन् ॥ भ्रम
ति यद्यतिमत्तमनोगजः क कुशलं शिवराजपथे तदा ॥७॥

अर्थ ॥ वलीमनरूपहाथीछे तेचारित्ररूपनगरना दरवाजाभांगतोथको पसरेछे सिद्धांतनावोधरूपीवृक्षनेपण पाडतोथकोभमेछे एवोमदोन्मत्त मनरूपीहाथी दोमा दोमकरेछे तेवारेंसाधुने मोक्षमार्गेजतां कुशलतातेक्यांथीहोय ॥ ७ ॥

व्रततरून्प्रगुणीकुरुते जनो दहति दुष्टमनोदहनः पुनः ॥
ननु परिश्रम एष विशेषवान् क भविता सुगुणे पवनोदये ॥८॥

अर्थ ॥ जेसाधुछे तेव्रतरूपीवृक्षें फलीवाडीने चेतनज्ञानअमृतरसवडे सींचीने नवपल्लवकरेछे पणदुष्ट मनरूपजेअग्नितेवली वाडीनेबालीनाखेछे तोरुडागुणरूपवा मीमां गुणरूपवायरानेउदयें मुनीनीमेनततेकेमकरीने सफलथाय ॥ ८ ॥

अनिगृहीतमना विदधत्परां न वपुषा वचसा च शुभक्रियां ॥
गुणमुपैति विराधनया नया बत दुरंतभवभ्रममंचति ॥ ९ ॥

अर्थ ॥ एकमननो निग्रहकर्याविना वचनेतथाकायायें जेटलीशुभक्रियाकरे तें उपयोगशून्यतायें अविधियेंकरे अनेतेअविधिनोकरनारो तोअवश्यसूत्रनेविषेछकायनो विराधककह्योछे माटेतेगुणनकरे जेमनशून्ये क्रियाकरनारो तेविराधकछे माटेशून्यक्रि याकरतो विराधकपणे संसारनेविषेघणो भवभमसे ॥ ९ ॥

अनिगृहीतमनाः कुविकल्पतो नरकमृछति तंडुलमत्स्यवत् ॥
इयमभक्षणजा नहि जीर्णता ऽनुपनतार्थविकल्पकदर्थना॥१०॥

अर्थ॥मनवशकियाविनाजे तपजपकरे वलिमनमां कुविकल्पघणाथाय तेथीतेतंडु लमत्स्यनापरें नरकेंपडे एकुविकल्पकरतोथको जो उपवासकरे तपकरेतेथीतेनेमात्र अजीर्णथाय केमकेअणपाम्याअर्थनो विकल्पकरे तेनीकदर्थनाअजीर्णनुंकारणछे

मनसि लोलतरे विपरीततां वचननेत्रकरेंगितगोपना ॥
व्रजति धूर्त्ततया ह्यनया खिलं निविमर्दनपरैर्मुषितं जगत्॥११॥

अर्थ ॥ जोमनचपलछे तोवचनगुप्तिकरेतथानेत्रनेगोपवे इंगितआकारचेष्टाविना कायसगकरे तेसर्वविपरीतजाणवुं तेसर्वधूर्त्ततापणानेपामे अनेएवीरीतेंधूर्त्तपणे कपट क्रियानाकरनारा तेमोटाचोरछे तेजगतनेलुटनाराछे ॥ ११ ॥

मनसएव ततः परिशोधनं नियमतोविदधीत महामतिः ॥
इदमन्नेपजसंवननं मुनेः परपुमर्थरतस्य शिवश्रियः॥१२॥

अर्थ ॥ तेमाटेमननेंनलिरीतें निश्चयथकी शोधनकरे तेजपंडितनेमनोशुद्धिरूपचू र्णछे अनेपरमपुरुषार्थनेविषे राताजेमुनि तेनेमुक्तिस्त्रीने वशकरवानुं औषधछे ॥१२

प्रवचनाब्जविलासरविप्रना प्रशमनीरतरंगतरंगिणी ॥
हृदयशुद्धिरुदीर्णमदज्वर प्रसरनाशविधौ परमौषधं ॥१३॥

अर्थ ॥ सिद्धांतरूपकमलने विकसितकरवाने मनशुद्धिते सूर्यकांतिरूपछे उपश मरूप जलकल्लोलवधारवाने मनशुद्धितेनदीरूपछे वलीपसरतोथको एहवो मदरू पजेताप तेनेटालवाने मनशुद्धितेपरमसुंदर जडीबुटीनुं औषधछे ॥ १३ ॥

अनुन्नवामृतकुंडमनुत्तर व्रतमरालविलासपयोजिनी ॥ स
कलकर्मकलंकविनाशिनी मनसएव हि शुद्धिरुदाहृता॥१४॥

अर्थ ॥ वलीमनशुद्धिते अनुनवनो मोटोअमृतकुंडछे तथाचारित्ररूपहंसने रम वाने कमलनीछे. अनेसर्वकर्मकलंक हरवाने अग्निसमान मनशुद्धीनेकहीछे ॥ १४॥

प्रथमतो व्यवहारनयस्थितो ऽशुन्नविकल्पनिवृत्तिपरो न्नवेत् ॥
शुन्नविकल्पमयव्रतसेवया हरति कंटक एव हि कंटकं ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ प्रथमथी व्यवहारनयेरह्यो एहवोजेपुरुषते अशुन्नविकल्पनी निवृत्तिजे नाशकरवुं तेनेविषे तत्परथइने शुनविकल्पमयजेव्रत तेनीसेवाकरे तेथीअशुन्नपणुं टलीजाय जेमकांटावडे कांटोनीकलीजायछे तेनीपरें ॥ १५ ॥

विषमधीत्य पदानि शनैः शनै र्हरति मंत्रपदावधि मांत्रिकः ॥
न्नवति देशनिवृत्तिरपि स्फुटा गुणकरी प्रथमं मनसस्तथा॥१६॥

अर्थ जेममंत्रवादीपुरुष मंत्रपदसमाप्तीसुधी मंत्रनाशब्द धीमेधीमे मनमांभणे प णसर्पनाविषनेटाले तेमजेदेशथी निवृत्तिकरेतेपणप्रगटपणेप्रथम मननेगुणकारीथाय

स्फुटमसद्विषयव्यवसायतो लगति यत्र मनो ऽधिकसौष्ठवात् ॥
प्रतिकृतिः पदमात्मवदेव वा तदवलंबनमत्र शुभं मतं ॥ १७ ॥

अर्थ॥ जेदेखतोज नवलोअनेभुंडो एहवुंजेविषय तेनाव्यापारथी जेनरनुंचित्तघणी चतुराइथी जेवस्तुनेविषेलागे तेवस्तुआत्मानेसाथें जोडीये तेवारें तेनुंप्रतिबिंबभासे पणते आत्मधर्मनही तोपणअध्यात्मरीतें तेनुंजअवलंबन रुडुंकह्युंछे ॥ १७ ॥

तदनु काचन निश्चयकल्पना विगलितव्यवहारपदावधिः॥
न किमपीति विवेचनसंमुखी भवति सर्वनिवृत्तिसमाधये ॥१८ ॥

अर्थ ॥ पछीकांइक निश्चयकल्पनाथइ अने व्यवहारपदनीमर्यादागलितथयी एगो हुंनथिमेकोई एवीवेचणनेचेतनासन्मुखथयी तेवारें सर्वनिवृत्तिरूपसमाधिथाय॥ १८॥

इह हि सर्वबहिर्विषयच्युतं हृदयमात्मनि केवलमागतं ॥
चरणदर्शनबोधपरंपरा परिचितं प्रसरत्यविकल्पकं ॥१९॥

अर्थ ॥ जेवारें सर्व बाह्यविषयथीहृदयखस्युं तेवारेंपोताना आत्मानेविषे केवलएकज ज्ञान दर्शन चारित्रनाबोधनी परंपराजे आत्मकुटुंबछे तेनोमिलापते निर्विकल्पपणें पसरे ओलखाणथाय एमजाणवुं ॥ १९ ॥

तदिदमन्यदुपैत्यधुनापि नो नियतवस्तुविलास्यपि निश्चयात्॥
क्षणमसंगमुदेतिनिसर्गधी र्हतबहिर्ग्रहमंतरुदात्तता ॥ २० ॥

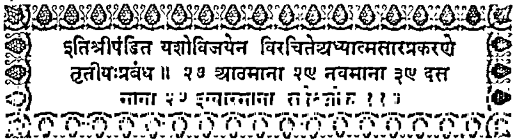
अर्थ ॥ निश्चयनयथकी एआत्माते खरीशुद्धवस्तुनो विलासीछे तेमाटे हमणा अन्यजे रागद्वेषादिभाव तेनेनपामे वलीक्षणमात्रपण जेपरपुद्गलादिकनोसंगनकरे एवी स्वभाविकबुद्धि जेनेथइ तेथीबाह्यभाव हण्यो अनेअंतरंग उत्कृष्टभावने पाम्यो॥ २०॥

कृतकषायजयः सगभीरिम प्रकृतिशांत मुदात्तमुदारधीः ॥
समनुगृह्य मनोनुभवत्यहो गलितमोहतमः परमं महः ॥२१॥

अर्थ ॥ एहवोजेगंभीर स्वभाववालो जेणेकषायनो जयमेलव्योछे अनेजेनीबुद्धि मोटीछे अनेस्वभावें शांतछे तेजोसम्यक्प्रकारें मननोनिग्रहकरे तोतेथीमोहांधकारनेगालीने परम महातेजस्वीपणाने तेप्राणीजरुर अनुभव पामे ॥ २१ ॥

गलितदुष्टविकल्पपरंपरं धृतविशुद्धिमनो भवतीदृशं ॥ धृतिमु
पेत्य ततश्च महामतिः समधिगच्छति शुभ्रयशःश्रियं ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेणे मायाविकल्पनी श्रेणीटालीछे अनेजेणेविशुद्धतानुं ग्रहणकीधुंछे ते मनोशुद्धिनेपामे अनेतेवली संतोषीपणानेपामिने तेपंडितपुरुष उज्वलयशरूपलक्ष्मी अथवा यशशोनानेपामे ॥२१॥ इतिमनशुद्धिनामा एकादशोधिकारः समाप्तः


इतिश्रीपंडित यशोविजयेन विरचितेअध्यात्मसारप्रकरणे तृतीयःप्रबंध ॥ २७ आठमाना २९ नवमाना ३९ दस माना २७ इग्यारमाना [illegible]

मनशुद्धिश्च सम्यक्त्वे सत्येव परमार्थतः ॥ तद्विना मोहगर्भा सा प्रत्यपायानुबंधिनी ॥ १ ॥ सम्यक्त्वसहिता एव शुद्धा दानादिकाः क्रिया. ॥ तासां मोक्षफले प्रोक्ता यदस्य सहकारिता ॥२॥

अर्थ ॥ एपूर्वेमनशुद्धिकही तेजोसमकितगुणहोयतो निश्चे मनशुद्धि केवाय पणसमकितविनाजे मनशुद्धिमाने तेमोहगर्भितहोय एटलेअज्ञान सहितहोय तेतो उलटीकष्टबंधन करनारीछे माटेहवेसमकेतनुं अधिकारकहेछे ॥ १ ॥ दानादिक क्रियापण समकितसहितहोय तोजशुद्धछे तेक्रिया मोक्षफललेवाने सहायकारकछे

कुर्वाणोपि क्रियां ज्ञाति धनभोगांस्त्यजन्नपि॥ दुःखस्पोरोददानोपि नांधोजयति वैरिणं ॥३॥ कुर्वन्निर्वृतिमप्येवं कामभोगांस्त्यजन्नपि ॥ दुःखस्पोरोददानोपि मिथ्यादृष्टिर्न सिध्यति ॥४॥

अर्थ ॥ जेमआंधलो वैरीनेजीतीशकतोनथी तेमक्रियाकरेछे न्यातिधननो भोग तजेछे दुःखसहेछे कायानेकष्टआपेछे पणएसर्व समकितविना व्यर्थजायछे ॥ ३ ॥ जोसंतोषधरे कामभोगछोडे कायानेकष्टआपे पणमिथ्यात्वीथको मुक्तीनेपामेनहीं४॥

कनीनिकेव नेत्रस्य कुसुमस्येव सौरभं ॥ सम्यक्त्वमुच्यते सारः सर्वेषां धर्म्मकर्म्मणां ॥५॥ तत्वश्रद्धानमेतच्च गदितं जिनशासने ॥ सर्वे जीवा न हंतव्या सूत्रे तत्वमितीष्यते ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमआंखमां कीकीसारभूतछे फूलमांसुगंध सारभूतछे तेमसर्वधर्मक्रिया

मां समकिततें सारनूतकह्युंछे ॥ ५ ॥ जिनशासननेविषे जेतत्वनीश्रद्धाकरवीतेह्ने समकितकह्युंछे अनेकोइपणजीवने ह्णवोनही तेनेसूत्रमां तत्वकह्युंछे ॥ ६ ॥

शुद्धोधर्मोयमित्येत द्धर्म्मरुच्यात्मकं स्थितं॥शुद्धानामिदमन्या सां रुचीनामुपलक्षणं ॥ ७ ॥ अथवेदं यथातत्व माज्ञयैव तथा ऽखिलं ॥ नवानामपि तत्वाना मितिश्रद्धोदितार्थतः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेशुद्धधर्मते एधर्मरुचिनामा समकितनेज कहियें अनेएमध्ये उपलक्षणथी वीजीपणशुद्धपदार्थनीरुचिउप्रगटेछे ॥ ७ ॥ अथवाएसमकिततें जेमप्रनुआज्ञारूप तत्वेंप्रगटेछे तेतत्वतोजीवादिकनवप्रकारेंछे तेनीजेश्रद्धा तेसमकितजाणवुं ॥ ८ ॥

इहैव प्रोच्यते शुद्धा ऽहिंसा वा तत्वमित्यतः ॥ सम्यक्त्वं दर्शितं सूत्र प्रामाण्योपगमात्मकं ॥ ९ ॥ शुद्धाऽहिंसोक्तितत्सूत्र प्रामाण्यं तत एव च ॥ अहिंसा शुद्धधीरेव मन्योन्याश्रयभीर्न तु ॥ १० ॥

अर्थ ॥ वलीइहां तत्वते अहिंसारूप शुद्धतत्वछे तेतत्वशुद्धाचारप्रमाणे विचारियें तेवारें आत्माने अनिन्नस्वरूपें समकितदेखाड्युंछे ॥ ९ ॥ अने शुद्धिअहिंसाकही ते सूत्रेंप्रमाणछे एवेहुनीमात्रवचनेजजुदाइछे तेमाटेएकअहिंसा तथावीजीतत्वशुद्धि एवेहुने माहोमाहे मेलवतां दूषणनथी एकस्वरूपेंछे ॥ १० ॥

नैव यस्मादहिंसायां सर्वेषामेकवाक्यता ॥ तच्छुद्धतावबोधश्च संभवादिविचारणात् ॥ ११ ॥ यथा ऽहिंसादयः पंच व्रत धर्म यमादिभिः ॥ पदैः कुशलधर्माद्यैः कथ्यंते स्वस्वदर्शने ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ केमके अहिंसानेविषे सर्वनी एकवाक्यतानथी तोपणविचारीजोता शुद्ध अवबोध जणायछे ॥ ११ ॥ जेमअहिंसादिक पांचव्रततेधर्मछे तेमसर्वेपोतपोताना दर्शननेविषे कुशलथकाधर्मआदेदेइ यमादिकपदेंकरीने व्रतकहेछे ॥ १२ ॥

प्राहुर्भागवतास्तत्र व्रतोपव्रतपंचकान्ः ॥ यमांश्च नियमान् पाशुपतान् धर्मान् दशाभ्यधुः ॥ १३ ॥ अहिंसा सत्यवचन मस्तैन्यं वा प्यकल्पना ॥ ब्रह्मचर्यं तथा क्रोधो ह्यार्जवं शौचमेव च ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ तेमांनागवतवाला एमबोलेछे के पांचव्रतअने पांचउपव्रत मलीनेदसछे एमपाशुपतमतवाला दसप्रकारें धर्मदिशा मानेछे तेयमनियमादिक दस कही

बतावेछे ॥ १३ ॥ दया सत्यवचन अचोरी बाह्यकल्पना अनेब्रह्मचर्य एपांचयम तथाअक्रोध सरलता शौच संतोष गुरुसेवा एपांचनियमजाणवा ॥ १४ ॥

संतोषो गुरुशुश्रूषा इत्येते दश कीर्तिताः॥निगद्यंते यमा सांख्यै रपिव्यासानुसारिभिः ॥ १५ ॥ अहिंसा सत्यमस्तैन्यं ब्रह्मच र्यं तुरीयकं ॥ पंचमो व्यवहारश्चेत्येते पंच यमाः स्मृताः ॥१६॥

अर्थ ॥ एदशधर्मदशाकेवाय हवेवेदव्यासना मतानुसारी सांख्यमतवालापणयम नियमएमकहेछे॥१५॥ दया सत्य अचोरी ब्रह्मचर्य व्यवहार एपांच यमजाणवा१६

अक्रोधो गुरुशुश्रूषा शौचमाहारलाघवं ॥ अप्रमाद श्च पंचेति नियमाः परिकीर्तिताः ॥ १७ ॥ बौद्धैःकुशलधर्माश्च दशेष्यंते य दुच्यते ॥ हिंसास्तेयान्यथाकामं पैशुन्यं परुषानृतं ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ अक्रोध गुरुसेवा शौच अल्पआहार अप्रमाद एपांचनियमकह्यांछे ॥ १७ ॥ अनेबौद्धदर्शनमांजेकुशलछे तेधर्मवाला पणदशप्रकारेंकहेछे तेमकहियेंछेयें हिंसा चोरी कंदर्प चाडी कठोरवचन अने जुठुंबोलवुं ॥ १८ ॥

संभिन्नालापव्यापाद मभिध्यादृग्विपर्ययं ॥ पापकर्मेति दश धा कायवाङ्मनसै स्त्यजेत् ॥१९॥ ब्रह्मादिपदवाच्यानि ता न्याहुर्वैदिकादयः॥अतः सर्वैकवाक्यता धर्मशास्त्रमदोर्थकं ॥२०॥

अर्थ ॥ जेमतेमबकवुं मारवुं अब्रह्मसेववुं दृष्टिविपर्यास एदशप्रकारें पापकर्मते मन वचन अनेकाया एत्रणेयोगेंकरीत्यजवा ॥ १९ ॥ अने वैदिकादिकमतवालाजेछे तेपणब्रह्मादिपद बोलेछे जेसर्वत्रब्रह्मपदछे एथीएसर्वधर्मवालाना एकवचनछे माटे सार्थकपणे सर्वनेधर्मशास्त्रकहियें ॥ २० ॥

कचैतत्संभवोयुक्त इति चिंत्यं महात्मना॥शास्त्रं परीक्षमाणेना व्याकुलेनांतरात्मना ॥ २१ ॥ प्रमाणलक्षणादेस्तु नोपयोगो त्र कश्चन॥तन्निश्चये ऽनवस्थाना दन्यथार्थस्थिते र्यतः॥२२॥

अर्थ ॥ तेमाटेएसर्वदर्शननोसंभवकिहां छेकाणेछे एममोटा पुरुषेंचिंतववुं तेशा स्त्रनी परीक्षावालायें विचारवुं तेवलीअव्याकुलपणे अंतरात्मावडे विचारवुं ॥२१॥ इहांप्रमाणलक्षणादिकथकी कशोएउपयोग कार्यकारीनथी जिहांअन्यथा अर्थउपजे एटलेतेधर्म छुदोथइजाय अनेधर्मतो एकस्वभावरूपछे ॥ २२ ॥

प्रसिद्धानि प्रमाणानि व्यवहारश्च तत्कृतः ॥ प्रमाणलक्षणस्यो
क्तौ ज्ञायते न प्रयोजनं ॥२३॥ तत्रात्मा नित्यएवेति येषामेकांत
दर्शनं ॥ हिंसादयः कथं तेषां कथमप्यात्मनोव्ययात् ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ अनेचारप्रमाणतो प्रसिद्धछे व्यवहारपणतेजकस्योछे माटेप्रमाण तथा लक्षणनीयुक्तीविषे प्रयोजनजणातुंनथी ॥ २३ ॥ तेमध्येवेनयेंकरी आत्मानित्यजछे एवुंएकांतमतवालानुं कहेवुंछे तेनेमतेतोहिंसादिकनथी केमके आत्माअविनाशीछे तेकोइवारेंमरेनही अनेमरेनही तेवारेंहिंसापणशानी ॥ २४ ॥

मनोयोगविशेषस्य ध्वंसोमरणमात्मनः॥ हिंसा तच्चेन्न तत्स्य
सिद्धार्थसमाजतः ॥२५॥ नैति बुद्धिगता दुःखो त्पादरूपेयमौ
चिती ॥ पुंसि भेदाग्रहात्तस्याः परमार्थोऽव्यवस्थितः ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ सघलेमरणे मनोयोगनाशपामेछे तेवारेंलोककहेछेके जीवमुवो पण आत्मातो मरतोनथी माटेतत्वथकी आत्मानीहिंसानथी एअर्थंघटमानछे एमकहेछे ॥ २५ ॥ कोइजाणशेजे आगल दुःखउपजावानोजेबुद्धितेहनेहिंसाकहियें पणएवात योग्यनथी केमकेतमे बुद्धिनेतो पुरुषभेदआग्रहथकी आत्माथीभिन्नमानोछो तेथी पण आत्मानीहिंसानथइ केमकेपरमार्थें बुद्धिने आत्मासाथें व्यवस्थानथी ॥ २६ ॥

न च हिंसापदं नाशपर्यायं कथमप्यहो ॥ जीवस्यैकांतनित्यत्वे
नुभवाबाधकं भवेत् ॥ २७ ॥ शरीरेणापि संबंधो न तद्योगावि
वेचनात्॥विभुत्वेनैव संसारः कल्पितः स्यादसंशयं ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ एकांतेनित्यपणे जीवनोनाशथवानोजे पर्याय तेहिंसापदकहेवाय तेहने अहोइति आश्चर्य अनुभवअबाधकपणेनहोयसुं होयजइतिकाकोक्ति ॥ २७ ॥ नित्यपणे शरीरेंकरीने पण संबंधनथी केमके तेनायोगनी वेहेंचणनथी माटेसंशयरहितपणें ईश्वरवमेकरीनेज ईश्वरकर्त्ता इत्यादिकसंसारकल्पोछे ॥ २८ ॥

आत्मक्रियां विना च स्या न्मितानुग्रहणं कथं ॥ कथं संयोगभेदा
दि कल्पनाचापि युज्यते ॥ २९॥ अदृष्टाद्देहसंयोगः स्यादन्यत
रकर्म्मजः ॥ इत्थं जन्मोपपत्तिश्च न तद्योगविवेचनात् ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ एकआत्मक्रियाविना एटले आत्माना व्यापारविना परिमितपरमाणुनुं

ग्रहण केमथाय वली संयोगवियोगादिकनी कल्पनापणकेमघटे ॥३०॥ एमसांभली ने कोइबोल्योके हरकोइकर्मथी पूर्वसंस्कारदिगविना शरीरनोसंयोगथायछे तेनोउत्तर आपेछे एमजन्मनी उत्पत्तिते जीवनाव्यापारविना वेचणविनाथायनही इतिभावार्थ

कथंचिन्मूर्त्ततामेति विना वपुरसंक्रमात् ॥ व्यापारयोगतश्चैव यत्किंचित्तदिदं जगुः ॥३१॥ निःक्रियोऽसौ ततोहंति हन्यते वा न जातुचित् ॥ किंचित्केनचिदित्येवं न हिंसास्योपपद्यते ॥३२॥

अर्थ॥शरीरनेसंयोगेतो जीव कांइकरूपीपणुंपामेछे जोशरीरनो संक्रमनहोयतो जे कांइछे तेइहांकहेछे ॥ ३१ ॥ जेणेआत्मात्यागीकीधोछे तेएमकहेछेके आत्माक्रिया रहितछे माटेकोइनेहणतोनथी तेमकोइकाळे कोइथीहणातोपणनथी एवुंजेनाचित्त मांछे तेहिंसानहीमाने ॥ ३२ ॥

अनित्यैकांतपक्षेपि हिंसादीनामसंभवः ॥ नाशहेतोरयोगेन क्षणिकत्वस्य साधनात् ॥ ३३ ॥ न च संतानभेदस्य जनकोहिंसकोभवेत् ॥ सांवृतत्वादजन्यत्वात् भावत्वनियतं हि तत् ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ एमएकांते अनित्यवादिनेपक्षे हिंसानथीमनाती केमके तेसर्वपदार्थ क्षणरूपमानेछे माटेआत्माक्षणमां नाशरूपछे तेपोतानीमेळेजमरेछे तेवारेमारनार हेतुकोइनथी माटेहिंसानथीज ॥ ३३ ॥ पुत्रपुत्रीप्रमुखनो कोइबापनथी तेमकोइ मारनारपणनथी एजगत्सर्वक्षणिकभावतोनियमछे अनित्यछे माटेकोइ प्रगटकरना रनथी तेवारेपिताकोनो अनेपुत्रकोनो ॥ ३४ ॥

नरादिःक्षणहेतुश्च सूकरादेर्न हिंसकः॥ सूकरांत्यक्षणेनैव व्यभिचारप्रसंगतः ॥ ३५ ॥ अनंतरक्षणोत्पादे बुधलुब्धकयोस्तुला॥ नैवं तद्विरतिः कापि ततः शास्त्राद्यसंगतिः॥ ३६॥

अर्थ ॥ मनुष्यक्षणमात्रछे अनेपछेसुअरनामरणने अंतकालनाक्षणमां तेमनुष्यनथी माटेसूअरने मारनारकोणछे एहवाबोलनारनेपणप्रसंगथी व्यभिचारआवे छे ॥३५॥ तथासूअरनेमार्युं अनेमरणनेबीजेसमये ज्ञानीतथाआहेडी एवेसरिखाछे सूअरमरणपाम्युं तेएवेजणेजाण्युं माटेहवे एवेमांथीकोइने मारवानीमतिनथी ते माटे मारनारतथामरनार सर्वनीक्षणेक्षणे उत्पति तथा मरणछेपण कोइक्षणे कांइ विरतिनथी एमकहेछे एमतवाळाना शास्त्रपणजुठांछे ॥ ३६ ॥

घटतेन विनाऽहिंसां सत्यादीन्यपि तत्ततः॥एतस्यावृतिभूतानि
तानि च भगवान् जगौ ॥३७॥ मौनींडे च प्रवचने युज्यते सर्वमे
व हि ॥ नित्यानित्ये स्फुटं देहा भिन्नाभिन्ने तथात्मनि ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ केमकेअहिंसाविना सत्यादिकधर्मपण घटेनहीं अनेसत्यादिक धर्मजेछे ते जीवदयारूपक्षेत्रनी वाडीछे एवुंकेवलीकहेछे ॥ ३७ ॥ जिनशासननेविषे तोएसर्वघट मानछे शरीरथी प्रगटपणेनित्यछे वलीअनित्यपणछे तेमज भिन्नाभिन्नपणुंछे तथा एकपणुंछे अनेअनेकपणुंपणछे वलीआत्मानेविषेपण तेमजकहेवुं ॥ ३८ ॥

आत्मा द्रव्यार्थतोनित्यः पर्यायार्थोविनश्वरः॥ हिनस्तिहन्यते
तत्त त्फलान्यप्यधिगच्छति ॥ ३९ ॥ इहचानुभवः साक्षी व्यावृ
त्यान्वयगोचरः ॥ एकांतपक्षपातिन्यो युक्तयस्तु मिथोहताः॥४०॥

अर्थ ॥ आत्माद्रव्यार्थिकनयेंनित्यछे अनेपर्यायार्थिकनयें अनित्यछे एजीवकोइ नेहणेछे अथवा कोइएजीवनेहणेछे तेनाफलपरभवमां आत्माभोगवेछे ॥ ३९ ॥ ए जैननेशीलें अन्वय अनेव्यतिरेक एबेगुणेसहित एवोजेअनुभव तेसाक्षीकरतांथका एकांतमतवालानी युक्तीओ माहोमांहे हणाइजायछे ॥ ४० ॥

पीडाकर्तृत्वतोदेह व्यापत्त्या दुष्टभावतः॥ त्रिधा हिंसागमे प्रो
क्ता न हीडमपहेतुका ॥ ४१ ॥ हंतुर्जायति को दोषो हिंसनी
यस्य कर्म्मणि ॥ प्रसक्तिस्तदभावे चा न्यत्रापीति मुधावचः ॥४२॥

अर्थ ॥ पीडाकरवाथी देहपीडाथी दुष्टभावथी एवात्रणप्रकारनीहिंसा सिद्धांत मांकहीछे तेकांइजुठीनथी ॥ ४१ ॥ जेप्राणीनु स्वकृतकर्मनो उदयथयेथके मृत्युथ युं तोतेनाहणनारने शोदोषछे एटलेहिंसानथइ अनेजेहणाणो तेनाकर्मउदयआव्या तेतेणेभोगव्यातो तेमांशोहिंसाछे केमकेजेजीवने मरणनोउदयहालनथी तेनेमारियें तोपण तेकांइमरतोनथी माटेहिंसाकोइनीथतीनथी एवुंजेमानेछे तेमिथ्याछे ॥४२॥

हिंस्यकर्म्मविपाकेस्य दुष्टाशयनिमित्तता॥ हिंसकत्वं न तेने
दंवैद्यस्य स्याद्रिपोरिव ॥४३॥ इत्थं सदुपदेशादे स्तन्निवृत्ति
रपि स्फुटा॥सोपक्रमस्य पापस्य नाशात्स्वाशयवृद्धितः॥४४॥

अर्थ ॥ केमकेजेप्राणीनामनमां दुष्टआशयनोनिमित्तछे तेनेएहिंताछे अनेहिंसा

नाकर्मविपाकपण तेनेजछे जोवेद्यनेर्यापथकरतां कुटचित्तहोय तोतेर्यापथशत्रुसरखुं थाय अनेतेवेद्यनेपणहिंसकपणुंलागे अनेजोवेद्यनुंमननिर्मलछे तोवेद्यनेहिंसकपणुं नलागे ॥ ४३ ॥ एवासद्गुरुना उपदेशसांजलवाथी हिंसानीनिवृत्तिप्रगटपणेथाय निर्मलचित्तना आशयनीवृद्धिथकी सोपक्रमीजे निकाचितबांधेलापाप तेनोनाशथायछे.

अपवर्गतरोर्बीजं मुख्या हिंसेयमुच्यते ॥ सत्यादीनि व्रतान्यत्र जयंते पल्लवा नवाः ॥४५॥ अहिंसासंजवश्चेत्थं दृश्यतेऽत्रैव शासने ॥ अनुबंधादिसंशुद्धि रप्यत्रैवास्ति वास्तवी ॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ जेअहिंसाते मोक्षरूपवृक्षनुंबीजकह्युं अनेसत्यादिकजेव्रतछे तेमोक्षरूपवृक्षना नवपल्लवअंकुराछे ॥४५॥तेतोआजिनशासनमां जीवदयानो अहिंसकपणानुं संजवजोवामांआवेछे अनेवलीअनुबंधहिंसा तथा हेतुहिंसा अनेस्वरूपहिंसा एत्रणजातनीजे हिंसातेनीशुद्धि तेपणआजिनशासनमांज वसीरहीछे ॥ ४६ ॥

हिंसाया ज्ञानयोगेन सम्यग्दृष्टेर्महात्मनः ॥ तप्तलोहपदन्यास तुल्याया नानुबंधनं ॥४७॥ सताम्यस्याश्च कस्याश्चिद् यतना जक्तिशालिनां ॥ अनुबंधोह्यहिंसाया जिनपूजादिकर्म्मणि ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ मोटाप्राणीजे सम्यक्दृष्टितेने ज्ञानयोगेंकरीवरतेछे पणअविरतें हिंसा लागेछे तेकेवीछे जेमतपाव्युंएवुंजेलोढुं तेउपरपगमुकीकोइचाले पणबलवानेजयें निशंकपणें पगठरावेनही तेमसमकेतिपण निशंकपणेहिंसानकरे अनेतेमाटेज नरकनोबंधपणकरेनही ॥ ४७ ॥ तेमरुडाजयणावंत जीवनेज्ञानयोगेंकरी जिनपूजाकरता अहिंसाजेदया तेनोअनुबंधछे केमकेएपूजातेपरंपरायें मुक्तिफलनी आपनारीछे

हिंसानुबंधिनी हिंसा मिथ्यादृष्टेस्तु दुर्मतेः॥ अज्ञानशक्तियोगेन तस्याहिंसापि तादृशी॥ ४९॥ येन स्यान्निन्हवादीनां दिविषद्दुर्गतिः क्रमात् ॥ हिंसैव महती तिर्यङ् नरकादिजवांतरे॥५०॥

अर्थ ॥ पणनरकगतिनोबंधपडे एवीजेहिंसाते मिथ्यात्वीदुर्मतिनेहोय अज्ञाननेयोगेंकरी तेमिथ्यात्वीजो जीवदयापाले तोतेपण हिंसाजेवीजजाणवी ॥ ४९ ॥ जे कारणमाटे निन्हवादिक जम्मालीप्रमुखेपण जीवदयापालीछे तोपणअज्ञानोदयनायोगें स्वर्गेमांपण दुर्गतिपाम्याछे अनेठेमरूपछे माटेनिन्हवनीजे अहिंसाते परमार्थे हिंसानाजफलआपे केमके जवांतरें तेमने तिर्यंचनरकादिकनीगति प्रगटेछे॥५०॥

साधूनामप्रमत्तानां सा चाऽहिंसानुबंधिनी ॥ हिंसानुबंधवि
च्छेदा द्गुणोत्कर्षो यतस्ततः॥५१॥ मुग्धानामियमज्ञत्वात् सानुबं
धा न कर्हिचित्॥ज्ञानोद्रेकाप्रमादाभ्या मस्या यदनुबंधनं॥५२॥

अर्थ ॥ अप्रमत्तसाधु जेसातमांगुणगणावाला तेनेजेहिंसाछे तेअहिंसानुबंधीछे केमके हिंसानोअनुबंध विच्छेदथयाथकी जिहांतिहांथकी गुणनोउत्कर्षथायछे ५१ पण एअहिंसाते अज्ञानपणे भोलाप्राणीने कदापिकालें सुखदायकनथी एटलेएअनु बंधसहितनथाय पणअप्रमत्त साधुने ज्ञानसहितजेअहिंसा अथवाहिंसाते अनुबंधे अहिंसाजकहियें केमके एपरंपरायें मोक्षसुखनुंकारणछे माटे ॥ ५२ ॥

एकस्यामपि हिंसाया मुक्तं सुमहदंतरं ॥ भाववीर्यादिवैचित्र्या
दहिंसायां च तत्तथा ॥५३॥ सद्यः कालांतरे चैत विपाकेना
पि भिन्नता ॥ प्रतिपक्षांतरालेन तथा शक्तिनियोगतः ॥ ५४ ॥

अर्थ ॥ एकलीहिंसानेविषें पण जेममोटोअंतर देखाड्योछे तेमभाववीर्यना वैचित्रपणाथकी अहिंसानेविषेपण तेमजजाणवुं ॥५३॥ प्रतिपक्षपणे अंतरालेंकरी अथवातेशक्तिनेयोगेंकरी तत्काल अथवाकालांतरे एविपाकेकरीने पणभिन्नताछे ५४

हिंसाप्युत्तरकालीन विशिष्टगुणसंक्रमात् ॥ त्यक्ताविध्यनुबंध
त्वा दहिंसैवातिभक्तितः॥५५॥ इत्थम्भंगशतोपेता ऽहिंसा य
त्रोपवर्ण्यते॥ सर्वांशपरिशुद्धं त त्प्रमाणं जिनशासनं ॥५६॥

अर्थ ॥ जेहिंसाछे तेपणजो उत्तरकालें विशिष्टगुणप्रगटे तथाअविधिनो अनुबंध तज्याथी एहेतुमाटे अत्यंतभक्तियकी प्राणीने अहिंसारूपज फलदायकथायछे ॥ ५५ ॥ एरीतेंसेकडागमे भंगजालसहित जिहांअहिंसानेवर्णवियें तेतोसर्वांशें शुद्ध एवुंजेजिनशासन तेमांजप्रमाणछे ॥ ५६ ॥

अर्थोयमपरोनर्थ इति निर्धारणं हृदि॥ आस्तिक्यं परमं चिन्हं
सम्यक्त्वस्य जगुर्जिनाः॥५७॥ शमसंवेगनिर्वेदा नुकंपाभिः
परिष्कृतं ॥ दधतामेतदच्छिन्नं सम्यक्त्वं स्थिरतां व्रजेत् ॥५८॥

अर्थ ॥ एहिंसा तेजअर्थछे अनेबीजासर्वअनर्थछे एप्रकारेंजेना मनमांधारणाछे एहवी परमआस्तिाप्रगटे तेआस्ताश्रद्धारूप समकितनुंचिन्हछे एवुंप्रभुयें कह्युंछे ५७

समता संवेग निर्वेद्य अनुकंपा एलक्षणो रुमीरीतें अविछिन्नपणे धरतांथकां सम कितजेछे तेस्थिरतापणानेपामे ॥ ५७ ॥ इतिसम्यक्ताधिकारः द्वादशसमाप्तः

मिथ्यात्वत्यागतः शुद्धं सम्यक्त्वं जायतेंऽगिनां॥अतस्तत्परिहारा य यतितव्यं महात्मना ॥१॥ नास्ति नित्यो न कर्त्ता च न भोक्ता त्मा न निर्वृतः॥तदुपायश्च नेत्याहु मिथ्यात्वस्य पदानि षट् ॥ २॥

अर्थ ॥ तेजेवारें मिथ्यातनोनाशथाय तेवारेंजीवने समकेतप्रगटे माटे मिथ्यात टालवानो रुडाप्राणीयें उद्यमकरवो ॥ १ ॥ आत्मानथी आत्मानित्यनथी कर्त्तानथी भोक्तानथी सिद्धनथी तेसिद्धताप्रगटकरवानो उपायनथी एछपदमिथ्यातनाछे ॥२॥

एतैर्यस्माद्भवेछुद्ध व्यवहारविलंघनं॥ अयमेव च मिथ्यात्व ध्वंसी सदुपदेशतः॥ ३ ॥ नास्तित्वादिग्रहैर्नैवो पदेशोनोप देशकः॥ ततः कस्योपकारः स्या त्संदेहादिव्युदासतः॥४॥

अर्थ ॥ एपदवडेकरी पूर्वाचार्यनाव्यवहार उलंघायछे लोपायछे एजमिथ्यात्वछे अनेतेसद्गुरुना उपदेशथकी नाशपामेछे ॥३॥ एछपदरूपीकुग्रहेनउथायका जेउपदे शआपे तेउपदेशनकहियें तेथीकोनेउपकारनथाय मिथ्यात्वीनाउपदेशेंसंदेहटलेनही

येषां निश्चयएवेष्टो व्यवहारस्तु संगतः॥ विप्राणां म्लेछभा षेव स्वार्थमात्रोपदेशनात् ॥५॥ यथा केवलमात्म नं जना नः श्रुतकेवली॥श्रुतेन निश्चयात्सर्वं श्रुतं च व्यवहारतः॥६॥

अर्थ ॥ जेमब्राह्मणने म्लेछनाभाषाबोलवानीमनाइछे माटेपोतानास्वार्थजेटलीज बोले तेमजजेहने एकनिश्चयनयजइष्टछे तेहनेव्यवहारनयतो ब्राह्मणनेम्लेछनीभाषा नाउपदेशनीपरें स्वार्थवास्ते संगतमात्रछे॥ ५ ॥ जेमश्रुतकेवली व्यवहारथीश्रुतजाणे अनेसर्वेनिश्चयनयवडे श्रुतज्ञानेकरीश्रुतकेवली केवलआत्मानेजाणे ॥ ६ ॥

निश्चयार्थोत्र नो साक्षा द्वक्तुं केनापि पार्यते॥ व्यवहारो गु णद्वारा तदर्थावगमक्षमः॥७॥ प्राधान्यं व्यवहारेचे त्तत्तेषां निश्चये कथं॥ परार्थस्वार्थतेतुल्ये शब्दज्ञानात्मनोर्द्वयोः॥८॥

अर्थ ॥ इहांनिश्चयअर्थ प्रगटपणेकेवाने कोइसमर्थनथी देखीतोगुणप्रगटे तेक

पडारूं निश्चयअर्थनीप्राप्ति व्यवहारनयकेहेवाय ॥ ७ ॥ जेनेकेवलज्ञाननुंकारणने
निश्चे प्रधानपणुंछे तेनेनिश्चयनयकेहेवाय वलीक्रियानयअने ज्ञाननयपणप्राणी
ने लक्ष्यवंतपणुंअर्थ वेगलुंछे जेथीक्रियानयव्यवहारछे अनेज्ञाननेनिश्चयछे ॥ ८ ॥

प्राधान्याद्व्यवहारस्य तत्तद्भेदकारिणां ॥ मिथ्यात्वरूपतैते
षां पदानां परिकीर्तिता ॥ ९ ॥ नास्त्येवात्मेति चार्वाकः प्र
त्यक्षानुपलंभतः ॥ अहंतान्यपदेशस्य शरीरेणोपपत्तितः ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेव्यवहारनाप्रधानपणाथकी नयनोभेदथाय तेवाप्राणीने मिथ्यातरूप
पदमां मिथ्यात्वनावपणो एमजाणवुं ॥ ९ ॥ चार्वाकदर्शनवालाकहेछे जेआत्मा
नथी केमकेजो आत्माहोयतो प्रत्यक्षजणाय तेतोकांइजणातोनथी अने अहंकार
एटलेआत्मार्थकुंकरूंछुंतेनोजे अपदेशछे तेतोशरीरे करीनेजणायछे ॥ १० ॥

मद्यांगेभ्योमद व्यक्तिः प्रत्येकमसती यथा॥ मिलितेभ्योहि भूतेभ्यो
ज्ञानव्यक्तिस्तथा मता ॥ ११ ॥ राजरंकादि वैचित्र्य मपि नात्मबला
दितं ॥ स्वाभाविकस्य भेदस्य ग्रावादिष्वपि दर्शनात् ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेममहुडातथापाणीप्रमुख मदिरानाअंगछे पणतेप्रत्येकमां मदिरानीश
क्तिनथी जेवारेंभेगामलेछे तेवारेंजशक्तिप्रगटे तेमपंचभूत भेगांमलेतेवारें ज्ञानशक्तिप्रग
टथायछे ॥ ११ ॥ जेमएकशख्सथवा एककांकरोएसर्वे पथरानाभेदछे तेमथा
राजाछे थारांकछे एवुंविचित्रपणुंतेआत्मानथी एतोसनावेभेदपडयाछे ॥ १२ ॥

वाक्यैर्न गम्यते चात्मा परस्परविरोधिभिः ॥ दृष्टवान्न च कोप्ये
नं प्रमाणं यद्वचोभवेत् ॥ १३ ॥ आत्मानं परलोकं च क्रियां च वि
विधां वदन् ॥ भोगेभ्योभ्रंशयत्युच्चै लोकचित्तं प्रतारकः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ वलीसर्वे मतवालाना माहोमाहें विरोधीवचनहोवाथी आत्मानीप्रती
तिनथीथती केमके कोइयेंआत्मादीठोनथी के जेथकी एकेनुंवचन प्रमाणथाय १३
आत्माने परलोकने अर्थें एमविचित्रप्रकारनीक्रियाकरावेछे एहवुंकहेनारा वीचाराओ
कने सुखभोगथीभ्रष्टकरेछे एम जेलोकोनाचित्तने फेरवेछे तेधूर्त्तगुरुजाणवा ॥ १४ ॥

त्याज्यास्तन्नैहिकाः कामाः कार्या नानागतस्पृहा ॥ भस्मीभूतेषु
भूतेषु वृथा प्रत्यागतिस्पृहा ॥ १५ ॥ तदेतद्दर्शनं मिथ्या जीवप्र
त्यक्ष एव यत् ॥ गुणानां संशयादीनां प्रत्यक्षाणामभेदतः ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ माटेआनवमां पाम्याजेसुखजोग तेतजवानही अने अवतानवमां सुख पामसुं एवीवांगनकरवी केमके पंचनूततुंपुतळुं वलीनेराखयशे एटलेपरजवनी इत्रा सर्वफोगटजशे ॥ १५ ॥ एरीतेंचार्वाक दर्शननुमतकह्युं पणएदर्शनखोटुंछे केमके प्रत्यक्षपणे संशयादिकजेगुण तेजीवनेछे माटेजीवप्रत्यक्ष अनेदपणेछे ॥ १६ ॥

नचाहंप्रत्ययादीनां शरीरस्यैव धर्म्मता ॥ नेत्रादिग्राह्यतापत्ते र्नियतं गौरवादिवत् ॥ १७ ॥ शरीरस्यैव चात्मत्वे नानुजूतस्मृति र्भवेत् ॥ बालत्वादिदशानेदा त्तस्यैकस्यानवस्थितेः ॥ १८ ॥

अर्थ॥जेमकोइआदरआपे तेपणआत्माछे तेमअहंकारादिकप्रत्ययजेछे तेआत्माछे तेकांइशरीरनोधर्मनथी अहंकारादिनेत्रमांजणायछे तेदेखवारूपछे ॥१७॥ शरीरनेजो आत्माकहियें तोआत्माजडथयो तेवारेंपूर्वेनी अनुनवेलीवात आत्माविनाकोनेसां नरेछे. शरीरनेतोसांजरतुंनथी अने बाल यौवनतथावृद्धइत्यादिकजे शरीरनीदशाना नेदछे. तेथीआत्मापण बलत्वादि दशावंतथायछे पणनिश्चेनथयो आत्मानीएकदिशा छे अने शरीरनीअवस्था एकनथी केमके अनवस्थितदोषनो प्रसंगछे माटे ॥ १८ ॥

नात्मांगं विगमेप्यस्य तल्लब्धानुस्मृतिर्यतः ॥ व्यये गृहगवाक्ष स्य तल्लब्धार्थाधिगंतृवत् ॥ १९ ॥ न दोषकारणात्कार्ये वासना संक्रमाच्च न ॥ भ्रूणस्य स्मरणापत्ते रंबानुजवसंक्रमात् ॥ २० ॥

अर्थ॥शरीरनोतोनाशथाय अनेआत्मापरजवमांजाय पणजातिस्मरणेकरी पूर्वज न्मादिकनुं स्मरणछे जेमघरनागोखमांबेशीने नगरनापदार्थदीठा अने पछीतेगोखप डीगयो तोपणजोयानुं स्मरणजतुंनथी॥ १९ ॥ कारणथकी बाल्यावस्थानी वासना ना संक्रमणथकी जेकार्यआत्माकरेछे तेकार्यनी जोस्मृतिनरही तोपण तेनेदूषण नथी जेममातायें पोतानाअनुजवना संक्रमणथकी बालकनेबोलवुं चालवुं सीखव्युं होय तेनीबालकने स्मृतिनहोय तेहनीपरेंजाणवुं ॥ २० ॥

नोपादानादुपादेय वासना स्थैर्यदर्शने ॥ करादेरतथात्वेन यो ग्यत्वात्तेरणुस्थितो ॥२१ ॥ मद्यांगेज्यो मदव्यक्ति रपिनो मेल कंविना॥ ज्ञानव्यक्तिस्तथा जाव्याऽन्यथा सा सर्वदा जवेत् ॥२२॥

अर्थ ॥ उपादाननायोगेंकरी स्थिरतानादर्शननेविषे उपादानवासनानहोय जेमहस्तादिकजेछेते उपादेयछे अने तेनुंउपादानते हस्तादिकनुं परमाणुछे माटे

परमाणुरूप सूक्ष्मस्थितिमां स्थिरदर्शन नसंभवे ॥ २१ ॥ जेममदिरानाअर्थंगथकी मदशक्तिप्रगटपणेनथी जेगेमभवेथायछे अथवापीधापछे आत्मानेसंयोगेंथायछे तेम ज्ञाननीप्रगटतापण आत्मानेयोगेंथायछे नहीतोसदाय एकजुं ज्ञानरह्युंजोइयें ॥ २२ ॥

राजरंकादिवैचित्र्य मप्यात्मकृतकर्मजं ॥ सुखदुःखादिसंवित्ति
विशेषो नान्यथा भवेत् ॥ २३ ॥ आगमाद्गम्यते चात्मा दृष्टेष्टा
र्थाविरोधिनः ॥ तद्वक्ता सर्वविच्चैनं दृष्टवान्वीतकल्मषः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ आराजाछे अने आरांकछे एवोजीवनेविचित्रभावउपजेछे एवीलोकवा णीछे तेसर्वपोताना कीधेलाकर्मथकी जाणवी सुखदुःखसर्वकर्मथकी प्रगटथायछे अन्यथावीजुं विशेषकारणकांइनथी ॥ २३ ॥ जेदृष्टियेंदीठुं तेप्रत्यक्षप्रमाण अनेइष्टा र्थतेअनुमानप्रमाण तथा उपमाप्रमाण ते अनुमानमांभलेछे माटेएत्रणप्रमाणने अ विरोधिएहवुंजे आगमप्रमाण तेणेकरी आत्मानेजाण्योजायछे तेआगमतो जेनास र्वपापगयांछे एहवासर्वज्ञदेवें देखाड्युंछे ॥ २४ ॥

अभ्रांतानां च विफला नामुष्मिक्यः प्रवृत्तयः॥ परवंधनहेतोः कः
स्वात्मानमवसादयेत् ॥२५॥ सिद्धिः स्याएवादिवद्व्यक्ता संशयादे
व चात्मनः ॥ असौ खरविषाणादौ वस्तार्थविपयः पुनः ॥२६॥

अर्थ ॥ अभ्रांतजे ज्ञानीपुरुष तेनेहमणानीप्रवृत्तिते निःफलतानहोय माटे पर बंधननाहेतुयेंकरी पोतानीआत्माने कोणखेदमांनाखे ॥ २५ ॥ आत्मानीप्रगटपणे संशयथीसिद्धिछे एवीवाततोवगडामां जाडनाठुंगजेवी देखाय पणसंशयकरताथका जेखरुंवृक्षते नजणाय तेमज संशयवडे आत्मानेनजाणियें अनेजेविपरीतअर्थे आ त्माने माने तेनेगधडाने शिंगडामाननारजेवुंसमजवो ॥ २६ ॥

अजीवइति शब्दस्य जीवसत्तानियंत्रिता ॥ असतोन निपेधोय
त्संयोगादिनिपेधनात् ॥ २७॥ संयोगः समवायश्च सामान्यं च
विशिष्टता ॥ निपिध्यते पदार्थानां तएव नतु सर्वथा ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ अजीवशब्दमां जीवशब्दनीसत्तावळगेलीछे पणनिपेधअछतोछे जेथी ना स्तिकमतवाला संयोग समवाय अनेसामान्य तथा विशेषने निषेधेछे तेपणसर्वथा पणे वस्तुस्वरूपने निपेधिशकतानथी केमके संयोगसमवाय अने समान्यनहीमा नवायकी पणअजीवशब्दबोलवुं तेयद्यपिअजीवपदार्थस्वतंत्र तथापिअछतुंअसतुंनानि

यें तोते असत्पदार्थनो निपेधदेखातुंनथी॥ २७॥ माटे संयोगसमवायसामान्य इत्या दिकपदार्थनुंविशेषपणुं तेनास्तिकमतवाला निपेधकरेछे पणतेसर्वथानिपेधथायनही

शुद्धं व्युत्पत्तिमज्जीवपदं सार्थं घटादिवत्॥तदर्थस्य शरीरं नो पर्या यपदभेदतः ॥ २९ ॥ आत्मव्यवस्थितेरुत्याज्यं ततश्चार्वाकद र्शनं ॥ पापाः किलैतदालापाः सद्यापारविरोधिनः ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ शामाटेशुद्धनिर्मलएवीव्युत्पत्ति तेजीवप्राणधारणे एवेअर्थेयुक्त एवुंजीव पदसाचुंछे घटादिकनीपेरेछतुंछे पणनवानवा पर्यायना भेदथकी जीवनेमूलअर्थे श रीरनथी ॥ २९ ॥ एरीतें आत्मानुंस्थापनकरीने चार्वाकदर्शननेछांडवुं एदर्शनीसाथें आलापकरवो तेपणपापरूपछे केमकेएसत्यवादीसाथें विरोधकारकछे तेथीतजवुं३०

ज्ञानक्षणावलीरूपो नित्योनात्मेति सौगताः ॥ क्रमाक्रमाभ्यां नित्यत्वे पूज्यतेर्थक्रिया न हि ॥३१ ॥स्वभावहानितो ध्रौव्यं क्र मेणार्थक्रियाकृतौ॥अक्रमेण च तद्भावे युगपत्सर्वसंभव॥३२॥

अर्थ ॥ हवेबौद्धमतवालाबोल्याके आत्माज्ञानरूपछे पणक्षण आवलीकाप्रमाणे स्थितिछे माटेआत्मानित्यनथी एटलेजीवते क्षणेकमांक्रोधकरे क्षणेकमांमानकरे ए मनिन्नअवस्थायायछे एकअवस्थानित्यरेतीनथी परंपरायें क्रमअक्रमपणेजो नित्य आत्माकोइवेलायेंहोय तोअर्थक्रियाकलाप घटेनही माटेनित्यआत्मानथी ॥ ३१ ॥ एनोस्वभावहणाय तेवारेध्रुवपणुंपामे अनुक्रमे अर्थक्रिया आकृतिनेविषे अक्रमेकरी ने तेभावनेविषे समकालेंविचारतां सर्वसंभवहोय माटेअमारोक्षणिकमतसाचोछ३२

क्षणके तु नदोषोस्मिन् कुर्वद्रूपविशेषिते ॥ ध्रुवेक्षणेनुतृष्णाया निवृत्तेश्च गुणोमहान् ॥ ३३ ॥ मिथ्यात्ववृद्धिकृन्नूनं तदेतदपि दर्शनं ॥ क्षणिके कृतहानिर्यं तयात्मन्यकृतागमः ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ वलीथाक्षणिकमतमां दोषनथी केमके नवनवारूपकरेछे पणजेसमयें जेरूपहोय तेसमयेंतेरूपनालक्षणेंकरीध्रुवछे तेमांतृष्णानो अनेनिवृत्तिनो मोटोगुण छे जेथीध्रुवतारूप महागुणपामियें एमबौद्धकहेछे ॥ ३३ ॥ एउपरथी खरेखरुं एदर्शन मिथ्यात्वनीवृद्धिकरनारुंछे केमकेआत्मानेक्षणिक माननारनासुकृतनीहा णीथायछे जो कदीपापनकरे तोपणहुवाबोलवानुं पापतोपरभवेंभोगववुंपडे माटे अकृतागमकहियें ॥ ३४ ॥

एकद्रव्यान्वयाभावा द्वासनासंक्रमश्च न॥पौर्वापर्य्यं हि भावानां सर्वत्रातिप्रसक्तिमत् ॥ ३५ ॥ कुर्वद्रूपविशेषे च न प्रवृत्तिर्नवाऽनुमा ॥ अनिश्चयान्न वाध्यक्षं तथा चोदयतोजगौ ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ जेमएकद्रव्यनुं सापेक्षपणे एकभावनथी माटेवासनानुं संक्रमणनथाय अनेभावनुं पूर्वापरपणुसर्वत्रशक्तिरूपें परिणमेछे ॥ ३५ ॥ रूपविशेषकरताछतां प्रवृत्तिकरवी अथवा वारवीतेतोनही पणक्षणिकमतवालायेंतो अनिश्चयथकी आत्माने उदयथी क्षणिकपणुकह्युंछे ॥ ३६ ॥

न वैजात्यं विना तत् स्या न्नतस्मिन्ननुमा भवेत्॥विना तेन न तत्सिद्धिर्नाध्यक्षं निश्चयं विना ॥३७॥ एकतः प्रत्यभिज्ञानं क्षणिकत्वं च वाधते ॥ योऽहमन्वभवं सोऽहं स्मरामीत्यवधारणात् ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ विजातीविना तेनहोय एमांकांइअनुमान घटतुंनथी केमकेतेविना तेनी सिद्धिपणनथी निश्चयविना प्रत्यक्षज्ञानपणनथोयातुं ॥ ३७ ॥ तथाहुंआअनुभवुंछुं तेहुंसंभारुंछुं एअवधारणथको आत्माने त्रैकालिक एकताज्ञान तेक्षणिकपणे वाधकारी थायछे ॥ ३८ ॥

नास्मिन्विषयवाधोयत् क्षणिकेपि यथैकता ॥ नानाज्ञानान्वये तद्वत् स्थिरे नानाक्षणान्वये ॥ ३९॥ नानाकार्यैक्यकरण स्वभाव्ये च विरुध्यते॥ स्याद्वादसन्निवेशेन नित्यान्वर्थक्रिया न हि ४०

अर्थ ॥ एनित्यात्मानामतवडे विषयवाधकपणुं नहोय क्षणिकमतनेविषेपण एमजजेम ज्ञानान्वयें एकत्वतापणुछे तेमस्थिरआत्मानेविषे नानाक्षणनेसंयोगें एकताजाणवी ॥ ३९ ॥ बहुकार्यना एकीकरणस्वभावने अंगीकारकरेछते विरोधपडेछे अनेस्याद्वादशैली थापनाकरवाथी नित्यापेक्षपणे अर्थक्रिया विरोधपामतीनथी केमके वेहुनयें प्रकृतिअर्थ अनुसरेछेमाटे ॥ ४० ॥

नीलादावप्यतभेद शक्तयः सुवचाः कथं ॥ परेणापि हि नानैकस्वभावोपगमं विना ॥ ४१ ॥ ध्रुवे क्षणेपि न प्रेम निवृत्तमनुपप्लवात् ॥ ग्राह्याकारइव ज्ञाने गुणस्तन्नात्र दर्शने ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ नीलादिवर्णनेविषे भेदशक्तिनहोय एमतुंकेम केवाय परपुरुषपनेकरीनेपण एकस्वभावने टाल्याविना नानाविधपणु संभवनही ॥ ४१ ॥ ध्रुवतापणानेवि

पे इच्छणनेविपेपण एटलेजोचननेविपेपण अपक्षवमाटे निवृत्तपणेप्रेमनजोइयें जे मग्राह्याकार ज्ञाननेविपेगुणछे तेमआदर्शनमांगुणनथी ॥ ४२ ॥

प्रत्युतानित्यभावे हि स्वतः क्षणजबुद्धिया ॥ हेलनादरतः सर्व क्रियाविफलता भवेत् ॥ ४३ ॥ तस्मादिदमपि त्याज्य मनित्यलस्य दर्शनं ॥नित्यसत्यचिदानंद पदसंसर्गमिच्छता ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ उलटोअनित्यभावनेविपेंपण पोतायी क्षणनीबुद्धियेंकरी हेतुनाअनादरथकीसघलीक्रिया निःफलथाय ॥ ४३ ॥ तेमाटेए अनित्यदर्शनपणछोडवुं सर्वेव नित्यसत्यपणे मुक्तिपदना संसर्गने इच्छताप्राणीयें जरूरत्यजवुं ॥ ४४ ॥

न कर्त्ता नापि भोक्तात्मा कापिलानां तु दर्शने ॥ जन्मधर्माश्रयो नायं प्रकृतिः परिणामिनी ॥ ४५ ॥ प्रथमः परिणामोस्या बुधिर्द्धर्माष्टकाऽन्विता ॥ ततोहंकारतन्मात्रें द्रियभूतोदयः क्रमात् ॥४६॥

अर्थ ॥ हवेकपिलदर्शनवाला बोल्याके आत्माकरतानथी तेमभोक्तापणनथी आत्माप्रगटधर्माश्रय वालोनथी मायापरिणामवर्त्तेछे ॥ ४५ ॥ एमायानो प्रथमपरिणाम शुश्रूषा श्रवणंचैवग्रहणंइत्यादिक आठप्रकारनी बुद्धिरूपधर्मेंकरीसहितछे अथवातेथी अहंकारतन्मात्र इंद्रिय पांचभूतोदय एअनुक्रमेजाणवुं ॥ ४६ ॥

चिद्रूपपुरुषोबुद्धेः सिध्येचैतन्यमानतः ॥ सिद्धिस्तस्या अविपया वछेदनियमाश्रितः ॥ ४७ ॥ हेतुलेपु प्रकृत्यर्थें द्रियाणामत्र निर्दृतिः ॥ दृष्टादृष्टविभागाश्च व्यासंगश्च न युज्यते ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ बुद्धिनीसिद्धिनेअर्थें आत्माचिद्रूपछे वलीचैतन्यछेतोपण निश्चयसहित अविछेदपणे तेबुद्धिनीजेसिद्धि तेअविपयीछे ॥ ४७ ॥ हेतुलेंकरी आत्मानेप्रकृतिअर्थनेविपे इंद्रियोना निवृत्तिपणानो दीठाअणदिठाना विभागथी प्रसंगघटतोनथी ४८

स्वप्ने व्याघ्रादिसंकल्पा न्नरत्वानभिमानतः ॥ अहंकारश्च नियत व्यापारः परिकल्प्यते ॥ ४९ ॥ तन्मात्रादिक्रमस्तस्मा त्प्रपंचोत्पत्तिहेतवे ॥ इत्थंबुद्धिर्जगत्कर्त्री पुन्रपोन विकारभाक् ॥ ५० ॥

अर्थ ॥ जेमस्वप्ननेविपे व्याघ्रादिकना संकल्पथी अनेपुरुषार्थना निरभिमानथी अहंकारनेनिश्चे व्यापाररूपकल्पियेंछियें॥४९॥तेप्रपंचनी उत्पत्तिनाहेतुनेअर्थेतन्मात्रादिकनो क्रमछे एरीतेंजगतनीकरनारी बुद्धिछेरेछे माटेविकारनोभजनारआत्मानथी

पुरुषार्थोपरागौघौ व्यापरावेशएव च ॥ अत्रांशोवेद्म्यहं वस्तुं करोमीति च धीस्वतः ॥ ५१ ॥ चेतनोहं करोमीति बुद्धेर्नेदाग्रहात्स्मयः ॥ एतन्नाशो ऽनवच्छिन्नं चैतन्यं मोक्ष इष्यते ॥ ५२ ॥

अर्थ ॥ सर्वप्रवृत्तिव्यापारनेविषे एकपुरुषार्थअने वीजोउपराग एवेव्यापारजेछे तेवारें हुंअंशंजाणुवुं हुंवस्तुकरुंछुं एवीकदायीबुद्धिथायछे ॥५१॥ हुंचेतनछुं हुंकरुंछुं एवोगर्वबुद्धिनाहेतुथी प्रगटेछे एवागर्वनोनाशकरी स्वभावेरहुं चैतन्यपणुमुक्तिनेपामेछे

कर्तृबुद्धिगते दुःख सुखे पुंस्युपचारतः ॥ नरनाथे यथा भृत्यगतौ जयपराजयौ ॥ ५३ ॥ कर्ता भोक्ता च नोतस्मा दात्मा नित्यो निरंजनः ॥ अध्यात्मादन्यथाबुद्धि स्तदाचोक्तं महात्मना ॥५४॥

अर्थ ॥ आत्मानेविषे दुःखसुखपामसुं एहवीकर्त्तापणानाबुद्धिजेथायछे तेउपचारथीछे जेमसेवकनोजय अथवा पराजयते राजाहोवाथीजणायछे ॥ ५३ ॥ इत्यादिकमाटे आत्माकर्त्ताभोक्तानथी पणनित्यनिरंजनछे अनेजेबुद्धिछेतेतो अध्यात्मथी जुदीछे एवुंमहात्माकपिलमुनियें कहेलुंछे ॥ ५४ ॥

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वथा ॥ अहंकारविमूढात्मा कर्त्ताहमिति मन्यते ॥ ५५ ॥ विचार्यमाणं नोचारु तदेतदपि दर्शनं ॥ कृतिचैतन्ययोर्व्यक्तं सामानाधिकरण्यतः ॥ ५६ ॥

अर्थ ॥ प्रकृतिनागुणेकरी क्रियमाणजेकर्म तेनोहुंकर्त्ताछुं एमसर्वप्रकारें अहंकारें मूढआत्मामानेछे ॥ ५५ ॥ एवोविचारकरेथी एदर्शनपणरुडुंनथी केमकेप्रगटबुद्धि प्रकृतिअनेचैतन्यनो सामानाधिकरणें विचारकरतांरुडुंनथीजणातु ॥ ५६ ॥

बुद्धिः कर्त्रीच भोक्त्रीच नित्याचेन्नास्ति निर्वृतिः ॥ अनित्या चेन्न संसारः प्राग्धर्मादेरयोगतः ॥ ५७ ॥ प्रकृतावेव धर्मादिस्वीकारे बुद्धिरेव का ॥ सुवचश्चघटादौस्या दीदृग् धर्म्मान्वयस्तथा ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥ वलीतमेजो कर्ता भोक्तापणे बुद्धिमानशोपणजोतेबुद्धिनित्यछेतो मोक्षनथी एटलेमोक्षछेरसेनहीं अनेजोबुद्धिने अनित्यमानशोतो पूर्वधर्मनाअयोग्यथकी संसारछेरशेनहीं ॥ ५७ ॥ प्रकृतिनेविषेधर्मादिकने अंगीकारकीधायी बुद्धिनेसुंकेहेवी जोइयें अनेघटादिकनेविषेएवाधर्मनो अन्वयतेसुखेकहेवो इतितर्कवादः ॥ ५८ ॥

कृतिन्नोगौचबुद्धेश्चे इंधो मोक्षश्च नात्मनः॥ ततश्चात्मानमुद्दि
श्य कूटमेतद्यडुच्यते ॥ ५ए ॥ पंचविंशतितत्वज्ञो यत्रतत्रा
श्रमे रतः॥जटी मुंडी शिखी चापि मुच्यते नात्र संशयः॥६०॥

अर्थ ॥ जोकरवुंनोगववुं बुद्धिनेछे तोवंधमोक्षआत्मानेनथी तेपणबुद्धिनेजजोइ यें माटेआत्मानेउद्देशीने नहीसमजवामांआवे एरीतेंकूटकरीकहेछे ॥५ए॥ पंचवीस तत्वनोजाणजेपुरुपछे ते कोइपणआश्रममांरतहोय एटलेजटाधरहोय अथवामुंमावे अथवाचोटीरखावे तोपणतेसंदेहविना संसारथीमुकाय एवुंकपिलमतवालाकहेछे

एतस्यचोपचारत्वे मोक्षशास्त्रं वृथाखिलं ॥ अन्यस्य हि विमो
क्षार्थं न कोप्यन्यः प्रवर्तते ॥६१ ॥ कापिलानां मते तस्मा दस्मि
न्नैवोचिता रतिः॥यत्रानुन्नवसंसिद्धः कर्ता न्नोक्ता च लुप्यते॥६२॥

अर्थ ॥ एरीतें एआत्मानेविपे मोक्षनेउपचरित्वपणें अंगीकारकरते तेनुंसकल मोक्षशास्त्र फोगटथायछे केमकेकोइने मोक्षआपवा कोइबीजोप्रवर्तेथायनही ॥ ६१॥ जिहांअनुन्नवसिद्ध आत्मानुकर्तापणुं तथान्नोक्तापणुलोपेछे एटलेमानतानथी तेमाटे एहवा कपिलनामतमां प्रीतिकरवीते ठीकनथी ॥ ६२ ॥

नास्तिनिर्वाणमित्याहु रात्मनः केप्यवंधतः ॥ प्राक्पश्चाद्युगप
द्वापि कर्म्मवंधाव्यवस्थितेः ॥ ६३॥ अनादिर्यदि संवंध इष्यते
जीवकर्मणोः॥तदानंत्यान्न मोक्षः स्या त्तदात्माकाशयोगवत्॥६४॥

अर्थ॥केटलाकअवंधमतवालाछे तेएमकहेछेके आत्माने मोक्षनिर्वाणनथीकेमके प्रथमकेअथवापछी समकालें आत्माने कर्मवंधनथी तोमुक्तिशेनीहोय ॥६३॥जोजीव ने तथाकर्मने अनादिसंवंधमानियें तोआदिनही तिहांअंतपणकेमथाय माटेअनंतप णानाप्रसंगथी कोइकालेंमोक्षनथाय जेमआत्माथके आकाशयोग कदापिनिन्ननथाय

तदेतदल्पसंवद्धं यन्मियोहेतुकार्ययोः ॥ संतानानादिता वीजां
कुरवत् देहकर्मणोः ॥६५॥ कर्त्ता कर्मान्वितो देहे जीवः कर्मणिदेह
युक् ॥ क्रियाफलोपन्नुक्तत्वे दंमान्वितकुलालवत् ॥ ६६ ॥

अर्थ ॥ एहवुंवोलेछे एवचनपणजुठुंछे केमके कारणकार्यनेमाहोमांहे संवंध छे जेमपुत्रपौत्रादिकनो अनादिसंवंधथायछे तेवीजनाअंकुरानीपेरेंछे तेमजशरीरनेत

आकर्मनोपणअनादिसंबंधछे ॥६५॥ कर्मसहितजीव कर्त्तापणेदेहमांरह्योछे एवुंजेकहे छेतेपणजुठुंछे जेमदंडसहितकुंजारनीपरें क्रियानोफलजोगवे तेपण असंबंधछेतेनीपरे

अनादिसंततेर्नाशः स्याद्बीजांकुरयोरिव ॥ कुकुम्यंम्डकयोः स्वर्ण मलयोरिव चीनयोः॥ ६७ ॥ जवेषु च व्यवस्थेयं संबंधोजीवकर्म णोः ॥ अनाद्यनंतो जव्यानां स्या दात्माकाशयोगवत् ॥ ६८ ॥

अर्थ ॥ तमेकहोछोके अनादिसंतति नाशनथाय तेनोतोनाशथतो देखीयेंछइयें जेमबीजवणसे अंकुरनथाय अने अंकुरानाशथये बीजनहीथाय कुकमीनाशथये ईं डुनाशपामे अनेईंमानोनाशथये कुकडीनाशपामे वलीअनादिनो सुवर्णथी मेलजुदो थायछे तेमआत्माथकी कर्मजुदाथायछे ॥ ६७ ॥ एरीतेंअनादिसंतति जीवकर्मनोजे संबंधते नाशथायछे तेजव्यजीवोआश्रयीछे अनेजेहने अनादिसंतति टलतीनथी तेअजव्यजीवो आश्रयीछे आत्मातोआकाशना योगनीपरेंछे ॥ ६८ ॥

द्रव्यजावे समानेपि जीवाजीवत्वजेदवत् ॥ जीवजावे समानेपि ज व्याजव्यत्वयोर्जिदा ॥ ६९ ॥ स्वाजाविकं च जव्यत्वं कलशप्राग जावतः ॥ नाशकारणसाम्राज्याद्विनश्यन्न विरुध्यते ॥ ७० ॥

अर्थ ॥ जेमद्रव्यनीरीतें तोसर्वद्रव्य एकद्रव्यपणें तुल्यछे पणतेद्रव्यमां जेदकरि यें तोजीवअजीवए बेथाय तेमज जीवपणेतो सर्वजीवसरिखाछे पणजेदकरतां जव्यतथाअजव्य एवेजेदथायछे ॥ ६९ ॥ जेमघटउत्पत्तिपेहेला माटीद्रव्यस्वजावि कपणेछे अनेमाटीनानाशथी घटप्रगटेछे तेविरुद्धनथी तेमस्वजाविकजव्यपणे कर्मनी अनादिसंततीनो नाशरूपकारणना सामर्थ्यथी परमात्मापणुप्रगटे तेपणविरुद्धनथी

जव्योछेदोन चैवं स्या त्रुर्वा त्याद्गुर्वोछेदत ॥ प्रतिमादलवत् का पि फलजावेपि योगतः ॥ ७१ ॥ नैतद्वंबदामोय जवः सर्वोपि सि ध्यति ॥ यस्तु सिध्यति सोवश्यं जव्यएवेति नोमतं ॥ ७२॥

अर्थ ॥ एरीतेंजव्यपणानो उछेदनथाय मोटाअनंतपणाथकी आकाशनाअंश नीपरें घटआवे आकाशपणआवुं अनेघटजांगे आकाशखंडथयो पणआकाशकांइव ध्युंनही तेमकर्मनानाशथकी आत्माअधिकथतोनथी जेमकोइकाष्ठे प्रतिमानादल नीपरें प्रतिमादलपाषाणथी विकल्प फलउपजे तेममोक्षनुं उपजवुं थाय॥ ७१ ॥

अमेएमकहेता नथीके सघलाभव्यजीवो सिद्धिपामे पणजेसिद्धिवरे तेनेनिश्चय भ
व्यकहियें एअमारोमतछे ॥ ७२ ॥

ननु मोक्षेपि जन्यत्वा द्विनाशिनी भवस्थितिः ॥ नैव प्रध्वंसवत्त
स्या निधनत्वव्यवस्थितेः॥ ७३ ॥ आकाशस्येव वैविक्ता मुद्गरादे
र्घटक्षये॥ज्ञानादेः कर्मणोनाशे नात्मनो जायते ऽधिकं ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ मोक्षनेविषे प्रगटथवापणुनथी माटेभवस्थिति नाशवंतीछे पणमो
क्षमां अनंतपणानी स्थितिछे माटेमुक्तीनोनाशनथी ॥ ७३ ॥ जेममोगरेंकरी घडो
भांग्यो अनेघटानेरूपें आकाशजुडुथयुं पणवध्युंनही तेमज्ञानथी कर्मनोनाशथाय
पण आत्माअधिकथायनही ॥ ७४ ॥

नच कर्माणुसंबंधा न्मुक्तस्यापि न मुक्तता॥ योगानां बंधहेतूना
मपुनर्भवसंभवात् ॥ ७५ ॥ सुखसत्तारतम्येन प्रकर्षस्यापि सं
भवात् ॥ अनंतसुखसंवित्ति र्मोक्षः सिध्यति निर्भयः ॥ ७६ ॥

अर्थ॥सिद्धांभूतथीजकर्मपरमाणुनो संबंधनथी अनेजेमूकाणा तेनेफांइमुकावबा
पणुनथी तथामिथ्यात्व अविरत कषाय योग एचारबंधहेतुनायोगछेतेनुं फरीथवापणुन
थीतेनेसिद्धकहियें ॥ ७५ ॥ सुखनुंतारतम्य तथाज्ञाननीउत्कृष्टता प्रगटथयेथी एट
लेअनंतसुखजाणवाथी निर्भयपणेजे सिद्धिवरे तेनुंनाममोक्षकहियें ॥ ७६ ॥

वचनं नास्तिकाभाना मात्मसत्तानिषेधकं ॥ भ्रांतानां तेन नादे
यं परमार्थगवेषिणा ॥७७॥ न मोक्षोपायइत्याहु रपरे नास्तिको
पमाः ॥ कार्यमस्ति न हेतुश्चे त्येषां तेषां कदर्थना ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ माटे नास्तिकमतवालाना वचन आत्मसत्ताना निषेधकछे तेभ्रमचित्तवा
लाये आदरवानही अथवानास्तिकमतवालाना भयनावचनछे एमजाणीआदरवान
ही जेपरमार्थनो गवेषकहोय तेणेजांणवा ॥ ७७ ॥ हवेवलीबीजा नास्तिकमतने
मतवाला मतवालाछे तेनुंकहवुं एमछे के मोक्षनोउपायनथी एटलेकार्यजेमोक्षतेतो
छे पणतेनुंकारणछे उपाय तेनथी एममानेछे तेमनेपण विटंबनाछे ॥ ७८ ॥

अकस्मादेव भवती त्यलीकं नियतावधेः॥ कदाचित्कस्य दृष्ट
त्वा इत्याह तार्किकोप्यदः ॥ ७९ ॥ हेतुभूतनिषेधानां स्वानुपा
ख्यविधिर्न च॥ स्वभाववर्णना नच मवधेर्नियतत्वतः॥ ८० ॥

अर्थ ॥ कोइकतो अणचिंतव्यो एकस्मातमोक्षथायछे एमकेछेते एपणजुठुंछे नि यत अवधिमर्यादाजछे तेमाटीनापिंडथीघटनिपजेछे तेकदाचितहोतुंछे एमतेहनेता किकशास्त्रवालाकहेछे जेअमुकवखतमांजपुरुंथाशे एवुंकांइनियमनथी ॥ ७९ ॥ हेतुजू तमोक्षनोनिषेधनथी पोतानोअनुपकथनीय एटलेपोतानेबोलवुंनही एहवीजेविधिते पणनथी अनेस्वभाववर्णनकरवुं स्तुतिकरवीतेनथी केमकेएसर्वनीअवधिछे एटलेअ वधियेंज मोक्षथाशे तेमाटेमोक्षनुं साधनकरवुंतेजूठुंछेएमकेछे ॥ ८० ॥

नच सार्वत्रिकोमोक्षः संसारस्यापि दर्शनात् ॥ नचेदानीं न तद्व्य क्ति र्व्यंजकोहेतुरेव यत् ॥ ८१ ॥ मोक्षोपायोस्तु किंतस्य निश्चयो नेति चेन्मतं ॥तत्र रत्नत्रयस्यैव तथा भावविनिश्चयात्॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ सर्वत्रमोक्षनथी केमके जेहमणानथी तेनीप्रगटतापणनथी अनेसंसा रतो प्रत्यक्षदेखायछे माटेजेहनोजेहेतुछे तेजप्रगटनथी तोतेहनोसंशयछे ॥ ८१ ॥ मो क्षनोउपायछे किंवानथी एवातनो निश्चयनथी माटेएमतपणजुगेछे मोक्षनुहेतुतो रत्नत्रयनीपरें तेमजभावें निश्चयथीजाणियें ॥ ८२ ॥

भवकारणरागादि प्रतिपक्षमदः खलु ॥ तद्विपक्षस्य मोक्षस्य कारणं घटतेतरां ॥ ८३ ॥ अथ रत्नत्रयप्राप्तेः प्राक्कर्म्मलघुता यथा ॥ परतोपि तथैव स्या दिति किं तदपेक्षया ॥ ८४ ॥

अर्थ ॥ रत्नत्रयीजेछे तेसंसारना कारणजेरागादिक तेहनाशत्रुछे अनेसंसाररूप कार्यनोशत्रु मोक्षछे माटेमोक्षनुं कारणजे उपायतेघटेछे ॥ ८३ ॥ केमकेरत्नत्रयनी प्राप्तियथायकी पूर्वभवनाकर्मनी जेवीलघुताथाय तोवीजायकीपणतेमजथायएअ पेक्षायें जोअवधिनथी तोपणशुंथयुं ॥ ८४ ॥

नैवयत्पूर्वसेवातो मृद्वीतो साधनक्रिया ॥ सम्यक्त्वादिक्रिया तस्मात् द्वैव शिवसाधने॥८५॥गुणाः प्राक्भवंत्युच्चै रथवा कर्म लाघवात् ॥ तथा भव्यतया तेषां कुतोपेक्षानिवारणं ॥ ८६ ॥

अर्थ ॥ जेपूर्वसेवायकीते वचनायोजनारूपथी ऋजुतायी साधनक्रियामंदरूप ते वीनहोय माटे समकेतादिकक्रिया तेमोक्षसाधनमांदृढछे ॥ ८५ ॥ अथवाकर्मना लघुतापणायकी मोटाजेगुणतेप्रगटथायछे तेप्रकारें तेनीभव्यतापणेकरीने मोक्षछे पणमोक्षनीअपेक्षा वारीनथी इतिसंतइयः ॥ ८६ ॥

तथाभव्यतयाक्षेपा द्गुणा न च न हेतवः॥अन्योन्य सहकारित्वात्
दंमचक्रभ्रमादिवत् ॥ ८७ ॥ ज्ञानदर्शनचारित्रा एयुपायास्त
भवक्षये॥अतन्निषेधकं वाक्यं त्याज्यं मिथ्यात्ववृद्धिकृत् ॥ ८८॥

अर्थ ॥ तेमभव्यपणानातिरस्कारथकी पुनर्हेतुभत गुणनहोय केमके परस्पर स हकारीछे माटे दंडचक्रभ्रमणनीपेरें भव्यतापणे ज्ञानादिक गुणप्रगटथाय तेगुण मोक्षनाहेतुछे एउत्तरकह्योछे ॥ ८७ ॥ माटेसंसारनाक्षयरूपजेउपाय तेज्ञानदर्शन अनेचारित्रछे तेनोजेनिषेधकरे अने मिथ्यातनीवृद्धिकरे तेनुंवचनत्यागकरवुं ॥ ८८ ॥

मिथ्यात्वस्य पदान्येता न्युत्सृज्योत्तमधीधनः ॥
भावयेत्प्रातिलोम्येन सम्यक्त्वस्य पदानि षट् ॥८९॥

अर्थ ॥ एपूर्वेकह्याजे सर्वशास्त्रना मतवाद तेमिथ्यातनाछेकाणाछे तेनेत्यागीने बु द्धिरूपधननुं ग्रहणकरीने मिथ्यातनेप्रतिकूलपणेजे समकितना छपदछेतेनेभाववां ॥ ८९ ॥ इति मिथ्यात्वत्यागाधिकारः त्रयोदशःसमाप्तः

मिथ्यात्वदावानलनीरवाह मसद्ग्रहत्यागमुदाहरंति ॥
अतोरतिस्तत्र बुधैर्विधेया विशुद्धभावैः श्रुतसारवद्भिः॥१॥

अर्थ॥मिथ्यातरूप जेदावानल तेनेसमाववाने मेघसमान एहवोमिथ्यात्व कदाग्रह रूपप्रसारनो त्यागपंडितेंकह्योछे जेकदाग्रहनात्यागनेविपेरतिकरवी तेतोजेपंमितहोय वलीशुद्धताभाववालाहोय अनेसिद्धांतनासारनो जाणहोयतेमणेकदाग्रहने ग्रंमवो

असद्ग्रहाग्निज्वलितं यदंतः क्व तत्र तत्त्वव्यवसायवल्लिः॥
प्रशांतिपुष्पाणि हितोपदेशं फलानि चान्यत्र गवेषयंतु ॥२॥

अर्थ ॥ जेनुं अंतःकरण अछतापदार्थना कदाग्रहरूप अग्निवेबल्युंछे तेनाहृदयमां तत्वव्यापाररूप वेलीकेमकरीवगे ? अनेसमतारूपफुल केमफुटे तथाहितउपदेश रूप फलस्यांथीहोय तेमाटे कदाग्रहनेतजीने बीजेठेकाणे तत्वनीखोल करवी ॥२॥

अधीत्य किंचिच्च निशम्य किंचि दसद्ग्रहात्पंडितमानिनोये॥
मुखं मुखं चुंबितमस्तु वाचो लीलारहस्यं तु न तैर्जगाहे॥ ३ ॥

अर्थ ॥ कांइकभणीने तथा कांइकशास्त्रांनजीने आत्मानेपंडितपणुं मानता

एवामूर्खकदाग्रहनाधरनारते पोतानुंमुखचुंबितजेवाचा तेनेमुखमाने पणतेमुखेंकरी लोज्ञारूप रहस्यजेज्ञानते अवगाहेनही ॥ ३ ॥

असद्ग्रहोत्सर्पं दतुच्छदर्पै र्बोधांशतांधीकृतमुग्धलोकैः ॥वि
मंविता हंत जडैर्वितंडा पांडित्यकंमूलतया त्रिलोकी ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ जेनेकदाग्रहथकी घणोगर्वबध्योछे अनेस्वकल्पितज्ञानने अंशेकरी जड़ कजीवोनेजेणे आंधलाकीधाछे एहवाजडप्राणीयें पंडिताइनी खरजेंकरीनेहंतइतिखेदे पाटुप्रहारेंथकी त्रणलोकने वितंडाके० माकमामलेंविटंबनाकरीछे ॥ ४ ॥

विधोर्विवेकस्य न यत्रदृष्टि स्तमोघनं तत्वरविर्विलीनः ॥अ
शुक्लपक्षस्थितिरेपनून मसद्ग्रहा स्थूलमतिर्मनुष्यः ॥ ५ ॥

अर्थ॥ जेनाहृदयमां विवेकरूपचंद्रनी दृष्टीनथी तेथीघणोअंधकारछे अनेतत्वरूप सूर्य अस्तपाम्योछे तेथीतेकृष्णपक्षनी निशावत्स्थितिमांछेकेमकेतेने कदाग्रहेंछाद्योछे

कुतर्कदात्रेण लुनाति तत्व वल्लीरसान्सिंचति दोषवृक्षं ॥ क्षि
पत्यधः स्वादुफलं शमाख्य मसद्ग्रहः कोपिकुहूविलासः॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेकदाग्रहीछेते कुविचाररूपदातरडेंकरी तत्वरूपवेलानेछेदेछे अनेपापरू पवृक्षनेपाणीपायेछे तथासमतारूपअमृतफलने हेठुंधुलमांनाखेछे एवोकोइ कदाग्रह रूप अमावास्यानी रात्रीनोविलासछे ॥ ६ ॥

असद्ग्रहग्रावमये हि चित्ते न क्वापि सद्भावरसप्रवेशः ॥इ
हांकुरश्चित्तविशुद्धबोधः सिद्धांतवाचां बत कोपराधः ॥ ७॥

अर्थ ॥ तेकदाग्रहीमाणसनुं चितपथ्थरजेवुंछे जेमपथ्थरमांपाणीजेवेनही तेम जिनवाणीरूपरस तेकदाग्रहीमाणसमां प्रवेशकरेनही तेथीतेनाचित्तरूपवृक्षमां शुद्ध बोधरूप अंकुरप्रगटेनही तोतेमांसिद्धांतनावाणीनो शोवांक ॥ ७ ॥

व्रतानि चीर्णानि तपोपि तप्तं कृता प्रयत्नेन च पिंडशुद्धिः॥ अ
भूत्फलं यत्तुन निन्हवाना मसद्ग्रहस्यैव हि सोपराधः ॥८ ॥

अर्थ ॥ जोपंचमहाव्रतपाल्यां उग्रतपकीधां उद्यमेंकरी बेतालीसदोषरहित अहा रलीधो तेमछतापणजेनिन्हवादिक मुक्तीरूपफलनपाम्याते अपराधसर्व कदाग्रहनुंजछे

स्थालं स्वबुद्धिः सुगुरोश्च दातु रुपस्थिता काचन मोदकाली॥ अ
सद्ग्रहः कोपि गले ग्रहीत स्तथापि नोक्तुं न ददाति छुष्टः ॥ ए॥

अर्थ ॥ पोतानीबुद्धिरूप थालमांकांइक शुद्धज्ञानरूप मोदकने गुरु पीरसवाजग्या पणकदाग्रहेंथ्यावी गलुंपकड्युं तेथीजमाग्रुनही एवोकदाग्रहदुष्टछे ॥ ए ॥

गुरुप्रसादिक्रियमाणमर्थं गृह्णाति नासद्ग्रहवांस्ततः किं ॥
द्राक्षा हि साक्षाडपनीयमाना क्रमलेकः कंटकभुङ् न भुंक्ते॥१०॥

अर्थ ॥ जोगुरुप्रसन्नथइने अर्थउपदेशआपेछे तोपणकदाग्रहीपुरुष तेउपदेशनेमहतोनथी तेथीशुंथयुं उपदेशतोकांइखोटोनथी एतोजेमप्रगटपणे मीठीद्राक्षउंट आगलमुकियें तोपणतेनेतजीनेउंट काटानेखायछे ॥ १० ॥

असद्ग्रहात्पामरसंगतिं ये कुर्वंति तेषां न रतिर्बुधेषु ॥ वि
ष्ठासु पुष्टाः किल वायसा नो मिष्टान्ननिष्ठा प्रसन्नं भवंति॥११॥

अर्थ ॥ जेप्राणीकदाग्रहेकरी मूर्खनीसंगतकरेछे तेनेपंडितनीसोबत गमतीनथी जेमकागडा विष्ठानाजोगीछे तेनेमधुरअन्नाहारनीइच्छाथतीनथी तेनीपेरें ॥ ११ ॥

नियोजयत्येव मतिं न युक्तौ युक्तिं नमो यः प्रसन्नं नियुक्ते॥अस
द्ग्रहादेव न कस्य हास्यो जले घटारोपणमादधानः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ जेमकोइमूर्ख नदीनाजलउपर घमोनरीनेमुके तेनेजोइने कोणहसेनही केमके अगाधनिर्मलजलना विस्तारआगल एकतुच्छमात्रजलेंभरेलोघडो तेशीगणती मांछे तेमगुरुनामुखथी शास्त्रयुक्तिसांभलीने तेमांपोतानी मतिजोडेनही अनेपोतानीयुक्तिवडे उलटुंबोले जेतमारीयुक्तीने नमस्कारहोजो एवाकदाग्रहीनेदेखी कोणहांसीनकरे इहां गुरुनोउपदेशतेनदीनाजलतुल्यछे तेनाआगलकदाग्रहीघट केमनिभे

असद्ग्रहो यस्य गतो न नाशं न दीयमानं श्रुतमस्य शस्यं॥न
नाम वंकल्पकलंकितस्य प्रौढा प्रदातुं घटते नृपश्रीः ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ जेमकोइनेआश्चादमीने महोटीराज्यलक्ष्मी आपवीघटेनही तेमजेहनेकदाग्रहगयोनथी तेवाप्राणीने धर्मोपदेश आपवोयोग्यनथी ॥ १३ ॥

आमे घटे वारि धृतं यथा स विनाशयेत्सं च घटं च सद्यः॥अस
द्ग्रहग्रस्तमतेस्तथैव श्रुतात्प्रदत्तादुभयोर्विनाशः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जेमकाचायडामां पाणीजरवाथी घडानो तेमजपाणीनोनाशथायछे तेमज कदाग्रहीमाणसने शास्त्र सीखवतांशास्त्रनो तेमजतेपोतानोवचननोविनाशथायछे॥ १४

असद्ग्रहग्रस्तमते प्रदत्ते हितोपदेशं खलु यो विमूढः॥ शुनी
शरीरे स महोपकारी कस्तूरिकालेपनमादधाति ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ जेमविष्ठायेंजर्युंमुखदेखी कुतरीनेउपकारकरवा कस्तूरीनोलेपकरे तेमूर्खजाणवो तेमकदाग्रहीप्राणीने उपकारकरवाने हितउपदेशआपेते पणमूर्खजाणवो॥ १५॥

कष्टेन लब्धं विशदागमार्थं ददाति यो ऽसद्ग्रहदूषिताय॥स
खिद्यतेयत्नशतोपनीतं बीजं वपन्नूषरभूमिदेशे ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जेमवणाउद्यमे अनाजनावीज जेगांकरी उखरजमीनमांवावे तेथ्याग लजतांसदाय खेदपामेछे तेम पंडितप्राणी गुरुनोविनयकरी कष्टेंकरीनिर्मल आगमसिद्धांतनाअर्थने पाम्योहोय तेजो कदाग्रहेंकरी डुनीतप्राणीने तेहनो अर्थ शीखववानो उद्योगकरे तोतेथी अंतेखेद पामेछे ॥ १६ ॥

शृणोति शास्त्राणि गुरोस्तदाज्ञां करोति नासद्ग्रहवान् कदा
चित्॥विवेचकत्वं मनुते च सारग्राही भुवि स्वस्य च चालनीवत् ॥१७॥

अर्थ ॥ जोगुरुपासेथीशास्त्रसांभले तोपणकदाग्रहीजेहोय ते कोइकालें ते गुरुनी आज्ञानमाने ते पोतानीमले पोतानेएहवुंमाने जेहुंज सर्वपदार्थनी बराबरवेचणक रुंछे पणतेतोजेम पृथ्वीमां चालणीमांथी चारीनेसारभूतवस्तु काहाडीलेइने बाकी असार धान्यरहेछे तेहवुं ते ग्राहीछे ॥ १७ ॥

दंभाय चातुर्य मघीयशास्त्र प्रतारणाय प्रतिभापटुत्वं ॥ ग
र्वाय धीरत्वमहोगुणाना मसद्ग्रहस्ते विपरीतसृष्टिः॥१८॥

अर्थ ॥ माटे अहोइतिआश्चर्य विधात्रायें कदाग्रहीमाणसमां विपरीतगुणसृज्याछे जेवादेवतेवीपात्री अनेमेघजलसर्पनामुखमां जेमविषतुल्यथयीजायछे एकेवतने विधात्रायें खरीपाडीछे केमके जे कदाग्रहीनी चतुराइतेकपटनेअर्थेथाय अने शास्त्र भणवुं ते मदनेअर्थेथयुं तथा बुद्धिमाहापण अने उपदेशतेलोकने ठगवानासाधननेअर्थेथयुंअने धैर्यपणु तेगर्वकरवानेअर्थेथयुं ॥ १८ ॥

असद्ग्रहस्येन समं समंता त्सौहार्दभृद्दुःख मवैति तादृग्॥
उपैति यादृक्कदलीकुटुम्बा स्फुट त्रुटत्कंटककोटिकीर्णा॥१९॥

अर्थ ॥ जेमकेळनुंवृक्ष तेकंथेरादिक वृक्षनेसंगे कांटायेंकरीकोरायछे तेमजेशाणी दाग्रहीसायेंनिळीरीतें मित्राइकरेछे अंतेडःखनाविपाक पामेछे ॥ १९ ॥

विद्या विवेको विनयो विशुद्धिः सिद्धांतवात्सल्य मुदारता च॥
असद्ग्रहाद्याति विनाशमेते गुणास्तृणानीव कणाद्दवाग्नेः॥ २० ॥

अर्थ ॥ जेमअग्नीथी घासनासमूह नस्मनूत थायछे तेमविद्याविनय विवेक शुद्धि अने सिद्धांतउपर वत्सलतापणु गंनीरता एसर्वे कदाग्रहथीनाश पामेछे॥२०॥

स्वार्थः प्रियो नो गुणवांस्तु कश्चि न्मूढेषु मैत्री न तु तत्ववित्सु॥ अस
द्ग्रहापादितविभ्रमाणां स्थितिः किलासावधमाधमानां ॥ २१ ॥

अर्थ ॥ जेकदाग्रहीनी सोबतेरह्या तेने स्वार्थप्रियनहीते प्राणीअथवगुणवंत मूर्ख सायेंमित्राइकरे अने पंडितसाथें मित्राइकरेनही एवाकदाग्रहीनी सोबतेंरह्या जेअ धममाअधम नीचप्राणी तेहनीएस्थितिछे तेकही ॥ २१ ॥

इदंविदंस्तत्वमुदारबुद्धि रसद्ग्रहं यस्तृणवज्जहाति ॥ जहा
ति नैनं कुलजेव योषि द्गुणानुरक्ता दयिता यशःश्रीः॥२२॥

अर्थ ॥ एमजाणीने तत्वनेओळखनार मोटीबुद्धिवाळाप्राणी कदाग्रहने तृणप तानीपेठेंतजेछे तेने जेम कुळवंतीस्त्री नरतारने त्यजतीनथी तेमगुणरागीएवीजे यश कीर्त्ति रूप लक्ष्मीतद्रूपस्त्रीयो छांडतीनथी ॥ २२ ॥ इतिकदाग्रहत्यागाधिकारचतुर्दश

श्री न [illegible] श्रीयशोविजयगणि विरचितअध्यात्मसार
प्रकरणे चतुर्थःप्रबंधः बारमांअधिकारमां ५८ तेरमां
ना [illegible]

असद्ग्रहव्ययाद्वांत मिथ्यात्वविषयीप्रुषः ॥ सम्यक्त्वशालिनो
ध्यात्म शुद्धे योगः प्रसिध्यति ॥ १ ॥ कर्मज्ञानविभेदेन स द्विधा
तत्र चादिमः॥ आवश्यकादिविहितः क्रियारूपः प्रकीर्त्तितः ॥२॥

अर्थ ॥ [illegible]थी मिथ्यातरूपअंधकारनो विषयगयोछे जेमांथीएह [illegible] अंतःकरणथयाछे जेहना एहवाजेप्राणी तेमने अध्यात्मनी

द्धिथकीयोगप्रसिद्धरीतें प्रगटे ॥ १ ॥ तेयोगनावेजेदछे एककर्मयोग अनेवीजोज्ञान योग तेमांकर्मयोगते आवश्यकादिकजे क्रियाकरवीतेरूपकह्योछे ॥ २ ॥

शारीरस्पंदकर्मात्मा यदयं पुण्यलक्षणं ॥ कर्मातनोति सन्नो गा त्कर्मयोगस्ततः स्मृतः ॥ ३ ॥ आवश्यकादिरागेण वात्स ल्याद्भगवद्गिरां॥प्राप्नोति स्वर्गसौख्यानि न याति परमं पदं॥४॥

अर्थ ॥ शरीरचेष्टारूप तेकर्मात्माकहियें एयोगपुण्यरूपछे तेरुडाजोगथकी कर्म नेविस्तारेछे तेमाटेएनेकर्मयोगकहियें ॥ ३ ॥ आवश्यकादिकक्रियानेरागे तथाजिन वाणीने विलासेंकरीने स्वर्गनासुखनेपामे पणएयोगेंमुक्तिपदनेनपामे ॥ ४ ॥

ज्ञानयोगस्तपः शुद्ध मात्मरत्येकलक्षणं ॥ इंद्रियार्थोन्मनीना वा त्समोक्षसुखसाधकः ॥ ५ ॥ न परप्रतिबंधोस्मि न्नल्पोप्येका त्मवेदनात् ॥ शुन्नं कर्मापि नैवात्र व्याक्षेपायोपजायते ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वीजोज्ञानयोगतेहनेकहियें जेतपशुद्धिपणे आत्मानेविषेरतिपामे तेएक लक्षण अने इंद्रियोनाविषयथीदूररहेवुं तेवीजुंएवालक्षणेयुक्तजेयोग तेनेपामेलोपुरुष तेमोक्षसुखनेसाधे ॥ ५ ॥ एकआत्मज्ञानयोगना ज्ञानमां वीजोप्रतिबंधनथी अने जेकर्मथीमोक्षमांजतां वारलागे तेशुन्नकर्मपणनथी ॥ ६ ॥

नह्यप्रमत्तसाधूनां क्रियाप्यावश्यकादिका ॥ नियता ध्यानशु द्धत्वा यदन्यैरप्यदः स्मृतं ॥ ७ ॥ यस्त्वात्मरतिरेव स्या दात्मतृ प्तश्च मानवः॥आत्मन्येव च संतुष्ट स्तस्य कार्यं न विद्यते ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ अप्रमत्तसाधुने आवश्यकप्रमुखजेक्रिया तेनोपण करवानेविषे प्रतिबंधन थी केमकेतेनेध्यानरूपशुद्धिछे माटे ॥ ७ ॥ वलीअन्यदर्शनमां पण श्रीकृष्णकहेछे के हेयर्जुन जेआत्मसुखमांतृप्तछे तेनेआत्मानेविषेज रतिछे अनेसंतोषछे जेआत्म सुखमां संतुष्टछेएहवोजेजीव तेहनेकोइपणकर्त्तव्यनथी ॥ ८ ॥

नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृते नेह कश्च न॥न चास्य सर्वभूतेषु कश्चि दर्थव्यपाश्रयः ॥ ९ ॥ अवकाशो निषिद्धोस्मि न्नरत्यानंदयोर पि ॥ ध्यानावष्टंन्नतः क्वास्तु तत्क्रियाणां विकल्पनं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ तेप्राणीनेकार्यकरवे अर्थनथी तेमजनकरवाथी खोटपणनथी तेहनेसर्व

नूतनेविषेकांइप्रयोजननथी ॥ ए ॥ एहेकाऐ अरतिनो अनेआनंदनो अवकाशनथी केमके ध्याननीस्थिरताथी तेक्रियानोविकल्पपण केमहोय ॥ १० ॥

देहनिर्वाहमात्रार्था यापि भिक्षाटनादिका॥क्रिया सा ज्ञानिनोसंगा न्नैव ध्यानविघा तनी ॥ ११ ॥रत्नशिक्षादृगन्या हि तन्नियोजनदृग् यथा॥ फलभेदात्तथा चारक्रियाप्यस्य विभिद्यते ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ देहनिर्वाहरूपें मुनीने गोचरीप्रमुखजे क्रियातेक्रिया ज्ञानोनीअसंगानुष्ठा नथी ध्यानमांविघ्नकरेनही ॥ ११ ॥ रत्नमाणिकपरिक्षाना ग्रंथछुदा अनेनजरपरिक्षापणजुदी ग्रंथजणीने जेमनजरपरिक्षामांफल भेदथीप्रवर्त्तेछे तेमआचारक्रिया पण फलभेदेंकरी भिन्नभिन्नछे एटले भेदवंतीछे ॥ १२ ॥

ध्यानार्था हि क्रिया सेयं प्रत्याहृत्य निजं मनः॥ प्रारब्धा जन्मसंकल्पा दात्म ज्ञानाय कल्पते ॥१३॥ स्थिरभूतमपि स्वांतं रजसा चलतां व्रजेत् ॥ प्रत्याहृत्य निगृह्णाति ज्ञानी यदिदमुच्यते ॥१४॥

अर्थ ॥ जोपोतानामनने पाछुंवालीने जन्मसंकल्पथीमांडीने आत्माज्ञानभणी कल्पियें तोतेक्रियाध्यानरूपछे ॥ १३ ॥ स्थिरथयेलुंजेमन तेपणरजोगुणेकरी चपलतानेपामे तेहनेपाछुंवाली तेनोनिग्रहकरे तेनेज्ञानीकेहवो ॥ १४ ॥

शनैः शनैरुपरमे द्बुध्या धृतिगृहीतया ॥ आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिंतयेत् ॥ १५ ॥ यतोयतोनिःसरति मनश्चंचलमस्थिरं ॥ ततस्ततो नियम्यैत दात्मन्येव वशं नयेत् ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ हेअर्जुन मननेधीरेधीरेधीरजवडे अनेबुद्धिवडे स्थिरकरवुं पछेतेमनजेवारें आत्मानास्वरूपनेविषेजाय तेवारें काइपीजो चिंतनकरवानी जरूरनथी॥१५॥ मनचंचलनेअस्थिरछे तेनेज्यांज्यां जायत्यांत्यांथीपाछुंवालीने आत्मानेसाथें वशकरीराखवुं

अतएवादृढस्वांतः कुर्याच्छास्त्रादिना क्रियां ॥ सकलां विषयप्रत्या हरणाय महामतिः ॥ १७ ॥ श्रुत्वा पैशाचिकीं वार्तां कुलवध्वाश्च रक्षणं॥नित्यसंयमयोगेषु व्यापृतात्मा भवेद्यतिः ॥ १८॥

अर्थ ॥ एमवरदर्शनमांपण कह्युंछे माटेजांसुधी मनस्थिरनहोय त्यांसुधी शास्त्रोक्तिया जेटलीक्रियें तेटलीमर्वसफलनथाय जेवारेंविषयत्याग थाय तेवारेंजसफ

लथाय माटेजेप्राणीमननेविषयथीवालवामां उजमालरहे तेमहामति वालाजाणवा ॥ १७ ॥ जेमएकशेठनोपुत्र देशांतरगयो तेनाघरनीसामेना एकवृक्षउपर एकभूतरे तो हतोतेठलपामि पुत्रनोरूपधारणकरी तेनीघरनी बायडीसाथेंलागुपड्यो एम करतांतेशेठनोदीकरो पोतानेघरेंआव्यो तेवारेंघरमां लडाइचालवालागी पछेराजदर वारें इनसाफनेवास्तेगया तिहांथी भूतनेघरमांथी काढवानुंवल्युं पणतेभूतनिकल्यो नही नेकेवालाग्योकेहुं जवानोनथी हुंपणपुत्रछुं एवातसांभलीवहुने लाजलागी ठे लेशेठेभूतने वैरीसाथें युद्धकरवानोकामभलाव्यो अनेवहुने घरनोधंधोभलाव्यो ए रीतेंअनाचारटाल्यो अनेवहुनेराखी तेममुनीयेंपण संयमनायोगें आत्मानेराखवो

या निश्चयैकलीनानां क्रिया नातिप्रयोजना ॥ व्यवहारदशास्था नां ता एवातिगुणावहाः ॥ १९ ॥ कर्मणोपि हि शुद्धस्य श्रद्धामेधा दियोगतः ॥ अक्षतं मुक्तिहेतुत्वं ज्ञानयोगानतिक्रमात् ॥ २० ॥

अर्थ ॥ जेनुंमननिश्चयमां लीनछे तेनेक्रियानुं प्रयोजननथी व्यवहारदशावाला ने क्रियाते अतिगुणकारीछे ॥ १९ ॥ शुभकर्मथीअने श्रद्धाबुद्धिनायोगथी अखंडप णे जोज्ञानयोगने उलंघेनहीतो तेहनेमुक्तिनोहेतु प्रगटथाय ॥ २० ॥

अभ्यासे सत्क्रियापेक्षा योगिनां चित्तशुद्धये ॥ ज्ञानपाके शमस्यै व यत्परै रप्यदः स्मृतं ॥ २१ ॥ आरुरुक्षो र्मुनेर्योगं कर्मकारण मु च्यते ॥ योगारूढस्य तस्यैव शमः कारण मुच्यते ॥ २२ ॥

अर्थ ॥ जेरुडीक्रियानीअपेक्षायें अभ्यासकरेछेते योगीश्वरने चित्तशुद्धिनेअर्थे ज्ञान परिपक्वकरवाने उपशमकह्युंछे एमअन्यदर्शनीउ पणकहेछे ॥ २१ ॥ हेअर्जुन योग पामवानेइछताजेयोगीछे तेहनेकर्मतो एककारणछे जेवारेंसर्व संकल्पशमिजाय तेवा रेंतेनेज्ञानयोगी कहियें तेमाटेज्ञानारूढने समताजेकारणछे ॥ २२ ॥

यदा हि नेंद्रियार्थेषु न कर्म्मस्वनुपज्यते ॥ सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढ स्तदोच्यते ॥ २३ ॥ ज्ञानं क्रियाविहीनं न क्रिया वा ज्ञानवर्जिता ॥ गुणप्रधानभावेन दशाभेदः किलैनयोः ॥ २४ ॥

अर्थ ॥ जेवारेंविषयथीविरमें कर्मनेविषे संलग्ननथाय जेवारेंसर्व संकल्पशमीजा य तेवारेंतेहने योगारूढकहियें ॥ २३ ॥ क्रियाविना ज्ञाननथी अनेज्ञानविना क्रि यानथी एवेमांक्रियातेगौणछेअनेज्ञानतेमुख्यछे एवोएवेनो दिशाभेदकह्योछे ॥ २४॥

ज्ञानिनां कर्मयोगेन चित्तशुद्धि मुपेयुषां ॥ निरवद्य प्रवृत्तीनां ज्ञानयोगौचिती ततः ॥ २५ ॥ अतएव हि सुश्रद्धा चरणस्पर्श नोत्तरं ॥ दुःपालश्रमणाचार ग्रहणं विहितं जिनैः ॥ २६ ॥

अर्थ ॥ कर्मयोगेकरीने मनशुद्धिपामेलाअने निर्दोषविहारी एहवाजेज्ञानी तेहने ज्ञानयोग मुख्यपणेसेववो उचितछे एवोवीतरागनोमतछे ॥ २५ ॥ एमाटेरुमीश्रद्धा पर्छेशविरतिरूप चारित्रनो स्पर्शकीधापछे दुखेपालिसकियें एवामुनीनोआचार जेस वेविरतिपणुंनेतेलेवो एटलेग्रहवुं पछेसंयमलेवुंकह्युंछे ॥ २६ ॥

एकोद्देशेन संवृत्तं कर्म यत्पौर्वभूमिकं॥दोषोच्छेदकरं त स्या द् ज्ञानयोगप्रवृद्धये॥२७॥अज्ञानिनां तु यत्कर्म न ततश्चि त्तशोधनं॥योगादेरतथाभावाद् म्लेच्छादिकृतकर्मवत्॥२८॥

अर्थ ॥ कोइएकवैराग्याश्रिने पूर्वभूमितेपूर्वे नवरूपसंवृत्तपणे उद्देशीने एटलेवे ग्यकी जेपेहेलांकृतथादस्यां एहवीजेक्रिया तेपणदुःखने टालनारीछे वलीज्ञानयोग नीवृद्धिकर्त्तायायछे ॥ २७ ॥ अनेअज्ञाननीजेक्रिया तेचित्तशुद्धि करवानेअर्थे नही पाप केमकेतेहनेज्ञानयोगनो अभावछेमाटे म्लेच्छनाकरेला कार्यसरखीतेजाणवी

न च तत्कर्मयोगेपि फलं संकल्पवर्जनात्॥संन्यासो ब्रह्मवो धाद्वा सावद्यत्वा त्स्वरूपतः॥ २९ ॥ नोचेदित्थं भवेबुद्धि र्गोहिं सादेरपि स्फुटा ॥ श्येना द्वेद विहिता विशेषानुपलक्षणात्॥३०॥

अर्थः॥ तोतेवाकर्मयोगेपण फलनयी फलतोसंकल्पवर्जे तेवारंजथायछे थारमज्ञा नविना त्यागपणनयी अनेएतुलरूप सावद्यछे माटेब्रह्मजेज्ञान तेनाबोधयकी फ लप्रगटे ॥ २९ ॥ जोकदापीएमबुद्धिनहोय तेवारेतो गोहिंसादिक यकीम्लेच्छादिक नेपण प्रगटबुद्धिहोय तथासिंचाणानावधयीवेदमां पशुयागकह्या तेयकीर्हिसकक मेनायोगे वेदीयाना अनेम्लेच्छना एकसरखांजलक्षणछे कांइविशेषनयी ॥ ३० ॥

सावद्यकर्म नो तस्मा दादेयं बुद्धिविप्लवात् ॥ कर्मोदयागते त स्मि न्नसंकल्पाद्बंधनं ॥ ३१ ॥ कर्माप्याचारतोज्ञातु मुक्ति भावो न दीयते।तत्र संकल्पजोबंधो गीयते यत्परैरपि ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ एटलामाटे बुद्धिनाविपर्यासपणायी सावद्यकर्मग्यादरवुंनही अनेजोदय कोये तेवाकर्मकरवानुंउदय आव्युं तेवारेतेकर्मकरवानुं जोसंकल्पनयी तोतेकर्मनुं

बंधनपणनथी॥३१॥ संसारिकक्रियानोजो आचारछे तोपणज्ञानीने मुक्तिजावनी हा णनथी केमकेसंकल्पथीबंधनछे एवुंअन्यदर्शनवालानुंपणकेवुंछेतेजुओआगलकहेछे

कर्मण्यकर्म यः पश्ये दकर्मणि च कर्म्म यः॥ स बुद्धिमान्मनुष्ये पु स युक्तः कृतकर्म्मकृत् ॥ ३३ ॥ कर्मण्य कर्मवा कर्म कर्म्मण्य स्मिन्नुन्ने अपि॥ नोन्ने वा नंगवैचित्र्या दकर्मण्यपि नो मते॥३४॥

अर्थ ॥ जेकर्मनेविसर्जे अकर्मपणुदेखेछे अनेकर्मनथीकरतो अनेजाणेछे जेहुंकरुं वुं तेनेमाणसमां बुद्धिवंतकहियें तेकरवापणानाकर्मने अकरवापणुंदेखेछे ते पोतेपोता नेस्वरूपेंछे एमपणीनंगजाल प्रगटेछे ॥ ३३ ॥ निःकर्ममार्गेनेविषे नहीमान्युं तेअक रवुंथयुं अने अकरवापणेजेकरेछे तेनावेनांगाछे एमकरवानाविचित्र नांगाछे ॥३४॥

कर्म नैःकर्मवैषम्य मुदासीनो विन्नावयन्॥ज्ञानी न लिप्यते नोगैः पद्मपत्रमिवांनसा ॥ ३५ ॥ पापाकरणमात्राद्धि न मौनं विचिकि त्सया॥ अनन्यपरमात्मा स्यात् ज्ञानयोगी नवेन्मुनिः ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ उदासीनावबालो विचित्रपणेंकर्मनुं विषमपणुचिंतवे जेमकमलपत्रजल मांलेपातुंनथी तेमज्ञानीपुरुष नोगमांलेपातोनथी ॥ ३५॥ पापनकरवाथी कांइमुनि पणुआवतुनथी संशयरहितपणे पोतेजज्ञानयोगमय परमात्माथाय तेनेमुनिकहियें

विषयेषु न रागी वा द्वेषीवा मौनमश्नुते ॥ समं रूपं विदंस्तेषु ज्ञानयोगी नलिप्यते ॥३७॥ सतत्वचिंतयायस्या न्निसमन्वा गता इमे ॥ आत्मवान् ज्ञानवान्वेद धर्मब्रह्ममयोहि सः॥३८॥

अर्थ ॥ विषयनेविषे जेनेरागनथी तेमद्वेषपणनथी तेनेमुनिकहियें मध्यस्थपणे रूपादिकनेजाणतो जेज्ञानीयोगीतेने लेपलागतोनथी ॥ ३७ ॥ जेणेतत्वनीओलखा णवडे समताधारणकीधी तेनेज आत्मानीओलखाणथइ अनेतेजज्ञानी तथातेजध र्ममय तथाब्रह्ममयकेहेवाय॥ ३८ ॥

वैषम्यबीजमज्ञानं निघ्नंति ज्ञानयोगिनः॥ विषयांस्ते परिज्ञाय लोकं जानंति तत्वतः ॥३९॥ इतश्चापूर्वविज्ञाना च्चिदानंदविनोद तः ॥ ज्योतिष्मंतो नवंत्येते ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ संसारनुंविषमबीज जेअज्ञानछे तेबीजनेज्ञानयोगीबालीनाखेछे तथा

विषयादिकनेओलखीने तत्वथीलोकनास्वरूपनेजाणेछे ॥३९॥ तेअपूर्वेअनुभवथी अनेज्ञाननाआनंदमयविनोदथी महाज्योतिवंतथायअनेतेनापापज्ञानेकरीबलीजाय४०

तेजोलेश्याविवृद्धिर्या पर्यायकर्मवृद्धितः ॥ भाषिता भगवत्या दौ सेत्थंभूतस्य जायते॥४१॥ विषमेपि समेक्षी यः स ज्ञानी स च पंडितः॥ जीवन्मुक्तः स्थिरं ब्रह्म तथाचोक्तं परैरपि ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ दीक्षापर्यायनीवृद्धिथी ज्ञानसुखनीवृद्धिथायछे एमभगवतीआदेदेइने सूत्रोमांकयुंछे तेएवाप्राणीनेप्रगटथाय॥४१॥ विषमनेविषेजे समभावेजुए तेवाज्ञानीने पंडितकहियें वली जीवन्मुक्त अनेस्थिर तथाब्रह्मपणतेनेजकहियें ॥ ४२ ॥

विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि॥ शुनि चैव श्वपाके च पंडिताः समदर्शिनः ॥ ४३ ॥ इहैव तैर्जितः सर्गो येषांसाम्ये स्थितं मनः॥निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्मात् ब्रह्मणि ते स्थिताः॥४४॥

अर्थ ॥ तेमजपरदर्शनियेंपणकह्युंछेके हेअर्जुन विद्याविनयसहितजे ब्राह्मण जे गाय हाथी कुतरुं चंडाल एसर्वनेसमदृष्टियेंजुएछे तेनेपंडितकहियें ॥ ४३ ॥ एहवा जीवेंइहांवेठेंयकेज जगतसृष्टीनेजीतीलइने तेनुंमनसमतापाम्युं तेनिर्दोषपणेसम्यक् जेआत्मस्वरूप तेनिर्दोषछे तेनेपाम्योतेब्रह्मज्ञानेरह्यो एमजाणवुं ॥ ४४ ॥

न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियं ॥ स्थिरबुद्धिर संमूढो ब्रह्मविद्ब्रह्मणि स्थितः ॥ ४५ ॥ अर्वाग् दशायां दोषाय वैषम्ये सम्यदर्शनं॥निरपेक्ष मुनीनां तु रागद्वेषक्षयाय तत्॥४६॥

अर्थ॥जेरुडुंमलेहर्षनकरे अनेभुंडुंप्राप्तथयें शोकनधरे तेस्थिरबुद्धिवालो चतुरप्राणी ब्रह्मनोजाणते ब्रह्मज्ञानेरह्योछे एमजाणवुं॥४५॥हेवलीदशावालाने तोजेविषमने विषें समपणेजोवुं तेदोषनुंकारणछे अनेजेनिरापेक्षीमुनि तेनेतोविषमने समपणेजोवुं तेरागद्वेषनोक्षय करनारथायछे ॥ ४६ ॥

रागद्वेषक्षयादेति ज्ञानी विषयशून्यतां ॥ छिद्यते भिद्यते वा यं हन्यते वा न जातुचित् ॥ ४७ ॥ अनुस्मरतिनातीतं नैव कांक्षत्य नागतं ॥ शीतोष्णसुखदुःखेषु समो मानापमानयोः ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ रागद्वेषनाक्षयथी ज्ञानीमुनि विषयनीशून्यतापणाने पामेछे तेनेकोइछेदी

शकेनहीं कोइनेदीशकेनही कोइहणीशकेनही केमके तेपोतानो आत्माथात्मस्वरूपें मानेछे॥ ४ ७॥ केमकेतेज्ञानीपुरुष गइवस्तुनेसंभारेनही अनेअनागतवस्तुनेइछेनही शी तथने वलतथासुख अनेदुःख वलीमानअनेअपमान एसर्वने समपणेमानेछे॥ ४ ८॥

जितेंद्रियो जितक्रोधो मानमायानुपद्रुतः ॥ लोभसंस्पर्शरहितो वेदखेदविवर्जितः ॥ ४९ ॥ संनिरुध्यात्मनात्मानं स्थितः स्वकृ तकर्मभित् ॥ हठप्रयत्नोपरतः सहजाचारसेवनात् ॥ ५० ॥

अर्थ॥जेक्रोधरहित तथा मानमायानाउपद्रवें रहित अने लोभनास्पर्शेरहित वेदो दयरहित खेदरहितजेहोय तेनेजितेंद्रिकहियें ॥ ४९ ॥ तेआत्माएकरी आत्मानेरो धीरह्यो पोतानाकरया कर्मनेभेदतो कदाग्रहथीविरम्यो सजाविकथ्याचारने सेवतो॥ ५०

लोकसंज्ञाविनिर्मुक्तो मिथ्याचारप्रपंचहृत् ॥ उल्लसत्कंमक स्थानः परेण परमाश्रितः ॥ ५१ ॥श्रद्धावानाज्ञया युक्तः श स्त्रातीतोह्यशास्त्रवान्॥गतो दृष्टेषु निर्वेद मनिन्दुत पराक्रमः॥५२॥

अर्थ ॥ लोकसंज्ञाथी मुकाणो मिथ्यात्वथाचारनोटालनार योगस्थानकें उल्लसि तथयोछे एवोजेउत्कृष्टनावें आत्मानोआश्रितथयोछे ॥ ५१ ॥ तथाश्रद्धावंत आज्ञा युक्त अने भावाथअध्यवसायरूपजे शस्त्र तेथीवेगलोरहेलो अनेबाह्यशस्त्रथीरहित देखश्तापदार्थनेविषे वैराग्यवान वली बलवीर्यनेअणगोपवनार ॥ ५२ ॥

निक्षिप्तदंमो ध्यानाग्नि दग्धपापेंधनव्रजः ॥ प्रतिस्त्रोतोनुगत्वेन लोकोत्तरचरित्रभृत् ॥ ५३ ॥ लब्धान्कामान्बहिः कुर्व न्नकुर्व न्बहुरुपतां॥स्फारीकुर्वन् परं चक्षु रपरं च निमीलयन् ॥ ५४ ॥

अर्थ ॥ अने त्रणदंडरहित जेणे ध्यानरूपअग्नीएकरी पापरूपकाष्टनासमूहने बा ल्योछे जे सामेंप्रवाहे चालवेकरीने लोकोत्तरचरित्रनो धरनार ॥ ५३ ॥ तथा विषय सुखपामीने तेसुखदूरकरनार तथा मायाकपट अनेक्रोधादिकनें अणकरतोथको तेज्ञानचक्षुने विकस्वरकरतो अज्ञानरूप चक्षुने बंधकरतोथको ॥ ५४ ॥

पश्यन्नंतर्गतान् भावान् पूर्णभावमुपागतः ॥ भुंजानोध्यात्मसा म्राज्य मवशिष्टं नपश्यति ॥५५॥ श्रेष्ठोहि ज्ञानयोगोय माध्यात्म न्येव यज्जगौ ॥ बंधप्रमोक्षं भगवान् लोकसारे सुनिश्चितं ॥ ५६ ॥

अर्थ ॥ वलीजेअध्यात्मनावने देखतोथको पूर्णनावने पामेलो अध्यात्मनी ठकुरा इने नोगवतोथको अन्यपदार्थने नथीजोतो॥५५॥एउपरकह्यो तेउत्कृष्टज्ञानयोगछेए अध्यात्मग्रंथनेविषे बंध मोक्षपण नगवंतेनिश्चें आचारांगनालोकसार अध्ययने कह्युंछे

उपयोगैकसारत्वात् दाश्वसंमोहबोधनः ॥ मोक्षाप्तै युज्यते चैव तथाचोक्तं परैरपि ॥ ५७ ॥ तपस्विन्योधिको योगी ज्ञानिन्यो ध्य धिकोमतः॥ कर्मिन्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी नवार्जुन ॥५८॥

अर्थ ॥ मोक्षप्राप्तिनेविषे उपरकहेलोज्ञानयोग घटेछे केमके शीघ्रपणे ज्ञानजा गृत एहबोउपयोगजमात्र एकसारछे अनेअन्यदर्शनीएपण एमजकह्युंछे ॥.५७॥ तपसीथी योगीअधिकछे ज्ञानीथी अने राजाथीपण योगीनेमोटोकह्योछे तेमाटे भीरुजे अनर्जुनेकह्युंछेके हेअर्जुन तुमेपणयोगीथायो ॥ ५८ ॥

समापत्तिरिहव्यक्त मात्मनः परमात्मनि ॥ अन्नेदोपासनारूप स्ततः श्रेष्ठतरोह्ययं ॥ ५९ ॥ उपासना नागवती सर्वेन्योपि ग रीयसी ॥ महापापक्षयकरी तथा चोक्तं परैरपि ॥ ६० ॥

अर्थ ॥ माटेइहां आत्मानीसमाप्तिप्रगटेछे आत्मा तथा परमात्माए बेउनेविषे अनेदपणे सेवनरूपजेयोग तेजघणोजश्रेष्ठछे ॥ ५९ ॥ माटेसर्वथीमोटी अनेमोटा पापनेटालेएवीप्रनुनीसेवाछे अनेपरदर्शनीयेंपण एवुंजकह्युंछे ॥ ६० ॥

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनांतरात्मना ॥ श्रद्धावान् नजते यो मां स मे युक्ततमोमतः ॥६१॥ उपास्ते ज्ञानवान् देवं यो निरंज नमव्ययं ॥ स तु तन्मयतां याति ध्याननिर्धूतकल्मपः ॥ ६२ ॥

अर्थ ॥ सर्वयोगीमांपण अंतरआत्मायें नजोएवो श्रद्धावंतप्राणी तोतेहनेकहि येंजेमुजनेसेवे तेमुजसरखोपुरुषतोमयाय एमश्रीकृष्णअर्जुननेकहेछे ॥६१॥ ज्ञानवंत निरंजन अने अविनाशीदेवजाणीने जेपुरुषमनेसेवेछे तेतन्मयिपणेथायछे अने जे एमहाध्यानथी पापवालीनाख्याछे हेअर्जुन तेपुरुषमाहराख्पेंथायछे ॥ ६२ ॥

विशेषमप्यजानानो यः कुग्रहविवर्जितः ॥ सर्वज्ञं सेवते सोपि सामान्यं योगमास्थितः॥ ६३ ॥ सर्वज्ञो मुख्य एकस्तत् प्रतिप त्तिश्च यावता ॥ सर्वेपि ते तमापन्ना मुख्यं सामान्यतो बुधाः॥६४॥

अर्थ ॥ जेविशेषनेअणजाणतोछे तोपणजे कदाग्रहेंरहितछे अनेजेसर्वज्ञनेसेवेछे तेपण सामान्ययोगे आश्रितछे ॥ ६३ ॥ सर्वप्रमाणमां एकसर्वज्ञतोमुख्यछे तेहनी सेवाना करनारजेटलाछे तेसर्वेतेहिज सर्वज्ञनाभावनेपामे पणसर्वज्ञनुंमुख्यपणुं पंमितो सामान्यथकीकहेछे ॥ ६४ ॥

न ज्ञायते विशेषस्तु सर्वथा सर्वदर्शिभिः ॥ अतो न ते तमापन्ना विशेष्य भुवि केचन ॥ ६५ ॥ सर्वज्ञप्रतिपत्त्यंशा तुल्यता सर्वयोगिनां ॥ दूरासन्नादिभेदस्तु तद्भृत्यत्वं निहंति न ॥ ६६ ॥

अर्थ ॥ तेसर्वथाप्रकारें सर्वज्ञ सर्वदर्शीतेवडेपण विशेषतोजाणतोनथी तेथीते कोइ विशेषभूमिकाने पाम्यानथी एटले पृथ्वीमांकोइ विशेषजाणपणे सर्वज्ञपणुंपाम्यानथी ॥ ६५ ॥ सर्वज्ञपणानाजेप्रत्येक अंशछे तेसर्वयोगीनेसरिखाछे माटेढुकडा अनेवेगलापणाना भेदथी तेहनुंसेवकपणुं कांइहणातुंनथी ॥ ६६ ॥

माध्यस्थमवलंब्यैव देवतातिशयस्य हि ॥ सेवा सर्वै बुधैरिष्टा कालातीतोपि यज्जगौ ॥ ६७ ॥ अन्येषामप्ययं मार्गो मुक्ताविद्यादिवादिनां ॥ अभिधानादिभेदेन तत्वरीत्या व्यवस्थितः ॥ ६८ ॥

अर्थ ॥ माध्यस्थपणुं अवलंबीने एटलेदेवताना अतिशयनुं माध्यस्थपणुं धारीने सर्वपंमितेंसेवामानीछे कालथी अतीतछे तोपणएमकहेछे ॥ ६७ ॥ बीजापणमुक्तवादीनो अनेअविद्यादिकवादी जेपरदर्शनी तेनोपण आमार्गछे एटले पूर्वेकह्योतेमार्गछे जोपण नामादिकभेदेकरी कदापिजूदाछे तोपणतत्वरीतें जोतांएकजव्यवस्थाछे

मुक्तोबुद्धोर्हन्वापि य दैश्वर्येण समन्वितः ॥ तदीश्वरः स एव स्यात् संज्ञाभेदोत्र केवलं ॥ ६९ ॥ अनादिशुद्धइत्यादि र्योभेदो यस्य कल्प्यते ॥ तत्तत्तंत्रानुसारेण मन्ये सोपि निरर्थकः ॥ ७०॥

अर्थ ॥ तेव्यवस्थाकहीदेखाडेछे कोइदर्शनी मुक्तिकेहेछे कोइबुद्धकहेछे कोइक अर्हतकहेछे कोइकएश्वर्ययुक्त एटलेईश्वरकहेछे एसर्वसर्वज्ञनीसंज्ञानाभेदछे बीजुंकांइ नथी ॥ ६९ ॥ तेमजवली अनादिशुद्धईश्वरछे इत्यादिकभेदजे परदर्शनीओकल्पेछे तेभेदसिद्धांतने अनुसारेविचारीयें तोमानवा पणनिरर्थकछे इतिभावः ॥ ७० ॥

विशेषस्यापरिज्ञानाद् युक्तीनां जातिवादिनः ॥ प्रायोविरोधंत
श्चैव फलाभेदाच्च भावतः ॥ ७१ ॥ अविद्या क्लेशकर्मादि यतश्च
भवकारणं ॥ ततः प्रधानमेवैत त्संज्ञाभेदमुपागतं ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ केमकेजे विशेषनेनहिजाणवाथी वक्तियुक्तीनाजातिवचनथी अने प्रायेंविरोधयकी भावथीफलनोअभेदछे एहेतुमाटे ॥७१॥ जेअविद्या क्लेशअने कर्मइत्यादिकजे संसारनाकारणप्रगटे तेकेटलाएक दर्शनीओजुदाजुदाकहेछे एटलेकोइअविद्या कोइ क्लेश कोइकर्मएमसंज्ञायें करीभेदकहेछे पणएत्रणेप्रधानपणे एकजछे ॥ ७२ ॥

यस्यापि यो परोभेद श्चित्रोपाधिस्तथा तथा॥ गीयतेऽतीतहेतु
भ्यो धीमतां सोप्यपार्थकः ॥ ७३ ॥ ततःस्थानप्रयासोय यत्त
भेदनिरूपणं ॥ सामान्यमनुमानस्य यतश्च विषयोगतः॥७४॥

अर्थ ॥ एअविद्यादिकत्रणनावली बीजाभेद कल्पनायेंअनेकथायछे तेथीअनेकप्रकारनी उपाधिनीपजे तेमतेमजाणियेंजेहेतुनोअभावथायछे पणतेउपाधिभेद पंडितनेनिरर्थकछे एमजाणवुं ॥ ७३ ॥ तेथीआस्थाननोजेप्रयास तेभेदनुंनिरूपणकरवाने अनुमाननोविषय तेसामान्यजाणवो केमके ज्यांअनुमान प्रमाणकरियें त्यांसामान्यपणे उपयोगीछेपतेवारें अनुमानविषयनो अभावथाय ॥ ७४ ॥

संक्षिप्तरुचिजिज्ञासो विंशेषान्न बलं बलं ॥ चारिसंजीविनीचा
र ज्ञातादत्रोपयुज्यते ॥७५॥ जिज्ञासापि सतां न्याय्या यत्प
रेपि वदंत्यदः ॥जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्त्तते॥७६॥

अर्थ ॥ जेम संजीवनीनामाचारोजे घासबुटीतेने ओलखनारी एकमोटीस्त्रीयें ते बुटीनेयोगें बीजीनानीस्त्रीनाभरतारने पशुअवस्थामांथी पुरुषवनाव्यो तेम संक्षेपरूचीवालो विशेषबलवानकेवारेंकेवाय जेवारेंतेनीप्रीति साचेसाचीहोय तेवारेंकहेवाय पणसाचीप्रीतीविनानुं विशेषबलतेबलमांनगणाय ॥७५॥ माटे एत्रणजेकामादियोगतेनेविषे सत्पुरुषेंजाणपणुंराखवुं उचितछे परदर्शनीनुं केवुंपणएवुंजछे हेअर्जुन जे पुरुज्ञानयोगनेजाणवाइच्छे तेपुरुषपरमात्मानी दिशानेपामेछे ॥ ७६ ॥

आर्तोजिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी चेति चतुर्विधाः॥उपासकास्त्रयस्त
त्र धन्या वस्तुविशेषतः ॥ ७७॥ ज्ञानी तु शांतविक्षेपो नित्यभ
क्तिर्विशिष्यते॥अत्यासन्नोह्यसौ भर्तु रंतरात्मा सदाशयः॥७८॥

अर्थ ॥ एकदुःखी बीजोजाणवानी इच्छावालो त्रीजोधननोअर्थी अने चोथोज्ञानी एचारप्रकारना हेअर्जुन मारासेवकोंछे पणतेमध्ये एकधनार्थीविनाजे त्रीजात्रण जातना सेवकतेवस्तुतत्वनाजाणछे माटेधन्यछे वखाणवायोग्यछे ॥ ३३ ॥ एत्रणने धन्यकह्यातेमां पण जेनोविकृपशम्योछे अने नित्यजकिवंत एहवोज्ञानीपुरुषजे चोथो तेमोटोजाणवो तेज्ञानीअमारीपासे अत्यंतनजीकरहेछे माटेश्रेष्ठछे केमकेअंतरा त्मायेवर्त्तेछे अनेतेनाआशयनिर्मलछे तेमाटे ॥ ३७ ॥

कर्मयोगविशुद्धस्तद् ज्ञाने युंजीत मानसं ॥अज्ञश्च श्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति॥ ७९ ॥निर्ममः स्थिरनासाग्र दत्तदृष्टि र्व्रते स्थितः ॥ सुखासनः प्रसन्नास्यो दिशश्चानवलोकयन् ॥ ८० ॥

अर्थ ॥ हेअर्जुन कर्मयोगें विशुद्धथको तेप्राणी ज्ञानमांपोतानुं मनजोडेछे अ नेहेअर्जुन एकमूर्खबीजो श्रद्धारहित अनेत्रीजो संशयभरेलोमाणस एत्रणेविनाश पामेछे ॥ ७९ ॥ निर्मम नाशिकानाअग्रभागनेविषे दृष्टिराखीने स्थिररहेनार तथा निरंतर व्रतमांरहेनार एहवोसुखआसननेवेगे वलीप्रसन्नमुखछे जेहनो अने एकदृष्टिरा खनार आडुंअवलुंनहीजोनार ॥ ८० ॥

देहमध्यशिरोग्रीव मवक्रं धारयन्बुधः ॥ दंतैरसंस्पृशन् दंतान् सुश्लिष्टाधरपल्लवः ॥ ८१ ॥ आर्त्तरौद्रे परित्यज्य धर्मे शुक्ले च दत्तधीः ॥ अप्रमत्तो रतो ध्याने ज्ञानयोगी भवेन्मुनिः ॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ केड मस्तकअने कोटतेने पांसराधरतो एटले शरीरनी चपलाइवांकाइर हित एहवोडाह्यो दांतेकरीदांतने अणफरसतो एटले स्पर्शकरतोनथी अने जेनाहोठ पल्लववेगरुडीरीतेंमलेलाहोय ॥८१॥ तथा आर्त्तरौद्रध्यानछांडीने धर्मशुक्लध्यानमांबु द्धिदीधीछे अनेजावेअप्रमत्तपणें ध्यानमांरक्तथको एवोजेमुनि तेनेज्ञानयोगीकेहवो

कर्मयोगं समभ्यस्य ज्ञानयोगसमाहितः ॥
ध्यानयोगं समारुह्य मुक्तियोगं प्रपद्यते॥८३॥

अर्थ ॥ तेमुनिकर्मयोगनो अभ्यासकरी चढवानेवजमालथइ ज्ञानयोगरूपदोरडुं झालीतमाधिपणे ध्यानयोगनीशरणीयेंचडीने मुक्तियोगरूपमंदीरनेपामे ॥ ८३ ॥ इतियोगाधिकारः पंचदशमोसमाप्तः

स्थिरमध्यवसानं य त्तद्ध्यानं चित्तमस्थिरं ॥ भावना वा प्यनुप्रे
क्षा चिंता वा त त्रिधा मतं॥१॥मुहूर्त्तांतर्भवेद्ध्यान मेकार्थे मन
सः स्थितिः ॥ वह्वर्थसंक्रमे दीर्घाप्यविछिन्ना ध्यानसंततिः ॥ २ ॥

अर्थ ॥जेचित्तचपलछे पणतेचित्तनेजेस्थिरपणे चित्तनाअध्यवसायने प्रगटकरेतेवारें तेनेध्यानयोगीकह्यिं एकभावना वीजीअनुप्रेक्षा अनेत्रीजो चिंतानुध्यानएत्रणप्रकारें चित्तचपलथायछे ॥ १ ॥ अंतर्मुहूर्त्तध्यानहोय पणजिहां एकगामें एकअर्थनेविषे घणाअर्थनुं संक्रमणथाय एवीमननी स्थितिहोय तिहांध्याननी अविछिन्नदीर्घपणे परंपराथाय तिहांकांइअंतर्मुहूर्तनो नियमनथी ॥ २ ॥

आर्त्तं रौद्रंच धर्म्मं च शुक्लं चेति चतुर्विधं॥ तत्स्याभेदाविह द्वौ
द्वौ कारणं भवमोक्षयोः॥ ३ ॥ शब्दादीनामनिष्टानां वियोगा
संप्रयोगयोः॥ चिंतनं वेदनायाश्च व्याकुलत्वमुपेयुषः ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ आर्त्तरौद्रधर्मनेशुक्ल एचारध्याननाभेदछे तेमध्येप्रथमनावेध्यानते संसारनाकारणीकछे अने पाछलावेध्यानते मुक्तीनाकारणवाचीछे ॥ ३ ॥ तेमांप्रथम आर्त्तध्यानना चारभेदकहेछे प्रथमअनिष्टजेशब्दादिक तेनोवियोगवांछे केरखेअनिष्टनोसंयोगथने तेमअनिष्टमलेजे पीडाथायतेनुं चिंतनकरेतेथीव्याकुलथाय॥४॥

इष्टानां प्रणिधानं च संप्रयोगवियोगयोः ॥ निदानचिंतनं पाप
मार्त्तमित्थं चतुर्विधं ॥ ५ ॥ कापोतनीलकृष्णानां लेश्यानामत्र
संभवः ॥ अनतिक्लिष्टभावानां कर्म्मणां परिणामतः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ वीजोभेद इष्टनुंचिंतनकरे एटलेरखेइष्टवस्तुना संयोगनोवियोगथइजाय त्रीजोनियाणाकरे चोथुंरोगनाऔषधनीचिंताकरे एचारआर्त्तध्याननाप्रकारछे ॥ ५ ॥ एमध्ये कापोत नील कृष्ण एत्रणलेश्यानोसंभवछे केमके जेमांअतिक्लिष्टभावनानथी कोइककर्मनीपरिणतीना परिणामेंकरी एत्रणलेश्यानोसंभवछे ॥ ६ ॥

क्रंदनं रुदनं प्रोच्चैः शोचनं परिदेवनं ॥ ताडनं लुंचनं चेति लिं
गान्यस्य विदुर्बुधाः ॥ ७ ॥ मोघं निंदन्निजं कृत्यं प्रशंसन् पर
संपदं ॥ विस्मितः प्रार्थयन्नेताः प्रसक्तश्चैव दुर्जनः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ वकोरकरवो उंचेस्वरेरडवुं शोचनाकरवी नामदइनेरडवुं मारवुंमाथाना

वालतोऽवा इत्यादिकने पंडितआर्त्तध्याननां लक्षणकहेछे ॥ ७ ॥ अमेमंदवुद्धिछैयें एमकहीने पोतानुंकार्यनिंदे अमेशुंपालीशुं मुक्तिमार्गतोमोहोटोछे एमप्रशंसाकरे एम विस्मितथको लोकपासे मांगतोफरे इत्यादिकदुर्जननीरीतछे ॥ ८ ॥

प्रमत्तश्चेंद्रियार्थेषु गृद्धो धर्म्मपराङ्मुखः ॥ जिनोक्तमपुरस्कुर्व न्नार्त्तध्याने प्रवर्त्तते ॥ ए ॥ प्रमत्तांतगुणस्थानानुगमे तन्महात्म ना ॥ सर्वप्रमादमूलत्वा त्याज्यं तिर्य्यग्गतिप्रदं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेप्रमादीहोय विषयमांलीनहोय धर्मथीवलटोहोय जिनवाणीनेगोपवे तेवोपुरुष आर्त्तध्यानमांप्रवर्त्ते ॥ ए ॥ माटेएध्यानउपलां गुणठाणापामतांयकां प्रमा दमांपाडे अनेएध्यान छठागुणठाणालगेंरहे माटेमोटामुनियें सर्वप्रमादनुंमूल तथा तिर्यंचगतिपमाडे एवुंजाणीनेएध्याननेछोडवुं ॥ १० ॥

निर्दयं वधबंधादि चिंतनं निबिडक्रुधा ॥ पिशुनासत्यमिथ्या वाक् प्रणिधानं च मायया ॥ ११ ॥ चौर्य्यधीनिरपेक्षस्य तीव्रक्रो धानिलस्य च ॥ सर्वाभिशंकाकलुषं चित्तं च धनरक्षणे ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ हवेजेनिर्दयहोय जीवनोवध बंधनादिकचिंतवे आकरो क्रोधीहोय चाडी ओहोय जुगेबोले मिथ्यात्वनुं वचनबोले मायाकपटधरे ॥ ११ ॥ चोरीकरनार प रमार्थरहित क्रोधरूपअग्नियें धमधमतोरहे धनसंचयकरनार धननेफाटीराखे पण शंकायेंमेलुमनराखनार एटलेरखेने कोइमारुंधनजुए अनेलेइजाय ॥ १२ ॥

एतत्सदोषकरण कारणानुमतिस्थिति ॥ देशाविरतिपर्यंतं रौ द्रध्यानं चतुर्विधं ॥ १३ ॥ कापोतनीलकृष्णानां लेश्यानामत्र संभवः ॥ अतिसंश्लिष्टरूपाणां कर्मणां परिणामतः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एरीतेंएध्याननेकरवे करावबे अने अनुमोदवानीस्थितियें करीएध्यान दो षनुंकारणछे एध्यानचोथा अविरतिगुणठाणा अनेपांचमां देशविरति गुणठाणासुधी होयएरीतेंरौद्रध्यानना चारभेदकह्या ॥ १३ ॥ कापोत नीलअनेकृष्ण एत्रणलेश्यानो इहांसंभवछे एअति संक्लिष्टरूपजे कर्मतेनापरिणामथीहोयछे ॥ १४ ॥

उत्सन्न बहुदोषत्वं नानामरणदोषता ॥ हिंसादिषु प्रवृत्तिश्च कृ त्वाघं स्मयमानता॥१५॥ निर्दयत्वाननुशयो बहुमानः परापदि॥ लिंगान्यत्रेत्यदोधीरै स्त्याज्यं नरकदुःखदं ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ एप्रायें घणादोषपणुंकारणछे नानाप्रकारना जीवनेमारवाना दोषेंकरी हिं सादिकमां प्रवृत्तिथाय पापकरीने खुशवक्तीपणुंमाने ॥ १५ ॥ निर्दयपणुं पश्चात्ता पपणुं परआपदार्थें राजीपणुं अनेमहाविषयीपणुं एचिन्हेकरी एध्याननरकना दुःख नोआपनारोछे माटेएध्यानने छांडवो ॥ १६ ॥

अप्रशस्ते इमे ध्याने दुरंते चिरसंस्तुते ॥ प्रशस्तं तु कृताभ्या सो ध्यानमारोढुमर्हति॥१७॥ भावनादेशकाले च स्वासनाल्लं वनक्रमात् ॥ ध्यातव्यध्यानानुप्रेक्षा लेश्यालिंगफलानि च॥१८॥

अर्थ ॥ एवांएबेध्यानते महानिर्बलछे एनोघणो परिचयकरियें तोतेथीकम्वा विपाकप्रगटे माटेडाह्यापुरुषें अभ्यासकरतां उज्वलाध्याने चढवोयोग्यछे ॥ १७ ॥ हवेधर्मध्यानकहेछे देशकालजोइने शुभभावनाकरवी पोतानीसत्ताना आलंबनना क्रमथी ध्येय ध्याता अनेध्याननी अनुप्रेक्षाते शुभलेश्याना चिन्हनुंफलछे ॥ १८ ॥

ज्ञात्वा धर्मं ततोध्याये अतस्त्र स्तत्र भावनाः ॥ ज्ञानदर्शनचारि त्र वैराग्याख्याः प्रकीर्तिताः ॥१९॥ निश्चलत्वमसंमोहो निर्जरा पूर्वकर्मणां॥संगाशंसा भयोछेदः फलान्यासां यथाक्रमात्॥२०॥

अर्थ ॥ धर्मनेजाणीपछे ज्ञानभावना दर्शनभावना चारित्रभावना अने वैराग्य भावना एचारभावनाने धर्मजाणी ध्याववी ॥ १९ ॥ तेमां ज्ञानभावनाथी निश्चलपणुंथाय अनेदर्शनभावनाथी अमूढपणुंथाय वलीचारित्रभावनाथी पूर्वकर्म नीनिर्जराथाय अने वैराग्यभावनाथी स्त्रियादिकनोसंग तथा पुद्गलनीइछा अनेभय तेनोउछेदथाय एरीतेंएचारभावनाना फलजाणवा. ॥ २० ॥

स्थिरचित्तः किलैताभि र्याति ध्यानस्य योग्यतां ॥ योग्यतैव हि नान्यस्य तथाचोक्तं परैरपि ॥२१॥ चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमा थि बलवत् दृढं ॥ तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करं॥२२॥

अर्थ ॥ एभावनामां जेनुंचित्तस्थिरहोय तेनेध्यानमांस्थिरतारहे माटेतेप्राणी ध्याननी योग्यतापामे पणबीजोकोइनपामे तेमजपरदर्शनमांपणकह्युंछे तेकहेछे ॥ २१ ॥ अर्जुनपुछेछे हेकृष्ण मनतोचंचलछे अनेशत्रुना सैन्यसरखुंदृढछे तेमनने निग्रहकुंशीरीतेकरुं केमके पवननीपेठेमनदुष्कर अनेअग्राह्यछे ॥ २२ ॥

असंशयं महाबाहो मनोदुर्निग्रहं चलं॥ अभ्यासेन च कौंतेय वै
राग्येण चगृह्यते ॥ ७३ ॥ असंयतात्मनो योगो दुःप्राप्य इति
मे मतिः ॥ वश्यात्मना तु यतता शक्योवाप्तुमुपायतः ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ श्रीकृष्णकहेछे हेमहाबाहोके० मोटीछेबाहुजेनी एवाहेअर्जुन खरेख
रुंमनचपलछे तेनोनिग्रहकरवो तोकठणछे तोपणहेकुंतीनापुत्र हेअर्जुन अभ्यास
अने वैराग्येंकरीने मनवशथाय एवुंछे. ॥ २३ ॥ हेअर्जुन जेनेपोतानुं आत्मावश
नथी एवोजेपुरुष तेनेध्यानयोगपामवो दुःकरछे एवीमारीमतिछे पणजेणेआत्माने
वशकीधोछे तेनेउद्यमेंकरी अने अभ्यासेंकरी ध्यानयोगपामवो सुलभछे ॥ २४ ॥

सदृशप्रत्ययावृत्या वैतृष्ण्याद्बहिरर्थतः॥ एतच्च युज्यते सर्वं भा
वनाभावितात्मनि ॥ ७५ ॥ स्त्रीपशुक्लीबदुःशील वर्जितस्थान
मागमे ॥ सदा यतीनामाज्ञप्तं ध्यानकाले विशेषतः ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ सरखोप्रत्ययजे विश्वासतेणेसहित अनेबाह्यपदार्थनी तृष्णायेंरहित तथा
शुद्धभावनायेंभावितपुरुषने एआत्मावशकरवुं सर्वप्रकारेंघटेछे॥ २५॥ स्त्री पशु नपुंसक
दुःशीलाइ रहित एहवीवस्तीमुनियें सेववी एमआगममां मुनिनेसदाय प्रभुएआज्ञा
करीछे तेमांपण ध्यानवेलायेंतो विशेषपणे कहिछे एमजाणवुं ॥ २६ ॥

स्थिरयोगस्य तु ग्रामे विशेषः कानने वने॥ तेन यत्र समाधानं
स देशो ध्यायतो मतः॥ ७७ ॥ यत्रयोगसमाधानं कालोपीष्टः
स एव हि॥ दिनरात्रिक्षणादीनां ध्यानिनोनियमस्तु न ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ स्थिरयोगवालायें गाममां अने विशेषेकरीने वगडामां तथा वनमांजिहां
चित्तसमाधानीमांरहे तेस्थानकेंध्यानकरवुं ॥ २७ ॥ जेवखतयोगस्थिररहे तेकाल
रुडोतमजवो पणध्यानवालाने दिवस अथवा रात्रीनो नियम नथी ॥ २८ ॥

यैवावस्था जिता या तु न स्याद्ध्यानोपघातिनी॥ तया ध्यायेन्निष
ण्णो वा स्थितो वा शयितोथवा ॥ ७९ ॥ सर्वासु मुनयोदेशकाला
वस्थासु केवलं ॥प्राप्तास्तन्नियमो नासां नियता योगसुस्थिता॥३०

अर्थ ॥ ध्यानवंतमुनिने जेअवस्थायेंजेठेकाणे अने जेवेलायें ध्यानने विघ्नघातन
लागे तेठेकाणे तेवेलायें तेरीतेंबेठा उभा अथवा सुताध्यानकरवुं ॥२९॥सर्वदेशकाल
अवस्थानेविषेरह्याजे मुनितेनेकांइनियमनथी केमकेतेनियतपणेयोगमांस्थिररह्यावे

वाचना चैव पृच्छा च परावृत्यनुचिंतनं ॥ क्रिया चालंबनानीह स धर्मावश्यकानि च ॥ ३१ ॥ आरोहति दृढद्रव्या लंबनोविषमं पदं ॥ तथा रोहति स ध्यानं सूत्राद्यालंबनाश्रितः ॥ ३२ ॥

अर्थ ॥ वाचना पृछना परावर्त्तना अनेअनुप्रेक्षा एधर्मना आलंबन इहांकह्या ते अवश्यकरणीछे ॥ ३१ ॥ जेप्राणी खरीवस्तुनो आलंबकछे तेप्राणी कठणठेकाणेप णजेमचडे तेमजेजैनसूत्रादिकनो जेआलंबकछे तेप्राणी रुडेध्यानेपण चढे ॥ ३२ ॥

आलंबनादरोद्भूत प्रत्यूहक्षययोगतः ॥ ध्यानाद्यारोहणभ्रंशो योगिनां नोपजायते ॥ ३३ ॥ मनोरोधादिको ध्यानप्रतिपत्ति क्रमो जिने ॥ शेषेषु तु यथायोग समाधानं प्रकीर्तितं ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ आलंबनना आदरथी प्रगटथोजे विघ्ननोक्षय तेनायोगथी ध्यानरूपपर्वत उपरचढतां योगीश्वरने भ्रष्टपणुं थतुंनथी ॥३३॥ योगनिरोधध्यानतो केवलीनेछे मन रोधकरण इत्यादि अनुक्रम जिनमतमांछे बाकी बीजादर्शनमांतो जेम नजरमांआवे तेमयोगनुंसमाधानकरयुंछे ॥ ३४ ॥

आज्ञापायविपाकानां संस्थानस्य च चिंतनात् ॥ धर्मध्यानोपयुक्तानां ध्यातव्यं स्याच्चतुर्विधं ॥३५॥नयभंगप्रमाणाढ्यां हेतूदाहरणान्वितां ॥ आज्ञां ध्याये जिनेंद्राणा मप्रामाण्याकलंकितां ३६

अर्थ ॥ आज्ञा अपाय विपाक अने संस्थान एचारभेदना चिंतनथकी धर्मध्यान वालायें धर्मध्यानकरवुं ॥ ३५ ॥ सातनय सप्तभंगी चारप्रमाणसहित तथाहेतु उदा हरणेसहित अनेअप्रमाणरूपदूषणेंरहितएवीजिनेश्वरनीआज्ञाध्याववीएप्रथमभेद

रागद्वेषकषायादि पीडितानां जनुष्मतां ॥ ऐहिकामुष्मिकांस्तांस्ता न्नानापायान्विचिंतयेत् ॥३७॥ ध्यायेत्कर्मविपाकं च तं तं योगानुभावजं ॥ प्रकृत्यादिचतुर्भेदं शुभाशुभविभागतः ॥ ३८ ॥

अर्थ ॥ जेजीव राग द्वेष कषायवडेपीडायाछे तेने आलोकने परलोकसंबंधीक ष्टतेबीजेपाइये चिंतवे ॥ ३७ ॥ जेयोगनाअनुभवथीथयुं अने प्रकृतिस्थिति रस प्रदेशनाबंधथी नीपनुं एहवोजेकर्मनोविपाक तेने शुभाशुभवेंहेचणथीध्यावे ॥३८॥

उत्पादस्थितिभंगादि पर्यायैर्लक्षणैः पृथक् ॥ भेदैर्नामादिभिर्लो
क संस्थानं चिंतयेद् भृतं ॥ ३९ ॥ चिंतयेत्तत्र कर्तारं भोक्तारं नि
जकर्मणां ॥ अरूपमव्ययं जीव मुपयोगस्वलक्षणं ॥ ४० ॥

अर्थ ॥ उत्पाद व्यय अने ध्रुवकालतथाभंगादि पर्यायलक्षणेकरी जुदाजुदाभेदें नामस्थापना द्रव्यभावभेदेंकरी नेचउदराज्यलोकनुं संस्थानधारीनेचिंतवे ॥३९॥ तिहांपोतानाकर्मनो कर्त्ताभोक्ता आत्माछे एमचिंतवें एजीवअरूपी अविनाशी अनेउ पयोगलक्षणेयुक्तछे एमचिंतवें ॥ ४० ॥

तत्कर्मजनितं जन्म जरामरणवारिणा ॥ पूर्णं मोहमहावर्त्त का
मौर्वानलभीषणं ॥ ४१ ॥ आशामहानिलापूर्णं कषायकलशो
च्छलत् ॥ असद्विकल्पकल्लोल चक्रं दधतमुद्धतं ॥ ४२ ॥

अर्थ ॥ हवेकर्मजनितरूप समुद्रवखाणेछे तेजन्मजरा अने मरणरूप जलें पूर्णभर्योछे तथा मोहरूपमोटा आवर्त्त तद्रूपभमरी अने कामरूपवडवानलें करीभ यंकर ॥ ४१ ॥ आशारूप प्रचंडवायुयें भरपूर कषायरूप चारकलशायेंयुक्त अने मा ठाविकल्परूपमहाउद्धत कल्लोलजिहांउछलेछे एवोभवसमुद्र भयंकरछे ॥ ४२ ॥

हृदिस्रोतसिकावेला संपातदुरतिक्रमं ॥ प्रार्थनावल्लिसंतानं
दुःपूरविषयोदरं ॥ ४३ ॥ अज्ञानदुर्दिनं व्याप द्विद्युत्पातोद्भव
भयं ॥ कदाग्रहकुवातेन हृदयोत्कंपकारिणं ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ वलीतेसमुद्रमां मनमां श्रोतसिका एटलेजे हर्षतथाशोकनुंभरावबुं तेरूपवे लाएटलेभरतिकहियें माटे जोएमांपडयोतो पछीनिकलवुंघणुकठणछे अने याचनारूप सेवालनो समूहछे जेनेविषे तथादुःखेपूर्णथाय एवोविषयरूप मध्यभागछेजेनुं ॥४३॥ जिहांअंधकारेंव्याप्युं एवुंअज्ञानरूपवादलुंछे तथा जेमांआपदारूप वीजलीपडवानो भयछे अने कदाग्रहरूपपवन उद्भवययोछे तेणेकरीने देखताज्ञान नजरवालानुंतो हैयुंधुजेएहवो कर्म्मजनितसमुद्रजिहांमणोछे ॥ ४४ ॥

विविधव्याधिसंबंध मत्स्यकच्छपसंकुलं ॥ चिंतयेच्च भवांभो
धि चलद्दोपाद्रिदुर्गमं ॥ ४५ ॥ तस्य संतरणोपायं सम्यक्त्व
दृढबंधनं ॥ बहुशीलांगफलकं ज्ञाननिर्यामिकान्वितं ॥ ४६ ॥

अर्थ ॥ जेसमुद्र विविधजातिनाजेरोग तेनोजेसंबंध तेरूपीमत्स्य अने कादवादिकेकरी आकुलछे तथा जेमांचंचलता शून्यता अने गर्वतेरूपजेदोषतद्रूप महोटापर्वतछे एवो जवरूपसमुद्रनेचिंतवे ॥ ४५ ॥ हवेएवासमुद्रथीतरवानोउपाय तेसमकेतरूप दृढबंधनछेजिहां अने जेनेअढारहजार शिलांगरथरूपपाटीयां जडयांछे तथा तेजिहाज ज्ञानरूपचलावनार निर्यामकजेनाखवा तेणेसहितछे ॥ ४६ ॥

संवरास्ताश्रवछिद्रं गुप्तिगुप्तसमंततः ॥ आचारमंडपोद्दीप्त प वादोत्सर्गभूद्वयं ॥४७॥असंख्यै र्दुर्धरैर्योधै र्डुःप्रधृष्यं सदाशये॥ सद्योगरूपस्तंभाग्र न्यस्ताध्यात्मसितांशुकं ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ वलीतेजिहाजनापाटीआनेविषेरह्याजे छिद्रोतेहनेसंवररूपीकीचक तद्रूपतेलवडेपुरयांछे तथा मनोगुप्तिरूप गुप्तसुकानतेमार्गवतावेछे तेणेकरीतेवाहण समो चालेछे तथा आचाररूपमंडपेशोजतोयको वली तेवाहाणमांउत्सर्ग अने अपवादरूप वेजातनुंमालजरेलुंछे ॥ ४७॥ जेवाहणमां शुद्धअध्यवसायरूप घणावलवंतसुजटो तेराग द्वेषादिशत्रुने डुःप्रधृष्यछेएवोछे तथा जलोजेयोग तेरूपकुवजेथंज तेनाउपर अध्यात्मरूप उज्वलसढखेंच्योछेजिहां ॥ ४८ ॥

तपोनुकूलपवनो द्भुतसंवेगवेगतः ॥ वैराग्यमार्गपतितं चारित्रं वहनं श्रिताः ॥ ४९ ॥ सद्भावनाख्यमंजूषा न्यस्तसच्चित्तरत्नतः ॥ यथा ऽविघ्नेन गछंति निर्वाणनगरं बुधाः ॥५०॥

अर्थ ॥ तेसमयी तपस्यारूप अनुकूल पवनप्रगटयोछे अने तेपवनेकरी संवेगगुणरूपवेगप्रगटयोछे तेणेकरी वैराग्यमार्गमां तेवाहाणचालतुंजायछे एहवुंचारित्ररूप जे वाहाणतेमांबेठायका मुनिराजोते ॥ ४९ ॥ रुडीजावनारूप मंजुषामां गुप्तपणेछुन चित्तरूपीरत्नस्थाप्युंछे जेणेएवामुनिनिर्विघ्नपणे मुक्तिरूपनगरनेपामेछे ॥ ५० ॥

यथा च मोह पल्लीशो लब्धव्यतिकरे सति॥संसारनाटकोच्छेदा शंकापंकाविलो मुहुः ॥ ५१ ॥ सज्जीकृतस्वीयभटो नावं डुर्बुद्धिनामिकां ॥ श्रितो डुर्नीतिनौवृंद रूढशेषभटान्वितः ॥ ५२ ॥

अर्थ ॥ एवातनीखबर चोरनोराजाजे मोहरूपिओपल्लीपति तेनेपडी तेवारेंते मोहजेचोरनोराजाछे तेणेविचार्युंजे. रखेनेसंसाररूपनाटकनो उच्छेदथइजाय एवी शंकारूपजेकचरो तेमांलेपाणोयको ॥ ५१ ॥ तेमोहराजा पोतानासुजटोने सज्जक

रीने डुर्बुद्धिनामे जेनावातेमां पोतेवेगथको डुष्टाचाररूपबीजाजेनावत्ते तेमांवलीवी जायणात्सुनटोने वेसारीनेपोतें नवलमुद्दमांश्राव्यो ॥ ५२ ॥

आगत्यथधर्मेश भटांचे रणमंरूपं ॥ तत्वचिंतादिनाराच सज्जीनूते समाश्रिते ॥ ५३ ॥ मिथोलग्ने रणावेशे सम्यग् द शैनमंत्रिणा ॥ मिथ्यात्वमंत्रिविषमा प्राप्यते चरमा दशा॥५४॥

अर्थ ॥ तेवखते धर्मराजाना सुनटोनाजेयोकते मोहनातैन्यनेजोइने रणमंडप नूमीमांश्रावी तत्वचिंताप्रमुखजे वाहणतेलेइने सज्जथयाथका ॥ ५३ ॥ तेपठीवेव नोमांहोमाहे युद्धचालवालाग्युं तेमांसम्यग्दृष्टिजेप्रधान तेणेमिथ्यात्वप्रधाननेविष मचरमदशाके० मरणदशापमाडी एटले मृत्युप्रायकीधोते ॥ ५४ ॥

लीलयैव निरुध्यंते कषायचरटाअपि ॥ प्रशमादिमहायोधैः शीलेन स्मरतस्करः ॥ ५५ ॥ हास्यादिषट्कलुंटाक वृंदं वैरा ग्यसेनया ॥ निद्रादयश्च ताड्यंते श्रुतयोगादिभिर्भटैः ॥५६॥

अर्थ ॥ अने उपशमादिक महासुनटे लीलायेकरीने कषायरूप चोरटानेरोक्या तथा शीलसुनटे कंदर्परूपचोरनेजीत्यो ॥ ५५ ॥ वैराग्यनीसेनायेकरीने हास्यादिक जे वचोरतेने जीत्या अने ज्ञानयोगादिकजेसुनटो तेणेनिद्रादिकने मारीकाढ्या५६॥

भटाभ्यां धर्मशुक्लाभ्या मार्त्तरौद्राभिधौ भटौ ॥ निग्रहेणेंद्रियाणां च जीयते ऽाग्सयमः ॥ ५७ ॥ क्षयोपशमनश्चक्षु र्दर्शनावरणा दयः ॥ नश्यत्यशातसैन्यं च पुण्योदयपराक्रमात् ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥ धर्मध्यानअनेशुक्लध्यान एबेसुनटे आर्त्तअने रौद्र एबेसुनटनेहण्या तथा पांचइंद्रियनानिग्रहरूपसुनटें उतावलेकरी असंयमरूपसुनटनेजीत्यो ॥ ५७ ॥ दर्श नावर्णिना क्षयोपशमसुनटें चक्षुदर्शनावरणादिक योद्धायोनेमार्या वलीपुण्योद यनापराक्रमथी अशातारूपसैन्य नासीगयुं ॥ ५८ ॥

सद्देषगजेंद्रेण रागकेसरिणा तथा ॥ सुतेनमोहनूपोपि धर्मनूपेन हन्यते ॥ ५९ ॥ ततः प्राप्तमहानंदा धर्म्मे नूपप्र सादतः ॥ यथाकृतार्था जायंते साधवो व्यवहारिणः॥ ६० ॥

अर्थ ॥ हवे तेवटेद्वेषरूपहाथीयेंवेगो तथा रागरूपसिंहेंसहित एहवो मोहराजा

तेनेपण धर्मराजायें हण्यो ॥ ५९ ॥ तेवारपछी साधुरूपी व्यवहारिया धर्मराजानो प्रसादजेपसाय तेथीकृतार्थथइ आनंदपामी सुखेपोतानो व्यापारकरतायया॥६०॥

विचिंतयेत्तथासर्वं धर्मध्याननिविष्टधीः ॥ इहगन्यदपि न्यस्त मर्थजातं यदागमे ॥ ६१ ॥ मनसश्चेंद्रियाणां च जयाद्योनिर्वि कारधीः ॥ धर्मध्यानस्य स ध्याता शांतोदांतः प्रकीर्तितः ॥६२॥

अर्थ ॥ एरीतेंसर्वधारीलेवुं तेधर्मध्यानमां जेमुनिनीबुद्धिपेठीछे तेणेएनेतथाएना जेवा बीजापणजेआगमसिद्धांतमां पदार्थना समूहस्थाप्याछे तेनुंचिंतनकरवुं ॥६१॥ जेमननो अनेइंद्रियनोजयकरीने निर्विकारबुद्धिवालो थयो तेनेधर्मध्याननोध्याता कह्योछे वलीशांतदांतपणो पणतेहनेजहोय ॥ ६२ ॥

परैरपि यदिष्टं च स्थितप्रज्ञस्यलक्षणं॥घटते ह्यत्र तत्सर्वं तथा चेदं व्यवस्थितं॥६३॥प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनो गतान्॥ आत्मन्येवात्मसंतुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥ ६४ ॥

अर्थ ॥ परदर्शनीपण स्थितप्रज्ञनुंलक्षण एमकहेछे अनेतेसर्वइहांघटेछे तेमजइ हांअवस्थितहोयतेजाणवुं ॥ ६३ ॥ हेअर्जुन जेवारेंकंदर्पनेछोडे अने मननासर्वका मनेत्यागी आत्मसंतोषीथइने आत्मानेविषेरहे तेप्राणीने तेवारेंस्थितप्रज्ञावंतकहियें

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ॥ वीतरागभयक्रोध स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ६५ ॥ यः सर्वत्रानभिस्नेह स्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभं ॥ नाभिनंदति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥६६॥

अर्थ ॥ जेहनेदुःखमां उद्वेगनथी अनेसुखनीइच्छानथी तथाजेहना राग भय अनेक्रोधगयाछे तेमुनिने स्थितबुद्धिवालो कहियें ॥ ६५ ॥ जेनेविषयउपर स्नेहन थी जेवुंतेवुं शुभअशुभ मलेतोपण रागद्वेषनथीहेअर्जुन तेनीबुद्धिरुडीछे एमजाणवुं

यदा संहरते चायं कूर्मोंगानीव सर्वशः॥ इंद्रियाणींद्रियार्थेभ्य स्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥६७॥ शांतोदांतो भवेदीद्दृ गात्माराम तया स्थितः॥ सिद्धस्य हि स्वभावोयः सैव साधकयोग्यता॥६८॥

अर्थ ॥ हेअर्जुन जेमकाचबो अंगनेसंहरी संकोचीराखे तेमइंद्रियोनेविषयथी पाछीवाले तेनीबुद्धिमोटीछे ॥ ६७ ॥ तेशांतगुणअने दांतगुणीहोय तेनेआत्माराम

बहे आत्मामांरह्यो कहियें सिद्धिनोस्वनावपण एवोजछे अने एवाजेहोयतेनेजसाधकतापणानी योग्यता कहियें ॥ ६७ ॥

ध्याता यमेव शुक्लस्याप्रमत्तः पादयोर्द्वयोः॥ पूर्वविद् योग्ययोगी व केवली परयोस्तयोः ॥ ६९ ॥ अनित्यत्वाद्यनुप्रेक्षा ध्यानस्योपरमेपि हि॥ नावयेन्नित्य मत्रांतः प्राणाध्यानस्य ताःखलु॥७०॥

अर्थ ॥ एधणीशुक्ल ध्याननावेपायानो अप्रमत्तथको ध्यावनारथाय पूर्वधरपणे योगीहोय अथवा अयोगीहोयपण केवलीपणेहोय पढेशेपवेपायाने ध्यावे ॥६९॥ ध्याननेविरामकालें अनित्यत्वादिनावना ठामेनही विभ्रमरहितपणे नित्यनावनाना के तेध्याननना प्राण जाणवा ॥ ७० ॥

तीव्रादिन्नेदन्नाजः स्युर्लेश्यस्तिस्त्र इहोत्तराः ॥ लिंगान्यत्रागमश्रद्धा विनयः सद्गुणस्तुतिः ॥७१॥ शीलसंयमयुक्तस्य ध्यायतोधर्ममुत्तमं ॥ स्वर्गप्राप्तिफलं प्राहुः प्रौढपुण्यानुबंधिनीं ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ इहांवत्तरजे पाठलीत्रणलेश्याउ एटले तेजो पद्म अने शुक्ल एत्रणलेश्या जेबे ते तीव्र तीव्रतर अनेतीव्रतम एत्रणन्नेदनीन्नजनारीछे तेनाएचिन्हछेजे आगमनी श्रद्धा विनय रुडागुणनीस्तवनाकरवी ॥ ७१ ॥ शील अने संयमयुक्तप्राणीने उत्तम धर्मध्यान ध्यातेथके तेहने स्वर्गप्राप्तिफलकह्युंछे तेमोटापुण्यानुबंधी पुण्यनेपामे॥७२॥

ध्यायेच्छुक्लमथक्षांति मृडुत्वाजीवमुक्तिन्निः ॥ उद्मस्थोणौमनो धृत्वा व्यपनीय मनो जिनः ॥७३॥ सवितर्कं सविचारं सपृथक्त्वं तदादिमं ॥ नानानयाश्रितं तत्र वितर्कपूर्वकश्रुतं ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ जेसमतापणे तथानिष्कपटपणे अनेजीवनमुक्तपणे एवीस्थितिराखीने शुक्लध्याननेध्यावे अनेछद्मस्थपणे आत्मामां मनधरीनेरहे तेवारेंरागद्वेषनेजीते॥७३॥ सपृथक्त्व सवितर्क सविचार तेमांआदनोजेसवितर्क एनामेशुक्लध्याननो पेहलोपायो तेनेनानाविध नयेंसहित विचारपूर्वक श्रुतेंकरीध्यावबुं ॥ ७४ ॥

अर्थव्यंजनयोगानां विचारोन्योन्यसंक्रमः॥ पृथक्त्वं द्रव्यपर्याय गुणांतरगतिः पुनः ॥ ७५ ॥ त्रियोगयोगिनः साधो र्वितर्काद्यन्वितं ह्यदः॥ ईपच्चलत्तरंगाऽब्धेः क्षोन्नान्नावदशानिन्नं॥७६॥

या निशा सकल नूतगणानांध्यानिनो दिनमहोत्सव एपः ॥
यत्र जाग्रति च तेचिनिविष्टा ध्यानिनो नवति तत्र सुपुप्तिः॥३॥

अर्थ ॥ सर्वप्राणीने निद्रामांजे रात्रीजायछे तेध्यानदिशावालाने एरात्रीते जागृतमहोत्सवनो दिवसछे अनेसंसारीजीव विषयमांलीनथका जेवेलायेंजागेछे तेवेला ध्यानवालामुनिराजने शयनरूपछे ॥ ३ ॥

संप्लुतोदकइवांधुजलानां सर्वतः सफलकर्म्मकलानां ॥
सिद्धिरस्ति खलु यत्र तद्वै ध्यानमेव परमार्थनिदानं॥४॥

अर्थ ॥ जेमअवडकुवातुं पाणी मोहोखुंरहेछे तेमजेमांसर्वथकी सकलकर्मनाफलनीसिद्धिएहवोजे ध्यानरूपघट जेजलमां रमतोहोय त्यांजलनिर्मलहोय माटेसकलक्रियाफलनी सिद्धिध्यानथीछे ध्यानतेपरम अर्थनुं कारणछे ॥ ४ ॥

बध्यते नहि कषायसमुत्थै र्मानसैर्नततनूपनमद्भिः ॥
अत्यनिष्टविषये रपि दुःखे ध्यानवान्निनृतमात्मनि लीनः॥ ५ ॥

अर्थ ॥ जेध्यानवान पुरुषते कषायजनित मनेकरी बंधातोनथी तेहनेजोराजानीश्रेणी आवीनमस्कारकरोतोपणतेनुंचित्तहोहोजापनही अनेअनिष्टविषयनीप्राप्तिनादुःखेकरीपणनिश्चलपणु छोडेनहि तेनेआत्मानेविषे लीनकहियें ॥ ५ ॥

स्पष्टदृष्टसुखसंनृतमिष्टं ध्यानमस्तु शिवशर्म गरिष्टं ॥ना
स्तिकस्तु निहतो यदि न स्या देवमादिनयवाङ्मयदंभात्॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेनेप्रगटदीठुं अनेमोक्षसुखेनरयुं एवुंजेध्यान तेइष्टछे एटले मोक्षसुखथी पणध्यान मोटुंछे पणजिहांसुधी शास्त्रनादंडथकी नास्तिकजावने अतिशयपणे हणोनथी तिहांसुधीनथी पणनास्तिकनावेरहित जेज्ञानतेमोटुंछे ॥ ६ ॥

यत्र नार्कविधुतारक दीपज्योतिषां प्रसरतामवकाशः ॥ ध्यान
निन्नतमसामुदितात्म ज्योतिषां तदपि नाति रहस्यं ॥ ७ ॥

अर्थ ॥ जेनीआगल सूर्यनुंतेज तथाचंद्रमा अनेतारानुंतेज वलीदीपकनातेजनो [illegible]छे एवुंजेध्यान तेणेकरीने नेदाएंछेयज्ञानरुप अंधकारजेप्राणीनो एहवा [illegible]तेजनुं तेगुप्तपणे पणआत्मानेविषे शोनेछे ॥ ७ ॥

योजयत्यमितकालवियुक्तां प्रेयसीं शमरतिं त्वरितं यत् ॥
ध्यानमित्रनिदमेव मतं नः किंपरैर्जगति कृत्रिममित्रैः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ शमतारतिरूप स्त्रीनीलायें प्राणीनेघणा कालथीवियोगहतो तेहूणेक मां वियोगनांगीने संयोगमिलावें एहवोध्यानरूप परममित्रछे तेध्यानमित्र अमारेप्रमाणछे एमध्यान करनारप्राणी वोलेछे माटेसंसारमां कृत्रिम परमित्रथीसुंथाय तेकृत्रिममित्रोकरतांतो ध्यानमित्रघणुंश्रेष्ठछे ॥ ८ ॥

वारितस्मरबलातपचारे शीलशीतल सुगंधिनिवेशेः ॥
उन्नितप्रशमतल्पनिविष्टो ध्यानधाम्नि लभते सुखमात्मा ॥९॥

अर्थ ॥ हवे ध्याननेरंगमंदिरनी उपमाआपेछे जिहांकामरूपतापनेटाल्योछे अने शीलरूप शीतलसुगंधीपसरीरहीछे तेवीवेठकनेविषे शमतारूपमोटीतलाइछे तेउपर आत्मावेगोथको पूर्णआनंदपामेछे एवुंध्यानरूपमंदिरछे ॥ ९ ॥

शीलविष्टरदमोदकपीठं प्रातिहार्यशमतामधुपर्कैः ॥ ध्यानधाम्नि भवति स्फुटमात्मा हुतपूतपरमातिथिपूजा ॥१०॥

अर्थ॥ध्यानमंदिरमां शीलरूपसिंहासने इंद्रियदमनरूप जलनोवाजोटछे अने शमतारूप पोलीओ तेएवाध्यानघरमां पवित्रपणे आत्मानेतेडीनेतेनी मधुपर्केके० परोणागतकरेछे ॥ १० ॥

आत्मनो हि परमात्मनियोभूं भेदबुद्धिकृत एव विवादः॥ध्यानसंधिकृदमुंव्यपनीय द्रागभेदमनयोर्वितनोति ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ आतमा अने परमात्मानेविषे जेभेदबुद्धिनोविवादहतो एटलेतेमांपंडितना विवादरूपझगडाहता तेनेध्यानरूपसंधीपालें एटलेध्यानिपुरुपें तेविवादोनेटाल्यो अनेजलदीथी एवेउनुंअभेदपणुंकरीआप्युं ॥ ११ ॥

क्वामृतं विषभृते फणिलोके क्व दयिष्यपि विधौ त्रिदिवे वा ॥
क्वाप्सरो रतिमतां त्रिदशानां ध्यानएव तदिदं बुधसेव्यं ॥१२॥

अर्थ ॥ विषयकीभरेलोजे नागलोकतिहां अमृतक्यांथीहोय तेमदिनदिनक्षय पामतोजेचंद्रमा तेमांअमृतकिहांथीहोय अनेदेवलोकमांअप्सरानायोगें राताजेदेवता तेमांपणअमृत किहांथीहोय माटेएमात्र ध्यानरूपअमृतसत्यछे तेनेजपंडितेसेववुं

गोस्तनीषु न सितासु सुधायां नापि नापि वनिताधरबिंबे॥ तं रसं कमपि वेत्ति मनस्वी ध्यानसंभवधृतौ प्रयते यः ॥१३ ॥

अर्थ ॥ गायनास्तनमांजेरसनथी जेताकरमांरसनथी अनेजेरसअमृतमांपणनथी

अर्थ ॥ शमतारतिरूप स्त्रीनीसाथें प्राणीनेघणा कालथीवियोगहतो तेहने एक मां वियोगनांगीने संयोगमिलावें एहवोध्यानरूप परममित्रछे तेध्यानमित्र अमा रेप्रमाणछे एमध्यान करनारप्राणी बोलेछे माटेसंसारमां कृत्रिम परमित्रथीसुंथाय तेकृत्रिममित्रोकरतांतो ध्यानमित्रपणुंश्रेष्ठछे ॥ ८ ॥

वारितस्मरबलातपचारे शीलशीतल सुगंधिनिवेशेः ॥
नच्छितप्रशमतल्पनिविष्टो ध्यानधाम्नि लभते सुखमात्मा ॥९॥

अर्थ ॥ हवे ध्याननेरंगमंदिरनी उपमाआपेछे जिहांकामरूपतापनेटाल्योछे अने शीलरूप शीतलसुगंधीपसरीरहीछे तेवीवेठकनेविषे शमतारूपमोटीतलाइछे तेउपर आत्माबेठोथको पूर्णध्यानंदपामेछे एवुंध्यानरूपमंदिरछे ॥ ९ ॥

शीलविष्टरदमोदकपीठे प्रातिहार्यशमतामधुपर्कैः ॥ ध्या
नधाम्नि भवति स्फुटमात्मा हुतपूतपरमातिथिपूजा ॥१०॥

अर्थ ॥ ध्यानमंदिरमां शीलरूपसिंहासन इंद्रियदमनरूप जलनोबाजोटछे अने श मतारूप पोलीआ तेएवाध्यानघरनां पवित्रपणे आत्मानेतेडीनेतेनी मधुपर्कके० प रोणागतकरेछे ॥ १० ॥

आत्मनो हि परमात्मनियोभू द्भेदबुद्धिकृत एव विवादः ॥ ध्या
नसंधिकृदमुंव्यपनीय आगन्तुमनयोविनयोति ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ आत्मा अने परमात्मानेविषे [illegible] ना विवादरूपझगडाहता तेनेध्यान [illegible] अनेजलदीथी एवंगतुंअभेदपणुंकरी [illegible] ॥ ११ ॥

काम्रतं विषभृते फणिल [illegible] ॥
काप्सरो रतिमतां त्रि [illegible] ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ विषयकीजरेशोने [illegible] मतोजेवइमा तेमांअमृत [illegible] तेमांणवअमृत [illegible]

गोमनतु न [illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ [illegible]

तेमजस्त्रीनाअधरजेहोय तेमांपणजेरसनथी तेरसध्यानथीप्रगट्यो अनेसंतोषथी वि स्तस्यो एहवोजेकोइकअपूर्वरस तेनेतोकोइक पंडितजजाणेछे ॥ १३ ॥

इत्यवेत्य मनसा परिपक्व ध्यानसंभवफलं गरिमाणं ॥ तत्र य स्य रतिरेन मुपैति प्रौढधामभृतमाशु यशः श्रीः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ एप्रकारें मनेकरीनेपरिपक्कजे ध्यानतेथीप्रगट्युंजे फलतेहनेमोटाइपणे जाणीनेतेमांजेरतिपामे तेमहातेजवंत कांतिवानपुरुषछे अनेतेनेज यशलक्ष्मीवरशे ॥ १४ ॥ इतिश्रीध्यानस्तुत्यधिकारः सप्तदशःसमाप्तः

इतिश्रीमहोपाध्याय श्रीयशोविजयगणि विरचिते अध्यात्म सारप्रकरणे पंचमपरिछेदः तेमां पनरमांना ८३ सोल मांना ८६ अने सतरमाना १४ मलीने १८३ काव्यछे

आत्मध्यानफलं ध्यान मात्मज्ञानं च मुक्तिदं ॥ आत्मज्ञानाय तन्नित्यं यत्नः कार्यो महात्मना ॥ १ ॥ ज्ञाते ह्यात्मनि नो भूयो ज्ञातव्यमवशिष्यते॥अज्ञानं पुनरेतस्मिन् ज्ञानमन्यन्निरर्थकं ॥२॥

अर्थ ॥ आत्माने ध्यानतुंफलतेध्यानछे पणआत्मज्ञानहोय तेवारेंजतेनेमुक्ति आपे माटेज्ञानतेमोटुंछे तोमोटापुरुषें आत्मज्ञानभणी उद्यमकरवो ॥ १ ॥ जेणे आत्मानेजाण्यो तेनेफरीबीजुंकइजाणवानुंरह्युंनथी अनेजिहांसुधी आत्मानेजाण्यो नथी तिहांसुधी बीजुंसर्वजाण्युं तेनिरर्थकछे ॥ २ ॥

नवानामपि तत्वानां ज्ञानमात्मप्रसिद्धये ॥ येनाजीवादयो भावाः स्वभेदप्रतियोगिनः ॥ ३ ॥ श्रुतोह्यात्मपराभेदो नुभूतः संस्तुतो पि च ॥ निसर्गाडपदेशाद्वा वेत्ति भेदं तु कश्चन ॥ ४ ॥

अर्थ ॥ नवेतत्वनुंपणजे जाणपणुंकरवुंछे तेपणआत्मज्ञान प्रगटकरवानेअर्थेछे कारणके अजीवादिकजेभाव, तेपणआत्मज्ञानवडेशमायछे ॥ ३ ॥ पोतानोअनेपा रकोजेभेद तेहेनेभेदरूपेंसांभल्यो अनुभव्यो परिचयथयोथको तेहेजे अथवा उप देशथकी कोइकभेदनेजाण्यो ॥ ४ ॥

तदेकत्वपृथक्त्वाभ्या मात्मध्यानं हितावहं ॥ वृथैवाभिनिविष्टा
ना मन्यथा धीर्विडंबना ॥ ५ ॥ एक एव हि तत्रात्मा स्वभाव स
मवस्थितः ॥ ज्ञानदर्शनचारित्र लक्षणप्रतिपादितः ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ तेमाटेएकत्व पृथक्त्वेंकरी आत्मज्ञानहितकारीथाय नहीतो फोकटपणे करी मिथ्यात्वीनोबुद्धिविटंबनाछे ॥ ५ ॥ तिहांएकजआत्मा स्वभावपणेरह्योछे तेआ त्मातोज्ञानदर्शन अने चारित्ररूपलक्षणेकह्योछे ॥ ६ ॥

प्रभानैर्मल्यशक्तीनां यथारत्नान्न भिन्नता ॥ ज्ञानदर्शनचारित्र
लक्षणानां तथात्मनः ॥ ७ ॥ आत्मनोलक्षणानां च व्यवहारो हि
भिन्नता ॥ षष्ठ्यादिव्यपदेशेन मन्यते न तु निश्चयः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ जेमरत्ननीकांति अने निर्मलता एवेजनीशक्तिकांइजुदीनथी तेमज्ञानदर्श न अने चारित्रलक्षणे जेआत्मातेकांइजुदोनथी ॥ ७ ॥ आत्मा अनेआत्मानुंलक्षण एवेव्यवहारेंजुदाछे तेषष्ठीआदेदइ विभक्तीनेव्यपदेशेंकरीमानियें पणनिश्चयथीनही

घटस्य रूपमित्यत्र यथाभेदो विकल्पजः ॥ आत्मनश्च गुणानां
च तथा भेदो न तात्विकः ॥ ९ ॥ शुद्धं यदात्मनो रूपं निश्चये ना
नुभूयते ॥ व्यवहारो भिदाद्वारा नुभावयति तत्परं ॥ १० ॥

अर्थ ॥ जेमघटनुंरूपतेनोभेदते विकल्पमात्रछे तेमआत्माने अने गुणनेपरमार्थें भेदनथी ॥ ९ ॥ जेआत्मरूपशुद्धछे तेनिश्चयनयकरी अनुभवायछे अने व्यवहारवडें परके० कायातेपणओलखायछे ॥ १० ॥

वस्तुतस्तु गुणानां तद्रूपं न स्वात्मनः पृथग् ॥ आत्मा स्यादन्यथा
नात्मा ज्ञानाद्यपि जडं भवेत् ॥ ११ ॥ चैतन्यपरसामान्या
सर्वेषा मेकता त्मनां ॥ निश्चिता कर्मजनितो भेदः पुनरुपप्लवः ॥ १२ ॥

अर्थ ॥ वस्तुभावेंतोगुणनुं अने आत्मानुंरूपजुदुंनथी जोजुदुंकहीयेंतो आत्माछे तेअनात्माथाय ज्ञानादिकंजडथाय ॥ ११ ॥ चैतन्यपरसामान्यपणे सर्वआत्मानी एकताछे अनेनिश्चयथी तोकर्मेंप्रगटथाजेभेद तेतोविटंबनारूपछे ॥ १२ ॥

मन्यते व्यवहारस्तु भूतग्रामादि भेदतः ॥ जन्मादेश्च व्यवस्थातो मिथोनानात्वमात्मनां ॥ १३ ॥ नचैतन्निश्चये युक्तं भूतग्रामो य तो खिलः ॥ नामकर्मप्रकृतिजः स्वभावो नात्मनः पुनः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ जीवसमूहनाभेदथी तथावालजुवान वृद्ध एअवस्थावडेमाहोमांहे वि चित्रपणुंजणायछे एमव्यवहारनयवालोमानेछे ॥ १३ ॥ पणएवातनिश्चयनयवालो मा नतोनथी तेएमकेहेछेके एजीवनेसर्वअवस्था नामकर्मना स्वभावथीप्रगटेछे पणए आत्मानोमूलस्वभावनथी ॥ १४ ॥

जन्मादिकोपि नियतः परिणामोहि कर्मणां ॥ न च कर्मकृतोभेदः स्यादात्मन्यविकारिणि ॥ १५ ॥ आरोप्य केवलं कर्म कृतां विकृ तिमात्मनि ॥ भ्रमंति भ्रष्टविज्ञानभीमे संसारसागरे ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ जन्मजराविक परिणाम कर्मनेवशछे अनेआत्मातो अविकारीछे तेथी कर्मनोभेद आत्मानेसंभवेनही केमकेएआत्मस्वभावनही ॥ १४ ॥ जन्मजरादिक कर्मप्रकृतिछे अनेकर्मजनित भावनेकेवल आत्मानेविषे आरोपीने भ्रष्टज्ञानी भयं करसंसारसमुद्रमां भमते ॥ १६ ॥

उपाधिभेदजं भेदं वेतज्ञ स्फटिके यथा॥ तथा कर्मकृतं भेद मात्म न्येवाभिमन्यते ॥ १७ ॥ उपाधिकर्मजो नास्ति व्यवहारा त्स्व कर्मणः ॥ इत्यागमवचो लुप्त मात्मवैरूप्यवादिनः ॥ १८ ॥

अर्थ ॥ स्फटिकमां जेममूर्खप्राणी भेदमानेछे तेमउपाधिभेदें आत्मानेविषे प्रग टथोजे कर्मकृतभेदते एमानेछे ॥ १७ ॥ पोतानाव्यवहारथी कर्मजनित जेउपाधी ते नथीएममानता आत्मविरूपवादी आगमनुंवचन लोपेछे ॥ १८ ॥

एकक्षेत्रस्थितोप्येति नात्मा कर्मगुणान्वये ॥ यथा भव्यस्व भावत्वा शुद्धो धर्मास्तिकायवत् ॥ १९ ॥ यथा तैमिरकश्चंद्र मप्ये कं मन्यतेद्विधा ॥ अनिश्चयकृतोन्माद स्तथात्मानमनेकधा ॥२०॥

अर्थ॥धर्मास्तिकायनीपरें एकक्षेत्रमां रह्योछेतोपण कर्मगुणनासंयोगने पामतो नथी एवोआत्मा शुद्धस्वभावथी शुद्धछे ॥ १९ ॥ जेमतिमिरके० ग्रहणपेलो एक चंद्रनेबेचंद्रमानेछे तेमनिश्चयनयनी वातविनानोजे प्राणीते उन्मादममलेंकरी आ त्माने अनेकप्रकारें मानेछे ॥ २० ॥

यथा नुभूयते ह्येकं स्वरूपास्तित्वमन्वयात् ॥ सादृश्यास्तित्व मप्येक मविरुद्धं तथात्मनां ॥ २१ ॥ सदसद्वादपिशुनान् संगो प्य व्यवहारतः ॥ दर्शयत्येकतारत्नं सतां शुद्धनयः सुहृत् ॥ २२ ॥

अर्थ ।। जेमअन्वयथी एकस्वरूपास्तिपणाने अनुभवियेछयें तेमसरखापणे जे विद्यमानपणुंछे तेथकीआत्माने एककहियें ॥ २१ ॥ व्यवहारनयथी सद्असद्वा दरूपजे चाडियो तेनेछुपावीने शुद्धनयरूपजे मित्रछेतेएकतारूप रत्ननेदेखाडेछे॥२२॥

नृनारकादिपर्यायै रम्यं तन्नविनश्वरैः ॥ भिन्नैर्जहाति नैकत्व मात्मद्रव्यं सदान्वयि ॥ २३ ॥ यथैकं हेमकेयूर कुंडलादि षु वर्त्तते ॥ नृनारकादिभावेषु तथात्मैको निरंजनः ॥ २४ ॥

अर्थ॥नरनारकादि पर्यायजेउपजेछे अनेविणशेछे तेभिन्नपर्यायकांइरम्यनथी माटे तेपर्यायेंकरीने सदाअन्वयीजे शुद्धवंशीआत्मतत्व तेएकत्वपणाने छांडतुंनथी। २३ जेमसुवर्णएकछे पणबाजुबंध कंठीकुंडलादिक पर्यायेंवर्त्तेछे तेमआत्माएकछे पणन रनारकादिकना भवेंकरीभिन्नछे पणआत्मातो एकनिरंजनछे ॥ २४ ॥

कर्मणस्ते हि पर्याया नात्मनः शुद्धसाक्षिणः॥कर्मक्रिया स्वभावो य दात्मातु न स्वभाववान् ॥२५॥ नाणूनां कर्मणोवासौ भवस्व र्गः स्वभावजः ॥ एकैकविरहे भावा भवतत्वांतरं स्थितं ॥२६॥

अर्थ ॥ जेनरनारकादिकभव तेतो सर्वकर्मना पर्यायछे पणशुद्धसाक्षी निश्चयन यें आत्मपर्यायछे अनेकर्मक्रियारूपजे स्वभावतेकांइआत्मानो मूलस्वभावनथी आत्मा तो अज अविनाशीस्वस्वभावीछे ॥२५॥ कर्मनाजेपरमाणु आतेआसंसार स्वर्गस्वभा विक नथी एकेकउज्वलतानेविषे भावथकी नवतत्वमां रह्युंछे ॥ २६ ॥

श्वेतद्रव्यकृतं श्वैत्यं भित्तिभागे यथा द्वयोः॥भात्यनंतभवत्सत्यं प्रपंचोपि तथेक्षतां ॥ २७ ॥ यथास्वप्नावबुद्धोर्थो विबुद्धेन न दृ श्यते ॥ व्यवहारमतेस्वर्गो ज्ञानिना न तथेक्षते ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ जेमश्वेतद्रव्यें कीधेलुंजे चित्रामण तेबेभीतना भागमांशोभे तेमअनंतभ वसत्यतायें एप्रपंचनेजाणवुंछे ॥२७॥ जेमस्वप्नमां दीठेलोअर्थ जाग्यापछेदेखायनहीं तेमव्यवहारें स्वर्गादिकमार्ग श्रेष्ठछे पणनियतप्रमाणी ज्ञानीपुरुषने संसार नजणाय

मध्याह्ने मृगतृष्णायां पयःपूरो यदेक्षते ॥ तथा संयोगजः सर्गो विवेकख्यातिविप्लवे ॥ २९ ॥ गंधर्वनगरादीनामंबरेऽम्बरो यथा ॥ तथा संयोगजः सर्वो विलासो वितथाकृतिः ॥ ३० ॥

अर्थ ॥ जेममध्याने मृगतृष्णावर्षे पृथ्वीउपर जलपूरदेखायछे तेमसंयोगेंउपनी जे सृष्टितेविवेकनी ख्यातीयेंनाशदेखायछे ॥ २९ ॥ जेमगंधर्व नगरवर्षेंआकाशें थाअंबरजणाय तेमसंयोगेंप्रगटथाजे सर्वविलासते तेजुगछे ॥ ३० ॥

इतिशुद्धनयायत्त मेकत्वं प्राप्तमात्मनि ॥ अंशादिकल्पनाप्यस्य नेष्टा यत्पूर्णवादिनः ॥ ३१ ॥ एकआत्मेति सूत्रस्याप्ययमेवाशयोमतः ॥ प्रत्यग्ज्योतिपमात्मान माहुः शुद्धनयाः खलु ॥ ३२

अर्थ ॥ एरीतेंशुद्धनयेंजे एकत्वपणुंग्रह्युं तेआत्मानेविषे पाम्युंएनेअंशादिकनीजे कल्पनातेपूर्णवादिने वाहालीनथी ॥ ३१ ॥ सूत्रमांएगेआया एवोजेपाठछे तेएजआशयेंकह्योछे एकप्रगटज्योतिरूपजे आत्मातेजरूपछे एमशुद्धनयवालाकेहेछे ॥ ३२ ॥

प्रपंचसंचयक्लिष्टा न्मायारूपाद्बिभेमि ते ॥ प्रसीद भगवन्नात्मन् शुद्धरूपं प्रकाशय ॥ ३३ ॥ देहेन सममेकत्वं मन्यते व्यवहारवित् ॥ कथंचिन्मूर्ततापत्ते वेंदनादिसमुद्भवात् ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ निश्चयनयकहेछेके प्रपंचसंचयवडे संक्लिष्टएटले दुःखरूपएवुं जेए मायारूपछे तेथकी हेभगवन् हेआत्माहुं बीहुंछुं माटेप्रसन्नथाओ अनेशुद्धरूप प्रकाशकरो ॥ ३३ ॥ कोइकप्रकारेंरूपीपणुं पाम्योजे आत्मातेनेवेदनादिक उपजेछे माटे व्यवहारनयवालो शरीरसाथें आत्मानुंएकत्वपणुं मानेछे ॥ ३४ ॥

तन्निश्चयो न सहते यदमूर्तो न मूर्ततां ॥ अंशेनाप्यवगाहेत पावकः शीततामिव ॥ ३५ ॥ उष्णस्याग्नेर्यथा योगाद् घृतमुष्णमिति भ्रमः ॥ तथामूर्तांगसंबंधा दात्मा मूर्त इति भ्रमः ॥ ३६ ॥

अर्थ ॥ पणतेवातनिश्चयवालो सहीशकतोनथी जेमअग्निशीतलता पामतोनथी तेमजेअरूपीआत्माने तेअंशेकरीनेपणरूपीपणाने पामतोनथी ॥ ३५ ॥ जेमबलताअग्निनेसंयोगें घृतउनथयुं एवोभ्रमछे तेमरूपीशरीरने संयोगें आत्मापणरूपीदीसेछे एपणभ्रमणाजदेखायछे ॥ ३६ ॥

न रूप न रसो गंधो न न स्पर्शो न चाकृतिः ॥ यस्य धर्मो न शब्दो वा तस्य का नाम मूर्त्तता ॥ ३७ ॥ दृशादृश्यं हृदाग्राह्यं वाचामपि न गोचरः ॥ स्वप्रकाशं हि यद्रूपं तस्य का नाम मूर्त्तता॥३८॥

अर्थ ॥ केमकेरूप रस गंध स्पर्श अने संस्थान एटलावानाआत्मानेनथी एतो पुद्गलनेछे तेमजवाह्यधर्मेपणनथी शब्दनथी तेवारेंआत्मानेशीरीतेंरूपीकहेवाय॥३७॥ वलीआत्मानजरेदेखाय एवोपणनथी मनथीग्रहेवाय एवोपणनथी तथावचने पणअगोचरछे जेनुंरूपपोताने प्रकाशेंछे पणबीजाने प्रकाशेंनथी तेनेरूपीकेमकेवाय

आत्मा सत्यश्चिदानंदः सूक्ष्मात्सूक्ष्मः परात्परः ॥ स्पृशत्यपि च मूर्त्तत्वं तथा चोक्तं परैरपि ॥ ३९॥ इंद्रियाणि पराण्याहु रिंद्रियेभ्यः परं मनः॥मनसोपि परा बुद्धि र्योबुद्धेः परमस्तु सः॥४०॥

अर्थ ॥ आत्मासत्यछे चिदानंदमयीछे सूक्ष्मथीपणसूक्ष्मछे उत्कृष्टमांउत्कृष्टछे ते मूर्त्तपणुंकेमफरसे तेमजपरदर्शनमां ॥ ३९ ॥ श्रीकृष्णकहेछे हेअर्जुनशरीरमां इंद्रियोमोटीछे अने इंद्रियोथीमनमोटुंछे मनकरतां बुद्धिमहोटीछे अनेतेथीआत्मामोटोछे

विकले हंत लोकेस्मि न्नमूर्त्ते मूर्त्तता भ्रमात् ॥ पश्यत्याश्चर्यवद्ज्ञानी वदत्याश्चर्यवद्वचः ॥ ४१ ॥ वेदना येन मूर्त्तत्वं निमित्ता स्फुटमात्मनः ॥ पुद्गलानां तदापत्तेः किंत्वशुद्धस्वशक्तिजा ॥४२॥

अर्थ ॥ हंतइतिखेदे आविकललोकनेविषे अमूर्त्तिआत्मानेविषे मूर्त्तिपणानाभ्रमथकीजेज्ञानीपुरुषछे तेअचंबोदेखेछे अनेवचनपणअचंबानावोलेछे ॥ ४१ ॥ जेमाटे जीवात्मानेमूर्त्तिनिमित्तवेदना प्रगटपणेछे एमजोमानिएतो पुद्गलनेवेदनाथइजोइयें तेमाटेएवेदनातो आत्माने अशुद्धशक्तिथी अनुभवथायछे ॥ ४२ ॥

अक्षद्वारा यथा ज्ञानं स्वयंपरिणमत्ययं ॥ तथेष्टानिष्टविषयस्पर्शद्वारेण वेदनां ॥ ४३ ॥ विपाककालं प्राप्यासौ वेदनापरिणामभाक्॥मूर्त्तं निमित्तमात्रं नो घटे दंभवदन्वयि ॥ ४४ ॥

अर्थ ॥ इंद्रियद्वारेंकरी जेम ज्ञानदिशा पोतानीमेले परिणमेछे तेमइष्टअनिष्टविषयस्पर्शद्वारेंकरी वेदनापरिणमेछे ॥ ४३ ॥ विपाककालपामीने आवेदनापरिणामने जेमआत्माभजेछे तेथी अमारेमतें मूर्त्तिपणुंतेनिमित्तमात्रथयुं अन्वयीके० सहचारीथयुं जेमघटनेविषें दंभसहचारीछे तेनोपेठेजाणवुं ॥ ४४ ॥

ज्ञानाख्या चेतना बोधः कर्म्माख्यद्विष्टरक्तता ॥ जंतोः कर्मफलाख्या सा वेदना व्यपदिश्यते॥४५॥ नात्मा तस्मादमूर्त्तत्वं चैतन्यं चातिवर्तते ॥ अतोदेहेन नैकत्वं तस्य मूर्तेन कर्हिचित् ॥४६॥

अर्थ ॥ ज्ञाननामे चेतनातेबोधछे अने कर्मनामेद्विष्टरक्तताछे तेवडेजीवने कर्मफलनामेवेदना व्यपदेशपामेछे ॥ ४५ ॥ तेमाटेअमूर्तिआत्माते चैतन्यपणाने उलंघेनही अनेमूर्तिमान देहसाथेंआत्माने कोइप्रकारें एकत्वपणुंछेजनही ॥ ४६ ॥

सन्निकृष्टान्मनोवाणी कर्मादेरपि पुद्गलात् ॥ विप्रकृष्टा द्धना देश्च ज्ञाव्यैवं भिन्नत्मनः ॥ ४७ ॥ पुद्गलानां गुणोमूर्त्ति रात्मा ज्ञानगुणः पुनः ॥ पुद्गलेभ्य स्ततोभिन्न मात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ एरीतें कर्मवर्गणाना मनोवर्गणाना वचनवर्गणाना जेआत्मानेसमीपवर्ति एकत्वसंगतवर्ति एवातनधनादिक जेपुद्गलतेतोसर्वेआत्माथी भिन्नकेº दूरछे ॥ ४७ ॥ केमकेपुद्गलनोगुणतोमूर्तिमानछे अने आत्मातोज्ञानगुणमयछे माटेपुद्गलथी आत्मद्रव्यजुदुंछे एमप्रभुकहेछे ॥ ४८ ॥

धर्मस्य गतिहेतुत्वं गुणो ज्ञानं तथात्मनः॥धर्मास्तिकाया त्तभिन्न मात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः ॥ ४९ ॥ अधर्मे स्थितिहेतुत्वं गुणो ज्ञान गुणोऽसुमान्॥ततोधर्मास्तिकायान्य मात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः५०

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायनोगुण गतिहेतुछे अनेआत्मानोगुणज्ञानछे माटेधर्मास्तिकायथी आत्माजुदोछे एमप्रभुकहेछे ॥ ४९ ॥ अधर्मास्तिकायनोगुण स्थितिहेतुछे अने आत्मानोज्ञानगुणछे माटे अधर्मास्तिकायथी आत्मद्रव्यजुदुंछे एमप्रभुकहेछे५०

अवगाहो गुणो व्योम्नो ज्ञानं खल्वात्मनोगुणः ॥ व्योमास्तिकायात्तभिन्न मात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः॥५१॥आत्म ज्ञानगुणः सिद्धः समयो वर्त्तनागुणः॥तभिन्नं समयद्रव्या दात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः५२

अर्थ ॥ आकाशनोगुणअवगाहछे अनेआत्मानोगुणज्ञानछे माटे आकाशास्तिकायथीआत्मद्रव्यजुदुंछे एमप्रभुकहेछे ॥ ५१ ॥ आत्माज्ञानगुणेसिद्धछे काल वर्त्तनारूपछे माटेकालथी आत्मद्रव्यजुदुंछे एमप्रभुकहेछे ॥ ५२ ॥

आत्मनस्त दजीवभ्यो विभिन्नत्वं व्यवस्थितं॥व्यक्तिभेदेन वादेशा दजीवत्वमपीष्यते ॥ ५३ ॥ अजीवा जन्मिनः शुद्ध भावप्राणव्य पेक्षया ॥ सिद्धाश्च निर्मलज्ञाना द्रव्यप्राणव्यपेक्षया ॥ ५४ ॥

अर्थ॥एप्रमाणेअजीवथी आत्मानुजुदापणुं सत्यछे पणभेदेंकरी देशथकी अजीवपणुंपणवंछीयेछइयें॥ ५३ ॥जेमनिर्मलज्ञानवंतसिद्धने द्रव्यप्राणनी अपेक्षारहितपणे अजीवपणुंकहियें तेमशुद्धभावप्राणनीअपेक्षारहित जीवनेअजीवकहियेछेयें

इंद्रियाणि बलं श्वासो च्छ्वासो ह्यायु स्तथा परं॥द्रव्यप्राणाश्चतुर्भेदाः पर्यायाः पुद्गलाश्रिताः ॥ ५५॥ भिन्नास्ते ह्यात्मनोऽत्यंतं तदेतै र्नास्ति जीवनं॥ज्ञानधैर्यसदाश्वास नित्यस्थितिविकारिभिः॥ ५६ ॥

अर्थ ॥ इंद्रिय बल श्वासअनेआयुष्य एरीतेंद्रव्यप्राण चारभेदेंछे एनापर्यायतो पुद्गलने आश्रीरह्याछे ॥ ५५ ॥ तेआत्माथी अत्यंतजुदाछे माटे एवर्मे कांइआत्मा नेजीववुंनथी एपर्यायतो ज्ञान धैर्य तेनास्वासनीजेकांइ नित्यस्थितितेणेकरी वर्जितछे

एतत्प्रकृतिभूताभिः शाश्वतीभिस्तु शक्तिभिः ॥जीवतात्मा स देत्येषा शुद्धद्रव्यनयस्थितिः॥५७॥जीवो जीवति न प्राणै र्विना तै रेव जीवति ॥ इदं चित्रचरित्रंको हंत पर्यनुयुज्यतां॥ ५८ ॥

अर्थ ॥ एप्रकृतिरूप शाश्वतीशक्ति तेणेकरीने आत्मासदैवजीवेछे एशुद्धद्रव्यनय नीस्थितिजाणवी ॥ ५७ ॥ जीवकांइप्राणेकरीने जीवतोनथी एजीवतोप्राणविनाजी वेछे एअचंबानीवात विचित्रकारी चरित्रसांभली कोणनहखें अनेएवातशुद्धनयें कोणनजोहे ॥ ५८ ॥

नात्मा पुण्यं नवा पाप मेते यत्पुद्गलात्मके॥आद्यबालशरीरस्यो पादानत्वेन कल्प्यते ॥ ५९ ॥ पुण्यं कर्म शुभं प्रोक्त मशुभं पाप मुच्यते ॥ तत्कथं तु शुभं जंतून् यत् पातयति जन्मनि ॥ ६० ॥

अर्थ ॥ आत्मापुण्यनही तेमपापपणनही केमके पुण्यनेपापतो पुद्गलरूपछे प्रथमबालकालें जेशरीरतेनेउपादानभावेंकल्पेछे ॥ ५९ ॥ जेशुभकर्म तेपुण्यकहियें अनेजेअशुभकर्मतेपापकहियें तेवारें तेशुभकर्मजेछे तेजीवनेसंसारमांकेमपाडेछे ॥६०

ज्ञानाख्या चेतना बोधः कर्म्माख्यद्विष्टरक्तता ॥ जंतोः कर्मफ
लाख्या सा वेदना व्यपदिश्यते॥४५॥ नात्मा तस्मादमूर्त्तत्वं चैत
तन्यं चातिवर्तते ॥ अतोदेहेन नैकत्वं तस्य मूर्त्तेन कर्हिचित् ॥४६॥

अर्थ ॥ ज्ञाननामे चेतनातेबोधछे अने कर्मनामेद्विष्टरक्तताछे तेवडेजीवने कर्म फलनामेवेदना व्यपदेशपामेछे ॥ ४५ ॥ तेमाटेअमूर्तिआत्माते चैतन्यपणाने उलंघेनही अनेमूर्तिमान देहसाथेंआत्माने कोइप्रकारें एकत्वपणुंछेजनही ॥ ४६ ॥

सन्निकृष्टान्मनोवाणी कर्मादेरपि पुद्गलात् ॥ विप्रकृष्टा द्धना देश्च
ज्ञाव्यैवं भिन्नत्मनः ॥ ४७ ॥ पुद्गलानां गुणोमूर्त्ति रात्मा ज्ञानगु
णः पुनः ॥ पुद्गलेन्य स्ततोभिन्न मात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः ॥ ४८ ॥

अर्थ ॥ एरीतें कर्मवर्गणाना मनोवर्गणाना वचनवर्गणाना जेआत्मानेसमीप वर्ति एकत्वसंगतवर्ति एवातनधनादिक जेपुद्गलतेतोसर्वेआत्माथी भिन्नके० दूरछे ॥ ४७ ॥ केमकेपुद्गलनोगुणतोमूर्तिमानछे अने आत्मातोज्ञानगुणमयछे माटेपुद्गलथी आत्मद्रव्यजुदुंछे एमप्रभुकहेछे ॥ ४८ ॥

धर्मस्य गतिहेतुत्वं गुणो ज्ञानं तथात्मनः॥धर्मास्तिकाया त्तभिन्न
मात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः ॥ ४९ ॥ अधर्मे स्थितिहेतुत्वं गुणो ज्ञान
गुणोऽसुमान्॥ततोधर्मास्तिकायान्य मात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः५०

अर्थ ॥ धर्मास्तिकायनोगुण गतिहेतुछे अनेआत्मानोगुणज्ञानछे माटेधर्मास्तिकायथी आत्माजुदोछे एमप्रभुकहेछे ॥ ४९ ॥ अधर्मास्तिकायनोगुण स्थितिहेतुछे अने आत्मानोज्ञानगुणछे माटे अधर्मास्तिकायथी आत्मद्रव्यजुदुंछे एमप्रभुकहेछे५०

अवगाहो गुणो व्योम्नो ज्ञानं खल्वात्मनोगुणः ॥ व्योमास्ति
कायात्तभिन्न मात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः॥५१॥ आत्म ज्ञानगुणः सिद्धः
समयो वर्त्तनागुणः॥तभिन्नं समयद्रव्या दात्मद्रव्यं जगुर्जिनाः५२

अर्थ ॥ आकाशनोगुणअवगाहछे अनेआत्मानोगुणज्ञानछे माटे आकाशास्तिकायथीआत्मद्रव्यजुदुंछे एमप्रभुकहेछे ॥ ५१ ॥ आत्माज्ञानगुणेसिद्धछे काल वर्त्तनारूपछे माटेकालथी आत्मद्रव्यजुदुंछे एमप्रभुकहेछे ॥ ५२ ॥

आत्मनस्त दजीवभ्यो विभिन्नत्वं व्यवस्थितं॥व्यक्तिभेदेन वादेशा
दजीवत्वमपीष्यते ॥ ५३ ॥ अजीवा जन्मिनः शुद्ध भावप्राणव्य
पेक्षया ॥ सिद्धाश्च निर्मलज्ञाना द्रव्यप्राणव्यपेक्षया ॥ ५४ ॥

अर्थ॥एप्रमाणेअजीवथी आत्मानुजुदापणुं सत्यवलुं पणभेदेंकरी देशथकी अजी
वपणुंपणवंछीयेछयें॥ ५३ ॥जेमनिर्मलज्ञानवंतसिद्धने द्रव्यप्राणनी अपेक्षारहितप
णे अजीवपणुंकहियें तेमशुद्धभावप्राणनीअपेक्षारहित जीवनेअजीवकहियेछैयें

इंद्रियाणि बलं श्वासो श्वासो ह्यायु स्तथा परं॥द्रव्यप्राणाश्चतुर्भेदाः
पर्यायाः पुद्गलाश्रिताः ॥ ५५॥ भिन्नास्ते ह्यात्मनोऽत्यंतं तदेतै
र्नास्ति जीवनं ॥ज्ञानधैर्यसदाश्वास नित्यस्थितिविकारिभिः॥ ५६ ॥

अर्थ ॥ इंद्रिय बल श्वासअनेआयुष्य एरीतेंद्रव्यप्राण चारभेदेंछे एनापर्यायतो
पुद्गलने आश्रीरह्याछे ॥ ५५ ॥ तेआत्माथी अत्यंतजुदाछे माटे एवमें कांइआत्मा
नेजीववुंनथी एपर्यायतो ज्ञान धैर्य तेनास्वासनीजेकांइ नित्यस्थितितेणेकरी वर्जितछे

एतत्प्रकृतिभूताभिः शाश्वतीभिस्तु शक्तिभिः ॥जीवतात्मा स
देत्येषा शुद्धद्रव्यनयस्थितिः॥५७॥जीवो जीवति न प्राणै र्विना तै
रेव जीवति ॥ इदं चित्रचरित्रंको हंत पर्यनुयुज्यतां ॥ ५८ ॥

अर्थ ॥ एप्रकृतिरूप शाश्वतीशक्ति तेणेकरीने आत्मासदैवजीवेछे एशुद्धद्रव्यनय
नीस्थितिजाणवी ॥ ५७ ॥ जीवकांइप्राणेकरीने जीवतोनथी एजीवतोप्राणविनाजी
वेछे एअचंबानीवात विचित्रकारी चरित्रसांभली कोणनहर्खे अनेएवातशुद्धनयें
कोणनजोडे ॥ ५८ ॥

नात्मा पुण्यं नवा पाप मेते यत्पुद्गलात्मके॥आद्यबालशरीरस्यो
पादानत्वेन कल्प्यते ॥ ५ए ॥ पुण्यं कर्म शुभं प्रोक्त मशुभं पाप
मुच्यते ॥ तत्कथं तु शुभं जंतून् यत् पातयति जन्मनि ॥ ६० ॥

अर्थ ॥ आत्मापुण्यनही तेमपापपणनही केमके पुण्यनेपापतो पुद्गलरूपछे प्र
थमबालकालें जेशरीरतेनेउपादानभावेंकल्पेछे ॥ ५ए ॥ जेशुभकर्म तेपुण्यकहियें अ
नेजेअशुभकर्मतेपापकहियें तेवारें तेशुभकर्मजेछे तेजीवनेसंसारमांकेमपाडेछे ॥६०

न ह्यायसस्य बंधस्य तपनीयमयस्य च॥ पारतंत्र्याविशेषेण फ
लभेदोस्ति कश्चन॥६१॥फलाभ्यां सुखदुःखाभ्यां न भेदः पुण्य
पापयोः॥ दुःखान्न भिद्यते हंत यतः पुण्यफलं सुखं ॥ ६२ ॥

अर्थ ॥ एकलोहनीबेमी अनेएकसुवर्णनीबेमी तेपणपरवशपणुंछे माटेविचारी
येंतांफलनेदकांइनथी तेमअशुनकर्मते लोहनीबेडीअनेजे शुनकर्मते सुवर्णनीबेडी
॥ ६१ ॥ सुखनाफल अने दुःखनाजेफलप्रगटेछे तेथीपुण्यपापमध्ये कांइनेदनथी जे
पकीपुण्यसुखविलसे एपुण्यनुंफलछे तेपणदुःखरूपजछे ॥ ६२ ॥

सर्वं पुण्यफलं दुःखं कर्मोदयकृतत्वतः ॥ तत्र दुःखप्रतिकारे
विमूढानां सुखत्वधीः ॥ ६३॥ परिणामाच्च तापाच्च संस्काराच्च
बुधैर्मतं ॥ गुणवृत्तिविरोधाच्च दुःखं पुण्यभवं सुखं ॥ ६४ ॥

अर्थ ॥ माटेसर्वपुण्यनुंफल तेदुःखरूपछे केमकेएकर्मनाउदयथीथायछे माटेदुः
खनाप्रतिकारनेविषे मूर्खनेसुखबुद्धि उपजेछे ॥६३॥ पंमितकहेछेके परिणामथी तथाता
पथी अनेसंस्कारथी गुणवृत्तिविरोधी एहवुंजेपुण्यतेथीनीपनुंजेसुखतेदुःखप्रायछे॥६४

देहपुष्टे नरामर्त्य नायकानामपि स्फुटं ॥ महाजपोषणस्येव
परिणामोतिदारुणः ॥ ६५॥ जलुकाः सुखमानिन्यः पिबंत्यो
रुधिरं यथा॥ भुंजाना विषयान् यांति दशामंते ऽतिदारुणां॥६६॥

अर्थ ॥ नरनेराजाने तथा इंद्रादिकनेपण जेसुखमांशरीरनीपुष्टिथायछे तेमोटाबो
कडानीपेठेछे एकथाउत्तराध्यायनमां कहीछेतिहांथीजाणवी जेवारें वधथयो तेवारें
परिणामेअतिदुःखछे ॥ ६५ ॥ जेमजलोजांही पीतांथका सुखमानेछे तेमविषयनो
गरतांथकाप्राणी सुखमानेछे पणतेथीअंतें माठीदशानेपामेछे ॥ ६६ ॥

तीव्राग्निसंगसंशुष्य त्पयसामयसामिव ॥ यत्रौत्सुक्यात्सदाक्षा
णां तत्ता तत्र किं सुखं ॥ ६७॥प्राक्पश्चाच्चारतिस्पर्शात् पुटपाक
नुपेयुषि ॥ इंद्रियाणांगणे ताप व्यापएव न निर्वृतिः ॥ ६८ ॥

अर्थ ॥ आकरोअग्निमां बलतगयेंकरी लोढपाणीपीयेछे तेमज्यांसदा इंद्रियोंनी
उत्सुकपणेकरी बलतराहछे त्यांशुंसुखछे ॥ ६७ ॥ पेहेलांअपयापछे पणजेपको
आरतिछे तेनेघडकनापी विपाकपामेयकें इंद्रियोना समूहमां ताप व्यापेपणसु

खनथाय एटले पेहेलांबांध्याजेकर्म तेजेवारें भोगववामांआवे तेवारेंपण अरतिलेइ नेजआवे अनेपछे तेकर्मो विपाकेपण दुःखआपे ॥ ६७ ॥

सदा यत्र स्थितो द्वेषोल्लेखः स्वप्रतिपंथिषु ॥ सुखानुभवकाले पि तत्र तापहतं मनः ॥ ६९ ॥ स्कंधात् स्कंधांतरारोपे भारस्येव न तत्वतः ॥ अक्षाल्हादेपि दुःखस्य संस्कारोपि निवर्त्तते ॥७०॥

अर्थ ॥ जेहनेसदैवशत्रुउपर द्वेषरह्योछे तेप्राणीजो घरमांसुखेंवेगोहोय तोपण तेहनेसुखनहोय तेमविषयसुखमां अनुभवकालेंपण जेहनोविषयना तापेकरीमन हणाणोछे तेहनेसुख क्यांथीहोय ॥ ६९ ॥ जेमएकखंभाउपरथी बीजाखंभाउपर भारलीधो पणतत्वथी भारउतखोनही एमइंद्रियोनेआनंदे दुःखनोसंस्कारमटतोनथी

सुखं दुःखं च मोहश्च तिस्रोपि गुणवृत्तयः ॥ विरुद्धा अपि वर्त्तंते दुःखजात्यनतिक्रमात् ॥ ७१ ॥ क्रुद्धनागफणाभोगो पमोभो गो भवोखिलः ॥ विलासश्चित्ररूपोपि भयहेतुर्विवेकिनां ॥ ७२ ॥

अर्थ ॥ सुखदुःखअनेमोह एत्रणे जोपणविरुद्धछे तोपणगुणवृत्तीयेवर्त्तेछे के मकेदुःखनीजातिने उलंघनकरीशकतानथीमाटे. गुणवर्त्तिरूपछे ॥ ७१ ॥ क्रोधी नागनीफणना विस्तारसरखो सर्वभोगविलासछे वलीतेभोगविलास यद्यपिविचित्ररू पछे तथापि विवेकीजनने तेभयनोहेतुछे ॥ ७२ ॥

इत्थमेकत्वमापन्नं फलतः पुण्यपापयोः ॥ मन्यते यो न मूढात्मा नां तस्तस्य भवोदधेः ॥ ७३ ॥ दुःखैकरूपयोर्भिन्न स्तेनात्मा पुण्य पापयोः ॥ शुद्धनिश्चयतः सत्य चिदानंदमयःसदा ॥ ७४ ॥

अर्थ ॥ एरीतें फलनीअपेक्षायें पुन्यपापनुं एकत्वपणुंठेराव्युं पणजेमूर्खनमानशे तेसंसारमांभटकशे अनेजेमानशेतेभवसागरतरीजशे ॥ ७३ ॥ पुन्यअनेपाप एवेहुए कसरखादुःखरूपजछे तेथकीआत्माभिन्नछे शुद्धनिश्चयनयथी सदासत्चिदानंदमयछे

तत् तुरीयदशाव्यंग रूपमाचरणा न्वयात् ॥ भात्युष्णो द्योतशी लस्य घननाशाद्रवेरिव ॥ ७५ ॥ जायंते जाग्रतो ऽक्षेभ्य श्चित्रा यिसुखवृत्तयः ॥ सामान्यं तु चिदानंद रूपं सर्वदशान्वयि ॥ ७६ ॥

अर्थ ॥ एवाततेचोथीदिशायें जाणवायोग्यछे जेमवर्षाकालमां मेघवरसीरह्या प छी बादलनाशथायछे अनेसूर्यप्रकाशोभेछे तेमव्यंगरूपविचित्र एहवोआचरणविशे

पेंकरी चोथीदशामांशोनेछे ॥ ७५ ॥ जागताजीवने इंद्रियोनीसुखवृत्तिओ नानाप्र कारनीथायछे पणसामान्यजे चिदानंदस्वरूप तेनेतोसर्वदशामां सरखुंसुखछे ॥७६॥

स्फुलिंगने र्यथा वन्हि दिंप्यते ताप्यते थवा ॥ नानुभूति पराभू ती तथैताभिः किलात्मनः ॥ ७७ ॥ साक्षिणः सुखरूपस्य सुषुप्तौ निरहंकृतेः ॥ यथा भानं तथा शुद्ध विवेके तदतिस्फुटं ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ तणपेंकरीनेजेम अग्नीदीपेनही तपायनही तेमअनुभवपराभवादिकें क रीने आत्मानेकइंनथी ॥ ७७ ॥ निद्रावस्थामांजेम सुखरूपनोसाखीजे आत्मातेने अहंकाररहितसुखनो भासनथायछे तेमशुद्धविवेकनेविषे तोप्रगटपणेसुखभासेछे ७८

तच्चिदानंदभावस्य भोक्तात्मा शुद्धनिश्चयात् ॥ अशुद्धनिश्च यात्कर्म्म कृतयोः सुखदुःखयोः ॥७९॥ कर्मणोपि च भोगस्य स्त्र गादेर्व्यवहारतः॥ नैगमादिव्यवस्थापि भावनीयाऽनया दिशा॥८०

अर्थ ॥ तेमाटेशुद्धनिश्चयनयथकी आत्माचिदानंदभावनोभोक्ताछे अनेअशुद्धनि श्चयनयथकीकर्मेकर्यांजे सुखदुःखतेनोभोक्ताआत्माछे ॥ ७९ ॥ फुलनीशय्या तथा फुलनाभूषण प्रमुखनेविषेभोगकर्मनी व्यवहारथीप्रवृत्तिछे तेमनैगमादिकनयनी व्य वस्थापण आवीरीतें भावियेंतेनीचेंलख्याप्रमाणेछे. ॥ ८० ॥

कर्त्तापिशुद्ध भावाना मात्माशुद्धनयाद्विभुः ॥ प्रतीत्यवृत्तिं यच्छुद्ध क्षणानामेष मन्यते ॥ ८१ ॥ अनुपप्लवसाम्राज्ये विसभागपरि क्षये ॥ आत्मा शुद्धस्वभावानां जननाय प्रवर्त्तते ॥ ८२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धभावनोकर्त्ता आत्माशुद्धनयथी समर्थछे जेवारेंशुद्धपरिणामीछे तेस मर्थवीर्यवृत्तिनेआश्रयीने शुद्धभावनोकर्त्ताछे एमशुद्धनयवालोमानेछे ॥ ८१ ॥ उपद्र व अंतरायादिकेरहित साम्राज्यपणानेविषे दुष्टभावनोनाशथयेछते आत्माशुद्धस्व भाव प्रगटकरवाने प्रवर्त्तेछे ॥ ८२ ॥

चित्तमेव हि संसारो रागादिक्लेशवासितं ॥ तदेव तैर्विनिर्मुक्तं भ वांतइति कथ्यते ॥ ८३ ॥ यश्च चित्तक्षणक्लिष्टो नासावात्मा विरोधतः ॥ अनन्यविकृतं रूप मित्यर्थं त्वं ह्यदः पदं ॥ ८४ ॥

अर्थ ॥ जेरागादिक क्लेशवर्गे चित्तवासितहोय तेसंसारकेवाय अने रागद्वेषथीमु

काववुं तेनुंनाम मुक्तिछे एमजाणवुं ॥ ७३ ॥ रागद्वेषेंव्याप्यो जेमननोक्लिष्ट परिणाम छे तेकांइआत्मानोनथी आत्मानुंरूपतो सत्यार्थपणेअविकारीछे ॥ ७४ ॥

श्रुतवानुपयोगश्चे त्येतन्मिथ्या यथा वचः॥ तथात्मा शुद्धरूपश्चे त्येवं शब्दनया जगुः ॥७५॥ शुद्धपर्यायरूपस्त दात्मा शुद्धस्व भावकृत् ॥ प्रथमाप्रथमत्वादि भेदोप्येवं हि तात्विकः ॥ ७६॥

अर्थ ॥ जेम आत्मानुंउपयोग श्रुतवंतछे एखोटुंछे तेमशब्दनयवालाकहेछेके आत्माशुद्धरूपनथी एपणखोटुंछे ॥ ७५ ॥ शुद्धपर्यायरूप आत्मापूर्वपश्चातपणानो जे भेद तेपणे शुद्धस्वभावनोकर्त्ताछे एमतात्विकछे ॥ ७६ ॥

ये तु दिक्पटदेशीयाः शुद्धद्रव्यतयात्मनः ॥ शुद्धस्वभावकर्तृत्वं जगुस्ते पूर्वबुद्धयः ॥ ७७ ॥ द्रव्यास्तिकस्य प्रकृतिः शुद्धा संग्रह गोचरा ॥ येनोक्ता संमतौ श्रीमत्सिद्धसेनदिवाकरैः ॥ ७८ ॥

अर्थ ॥ दिगंबरएमकहेछेके शुद्धद्रव्यार्थे वलीजेमउपयोगविना श्रुतभण्यो तेनुंपण शुद्धस्वभावनुं कर्त्तापणुंजतुंनथी केमकेतेतेने स्वभावेजपरिणमेछे एमअपूर्वबुद्धिनुं केवुंछे ॥ ७७॥ द्रव्यास्तिकनयनीजे शुद्धप्रकृतिछे तेसंग्रहनयउपरचाले केमकेसम्मति ग्रंथमां सिद्धसेनसूरियेंकह्युंछे ॥ ७८ ॥

तन्मते च न कर्तृत्वं भावानां सर्वदान्वयात् ॥ कूटस्थः केवलं तिष्ठ त्यात्मा साक्षित्वमाश्रितः ॥ ७९ ॥ कर्त्तुं व्याप्रियते नायमुदासी न इव स्थितः ॥ आकाशमिव पंकेन लिप्यते न च कर्मणा॥८०॥

अर्थ ॥ तेनेमते कर्त्तापणुंनथी केमकेसदैवभावनो अन्वयछे माटेकूटस्थकेवल निर्विक्रियजे आत्मा तेसाक्षीपणाने आश्रीनेरह्योछे ॥७९ ॥ करवानोव्यापार करतो नथी उदासीनीपठेरह्योछे जेमकचरें आकाशलेपातुंनथी तेमकर्मेंआत्मा लेपातोनथी

स्वरूपं तु न कर्त्तव्यं ज्ञातव्यं केवलं स्वतः॥ दीपेन दीप्यते ज्यो ति नित्यपूर्वं विधीयते॥ ८१ ॥ अन्यथा प्रागनात्मा स्या त्स्वरूपा ननुवृत्तितः॥ भवहेतुसहस्रेणा प्यात्मता स्या दनात्मनः ॥८२॥

अर्थ ॥ पोतानारूपनेनवीनकरवुंनथी मात्रपोताना रूपनेपोताथकीकेवल जाणी लेवुंछे जेमदीवेथी ज्योतिदीपेछे तेमनित्य शाश्वतआत्मा स्वप्रकाशहोवाथी पोतेपोता

ने प्रकाशेछे ॥ ९१ ॥ एम आत्माने स्वप्रकाश अने शाश्वत अंगीकार करीएनही अने परप्रकाश तथा कर्तृत्व सिद्धमानीए तो पूर्वेयनात्मपणुं अंगीकार करवुंपडशे केमके क्रियावडे उत्पन्नथएलापदार्थनुं पूर्वेनुं रूप जुदुज होयछे एवोनियमछे एवी रीतेंआत्मानी उत्पत्तिनी पूर्वे आत्माने अनात्ममानवुं पडशे अने क्रियावडे आत्मानुं रूपांतरथाएछे एममानीएतो आत्मानी आवृत्ति अंगीकारकरवीपडशे आवृत्ति अंगीकारकरीएतो संसारविषयक हजारोकुल्यरूप हेतुवडे हजारोरूप बदलाशे त्यारें पूर्व पूर्वनुरूपअनात्म अने उत्तर उत्तरक्रियाजन्यरूप आत्मामानवुं पडशे अनेएम कखाथी छेवटें अनवस्था दोष प्राप्तथशे ॥ ९२ ॥

नये तेनेह नोकर्त्ता किलात्मा शुद्धभावभृत् ॥ उपचारात्तु लोकेषु तत्कर्तृत्वमपीष्यते ॥ ९३ ॥ उत्पत्तिमात्रं धर्माणां विशेषग्राहिणो जगुः ॥ अव्यक्तिरावृतेस्तेषां नाभावादिति का प्रमा ॥९४॥

अर्थ ॥ तेमाटेआनयनेविषे कर्त्तापणुंनथी केमके आत्माशुद्धभावनो धरनारछे अनेलोकमां उपचारथी तेनुंकर्तापणुकेहेछे ॥ ९३ ॥ विशेषग्राही जेज्ञानीपुरुषोछे तेपूर्वोक्तरीतें आत्माने क्रियासिद्ध मानतानथी किंतु आत्मानाधर्मोनी उत्पत्ति मानेछे आंही कोइने शंकाथशे केजेम आत्माअव्यक्तछे तेमआत्मानाधर्मपण अव्यक्तछे तोज्यारेआत्मानी उत्पत्ति मानतानथी त्यारेतेनाधर्मनी उत्पत्तिपण केममनाय तेनो समाधानजे केटलीएकअव्यक्त वस्तुउ आकाशनीपठे जेमनीतेमरहेछे अने केटली एक रूपांतरने पामेछे आत्माशाश्वताव्यक्तछे अने तेनाधर्मअशाश्वताव्यक्तछे माटेतेओनी आवृत्तिथायछे केमके जेमआत्मानी अनावृत्तिमां घणाप्रमाणोछे तेमआत्माना धर्मनीआवृत्ति नथवामां कोइप्रमाणनथी तेथीआत्मानी पुनरावृत्ति थतीनथी पणआत्माना धर्मोनीपुनरावृत्तिथायछे एवुंसिद्धथयुं ॥ ९४ ॥

सत्वं च परसंताने नोपयुक्तं कथं च न ॥ संतानिनामनित्यत्वात्संतानोपि न च ध्रुवं ॥९५॥ व्योमाद्युत्पत्तिमत्तत्त दवगाहात्मना ततः ॥ नित्यता नात्मधर्माणां तद्दृष्टांतबलादपि ॥ ९६ ॥

अर्थ ॥ आत्मानुंउत्पत्तिरहितपणुं दृष्टांतवडेदृढकरेछे जेमपितापुत्ररूप परिवारनी उत्पत्तिमां पूर्वपूर्वपितारूप कारणथी उत्तरउत्तर पुत्ररूपकार्यनी उत्पत्तिथयाथी पितापणानोअभाव अनेपुत्रपणानोभाव थायछे एमशृंखलाचालतां जेमपिता

नोनाश तेमपुत्रनो पणनाशथायछे तेमअनात्माथी आत्मानीउत्पत्तिरूप प्रवाहथी पूर्वनोअनाव अनेउत्तरनो नावथतां पूर्वनीपठे उत्तरनानाशनो पणसंनव सिद्धथा यछे एथीआत्मा अशाश्वत अनेनाशरूप ठरसे ॥ एए ॥ आकाशनादृष्टांतवडे आ त्मानुंअचलपणुं अनेआत्मानाधर्मोनु चलायमानपणुं सिद्धकरेछे जेमआकाशउत्प त्तिरहितछे तेथीतेनुंरूपांतर थतुंनथी तेमजआत्मापण उत्पत्तिरहित होवाथीतेनो रूपांतरथतुंनथी अनेआत्मानाधर्म उत्पत्तिवानछे तेथीतेनु रूपांतरथायछे अंहीप ण आकाशनुंव्यतिरेकपणे दृष्टांतलेवुं जेवस्तुआकाशनीपेठे उत्पत्तिरहित नथीहोती तेनुंरूपांतर थायछे ॥ एद ॥

ऋजुसूत्रनयसूत्रः कर्तृतां तस्य मन्यते ॥स्वयं परिणमत्यात्मा यं यं नावं यदा यदा ॥ एउ ॥ कर्तृत्वं परन्नावाना मसौ नाभ्युप गच्छति ॥ क्रियाद्वयं हि नैकस्य ड्व्यस्यानिमतं जिनैः ॥ एए ॥

अर्थ ॥ ज्यारेंआत्मानु रूपांतरथतुंनथी त्यारेंपरिणामवादनो उच्छेदथसे एवी आशंकाकरीनेतेनुं उत्तरकहेछे यद्यपिऋजुसूत्रनयवालो ज्यारेज्यारे जेजेनावनापरि णामने आत्मापामेछे त्यारेत्यारे तेतेनावरूप कर्मवडे परिणामरूप उत्पत्तिमानेछे ॥ एउ ॥ तथापिआत्माने कर्तृत्वपणे बीजानावनी प्रातियतीनथी केमके एकड् व्यमां बेक्रियातंनवेनही एवुंजिननुं अनिमतछे ॥ एए ॥

नूतिर्या हि क्रिया सैव स्यादेकड्व्यसंततौ॥न साजात्यं विना च स्यात् परड्व्यगुणेषु सा॥एए॥न चैवमन्यन्नावानां न चेत्क र्त्ता परोजनः॥ तदा हिंसादयादान हरणाय व्यवस्थितः॥१००॥

अर्थ ॥ नूतिएटले नावअनेक्रिया एवन्नेनोएक अर्थछेते एकड्व्यसंततिनेविषे सामान्यविना नथाय अनेड्व्यनागुणनेविषे पणनथाय केमकेकोइपण ड्व्य अपर नावनो कर्त्ताहोतोनथी ॥ एए ॥ एमजआत्मानेविषे अन्यनावनुं कर्तृत्वपणुंनथी त्यारेशिष्यपूछेछे के हिंसा दया दानवगेरेनी व्यवस्थाकेम रहेशे ॥ १०० ॥

सत्यं पराश्रयं न स्यात् फलं कस्यापि यद्यपि॥ तथापि स्वगतं कर्म स्वफलं नाभिवर्त्तते॥१०१॥ हिनस्ति न परं कोपि निश्चया न्न च रक्षति॥न चापु कर्मणोनाशो मृतिजीवनमन्यथा ॥१०२॥

अर्थ ॥ त्यारेगुरुकहेछे यद्यपिए तारेबोलवुं साचुंछे केमके कोइनेपण पराश्रये

फलथतुंनथी तथापिपोतानेविषे रहेलुंजेकर्म तेपोतानाफलनेविषे प्रवर्त्ततुंनथी ॥ १०१ ॥ वीजाकोइने कोइमारतोनथी तेमकोइनेकोइ रक्षणकरतोनथी आयुकर्म नोनाश थायनही अनेमृत्युजीवन अन्यथाथायनही ॥ १०२ ॥

हिंसादयाविकल्पाभ्यां स्वमताभ्यां तु केवलं ॥फलं विचित्रमाप्नोति परापेक्षां विना पुमान् ॥१०३॥ शरीरी म्रीयतां मावा ध्रुवं हिंसा प्रमादिनः ॥ दयैव यत्नमानस्य वंधेपि प्राणिनां क्वचित् ॥ १०४ ॥

अर्थ ॥ हिंसाअने दयानीपणमात्र कल्पना करवीछे पोतानामतेकरी तोपरनी अपेक्षाथी पुरुषकेवल विचित्रफलने पामेछे ॥ १०३ ॥ जीवनोघातथाय अथवान थायतोपण जेप्रमादीजीवछे तेनेनिश्चयेंकरी हिंसाथायछे अनेजे दयावानप्राणीछे तेनाहाथे कदाचकोइजीवनी घातथइजाय तोपणतेने हिंसालागतीनथी ॥ १०४ ॥

परस्य युज्यते दानं हरणं वा न कस्यचित् ॥न धर्मसुखयोर्यत्ते कृतनाशादिदोषतः ॥ १०५ ॥ भिन्नाभ्यां भक्तवित्तादि पुद्गला भ्यां च ते कुतः ॥ स्वलापत्तिर्यतो दानं हरणं सलनाशनं॥१०६॥

अर्थ ॥ कोइवीजाने दानदेतोनथी अनेवीजानी पासेथीकोइकांइ हरणकरी ले तोनथी धर्मअनेसुखनेविषे पणदानतथा हरणनो संभवनथी केमके कृतनाशअने अकृतनोप्रसंग इत्यादिदोष प्राप्तथशे जेमदानकर्युं तेनुंनाशथाय तेनेकृतनाशकहेछे अनेजेवीजाने आप्युंनथी तेनुंहरणकरवुंते अकृतागम प्रसंगकहेवाय एवादोष आत्मातेविषे प्राप्तथशे ॥ १०५ ॥ केमकेभोजन तथाधनादिकजेपुद्गल तेतोआत्मा थीभिन्नछे तोतेमांक्यांथी पोतापणुंआव्युं माटेदानअनेहरणते पोताथीजनाशछे

कर्मोदयाच्च तद्दानं हरणं वा शरीरिणां ॥ पुरुषाणां प्रयासः क स्तत्तोपनमति स्वतः॥१०७॥स्वागताभ्यां तु भावाभ्यां केवलं दानचौर्ययोः॥अनुग्रहोपघातौ स्तः परापेक्षा परस्य न॥१०८॥

अर्थ ॥ वलीतेदान अनेहरणप्राणीने कर्मनाउदयथकीछे त्यांपुरुषनेशोप्रयासछे तेतोपोतानीमेलेज उदयपामेछे॥ १०७ ॥पोतामांरह्या एवाजेदानअनेहरणना भाव तेणेकरीनेएकथी उपगारथाय वीजाथीवधघातथाय त्यांपरनीअपेक्षापरनेनही१०८

परास्त्रितानां जावानां कर्तृत्वाद्यन्निमानतः ॥ कर्मणा बध्यतेऽज्ञा
नी ज्ञानवांस्तु न लिप्यते ॥१०ए॥ कर्तैवमात्मनोपुण्य पापयो र
तिकर्मणोः ॥ रागद्वेषाशयानां तु कर्तेष्टानिष्टवस्तुषु ॥ ११० ॥

अर्थ ॥ परआश्रितजेनाव तेनोहुंकर्त्ताछुं एमअन्निमानथीकहेवुं एवांकर्मेअज्ञानी बंधायछे पणज्ञानीतेवाकर्मे लेपातानाथी ॥ १०ए ॥ माटेआत्मातेपुण्यपापरूप कर्मनोकर्त्ताछे रागद्वेषआशयनो कर्त्ताछे अनेइष्टअनिष्टवस्तुनेविषेपण आत्माकर्त्ताछे

रज्यते द्वेष्टि चार्थेषु तत्तत्कार्यविकल्पतः ॥ आत्मा यदा तदा
कर्म न्रमदात्मनि युज्यते ॥ १११ ॥ स्नेहाभ्यक्ततनौ रंगं रेणुना
श्लिष्यते यथा॥रागद्वेषानुविद्धस्य कर्मबंधस्तथा मतः॥११२॥

अर्थ ॥ जेवारेंतेतेकर्मनाविकल्पथी आत्माने कोइपदार्थउपर रागदिशा अथवा द्वेषउपजेछे तेवारेंआत्मामां कर्मनोन्रमजोडायछे ॥ १११ ॥ तेलजगाडेलाशरीरें जेम रजनोलेपवलगेछे तेमरागीअनेद्वेषी आत्माने कर्मनोबंधविलगेछे ॥ ११२ ॥

आत्मा न व्याप्टतस्तत्र रागद्वेषाशयं सृजन् ॥ तन्निमित्तोपन
म्रेषु कर्मोपादानकर्मसु ॥११३॥ लोहं स्वक्रिययाभ्येति न्रामको
पलसंनिधौ॥यथा कर्म तथा चित्रं रक्तद्विष्टात्मसंनिधौ ॥११४॥

अर्थ॥तिहांआत्मापोते कोइक्रियाकरतोनथी पणरागद्वेषकरतोथको तेनिमित्तेपाम्या जेकर्म तेनानिमित्तेंकर्त्तापणुंकर्मने पणतिहांआत्मातो रागद्वेषरूपकर्मनो मूकनारोछे एटले आत्माजावकर्मनो व्यापारवंतछे पणद्रव्यकर्मनोव्यापारवंतनथी ॥११३॥ जेमचमकपाषाणते लोहने आकर्षे तेणेकरीलोह पोतानीक्रियायें चमकपासेंआवीमले तेमरागद्वेषीआत्मानीपासें कर्मआकर्षणेंआवीमलेछे ॥ ११४ ॥

वारि वर्षन् यथांजोदो धान्यवर्षीनिगद्यते॥जावकर्म सृजन्नात्मा
तथा पुज्ञलकर्मकृत् ॥ ११५ ॥ नैगमव्यवहारौ तु ब्रूतः कर्मा
दिकर्तृतां ॥ व्यापारः फलपर्यंतः परिदृष्टो यदात्मनः ॥११६॥

अर्थ ॥ जेमपाणीवरसेछे तेलोकव्यवहारें धान्यवरसेछे एमकहियें तेमजावकर्म करतोथको आत्मापुज्ञल कर्मनोकर्त्ताकहियें॥११५॥ नैगमव्यवहारनयवाला तो कर्मादिकनोकर्त्ताआत्माने मानेछे जेआत्मानो व्यापार तेफलपर्यंतदेखायछे ॥ ११६ ॥

अन्योन्यानुगतानां का तदेतदिति वा भिदा॥यावच्चरमपर्यायं
यथा पानीयदुग्धयोः ॥ ११७ ॥ नात्मनो विकृतिं दत्ते तदेषा
नयकल्पना॥शुद्धस्य रजतस्येव शुक्तिधर्मप्रकल्पना ॥ ११८॥

अर्थ ॥ परस्परमल्याएवाजेनय तेहनें एवोनिर्णययावत् चरमपर्यायछेपरंतुजातिने दकेमजणाय जेमदुधअनेपाणीनासंयोगनीपरेंसंग्रहमाने नैगमने अनेनैगममाने संग्रहनेएबेनयमाहोमांहेंजलेछे एमव्यवहारपण जलेछे ॥ ११७ ॥ वलीशुद्धनयवालो वो लेछेजे आत्मानेविकारनथी आपतोएवीनैगम तथाव्यवहारनयनी कल्पनाछे केहेनी परें तेकहेछेजेमशुद्धरूपानेछिपनोधर्म कल्पेछेतेहनीपरें जाणवुं ॥ ११८ ॥

मुषितत्वं यथा पांथगतं पथ्युपचर्यते ॥ तथा पुद्गलकर्मस्था वि
क्रियात्मनि बालिशैः॥११९॥कृष्णशोणोपि चोपाधेर्नाशुद्धः स्फ
टिको यथा ॥ रक्तोद्विष्टस्तथैवात्मा संसर्गात्पुण्यपापयोः॥ १२० ॥

अर्थ ॥ जेमपंथीजनने लुंटतांलोककहेछेजे मार्गलुंटाणो एलोकवाक्यछे तेमभूर्खप्राणी पुद्गलकर्ममांरही जेविक्रियाकरे तेआत्मानेविषे मानेछे ॥ ११९ ॥ जेमकालो अथवारातो स्फटिकछे तेउपाधिथीछे माटेतेथीतेने अशुद्धनकहियें तेमपुण्यपापना संयोगथी आत्मारागीद्वेषी कहेवायछे ॥ १२० ॥

सेयं नटकला तावद् यावद्विविधकल्पना॥ यद्रूपं कल्पनातीतं
न तु पश्यत्यकल्पकः॥१२१॥कल्पनामोहितोजंतुः शुक्लं कृष्णं
च पश्यति॥ तस्यां पुनर्विलीनाया मशुक्लं कृष्णमीक्षते ॥१२२॥

अर्थ ॥ जिहांसुधीविविध प्रकारनीकल्पनाहोय तिहांसुधीएसर्व नटकलारूपछे पणकल्पनायेंअतीतजेरूप तेनेतो जेअकल्पकहोय तेदेखे ॥ १२१ ॥ पणकल्पनायेंमुंझाणो जेजीव तेतो धोलानेकालुंदेखेअनेकालाने धोलुंदेखे अनेतेकल्पना जेवारेंजाय तेवारें तोकालानेकालुंजदेखे अनेधोलाने धोलुंजदेखे ॥ १२२ ॥

तद्ध्यानं सा स्तुतिर्भक्तिः सैवोक्ता परमात्मनः ॥ पुण्यपापवि
हीनस्य यद्रूपस्यानुचिंतनं ॥ १२३ ॥ शरीररूपलावण्य वप्र
छत्रध्वजादिभिः॥वर्णितैर्वीतरागस्य वास्तवी नो पवर्णना॥१२४॥

अर्थ ॥ पुण्यपापरहित एहवाजेपरमात्माप्रभु तेनास्वरूपनुं चिंतववुं तेनेजध्यानकहियें अनेस्तुतिपणतेज तथाजक्तिपणतेजकहियें॥१२३॥पणशरीरनावर्णे रूपेंकरीला

वस्थतायेंकरी समोसरणे अनेछत्रेकरीतथा इंद्रध्वजादिकेकरी जेपरमात्माने वखाण वा एहवीस्तुतिने वस्तुतत्वें करी साचीनकहियें ॥ १२४ ॥

व्यवहारस्तुतिः सेयं वीतरागात्मवर्त्तिनां॥ज्ञानादीनां गुणानां तु वर्णना निश्चयस्तुतिः ॥ १२५ ॥ पुरादिवर्णनाद्राजा स्तुतः स्या दुपचारतः ॥ तत्वतः शौर्यगांभीर्य धैर्यादिगुणवर्णनात्॥१२६॥

अर्थ ॥ केमके एस्तुतितोव्यवहारेंछे पणजेमां वीतरागनांज्ञानादिकगुण प्रशंसवा तेहनेनिश्चयस्तुतिकहियें ॥ १२५ ॥ जेमदेशनगरादिकेंकरी राजावखाणवो एउपचा रेंस्तुतिजाणवी पणराजानुंवल गांभीर्यताधैर्यतानुंवर्णववुं तेनिश्चेंथीस्तुतिकहियें॥१२६

मुख्योपचारधर्माणा मविभागेन या स्तुतिः॥न सा चित्तप्रसादा य कवित्वं कुकवेरिव ॥ १२७ ॥ अन्यथाभिनिवेशेन प्रत्युतान र्थकारिणी ॥ सुतीक्ष्णखड्गधारेव प्रमादेन करे धृता ॥ १२८ ॥

अर्थ॥जेमकोकशास्त्रना कविनीकविताइथी पंडितरीझेनही तेमवाह्यउपचार देखी वेहेंचणविना नीजेस्तुतिकरियें तेथकी चित्तप्रसन्नथायनही॥१२७॥जेपोतानेंहठ कदा ग्रहेंकरी मुखउपचारें स्तुतिकरी गुणमानेछे पणतेउलटी अनर्थकारीछे जेमप्रमादें करीहाथमांझालेली तरवारनीधार तेजोकदाच्पडेतोउलटी अनर्थविघातकरेछे ते नीपरें तेस्तुतिपण अन्यथाजाणवी ॥ १२८ ॥

मणिप्रभामणिज्ञान न्यायेन शुभकल्पना ॥ वस्तुस्पर्शितया न्याय्या यावन्नान्यजनप्रथा ॥१२९॥ पुण्यपापविनिर्मुक्तं तत्वत स्त्वविकल्पकं ॥नित्यं ब्रह्म सदा ध्येय मेषाशुद्धनयस्थितिः ॥१३०॥

अर्थ ॥ मणिरत्ननी कांतिदेखीने जेममणिनुंज्ञानके०ओलखाणथायछे एदृष्टां ते शुभकल्पनायेंकरी आत्मानुज्ञानहोयछे पणेवस्तुस्पर्शिकवडेकरी योग्यताथायछे प णजांसुधिनिरंजन प्रथानथीथयी त्यांसुधीकर्मछे ॥१२९॥ माटेपुण्यपापरहितपणे त त्वथीनिर्विकल्पएवो शाश्वतोजे आत्मातेसदायध्यावो एवीशुद्धनयनीस्थितिछे॥१३०॥

आश्रवः संवरश्चापि नात्मा विज्ञानलक्षणः ॥ यत्कर्म पुद्गला दान रोधावाश्रवसंवरः ॥ १३१॥ आत्मा दत्ते तु यद्भावैः स्वतंत्रः कर्मपुद्गलान्॥मिथ्यात्वाविरती योगाः कषयास्ते तदाश्रवाः॥१३२॥

अर्थ ॥ आत्माज्ञानरूपछे माटेआत्माने आश्रवसंवरकांइनकहियें पणकर्मपुद्गल तुंग्रहेवुं तथारोधवुंते आश्रवसंवरछे ॥ १३१ ॥ जेनावेंकरी स्वाधीनपणे कर्मपुद्गलने आत्माग्रहेछेते मिथ्यात्वअविरति कषाय अनेयोगजेआश्रवतेणेकरीजाणवुं ॥ १३२ ॥

भावनाधर्मचारित्र परिषहजयादयः॥आश्रवोछेदिनो धर्मा आ
त्मनो भावसंवराः॥ १३३ ॥आश्रवः संवरो न स्या त्संवरश्चा
श्रवः क्वचित्॥भवमोक्ष फलाभेदो न्यथा स्याद्धेतुसंकरात् १३४

अर्थ ॥ अनेभावनाधर्मजेचारित्रछे जेथकी परिसहनोजयथायते एआश्रवनो उछेदकधर्मछे एआत्माने भावसंवरकहियें जेआश्रवतेसंवरनथाय अनेजेसंवर ते आश्रवनथाय हेतुसंकर एवेजोकदापि एकरूपथाय तोसंसारअनेमोक्ष एवेनाफल पणएकथाय पणतेमांभेदरहेनही एटलेज्यांआश्रवेंकरीसंवरतुं संक्रमणथाय त्यांमोक्षफलजाणवुं अनेज्यांसंवरेंकरी आश्रवनुंसंक्रमणथाय त्यांसंसारफलजाणवुं॥ १३४ ॥

कर्माश्रवश्च संवरएवा न्नात्मा भिन्नैर्निजाशयैः॥करोति न परापेक्षा
मलंभूष्णुः स्वतः सदा ॥१३५॥ निमित्तमात्रभूता तु हिंसाऽहिंसा
दयोखिलाः॥ये परप्राणिपर्याया न ते स्वफलहेतवः ॥ १३६॥

अर्थ॥आश्रवभावने संवरकरतोथकोजे पोतानीआत्माथीजुदांनथी एवाजे पोतानाआश्रय तेणेकरी परअपेक्षानकरे केमकेतेपोताथी सदायसमर्थछे॥१३५॥जेहिंसाअहिंसादिकसघला परप्राणिनापर्याय तेआत्माने निमित्तभूतछे पणपोतानेफलहेतुनथी

व्यवहारविमूढस्तु हेतूंस्तानेव मन्यते ॥ वाह्यक्रियारतस्त्वांत
स्तत्वं गूढं न पश्यति॥ १३७ ॥ हेतुत्वं प्रतिपद्यंते नैवेति नियम
स्पृशः ॥ यावंत आश्रवाः प्रोक्ता स्तावंतोहि परिश्रवाः॥१३८॥

अर्थ ॥ व्यवहारमूढजेआत्मातेपरपर्यायने पोताना फलहेतुमानेछे माटेजेतुंमन वाह्यक्रियामांरक्तछे तेवाप्राणीगुप्ततत्वने देखतानथी ॥ १३७ ॥ जेहिंसादिक तथाअहिंसादिक परपर्यायहेतुपणुंछे तेनेपडिवजे अथवानथीपडवजेता एहवानियम तेतोनिश्चयनाजेफरसनाराछे तेहनेजेटलाआश्रवछे तेटलासंवररूपथाय॥१३८॥

तस्मादनियतं रूपं वाह्यहेतुषु सर्वथा॥ नियतो भाववैचित्र्या
दात्मैवाश्रवसंवरौ ॥ १३९ ॥ अज्ञाता विषयासक्तो वध्यते
विषयैस्तु सः॥ज्ञानाद्धि मुच्यते चात्मा नतु शास्त्रादिपुद्गलात्१४०

अर्थ ॥ तेमाटे सदायवाह्यहेतुनेविषे अनियतरूपठे नियतिनेविषे नावना विचित्र पणायकी आत्मातेज संवर आश्रवरूपठे ॥ १३९ ॥ जेअज्ञानीठे अने विषयासक्तठे तेहिजविषयमां वंधायठेते विषयतो आत्माने आत्मज्ञानथकी मूकाय पणशास्त्रादिक पुन्नयकी नमूकाय ॥ १४० ॥

शास्त्रं गुरोश्च विनयं क्रियामावश्यकानि च ॥ संवरांगतया प्राहु र्व्यवहारविशारदाः॥ १४१ ॥ विशिष्टा वाक्तनुस्वांतपुन्नास्ते फलावहाः॥ये तु ज्ञानादयोन्नावाः संवरत्वं प्रयांति ते॥१४२॥

अर्थ ॥ शास्त्रनणवुं गुरुनोविनयकरवो तथाआवश्यकादिकक्रियाकरवी एनेव्यवहारमां विचक्षणपुरुषोये संवरनाअंगकह्यांठे ॥१४१॥ जेरुमामनवचनकायायेंकरी प्रवर्त्तवुं तेहनाजेपुन्नतेफलदाइठे पणजेज्ञानादिकनावठे तेसंवरपणानेपामेठे॥१४२॥

ज्ञानादिन्नावयुक्तेषु शुन्नयोगेषु तत्नतं ॥ संवरत्वं समारोप्य स्मयंते व्यवहारिणः॥ १४३ ॥ प्रशस्तरागयुक्तेषु चारित्रादिगुणेष्वपि ॥ शुन्नाश्रवत्वमारोप्य फलन्नेदं वदंति ते ॥ १४४ ॥

अर्थ ॥ ज्ञानादिकनावेंयुक्त एवाजेशुन्नयोगतेनेविषे तत्नतजेसंवरत्वतेनेआरोपीने व्यवहारें प्रवर्त्तकजेजीव तेहर्षपामेठे ॥ १४३ ॥ रुमारागेंयुक्त एवाजेचारित्रादिक गुणतेनेविषे पण शुन्नआश्रवपणुं आरोपीने फलन्नेदकहेठे ॥ १४४ ॥

न्नवनिर्वाणहेतूनां वस्तुतोन विपर्ययः ॥ अज्ञानादेव तन्नानां ज्ञानी तत्र न मुह्यति ॥१४५॥ तीर्थकृन्नामहेतुत्वं यत्सम्यक्त्वस्य वर्ण्यते ॥ यच्चाहारहेतुत्वं संयमस्यातिशायिनः ॥ १४६ ॥

अर्थ ॥ संसारतयामोक्षनोहेतु तेनेवस्तुतत्वें कांइविपर्यासनथी पणअज्ञाननायोगथकी तेजगायें विपर्यासपणुंथायठे पणतिहांज्ञानीपुरुष कांइमुझातानथी ॥ १४५ ॥ जिननामकर्मनोहेतु जेसमकितने वर्णवीएठयें तेपणउपचारेंकहेवायठे अनेआहारकशरीरनोहेतु जेअतिशयलब्धिवंत संयमिमुनि तेपणउपचारेंकहेवायठे ॥ १४६ ॥

तपःसंयमयोः स्वर्ग हेतुत्वं यत्र पूर्वयोः॥उपचारेण तद्युक्तं स्याद् घृतं दह्यतितिवत् ॥१४७॥ येनांशेनात्मनोयोग स्तेनांशेनाश्रवोमतः॥येनांशेनोपयोगस्तु तेनांशेनास्यसंवरः ॥ १४८ ॥

स्थितिओ तेस्थितिओनिश्चेंथी क्षयथाय ॥ १६३ ॥ तेमाटेज्ञानमयी जेशुद्धतपसीते नेनिश्चयथी शुद्धभावनिर्जराथाय पणअज्ञानतपसीनेकांइनथाय ॥ १६४ ॥

वंधः कर्मात्मसंश्लेषो द्रव्यतः स चतुर्विधः ॥ तद्धेत्वध्यवसाया त्मा भावतस्तु प्रकीर्त्तितः॥१६५॥वेष्टयत्यात्मनात्मानं यथा सर्प स्तथा पुमान्॥तत्त भावैः परिणतो बध्नात्यात्मानमात्मना॥१६६॥

अर्थ ॥ कर्मनीसाथेआत्मानुंजेमलवुं तेनेबंधकहियें तेबंधचारभेदेंछे तेहेतुअध्य वसायें आत्माभावथीकह्योछे ॥ १६५ ॥ जेमसर्पपोतानीमेलें पोतेविंटायछेतेमआ त्मापण तेतेभावें परिणम्योथको पोतेपोतानीमेलेज कर्मसाथेंबंधायछे ॥ १६६ ॥

बध्नाति स्वं यथा कोश कारकीटःस्वतंतुभिः॥आत्मनः स्वगतैर्भा वैर्बंधने सोपमा स्मृता॥१६७॥जंतूनां सापराधानां बंधकारी न दीश्वरः ॥ तद्वंधकानवस्थाना दवंधस्याप्रवृत्तिनः ॥ १६८ ॥

अर्थ ॥ जेमरेशमनोकीडो पोतानीलालेकरी पोतेजबंधायछे तेमआत्मा पोताना रागादिपरिणामेकरी पोतेजबंधायछे एउपमाकही ॥ १६७ ॥ पणजेईश्वरकर्त्ताकहेछे तेयातनिषेधछे अपराधीजीवनेकांइ ईश्वरबंधकर्त्तानथी तेईश्वरबंधकर्त्तापणाना निषेध थायकी अबंधनीय आत्मानेविषे अप्रवृत्तिछे एटलेस्वभावेज बंधनिवृत्तिआत्मानेछे पणईश्वरकर्त्तानथी ॥ १६८ ॥

तत्वाज्ञानं प्रवृत्यर्थं ज्ञानवन्नोदना ध्रुवा ॥ अबुद्धिपूर्वकार्येषु स्वप्नादौ तददर्शनात् ॥ १६९॥ तथा भव्यतया जंतु र्नोदितश्च प्रवर्त्तते ॥ बध्नन् पुण्यंच पापं च परिणामानुसरतः ॥ १७० ॥

अर्थ ॥ ज्ञानवंतनी जेप्रेरणाछे तेतत्वज्ञाननी प्रवृत्तिनेअर्थें ध्रुवछे केमकेस्वप्नादिक जेअबुद्धिपूर्वक कार्यछेतेनेविषे ए ज्ञाननी प्रेरणाकांइ देखातीनथी तेमाटे ॥ १६९ ॥ तेमज प्राणीभव्यतायें प्रेर्योथको परिणामने अनुसारेंकरी पुण्यपापने बांधतोथको प्रवर्त्तेछे ॥ १७० ॥

शुद्धनिश्चयतः स्वात्मा न बद्धो बंधशंकया॥भयकंपादिकं किंतु रज्जावहिमतेरिव ॥ १७१ ॥ रोगस्थित्यनुसारेण प्रवृत्ती रोगि णो यथा ॥ भवस्थित्यनुसारेण तथा बंधोपि वर्ण्यते॥ १७२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धनिश्चयनयथकीतो आत्माबंधकछे पणभयकंपादिकेंकरी बंधनीशंका

रहेने जेमदोरडुंदेखी सर्पनीशंकाउपजेछे तेनीपरेंजाणवुं ॥ १७१ ॥ रोगनीस्थितिने अनुसारेंरोगछेएटले जेदिवशेंशरीरउपनुंतेजदिवसथी सर्वरोगनीस्थितीओ शरीरमां उत्पन्नथयलीने अर्थातशरीरकेवल रोगनीस्थितिरूपजछे पणतेरोगजेवारेंरोगीने कु पथ्यसेवेतेवारेंप्रगटथायछे तेवारेंरोगीपुरुपजेम रोगनीप्रवृत्तिगणेछे तेमजनवस्थितिने अनुसारे आत्माने बंधपणकह्येंछेयें ॥ १७२ ॥

दृढाज्ञानमयीशंका मेनामपनिनीपतः ॥ अध्यात्मशास्त्रमिच्छं
ति श्रोतुं वैराग्यकांक्षिणः॥ १७३ ॥ दिशाप्रदर्शकं शाखा चंद्र
न्यायेन तत्पुनः॥प्रत्यक्षविषयां शंकां न हि हंति परोक्षधीः १७४

अर्थ ॥ दृढअज्ञानमय एहवीजेशंका तेहनेटालवानेइछतो वैराग्यनो अभिलापी थको अध्यात्मशास्त्र सांजलवानेइछेछे ॥१७३॥ जेमनिर्मलचक्षुछता ग्रहणवेलाजेवी नजरथइजायतोतेणेकरी एकचंद्रनीपासे बीजोचंद्रदेखे एन्यायेंकरीजे अध्यात्मशास्त्र छे तेपणदिशिनुंदेखाम्नारछे पणपरोक्षबुद्धिकांइ प्रत्यक्षविषयनी आशंकाने टाली नशके एटलेअध्यात्मनोविषय प्रत्यक्षपणेनथी परोक्षपणेछे माटेस्वजावेंजे अध्यात्म शास्त्रछे तेपरोक्षबुद्धिछे पणअनुजवते साक्षात् प्रत्यक्षपणाने हणीनशके एटले आ त्मानुजविपुरुषो पोतानाअनुजवेंकरी आत्मानोप्रत्यक्षअनुजवकरेछे॥ १७४ ॥

शंखश्वैत्यानुमानेपि दोपात्पीतत्वधीर्यथा॥शास्त्रज्ञानेपि मिथ्याधीः
संस्काराद्बंधधीस्तथा॥१७५॥श्रुत्वा मत्वा मुहुः स्मृत्वा साक्षादनुभवं
ति ये॥ तत्वं न बंधधीस्तेषा मात्मबद्धः प्रकाश्यते ॥ १७६ ॥

अर्थ॥ जेममधुरानारोगवंतपुरुष तेयद्यपिशंखने उज्वलोतोजाणेछे पणरोगेकरीते ने पीलावर्णनीबुद्धिथायछे तेमशास्त्रेंकरीआत्मानेनिर्मलतोजाणेछे पणमिथ्यात्वबुद्धि नासंस्कारथकी बंधरूपबुद्धिछे एटलेआत्मानेरागी द्वेपीबंधरूपजेदेखेछे तेअनुजवविना देखेछे एजावार्थछे॥१७५॥गुरुनामुखथी अध्यात्मशास्त्रनुं सांजलवुं तेनेश्रवणकेहेछे तेसांजलेलाविषयना अनुक्रमेपुनःपुनःअंतःकरणमां विचारकरवो तेनेमननकहेछे अ नेसांजलीनेविचारकरी संशयतथाविपर्ययजावरहित थइने उक्तअध्यात्मिक विषयरूप स्वात्मतत्व अंतर्वृत्तिकरीने जेसाक्षात् अनुजवकरवुं तेनेनिदिध्यासनकहेछे एवास्वा त्मज्ञाततत्व पुरुषनेबंधबुद्धि होतीनथी केमके बंधनेप्रकाशकरनारतोआत्मा पोतेज छे तेअनुजवथयापछी अज्ञानरूपबंधनो आश्रयकेमकरे ज्यांसुधी आत्माअनुजव

स्थितिथ्यो तेस्थितिथ्योनिर्श्चेथी क्षयथाय ॥ १६३ ॥ तेमाटेज्ञानमयी जेशुद्धतपसीते नेनिश्चयथी शुद्धनावनिर्ज्जराथाय पणअज्ञानतपसीनेकांइनथाय ॥ १६४ ॥

बंधः कर्मात्मसंश्लेषो द्रव्यतः स चतुर्विधः ॥ तद्धेतध्यवसाया
त्मा नावतस्तु प्रकीर्त्तितः॥१६५॥वेष्टयत्यात्मनात्मानं यथा सर्प
स्तथा पुमान्॥तत्तन्नावैः परिणतो बध्नात्यात्मानमात्मना॥१६६॥

अर्थ ॥ कर्मनीसाथेआत्मानुंजेमलवुं तेनेबंधकहियें तेबंधचारजेदेछे तेहेतुअध्य वसायें आत्मानावथीकह्योछे ॥ १६५ ॥ जेमसर्पपोतानीमेलें पोतेविंटायछेतेमआ त्मापण तेतेनावें परिणम्योथको पोतेपोतानीमेलेज कर्मसाथेंबंधायछे ॥ १६६ ॥

बध्नाति स्वं यथा कोशं कारकीटःस्वतंतुनिः॥आत्मनः स्वगतैर्ना
वैर्बंधने सोपमा स्मृता॥१६७॥जंतूनां सापराधानां बंधकारी न
हीश्वरः ॥ तद्बंधकानवस्थाना दबंधस्याप्रवृत्तितः ॥ १६८ ॥

अर्थ ॥ जेमरेशमनोकीडो पोतानीजालेकरी पोतेजबंधायछे तेमआत्मा पोताना रागादिपरिणामेकरी पोतेजबंधायछे एउपमाकही ॥ १६७ ॥ पणजेईश्वरकर्त्ताकहेछे तेवातनिषेधछे अपराधीजीवनेकांइ ईश्वरबंधकर्त्तानथी तेईश्वरबंधकर्त्तापणाना निषेध वायकी अबंधनीय आत्मानेविषे अप्रवृत्तिछे एटलेस्वनावेज बंधनिवृत्तिआत्मानेछे पणईश्वरकर्त्तानथी ॥ १६८ ॥

तत्वाज्ञानं प्रवृत्यर्थं ज्ञानवन्नोदना ध्रुवा ॥ अबुद्धिपूर्वकार्येषु
स्वप्नादौ तददर्शनात् ॥ १६९॥ तथा नव्यतया जंतु र्नोदितश्च
प्रवर्त्तते ॥ बध्नन् पुण्यंच पापं च परिणामानुसरतः ॥ १७० ॥

अर्थ ॥ ज्ञानवंतनी जेप्रेरणाछे तेतत्वज्ञाननी प्रवृत्तिनेअर्थे ध्रुवछे केमकेस्व प्नादिक जेअबुद्धिपूर्वक कार्यछेतेनेविषे ए ज्ञाननी प्रेरणाकांइ देखातीनथी तेमा ॥ १६९ ॥ तेमज प्राणीनव्यतायें प्रेर्योथको परिणामने अनुसारेंकरी पुण्यपाप बांधतोथको प्रवर्त्तेछे ॥ १७० ॥

शुद्धनिश्चयतः स्वात्मा न बद्धो बंधशंकया॥नयकंपादिकं किंतु
रज्जावद्दिपतेरिव ॥ १७१ ॥ रोगस्थित्यनुसारेण प्रवृत्ती रोगि
णो यथा ॥ नवस्थित्यनुसारेण तथा बंधोपि वर्ण्यते ॥ १७२ ॥

अर्थ ॥ शुद्धनिश्चयनयथकीतो आत्माबंधकछे पणनयकंपादिकेंकरी बंधनीशंक

...मदोरडुंदेखी सर्पनीशंकाउपजेछे तेनीपरेंजाणवुं ॥ १७१ ॥ रोगनीस्थितिने ...रेंरोगछेएटले जेदिवशेंशरीरउपनुंतेजदिवसथी सर्वरोगनीस्थितीओ शरीरमां ...थयलीछे अर्थातशरीरकेवल रोगनीस्थितिरूपजछे पणतेरोगजेवारेंरोगीने कु...वेतेवारेंप्रगटथायछे तेवारेंरोगीपुरुषजेम रोगनीप्रवृत्तिगणेछे तेमजनवस्थितिने ...तारे आत्माने बंधपणकहियेंछेयें ॥ १७२ ॥

दृढाज्ञानमयीशंका मेनामपनिनीषतः ॥ अध्यात्मशास्त्रमिच्छं ति श्रोतुं वैराग्यकांक्षिणः॥ १७३ ॥ दिशाप्रदर्शकं शाखा चंद्र न्यायेन तत्पुनः॥प्रत्यक्षविषयां शंकां न हि हंति परोक्षधीः १७४

अर्थ ॥ दृढअज्ञानमय एहवीजेशंका तेहनेटालवानेइच्छतो वैराग्यनो अभिलाषी ...यको अध्यात्मशास्त्र सांभलवानेइच्छेछे ॥१७३॥ जेमनिर्मलचक्षुवता ग्रहणवेलाजेवी ...नजरथइजायतोतेणेकरी एकचंद्रनीपासे वीजोचंद्रदेखे एन्यायेंकरीजे अध्यात्मशास्त्र ...छे तेपणदिशिनुंदेखाडनारछे पणपरोक्षबुद्धिकांइ प्रत्यक्षविषयनी आशंकाने टाली नशके एटलेअध्यात्मनोविषय प्रत्यक्षपणेनथी परोक्षपणेछे माटेसनावेजे अध्यात्म ...शास्त्रछे तेपरोक्षबुद्धिछे पणअनुभवते साक्षात् प्रत्यक्षपणाने हणीनशके एटले आ... ॥ १७४ ॥ ...त्मानुभविपुरुषो पोतानाअनुभवेंकरी आत्मानोप्रत्यक्षअनुभवकरेछे॥

शंखश्वैत्यानुमानेपि दोषात्पीतत्वधीर्यथा॥शास्त्रज्ञानेपि मिथ्याधीः संस्काराद्बंधधीस्तथा॥१७५॥श्रुत्वा मत्वा मुहुः स्मृत्वा साक्षादनुभवं ति ये ॥ तत्वं न बंधधीस्तेषा मात्मवद्धः प्रकाश्यते ॥ १७६ ॥

अर्थ॥ जेममधुरानोरोगवंतपुरुष तेयद्यपिशंखने उज्वलोतोजाणेछे पणरोगेकरीते ने पीलावर्णनीबुद्धियायछे तेमशास्त्रेंकरीआत्मानेनिर्मलतोजाणेछे पणमिथ्यात्वबुद्धि नासंस्कारथकी बंधरूपबुद्धिछे एटलेआत्मानेरागी द्वेषीबंधरूपजेदेखेछे तेअनुभवविना देखेछे एनावार्थछे॥१७५॥गुरुनामुखथी अध्यात्मशास्त्रनुं ज्ञानजवुं तेनेश्रवणकहेछे य तेसांभलेलाविषयना अनुक्रमेपुनःपुनःअंतःकरणमां विचारकरवो तेनेमननकहेछे एवाला नेसांभलीनेविचारकरी संशयतथाविपर्ययभावरहित थइने उक्तअध्यात्मिक विषयरूप सात्मतत्व अंतर्वृत्तिकरीने जेसाक्षात् अनुभवकरवुं तेनेनिदिध्यासनकहेछे एवाला त्मज्ञाततत्व पुरुषनेबंधबुद्धि होतीनथी केमके बंधनेप्रकाशकरनारतोआत्मा पोतेज छे तेअनुभवथयापछी अज्ञानरूपबंधनो आश्रयकेमकरे ज्यांसुधी आत्म.अनुभ...

अथवा ज्ञानवडे प्रकाशनेपाम्यो नहतो त्यांसुधी तमरूपअज्ञान अनेबंधवानथयो हतो पणअनुनवथयापही आत्मानेविषे बंधनयो ॥ १७६ ॥

द्रव्यमोक्षः क्षयः कर्म्म द्रव्याणां नात्मलक्षणं ॥भावमोक्षस्तु तद्धेतु रात्मारत्नत्रयान्वयी॥१७७॥ ज्ञानदर्शनचारित्रे रात्मैक्यं लजते यदा॥कर्माणि कुपितानीव जवंत्याशु तदा पृथग्॥१७८॥

अर्थ॥जेद्रव्यकर्मनो क्षयतेद्रव्यमोक्षछे पणतेकांइआत्मानुंलक्षणनथी मात्रतेद्रव्य कर्मनोक्षयतेमोक्षनुं हेतुथायछे पणआत्मातोरत्नत्रय परिणतिरूपछे तेने द्रव्यकर्मनो क्षयतो उपचारथीमोक्षहेतुकहियें पणवस्तुथीतत्त्वबुद्धियेंकहेवायनही १७७ तेज्ञानद र्शनचारित्रएरत्नत्रयीवर्मेकरीने जेवारेंआत्माएकजावपणानेपामेतेवारेंजेकर्महतातेको इकसंसारीजीवजेम रीसाइनेघरमांथीजुदोनिकले तेमकर्मपणजीवथीजुदांनिकलीजाय

अतोरत्नत्रयं मोक्ष स्तदभावे कृतार्थता ॥ पापंम्गिणलिंगैश्च गृहलिंगैश्च कापि न ॥ १७९ ॥ पापंम्गिणलिंगेषु गृहलिंगेषु ये रताः ॥ न ते समयसारस्य ज्ञातारो बालबुद्धयः ॥ १८० ॥

अर्थ ॥ एमाटेजेरत्नत्रयी तेर्थाजमोक्षछे पणतेरत्नत्रयीनेअजावें पांखडीसाधुनासमू हने तथापाखंडी ग्रहीलिंगीने कृतार्थपणुं कांइनथी ॥ १७९ ॥ माटेपाखंमीसाधुना समूहमां तथापाखंमीग्रहीलिंगीमां जेप्राणीरक्तछे तेहनेबालमतिवाला समजवा प णतेसिद्धांतनासार एटलेरहस्यना जाणनथी ॥ १८० ॥

जावलिंगरता येषु सर्वसारविदो हि ते ॥ लिंगस्था वा गृहस्था वा सिध्यंति धुतकल्मषाः॥१८१॥ जावलिंगं हि मोक्षांगं द्रव्य लिंगमकारणं॥द्रव्यं नात्यंतिकं यस्मा न्नाप्यैकांतिकमिष्यते१८२

अर्थ ॥ अनेजेप्राणी जावलिंगेंराताछे तेहनेसर्वसारना जाणकहियें तेवेषधारी साधुलिंगेंहोय अथवाग्रहस्थलिंगेंहोय तोपणपापकर्मधोइने मोक्षपामे ॥ १८१ ॥ के मकेजेजावलिंगते मोक्षनुंअंगछे अनेद्रव्यलिंगतोअकारणछे द्रव्यलिंगतेकांइ आत्यंति कनथी माटेजेजावलिंगीछे तेद्रव्यलिंगने एकांतेनथीइछता ॥ १८२ ॥

यथा जातदशालिंग मर्थादव्यनिचारि चेत् ॥ विपक्षबाधका जावात् तद्धेतुत्वे तु का प्रमा॥१८३॥वस्त्रावधारणेहाचेद्वाधिकात स्य तां विना ॥ धृतस्य न किमस्थाने करादेरिव बाधकं॥१८४॥

अर्थ ॥ इहांकोइकहेशेजे नगनपणेमोक्षछे तेनेउत्तरकहेछे जोएथ्यर्थथी वातख रीछेतो आत्मानेमोहबाधकछे तेमोहनोअभावथाशे अनेजोनगनपणे मोक्षहोयतो मोह टाळवानुं शुंप्रमाण तेवारेंतोमोहटाळवानी कांइजरूरनरहे॥ १८३ ॥वस्त्ररह णेएटले इच्छाविनापण जो वस्त्रराखतां मोक्षनीबाधकताछे तोइच्छाविनाजे करादिक एटले हाथप्रमुखअंगधराछे तेपणमोक्षना बाधकथाशे एटले दिगंबरलोककहेछेके वस्त्रराखवाथी मोक्षनीबाधकताछे तेहनेनिरुत्तरकर्यां ॥ १८४ ॥

स्वरूपेण च वस्त्रं चेत्केवलज्ञानबाधकं॥ तदादिक्पटनीत्यैव तत्तदावरणं भवेत् ॥१८५॥ इत्थं केवलिनस्तेन मूर्ध्नि द्विप्तेन के नचित् ॥ केवलित्वं पलायंते त्यहोकिमसमंजसं ॥ १८६ ॥

अर्थ ॥ जोपरमार्थथी जेवस्त्रछे तेहिजकेवलज्ञानने बाधकपणेहोयतो दिगंबरनी रीतें केवलज्ञानावरणीने ठेकाणे वस्त्रावरणी एमथयुंजोइयें तेवस्त्रावरणी कर्मदि गंबरीयो कहेतानथी एटलीएनीचूकछे॥१८५॥एरीतेंतो केवलिनेमाथे कोइकवस्त्रओ ढाडे तेवारेंकेवलज्ञानने नासीजवुंजोइयें पणकेवलीने वस्त्रओढाडतां केवलज्ञान नासीजायछे एमतोथतुंनथी माटे अहोइतिआश्चर्य शुंछतुंअसमंजस बोलोछो॥१८६

भावलिंगात्ततोमोक्षो भिन्नलिंगेष्वपि ध्रुवः॥ कदाग्रहं विमुच्यै तद्भावनीयं मनस्विना॥१८७॥अशुद्धनयतो ह्यात्मा बंधोमुक्त इ तिस्थितिः ॥ न शुद्धनयतस्त्वेष बध्यते नापि मुच्यते॥१८८॥

अर्थ ॥ तेमाटे भावलिंगथीमोक्षछे वेषनोकांइनियमनथी कदापिद्रव्यथी अन्य लिंगीनोवेषहोय तोपणनिश्चेमोक्षछे माटेकदाग्रहत्यागीने बुद्धिवंतपुरुषें एरीतेंविचारवुं ॥ १८७ ॥ अशुद्धनयथी आत्माबंधायछे अनेमुंकायपणछे पणशुद्धनयेंतो एआत्मा बंधातोपणनथी अनेमुंकातोपणनथी ॥ १८८ ॥

अन्वयव्यतिरेकाभ्या मात्मतत्वविनिश्चयं॥ नवभ्योपि हि तत्वे भ्यः कुर्यादेवं विचक्षणः॥ १८९॥ इदं हि परमध्यात्म ममृतं ह्य दएव च॥ इदं हि परमं ज्ञानं योगोयं परमः स्मृतः॥ १९०॥

अर्थ ॥ अन्वयव्यतिरेकेंकरीने जेछतेछतुं तेहनेअन्वयकहियें अनेजेअछते तेअ छतुं तेहनेव्यतिरेककहियें तद्भावेतद्भावोअन्वयः तदभावेतदभावोव्यतिरेकः दंड घटदृष्टांतेंनजाव्यं विचक्षणपुरुषे एरीतेंआत्मतत्वनो निश्चयनवतत्वेंकरीने करवो

धारुं कृपथाय जेथकीमार्गनिर्मलथायछे वलीचक्षुमांथी प्रमादरूपनिद्राजायछे तथा जेमसूर्योदयथी दिवस उग्योएमसिद्धथायछे तेमजैनागमना उदयथी प्रमाणनीसिद्धतारूपदिवसनीसिद्धताथायछे तेजाणियेंदिवसनेप्रारंभे लोकप्रजातेमंगलीकबोलेछे जेमसूर्यउदये लोकन्यायमार्गेचाले न्यायनावचनबोले तेमजैनसूर्यउदये नयतथा गमा नीवाणीते घणीरूडीरीतेप्रौढतापामेछे एवोएजिनशासनरूपियो सूर्य तेजयवंतोवर्त्तो

अध्यात्मामृतवर्षिभिः कुवलयोल्लासं विलासैर्गवां तापव्यापविनाशि
भिर्वितनुते लब्धोदयोयः सदा॥तर्कस्थाणुशिरःस्थितः परिवृतः स्फा
रैर्नयैस्तारकैः सोयं श्रीजिनशासनामृतरुचिः कस्यैति नो रुच्यतां॥५॥

अर्थ ॥ हवेजिनशासनने चंद्रनीउपमाआपी वखाणेछे अध्यात्मरूप अमृतनो जेवरसाद तेणेकरीने कुवलयजेपृथवीरूपकमल तेनेविकस्वर करेछे एहवो वली ग वांके० वाणीरूपकिरण तेनाविलासेंकरीने संसारना तापनोजेसमूह तेनोनाशकरे छे एहवो वली एचंद्रमाकेवोछे जेतर्कविचार रूपीयोजे महादेव तेनामस्तकेरह्योथको उदयपाम्योछे एवो वली दीप्तजेनय तेरूपजेतारामंडल तेणेपरिवर्योथको फिरे छे एवोजिनागमचंद्र ते आजिनशासन रूपियोजेचंद्रमाते कोनेरुचिपणाने नउप जावे अपितु सर्वनेउपजावेज ॥ ५ ॥

बौद्धानामृजुसूत्रतो मतमभूद्वेदांतिनां संग्रहात्सांख्यानां तत एव
नैगमनयाद् योगश्च वैशेषिकः॥शब्दब्रह्मविदोपि शब्दनयतः स
र्वैर्नयैर्गुंफिता जैनी दृष्टिरितीह सारतरता प्रत्यक्षमुद्वीक्षते ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेनाअनेकनयमांथी एकेकानयग्रहणकरीने एटले ऋजुसूत्रनयथी बौद्धनोमतप्रगट्यो अनेसंग्रहनयथी वेदांतिकनो मतप्रगट्यो तथासांख्यमतपण संग्रहनयथीजउपनो अनेनैगमनयथी योगमत अने वैशेषिकमत प्रगट्यो शब्दनयथकी मीमांसकदर्शन उपनुं अनेजैनशासनतो सर्वनयेकरीने गुंफितछे तेमाटेआ जिनशासनमां सारमांसारपणुं प्रत्यक्षपणे रुडीरीतेदेखीयें छैयें ॥ ६ ॥

ऊष्मा नार्कमपाकरोति दहनं नैव स्फुलिंगावली नाब्धिं सिंधुजल
प्लवः सुरगिरिं ग्रावा न वाभ्यापतत्॥एवं सर्वनयैकभावगरिमस्था
नं जिनेंद्रागमं तत्तद्दर्शनसंकथांशरचनारूपं न हंतुं क्षमाः॥ ७ ॥

अर्थ ॥ उकलाटजे बाफ तेनोजेताप तेसूर्यनेजीतीशकेनही अनेअग्निना कणि

यातें दावानलने जीतीनशके तथासिंधुनदीनुंजल तेनोजेवेग तेलवणसमुद्रने तेलीन शके पथरनाजेखंड तेमेरुपर्वतने दावीनशके एमसर्वनयना एकताभावनी मोहोटाइनुं स्थानक एहवो तीर्थंकरनुजेआगम तेहने तेपरदर्शनीओ हणवानेसमर्थनही शामाटेजे ए जैनतेसर्वदर्शनीछे अनेतेदर्शनीयो जैननाएकेकअंशीछे ॥ ७ ॥

दुःसाध्यं परवादिनां परमतक्षेपं विना स्वं मतं
तत्क्षेपे च कषायपंककलुषं चेतः समापद्यते ॥
सोयं निस्वनिधिग्रहव्यवसितौ वेतालकोपक्रमो
नायं सर्वहितावहो जिनमते तत्वप्रसिध्यर्थिनां ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ परदर्शनीजेटलाछे तेएकएकनामतने खंडयाविना पोतानामतने थापी नशकानथी ए मतमतनोजेकदाग्रह तेनोप्रक्षेपकरतां कषायरूपकादवेंकरीने मनम लिनथायछे एकदाग्रहनो व्यापारतेतो दरिद्रीनाघरनोनिधान हरवाने वेतालगयो तेप्रायजाणवो एउपक्रम सर्वजिनमतनेविषे हितकारीनथी माटे अर्थीजीवने ए जि नमत ते तत्वरूपें प्रसिद्धछे ॥ ८ ॥

वार्त्ताः संति सहस्रशः प्रतिमतं ज्ञानांशबंधक्रमाश्चेतस्तासु ततः प्र
याति नतमां लीनं जिनेंद्रागमे॥नोत्सर्पति लताः कति प्रतिदिशं पुष्पैः
पवित्रा मधौ ताभ्योनैति रतिं रसालकलिकारक्तस्तु पुंस्कोकिलः॥९॥

अर्थ॥जेहनोअनुक्रमज्ञाननेमात्रअंशेकरीनेबंधायोछे एहवीपरदर्शनीओनीवार्त्ताछे तेवामतममत्व हजारोगमेवर्त्तेछे पणतेवातोनेविषे माहारुंचित्तजातुंनथी शामाटेजेसि द्धांतोनेविषे माहारुंमनलीनछे माटेचैत्रमासें दिशोदिशेजेफूल तेणेकरीने पवित्र एह वीजेलता तेकेटलीकविकस्वरथाय फुले पणपुंस्कोकिलजे कोइल तेआंबानीमंजरी शुं रक्तएवोथको तेलताओनेविषेरतिनपामे तेनीपरें महारुंचित्तपण सिद्धांतरूप आं बानीमंजरियें रक्तथयोथको अन्यदर्शनरूप लतायोमां जातुंनथी ॥ ९ ॥

शब्दोवा मतिरर्थ एव वसु वा जातिः क्रिया वा गुणः शब्दार्थः किमि
ति स्थितिः प्रतिमतं संदेहशंकुर्यथा॥जैनेंद्रे तु मते न सा प्रतिपदं जा
त्यंतरार्थस्थितिः सामान्यं च विशेषमेव च यथा तात्पर्यमन्विच्छति १०॥

अर्थ ॥ आशब्दछे किंवा मतिछे केअर्थछे केगुणछे के वस्तुके०द्रव्यछे केजातिछे के क्रियाछे वलीएनो शब्दार्थकेमहसे एवोसंदेहरूपिओ खीलोते मतमतप्रत्येरह्योछे

पण जिनमतमांनथी तेपदपदप्रत्यें जात्यंतरअर्थनी स्थितिछे माटे सामान्यअनेवि शेप जेवोपदार्थनुं यथार्थनिश्चय तात्पर्यअर्थतेने नजेछे माटेजिनमतमां संदेहरूप खीलोनथी ॥ १० ॥

यत्रानर्पितमादधाति गुणतां मुख्यं तु वस्त्वर्पितं तात्पर्यानवलंबने न तु न्नवेद्बोधः स्फुटं लौकिकः॥संपूर्णं लवन्नासते कृतधियां कृत्स्नावि वक्षाक्रमात् तां लोकोत्तरन्नंगपद्धतिपदं स्याद्वादमुद्रां स्तुमः॥११॥

अर्थ ॥ जेस्याद्वादरूपजैनमुद्रातेमां केवोगुणछे के जेमांवस्तुने अनर्पणकरीछता पण तेवस्तुगुणतानेप्राप्तिथायछे अनेवस्तुअर्पणकरीछतांते मुख्यताजावनेपामेछे अने जेनातात्पर्यअर्थने अवलंबनेकरीने तोप्रगटपणे लौकिकबोधथायछे अनेसंपूर्णबो धतो समग्रविवक्षाना अनुक्रमथकी महानिपुणबुद्धिवालाने प्रकाशथायछे तेमाटेए लोकोत्तर न्नंगजालनुठेकाणुं एवीजेस्याद्वादशैलीरूपमुद्रा तेनेअमेस्तवियेंछैयें ॥ ११ ॥

आत्मीयानुन्नवाश्रयार्थविषयोप्युच्चै र्यदीयक्रमो म्लेच्छानामिव संस्कृ तं तनुधियामाश्चर्यमोहावहः ॥ व्युत्पत्तिप्रतिपत्तिहेतुविततस्याद्वा दवाग्गुंफितं तं जैनागममाकलय्य न वयं व्याक्षेपन्नाजः क्वचित्॥१२

अर्थ ॥ तेजैनागमकहेवुंछेजेमां पोताना आत्मानो अनुन्नवकरवाना आश्रयनो विषयछे एहवोउंचपणेकरीने जेहनोक्रमछे एटलेपरिपाटीछे अनेम्लेछनेजेम सं स्कृतन्नाषा आश्चर्यकरनारी अनेमोहउपजावनारीछे तेनीपरें अल्पबुद्धिवालानेअर्थ लोपामी मुंफावबानुंस्थानकछे माटेजैनागमतो व्युत्पत्तिनुं निरूपण करनाराजे हेतुते णेकरी विस्तीर्णएहवोजे स्याद्वादमार्गतेणेकरी रचेलुंएहवुं जैनागमछे तेनेपामीने महाराचित्तमां बीजोकोइपण व्याक्षेपपणुं किवारेंपणथतुंनथी ॥ १२ ॥

मूलं सर्ववचोगतस्य विदितं जैनेश्वरं शासनं तस्मादेव समुत्थितैर्नय मतैस्तस्यैव यत्खंडनं॥एतत्किंचन कौशलं कलिमलच्छन्नात्मनः स्वा श्रितां शाखांछेत्तुमिवोद्यतस्य कटुकोदर्काय तर्कार्थिनः ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ माटेसर्ववचनगतसमूहनुंजेमूल एहवुंएजिनशासनकह्युंछे एजिनशासन थ कीज प्रगटथया एहवाजे नयनयना मत तेवामतेंकरीनेज दुष्टप्राणी तेज जिनआगमनुं खंडनकरेछे तेपापिष्ठआत्मायोनो आत्मापापरूपमेलेकरीढंकाणोछे एवादुष्टोनुंजेकांइ किंचितमात्र डाहापणपणुंछे तेजेमकोइकमूर्ख जेवृक्षनीडालें बेठोथको तेजडालकाप

वानेउजमालयाय तेथीकमवाविपाकपामे तेमतेकुविचारवाळाने आगळकमवांरूस मगटपशे ॥ १३ ॥

लक्त्वोन्मादं विभज्य वादरचनामाकर्ण्य कर्णामृतं सिद्धांतार्थरहस्य वित्क्कलभतामन्यत्र शास्त्रे रतिं ॥ यस्यां सर्वनया वसंति न पुनर्व्यस्तेपु तेष्वेव या मालायां मणयो लुठंति न पुनर्व्यस्तेपु तेष्वेव सा॥१४॥

अर्थ ॥ उन्मादंकरीनेविवेचनालक्षणजे नयनोवाद तेहनीजे रचना तेजेणेतज्यांछे एहवोघको वळीमाहोमाहें कगमोतजीने वळी कानेअमृतरूप वाणीसांभळीने सिद्धांत नाअर्थ रहस्यनोजे जाणपुरुष तेत्रीजाशास्त्रनेविषे रतिकेमपामे अर्थातनजपामे जे जैनवाणिनेविषे सगळाएनय प्रवेशकरेछे पणतेजूदाजुदानयवाळाना मतमांसर्वनय नथी तेथीजैनवाणीकांइतेमांरेहेतिनथी शामाटेजतेमजे अयथिनवाळाकेमाटेजेनमां सर्वनयछे जेममाळानेविषे सर्वमणकारमेछे पणजूदामणका... तेनेमाळानकहिये अनेएकमणके सर्वमणका समाणाएमपणनकहीए माटेतेमाळा...

अन्योन्यप्रतिपक्षभावविततान् स्वस्वार्थसत्यान्नयानापेक्षाविषयमदे विभजते माध्यस्थमास्थाय यः॥ स्याद्वादे सुपथे निवेश्य हरंते तेषां तु दिङ्मूढतां कुंदेंदुप्रतिमं यशोविजयिनस्तस्यैव संवर्धते १५

अर्थ ॥ एमएकबीजाने वैरभावेंकरी जुदाजुदाजेपोतपोतानाअर्थ तेनेमानी... एवामतवाळाजे दर्शनी तेपोतानानयनो विषयभेदकरी माध्यस्थपणानेधा... सापमाठानोविभागकरावीनेजे स्याद्वादरूपउत्तममार्गनेविषेजोडेछे... ... जे माध्यस्थपणुं ग्रहणकरीनेमनी दिङ्मूढतानो नाश करे तेविजयवंतप्राणी ... तथाचंद्रमासरखो उज्जवळजेजश तेणेकरीवृद्धिपामेछे ... सुंनामयशसुवस्थुंछे ॥ १५ ॥ इतिश्रीजिनमतस्तुति ... एकोनविंशतिसमाप्त ॥

इतिश्रीमद्दोषाभ्याय श्रीयशोविजयजीमहा विरचिता आत्मलाभ ... श्रीमान् ... संपूर्णः ...

शास्त्रोपदर्शितदशा गलितासद्ग्रहकषायकलुषाणां ॥
प्रियमनुभवैकवेद्यं रहस्यमाविर्भवति किमपि ॥ १ ॥
प्रथमाभ्यासविलासा दालिभृंगीव यत्क्षणाल्लीनं ॥ चं
चलतरुणीविभ्रमसमं सुतरलमनः कुरुते ॥ २ ॥

अर्थ ॥ शास्त्रेबतावीजेदशा तेणेकरीने गलीगइछे सारीनरिसी असद्ग्रहरूपक पायनी कलुषताजेहनी तेने प्रियएहवोजे एकअनुभव तेथीजणातुं एवुंजेरहस्य ते कांइकप्रगटथायछे ॥ १ ॥ प्रथमअभ्यासरूपी विलासनायोगेंकरीने जेप्राणीपूर्वोक्त कांइक रहस्यमां लीनथायछे अनेफरीचंचलपणेरहेछे जेमचंचलस्त्री पोतानाविलास नायोगेंकरी कांइकसुखमां लीनथायछे अनेपछे जेवीनेतेवी चंचलरहेछे तथाजेम की डानेभमरी ज्यारेचटकोनरावेछे त्यारेतेनाध्यानेकरीने तेतल्लीनथइजायछे अनेपछेजे वारेंभमरीपोतोना चटकानोउद्योगमुकीआपेछे तेवारेंतेसर्वभूलीजइ पोतानोमूलतुं स्वभाव धारणकरेछे तेनीपठे जाणीलेवुं ॥ २ ॥

सुविदितयोगैरिष्टं क्षिप्तं मूढं तथैव विक्षिप्तं॥ एकाग्रं च निरुद्धं चे
तः पंचप्रकारमिति ॥ ३ ॥ विषयेषु कल्पितेषु च पुरःस्थितेषु च
निवेशितं रजसा॥सुखदुःखयुग्बहिर्मुखमायातं क्षिप्तमिह चित्तं॥४॥

अर्थ ॥ योगशास्त्रियें पांचभेदें मनकह्युंछे १ क्षिप्तमन २ मूढमन ३ तेमजविक्षिप्तमन ४ एकाग्रमन ५ निरुद्धमन एपांचप्रकारमननाछे ॥ ३ ॥ तेमांक्षिप्तनुंलक्षणकहे छे पोतानाचित्तनेसन्मुख कल्प्याजेविषय तेनेविषे रजोगुणेंकरीने थाप्युंजेमन अनेसु खतथादुःखयुक्त तेणेकरीयुक्त एवुंजेबहिर्मुखथयलुंचित्ततेने क्षिप्तएवुंमनकह्युंछे॥४॥

क्रोधादिभिर्नियमित विरुद्धकृत्येषु यत्तमोभु द्याग्॥कृत्याकृत्यविभा
गासंगतमेतन्मनोमूढं ॥ ५ ॥ सत्वोद्रेकापरिहृतदुःखनिदानेषु सु
खनिदानेषु॥शब्दादिषु प्रवृत्तं तदेव चित्तं तु विक्षिप्तं ॥ ६ ॥

अर्थ ॥ जेमांबहुलतायें तमोगुणहोय एटलेक्रोधसहित विरुद्धकामनेविषे तत्प रहोय अने विवेकरहितपणे कृत्याकृत्यनी वहेंचणविना जे मन तेनेमूढमनकहीयें ॥५॥जेधैर्यनावलथी दुःखनाकारणगणतोनथी शब्दादिकविषयमां रूपरसादिकनांका रणजाणी कठोरपणेंप्रवर्त्ते एवुंजेचित्ततेने विक्षिप्तमनकहियें ॥ ६ ॥

अद्वेषादिगुणवतां नित्यं खेदादिपट्कपरिहारात् ॥ सदृशप्रत्ययसं
गतमेकाग्रं चित्तमाम्नातं ॥ ७ ॥ उपरतविकल्पवृत्तिकमवग्रहादि
क्रमच्युतं शुद्धं ॥ आत्मारामसुनीनां भवति निरुद्धं सदा चेतः॥ ८ ॥
अर्थ ॥ रागद्वेषादिकेंरहित जेगुणवंतपुरुषछे अनेसदाय खेदादिकनुंपरिहारकरना
रजेपुरुष तेसदैवरागद्वेषटालवाथी जेनुंमनसर्वकार्यमां सरखुंमल्युंछे तेनेएकाग्रमनक
ह्युं ॥ ७ ॥ जेनीविकल्पवृत्तिशांतथईछे वलीअवग्रहादिक्रमथी पाछुंओसर्युंछे कष्ट
थीएहवुंशुद्धमन तेआत्मारामसुनीनुंजेअंतःकरणहोय तेनेनिरुद्धमनकह्युं ॥ ८ ॥
न समाधावुपयोगं तिस्रश्चेतोदशा इह लभंते॥सत्वोत्कर्षात् स्थै
र्याच्चे समाधिसुखातिशयात् ॥ ९ ॥ योगारंभस्तु भवे द्विक्षिप्ते
मनसि जातसानंदे॥क्षिप्ते मूढे वास्मिन् व्युत्थानं भवति नियमेन॥१०॥
अर्थ ॥ चित्तनीत्रणदशा तेआसमाधिमांकांइ उपयोग पामतीनथीतेवारें पणते
मां वेदिशातो सत्वोत्कर्षथकी तथास्थिरतायकी अनेसमाधिसुखना अतिशयथी उ
पयोगपामेछे ॥ ९ ॥ कदाचित् विक्षिप्तचित्तनेविषे योगसमाधिमां आनंदितहोय तो
योगारंभसंभवे क्षिप्तमूढमनेंतो योगनोविशेष विषयरूप उदयहोय ॥ १० ॥
विषयकषायनिवृत्तं योगेषु च संचरिष्णु विविधेषु ॥ गृहखेलद्वा
लोपममपि चलमिष्टं मनोऽभ्यासे ॥११॥ वचनानुष्ठानगतं याताया
तं च सातिचारमपि॥चेतो ऽभ्यासदशायां गजांकुशन्यायतोऽदुष्टं॥१२॥
अर्थ ॥ विविधप्रकारना योगनेविषें फरतुं अनेविषयकषायें भर्युं एवुंवरमांरमत
बालकनीपेरे चपलजेमनतेअभ्यासेकरी रुडुंजाणवुं ॥ ११ ॥ वचनानुष्ठानमांरह्युं एवुं
जातुंआवतुं अतिचारसहित मनहोयतोपण जोमनअभ्यासदशामां वर्त्ततोयको दु
यतो जेम हस्तिते अंकुशेंकरीरुडुंथाय तेदृष्टांते तेमनपणरुडुंथाय ॥ १२ ॥
ज्ञानविचाराभिमुखे यथा यथा भवति किमपिसानंदं॥अर्थैः प्रलोभ्य
वाह्यै रनुगृह्णीयात्तथाचेतः ॥१३॥अभिरूपजिनप्रतिमां विशिष्टपद
वाक्यवर्णरचनां च॥पुरुषविशेषादिकमप्यंतएवालंबनं ब्रुवते॥१४॥
अर्थ ॥ ज्ञानविचारणानासुखथी जेमकांइक आनंदथाय एहवेबाह्यअर्थेकरी
भावीने तेमांचित्तनेथोभावीराखीने ज्ञाननाविचारने सन्मुखकरीयें ॥ १३ ॥ रुडी

नप्रतिमां रुडांसिव्हांतनापद वचन अक्षर ते पुरुषविशेषजे बहुश्रुतगीतार्थमुनि हो
यतेहने एत्रणआलंबन प्रजुयेंकह्यांछे ॥ १४ ॥

आलंबनैः प्रशस्तैः प्रायोभावः प्रशस्त एव यतः॥इति सालंबनयोगी
मनः शुभालंबनं दध्यात्॥ १५॥सालंबनं क्षणमपि क्षणमपि कुर्या
न्मनोनिरालंबं॥ इत्यनुभवपरिपाका दाकालं स्यान्निरालंबः॥ १६ ॥

अर्थ ॥ रुडेआलंबनेकरीने प्रायेंरूडोभावहोय माटेसालंबनयोगी जे रुमाजीव
होय तेणेशुभआलंबन धरवुं ॥ १५ ॥ अनेक्षणेकमां सालंबनमनकरे अनेक्षणेक
मां निरालंबनमनकरे एरीतेंअनुभवनापरिपाकथी तेप्राणीसदाय निरालंबनथाय

आलंब्यैकपदार्थं यदा न किंचिद्विचिंतयेदन्यत्॥ अनुपनतेंधनव
न्हिवदुपशांतं स्यात्तदा चेतः॥ १७॥ शोकमदमदनमत्सरकलहक
दाग्रहविषादवैराणि॥क्षीयंते शांतहृदामनुभव एवात्र साक्षात्तः॥१८॥

अर्थ ॥ पछेएकपदार्थनेअवलंबीने जेवारेंबीजुंकांइ चिंतवेनही तेवारें जेमका
ष्टविनानी अग्निउपशमेछे तेनीपरेंउपशांतपणुंपामे ॥ १७ ॥ माटेशोक गर्व का
म मत्सर क्लेश द्व विषाद अनेवैर एटलावाना शमतावंतप्राणीनेनहोय एवातनो
साक्षीइहां अनुभवछे ॥ १८ ॥

शांते मनसि ज्योतिः प्रकाशते शांतमात्मनः सहजं॥भस्मीभवत्यवि
द्या मोहध्वांतं विलयमेति ॥ १९ ॥ बाह्यात्मनोधिकारः शांतहृदामं
तरात्मनां न स्यात्॥परमात्मानुध्येयः सन्निहितो ध्यानतो भवति॥२०॥

अर्थ ॥ शांतमननेविषे रहेतायका आत्मानोशांतस्वभाविक सहेजानंदरूप जे तेज
छेते प्रगटथायतेवारें जेकुविद्याछेते राखयइजाय अनेमोहांधकार नाशपामे ॥१९॥
बाह्यकी मननोजेअधिकार तेशांतपरिणामि अंतरआत्मावाला प्राणीने नहोय के
मकेतेहने ध्येयरूपी जेपरमात्मा तेध्यानथी ढुकडोछेमाटे ॥ २० ॥

कायादिर्बहिरात्मा तदधिष्ठानांतरात्मतामेति॥ गतनिःशेषोपाधिः
परमात्मा कीर्तितस्तज्ज्ञैः ॥२१ ॥विषयकषायावेशः सत्वाश्रद्धा गु
णेषु च द्वेषः॥आत्माज्ञानं च यदा बाह्यात्मा स्यात्तदा व्यक्तः॥२२॥

अर्थ ॥ कायादिकित जेबहिरात्मा तेनोअधिष्ठानजे अंतरात्माछे तेप्रतेंपामे
अनेगएछेसमस्त उपाधिजेहने तेने ज्ञानियेंपरमात्मा कह्योछे॥२१ ॥जेनेविषयकषा

यनोप्रवेश होय तथा तत्वनीश्रद्धाहोय अनेगुणीउपर द्वेषधरे अनेजेने आत्मा तुंओलखाणनथी तेनेप्रगटपणे बहिरात्मा कहियें ॥ २२ ॥

तत्वश्रद्धाज्ञानं महाव्रतान्यप्रमादपरता च॥मोहजयश्च यदा स्यात् तदांतरात्मा भवेद्व्यक्तः॥२३॥ ज्ञानं केवलसंज्ञं योगनिरोधः समग्र कर्म्महतिः॥सिद्धिनिवासश्च यदा परमात्मा स्यात्तदा व्यक्तः॥२४॥

अर्थ ॥ जेनेतत्वनीश्रद्धाहोय ज्ञानपणुंहोय महाव्रतीपणुंहोय तथाअप्रमादीप णुंहोय एमकरतां जेवारेंमोहनेजीते तेवारेंतेनेप्रगटपणे अंतरात्माकहियें॥ २३ ॥ जिहांकेवलज्ञानहोय अने मनवचनकायाना योगनिरोधी आठकर्मक्षयकरी सिद्ध मांवसे तेवारें तेनेप्रगटपणे परमात्माकहियें ॥ २४

आत्मानंतो गुणवृत्ति विविच्य यः प्रतिपदं विजानाति॥कुशलानुबंध युक्तः प्राप्नोति ब्रह्मभूयमसौ ॥ २५ ॥ ब्रह्मस्थो ब्रह्मज्ञो ब्रह्म प्राप्नो ति तत्र किंचित्रं ॥ ब्रह्मविदां वचसापि ब्रह्मविलासाननुभवामः ॥२६॥

अर्थ ॥ जेप्राणीआत्मानेअने गुणवृत्तिने माहोमांहेवेहेंचणकरीने ठेकाणेजोडे तेप्राणीकुशलानुबंधि पुण्यसहित मोक्षपदनेपामे ॥ २५ ॥ जेब्रह्ममांरह्यो ब्रह्मनो जाण तेब्रह्मनेपामे एमांशोअचंबोछे माटेब्रह्मवेत्तापुरुषजेज्ञानी तेनावचनेकरी ब्रह्म जेमोक्षविलासीसुख तेने अमे अनुभवियेंछियें ॥ २६ ॥

ब्रह्माध्ययनेषु मतं ब्रह्माष्टादशसहस्त्रपदभावः ॥ येनाप्तं तत् पूर्णं योगी स ब्रह्मणः परमः ॥२७॥ध्येयोयं सेव्योयं कार्या भक्तिः सुकृत धिया सैव ॥ अस्मिन्गुरुलघुध्या सुतरः संसारसिंधुरपि ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ ब्रह्मअध्ययननेविषे कह्युंछेके अढारहजार शिलांगरथेकरी जेब्रह्मचर्य नेपाम्युं तेनेपूर्णयोगीअनेपरम ब्रह्मकहियें॥ २७ ॥माटेएनेजध्यावो एहनीजपुण्यवंते भक्तिकरवी अनेएनेविषे मोटाइपणानी बुद्धिधरीयें तो संसारसमुद्रतरवोसहेलछे २८

अवलंबेच्छायोगं पूर्णाचारासहिष्णवश्च वयं ॥ भक्त्या परममुनी नां तदीयपदवीमनुसरामः॥२९॥अल्पापि यत्र यतना निर्दंभा सा शुभानुबंधकरी॥ अज्ञानविषयं यत्तद्विवेचनं चात्मभावानां ॥३० ॥

अर्थ ॥ इच्छायोगतो अमारेनिर्बलछे पूरोआचारपणअमे पालीशकतानथी पण

नप्रतिमां रुढांसिद्धांतनापद वचन अक्षर ते पुरुषविशेषजे बहुश्रुतगीतार्थमुनि हो यतेहने एत्रणआलंबन प्रशस्तकह्यांछे ॥ १४ ॥

आलंबनैः प्रशस्तैः प्रायोभावः प्रशस्त एव यतः॥इति सालंबनयोगी मनः शुभालंबनं दध्यात्॥ १५॥सालंबनं क्षणमपि क्षणमपि कुर्या न्मनोनिरालंबं॥ इत्यनुभवपरिपाका दाकालं स्यान्निरालंबः॥ १६ ॥

अर्थ ॥ रुडेआलंबनेकरीने प्रायेंरूडोभावहोय माटेसालंबनयोगी जे रूडाजीव होय तेणेशुद्धआलंबन धरवुं ॥ १५ ॥ अनेकक्षणेकमां सालंबनमनकरे अनेकक्षणेक मां निरालंबनमनकरे एरीतेंअनुभवनापरिपाकथी तेप्राणीसदाय निरालंबनथाय

आलंब्यैकपदार्थं यदा न किंचिद्विचिंतयेदन्यत्॥ अनुपनतेंधनव न्हिवदुपशांतं स्यात्तदा चेतः॥ १७॥ शोकमदमदनमत्सरकलहक दाग्रहविषादवैराणि॥क्षीयंते शांतहृदामनुभव एवात्र साक्षात्तः॥१८॥

अर्थ ॥ पत्रेएकपदार्थनेअवलंबीने जेवारेंबीजुंकांइ चिंतवेनही तेवारें जेमका ष्ठविनानो अग्निउपशमेछे तेनीपरेंउपशांतपणुंपामे ॥ १७ ॥ माटेशोक गर्व का म मत्सर क्लेश हठ विषाद अनेवैर एटलावाना शमतावंतप्राणीनेनहोय एवातनो साक्षीहवां अनुभवछे ॥ १८ ॥

शांते मनसि ज्योतिः प्रकाशते शांतमात्मनः सहजं॥भस्मीभवत्यवि द्या मोहध्वांतं विलयमेति ॥ १९ ॥ बाह्यात्मनोधिकारः शांतहृदामं तरात्मनां न स्यात्॥परमात्मानुध्येयः सन्निहितो ध्यानतो भवति॥२०॥

अर्थ ॥ शांतमननेविषे रहेतायका आत्मानोशांतस्वभाविक सहेजानंदरूप जे तेज तेते प्रगटथायतेवारें जेकुविद्याछेते रासथइजाय अनेमोहांधकार नाशपामे ॥१९॥ बाह्यपकी मननोजेअधिकार तेशांतपरिणामि अंतरआत्मावाला प्राणीने नहोय के मकेतेहने ध्येयरूपी जेपरमात्मा तेध्यानथी ढुकडोछेमाटे ॥ २० ॥

कायादिर्बहिरात्मा तदधिष्ठानांतरात्मतामेति॥ गतनिःशेषोपाधिः परमात्मा कीर्तितस्तज्ज्ञैः॥२१॥विषयकषायावेशः तत्वाश्रद्धा गु णेषु च द्वेषः॥आत्माज्ञानं च यदा बाह्यात्मा स्यात्तदा व्यक्तः॥२२॥

अर्थ ॥ कायादिकित जेबहिरात्मा तेनोअधिष्ठानजे अंतरात्मावे तेप्रतेपामे अनेगयछेसमस्त उपाधिजेहने तेने ज्ञानियेंपरमात्मा कह्योछे॥२१ ॥जेनेविषयकषा

यनोप्रवेश होय तथा तत्वनीश्रश्रद्धाहोय अनेगुंणीउपर द्वेपधरे अनेजेने आत्मा नुंओळखाणनथी तेनेप्रगटपणे बहिरात्मा कहियें ॥ २२ ॥

तत्वश्रद्धाज्ञानं महाव्रतान्यप्रमादपरता च॥मोहजयश्च यदा स्यात् तदांतरात्मा भवेद्व्यक्तः॥२३॥ ज्ञानं केवलसंज्ञं योगनिरोधः समग्र कर्म्महतिः॥सिद्धिनिवासश्च यदा परमात्मा स्यात्तदा व्यक्तः॥२४॥

अर्थ ॥ जेनेतत्वनीश्रद्धाहोय ज्ञानपणुंहोय महाव्रतीपणुंहोय तथाअप्रमादीप णुंहोय एमकरतां जेवारेंमोहनेजीते तेवारेंतेनेप्रगटपणे अंतरात्माकहियें॥ २३ ॥ जिहांकेवलज्ञानहोय अने मनवचनकायाना योगनिरोधी आठकर्मक्षयकरी सिद्ध मांवसे तेवारें तेनेप्रगटपणे परमात्माकहियें ॥ २४

आत्मानंतो गुणवृत्ति विविच्य यः प्रतिपदं विजानाति॥कुशलानुबंध युक्तः प्राप्नोति ब्रह्मभूयमसौ ॥ २५ ॥ ब्रह्मस्थो ब्रह्मज्ञो ब्रह्म प्राप्नो ति तत्र किंचित्रं ॥ ब्रह्मविदां वचसापि ब्रह्मविलासाननुभवामः ॥२६॥

अर्थ ॥ जेप्राणीआत्मानेअने गुणवृत्तिने माहोमांहेवेहेंचणकरीने ठेकाणेजोडे तेप्राणीकुशलानुबंधि पुन्यसहित मोक्षपदनेपामे ॥ २५ ॥ जेब्रह्ममांरह्यो ब्रह्मनो जाण तेब्रह्मनेपामे एमांशोअचंबोछे माटेब्रह्मवेत्तापुरुपजेज्ञानी तेनावचनेकरी ब्रह्म जेमोक्षविलासीसुख तेने अमे अनुभवियेंछियें ॥ २६ ॥

ब्रह्माध्ययनेषु मतं ब्रह्माष्टादशसहस्रपदभावः ॥ येनाप्तं तत् पूर्णं योगी स ब्रह्मणः परमः ॥२७॥ध्येयोयं सेव्योयं कार्या भक्तिः सुकृत धिया सैव॥ अस्मिन्गुरुत्वबुध्या सुतरः संसारसिंधुरपि ॥ २८ ॥

अर्थ ॥ ब्रह्मअध्ययननेविषे कह्युंछेके अढारहजार शिलांगरथेकरी जेब्रह्मचर्य नेपाम्युं तेनेपूर्णयोगीअनेपरम ब्रह्मकहियें॥ २७ ॥माटेएनेजध्यावो एहनीजपुन्यवंते भक्तिकरवी अनेएनेविषे मोटाइपणानी बुद्धिधरीयें तो संसारसमुद्रतरवोलहेजछे २८

अवलंब्येच्छायोगं पूर्णाचारासहिष्णवश्च वयं ॥ भक्त्या परममुनी नां तदीयपदवीमनुसरामः॥२९॥अल्पापि यत्र यतना निर्दंभा सा शुभानुबंधकरी॥ अज्ञानविपयं यत्तद्विवेचनं चात्मभावानां॥३० ॥

अर्थ ॥ इच्छायोगतो अमारेनिर्वलछे पूरोथ्याचारपणअमे पालीशकतानथी पण

मोटामुनिनी जक्तिएकरीने तेहनीपदवीने पामशुं ॥ ३० ॥ थोडीपणजयणा कपट रहितयशे तोतेशुजअनुबंधकारीछे पणआत्मानावनीजेवेहेंचण तेअज्ञाननेटाजनारछे

सिद्धांततदंगानां शास्त्राणां यः सुपरिचयः शक्त्या॥ परमालंबनजूतो दर्शनपक्षोयमस्माकं ॥ ३१ ॥ विधिकथनं विधिरागो विधिमार्गस्थापनं विधेरिछा॥अवधिनिपेधश्चेति प्रवचनजक्तिः प्रसिद्धांतः३२

अर्थ ॥ सिद्धांतनाअमेपक्षीछुं तेनाअंगजेशास्त्रतेनो शक्तिप्रमाणे अमारेपरिचय छे माटेपरमआलंबनजूत एवोजेसमकितपक्ष तेअमारेरूमोछे ॥ ३१ ॥ शुद्धनापवुं विधिनाअनोरागकरवो शुद्धमार्गनुं स्थापनकरवुं विधिमार्गनीइछाराखवी अविधिटालवी अनेसिद्धांतनी जक्तिकरवी एअमारोसिद्धांतछे ॥ ३२ ॥

अध्यात्मजावनोज्वलचेतोवृत्त्योचितं हितं कृत्यं ॥ पूर्णक्रियाजिलाषश्चेति द्वयमात्मशुद्धिकरः॥ ३३ ॥ द्वयमिह शुजानुबंधः शक्यारंजश्च शुद्धपक्षश्च॥अहितो विपर्ययः पुनरित्यनुजवसंगतः पंथाः ॥ ३४ ॥

अर्थ ॥ अध्यातमनी जावनायेंकरी उज्वलएहवीजेचित्तवृत्तितेणेकरीने उचितकार्य करवुं तथाहितकारी करणीकरवी पूर्णक्रियाना विलासनोअजिलाषधरवो एअमारेआत्मानी शुद्धिकारकछे एटलेएकअंतःकरणनी उज्वलताजे शुद्धिकरवीते अनेबीजोआयवीमांडीअंतपर्यंत पूर्णशुजक्रियाकरवानो अजिलाषा एवेवानाआत्मानी शुद्धिकरनाराछे ॥ ३३ ॥ तथाएककरवायोग्यआरंजते शक्यआरंजअने बीजोशुद्धपक्ष एवेवानाशुजानुबंधीछे एवेजेहनेआरंजकालेसमयेछे एमाजेनी शक्तिउद्यमअने शुद्धपरुपणाछे तेहनेतोहितकारीमाने अने एथीविपर्यासजेछे तेने अहितकारीमाने एवीरीतें अनुजरज्ञानने मलवानो एपंथछे एथीमिथ्यात्वटले॥ ३४ ॥

ये त्वनुजवाविनिश्चितमार्गाश्चारित्रपरिणतिभ्रष्टाः ॥ वाह्यक्रियया चरणाजिमानिनो ज्ञानिनोपि न ते॥३५॥लोकेषु वहिर्बुद्धिषु विपणिकानां वहिःक्रियासु रतिः॥श्रद्धां विना नचेताः सतां प्रमाणं यतोजिहितं३६

अर्थ ॥ जेहने अनुजवनो निश्चयनथी अनेनिश्चयमार्गनोजे चारित्रतेथीभ्रष्टछे त दावाह्यक्रियानी आचरणाछे तथीलोकमांउग्रविहारीयइ आचारनोगवंधरेछे तेनेज्ञानीनकहिये ॥३५॥वाह्यदृष्टिवालाजे मूर्खलोक ते तेने वाह्यक्रियावंतदेखी प्रीतिधरे

तेतो जेमकोइकवाणीयो बाह्यक्रियाओनो व्यापारकरतोदेखियें तेनीपरेंजाणवो माटे श्रद्धाविनानुं कशोयेप्रमाणनथी ॥ ३६ ॥

बालः पश्यति लिंगं मध्यमबुद्धिर्विचारयति वृत्तं॥आगमतत्वं तु बुधः परीक्षते सर्वयत्नेन॥ ३७॥ निंद्यो न कोपि लोके पापिष्ठेष्वपि भव स्थितिश्चिंत्या॥ पूजा गुणगरिमाढ्या धार्यो रागो गुणलवेपि॥३८॥

अर्थ॥ माटेजेबालजीवहोयते वेषजुइने परीक्षाकरे तथा मध्यमजीवते आचरणा जोइपरीक्षाकरे अनेपंडिततोज्ञानतत्वदेखी परीक्षाकरे ॥ ३७ ॥ लोकनेविषे कोइनी निंदाकरियेंनही पापीनेविषे महोटी संसारनीस्थिति चिंतवियें जेगुणयुक्तपुरुषहोय तेनीपूजाकरीयें वडाइकरीयें तथाजेअल्पगुणीहोय तेनाउपर रागधरीयें॥ ३८ ॥

निश्चित्यागमतत्वं तस्माद्रुत्सृज्य लोकसंज्ञां च॥श्रद्धाविवेकसारं य तितव्यं योगिना नित्यं॥३९॥ ग्राह्यं हितमपि बाला दालापैर्दुर्जन स्य न द्वेष्यं॥ सत्या वाचः पराशापाशा इव संगमा ज्ञेयाः॥४०॥

अर्थ ॥ तथा आगमनोनिश्चयकरी लोकसंज्ञाछोडीनें विवेकनुंसारजेश्रद्धा तेनेवि षे योगीश्वरें सदायउद्यमकरवो ॥ ३९ ॥ बालकथकीपण आलापकरीनें हितनीवात लेवी दुर्जनउपर द्वेषनकरवो सत्यबोलवुं पारकीआशानेपाससरिखीजाणवी॥४०॥

स्तुत्या स्मयो न कार्यः कोपोपि च निंदया जनैः कृतया॥सेव्या धर्माचा र्यास्तत्वं जिज्ञासनीयंच॥ ४१ ॥ शौचं स्थैर्यमदंभो वैराग्यं चात्मनि ग्रहः कार्यः॥ दृश्या भवगतदोषा श्चिंत्यं देहादिवैरूप्यं॥ ४२ ॥

अर्थ॥ कोइवखाणेतो गर्वनकरवो कोइनिंदेतो कोपनकरवो धर्माचार्यनी सेवा करवी तत्वनेजाणवानी इच्छाराखवी॥ ४१ ॥ पवित्रपणुं स्थिरतापणुं अने निष्कपट पणुं आदरवुं तथावैरागधरवुं अनेमननेवश्यकरीराखवुं तथासंसारनादोषदेखवा व ली देहनेविनाशीपणो चिंतववुं ॥ ४२ ॥

भक्तिर्भगवति धार्या सेव्योदेशः सदा विविक्तश्च॥स्थातव्यं सम्यक्त्वे विश्वास्योन प्रमादरिपुः ॥ ४३ ॥ ध्येयात्मबोधनिष्ठा सर्वत्रैवागमः पुरस्कार्यः॥ त्यक्तव्याः कुविकल्पा स्थेयं वृद्धानुवृत्त्या च॥ ४४ ॥

अर्थ॥ प्रभुउपरभक्तिधरवी पशुपंडकादिदोषरहित देशजेस्थानक तेसेववुं सम कितदिशामांस्थिररहेवुं प्रमादरूपशत्रुनोविश्वासनकरवो ॥ ४३ ॥ ध्येयमरूपज आ

त्मबोध तेमारहेवुं सघलेस्थलें आगमसिद्धांतने आगलकरवुं कुविकल्पटालवा जेमा गेंद्रचाले तेमार्गेचालवुं ॥ ४४ ॥

साक्षात्कार्यंतत्वं चिद्रूपानंदमेदुरैर्जाव्यं ॥हितका
री ज्ञानवतामनुभववेद्यः प्रकारोऽयं ॥ ४५ ॥

अर्थ ॥ तत्वने प्रगटकरवुं ज्ञानरूपआनंदभरेरहेवुं ज्ञानवंतने हितकारीपणे र हेवुं एअनुभववंतजीवोना प्रकारछे ॥ ४५ ॥ इतिअनुभवाधिकारः विंशतिमसमाप्त २०

येषां कैरवकुंदवृंदशशभृत्कर्पूरशुभ्रागुणामालिन्यं व्यपनीय चे
तसि नृणां वैशद्यमातन्वते॥ संतः संतु मयि प्रसन्नमनस स्ते केपि
गौणीकृतः स्वार्थामुख्यपरोपकारविधयोत्युग्रैःखलैः किं खलैः ॥१॥

अर्थ ॥ चंद्रविकासीकमलनाफूलनोसमूह चंद्रमा कपूर एसरपाउज्वला जेहना गुणछेतयाजे मनुष्यनाचित्तनेविषे मलिनतापणुंटालीने निर्मलताउज्वलतापणाने वि स्तारेछे एवाजेसज्जन पुरुषोते माहाराउपर प्रसन्नमने सदैवरहेजो जेणेपोतानोअ र्थ गौणकर्योछे अनेजेनीमुख्यपणे परउपकारनी बुद्धिछे एवासज्जन जो महाराउप रप्रसन्नछे तोअन्यतएवाखलजे दुर्जनलोक तेना अप्रसन्नतायें शुंथवानुंछे ॥ १ ॥

ग्रंथार्थान् प्रगुणीकरोति सुकविर्यत्नेन तेषां प्रथामातन्वंति कृपाक
टाक्षलहरीलावण्यतः सज्जनाः॥माकंदद्रुममंजरीं वितनुते चित्रां म
धुश्रीस्ततः सौभाग्यं प्रथयंति पंचमचमत्कारेण पुंस्कोकिलाः॥२॥

अर्थ ॥ कृपाजेकविछे तेअर्थानुपत्तिए नवाग्रंथरचे पणरूपानजरनीलेहरी तेनुंपर एवाजे सज्जन तेग्रंथनेवखाणीने विस्तारकरेछे तेउपरदृष्टांतकहेछे जेमवसंतऋतुजेछे तेआंबानीमंजरीना मनोहरपणाने प्रगटकरेछे पणपोताना पंचम रागनाचमत्कारेक रीएटलेरागनोटहुको तेणेकरीनेकोयलजेछे तेमंजरीनुं सौभाग्यपणुंजगमांविस्तारेछे

दोषोल्लेखविषः खलाननबिलादुत्थाप कोपाज्वलन् जिव्हाहि र्ननु
किं गुणान्नगुणिनां वा स क्वयं प्रापयेत्॥तस्माच्चेत्प्रबल प्रभावभवनं
दिव्यौषधी सन्निधौ शास्त्रार्थप्रतिपत्तिदां शुभदृशां कारुण्यपुण्यप्रथा३

अर्थ ॥ दोषना विस्तारकरविवेसहित एहवुं खलप्राणीना मुखरूपजे सर्पनुंघर ते थीउठ्योछे क्रोधेबलतोपको एवोदुर्जननीजीभरूपजे सर्प जेगुणिनागुणने नतुके० नि

श्येपीकृपपणाने नपमाडेसुं अपितुपमाडेज तेमाटे महाप्रन्नावतुंवर एहवोजे शास्त्र नोअर्थ तेनीप्रातिनाजाण जेसज्जन तेनीजेकरुणातेपुण्यवार्त्तारुपनीवुटी एटलेजडीते दिव्यऔपधीकहियें तेनेपासेरहेतायका तेने फेरचढेनही ॥ ३ ॥

उत्तानार्थगिरां स्वतोऽवगमान्निःसारतां मेनिरे गंन्नीरार्थसमर्थने वत खलाः काठिन्यदोपं दधुः॥तत्कोनाम गुणोस्तु कश्च सुकविः किंका व्यमित्यादिकां स्थित्युच्छेदमतिं हरंति नियतां दृष्टा व्यवस्थाः सतां ४

अर्थ ॥ दुर्जनमूर्खनीरीतओ तोजेवारें पोतानीमेलें पदवाचतां अर्थसुके एवाअ र्थायेने सुगमपदजो अमेजोडीयें तोखलमाणसएमकहेछेजे कांइआग्रंथमां सारनथी एममाने वलीजोअमे गंनीरअर्थसहित पदबांधीएतो खलमाणस कहेछेकेकठणप दबांध्याछे एनुंशुंअर्थकरियें एतोमुंगानीपारसीछे एवेग्रंथेकोइने गुणनथाय जे आगलबु द्धिविचारे एवाआजेंकोणरुडाकविछे वलीसर्वेनेजोगपडे एवांक्यांकाव्यछे एवुंदुर्जनबो लेमाटेएग्रंथमर्यादानी स्थितिनेउछेद करवानीमतिछे तेनजेटाले कविनागुणनेजाणे एवाजेसज्जनपुरुप तेनीव्यवस्था रूडीदीठी ॥ ४ ॥

अध्यात्मामृतवर्पिणीमपि कथामापीय संतः सुखं गाहंते विपमुज्झि रंति तु खला वैपम्यमेतत्कुतः ॥ नेदं चाद्भुतमिंदुदीधितिपिबाः पीता श्चकोरा भृशं किं न स्युर्बत चक्रवाकतरुणास्तत्यंतखेदातुराः॥ ५ ॥

अर्थ ॥ अध्यात्मरूप अमृतवृष्टि एवीवार्त्ता तेनोपानकरीने सज्जनपुरुपसुखमानेछे अनेजेखललोकछे तेएवीवाणीने विपमपदकहीने विपरूपप्रगटकरेछे एमां शुंआश्चर्य छे तेउपरदृष्टांतकहेछे जुओचंद्रकिरणनादर्शनथी अमृतपीने चकोरघणुंरीझपामेछे तोशुंचंद्रदेपीनेचकवो चकवीघणोखेदनथीपामता अपितुपामेजछे ॥ ५ ॥

किंचित्साम्यमवेक्ष्य ये विदधते काचेंद्रनीलाभिदां तेपां न प्रमदाव हा तनुधियां गूढा कवीनां कृतिः॥ये जानंति विशेपमप्यविपमे रेखो परेखांशतो वस्तुन्यस्तु सतामितः कृतधियां तेपां महानुत्सवः ॥६॥

अर्थ ॥ जेमकांइक सरखापणुंदेखीने काचमां अनेइंद्रनीलमणीमां अनेदरूपतें एकपणुंजाणे तेवाअल्पबुद्धिवालाने मोटाकविनी गूढअर्थनीरचना तेहर्पजणीनथा य जेप्राणीअविपमवस्तुनेविपे एकरेखा उपरेखा अर्धरेखाइत्यादिक अंशेंयकी वस्तुनेवि शेपपणेजाणेछे एवाकुशलबुद्धिवालासज्जनने एग्रंथनाजेनावछे तेमहाओछवरूपछे ६

उद्दामग्रंथभावप्रथनभवयशःसंचयः सत्कवीनां क्षीरा
धिर्मथ्यते यः सहृदयविबुधैर्मेरुणा वर्णनेन ॥ एतडिंडी
रपिंडीभवति विधुरुचेर्मंडलं विप्लुपस्तास्ताराः कैलास
शैलादय इह दधते वीचिविक्षोभलीलां ॥ १० ॥

अर्थ ॥ रुडाकविनी उद्दामके० प्रौढएहवीजे ग्रंथनाभावनी रचनातेणेकरीनेउपनुं जेयशनोसमूहतेरूप क्षीरसमुद्र तेसज्जनपंक्तिते वर्णवरूपिए मेरूएकरीने मथ्यो तेथी प्रगटथुंजे फीण तेनोउज्वलो चंद्रमाथयो वलीतेनेवलोवतांजे ठाटाउम्या तेनातारा मंडलथयां तथा कैलासादिक पर्वतथया एरीतेंग्रंथनोजश लीलाएकरी पसर्यो ॥१०॥

काव्यं दृष्ट्वा कवीनां हृतममृत मिति स्वःसदा पानशंकी खेदं
धत्ते तु मूर्ध्नी मृडुतरहृदयः सज्जनो व्याधुतेन॥ज्ञात्वा सर्वो
पभोग्यं प्रसृमरमथ तत्कीर्त्तिपीयुषपूरं नित्यं रक्षापि
धाना नियतमतितरां मोदते च स्मितेन ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ कविनाकाव्यदेखीने अमृतहरायुं एमविचारीने देवताओ सदायअमृ तपीवानी शंकाधरतायका खेदधरेछे शामाटेजे मृडुतुकोमलछे हृदयजेहनुं एवाजे सज्जन तेमस्तकधूणावीकरीने जेसर्वनेउपभोग्यपणे पसरतुएवुं ते कवीनीकीर्त्तिरूप अमृतनुंपूर तथा जेनेनिरंतर रक्षारूप ढांकणुंअत्यंतपणे दीधुंछे तेनेजाणीने देखी ने हसीने हर्षपामेछे ॥ ११ ॥

निष्पाद्य श्लोककुंभं निपुणनयमृदा कुंभकाराः कवींद्रा
दार्ढ्यं चारोप्यतस्मिन्न किमपि परिचयात्सून्यराद्धाकिमा
सं ॥ पक्कं कुर्वंति बाढं गुणहरणमिति प्रज्वलद्दोपदृष्टि ग्र्या
लामालाकराले खलजनवचनज्वालजिह्वे निवेश्य ॥१२॥

अर्थ॥रूडांनयरूपमाटीवडे कवीश्वररूपियाजे कुंभकारते श्लोकरूपघडो निपजा वे पछेजेमकुंभकारतेघटने परिचयते हाथेकरी टपणेसमारीनभकेमूके तेमश्लोक घटने परिचय विचारीने पदअक्षर आघापाछाहोय तेनेसमारे एरीतेंने तमकेमूके पछेपंडितनेदेखाडी परिपक्ककरे तेजाणेनीभाभोदरसाडेछे हवेदुर्जनजाणेजे एगंभिन वे तेथीमाहरा गुणहरणथशे एमवलतोधको पंडितनीजोडनी कलानां दोषदृष्ट

पूर्णाध्यात्मपदार्थसार्थघटना चेतश्चमत्कारिणी मोहग्नदशां न्नवे त्तनुधियां नो पंडितानामिव ॥ काकुव्याकुलकामगर्वगहनप्रोद्दाम वाक्चातुरी कामिन्याः प्रसन्नं प्रमोदयति न ग्राम्यान् विदग्धानिव ७

अर्थ ॥ जेमांपूर्णअध्यात्मपदार्थ तेसहितघटनाछे पण तेजेहनीदशाअज्ञानेंकरी नें अवराणीछे एवाअल्पबुद्धिवालाना चित्तमांतोजेरीतें पंडितलोकआवाग्रंथथीरीज पामे तेरीतनोचमत्कारनउपजावे तेहनोदृष्टांत जेमकामेव्यापीयकी अंतरंगमां विषयसुखने इच्छतीयकी तथा बाह्यथी नयशोकधरतीयकी पुरुषनेवह्लन डुंरू पवती एमगर्वे नरीथकी रुडीवचननीचतुराइ करनारएहवीजे चतुरस्त्रीहोयतेपण गा मडीआमूर्खने रीझवीनशके पणपंडितनेतोआनंदपमाडे तेनीपेरेंजाणवुं ॥ ७ ॥

स्नात्वा सिद्धांतकुंडे विधुकरविशदाध्यात्मपानीयपूरैस्तापं संसारदुःखं कलिकलुषमलं लोभतृष्णां च हित्वा जाता ये शुद्धरूपाः शमदमशुचिताचंदनालिप्तगात्राः शीलालंकारसाराः सकलगुणनिधीन्सज्जनांस्तान्नमामः ॥ ८ ॥

अर्थ ॥ सिद्धांतरूपकुंडमां चंद्रसरखुंनिर्मल अध्यात्मरूपपाणीनापूरमांस्नानकरीनें नवदुःखरूपजेताप अने पापरूपजेताप तथालोभ तृष्णानेपणछांमीनें यथाशुद्धरूपें करी वलीसमतारूपइंद्रियदमनजे पवित्रतेरूपचंदनेकरी शरीरविलेपितछेजेनुं वलीशी लरूपघरणेकरीशोनता सर्वगुणनानिधानएवाजे सज्जनतेनेहुंनमुंछुं ॥ ८ ॥

पाथोदः पद्यबंधे विपुलरसन्नरं वर्षति ग्रंथकर्त्ता प्रेम्णां पूरैस्तु चेतःसर इह सुहृदां प्लाव्यते वेगवद्भिः ॥ त्रुट्यंति स्वांतबंधाः पुनरसमगुणद्वेषिणां दुर्जनानां चित्रं न्नावज्ञनेत्रात् प्रणयरसवशान्निःसरत्यश्रुनीरं ॥ ए ॥

अर्थ ॥ जेमंग्रंथकर्त्ता मेघसरखाछे तेपद्यबंधेकरीने बहुरसनरे वरसतायका तेथी प्रेमरूपपूरते सज्जननाचित्तरूप सरोवरमां वेगेकरीनेनरायछे वलीअसाधारणगुणना द्वेषीजे दुर्जन तेनातोअंतःकरणना बंधतुटेछे अने एवाविचित्रकारीजेग्रंथ तेनानाव नाजाणजेपुरुषछे तेविनयेंप्रणित रसेंउज्वलाछे तेनानेत्रथी स्नेहरूपथांसुंफरेछे॥ए॥

उद्दामग्रंथजावप्रथनजनवयशःसंचयः सत्कवीनां क्षीरा
ब्धिर्मथ्यते यः सहृदयविबुधैर्मेरुणा वर्णनेन ॥ एतड्डिंडी
रपिंडीजवति विधुरुचेर्मंडलं विप्रुषस्तास्ताराः कैलास
शैलादय इह दधते वीचिविक्षोजलीलां ॥ १० ॥

अर्थ ॥ रुडाकविनी उद्दामके० प्रौढएहवीजे ग्रंथनाजावनी रचनातेणेकरीनेउपनुं जेयशनोसमूहतेरूप क्षीरसमुद्र तेसज्जनपंमिते वर्णवरूपिए मेरूएकरीने मथ्यो तेथी प्रगटथुंजे फीण तेनोउज्ज्वलो चंद्रमाथयो वलीतेनेवलोवतांजे ढांटाउम्या तेनातारा मंडलथयां तथा कैलासादिक पर्वतथया एरीतेंग्रंथनोजश लीलाएकरी पसर्यो ॥१०॥

काव्यं दृष्ट्वा कवीनां हृतममृत मिति स्वःसदा पानशंकी खेदं
धत्ते तु मूर्ध्नी मृडुतरहृदयः सज्जनो व्याधुतेन॥ज्ञात्वा सर्वो
पजोग्यं प्रसृमरमथ तत्कीर्त्तिपीयुषपूरं नित्यं रक्षापि
धाना नियतमतितरां मोदते च स्मितेन ॥ ११ ॥

अर्थ ॥ कविनाकाव्यदेखीने अमृतहरायुं एमविचारीने देवताओ सदायअमृ तपीवानी शंकाधरताथका खेदधरेने शामाटेजे मृडुलुकोमलछे हृदयजेहनुं एवाजे सज्जन तेमस्तकधूणावीकरीने जेसर्वनेउपजोग्यपणे पसरतुएवुं ते कवीनीकीर्त्तिरूप अमृतनुंपूर तथा जेनेनिरंतर रक्षारूप ढांकणुंअत्यंतपणे दीधुंछे तेनेजाणीने देखी ने हसीने हर्षपामेछे ॥ ११ ॥

निष्पाद्य श्लोककुंजं निपुणनयमृदा कुंजकाराः कवींद्रा
दार्ढ्यं चारोप्यतस्मिन्न किमपि परिचयात्सून्यराक्षाकजा
सं ॥ पकं कुर्वंति बाढं गुणहरणमिति प्रज्वलद्दोषदृष्टि ज्वा
लामालाकराले खलजनवचनज्वालजिव्हे निवेश्य ॥१२॥

अर्थ॥रूडांनयरूपमाटीवर्में कवीश्वरलपियांजे कुंजकारते श्लोकरूपघडो निपजा वे पछेजेमकुंजकारतेघटने परिचयते हार्यंफाली टपणेसमारीतमकेमूके तेमश्लोक घटने परिचय विचारीने पदअक्षर आघापाछाहोय तेनेसमारे एवीरीतें तमकेमूके पछेंपंडितनेदेखाडी परिपककरे तेजाणेनीमाभोदेखाडेछे हवेडुर्जनजाणेजे एपंमित वे तेथीमाहरा गुणहरणथशे एमबलतोयको पंडितनीजोडेली कलामां दोषकाढ

वानी दृष्टिरूप आगमनीज्वालानीश्रेणि तेणेकरी विकरालएवीपोतानी नजररूपअ ग्नि वलीतेदुर्जननाजेवचन तेजाणियें निंदारूप अगनीनी ज्वाला तेणेकरीघडेलीजी नातेवेदु अग्निनावचमां ग्रंथरूपघडो मूकीनेपाकोकरेछे अनेनीमाडानीराखथाय घटमूलपोतायछे ॥ १२ ॥

इक्षुद्राक्षारसौघः कविजनवचनं दुर्जनस्याग्नियंत्रान्ना
नाद्रव्यप्रयोगात्समुपचितगुणो मद्यतां याति सद्यः ॥
संतः पीला यदुच्चैर्दधति हृदि मुदं घूर्णयंत्यक्षियुग्मं स्वैरं
हर्षप्रकर्षादपि च विदधते नृत्यगानप्रबंधं ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ शेलडीअने द्राषनारसनासमूह सरखुकवीनुंवचनछे पणदुर्जनरूपीयो अग्निनोजे यंत्रछे तेमध्येनानाप्रकारना द्रव्यनायोगथकी रुडीरीतें गुणपुष्टिने पामतुं ए हवुंकवीनुंजेवचनते ताजी मदिरापणानेपामेछे तेमदिरानेहर्षेकरी सज्जनपुरुषपानक रीने हृदयमांहर्षधरेछे तेथीबेथ्यांखोघुमायमानथायछे स्वइच्छायें हर्षनाकल्लोलथी पण श्लोकनोजावार्थपामीने नाचेछे गायछे ॥ १३ ॥

नव्योस्माकं प्रबंधोप्यनणुगुणभृतां सज्जनानां प्रभावा
द्विख्यातः स्यादिति स्फुटितकरणविधौ प्रार्थनीया न किंनः॥
निष्णाताश्च स्वतस्ते रविरुचयइवांभोरुहाणां गुणाना
मुल्लासे पेक्षणीया न खलु पर रुचा क्वापि तेषांस्वभावः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अमारोग्रंथनवोछे तोपणमहागुणवंतजे सज्जन तेनाप्रभावथकी वि रूयातथाजो एरीतेंरुडाहितनेअर्थे अमारे एसज्जनने प्रार्थनाकरवायोग्यनथीशुं अपितुछेज जेम कमलनागुणने उल्लासकरवाने सूर्यनाकिरणछे एम पोतायकीजे प्रविणछे एवातेसज्जननाजे स्वभावछे तेक्यांयेपररुचिभणि निर्भेडवेखवायोग्यनथी

यत्कीर्त्तिस्फूर्त्तिगानावहितसुरवधूवृंदकोलाहलेन प्रक्षु
ब्धस्वर्गसेतोः पतितजलभरैः क्षालितः शैत्यमेति ॥
अश्रांतभ्रांतकांतग्रहगणकिरणैस्तापवान् स्वर्णशैलो भ्रा
जंते ते मुनींद्रा नयविजयबुधाः सज्जनव्रातधुर्याः ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेपोतानागुरुनो वर्णवकरेछे जेनीपसरतीजेकीर्त्ति तेनेगावाने सावधान

एटलेस्वर्गमां देवतानी अप्सराओजेछे तेश्रीनयविजयजीना गुणगायछे तेनागीतश ब्दना कोलाहलेंकरीने क्षोजनापामी एहवीजेस्वर्गनदी तेनीपाजलागी तेथीपफलुंजे जल तेनासमूहेंकरी पखाल्योजेमेरुपर्वत तेणेकरीमेरूपर्वतपण शीतलतानेपाम्योछे नहितो अहर्निश प्रदक्षणायेंनमताजे ग्रहमंमल तेनाकिरणेकरी तापवंतमेरुहतो तेहमणाशीतलथयोथको शोजेछे एवातेमुनींद्र श्रीनयविजयनामा पंमितजे सज्ञान पुरुषोनासमूहमां वडेराहता ॥ १५ ॥

चक्रे प्रकरणमेतत्तत्पदसेवापरोयशोविजयः

अध्यात्मधृतरुचीनामिदमानंदावहं जवतु ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तेनाचरणना सेवकउपाध्यायश्रीयशोविजयजी एप्रकरणकरताहवा तेअ ध्यात्मनेविषेजेणेरुचिधरीछे एवाप्राणीने रुचिसहित एप्रकरणआनंदसुखनुंआपनार होजोइति सज्ञानस्तुतिअधिकार एकविंशतितमःसमाप्तः

इतिमहोपाध्याय श्रीकल्याणविजयगणि शिष्यमुख्यपंडित श्रीलाज विजयगणि शिष्यमुख्यपंमित श्रीजितविजयगणी तच्छिष्यमुख्य पंडित श्रीनयविजयगणी चरणकमलचंचरीकेण पंडितश्रीपद्म विजयगणिसहोदरेण पंडित श्रीयशोविजयेनविरचिते अ ध्यात्मसारप्रकरणे सप्तमप्रबंधःसमाप्तः सर्वकाव्य ६१

इति श्रीमत्तपागछे जट्टारकश्रीविजयसिंहसूरीश्वरशिष्यपंमित श्रीसत्यविजयगणि शिष्यपंडितश्रीकरपूरविजयगणि शिष्यपंडितश्रीक्षमाविजयगणि शिष्यपंडितश्रीयशो विजयगणि शिष्यपंडितश्रीशुजविजयगणि शिष्यपंमितश्रीवीरविजयगणिनिरध्यात्म सारग्रंथस्यवार्त्तिकरूपोमुनिकीर्त्तिविजयस्यानुग्रहाय अर्थटबार्थःकृतःसंवत १८८१ चैत्रशुक्लपक्षेपूर्णिमायामितिश्रेय.

सर्वमूलकाव्य ९४७ नीसंख्यायेछे तेमां पेलाप्रबंधना १०२ बीजाप्रबंधना १०५ त्रीजाप्रबंधना ११७ चोथाप्रबंधना १६९ पांचमांप्रबंधना १८३ छठाप्रबंधना २१० सातमांप्रबंधना ६१ सर्वमलीने ९४७

वानी दृष्टिरूप आगमनीज्वालानीश्रेणि तेणेकरी विकरालएवीपोतानी नजररूपअ ग्नि वलीतेडुर्जनना जेवचन तेजाणियें निंदारूप अगनीनी ज्वाला तेणेकरीपडेलीजी नातेवेहु अग्निनावचमां ग्रंथरूपघडो मूकीनेपाकोकरेछे अनेनीमाडानीराखथाय घटमूलपोसायछे ॥ १२ ॥

इक्षुद्राक्षारसौघः कविजनवचनं दुर्जनस्याग्नियंत्राद्रा
नाद्रव्यप्रयोगात्समुपचितगुणो मद्यतां याति सद्यः ॥
संतः पीत्वा यदुच्चैर्दधति हृदि मुदं घूर्णयंत्यक्षियुग्मं स्वैरं
हर्षप्रकर्षादपि च विदधते नृत्यगानप्रबंधं ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ शेलडीअने डापनारसनासमूह सरखुकवीनुंवचनछे पणदुर्जनरूपीयो अग्निनोजे यंत्रछे तेमध्येनानाप्रकारना द्रव्यनायोगथकी रुडीरीतें गुणपुष्टिने पामतुं ए हवुंकवीलुंजेवचनते ताजी मदिरापणानेपामेछे तेमदिरानेहर्षेकरी सज्जनपुरुषपानक रीने हृदयमांहर्षधरेछे तेथीबेआंखोघुमायमानथायछे स्वइच्छायें हर्षनाकल्लोलथी पण श्लोकनोजावार्थपामीने नाचेछे गायछे ॥ १३ ॥

नव्योस्माकं प्रबंधोप्यनणुगुणभृतां सज्जनानां प्रभावा
द्विख्यातः स्यादिति सुहितकरणविधौ प्रार्थनीया न किंनः॥
निष्णाताश्च स्वतस्ते रविरुचयइवांभोरुहाणां गुणाना
मुल्लासे पेक्षणीया न खलु पर रुचा क्वापि तेषांस्वभावः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अमारोग्रंथनवोछे तोपणमहागुणवंतजे सज्जन तेनाप्रभावथकी वि ख्यातथाजो एरीतेंरुडाहितनेअर्थे अमारे एसज्जनने प्रार्थनाकरवायोग्यनथीसुं अपितुछेज जेम कमलनागुणने उल्लासकरवाने सूर्यनाकिरणछे एम पोतायकीजे प्रविणछे एवातेसज्जननाजे स्वभावछे तेक्यांयेंपररुचिभणि निश्चेंउवेखवायोग्यनथी

यत्कीर्त्तिस्फूर्त्तिगानावहितसुरवधूवृंदकोलाहलेन प्रक्षु
ब्धस्वर्गसेतोः पतितजलभरैः क्षालितः शैत्यमेति ॥
अश्रांतभ्रांतकांतग्रहगणकिरणैस्तापवान् स्वर्णशैलो भ्रा
जंते ते मुनींद्रा नयविजयबुधाः सज्जनव्रातधुर्याः ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेपोतानागुरुनो वर्णवकरेछे जेनीपसरतीजेकीर्त्ति तेनेगावाने सावधान

एटलेस्वर्गमां देवतानी अप्सराओजेते तेश्रीनयविजयजीना गुणगायछे तेनागीतश
ब्दना कोलाहलेंकरीने क्षोभनापामी एहवीजेस्वर्गनदी तेनीपाजलागी तेथीपक्षथुंजे
जल तेनासमूहेंकरी पखाल्योजेमेरुपर्वत तेणेकरीमेरूपर्वतपण शीतलतानेपाम्योछे
नहितो अहर्निश प्रदक्षणायेंनमताजे ग्रहमंमल तेनाकिरणेकरी तापवंतमेरुहतो
तेहमणाशीतलथयोथको शोभेछे एवातेमुनींद्र श्रीनयविजयनामा पंमितजे सज्जन
पुरुषोनासमूहमां वडेराहता ॥ १५ ॥

चक्रे प्रकरणमेतत्तत्पदसेवापरोयशोविजयः
अध्यात्मधृतरुचीना मिदमानंदावहं भवतु ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तेनाचरणना सेवकउपाध्यायश्रीयशोविजयजी एप्रकरणकरताहवा तेअ
ध्यात्मनेविषेजेणेरुचिधरीछे एवाप्राणीने रुचिसहित एप्रकरणआनंदसुखनुंआपनार
होजोइति सज्जनस्तुतिअधिकार एकविंशतितमःसमाप्तः

इतिमहोपाध्याय श्रीकल्याणविजयगणि शिष्यमुख्यपंडित श्रीलाभ
विजयगणि शिष्यमुख्यपंमित श्रीजितविजयगणी तच्छिष्यमुख्य
पंडित श्रीनयविजयगणी चरणकमलचंचरीकेण पंडितश्रीपद्म
विजयगणिसहोदरेण पंडित श्रीयशोविजयेनविरचिते अ
ध्यात्मसारप्रकरणे सप्तमप्रबंधःसमाप्तः सर्वकाव्य ६१

इति श्रीमत्तपागच्छे भट्टारकश्रीविजयसिंहसूरीश्वरशिष्यपंमित श्रीसत्यविजयगणि
शिष्यपंडितश्रीकरपूरविजयगणि शिष्यपंडितश्रीक्षमाविजयगणि शिष्यपंडितश्रीयशो
विजयगणि शिष्यपंडितश्रीशुभविजयगणि शिष्यपंमितश्रीवीरविजयगणिभिरध्यात्म
सारग्रंथस्यवार्त्तिकरूपोमुनिकीर्त्तिविजयस्यानुग्रहाय अयंटबार्थःकृतःसंवत १८८१
चैत्रशुक्लपक्षेपूर्णिमायामितिश्रेय.

सर्वमूलकाव्य ९४७ नीसंख्याछेते तेमां पेलाप्रबंधना १०२ बीजाप्रबंधना
१०५ त्रीजाप्रबंधना ११७ चोथाप्रबंधना १६९ पांचमांप्रबंधना १८२
छठाप्रबंधना २१० सातमांप्रबंधना ६१ सर्वमलीने ९४७

वानी दृष्टिरूप आगमनीज्वालानीश्रेणि तेणेकरी विकरालएवीपोतानी नजररूपअ
ग्नि वलीतेदुर्जननाजेवचन तेजाणियें निंदारूप अगनीनी ज्वाला तेणेकरीघडेलीजी
नातेवेहु अग्निनावचमां ग्रंथरूपघडो मूकीनेपाकोकरेछे अनेनीभाडानीराखथाय
घटमूलपोसायछे ॥ १२ ॥

इक्षुद्राक्षारसौघः कविजनवचनं दुर्जनस्याग्नियंत्रान्ना
नाद्रव्यप्रयोगात्समुपचितगुणो मद्यतां याति सद्यः ॥
संतः पीत्वा यद्धैर्दधति हृदि मुदं घूर्णयंत्यक्षियुग्मं स्वैरं
हर्षप्रकर्षादपि च विदधते नृत्यगानप्रबंधं ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ शेलमीअने द्राषनारसनासमूह सरखुकवीनुंवचनछे पणदुर्जनरूपीयो
अग्निनोजे यंत्रछे तेमध्येनानाप्रकारना द्रव्यनायोगथकी रुडीरीतें गुणपुष्टिने पामतुं ए
हवुंकवीनुंजेवचनते ताजी मदिरापणानेपामेछे तेमदिरानेहर्षेकरी सज्जनपुरुषपानक
रीने हृदयमांहर्षधरेछे तेथीवेआंखोघुमायमानथायछे स्वइछायें हर्षनाकल्लोलथी पण
श्लोकनोजावार्थपामीने नाचेछे गायछे ॥ १३ ॥

नव्योस्माकं प्रबंधोप्यनणुगुणनृतां सज्जनानां प्रन्नावा
द्विख्यातः स्यादिति सुहितकरणविधौ प्रार्थनीया न किंनः॥
निन्नाताश्च स्वतस्ते रविरुचयइवांन्नोरुहाणां गुणाना
मुल्लासे पेक्षणीया न खलु पर रुचा क्वापि तेषांस्वन्नावः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अमारोग्रंथनवोछे तोपणमहागुणवंतजे सज्जन तेनाप्रभावथकी वि
ख्यातथाजो एरीतेंरुडाहितनेअर्थें अमारे एसज्जनने प्रार्थनाकरवायोग्यनथीसुं
अपितुछेज जेम कमलनागुणने उल्लासकरवाने सूर्यनाकिरणछे एम पोताथकीजे
प्रविणछे एवातेसज्जननाजे स्वभावछे तेक्यांयेंपररुचिनणि निर्भेतवेखवायोग्यनथी

यत्कीर्तिस्फूर्तिगानावहितसुरवधूवृंदकोलाहलेन प्रक्षु
ब्धस्वर्गसेताः पतितजलन्नरैः क्षालितः शैत्यमेति ॥
अश्रांतभ्रांतकांतग्रहगणकिरणैस्तापवान् स्वर्णशैलो भ्रा
जंते ते मुनींद्रा नयविजयबुधाः सज्जनव्रातधुर्याः ॥ १५ ॥

अर्थ ॥ हवेपोतानागुरुनो वर्णवकरेछे जेनीपसरतीजेकीर्त्ति तेनेगावाने सावधान

एटलेस्वर्गमां देवतानी अप्सराओजेछे तेश्रीनयविजयजीना गुणगायछे तेनागीतश
ब्दना कोलाहलेंकरीने क्षोभनापामी एहवीजेस्वर्गनदी तेनीपाजनागी तेथीपमचुंजे
जल तेनासमूहेंकरी पखाल्योजेमेरुपर्वत तेणेकरीमेरूपर्वतपण शीतलतानेपाम्योछे
नहितो अहर्निश प्रदक्षणायेंजमताजे ग्रहमंमल तेनाकिरणेकरी तापवंतमेरुहतो
तेहमणाशीतलथयोथको शोजेछे एवातेमुनींद्र श्रीनयविजयनामा पंमितजे सज्जन
पुरुषोनासमूहमां वडेराहता ॥ १५ ॥

चक्रे प्रकरणमेतत्तत्पदसेवापरोयशोविजयः

अध्यात्मधृतरुचीना मिदमानंदावहं जवतु ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तेनाचरणना सेवकउपाध्यायश्रीयशोविजयजी एप्रकरणकरताहवा तेअ
ध्यात्मनेविपेजेणेरुचिधरीछे एवाप्राणीने रुचिसहित एप्रकरणआनंदसुपनुंआपनार
होजोइति सज्जनस्तुतिअधिकार एकविंशतितमःसमाप्तः

इतिमहोपाध्याय श्रीकल्याणविजयगणि शिष्यमुख्यपंडित श्रीलान
विजयगणि शिष्यमुख्यपंमित श्रीजितविजयगणी तच्छिष्यमुख्य
पंडित श्रीनयविजयगणी चरणकमलचंचरीकेण पंडितश्रीपद्म
विजयगणिसहोदरेण पंडित श्रीयशोविजयेनविरचिते अ
ध्यात्मसारप्रकरणे सप्तमप्रबंधःसमाप्तः सर्वकाव्य ६१

इति श्रीमत्तपागछे नट्टारकश्रीविजयसिंहसूरीश्वरशिष्यपंमित श्रीसत्यविजयगणि
शिष्यपंडितश्रीकरपूरविजयगणि शिष्यपंडितश्रीक्षमाविजयगणि शिष्यपंडितश्रीयशो
विजयगणि शिष्यपंडितश्रीशुनविजयगणि शिष्यपंमितश्रीवीरविजयगणिनिरध्यात्म
सारग्रंथस्यवार्त्तिकरूपोमुनिकीर्त्तिविजयस्यानुग्रहाय अपंटवार्थःकृतःसंवत १८८१
चैत्रशुक्लपक्षेपूर्णिमायामितिश्रेय.

सर्वमूलकाव्य ९४७ नीसंख्यायेछे तेमां पेलाप्रबंधना १०२ बीजाप्रबंधना
१०५ त्रीजाप्रबंधना ११७ चोथाप्रबंधना १६९ पांचमांप्रबंधना १८२
उगाप्रबंधना २१० सातमांप्रबंधना ६१ सर्वमलीने ९४७

वानी दृष्टिरूप आगमनीज्वालानीश्रेणि तेणेकरी विकरालएवीपोतानी नजररूपथ ग्नि वलीतेदुर्जननाजेवचन तेजाणियें निंदारूप अगनीनी ज्वाला तेणेकरीघडेलीजी भातेवेद्ध अग्निनावचमां ग्रंथरूपघडो मूकीनेपाकोकरेछे अनेनीभाडानीराखथाय घटमूलपोसायछे ॥ १२ ॥

इक्षुद्राक्षारसौघः कविजनवचनं दुर्जनस्याग्नियंत्रान्ना
नाद्रव्यप्रयोगात्समुपचितगुणो मद्यतां याति सद्यः ॥
संतः पीता यदुच्चैर्दधति हृदि मुदं घूर्णयंत्यक्षियुग्मं स्वैरं
दर्पप्रकर्षादपि च विदधते नृत्यगानप्रबंधं ॥ १३ ॥

अर्थ ॥ शेलडीयने द्राषनारसनासमूह सरखुकवीनुंवचनछे पणदुर्जनरूपीयो अग्निनोजे यंत्रछे तेमध्येनानाप्रकारना द्रव्यनायोगथकी रुडीरीतें गुणपुष्टिने पामतुं ए हवुंकवीनुंजेवचनते ताजी मदिरापणानेपामेछे तेमदिरानेहर्षेकरी सज्जनपुरुषपानक रीनें हृदयमांहर्षधरेछे तेथीवेआंखोघुमायमानथायछे स्वइछायें दर्पनाकल्लोलथी पण अत्यंतनोनाचापणेपामीने नाचेछे गायछे ॥ १३ ॥

नव्योऽस्माकं प्रबंधोप्यनणुगुणभृतां सज्जनानां प्रभावा
द्विख्यातः स्यादिति मुदितकरणविधौ प्रार्थनीया न किंनः॥
निष्णाताश्च स्वतस्ते रविरुचयइवांभोरुहाणां गुणाना
मुल्लासे पेक्षणीया न खलु पर रुचा कापि तेषांस्वभावः ॥ १४ ॥

अर्थ ॥ अमारोग्रंथनवोछे तोपणमहागुणवंतजे सज्जन तेनाप्रभावथकी वि ख्यातथाशे एरीतेंरुडाहितनेअर्थे अमारे एसज्जनने प्रार्थनाकरवायोग्यनथीसुं अपितुछेज जेम कमलनागुणने उल्लासकरवाने सूर्यनाकिरणछे एम पोतायकीजे प्रवीणछे एवातेसज्जननाजे स्वभावछे तेस्यांयेंपररुचिनणि निर्भेदवेखवायोग्यनथी

यत्कीर्तिस्फूर्तिगानावहितसुरवधूवृंदकोलाहलेन प्रक्षु
भ्यत्स्वर्गंसिताः पतितजलभरैः क्षालितः शैल्यमेति ॥
अश्रांतभ्रांतकांतग्रहगणकिरणैस्तापवान् स्वर्णशैलो भ्रा
जंते ते मुनींद्रा नयविजयबुधाः सज्जनव्रातधुर्याः॥ १५॥

अर्थ ॥ हवेपोतानागुरुनो वर्णवकरेछे जेनीपसरतीजेकीर्त्ति तेनेगावाने सावधान

एटलेस्वर्गमां देवतानी अप्सराओजेछे तेश्रीनयविजयजीना गुणगायछे तेनागीतश ब्दना कोलाहलेंकरीने क्षोननापामी एहवीजेस्वर्गनदी तेनीपाजलागी तेथीपरुगुंजे जल तेनासमूहेंकरी पखाल्योजेमेरुपर्वत तेणेकरीमेरूपर्वतपण शीतलतानेपाम्योछे नहितो अहर्निश प्रदक्षणायेंजमताजे ग्रहमंमल तेनाकिरणेकरी तापवंतमेरुहतो तेहमणाशीतलथयोयथको शोनेछे एवातेमुनींद्र श्रीनयविजयनामा पंमितजे सज्जन पुरुषोनासमूहमां वडेराहता ॥ १५ ॥

चक्रे प्रकरणमेतत्तत्पदसेवापरोयशोविजयः
अध्यात्मधृतरुचीना मिदमानंदावहं जवतु ॥ १६ ॥

अर्थ ॥ तेनाचरणना सेवकउपाध्यायश्रीयशोविजयजी एप्रकरणकरताहवा तेअ ध्यात्मनेविषेजेणेरुचिधरीछे एवाप्राणीने रुचिलहित एप्रकरणआनंदसुखनुंआपनार होजोइति सज्जनस्तुतिअधिकार एकविंशतितमःसमाप्तः

इतिमहोपाध्याय श्रीकल्याणविजयगणि शिष्यमुख्यपंडित श्रीलाज विजयगणि शिष्यमुख्यपंमित श्रीजितविजयगणी तच्छिष्यमुख्य पंडित श्रीनयविजयगणी चरणकमलचंचरीकेण पंडितश्रीपद्म विजयगणिसहोदरेण पंडित श्रीयशोविजयेनविरचिते अ ध्यात्मसारप्रकरणे सप्तमप्रबंधःसमाप्तः सर्वकाव्य ६१

इति श्रीमत्तपागच्छे जट्टारकश्रीविजयसिंहसूरीश्वरशिष्यपंमित श्रीसत्यविजयगणि शिष्यपंडितश्रीकरपूरविजयगणि शिष्यपंडितश्रीक्षमाविजयगणि शिष्यपंडितश्रीयशो विजयगणि शिष्यपंडितश्रीशुनविजयगणि शिष्यपंमितश्रीवीरविजयगणिनिरध्यात्म सारग्रंथस्यवार्त्तिकरूपोमुनिकीर्त्तिविजयस्यानुग्रहाय अर्थंटबार्थःकृतःसंवत १८७१ चैत्रशुक्लपक्षेपूर्णिमायामितिश्रेय.

सर्वमूलकाव्य ९४३ नीसंख्यायेछे तेमां पेलाप्रबंधना १०२ बीजाप्रबंधना १०५ त्रीजाप्रबंधना ११३ चोथाप्रबंधना १६९ पांचमांप्रबंधना १८३ छठाप्रबंधना २१० सातमांप्रबंधना ६१ सर्वमलीने ९४३

सूचना.

आ अध्यात्मसार नामनो ग्रंथ श्रीयशोविजयजी उपाध्याये संस्कृतनाषाना प द्यमां रच्योछे. ए वाक्यमां आ ग्रंथनुं नाम, तथा तेना रचनारनुं नाम शानलतां अ थवा वांचतांज सुज्ञ जनोनां मनमां प्रसन्नतायुक्त उत्कृष्टनाव उत्पन्नथयाविना रहे शे नही; केमके ग्रंथना नामप्रमाणे ते शब्दनो अर्थ अध्यात्मनोसार थायछे; तेम ग्रंथना रचनारना नामप्रमाणे तेनो अर्थ यशनो विजयकरनार थायछे; एवनें नाम सार्थकछे, एम कह्याथी कांइपण बाधा आवशे नही. आ ग्रंथमां जेवी रीतें अध्या त्मविषयना प्रकारोनो समावेश कर्योछे, तेवी रीतें बीजे कचित स्थलेज दीठामां आवशे. उपाध्यायजीनुं पांमित्य, कविताशक्ति, समयसूचकता, पूर्वपक्षखंडनता, निजपक्षमंडनता, वाक्पटुत्व पदलालित्य, अर्थगौरव, रस, अने अलंकारसहित एमना रचेला हरेक ग्रंथमां विद्वत्ता जोतां कोइनेपण आश्चर्य उत्पन्न थयाविना रहेशे नही; केमके उपाध्यायजीए जेजे विषयोमां ग्रंथो रच्याछे, ते ते ग्रंथोमां एवी युक्तिओ करीछे के, तेना यथार्थ सूक्ष्मनावार्थने साधारण अभ्यासी मनुष्य समजी शके नही. तेम विद्वानोनी बुद्धि पण कांइक श्रमवडे जाणी शके; माटे एवुं अनु मान थायछे के, ए महापंडित हता एमां संशयनथी. तेमणे आध्यात्मविषयक जे आ ग्रंथ रच्योछे, तेनी उत्कृष्टतानुं वर्णन न करतां ए ग्रंथज सज्जनोनी सनमुख रा खीए छैये ते वांचीने विचारी लेवुं एटले प्रत्यक्षप्रमाणवडे सिद्ध थशे. एवा ग्रंथनो यथार्थनाव टीकाविना समजवो महाकठिण पडेछे; तेथी टीकानो अमे घणो शोध कर्यो पण ते क्यांइ मली आवी नही; ने टीका थइछे एवुं पण कोइ ठेकाणेथी सां नलवामां आव्युं नही, त्यारे ते प्रयत्न रहेवा दइने बालावबोध अथवा टबाविषे शो ध करतां मात्र श्रीवीरविजयजीनो करेलो टबो मली आव्यो; ते पण तेमणे पोता नी बुद्धि अनुसार साधारण करेलोछे. ए टबाउपरथी स्पष्ट दीठामां आवेछे के, अ ध्यात्म विषयविषे श्रीवीरविजयजीनो अभ्यास घणो थोडो हतो, तेथी यथार्थ मू लग्रंथनो नाव प्रदर्शित करी शक्या नथी ए मोटी दिलगिरीनी वात छे. पण ए ट बाथी बीजो सारो टबो कोइ अमने मल्यो नही, तेथी एमां कांइक सेजसाज अ मारी मति अनुसार सुधारो करीने आ पुस्तकमां छाप्यो छे.

॥ श्रीसर्वज्ञायनमः ॥

अथ

श्रीतत्वानुबोधग्रंथ एटले नवतत्वउपर पंचवीसबोल विचारवा आश्रयीसंक्षेपथी व्याख्यान लखियेछेयें

॥ दोहा ॥

सासणपतिश्रीवीरजिन त्रिभुवनदीपकजाण ॥ नवउदधीतारणतारण वाहण समजगवान ॥ १ ॥ चरणकमलयुगतेहना वंदेइंददिनेंद ॥ चंदनरिंदफनिंदसुर सेवे सुरनरवृंद ॥ २ ॥ तासुरुपातेंउद्धस्या जीवअतंसस्सुज्ञान॥ लहिशिवपदजवउदधित रि अजरअमरसुखथान ॥ ३ ॥ तसुमुखथीवाणीखरी जिमश्रावणवरसात ॥ अनंतनयात्मज्ञानथी जविजनडुःखमिटात ॥ ४ ॥ तेवाणीतगुरुमुखें जेजविहृदयधरंत ॥ स्वपरजेदविज्ञानरस अनुनवज्ञानलहंत ॥ ५ ॥ उत्तमनरजवपायकर शुद्ध सामग्रीपाय ॥ जोनसुणेजिनवचनरस अफलजमारोजाय ॥ ६ ॥ तेमाटेजविजीवकूं अवशउचितएकाज ॥ जिनवानीप्रथमहिश्रवण अनुक्रमग्यानसमाज ॥ ७ ॥ जिनवाणीकेश्रवणविन शुद्धसम्यक्नहोय ॥ सम्यक्विणआतमदरस चारित्रगुणनहि जोय ॥ ८ ॥ शुद्धसम्यक्साधनविना करणीफलशुनबंध ॥ सम्यक्तसाधनथकी मिटेतिमरसविधंध ॥ ९ ॥ सम्यक्तजेदजिनवचनमें जेदपर्यायविशेष ॥ पिणमुख्य दोयप्रकारहे ताकोजेदअलेख ॥ १० ॥ निश्चेअरुव्यवहारनय एदोनुंपरिमाण ॥ दधिमथनेघृतकाढवा ॥ तेतान्यायपिठाण ॥ ११ ॥ देवधर्मगुरुआसता तजेकुदेवकुधर्म ॥ एव्यवहारसम्यक्तकहि वाह्यधर्मनोमर्म ॥ १२ ॥ निश्चेसम्यक्तनोसही कारणछे व्यवहार ॥ एसमकितआराधता निश्चेपणअवधार ॥ १३ ॥ निश्चेसम्यक्जीवने पर परिणतिरसत्याग ॥ निजस्वजावमेंरमणता शिवसुखनोएजाग ॥ १४ ॥ वेहुसम्यक्त तइलहे समजेनवतत्वज्ञान ॥ नयनिक्षेपपरमाणसुं स्यादवादपरमाण ॥ १५ ॥ ड्रव्य क्षेत्रइणहीतणा कालजावविग्यान॥सामान्यविशेषसमजतें होयनयात्मग्यान॥ १६॥

अथवचनिकारूप तत्वानुबोध ग्रंथकहेछे तिहांप्रथम नवपदार्थना नामकहेछे गाथा ॥ जीवाजीवपुन्नपावो आसवोसंवरोतहा निज्जराबंधमोरकोय नवतत्ताजिणे नणिया ॥ १ ॥ व्याख्या जीव अजीव पुण्य पाप आश्रव संवर निर्जरा बंध मो क्ष एनवपदार्थ श्रीतीर्थंकरेंकह्यां पणएनवपदार्थनी श्रीगणांगसूत्रना वीजागणामां एकजीवरासी बीजी अजीवरासी एवेरासीकहिछे पणजेत्रीजीरासीकहे तेहने श्रीउ ववाइसूत्रमां नन्हवकह्योछे वली जीवमजीवंदव्वं इतिद्रव्यसंग्रह हवेए जीव तथा अजीव वेरासीमां नवपदार्थ केमसमावे तेविचारकहेछे प्रथमसामान्ये द्रव्यवेकहि येंछेयें अने विशेषशब्दमां छद्रव्यकह्यांछे तेसामान्यपदें वेद्रव्यमां छद्रव्यसमायछे ते छमांहे १ धर्म वीजोअधर्म त्रीजोआकाश चोथोकाल पांचमुंपुद्गल एपांचअजीवद्र व्यछे अनेएकजीवद्रव्यछे तेमांवलीपूर्वोक्त पांचअजीवद्रव्यना वेभेदछे एकअरूपी अजीवद्रव्य अने वीजोरूपी अजीवद्रव्यछे.

एकधर्म वीजोअधर्म त्रीजोआकाश चोथोकाल एचार अरूपी अजीवद्रव्यछे अने पांचमुं पुद्गलते रूपीअजीवद्रव्यछे तेरूपी पुद्गलद्रव्यना वली वेभेदछे एक चउफरसी रूपीपुद्गलद्रव्यछे अनेवीजो आठफरसीरूपी पुद्गलद्रव्यछे तेमां चउफर सी रूपीपुद्गलतो चक्षुइंद्रियवर्ने देखायनहीं अनेज्ञानवंतदेखे.

हवेतेचउफरसी पुद्गलकेटलाछे तेकहेछे आठकर्मना अढारपापस्थानकना कार्मणशरीरना मनवर्गणानापुद्गल तथा वचनवर्गणानापुद्गल ए सर्व प्रयोगसा च उफरसी रूपीपुद्गलजाणवा.

अनेआठफरसी रूपीपुद्गलजेछे तेमांकेटलाक दृष्टिगोचरमांआवे अने केटलाक दृष्टिगोचरमांनआवे एटले वायुकायनापुद्गल तथा अहारकशरीरना धुंधआदि विस्रसापुद्गल अने छप्रकारनीद्रव्यलेश्याना इत्यादिकवस्तु आठफरसीजेछे तेमाहेला जेपुद्गलनाखंधमां करकश अने नारीफरसना पुद्गलघणाहोय तथासुकुमालमृदुसुकु माल अने हलकापुद्गल घणाहोय तेदृष्टिगोचरमांनआवे उपरांत उदारिकशरीरादि क प्रमुखसर्वना जेदिवामांआवेछे दृष्टिगोचरमांआवेछे एमाटे आठफरसीपुद्गल दृष्टि गोचरमां आवे पण अनेनहीपणआवे

अनेजीवद्रव्य अरूपीछे पणपुद्गलसाथेंमल्यो आकारवंतरूपीदेखायछे एरीतें ष ट्द्रव्यते वेरासीमां समायछे तेमज नवतत्वपण वेरासीमां समायछे केमके द्रव्या र्थिकनयेंकरी वेद्रव्यछे अनेपर्यायार्थिकनयेंकरी वेद्रव्यना नवपदार्थथायछे तेकहेछे

जीवतत्वतो जीवद्रव्यछेज अने अजीवतत्व अजीवद्रव्यमां कह्योजछे शेषसात तत्वजेछे तेपर्यायार्थिकछे वेद्रव्यनापर्यायथी साततत्वनीपना तेवेप्रकारेंछे एकमु ख्यतायें वीजोगोणतायें तेआवीरीतेंजे.

पुन्य पाप बंध आश्रव एचारतत्व मुख्यतायें अजीवथी नीपनाछे केमकेएचारते कर्मथीनीपनाछे माटेकर्मतत्वछे अनेकर्मनेतो नगवतिमां चोफरसी रूपीपुद्गलकह्यो छे एन्यायें एचारतत्व अजीवतत्वमां समायछे अने प्रयोगसापुद्गलछे माटे व्यवहा रनयनी अपेक्षायें गोणतापणे जीवनापर्यायमां पणजलेछे तेथी पर्यायार्थिकनयें करी एनेपर्याय तत्वकहियें.

पणएचारतत्वनो निजस्वरूपविचारतां हेयपदार्थछे केमके कर्मवंधनेछे माटेपरगु णछे जीवनागुणनथी कर्मनोगुणछे अनेजेकर्मनोगुण ते निश्चयनयथकी अजी वछे माटेएवीरीतेंज्ञान विचारतांतो अजीव पुन्य पाप आश्रव बंध एपांचतत्व अजी वराशीमां समायछे.

अने संवर निर्ज्जरा मोक्ष एत्रण धर्मतत्वछे जीवनोगुणछे पणपरगुणनथी मा टेमुख्यतायें जीवनापर्यायछे परंतुपुद्गलने आत्माथी भिन्नकरवानो स्वनावछे माटेसं ग्रहनयेंकरी पुद्गलना पर्यायमांपणजलेछे तेथीएत्रणे पर्यायतत्वजाणवा परंतुमुख्यप णेवस्तुनी ओलखाणकरतां धर्मतत्वछे निजगुणछे अरूपीछे तेनिश्चेनयनी अपेक्षायें जीवछे जीवनापर्यायछे तेमाटे एकजीव वीजोसंवर त्रीजोनिर्ज्जरा चोथोमोक्ष एचा रजीवतत्वछे तेजीवतत्वमां समायछे इतिज्ञेयं.

हवेकोइक एकांतपक्षग्राही आश्रवने जीवकहेछे तेकहेनारपण अजाणदेखायछे पछेतो केवलीवचन सत्यछे पणसूत्रमांजोतांतो आश्रवनेजीवपणुं कहेवुं एमजणा तुंनथी जेकुहेतुलगाडी आश्रवनेजीवकहि नोलालोकोने नरमावेछे तेनीरीत कहेछे.

जीवनाजे अशुनभावते आश्रवछे एन्यायें आश्रवने जीवकहियें एमतेकहेछे पण ते जिनमार्गना नयात्मज्ञानना अजाणदेखायछे माटेपक्षपातमूकीने जिनमार्गनी शैलीनी उलखाणकरसो तो आश्रवते प्रत्यक्षअजीवना पर्यायमांजिलेछे तेनोविचा रएमछेजे आश्रवनोगुण कर्मग्रहणकरवानोछे तेकर्मग्रहणतोजीवविना मात्रकर्मपुद्गल ज नवाकर्मने केमग्रहणकरीशके तेमजवलीअरूपीवस्तु रूपीवस्तुने पणग्रहणके मकरे तेतोअनादिकालनी कर्मवर्गणासाथेंछे तेकर्मवर्गणाथी जीवकर्मग्रहणकरेछे.

माटेजीवना भूडाभावनोकर्त्तापण कर्मजछे तेकर्मविनाजो जीवनाभूंडाभाव थता होयतो सिद्धनाजीवोनेपण भूंडाभावथवाजोइयें पणसिद्धतो अकर्मकछे माटेतेना

तोछुंडाजावनथी तेथीप्रत्यक्षदेखायछेजे एआठकर्म अनादिकालना जीवसाथें लोलिभूतछे तेजकर्मने ग्रहणकरेछे जेमअग्नीना प्रयोगथी पाणीउष्णथायछे पणतेउष्णता नोकर्त्ताअग्निछे पणपाणीनथी तेमजछुंडाजावनो कर्त्ताकर्मछे पणजीवनथी तेमाटे एनोकर्त्ताकर्मछे एमओलखतां तथाकार्यना कारणदेखतां तोआश्रव अजीवतत्वमां समायछे पर्यायतत्वछे निश्चेनयदेखतांतो हेयपदार्थछे कर्मथीनीपनोछे परगुणछे ते माटेआश्रवने अजीवसद्दहणा धारवी.

वलीकोइक शुभयोगने संवरकहेछे तेपण सूत्रथीमिलतोनथी केमके इरियाविहि क्रियाते शुभयोगथीथायछे माटेयोगप्रत्ययछे तेपणआश्रवमांछे तथा पहेलागुणठाणेशुभयोगछे पणसंवरनथीकह्योमाटे शुभयोगने संवरकहेवोतेपण सूत्रथीमलतु नथी तत्वकेवलिगम्यं

कोइक संवरनेजीवकहेतां आश्रवनेपण जीवठहावेछे तेपणपक्षनीताणकरेछे केमके संवरतो अकंपअवस्थाछे योगनिरुंधनछे तेमांदेशथीजे योगनिरुंधणते देशसंवरछे अने सर्वथी जे योगनिरुंधनते सर्वसंवरछे अनेएसर्वजीवनो निजगुणछे धर्मतत्वछे माटेसंवर आश्रवएबेहु एकनीपर्यायनथी तेमांआश्रवते अजीवनीपर्यायछे अनेसंवरते जीवपर्यायछे इति.

हवेजिनराजना वचनथी नवतत्वनी शुद्धसद्दहणाते सम्यक्तछे अनेकोइक एम पणकहेछे जे नवतत्वना जाणपणाथी संसारतरेनही तेपणसत्यछे पणतेजाणपणुं श्रीउत्तराध्ययनसूत्रनां अठावीसमां अध्ययनें एकसंक्षेपरुचि बीजीविस्ताररुचि एबेप्रकारेंकह्युंछे तेमांजेजीव प्रवचनशास्त्रनो अजाणछे पणमिथ्यात्वीना वचननी आसतानथी दृढपणेजिनवचननी आसताछे अने जेश्रीतीर्थंकरें तत्वकह्यातेहनेसत्य करीजाणेछे एहवानेजे नवतत्वनुंजाणपणुंछे तेसंक्षेपरुचिकहियें.

अनेजेणे नवतत्वने अनेकरीतें शास्त्रोक्त ओलख्याछे तेविस्ताररुची थी जाणपणुंछे उक्तंच उतराध्ययने अठावीसमें अध्ययने दवाणसवनावा सवप्पमाणेहि जसउवलद्धा ॥ सवाहिंनयविहिय विछाररुइत्तिनायवो ॥ १ ॥ इत्यादिक अनेकनांतेकहीछे तेएकेक तत्वउपर पचीसपचीसबोल चिंतव्याथी विस्ताररुचीनी सद्दहणाथाय तेपचीसबोलना नामकहेछे.

१ निश्चेथी २ व्यवहारथी ३ द्रव्यथी ४ भावथी ५ सामान्यथी ६ विशेषथी ७नामनिक्षेपाथी ८ स्थापनानिक्षेपाथी ९ द्रव्यनिक्षेपाथी १० भावनिक्षेपाथी ११ द्रव्यथी १२ क्षेत्रथी १३ कालथी १४ भावथी एरीतेंद्रव्यादिकचारथी तथा १५ प्रत्यक्ष

प्रमाणथी १६ अनुमानप्रमाणथी १७ आगमप्रमाणथी १८ उपमाप्रमाणथी १९ नैगमनयथी २० संग्रहनयथी २१ व्यवहारनयथी २२ रुजुसूत्रनयथी २३ शब्दनयथी २४ समभिरूढनयथी २५ एवंभूतनयथी एरीतें एपचीसबोलते एकेकातत्त्व पर शीतीरीतें विचारियेंतेकहेछे तेमांथीप्रथमजीवादिकनवपदार्थना निश्चे व्यवहार एवेबोलकहेछे जीवनुंनिश्चेपणुंते असंख्यात प्रदेशात्मक द्रव्य अनेकर्मकलंकरहित शुद्धोपयोगी सत्चिदानंदते निश्चेजीवजाणवा तेजीवजे त्रिकालथंपहोता कर्मव्यवहारना अनावथी अकन्मस्स विवहारोनविज्जइ एमअनुयोग द्वारें अकर्मकमाटे सिद्धने व्यवहारनयथी तेनेनिश्चेथीजीवकहियें.

अनेजे संसारीजीव चेतनावंत एकेंद्रीथीमांडीने पंचेंद्रियपर्यंत देहधारकजीवो पोतपोतानाशरीरानुसारें आयुअवगाहनादिकमां प्रवर्त्ते ते व्यवहारजीव विवहरतित्तिव्यवहार एवचनेकरीजाणवुं.

हवेअजीवनो निश्चेव्यवहारपणुंकहेछे अजीवतत्त्वना पांचद्रव्यछे तेपांचेनोजे अचेतनपणो तेनिश्चेनयथी जाणवुं अने धर्मास्तिकायमां गमनगुण तेव्यवहार अधर्मास्तिकायमां स्थिरगुण तेव्यवहार वलीआकाशास्तिकायनो अवकाशगुण तेव्यवहार अने कालद्रव्यनुं पुद्गलपरावर्त्तन वर्त्तनागुणनुं प्रवर्त्तन जेप्रवर्त्तवोतें व्यवहारनयजाणवो जेमअसंख्याता लोकाकाशमां अनंतिरात्रीगइ वर्त्तमानेएकजायछे अनागतेंअनंतिजासे एहवीजे प्रवर्त्तनाते व्यवहारकालजाणवुं वलीपुद्गलनेविषे पांच वरण बेगंध पांचरस अनेआठफरस पांचसंस्थान इत्यादिकनुं ग्रहणगुण तेव्यवहानयपुद्गलछे एअजीवनो निश्चेव्यवहारनयकह्यो.

हवेपुंण्यतत्त्वनुं निश्चेव्यवहारपणुंकहेछे जीवनाप्रदेशनेविषेजे शुभपुद्गलनुबंध तेशुभपणाने निश्चेनयथी पुण्यकहियें अने तेनो अनुभागजे भोगभोगववारूप प्रदेशनेविषेते पुण्यनुंव्यवहारनयजाणवुं.

हवेपापनुंनिश्चे व्यवहारकहेछे जेअदत्तदलनीवर्गणा एटले अविरतिने संयोगेंमल्याजे कर्म तथा अव्रतिनेसंयोगें वर्त्तमानथका अशुभपुद्गलनोबंध तेनिश्चेंथी पापकहियें अनेपापवर्गणा उदयावलीमांआवे तद्रूप व्यवहारनुं जेप्रवर्तन तेव्यवहारपापपणुंकहियें एरीतें पापनुं निश्चेव्यवहारपणुकह्युं.

हवेआश्रवनुं निश्चेव्यवहारपणुंकहेछे मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद विषय कषायना जे दल तेनारसेंकरी आत्मासकंपमानथाय अनेते मिथ्यात्वादिकना रसेंकरी जीवना

अध्यवसाय अशुभथाय तेआश्रवनुं निश्चेपणुंजाणवुं अनेजे मिथ्यात्व अविरत्यादि कषांचेना प्रवर्त्तना गुणथी कर्मग्रहणथाय ते आश्रवनुं व्यवहारपणुंजाणवुं.

हवेसंवरनो निश्चेव्यवहारपणुं कहेछे जेआत्माना योगरुंधवेकरी स्थिरपरिणामथाय तेसंवरनुं निश्चेपणु अनेपांचमहाव्रत्यादिकनेवेषें प्रवर्त्तवुं ते व्यवहारसंवर.

हवेनिर्जरानुं निश्चव्यवहारकहेछे जेसम्यक्तभावेंकरी शुद्धयोगथी इछानिरोधकरवुं आशावांछारहित तपेंकरीने जीवनाप्रदेशथी कर्मपुद्गलनुंखिरवुं भरतचक्रवर्त्तिनी परें तेनिश्चेथीसकाम निर्जराजाणवी अनेबारभेदें तपनोकरवुं तेतपनीजे सम्यक्तसहित प्रवर्त्तनरूप करणीते व्यवहारसकाम निर्जराजाणवी.

अनेजे मिथ्यात्वसहित बालतपकरवुं पणतेमां प्रगटपणे आशावांछानहोय तामलितापसनीपरें तेनिश्चे अकामनिर्जराजाणवी एअकामनिर्जरानोकर्त्ता शुभयोगीछे पणशुद्धयोगीनथी केमके अंतरंगथी पुद्गलनमें गयोनथी आत्मानुं अनुभवरस चाख्योनथी पणसंसारथी उदासीनताथयीछे तेअकामनिर्जरानुं निश्चेपणुजाणवुं अनेजे परवशपणे क्षुधतृषादिकनुं खमवुं तेव्यवहार अकामनिर्जराजाणवी एथीजीवप्रदेश उज्वलथाय पणतेनापरिणाम कर्मबंधहेतुजाणवा इति

हवेबंधनुं निश्चव्यवहारपणुंकहेछे जीवनाप्रदेशनेविषे जे पुद्गलबंधथयी प्रयोगसापणे परिणमिने सत्तापणेजीवनीसाथेंछे तेसमुच्चयजीवआश्री शुभ अशुभ अध्यवसायेंकरी जेशुभाशुभबंधतेनिश्चेबंधजाणवुं तेमांपण सम्यक्तवंत व्रतनाधणीनो जे शुभ अध्यवसाय तेकर्मनिर्जरानुंकारणछे पणशेपपातलाकमेजेरह्या तेशुभबंधजाणवो पण इहांबंधनुंहेतु सम्यक्तादिकनथीमाटे तेनेनिश्चेबंधकहियें अनेतेशुभाशुभबंधथी आत्माना अध्यवसायपलटे तेअध्यवसायनुं प्रवर्त्तन तेणेकरीबंधजाणीयें जेममद्यपानी पुरुषने मद्यपानथी लहेरप्रवर्ते तेम गतिजात्यादिकें बंधनुंप्रवर्तवुं तेव्यवहारबंधजणायछे

हवेमोक्षनो निश्चेव्यवहारपणुंकहेछे जीवनासर्वप्रदेशथी समस्तकर्मपुद्गलनुं मूकावुं तेनिश्चेमोक्षजाणवुं अनेसिद्धनेविषे प्रवर्तनरूप व्यवहारनथी अकम्मस्स ववहारो नविज्जइ तेनिश्चेमोक्ष अनेजे ज्ञान दर्शन चारित्रादिमोक्षमार्ग तेमांहे प्रवर्तवुं ते व्यवहारमोक्षदेखायछे जोपणमोक्षने व्यवहारदेखातुंनथी तोपणज्ञानादिकनुं प्रवर्तनरूप तेव्यवहारपणुं संभवेछे तत्वसर्वज्ञकथित जिनवचन अनंतनयात्मकछे माहराजेवा मंदमतिजीवने समजवुंकठणछे ए नवपदार्थनुं निश्चेव्यवहार कह्युं.

एनिश्चव्यवहारनुं लक्षणकहेछे जेपदार्थचिंतवियें तेपदार्थनुंजे अभ्यंतरगुण एटलेतेपदार्थनोनिजस्वभाव तेनिश्चेजाणवुं जेमजीव सिद्धसमानछे तेअभ्यंतरगुणकहियें

तेनिश्चें अनेतेहिज वस्तुनोजेबाह्यप्रवर्त्तन तेनेव्यवहारकहियें तेव्यवहार शुज त थाअशुज मजीवेंप्रकारेंछे अने शुद्धाशुद्धव्यवहारनो जेदआगज सातनयमांकहेस्ते.

हवेनवपदार्थेना द्रव्यजावकहेछे तेमां प्रथमजीवनो द्रव्य असंख्यातप्रदेशात्म क तेद्रव्यजीवकहियें अनेजीवनोजे ज्ञान दर्शन चारित्र वीर्यते जावजीवकहियें प णद्रव्यविना जावजीवते जिन्ननथी द्रव्यजीवनोजेगुण तेजावजीव जेमशाकरमिश्रि तद्रव्य तेनोमीगेस्वाद तेहनेजेमजावकहियें जेमशाकरथी मीगासपणुंजिन्ननथी ते मद्रव्यथी जावजिन्ननथी तेजावजीवनीगाथा श्रीउत्तराध्ययनना अज्यावीसमांअध्य यने कहीछे नाणंचदंसणंचेव चरितंचतवोतहा ॥ वीरियंउवउगोय एयंजीवस्सलक णं ॥ १ ॥ एजावथीजीवकह्यो एरीतेंजीवनोद्रव्यजावकह्यो

हवेअजीवना द्रव्यजावकहेछे तेअजीवद्रव्यपांचछे एकधर्म बीजोअधर्म त्रीजो आकाश चोथोकाल पांचमुपुजल एपांचद्रव्यनुं द्रव्यपणुं तेआवीरीतें जे धर्म अ धर्म अने आकाश एत्रणद्रव्य ते एकेकछे तथाकालद्रव्यएकछे अने अनंतापण कालद्रव्यछे तथापुजलपण अनंताद्रव्यछे एपांचेअजीवद्रव्यनुं अचेतनपणुंछे तेद्र व्य अने जावथी चारद्रव्यअरूपी अनेएकपुजलद्रव्यरूपीछे एजावजाणवो तथाधर्मा स्तिकायनो गतिसहाय गुणएमद्रव्यना निजस्वजावनेपण जावअजीवकहियें.

हवेपुण्यना द्रव्यजावकहेछे जेशुजयोगसाथें शुजपुजल चौफरसी प्रयोगशाप णे परिणमिरह्याछे तेद्रव्यपुण्यकहियें अनेजे शुजपुजलनोरस जीवतया शरीरनेपरि णमे तेवारेंजोक्ता आल्हादपामे चित्तमांहर्षपामे शातामाने तेजावपुण्यकहियें.

हवेपापना द्रव्यजावकहेछे जेअशुजयोगसाथें अशुजपुजल चउफरसी प्रयोग शापणे परिणमिरह्याछे तेद्रव्यथीपापकहियें अनेजे अशुजपुजलनुं रस जीवतया श रीरने परिणमे तेवारेजीव विषादपामें दुःखमाने तेजावपापकहियें जेद्रव्यतेपुजल अने जावते पुजलनारसजाणवा.

हवेआश्रवना द्रव्यजावकहेछे द्रव्याश्रवते १ मिथ्यात्वमोहनीयकर्मना दलिया ते मिथ्यात्व आश्रवनो व्यवहार मिथ्यात्वद्रव्याश्रव अने २ अप्रत्याख्यानिया कषाय नादल तेव्यवहारद्रव्य अव्रतआश्रवकहियें ३ विषय तथाप्रत्याख्यानी कषायनादल तेद्रव्यप्रमादाश्रवकहियें ४ कषाय आश्रवनोदलते संज्वलनीकषायनादल ५ यो गाश्रवनो तेद्रव्यनामकर्मथी नीपना जेमनवचनकायाना योगतेना प्रयोगशा पुज लनादल तेमांहेमोहनीयकर्मना उदयमिले तेथअशुजयोगाश्रवनुंद्रव्य ६ नामकर्मनाद

लते शुनयोगाश्रवनुंद्रव्य इति द्रव्याश्रवकह्युं तथा मिथ्यात्व अविरतादिक पांचने उदयेंकरी जीवना जे नानाप्रकारना शुनाशुन अध्यवसायथाय तेनावाश्रवकहियें.

हवेसंवरना द्रव्यनावकहेछे जेदेशथकी योगनुंरुंधवुंते देशसंवरनोद्रव्य अने जे सर्वथी योगनुरुंधवुंते सर्वसंवरनोद्रव्य एमयोगनुंजेरुंधवुं ते संवरनोद्रव्यकहियें ए टलेयोगरुंधी नवाकर्मनवांधे ते संवरनुद्रव्य अनेयोगरुंधनथी जीवनीजे अकंपअव स्थाथाय स्थिरपरिणामपणेरहे ते नावसंवरकहियें तेमांपण देशथीअकंपअवस्था ते देशनावसंवर अनेसर्वथी अकंपमान शैलेसीअवस्थानोधरवोते सर्वनावसंवर.

हवेनिर्जरानो द्रव्यनावकहेछे जेजीवनाप्रदेशथी कर्मनोखिरवोते द्रव्यनिर्जराक हियें अने कर्मनाप्रदेशखिरवाथी आत्मानेजेजे निजगुणनी लब्धि प्रगटथाय एटले कर्मप्रकृति खिरवाथी जेज्ञानादिकगुणनी लब्धिनुंप्रगटथावुं आत्मानुंउज्ज्वलपणुंप्र गटे तेने नावनिर्जराकहियें.

हवेबंधनाद्रव्यनावकहेछे जेप्रकृतिबंधादिकचारनीवर्गणा एकेकआत्माना प्रदेशउ पर रोलीनूतथयीरहीछे ते द्रव्यबंध अने ते द्रव्यबंधथी जीवना परिणाम गतिजा त्यादिपणे जेम अर्हपुरुष अर्हस्त्री इत्यादिकतेनावबंध जाणवुंइतिबंध.

हवेमोक्षना द्रव्यनावकहेछे जेसकलकर्मदलरूप मल कलंक आत्माथीगंडवुं अने कर्मवर्गणाथी आत्माने निन्नकरवुं जेम हेमथीमलशोधवो तेम कर्ममलरहि तथावुं तेद्रव्यमोक्ष अने कर्ममलखपाव्याथी अनंतचतुष्टयजे निजगुण स्वरूपते नावमोक्ष इति एरीतेद्रव्यनावथी नवतत्वकह्या तेद्रव्यनावनुं लक्षणकहेछे जेवा ह्यवस्तुतेद्रव्य तेद्रव्यथीजे वस्तुनोनिजस्वरूपते नावकहियें.

हवे सामान्यविशेषपणुंकहेछे तेमांप्रथम जीवनो सामान्यविशेषकहेछे जीव नुंसामान्यपणुंते जेम ठाणांगें एगेजीव इतिसामान्य अनेजीवाडविहा तसाथावरा तथा सिद्ध संसारी वलीजीवा तिविहा इछि पुरसा नपुंसगा तथा जीवचउविहा पं चविहा छविहाइ इत्यादिक जीवनेविशेषपणाथीजाणवुं ते जीवनोविशेष अनेनेदां तर संक्रमणमां जेजेवचनबोलियें तेतेवचन सामान्य विशेष श्रीअनुयोगद्वारें कह्युं जेमडविहाजीवा एवचन ते एगेजीवे एवचननुंविशेषपणुं जाणवुं अने डविहाजी वा तसाथावरा तेमां तसाएसामान्यशब्द अनेते तसा चउविहा बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचेंदिया एमकहेवुंते विशेषकहियें तेमज थावरएसामान्य अने थावरापं चविहा एमविवक्षाकरवीते विशेषजाणवुं एसामान्य विशेषनो घणोविस्तार श्रीअनु योगद्वारसूत्रथी जाणवो इहांग्रंथनोविस्तार घणोवधे माटे सामान्यपणेकह्युं.

हवेअजीवना सामान्यविशेषकहेछे जेम एगेअजीवे इतिसामान्य तेमज अजीवाडु विहा तिविहा चउविहा पंचविहा इत्यादिकविशेषपणानो विस्तारजीवनीपरेंजाणवो.

हवेपुण्यनासामान्यविशेषकहेछे जेम एगेपुन्ने इतिसामान्य अने पुन्ननवविहा ए मकहेवुं इत्यादिकतेपुण्यनुं विशेषपणुंजाणवुं इतिपुण्यनुं सामान्य विशेषकह्युं.

हवेपापनुं सामान्यविशेषकहेछे जेम एगेपापेइतिसामान्य अने पावठारसगाणा इतिविशेष एटलेपापने एकप्रकारेंमात्रपाप एटलुंजकहेवुंते पापनुंसामान्यपणुं अने पाप अढारप्रकारेंबंधाय एमविस्तारसहित कहेवुंते पापनुंविशेषपणुंजाणवुं इति.

हवेआश्रवना सामान्य विशेषकहेछे श्रीठाणांगें एगेआस्सवेइतिसामान्य अने ठा णांगमांज पंचआस्सवदारा एमकह्युंछे ते आश्रवनुं विशेषपणुजाणवुं इति.

हवेसंवरनुं सामान्य विशेषकहेछे एगेसंवरे इतिसामान्य अने पंचसंवरदारा एम कहेवुंते संवरनुं विशेषपणुंजाणवुं इति.

हवेनिर्जराना सामान्यविशेषकहेछे एगेनिज्जरें एसामान्य वचनजाणवुं अनेनिज्ज राअणेगविहा सकाम अकाम इत्यादिक विस्तारसहितकहेवुंते विशेषपणुजाणवुं.

हवेबंधना सामान्यविशेषकहेछे एगेबंधे इतिसामान्यवचनें बंधजाणवुं अने बंधेच उविहे जेम पग्गइबंधे अठकम्म प्पगडीउबंधे इत्यादिक वचने विशेषबंधजाणवुं.

हवेमोक्षना सामान्यविशेषकहेछे श्रीठाणांगें एगेमोरके इतिसामान्यें अने अठ कम्मपयडीउ खवंति इतिविशेषवचनेकरी बंधनुंविशेषपणुजाणवुं एसामान्यपणावि शेषपणानुं लक्षण जेएकवचनमां घणावचन अंतरभूत समावेते सामान्य अनेजे भेदप्रकाशरूपवचन तेविशेषवचनजाणवुं एरीतें नवेंतत्वनुं सामान्य विशेषपणुंकह्युं.

हवेएकेकापदार्थमां नाम स्थापना द्रव्य अने भाव एचारचारनिक्षेपा लगाडवा नी रीतकहेछे तेमांप्रथम जीवनाचारनिक्षेपाकहेछे जेजीवएवुंनामते नामजीव जे मकोइवस्तुभावीनें तेवुंजीवएवुंनाम कहेवुंते नामजीवजाणवुं तथा अजीववस्तुने जीवएवुंनामकहेवुं तेपण नामजीवजाणवुं अने स्थापनाजीवते चित्रामणादिकेंक रीस्थापियें तेस्थापनाजीव तथा जीव अथवा अजीववस्तुनेस्थापिने जीवकहेवुं ते पण स्थापनाजीवजाणवुं.

वलीद्रव्यजीवते छद्रव्यमाहेवुं एकजीवद्रव्य असंख्यातप्रदेशात्मकरूप तेद्रव्य जीव तथाभावजीवते जेजीवना उदय उपशम क्षायक क्षयोपशम परिणामिक ए पांचभावपणे प्रवर्त्ततेभावजीव एमजीवनाचारनिक्षेपाजाणवा.

हवेअजीवना चारनिक्षेपाकहेछे अजीवएवुंनामकहेवुं तेनामअजीव थापीनेअ

जीवपणुंदेखाडवुं ते स्थापनाअजीव जेजडरूपते अजीवद्रव्यपांचछे ते द्रव्यअजी व अनेजे धर्मद्रव्यप्रमुखना गतिसहाय स्थितिसहाय अवकाशगुण वर्त्तमानगुण पुद्गलना वर्णगंधादिकगुणते नावअजीव एटलेइहां पांचद्रव्यना सद्भावगुण तेसर्व अजीवना नावजाणवा इतिअजीव.

हवेपुण्यना चारनिक्षेपाकहेछे पुण्यएवुंनामते नामपुण्य अने अक्षरादिकें कप्र्पदि कादिकंकरी स्थापियें ते स्थापनापुण्य अनेजे शुनकर्मप्रकृतिनीवर्गणा जीवनाप्रदेशनी सायें परिणमि तेद्रव्यपुणकहियें तथा पुन्यतेशुनकर्मप्रकृतिना उदयथी जीवआल्हा दपणुंपामे शातापणे जीवने आनंदपणे परिणमेते नावपुण्यजाणवुं इति

हवेपापना चारनिक्षेपाकहेछे जेपापएवोनामकहेवुंते नामपाप अने अक्षरादि के कप्र्पदिकादिकंकरी स्थापियेंते स्थापनापापकहियें तथाजे अशुनप्रकृतिनीवर्गणा द्रव्यकर्मपणेपरिणमे तेद्रव्यपापजाणवुं अने अशुनप्रकृतिना उदयथी जेविषवाद पणेपरिणमे तेथीजीवना परिणामदूषितथाय दुःखपणे नावपरिणमें तेनावपाप.

हवेआश्रवना चारनिक्षेपाकहेछे प्रथमआश्रवएवुंनाम कहेवुंते नामाश्रव अनेजे अक्षर कप्र्पदिकादिक दशप्रकारें स्थापनाते स्थापनाश्रव तथा मिथ्यात्वादिकप्रकृ ति अप्रत्याख्यानीचतुष्क प्रकृतिआदिक मोहनी तथा नामकर्मनी प्रकृतिनाजेदल आत्मासायें लोलीनूतथइरह्याछे तेमांहें कर्मरूपपुद्गल ग्रहणकरवानी शक्तिछे ते स्योगतापुद्गलने द्रव्याश्रवकहियें तथा आश्रववंतजीवना शरीरनेपण द्रव्यनिक्षेपें आश्रवनुंद्रव्यकहियें एरीतेंद्रव्याश्रवना नेदथयाछे अने मिथ्यात्वादिक कर्मप्रकृति नाउदयथी जेजीवनानावपरिणमें तेनावने नावाश्रवकहियें इतिआश्रव.

हवेसंवरना चारनिक्षेपाकहेछे संवरएवुंनामकहेवुंते नामसंवर अने स्थापनासं वरते पूर्वेआश्रववत्जाणवुं तथा द्रव्यसंवरते सम्यक्तिदेशव्रतिआदिकविषे जीवना प्रदेशने कर्मप्रकृतीनुंजे आगमन तेनेनिरुंधवुं तेद्रव्यसंवरकहियें अनेजे आत्मानुं अकंपतापणुं देखायी तथा सर्वथीथाय तेनेनावसंवरकहियें इति.

हवेनिर्जराना चारनिक्षेपाकहेछे तेमां नाम तथा स्थापना एवेतोपूर्ववत्जाणवा अनेद्रव्यनिर्जराते जीवनाप्रदेशथी कर्मवर्गणानुं खिरवो तथाकर्मखपावे तेजीवनेप ण द्रव्यनिर्जराकहियें तथानावनिर्जराते आत्माउज्वलथाय तेथीलब्धिउपजे ज्ञा नलब्धिरूपांतरमलब्धि क्षायकलब्धि इत्यादिकप्रगटे तेसर्वेनावनिर्जराकहियें.

हवेबंधतत्वना चारनिक्षेपाकहेछे तेमांपणनाम तथा स्थापनातो पूर्ववत्जाण वां अनेजे कर्मवर्गणानादल आत्मासायेंलागाछे तेद्रव्यबंध तथा तेद्रव्यबंधथी जी

वनाभावते कर्मनीअवस्थापणे परिणमें जेमद्रव्यमद्यपानथी जीवनेछाकचढे तेछा कसमान बंधजाणवो तेनेभाववंधकहियें इति.

हवेमोक्षना चारनिक्षेपाकहेछे तेमां नाममोक्ष तथा स्थापनामोक्षतो पूर्ववत् जाणवां अने निर्मलजीवते द्रव्यमोक्षजाणवुं वली आत्माना निजगुणजेक्षायकज्ञान दर्शनते भावमोक्षजाणवुं इति एरीतेंनवपदार्थनेविषे चारनिक्षेपा संक्षेपथीकह्या जे जीवनुंव्याख्यान निक्षेपाथी वर्णनकरियें एटलेप्रथमनाम पछेस्थापना पछेतेवस्तुना द्रव्यवताविये पछेतेना निजगुणनो विवरोकहियें एमएकेकपदार्थ चारचारप्रकारें निक्षेपियें तेनेनिक्षेपाकहियें केटलाकअन्यभेदथीपण निक्षेपाकहेछे तत्त्वसर्वज्ञगम्यं.

हवेनवपदार्थना द्रव्य क्षेत्र काल अने भावकहेछे तेमांप्रथम जीवद्रव्यनो द्रव्य क्षेत्र काल भावकहेछे जीवद्रव्य द्रव्यथीअनंताद्रव्यछे क्षेत्रथीलोकप्रमाण कालथीअनादिअनंतछे तेनापर्यायभेदथी चारभांगाथायछे भावथी अरूपीभाव ज्ञानदर्शन चारित्र तप वीर्य उपयोगमयीछे इति.

हवेअजीवते द्रव्यथीसामान्यपदें पांचद्रव्यछे अनेविशेषपदें धर्म अधर्म आकाश एत्रणएकेकद्रव्यछे अनेकालपुद्गलएबे अनंता अनंताद्रव्यछे अनेक्षेत्रथी चारद्रव्यलोकप्रमाणछे तथा पांचमुं आकाशद्रव्य लोकालोक प्रमाणछे कालथी अणाइए अपज्जवसिए अणाइएसपज्जवसिए एवेभांगा तथापर्यायापेक्षायें श्रेणीप्रतरापेक्षायें त्रीजोचोथोभांगोपणछे परंतु मुख्यव्यक्तव्यता कालथी अनादिअनंतछे तथा भावथी चारद्रव्यतो अरूपी अचेतन अक्रियभावपणेछे अने एकपुद्गलद्रव्य रूपी सवन्ने सगंधे सरसे सफासे अचेतन सक्रियभावछे इतिअजीव.

हवेपुन्यते द्रव्यथी पुद्गलद्रव्यछे तेसामान्यपदेंतो एकद्रव्यछे अनेविशेषपदें अनंताजीवोना पुण्यप्रकृतिनादल अन्योन्यछे एटलेजूदाजूदाछे तेमाटेअनंताजीवोना अनंतापुण्यद्रव्यछे तथापुण्यप्रकृतिनारस भिन्नभिन्नछे तेमाटेविशेषपदें अनंताद्रव्यछे अनेक्षेत्रथी एकजीवनीअपेक्षायें पुण्य असंख्यात प्रदेशीक्षेत्रावगाहीछे अनेसर्व जीवनी अपेक्षायें लोकाकाशप्रमाण क्षेत्रावगाहीपुण्यछे वली कालथी बंधनीस्थितिनं अपेक्षायें साइएसपज्जवसिए तथा भावथीरूपी चोफरसी शुभपरिणामी इति.

पापद्रव्यनेपण द्रव्यथी क्षेत्रथी कालथी तो पुण्यनीपरेंकहेवुं अनेभावथीरूपी पांचवर्णी बेगंध पांचरस तथाअशुभपरिणामी चारफरसकहेवुं इतिपापतत्त्व.

आश्रवने द्रव्यथी मिथ्यात्व अविरतप्रमाद कषाययोगनाजेदल जीवनीसाथेंछे जे नवाकर्मने आकर्षणकरेछे तेआश्रवनुंद्रव्यछे एमअनंताजीवोनी अपेक्षायें अनंता

आश्रवद्रव्यछे तथाक्षेत्रथी लोकाकाशप्रमाण आश्रवनुंक्षेत्रछे अनेकालथकी साइए सपज्जवसिए तथाभावथी जीवनाअध्यवसाय तेअरूपीने भावथीजाणवा.

संवरना द्रव्यथी अनंतासंवरद्रव्यछे केमके सिद्धनासर्वजीवोमां निश्चेसंवरसंभवेछे ते क्षायकसम्यक्तनी अपेक्षायें सम्यक्ततेसंवरछे तेमाटे अनंताद्रव्यछे तथा सम्यक्तसंवरी अशंख्याताजीवद्रव्यछे देशसंवरनी अपेक्षायेंपण असंख्याताद्रव्यछे वली व्यवहार चारित्रसंवरनीअपेक्षायें संख्याताजीवद्रव्यछे एसर्वद्रव्यथी संवरजाणवुं अनेक्षेत्रथी त्रसनाडीप्रमाण संवरनोक्षेत्रछे तथा कालथी साइएसपज्जवसिए सिद्धनानिश्चेसंवरनी अपेक्षायें साइएअपज्जवसिए छे अने भावथी अरूपी इतिसंवर.

निर्जरा द्रव्यथीनिर्जराते जीवद्रव्य तथानिर्जरवा जेकर्मपुद्गल तेप्रकारांतरपणे परिणम्यानही तिहांलगण तेनिर्जरवापुद्गलने द्रव्यथीनिर्जराकहियें क्षेत्रथीजीवप्रमाण कालथी साइएसपज्जवसिए भावथीअरूपी तथा आत्माउज्वलपणेथाय ते.

बंधतत्वमां द्रव्यथीबंधते आठकर्मनीवर्गणानापुद्गल आत्मासाथें बंधथयाते द्रव्यथीबंधकहियें क्षेत्रथी असंख्यातप्रदेशावगाहीबंध कालथी साइएसपज्जवसिए अनेभावथीबंधरूप पुद्गलानुंसारभावथाय तेभावबंधकहियें इति.

मोक्षतत्व द्रव्यथीसिद्धक्षेत्रमां बिराजमान आत्माचिद्रूप अनंताद्रव्य अनेक्षेत्रथी एकसिद्धआश्रयीतो जघन्य एकहाथने आठअंगुल तथा मध्यम चारहाथने शोलअंगुल उत्कृष्ट ३३३ धनुष्यने ३२ अंगुल क्षेत्रजाणवुं तथासर्वसिद्धोनी अपेक्षायें पुस्तालीसलाखयोजनलांबो अने पहुलो तथा ३३३ धनुष्य अने ३२ अंगुल उंचो एटलोमोक्षक्षेत्रछे अनेकालथी साइएअपज्जवसिए तथामुक्तिक्षेत्रअपेक्षायें अणाइएअपज्जवसिए अनेजे ज्ञानदर्शनादिकगुण प्रगटथयाते भावथीमोक्षजाणवुं.

हवेनवेपदार्थमाहेला एकेकापदार्थनेविषे १ प्रत्यक्ष २ अनुमान ३ उपमा ४ आगम एचारचारप्रमाणकहेले जेप्रत्यक्षआगल वस्तुदेखियें तेप्रत्यक्षप्रमाण अने अनुमानेकरी वस्तुनेजाणियें जेमधुमाडाथीअग्नि इत्यादिक अनेकहेतुयेंकरीजाणवुंते अनुमानप्रमाण अनेजेवस्तुने साधर्मिकवस्तुनी उपमाकरीजाणे जेमआसरोवर समुद्रसरिखोछे पाणीनुंबिंदु मोतीसरिखुं इत्यादिकउपमाप्रमाणजाणवुं पणउपमांबेप्रकारथीकहेवाय एकदेशोपमा बीजीसर्वोपमा तेमांदेशोपमाजेमपुरिससिहाणं पुरिसवरपुंडरियाणं पुरिसवरगंधहथिणं इत्यादिकदेशोपमा अनेबीजीसर्वोपमाते जेम संसारसायरेघोरे जेणंपडइदुरुत्तरेः इत्यादिकसर्वोपमा अने आगमप्रमाणते जे इंद्रिय तथामनथी परोक्षवस्तु ने आगमनावचनथीजाणवी जेमदेशप्रदेशना भांगापरमाणुं त

या साधारणवनस्पतिनो विचारजाणवो तेआगमप्रमाण एरीतेंचारप्रमाणते एकेक पदार्थेउपरजाणवानेकहेछे.

प्रत्यक्षजीवते चेतनालक्षणपणुं अने अनुमानप्रमाणते बाल युवान वृद्धपणेप्र वर्त्ते जेमदशवैकालिके चतुर्थाध्ययने अभिक्कंतं पडिक्कंतं संकुचियं पसारियं रूप नं त तसियं पलाइयं आगइ गई इत्यादिकत्रसजीवोने जाणवानां अनुमानकह्यांछे ते मज स्थावरना अनुमानपण श्रीआचारांगे प्रथमश्रुतस्कंधे शस्त्रपरिज्ञाअध्ययने व नस्पतिवृक्षादिकना जीवसद्दहवानेअर्थें अंकूरादिकथीलेइ अनुमानप्रमाण गणधरें बताव्या तेअनुमानप्रमाणथी जीवजाणियें तथाउपमाप्रमाण ते जीवअरूपीआका शवत् ग्रह्योनजाय जीवअनादिअनंत जेमधर्मइत्यादिक सास्वता तेमजीवपणसास्व ता इत्यादिक उपमायेंकरी जीवनुंछतापणुकहेवुं तेउपमाप्रमाण अनेवली उपमायें करी जीवनोछतापणुं अनादिपणुं हेतुयेंकरी दृढावियेंतेनीरीतकहेछे:

ईश्वरवादीकहेछे जीवनोकर्त्ता ईश्वरछे सयंभुणाकमेलोए इत्यादिकवचनेकरी जी वनोकर्त्ता ईश्वरकह्योछे एमकहेवाथी जिनवचननी विरुद्धतायइ केमके जिनराजें तो जीवनेअनादिकह्योछे माटेईश्वरवादीनेपुछवुंजेतमे ईश्वरकर्त्ताकहोछो तोईश्वरनुं पणकर्त्ताकहेवुंजोसे अने ईश्वरनुकर्त्ताजो परिब्रह्मनीज्योति कहेसोतो परिब्रह्मनुंकर्त्ता पण कोइकजोइयें इत्यादिकवचनथणाछे तेलिखतांग्रंथवधे माटेतेवीजाग्रंथोथीजा णिलेवा जेमपरिब्रह्मनी ज्योतिअनादिछे तेमजीवअपणनादिछे इत्यादिकउपमायेंक री जीवनुंसास्वतपणुंदेखाडवुं तेउपमाप्रमाणकहियें.

तथाउपमायेंकरी जीवनुंस्वरूपकह्युं जेमतिलमांतेल अने दुग्धमांघृत इक्षुमांर स तेमकायामांजीव इत्यादिकउपमायें जीवनुंछतापणुंकहेवुंते उपमांप्रमाणजाणवुं.

हवेजीवनुं आगमप्रमाणकहेछे जेमआगमसां गणधरेंकह्युं कम्मकत्ताअपंजीवो कम्मछिताविजीवमुणेयव्वो अरूवीनिच्चअणाइउ अगुरुलहुगुणजीवाणं ॥ १ ॥ जी वकर्मनोकर्त्ताछे कर्मनोभोक्ताछे अरूपीछे नित्यछे अनादिछे अगुरुलघुगुणछे एरीतें जीवनांलक्षणकह्यां तेआगमप्रमाणथी जीवनुंस्वरूपजाणवुं तथाएकजीवनाप्रदेश जे आकाशप्रदेशमांअवगाह्या तेहांअनंताजीवना प्रदेशअवगाहे तथासाधारणवनस्प तिमां एकवालाग्रमात्रअंशमां अनंताजीवछे तेमएकशरीरमां अनंताजीवछे इत्या दिकआगमप्रमाणथी जीवनेसद्दहियें तेआगमप्रमाण जाणवुं इति.

हवेअजीवना चारप्रमाणकहेछे अजीवनुं प्रत्यक्षप्रमाण तोजडलक्षणथी जाणु जायछे तथा जीवथीविपरीत जडपुद्गलस्वभाव अनेवर्णगंधादिकदेखायछे पणछायमां

आवेनही मिलणविखरण स्वभाव प्रत्यक्षदेखायछे तेप्रत्यक्षप्रमाण अनेअनुमानप्र माणथी नवजीर्णपणुं पलटणस्वभावपणुदेखीने जाणियें जे एपुद्गलछे तथाजीवपुद्ग लने गतिसहाय स्थितिसहाय अवकाशदेवाना प्रमाणथी जाणियेंछेयेंजे एअजीव अरूपीनुंगुणछे जेमजीवपुद्गलने सकंपमानदेखीने अनुमानेयी धर्मद्रव्यनो स्वभावज णायछे अनेअकंपमानदेखीने अनुमानथी जाणियेंछेयें जे एअधर्मद्रव्यनो स्वभावछे तेमज जीवपुद्गलमाहोमांहे मल्यादेखीने अनुमानेजाणियेंछेयेंजे एआकाशद्रव्यनोस्व भावछे तेमजएकछगधनो वाटको किनारासुधीनरियें जेमांएकवुंदपणवीजुंछध समा यनही एवोगलीनेनरियें पणतेमां साकरवाटीने नाखियें तो समाइजाय एआकाश नोगुण अनुमानेजणायछे एमअनुमान प्रमाणथी सर्वअजीवद्रव्य जाण्याजायछे.

तथाउपमाप्रमाणते जेमईद्रधनुष्य संध्याराग पलटेछे तेमपुद्गलनोरंग अ स्थिरछे पलटनस्वभावछे जेमगजकर्ण अथिरछे तेमपुद्गलपण अथिरछे इत्यादिक अनेकउपमायेंकरी पुद्गलनो स्वभावदेखायछे तेउपमाप्रमाणथी पुद्गलनुंस्वरूपजणा यछे पुद्गलनोरंगपलटयोदेखीने उपमाआपियेंते उपमाप्रमाणजाणवुं अनेचोथोआ गमप्रमाणते जेमअजीवना खंध देश प्रदेश तेचारद्रव्यनाकह्या अनेपांचमा पुद्गल द्रव्यमां परमाणुंआदि खंधप्रवर्त्तना द्रव्यगुणपर्यायनाकथन जेमसूत्रमां परुप्या व ली परमाणुनीअपेक्षायें एकवर्ण एकगंध एकरस बेस्पर्श अने परमाणुनीरासीमां पांचवर्ण बेगंध पांचरस चारफरस एसोलनापर्यायनी एकगुणथीमांमीने यावत् अनंतगुणपर्यंत व्याख्याकरवी तेनेआगमप्रमाणथी पुद्गलजाणियें.

पुद्गलनावर्णादिकनीपर्याय पुद्गलथीभिन्ननथी जेमसाकरद्रव्य अने साकरनो मी ठोरसभिन्ननथी पणद्रव्यगुणपर्यायना व्याख्यानमां द्रव्यपर्याय वचनयोगथी भिन्न कहेवामांआवेछे जेमसाकरमीठी आंबलीखाटी एसंबंधवचनथी भिन्नदेखायछे पण आगम प्रमाणथी द्रव्यगुणपर्याय तेएकजवस्तुमांछे पण जूदाजूदानथी एआगमप्र माणनो विस्तारघणोछे तेनोअधिकार श्रीभगवतिसूत्रना वीसमांसतकमां भांगाक ह्याछे तिहांथीजोवुं आगमप्रमाणजाणवुं.

हवेधर्मास्तिकायना खंधदेशप्रदेशना द्रव्यगुणपर्याय आगममांकह्याछे जेमधर्म द्रव्यना एकप्रदेशमां अनंतिपर्यायछे केमके अनंताजीवपुद्गलने गतिसहायआपेछे तेमांषट्गुणहाणीवृद्धिछे तथाउत्पादव्ययअनेध्रुवना पर्यायेंकरीसंयुक्तछे तेधर्मद्रव्य नो आगमप्रमाणजाणवुं एमजअधर्मद्रव्य स्थितिसहायकारीछे शेषधर्मद्रव्यवत्जा णवुं तेमजआकाशद्रव्य सदाअवकाशनुंदेवावालुंछे आकाशनो अरूपीपणुं अचेत

नपणु अनंतपणु इत्यादिकआगमथीजाणियें तेआगमप्रमाणकहेवुं वलीकालद्रव्य तुंपण एमजअरूपी अचेतनपणु अनंतपणु अप्रदेशीपणुछे पणवस्तुने नवजीर्णथ वानुं साह्यकारीछे तेएकसमयमां अनंतिपर्यायछे केमकेतेहिजसमय अनंताजीव पुद्गलउपरवर्त्तेछे इत्यादिकविस्तारें अजीवनाभेद आगमप्रमाणथीकह्या इति.

हवेपुण्यना चारप्रमाणकहेछे जेमनोज्ञशब्द मनोज्ञरूप मनोज्ञगंध मनोज्ञरस मनोज्ञफरस मनसुख वचनसुख कायसुख एआठप्रकारनी सातावेदनीते प्रत्यक्षप्र माणे पुण्यजाणवुं तथा अनुमानप्रमाणेतो ऋद्धि संपदा रूप बल जाति कुल ई श्वरता अधिकदेखीने अनुमानथीजाणियेंजे पूर्वेएणेपुण्यघणाकर्यांछे जेम विपाक सूत्रें सुबाहुकुमरनो सौभाग्यदेखीने गौतमादिकसाधुयेंजाण्युंजे एकुमरेंपूर्वे महोटापु ण्यकीधाछे तेपुण्यनुं अनुमानप्रमाणकहियें.

हवेपुण्यनो उपमाप्रमाणते जेमपुण्यवंतजीवनेपुण्यवंतनी उपमाआपियें तेउ पमाप्रमाणथी पुण्यफलजणाय जेमउत्तराध्ययनना एकवीसमांअध्ययने पासाएकी लेईरम्मेदेवोदोगंदगोजहा तथा चंदोइवताराणं भरहोइवमणुयाणं इंदोइवदेवाणं ए वीउपमा जेहनेआपियें तेनाअधिकपुण्यजाणियें इति.

हवेपुण्यनो आगमप्रमाणते शुभप्रकृतिने शुभयोगथीबांध्या पुण्यबंधथायछे जेम ठाणांगे चतुर्थस्थाने सुचिन्नाकम्मा सुचिन्नाफलाभवंति इत्यादिक आगमवचनथी शु भबंधने पुण्यकहियें तेआगमप्रमाण तथाआगमवचनथी पुण्यनाभेदजाणियें जेम पुण्यप्रकृति ते ऊंचगोत्र शुभवर्णादिक अनेस्थितपुण्यते दीर्घदेवायु मनुष्यायु वलीअ नुभाग तेपुण्यनारसनीहानिवृद्धि जेमपाणीमां मिश्रीथोमीनाखे तोपाणीथोडोमिठो थाय अने घणीमिश्रीनाखे तोघणोमीठोथाय तेमपुण्यनापण अनुभाग तथारसमां षट्गुणहानिवृद्धिछे तेपुण्यप्रकृतिमां अनंतिपर्यायछे पुण्यरूपदलनी वर्गणा अ नंतिछे जेमदेवायुतेपुण्यप्रकृतिछे पणतेमांकालापेक्षायें चौठाणवलियाछे माटेजेमजे म शुभयोगव्यापारनीवृद्धि तेमतेमपुण्यनीवृद्धि इत्यादिक आगमप्रमाणथी पुण्यजा णवुं तथापुण्यानुबंधीपुण्य जेमतीर्थंकरने अने पुण्यानुबंधीपाप हरीकेसीमुनिराजने पापानुबंधीपुण्य जेमगोशालाने तथाअनार्यराजाओप्रमुखने तथा पापानुबंधीपाप जेम नारकीमांनाभवीछे इत्यादिकभेद पुण्यस्वरूपना आगमप्रमाणथीजाणियें.

हवेपापना चारप्रमाणकहेछे पापनाचारप्रमाणपुण्यथीविपरीतपणे जाणवा एटले जेजीव आठप्रकारनी अशाताभोगवतो देखायते प्रत्यक्षप्रमाणेपापजाणवुं कोइनेक ष्टदुःखभोगवतो देखीनेजाणेजे एणेपूर्वेपापकीधांछे तेअनुमानप्रमाणेपाप तथा जे

म एनारकीनाडुःख सरिखाडुःखनोभोगवेठे एमकहियेंते उपमाप्रमाणेपाप अनेकर्म नो प्रकृति स्थिति अनुभाग अनेप्रदेशबंधते अशुभहोय एटलेपुण्यथी विपर्ययद लियाहोयते आगमप्रमाणे पापजाणवुं इति.

हवेआश्रवना चारप्रमाणकहेठे जेयोगनाव्यापारनुं सकंपमानपणुंते प्रत्यक्षप्र माणे आश्रवकहियें वली अनुमानप्रमाणे अत्यागभावने आश्रवकहियें तथा जे म तलावने गरनालो तथाहवेलीनेवारणो अने नावानेछिद्र वली सुइनेनाको ए चारउपमायें जीवनेआश्रवनुं आववुंथाय तेउपमाप्रमाणे आश्रवकहियें तथा जे अप्रत्याख्यानी क्रोध मान माया लोभ एचारकषायना प्रमाणमली दलरूपस्कंधथ यीने आत्मानाएकेकप्रदेशें वर्गणा चढोटीठे तेवर्गणाने आगमप्रमाणे आश्रवकहियें.

हवेसंवरना चारप्रमाणकहेठे प्रत्यक्षप्रमाणे संवरते योगनिरुंधनने कहियें ते मांजे देशथीयोगनिरुंधनते देशसंवर तथासर्वथी योगनिरुंधनते सर्वसंवरकहियें इ त्यादिकविस्तारवणोठे जेमजेमयोगव्यापार निरुंधनथाय तेमतेम सर्वसंवरगुणपुष्ट थाय अनेजे सावद्ययोगनोत्यागते अनुमानप्रमाण संवर जेमहवेलीनो बारणोरुंध वाथी माणसआवतां बंधथाय तेदृष्टांतें जीवनेयोगनिरुंधन करवाथी आवताक र्मरोकाय जेमनावानोछिद्ररुंध्याथी पाणीआवतुंबंधथाय तेमजीवने पच्चखाणक री आश्रवनेरुंधे जेमतलावनी मोरीरुंधवाथी पाणीआवतोबंधथाय तेमजीवना यो गव्यापार रुंधनकरवाथी कर्मनुंआववुं बंधथयीजाय जेमसुइनोनाको रुंधवाथी मांहे दोरोआवीशकेनही तेमजीवना योगरुंधवाथी कर्मआवतारहे एमउपमाप्रमाण सं वरकहियें तथाजेआत्मानुं स्थिरतापणुं अकंपपणुं योगव्यापाररहितपणुं देशथी अ नेसर्वथी योगरुंधनपणेकरी आत्मानिश्चलपणेथाय आत्मापोतानागुणने संयुक्तथा य तेआगमप्रमाणसंवर आत्मानेकहियें इति.

हवेनिर्जराना चारप्रमाणकहेठे जेबारभेदेंतपस्याकरीनेकर्मनुंछेदकरेतेप्रत्यक्षप्रमा णे निर्जराकहियें अनेबारभेदेंतपस्याकरवाथी कर्मनादलियाखिरे तेथी आत्मानिर्म लथाय तेनिर्मलपणायकी ज्ञानदर्शनादिक निजगुणप्रगटे जेम मलिनवस्त्र खारपाणी तथा अग्निनासंयोगें धोवाथी मलटालीने निर्मलथाय तेमजीवपण बारभेदें तपस्या करीकर्मरूपमलनेटाली निर्मलथाय तथाजेम सुवर्णबीजीधातुना संयोगथी मलिनहो य तेअग्नि टंकणखार कारीगरनासंयोगथी मेलटले तेमबारभेदें तपस्याकरवाथी आत्मामांथी कर्मरूपमेलखिरे तथाजेम सूर्य अभ्रपटलथी ढांक्यो तेज हीन थाय पठेवायुना प्रयोगथी वादलामिटीजाय तेवारें सूर्यनोतेजप्रगटथाय तेमएसं

सारीजीवना पोताना अनंतागुणने कर्मरूपमेलथी ढंकाणाछे तेवारभेदनी तपस्या
रूप वायुनाप्रयोगथी कर्मरूपमेलना पडलमटीजाय तेवारेपोतानागुण प्रगटथाय
इत्यादिक उपमायेंकरी उपनाप्रमाणे निर्झराकहियें.

अनेजे निर्झराथी ज्ञानदर्शन चारित्ररूप पोतानागुणनी वृद्धिथतिदेखाय तथा
देयापुण्यमुख्यनुंशामवुं तेविकलेंद्रियादिकथी उज्वलपणुंपाम्युंकहेवाय एमनिर्झराथी
जक्षयोपशम वृद्धिथाय तेअनुमानप्रमाणे निर्झराजाणवी.

तथाजेपुद्गलनी आशावांछारहित इच्छानिरोधन तपकरे ते आत्माने उज्वलपणे
सम्यक्तसहित सकामनिर्जराथाय ते आगमप्रमाण निर्जराकहियें इति.

हवेबंधतत्वनाचारप्रमाणकहेछे तेमांजे जीव अने पुद्गल खीरनीरनीपरें लोली
भूतथयांरह्यांछे जीव अजीव वेहुमल्या शरीराकार प्रयोगशा पुद्गलपरिणम्या देखा
यछे तेप्रत्यक्षप्रमाण बंधकहियें.

तथातीर्थंकर गणधर केवलज्ञानी अने छद्मस्थ मुनिराजना उपदेशसांभले पण
संशय व्यामोह भ्रम इत्यादिक अज्ञानजायनही तेथीअनुमाने जाणियेंजे एने नि
ध्याचादिक कर्मप्रकृतिनोबंध अतिकठिनछे जेम ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्तिने चित्तमुनीश्वरें
कह्यो नियाणमहुंहुंकडं इतिवचनात् एम अनेक हेतुथी अनुमानप्रमाणे बंध जाणियें.

तथा सोलप्रकारथीआयु चारगतिनो बंध कह्योछे तेरुत्यविना अनुमानथी गति
मांजावो तेपणअनुमान प्रमाणेबंधजाणियें तथा नरकादिकना आव्याना लक्षण
देखीने जाणियें इत्यादिक विस्तारथी अनुमानप्रमाणे बंधकहियें.

हवेउपमाप्रमाण बंधकहेछे प्रकृतिबंधते स्वभावरसनेन्यायें स्थितिबंधते कालम
र्यादानेन्यायें अनुभागबंधते सुखदुःखविपाकपणानी षट्गुण हानिवृद्धि तेअनुभा
गरसनी हानिवृद्धि जेमसेरपाणीमां अल्पमिश्रीनाखियें तो अल्पमधुरपणोथाय अ
ने घणीमिश्रीनाखियें तो घणुंमधुरपणुंथाय तेमशुभकर्मनोरसपण तीव्रमंदपरिणा
मनी हानिवृद्धिथी कर्मनारसनो तीव्रमंदपणुजणाय अनेअशुभकर्मना रसपण हा
निवृद्धियुक्तछे तेआवीरीतें जेमसेरपाणीमां थोडोनिंबनाखियेंतो थोडोकटुकपणो
थाय अने घणोनिंब नाखतां घणोकटुकपणुंथाय इत्यादिकहेतुथी अनुभागबंध र
सजाणिजे अनेप्रदेशबंधते जीवनाएकेक प्रदेशउपरें अनंतिअनंति कर्मवर्गणारही
छे जेमसोनारनीपासें जोडजेथायछे तेनापटल परस्परमिलेलाहोय तेमन्यारापण
होय तेमकर्मवर्गणाते जीवनाप्रदेशें प्रदेशेंसंघातेंरहे तेप्रदेशबंध कोइजीवने अल्प
होय कोइजीवने बहुलहोय इतिप्रदेशबंध एउपमाप्रमाणबंधकह्यो.

हवेआगमप्रमाण बंधकहेछे जीवनाशुनाशुन अध्यवसाय शुनाशुनयोग शुना शुनध्यान शुनाशुनलेश्या शुनाशुनपरिणाम इत्यादिकथी बंधथायछे तेनेआगमप्र माण बंधकहियें एरीतेबंधतत्वना चारप्रमाणकह्या.

हवेमोक्षना चारप्रमाणकहेछे तेमांजे देशथी उज्वलथयीने सम्यक्ज्ञान दर्शना दिक गुणप्रगटथाय अनेशुनप्रकृतिना स्वनावथी अशुनप्रकृतिना क्षपणथी जीव उत्तमपदजे तीर्थंकरादिकपदपामें तेनेप्रत्यक्षप्रमाणे मोक्षकहियें जेमघातिकर्मखप्या थी निर्मोक्षछे तेप्रत्यक्षप्रमाणेमोक्षछे.

अने अनुमानप्रमाणथी दर्शनमोहनीयकर्मखप्याथी तथा चारित्रमोहनीयकर्म खप्याथी मोक्षछे एरीतेंजेजाणवुं ते अनुमानप्रमाण मोक्षकहियें तथाउपमाप्रमा णतें जेम दग्धबीजने अंकुरावगेनही तथाजेम घृतसिंचवाथी अग्निमंदपणुंपामेनही तेमकरायपनाक्षयथी जीववीतरागपणाथी हायमान परिणामि नथाय इत्यादिकअने करीनथी उपमाप्रमाणें मोक्षजाणियें अने आगमप्रमाणमोक्षते अनंतचतुष्टय प्र गटथया जेमजेम अनुक्रमें सूत्रोक्तकर्मप्रकृतिखपावे तेमतेमजीवना निजगुणनील ब्धिप्रगटे तेजेम प्रथममोहनीयकर्मनी मिथ्यात्वमोहनी खपावे पछे अनंतानुबंधिया कषायनीचोकडीखपावे पछेमिश्रमोहनीखपावे पछेप्रत्याख्यानीयानी चोकडीखपावे इत्यादिकमोहनीयकर्मनी प्रकृतिखपाव्यापछि ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अंतरायकर्म एरीतेंजेमजेम गुणस्थान मार्गणा गुणस्थानक्रमारोहथाय तेमतेमजीवने मोक्ष पाय तेआगमप्रमाणे मोक्षजाणवो इति.

हवेएकेकपदार्थउपर सातनयकहेछे तेमांप्रथम नयनुंसरूपदेखाडेछे जेएकव स्तुनांअनंतास्वनावछे तेअनंतास्वनावनीजे प्रकृतिस्वनावरूप वचनबोलवुं एटलेय स्तुनाप्रत्येकप्रत्येक गुणपर्याय अवलंबीने जेवचनबोलवुं तेनेनयकहियें.

दृष्टांत जेमकोइकपुरुषपुंजे धान्यशायीनीपजेछे तेवारें एकेकह्योउदकथी बीजेक ह्योपृथ्वीथी त्रीजेकह्यो हलथी चोथेकह्योबलदथी पांचमेकह्योबीजथी छठेकह्यो क र्षुथी सातमेकह्योनाग्यथी एसर्वएकेक अंशग्राही शब्दबोल्या तेसर्वएकेकादेशेसत्यछे पणसर्वदेशें सत्यनथी तेमएकनयपणांस्रुतें एकदेशवाचकछे अनेजेसातेनयने अनुसा रेवचनबोलियें तेसर्वदेशें सत्यजाणवुं एरीतेंजे नयात्मकज्ञानसमजवुं ते सम्यक्त्व प ण जिहां एकनयनेअवलंबी बोलकरीरहेवुंते मिथ्यात्वछे एश्रीअनुयोगद्वारमांकह्युंछे.

हवेसातनयना मूलबेनेदछे तेमांएकद्रव्यथिकनय बीजोनिश्चेनय तेमांव्यवहारनयना वलीचारनेदछे एकनैगमनय बीजोसंग्रहनय त्रीजोव्यवहारनय चोथोऋजुसूत्रनय

एचारनय व्यवहारनाछे अने एकशब्दनय त्रीजोसमभिरूढनय त्रीजोएवंभूतनय ए त्रणनिश्चैनयछे माटेनिश्चैनाभेदमां गणायछे वलीतेमां कोइकवचननी अपेक्षायें रुजुसूत्रनयपण निश्चैनयमांभलेछे तेंपणजिनवचननी अपेक्षायेंलीधोछे हवेजेमां वस्तुनाद्रव्यनी मुख्यताप्रतिभासेछे तेनेव्यवहारनयकहियें अनेजेमां वस्तुनोनिजस्वभाव अभ्यंतरगुण प्रतिभासेछे तेनिश्चैनयकहियेंः

हवेव्यवहारवेकह्याछे एकशुद्धव्यवहार बीजोअविशुद्धव्यवहार तेव्यवहारतोजे वस्तुनो बाह्यप्रवर्त्तनरूप तेनेकहियें जेमविवहरतीति व्यवहार हवे वस्तुनोजेबाह्य प्रयोगशुभपणे प्रवर्त्तनरूप तेनेशुद्धव्यवहारकहियें तथाजे बाह्यप्रयोगनो अशुभपणेप्रवर्त्तनते अशुद्धव्यवहारकहियें एनोजाणपणुंयद्यपि अतिविस्तारपणेछे तथापि इहांअल्पपणे हेतुयेंकरीदेखाडियें छैयें.

जेमजीवद्रव्यएकवस्तुछे तेनुंबाह्यप्रवर्त्तन तेशरीरइंद्रिय तथा योगनाप्रवर्त्तनने कहियेंछैयें तेमांशरीरथी पडिलेहणाप्रमुख शुभकार्यनुंजेकरवुं तेमवर्त्ततांथकां शुद्धव्यवहारकहियें अनेएज शरीरथीजे स्त्रियादिकनुं आलिंगन प्रमुखकरवुंते अशुद्धव्यवहारकहियें एवीजरीतें बीजीचक्षुप्रमुख इंद्रियोनो प्रयोगपणकहेवुं तेथ्या बीरीतेंजे शास्त्रश्रवण इर्यासुमतियेंवर्तवुं स्वाध्यायकरवुं शीततापादिक सहनकरवा तेशुद्धव्यवहार अने विकथाश्रवण नृत्यावलोकन तथासुगंधानुराग रसादिकनुंगृंधीपणुं तेजादिकेंशयनकरवुं मैथुनादिकसेववा इत्यादिकसर्व अशुभव्यवहारछे एमजजे शुभअशुभयोगनुं प्रवर्तनते शुभाशुभव्यवहारछे पणइहां कारणनु कार्यनेविषे उपचारछे तेमाटे शुद्धअशुद्धव्यवहारते शुभअशुभपणानेज बताव्योछे.

पणशुद्धव्यवहारतो वीतरागअवस्थानेछे तेपाठलात्रण पर्यायार्थिकनयछे ते मांसमायछे तत्वकेवलिगम्यं एवीजरीतें व्यवहारनयमांपण शुद्धअशुद्धपणुं देखाड्युंछे जेमशुद्धनैगम अनेअविशुद्धनैगम इत्यादिकविस्तारें कहेवुंजोइयेंपण अल्पबुद्धिने ग्रंथनुंगौरव समजवुंदुर्लभथाय तेमाटेसंक्षेपेंकह्युंछे.

इहांकोइपुछेजे वस्तुतो द्रव्यगुणपर्यायरूप त्रणप्रकारेंकह्विछे पणनयाधिकारेंतो एकद्रव्यार्थिकनय अने बीजोपर्यायार्थिकनय कह्योछे पणत्रीजो गुणार्थिकनय केमकह्योनथी हवेगुरुउत्तरकहेछे जेजीवादिकपदार्थना द्रव्यगुणपर्यायत्रणकह्या अनेनयमां द्रव्यपर्यायबेकह्या माटेएसातनयमांजे पर्यायार्थिकनयछे तेहिजगुणार्थिकछे केमके पर्यायमां गुणअंतरभूतछेमाटे द्रव्यपर्याय बेजकह्या एरीतेंएसातनयनो विस्तारें भेदविज्ञान नयचक्रग्रंथथीजाणवुं. इति.

हवेजीवादिक नवपदार्थने सातनयेंकरी शीरीतेंसदहिये इहांसप्तभंगीनो विस्तारछे तेजाणवाथी सातेनयेंकरी जीवबोलियें पणइहां एकनयनावचन कहेनारने वीजानयवालो मानेनहीतो पणतेनेजूठोकहेनही केमके नयात्मज्ञाननुं एहिजस्वरूपछे निजनिजनय पोतपोताने अभिप्रायेंसत्यछे तेनोदृष्टांतकहिदेखाडेछे जेमस्त्रीने कोइ बेनमानेछे कोइदीकरीमानेछे कोइमातामानेछे कोइस्त्रीमानेछे इत्यादिकविकल्प सर्वे स्त्रीमां संभवेछे केमके पुत्रनीअपेक्षायें मातापणछे अने भाइनीअपेक्षायें बेनपणछे पितानीअपेक्षायें पुत्रीपणछे भर्तारनीअपेक्षायें भार्यापणछे.

एमजजीवादिक नवपदार्थनेविषेपण निजनिजअभिप्रायें प्रत्येकप्रत्येकजे विकल्प संभवेछे तेनयजाणवा एसातनयना सातसोभेद श्रीअनुयोगद्वारसूत्रें परुप्याछे ते जीवपदार्थने नयानुसारवचनमां अजीवजेपुद्गलछेतेने जीवकह्यांछे तेकेवीरीतेंजे श्रीगणांगें समयतिवा आवलियातिवा जीवातिवा अजीवातिवा पवुच्चति एरीतें समय आवलिकाप्रमुखने जीव अजीवकह्यांछे तथा प्रयोगशा पुद्गलने जीवकहियेंछेयें एरीतेंबोलनारना जे अभिप्राय तेहनीनिश्रायेंजे वचनछे ते नयअपेक्षायें वचनछे ते एकरी सातनयेंकरी जीवबोलायछे तेकहेछे.

हवेएसातनय जीवतत्वउपरकहेछे तेमां नैगमनयनिमतें पर्याय प्राणसहित शरीरछे तेप्रयोगशा पुद्गलछे तेशरीरावगाही धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकायना देशप्रदेशनेपण अवगाहीरह्याछे तेसर्वनोपिंमछे तेहनेजीवकही बोलीयेंछेयें जेआमनुप्यछे आपृप्नादिकछे तेजीवछे तेनैगमनयनो वचनछे जेएकअंशने संपूर्णवस्तुमाने तथाकारणनेकार्यमाने तेनैगमनयकहियें.

बीजोसंग्रहनयनेमतें असंख्यातप्रदेश अवगाहनावंतने जीवकहेछे इहांपण धर्म अधर्म तथापुद्गलने जीवमांगणिलीधा पण एकआकाशटाल्यो आकाशना असंख्यातुप्रदेशें जीवरहेछे तेआकाशखेत्रीछे तेमांजीवछे एवचनेआकाशटाल्यो.

व्यवहारनयनामतें इंद्रियनीवासनाने जीवकहेछे पणमहोटा शरीरसंबंधी पुद्गल तथा धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय टालीनाख्या पणइव्यलेश्या इव्ययोग जे मलप्रमुखतेसर्वे पुद्गलास्तिकायछे पणजीवनो व्यवहारछे केमके वासनाजीवबतोछे जीवशरीरथी नीकल्यापछे तेपुद्गलो इंद्रियाकारतोछे पणजीववासनाथी माटे इंद्रियविकारने व्यवहारनयजीवकहेछे पणनिश्चेंथीतो पांचलेश्यायोगइंद्रियोंते जीवथीन्याराछे पणव्यवहारदेखीने जीवकहेवामांआवेछे तेव्यवहारनयजाणवुं.

रुजुसूत्रनयनेमतें उपयोगने जीवकहेले इहां इंद्रिय लेश्या तथायोगना व्यवहारी कपुद्गल तवेंटालीनाख्या पणशुद्ध अशुद्ध एवेउपयोगने जीवकहेले तेमां अज्ञानउप योगते मिथ्यात्वमोहनीयकर्मनी वर्गणानाप्रयोगथीले तेअज्ञानीपणुतोउदेकले तेमाटे कर्मनोपरिणाम मिश्रितथी अज्ञानीपणु जीवनेले तेअज्ञानतो अशुद्धउपयोगले पण रुजुसूत्रनयानुसार कर्मवर्गणाना दलनेअनुसारेंजे उपयोगलेते जीवमांगणीलीधोले.

शब्दनयनेमते जिहांजीवशब्दनो अर्थमलेतेने जीवकहेले जेम जीवंजीवितजीव स्तइ एटलेपूर्वेजीवतोहतो हमणाजीवेले अनेआगलेजीवसे एहवोअर्थमले तेनेजी वकहेले एणेद्रव्यआत्माने जीवसर्दह्यो पण तेजस कार्मणाना प्रयोगशा सूक्ष्मपुद्ग लतेजीवने अनादिना संगीले केमके अतीतकालें जीवनीसाथेंजरह्याले तेनेपणजी वमां गणीलीधा तेशब्दनयजाणवुं.

समभिरूढनयनेमतें शुद्धसत्ताधारक निजगुणरमणरूप सम्यक्दृष्टिवंत अनुभव रसआस्वादितने जीवसर्दहे एटले क्षायकसम्यक्तिने जीवसर्दह्यो.

एवंभूतनयनेमतें सिद्धनेजीवकरी सर्दहे निश्चेंजीवते कर्मकलंकरहित परमात्मा रूपनिर्मलज्ञानदर्शनने जीवसर्दहे एरीतेंजीवनेसातनयेकरी अपेक्षायेंकहियेंलेयें.

हवेअजीव सातनयेंकरीबोलीयेंलेयें तेमांनैगमनयानुसारें अजीवनाप्रदेशने अ जीवकहे ते अजीवना पांचप्रकारले तेमांप्रथम धर्मास्तिकायना सातनयकहेले इहां नैगमनयते कारणनेकार्यमाने तेथी धर्मद्रव्यना एकप्रदेशने धर्मास्तिकायमाने के मकेनैगमनयवालो एकअंसनेवस्तुमानेले तेमाटे इहां धर्मास्तिकायना एकप्रदेशमां पण चलणसहायधर्मले तेमसर्वेधर्मास्तिकायमांपण चलणसहायधर्मले माटेनैगम नय एकप्रदेशनेपण धर्मास्तिकायमाने.

संग्रहनयें धर्मास्तिकायनेप्रयोगें जडचेतनचलणधर्मले तेएकजधर्मद्रव्यले इहांदे शप्रदेशनीविवक्षाकरीनही तेसंग्रह वलीव्यवहारनयें चलणसहायधर्मद्रव्यथी जी वतथापुद्गलते गतिगमनकरेले पणतेमां षड्गुणहानिवृद्धिले तेधर्मद्रव्यनोव्यवहार ले तथारुजुसूत्रनयनेमतें जीवपुद्गल जेवर्तमानकालें गतिगुणकरे तेनेधर्मद्रव्यकहे ही अनेशब्दनयनेमतें धर्मास्तिकायनागुणने स्वभावने धर्मास्तिकायकहे इहांदेशप्रदेशा दिकने माननही एमस्वभावनीमुख्यतायेंजेकहे तेशब्दनयजाणवुं वलीसमभिरूढन यते गुणनेप्रवर्त्ततादेखीने जाणेजेए धर्मास्तिकायनागुणले एमज्ञानादिकना उपयो गने धर्मद्रव्य माने तेसमभिरूढनयजाणवुं अने एवंभूतनयनेमतें धर्मास्तिकायद्रव्य

त्वादिकचारकारणमांजे शुभाशुभयोगवर्त्ते तेनो व्यापारते शुभाशुभआश्रवछे अने एक लोशुभयोगनोव्यापारते शुभाश्रवछे तथा एकलोअशुभयोगनोव्यापारतेअशुभाश्रवछे.

ऋजुसूत्रनयानुसारें जे वर्त्तमानकालें शुभअथवा अशुभयोगनो वर्त्तवो तेव्यव हाराश्रव पणअतीत अनागतना अशुभयोगेंवर्त्तताने ऋजुसूत्रनयनी अपेक्षायें आ श्रवकहेनही मात्र वर्त्तमानकालना योगव्यापारनेज आश्रवकहे इहांशिष्यप्रश्नकरेछे जे मात्रयोगनाव्यापारनेज आश्रवकहियें तो मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद अने कषाय एचारआश्रवकहेवानो शोप्रयोजनछे तेनेगुरुउत्तरकहेछे जे मिथ्यात्वादिकचारआश्र वजेछे ते तो निमित्तकारणछे अने मनवचनकायाना योगजेछे ते उपादानकारणछे केमके मिथ्यात्व अव्रत प्रमाद अने कषायमां जेवोजेवोयोगनो व्यापारप्रवर्त्ते तेवोते वोआश्रवकहियें तेथी आश्रवते योगद्वारेंजछे माटेमुख्यपणे योगनेजग्रहणकीधुंछे पण एकला मिथ्यात्वादिकचारथीज जीवकर्मपणे पुद्गलोने आकर्षणकरीशकेनही पणएमिथ्यात्वादिकचारेंमांहे योगनामलवाथी कर्मरूपपुद्गलनुं आकर्षणथायछे.

फरीशिष्यपुछेछेजे आत्मा योगद्वारें कर्मरूपपुद्गलने आकर्षेछे पणतेपुद्गलतो आ त्माथी अंतरालवर्त्तियेंछे तेहने आकर्षेछे किंवानथीआकर्षतो तेवारेंगुरुकहेछे आ त्माथी अंतरालवर्त्ति पुद्गलोने चिपटाइने खेंचवानीशक्तिनथी पणआत्मावगाही पुद्गलपरमाणुछे तेहनें आकर्षिनेग्रहणकरेछे.

इहांप्रस्तावें लिखियेंछेयें एशुभाशुभयोगमां षड्गुणहानिवृद्धिछे जेशुभपणेवृद्धि पामतायोगछे तेहांमुख्यतामां शुभयोगीछे पणअशुभयोगें मिश्रितछे एमज अशुभ योगनी वृद्धिपामता योगमां अशुभयोगनी मुख्यताछे पण शुभयोगेंमिश्रितछे इहां जेमजेम शुभयोगना पर्यायघटेछे तेमतेम अशुभयोगनीवृद्धिथायछे तथाजेमजेम अशुभयोगनी हानिथाय तेमतेम शुभयोगनी वृद्धिथाय एरीतें जिहांशुभाशुभनी हानिवृद्धिछे तिहां एकांतेशुभयोग अथवा एकांते अशुभयोगकिहांपणदेखातान थी केवलीनेशुद्धयोगछे अने सकषाइने शुभयोगछे तेदीर्घदृष्टियें विचारजो इहांकोइ पूछेजे शुभाशुभबेहुयोगकेमछेरे केमकेएकसमयमां बेयोगकह्यानथी तेसत्यछे मुख्य तामांतोएकछे पणअंशनल्योछे तेगौणतापणेछे इहांहेतुघणाछे विधिनिषेधपणघणा छे श्रीठाणांगनी टीकाकारेंपण त्रीजेठाणेफलाव्योछे तिहांमूलपाठमां तिविहेववसाए धम्मिएववसाए अधम्मिएववसाए धम्माधम्मिएववसाए तथासुयगडांगमां अने पन्नवणामांपण मिश्रयोगकह्याछे इमसर्दहियेंछेयें तत्वतोकेवलीवाक्यप्रमाणछे इत्या दिकशुभाशुभयोगना व्यवहारने व्यवहारनयेंआश्रवकह्यो.

अने ऋजुसूत्रनयनामतें वर्त्तमानकालें पुण्याश्रवछे अथवा पापाश्रवछे तेमांसु ख्यतापणे योगव्यापारनीक्रियाने आश्रवकहियें.

शब्दनयें जेस्थानकथीआश्रवआवे तेनाछेकाणाने आश्रवकहे एजीवना मिथ्यात्वादिक परिणामने आश्रवकहे तथासमभिरूढनय कर्मग्रहणकरवानुंजे गुणछे तेने आश्रवकहे अने एवंभूतनयतो आत्माना सकंपपणाने आश्रवकहे इहांग्रंथना गौरवपणाथी विस्तारसंकोचीलख्युंछे गीतार्थसुधारसें एरीतें आश्रवनासातनयकह्या.

हवेसंवरउपर सातनयकहेछे नैगमनयनेमतेंजे शुभयोगछे संवरनुंकारणछे माटे नैगमनयकारणने कार्यमानेछे तेन्यायेंशुभयोगने संवरकहे अने संग्रहनयस म्यक्तादिक परिणामने संवरकहे वलीव्यवहारनयें चारित्रनाव्यवहारजे पांचम हाव्रत तेनेसंवरकहे तथाऋजुसूत्रनयवर्तमानकालें नवाकर्मनआवे तेनेसंवरकहे वली शब्दनय सम्यक्तादिक पांचनेसंवरकहे तिहां शब्दनयपोषता चोथागुणगाणे वर्त्तनारो जीव देशसंवरीछे केमके संवरनापर्यायमांछे तेमिथ्यात्वसहचारणी प्रकृतीनोआनाश्रवछे अणग्रहवोछे तेन्यायेंकरी शब्दनयें संवरकह्यो तथासमभिरूढनयवालो सम्यक्तादिक पांचसंवरेंकरी जे कर्मवर्गणायें अलिप्तपणोहोय अनेमिथ्यात्वादिक पांचकारणनी स्निग्धतामंदकरवी तथारुक्षपरिणामथी कर्मनीस्थितिनो अलिप्तपणो तेसमभिरूढनय संवरकह्यो अने एवंभूतनयनामतें शैलेशीअवस्था आत्मानो स्थैर्यरूप अकंपमानथावो एचउदमागुणठाणानुं संवरजाणवो इहांआत्माने संवर कह्योछे जेमभगवतिना पहेलाशतकना नवमाउद्देशामां कालासवेसिय आयासंवर आयासंवरस्सअट्ठे इतिवचनात् एम आत्माना शैलेशीपणाने संवरकह्योइतिसंवर.

हवेनिर्जराना सातनयकहेछे नैगमनय शुभयोगने निर्जराकहे संग्रहनय कर्मवर्गणाखिरे तेहनेनिर्जराकहे इहांअकामनिर्जरा तथा सकामनिर्जरा सर्वगणीलीधी तथाव्यवहारनय बारभेदेंतपने निर्जराकहे केमकेतपते निर्जरानोव्यवहारछेमाटे वलीऋजुसूत्रनयें जेवर्त्तमानकालें शुभध्यानेकरी तपस्यामां प्रवर्तेछे तेनेनिर्जराकहे तथा शब्दनयें तो ध्यानाग्निना प्रयोगथी कर्मरूपइंधणने बाले तेनेनिर्जराकहे इहांमुख्यतायें शुभध्यानने निर्जराकहे केमके शुभध्यानथी निश्चेंकरीसकामपणे कर्मनिर्जरा थायछे अने समभिरूढनयेंजे आत्माना उज्वलपणाने सन्मुखथयो थनेशुक्लध्याना रूढथयो तेनेनिर्जराकहे इहांक्षिणमोहगुणठाणावर्त्तिनी प्रेरणाजाणवी तथा एवंभूतनयें सर्वकर्मकलंकरहित शुद्धात्माने निर्जराकहे इतिनिर्जरा.

हवेबंधतत्वना सातनयकहेछे नैगमनयनेमतें बंधनाकारण पच्चासीप्रकारेंछेतेने

वंधकहेले संग्रहनयें मोहनीयने वंधकहे जेम रागवंधन द्वेषवंधन इत्यावश्यकवच नात् तथाव्यवहारनय जीवनीसाथें पुजलनोसंयोग खीरनीरनीपरेंथाय तथा राग द्वेषादिकवंधनमां संसारीजीवखुतोठे तेनेवंधकहे वली ऋजुसूत्रनयें मांसभक्षणादि क तथा अशुभकार्यनेविषे वर्त्तताने वंधकहे जेमएजीव पोतानाकर्मोंथी सुखदुःख वेदेठे एमकहियेंते वंध अने शब्दनयें अज्ञानताथी ग्रथिलवत् व्यामोहपणाथी का र्याकार्यनेविचारे तेकर्मनोगुणठे तेनेवंधकहे इहांजीवविपाकी प्रकृतिनेवंधगएयो व ली समभिरूढनय आत्मानानिजगुणने ढाक्यां तेनेवंधकहे इहांघातिकर्म मुख्यता मांगएयां अने एवंभूतनय ते आत्माना अशुद्ध अध्यवसायथी नावकर्मथी जेकर्म नो संचयथयो तेनेवंधकहे इति.

हवेमोक्षतत्त्व उपर सातनयकहेले सर्वमोक्षने व्यवहारनयी पणपर्यायार्थिकनयें नेदप्रकाशरूप कहियेंलेयें नैगमनयानुसारेंजे गत्यादिकवंधनथकी बुटातेने मोक्षकहेले अने संग्रहनयजे पूर्वकृतकर्मथीछुटाथया अनेदेशथी उज्वलथया तेनेमोक्षकहे व ली व्यवहारनयें परित्तसंसारी तथासम्यक्तिने मोक्षकहे ऋजुसूत्रनयवालो क्षपकश्रे णीचढयाने मुक्तिकहेले अने शब्दनय सयोगीकेवलीने मोक्षकहेले समभिरूढनय शै लेशीकरणगुणने मोक्षकहेले एवंभूतनय सिद्धक्षेत्र पहोताने मोक्षकहेले.

एरीतेंएकेकातत्वउपर पचीसवोल चिंतव्याथी शुभस्थानकें ध्यानथायछे इहांध मेध्याननुं तथाशुक्लध्यानना पहेलापायानुं अंशपणभलेछे तेमाटे एपचीसवोलनी शुद्धमनेकरी ओलखाणकरवी उचितछे एपचीसवोलनो विस्तारघणुंकठीणछे तेमां थी हुंमंदमति अल्पबुद्धि आलसु हिनाचारीछतां कांइकलेशमात्र मार्गबताव्योछे माटेबुद्धिवंतपुरुषोए शुद्धकरीलेवुं ज्ञातापुरुषो एग्रंथनेसुधारीने घणाभव्यजीवोने शीखावशे संभलावशे तेथीज्ञानवृद्धिनो कारणथसे.

दोहा. क्रिमाजिमवालककरे पसुनगरकस्थाप ॥ तेविधहुंपणबालवत् कह्योग्रंथ आलाप॥१॥जिनवाणीनास्वादनो मतकरजोकोइहास्य॥स्याद्वादनयशुद्धकरो एहमे रीअरदास ॥ २ ॥ गुरुकारीगरसमकह्या गुणनिधिवपमाजोय ॥ श्रीहरजीमणिजी दीपतां तासरूपामुजहोय ॥ ३ ॥ रत्नचंदशिष्यतेहनो शुद्धीयशअरदास ॥ एअने कांतपक्षने बुद्धजनहीयेविमास ॥ ४ ॥

इतिश्रीनवतत्वउपरपचीसवोलचिंतववानोविचारसमाप्तः

॥ श्रीजिनायनमः ॥

अथ श्रीसमाधिशतक श्रीयशोविजय उपाध्यायजीकृत प्रारंभः

॥ दोहरा ॥

समरी नगवति नारती। प्रणमी जिन जग वंधु ॥ केवल आतम वोधको। करशूं सरस प्रवंध ॥ १ ॥ केवल आतम वोध है। परमारथ शिव पंथ ॥ तामें जिनकूं मगनता। सोइ नाव निगरंथ ॥ २ ॥ नोग ज्ञान ज्यूं वालको। वाह्य ज्ञानकी दौर ॥ तरुण नोग अनुनव जिस्यो। मगन नाव कछु और ॥ ३ ॥ आतम ज्ञाने मगन जो सो सव पुजल खेल ॥ इंइजाल करि लेखवै। मिलै न तहँ मन मेल ॥ ४ ॥ ज्ञान विना व्यवहारको। कहा वनावत नाच ॥ रत्न कहो को काचकूं। अंत काच सो काच ॥ ५ ॥ राचै साचे ध्यानमें। जाचै विषय न कोइ ॥ नाचैं माचै सुगति रस। आतमज्ञानी सोइ ॥ ६ ॥ वाहिर अंतर परम ए। आतम परिणति तीन ॥ देहादिक आतम नरम। वाहिरात्म वहु दीन ॥ ७ ॥ चित्त दोष आतम नरम। अंतर आतम खेल ॥ अति निर्मल परमातमा। नाहि कर्मको नेल ॥ ८ ॥ नर देहादिक देखिके। आतम ज्ञाने हीन ॥ इंद्रिय वल वहिरातमा। अहंकार मन लीन ॥ ए ॥ अलख निरंजन अकल गति। व्यापी रह्यो शरीर ॥ लखै सु ज्ञाने आतमा। खीर लीन ज्युं नीर ॥ १० ॥ अरि पुत्रादिक कल्पना। देहातम अनिमान ॥ निज पर तनु संवंध मति। ताको होत निदान ॥ ११ ॥ देहादिक आतम नमी। कल्पै निज परनाव ॥ आतम ज्ञानी जग लहै। केवल शुद्ध सनाव ॥ १२ ॥ सपर विकल्पै वासना। होत अविद्या रूप ॥ तातें वहुरि विकल्पमय। नरम जाल अँध कूप॥ १३॥ पुत्रादिककी कल्पना। देहातम नम मूल ॥ ताकूं जड संपति कहै। हहा मोह प्रतिकूल ॥ १४ ॥ या नम मति अव ठांमि दो। देखो अंतर दृष्टि ॥ मोह दृष्टि जो गेडिये। प्रगटै निजगुण सृष्टि ॥ १५ ॥ रूपादिकको देखिवो। कहन कहावन कूट ॥ इंइिय जोगादिक वलें। ए सव लूटाजूट ॥ १६ ॥ पर पद आतम इव्यकूं ॥ कहन सुनन कछु नाहि ॥ चिदानंद घन खेलही। निज पद तो निजमांहि ॥ १७॥ ग्रहण अयोग्य ग्रहै नही। ग्रह्यो न गेमै जेह ॥ जानै सर्व सनावने। स पर प्रका

शक तेह् ॥ १८ ॥ रूपेके भ्रम सीपमें । ज्यूं जड करे प्रयास ॥ देहातम भ्रमतें न यो । त्यूं तुज कूट अभ्यास ॥ १९ ॥ मिटै रजत भ्रम सीपमें । जन प्रवृत्ति जिम नाहि । नरमें आतम भ्रम मिटे । त्यूं देहादिक मांहि ॥ २० ॥ फिरे अबोधे कंठ गत । चामीकरके न्याय ॥ ज्ञान प्रकाशे मुगति तुज । सहज सिद्ध निरुपाय ॥ २१ ॥ याविन तूं सूतो सदा । योगे भोगे जेणि ॥ रूप अतींद्रिय तूंवतें । कही शके कहु केणि ॥ २२ ॥ देखे भाखे औ करे । ज्ञानी सबहि अचंभ ॥ व्यवहारे व्यवहारसूं निश्चयमें थिर थंभ ॥ २३ ॥ जग जाणे उन्मत्त औ । औ जाणे जग अंध ॥ ज्ञानी कूं जगमें रह्यो । यूं नहि कोइ संबंध ॥ २४ ॥ या परगाही ज्ञानकी । व्यवहारे त्युं कहाइ ॥ निर्विकल्प तुजरूपमें । द्विधा भाव न सहाइ ॥ २५ ॥ यूं वहिरातम छांडिके । अंतर आतम होइ ॥ परमातम मति भावई । जहां विकल्प न कोइ ॥ २६ ॥ सो में या दृढ वासना । परमातम पद हेत ॥ इलिका भमरी ध्यान गत । जिन मति जिनपदहेत ॥ २७ ॥ भारे भय पद सोइ है । जहँ जडकूं वी त्रा स ॥ जिनसूं औ डरतो फिरे । सोइ अभय पद तास ॥ २८ ॥ इंद्रिय वृत्ति निरोध करि । जो खिनु गलित विभाव ॥ देखे अंतर आतमा । सो परमातम भाव ॥ २९ ॥ देहादिकतें भिन्न में । मोथे न्यारे तेहु ॥ परमातम पथ दीपिका । शुद्ध भावना एहु ॥ ३० ॥ क्रिया कष्ट भी बहु लहे । भेद ज्ञान सुखवंत ॥ या विन बहु विधि तप करै । तौ भी नहि भव अंत ॥ ३१ ॥ अभिनिवेश पुग्गल विषय । ज्ञानीकूं कहँ होत ॥ गुणको भी मद मिटगयो । प्रगटत सहज उद्योत ॥ ३२ ॥ धर्म क्षमादिक भी मिटे । प्रगटत धर्म सँन्यास ॥ तौ कल्पित भव भावमें । क्यूं नहि होत उदास ॥ ३३ ॥ रज्जु अविद्या जनित अहि । मिटे रज्जुके ज्ञान ॥ आतमज्ञानें त्यूं मिटे । भाव अबोध निदान ॥ ३४ ॥ धर्म अरूपी द्रव्यके । नहि रूपी परहेत ॥ अपरम गुन राचे न ही । यूं ज्ञानी मति देत ॥ ३५ ॥ नैगम नयकी कल्पना । अपरम भाव विशेष ॥ परम भावमें मगनता । अति विशुद्ध नय रेख ॥ ३६ ॥ रागादिक जब परिहरी । करे सहज गु णखोज ॥ घटमें भी प्रगटे तदा । चिदानंदकी मोज ॥ ३७ ॥ रागादिक परिणामयुत । म नहि अनंत सँसार ॥ तेहज रागादिक रहित । जानि परमपद सार ॥ ३८ ॥ भव प्रपंच म न जालकी । बाजी झूठी मूल ॥ चार पांच दिन सुख लगे ॥ अंत धूलकी धूल ॥ ३९ ॥ मोह वागुरी जाल मन । तामें मृग मत होव ॥ यामें जे मुनि नहि परे । ताकूं असुख न कोव ॥ ४० ॥ जब निज मन सनमुख हुए । चिंते न पर गुणदोष ॥ तब बहुराइ लगाइये । ज्ञान ध्यान रस पोष ॥ ४१ ॥ अहंकार परमें धरत । न

लहै निज गुण गंध ॥ अहं ज्ञान निज गुण लगै । छुटै परहि संबंध ॥ ४२ ॥ ग्र
थे त्रिलिंगी पद लहै । सो नहि आतम रूप ॥ तौ पद करि क्यूं पाइए । अनुभव
गम्य स्वरूप ॥ ४३ ॥ आतम गुण अनुभवत भी । देहादिकतें भिन्न ॥ भूलै विभ्र
म वासना । जो रहि फिरै न खिन्न ॥ ४४ ॥ देखै सो चैतन नही । चेतन ना
हि दिखाय ॥ रोष तोष किनसूं करै । आपहि आप बुझाय ॥ ४५ ॥ त्याग ग्र
हण बाहिर करै । मूढ कुशल अति रंग ॥ बाहिर अंतर सिद्धकूं । नही त्याग
ओ संग ॥ ४६ ॥ आतम ज्ञाने मन धरै । वचन काय रति छोडि ॥ तौ प्रगटै शु
भ वासना । गुण अनुभवकी जोडि ॥ ४७ ॥ योगारंभीकूं असुख । अंतर बाहिर सु
ख ॥ सिद्ध योगकूं सुख है । अंतर बाहिर डुख ॥४८॥ सो कहिये सो पूछिये । तामें
धरिये रंग ॥ यातें मिटै अबोधता । बोधरूप व्है चंग ॥ ४९ ॥ नहि कछु इंद्रिय
विषयमें । चेतनकूं हितकार ॥ लोभी जन तामें रमै । अँधो मोह अंधार ॥५०॥ मूढा
तमसूं तेप्रबल । मोहे छोडी शुद्धि ॥ जागत है ममता भरे । पुद्गलमें निज बुद्धि ॥
५१ ॥ ताकूं बोधन श्रम अफल । जाकूं नहि शुभ योग ॥ आप आपकूं बूझवै । निश्चय
अनुभव भोग ॥ ५२ ॥ परको किशो बुझावनो । तूं परग्रहण न लाग ॥ चाहै
जे में बूझवो । सो नहि तुझ गुण भाग ॥ ५३ ॥ जबलौं प्रानी निज मतें । ग्रहै
वचन मन काय ॥ तबलौं है संसार थिर । भेद ज्ञान मिटि जाय ॥ ५४ ॥
सूखम घन जीरन नवै । ज्यूं कपरे त्यूं देह ॥ तातें बुध मानै नही । अपनी परि
णति तेह ॥ ५५ ॥ जैसे नाश न आपको । होत वस्त्रको नाश ॥ तैसे तनुके नाश
तें । चेतन अचल अनाश ॥ ५६ ॥ जंगम जग थावर परें । जाकूं भासै नित्त ॥ सो
चाखै समता सुधा । अवर नही जड चित्त ॥ ५७ ॥ मुगति दूरि ताकूं नही । जाकूं
थिर संतोष ॥ दूर मुगति ताकूं सदा । जाकूं अविरति पोष ॥ ५८ ॥ होत व
चन मन चपलता । जनके संग निमित्त ॥ जन संगी होवै नही । तातें मुनि जग
मित्त ॥ ५९ ॥ वास नगर वनके विषे । मानै डुविध अबुद्ध ॥ आतम दरशीकूं वश
ति । केवल आतम शुद्ध ॥ ६० ॥ आप भावना देहमें । देहंतर गति हेत ॥ आप
बुद्धि जो आपमें । सो विदेहपद देत ॥ ६१ ॥ भवि शिव पद दे आपकूं । आपहि
सनमुख होइ ॥ तातें गुरु है आतमा । अपनो ऑर न कोइ ॥ ६२ ॥ सोवत है
निज भावमें । जागै जे व्यवहार ॥ सूतो आतम भावमें । सदा सरूप अधार
॥ ६३ ॥ अंतर चेतन देखिके । बाहिर देह सभाव ॥ ताको अंतर ज्ञानतें । हो
इ अचल दृढ भाव ॥ ६४ ॥ भासै आतम ज्ञान धुरि । जग उनमत्त समान ॥

आगे दृढ अभ्यासतें। पत्तर तृण अनुमान ॥ ६५ ॥ निन्न देहतें नाविये। त्यूं आपहिमें आप ॥ ज्यूं सुपनहिमें नहि हुए। वेहातम भ्रम ताप ॥ ६६ ॥ पुण्य पाप व्रत अव्रते। मुगति दोउके त्याग ॥ अव्रतपरें व्रत नी तजें। तातें धरि शिवराग ॥ ६७ ॥ परम नाव प्रापति लगे। व्रत धरि अव्रत ठोडि॥ परम नाव रति पापके। व्रत नी इनमें जोडि ॥ ६८ ॥ दहन समे ज्यूं तृण दही। त्यूं व्रत अव्रत ठेदि ॥ क्रियाशक्ति इनमें नहीं। जा गति निश्चय नेद ॥ ६९ ॥ व्रत गुण धारत अव्रती। व्रती ज्ञान गुण होइ ॥ परमातमके ज्ञानतें। परम आतमा होइ ॥ ७० ॥ लिंगदेह आश्रित रहे। नवको कारण देह ॥ तातें नव ठेदे नहीं। लिंग पक्ष रत जेह ॥ ७१ ॥ जाति देह आश्रित रहे। नवको कारण देह ॥ तातें नव ठेदे नहीं। जाति पक्ष रति जेह ॥ ७२ ॥ जाति लिंगके पक्षमें। जिनकूं है दृढ राग॥ मोह जालमें सो परे। न लहे शिव सुख नाग॥ ७३ ॥ लिंग द्रव्य गुण आदरे। निश्चय सुख व्यवहार ॥ बाह्य लिंग हठ नय गती। करे मूढ अविचार ॥ ७४ ॥ नाव लिंग जातें नये। सिद्धा पनरस नेद ॥ तातें आतमकूं नहीं। लिंग न जाति न वेद ॥ ७५ ॥ पंगु दृष्टि ज्यूं अंधमें। दृष्टि नेद नहु देत ॥ आतम दृष्टि शरीरमें। त्यूं न धरे गुण हेत ॥ ७६ ॥ स्वप्न विकलतादिक दशा। भ्रम माने व्यवहार ॥ निश्चय नयमें दोष रूप। विना सदा भ्रम चार ॥ ७७ ॥ तूटे नहि बहिरातमा। जागत नी पठि ग्रंथ ॥ तूटे नवयें अनुनवी। सुपन विकल निगरंथ ॥ ७८ ॥ पढी पार कहे पावनो। मिटयो न मनको चार ॥ ज्यूं कोलूके बैलकूं। परही कोस हजार ॥७९॥ जिहां बुद्धि थिर पुरुषकी। तहँ रुचि तहँ मन लीन ॥ आतममति आतम रुची। कहो कोन आधीन ॥ ८० ॥ सेवत पर परमातमा। लहे नविक तस रूप ॥ वतियां सेवत ज्योतिकूं। होवत ज्योति सरूप ॥ ८१ ॥ आप आपमें स्थित हुए। तरुयें अगनि उद्योत ॥ सेवत आपहि आपकूं। त्यूं परमातम होत ॥ ८२ ॥ एहि परम पद नाविये।वचन अगोचर सार ॥ सहज ज्योति तो पाइयें। फिरि नहि नव अवतार ॥ ८३ ॥ ज्ञानीकूं दुःख कछु नहीं। सहज सिद्ध निर्वाण ॥ सुख प्रकाश अनुनव नये। सबही ठोर कल्याण ॥ ८४ ॥ सुपन दृष्टि सुख नाशतें ज्यूं दुःख न लहे लोक॥ जागर दृष्ट विनष्टमें। त्यूं बुधकूं नहि शोक ॥८५॥ सुख नावित दुःख पायकें। क्षय पावें जग ज्ञान ॥ न रहे सो बहु तापमें। कोमल फूल समान ॥ ८६ ॥ दुःख परितापें न वि गले। दुःख नावित मुनि ज्ञान ॥ वज्र गले नवि दहनमें। कंचनके अनुमान ॥ ८७ ॥ तातें दुःख सूं नाविये। आप श

क्ति अनुसार ॥ तौ दृढतर हुइ उल्लसे । ज्ञान चरण आचार ॥ ८८ ॥ रनमें ल रते सुनट ज्यूं । गिनै न बान प्रहार ॥ प्रभु रंजनके हेत त्यूं । ज्ञानी असुख प्र चार ॥ ८९ ॥ व्यापारी व्यापारमें । सुख करि माने दुःख ॥ क्रिया कष्ट सुखमेंगि णे । त्यूं वंछित मुनि सुख ॥ ९० ॥ क्रिया योग अभ्यास है । फल है ज्ञानअबंध ॥ दोनूंकूं ज्ञानी नजे । एक मतीतें अंध ॥ ९१ ॥ इच्छा शास्त्र समर्थता । त्रिविध यो ग है सार ॥ इच्छा निज शक्ती करी । विकल योग व्यवहार ॥ ९२ ॥ शास्त्र योग गुण गणको । पूरन विधि आचार ॥ पद अतीत अनुनव कह्यो । योग तृतीय वि चार ॥ ९३ ॥ रहे यथा बल योगमें ॥ गहे सकल नय सार ॥ नाव जैनता सो लहे । चहे न मिथ्याचार ॥ ९४ ॥ मारग अनुसारी क्रिया । छेदे सो मतिहीन ॥ कपट क्रिया बल जग ठगे । सो नी नवजल मीन ॥ ९५ ॥ निज निज मतमें ल रि परे । नयवादी बहु रंग ॥ उदासीनता परिणमे । ज्ञानीकूं सरवंग ॥ ९६ ॥ दो उ लरे तिहां इक परे । देखनमें दुःख नाहि ॥ उदासीनता सुख सदन । पर प्रवृ त्ति दुःख ठांहि ॥ ९७ ॥ उदासीनता सुरखता । समता रस फल चाखि ॥ पर पेख नमें मत परे । निजमें गुण निज राखि ॥ ९८ ॥ उदासीनता ज्ञान फल । पर प्रवृत्ति है मोह ॥ शुन जानो सो आदरो । उदित विवेक प्ररोह ॥ ९९ ॥ दोधिक शतकें उद्धर्युं । तंत्र समाधि विचार ॥ धरो एह बुध कंठमें । नाव रतनको हा र ॥ १०० ॥ ज्ञान विमान चारित्र पवि । नंदन सहज समाध ॥ मुनि सुरपति समता संची । रंगे रमे अगाध ॥ १०१ ॥ कवि जश विजये ए रच्यो । दोधिक शतक प्रमाण ॥ एह नाव जो मन धरे । सो पावे कल्याण ॥ १०२ ॥ इति समाधि तंत्र समाप्त.

॥ अथश्री यशोविजयजी उपाध्यायकृत समता शतक प्रारंभः ॥

दोहा ॥ समता गंगा मगनता । उदासीनता जात ॥ चिदानंद जयवंत हो । केवल नानु प्रनात ॥ १ ॥ सकल कलामें सार लय । रहो दूर थिति एह ॥ सकल योगमें नी सकल । लय दे ब्रह्म विदेह ॥ २ ॥ चिदानंद विधुकी कला । अमृत बीजअन पाय ॥ जानि केवल अनुनवी । किनही कही न जाय ॥ ३ ॥ तो नी आ श्रव तापके । उपशम करण निदान । वरणत हुं ताके वचन । अमृत बिंदु अनु मान ॥ ४ ॥ उदासीनता परिनयन । ज्ञान ध्यान रंग रोल ॥ अट अंग मुनि यो गको । एही अमृत निचोल ॥ ५ ॥ अनासंग मति विषयमें । राग द्वेषको छेद ॥

सहज नावमें लीनता । उदासीनता नेद ॥ ६ ॥ ताको कारन अममता । तामें म
न विसराम ॥ करै साधु आनंद घन । होवत आतम राम ॥ ७ ॥ ममता थिर सुख
शाकिनी । निर्ममता सुख मूल ॥ममता शिव प्रतिकूलहै । निरमंमता अनुकूल ॥ ८॥
ममता विष मूर्छित नये । अंतरंग गुण वृंद ॥ जागे नाव निरागता । लगत अमृ
तके विंद ॥ ९ ॥ परिणति विषय विरागता । नव तरु मूल कुठार ॥ ता आगे
क्युं करि रहै । ममता वेलि प्रचार ॥ १० ॥ हहा मोहकी वासना । बुधकूं नी प्र
तिकूल ॥ याकेवलि श्रुत अंधता । अहंकारको मूल ॥ ११ ॥ मोह तिमिर मन
में जगे । याके उदय अठेह ॥ अंधकार परिणाम है । श्रुतके नामें तेह ॥ १२ ॥
करे मूढमति पुरुषकूं । श्रुत नी मद नय रोष ॥ ज्यूं रोगीकूं खीर घृत । सन्निपा
तको पोष ॥ १३ ॥ टाले दाह तृषा हरे । गाले ममता पंक ॥ लहरि नाव वैरा
गकी । ताकूं नजो निशंक ॥ १४ ॥ राग नुजंगम विष हरन । धारो मंत्र विवेक ॥
नव वन मूल उछेदकूं । विलसे याकी टेक ॥ १५ ॥ रवि दूजो तीजो नयन । अं
तर नावि प्रकाश ॥ करो धंध सब परिहरी । एक विवेक अन्यास ॥ १६ ॥ प्रथम
पुष्करावर्त्तके । बरषत हरख विशाल ॥ द्वेष हुतास बुजाइये ॥ चिंता जाल ज टा
ल ॥ १७ ॥ किनके वश नव वासना । होवे वैसा धूत ॥ मुनि नी जिनके वश
नये । हाव नाव अवधूत ॥ १८ ॥ जबलूं नवकी वासना । जगे मोह निदान ॥ तबलूं
रुचे न लोककूं । निर्मम नाव प्रधान ॥ १९॥ विषम ताप नव वासना । त्रिविध दोषको
जोर ॥ प्रगटे याकी प्रबलता । क्वाथ कषाए घोर ॥ २० ॥ तातें दुष्ट कषायके । ठेदे हित
निज चित्त॥धरो एह शुन नावना । सहज नावमें नित्त ॥२१॥ सिद्ध औषधी इक क्षमा॥
ताको करो प्रयोग॥ज्युंमिटि जाए मोह घर । विषम क्रोध ज्वर रोग॥२२॥चेतनकूं कोम
ल ललित । चिदानंदमय देह॥लूक नूक लुर जात हैं । क्रोध लूकतें तेह ॥ २३ ॥ क्षमा
सार चंदन रसें । सींचो नित्त पवित्त॥दया वेल मंडप तले । रहो लहो सुख मित्त ॥२४॥
यातें नासे समनभू । क्षमातहजमें जोर ॥ क्रोध योध क्युं करि करे । सो अप
नो बल सोर ॥ २५ ॥ वेत खेद वर्जित क्षमा । खेद रहित सुख राज ॥ इनमें न
हि संदेहकछु । कारन सरिखो काज ॥ २६ ॥ पर्वत गर्व शिखर चड्यो । गुरुकूं
नी लघु रूप ॥ कहै तिहां अचरज किस्यो । कथन ज्ञान अनुरूप ॥ २७ ॥ आ
ठ शिखर गिरिराजके । ठामें विमला लोक ॥ तो प्रकाश सुख क्युं लहे । विषम
मान वश लोक ॥ २८ ॥ मान महिधर ठेद तूं । कर मृडु ताप विघात ॥ ज्युं
सुख मारग सरलता । होवे नित विख्यात ॥ २९ ॥ मृडुता कोमल कमलथें । व

ज तार अहंकार ॥ भेदत हैं इक पलकमें । अचिरज एह अपार ॥३०॥ विकशित माया वेलि वर । भव अटवीके बीच ॥ सोवत हैं नित मूढ नर । नयन ज्ञानके मीच ॥ ३१ ॥ कोमलता बाहिर धरत । करत वक्र गति चार ॥ माया सापिणि जग डसै । ग्रसै सकल गुण सार ॥ ३२ ॥ ताके नियह करनकूं । करो जु चित विचार ॥ समरो ऋजुता जंगुली । पाठ सिद्ध निरधार ॥ ३३ ॥ लोभ महा तरु शिर चढी । चढी जु तृष्णा वेलि ॥ खेद कुसुम विकशित भइ । फलै दुःख ऋतु मेलि ॥ ३४ ॥ आगर सवही दोषको । गुन धनको बम चोर ॥ व्यसन वेलिको कंद है । लोभ पास चिहुं ओर ॥ ३५ ॥ लोभ मेघ उन्नत भये ॥ पाप पंक बहु होत ॥ धर्म हंस रति नहु लहैं । रहै न ज्ञान उद्योत ॥ ३६ ॥ कोउ सयंभू रमनको ॥ जे नर पावै पार ॥ सोभी लोभ समुद्रको । लहै न मध्य प्रचार ॥ ३७ ॥ मन संतोष अग स्तिकूं । ताके शोष निमित्त ॥ नितु सेवौ जिनि सोकियो । निजजल अंजलि मित्त ॥३८॥ याकी लालच तूं फिरै । चिंतै तूं ममभोल ॥ ता लालच मिटि जात घट । प्रगटै सुख रँग रोल ॥ ३९ ॥ धनमानत गिरि मृत्तिका । फिरत मूढ दुरध्यान ॥ अखय खजाणो ज्ञानको । लखै न सुख निदान ॥४०॥ होत न विजय कषायको । विनु इंद्रिय वश कीन ॥ तातैं इंद्रिय वश करै । साधु सहज गुण लीन ॥ ४१ ॥ आप काज पर सुख हरै । धरै न कोसूं प्रीति ॥ इंद्रिय दुर्जन परिहरै । वहै न धर्म न नीति ॥ ४२ ॥ अथवा दुर्जनयें बुरे । इह परभव दुःखकार ॥ इंद्रिय दुर्जन देतु है । इह भव दुख इकवार ॥ ४३ ॥ नयन फरस जनु तनु लगै । दहै दृष्टि विष साप ॥ तिनसूं भी पापी विषे । सुमरै करै सँताप ॥४४॥ इछाचारी विषयमें । फिरते इंद्रिय ग्राम ॥ वश कोजे पगमें धरी । यंत्र ज्ञान परिणाम ॥४५॥ उन मारग गामी अवश । इंद्रिय चपल तुरंग ॥ खैंची नरग अरण्यमें । लेइ जाय निज संग ॥ ४६ ॥ जे निजीक हैं भ्रमरहित । आपहिमें सुख राज ॥ वाधत हैं ताकू करन । आप अरथके काज ॥ ४७ ॥ अंतरंग रिपु कटक भट । सेनानी व लवंत ॥ इंद्रिय छणमें हरत है । श्रुत वल अतुल अनंत ॥ ४८ ॥ अनियत चं चल करण हय । पद प्रवाह रज पूर ॥ आशा ढादक करतु है । सलदृष्टि वल दूर ॥ ४९ ॥ पंच वाण इंद्रिय करी । काम सुभट जग जीति ॥ सवके शिर पद देतु हैं । गणै न कोउ नीति ॥ ५० ॥ वीर पंच इंद्रिय लही । काम नृपति व लवंत ॥ करै न संख्या पूरणी । सुभट सेणिकी संत ॥ ५१ ॥ दुःख सवहिं सुख विषयको । करम व्याधि प्रतिकार ॥ ताकूं मन्मथ सुख कहै । धूर्त जगत दुख

कार ॥ ५२ ॥ वर्ग कामके सुख गिने । पाइ विषयकी नीख ॥ सहज राज पाव त नही । लगी न सदगुरु सीख ॥ ५३ ॥ अप्रमाद पवि दंमथें । करी मोह चक चूर ॥ ज्ञानी आतम पद लहे । चिदानंद नरपूर ॥ ५४ ॥ जाके राज विचारमें। अबला एक प्रधान ॥ सो चाहत हे ज्ञान जय । कैसे काम अयान ॥ ५५ ॥ और त्रांति मिटि जात हे । प्रगटत ज्ञान उद्योत ॥ ज्ञानीकूं नी विषय भ्रम । दिशा मोह तम होत ॥ ५६ ॥ दाखें आप विलास करि । जूठेकूं नी साच ॥ इं इजाल परें कामिनी । तासूं तूं मत राच ॥ ५७ ॥ हसित फूल पल्लव अधर । कुच फल कठिन विशाल ॥ प्रिया देखि मत राच तूं । या विष वेलि रसाल ॥ ५८ ॥ चरम मढित है कामिनी । नाजन मूत पुरीख ॥ काम कीट आकुल स दा । परिहर सुनि गुरु सीख ॥ ५९ ॥ विषय तजे सो सब तजे । पातक दोष वितान ॥ जलधि तरत नवि क्यूं तरे । तटिनी गंग समान ॥ ६० ॥ चाटे निज लाला मिलित । शुष्क हाड ज्यूं श्वान ॥ तेसें राचे विषयमें । जम निज रुचि अ नुमान ॥ ६१ ॥ नूखन बहुत बनावतें । चंदन चरचत देह ॥ वंचत आपहि आ पकूं । जड धरि पुद्गल नेह ॥ ६२ ॥ दूर दमनके जय किये । इंद्रिय जन सुख हो त ॥ तातें मनजय करनकूं । करो विचार उद्योत ॥ ६३ ॥ विषय ग्रामकी सीममें । इच्छा चारि चरंत ॥ जिन आणा अंकुश करी । मन गज वश करो संत ॥ ६४ ॥ एक नाव मन पवनको । कूव कहे ग्रंथकार ॥ यातें पवनहितें अधिक । होत चित्तको चा र ॥ ६५ ॥ जामें गर्व ताहिमें । विरचे करि चित चार ॥ इष्ट अनिष्ट न विषयको । यूं निभय निरधार ॥ ६६ ॥ केवल तामें करमको । राग द्वेषतें बंध ॥ परमें निज अ निमान धरि ॥ कहा फिरत हो अंध ॥ ६७ ॥ जेसें ललना ललितमें । नाव धरलु हे सार ॥ तेसें मैत्री प्रमुखमें । चित धरि करि सुविचार ॥ ६८ ॥ बाहिर बहुर कहा फिरे । आपहिमें हित देखि ॥ मृग तृष्णा सम विषयको । सुख सब जानि उवेखि ॥ ६९ ॥ दिव अदिव व्यवहार निज । रुचि रस साची नाहि ॥ अंगज बल्लन सुत नयो । फूका दिक नहि काहि ॥ ७० ॥ लोचन सुख नृप रंककूं । नोबत सुनत समान ॥ इक नो नें इक नाहिसो । बढयो चित्त अनिमान ॥ ७१ ॥ नवको सुख संकल्प नय । कत्रि म लिलो कपूर ॥ रंजत हे जन मुग्धकूं । वर्जित ज्ञान अंकूर ॥ ७२ ॥ गुन ममता सब वस्तुको । सो पालना निमित्त ॥ माने सुनमें सुत अधिक ॥ दोरत हे हित चित्त ॥७३॥ न रहत ममता कूंउ हे । नहो वस्तु परजाय ॥ नहि तो वस्तु विकायथें । क्यूं ममता मिटि जाय ॥ ७४ ॥ जन जनकी रुचि भिन्न हे । नोजन कूर कपूर ॥

भोगवंतकूं जो रुचै। करन करै सो दूर ॥ ७५ ॥ करन हसै नृपभोगकूं। हसै कर नकूं नूप ॥ उदासीनता विनु नही। दोनूंकूं रति रूप ॥ ७६ ॥ परमें राचै पर रुचि। निज रुचि निज गुणमांहि ॥ खेलै प्रभु आनंदघन। धरि समता गलि वांहि ॥ ७७ ॥ माया मय जगको कह्यो। जहां सवहि विस्तार ॥ ज्ञानीकूं होवत कहां। तहां शोक को चार ॥ ७८ ॥ शोचत नाहि अनित्य मति। होवत माल मलान ॥ नांडे नी शोचत नगै। धरत नित्य अनिमान ॥ ७९ ॥ कूट वासना मढितहै। आशा तंतु वितान ॥ ठेदि ताकूं शुन मती। कर धरि वोध कृपान ॥ ८० ॥ जननी मोह अंधारकी। माया रजनी कूर ॥ ज्ञान नानु आलोकतें। ताकों कीजै दूर ॥ ८१ ॥ उदासीनता मगनहुइ। अध्यातम रस कूप ॥ देखै नहि कछु और जव। तव देखे निज रूप ॥ ८२ ॥ आगे करी निसंगता। समता सेवत जेहु ॥ रमै परम आनंद रस। सत्य योगमें तेहु ॥ ८३ ॥ दंनहि जनित असंगता। इह नवके सुख देत ॥ दंन रहीत निसंगतें। कौन दूर सुख देत ॥ ८४ ॥ मतहो संग निवृत्तकूं। प्रेम परम गतिपाइ ॥ ताको समता रंग पुनि कीनही कह्यो न जाइ ॥ ८५ तिसना विद्रुम वल्लि घन। विपय घुमर वहु जोर ॥ नीम नयंकर खेद जल। नव सायर चिहुं ओर ॥ ८६ ॥ चाहै ताको पार तो। सज कर समता नाव ॥ शील अंग दृढ पाटिए। सहस अढार वनाव ॥ ८७ ॥ कूआ थंन शुन योग परि। वैठे मालिम ज्ञान ॥ अध्यातम सढ वलें चलै। संयम पवन प्रमान ॥ ८८ ॥ योगी जवहुं तप करै। खाइ जुरै तरु पात ॥ उदासीनता विनु न सम। हुतिमें सोनी जात ॥ ८९ ॥ तूटै नवके जालथें। जेनहो तप करि लोक ॥ सो नी मोहै काहुकूं। देत जनमकोशोक ॥ ९० ॥ विपय उपद्रव सव मिटयो। होवत सुख संतोप ॥ तातें विपयातीत है। देत शांत रस पोख ॥ ९१ ॥ विनु लालच वश होत है। वस्ता वात यह साच ॥ यातें करै निरीहके। आगे सम रति नाच ॥ ९२ ॥ हे परिमल समता लता। वचन अगोचर सार ॥ नित्य विहरि नी जिहां वसै। लह तु प्रेम महकार ॥ ९३ ॥ सेना रावस मोहकी। जीपै सुखें प्रवुद्ध ॥ ब्रह्म वानि कलेइके। समता अंतर शुद्ध ॥ ९४ ॥ कविमुख कल्पित अमृतके। रसमें मूढत कांहि ॥ नजो एक समता सुधा। रति धरि शिवपदमांहि ॥ ९५ ॥ योग ग्रंथ ज लनिधि मथो। मनकरि मेरु मथान ॥ समता अमृत पाइके। हो अनुनव रस जान ॥ ९६ ॥ उदासीन मति पुरुष जो। समता निधि शुन वेप ॥ नोरत ताकूं क्रोध किधु। आपे कर्म असेप ॥ ९७ ॥ शुद्ध योग श्रद्धान धरि। नित्य करम को त्याग ॥ प्रथम करै जो मूढसो। उनय नृष्ट निरलाग ॥ ९८ ॥ क्रिया मूट

कूछी क्रिया । करे नथापे ज्ञान । क्रिया भ्रष्ट इक ज्ञान मति ॥ छेदे क्रिया अपान ॥ ९९ ॥ ते दोनूंथें दूरि शिव । जे निज बल अनुसार ॥ मारग रुचि मारग गहे । सो शिव साधन हार ॥ १०० ॥ निवृत्ति ललनाकूं सहज । अचिरजकारी कोइ ॥ जो नहि याकूं रुचत है । याकूं देखे सोउ ॥ १०१ ॥ मन पारद मूर्छित नयो । सम ता औषधि आइ ॥ सहज वेध रस परम गुन । सो वन सिद्धि कमाइ ॥ १०२ ॥ वहु त ग्रंथ नय देखिके । महा पुरुपकृत सार ॥ विजय सिंह सूरी किउ । समता शतको हार ॥ १०३ ॥ जावत जाकूं तत्व मन । हो समतारसलीन ॥ ज्यूं प्रगटे तुज सहज॥ सुख । अनुनवगम्य अहीन ॥ १०४ ॥ कवि यशविजय सुं सीखए । आप आपकूंदेत साम्यशतकउद्धारकरि । हेमविजयमुनिहेत ॥ १०५ ॥ इतिश्री समता शतक समाप्तः

॥ अथ श्री दिगपट चोराशी बोल प्रारंभः ॥

॥छप्पयछंद. सुगुण ज्ञान शुज ध्यान, दान विधि धर्म प्रकाशक; सुपटमान पर मान, आन जस सुगति अन्यासक; कुमत वृंद तमकंद, चंद परि दंद निकासक; रु चि अमंद मकरंद, संत आनंद विकासक; जस वचन रुचिर गंनीर नय, दिगपट क पट कुठार सम; जिन वर्द्धमान सो वंदियें, विमल ज्योति पूरन परम.॥१॥ कवित्त इ कतीसा. सागरके आगे कहा गागरी धरेगी गर्व, खर्व कहा वेसरूके आगे अर्व इंदको; नाक वृठ आगे कहा आकको अंकूर ठाजे, सूर तेज आगे कहा राजे धा म चंदको; कामधेनु आगे कहा कूकरी करेगी मान, नृपतिके आगे कहा जोरहै पुलिंदको; ऐसे सरवंग शुद्ध ग्रंथ जो सितंवरको, ताके आगे कौन दर्प दुर्मतीके वृंदको २ दोहरा. पहिलुं दिग्पटसुं सुनें, बोल चुरासी फेर, सवे विसंवादे नयो, अवतो वहुत अंधेर. ३ निन्हव थें अधिको वुरो, कह्यो मिथ्याति सो इ; परिहरना अधिकार यह, आवश्यकमें जोइ. ४. खट शत नव वरखे नयो, तस मत जन्म मृग पास; सहस मल्ल दीक्षा लइ, आर्य कृष्ण गुरुपास. ५ राजमा न्य तिणे अन्यदा, विहखो कंवल रत्न; मूर्छासेंती संग्रह्यो, कियो न संवर यत्न. ६ गुरुने कीने पूछनें, टले सुं मूर्छा दोप; आइ देखि मनमें धख्यो, तिनि तार्थे बहु रो प. ७ थविरकल्प खंमन कियो, वरन्यो जव जिन कल्प; नगन पंथ तिण आ दखो, त्यजि सदगुरुके जल्प. ८ तस नगनी देखी नगन, वेसें दीनो वेस; चरन निषेधें नारिकूं, तव सो सुरि निरदेश. ९. जैन कहावें नामथें, तार्थे वध्यो अंकू

र; तनु मल ज्युं फुनि संतनें, कियो दूरियें दूर. १० नसमक ग्रह रज नसममय, तायें वेसर रूप; उवे नाम अध्यातमी, नरम जाल अंध कूप. ११ कवित्त इकतीसा. जोगके जीखारी अधिकारी नही ग्रंथनके, आपकी पयारीमें चलावे निंदा पारकी; खो जें जाति न्यारी न्यारी किरियाकूं दूरि मारी, कहे कोउ सीख तारी देवै गारी नारकी; फूठे मत नामधारी जोगकी खुमारीमें जो, लवें युक्ति जारी सोतो, कूटै जीति गा रकी; ऐसे हे जुआरी अब मूढनके पट्टधारी, आरी आरी जाने वात लात जैसी टारकी १२ दोहरा पल्लवग्राही लोककूं, समुजावे कुन जान; कोमल करतुनवनवटा, ज्युं मुगसेल पखान. १३ दृष्टिराग मदमत्तकूं, जो देवै उव एस; सो कूकर मुखमें ठवै; आप कपूर अशेस. १४ शुष्क पयोधर नारि ज्यूं, निंदे कंचुककार; गूढ हेतु बुद्ध गम्य त्यूं, निंदे ग्रंथगिमार. १५ ऐसे जडसूं संतकूं, घटे न वाद विचार; तो जी परके बोधकूं, कहियें बोल उचार. १६ साचेकूं फूठा कहे, फूठेकूं कहे साच; अभिनिवेश उनमत्तको, ऐसो वहु विधि नाच. १७ कवित्तइकतीसा टूटे अंतराय पंच रंचही न राग रोश, हास ठक्क काम कीनो अंचही न देखि ई; वंचना अज्ञानकी मिथ्यातको प्रपंच निंद, आश्रवको संच सो तो, मूलथें विलेखिई; एसें जो अगर दोष घाति कर्म जाव पोष ताको परिशोष याके ज्ञानमें वि शेखिई सोई शुद्ध नाम कोष थोपतें अनंत तोष, मोष मग्ग दाता त्राता देव देव ले खिई १८ छप्पयछंद॥ क्षुधा तृषा जय शोग, रोग जर मरण जनम मद; मोह खेद परसेद, निंद विषमय चिंता गद; रति विषाद ए दोष, कहे अष्टादश दिक पट; सो लीक तिनमांहि, नही गुण दूषण उदजट; जो जाव अघाती दोष हुइ, तो जिनकू नर गति प्रमुख, दूखन अनंत विलगे रहे, शिव पद दूषक सुनि विमुख. १९ चौपइ॥ सतधा तु वर्जित जिन काया, परमौ दारिक कहे सु माया; जिदा नही वैक्री परि ताकी; सं घयणादिक खंध विपाकी. २० परमौदारिक जो जिनवरकूं; तो मध्यौदारिक ग णधरकू; कहे कहा नहि कल्पन कारी; क्यूं औरनि सरखे गणधारी. २१ स तहु धातु गले जिनवरके; केते धातु गले गनधरके; सत धातु जिण नाणें जावें; मन नाणें मुनि कहो कहाँ पावें. २२ जिन तनु थिति नो कर्माहा रें; कहे मूढ तेफूठ विचारें; औदारिक थिति कवलाहारें; दृष्टि हानि होइअन्य प्र कारें. २३ दोहरा॥ कहे केवली कर्मकूं, दग्ध रज्जु सम मूढ; आगममति जा नै नही, जोआउ नाम दृढ रूढ २४ तत्वारथ परिखह कहे, जिनकौ प्रगटइग्यार; ताको अरथ मरोरतें, क्यूं पामें जव पार. २५ सूत्रनमें परिखह कहे, वृत्तौ

लिख्यो नकार; जो संसो उपजत नही, तो तुज भ्रमको नार. २६ जिनकूं इं द्रिय विरहयें, तनु गत नहि सुख दुःख; कहे जु जीव विपाक तसु, उदो फले कुण रुख. २७ खाइक सुख जिनकूं कहे, केवल ज्ञान सरूप; वेदनीयके खय ग ये, कुन गुन कहो पशु रूप. २८ उदय नाव खाइक गन्यो, जिनकूं प्रवचनसार; अ र्क तूल परें तो फिरे, क्रियारहित निरधार. २९ बठें उठें आसने, देवे प्रेरित देव ऐसो ई क्यूं कल्पना, छांडि न मिथ्या टेव. ३० केवलनाणे जो खगति, मननाणे कछु होइ; करम विफल जो मोह विनु, यश कीरति क्यूं जोइ. ३१ अतिशय रूप अनावको, कहे सुगुरु कुल हीन; नाव अघाती क्यूं मिटे, घातीगए जो खीन. ३२ कवित्त इकतीसा. केवली आहार करे जागे अग्नि अंतरकी,वेदनी अहार शक्ति ताकी नाही हीनता; हेतुके समाजतें घटे ज्युं काज साज शुद्ध, लाजे तहां आज लुंक हानी कहा दीनता; अन्यथा न अष्ट वर्ष, बाल केवली विशाल; पूर्व कोटि आउ पाल ताकूं वृद्धि खीनता; वृद्धि पोखदाइ नाइ वर्गणा कहांसु पाइ, ज्ञानयें जु आइ तामें मुक्तिकी प्रवीणता. ३३ दोहरा. दिक पट जिन बोलें नही, शि रथे उठे नाद; किरिया विनु घट ध्वनि परे, तामें कौन सवाद. ३४ कहे शिला का पुरुषकूं, नही कबहु नीहार; तपति लब्धि सबकूं नही, एहु अदृष्ट प्रकार. ३५ खल पुद्गल तिनकूं जले, रस पुद्गल जलि जाइ; दोउ जले तो उदरमें, भस्म क व्याधि उपाइ. ३६ तेनरु कंक गहनि कहे, उर कपोत परिनाम; ए आगमके वचनमें, क्यूं न करो विसराम. ३७ कहे साधु अप्रमत्तकूं, नही अहार विहार; स्वामी सिद्ध शिला नइ, जिहां न साधु प्रचार. ३८ बाहिर मानुष सेलके, गइहो ई व्रत भंग; यूं कहते चारण विना, क्यूं जलमें शिव संग. ३९ सोरठा. दो इ घटीके फेर, केवल माने भरतकूं; बडो मोहको घेर, भाव प्रधान गने नही. ४० हरिगीत छंद. चारहुं निखेपे एक द्रव्यें, कहे श्रीजिन आगमें; ज्युं नाम व ट संठाण थापन, द्रव्य मृदगुन भावमें; यूं जीव द्रव्यह केवलादिक, गुनह द्रव्यत भावतें; दुइ नियम पुद्गल द्रव्यको, तो भंत नहि व्यभिचारतें. ४१ जो समय सारे ग्रंथ धारे, सुगति लिंग न वेदतें; निश्चय प्रमाने व्यवहरइ तें, वस्तु गुन गुनि भेदतें; अधिगम विना सम्यक माने, द्रव्य विनु चारित नही; चारित विना कहे समकित, शिव हुवे मति जो यही. ४२ सुर कोइ शिर परि वस्त्र डारे, भाव केवल तो पटी; जो द्रव्य विनु केवल नही, तो केवला वरणं पटी; जो नग्न लिंग प्रमान कीजे, भेद पनरहु तो घटे; सिद्धंति नाखे सिद्धके नर, तासु निंदक नव

अटे. ४३ थी लिंग सिद्ध कहै न कुमतें, तास चरणं निवारए; जो संघ प्रवचन सारि चोविह, पढयो सो न विचारए; चोनेथ्य जोलिं अज्जिका करि, पंच होवें अज्जकें; यूं संघ लोपै समय कोपै, डुर्मती न वधी सके. ४४ कवित्त इकतीसाः– पुण्यके कचोल रंग रोलके निचोल सोल, शीलथें अमोल याकी जातिमें महासती; यामें जग तातनकी मात अवदात गात, नमै जाकूं इंद जाति नित्तही महीपती; दानके स्वनाव साचे, तपके प्रनाव जाचै, नहीं नावकाचै नाचै माचै साधु संगती; धर्म अवलंबिनी जो दोषकी विलंबिनी नितंबिनी है ऐसी ताकूं क्यूं न पंचमी गतीः–४ ५दोहराः–मल्ली सो कुमरी कही, मल्ल सु कुमर कहाइ; पुरुष स्वरूपें देखिये, पुरुष स्वरूप न माइ. ४६ तित्थंकर थी वेदको, क्यूं एकनको बंध; गुन थानक आकर्ष थी, एहु हमारी संध. ४७ तित्थ प्रणाम प्रदक्षिणा, थानकी वरखि कहान; परहित करनी पुण्य फल, कपिल नृत्यको तान. ४८ दोहु कुमर जिनजी कहै, पंच कुमर कुल हेत; प्रिया पंचकी डौपदी, मानै नहि कुल केत. ४९ एकै घरि कन्नोजिमें, अगवीस गुनमूल; अंतराय कलपित कहै, ते सवही निरमूल. ५० कस्तुरी अपवित्त कहै, वाद्य वजावै कांहि; कहु कुंकुम कर्पूरकी, गति आवै मनमांहि. ५१ प्रतिमा नगन न सोहियें, पट नूतन पहिराइ; स्नात्र विलेपन धूप मुख, नगति हि हेतु कराइ. ५२ शिष्य करै ज्यूं जिन करै, तौ क्यूं दिखत शीश; क्यूं बोलत केवल विना, न विराधौ जगदीश. ५३ नगन दशा जिनवर धरै, नगन दिखावे नांहि; अंवर हरि खंधे धरै, उचित जानि मनमांहि. ५४ अरिल्लछंदः– गौतम स्वामीगए, खँदककूं; मानै नहि मुनि जाइ, सुलसमुख जैनकूं; धर्मके कारन कूं अपवाद न मानही; ऐसिहि जांतिसुं होवत वीजाथानही. ५५ दोहरा. कोरें कहैं जु थापना, प्रतिमा क्यूं न पखान; सन्नावा सन्नावतें, ताको द्विविध वखान. ५६ जिन विरहैं जिन विंबकी, ज्यूं थापना प्रमान; गुरुविरहैं गुरुथापना, तैसे करै सुजान. ५७ तैसी नमति न विमल गिरि, जैसी गड गिरनार; तीरथ क्रम जानै नही, को तस वोधन हार. ५८ शुन उपयोगी साधुकूं, शिष्य दिख उवएश; ध्यान शुद्ध उपयोगमें, नहि अपवाद अशेश. ५९ काय खेद जो धर्ममें, सो ग्रहि धर्म प्रकार; ताकूं करत यती नही, नाखे प्रवचनसार. ६० तापरि हम यूं कहतु हैं, कह अपवादी साध; पंचम गुन थानक नजें, कै अधिकार हि वाध. ६१ प्रथम पक्ष अविरति नही, तौ व्रतको नहि नंग; डुतिय पक्ष जो पाप है, तौ गृहिकूं क्यूं रंग ६२ हिंसा दोष सरूप जो, तोनूंपक मत रङ्ग;

विहारी. ९७ प्रात समय प्रभुजी नृपु कहइं; समवसरन बैठे गुन अहइं; पूरव नव कहि अश्व प्रबोध्यो; तहां ओरको चित्त न सोध्यो. ९८ प्रभुपाशें अनशन ले वाजी; नयो देव सहसार समाजी; सुवरनकी प्रतिमा तिन कीनी; अश्वमूर्त्ति सेवक करि दीनी. ९९ नाम अश्व अवबोध कहायो; तेहु तीर्थ जगमांहि गवायो; शत्रुंजय माहातममांही; भाव सुनो ए भव्य बहांही. १०० कुन गनधर इहां योरो भाख्यो; फूगो आज सुगधने दाख्यो; आंखिकु ओखध काने वाहे; ताको कुन गहि बांह निवाहे? १०१ सवैया तेइसाः– जंगम तित्थ तुरंगम संगम, रंगम हानि धिकारन जानी; ताकें प्रयोजन योजन साठि निशाहिमें आय जु निर्मल ज्ञानी; अश्वमही नृपु कश्च सुलक्षन, पावन कीनि सुधाखरिवानी; ताके नमो मुनिसुव्रतके पद संपद कारन तारन प्रानी. १०२ दोहराः– महामंत्र नव पद कहे, कहे पंच पद आन; गोमुखसारादिक धुरे, नव पद लिखे प्रमान. १०३ ज्यूं चूला विनु श्रुत नही, त्यूं न मुंड नवकार; जो संखेपहि आदरो, जपहु एक ॐकार. १०४ श्रुत सबही में पंच पद, नव पद श्रुत महमंत; शुद्ध परंपर बुध लहे, ए जिन शासन तंत. १०५ चूला वर्ण बतीशकी, कहे सु सबहि अजान; अडसठ अक्षर कवचमें, कहे जु मंत्र प्रमान. १०६ नव अक्षर पदयें नही, तहां छंदको भंग; ऐसे बहु पद देखिइ, आगममांहि सुचंग. १०७ देव देव नर देव सब, अर्द्ध मागधी वाणि; भाखे सत्यारथ वचन, पंचम अंगें जाणि. १०८ ओर कहे जिन भाखही, सर्व मागधी वाणि; तामें साखी कोन थो, कहा जान कह हाणि? १०९ दंत रहित जिन मानतें, याको नहि कछु लाज; सो माने नहि दाढ तस, पूजे जे सुरराज; ११० कहे ज्यु तंत्र समाधितें, जाति लिंग नहि हेत; चंडालादिक जातिकों, क्यूं नहि मुकति संकेत; १११ गुणथानक प्रत्यय मिटे, नीच गोत्रकी लाज; दर्शन ज्ञान चरित्तको, सबहूं तुल्य समाज; ११२ कोन जाति अधिकारिणी, नहि-तो कहो प्रमान; ब्रह्म जाति ब्रह्मणवदे, क्षत्रिय क्षत्रिय मान; ११३ त्राण नह। कुल जाति कछु, विद्याचरण विहीन; सूगडांगको वचन यह, क्यूं न करो मन लीन? ११४ करमभाव प्रभुको रह्यो, नीच गोत्र अवशेष; तायें द्विज घरि अवतरे, तहां करे जन्म देव. ११५ दोष नही हो तातकों, क्षेत्र बीजके व्याप; शील भंग नहि मातकूं, गर्भ न वीर्य कदाप. ११६ अन्न खाय परिनाम है; पय तृणको परिनाम; द्रव्य भिन्न पे भिन्न गुन, गर्भ न वीरय नाम. ११७ करम भाव प्रभुकूं कह्यो, जो धारे तुम्ह लाज; सदा लिङ तो मानिलो, कहा जनमको काज. ११८ कल्या

नक दो घरि किये, कल्यानक षट होत; सो दूषन हमकूं नही; तहँ दिन गणित उद्योत. ११९ सुरकृत कल्यानक नही, कृष्न राज अभिषेक; वीर गर्भ अपहार में, त्यूं न कल्यानक टेक. १२० नेगमेषिकी शकति है, रोम कूपमें गर्भ; तं क्रम करतहि अपहरै, सो नहि मानत अर्भ. १२१ कहै बाहुबल केवली, नम्यो कृष्नके पाय; वेगो देइ प्रदक्षिणा, कहा न फूल बनाय. १२२ अप्रमत्तता है जहां, तहां न बंधन भाव; उचित प्रवृत्ति न टारही, तो भी जिन सद्भाव. १२३ छींक न मानै वीरकूं, कर्म वेद्यको भाव; फरसनकूं दरसन कहै, सो तो कु टिल स्वभाव. १२४ हरि हरिनी हरि वर्षके, युगल हरै सुर कोइ; मथुरा नगरी राज्य दिइ; करै देह लघु सोइ. १२५ दिव्य शक्ति तबथैं भयो, हरिको वंश वि शाल; ऐसो अचरय भाव ए, होत अनंतहि काल. १२६ काल अनंत अनंत थें, युगल युगल अपहारि; शून्य होत हरि खेत यूं, दूषन कहै विचारि. १२७ तहां कहै सिद्धांत हम, जैसो युग अपहार; तैसो पूरन ताहिको, काल बहू निर धार. १२८ एक रूप अचरय नही, सदा कहै दश संख्य; काल अनंत अनंत थें, होत असंख्य असंख्य १२९ कहै चमरकी गति नही, शक्र लगैं निरधार; ताकूं कोप कृतांतको, भगवइ अंग विचार. १३० देशअनारयमें नही, वीर विहा र अशुद्ध; मनुदिशि देव न भोगवै, कहै सु वचन विरुद्ध. १३१ सुदि वैशाख दशमि दिने, वीर उपन्नो ज्ञान; श्रावन सुदि पडवा दिने; आपुन कियो वखा न. १३२ छासठ दिन मौनी रहै, भाखै एम अजान; एकहु सभा अभावितां, हम हैं वचन प्रमान. १३३ मौन अभावित जानिके, मानहु अधिक छमास; ए क सभा तैसी कहत. क्यूं लागत तुम पास. १३४ ठवें देव जिन विचरितै; पा न कमल पग हेठि; कहै भूमि परि गगनमें, ते देवनकी वेठि. १३५ पाउ धरै जहँ धरनि परि, तहां कमलको काज; कमल गगन ऊपरि चलै, कहा बन्यो ए ताज. १३६ सोल सुपन जिनमातकूं, सोल कहै सुर लोक; इइ मिलत सत मानही, ते सवही मत फोक. १३७ वदले अतिशय तीस चउ, कहै छु गुरु कुल रीति; तो अदरय आहार विधि, दाखत पावै भीति. १३८ भुगति रहित जिनवर कहा, वज्रि छीकत कुन हेत; चरम नीर घृत कुतपको, कौन दोष कहु ले त. १३९ मरुदेवी थी नाभिको; युगल धर्म नहि दोष; दशायु सनमुख धर्म की, करै धर्मको पोष. १४० सुर नर विहित विवाहको, जबलूं नहि व्यवहार प्रभुकूं भी तबलूं नही, युग्म धर्म अधिकार. १४१ कवित्त इकतीसाः— साधुकूं

कुपात्र कोउ कहे पात्रधारी नांहि, गात्रसो पढयो है कोपें गात्रकूं न मानही; पाउधारी नाहि लब्धि पात्र और पात्रधारी, एह रीति नीति ज्ञाता सूत्रथें प्रमान ही; ग्लानकूं आहार दान पात्र विनु कैसे होत, गृही पात्र भुंजें तो ग्रहस्थ नाव गानही; पाहुनेकी नक्ति युक्ति पात्रहीथै करे साधु, पिंडकी संशक्ति पात्र विना कैसे जानही. १४२ सवैया तेइसाः—शौचके कारन राखे कमंमलु, पात्रकुँ छोरि कहा गुन पायो; वीठिसि पींठि धरी त्यजि उवेकुं, औरसु मूढने वेष वनायो; तसलॅब्धी लग जोहि कमंडलु, पात्रलॅब्धी लगि पात्रसुहायो; जैनको भूषन जैनको वेष है, और धरे कह हाथमेँ आयो. १४३ दोहरा.—वाल अग्र पुग्गल धरे, मुखि नापत हो कोप; धरो कमंमल पिछिका, कहा करी करलोप. १४४ उपधि सहित नहु शुद्ध हैं, ज्यूं तंदुल तुपवंत; एकु पक्ष मन शुद्धता, कहे नाव नगवंत, १४५ कहे कोउ पचखानको, उपकरनें व्है नंग; देहा ऽहारादिकविपे, तास न उचित प्रसंग. १४६ रौद्रध्यान मूर्छा प्रमुख, सव सरिखे तहँ दोप; यतनासूं निर्दोपता, ए सुवचन सत कोप. १४७ द्रव्यादिक चोजंगसूं, धरे न मूर्छा साधु; ए चोविह पचखानको, एकहु अर्थ अगाधु. १४८ शुद्ध योग अपवादथें, कह उपकरन सु मंद; उपचरि ताऽनुपचरितमें, साधनतासममंद. १४९ मूर्छा वाह्य प्रवृत्तिमें, जो तुम कहो कुप रुक; नोजन त्यजि अनसनजजो, ऐसे होत जु दरुक. १५० ध्यानदीपको तेलजो, नोजन करी प्रमान; तो निवात पद उपकरन, मानो क्यूं न अजान. १५१ कवित्त इकतीसाः— पापके थोंढया महा मोहमें पोढया ठैया, दैया देया करे देखि साधुके वसनकूं; छिद्रके कढया निंदाचर्मके मढैया माया मानके दढैया लागे लोकसे हसनकूं; अंगके पढया गुण श्रेणिके चढया शुद्ध शीलके दढैया कहे धर्म उलसनकूं; कूवके लढैया सत्य थंनके गढैया नैया वस्त्र पात्र लेत साचे काया जी कसनकूं. १५२ दोहराः— शीत त्राण कलके धरे, कंवल वर्षा त्राण; मुख वस्त्रें ते राखियें, जे संपातिम प्राण. १५३ सवसज्जनमें राखियें, चोल पट्टथें लाज उचित धर्म आचारमें, नीलजकूं नहि लाज १५४ आठ नेद जिनकल्पके, एक कहे सो मूढ; नगन दिखावे सो त्यजे, वस्त्र नाहि ए गूढ १५५ और सिद्धांत व ज्जिन्न हे, इसो कुमतको नाच; पै संवाद विनाकहा, पावो प्रकरन साच १५६ अव सिद्धांत जु तुम कहे, पाव दिखावो तास; जव प्रकरन तुम गुरु किये, तब जो हु ते प्रगारा. १५७ हेमराज पाण्डे किये, वोल चुरासी फेर; या विधि हम जापा व घन, ताको मत क्रिय जेर १५८ है दिकपटके वचनमें, और दोप शत सास; के

तेकाळे मारिये, मुंजत दधि चर माख. १५९ पंमित ताचो सदहे, मूरख मिथ्या वंग; कहते सो आचार है, जन न त्यजे निज ढंग. १६० सत्य वचन जो सदहे, गहे साधुको संग; वाचक जस कहे सो लहे. मंगल रंग अनंग १६१ इति श्री यशो विजयजीउपाध्यायकृत दिक्पट चोराशी बोल समाप्तः

॥ श्रीचिंतामणिपार्श्वनाथ जिनस्तोत्रं लिख्यते ॥

किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चंद्ररोचिर्मयं किं लावण्यमयं महामणिमयं कारुण्य केलीमयं ॥ विश्वानंदमयं महोदयमयं शोभामयं चिन्मयं शुक्लध्यानमयं वपुर्जिनप तेर्भूयाद्भवालंबनं ॥ १ ॥ पाताले कलयन् धरां धवलयन्नाकाशमापूरयन् दिक्चक्रं क्रमयन् सुरासुरनरश्रेणीं च विस्मापयन् ॥ ब्रह्मांडं सुखयन् जलानि जलधेः फेनच्छलाल्लो लयन् श्रीचिंतामणिपार्श्वसंभवयशोहंसश्चिरं राजते ॥ २ ॥ पुण्यानां विपणिस्तमोदिन मणिः कामेभकुंभसृणि मोंक्षे निःसरणिःसुरेंद्रकरणिर्ज्योतिःप्रभातारणिः॥दाने देवम णिर्नतोत्तमजनश्रेणीरुपासारणिर्विश्वानंदसुधाधृणिर्भवभिदे श्रीपार्श्वचिंतामणिः ॥३ श्रीचिंतामणिपार्श्वविश्वजनतासंजीवनं त्वं मया दृष्टस्तात ततः श्रियः समभवन्नाशक्र माचक्रिणः॥ मुक्तिः क्रीमति हस्तयोर्बहुविधं सिद्धं मनोवांछितं दुर्दैवं दुरितं च दुर्दिन भयं कष्टं प्रणष्टं मम ॥ ४॥ यस्य प्रौढतमप्रतापतपनः प्रोद्दामधामा जगज्जंघालः कलि कालकेलिदलनो मोहांधविध्वंसकः ॥ नित्योद्योतपरं समस्तकमलाकेलीगृहं राजते स श्रीपार्श्वजिनो जने हितकृतो चिंतामणिः पातु मां ॥५॥ विश्वव्यापि तमो हिनस्ति तर णिर्बालोपि कल्पांकुरो दारिद्राणि गजावलिं हरिशिशुः काष्ठानि वन्हेः कणः॥ पीयूषस्य लवोपि रोगनिवहं यद्वत्तथा ते विभो मूर्त्तिः स्फूर्तिमती सती त्रिजगतीकष्टानि हर्त्तुं क्षमा ॥ ६ ॥ श्रीचिंतामणिमंत्रमोंकृतियुतं ह्रींकारसाराश्रितं श्रीमर्हं नमिऊणपासक लितं त्रैलोक्यवश्यावहं ॥ द्वेधाभूतविषापहं विषहरश्रेयःप्रभावास्पदं सोल्लासं वसुहां कितं जिनफुलिंगानंदनं देहिनं ॥७॥ ह्रींश्रींकारवरं नमोक्षरपरं ध्यायंति ये योगिनो हृत्पद्मे विनिवेश्यपार्श्वमधिपं चिंतामणीसंज्ञकं॥भाले वामभुजे च नाभिकरयोर्भूयो भुजे दक्षिणे पश्चादष्टदलेषु ते शिवपदं द्वित्रैर्भवैर्यांत्यहो॥८॥नो रोगा नैव शोका न कलहक लना नारिमारीप्रचाराः नैवांध्यं नासमाधि र्नच दुरदुरिते दुष्टदारिद्रता नो ॥ नो शाकि न्योग्रहा नोन हरिकरिगणव्यालवेतालजाला जायंते पार्श्वचिंतामणिनतिवशतःप्राणि नांभक्तिभाजां॥९॥गीर्वाणद्रुमधेनुकुंभमणयः स्वस्यांगणेरंगीणो॥ देवादानवमानवाःस

विनयःतस्मैहितं ध्यायिनः ॥ लक्ष्मीस्तस्य वशा वशेव गुणिनां ब्रह्मांडसंस्थायिनीश्रीचिं तामणिपार्श्वनाथमनिशं संस्तौति यो ध्यायति ॥ १०॥ इतिजिनपतिपार्श्वःपार्श्वपार्श्वा ख्यपक्षः प्रदलितदुरितौघःप्रीणितः प्राणिसंघः ॥ त्रिभुवनजनवांछादानचिंतामणीकः शिवपदतरुबीजं बोधबीजं ददातु ॥ ११ ॥ इतिश्रीचिंतामणिपार्श्वनाथजिनस्तोत्रंसं०

॥ श्रीमत्सद्गुरुभ्योनमः ॥ श्रियः संततेः कारकं श्रीजिनेशं महामोहभूध्वायनाशे दि नेशं ॥ नतं नाकिनिर्नाकिनिर्जीवनाथं स्तुवे देवचिंतामणिं पार्श्वनाथं ॥ १ ॥ महा नागपार्शोद्विवैश्वानराहि प्रवातांबुधीरोगसंदानदाहं ॥ जितानेकपक्षं त्रिविश्वैकनाथं स्तुवे देव०॥ २ ॥ क्ष्मापार्श्वसेनस्य वंशेऽवतंसं हतक्रोधशत्रुं च लक्ष्मीनिवासं ॥ जनांभो जखंडस्फुटे पद्मनाथं स्तुवे देव० ॥ ३ ॥ सतांमोक्षपद्मप्रदानैकहेतुं महारुद्र विच्छेदने धूमकेतुं ॥ क्रमेंदीवरालीननागांकनाथं स्तुवे देव० ॥ ४ ॥ सनीरांबुदश्या मशिष्टांगकांतिं सुविस्तारितानिष्टपाशोपशांतिं ॥ गतान्यूनदोषं वरं मुक्तिनाथं स्तुवे देव० ॥ ५ ॥ नरेंद्रादिवंद्यं सदालब्धयोगं निशारत्नकप्रानन त्यक्तशोकं ॥ कृपाभाज नं विश्वदेवाधिनाथं स्तुवे देव०॥ ६॥ जगत्तारकं दायकं सज्जनानां श्रियं वांछितार्थापा कं निर्धनानां ॥ सुरम्यस्य रुड्निर्जितानाधिनाथं स्तुवे देव० ॥ ७ ॥ कषायाग्निसंतर्प णे वारिदाभं जरानीरुमानंगपंचास्यशोभं ॥ विदुष्टाष्टकर्मोरगे पक्षिनाथं स्तुवे देव चिंतामणिं पार्श्वनाथं ॥ ८ ॥ इत्येवं श्रीमद्धीरचंद्रशिशुनामभूकचंद्रेण ॥ जयतु चिरं नू तः पार्श्वजिनवरो विजितमदरागः ॥ ९ ॥ इतिश्रीमत्पार्श्वनाथमनननाष्टकं लिखितं

इतिश्री प्रकरण रत्नाकर पुस्तके प्रथम भागः समाप्तः